सुनो जी ! यही लोग अहमक़ हैं, लेकिन नहीं जानते ० और जब उन लोगों से मिलते हैं, जो ईमान ला चुके, तो कहते हैं, हम (भी तो) ईमान ला चुके हैं और जब तनहाई में अपने शैतानों से मिलते हैं, तो कहते हैं, हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो सिर्फ़ (मुसल्मानों को) बनाते हैं ० (यह लोग मुसल्मानों को क्या बनायेंगे, हक़ीक़त में) अल्लाह इन को बनाता है और इन को ढील देता है कि अपनी सर्कशी में पड़े टामक टोइये मारा करें ० यही हैं वह लोग, जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, सो न तो इन की तिजारत ही सूद मन्द हुई और न राह रास्त ही पर क़ायम रहे ० इन (मुनाफ़िक़ों) की कहावत (भी) उस शख़्श की सी कहावत है, जिस ने (लोगों के एक मजमे में रात के वक़्त) आग रोशन की, फिर जब उस (...) आस पा... ... उठीं, तो अल्लाह ने ... कोइ ...

السُّفَهَاءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَإِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْا اٰمَنَّا ۚ وَإِذَا خَلَوْا إِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْا إِنَّا مَعَكُمْ ۙ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۪ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ ... فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْ... وَتَرَكَهُمْ فِيْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ۝ ... عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝ أَوْ كَصَيِّبٍ ... فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ ... فِيْ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْ... وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَ...

॥ ला यमस्सुहू इल्लल्मुतह्हरून ॥

...) को शुद्ध हृदय और पवित्र शरीर के अतिरिक्त किसी को छूने का अधिकार नहीं ॥

क़ुर्आन मजीद

— का —

...दी तर्जुमा और हिन्दी तफ़सीर

... में औरङ्गज़ेब बादशाह के हाथ के लिखे हुए क़ुर्आन मजीद का फ़ोटू ... हर सफ़े पर है और उसके सामने शमशुल उलमा मौलाना नज़ीर अहमद मरहूम देहलवी का मशहूर व मक़बूल उर्दू तर्जुमा है

... ख़्वाजा हसन निज़ामी देहलवी का हिन्दी तर्जुमा और हिन्दी तफ़सीर है

...ना ग़ुलाम मुहम्मद साहब साबिक़—पंडित केशव राम शर्मा ... सरे कई नामवर हिन्दू मुसलमान हिन्दी तर्जुमा ... ... ओं की इम्दाद से पाँच साल के अर्से में तैयार ...

... बिले में अल्लाह को भूले हुये हैं,) वा... ...ही हो सकता ...रा गौरव नहीं

... कहते हैं—हम मुसल्मान हैं और जब अपने ... ड बिलकुल खो...) साथ हैं, (मुसलमानों को तो) हम बनाया ... तो सब ने ... में इन से सारे हास्य अर्थात् मज़ाक़ का बदला ... किये, तो अल्ला... ...ये इसी चक्कर में) चकित और भ्रमी हैं ॥ ...होगा जिन था, इस की ... का (यह) व्यवसाय लाभ दायक नहीं हुआ, ... ही। चाहता था कि ...सत्यता के मार्ग पर नहीं आये ॥ (मायूस) होकर ... है, जिन्हों ने (अँधेरी रात को जंगल में मार्ग देखने ... , तो) अल्लाह ने उन की (इस) रोशनी को ग़ायब ...) और तुम इस में ... ...) नहीं सूझता ॥ ... जाओगे, (क्योंकि ...

...सलमानों से भी अच्छे रहेंगे और काफ़िरों से भी, मगर ...ए बाग़ में बिठा दि... ...ये:—हसन निज़ामी ॥

...ये) है, (अर्थात् इन में न सत्य बात सुनने की योग्यता शेष ... , गुप्त रूप से हज़रत ... नहीं रखनी चाहिये)। यह (अपनी पथ भ्रष्टता की दशा) नहीं ...कारण ख़ुदा की आज्ञा ... ...ते इन्हें निकाल दिया ... ...रितार्थ होती है,) जिस में अँधेरी (भी) है और गरज (भी) ... कुछ समय पृथ्वी पर ...डक के कारण अपनी उँगलियाँ अपने कानों में दिये लेते हैं (कि घोर न... ...क अल्लाह कुफ़्फ़ार को घेरे हुए है, (वह उस की पकड़ से बच नहीं सके) ... रहेगा:—हसन निज़ामी

... जिस तरह वृष्टि खेतों को हरा भरा करती है, इसी प्रकार इस्लाम आत्माओं को ... है, ख़ुदा ने हज़रत आद... ...र या अँधेरी और मेघ से उन परिश्रमों और दुःखों की ओर संकेत है, जो मुसल्मान इस ... दयालु, तौबा स्वीकार... ...ता है और चमक से सफलता। मुनाफ़िक़ों की यह दशा थी कि यदि इन से पूछा जाता ... बड़ी निर्भयता के साथ स्वीकार करते और जब आज्ञा होती कि चलो कुफ़्फ़ार (इस्लाम के ... रखने। नियत रहो और ... उन की मारो, उन को निकालो, तो परस्पर गुप्त संभाषण करते और कानों में उँगलियाँ ठूँस लेते। ... हमारी ओर से तुम्हें प... की तरह इस्लाम की ऐसी आज्ञाओं के सुनने से बचे रहें और जब सच्चे मुसलमान युद्ध कर के विजय प्राप्त करते, तो ... ...रण करना) और जो ... प्रशंसा करनी आरम्भ कर देते कि वाह! यह बड़ा अच्छा धर्म है और लाओ साहब युद्ध-प्राप्त-सम्पत्ति ... ॥

अल्लाह ... ...शकुन ... उन से ... आज्ञा दी है, ... स्वयं ही लोक ...

अन्यथा एक लड़का बादशाहों ...

...बिजली (की चमक) इन की आँखों (की रोशनी) को (एक दम) न... ...साथ रहित थे, तुम्हें (...) ॥ ... बीच पृथ्वी प...

(तुम्हें ...) ... ...चुकार न चले) और हमारी आयतों अर्थात् चिन्हों (और निशानियों ...) ...

... तो उस से ...

يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ هُوَ الَّذِي
خَلَقَ لَكُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ
إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي
جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا
مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ
نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ
مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا
ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ أَنبِئُونِي
بِأَسْمَاءِ هَٰؤُلَاءِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَكَ
لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۖ إِنَّكَ أَنتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ
قَالَ يَا آدَمُ أَنبِئْهُم بِأَسْمَائِهِمْ ۖ فَلَمَّا أَنبَأَهُم
بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ

ع

السموت

...) तुम्हें ... (क़यामत में दुबारा) लौटाये जाओगे ० वही (क़ादिर) ज़मीन की कुल कायनात पैदा की, फिर (यूँ भी,) काम यह किया कि) आस्मान (के बनाने) की ...न के आगे बिजली चमकी, तो उस ... और जब उन पर अँधेरा छा गया, तो ... अगर अल्लाह चाहे, तो ... (उन से) सत्व करते हुआ, तो सात आस्मान हमवार बना दिये और वह हर चीज़ अपने पर्वर्दिगार की इसे वाक़िफ़ है ० और (ऐ पैग़म्बर! लोगों से उस वक़्त का तुम से पहिले हो) जब तुम्हारे पर्वर्दिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में रहेंगार (भी) ...क नायब) बनाने वाला हूँ, (तो फ़रिश्ते) बोले, क्या तू ज़मीन और आस्मान ...स को (नायब) बनाता है, जो उस में फ़साद फैलाये और ख़ाने ...ज़ियाँ करे और (बनाता है, तो हमको बना कि) हम तेरी हम्द (व सना) और ... साथ तेरी तस्बीह (व तक़दीस) करते रहते हैं (ख़ुदा ने) फ़र्माया—मैं पर (कुछ) (मस्लहतें) जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते ० और आदम को सब हो कि ...ज़ों के) नाम बता दिये, फिर उन चीज़ों को फ़रिश्तों के रूबरू पेश कर (अपने ...र्माया कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो, तो हम को इन चीज़ों ...ताओ ...ाम बताओ ० बोले तू पाक (ज़ात) है। जो तूने हम को बता दिया है, अगर ... के सिवा हम को कुछ मालूम नहीं। बेशक तूही जानने वाला (मस्लहत की) पहिचानने वाला है ० (तब ख़ुदा ने आदम को) हुक्म दिया कि ऐ ...दम! तुम फ़रिश्तों को (इन चीज़ों के) नाम बता दो, फिर जब आदम ने फ़रिश्तों को उन (चीज़ों) के नाम बता दिये, तो (ख़ुदा ने फ़रिश्तों की ...रफ़ मुख़ातिब होकर) फ़र्माया—क्यों! हम ने तुम से नहीं कहा था कि ...स्मानों की और ज़मीन की सब मख़्फ़ी चीज़ें हम को मालूम हैं।

तुम्हें वह मृत्यु देगा (और प्रलय के दिन) फिर तुम्हें जीवन देगा (और) फिर (इस दूसरी बार जीवन देने पर हिसाब देने के लिये) तुम्हें ...े पास वापिस जाना होगा (आदि से अन्त तक उस ख़ुदा के अधिकार में हो और उसके आश्रय पर हो, फिर इस पर कुफ़्र और आज्ञा विरोध ...नी अधिक आश्चर्य जनक है) ॥

(अल्लाह—जिस का तुम इन्कार करते हो,) वही (तो) है, जिस ने तुम्हारे लिये संसार की समस्त वस्तुयें पैदा कीं, (जैसे पशु, वृक्ष, नदियाँ, ... कपड़ा, अन्न, चाँद, सूर्य्य आदि जिस से कि तुम इन से काम लो और लाभ उठाओ) फिर उस ने आकाश (की रचना) की ओर (भी) ध्यान ...ौर निहायत स्वच्छता से सात आकाश बना दिये और वह सब वस्तुओं से सचेत (बा ख़बर) है। (वही सब के बनाने का कारण जानता है) ॥

और (ऐ मुहम्मद! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम लोगों के सामने उस घटना का वर्णन करो) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से ...ा) कि मैं पृथ्वी में (अपना) ख़लीफ़ा (अर्थात नायब, दीवान) बनाने वाला हूँ ॥

(तो) वह बोले (थे,) भला वहाँ तू ऐसे को (ख़लीफ़ा अर्थात् नायब, दीवान) बनायेगा, जो पृथ्वी को झगड़े से भरदे और ख़ून बहाये, ...में भुलाये देता है? यद्यपि) हम (निरन्तर) तेरी प्रशंसा के साथ तेरी पाकी और बड़ाई बयान करते रहते हैं और तेरे (ऐब और अवगुण ...त्र होने का इक़रार करते रहते हैं, (बनाना है, तो हमें बना) ॥

(इस पर अल्लाह ने) फ़रमाया (मनुष्य के पैदा करने का कारण) मैं (वह) जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते (और न जान सके हो) ॥

और (इस के बाद अल्लाह तआला ने) आदम को (पैदा करके) समस्त (वर्तमान वस्तुओं के) नाम सिखलाये (और) फिर उन (समस्त ...ुओं) को फ़रिश्तों के सामने पेश किया और (उन से) कहा (लो) तुम (यदि ख़लीफ़ा बनने की हिर्स करते हो और आदम पर ...रने में) सच्चे हो, तो मुझे इन (सब चीज़ों) के नाम बताओ ॥

टीका—इस कार्य्य से यह तात्पर्य था कि फ़रिश्ते समझ जायँ, कि भजन तथा प्रार्थना करने की योग्यता उन में स्वयं अपने आप नहीं ...न, ख़ुदा ने उन में यह बात रक्खी है और वह विद्रोही तथा रुधिर बहाने वाले मनुष्यों में भी जिन को चाहेगा, फ़रिश्तों से श्रेष्ठ बना देगा। ... फ़रिश्ते समझ गये:—हसन निज़ामी ॥

...और) उन्होंने कहा ऐ पवित्र अल्लाह! जो (कुछ) तूने हमें (बताया) सिखाया है, (वास्तव में) उस से अधिक हम (कुछ) नहीं ...हीं जान सके)। निस्सन्देह तू (ही हर बात का) ज्ञानवान (है और हर बात का सर्वज्ञ) है ॥

० ...ल्लाह ने फ़रिश्तों को और अधिक विश्वास दिलाने और मनुष्य की विद्या-शक्ति, तथा ज्ञान-शक्ति दिखाने के लिये हज़रत आदम ...न (फ़रिश्तों) को इन (चीज़ों) के नाम बतादो, (उन्होंने आज्ञा पालन की,) फिर जब वह इन्हें इन (चीज़ों) के नाम ...म से न कहते थे कि हम पृथ्वी और आकाश के गुप्त रहस्य से परिचि... हैं—

और जो कुछ तुम (अब) ज़ाहिर करते हो (वह) और जो कुछ तुम हम

ने पर्वरदिगार के सीधे रस्ते पर हैं और यही (आख़िरत में मनमानी
ादें पायेंगे ० (ऐ पैग़म्बर !) जिन लोगों ने (कबूल इस्लाम से)
ार किया, उनके हक़ में यक्साँ है कि तुम उनको (अ़ज़ाब इलाही से)
ाओ या न डराओ, वह तो ईमान लाने वाले हैं नहीं ० उनके दिलों पर
र उनके कानों पर अल्लाह ने मोहर लगादी है। और उनकी आँखों पर
ा (पड़ा) है। और (आख़िरत में) उनको बड़ा अ़ज़ाब (होना) है ०
र लोगों में से बाज़ ऐसे भी हैं, जो (मुँह से तो) कह देते हैं कि हम
लाह पर और रोज़ आख़िरत पर ईमान लाये, हालाँकि वह ईमान नहीं
ाये ० (यह लोग अपने नज़दीक) अल्लाह को और उन लोगों को–जो ईमान
ला चुके हैं, धोका देते हैं और (हक़ीक़त में) धोका नहीं देते, मगर अपने
आप को, और (इस बात को) नहीं समझते ० इनके दिलों में (पहिले ही
से कुफ़ का) मरज़ था, अब (क़ुर्आन नाज़िल करके) अल्लाह ने इनका
रज़ (और भी) बढ़ा दिया। और इनको इनके झूट बोलने की सज़ा में
अ़ज़ाब दर्दनाक (होना) है ● और जब इनसे कहा कहा जाता है कि
मुल्क में फ़साद न फैलाओ. (तो) कहते हैं कि हम तो (लोगों में) मेल
जोल कराने वाले हैं और बस ० सुनो जी ! यही लोग फ़सादी हैं, लेकिन
नहीं समझते ० और जब इनसे कहा जाता है कि जिस तरह (और) लोग
ईमान लाये हैं, तुम भी ईमान ले आओ ! तो कहते हैं कि क्या हम भी (उसी
तरह) ईमान ले आएँ, जिस तरह (और) अहमक़ ईमान ले आए हैं ?

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاَعْلَمُ مَا تُبْ
تَكْتُمُوْنَ ● وَاِذْ قُلْنَا
فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ
الْكٰفِرِيْنَ ●
وَكُلَا مِنْهَا
الشَّجَرَةَ
الشَّيْطٰنُ
اهْبِطُوْا
مُسْتَقَرٌّ
كَلِمٰتٍ فَتَ
قُلْنَا اهْبِطُ
هُدًى فَمَنْ
وَلَا هُمْ

عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ●
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ
اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ● خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
وَعَلٰى سَمْعِهِمْ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ● وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ
بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ● يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ
وَمَا يَشْعُرُوْنَ ● فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ
مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ●
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ قَالُوْٓا
اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ● اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ
وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ● وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا
كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ

नायब वही हो सकता
ति हमारा गौरव नहीं
घमंड बिलकुल खो

अपने रब अर्थात पालन कर्त्ता की कृपा व दया और अपने रब की दी हुई योग्यता से) अपने रब के (सीधे) रस्ते पर हैं और यही पूरे क करो, तो सब ने शी
सफल) होंगे। (अर्थात् इन्हें नर्क के दुःखों से छुटकारा मिलेगा और मनमानी मुरादें पायेंगे) ॥ (और) निश्चय रूप से जो लोग (स्वाः
द्रोह के कारण इस्लाम धर्म ग्रहण करने से) अस्वीकार अर्थात् इन्कार करते हैं (और हमारे बताये हुये मार्ग पर नहीं चलते) उनक रम्भ किये, तो अल्ला
म्बर !) तुमने (नर्क के दुःखों से) डराया, (तो क्या) या न डराया (तो क्या। तुम कितना ही क्यों न डराओ) उन्हें (सब) बरा नेक जिन था, इस की
ईमान (विश्वास) न लावेंगे ॥ अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर (ग़फलत की) मोहर * लगादी है। (वह न तो सत्य को द न रही। चाहता था कि
कते हैं और न सत्य को सुन सकते हैं)। और उनकी आँखों पर पर्दा (पड़ गया) है, (जिसके कारण वह ठीक रास्ता नहीं देख सकते अधोर (मायूस) होकर
रलोक में) इनके वास्ते घोर दंड (तैयार) है॥ "उलाइ कहुमु- ल्मुफ़्लिहू.न" तक मोमिनों (अर्थात ख़ुदा की तरफ़ से जो कुछ
, उसके स्वीकार करने वाले को मोमिन कहते हैं) का हाल था। अर्थात् 'अन् अम्त अलैहिम्' का जवाब। फिर काफ़िरों) अर्थात हो) और तुम इस में व
क से जो कुछ उतारा जाय, उस के स्वीकार न करने वाले को काफ़िर कहते हैं) का ज़िक्र किया। अर्थात् क्रोध भाजनों (मग़ज़ूबों) मझे जाओगे, (क्यों
फ़िकों † का वर्णन होता है। यानी ज़ाल्लीन (मार्ग से भटके हुओं) का ॥ और लोगों में कुछ ऐसे (भी) हैं, जो (ज़बान अर्थात जिह्वा रे हुए बाग़ में बिठा दि
हम अल्लाह पर और प्रलय पर विश्वास ले आये (अर्थात ख़ुदा के होने, एक होने और ला शरीक (अद्वैत) होने को हमने सत्य म
हमें निश्चय है कि प्रलय होगी) और (वास्तव में यह है कि) उन्हों ने विश्वास नहीं किया है ॥ (बल्कि अपनी बुद्धि में यह बात कह कर था, गुप्त रूप से हज़रत
का और उन लोगों को, जो (वास्तव में) विश्वासी हैं, धोखा देते हैं (अर्थात केवल चालबाज़ी से विश्वास प्रगट करते हैं)। मगर (हमा के कारण ख़ुदा की आज्ञा
चालबाज़ी क्या चलेगी ! यह तो वास्तव में) स्वयं अपने ही आप को धोखा देते हैं और (इन्हें अपनी इस दशा का ज्ञान नहीं है उस से इन्हें निकाल दिया।
आत्मिक। घोर भ्रम को समझते (ही) नहीं ॥ इनके दिलों में (द्वेष का) रोग है और (अब) इनका (यह रोग अल्लाह ने और बढ़ा ब) कुछ समय पृथ्वी पर
२ क़ुर्आन उतर रहा है और इस्लाम की उन्नति हो रही है, वैसे २ उनके द्वेष की आग भड़कती जाती है)। और (ख़ैर, यह जाते क
अपने झूट बोलने (अर्थात कपट रखने) का घोर दंड मिलेगा ॥ और (यह भी देखा !) जब इनसे कहा जाता है कि पृथ्वी पर रोध रहेगा:–हसन निज़ामी
, (ऐसी बातें न करो, जिनसे ईर्षायें बढ़ती हैं और उपद्रवों की अधिकता होती है। इधर की उधर और उधर की इधर न लगा
, (जवाब देते हैं, वाह !) हम तो केवल सुधार करने वाले (शान्ति क़ायम रखने वाले लोग) हैं। (हमें उपद्रवों तथा झगड़ों से अर्थात् ख़ुदा ने हज़रत आद
नहीं। हम तो यह चाहते हैं कि रसूलुल्लाह के मानने वालों और न मानने वालों में सफ़ाई हो जाय) ॥ (यही तो उनकी बनावटी (बड़ा) दयालु, तौबा स्वीक
हैं) सचेत ही हो जाओ ! (ऐ मुसलमानो ! ख़बरदार रहो) यह (उपद्रव व्यवसायी अर्थात् जिनका पेशा उपद्रव करना हो)
अपने उपद्रवी होने को) अनुभव नहीं करते हैं ॥ और जब इनसे कहा जाता है (कि) जैसे (और) लोग (सच्चे हृदय ी आज्ञा नियत रहो और
) लाये हैं (ऐसे ही) तुम (भी) विश्वास लाओ (तो परस्पर) कहते हैं, भला हम (भी) ऐसा (शिक्षा हमारी ओर से तुम्हें प
क विश्वास ले आये हैं (कि विरोधियों की संख

टीका—जिस तरह पत्थरों में बिल्लौर भी है ... र्य करना अर्थात् आदम के वंश में कोई नबी व संदेशिया आये, तो उस का अनुकरण करना) और जो ह
नी को ग्रहण नहीं कर सकता। जिस तर ... विष्य का) खटका ‡ होगा (और न उन्हें भूत काल पर) लज्जित होना पड़ेगा ॥
— जिस तरह पत्थरों ... खटके से तात्पर्य वह खटका है, जो पापियों और अपराधियों को हुआ करता है, अन्यथा एक खटका बादशाहों के
सामने पेश होते समय अच्छे २ लोगों को होता है। इस से नबी तक न बच सकेंगे:—हसन निज़ामी ॥ ... बीच पृथ्वी पर
और जिन्हों ने कुफ़्र किया (अर्थात् हमारी शिक्षानुसार न चले) और हमारी आयतों अर्थात् चिन्हों (और निशा

... तो उस स

उन के आगे बिजली चमकी, तो उस ... लौटाये जाओगे ० वही (कादिर

और जब उन पर अँधेरा ...

अगर अल्लाह चाहे, (उन से) ... अपने पर्वर्दिगार ... तुम से पहिले ... परहेज़गार (भी ... और ... खाने के ... और ... पर (कुछ ... हो कि ... (अपने ... लाओ ... अगर) ... की ... फ़रिश्ते ... मारफ़ मु... आसमान

सूरत-बक़र

मदनी यानी मदीने में नाज़िल हुई। इस में २८६ आयतें और ४० रुकूअ हैं ॥

(शुरु) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ०

अलिफ़ लाम्मीम—यह वह किताब है, जिस (के कलाम इलाही होने) में कुछ भी शक नहीं, पर्हेज़गारों की रहनुमा है ० जो ग़ैब पर ईमान लाते और नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उनको दे रक्खा है, उसमें से (राह ख़ुदा में भी) ख़र्च करते० और (ऐ पैग़म्बर !) जो (किताब) तुम पर उतरी और जो (किताबें) तुम से पहिले उतरीं, उन (सब) पर ईमान लाते और वह आख़िरत का भी यक़ीन रखते हैं ० यही लोग—

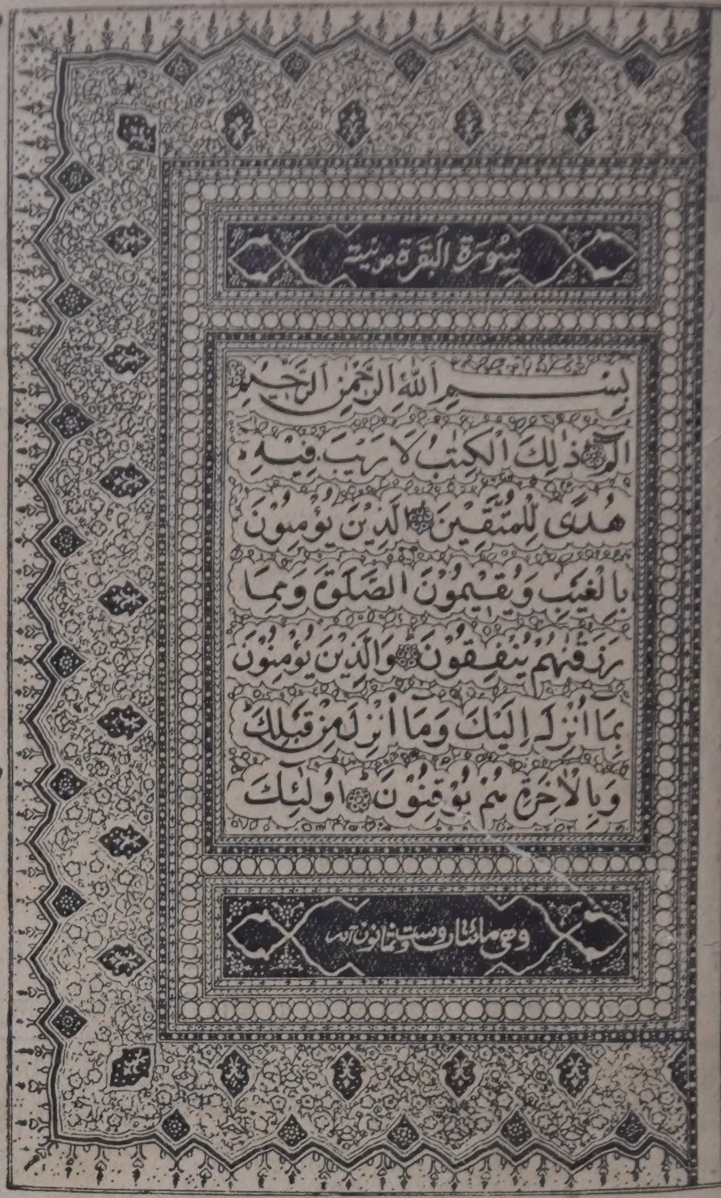

सूरत-बक़र, मदनी अर्थात मदीने में उतरी, इस में २८६ आयतें और ४० रुकूअ हैं ॥

(सूरत फ़ातिहा में अल्लाह ने अपने से ख़िताब करना (सम्बोधन करना) सिखाया था। अब सूरत बक़र में जवाब देता है या सूरत बक़र ...का आरम्भ करता है। मानो सूरत फ़ातिहा में जो दुआ की गई थी, वह मंज़ूर होती है ॥ अलिफ़ लाम् मीम् * (मैंने तुम्हारी प्रार्थना को सुना) ...ह बड़ा ज्ञानवान हूँ। (मैं हिदायत का वह रास्ता, जिसकी तुमने प्रार्थना की है, ख़ूब जानता हूँ और मैं उसे तुम्हें बतलाता हूँ) ॥

* टीका—'अलिफ़ लाम मीम' के क़यासी (मनुष्यों के सोचे हुये) अर्थों में से—जो पिछले पूर्वजों ने किये हैं, यह एक है। नहीं तो वास्तव ...लाम मीम—अल्लाह और उसके रसूल के बीच रहस्य (राज़) था:—हसन निज़ामी ॥

(जिस किताब के भेजने की पिछली किताबों में प्रतिज्ञा की गई थी यानी क़ुर्आन) यह किताब वही है और इसमें (बिल्कुल) सन्देह ... नहीं है, (कि यह वही विश्वास योग्य सच्ची और ईश्वरीय किताब है)॥(जिस रस्ते के तुम अभिलाषी हो, वह इस किताब में मिलेगा) ...रहेज़गारों (संयमियों) को रस्ता दिखाती है। (परहेज़गार वह होते हैं, जो बुरे कामों के करने से ख़ौफ़ खाते हैं और जिनमें नेकी की ... और। जो ग़ैब (अदृष्ट) पर विश्वास करते हैं (यानी बग़ैर देखे सिर्फ़ ख़ुदा के बयान करने से उन बातों को मान लेते हैं, जो उनके ...र से परे होती हैं, मसलन ख़ुदा है, जन्नत (स्वर्ग) है, दोज़ख़ (नर्क) है, फ़रिश्ते हैं और ख़ुदा नबियों को भेजता है और ... के दिन नेकी बदी का हिसाब लिया जायगा)। और (परहेज़गार वह होते हैं, जो सदा पाबंदी के साथ) नमाज़ पढ़ते रहते हैं और ... दिया है, उस में से नेक कामों में (भी) ख़र्च करते हैं ॥

...नहीं जान सके)। निस्सन्देह तू (हा हर बात का) ज्ञानवान (है और हर बात व है, ईमान रखते हैं और उन (किताबों) को मानते

...ल्लाह ने फ़रिश्तों को और अधिक विश्वास दिलाने और मनुष्य की विद्या-... भी) यक़ीन (विश्वास) रखते हैं ॥

...न (फ़रिश्तों) को इन (चीज़ों) के नाम बतादो, (उन्होंने आज्ञा पालन का,) ... जब ... आदम ... फ़र्माया—ह... तुम से न कहते थे कि हम पृथ्वी और आकाश के गुप्त रहस्य से परिचित हैं— ... (...ज़ों) के नाम

और जो कुछ तुम (अब) ज़ाहिर करते हो (वह) और जो कुछ तुम हम से छुपाते थे, (वह) हम को (सब) मालूम है ० और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के आगे झुको, तो शैतान के सिवा (सब के सब) झुक पड़े। उस ने न माना और शेख़ी में आ गया और ना फ़र्मान बन बैठा ० और हम ने (आदम से) कहा—ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीबी बहिश्त में बसो और उस में जहाँ कहीं से तुम्हारा जी चाहे बा फ़राग़त खाओ (पियो) मगर इस दरख़्त (गन्दुम) के पास मत फटकना (ऐसा करोगे,) तो तुम (आप अपना) नुक़्सान कर लोगे ० पस शैतान ने उनको वहाँ से (बहला फुस्ला कर) उखाड़ दिया और (आख़िर कार) जिस (मज़े) में थे, उस से उन को निकलवा छोड़ा और हमने हुक्म दिया कि तुम (सब) उतर जाओ। तुम एक के दुश्मन एक और ज़मीन में तुम्हारे लिये एक वक़् (ख़ास) तक ठिकाना और (ज़िन्दिगी बसर करने का) साज़ सामान है ० फिर आदम ने अपने पर्वर्दिगार से (माज़िरत के चन्द) अल्फ़ाज़ सीख लिये और (उन अल्फ़ाज़ की बरकत से) ख़ुदाने उन की तौबा क़बूल करली। बेशक वह बड़ा ही दर गुज़र करने वाला मेहर्बान है ० (जब) हमने हुक्म दिया कि तुम सब (के सब) यहाँ से उतर जाओ, तो (साथ ही यह भी समझा दिया था कि) अगर हमारी तरफ़ से तुम लोगों के पास कोई हिदायत पहुँचे, तो (उस पर चलना, क्यों कि) जो हमारी हिदायत की पैरवी करेंगे (आख़िरत में) उन पर न (तो किसी क़िस्म का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वह (किसी तरह पर) आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे ० और जो लोग नाफ़र्मानी करेंगे और हमारी आयतों को झुटलायेंगे,—

السمٰوٰت والارض واعلم ما تبدون وما كنتم
تكتمون ○ واذ قلنا للملٰئكة اسجدوا لادم
فسجدوا الا ابليس ابى واستكبر وكان من
الكٰفرين ○ وقلنا يٰادم اسكن انت وزوجك الجنة
وكلا منها رغدا حيث شئتما ولا تقربا هٰذه
الشجرة فتكونا من الظٰلمين ○ فازلهما
الشيطٰن عنها فاخرجهما مما كانا فيه وقلنا
اهبطوا بعضكم لبعض عدو ولكم في الارض
مستقر ومتاع الى حين ○ فتلقى ادم من ربه
كلمٰت فتاب عليه انه هو التواب الرحيم ○
قلنا اهبطوا منها جميعا فاما يأتينكم مني
هدى فمن تبع هداى فلا خوف عليهم
ولا هم يحزنون ○ والذين كفروا وكذبوا

और इस की ख़बर रखते हैं, जो तुम प्रकट करते हो और इस की भी, जो तुम गुप्त रखते रहे। (हमारा ख़लीफ़ा व हमारा नायब वही हो सकता है, जिस पर हमारे गुणों की थोड़ी बहुत छाया पड़ी हो। तुम मनुष्य से केवल ईश्वरीय स्तुति करने में बढ़े हुए हो, परन्तु स्तुति हमारा गौरव नहीं वास्तव में ज्ञान ही हमारा गौरव है। सो इस में मनुष्य तुम से बढ़ गया है) ॥

और (ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम वह भी बयान करदो,) जब हम ने (फ़रिश्तों का घमंड बिलकुल खो और मनुष्य की अवस्था अच्छी तरह प्रकट कर देने के लिये) फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा (डंडवत, झुकना) करो, तो सब ने शी नवा दिये, सिवा इब्लीस के। इस ने (हमारी आज्ञा) न मानी और अकड़ा रहा और काफ़िर * हो गया ॥

* टीका—इब्लीस वास्तव में "जिन" था और पृथ्वी पर कुल जिनों के साथ रहता था। जिनों ने विद्रोह करने आरम्भ किये, तो अल्ला के हुक्म से फ़रिश्ते इन के प्रबन्ध करने के लिये आये और इन्हें जंगलों और पहाड़ों में भगा कर चले गये। इब्लीस बहुत नेक जिन था, इस की प्रार्थना और आग्रह से फ़रिश्तों ने इसे अपने साथ ले लिया और आकाश में पहुँच कर यह ऐसा उपासना में तल्लीन हुआ कि हद न रही। चाहता था कि अल्लाह ख़ुश होकर इस को सारे संसार का मालिक बनादे। मगर जब ज़मीन हज़रत आदम के सुपुर्द होने लगी, तो यह अधीर (मायूस) होकर बावला सा हो गया और आदम की शत्रुता के साथ अल्लाह की आज्ञा न मानी :—हसन निज़ामी ॥

और (फिर) हम ने (आदम से) कहा, ऐ आदम ! तुम दोनों स्त्री, पुरुष (मियाँ बीबी) बैकुण्ठ में रहो, (सहो) और तुम इस में ज जहाँ की चीज़ खानी चाहो मज़े से खाओ, मगर (देखो !) इस (गेहूँ के) पेड़ के पास न जाना, अन्यथा तुम ज़ालिम समझे जाओगे, (क्योंकि हम ने तुम्हारे साथ यह यह सलूक (उपकार) किये कि तुम को पैदा किया और फ़रिश्तों से बढ़ाया और आनन्द से भरे हुए बाग़ में बिठा दिया और तुम ने हमारा ज़रा सा कहा न सुना। इस से अधिक पाप और क्या हो सक्ता है ?) ॥

(मगर) फिर शैतान ने (क्योंकि वह हज़रत आदम के कारण क्रोध भाजन हुआ था और इनका शत्रु बन चुका था, गुप्त रूप से हज़रत आदम और उन की स्त्री हव्वा तक परिचय प्राप्त कर लिया और) इन्हें (बहका कर गेहूँ खिला दिया और इस वृक्ष के कारण ख़ुदा की आज्ञा पालन से) हटा दिया (और इस का परिणाम यह हुआ कि) जिस (सुख और आनन्द) में (वह) थे, (अल्लाह ने) उस से इन्हें निकाल दिया।

और हम (अल्लाह) ने कह दिया कि (चलो नीचे) उतरो। तुम कोई २ एक दूसरे के शत्रु रहोगे † और (अब) कुछ समय पृथ्वी पर तुम को ठहरना और वहीं की वस्तुओं से काम लेना होगा ॥

† टीका—मनुष्य जाति में सदैव परस्पर विरोध और शत्रुता रहेगी। संसारी बातों में द्वेष और धर्म की बातों में विरोध रहेगा:—हसन निज़ामी ॥

इस के बाद आदम ने अपने रब (पालन कर्त्ता) से (क्षमा माँगने के) कुछ शब्द सीख लिये ॥

(और उन्हें कह कर क्षमा चाही) अतः (अल्लाह ने) इन की तौबा (पश्चाताप) स्वीकार कर लिया (अर्थात् ख़ुदा ने हज़रत आदम अलैहि-स्सलाम के हृदय में डाल दिया कि इन २ शब्दों में तौबा करें, और उन्हों ने तौबा की, तो स्वीकार करलो) वह (बड़ा) दयालु, तौबा स्वीकार करने वाला है (न केवल पश्चाताप अर्थात् तौबा, स्वीकार ही करता है, वरन् तौबा करने का साहस भी देता है) ॥

तौबा स्वीकार करने के बाद तुरन्त आदम व हव्वा को स्वर्ग में नहीं दाख़िल कर लिया गया, बल्कि पिछली आज्ञा नियत रही और (इन से) कहा कि (अब तो) तुम यहाँ से सब पृथ्वी (ही) पर जाओ, परन्तु यदि (कभी किसी तरह की) शिक्षा हमारी ओर से तुम्हें प तो (इस सतोपदेश के अनुसार कार्य करना अर्थात् आदम के वंश में कोई नबी व संदेशिया आये, तो उस का अनुकरण करना) और जो शिक्षानुसार कार्य करेंगे, उन्हें न तो (भविष्य का) खटका ‡ होगा (और न उन्हें भूत काल पर) लज्जित होना पड़ेगा ॥

‡ टीका—यहाँ खटके से तात्पर्य वह खटका है, जो पापियों और अपराधियों को हुआ करता है, अन्यथा एक खटका बादशाहों के सामने पेश होते समय अच्छे २ लोगों को होता है। इस से नबी तक न बच सकेंगे:—हसन निज़ामी ॥

और जिन्हों ने कुफ़्र किया (अर्थात् हमारी शिक्षानुसार न चले) और हमारी आयतों अर्थात् चिन्हों (और निशानियों) ... बीच पृथ्वी प

... उसे सज्दा ...

बा[...]तमकी, [...]हा गया,

वही दोज़ख़ी होंगे ([...]ा) दोज़ख़ ही में रहेंगे ० ऐ बनी इस्राईल ! हम[...] [...] काम[...]ो, जो हम तुम पर कर चुके हैं और तुम उस इक़रार को पू[...] जो (तुम ने) हम से किया है, हम उस इक़रार को पूरा करेंगे, जो (हम ने) तुम से किया है और हम ही से डरते रहो ० और इस (कुर्आन) पर ईमान लाओ, जो हम ने (अब) नाज़िल फ़र्माया है (और वह) उस (किताब तौरात) की तस्दीक़ करता है, जो तुम्हारे पास है और (सब से) पहिले इस के मुन्किर न बनो और हमारी आयतों (में तह्‌रीफ़ कर के उन) के मुआविज़े में थोड़ी क़ीमत (यानी दुनियावी फ़ायदे) हासिल न करो और हम ही से (यानी हमारे अज़ाब से) डरते रहो ० और सच को झूट के साथ गड मड न करो और जान बूझ कर हक़ बात को न छुपाओ०और नमाज़ पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और जो लोग (हमारे हुज़ूर में बवक़् अदाय नमाज़) झुकते हैं, उन के साथ तुम भी झुका करो ० क्या तुम (दूसरे) लोगों से नेकी करने को कहते हो और अपनी ख़बर नहीं लेते, हालांकि तुम किताब (इलाही भी) पढ़ते रहते हो। क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते ० और (मुसीबत की बर्दाश्त के लिये) सब्र और नमाज़ का सहारा पकड़ो और अलबत्ता नमाज़ शाक़ है, मगर उन पर नहीं, जो ख़ाकसार हैं ० (और) जो यह ख़याल (पेश नज़र) रखते हैं कि वह (आख़िर कार) अपने पर्वर्दिगार से मिलने वाले और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं ० ऐ बनी इस्राईल ! हमारे वह एहसानात याद करो, जो हम तुम पर कर चुके हैं—

بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ●
يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ
وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ●
وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا
اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا وَّاِيَّايَ
فَاتَّقُوْنِ ● وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ
وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ● وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ● اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ
بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ● وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ
وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ● الَّذِيْنَ
يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ●
يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ

वह लोग नर्क बासी होंगे (और) सदैव नर्क में रहेंगे ॥ (और देखो) ऐ बनी इस्राईल* ! तुम (विशेष रूप से) हमारी इन नेअ्‌मतों (ईश्वरीय उपहार) का ध्यान करो, जो हमने तुम्हें दी थीं और हम से जो वादा किया था, उसे पूरा करो, हम वह वादा पूरा करेंगे, जो तुमसे कर चुके हैं (और देखो !) हम ही से डरो ॥ और इस (कुर्आन) पर, जिसे हमने उतारा है, ईमान (विश्वास) लाओ। (यह कुर्आन) उस (किताब) का (भी तो समर्थन) करता है, जो तुम्हारे पास है। (इस में और उस में विरोध नहीं है । इस्लाम इब्राहीम तथा मूसा ही का धर्म है। इसे नया मत न समझो। यह केवल उन मार्गों से तुम्हारी रक्षा करना चाहता है, जो इब्राहीम और मूसा के रास्तों से हट कर तुमने ग्रहण कर लिये हैं, अन्यथा इस्लाम और मूसाइयत और कुर्आन और तौरात एक हैं। तौरात कुर्आन का समर्थन करने वाली और कुर्आन तौरात का समर्थन करने वाला। इस लिये) तुम ही पहिले उस के मुन्किर (निषेधक) न बनो (यह तुम्हें उचित नहीं है कि तुम्हारी गिनती कुर्आन के निषेधकों में हो) और (देखो !) थोड़े से लाभ के लिये हमारी आयतों को न बेचो, (संसार कितने दिन का और संसार के व्यौहार, लाभ कितने दिन के। अन्त में हम से ही पाला पड़ना है और (देखो ! हम फिर कहते हैं) हम से डरते रहो ॥ और सत्य को असत्य मत ठहराओ (अर्थात् सचाई के साथ झूँठ को मिलावट मत करो, सच को झूँठ के साथ न मिलाओ) और जान बूझ कर सत्यता को मत छिपाओ † ॥ और (मुसल्मान होकर) नमाज़ पढ़ने लगो और ज़कात देने लगो और शीस नवाने वालों में शरीक होकर ‡ (हमारे सामने) शीस नवाने लगो ॥ क्या (तमाशा है कि) तुम (और) लोगों को (तो) नेकी का उपदेश देते हो (और कहते हो कि इस्लाम अच्छा मत है, इसे स्वीकार कर लो) और अपने आप को भूले जाते हो (अर्थात् स्वयं मुसल्मान नहीं होते) और (यद्यपि) तुम किताब (तौरात में) पढ़ते हो (कि इस्लाम स्वीकार करना कितना आवश्यक है) क्या तुम में बुद्धि बिलकुल नहीं रही है ॥ संतोष और उपासना (नमाज़) के द्वारा (अपनी) शक्ति को बढ़ाओ ॥ एकाग्र और शुद्ध हृदय से नमाज़ पढ़ना (भी) यद्यपि अति कठिन कर्म है, परन्तु उनके लिये नहीं, जो (दिल में) ख़ुदा का भय रखते हैं ॥ वह लोग (वह होते हैं,) जिन्हें इसका विचार है कि उन्हें (एक दिन अवश्य) अपने पालन कर्त्ता से मिलना है और (अन्त में हिसाब किताब देने के लिये) उसी की ओर लौट कर जाना है ॥ (और) ऐ बनी इस्राईल ! (फिर) हमारी उस नेअ्‌मत को याद करो, जो हमने तुम्हें दी थी—

* टीका—इस्राईल, हज़रत याक़ूब अलैहि-स्सलाम का नाम था। आप के १२ बेटे थे। उन से जो सन्तान हुई, वह सब बनी इस्राईल कहलाती है। यह समस्त जाति एक समय फ़िरऔन और उस की जाति के शासन में हो गई थी। ख़ुदा तआला ने हज़रत मूसा को इन में पैदा किया और इन के हाथों से फ़िरऔन और फ़िरऔन बंशियों की दुर्दशा कराकर बनी इस्राईल को राज्य का मालिक बना दिया। यह तो वह ईश्वरीय उपहार और एहसान है, जिस को ख़ुदा—बनी इस्राईल को याद दिला रहा है और वादा वही था कि यदि हमारी तरफ़ से आगे भी कोई धर्म शिक्षा आये, तो उसे स्वीकार करना; एक तो यह कि तौरात की आज्ञाओं का पालन करो। फिर अगर कभी कोई नया नबी हम भेजें, तो उसको स्वीकार करो। इसके बदले में परलोक अलग रहा। हम संसार में भी तुम्हारा राज्य रक्खेंगे, लेकिन बनी इस्राईल सारे वादों से फिर गये। इस लिये ख़ुदा की भी उन [प]र फिटकार है। बच्चे २ को मालूम है कि यहूदियों का कहीं राज्य नहीं। यहूदी और बनी इस्राईल एक ही चीज़ हैं। उन्हों ने तौरात को बदल डाला, [उ]स में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम का वर्णन था, उसे अलग करदिया और हज़रत यह्या और हज़रत ज़करिया नबी को मार [ड]ाला और हज़रत ईसा को सूली पर चढ़ाने का विचार किया और मुहम्मद रसूलुल्लाह का घोर विरोध किया। कुविचार हो गये। रिश्वतें (घूस) [ख]ाने लगे। झूठी बातें घड़ते और ख़ुशामद में सत्य बात की परवाह न रखते थे। इसी वर्णन का इस आयत में संकेत है कि ऐ बनी इस्राईल ! [हम]ने तुम्हें राज्य दिया, पर तुम अपने प्रण पर क़ायम न रहे। अब भी सब कुछ सम्भव है, यदि हम से डरो :—हसन निज़ामी ॥

† टीका—हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम का समर्थन और इस्लाम के ईश्वरीय मत होने के सम्बन्ध में तौरात में जो [...] उसकी काट, छाँट और उस के गुप्त रखने की चेष्टा न करनी चाहिये :—हसन निज़ामी ॥

‡ टी[का]—समूहिक नमाज़ की प्रथा प्राचीन धर्मों में न थी और रुकूअ भी, जिस की ख़ुदा ने इस आयत में आज्ञा दी है, प्राचीन धर्मों में [...] नमाज़ में नहीं था। जब मनुष्य अपने [दो]नों हाथों को अपने घुटनों पर रख कर इस प्रकार झुक जाय कि उस की—

عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاتَّقُوْا يَوْمًا
لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا
شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ
سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ
نِسَآءَكُمْ وَفِىْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝
وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ
اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝ وَاِذْ وٰعَدْنَا
مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ
بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْ بَعْدِ
ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى
الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى
لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ

और इस बात को भी कि हमने तुम को दुनिया जहान के लोगों पर (हर तरह की) फ़ौक़ियत दी थी ० और उस दिन (यानी रोज़ क़यामत) से डरो कि कोई शख़्स किसी शख़्स के कुछ भी काम न आये और न उस की तरफ़ से (किसी की) सिफ़ारिश क़बूल हो और न उस से (किसी तरह का) कुछ मुआविज़ा लिया जाय और न लोगों को (कहीं से) कुछ मदद पहुंचे ० और (उस वक़्त को याद करो) जब हमने तुम को फ़िर्औन के लोगों से नजात दी, जो तुमको (बड़ी) बुरी तकलीफ़ें पहुँचाते थे कि तुम्हारे बेटों को हलाल करते और तुम्हारी औरतों (यानी बेटी ज़ात) को (अपनी ख़िदमत के लिये) ज़िन्दा रहने देते और इस मे तुम्हारे पर्वरदिगार (की तरफ़) से (तुम्हारे सब्र की) बड़ी (सख़्त) आज़मायश थी ० और (वह वक़्भी याद करो) जब हमने तुम्हारी वजह से दरिया को फाड (कर टुकड़े २ कर) दिया, फिर हमने तुमको तो नजात दी और फ़िर्औन के लोगों को तुम्हारे देखते (देखते) डुबो दिया ० और (वह वक़् भी याद करो) जब हमने मूसा से चालीस रातों (यानी एक चिल्ले) का वादा किया, फिर तुम उन के (गये) पीछे (परस्तिश के लिये) बछड़े को ले बैठे और तुम (आप अपने ऊपर) ज़ुल्म कर रहे थे ० फिर इस के बाद भी हमने तुम से दर गुज़र की ताकि तुम शुक्र करो ० और (वह वक़् भी याद करो) जब हमने मूसा को किताब (तौरात) इनायत फ़र्माई और क़ानून फ़ैसल (यानी शरीअत,) ताकि तुम हिदायत पाओ० और (वह वक़् भी याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयो ! तुमने बछड़े (की परस्तिश) के इख़्तियार करने से अपने ऊपर (बड़ा ही) ज़ुल्म किया—

और यह भी (याद करो) कि हमने तुम्हें समस्त संसार का बड़ा बना दिया था। और उस दिन से डरो कि (जिस दिन) कोई प्राणी किसी प्राणी के किञ्चित मात्र भी काम न आवेगा और न इसकी (किसी दूसरे के लिये*) सिफ़ारिश क़बूल होगी ॥ और न इस से (कुछ) बदला (मावज़ा) लिया जायगा अर्थात् संसार के व्यवहार की तरह कुछ ले देकर वहाँ मतलब नहीं निकाल सकेंगे और (यह वह दिन है कि जिस दिन) लोग (बिल्कुल) बे मित्र व सहायक हों (गे) † ॥ और (ऐ बनी इस्राईल ! याद् करो, उस समय को) जब हमने तुम्हें फ़िर्औनियों (के चुंगल) से छुड़ाया (फ़िर्औनी) तुम्हें (बड़ी) बुरी तकलीफ़ें पहुंचाते थे। तुम्हारे बेटों को बध कर डालते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित (छोड़े) रखते थे (अर्थात् बेटों को मार डालते थे और बेटियों को जीवित रखते थे) और इस (कार्रवाई) में तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (तुम्हारी) कठिन परिक्षा हो रही थी (अर्थात्) इस कार्रवाई से तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें देखना चाहता था कि कितने संयमी हो और दिखाना चाहता था कि फ़िर्औन ने वश २ उपाय किये, लेकिन भाग्य के आगे एक न चली ‡ ॥ और (उस समय को भी याद करो) जब (तुम आगे आगे थे और फ़िर्औन की सेना पीछे पीछे और नदी बीच में आ गई थी और बचने को कोई विधि न रही थी। एक तरफ़ शत्रु थे, एक तरफ़ नदी) हमने तुम्हारे लिये नदी को फाड़ दिया और तुम्हें (उस में मार्ग देकर) बचा लिया और (जब फ़िर्औनी इस मार्ग में उतरे, तो) फ़िर्औनियों को डुबो दिया और तुम (दूसरे किनारे पर यह सब तमाशा) देख रहे थे (कि नदी मिल गई और फ़िर्औन अपनी समस्त सेना सहित डूब गया) ॥ और (हाँ वह भी याद है,) जब हमने मूसा से (तौरात देने के सम्बन्ध में) चालीस (दिन) रात का वादा किया (था) और तुम उन के पीछे (पूजा करने के लिये) बछड़े को पकड़ बैठे (थे**) और तुमने (इस कार्य से अपने ही ऊपर) अत्याचार किया था (अपने ही साथ अन्याय किया था, भला मनुष्य और पशुओं की पूजा करे) ॥ (ख़ैर) फिर हमने इस के बाद (अर्थात् इस ख़ता पर भी) तुम्हें क्षमा कर दिया, जिस से कि तुम (हमारे) कृतज्ञ हो जाओ ॥ और (उस समय को याद करलो) जब हमने मूसा को किताब दी और (एक) क़ानून (न्याय विधान) भी दिया, जिससे कि (उसकी सहायता से) तुम (असत्य व सत्य परखने का) तरीक़ा मालूम करलो ॥ और (फिर) जब मूसा ने अपनी जाति वालों से कहा कि ऐ मेरे भाइयो ! तुमने बछड़े (की पूजा) को ग्रहण कर के अपने ऊपर (बड़ा ही) अत्याचार किया है—

* टीका—इस से उस शफ़ाअत की नफ़ी (अभाव) न समझनी चाहिये, जिस की अहल-सुन्नत श्रद्धा रखते हैं। शफ़ाअत एक ऐसा शब्द है, जिसका अर्थ सिफ़ारिश के शब्द से नहीं हो सकता। इस कारण कि सिफ़ारिश का शब्द उस मनुष्य के लिये बोला जाता है, जो किसी राजा तथा श्रेष्ठ पुरुष से किसी दुखी मनुष्य के कल्याणार्थ कुछ कहे, परन्तु शफ़ाअत शब्द का तात्पर्य इस्लामी मत में यह है कि पैग़म्बर या और सत पुरुष ख़ुदा के सन्मुख पापी मनुष्यों को क्षमा करने के हेतु कहेंगे और इसी को शफ़ाअत करना कहते हैं। हिन्दी कोष में सिफ़ारिश शब्द का अर्थ गुण प्रशंसा किया गया है, परन्तु गुण प्रशंसा शफ़ाअत से बिल्कुल अलग चीज़ प्रतीत होती है :—हसन निज़ामी ॥

† टीका—बनी इस्राईल कहा करते कि हम कैसे ही पाप करें, हम पर नर्क दंड नहीं हो सक्ता। क्योंकि हमारे बाप दादा पैग़म्बर थे, वह ख़ुदा से हमारी मुक्ति करा लेंगे। इसी का खंडन उक्त लिखित आयत में किया गया है, फिर आज्ञा होती है :—हसन निज़ामी ॥

‡ टीका—घटना इस प्रकार है कि एक रात को फ़िर्औन ने स्वप्न देखा, नजूमियों ने इस स्वप्न का यह प्रभाव बताया कि इस साल इस्राईल के वंश में एक लड़का पैदा होगा, जो तेरे धर्म और तेरे राज्य को नष्ट कर देगा। फ़िर्औन ने यह सुन कर आज्ञा देदी कि इस्राईल के वंश में इस साल जितने लड़के पैदा हों, उन्हें चुन चुन कर क़त्ल कर दो और लड़कियों को सेवा सुश्रुषा के लिये रहने दो। मगर अल्लाह के मुक़ाबले में कौन सफल हो सकता है ? अल्लाह ने हज़रत मूसा अलैहि-स्सलाम को इसी कष्ट और क़त्ल आम के समय में पैदा किया और स्वयं फ़िर्औन से पालन कराया :—हसन निज़ामी ॥

** टीका—हज़रत मूसा अलैहि-स्सलाम बनी इस्राईल को ख़ूब समझा कर और अच्छी तरह कह सुन कर कोह तूर (एक पहाड़ का नाम) पर गये थे कि चालीस दिन का चिल्ला कर के ख़ुदा से अपने और तुम्हारे लिये एक नेअ़मत लाऊँगा, मगर इन के जाते ही सामरी नामक एक मनुष्य ने इन्हें बछड़े की पूजा पर तैयार कर लिया। इस आयत में इसी की तरफ़ इशारा है:—हसन निज़ामी ॥

(पृष्ठ १० का शेष) पीठ समतल हो जाय, तो उसे रुकूअ़ कहते हैं और जब अपने मस्तिष्क और नाक को अपने दोनों हाथों के बीच पृथ्वी पर टेक दें, तो उसे सज्दा कहते हैं :—हसन निज़ामी ॥

الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ وَإِذْ قُلْتُمْ
يٰمُوسَىٰ لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً
فَأَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۝ ثُمَّ
بَعَثْنٰكُمْ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ
وَالسَّلْوَىٰ كُلُوا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ
وَمَا ظَلَمُونَا وَلٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝
وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا
حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا
وَقُولُوا حِطَّةٌ نَغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ وَسَنَزِيدُ
الْمُحْسِنِينَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ

الذي

तो (अब) अपने ख़ालिक़ की जनाब में तौबा करो और (वह यह है कि अपने लोगों के हाथों से) अपने तईं हलाक करो। जिसने तुम को पैदा किया है, उस के नज़दीक तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है। फिर (जब तुम्हारी तरफ़ से तामील हुक्म की आमादगी ज़ाहिर हुई, तो) ख़ुदा ने तुम्हारी तौबा क़बूल करली। बेशक वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला, मेहर्बान है ० और (वह वक़्त याद करो) जब तुम ने (यानी तुम्हारे बड़ों ने मूसा से) कहा था कि ऐ मूसा ! जब तक हम ख़ुदा को ज़ाहिर में न देख लें, हम तो किसी तरह तुम्हारा यक़ीन करने वाले हैं-नहीं, (कि ख़ुदा ही तुम से कलाम कर रहा है,) इस पर तुम को बिज्ली ने आ दबोचा और तुम देखा किये ० फिर तुम्हारे मरे पीछे हम ने तुम को जिला उठाया कि शायद तुम शुक्र करो ० और हम ने तुम पर अब्र का साया किया और तुम पर मन्न व सल्वा भी उतारा (और इजाज़त दी कि) हम ने जो तुम को (यह उम्दा और) पाक़ीज़ा रोज़ियाँ दी हैं, (शौक़ से) खाओ और उन लोगों ने हमारा तो कुछ नहीं बिगाड़ा, लेकिन (कुछ) अपना ही खोते रहे ० और (वह वक़्त याद करो) जब हमने तुम को इजाज़त दी कि इस गाँव (अरीहा) में जाओ और उस में जहाँ चाहो, बा फ़राग़त खाओ (पियो) और दर्वाज़े में सज्दा करते हुए दाख़िल होना और (मुँह से हित्ततुन् कहते जाना, तो हम तुम को तुम्हारी ख़ताएँ माफ़ कर देंगे और जो (हमारा) हुक्म अच्छी तरह बजा लाएँगे, उन को ऊपर से (सवाब) देंगे (सो अलग) ० तो जो लोग (उन में) शरीर थे, दुआए (इस्तिग्फ़ार) जो उन को बताई गई थी, उस को बदल कर दूसरी (बात) बोलने लगे—

(चलो अब भी) अपने सृष्टि कर्त्ता से तौबा करो (क्षमा माँगो) और अपने शरीर का बलिदान दो* तुम्हारे सृष्टि कर्त्ता की इच्छानुसार तुम्हारे लिये यही श्रेष्ठ है (तो सबने अपने शरीर का बलिदान कर दिया)॥ और अल्लाह ने तुम्हारी † (अर्थात् तुम्हारे पूर्वजों की) तौबा स्वीकार करली। सत्य यह है कि वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला (और तौबा करने वालों पर) कृपालु है। (कैसा ही उसे नाराज़ कीजिये, एक बार बिनय रूप से मस्तक झुकाने में क्षमा दे देता है)॥ और (याद करो ‡ उस समय को) जब तुमने कहा (था) कि ऐ मूसा ! हम तुम्हारे (शब्दों) पर कदापि विश्वास नहीं करेंगे (कि ख़ुदा ही तुम से सम्भाषण कर रहा है) जब तक ख़ुदा को प्रत्यक्ष न देखलें। फिर (इस अनादर पूर्ण भावनाओं की सज़ा में) बिजली ने तुम्हें आ दबोचा (था) और तुम देखते के देखते रह गये थे॥ फिर (क्योंकि मूसा को चिन्ता हुई कि जाति वाले पूछेंगे कि हमारी जाति के आदमी कहाँ गये, तो क्या कहूँगा। इस लिये) हम ने तुम्हारे मरने के बाद (अर्थात् तुम्हारे पूर्वजों को उन के मरने के बाद द्वितीय बार) जीवित कर दिया (इस विचार से कि) कदाचित् तुम कृतज्ञ हो और (तीह ** के जंगल में) हमने तुम पर मेघ की छाया की और हमने तुम पर (आर्थात् तुम्हारे लिये) मन व सलवा उतारा (और कह दिया कि यह) पवित्र भोजन जो हम तुम्हें देते हैं, उसे (ख़ूब) खाओ (दूसरे दिन के लिये बचाने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने न माना। दूसरे दिन के लिये थोड़ा सा बचा लिया) और (इस से) उन्हों ने हमारी कुछ हानि नहीं की, किन्तु अपने ही प्राणों पर अत्याचार करते रहे। (वह बचा हुआ भोजन सड़ गया और अल्लाह को नाराज़ किया, सो अलग)॥ और (वह समय याद करो) जब हम ने (तुम से) कहा (था) कि (जाओ) इस ग्राम में चले जाओ और इस में से (हर वस्तु को) जिस जगह चाहो बेरोक टोक खाओ, (परन्तु दर्वाजे में कृतज्ञता के) सज्दे (मस्तक झुकाना) करते हुये प्रवेश करना और (ज़बान से) कहते जाना "हित्ततुन्" (हमारी तौबा है, हमारी तौबा है, तब) हम तुम्हारे अपराध क्षमा कर देंगे और (शुद्ध हृदय से) नेकी करने वालों (अर्थात् अच्छी तरह आज्ञा पालन करने वालों) को हम और (सवाब अर्थात् पुण्य) भी प्रदान करेंगे। मगर इन अत्याचारियों ने (यह अत्याचार किया कि) जो शब्द इन्हें बतलाया गया था, (उपहास की रीति से) उस को बदल डाला—

* टीका—तीन समूह थे; एक वह कि जिन्हों ने बछड़े की पूजा की, दूसरे वह जिन्हों ने स्वयं तो पूजा नहीं की, किन्तु पूजा करने वालों को रोका भी नहीं, तीसरे वह, जिन्होंने खुद भी पूजा नहीं की और पूजा करने वालों को रोकते भी रहे। इस तीसरे समूह का तौबा और बलिदान से कोई सम्बन्ध नहीं है। दूसरे समूह को आज्ञा हुई थी कि पहिले समूह (गिरोह) को क़त्ल करो, जिस से न रोकने की सज़ा और पूजने की सज़ा साथ साथ हो जाय:—हसन निज़ामी॥

† टीका—"तुम्हारी" या "तुम्हारे" या "तुम्हारा" का शब्द जहाँ आ रहा है, या तुम को मुक्ति दी, तुम पर एहसान किया, तुम ऐसे, तुम वैसे, यहाँ इस से तात्पर्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के ज़माने के यहूदी नहीं हैं, बल्कि उन के बाप दादा आदि उनके पूर्वज हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के समय के यहूदियों को इन के बुज़ुर्गों (पूर्वजों) की दशा की याद दिला कर आकर्षित किया गया है कि शिक्षा लें और उचित प्रभाव पड़े:—हसन निज़ामी॥

‡ टीका—बनी इस्राईल के सत्तर चुने हुए आदमी तूर पहाड़ पर हज़रत मूसा के साथ ख़ुदा की बातें अपने कानों से सुनने गये थे, परन्तु बातों की आवाज़ सुन कर भी विश्वास न हुआ और ख़ुदा को साक्षात् देखने की कामनायें करने लगे। इस अनादर की यह सज़ा दी गई कि बिजली ने गिर कर इन सत्तर के सत्तरों को नष्ट कर डाला:—हसन निज़ामी॥

** टीका—तीह एक बड़ा जंगल था। बनी इस्राईल जब फ़िरऔन के डूब जाने के उपरान्त मिस्र से शाम को जा रहे थे, तो एक अवज्ञा के कारण इस में जा फँसे थे और बहुत दिनों तक उससे बाहर निकलने का मार्ग न पा सके थे। जब इन के डेरे फट गये और उन के पासका अन्न समाप्त हो चुका, तो हज़रत मूसा की प्रार्थना से ख़ुदा ने मेघ को उन की छत बना दिया और खाने का यह प्रबन्ध किया कि प्रति दिन रात को मन (तुरंजबीन जैसी एक वस्तु) के ढेर लग जाते थे और शाम को सलवा (तीतर जैसे एक जानवर) का समूह आ बैठता था। तात्पर्य्य यह कि घर से वे घर और देश से निर्वासित होने का कोई कष्ट न था कि दूसरा अपराध और हो गया, अर्थात ख़ुदा पर भरोसा न हुआ और मन व सलवा को बचा बचा कर रखने की सूझी:—हसन निज़ामी॥

الَّذِیْ قِیْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا
رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا یَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذِ
اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ
بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا
عَشْرَةَ عَیْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ
كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِی
الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ ۝ وَاِذْ قُلْتُمْ یٰمُوْسٰى لَنْ
نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ
یُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآىِٕهَا
وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ
الَّذِیْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِیْ هُوَ خَیْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا
فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَیْهِمُ الذِّلَّةُ وَ
الْمَسْكَنَةُ ۗ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

तो हमने उन शरीरों पर उन की ना फ़र्मानी की सज़ा में आसमान से अज़ाब नाज़िल किया ० और (वह वाक़िआ भी याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी की दर्ख्वास्त की, तो हमने फ़र्माया कि (ऐ मूसा !) अपनी लाठी पत्थर पर मारो. (लाठी का मारना था) कि पत्थर से बारह चश्मे फूट निकले (और) सब लोगों ने (अपना) अपना घाट मालूम कर लिया (और इज़्न आम हो गया कि) अल्लाह की (दी हुई) रोज़ी खाओ और पियो और मुल्क में फ़साद न फैलाते फिरो ० और (वह वक़्त भी याद करो) जब तुम ने (मूसा से) कहा कि ऐ मूसा ! हम से तो एक खाने पर नहीं रहा जाता, तो आप हमारे लिये अपने पर्वर्दिगार से दुआ कीजिये कि ज़मीन से जो चीज़ें उगती हैं यानी तरकारी और ककड़ी और गेहूँ और मसूर और प्याज़ (मन व सल्वा की जगह) हमारे लिये पैदा करे। (मूसा ने) कहा कि जो चीज़ बेहतर है, क्या तुम उस के बदले में ऐसी चीज़ लेनी चाहते हो, जो घटिया है ? (अच्छा तो) किसी शहर में उतर पड़ो कि जो माँगते हो, (वहाँ) तुम को मिलेगा और उन पर ज़िल्लत और मोहताजी लेस दी गई और ख़ुदा के ग़ज़ब में आ गये। यह इस लिये कि वह—

(और दूसरा शब्द कहने लगे अर्थात् "हिन्तुन्" तौबा, तौबा के बजाय "हिन्तुन्" यानी गेहूँ) अतः हमने उनको अवज्ञा (और उपहास) के कारण कृतघ्नों पर ईश्वरीय दंड उतारे (और एक ऐसा रोग भेजा कि सब नष्ट भ्रष्ट हो गये) ॥

और (वह बात भी याद करो कि) जब (मन व सलवा खाकर मूसा की जाति वालों को प्यास लगी और) मूसा ने अपनी जाति के लिये पानी के हेतु प्रार्थना की, तो हम ने (उन से) कहा कि तुम अपनी लकड़ी (अमुक) पत्थर पर मारो, सो (उन्हों ने लकड़ी मारी, तत्क्षण) इस (पत्थर) से बारह सोते फूट निकले (क्योंकि मूसा की जाति के बारह ही कुटुम्ब थे) और प्रत्येक कुटुम्ब ने अपने २ पन घाट मालूम कर लिये (और हुक्म दे दिया गया) कि (मन व सलवा) खाओ और (यह पानी) पियो कि (दोनों) अल्लाह के दिये हुए भोजन है । (हाँ, खा पी कर ज़रा अपने आपे में रहना) और (मस्त हो कर) पृथ्वी पर (गाँव २ और शहर २) उधम मचाते (और) विद्रोह फैलाते न फिरना ॥

और (उस समय को भी याद करो) जब तुम ने (मूसा से) कहा (था) कि ऐ मूसा ! हम से तो (दिन प्रति दिन) एक भोजन पर नहीं रहा जायगा। आप अपने पालन कर्त्ता से हमारे लिये प्रार्थना कीजिये कि हमारे लिये (मन सलवा की जगह) ऐसी चीज़ें भेजे, जो पृथ्वी से उगा करती हैं; जैसे शाक, पात, खीरा, ककड़ी, गेहूँ, मसूर, प्याज़ ॥

(इस पर मूसा ने) कहा कि (अज्ञानो !) क्या (तुम) इन वस्तुओं के बदले में जो सर्वोत्तम हैं, वह वस्तुयें लेनी चाहते हो, जो (इन से) निकृष्ट हैं ? (अच्छा तुम्हारी इच्छा) । किसी शहर में चले जाओ (वहाँ) तुम्हारी इच्छानुसार वस्तुयें तुम्हें मिल जायेंगी ॥

और अनादर व आधीनता इन के (पीछे) चिमटा दी गई। (वह सदैव के लिये दूसरों की दृष्टि में नीच हुये और उन में से उच्च आकांक्षायें जाती रहीं) और (वह) ख़ुदा के क्रोध में आ गये ॥

(और) यह (अनादर व आधीनता उन पर) इस लिये छा गई कि—

(पृष्ठ १४ का शेष)

इस पर ख़ुदा तआला ने तूर पहाड़ के एक टुकड़े को आज्ञा दी कि इन लोगों के ऊपर आ जाय और इन पर उतरने लगे और इन लोगों ने इस पहाड़ के नीचे से भागना चाहा, तो जिधर गये, उधर आग पैदा होगई और रास्ता रुक गया। अन्त में लाचार हो कर इक़रार करना पड़ा कि तौरेत के अनुसार कार्य करेंगे:—हसन निज़ामी ॥

** टीका—आज्ञा हुई थी कि सनिश्चर के दिन मछली का शिकार न खेलना, लेकिन इन नीच मनुष्यों ने यह चालाकी की कि दरिया के किनारे गढ़े खोद लिये और शुक्रवार के दिन ऐसा प्रबन्ध करते कि दरिया का कुछ पानी मछलियों सहित इन में आ जाता। अब उन के विचार में यह शुक्रवार का शिकार होता था और वह सनिश्चर को इन का निकालना केवल निकालना समझते थे, शिकार नहीं—इस हेर फेर और नीचता पूर्ण होशियारी का दंड उन्हें यह दिया गया कि बन्दर बन गये और हर तरफ़ से उन पर दुर २ फिट फिट होने लगी। ज़कात के रुपये को हाँड़ियों में रख कर और गेहूँ के नीचे छिपा कर देने और फिरघर के घर इन हाँड़ियों का नीलाम करा लेने वाले मुसल्मान इस घटना पर ध्यान दें:—हसन निज़ामी ॥

كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ
بِغَيْرِ الْحَقِّ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارٰى
وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا
مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا
مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ ۝ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ فَلَوْلَا
فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخَاسِرِينَ
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ
فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ۝ فَجَعَلْنَاهَا
نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً

للمتقين

अल्लाह की आयतों से इन्कार और पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल किया करते थे (और नीज़) यह इस लिये कि उन्हों ने ना फ़र्मानी की और हद से बढ़ (बढ़) जाते थे ० बेशक मुसलमान और यहूदी और ईसाई और साबी इन में से जो लोग अल्लाह पर और रोज़ आख़िरत पर ईमान लाये और अच्छे काम करते रहे, तो उनको उन (के किये) का अज्र उनके पर्वर्दिगार के हां मिलेगा और उन पर न (किसी क़िस्म का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वह (किसी तरह) आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे ० और (वह वक़्त याद करो) जब हमने तुम से (तौरात की तामील का) इक़रार लिया और तूर (पहाड़) को उठा कर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया (और फ़र्माया कि यह किताब तौरात) जो हमने तुम को दी है, इसको मज़बूती से पकड़े रहो और जो इस में (लिक्खा) है, (उसको) याद रक्खो, ताकि तुम पर्हेज़गार बन जाओ ० फिर इसके बाद तुम फिर गये, तो अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उसकी मेहर न होती, तो तुम (बड़े) घाटे में आगये होते ० और अलबत्ता उन लोगों (के अन्जाम) को तो तुम जान ही चुके हो, जिन्हों ने तुम में से हफ़्ते के दिन (का अदब उठा देने) में ज़ियादती की, तो हम ने उन से कहा बन्दर बन जाओ (कि जहाँ जाओ) धत्कारे (जाओ) ० पस हम ने इस वाक़िए को उन लोगों के लिये, जो इस (वाक़िए के) वक़्त मौजूद थे और उन लोगों के लिये, जो इस (वाक़िए) के बाद आने वाले थे, (मूजिब) इब्रत बनाया और पर्हेज़गारों के लिये नसीहत ० —

(वह) ख़ुदा के संकेतों (और आज्ञाओं) से फिर जाते थे और व्यर्थ (बे ख़ता) नबियों को मार डालते थे (और) यह (अनादर व आधीनता उन पर) इस लिये आ गई कि (उन्हों ने) अवज्ञा की और आज्ञा पालन से (निकल) निकल जाते थे ॥

(हाँ) निस्सन्देह जो मनुष्य मुसलमान हैं और (या) जो मनुष्य यहूदी * हैं और नसरानी व साइबी † हैं, (उन में से) जो भी ख़ुदा और प्रलय पर ईमान लाये और (उस ईमान को वचन और कर्मों से प्रमाणित करते रहे अर्थात्) शुभ कार्य (भी) किये गये, उनके लिये इन का फल इनके पालन कर्त्ता के पास (सुरक्षित) है और (उन का पद परलोक में यह होगा कि) न उन्हें (भविष्य के) भय से चिन्ता और न (इन्हें भूतकाल की) दुखिदा से कुछ सम्बन्ध ॥

और (उस समय को याद करो) जब हमने तुम से (तौरोत के मानने का) वचन लिया (था) और (यह वचन तुमने उस समय में किया था कि) तुम्हारे (सिरों के) ऊपर हमने (तूर) पहाड़ को (लटका कर) खड़ा कर दिया (था) ॥

(और कहा था कि) जो (किताब ‡) हमने तुम्हें दी है, उसे मज़बूती से पकड़ो और जो (आज्ञायें) उस में हैं (उन्हें) याद रक्खो, जिस से कि तुम संयमी हो जाओ ॥

फिर इस (वचन व इक़रार) के उपरान्त (भी) तुम फिर गये। सो (है—यह बस पैदा किये की लाज है, अन्यथा) तुम पर अल्लाह की दया और उस की कृपा न होती, तो तुम बिल्कुल नष्ट होजाते ॥

और उन लोगों का तो तुम्हें ज्ञान ही है, जिन्हों ने तुम में से (दाऊद के समय में) सनिश्चर (के दिन के बारे) में अत्याचार किया था और इस पर) हमने उन से कहा (था) "तुम नीच बन्दर होजाओ ** ॥

अतः इस घटना (दुःख) को हमने उन (लोगों) के लिये जो इन (क्रोध भाजनों) के सामने (अर्थात् इन बन्दरों के समय में) मौजूद थे और (उन लोगों के लिये) जो उनके उपरान्त (पैदा होने वाले) थे, शिक्षा (देने का उपाय) बना दिया और (इस में) परहेज़गारों (संयमियों) के लिये (भी) शिक्षा है ॥

* टीका—बनी इस्राईल कहते थे कि हम पैग़म्बर की सन्तान हैं और हम सब से श्रेष्ठ हैं। उपरोक्त लिखित आयत में ख़ुदा तआला ने इसी ओर संकेत करके फ़र्माया कि किसी की सन्तान होने से न लाभ है न हानि है। श्रेष्ठता और सम्मान तो केवल उन्हीं को प्राप्त है, जो ईमानदार हैं:—हसन निज़ामी ॥

† टीका—साइबियों का भी एक समुदाय हुआ है, जिस का नियम यह था कि हर धर्म में से अपनी बुद्धिनुसार कुछ अच्छी बातें चुन लिया करते थे; जैसे हज़रत इब्राहीम को पैग़म्बर स्वीकार करता था, ज़बूर की तिलावत (पाठ) करता था, काबे की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ता था:—हसन निज़ामी ॥

‡ टीका—घटना इस प्रकार है कि जब बनी इस्राईल को तौरात मिली, तो उन्हों ने कहा कि इस की आज्ञायें तो उठाये नहीं उठतीं, बड़ी कठिन और मुश्किल हैं ॥

لِلْمُتَّقِينَ ● وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ
أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا قَالَ أَعُوذُ
بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ● قَالُوا ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا
بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ ذَٰلِكَ
فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ● قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ
يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْنُهَا قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ
صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ● قَالُوا
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ
تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ●
قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ
وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَا شِيَةَ فِيهَا
قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا

और (वह वक़ याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा—अल्लाह तुम से फ़र्माता है कि एक गाय हलाल करो, वह लगे कहने क्या तुम हम से ठट्ठा करते हो ? (मूसाने) कहा, ख़ुदा मुझ को अपनी पनाह में रक्खे कि मैं ऐसा नादान बनूँ ० वह बोले अपने पर्वर्दिगार से हमारे लिये दर्ख़्वास्त करो कि हम को अच्छी तरह समझा दे कि वह (गाय) कैसी हो (मूसाने) कहा ख़ुदा फ़र्माता है कि वह गाय न बूढ़ी हो और न बछिया, दोनों में बीच की रास। पस तुम को जो हुक्म दिया गया है, (उस की तामील) कर चुको ० वह बोले अपने पर्वर्दिगार से हमारे लिये दर्ख़्वास्त करो कि हम को अच्छी तरह समझादे कि उसका रङ्ग कैसा हो ? (मूसाने) कहा, ख़ुदा फ़र्माता है कि वह गाय हो ज़र्द (और) उस का रङ्ग ख़ूब गहरा हो कि देखने वालों को भली लगे ० वह बोले कि अपने पर्वर्दिगार से हमारे लिये दर्ख़्वास्त करो कि हम को अच्छी तरह समझा दे कि वह (और) क्या (क्या सिफ़तें रखती) हो? हम को तो (इस रङ्ग की बहुतेरी) गाएँ एक ही तरह की दिखाई देती हैं, (कौन सी लें कौन सी न लें) और (अब की बार) ख़ुदाने चाहा तो हम ज़रूर (उसका) ठीक पता लगा लेंगे ० (मूसा ने) कहा, ख़ुदा फ़र्माता है, वह गाय हो—न तो कमेरी कि ज़मीन जोतती हो और न खेती को पानी देती, सही सालिम (यक रङ्ग) उस में किसी तरह का दाग़ (धब्बा) न हो। वह बोले (हाँ) अब तुम ठीक (पता) लाए। ग़रज़ उन्हों ने गाय हलाल की और उन से तवक़्क़ो न थी कि करेंगे ० —

और (उस समय को भी याद करो) जब (मूसा की जाति में आमील नामक एक मनुष्य मारा गया और उसके मारने वाले का पता न चलता था, तब) मूसा ने अपनी जाति वालों से कहा कि ख़ुदा (ने इस गुप्त भेद को प्रकट करने का यह उपाय तजवीज़ किया है कि) तुम्हें आज्ञा देता है कि एक गाय बध करो (और उसके माँस का कोई सा टुकड़ा मृतक मनुष्य के शरीर पर रक्खो, मुर्दा बोल उठेगा और स्वयं अपने घातक को बता देगा) ॥

(तो) उन्होंने (अर्थात् मूसा की जाति वालों ने) कहा तुम हम से हास्य करते हो (हमारा उपहास उड़ाते हो, हमारे मामले को मज़ाक़ में डालते हो, गाय का माँस लगने से कहीं मुर्दे जी सके हैं ?) ॥

(मूसा ने) कहा ख़ुदा की पनाह अर्थात् शरण, जो मैं अज्ञानों (अहमक़ों) के समान काम करूँ (उपहास करना अशिक्षित और अज्ञानों का काम है, मैं तो जो कुछ कह रहा हूँ , ख़ुदा की आज्ञानुसार कह रहा हूं) ॥

(इस पर) वह (सब) कहने लगे (अच्छा यही बात है, तो) अपने पालन कर्त्ता से हमारे लिये प्रार्थना करो कि हमें (यह) बता दे कि वह (गाय) कैसी हो ? (अर्थात् कितनी आयु की हो) ॥

(मूसा ने) कहा कि ख़ुदा तआला (यह) फ़रमाता है कि वह गाय न बूढ़ी हो न बच्चा हो, बीच की रास की, बस) जवान हो। बस अब (हठ करनी छोड़ो और) जो कहा गया है, उसे करो ॥

कहने लगे-हमारे लिये अपने पालन कर्त्ता से प्रार्थना करो कि हमें (इतना और थोड़ा) समझा दे कि उसका रंग कैसा हो ? कहा, वह फ़र्माता है—गाय पीले रंग की हो (ऐसा पीला कि देखने वालों को भला लगे) ॥

(अब भी सन्तुष्ट नहीं हुए) बोले (तीसरी बार और) अपने अल्लाह से हमारे लिये पूछ लो कि (पीले रंग और बीच की रास के समान रूप की गायें हमें बहुत दिखाई दे रही हैं। हमें (कुछ और अता, पता) बता कि वह (गाय और) क्या (क्या विशेषता रखती) हो और (अब के) अल्लाह ने चाहा*, तो हम (बिल्कुल) समझ जायेंगे ॥

* टीका—हदीस में आया है कि यदि वह इन्शाअल्लाह न कहते, तो कभी भी न समझते और यूं ही भटकते रहते:—हसन निज़ामी ॥

कहा, ख़ुदा फ़र्माता है कि वह गाय सधाई हुई न हो कि पृथ्वी में हल चलाये और न खेत को पानी देती हो । (हां,) स्वस्थ हो, उस के (शरीर पर) कोई दाग़ धब्बा (भी) नहीं होना चाहिये ॥

कहा, (बस) अब तुम ठीक (पता) ले आये। फिर उन्होंने उसे (तलाश करके मोल लिया और) बध किया और (यद्यपि उनके हठ से) आशा न (रही) थी कि वह (ऐसा) करेंगे ॥

يَفْعَلُونَ ۝ وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيهَا
وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝ فَقُلْنَا
اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى وَيُرِيكُمْ
اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ
مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ۚ
وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ۚ
وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ۚ وَاِنَّ
مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ اَفَتَطْمَعُونَ اَنْ يُّؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ
كَانَ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ
يُحَرِّفُونَهٗ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝
وَاِذَا لَقُوا الَّذِينَ اٰمَنُوا قَالُوٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَا
بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوٓا اَتُحَدِّثُونَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ

और (ऐ बनी इस्राईल !) जब तुम ने एक शख़्श को मार डाला और लगे उस (के बारे) में झगड़ने (कोई किसी को क़ातिल बताता, कोई किसी को) और जो तुम छुपाते थे, अल्लाह को उस का (पर्दा) फ़ाश करना (मंज़ूर) था ० बस हम ने कहा कि गाय (के गोश्त) का कोई टुकड़ा मुर्दे (की लाश) को छुवादो। इसी तरह (क़यामत में) अल्लाह मुर्दों को जिलायेगा और (वह दुनिया में) तुम को अपनी (क़ुद्रत की) निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो (कि क़यामत का होना बर हक़ है) ० फिर इस के बाद तुम्हारे दिल (ऐसे) सख़्त हो गए कि गोया वह पत्थर हैं, बल्कि (उन से भी) सख़्त तर और पत्थरों में तो बाज़े ऐसे भी (होते) हैं कि उन से नहरें फूट निकलती हैं और बाज़ पत्थर ऐसे भी (होते) हैं, जो फट जाते हैं और उन से पानी झिरता है और बाज़ पत्थर ऐसे भी (होते) हैं, जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं और जो कुछ तुम (लोग) कर रहे हो, अल्लाह उस से बे ख़बर नहीं ! (मुसल्मानो !) क्या तुम को तवक़्क़ो है कि (यहूद) तुम्हारी बात तस्लीम कर लेंगे और (इन का हाल यह है कि) इन में कुछ लोग ऐसे भी हो गुज़रे हैं कि कलाम ख़ुदा सुनते थे, फिर उसके समझे पीछे दीदा व दानिस्ता उस को कुछ का कुछ कर देते थे ० और जब ईमान वालों से मिलते हैं, तो कह देते हैं कि हम भी ईमान ला चुके हैं और जब तनहाई में एक दूसरे के पास होते हैं, तो कहते हैं कि जो कुछ (तौरात में) ख़ुदा ने तुम पर ज़ाहिर किया है—क्या तुम मुसल्मानों को उसकी ख़बर किये देते हो—

और (ऐ बनी इस्राईल ! उस समय को फिर याद करो कि) जब तुम ने (तो) एक मनुष्य (आमील) का ख़ून कर (ही) दिया (था और) फिर उस के बारे में तुम झगड़ने लगे थे (अर्थात् एक दूसरे पर इस ख़ून को थोपने लगे थे) और (यह नहीं जानते थे कि) जो तुम छिपाते हो, ख़ुदा उसे प्रकट करने वाला है ॥

(चुनाँचे,) फिर (यह हुआ कि गाय के बध होने पर) हम ने कहा कि इस (गाय के माँस) का टुकड़ा इस (मृतक) को छुवाओ, (वह जी उठा और उस ने अपने प्राण घातक को पहिचान लिया। उस के दो भतीजे थे ; जिन्हों ने माल के लिये उस की जान ली थी) । इसी तरह (प्रलय के दिन) अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और (इस दुनिया में वह) तुम्हें अपनी (शक्ति की) निशानियाँ दिखाता है, जिस से कि तुम बुद्धि से काम लो (और समझो कि प्रलय का होना असम्भव नहीं है) ॥

(किन्तु तुम ने अल्लाह के ऐसे २ चिन्ह देखे) इस के उपरान्त (भी) फिर तुम्हारे हृदय कठोर हो गये। बस वह पत्थर के समान हैं या (पत्थरों से भी अधिक) कठोर हैं ॥

और (यह इस लिये कि) पत्थरों (ही) में कुछ पत्थर वह (होते) हैं, जिन से फूट कर नहरें बहती हैं और कुछ (पत्थर) ऐसे (भी) हैं कि फट जाते हैं और उन से पानी रिसा करता है और कुछ (पत्थर) ऐसे हैं, जो अल्लाह के भय से गिर पड़ते हैं और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से बे ख़बर नहीं है, (उस ने तुम्हें इतनी बातें कुछ देख कर ही कही हैं) ॥

(मुसल्मानो !) अब भी क्या तुम्हें (इन यहूदियों से) आशा है कि तुम्हारे कहने सुनने से इस्लाम को स्वीकार कर लेंगे। यद्यपि इन में (ऐसे २) लोग हो चुके हैं, जो (मूसा के साथ तूर पहाड़ पर जाकर) अल्लाह का कलाम (स्वयं अपने कानों से) सुनते थे (और) समझ लेने के बाद फिर उस में परिवर्तन कर डालते थे और (उन का यह कार्य्य) जान बूझ कर (था। पहाड़ पर हुक्म सुना और ऐसा प्रकट किया कि बिल्कुल उस के अनुसार आचरण करेंगे और करायेंगे और नीचे आये और कह दिया कि ख़ुदा के शब्द यह थे और हमने उन के यह अर्थ समझे हैं और मूसा ने वह। तुम्हारा दिल चाहे मूसा की मनो, तुम्हारा जी चाहे हमारी) ॥

और (वही दशा उन की मुहम्मद के समय में है) जब मुसल्मानों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम मुसल्मान हैं और जब आपस में एक दूसरे से एकान्त में बात चीत करते हैं, तो (यहूदी निःसंकोच होकर मुनाफ़िक़ यहूदियों से यह) वार्तालाप करते हैं कि (अरे) क्या तुम (तौरेत का विषय) जिस से अल्लाह ने तुम को सूचित किया है, मुसल्मानों को बताये देते हो ? —

عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ
أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ
وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ
الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ۝
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ
ثُمَّ يَقُولُونَ هَٰذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ
ثَمَنًا قَلِيلًا فَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ
مِمَّا يَكْسِبُونَ ۝ وَقَالُوا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا
مَعْدُودَةً قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ
يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا
لَا تَعْلَمُونَ ۝ بَلَىٰ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ
بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

कि (कल कलाँ को) तुम्हारे पर्वर्दिगार के रूबरू उसी बात की सनद पकड़ कर तुम से झगड़ें, तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते ? (लेकिन) क्या इन लोगों को यह बात मालूम नहीं कि जो कुछ छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, अल्लाह (सब कुछ) जानता है ० और बाज़ इनमें अनपढ़ हैं, जो (मुँह से लफ़्ज़ों के) बुड़बुड़ा लेने के सिवा किताब (इलाही के मतलब) को (कुछ भी) नहीं समझते और वह फ़क़त ख़याली तुक्के चलाया करते हैं (और बस) ० पस अफ़सोस है—उन लोगों पर, जो अपने हाथों से तो किताब लिखें, फिर (लोगों से) कहें कि यह ख़ुदा के यहां से (उतरी) है, ताकि उस के ज़रिये से थोड़े से दाम (यानी दुनियावी फ़ायदे) हासिल करें। पस अफ़सोस है उन पर, कि उन्होंने अपने हाथों लिखा और (फिर) अफ़सोस है उन पर, कि वह ऐसी कमाई करते हैं ० और कहते हैं कि गिन्ती के चन्द रोज़ के सिवा (दोज़ख़ की) आग हम को छुएगी (भी तो) नहीं। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो, क्या तुमने अल्लाह से कोई इक़रार ले लिया है और अल्लाह अपने इक़रार के ख़िलाफ़ नहीं करेगा या बे जाने बूझे अल्लाह पर झूठ बोलते हो ० वाक़ई बात तो यह है कि जिसने पल्ले बांधी बुराई और अपने गुनाह के फेर में आ गया, तो ऐसे ही लोग दोज़ख़ी हैं कि वह हमेशा (हमेशा) दोज़ख़ ही में रहेंगे० और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल (भी) किये—

जिस का अनिवार्य (लाज़मी) फल यह होगा कि इसकी सहायता से वह अल्लाह के सामने तुम्हारे साथ शास्त्रार्थ करेंगे *। क्या तुम इतना नहीं समझते (कि शत्रु से भेद गुप्त रखना चाहिये, अन्यथा इस तरह तो हम न परलोक के रहेंगे न इस लोक के)॥

* टीका—कुछ मुनाफ़िक़ ख़ुशामद के तौर पर मुसल्मानों को तौरेत के वह हिस्से दिखाया करते थे, जिनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र था, तो उसकी सूचना पाकर यहूदियों ने निःसंकोच होकर कहा कि यह तुम्हारे ख़िलाफ़ मुसल्मानों के पास अल्लाह के हां प्रमाण हो जायगा कि इन के इल्म में मुहम्मद का रसूल होना था, फिर भी इन्होंने विश्वास नहीं किया अर्थात् मुसल्मान नहीं हुए:—हसन निज़ामी॥

क्यों जी ! इन (अहमक़ों) को यह नहीं मालूम—कि जो कुछ (वह) छिपाते हैं और जो कुछ (वह) प्रकट करते हैं, अल्लाह (दोनों को) जानता है॥

और (हां) इन में कुछ मनुष्य हैं, जो (लिखे) पढ़े नहीं हैं, (यह मनुष्य) पुस्तक (तौरेत) का (तो) ज्ञान नहीं रखते, किन्तु (कुछ) मतलब की (चित्त प्रसन्न करने वाली) बातें (इन्हें अपने नेताओं की घड़ी हुई कंठाग्र) याद हैं (जैसे स्वर्ग में केवल यहूदी जायँगे या हमारे पूर्व जन पैग़म्बर थे, वह हमें क्षमा करा देंगे) और (वास्तव में बात है कुछ) नहीं, सिवा इसके कि उन्होंने (व्यर्थ) ख़याली पुलाव पका रखे हैं। बस, (बड़ी) दुर्दशा उनकी होगी, जो पुस्तक (तौरेत) को अपने हाथों से (उलट पलट कर) लिख डालते हैं (और) फिर कहते हैं, (लो) यह अल्लाह की ओर से (आई) है (क्यों ? केवल) इस लिये कि इसके द्वारा कुछ पैसे प्राप्त करें॥

सो खेद है उन पर कि उन्होंने अपने हाथों (का कैसा बुरा उपयोग किया कि उन) से (ख़ुदा का कलाम कुछ का कुछ कर के) लिखा और खेद है उन पर कि (उनके मुक़ाबले में) कमाई—क्या कमाई है (संसार का थोड़ा बहुत) आराम मिल जाता होगा। ख़ैर, इन्हें अपने काम और काम के परिणाम का प्रतिफल भुगतने को उद्यत रहना चाहिये और (यहूदी) कहते हैं, हमें (नर्क की) आग केवल गिन्ती के (थोड़े) दिनों के कदापि नहीं छुवेगी। (कदाचित् इतने दिन छुवे, जितने दिन हमने बछड़े की पूजा की थी। ऐ रसूल ! तुम उनसे) कहो (उन से पूछो) कि क्या तुमने अल्लाह से (कोई बचन ले लिया है) कि अल्लाह अपने (उस) प्रतिज्ञा के विरुद्ध न करेगा या (यह व्यर्थ अंधाधुंद) बेजाने बूझे अल्लाह के ऊपर (एक) बात कहे (और लगाये) देते हो॥

(झूठे हैं, ख़ुदा पर दोष लगाते हैं, कैसे थोड़े दिन) बल्कि जो (जान बूझ कर) पाप करते हैं और पापों में फँसते चले जाते हैं, वा नर्की हैं और सदैव नर्क में रहेंगे॥

और जन्नती वह हैं, जो ईमानदार और पुण्यात्मा हैं—

أُولَٰئِكَ أَصْحَٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ۝
وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَٰقَ بَنِي إِسْرَٰٓءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ
إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَٰلِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَٰمَىٰ وَالْمَسَٰكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا
وَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا الزَّكَوٰةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ
إِلَّا قَلِيلًا مِّنكُمْ وَأَنتُم مُّعْرِضُونَ ۝ وَإِذْ
أَخَذْنَا مِيثَٰقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَآءَكُمْ وَلَا
تُخْرِجُونَ أَنفُسَكُم مِّن دِيَٰرِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ
وَأَنتُمْ تَشْهَدُونَ ۝ ثُمَّ أَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُونَ
أَنفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِّنكُم مِّن دِيَٰرِهِمْ
تَظَٰهَرُونَ عَلَيْهِم بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَٰنِ وَإِن
يَأْتُوكُمْ أُسَٰرَىٰ تُفَٰدُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ
إِخْرَاجُهُمْ أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَٰبِ وَتَكْفُرُونَ

ببعض

ऐसे ही लोग जन्नती हैं कि वह हमेशा (हमेशा) जन्नत ही में रहेंगे० और (वह वक़्त याद करो) जब हमने (अगले) बनी इस्राईल (यानी तुम्हारे बड़ों) से पक्का क़ौल लिया कि ख़ुदा के सिवा किसी को इबादत न करना और माँ बाप के साथ सलूक करते रहना और रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों के साथ (भी)। और लोगों से अच्छी तरह (नर्मी के साथ) बात करना और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहना, फिर तुम में से थोड़े आदमियों के सिवा (बाक़ी सब) फिर बैठे, और तुम लोग (कुछ) हो (ही) बेपर्वा० और (वह वक़्त याद करो) जब हमने तुम से (यानी तुम्हारे बड़ों से) पक्का क़ौल लिया कि आपस में ख़ूँरेज़ी न करना और न अपने शहरों से अपने लोगों को जलावतन करना, फिर तुमने (यानी तुम्हारे बुज़ुर्गों ने) इक़रार किया और तुम (इस ज़माने के लोग भी इसका) इक़रार करते हो (कि हां ऐसा हुआ था) ० फिर वही तुम हो कि अपनों को मारते और नीज़ अपनों में से कुछ लोगों के मुक़ाबिले में नाहक़ और ज़बर्दस्ती एक दूसरे के मददगार बन कर उनको उनके शहरों से देस निकाला देते हो और वही लोग अगर (कहीं) क़ैद होकर तुम्हारे पास (मदद मांगने को) आएँ, तो तुम चट्टी भर कर उन को छुड़ा लेते हो, हालाँकि (सिरे से) उन का निकाल देना हो तुम को रवा न था। तो क्या किताब (इलाही) की बाज़ बातों को मानते हो और बाज़ को नहीं मानते—

वह सदैव स्वर्ग में रहेंगे ॥

(बनी इस्राईलियो ! तुमने हम से कभी कोई ऐसा वचन नहीं लिया था कि गिने चुने थोड़े दिनों के सिवा पापी और अपराधी होते हुये भी आग तुम्हें नहीं जला सकेगी। तुम उल्टी बातें न बनाओ) और (वह समय याद करो) जब हमने (पूर्वज) बनी इस्राईल (अर्थात् तुम्हारे बुज़ुर्गों) से (तौरेत द्वारा) प्रतिज्ञा कराली कि ख़ुदा के सिवा किसी की उपासना न करना और माता पिता के साथ भलाई करते रहना और सम्बन्धियों और अनाथों, दीनों के साथ (भी) और मनुष्यों को नेकी की शिक्षा देना और नमाज पढ़े और ज़कात दिये जाना, (किन्तु) तुम में से अधिक मनुष्य इन सब प्रतिज्ञाओं से फिर गये और (प्रतिज्ञाओं से तो) तुम (सदैव के) फिरने वाले हो (यह तो तुम्हारा आचरण बरन् स्वभाव हो गया है) ॥

और (वह समय याद करो) जब हमने तुम से (अर्थात् तुम्हारे पूर्व जनों से) प्रतिज्ञा ली कि आपस में रुधिर न बहाना और अपने साथियों को घर से बे घर न करना, फिर (इन बातों को) तुमने स्वीकार कर लिया था और तुम (आज भी उनकी) गवाही देते हो (कहते फिरते हो कि हमारे और ख़ुदा के बीच यह प्रतिज्ञा हुई है) ॥

(परन्तु यह सब होने पर भी) फिर तुम (ही) वह हो कि अपनों को बध* करते हो और अपनों में से एक दूसरे को घर से बेघर करते हो और (किस तरह) अपनों के मुक़ाबले में (अर्थात यहूदियों के मुक़ाबले में उनके शत्रुओं और मुश्रिकों की) पाप-पूर्ण तथा अत्याचार-पूर्ण सहायता देकर ॥

* टीका—बनी कुरैज़ा और बनी नुज़ैर, दो—यहूदियों के कुटुम्ब थे और औस और ख़ज़रज दो–मुश्रिकों के। बनी कुरैज़ा को बनी नुज़ैर से शत्रुता थी और औस को ख़ज़रज से। बनी कुरैज़ा औस को साथ मिला लेते और बनी नुज़ैर ख़ज़रज को, और ख़ूब लड़ाई झगड़ा करते और जो विजय पाता, वह विजित कुटुम्ब को देश से निर्वासित कर देता और विजित मनुष्य का घर बार अपने अधिकार में ले लेता या नष्ट कर डालता और मज़ा यह था, वही विजित मनुष्य क़ैदी के रूप में आकर सहायता माँगते, तो रुपये देकर उन को मुक्त भी करा लेते ; जैसा कि आगे ख़ुदा ने कहा है :—हसन निज़ामी ॥

और अगर (कहीं वह) क़ैदी बन कर तुम्हारे पास पहुँच जाते हैं, तो उन्हें (कुछ) ख़र्च करके छुड़ाते हो और (यह बात अच्छी है, तौरेत के अनुसार है, परन्तु उन को पहिले ही क्यों निकाला जाय ? तौरेत में यह भी तो स्पष्ट उल्लेख है कि) तुम्हें उनका निकालना पाप है, तो क्या पुस्तक के किसी भाग को मानते हो और किसी को नहीं मानते ? —

بِبَعْضٍ فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْیٌ
فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى
اَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ فَلَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهٖ
بِالرُّسُلِ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ
وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ
بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيْقًا
كَذَّبْتُمْ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ۝ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ
بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ
لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى

सो जो लोग तुम में से ऐसा करें, इसके सिवा उनका और क्या बदला हो सक्ता है कि दुनिया की ज़िन्दिगी में (उनकी) रुस्वाई हो और (आख़िरकार) क़यामत के दिन बड़े ही सख़्त अज़ाब की तरफ़ लौटा दिये जायँ और जो कुछ भी तुम लोग करते हो, अल्लाह उस से बेख़बर नहीं है० यहीहैं, जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दिगी मोल ली। सो न तो (क़यामत के दिन) उन से अज़ाब ही हलका किया जायगा और न (कहीं से) उनको मदद ही पहुँचेगी ० और अलबत्ता हमने मूसा को किताब (तौरात) इ़नायत फ़र्माई और उनके बाद पै दरपै (और) रसूल भेजे, और मर्यम के बेटे ईसा को (भी) हमने खुले (खुले) मोजिज़े अता फ़र्माए और रूहुल्क़ुदुस (यानी जिब्रील) से उनकी ताईद की, तो क्या (तुम इस क़दर शोख़ हो गये हो कि) जब जब तुम्हारे पास कोई रसूल तुम्हारी अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ कोई हुक्म लेकर आया, तुम अकड़ बैठे। फिर बाज़ को तुमने झुटलाया और बाज़ को लगे क़त्ल करने० और कहते हैं, हमारे दिल महफ़ूज़ हैं (नहीं,) बल्कि इनके कुफ़्र की वजह से ख़ुदा ने इनको फिटकार दिया है। पस शाज़ (व नादिर) ही ईमान लाते हैं ० और जब ख़ुदा की तरफ़ से इन के पास क़ुर्आन उतरा (और वह) उस (किताब तौरात) की, जो इन के पास है, तस्दीक़ (भी) करता है और इस से पहिले (इसी की तवक़्क़ो पर) काफ़िरों के मुक़ाबिले में अपनी फ़तह की दुआएँ मांगा करते थे—

सो, (जानते हो) तुम में से जो (जो मनुष्य) यह कर्म करते हैं, उन का क्या दण्ड है? सिवा इस के (क्या हो सकता है) कि संसारिक जीवन में अप्रतिष्ठित (होंगे) और प्रलय के दिन महा (कठिन) दुःख की ओर (इन्हें) धकेल दिया जायगा और जो तुम करते हो, ख़ुदा उस से बे ख़बर नहीं है॥

यह वह (अभागे) मनुष्य हैं कि (जिन्हों ने) परलोक को बेच कर लौकिक जीवन को ख़रीदा (है) अनन्त व वास्तविक सुखों की अपेक्षा क्षणिक व तुच्छ सुखों को ग्रहण किया है॥

पस इन (पर) से दुःख हलका नहीं होगा और (कहीं से कोई) सहायता (भी उस समय) इन को न पहुँचेगी। किसी सहायक और सिफ़ारिशी को न पा सकेंगे॥

और मूसा को हम ने पुस्तक अवश्य दी थी, (किन्तु उस के साथ कुछ) और (भी है-वह यह कि) हमने उन के पीछे भी (कई) रसूल भेजे; (जैसे दाऊद, सुलैमान, ज़करीया, यह्या, ईसा) और मर्यम के बेटे ईसा को (तो) स्पष्ट रूप से मोजिज़े (अद्भुत सिद्धियाँ) दे दिये थे और हमने पवित्रात्मा (अर्थात् जिब्रील) को उन की सहायता पर लगा दिया था॥

(मगर तुम ऐसे दुष्ट हो कि) क्या (कहिये, जब) जब तुम्हारे पास (कोई) पैग़म्बर इन (सन्देशों) को लेकर आया, जिन (के) पालन करने को तुम्हारा जी नहीं चाहता था, तुमने अभिमान किया (ऐंठ बैठे, अकड़ना शुरू किया) फिर (किसी के आचरण पर आक्षेप और किसी की जान पर आक्रमण) कतिपय मनुष्यों को तुमने (केवल) झूठा बनाया और कतिपय मनुष्यों को (तो) क़त्ल ही कर डाला (जैसे ज़करीया, यह्या)॥

और (अब मुहम्मद के साथ भी इन यहूदियों का वही व्योहार है) कहते हैं—हमारे दिल ग़िलाफ़ों में हैं (अर्थात उन पर पर्दे पड़े हैं अर्थात तौरेत का प्रभाव हम पर इतना गहरा हो गया है कि किसी और शिक्षा से हमें प्रभावान्वित नहीं किया जा सकता। मूर्ख हैं, तौरत ही का तो प्रभाव नहीं है, अन्यथा आज मुसलमान होते) बरन् इन के (सदैव) कृतघ्नता (करते रहने) के कारण उन पर ख़ुदा की मार है। सो, (देख लो बहुत) थोड़े (ही) ईमान लाते हैं॥

और (यहूदियों के अभाग्य का कुछ ठिकाना है) उनके आगे (वह) पुस्तक (क़ुर्आन) अल्लाह की ओर से आ गई, जो उन के पास वाली (पुस्तक तौरेत) को सच्चा ठहराती है और (जिस का नाम ले लेकर वह) कभी धर्म के शत्रुओं पर विजय (पाने की प्रार्थनाएँ *) मांगा करते थे—

* टीका—क़ुर्आन के उतरने से पहिले यहूदियों पर जब कोई आपत्ति आती थी या वह मुश्रिकों से पराजित हो जाते थे, तो प्रार्थना करते थे कि इलाही! अन्तिम समय के नबी और उन पर उतरने वाली किताब की शरण, हमारी सहायता कर:—हसन निज़ामी॥

الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَمَّا جَاءَهُم مَّا عَرَفُوا كَفَرُوا
بِهِ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا
بِهِ أَنفُسَهُمْ أَن يَكْفُرُوا بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ بَغْيًا أَن
يُنَزِّلَ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلَىٰ غَضَبٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ
مُّهِينٌ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ
قَالُوا نُؤْمِنُ بِمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا
وَرَاءَهُ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ قُلْ فَلِمَ
تَقْتُلُونَ أَنبِيَاءَ اللَّهِ مِن قَبْلُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝
وَلَقَدْ جَاءَكُم مُّوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ
الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ ظَالِمُونَ ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا
مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا
مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا

तो जब वह चीज़—जिस को जाने पहिचाने हुए थे आ मौजूद हुई, तो लगे उस से इन्कार करने। पस मुन्किरों पर ख़ुदा की फिटकार ० क्या ही बुरा मुआविज़ा है, जिस के बदले इन लोगों ने (अपने नज़दीक) अपनी जानों का ख़रीद किया कि (इतनी सी बात पर कि) ख़ुदा अपने बन्दों में से जिस पर चाहे अपने फ़ज़्ल से वही भेजे, बराह सर्कशी ख़ुदा की उतारी हुई किताब से लगे इन्कार करने। पस ग़ज़ब दर ग़ज़ब में आ गये और मुन्किरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब है ० और जब उन से कहा जाता है कि (क़ुर्आन) जो ख़ुदा ने उतारा है, इस पर ईमान ले आओ, तो जवाब देते हैं कि हम तो उसी (किताब) पर ईमान लाते हैं, जो हम पर उतरी। ग़रज़ उस के अलावा (दूसरी किताब यानी क़ुर्आन) को नहीं मानते, हालां कि यह (क़ुर्आन) सच्चा है (और) जो (किताब) इन के पास है, उस की तस्दीक़ भी करता है। (ऐ पैग़म्बर ! इन से यह तो) पूछो कि भला अगर तुम (यानी तुम्हारे बुज़ुर्ग) ईमान वाले होते, तो पहिले) यानी अगले ज़माने में) अल्लाह के पैग़म्बरों को क्यों क़त्ल करते ० और तुम्हारे पास मूसा खुले (खुले) निशान लेकर आही चुके थे, इस पर भी तुम उन के (तौरात लेने तूर पर गए) पीछे बछड़े को (परस्तिश के लिये) ले बैठे और (ऐसा करने से) तुम (अपना ही) नुक़सान कर रहे थे ० और (वह वक़्त याद करो) जब हम ने तुम (यानी तुम्हारे बुज़ुर्गों) से पक्का क़ौल लिया और (कोह) तूर को उठाकर तुम्हारे (यानी तुम्हारे बुज़ुर्गों के) ऊपर ला लटकाया (और हुक्म दिया कि यह किताब तौरात) जो हमने तुम को दी है, इस को मज़्बूती से पकड़े रहो और (जो कुछ इस में लिखा है, उस को) सुनो (और पल्ले बांधो, इस के जवाब में) उन लोगों ने (गोया ज़बान हाल से यह) कहा कि हम ने सुना तो सही, व लेकिन (हम इस को) तस्लीम नहीं करते—

और जब वह उन के सन्मुख पहुँच गये, जिन को (अच्छी तरह जान) पहिचान रक्खा था (अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम कि उन के व्याख्या—पूर्ण चिन्ह का पता तौरेत में मौजूद है) तो तौरेत का वर्णन (और मुहम्मद की बातों को बिल्कुल समानार्थक पाकर भी) उन से इन्कार करने लगे, (वास्तव में उन्हें आशा थी कि अन्तिम समय का पैग़म्बर इन्हीं में से उत्पन्न होगा, परन्तु यह आशा पूरी न हुई, तो वे द्वेष की अग्नि में जलने लगे और जान बूझ कर हठ धर्मी से मुहम्मद का इन्कार करने लगे) सो इन अविश्वासियों पर अल्लाह की फिटकार है ॥

अपने जीवन को जिस मूल्य पर उन्हों ने ख़रीदा है, (अपनी वासनाओं को जिस मूल्य पर स्थिर रक्खा है) वह (कैसा) बुरा है कि (केवल इस कारण से कि) अल्लाहने अपनी दया से जिस बन्दे पर चाहा (क़ुर्आन) उतार दिया, विद्रोह—रूप से अल्लाह के उतारे हुवे (क़ुर्आन ही) को अस्वीकार कर बैठे। इसी लिये वह (अल्लाह के) क्रोध प्रति क्रोध में आ गये हैं और (इन) अविश्वासियों को अप्रतिष्ठित करने वाला दु:ख होगा ॥

और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह की उतारी हुई (किताबों इन्जील व क़ुर्आन) पर ईमान लाओ (तो) कहते हैं—हम (अल्लाह की उतारी हुई) उस (किताब-तौरेत) पर ईमान रखते हैं, जो हमारे हाँ उतरी थी। इस के अतिरिक्त (शेष) सब से इन्कार है, यद्यपि यह (पुस्तकें, क़ुर्आन व इन्जील) सच्ची (पुस्तकें हैं) और जो पुस्तक उनके पास है, उसको सत्य कहने वाली (भी) हैं। (अच्छा इन से) कहो (इन से पूछो) कि (तौरेत के तुम मानने वाले थे, तौरेत पर) तुम विश्वास रखते थे, तो आज से पहिले अल्लाह के (बहुत से) पैग़म्बरों को क्यों वध करते रहे (तौरेत की आज्ञा है कि जो नबी तौरेत को सच्चा कहता है, उस की सहायता करना और हज़रत यह्या और हज़रत ज़करीया, तो बिल्कुल तौरेत ही के उपदेशक थे और तौरेतानुसार कर्म कराना चाहते थे, मगर उन्हें भी तुमने मार डाला) ॥

(और तुम्हारा मूसा ही के साथ कौन सा अच्छा व्यवहार रहा) मूसा (कैसे प्रत्यत्त तथा स्पष्ट) मोजिज़े (अद्भुत सिद्धियाँ)
लेकर तुम्हारे पास आये, फिर (भी) उनके (तुरन्त) हटते ही (यद्यपि वह अभी जीवित थे) तुमने बछड़े को ख़ुदा बना लिया, (उस
समय मूसा के साथ, तुम्हारा यह प्रेम कहाँ चला गया था, जिस को आज मुहम्मद के सन्मुख प्रगट किया जाता है ? अरे !) तुम (सदैव से
ी दुष्ट और) पापी हो ॥

और (तौरेत पर ईमान रखने की वास्तविकता भी यह है कि) जब हमने तुम से वचन लिया (था) और तुम पर तूर पर्वत को
(लटकती हुई दशा में) कर दिया (था और कहा कि) जो (पुस्तक) तुम्हें दी गई है, उसे दृढ़ता से पकड़ो और (उसकी आज्ञाओं) को
सुना, तो (बाणी से, तो पहाड़ का भय खाकर तुम्हारे पूर्वजों ने) कहा—हम ने सुना (हम ने सुना) और (दिल उन के कहते थे कि) हम
हीं मानने के, इस लिये बाद में नहीं माना ॥

وَاُشْرِبُوْا فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ قُلْ
بِئْسَمَا یَاْمُرُكُمْ بِهٖۤ اِیْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ
قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ
خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝ وَلَنْ یَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًۢا بِمَا
قَدَّمَتْ اَیْدِیْهِمْ وَاللّٰهُ عَلِیْمٌۢ بِالظّٰلِمِیْنَ ۝
وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَیٰوةٍ وَمِنَ
الَّذِیْنَ اَشْرَكُوْا یَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ یُعَمَّرُ
اَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ
اَنْ یُّعَمَّرَ وَاللّٰهُ بَصِیْرٌۢ بِمَا یَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ
كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِیْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ
بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ وَهُدًى
وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِیْنَ ۝ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ

ع

और उन के कुफ़्र की वजह से बछड़ा (यानी उस का अदब) उन के दिल में सरायत कर गया था। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अगर तुम ईमान वाले हो, तो तुम्हारा ईमान तुम को (बहुत ही) बुरी तालीम करता है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन से) कहो कि अगर ख़ुदा के हां आक़िबत का घर ख़ास तुम्हारे ही लिये है, दूसरे लोगों के लिये नहीं और तुम (इस दावे में) सच्चे हो, तो मरने की आर्ज़ू करो, (ताकि जल्द बहिश्त में जा दाख़िल हो) ० मगर उन (आमाल बद) की वजह से, जिन को इन के हाथों ने पहिले से (ज़ाद अख़िरत बना कर) भेजा है, यह कभी मौत की आर्ज़ू नहीं कर सके और अल्लाह (इन) ज़ालिमों को ख़ूब जानता है ० और (ऐ पैग़म्बर !) अलबत्ता तुम पाओगे, कि यह लोग ज़िन्दगी पर (सब) लोगों से कहीं ज़ियादा रीझे हुये हैं। यहाँ तक कि मुश्रिकीन से भी (जो क़यामत ही के क़ायल नहीं)। इन में से एक एक चाहता है कि ऐ काश ! उस की उम्र हज़ार बरस की हो (और हाल यह है कि) इतनी मुद्दत जीता भी रहे, तो भी दराज़ी उम्र उस को अज़ाब से नजात देने वाली नहीं और जो कुछ भी यह लोग कर रहे हैं, अल्लाह उस को देख रहा है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि जो शख़्स जिब्रील (फ़रिश्ते) का दुश्मन हो (हुवा करे)। यह (क़ुर्आन) उसी (फ़रिश्ते) ने ख़ुदा के हुक्म से तुम्हारे दिल में डाला है और (क़ुर्आन) उन (किताबों) की भी तस्दीक़ करता है, जो उस (के ज़माने नुज़ूल) से पहिले (मौजूद) हैं और ईमान वालों के लिये हिदायत और ख़ुश ख़बरी है ० जो शख़्स अल्लाह का दुश्मन हो—

बात यह है, एक बार अधर्म करने से (अर्थात् बछड़ा पूजने से) उन के दिलों में बछड़े (ही) का प्रेम बिठा दिया गया था ॥

(मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम इन यहूदियों से) कह दो कि यदि तुम (ऐसे ही तौरेत के) अनुयायी हो, तो तुम्हारा ईमान तुम्हें जो शिक्षा दे रहा है, वह बुरी है (अर्थात् उस का यह शिक्षा देना कि क़ुर्आन को न मानो, अच्छा नहीं है) ॥

(और यह भी) कह दो कि (यह जो तुम्हारा दावा है कि हमारे सिवा कोई स्वर्ग में नहीं जायगा, तो) यदि अल्लाह के हाँ केवल तुम्हारे (ही) लिये परलोक का स्थान है और किसी के लिये नहीं है (और) यदि तुम (अपने इस दावे में) सच्चे हो, तो फिर मृत्यु की कामना करो, (जिस में कि तुरन्त वहाँ पहुँच जाओ, मृत्यु से क्यों डरते हो ?) ॥

(मगर यह मृत्यु की इच्छा नहीं करेंगे) और कदापि मृत्यु की कामना नहीं करेंगे, क्योंकि अपने हाथों से (ऐसे) कर्म (हमारे पास) भेज चुके हैं (कि मृत्यु के नाम से थर्राते हैं कि न जाने मृत्यु के बाद क्या दशा होगी) और अल्लाह (तो इन) अत्याचारियों (की कुल छिपी हुई दशाओं से) सचेत है ॥

और तुम देखोगे कि यह (यहूदियों की जाति तो) जीवन के निमित्त सब से अधिक लोभित होने वाली जाति है; मुश्रिकों से (भी) अधिक। यहूदी जाति का तो प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि क्या अच्छा हो—यदि हमारी आयु एक सहस्र (हज़ार) वर्ष की हो जाय। यद्यपि इतना जीवन इन्हें नर्क के क्लेशों से नहीं बचा सकेगा और अल्लाह कर्मों को देख रहा है (वह इन्हीं के अनुसार बदला लेगा) ॥

* टीका—यहूदियों को क़ुर्आन पर ईमान लाने से एक आक्षेप यह भी था कि क़ुर्आन जिब्रील के द्वारा उतर रहा है। वह कहते थे कि जिब्रील हमारा प्राचीन शत्रु है, इस से हमारे पूर्व जनों को कष्ट पहुँचा है। हम उस के अधिकार को सहन नहीं कर सके। हाँ, कोई दूसरा फ़रिश्ता जिब्रील की जगह पर मुहम्मद के पास आने लगे, तो हम मुहम्मद और उन की किताब को मान लेंगे। इस आक्षेप पर यह आयत उतरी:—हसन निज़ामी ॥

(ऐ रसूल ! यह भी) इन्हें बता दो कि (तुम में से) जिन (जिन) को जिब्रील * से शत्रुता है (वह ग़लती कर रहे हैं, क्यों) कि जिब्रील ने क़ुर्आन तुम्हारे हृदय में अल्लाह (ही) की आज्ञा से डाला है (और जो कुछ पहिले उसने किया था, सब अल्लाह ही की आज्ञा से किया था और अब इस क़ुर्आन में तो यहूदियों के नाराज़ होने का बिलकुल अवसर नहीं है। क़ुर्आन तो) अब से पहिली (किताबों) का समर्थन (ही) करने वाला है और धर्मात्माओं के लिये (इस में) उपदेश तथा मंगल—समाचार है ॥

(और) जो अल्लाह—

وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ
عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۭ
بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ۝
اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ
مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ
مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ
ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاتَّبَعُوْا مَا
تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ
سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ
النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ
هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ
حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ

منهما

और उसके फ़रिश्तों का, और उसके रसूलों का, और (ख़ास कर) जिब्रील (फ़रिश्ते) का और मीकाईल (फ़रिश्ते) का, तो अल्लाह भी ऐसे काफ़िरों का दुश्मन है० और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुम्हारे पास (ऐसी) आयतें भेजी हैं, (जिनका मतलब) साफ़ (और वाज़ेह है) और इन से इन्कार नहीं करते, मगर वही जो ना फ़र्मान हैं० क्या (इन यहूद ने इस क़दर शरारत पर कमर बाँधी है कि) जब कभी कोई क़ौल कर लेते हैं, तो उनमें का कोई न कोई फ़रीक़ उसको (बालाए ताक़) उठा कर रख दिया करता है, बल्कि उन में के अक्सर तो ईमान ही नहीं रखते० और जब उनके पास ख़ुदा की तरफ़ से रसूल (मुहम्मद) आए (और वह) उस किताब (तौरात) की, जो इन (यहूद) के पास है, तस्दीक़ (भी) करते हैं, तो (इन) अहूल किताब में से एक गिरोह ने अल्लाह की किताब (तौरात) को, (जिस में इन रसूल की पेशीन गोई भी है, ऐसा) पीठ पीछे फेंका कि गोया उन को कुछ ख़बर ही नहीं० और (उन ढकोसलों के) पीछे पड़ गये, जिनको सुलैमान के अहूद सल्तनत में शयातीन पढ़ा (पढ़ाया) करते थे, हालांकि सुलैमान से कुफ़्र की (यह) हरकत सर्ज़द नहीं हुई, बल्कि कुफ़्र (किया था, तो) शयातीन ने किया था कि वह लोगों को जादू सिखाया करते थे और (इस के अलावा उन बातों में मश्ग़ूल हो गए) जो बाबिल में हारूत और मारूत फ़रिश्तों को पहुँचाई गई थीं और वह (फ़रिश्ते भी, जो उन को पहुँचा था) किसी को न बताते, जब तक उस से यह न कह देते कि हम तो (ज़रीया) आज़मायश हैं। तो (इस इल्म को बुरी तरह इस्तेमाल करके) कहीं तू काफ़िर न हो जाइयो। इस पर भी उनसे ऐसी बातें सीखते—

और उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों और (विशेष कर) जिब्रील व मीकाईल के शत्रु हैं, अल्लाह (उन) काफ़िरों का शत्रु है॥

और हमने (तो ऐ मुहम्मद! सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम) तुम पर साफ़ साफ़ आयतें उतार दी हैं और उन (की सत्यता) से सिवाय दुष्टों के कोई इन्कार नहीं करता॥

क्या (इन यहूदियों का यह दृढ़ व्यवहार हो गया है कि) जब (भी) वह (कोई) प्रतिज्ञा करेंगे, उन में से एक (न एक) समूह उसे अवश्य भंग कर देगा, वरन् उन में से अधिक लोग तो (प्रतिज्ञा के अनुसार व्यवहार करना तो अलग रहा) ईमान ही नहीं रखते॥

जब इन के पास अल्लाह के हाँ से पैग़म्बर (अन्तिम ईश्वरीय दूत) आये, उन की तौरेत को मानते और मनवाते, तो (उन) किताब वालों (अर्थात् तौरेत वालों) में से कुछ लोगों ने अल्लाह की (इस) किताब को (ही) उठा कर अपनी पीठों के पीछे फेंक दिया। मानो इन्हें मालूम (तक) नहीं कि यह क्या चीज़ है और उस में क्या लिखा है और ऐसा करने वाले यहूदियों के अधिकतर शास्त्र-विशारद अर्थात् विद्वान थे॥

(और) यह मनुष्य (तौरेत के सिवा) उन मंत्रों के पीछे पड़ गये * जो सुलैमान के शासन-काल में शयातीन पढ़ा करते थे और (इस) अधर्म को सुलैमान ने विस्तृत † नहीं किया था, वरन् (यह) अधर्म शैतानों का विस्तृत किया हुआ था कि (वही) मनुष्यों को जादू सिखाया करते थे॥

* टीका—खेद है कि वर्तमान-काल के मुसलमान भी वास्तविक धर्म को छोड़ कर और ही और ढकोसलों की तरफ़ झुकते चले जाते हैं:—हसन निज़ामी॥

† टीका—यहूदियों का यह विचार है कि जादू हज़रत सुलैमान के द्वारा प्रचलित हुआ:—हसन निज़ामी॥

और (यह मनुष्य) इस (ज्ञान) के (अनुयायी हो गये) जो शहर बाबिल में हारूत ‡ व मारूत (नाम के) दो फ़रिश्तों को दिया गया था। यद्यपि वह दोनों (भी) किसी को कुछ नहीं सिखाते थे, जब तक कि (यह) नहीं बता देते कि हम केवल परीक्षा के लिये हैं (तुम हमारी शिक्षा पाकर इस के अनुचित उपयोग से) कहीं काफ़िर (दुष्ट) न हो जाना॥

‡ टीका—हारूत व मारूत के विषय में भिन्नता है; कुछ व्याख्या करने वाले कहते हैं कि वह फ़रिश्तों के समान गुणी मनुष्य थे और कतिपय लोग जो "मलिकैन्" पढ़ते हैं, उन को दो बादशाह बतलाते हैं और कुछ लोगों का यह ख़याल है कि वास्तव में यह दो फ़रिश्ते ही थे, जो मनुष्यों पर कटाक्ष करने के कारण परीक्षा के लिये संसार में भेजे गये थे। कुछ भी हो—यह दोनों अवश्य किसी जादू या इस का तोड़ या इस से बढ़ कर किसी ऐसी ही आश्चर्य जनक वस्तु (चीज़) अथवा विद्या के ज्ञाता थे और लोगों को इस की शिक्षा दिया करते थे:—हसन निज़ामी॥

और यह होते हुये भी (सीखने वाले) इन से ऐसी (ही) बातें सीखते हैं (जैसे)—

مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۗ وَمَا هُمْ
بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَيَتَعَلَّمُوْنَ
مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۗ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ
اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۗ وَلَبِئْسَ
مَا شَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ ۗ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَوْ
اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ۗ
٤ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ۗ
وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ
اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ
يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيْمِ ۝ مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ

जिनकी वजह से मियाँ बीवी में जुदाई डाल दें। हालांकि वे हुक्म ख़ुदा वह अपनी इन बातों से किसी को नुक़सान नहीं पहुँचा सके। ग़रज़ यह लोग (उन से) ऐसी बातें सीखते, जिन से (ख़ुद) इन (ही) को नुक़सान पहुँचता और इन का (किसी तरह का) फ़ायदा न पहुँचता। बा वजूदे कि जान चुके थे कि जो शख़्स इन बातों का ख़रीदार हुआ, वह आख़िरत में बे नसीब है और अलबत्ता (बहुत ही) बुरा (मुआविज़ा) है, जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेचा। ऐ काश! इन को (इतनी) समझ होती० और अगर यह ईमान लाते और परहेज़गार बनते, तो (जो) सवाब (इन को) ख़ुदा की दर्गाह से (मिलता, वह इनके हक़ में इस से कहीं) बेहतर था। ऐ काश! (यह लोग इतनी बात) समझते० मुसलमानो! (पैग़म्बर के साथ) राइना कह कर ख़िताब न किया करो, बल्कि उन्ज़ुर्ना कहा करो और (ध्यान लगा कर) सुनते रहा करो और मुन्किरों के लिये अज़ाब दर्दनाक है० अहल किताब और मुश्रिकीन में से, जो लोग मुन्किर (इस्लाम) हैं, इस बात से ख़ुश नहीं हैं कि तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से तुम (मुसलमानों) पर भलाई (यानी वही) नाज़िल की जाय और अल्लाह जिस को चाहता है, अपनी रहमत के लिये ख़ास कर लेता है और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल (करने) वाला है० (ऐ पैग़म्बर!) हम कोई आयत मन्सूख़ कर दें या (तुम्हारे) ज़ेहन से उसको उतारदें—

जिन से पति और स्त्री में फूट डलवादें, हालाँकि ख़ुदा की आज्ञा के बिना इन बातों से वह किसी का (कुछ) नहीं बिगाड़ सके॥

और वह बातें सीखते हैं, जो (स्वयं) इन को भी सिवा हानि के (किसी प्रकार का) लाभ नहीं पहुँचातीं और (इतना) वह अवश्य जानते हैं कि जिसने इस काम (अर्थात् जादू आदि) को लाभ के लालच में ग्रहण किया, तो अन्त में उसे कोई (अच्छा) फल नहीं मिलेगा और उन्होंने अपनी आत्मा के साथ (बहुत) अत्याचार किया। क्या, अच्छा होता कि वह समझ जाते॥

(और) यदि वह समझते कि अगर वह ईमान ले आते और पापों से बचते, तो निश्चित—रूप से अल्लाह के हाँ (इन्हें) बड़ा पुण्य मिलता॥

(और) ऐ मुसलमानो! (हमारे रसूल के दरबार में यहूदी जो राइना कहते हैं, वह इस शब्द को बुरे अर्थों में उपयोग करते हैं, इस लिये तुम "राइना" * न कहा करो और (इस के बजाय) उन्ज़ुर्ना कहा करो॥

* टीका—"राइना" का अनुवाद है, "हमारा पक्ष लो" हमारी ओर ध्यान दो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के दरबार में यहूदी आदि बहुत से लोग आकर बैठते और कोई शब्द हुज़ूर का इन्हें न सुनाई देता या उनकी बुद्धि में न आता, तो पुकारते "राइना" ज़रा हमारा ख़याल कीजिये। हमें दूसरी बार समझा दीजिये, परन्तु "राइना" का उच्चारण इस प्रकार करते कि वह "राईना" के समान हो जाता अर्थात् वह हमारा ग्वाला है, फिर स्वयं "राइना" के अर्थ यहूदियों की भाषा में मूर्ख व घमण्डी के हैं। इस लिये मुसलमानों को, जो यहूदियों के स्वभाव का ज्ञान न होने के कारण यूँही यह शब्द उच्चारण करने लगे थे, आज्ञा दी कि तुम इसके बजाय "उन्ज़ुर्ना" कहा करो, कि इस में अपमान का सन्देह नहीं है और इस के अर्थ वही हैं कि हमारी निमित्त द्वितीय बार भाषण कीजियेः—हसन निज़ामी॥

और (हमारे रसूल की बातें ध्यान से) सुनते रहा करो (जिस से कि दूसरी बार कहने की आवश्यकता ही न पड़े) और इन काफ़िर (यहूदियों से तो हम समझ लेंगे। इन) को (इनके उपद्रवों का) घोर दुःख (दण्ड) मिलेगा॥

(और काफ़िरों का क्या है) काफ़िरों को (तो जलन है, वह चाहे) किताब वाले हों या मुश्रिक (द्वैतवादी, दोनों) यह सहन नहीं कर सकते कि तुम पर तुम्हारे पालन कर्ता की ओर से कोई उपहार (व बरकत उतारी जाय। इस लिये नाना प्रकार के दुःख देने के साधन निकालते हैं)। यद्यपि अल्लाह (तो) जिस को चाहता है, अपनी कृपा के लिये चुन लेता है, और अल्लाह (महान दयालु है) बड़ा कृपालु है। (काफ़िर द्वेष से जला करें, जिस को और जिस कुटुम्ब को चाहा, उसने नुबूवत के गौरव से सम्मान दिया अर्थात् सम्मानित किया। नुबूवत बनी इस्राईल के साथ विशेष नहीं हो गई है और न नबी को मुश्रिकीन के मन्तव्यानुसार धनवान होना आवश्यक है)॥

(और यह आक्षेप † जो किया जाता है कि अल्लाह की वाणी में आयतों की काट छाँट क्यों होती है, तो यह आक्षेप असत्य है) हम जिस आयत को मन्सूख़ करते हैं या जिसे (बिल्कुल) निकाल देते हैं (उसके बदले में) उस से उत्तम या (कम से कम) उसके सदृश (और) आयत ले आते हैं—

† टीका—यहूदी कहा करते थे कि यह ख़ुदा की वाणी कैसी है कि एक आयत एक समय उतरती है और दूसरे समय उस के अनुसार कर्म करना अथवा उसका पाठ करना वर्जित हो जाता है। ख़ुदा की वाणी इस न्यूनता तथा दोष से रहित होनी चाहियेः—हसन निज़ामी।

بِخَيْرٍ مِّنْهَآ أَوْ مِثْلِهَا ۗ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ أَمْ تُرِيْدُوْنَ أَنْ تَسْـَٔلُوْا
رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ
يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْإِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ
السَّبِيْلِ ۝ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ
مِّنْ بَعْدِ إِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ
أَنْفُسِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا
وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَأْتِيَ اللّٰهُ بِأَمْرِهٖ ۗ إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ وَمَا
تُقَدِّمُوْا لِأَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ
إِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ

तो उस से बहतर या वैसा ही नाज़िल (भी) कर देते हैं। (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमको मालूम नहीं, कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ?० क्या तुम को मालूम नहीं कि आस्मान व ज़मीन की सल्तनत उसी अल्लाह की है और अल्लाह के सिवा तुम मुसलमानों का न कोई दोस्त है और न कोई मददगार० (मुसलमानो!) क्या तुम यह चाहते हो कि जिस तरह पहिले (ज़माने में) मूसा से (बेहूदा दरख़्वास्तें और) सवालात किये गये थे (वैसे ही) तुम भी अपने रसूल से (बेहूदा दरख़्वास्तें और) सवालात करो और जो ईमान के बदले कुफ़्र इख़्तियार करे, तो वह सीधे रस्ते से भटक गया० (मुसलमानो!) अक्सर अहल किताब बा वजूदे कि उन पर हक़ ज़ाहिर हो चुका है, (फिर भी) अपने दिली हसद की वजह से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाए पीछे फिर तुम को काफ़िर बना दें। तो माफ़ करो और दर गुज़र करो, यहाँ तक कि ख़ुदा अपना (कोई और) हुक्म सादिर फ़र्माए। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो और जो कुछ भलाई अपने लिये (ज़ख़ीरए आक़िबत करके) पहिले से भेज दोगे, उसको ख़ुदा के हां (चल कर मौजूद) पाओगे। बेशक अल्लाह जो कुछ भी तुम करते हो, देख रहा है० और (यहूद) कहते हैं कि यहूद (के सिवा) और नसारा (कहते हैं, कि नसारा) के सिवा जन्नत में कोई नहीं जाने पायेगा—

(और यह कार्य बिना प्रयोजन नहीं होता, वरन् अवसर तथा समय के अनुसार होता है और इस में कोई न कोई मस्लहत अवश्य रहती है। जैसे पहिले आज्ञा थी कि धर्म-युद्ध में दस काफ़िरों से एक मुसलमान युद्ध करे, बाद को यह आज्ञा हुई कि दो से एक का युद्ध काफ़ी है। क्यों कि जब मुसल्मानों की संख्या बढ़ गई, तो क्या आवश्यकता है कि इन के लिये कठिनता रक्खी जाय। फिर) क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर वस्तु पर शक्तिमान है ॥

(और) क्या तुम्हें ज्ञात नहीं, कि अल्लाह पृथ्वी और आकाश के राज्य का मालिक है और इसके अतिरिक्त न कोई तुम्हारा मित्र है न सहायक। (यदि उसकी शक्ति व अधिकार व कृपा का ज्ञान है, तो सोचो—यह आक्षेप कैसा बोदा है। क्या बन्दों (मनुष्यों) की भलाई और लाभ समझने या बन्दों की ख़ैर ख़्वाही (हितैषिता) में किसी को उसकी बराबरी का दावा हो सका है ?) ॥

(और ऐ मुसल्मानो!) क्या तुम (भी यहूदियों की बातों से प्रभावान्वित होकर) अपने रसूल से (वैसे ही) प्रश्नों (का तांता आरम्भ करना) चाहते हो, जैसे कि (प्रश्न) पहिले मूसा से हुआ करते थे ? (सो सुन रक्खो) जिसने ईमान अर्थात् धर्म को अधर्म से बदला, वह सीधे मार्ग से भटक गया (और पथ भ्रष्टों में जा मिला। इस प्रकार के सन्देह और ऐसी छान बीन अच्छी नहीं। इन्हीं यहूदियों के बुज़ुर्गों पर ही रहने दो, या इन बुज़ुर्गों (पूर्वजों) की सन्तान के लिये छोड़ो। तुम किसी वस्तु में इन के उपमित न हो और इन के आक्षेपों को न दिल में जगह दो और न उन का उच्चारण करो)॥

अकसर किताब वालों (अर्थात् यहूदियों) की इच्छा है कि किसी प्रकार तुम्हें तुम्हारे ईमान लाने के बाद (फिर) काफ़िर बनालें (और) यह (इच्छा केवल) उनके मानसिक-द्वेष के कारण है, (सहानुभूति के कारण नहीं है कि वह तुमको अपने विचार में असत्य से सत्य पर लाना चाहते हैं। क्योंकि यह) वह समय है कि उन पर (इस्लाम-धर्म की) सत्यता (अच्छी तरह) प्रकट हो चुकी है ॥

सो ख़ैर जब तक अल्लाह की (कोई) आज्ञा हो (उन की इस इच्छा और कोशिश) की उपेक्षा करो अथवा ध्यान न दो। अल्लाह का हर बात पर अधिकार है (और वह सब प्रबन्ध कर लेगा, तुम्हें चिन्तित न होना चाहिये) ॥

(और इस समय तो इन कोशिशों के निबटेरे के लिये यही काफ़ी है) कि तुम (नियम-पूर्वक) नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात देते रहो और जो कुछ भलाई भी पहिले से अपने वास्ते कर लोगे, उसको अल्लाह के हां (पहुंच कर) पा लोगे। जो कुछ तुम करते हो, (अल्लाह) सब देखता है (कि काफ़िरों के दुःख पहुँचाने पर तुम्हारा धैर्य्य और ईश्वरीय उपासना में तुम्हारी लवलीनता—कोई वस्तु ख़ुदा से छिपी हुई नहीं है। तुम्हारे शुभ-कर्म कभी अकार्थ नहीं होंगे) ॥

और यहूद व नसारा, जो यह कहते हैं कि केवल यहूदी ही स्वर्ग में जावेंगे या केवल नसरानी ही स्वर्ग में जायेंगे—

الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ
اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
بَلٰى مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ
عِنْدَ رَبِّهٖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ
وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ وَّ
هُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ
لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ○ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا
اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ
لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَاۤ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا
خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ○

ع

यह उन के (अपने) ख़याली पुलाव हैं। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो अगर सच्चे हो, तो अपनी दलील पेश करो ० बल्कि वाक़ई बात तो यह है, कि जिस ने .ख़ुदा के आगे सरे तस्लीम ख़म कर दिया और वह नेकोकार भी है, तो उस के लिये उस का अज्र उस के पर्वर्दिगार के हाँ (मौजूद) है और (आख़िरत में) ऐसे लोगों पर न (किसी क़िस्म का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वह (किसी तरह) आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे ० और यहूद कहते हैं कि नसारा का मज़हब कुछ नहीं और नसारा कहते हैं, यहूद का मज़हब कुछ नहीं, हालांकि वह (दोनों फ़रीक़) किताब (इलाही) के पढ़ने वाले हैं। इसी तरह इन ही की सी बातें वह (मुश्रिकीन .अरब) भी कहा करते हैं, जो (.ख़ुदा के हुक्म अहकाम कुछ भी) नहीं जानते। तो जिस बात में यह लोग झगड़ रहे हैं, क़यामत के दिन अल्लाह इन में उस का फ़ैसला कर देगा ० और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन, जो अल्लाह की मस्जिदों में .ख़ुदा का नाम लिये जाने को मना करे और उन की बे रौनक़ी के दरपै रहे। यह लोग .ख़ुद इस लायक़ नहीं कि मस्जिदों में आने पायें, मगर डरते (डरते)। इन के लिये दुनिया में (भी) रुस्वाई है और इन के लिये आख़िरत में (भी) बड़ा (भारी) .अज़ाब है०—

यह उन की (केवल अपने) दिल को प्रसन्न करने की बातें हैं, (तनिक इन से) कहो, सच्चे हो तो (अपने विचार के समर्थन में कोई) प्रमाण पेश करो (आख़िर क्योंकर और किस आधार पर यहूदियों और नसरानियों के अतिरिक्त समस्त अगले और पिछले लोग स्वर्ग से वञ्चित (महरूम) हो गये) ॥

(यह उन का विचार व्यर्थ है,) जिस ने (भी अपना ध्यान अल्लाह की ओर कर लिया, अपना मस्तिष्क अल्लाह के आगे झुका दिया और) अपनी व्यक्ति को अल्लाह को सौंप दिया और (फिर) वह शुभ-कर्म (भी) करने लगा, उसे अल्लाह के हां इस का फल मिलेगा (और) ऐसे (सब) मनुष्य (चाहे वह किसी नबी के भी अनुयायी (पैरौ) हों) भय और शोक से सुरक्षित रहेंगे (कि इस्लाम का उद्देश्य यही है) ॥

यहूदी कहते हैं, नसारा का कोई धर्म नहीं और नसारा कहते हैं, यहूद का कोई धर्म नहीं। यद्यपि यह (दोनों) ईश्वरीय पुस्तक के पढ़ने वाले हैं ॥

(यहूद व नसारा के—जो असत्य विचार हुए हैं, वह ईश्वरीय पुस्तक के वास्तविक अर्थ न समझने या उस में परिवर्तन हो जाने के कारण हैं। आश्चर्य यह है कि) उनकी देखा देखी वह लोग भी उन्हीं की ऐसी बातें करते हैं, जो (ईश्वरीय पुस्तक न रखने के कारण कुछ) नहीं जानते (अर्थात् मुश्रिक व मूर्ती-पूजक, वह भी कहते हैं कि धर्म तो हमारा ही सत्य है) अच्छा अल्लाह प्रलय के दिन उन के इस विरोध का निर्णय कर देगा ॥

(इन काफ़िरों की दशा तो यह है कि वह मसजिद व पवित्र स्थान का अपमान करने और उनमें मनुष्यों को उपासना करने से रोकने में भी संकोच नहीं करते, भला) ऐसे मनुष्य से अधिक अत्याचारी कौन (हो सकता है) कि अल्लाह की मसजिदों (तथा पवित्र स्थानों) में अल्लाह का नाम लिये जाने को रोके † और कोशिश करे कि वह उजाड़ (और शोभा रहित) हो जायें *। इन (काफ़िरों) को (तो स्वयं यह) उचित था कि वह इन (मसजिदों व पवित्र स्थानों) में प्रवेश करते, (तो .ख़ुदा से) भय खाते हुए (प्रवेश करते। आदर व सम्मान तो अलग रहा दूसरों को उनमें प्रवेश करने से रोकते और अपमान करते हैं) ॥

*—† टीका—इन आयतों के उतरने के सम्बन्ध में दो रवायतें (कथायें) वर्णन की गई हैं:—

(१) मक्का मुअ़ज़्ज़मा में रहने के समय इस्लाम के आरंभ में तो कुफ़्फ़ार बैतुल्लाह शरीफ़ में दिन प्रति दिन मुसल्मानों के जाने से प्रसन्न थे ही नहीं, किन्तु जब हिजरत (प्रवास) के बाद ६ वर्ष के दीर्घ-काल में एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने उमरह करने के लिये मक्का मुअ़ज़्ज़मा आना चाहा, (उमरह एक प्रकार का हज है) तो कुफ़्फ़ार ने आं हज़रत को इस उमरे से रोक दिया।

(२) नसारा ने यहूद से युद्ध किया और क्रोध के आवेश में तौरेत को जला दिया और बैतुल्मक़्दस (पवित्र स्थान) का अपमान किया। आज कल बहुत सी जगह पर यह देखा जाता है कि एक सम्प्रदाय के मुसल्मान अपने सम्प्रदाय के नाम से किसी मसजिद का नाम प्रकाशित कर देते हैं और अपने सम्प्रदाय के लिये उसे विशेष कर लेते हैं और दूसरे सम्प्रदाय के भाइयों को उस में नमाज़ नहीं पढ़ने देते। वह देखें कि कहीं इस आयत के विषयानुसार वह भी तो दोषी नहीं होते:—हसन निज़ामी ॥

उन के लिये संसार में अकीर्ति (ज़िल्लत) है और उन्हें अन्त में घोर दण्ड मिलेगा—

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ
وَجْهُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ
اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَاِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ
فَيَكُوْنُ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا
يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَاۤ اٰيَةٌ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ
قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ
بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ
الْجَحِيْمِ ۝ وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى
حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ
الْهُدٰى وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ

और अल्लाह ही का है, पूरब और पश्चिम। तो जहाँ कहीं (क़िब्ले की तरफ़) मुंह कर लो, उधर ही को अल्लाह का सामना है। बेशक अल्लाह (बड़ी) गुन्जाइश वाला (और सब कुछ) जानता है ० और कहते हैं कि .ख़ुदा औलाद रखता है, (हालांकि) वह (इस बखेड़े से) पाक है। बल्कि उसी का है, जो कुछ आसमान व ज़मीन में है, सब उसके महकूम हैं० (इस नादिर) आसमान व ज़मीन का (वही) मूजिद है और जब किसी काम का करना ठान लेता है, तो बस उसकी निस्बत फ़र्मा देता है कि हो और वह हो जाता है ० और (मुश्रिकीन अरब) जो (अहकाम इलाही कुछ भी) नहीं जानते, कहते हैं कि .ख़ुदा (.ख़ुद) हम से कलाम क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी (जैसी हम फ़र्मायश करें) क्यों नहीं आती। इसी तरह जो लोग इन से पहिले हो गुज़रे हैं, इन ही जैसी बातें वह भी कहा करते थे। इन (सब) के दिल (कुछ) एक ही तरह के हैं। जो लोग यक़ीन (करने की सलाहियत) रखते हैं, उनको तो हम (अपनी) निशानियां साफ़ तौर पर दिखा चुके ० (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुम को दीन हक़ देकर (मुसलमानों को नजात की .ख़ुश ख़बरी देने वाला) और (काफ़िरों को अज़ाब आख़िरत से) डराने वाला (बनाकर) भेजा है और तुम से दोज़ख़ियों की कुछ बाज़ पुर्स नहीं होगी ० और (ऐ पैग़म्बर !) न तो यहूद ही तुम से कभी रज़ामन्द होंगे और न नसारा ही (तुम से राज़ी होंगे,) तावक़्ते कि तुम उन ही के मज़हब की पैरवी (न) करो। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अल्लाह की हिदायत (वही (असली) हिदायत है और (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम इस के बाद कि तुम्हारे पास इल्म (यानी .क़ुर्आन) आ चुका है, इन की ख़्वाहिशों पर चले—

और (ऐ मुसलमानो ! तुम्हें चिन्ता करने की क्या आवश्यकता है) पूर्व और पश्चिम अल्लाह के हैं। जहां (भी क़िब्ले की ओर) मुंह (कर के उस की उपासना) करोगे, वहां अल्लाह तुम्हें तुम्हारी ओर आकर्षित हुआ मिलेगा। .ख़ुदा अनन्त है, (तुम्हारी) हार्दिक दशा से वाक़िफ़ है, (किसी विशेष मसजिद में नमाज़ पढ़ने ही से नमाज़ स्वीकार नहीं होती, मुसलमानों के लिये तो समस्त पृथ्वी मसजिद है। कहीं पढ़ो, हृदय पवित्र होना चाहिये। काफ़िर काबे के स्थान में प्रवेश नहीं करने देते, न सही, यह थोड़े दिन की बातें हैं) ॥

और (यहूद उज़ैर को, और नसारा ईसा को, और मुश्रिकीन फ़रिश्तों को, अल्लाह का बेटा बेटी समझ कर) कहते हैं कि अल्लाह सन्तान रखता है। (यद्यपि) उस को व्यक्ति (जन्म देने और जन्म लेने से) पवित्र है, वरन् जो कुछ (भी) पृथ्वी व आकाश के बीच (प्राणी) हैं, (चाहे वह नबी और फ़रिश्ते ही क्यों न हों) उस को (सब प्राणियों से यह सम्बन्ध है कि वही सब का सृष्टिकर्त्ता है और सब) उसके लिये हैं (और) सब उसके आधीन हैं ॥

और (आकाश व पृथ्वी के बीच के प्राणी ही नहीं, स्वयं) पृथ्वी व आकाश का (भी वही) सृष्टि कर्त्ता है और (ऐसा सृष्टि कर्त्ता जिसे किसी वस्तु को उत्पन्न करने के लिये आदर्श या कारण व साधन की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उस का गौरव यह है कि) जब किसी बात का इरादा करता है (या कोई वस्तु उत्पन्न करनी चाहता है) तो बस, केवल इतना कह देता है कि (ऐसा) हो, इस लिये सहसा (उस की आज्ञानुसार) वैसा ही हो जाता है। (उसके सम्बन्ध में सन्तान रखने का विचार बिल्कुल असत्य है) ॥

और मूर्ख कहते हैं कि अल्लाह हम से (सन्मुख व साक्षात) क्यों नहीं सम्भाषण करता, अथवा हमारे पास (अन्तिम नबी के होने के प्रमाण-स्वरूप) कोई निशानी क्यों नहीं आती ? (तो यह नई बात नहीं है)। इसी तरह (ईसा व मूसा आदि और नबियों के समय में भी) इन से पहिले के कुफ़्फ़ार बिल्कुल इन्हीं के समान बातें किया करते थे। इनके और उनके दिल एक समान हैं, अन्यथा उन लोगों के लिए (तो) हमने काफ़ी निशानियां (प्रमाण) प्रकट कर दी हैं, जो यक़ीन ले आते (और सन्तुष्ट हो जाने की योग्यता रखते) हैं ॥

(ऐ रसूल !) निस्सन्देह हमने तुम्हें सच्चा धर्म देकर भेजा है (और नेक कामों के फल का) मंगल समाचार सुनाने वाला और (बुरे कर्मों के दंड से) डराने वाला (बनाकर) और नर्कीय मनुष्यों के सम्बन्ध में तुम से (कुछ) नहीं पूछा जायगा, (तुम क्यों चिन्तित होते हो, तुम पर दोष नहीं आयेगा कि इन्हें मुसलमान क्यों नहीं किया। अपने कर्मों और बचनों के वह स्वयं उत्तर दाता होंगे) ॥

और (याद रक्खो ! यह) यहूद व नसारा तुम से जब तक तुम (ही) इन के नियमों के अनुयायी न हो जाओ, प्रसन्न नहीं हो सकते (अर्थात् तुम उलटा उनका धर्म स्वीकार कर लो, तब तो उनका द्वेष दूर होना सम्भव है, नहीं तो यूँ ही प्रपंच और रुकावटें जारी रहेंगी। तुम इन की बातों का ख़याल न करो और साफ़) कह दो कि मार्ग तो (बस) वही है, जो अल्लाह ने बताया है (मानो या न मानो) ॥

और अगर (मान लो-अल्लाह की ओर से) ज्ञान प्राप्त हो जाने के बाद (भी) तुम इनके भ्रातृ-भाव के विचार से इनकी इच्छाओं का अनुकरण करने लगे—

جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ
وَلَا نَصِيرٍ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ
حَقَّ تِلَاوَتِهِ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ
يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ يَا بَنِي
إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ
عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ وَاتَّقُوا
يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ
مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَلَا هُمْ
يُنْصَرُونَ ۝ وَإِذِ ابْتَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ رَبُّهُ بِكَلِمَاتٍ
فَأَتَمَّهُنَّ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا قَالَ
وَمِنْ ذُرِّيَّتِي قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ ۝
وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِلنَّاسِ وَأَمْنًا
وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى وَعَهِدْنَا

ع

तो (फिर) तुम को ख़ुदा (के ग़ज़ब) से (बचाने वाला) न कोई दोस्त और न कोई मददगार० जिन लोगों को हम ने क़ुर्आन दिया है, वह उस को पढ़ते रहते हैं, जैसा उस के पढ़ने का हक़ है (और) यही उस पर ईमान (भी) लाते हैं और जो उससे इन्कार रखते हैं, तो वही लोग घाटे में हैं ० ऐ बनी इस्राईल ! हमारे वह एहसानात याद करो, जो हमने तुम पर किये हैं और यह कि हम ने तुम को सारे जहान के लोगों पर बर्तरी दी ० और उस दिन (के अ़ज़ाब) से डरो कि कोई शख़्स किसी शख़्स के कुछ (भी) काम न आए और न उस (की तरफ़) से कोई मुआविज़ा क़बूल किया जाए और न (किसी की) सिफ़ारिश उस को फ़ायदा दे और न लोगों को (किसी तरफ़ से) मदद पहुँचे ० और (ऐ पैग़म्बर ! बनी इस्राईल को वह वक़्त याद दिलाओ) जब इब्राहीम को उनके पर्वर्दिगार ने चन्द बातों में आज़माया और उन्हों ने उन को पूरा कर दिखाया, (तो ख़ुदा ने रज़ामन्द होकर) फ़र्माया कि हम तुमको लोगोंका इमाम (यानी पेशवा) बनाने वाले हैं। (इब्राहीम ने) अ़र्ज़ किया और मेरी औलाद में से ? फ़र्माया (हाँ, मगर) हमारे (इस) इक़रार में वह दाख़िल नहीं, जो सरकश नाहक़ होंगे ० और (ऐ पैग़म्बर ! बनी इस्राईल को वह वक़्त भी याद दिलाओ) जब हमने ख़ानए काबा को लोगों का मर्जा (व मावद) और अम्न की जगह ठहराया और (लोगों को हुक्म दिया कि) इब्राहीम की (इसी) जगह को नमाज़ की जगह मुक़र्रर रक्खो और इब्राहीम और इस्माईल से फ़र्माया—

तो (फिर) तुम्हें अल्लाह (के क्रोध) से (बचाने वाला) कोई मित्र और सहायक नहीं है ॥

(और) पुस्तक वालों में ऐसे लोग (भी) हैं, जो ईश्वरीय पुस्तक को इस प्रकार से पढ़ते हैं, जिस प्रकार से कि उसे पढ़ना चाहिये (जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि, कि तौरेत ही को ध्यान पूर्वक पढ़ने के कारण अन्तिम नबी पर ईमान लाये हैं) ईश्वरीय पुस्तक पर ईमान लाने वाले यही लोग हैं (शेष और सब लोग केवल पुस्तक रखने का दावा कर सके हैं। वास्तव में किसी का किताब पर ईमान नहीं है) और जो इस पर ईमान नहीं रखते, वही हानि उठायेंगे ॥

ऐ बनी इस्राईल ! (देखो अब भी बुद्धि से काम लो और) हमारे उन एहसानों को याद करो, जो हम तुम पर करते रहे हैं और (मुख्य रूप से) इस बात को कि हमने तुम्हें समस्त संसार से श्रेष्ठता देदी (थी)॥

और डरो उस उस दिन से कि जब कोई किसी के ज़रा काम नहीं आयेगा (सब कम्पित हो रहे होंगे और अपनी अपनी फ़िक्र में पड़े होंगे) और जब किसी से (उसके पापों का) प्रायश्चित्त स्वीकार नहीं किया जायगा और जब (यदि कोई धार्मिक कर्तव्यों का पालन न कर के मरा, तो) उस के लिये सिफ़ारिश (भी) व्यर्थ होगी, और जब वह (कुफ़्फ़ार कहीं से) सहायता न पावेंगे (अर्थात् कुछ ले देकर मुक्त न मिलेगी) ॥

इतना कुछ कहा जा चुका (बनी इस्राईल को उनके पूर्वजों का पूर्ण हाल बता दिया गया। इन बातों से तात्पर्य इसके अतिरिक्त कुछ नहीं है कि वह लोग शिक्षा ग्रहण करें और डरें। अच्छा ऐ रसूल ! इन्हें इब्राहीम की कथा भी सुनाओ) जब इब्राहीम की उनके सृष्टि कर्त्ता ने कई बातों में परीक्षा ली और वह उन में पूरे उतरे ॥

(तो प्रसन्न होकर) फ़र्माया, मैं तुम्हें लोगों का नेता बनाने वाला हूं (और अन्तिम तक से तुम्हारी आधीनता और तुम्हारा अनुकरण कराऊँगा)॥

(इब्राहीम) बोले "और मेरी सन्तान ?" * आज्ञा हुई (तुम्हारी सन्तान भी बड़ी सम्मानित और प्रतिष्ठित रहेगी, परन्तु सन्तान में) जो अत्याचारी हो (जावगा तथा असत्य मार्ग पर चलने लगेगा) उसके लिये मेरे बचन सफल न होंगे ॥

* टीका—यहूदियों को बड़ा अभिमान इस बात पर था कि हम याक़ूब व इस्हाक़ व इब्राहीम अ़लैहिमु-स्सलाम् की सन्तान हैं। हम से राज व नुबूवत का वादा हो चुका है। नेता और नेता की सन्तान किसी और का अनुकरण क्या करेंगे। उसका उत्तर इस आयत में दिया गया है कि अत्याचारियों और अयोग्यों को उसी समय वचन सफल न होने के लिये कह दिया गया था। फिर यहूदी यदि इब्राहीम के एक बेटे हज़रत इस्हाक़ के वंश से हैं, तो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम दूसरे बेटे हज़रत इस्माईल अ़लैहि-स्सलाम के वंश से हैं। तो प्रतिज्ञा का विरोध कहां हुआ ? हज़रत इब्राहीम ने दोनों बेटों के वास्ते प्रार्थना की थी न कि एक के वास्ते—हसन निज़ामी ॥ इस्माईल की महिमा यह थी कि वह काबे के कामों में बाप के सहयोगी थे।

और (इस्माईल को ऐ बनू इस्हाक़ ! तुमने क्या समझा है ?) (कहा था कि) इब्राहीम के याद करो उस समय को) जब हमने काबे के पवित्र स्थान को शांति तथा संग्रह होने का स्थान नियत किया (था) और स्थान को (ही) नमाज़ का स्थान बनालो ॥

और इब्राहीम और इस्माईल (दोनों) को आज्ञा दी (थी)—

اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ
وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ۞ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ
رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ
الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِؕ قَالَ
وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى
عَذَابِ النَّارِؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۞ وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ
الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّاؕ
اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۞ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ
لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَاَرِنَا
مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَاۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ
رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ
اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْؕ
اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۞ وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ ع

اِبْرٰهٖمَ

कि हमारे (इस) घर को तवाफ़ करने वालों और मुजाविरों और रुकूअ (और) सज्दा करने वालों (यानी नमाज़ियों) के लिये पाक (साफ़) रक्खो ० और (ऐ पैग़म्बर! इन को वह वक़्त भी याद दिलाओ) जब इब्राहीम ने दुआ मांगी कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! इस (शहर) को अम्न का शहर बना और इस के रहने वालों में से—जो अल्लाह और रोज़ आख़िरत पर ईमान लाएँ, उन को फल फलारी खाने को दे। (अल्लाह तआला ने) फ़र्माया और जो (अल्लाह और रोज़ आख़िरत का) मुन्किर होगा, उस को भी चन्द रोज़ के लिये हम (इन चीज़ों से) फ़ायदा उठाने देंगे। फिर (आख़िर कार) उस को मज्बूर कर के अज़ाब दोज़ख़ में लेजा दाख़िल करेंगे और वह (बहुत ही) बुरा ठिकाना है ० और (ऐ पैग़म्बर! बनी इस्राईल को वह वक़्त भी याद दिलाओ) जब इब्राहीम और (उन के साथ) इस्माईल (दोनों) ख़ानए काबा की बुनियादें उठा रहे थे (और दुआएँ मांगते जाते थे कि) ऐ हमारे पर्वर्दिगार! हम से (यह ख़िदमत) क़बूल कर। बेशक तू ही (दुआ का) सुनने वाला (और नियत का) जानने वाला है ० (और) ऐ हमारे पर्वर्दिगार! हम को अपना (बन्दा) फ़र्मां बर्दार बना और हमारी नस्ल में एक गिरोह (पैदा कर,) जो तेरा हुक्म बर्दार हो और हम को हमारी इबादत के तरीक़े बता और हमारे क़ुसूरों से दर गुज़र। बेशक तूही बड़ा दर गुज़र करने वाला मेहर्बान है० (और) ऐ हमारे पर्वर्दिगार! इन (मक्के वालों) में इन ही में से एक रसूल भेज कि इन को तेरी आयतें पढ़ कर सुनाए और इन को किताब (आस्मानी) और अक़्ल (की बातें) सिखाए और इन (के नुफ़ूस) की इस्लाह करे। बेशक तू ही बा इख़्तियार (और) साहिबे तद्बीर है ० और कौन है, जो इब्राहीम के तरीक़े से इनहिराफ़ करे—

कि हमारा (यह) स्थान परिक्रमा करने वालों, आसन मार कर (उपासना के लिये) एकाग्र बैठने वालों, उपासना तथा सज्दा (ईश्वर के लिये मस्तिक झुकाना) करने वालों के लिये (प्रकट तथा गुप्त दुर्वासनाओं से) निर्दोष रख॥

और (वर्णन करो) जब इब्राहीम ने (अल्लाह से) प्रार्थना की कि ऐ मेरे सृष्टि कर्त्ता! इस स्थान को (एक) शान्ति-पूर्ण और सुरक्षित नगर बनादे और इसके (इन) निवासियों को—जो अल्लाह और प्रलय के दिन पर ईमान लाये हैं, मेवे (और फल) खिला॥

(अल्लाह ने) फ़र्माया (यह) तुच्छ (संसारिक) वस्तुयें (तो) काफ़िरों तक को दूँगा, (परन्तु परलोक के इनाम व उपहार से वह वञ्चित हैं, मृत्यु के बाद) पुनः (इन के लिये कुछ न होगा। सिवा इसके कि) इन्हें (ऐसा) बेबस कर दूँगा (कि) नर्कीय दुःखों की ओर (स्वयं ही चलेंगे) और (नर्क बहुत) बुरा ठिकाना है॥

और (ऐ रसूल! इन इस्राईल के वंश वालों को वह समय भी याद दिला दो,) जब इब्राहीम काबे के स्थान की नींव उठा रहे थे और इस्माईल उनके सहयोगी थे, (तो दोनों कहते जाते थे कि) ऐ हमारे पालन कर्त्ता! हमारी (यह सेवा) स्वीकार करले। तू (प्रार्थनाओं को) सुनता है और (नियतों को) जानता है॥

और ऐ हमारे पालन कर्त्ता! हम दोनों को अपना आधीन बनाले और हमारी सन्तान में से (भी) एक समूह अपना आज्ञा-पालक (उत्पन्न कर) और हमको हमारी प्रार्थना (अर्थात् आज्ञा-पालन और आधीनता) के नियम बता और हम पर दया कर। निस्सन्देह तूही कृपालु और क्षमा करने वाला है॥

(और) ऐ पालन कर्त्ता! इन (लोगों) में (अर्थात् हमारी सन्तान में) इन्ही में से (एक ऐसा) पैग़म्बर भेज, जो इनके सन्मुख तेरी निशानियां वर्णन करे और इन्हें (तेरी) किताब और (तेरी) ज्ञानता का बोध सिखाये और उन (के दिलों) को शुद्ध और पवित्र करे। निस्सन्देह कि तू सब पर बलवान और महान ज्ञानी है (तुझे सब शक्तियां हैं और सब कुछ करना तेरे आधीन है)॥

(अब सोचो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के सिवाय यह गौरव किस नबी को प्राप्त हुआ कि वह इब्राहीम के साथ इस्माईल की भी सन्तान हो?) और (विचार करो) इब्राहीम के धर्म से कौन विमुख हो रहा है:—

اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ
فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ اِذْ
قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ۭ يٰبَنِيَّ اِنَّ
اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ۝ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاۗءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ
الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ۭ
قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَاۗىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ
وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ښ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ تِلْكَ
اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ
وَلَا تُسْـَٔــلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَقَالُوْا كُوْنُوْا
هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ۭ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ
حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ

मगर वही जिस की अक़्ल मारी गई हो और बेशक हम ने उन को दुनिया में (भी) इन्तिख़ाब कर लिया था और आख़िरत में (भी) वह नेकों (के ज़ुमरे) में होंगे ० जब उनसे उनके पर्वर्दिगार ने कहा कि (हमारी ही) फ़र्मां बर्दारी करो, (तो जवाब में) अर्ज़ किया कि मैं सारे जहान के पर्वर्दिगार का (यानी तेरा ही) फ़र्मां बर्दार हुवा ० और इसी (तरीक़े) की (निस्बत) इब्राहीम अपने बेटों को वसीयत कर गए और याक़ूब (भी) कि बेटा ! अल्लाह ने (तुम्हारे) इस दीन (इस्लाम) को तुम्हारे लिये पसन्द फ़र्माया है । पस तुम मुसलमान ही मरना ० (ऐ यहूद !) भला क्या तुम (उस वक़्त) मौजूद थे, जब याक़ूब के सामने मौत आ खड़ी हुई (और) उस वक़्त उन्हों ने अपने बेटों से पूछा कि मेरे (मरे) पीछे किस की इबादत करोगे ? उन्हों ने जवाब दिया कि आप के माबूद और आपके बाप दादों; इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ के माबूद ख़ुदाए वाहिद की इबादत करेंगे और हम उसी के फ़र्मां बर्दार हैं ० (ऐ यहूद !) यह लोग थे कि (अपने वक़्तों में) हो गुज़रे । उन का किया उन को, और तुम्हारा किया तुम को, और जो कुछ वह कर गुज़रे हैं, तुम से उस की पूछ गछ नहीं होगी ० और (यहूद और ईसाई—मुसलमानों से) कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ, तो राह रास्त पर आओ, (ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से) कहो (नहीं) बल्कि हम इब्राहीम के तरीक़े पर हैं, जो एक (ख़ुदा) के हो रहे थे और वह मुश्रिकों में से न थे ० (मुसलमानो ! तुम यहूद व नसारा को यह) जवाब दो कि हम तो अल्लाह पर ईमान लाए हैं—

वही, जिसकी बुद्धि नष्ट हो गई है (यद्यपि इब्राहीम का तो इतना ऊँचा पद था कि) हमने उनको संसार में (भी) श्रेष्ठ बनाया था और अन्त में (भी) उन का पद महा पुरुषों का पद होगा (और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम इब्राहीम ही की प्रार्थना का परिणाम हैं और आपका दीन (धर्म) भी इब्राहीम ही का दीन है)॥

(उन के आज्ञा-पालन की यह दशा थी कि) जब उन से उनके सृष्टिकर्ता ने कहा कि हमारे आज्ञाकारी बनो, तो उन्होंने प्रार्थना की (मैं तन मन से) सर्व संसारों के पालनकर्त्ता (स्वामी) का दास बनता हूं (और तुम्हारी यह दशा है कि इब्राहीम, इब्राहीम की तो रट है, परन्तु उन के कर्मों से कुछ सम्बन्ध नहीं रखते) ॥

(दूसरा नाम तुम्हारी ज़बान पर याक़ूब अलैहि-स्सलाम का बहुत आता है, तो) इसी (धर्म) के (संबन्ध में) जो वसीयत * अपने बेटों को इब्राहीम ने की थी और (उसी की) याक़ूब ने, कि मेरे बच्चो ! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इसी धर्म को उत्तम समझा है । इस लिये तुम (मृत्यु के समय तक इस पर स्थिर रहना) और मरना, तो मुसलमान ही मरना !! (जो इब्राहीम व याक़ूब अलैहिमु-स्सलाम के कहने को नहीं मानते, वह उनके नाम क्यों बार बार लेते हैं ?) ॥

* टीका—जो उपदेश या शिक्षा मृत्यु के समय या मृत्यु से पहिले, मृत्यु के पश्चात के सम्बन्ध में की जाय, उस को अरबी भाषा में वसीयत कहते हैं:—हसन निज़ामी ॥

(और ऐ यहूदियो ! यह जो कहते हो कि याक़ूब अलैहि-स्सलाम की वसीयत यहूदी मत ग्रहण करने के सम्बन्ध में थी तो) क्या तुम याक़ूब की मृत्यु के समय उपस्थित थे ? जब उन्होंने अपने बेटों से पूछा था कि मेरे पीछे किस की उपासना करोगे ॥

(और) उन्होंने उत्तर दिया (था) कि हम तुम्हारे पूज्य ख़ुदा और तुम्हारे बुज़ुर्गों (पूर्वजों) इब्राहीम, इस्माईल और इसहाक़ (अलैहिमु-स्सलाम) के पूज्य ख़ुदा की उपासना करेंगे । उस पूज्य को, जो एक है और हम सब उसी के आज्ञा पालक हैं ॥

(और यहूदियो ! इस घमंड में न रहना कि तुम्हारे पूर्वजों ने–जो एक ख़ुदा की पूजा की है, इस से तुम को भी कुछ लाभ पहुँचेगा, नहीं) यह लोग तो चले गये। इन का किया इनके आगे और तुम्हारा किया तुम्हारे आगे। इनके कर्मों का तुम्हें उत्तर-दाता नहीं बनना पड़ेगा, † (उनके कर्म का तुम पर कोई प्रभाव न पड़ेगा) ॥

† टीका—यहूदियों और नस्रानियों को विश्वास था कि माता पिता के पापों में औलाद पकड़ी जायगी और माता पिता के पुण्य में भी सन्तान अंश भागी होगी:—हसन निज़ामी ॥

और (यहूदी जो यह) कहते हैं कि मूसाई (मूसा को मानने वाले) हो जाओ या (नसरानी कहते हैं) ईसाई (हो जाओ, तब) धर्म-मार्ग पाओगे, (इन को) उत्तर दे दो (तुम्हारा निमन्त्रण व्यर्थ है) । हम तो (मूसा और ईसा के भी पूर्वज अर्थात्) इब्राहीम के धर्म के अनुयायी हैं, जो एक ओर के (हो गये) थे और (तुम्हारे समान) मुश्रिक (द्वैतवादी) नहीं थे ॥

(और) कह दो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये (हैं)–

وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنزِلَ إِلَىٰٓ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْمَٰعِيلَ
وَإِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ وَٱلْأَسْبَاطِ وَمَآ أُوتِىَ مُوسَىٰ
وَعِيسَىٰ وَمَآ أُوتِىَ ٱلنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ
بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُۥ مُسْلِمُونَ ۝ فَإِنْ ءَامَنُوا۟
بِمِثْلِ مَآ ءَامَنتُم بِهِۦ فَقَدِ ٱهْتَدَوا۟ وَّإِن تَوَلَّوْا۟
فَإِنَّمَا هُمْ فِى شِقَاقٍ فَسَيَكْفِيكَهُمُ ٱللَّهُ وَهُوَ
ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ۝ صِبْغَةَ ٱللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ ٱللَّهِ
صِبْغَةً وَنَحْنُ لَهُۥ عَٰبِدُونَ ۝ قُلْ أَتُحَآجُّونَنَا
فِى ٱللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَآ أَعْمَٰلُنَا وَلَكُمْ
أَعْمَٰلُكُمْ وَنَحْنُ لَهُۥ مُخْلِصُونَ ۝ أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ
إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ وَٱلْأَسْبَاطَ
كَانُوا۟ هُودًا أَوْ نَصَٰرَىٰ قُلْ ءَأَنتُمْ أَعْلَمُ أَمِ ٱللَّهُ
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَتَمَ شَهَٰدَةً عِندَهُۥ مِنَ ٱللَّهِ

और (क़ुरान,) जो हम पर उतरा (उस पर) और (सहीफ़े, जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और औलाद याक़ूब पर उतरे (उन पर) और मूसा और ईसा को, जो (किताब) मिला, (उस पर) और जो (दूसरे) पैग़म्बरों को उन के पर्वर्दिगार से मिला (उस पर)। हम इन (पैग़म्बरों) में से किसी एक में भी (किसी तरह की) जुदाई नहीं समझते और हम उसी (एक ख़ुदा) के फ़र्मां बर्दार हैं ० तो अगर तुम्हारी तरह यह लोग भी उन ही चीज़ों पर ईमान ले आएँ, जिन पर तुम ईमान लाए हो, तो बस राह रास्त पर आ गए और अगर इनहिराफ़ करें, तो (समझो कि) बस वह (तुम्हारी) ज़िद पर हैं (और क़ाबू पाएँ, तो सतायें)। तो (ऐ पैग़म्बर !) इन (के शर) से ख़ुदा (का हिफ़्ज़ व अमान) तुम्हारे लिये काफ़ी होगा और वह (सब की) सुनता (और हर एक के हाल से) वाक़िफ़ है ० (मुसलमानो ! इन लोगों से कहो कि हम तो) अल्लाह के रङ्ग में (रँगे गए) और अल्लाह (के रङ्ग) से और किस का रङ्ग बेहतर होगा और हम तो उसी को इबादत करते हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि क्या तुम अल्लाह (के बारे) में हम से झगड़ते हो, हालाँ कि वही हमारा (भी) पर्वर्दिगार है और (वही) तुम्हारा (भी) पर्वर्दिगार (है) और हम को हमारे अमल और तुम को तुम्हारे अमल और; हम ख़ालिस उसी को मानते हैं ० या तुम कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और औलाद याक़ूब (यह लोग) यहूदी या नसरानी थे, (ऐ पैग़म्बर ! इन से) पूछो कि तुम बड़े जानने वाले हो या ख़ुदा ? और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा, जिस के पास ख़ुदा की तरफ़ से गवाही (आई हुई मौजूद) हो और वह उस को छुपाए—

और जो किताब हमें भेजी गई है (उस पर ईमान लाये हैं) और जो (ईश्वरीय पुस्तकें) इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व याक़ूब और इनकी सन्तान पर उतरी थीं, (उन सब पर ईमान लाये हैं) और जो कुछ मूसा व ईसा और (दूसरे) नबियों को इन के सृष्टि कर्त्ता ने प्रदान किया था, (एक एक पर हमारा ईमान है)। हम इन में से किसी के साथ फ़र्क़ (विभिन्नता) नहीं रखते और हम तो उसी के आधीन हैं, (जिस ने वादा लिया था कि जब २ हमारी ओर से कोई शिक्षा आये, उसे स्वीकार करना। हमें इक़रार है कि समस्त भूत कालिक नबी अपने २ समय में अनुकरण करने योग्य थे और आज * भी शरीअत में संशोधन व परिवर्तन हो जाय—तो हो जाय, नहीं तो मुख्य-धर्म में परिवर्तन नहीं हो सका। धर्म आदि सृष्टि से इस समय तक एक ही रहा है) ॥

* टीका—अर्थात् मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के समय में :—हसन निज़ामी ॥

अत: अगर यह (यहूद व नसारा) इसी तरह ईमान ले आयें, जिस तरह तुम लाये हो, तो (समझ लो कि) वह सच्चे मार्ग पर आ गये और अगर विमुख ही रहें, तो (विश्वास करो) वह हठ पकड़ रहे हैं (परन्तु तेरा ऐ रसूल ! कुछ न बिगाड़ सकेंगे)। तेरी ओर से अल्लाह निकट भविष्य में इन से समझ लेगा, इस लिये कि वह (सब की बातें) सुनता और (सब की दशा से) बा ख़बर (सचेत) है। (वह इन के उपायों को और इन के इरादों को नष्ट भ्रष्ट कर देगा) ॥

(यह लोग नीले पीले रँगों पर अभिमान कर रहे हैं और बच्चों और बपतिस्मा (किसी दूसरे धर्म वाले के ईसाई धर्म में दाख़िल होने के समय का संस्कार) लेने वालों को इस में डुबकियां देना सुन्दरता ख़्याल किये हुए हैं। ऐ मुसलमानो ! तुम इन के ऐसे व्यर्थ पाखण्डों † की ओर कान भी न धरो)। तुम्हें अल्लाह ने (अपने रँग में) रँग लिया है और अल्लाह के रँग से उत्तम किस का रँग (हो सक्ता) है ? (कह दो कि) हम (तो) उसीके उपासक हैं ॥

† टीका—ऊपर की आयतों को सुन कर यहूदियों और नसरानियों ने इस प्रकार के पाखंड किये थे कि देखो ! हमारे हाँ अमुक रँग है और हमारे हाँ फ़लाँ रँग है, जिस में डुबकी खाने से पाप धुल जाते हैं:—हसन निज़ामी ॥

(ऐ रसूल ! इन कुफ़्फ़ार से यह) कहो कि आश्चर्य है कि तुम अल्लाह के (इस कार्य के) सम्बन्ध में हम से झगड़ते हो (कि उस ने बनी इस्माईल में से नबी क्यों बना दिया,) यद्यपि वह हमारा भी, और तुम्हारा भी, दोनों का पालन कर्त्ता है और हमारे कर्म हमारे लिये और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिये हैं। (तुम्हारे पूर्वजों के घमंड, पक्षपात, इन्द्रिय लोलुपता का तुम्हें अवश्य प्रति फल दिया जावेगा) और (हमारे आचारणों का फल हमें)। हमतो केवल उसी के (बन्दे) हैं ॥

(और ऐ रसूल ! इन से पूछो कि यहूदियो ! और नसरानियो !) क्या तुम इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याक़ूब और उनकी सन्तान को (वाक़ई) यहूदी अथवा नसरानी समझते हो ? ॥

कह दो !! (अल्लाह ने अपनी तौरेत व इन्जील आदि पुस्तकों में इन के यहूदी व नसरानी होने से इनकार किया है। अब) तुम अधिक जानते हो या अल्लाह ? (यह तुम्हारा अन्याय है कि तुम ईश्वरीय साक्षी को छिपाते हो)। और उस से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा, जिस के पास अल्लाह की ओर से (आई हुई) गवाही (मौजूद) हो और वह उसे छिपाये—

وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ
لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْئَلُونَ
عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ
مَا وَلّٰهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا
قُلْ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
اِلٰى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ
اُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ
وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا وَمَا جَعَلْنَا
الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ
يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَاِنْ
كَانَتْ لَكَبِيرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللّٰهُ وَمَا
كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيعَ اِيمَانَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ
رَحِيمٌ ۝ قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ

और जो कुछ भी तुम कर रहे हो, अल्लाह उस से बे ख़बर नहीं० यह लोग थे कि (अपने वक़्तों में) हो गुज़रे, उन का किया उनको, और तुम्हारा किया तुम को, और जो कुछ वह कर गुज़रे, तुम से उस की पूछ गछ नहीं होगी० जिन लोगों की अक़्ल मारी गई है, वह तो कहेंहीगे कि मुसलमान जिस क़िब्ले पर (पहिले) थे (यानी बैतुल्मक़्दस) उस से उन के (ख़ानए काबा की तरफ़ को) मुड़ जाने की क्या वजह हुई ? (ऐ पैग़म्बर !) तुम यह जवाब दो कि मश्रिक़ और मग़्रिब (सब) अल्लाह ही का है। जिसको चाहता है, (दीन का) सीधा रस्ता दिखाता है० और (मुसल्मानो ! जैसे हमने तुम को अब ठीक क़िब्ला बता दिया है) इसी तरह हमने तुम को बीच की रास की उम्मत (भी) बना दिया है, ताकि और लोगों के मुक़ाबिले में तुम गवाह बनो और तुम्हारे मुक़ाबिले में (तुम्हारे) रसूल (मुहम्मद) गवाह बनें और (ऐ पैग़म्बर !) जिस क़िब्ले पर तुम (पहिले) थे (यानी बैतुल्मक़्दस) हमने उसको इसी ग़रज़ से क़रार दिया था कि (जब क़िब्ला बदला जाय, तो) जो लोग रसूल की पैरवी करें, उन को हम उन लोगों से (अलग) मालूम करलें, जो (सरताबी करके) अपने उल्टे पांव फिर जायं और क़िब्ले का बदला जाना सब ही पर शाक़ हुआ, मगर उन लोगों पर (शाक़ नहीं हुआ,) जिन को अल्लाह ने (नेक) हिदायत दी (कि उन्होंने तह्वील क़िब्ला को ख़ुशी २ मन्ज़ूर कर लिया) और ख़ुदा ऐसा नहीं कि तुम मुसल्मानों के ईमान (के काम यानी नमाज़) को (जो बैतुलमक़्दस की तरफ़ पढ़ चुके हो, इख़्तिलाफ़ क़िब्ला की वजह से) ज़ाए होने दे। ख़ुदा तो लोगों पर बड़ी ही शफ़क़त रखने वाला मेहर्बान है० (ऐ पैग़म्बर ! हुक्म तह्वील क़िब्ला के इन्तिज़ार में) तुम्हारा मुंह फेर २ कर आसमान की तरफ़ देखना हम मुलाहिज़ा फ़र्मा रहे हैं। तो (घबराओ नहीं,) जो क़िब्ला तुम चाहते हो, हम तुम को उसी की तरफ़ फिर जाने का हुक्म दे देंगे—

(ऐ काफ़िरो !) जो २ तुम कह रहे हो, अल्लाह उससे बे ख़बर नहीं है ॥ (ख़ैर तुम्हारे पूर्वज जैसे थे—थे, तुम उन्हें यहूदी समझो या
नसरानी, परन्तु तुम्हें उनके भरोसे पर न रहना चाहिये)। वह (तो) एक समूह था कि चला गया (और अपनी व्यतीत कर गया)। उनके कर्मों
का बदला उनके लिये है और तुम्हारे कर्मों का बदला तुम्हारे लिये। तुम से उनके कर्मों की पूछ गछ न होगी (और न उनके पुरस्कारों में तुम भाग
ले सकोगे और ऐ मुसल्मानो ! तुम भी याद रखना ! ख़ाली श्रेष्ठों की सन्तति होना कुछ काम नहीं आया करती) ॥ (ऐ रसूल ! इन यहूदियों और
नस्रानियों के किन २ आक्षेपों का विचार कर के शोकान्वित होगे, अब) शीघ्र (यह) मूर्ख लोग, (जो इब्राहीम की सन्तान होने पर अभिमान करते
हैं, किन्तु उनके धर्म और अन्य समस्त वस्तुओं से विमुख हैं, बैतुल्मक़्दस के बजाय काबे के क़िबला * नियत होने पर भी आक्षेप करेंगे और (कहेंगे
कि इन मुसल्मानों ने) जिसे क़िबला बना लिया था, उससे इन्हें किस बात ने विमुख कर दिया ? (मूर्ख लोग इसे क्या समझ सकते हैं। काबा भी
इब्राहीम ही की एक स्मारक है। इसका आदर बढ़ना यह सहन न करेंगे) ॥ (ऐ रसूल ! तुम उन से) कहो कि पूर्व व पश्चिम (और समस्त दिशायें)
अल्लाह की हैं, (जिस दिशा में चाहे क़िबला नियत करे। इन शंकाकारियों की कैसी मोटी बुद्धि है कि इतनी सी बात नहीं समझ सकते। सच है) अल्लाह
(ही) जिसे चाहता है, सीधे मार्ग पर चलाता है ॥ और (ऐ मुसल्मानो ! जिस तरह काबे के स्थान की दिशा को समस्त दिशाओं में से चुन कर यह
सम्मान दे दिया गया कि वह तुम्हारा क़िबला है.) इसी तरह हमने तुम्हें (समस्त जातियों में से चुनकर) श्रेष्ठ जाति बनाया है, जिस से और लोगों
के लिये तुम आदर्श (सनद) बनो और तुम्हारे लिये पैग़म्बर (अन्तिम समय के)आदर्श हों (अर्थात् तुम्हारे विश्वास और धार्मिक आचरण संसार
के लिये आदर्श हों और रसूलुल्लाह की शिक्षा तुम्हारे लिये। और प्रलय के दिन तुम्हें दूसरों के सामने उपस्थित कर के कहा जाय कि देखो ! ऐसा
होना चाहिये था और तुम्हारे कुपात्रों को लज्जित किया जाय कि मुहम्मद जैसे पैग़म्बर की जाति में आकर भी तुम कुपात्र ही रहे) ॥ और (ऐ रसूल !
तुम इन कुपात्र मुसल्मानों के अस्थिर होने का विचार न करो, जो यहूदियों वग़ैरा के कहने में आ रहे हैं) हमने तुम्हारे पूर्व-क़िबले को फिर क़िबला
इसी लिये बना दिया है कि मालूम कर लें कि कौन (वास्तविक अर्थों में हमारे) रसूल का अनुयायी है और कौन (अविश्वासी है कि विद्रोह कर के)
उलटे पांव फिर जाता है (अर्थात् धर्म से विमुख हो जाता है) ॥
और यह (क़िबले का परिवर्तन लोगों के लिये) बड़ा कठिन है, किन्तु जिन्हें अल्लाह ने हिदायत (सत्य-मार्ग) दे रक्खी है, (उनके लिये
कुछ भी कठिन नहीं) ॥ और (ऐ मुसल्मानो ! यहूदी इस विषय में जो यह आक्षेप करते हैं कि काबा वास्तविक क़िबला था, तो तुमने जितनी नमाज़ें बैतुल्म-
क़्दस की ओर मुंह करके पढ़ीं, वह व्यर्थ गईं। और जिनका बैतुल्मक़्दस की ओर नमाज़ पढ़ने के समय देहान्त हो गया, वह तो कहीं के न
रहे। उन का यह आक्षेप असत्य है, क्योंकि काबा और बैतुल्मक़्दस की दिशाओं में अपने तौर पर क़िबला बनने की कोई विशेषता: नहीं है। दोनों
दिशायें ख़ुदा के लिये समान हैं। उस को अधिकार है कि जिस दिशा को चाहे क़िबला बनाकर बन्दों से अपनी आज्ञा का पालन कराये। क़िबला
वास्तव में ख़ुदा का आदेश है, कोई मुख्य दिशा नहीं। इस लिये ख़ुदा के हुक्म से जिस दिशा में भी नमाज़ें पढ़ी गईं, वह ठीक क़िबले की ओर
पढ़ी गईं)। अल्लाह ऐसा नहीं है कि तुम्हारे ईमान (के अनुसार किये हुए आचरणों) को (अर्थात् उन आचरणों को, जो तुमने केवल ख़ुदा की
आज्ञा पालन में किये हैं) अकार्थ (और व्यर्थ) जानेदे (और उन का कुछ प्रतिफल न दे)। अल्लाह तो (अपने) बन्दों पर दया रखने वाला
कृपालु है। (बन्दों को केवल उस की आज्ञा का पालन करना चाहिये, जो वह कहे स्वीकार हो। बैतुल्मक़्दस को क़िबला बना दिया, वह भी
स्वीकार था, काबे को क़िबला बना दिया, वह भी मंज़ूर है। जो लोग बैतुल्मक़्दस या काबे या किसी मकान की बन्दिगी के बजाय, अल्लाह के
बन्दे हों, उनके साथ उसकी दया और कृपा का क्या ठिकाना है) ॥ (ऐ मुहम्मद !) हमने तुम्हारा आकाश की ओर (बार बार) मुंह करना देखा

(अच्छा) तो (अब नमाज़ पढ़ते वक़्त) मस्जिद मोहतरम (यानी काबे) की तरफ़ को अपना मुँह कर लिया करो और (मुसल्मानो! तुम भी) जहाँ कहीं हुआ करो, उसी की तरफ़ को अपना मुँह कर लिया करो और (ऐ पैग़म्बर!) जिन लोगों को किताब (तौरात वग़ैरा) दी गई है, उनको बख़ूबी मालूम है कि तहवील क़िब्ला बर हक़ (और) उन के पर्वर्दिगार (के हुक्म) से है और जो (तद्बीरें यह लोग मुसल्मानों के दिलों में शुकूक पैदा करने के लिये) कर रहे हैं, ख़ुदा उस से बे ख़बर नहीं० और (ऐ पैग़म्बर!) जिन लोगों को किताब (तौरात वग़ैरा) दी गई है, अगर तुम (दुनिया जहान के) सारे दलायल भी उन के पास ले आओ, तो भी वह तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी न करें और न तुम ही उन के क़िब्ले की पैरवी करने वाले हो और उन में का कोई (फ़रीक़) भी दूसरे (फ़रीक़) के क़िब्ले की पैरवी करने वाला नहीं और तुम को जो इल्म हासिल हो चुका है, अगर उसके (हासिल हुए) पीछे भी तुम इन (लोगों) की ख़्वाहिशों पर चले, तो ऐसी सूरत में बेशक तुम भी ना फ़र्मानों में (शुमार) होगे० जिन लोगों को हमने किताब (तौरात वग़ैरा) दी है, वह जिस तरह अपने बेटों को पहिचानते हैं, (इसी तरह हमारे) इन (पैग़म्बर मुहम्मद) को भी पहिचानते हैं और उन में से कुछ लोग (ऐसे भी हैं, जो) दीदा व दानिस्ता हक़ (बात) को छुपाते हैं० (ऐ पैग़म्बर! यह तहवील क़िब्ला) बर हक़ (और) तुम्हारे पर्वर्दिगार (के हुक्म) से है, तो (देखो तुम) कहीं शक करने वालों में से न हो जाना० और हर एक (फ़रीक़) के लिये एक सिम्त (मुक़र्रर) है, जिधर को (नमाज़ में) वह अपना मुँह करता है, तो (मुसल्मानो! तुम इख़्तिलाफ़ सिम्त की चन्दाँ पर्वा न करके) नेकियों की तरफ़ लपको (कि औरों से बढ़ जाओ)। तुम कहीं भी हो, अल्लाह तुम सब को (अपने पास) खींच बुलाएगा। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है०—

قِبْلَةً تَرْضٰىهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ وَاِنَّ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّهِمْ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَئِنْ اَتَيْتَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ
وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ
بَعْضٍ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا
جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ
اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ
اَبْنَآءَهُمْ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ
يَعْلَمُوْنَ ۝ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ
وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ
اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى

बस अपना मुँह पूजनीय मसजिद (काबे) की ओर करलो, (अर्थात् बजाय बैतुलमक़्दस के काबे की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ा करो)॥

और (मुसलमानो! तुम्हारे लिये सदैव को यह निश्चित हुआ कि) तुम जहाँ कहीं भी हो (जल में, स्थल में, पूर्व में, पश्चिम में—नमाज़ के समय) काबे (ही) की ओर मुँह किया करना॥ और (यह) किताब वाले (अच्छी तरह) जानते हैं कि यह (क़िबले का परिवर्तन) उचित (और) उनके पालन कर्त्ता की ओर से है। (क्योंकि उन के हाँ अन्तिम काल के नबी की निशानियों में इस निशानी का भी वर्णन मौजूद है कि अन्तिम काल का नबी क़िबले के स्थान में परिवर्तन कर देगा, परन्तु पक्षपात और द्वेष का बुरा हो, कि न स्वयं सत् मार्ग पर आते हैं और न दूसरों को आते देख सकते हैं) और (ख़ैर) जो (जो उपाय) यह (लोग क़िबले के परिवर्तन के उपरान्त मुसलमानों को विरोधी और परेशान बनाने के लिये) कर रहे हैं, अल्लाह उन से बे ख़बर नहीं है॥ और (इन) किताब वालों (की तो यह दशा है कि इन) के सामने यदि तुम (एक एक कर के) सारी निशानियाँ ला (कर रख) दोगे, (तब भी) वह तुम्हारे क़िबले को ग्रहण नहीं करेंगे और न तुम उन के क़िबले के अनुयायी हो और (फिर उन में परस्पर भी तो मत भेद है)। एक दूसरे के क़िबले को नहीं मानता (यहूदियों का क़िबला कोई है, नसरानियों का कोई और तुम किस २ का साथ दे सकते हो)॥ और यदि (मानलो) तुम (इस का ज्ञान हो जाने के उपरान्त कि अल्लाह ने काबे के स्थान को क़िबला बना दिया है) इन (किताब वालों) की इच्छानुसार चले (और इनके क़िबले को अपना क़िबला बनाने की चेष्टा की) तो इस दशा में अवश्य ही सीमा से बढ़ने वालों में तुम्हारी गणना होगी॥ जिन लोगों को हमने किताब दी है (अर्थात् यहूद व नसारा) उन को इस (क़िबले के परिवर्तन के उचित होने) का ऐसा विश्वास है, जैसा अपने बेटों (के बेटे होने) का। अलबत्ता इन में एक समूह है, जो सत्य को जान बूझ कर छिपा रहा है॥ (ऐ रसूल!) तुम (कभी इस समूह की चिन्ता न करना) और (किसी प्रकार के) सन्देह में न पड़ना। (बैतुलमक़्दस के बजाय जो काबे का स्थान क़िबला हुआ, तो) ठीक (ही) हुआ है और तुम्हारे पालन कर्त्ता (की आज्ञा) से हुआ है। (और) सत्य बात (किसी के छिपाने से नहीं छिप सकती है, वह तो तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (सत्य ठहरा दी गई है। अतएव ऐ रसूल!) उचित यह है कि तुम (कभी इन लोगों के बहकाने में न आना और) सन्देह में न पड़ना॥ और हर एक (जाति) में (क़िब्ले के तौर पर) एक दिशा (नियत) है। जिधर वह (उपासना के समय) अपना मुँह करती है। (तुम व्यर्थ झगड़े में पड़ कर समय नष्ट न करो) बरन् (कोशिश करो कि इन) नेकियों में (भी सब से) बढ़ जाओ (जो वास्तव में उद्देश युक्त हैं)। तुम (संसार में) चाहे कहीं (भी) हो, (किसी मार्ग के अनुयायी हो, काबे की ओर मुँह करते हो या बैतुलमक़्दस की ओर—हर दशा में प्रलय के दिन) तुम सब को अल्लाह अपने पास एकत्रित कर लेगा। (और तुम्हें तुम्हारे सुकर्म व दुष्कर्मों का प्रतिफल व दंड देगा। उस दिन समस्त भेद-भाव की वास्तविकता तुम पर प्रकट हो जायगी)। अल्लाह का हर बात पर है अधिकार —

(३१ पृष्ठ का शेष)

(और तुम्हारी यह इच्छा मालूम करके कि बैतुलमक़्दस क़िबला न रहे) हम तुम्हें उसी क़िबले की ओर फेरे देते हैं, जिससे तुम प्रसन्न हो —

* टीका—रसूलुल्लाह मक्के में काबे की ओर मुंह कर के नमाज़ पढ़ते थे, परन्तु जब मदीने में आये, तो कुछ रोज़ के लिए बैतुलमक़्दस क़िबला हो गया। यहूदी इस से बहुत ख़ुश थे कि मुहम्मद ने कम से कम हमारे क़िबले को तो ग्रहण किया। और कुछ लोगों ने कटाक्ष से कहा कि पहले क़िबले की ख़बर ही न थी, अब पता चला है। परन्तु यकायक फिर काबे की ओर मुड़ जाने का आदेश हुआ और काबा निश्चित रूप से क़िबला नियत हुआ। इसके सम्बन्ध में आक्षेप आरम्भ होने से पहिले ही यह सूचना दे दी गई थी कि अब शीघ्र यह मूर्ख लोग इस पर शंकायें करेंगे—हसन निज़ामी॥

और (ऐ पैग़म्बर !) तुम कहीं से भी निकलो (यहां तक कि मक्के से भी) तो (जहां हो, नमाज़ में) अपना मुंह मस्जिद मोहतम की तरफ़ कर लिया करो और अलबत्ता (यही नया क़िब्ला) बरहक़ (और) तुम्हारे परवर्दिगार (के हुक्म) से है और (मुसलमानो !) अल्लाह तुम्हारे अमलों से बे ख़बर नहीं ० और (ऐ पैग़म्बर !) तुम कहीं से भी निकलो, (यहां तक कि मक्के से भी) तो (जहां हो, नमाज़ में) अपना मुंह मस्जिद मोहतरम की तरफ़ कर लिया करो और (मुसलमानो !) तुम भी जहां कहीं हुआ करो, (नमाज़ में) उसी की तरफ़ अपना मुंह करो। (बार बार हुक्म देने से एक) ग़रज़ यह है कि ऐसा न हो—लोगों को तुम्हें क़ायल करने की सनद हाथ आ जाय। मगर उनमें से जो नाहक़ की हेकड़ी करते हैं, (वह तो तुम को इल्ज़ाम दिये बग़ैर रहने के नहीं,) तो तुम उन से न डरो और हमारा डर रक्खो और (दूसरी) ग़रज़ यह है कि हम अपनी नेअ़मत तुम पर पूरी करें और (तीसरी) ग़रज़ यह है कि तुम (क़िब्ले के बारे में) सीधे रस्ते आ लगो ० (मुसलमानो ! यह एहसान भी उसी क़िस्म के हैं,) जैसा हमने तुम में तुम ही में के एक रसूल भेजे, जो हमारी आयतें तुम को पढ़ कर सुनाते और तुम्हारी इस्लाह़ करते और तुम को किताब (यानी क़ुरआन) और अ़क़्ल (की बातें) सिखाते और तुम को ऐसी २ बातें बताते, जो (पहिले से) तुम को मालूम न थीं ० तो तुम हमारी याद में लगे रहो कि हमारे हां भी तुम्हारा ज़िक्र (ख़ैर) होता रहे और हमारा शुक्र करते रहो और हमारी नाशुक्री न करो ० मुसलमानो ! (तुम को किसी तरह की मुश्किल पेश आये, तो उसके मुक़ाबिले के लिये) सब्र और नमाज़ से मदद लो। बेशक अल्लाह सब्र करने वालों का साथी है ०—

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ ۗ وَمَا اللَّهُ
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا
وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ
حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ
وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُونَ ۝ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ
يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا
تَعْلَمُونَ ۝ فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا
لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا
بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝

(उस के लिए यह कुछ कठिन नहीं है कि भिन्न २ जगह रहने वालों, और भिन्न २ मार्ग रखने वालों को प्रलय के दिन एक स्थान पर एकत्रित कर दे और भेद भाव को मिटा दे) ॥

और (ऐ रसूल ! तुम यदि कभी यात्रा करो, तो वह यात्रा चाहे) जिस स्थान से (भी आरम्भ हो; चाहे मक्के ही से) तुम (बाहर) निकलो, (हर दशा में नमाज़ पढ़ते समय) अपना मुंह पूजनीय मसजिद (काबे) को ओर कर लिया करो और (विश्वास रक्खो) यह (तुम्हारा क़िबला बिल्कुल) निश्चित (क़िबला) है, (क्योंकि) तुम्हारे पालन कर्त्ता (की आज्ञा) से (नियत हुआ) है। और (मुसलमानो !) अल्लाह तुम्हारे कर्मों से अचेत नहीं है। (इस आदेश की पालना में जैसे कर्म तुम करोगे, उनका फल तुम्हें दिया जायगा) ॥

और (ऐ रसूल !) तुम कहीं से भी बाहर जाओ (और यात्रा करो, यहां तक कि मक्के से भी,) तो (जहाँ हो नमाज़ के समय) अपना मुंह पूजनीय मसजिद (काबे) की ओर किया करो और (यह आज्ञा केवल रसूल ही के लिये नहीं है, ऐ मुसलमानो !) तुम (सब पर भी आवश्यक है कि संगठित हो जाओ) जिस जगह हो, (नमाज़ में) उसी ओर अपना मुंह करो, (बारम्बार इस लिये कहा जा रहा है कि तुम्हारे हृदयों में भूत-कालिक क़िबले के परिवर्तन की आज्ञा आने और आधुनिक क़िब्ले के नियत किये जाने के सम्बन्ध में जो सन्देह है, वह निवृत्त हो जाय और तुम सब एकता व एक मत होकर ख़ुदा की आज्ञा पालन में काबे को अपना क़िबला बना लो) जिस से कि (विरोधी) मनुष्यों को तुम्हारे विपरीत आक्षेप करने का अवसर न मिले (और वह तुम पर कटाक्ष न कर सकें) उन विरोधियों को छोड़ते हुए—जिन्होंने अन्याय पर कमर बांध ली है, (वह तो आक्षेप और कटाक्ष करते ही रहेंगे) तुम्हें उन से भय खाने की आवश्यकता नहीं है, (भय से उन की ओर न झुको) भय करना तो तुम्हें (बस) हम से चाहिये (और हमारी ही आज्ञा का पालन करना चाहिये) और (दूसरा) तात्पर्य (बारम्बार से) यह है कि हम तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दें (अर्थात् क़िबले के परिवर्तन करने में जो तुम्हारे लिये सुसाधकतायें हैं, वह अच्छी तरह तुम्हारे हृदयान्तर्गत हो जायँ) और तुम (हमारे इस एहसान से पूरा लाभ उठा कर) ठीक रास्ते पर आ जाओ ॥

(यह जो कुछ हम कह रहे हैं, यह उसी तरह की मेहर्बानी है) जिस तरह हमने तुम ही में से एक रसूल भेज दिया, जो तुम्हें हमारी आयतें पढ़ २ कर सुनाता है और तुम्हारा सुधार करता है और तुम को किताब और बुद्धिमानी की शिक्षा देता है और वह (बातें) सिखाता है, जो तुम (पहिले) नहीं जानते थे ॥

अतः (हमारी इन भलाइयों का ख़याल कर के) हमारी याद में लगे रहो, हम (भी) तुम को याद रक्खेंगे और हमारे कृतज्ञ रहो और कृतघ्नता न करो ॥

ऐ मुसलमानो ! (क़िबले के परिवर्तन के कारण जिस चक्कर में तुम पड़ गये हो, उससे घबराओ नहीं और यह याद रक्खो कि जब कभी तुम्हें कोई कठिनता सामने आये, अल्लाह से उसके रोकने के लिये) धैर्य करके और नमाज़ पढ़ के मदद मांगो। अल्लाह सन्तोष करने वालों का साथ देता है। (कठिनता के समय घबराने और बेचैन होने से कठिनता कम नहीं होती। कठिनता रोकने का एक ही उपाय है कि अल्लाह का नाम ले २ कर हृदय को दृढ़ रक्खा जाय और साहस व सन्तोष से उसे सहन कर लिया जाय *) ॥

* टीका—सन्तोष के दो रूप होते हैं; एक यह कि मनुष्य अपना धैर्य न खोवे और हंसी ख़ुशी से आपत्तियों का मुक़ाबला करता रहे। दूसरा रूप अल्लाह में चित्त लगाना है, जिसका एक मात्र साधन नमाज़ है। रसूलुल्लाह ऐसे अवसर पर तुरन्त नमाज़ में लग जाते थे।—हसन निज़ामी ॥

وَلَا تَقُولُوا لِمَن يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ
بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُم
بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ
وَالْأَنفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝ الَّذِينَ
إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ
رَاجِعُونَ ۝ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ
وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ۝ إِنَّ الصَّفَا
وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ
خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ
يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ
مِن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ
يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا

وَأَصْلَحُوا

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जायँ, उन को मरा हुआ न कहना। (वह मरे नहीं,) बल्कि ज़िन्दा हैं, मगर (उन को ज़िन्दिगी की हक़ीक़त) तुम नहीं समझते ० और अलबत्ता हम तुम को थोड़े से ख़ौफ़ से और भूख से और माल और जान और पैदावार (आराज़ी) की कमी से आज़-मायँगे और (ऐ पैग़म्बर !) सब्र करने वालों को (.ख़ुश नूदी .ख़ुदा और आसायश की) ख़ुश ख़बरी सुनादो ० यह लोग जब इन पर मुसीबत आ पड़ती है, तो बोल उठते हैं कि हम तो अल्लाह ही के हैं। (हम को जिस हाल में चाहे, रक्खे)। और हम उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। तो वह हम को हमारे सब्र का अज्र देगा ० यही लोग हैं, जिन पर उनके पर्वर्दिगार की इनायत और रहमत है और यही राह रास्त पर हैं ० बेशक (कोह) सफ़ा और (कोह) मर्वह ख़ुदा की (ठहराई हुई) यादगाहों में से हैं। तो जो शख़्स ख़ानए काबा का हज या उमरह करे, उस पर इन दोनों के दरमियान तवाफ़ (के फेरे) करने में कुछ गुनाह नहीं, (जैसा कि बाज़ने ख़याल किया है, बल्कि मूजिब सवाब है)। और जो .ख़ुश दिली से नेक काम करे, (अज़ाँ जुम्ला यह तवाफ़,) तो अल्लाह क़द्रदान (और उस की नियत को) ख़ूब जानता है ० वह जो हमने खुले हुए अहकाम और (नीज़) हिदायत की बातें उतारीं (और) किताब (तौरात) में हमने लोगों को साफ़ साफ़ समझा दीं, इस के बाद भी जो उन को छुपाएँ, तो यही लोग हैं–जिन पर .ख़ुदा लानत करता है और (दुनिया भर के) लानत करने वाले (भी) उन पर लानत करते हैं ० मगर जिन्हों ने तौबा की—

(जो इस ढंग से काम लेते हैं, विशेष कर अल्लाह के रास्ते में वह बड़े पद पाते हैं)। और जो (इतना साहस रखते हैं कि) अल्लाह के रास्ते में बध (तक) हो जाते हैं, उनको (तुम) मुर्दा न कहो। वह मुर्दा नहीं होते, बल्कि ज़िन्दा (ही रहते) हैं। परन्तु (उनका जीवन जिस प्रकार का होता है, वहां तक) तुम्हारी बुद्धि नहीं पहुंच सकती ॥

और हम तो तुम्हारी परीक्षा करते ही रहेंगे (कभी) किसी डर से, (कभी) भूख से, और (कभी) धन और प्राण और पैदावार की कमी से, (कभी) तुम अपने शत्रुओं के भय से निराश होगे, कभी निर्धनता के कारण फ़ाक़े करोगे, कभी व्यौपार में हानि होगी, कभी पशुओं की हानि होगी और कभी पैदावार की। तात्पर्य यह है कि इस सांसारिक जीवन में तरह तरह की विपत्तियाँ पड़ती रहेंगी और .ख़ुदा की धार्मिक सेवा के बदले में ऐसे अवसर और बहुत से आयेंगे ॥

और (ऐ रसूल !) जो सन्तोष (व धैर्य) करने वाले ऐसे हैं कि विपत्ति पड़ने के समय "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ा करते हैं, (अर्थात् हम अल्लाह के हैं, जिस प्रकार वह चाहे हमें रक्खे और मृत्यु के पीछे हमें उसी अल्लाह के पास वापिस जाना है) उनको मङ्गल समाचार सुना दो कि यह (वह) मनुष्य हैं (उन का यह आदर है) कि उन पर उन का पालन कर्ता दरूद (आसमानी बरकत) और कृपा (उतारता) है और (यह घोषणा करदो कि) यही मनुष्य हैं, जो धर्म मार्ग पर हैं ॥

इस सच्चाई को दिलों पर नक़्श (हृदयान्तर्गत) करने के लिये कि अल्लाह संतोष व धैर्य से विपत्तियां सहन करने वालों के पुरस्कार को कभी कभी व्यर्थ नहीं करता। अल्लाह ने हाजरा * अलैह-स्सलाम के संतोष व धैर्य की स्मारक में "सफ़ा" और "मर्वा" पर्वत को प्रलय तक के लिये एक आदरनीय स्थान नियत कर दिया है कि मनुष्य आयें और हाजरा के अनुकरणार्थ उनके बीच सात बार दौड़ें। यह विचार ग़लत है कि सफ़ा और मर्वा में कुछ दिनों काफ़िरों ने जो बुत (मूर्तियां) रख लिये, तो अब उनकी महत्ता जाती रही। सफ़ा और मर्वा अल्लाह की (मुख्य) स्मृतियों में से हैं। अत: जो मनुष्य काबे के स्थान हज करे या उमरह, उसके लिये इन दोनों के बीच दौड़ना पाप नहीं है (वरन् पुण्य है, क्योंकि यद्यपि हमने सफ़ा और मर्वा के बीच में दौड़ना फ़र्ज़ नहीं किया है, परन्तु भलाई अवश्य है) और जो अपनी इच्छा से कोई भलाई करता है, (तो उसकी भलाई व्यर्थ नहीं जा सकती) अल्लाह भलाई की क़द्र करता है (और बन्दों के हार्दिक भावों का हाल) जानता है ॥ (यह सब बातें ऐसी हैं) जिन को हम मनुष्यों के लिये (अपनी) किताबों में विस्तार पूर्वक वर्णन कर चुके हैं। इसके उपरान्त भी, जो मनुष्य हमारे उतारे हुए हुक्मों और हिदायतों को छिपाते हैं और यह वही मनुष्य हैं कि उन पर अल्लाह (भी) धिक्कार करता है और समस्त लानत करने वाले (भी) लानत करते हैं ॥ मगर जो (इन शरारतों से) तौबा कर चुके—

* टीका—अल्लाह के मुख्य बन्दों में से एक हज़रत हाजरा हज़रत इब्राहीम की पत्नी हैं, जिन को उनके दूध पीते बच्चे इस्माईल सहित अल्लाह की आज्ञा से उनके पति मक्के की पथरीली भूमि में अकेला छोड़ कर चले आये थे। हज़रत हाजरा अपने बच्चे को प्यास से व्याकुल देख कर पानी की खोज में कभी "सफ़ा" पर्वत पर चढ़ती थीं और कभी वहाँ से दौड़ कर "मर्वा" पर्वत पर आती थीं। जब सात बार इसी प्रकार दौड़ चुकीं, तो अल्लाह ने अपनी दया और कृपा से पानी का एक स्रोत बहा दिया, जिस का नाम "ज़म ज़म" है और इस घटना की स्मारक के लिये सफ़ा, मर्वा को अन्त सृष्टि तक अपनी उपासना का स्थान नियत कर दिया। जिस से कि लोग इन पहाड़ियों के बीच हज़रत हाजरा के अनुकरण-स्वरूप सात बार दौड़ कर यह अनुभव करें कि अल्लाह संतोष तथा धैर्य से दुःख सहने वालों के पुरस्कार को कभी व्यर्थ नहीं करता:—.हसन निज़ामी ॥

وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا
التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ
كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ
وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ وَاِلٰهُكُمْ
اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ اِنَّ
فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ
الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ
بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ
مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا
مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ
بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا

और (अपनी हालत की) इस्लाह करली और (जो कुछ किताब में था) साफ़ साफ़ बयान कर दिया—तो यही लोग हैं, जिन की तौबा हम क़बूल करते हैं और हम (तो तौबा के) बड़े क़बूल करने वाले मेहर्बान हैं ० जो लोग (जीते जी दीन हक़ से) इन्कार करते रहे और इन्कार ही की हालत में मर गये—यही हैं जिन पर ख़ुदा की लानत और फ़रिश्तों की और आदमियों की, सब की ० हमेशा (हमेशा) इसी (फिटकार) में रहेंगे। न तो इन (पर) से अज़ाब ही हलका किया जायगा और न इन को (अज़ाब के बीच बीच में) मोहलत ही मिलेगी ० और (लोगो !) तुम्हारा माबूद (तो वही) ख़ुदाए वाहिद है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। बड़ा रहम करने वाला मेहर्बान है ० बेशक आस्मानों (के) और ज़मीन के पैदा करने में और रात और दिन के अदल बदल में और जहाज़ों में, जो लोगों के फ़ायदे की चीज़ें (यानी माल तिजारत) समन्दर में लेकर चलते हैं और मेंह में, जिसको अल्लाह आस्मान से बर्साता, फिर उसके ज़रिये से ज़मीन को उसके मरे (यानी उफ़तादा हुए) पीछे फिर ज़िन्दा (यानी शादाब) करता है और हर क़िस्म के जानवरों में, जो ख़ुदा ने रूए ज़मीन पर फैला रक्खे हैं और हवाओं के (इधर से उधर और उधर से इधर) फेरने में और बादलों में, जो (ख़ुदा के हुक्म से) आस्मान व ज़मीन के दरमियान घिरे रहते हैं—(ग़रज़ इन सब चीज़ों में) उन लोगों के लिये, जो अक़्ल रखते हैं, (क़ुदरत ख़ुदा की बहुतेरी) निशानियाँ (मौजूद) हैं ० और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं, जो अल्लाह के सिवा (औरों को भी) शरीक (ख़ुदा) ठहराते—

और नेकी पर आ गये और (जो कुछ उनकी पुस्तक में है, उसे) साफ़ साफ़ बयान करने लगे। उनके अपराध हम क्षमा करते हैं और हमारी यही महिमा है कि अपराध क्षमा करें और दया रक्खें॥

अलबत्ता जिन्हों ने कुफ़्र किया और कुफ़्र ही की दशा में मर गये (अर्थात् मरते दम तक कुफ़्र पर स्थित रहे) उन पर (अवश्य) अल्लाह का और फ़रिश्तों का और मनुष्यों का, सब का धिक्कार है॥

(और) इस (लानत) में वह सदैव (फँसे) रहेंगे। उन पर से दुःख (कभी) हलका न होगा और (नर्क दुःख हलका होना कैसा, उस दुःख भोगने के बीच) कोई समय विश्राम का भी न मिलेगा॥

और (मनुष्यो ! याद रक्खो) तुम्हारा पूज्य (ख़ुदा बस) एक अल्लाह ही है। उस दयालु, कृपालु के सिवा कोई उपासना (व बन्दिगी) के योग्य नहीं॥

(ध्यान करो !) आस्मानों (आकाशों) और (बिछी हुई) पृथ्वी की पैदायश (सृष्टि) पर और रात दिन के बदलने (और घटने बढ़ने) पर और उन जहाज़ों पर, जो मनुष्यों के लाभ के सामान लेकर समुद्र में चलते हैं। (क्या तुम्हें इन से अपने पूज्य ख़ुदा का पता नहीं मिलता ? महिमा युक्त आकाशों और लम्बी चौड़ी पृथ्वी का आख़िर कौन सृष्टि कर्त्ता है। क्या यह दोनों अपने आप बन गये हैं या तुमने और तुम्हारे पत्थर के बुतों अर्थात् मूर्तियों ने इन्हें बनाया है ? इसी तरह रात से दिन और दिन से रात किस के करने से होते हैं और क्यों कर कभी दिन बड़ा हो जाता है और कभी रात बड़ी हो जाती है। कोई तो है, जिस के हाथ में इन की कल है और जहाज़ को पानी पर तैरना किसने सिखा दिया। संसार में जितनी वस्तुएँ हैं, सब तो नहीं तैर सकतीं। फिर किसी का तैरना जानना और किसी का तैरना न जानना क्या बताता है ? क्या लकड़ी ने तुम से इस हुनर को सीख लिया है ?)॥

(अच्छा देखो !) इस जल में (कुछ दिखाई देता है) जो अल्लाह आकाश से बरसाता है। (और) फिर उस से सूखी हुई पृथ्वी को हरा भरा कर देता है। इस पर हर प्रकार के जानवरों को फैला देता है (कदाचित कुछ समझ में आ जाय)। और (हाँ) हवाओं को दिशा बदलने में (खोज करो) और मेघों में (भी) कि (कैसे) पृथ्वी व आकाश के बीच (पाबन्द व) आधीन हैं। (यह तमाम) बुद्धिमान (और हृदय ज्ञान रखने वाले) लोगों के लिये (एक अल्लाह की शक्ति के) चिन्ह हैं (वृष्टि लाने वाला भाँति २ के पशु, पक्षी, कीड़े और मकोड़े का जन्म देने वाला हवाओं को इधर से उधर बदलने वाला और मेघों के चलने फिरने को परिमित रखने वाला एक अल्लाह के सिवा कौन है ?)॥

(परन्तु) कुछ लोग हैं कि (इन चिन्हों पर ध्यान नहीं करते या ऐसी ऊपरी दृष्टि से ग़ौर करते हैं कि ख़ुदा की अद्वैता के परिणाम तक नहीं पहुँचते और) अल्लाह के अतिरिक्त को (भी अल्लाह का) साक्षी ठहराते हैं—

(पृष्ठ ३४ का शेष) † टीका—सफ़ा और मर्वा नामक दो पहाड़ियों पर मक्के के मुश्रिकों ने दो मूर्तियां स्थापित कर के उनकी परिक्रमा किया करते थे—इस लिये मुसलमानों को उनके बीच दौड़ना अनुचित मालूम होता था। अल्लाह ने कहा कि सफ़ा, मर्वा तो ख़ुदा के चिन्ह हैं। अतः दोनों पहाड़ियों के बीच दौड़ना पुण्य है। क्योंकि इस से हज़रत हाजरा के वृत्तांत की ओर चित्त आकर्षित होता है: —हसन निज़ामी॥

يُحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ۭ
وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ
اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ۝
اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا
الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ۝ وَقَالَ
الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ
كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ۭ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ
حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ۭ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ۝
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا
طَيِّبًا ڮ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ
عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْۗءِ وَالْفَحْشَاۗءِ
وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا
قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ

ع

الربع

(और) जैसा मह़ब्बत .ख़ुदा से रखनी चाहिये, वैसी मह़ब्बत उन से रखते हैं और जो ईमान वाले हैं, उन को (तो सब से) बढ़कर ख़ुदा की मह़ब्बत होती है और जो बात (इन) ज़ालिमों को .अज़ाब के देखने पर सूझ पड़ेगी, ऐ काश ! अब सूझ पड़ती कि हर तरह की क़ूवत अल्लाह ही का है और (नीज़) यह कि अल्लाह का अ़ज़ाब (भी) सख़्त है ० (वह ऐसा टेढ़ा वक़् होगा कि) उस वक़् गुरू (अपने) चेले चाटों से दस्त बर्दार हो जायँगे और अ़ज़ाब (आँखों से) देख लेंगे और उन के (आपस के) तअ़ल्लुक़ात (सब) टूट टाट जायँगे ० और चेले बोल उट्ठेंगे कि ऐ काश ! हम को (एक दफ़े दुनिया में) फिर लौट कर जाना मिले, तो जैसे यह (लोग आज) हम से दस्त बर्दार हो गये (इसी तरह कल को) हम भी इन से दस्त बर्दार हो जायँ। यूँ अल्लाह उन के आ़माल उन के आगे लाएगा कि उन को (वह .आमाल सर तासर मूजिब) .हसरत दिखाई देंगे और (इस पर भी) उनको दोज़ख़से निकलना (नसीब) नहीं होगा ० लोगो ! ज़मीन में जो चीज़ें हलाल तय्यब (क़िस्म की) हैं, उनमें से (जो चाहो बे तअम्मुल) खाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो। वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है ० वह तो तुम्हें बदी और बे .हयाई ही (के काम करने) को कहेगा और यह (चाहेगा) कि (अपनी तरफ़ से) बे समझे बूझे .ख़ुदा पर बोहतान बाँधो ० और जब इन (लोगों) से कहा जाता है, कि जो (हुक्म) ख़ुदा ने उतारा है—उस पर चलो, तो जवाब देते हैं—नहीं जी ! हम तो उसी (तरीक़े) पर चलेंगे—

औरजिस प्रकार का प्रेम अल्लाह से होना चाहिये वैसा प्रेम (ग़ैरों)से करते हैं॥

(अलबत्ता) ईमान वालों को अल्लाह (ही) का सब से अधिक प्रेम होता है। (वह असत् पूज्य तो अलग रहे, अल्लाह के मुक़ाबले में स्त्री व पुत्र, सखा व मित्र, धन व सम्पत्ति—किसी की परवा नहीं करते)। यदि यह अन्यायी कुफ़्फ़ार जिस परिणाम पर कि वह प्रलय का दु:ख देखने के समय पहुँचेंगे, उस पर इस दुनिया ही में पहुँच जाते और समझ लेते कि शक्ति (व अधिकार) सब अल्लाह ही के लिये है और अल्लाह मुश्रिकों (मूर्ति उपासकों) को महान नर्क दु:ख देने वाला है, (तो कदापि .ख़ुदा की .ख़ुदाई में किसी को साझी न करते और जो प्रेम अल्लाह के अतिरिक्त से रखते हैं, उसका अधिकारी सिवा एक अल्लाह के किसी और को न समझते) ॥

(प्रलय वह टेढ़ी वस्तु है कि) उस समय (यह सब मनुष्य—जो संसार में उन) काफ़िरों के नेता बने हुए हैं, (अपने) अनुयायियों को छोड़ बैठेंगे और (अनुयायियों के साथ स्वयं भी) नर्क दु:ख में फँसेंगे और नफ़्सी २ अर्थात् अपनी २ के सिवा किसी की ज़बान पर कुछ न आयेगा और उनके (समस्त सम्बन्ध व साधन टूट जायँगे ॥

और (यह अंधा धुंध) अनुकरण करने वाले कहेंगे कि कदाचित हमें फिर (संसार में) जाना मिल जाय, तो हम (भी) इन (पथ भ्रष्ट कराने वालों) से ऐसी ही घृणा करें, जैसी यह हम से (आज यहाँ) घृणा करते हैं ॥

इस तरह अल्लाह इन्हें इन के कर्मों को अप्रतिष्ठा का कारण बना कर दिखायेगा, (बाक़ी यह कर कि अब के दुनिया में भेज दो, तो ऐसा करें) और (वैसा करें,) वह नर्क से निकलने नहीं पायेंगे। (प्रयोजन यह) इस तरीक़े से अल्लाह इन के समस्त कर्मों को इन के सामने लायेगा, जिस से इन पर निराशा छा जायेगी और वह किसी प्रकार नर्क से नहीं बचेंगे ॥

ऐ, लोगो ! (अल्लाह ने लाखों ही पैग़म्बर भेज कर तुम्हें बतलाया कि अल्लाह एक है, और उसका कोई साझी नहीं है, किन्तु तुम ने सदैव यह शिक्षा भुला दी। फिर इसी एक विषय में क्या, तुम्हारा दिल तो अल्लाह को किसी बात से सन्तुष्ट नहीं होता। जिन चीज़ों को वह ह़लाल और जायज़ ठहराता है, उन्हें तुम .हराम और ना जायज़ ठहरा लेते हो और जिन चीज़ों को वह .हराम और ना जायज़ कहता है, उन्हें तुम .हलाल और जायज़ बना लेते हो। दीवाने न बनो) संसार में जो २ कुछ हलाल वस्तुयें पवित्र हैं, उसे (नि:सङ्कोच) खाओ (और उपयोग करो) और शैतान का अनुकरण न करो, वह तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है ॥

उस का तो काम केवल यही है कि तुम्हें अप्रतिष्ठा और निर्लज्जा की ओर धकेले और तुम से अल्लाह के विषय में वह बातें कहलाये, जो (यदि उस के बहकाने का प्रभाव न हो, तो तुम्हारे मस्तिष्क में भी नहीं आ सकतीं) तुम स्वयं इन्हें (नहीं जानते।) तुम अल्लाह के सम्बन्ध में जैसे २ ध्यान पूर्वक विचार करते रहते हो और अल्लाह पर जिन २ असत्य बातों का दोष लगाते रहते हो, उन का कारण शैतान है कि वह तुम से झूठ बोलवाता है। अन्यथा तुम जिस तरह सत्यता से जानकार नहीं, इसी तरह असत्यता का भी कोई ज्ञान नहीं रखते। अपनी आंखों न यह देखा न वह देखा। सारी शरारत शैतान की है, जो तुम्हें नष्ट करना चाहता है) ॥

(किन्तु अफ़सोस ! आदम के बेटे, शैतान की शरारत व शत्रुता को नहीं समझते) और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह की उतारी हुई (आज्ञाओं) पर अमल करो, (तो शैतान के बहकाये में आकर) उत्तर देते हैं कि नहीं, हम तो उस पर अमल करेंगे, जिस पर (अमल करते)—

اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ
شَيْئًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً
وَّنِدَآءً صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا
رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ
اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ
الْخِنْزِيْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ فَمَنِ اضْطُرَّ
غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلَ
اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا
قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا
النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

जिस पर हमने अपने बाप दादों को (चलते हुए) पाया। भला अगर इन के बाप दादे कुछ भी न समझते और न राह रास्त पर चलते रहे हों, तो भी (वह उन ही की पैरवी किये चले जायंगे) ० और जो लोग काफ़िर हैं (बुत परस्ती में) उनकी मिसाल उस शख़्श की सी है, जो एक चीज़ के पीछे पड़ा चिल्ला रहा है (और) वह सुनती (सुनाती ख़ाक) नहीं. (तो उसका चिल्लाना) महज़ (बेसूद) बुलाना और पुकारना है, (जिसका कुछ नतीजा नहीं। बुतों पर क्या मुनहसिर है, यह लोग ख़ुद भी) बहिरे गूंगे, अन्धे हैं, तो यह समझते (बूझते कुछ भी) नहीं ० मुसलमानो ! हम ने जो तुम को रिज़्क़ तय्यब दे रक्खा है, (उस को बे तअम्मुल) खाओ और अगर तुम अल्लाह ही की बन्दिगी का दम भरते हो, तो उस का शुक्र (भी) करो ० उसने तो तुम पर बस मरा हुआ (जानवर) और ख़ून और सुअर का गोश्त हराम किया है और (नीज़) वह (जानवर) जिस को ख़ुदा के सिवा किसी और (की इबादत) के लिये (हलाल और) नाम ज़द किया जाय। जो भूख से बे क़रार हो जाए (और) उदूल हुक्मी करने वाला और हद से बढ़ जाने वाला न हो, तो उस पर (इन में से किसी चीज़ के खा लेने का भी) गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० जो लोग उन अहकाम को—जो ख़ुदा ने (अपनी) किताब (तौरात) में नाज़िल किये, छुपाते और उसके बदले थोड़ा सा (दुनियावी) मुआविज़ा हासिल करते हैं—यह लोग और कुछ नहीं, मगर अपने पेटों में अङ्गारे भरते हैं और क़यामत के दिन ख़ुदा इन से बात भी तो नहीं करेगा—

हमने अपने बाप, दादों को पाया है, (कैसा निरर्थक जवाब है)। क्या ऐसी दशा में भी (इनके लिए बाप, दादों का अनुकरण शोभा देगा कि) इनके बाप दादा कुछ न समझते हों और पथ भ्रष्ट हों॥

(धार्मिक बातों के स्वयं समझने और दूसरों को समझाने में) इन कुफ़्फ़ार की उपमा उस (निर्बुद्धि जानवर) की सी है, जो (अपने दूसरे जाति वालों को एकत्रित करने और डराने तथा भगाने के लिये) काँय काँय करता है (और ऐसी निरर्थक आवाज़ें निकालता है) जिन से चीख़ पुकार के सिवा (वह ख़ुद भी कुछ नहीं सुनता (समझता)। (अर्थात् जिस उद्देश तथा प्रयोजन के लिये चीख़ता चिल्लाता है, उसकी वास्तविकता को वह ख़ुद भी अपनी आवाज़ से मालूम नहीं कर सकता और जब ख़ुद उसी को उसके प्रयोजन की यथार्थता ज्ञात नहीं होती, तो दूसरे सुनने वालों को वह उसे क्यों कर मालूम करा सकता है)॥

और जब प्रयोजन की यथार्थता ही मालूम नहीं हुई, तो उसके हानि लाभ क्या मालूम होंगे। अतएव यह उस का अपनी उन आवाज़ों का सुनना भी न सुनने के बराबर है। यही हाल कुफ़्फ़ार का है कि वह धार्मिक बातों के सम्बन्ध में तर्क, वितर्क और बकवास तो बहुत करते हैं परन्तु न तो अपने शब्दों को कुछ सुनते समझते हैं और न दूसरों के, इस लिये) वह (गोया) बहिरे हैं (कि शब्दों को सुनते हैं, पर उनका प्रयोजन इनके कानों में नहीं पड़ता और) गूंगे हैं। (क्योंकि ज़बान से बोलते हैं, पर सत्यता प्रकट नहीं कर सकते और) अंधे हैं (कि वास्तविकता को देख ही नहीं सकते)। तात्पर्य यह है कि वह बुद्धि (तथा ज्ञान) से (नितान्त) अनभिज्ञ हैं॥

ऐ, मुसलमानो ! (इन काफ़िरों को इन के हाल पर छोड़ दो) तुम हमारे सत्य धर्म का अनुकरण करो और उसकी आज्ञाओं के अनुसार (इन समस्त) पवित्र (और हलाल) चीज़ों को खाओ (पीओ) जो हमने तुम्हें दी हैं और अल्लाह की बन्दिगी (का दावा) करते हो, तो (उन नेअ़मतों पर) उस के कृतज्ञ हो॥

उसने (तो उन चीज़ों में से—जिन को कुफ़्फ़ार ने अपने ऊपर हराम कर रक्खा है,) तुम्हारे लिये केवल मुर्दार * और ख़ून † और सुअर का गोश्त हराम किया है और ऐसे (जानवर भी) जिन पर (बध करते समय) अल्लाह के अतिरिक्त का नाम लिया जावे। (और यदि) कोई (भूख के मारे इस क़दर) अधीर हो (कि मरने लगे) तो (वह ऐसी दशा में जो खाले) उसे पाप नहीं होगा। यदि (खाते समय उसमें) विद्रोह (का भाव पैदा) न हो और सीमा से न बढ़े (अर्थात् इतना खाए, जिस से जीवित रह सके)॥

* टीका—जो जानवर बिना बध किये आप मर जाय:—हसन निज़ामी॥
† टीका—जो बध करते समय बहता है:—हसन निज़ामी॥

जो लोग अल्लाह की उन आज्ञाओं को, जो उसने अपनी पुस्तक में उतारी हैं, छिपाते हैं और (अपने) इस (कर्म) का थोड़ा बहुत (सांसारिक) लाभ प्राप्त कर लेते हैं, वह अपने पेट में बस अंगारे भरते हैं। प्रलय के दिन अल्लाह उन से बात भी नहीं करेगा—

और न इन को (गुनाहों की आलायश से) पाक करेगा और इन के लिये अज़ाब दर्द नाक है ० यही लोग हैं, जिन्हों ने राह रास्त के बदले गुमराही मोल ली और बख़्शिश (इलाही) के बदले अज़ाब । पस इन की ख़्वाहिश (दोज़ख़) की सहार (भी) ग़ज़ब की (सहार) है ० यह इस लिये कि किताब (तौरात) को हक़ीक़त में ख़ुदा ही ने उतारा और जिन लोगों ने उस किताब में इख़्तिलाफ़ किया (और उस में रद्दो बदल किया या छुपाया वह) परले दर्जे की मुख़ालिफ़त में (पड़े) हैं ० (मुसल्मानो !) नेकी यही नहीं कि (नमाज़ में) अपना मुँह मश्रिक़ (की तरफ़ करलो) या मग़रिब की तरफ़ करलो। बल्कि (असल) नेकी तो उन की है, जो अल्लाह और रोज़ आख़िरत और फ़रिश्तों और (आस्मानी) किताबों और पैग़म्बरों पर ईमान लाए और माल (अज़ीज़) अल्लाह की हुब पर रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों और माँगने वालों को दिया और (ग़ुलामी वग़ैरा की क़ैद से लोगों की) गर्दनों (के छुड़ाने) में (दिया) और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहे और जब (किसी बात का) इक़रार कर लिया, तो अपने क़ौल के पूरे और तङ्गी में और तक्लीफ़ में और हला चलो के वक़्त में साबित क़दम रहे । यही लोग हैं, जो (दावए इस्लाम में) सच्चे निकले और यही हैं (जिन को) परहेज़गार (कहना चाहिये) ०—

وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ
فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي
الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝ لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا
وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ
آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ
وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ
وَالْمَسَاكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَ
فِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ
بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ
وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ

ع ٥

और न अपनी कृपा से उनके अपराध क्षमा करेगा। उन के लिये घोर नर्क दुःख नियत है ॥

यही वह अभागे हैं, जिन्हों ने धर्म छोड़ कर अधर्म मोल ले लिया है और मुक्ति के बदले नर्क दुःख (को स्वीकार किया है। कैसा आश्चर्य है–नर्क की) अग्नि को सहन करने के लिये (किस दृढ़ता से) तत्पर हैं। (इन के लिये) यह (दंड) इस कारण से है कि अल्लाह ने किताब (तौरेत) को सत्य का प्रमाण बना कर उतारा था, (परन्तु इन के हाथों इस का नाश होगया)। और जिन लोगों ने इस पुस्तक में भेद किया है (अर्थात् परिवर्तन और अर्थों में हेर फेर किया है,) वह महान द्वेष (व शत्रुता) में पड़ गये हैं ॥

(मुसल्मानो !) भलाई यही नहीं है कि तुम अपने मुँह पूर्व की ओर करो या पच्छिम की ओर करो। (नमाज़ के लिये किसी एक दिशा को अल्लाह की आज्ञा से ग्रहण करना भलाई अवश्य है,) परन्तु (वास्तविक और महत्व-पूर्ण भलाई और ही है)। भलाई उन की है, जो अल्लाह और प्रलय के दिन और फ़रिश्तों और आकाश से अवतीर्ण हुई समस्त किताबों और समस्त नबियों पर (पूरा) विश्वास रक्खें ॥

और अपना धन अल्लाह की भक्ति में सम्बन्धियों, अनाथों, कंगालों, यात्रियों और भिखारियों की आवश्यकताओं और (पराधीनता इत्यादि से सताये हुये मनुष्यों की) गर्दनों (के छुटकारे) में लगायें और नमाज़ पढ़ते रहें और ज़कात दिये जायँ ॥

और जो प्रतिज्ञा करके अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करते हों और निर्धनता, बीमारी और युद्ध के समय धैर्यवान् (व सहन-शील) रहें ॥

यह लोग हैं (जिन के सम्बन्ध में कहना चाहिये कि वह इस्लाम) ग्रहण करने में सच्चे निकले और यही लोग हैं कि (जो सच्चे अर्थों में भले और) संयमी (कहलाये जाने के योग्य हैं) ॥

ऐ मुसल्मानो ! तुम्हें बध किये गये मनुष्यों के सम्बन्ध में बदला लेने की आज्ञा होती है—

عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ
بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثَى بِالْأُنْثَى فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ
أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ
بِإِحْسَانٍ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ
فَمَنِ اعْتَدَى بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ
وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوٰةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ● كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ
أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى
الْمُتَّقِينَ ● فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا
إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ
فَمَنْ خَافَ مِنْ مُوصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ
بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ●

मुसल्मानो! जो लोग (तुम में) मारे जायं, उन (के बारे) में तुम को (जान के) बदले (जान) का हुक्म दिया जाता है। आज़ाद के बदले आज़ाद और ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम और औरत के बदले औरत। फिर जिस (क़ातिल) को उस के भाई (तालिब क़िसास) से कोई जुज़्व (क़िसास) माफ़ कर दिया जाय, तो (जान के बदले ख़ूं बहा और वारिस मक़्तूल की तरफ़ से उसका) मुतालिबा दस्तूर (शरअ़) के मुताबिक़ (और क़ातिल की तरफ़ से) वारिस मक़्तूल को ख़ुश मामिलगी के साथ (ख़ूं बहा का) अदा कर देना—यह (हुक्म ख़ूं बहा) तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से (तुम्हारे हक़ में) आसानी और मेहर्बानी है। फिर उस के बाद जो ज़ियादती करे, तो उस के लिए अज़ाब दर्दनाक है ० और ऐ अ़क़्लमन्दो! क़िसास (के क़ायदे) में तुम्हारी ज़िन्दिगी है, (और इस ग़रज़ से जारी किया गया है) ताकि तुम (ख़ूंरेज़ी से) बाज़ रहो० (मुसल्मानो!) तुम को हुक्म दिया जाता है कि जब तुम में से किसी के सामने मौत आ मौजूद हो (और) वह कुछ माल छोड़ने वाला हो, तो मां बाप और रिश्तेदारों के लिये वाजिबी तौर पर वसीयत (कर मरे)। जो (ख़ुदा से) डरते हैं, उन पर (उन के अपनों का यह एक) हक़ है ० फिर जो वसीयत के सुने पीछे उसे कुछ का कुछ कर दे, तो उसका गुनाह उन ही लोगों पर है, जो वसीयत को बदलें। बेशक अल्लाह (सब की) सुनता और (सब कुछ) जानता है ० और जिसको वसीयत करने वाले की तरफ़ से (किसी ख़ास शख़्श की) तरफ़दारी या (किसी को) हक़ तल्फ़ी का अन्देशा हुआ हो और वह वारिसों में मेल करा दे, तो (ऐसी सूरत में वसीयत के बदलने का) उस पर कुछ गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ०—

क़ातिल (बधिक) आज़ाद (स्वतन्त्र) हो, तो उस आज़ाद (की जान लेलो) और क़ातिल ग़ुलाम हो, तो उस ग़ुलाम (की) और क़ातिल यदि औरत हो, तो उस औरत * (से बदला लेने में श्रेणी और स्त्री, पुरुष का विचार न करो। यह न होना चाहिये कि कोई बड़ा आदमी छोटे आदमी को मार डाले, तो परवा न हो और छोटा आदमी किसी बड़े को बध करदे, तो एक के बदले में कई की जानें ली जायँ॥

* टीका:—अ़रब देश में यह भी रिवाज था कि कोई औरत अगर बध की अपराधी होती, तो उसे यह सोच कर कि औरत एक तुच्छ प्राणी है, इस पर क्या हाथ उठावें—छोड़ दिया जाता था और उसके बदले में उसके कुटुम्ब के किसी मर्द से बदला (प्रतिकार) लिया जाता था। यही हाल ग़ुलामों के साथ था कि उन के अपराध का दंड उन के स्वामियों को मिलता था:—हसन निज़ामी॥

(बध किये हुये मनुष्य की जान के बदले बधिक की जान लेने के समान दूसरा उचित साधन यदि है, तो केवल जीवन-दान है)। (सो, इस दशा में यह उचित है कि) जिस बधिक को उस के (बध किये हुये) भाई के बदले में से कुछ क्षमा कर दिया जाय (वह क्षमा ही समझा जाय। बध किये हुये मनुष्य के सम्बन्धी प्रतिज्ञा भंग न करें और न अल्प-मनुष्यों के मत-भेद से अधिक मनुष्यों की क्षमा-प्रतिज्ञा नष्ट हो सकती है। अधिक संख्या वालों के आगे अल्प-संख्या वालों की नहीं चलेगी। अलबत्ता बाक़ी ख़ूँ बहा (बध के बदले का माल) आदि बातों के सम्बन्ध में मक़तूल (बध किये गये मनुष्य) के वारिस (उत्तराधिकारी) ठीक तौर से मुतालिबा (मांग) निःसंकोच करें और (क़ातिल) सभ्यता-युक्त (इस मांग को) अदा करे॥ यह (ख़ूँ बहा का साधन) तुम्हारे पालन कर्त्ता ने (दण्ड में) कमी करने और (शाहाना) मेहरबानी (के विचार) से करदी है॥ इस के उपरान्त (भी) फिर जिस पक्ष वाले सख़्ती करें, जैसे बध किये गये मनुष्य के वारिस क्षमा करके और ख़ूँ बहा लेकर भी क़ातिल के मारने ही का इरादा रक्खें, या क़ातिल ख़ूँ बहा देकर के किसी बध किये हुये के वारिसों के क़त्ल इत्यादि पर तैयार हो, तो उसके लिये कठोर नर्क-दुःख है॥

और ऐ बुद्धिमानो! क़िसास (बध के बदले का बध) (के इस्लामी क़ानून) में तुम्हारे जीवन (का सामान) है। (यह) इस प्रयोजन से (बनाया गया है) कि तुम (रक्त-पात से) बचे रहो। (जब तक क़त्ल किये गये मनुष्य की जान के बदले क़ातिल ही की जान लेने की प्रथा न पड़ेगी, मनुष्य निःसङ्कोच जब चाहेंगे और जिस को चाहेंगे मार डालेंगे। क़ातिल प्रतिकार (बदले) के भय से क़त्ल नहीं कर सकता और इस तरह उस को भी जान बच जाती है और क़त्ल होने वाला भी सुरक्षित रहता है)॥

(और ऐ मुसल्मानो!) तुम्हें आज्ञा दी जाती है कि जिस समय तुम में से किसी की मृत्यु (निकट) आने लगे (और) वह कुछ माल व धन छोड़ जाने वाला हो, तो (उसे उचित है कि) अपने माता पिता और (अन्य) सम्बन्धियों के लिये (भी) न्याय के साथ वसीयत करे। जो (अल्लाह का) भय रखते हैं उन्हें (इस पर) अवश्य अमल करना चाहिये †। (अधिकारियों को उनके अधिकार से आशा रहित न किया जाय और इसका भी विचार रहे कि मरने वाला जो वसीयत कर जाय) फिर (उसके विरुद्ध न हो)। जो कोई (वसीयत को) सुन लेने के बाद बदल डाले (गा) तो उस (के अमल) का पाप (बदलने वाले या) बदलने वालों को होगा। (वसीयत करने वाले पर उसका कुछ उत्तर-दायित्व नहीं)। अल्लाह (सब की बातें) सुनता है (और सब की नियतों अर्थात् भावों को) जानता है॥

† टीका—यह इस्लाम-मत के आदि काल का आदेश है, जब कि मूर्ख लोग बेटों के सिवा किसी को कुछ नहीं देते थे। इस आयत से इस असभ्यता को तोड़ा गया। आगे सूरत निसाअ में एक आयत मिलेगी, जिस में अल्लाह तआ़ला ने स्वयं सब के अंश नियत किये हैं, और जिस से सब वारिसों के लिये वसीयत मन्सूख़ हो गई अर्थात् वसीयत करनी वर्जित हो गई:—हसन निज़ामी॥

हां, अगर किसी को वसीयत करने वाले की ओर से इरादे या ग़लती से (किसी के पक्षपात या किसी के अधिकार अकार्थ होने का) भय हो (और उसे ग़लती का पता चल जाय) और वह (बीच में पड़ कर) उन में सन्धि करादे (और पक्षपात या अधिकार अकार्थ न होने दे, इस प्रकार के परिवर्तन में) उसे (कोई) पाप नहीं होगा। अल्लाह तो (पापियों को भी प्रायः) क्षमा (ही) दे देता है (और पापियों पर भी) दयालु (हो जाता) है॥

ع

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ
عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ أَيَّامًا
مَعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ
سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ
فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ
خَيْرٌ لَهُ ۚ وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۖ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ
هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ
فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَنْ كَانَ
مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ
يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ
وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي

मुसल्मानो! जिस तरह तुम से पहिले लोगों (यानी अह्ल किताब) पर रोज़ा रखना फ़र्ज़ था, तुम पर भी फ़र्ज़ किया गया, ताकि तुम (बहुत से गुनाहों से) बचो० (वह भी) गिन्ती के चन्द रोज़ (हैं) इस पर भी जो शख़्स तुम में से बीमार हो या सफ़र में (हो,) तो दूसरे दिनों से गिन्ती (पूरी करदे) और जिन (बीमारों और मुसाफ़िरों) को खाना देने का मक़्दूर है, उन पर (एक रोज़े का) बदला एक मोहताज को खाना खिला देना है। इस पर भी जो शख़्स अपनी ख़ुशी से नेक काम करना चाहे, तो यह उस के हक़ में ज़ियादा बेहतर है और समझो, तो रोज़ा रखना (बहर हाल) तुम्हारे हक़ में बेहतर है० (रोज़ों का) महीना रमज़ान का है, जिस के (रोज़ों के) बारे में ख़ुदा की तरफ़ से क़ुर्आन (में हुक्म) नाज़िल हुआ है (और क़ुर्आन) लोगों का रहनुमा है और (उस में) हिदायत और (हक़ व बातिल की) तमीज़ के खुले २ हुक्म (मौजूद हैं)। तो (मुसल्मानो!) तुम में से जो शख़्स इस महीने में (ज़िन्दा) मौजूद हो, तो चाहिये कि इस महीने के रोज़े रक्खे और जो बीमार हो या सफ़र में (हो,) तो दूसरे दिनों से गिन्ती (पूरी करले)। अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी करनी चाहता है और तुम्हारे साथ सख़्ती नहीं करनी चाहता और (यह हुक्म उस ने इस ग़रज़ से दिये हैं) ताकि तुम (रोज़ों की) गिन्ती पूरी करलो और ताकि अल्लाह ने जो तुम को राह रास्त दिखा दी है, इस (नेअ़मत) पर उस की बड़ाई करो और ताकि तुम (उस का) एहसान मानो० और (ऐ पैग़म्बर!) जब हमारे बन्दे तुम से हमारे बारे में दर्याफ़्त करें—

(और) ऐ मुसल्मानो! तुम पर रोज़े (उपवास) फ़र्ज़ किये जाते हैं; जिस तरह तुम से पहिले के मनुष्यों पर (फ़र्ज़) किये गये थे, ताकि (रोज़े की बदौलत) तुम्हें संयमता प्राप्त हो। (अधिक नहीं, कुछ) गिन्ती के दिनों के (रोज़े रखने पड़ेंगे)॥

(और) इस पर भी तुम में जो रोगी * हो या यात्रा में हो, (उसे नियत समय ही में रोज़े रखने पर मजबूर नहीं किया जाता)। वह (आरोग्यता प्राप्त करके या यात्रा पूर्ण होने के) बाद के दिनों में (छुटे हुये रोज़ों की) संख्या पूर्ण करदे और (बल्कि) जिन में रोज़ा रखने की शक्ति (भी) है, वह भी (चाहें तो) एक कंगाल का भोजन फ़िदिया † (के तौर पर) देदें। (और) जिसे भलाई करने का चाव हो, तो यह उसके लिये अच्छा है। (एक की जगह दास का पेट भरे और चाहे तो साथ साथ रोज़े भी रख डाले)। समझो तो रोज़ा रखना तुम्हारे लिये प्रत्येक दृष्टि से अच्छा है॥

* टीका—यदि किसी रोग में रोज़ा रखने से रोग बढ़ने का भय हो, तो उस समय रोज़ा क़ज़ा करना अर्थात् इस रोग के समय छोड़ कर नियत समय के उपरान्त रखना चाहिये; किन्तु जो रोग रोज़ा रखने से अच्छा हो जाय, उस में रोज़ा अवश्य रखना चाहिये: —हसन निज़ामी॥

† टीका—क्योंकि आरम्भ में मनुष्यों को रोज़ा रखने की आदत नहीं थी और रोज़ा उन्हें उस समय कठिन प्रतीत होता था। इस लिये अल्लाह तआ़ला ने उन पर यह कृपा की, कि रोज़ा और फ़िदिया दोनों का अधिकार दे दिया। लेकिन जब उन्हें आदत पड़ गई, तो उसके बाद दूसरी आयत उतारी, जिस से फ़िदिया का आदेश वर्जित हो गया:—हसन निज़ामी॥

(रोज़े रखने का) महीना रमज़ान है; जिस में क़ुर्आन उतरा। (वह क़ुर्आन) जो मनुष्यों को (अल्लाह का) मार्ग बताता है। और (जिस में उस) रास्ते के साफ़ २ चिन्ह (मौजूद) हैं और (जो खरे खोटे को) प्रथक करने वाला है॥

सो (मुसल्मानो! अब से फ़िदिया की आज्ञा मन्सूख़)। तुम में जिसे (जितनी बार) यह महीना देखने का अवसर प्राप्त हो, वह अवश्य (अवश्य ही) इस महीने के रोज़े (व्रत) रक्खे। (केवल उसे क्षमा है,) जो रोगी या पथिक हो कि वह (रोग या सफ़र से छुटकारा पाकर) और दिनों में छूटे हुये दिनों की गिन्ती पूरी कर सकता है, (और उन्हें दूसरे महीने में अदा कर सकता है। आरोग्य मनुष्य या सफ़र न करने वाले मनुष्य इस मास में समस्त रोज़े रक्खें)॥

अल्लाह तुम्हारे साथ कोमलता का व्यवहार करना चाहता है और तुम्हारे साथ सख़्ती का व्यौहार करना नहीं चाहता। (अर्थात् केवल फ़िदिया की आज्ञा मन्सूख़ करना काफ़ी समझता है, बाक़ी बीमारों और मुसाफ़िरों के साथ पहिली जैसी रिआ़यत बाक़ी है और (जब अल्लाह का यह हाल है, तो) तुम्हें चाहिये कि समस्त रमज़ान के रोज़े रक्खो। (और रमज़ान के पूर्ण हो जाने के बाद) तुम्हें चाहिये कि अल्लाह की उन नियमों से— जो उसने तुम्हें बताये हैं, (बुज़ुर्गी) और बड़ाई से याद करो। कदाचित तुम से उसको कुछ कृतज्ञता प्रकाशित हो जाय॥

और (ऐ रसूल!) जब मेरे बन्दे तुम से मेरे सम्बन्ध में सवाल † करें (कि मैं उनके समीप हूं या उनसे दूर, तो उन को बतला दो कि)

† टीका—कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम से पूछा था कि अल्लाह हमारे समीप है या हमसे दूर। हम धीमी आवाज़ से दुआ़ किया करें या ऊंची आवाज़ से। इस पर यह आयत उतरी कि अल्लाह समीप है:—हसन निज़ामी॥

عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا
دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ
يَرْشُدُونَ ۝ أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ
إِلَىٰ نِسَائِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ
عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ
فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ
وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا
حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ
الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ
وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ
تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا
أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ

तो (उनको समझा दो कि) हम (उनके) पास हैं। जब कभी कोई हम से दुआ करे, तो हम (हर एक) दुआ करने वाले की दुआ को (सुनते और मुनासिब होता है, तो) कबूल (भी) कर लेते हैं। तो उनको चाहिये कि हमारा हुक्म (भी) मानें और हम पर ईमान लायें, ताकि वह सीधे रस्ते लग लें ० (मुसल्मानो !) रोज़ों की रातों में अपनी बीबियों के पास जाना तुम्हारे लिये जायज़ कर दिया गया है। वह तुम्हारे दामन (की जगह) हैं और तुम उन की चोली (की जगह) हो। अल्लाह ने देखा कि तुम (चोरी चोरी उन के पास जाने से) अपना (दीनी) नुक़सान करते थे, तो उसने तुम्हारा क़ुसूर मुआफ़ कर दिया और तुम्हारी ख़ता से दर गुज़रा। पस अब (रोज़ों में रात के वक़्त) उन से हम बिस्तर हो और (हम बिस्तरी का) जो (नतीजा) ख़ुदा ने तुम्हारे लिए लिख रक्खा है (यानी औलाद) उस (के हासिल करने) की ख़्वाहिश करो, (न महज़ शहवतरानी की)। और खाओ और पीओ, यहां तक कि (रात की) काली धारी से सुबह की सफ़ेद धारी तुम को साफ़ दिखाई देने लगे। फिर रात तक रोज़ा पूरा करो और (हां) तुम मस्जिद में एतिकाफ़ बैठे हो, तो (रात को भी) उन से हम बिस्तर न होना। यह अल्लाह की (बांधी हुई) हद्दें हैं, तो उनके पास भी न फटकना। इसी तरह अल्लाह अपने अहकाम लोगों के लिए खोल खोल कर बयान करता है, ताकि वह (ख़िलाफ़ हुक्म करने से) बचें ० और आपस में नाहक़ (ना रवा) एक दूसरे के माल को ख़ुर्द बुर्द न करो और न माल को हाकिमों पास (रसाई पैदा करने का) ज़रिया गरदानो—

मैं (उन के) समीप हूं। जब कोई मुझ से प्रार्थना करता है, तो मैं प्रार्थना करने वाले की प्रार्थना को (सुनता हूं और यदि वह स्वीकार करने योग्य होती है, तो उसे) स्वीकार (भी) करता हूं। उन्हें चाहिये कि मेरी आज्ञाओं को मानें और मुझ पर ईमान लायें। (मेरे सिवा किसी को न पुकारें; मेरा हर बात पर अधिकार है। अगर वह ऐसा करेंगे, तो) सम्भव है, वह भलाई प्राप्त करलें ॥

(ऐ मुसलमानो ! तुम पर रोज़े के सम्बन्ध में एक और आसानी की जाती है; अर्थात्) हम तुम्हारे लिये रोज़ों (के समय) में रात के समय अपनी स्त्रियों की ओर * आकर्षित होना जायज़ ठहराते हैं। वह तुम्हारे लिये आकर्षित होने की वस्तु हैं और तुम उनके लिये आकर्षित होने की वस्तु हो ॥

* टीका—इस्लाम के आरम्भ में रोज़ा इफ़्तार करने अर्थात् पूर्ण होने के बाद अगर रोज़ा रखने वाले सो जाते थे, तो फिर उनको दिन की तरह खाने, पीने और औरतों से मिलने की मनाही थी। गोया इफ़्तार के बाद किसी रोज़ा रखने वाले का सो जाना उस पर रात का रोज़ा रखना भी आवश्यक कर देता था। परन्तु इस आयत ने उतर कर इस आदेश को वर्जित कर दिया:—हसन निज़ामी ॥

अल्लाह को मालूम है कि तुम उन के पास जाने से रुक नहीं सकते (और चोरी से या छिप कर सब कुछ कर गुज़रते हो और इस से अपनी धार्मिक हानि करते हो,) सो (ख़ैर उस ने तुम पर दया की और) तुम्हारे आचरणों को क्षमा कर दिया (और इस बात को हलाल ही कर दिया)। अब (तुम निश्चिन्तता के साथ रोज़ों के दिनों में रात के समय) उन से सहवास करो और जो (सन्तान) तुम्हारे भाग में लिख दी गई है उस की इच्छा करो। (अर्थात् सहवास केवल विषय वासना के लिये न हो, वरन् सन्तान प्राप्ति का प्रयोजन भी सन्मुख हो) ॥

और (केवल) अपनी स्त्री से सहवास ही नहीं, (साथ ही साथ इस की भी आज्ञा दी जाती है कि) उस समय तक कि सुबह काज़िब** के उपरान्त सुबह सादिक़ † प्रगट होने लगे, (तुम ख़ूब) खाओ, पीओ (और) फिर उस रोज़े को रात तक पूरा करो ॥

** टीका—रात्रि पूर्ण होने से पहिले आकाश में पूर्व दिशा जो खड़ी२ सफ़ेदी प्रकट होती है, उसको सुबह काज़िब कहते हैं:—हसन निज़ामी ॥

† टीका—सुबह काज़िब के बाद आकाश में पूर्व दिशा चौड़ान में जो प्रकाश प्रकट होता है, उसे सुबह सादिक़ कहते हैं:—हसन निज़ामी ॥

(हां, अलबत्ता) अगर तुम मसजिदों में एतिकाफ़ ‡ अर्थात् एकान्त और एकाग्र चित्त (किये बैठे) हो, तो उन से (किसी समय) सहवास न करो ॥

‡ टीका—एतिकाफ़ का शब्दार्थ "एकान्त सेवन करना" है, परन्तु मस्जिदों में रमज़ान महीने के अन्तिम दश दिनों में एकान्त सेवन करना एतिकाफ़ कहलाता है:—हसन निज़ामी ॥

(बस) यह अल्लाह की (घोषित की हुई आज्ञायें और बांधी हुई) सीमायें हैं। इनको (अवज्ञा करने के) पास न फटकना। अल्लाह इसी नियम से अपनी आज्ञाओं (और सीमाओं) को लोगों के सामने बयान कर देता है; जिस से कि वह (निषेद्ध की हुई बातों से) बचें ॥

और (देखो—मेरे आज्ञाकारी बन्दो !) तुम (किसी) एक दूसरे (मनुष्य) का माल व्यर्थ न खाओ। (जैसे चोरी करके, ख़यानत करके दग़ाबाज़ी कर के, घूस लेकर, जुआ खेलकर, धोका देकर) और न उस (अच्छे भले चंगे रुपये) को लोगों का ज़रा सा माल जान बूझ कर पाप स्वरूप खाने के लिये हाकिमों के पास (घूस के रूप में) पहुँचाओ ॥

लِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهِلَّةِ ۖ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ
لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ
ظُهُورِهَا وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ
أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَقَاتِلُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ
وَأَخْرِجُوهُمْ مِنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ
مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ
يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ
جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ۝ فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ
الدِّينُ لِلَّهِ ۖ فَإِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ۝

ताकि लोगों के माल में से (थोड़ा बहुत जो) कुछ (हाथ लगे, उस को) जान बूझ कर नाहक़ हज़म कर जाओ ० (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुम से चाँद के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, तो (तुम इन से) कहो कि चाँद से लोगों के (मुआमिलात और इबादात; मसलन) हज के औक़ात मालूम होते हैं और यह कुछ नेकी (में दाख़िल) नहीं है कि घरों में उन के पिछवाड़े की तरफ़ से आओ। बल्कि नेकी तो उस की है, जो पर्हेज़गारी (इख़्तियार) करे और घरों में (आओ, तो) उन के दर्वाज़ों से (होकर) आओ और अल्लाह (की नाफ़र्मानी) से डरते रहो, ताकि तुम (अपनी) मुराद को पहुँचो० और (मुसल्मानो !) जो लोग तुम से लड़ें, तुम भी अल्लाह के रस्ते (यानी दीन की हिमायत) में उन से लड़ो और ज़ियादती न करना। अल्लाह (किसी तरह) ज़ियादती करने वालों को पसन्द नहीं करता ० और (जो लोग तुम से लड़ते हैं,) उन को जहाँ पाओ क़त्ल करो और जहाँ से उन्हों ने तुम को निकाला है, (यानी मक्के से) तुम भी उन को (वहाँ से) निकाल बाहर करो और फ़साद (का बर्पा रहना) ख़ूँ रेज़ी से भी बढ़ कर है और जब तक काफ़िर अदब (और हुर्मत) वाली मस्जिद (यानी ख़ानए काबा) के पास तुम से न लड़ें, तुम भी उस जगह उन से न लड़ो। लेकिन अगर वह लोग तुम से लड़ें, तो तुम भी उन को (बे तअम्मुल) क़त्ल करो। ऐसे काफ़िरों की यही सज़ा है ० फिर अगर बाज़ आएँ, तो बिला शुबहा अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और वहाँ तक उन से लड़ो कि (मुल्क में) फ़साद (बाक़ी) न रहे और (एक) ख़ुदा का हुक्म चले। फिर अगर (फ़साद से) बाज़ आ जायँ, तो (उन पर किसी तरह की ज़ियादती नहीं करनी चाहिये, क्योंकि) ज़ियादती (तो) ज़ालिमों के सिवा किसी पर (जायज़ ही) नहीं—

(और ऐ रसूल ! यह जो लोग) तुम से चाँद के विषय में पूछते हैं (कि चाँद आरम्भ में बारीक क्यों होता है और बाद में बढ़ते बढ़ते थाली की तरह क्यों बन जाता है और फिर घटते घटते लोप किस लिये हो जाता है, तो उन से कह दो) कि यह (सब अमल इस लिये) हैं, जिस से कि लोगों को अपनी (साँसारिक बातें) और (धार्मिक कार्यों, जैसे) हज के समय की अवधियाँ ज्ञात रहें, (चाँद गोया संख्या व हिसाब लगाने का एक यन्त्र है) ॥

और (यह जो अरब वालों ने व्यर्थ का रिवाज इख़्तियार कर रक्खा है कि हज का एहराम * बांध लेने के उपरान्त अगर उन्हें किसी आवश्यकता से घर वापिस आना होता है, तो दरवाज़े की तरफ़ से नहीं आते। बल्कि दीवारों को फलाँग कर या छतों पर चढ़ कर आते हैं और इस की गणना नेकी में करते हैं, तो) घरों में पिछवाड़े (या दूसरे औंधे रास्तों) से प्रवेश करना कोई नेकी नहीं है । नेकी यह है कि संयमी बना जाय। घरों में घरों के दरवाज़ों (ही) से आया करो और अल्लाह (की अवज्ञा) से डरते रहो, जिस से कि भलाई प्राप्त हो (और तुम अपने मनोरथ को पहुँचो) ॥

* टीका—हज के लिये बे सिला कपड़ा आधा बांधना और आधा ओढ़ना, एहराम कहलाता है। हज के दिनों में हर छोटे, बड़े, अमीर, ग़रीब-हज करने वाले के लिये एहराम ही का पहिनना आवश्यक है :—हसन निज़ामी ॥

और (ऐ मुसल्मानो !) जो (तुम्हारे इस्लाम पर विश्वास लाने के कारण या प्रतिज्ञा भंग करके) तुम से लड़ते हैं, उन से अल्लाह के लिये तुम (भी निःसंकोच और बिना विलम्ब) लड़ो, अलबत्ता (किसी प्रकार की) ज़ियादती न करना, (जैसे बिना कारण व्यर्थ ख़ुद न उलझना या मुक़ाबला करने वाले लोगों के स्त्री और बच्चों को मन सताना, क्योंकि) अल्लाह ज़ियादती करने अर्थात् सीमा से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता ॥

और (जिन महीनों में असभ्य से असभ्य अरब भी मार काट से हाथ खींच लेता है अर्थात् ज़ीक़ाद, ज़िल-हिज्ज, मुहर्रम और रजब-इन चार महीनों में भी जिन में लड़ना मना है, यदि तुम्हारे शत्रु तुम से युद्ध करें—तो फिर) तुम (भी) जहां पाओ उन को मार कर टुकड़े करदो और जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला है, वहां से तुम (भी) उन्हें निकाल दो। (यह विद्रोही हैं और) विद्रोह (पैदा करना) क़त्ल (व रक्त-पात) से बुरी (वस्तु) है। (अतएव विद्रोह को जिस प्रकार सम्भव हो, मिटाना चाहिये) ॥

अलबत्ता पूजनीय मसजिद (अर्थात् काबे के स्थान) के निकट (प्रारम्भ न करना और) उन से मत लड़ना, जब तक वह स्वयं (वहां) तुम से न लड़ने लगें। हां, वही अगर (वहां) तुम से लड़ें, तो तुम (भी) उन्हें बध करो। (ऐसे) काफ़िरों की यही सज़ा है ॥

और अगर वह (लड़ाई भिड़ाई से) रुक जायँ (और इस्लाम ग्रहण करलें,) तो (फिर वह तुम्हारे भाई हैं)। अल्लाह (भी) बड़ा क्षमा करने वाला और दयालु है । (उन के समस्त पूर्व-पापों को क्षमा कर देगा) ॥

(रक्त-पात करने का उद्देश (मक़सद) लोगों को नष्ट करना नहीं है, बल्कि कुफ़्र और द्वैत-पूजा और विद्रोह और फ़साद का मिटाना है। अतएव) उन से (बस) उस समय तक लड़ो कि विद्रोह बाक़ी न रहे और (हर मनुष्य के हृदय में) अल्लाह का धर्म (शान्ति-स्वरूप) हो जाय। बस अगर वह विद्रोह व फ़साद व कुफ़्र व द्वैत-पूजा से हाथ खींच लें, तो सख़्ती की (कदापि) आवश्यकता नहीं। (सख़्ती की इजाज़त तो) केवल अत्याचारियों के लिये है । (जो लोग तौबा करलें, बाज़ आ जायँ और मुसल्मान हो जायँ, वह गोया अत्याचारियों के समूह से निकल आये। उन पर सख़्ती करनी जायज़ नहीं) ॥

الشهر الحرام بالشهر الحرام والحرمت قصاص
فمن اعتدى عليكم فاعتدوا عليه بمثل ما
اعتدى عليكم واتقوا الله واعلموا ان الله
مع المتقين ۝ وانفقوا في سبيل الله ولا
تلقوا بايديكم الى التهلكة واحسنوا
ان الله يحب المحسنين ۝ واتموا الحج والعمرة
لله فان احصرتم فما استيسر من الهدي
ولا تحلقوا رءوسكم حتى يبلغ الهدي محله
فمن كان منكم مريضا او به اذى من
رأسه ففدية من صيام او صدقة او
نسك فاذا امنتم فمن تمتع بالعمرة الى الحج
فما استيسر من الهدي فمن لم يجد فصيام
ثلثة ايام في الحج وسبعة اذا رجعتم تلك

अदब (व हुर्मत) वाले महीनों का मुआविज़ा अदब (व हुर्मत) वाले महीने और (महीनों की ख़ुसूसियत नहीं, बल्कि) अदब की (तमाम) चीज़ों में बदले का बदला। तो जो तुम पर (किसी क़िस्म की) ज़ियादती करे, तो जैसी ज़ियादती उस ने तुम पर की, वैसी ही ज़ियादती तुम भी उस पर करो और (ज़ियादती करने में) अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो कि अल्लाह उन ही का साथी है, जो (उस से) डरते हैं ० और ख़ुदा की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों अपने तईं हलाकत में न डालो और एहसान करो। बेशक अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है ० और अल्लाह के लिये हज और उमरे (की नियत कर ली हो, तो उस) को पूरा करो और अगर (राह में कहीं) घिर जाओ, तो क़ुर्बानी (करदो) जैसी कुछ मयस्सर आए और जब तक क़ुर्बानी अपने नेग न लग जाय, अपना सर न मुँडवाओ। फिर जो तुम में बीमार हो या सर की तरफ़ से उसे (किसी तरह की) तक्लीफ़ हो, तो (बाल उतर्वादेने का) बदला रोज़े या ख़ैरात या क़ुर्बानी। फिर जब तुम्हारी ख़ातिर जमा (यानी उज़्र रफ़ा) हो जाय, तो जो कोई उमरे को हज से मिला कर फ़ायदा उठाना चाहे, तो (उस को) क़ुर्बानी (करनी होगी) जैसी कुछ मयस्सर आए और जिस को (क़ुर्बानी) मयस्सर न हो, तो तीन रोज़े हज के दिनों में (रखले) और सात, जब वापस आओ—

(लेकिन जो ज़ुल्म, कुफ़्र व विद्रोह पर अड़े रहें और तुम से हुरमत वाले (पवित्र) महीनों में लड़ें और उनकी पवित्रता की परवा न करें, तो तुम भी समझ लो कि) हुरमत वाले (पवित्र और पूजनीय) महीनों के सम्मान के मुक़ाबिले में हुर्मत वाले महीनों का सम्मान है और (महीने क्या,) समस्त पूजनीय वस्तुयें (भी अगर) बाधा डालें (और पहिले उनकी ओर से आरम्भ हो चुका हो,) तो (तुम इन पूजनीय वस्तुओं को बाधा-स्वरूप न आने दो और) प्रतिकार (बदला या बध के बदले में बधिक को बध करना) लो। जो तुम पर सख़्ती करे, तुम भी उस पर सख़्ती करो। (मगर उतनी और) वैसी ही (जितनी और) जैसी सख़्ती तुम पर की जाय। (सख़्ती पर सख़्ती न करना और) अल्लाह से डरते रहना और याद रखना !! अल्लाह उन का साथी है, जो उस से डरते हैं॥

और (ऐ मुसलमानो !) अल्लाह के मार्ग में (धन व सम्पत्ति) व्यय करो और (केवल लड़ने के चाव में) अपने हाथों से अपने आप को हत्या में न फँसाओ। (देखो !) काम नियम-पूर्वक होना चाहिये। अल्लाह नियम-पूर्वक काम करने वालों से प्रेम रखता है॥

और हज * व उमरह † (के सम्बन्ध में भी यही आज्ञा है कि उस को अल्लाह के लिये) करने की नीयत की हो, तो ठीक नियम से अदा करो। हाँ, अगर (किसी कारण से कहीं) फँस जाओ (और मजबूर हो जाओ,) तो (फिर ख़ैर) जो क़ुर्बानी उपलब्ध हो, करदो और अपने सिरों को उस समय तक न मुँडवाओ, जब तक क़ुर्बानी की वस्तु अपनी जगह पर न पहुँच जाय। (वह जगह काबे‡ का स्थान है। क़ुर्बानी को किसी साधन से वहाँ भिजवा दो और जिस समय विश्वास हो जाय कि क़ुर्बानी काबे के स्थान में पहुँच गई, तो सिर मुँडवा दो और एहराम उतार डालो)॥

* टीका—अपने २ मीक़ात (विशेष स्थान) से एहराम बाँध कर बक़रीद के महीने की नवीं तारीख़ को अरफ़ात पहुँचना। वहां से लौट कर रात में मुज़्दलिफ़ा ठहरना। फिर ईद की सुबह को मिना (एक जगह का नाम) में जाकर कंकरियाँ फेंकना। फिर मूँडन कराके एहराम उतार देना। इस के उपरान्त काबे की परिक्रमा, सफ़ा व मर्वा पर्वतों के मध्य दौड़ना और दूसरी बार मिना में तीन दिन या दो दिन रहना और रोज़ कंकरियाँ फेंकना और फिर काबे की परिक्रमा करना। बस हज में यही उपरोक्त बातें करनी पड़ती हैं:—हसन निज़ामी॥

† टीका—उमरह यूँ होता है कि एहराम बाँधा, काबे की परिक्रमा की, सफ़ा, मर्वा के बीच दौड़े और सिर के बाल मुँडवा कर एहराम खोल दिया। उमरे में हज की तरह दिन और महीने की पाबन्दी नहीं हैं। उमरे को छोटा हज भी कहते हैं:—हसन निज़ामी॥

‡ टीका— हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा की राय के अनुसार:—हसन निज़ामी॥

अलबत्ता (अगर) तुम हज (के एहराम बाँधने के बाद ऐसे) रोग-ग्रस्त हो जाओ या तुम्हारे सिर (ही में कोई ऐसी सख़्त तकलीफ हो जाय कि बिना बाल मुँडवाये कोई उपाय न रहे, तो मुँडवादो और) इस के बदले में (तीन) रोज़े रखलो या (छः) अपाहिजों को खाना खिला दो या (एक) बकरा बध करदो और जब (तुम्हारी वह तकलीफ़ जाती रहे और) तुम निश्चिन्त हो जाओ, तो जो (तुम में से) हज के समय तक उमरे से लाभ उठाना चाहे (उस को) क़ुर्बानी ** (करनी चाहिये) जिस श्रेणी की सम्भव हो॥

** टीका—अगर कोई मनुष्य एक ही सफ़र में हज व उमरह—दोनों एक साथ करना चाहे, जैसा कि दूर से आने वाले अकसर करते हैं, तो उन के लिये भी क़ुर्बानी की आज्ञा है। क़ुर्बानी कम से कम प्रति-मनुष्य एक बकरी या सात आदमी मिल कर एक गाय या एक ऊँट कर सकें हैं:—हसन निज़ामी॥

और जो क़ुर्बानी न कर सके, वह तीन रोज़े हज्ज के दिनों में रख ले और सात रोज़े वापिस लौटने पर—

عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۞ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ
فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ وَلَا
جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ
اللّٰهُ ۗ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۚ وَاتَّقُوْنِ
يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ۞ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا
فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ
فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوْهُ
كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ۞
ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا
اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ
فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ۗ

यह पूरा दहा हुआ। यह (हुक्म) उस के लिये है, जिस का घर बार मक्के में न हो और अल्लाह से डरो और जाने रहो कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है ० हज के (तो ख़ास) महीने (हैं, जो सब को) मालूम हैं। तो जो शख़्स इन महीनों में हज का ठानले, तो (एह्राम बांधने से आख़िर तक) हज (के दिनों) में न शहवत की कोई बात (करे) और न गुनाह की और न लड़ाई की। और नेकी का कोई सा काम भी करो, वह ख़ुदा को (उसी वक़्त) मालूम हो जायगा और (हज के जाने से पहिले) ज़ाद (राह बहम पहुँचा) तो कि बेहतरीन ज़ाद (राह) परहेज़गारी है (अज़ाँ जुम्ला यह कि मांगे नहीं, चुराए नहीं) और अक़्ल वालो ! (अस्ल परहेज़गारी यह है कि) हम से डरते रहो ० (हज के शुमूल में) तुम अपने पर्वर्दिगार का फ़ज़्ल (मसलन तिजारत से कोई माली फ़ायदा) हासिल करना चाहो, तो (इस में तुम पर) कुछ गुनाह नहीं। फिर जब अरफ़ात से लौटो, तो मशअरिल् हराम (यानी मुज़्दलफ़ा) में ठहर कर ख़ुदा की याद करो और उस की याद (भी) करो (तो) उस तरीक़े पर, जो ख़ुदा ने (पैग़म्बर के ज़रीए से) तुम को बताया है और इस से पहिले तो ज़रूर तुम गुमराहों में थे (यानी इबादत के तरीक़े भी नहीं जानते थे) ० फिर (एक बात यह है कि अरफ़ात से चलो, तो) जिस जगह से (और) लोग चलें, तुम भी वहीं से चलो और अल्लाह से (गुनाहों की) मग़्फ़िरत चाहो। बेशक अल्लाह बख़्श ने वाला मेहर्बान है ० फिर जब अपने हज के अर्कान तमाम कर चुको, तो जिस तरह तुम अपने बाप दादों के ज़िक्र में लग जाते थे (उस को छोड़ कर) उसी तरह, बल्कि उस से भी बढ़ कर ख़ुदा की याद में मशग़ूल हो जाओ—

यह पूरे दस हुए। यह (आज्ञा) उसके लिये है, जिस के घर वाले मक्के में न हों (अर्थात् जिस का घर बार मक्के में न हो और हर मामले में) अल्लाह का भय (दृष्टि के सामने) रक्खो और ध्यान रहे कि (आज्ञा से विमुख होने वालों के लिये) अल्लाह का कठोर नर्क-दण्ड है ॥

हज के महीने तो (तुम्हें) ज्ञात ही हैं। (शव्वाल * और ज़ोक़ाद के महीनों से हज का इरादा आरम्भ † किया जाता है और एह्राम बांधा जाता है)। सो जो इन (महीनों) में हज (करने) को (अपने ऊपर अनिवार्य) नियत कर ले, (उसे यह भी अनिवार्य है कि एह्राम बाँधने के पीछे से बहुत ही सावधानी से रहे)। हज (के दिनों) में (स्त्री पुरुष का) सहवास न हो और न (और कोई) पाप (की बात) और न लड़ाई झगड़ा। और भलाई का जो काम करोगे, अल्लाह को (तुरन्त) ज्ञात हो जायगा और (हज को चलने से पहिले) मार्ग-व्यय साथ ले लिया करो। मार्ग-व्यय का बड़ा लाभ यह है कि संयमी रहोगे। चोरी, चकारी और भीक माँगने के अनादर से बचे रहोगे। ऐ बुद्धिमानो ! मेरे भय को अपने हृदय में स्थान दो। (जिसे अल्लाह का भय होता है, वह समस्त व्यर्थ और झूठे कार्यों से सुरक्षित रहता है) ॥

* टीका—शव्वाल से पहिले हज के लिये एह्राम बांधना वर्जित है:—हसन निज़ामी ॥

† टीका—और बक़रीद के महीने की दसवीं तारीख़ को हज समाप्त हो जाता है:—हसन निज़ामी ॥

(हां, हज की अवधि में) अल्लाह की दया (अर्थात् राज़ी) की तलाश करो, तो (उस से) तुम पर (कोई) पाप (लागू) नहीं होगा। (अर्थात् एह्राम बांधे हुए व्यौपार में तत्पर रह सक्ते हो) और जब तुम अरफ़ात से वापिस लौटो, तो मशअरिल-ह्राम (मुज़दल्फ़ा) में ठहर कर (रात भर) अल्लाह की याद करो, और उस की याद इस तरह होनी चाहिये, जिस तरह उसने तुम्हें (रसूल के द्वारा) बताया है। (रसूल के आने और बताने से) पहिले तुम पथ-भ्रष्ट थे। (अपनी पथ-भ्रष्टता के समय के तरीक़े अब मत इख़्तियार करना) ॥

(और) फिर (देखो !) जहां ‡ से और सब लौटते हैं, वहीं से तुम लौटो, और अल्लाह से क्षमा (की दुआ) मांगो। अल्लाह क्षमा करने वाला और दयालु है ॥

‡ टीका—मक्के के रहने वाले अपने प्राचीन असभ्य समय के रिवाज का पक्ष करके अरफ़ात तक नहीं जाते थे और 'ह्रम' (मक्के की विशेष अवधि) की सीमा पर रुके रहते थे और कहते थे कि हम ह्रम के रहने वाले-ह्रम के बाहर क्यों जायँ। यद्यपि अरफ़ात में जाकर ठहरना हज के कर्म-संस्कारों में से एक है। अतएव सब लोग तो लौटते थे अरफ़ात से, और यह मक्के वाले लौटते थे—ह्रम की सीमा से। इस पर यह आयत उतरी कि जहां से सब लोग लौटते हैं, वहीं से तुम भी लौटा करो:—हसन निज़ामी॥

और जब तुम अपने हज के तमाम (समस्त) संस्कार पूरे कर चुको, तो (इस के बाद भी) अल्लाह (ही) का स्मरण करो, उसी प्रकार—जिस प्रकार तुम अपने बाप दादा का स्मरण किया करते थे, वरन् अल्लाह का स्मरण उस से (भी कुछ) अधिक होना चाहिये ॥

فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا
وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ● وَمِنْهُمْ مَنْ
يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ
حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ● أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ
مِمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ● وَاذْكُرُوا
اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ
فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ
اتَّقَىٰ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ●
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَيُشْهِدُ اللَّهَ عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ●
وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَ
يُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ●
وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ

फिर लोगों में से कुछ ऐसे हैं, जो दुआएँ माँगते हैं कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार! (जो कुछ) हम को (देना है) दुनिया में दे (चुनांचे उन को दुनिया मिल भी जाती है) और आख़िरत में उन का कुछ हिस्सा नहीं ० और लोगों में से कुछ ऐसे (भी) हैं, जो दुआएँ माँगते हैं कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार! हमें दुनिया में भी ख़ैर बरकत दे और आख़िरत में भी ख़ैर व बरकत दे और हम को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ० यही हैं (वह लोग) जिन को (आख़िरत में) उन के किये का हिस्सा (यानी सवाब मिलना) है और अल्लाह तो फटके भर में (सब का) हिसाब करने वाला है ० और गिन्ती के (इन चन्द) दिनों में ख़ुदा की याद करते रहो। फिर जो शख़्स जल्दी करे (और) दो (ही) दिन में (चल खड़ा हो) उस पर (भी) कुछ गुनाह नहीं और जो देर तक ठहरा रहे, उस पर (भी) कुछ गुनाह नहीं। (यह रिआयत) उन के लिये (है) जो पर्हेज़गारी करें और ख़ुदा से डरते रहो और जाने रहो कि (क़यामत के दिन) तुम (सब) उसी के हुज़ूर में हाज़िर किये जाओगे ० और (ऐ पैग़म्बर!) बाज़ा आदमी ऐसा (मुनाफ़िक़ भी) है, जिस की बातें तुम को (इस) दुनिया की ज़िन्दिगी में भली मालूम होती हैं और वह अपनी दिली इरादत (और महब्बत) पर ख़ुदा को गवाह ठहराता है। हालाँ कि वह (तुम्हारे) दुश्मनों में (सब से) ज़ियादा झगड़ालू है ० और जब (तुम्हारे पास से) लौट कर जाए, तो मुल्क को खूँद मारे, ताकि उस में फ़साद फैलाए और खेती बाड़ी को और (आदमियों और जानवरों की) नस्ल को तबाह करे और अल्लाह फ़साद को पसन्द नहीं रखता ० और जब उस से कहा जाए कि ख़ुदा से डर, तो शेख़ी दामन गीर होकर उसको गुनाह पर आमादा करे—

कुछ लोग कहते हैं कि हमारे सृष्टि कर्त्ता! हमें (जो २ देता है) संसार (ही) में दे दे। (अतएव उन्हें वह मिल जाता है) और परलोक में उनका कोई भाग नहीं रहता और कुछ लोग ऐसे हैं, जो प्रार्थना करते हैं कि ऐ हमारे पालन कर्त्ता! हमें दुनिया में (भी) भलाई और बरकत प्रदान कर और परलोक में (भी अपनी प्रसन्नता से) हमें सुखी कर और हमें नर्क के दुःखों से बचा ले॥

इन लोगों को उन के कर्मों का पूरा २ बदला मिलेगा। अल्लाह (सब से) दम भर में हिसाब ले लेगा (और बदला देने में ज़रा देर न लगेगी)॥

(ऐ मुसलमानो! हज के बाद के) कुछ नियत किये हुए दिनों में (जो केवल तीन हैं, ख़ूब) अल्लाह का स्मरण करो। (ख़ूब तकबीरें अर्थात अल्लाहु अकबर २) कहो और जो जल्दी करे (और) दो (ही) दिन में (चला जाय, तो) उसे पाप नहीं होगा और अगर कोई अधिक ठहरे, तो इस में भी कुछ हानि नहीं है। शर्त है कि यदि वह संयमता को हाथ से न जाने दे। (डींग मारने और वंश तथा कुटुम्ब की प्रशंसा में समय व्यर्थ नष्ट * न करे। मुसलमानो! तुम) अल्लाह से डरते (ही) रहो (और संयमी रहो) और यह जाने रहो कि मरने के उपरान्त फिर से उठकर तुम्हें उसी अल्लाह के पास जाना है॥

* टीका—इस्लाम से पूर्व अरब के लोगों में यह नियम था कि हज के बाद कुछ दिन और ठहरते, और व्यर्थ डींगें मारने में समय नष्ट करते। इस्लाम ने उन का वहाँ ठहरना तो जायज़ रक्खा कि कुछ इबादत हो जाय और कुछ तिजारत, व्यौपार। किन्तु इस्लाम से पहिले की बुरी बातों को ख़ुदा ने मना कर दिया था:—हसन निज़ामी॥

और कुछ मनुष्य ऐसे हैं कि तुम्हें उनकी वार्त्तालाप—जो सांसारिक मामलों के सम्बन्ध में होती है, बहुत भली लगती है। वह (तुम से प्रेम का दावा करते हैं और) अपने दिल की दशा पर अल्लाह को साखी बनाते हैं (अर्थात् अल्लाह को गवाह बना कर कहते है कि जो कुछ हमारी ज़बान पर है, वही हमारे मन में है)। यद्यपि वह (तुम्हारी) शत्रुता में (अत्यन्त) कठोर † हैं॥

† टीका—एक मनुष्य अख़नस बिन शरीक नामक मुनाफ़िक़ था, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम को इस्लाम धर्म और रसूलुल्लाह को पवित्र व्यक्ति के साथ प्रेम का विश्वास दिलाया करता था। यह आयतें उसी के सम्बन्ध में उतरी हैं—हसन निज़ामी॥

यह जब अधिकार प्राप्त कर लेते हैं, तो तन मन से इस कोशिश में लग जाते हैं कि पृथ्वी पर विद्रोह फैलावें। खेत (उजाड़ें, आदमियों और जानवरों की) नस्ल मिटावें। अल्लाह (इस) विद्रोह को नहीं पसन्द करता॥

और जब उन से कहा जाय कि अल्लाह से डरो (तो डरने के बजाय उन में) अभिमान या बड़प्पन (समा जाता है और) उन को (और अधिक) पाप (करने) पर तैयार कर देता है—

فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ وَمِنَ النَّاسِ
مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا
فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ
اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْ بَعْدِ
مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ
ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ
وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ
اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝
زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ
مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

ع ٤

وَاللّٰهُ

पस ऐसे (नाबकार) को (बस) जहन्नम काफी है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है ० और लोगों में से कुछ (नेक बन्दे) ऐसे भी हैं, जो .ख़ुदा की रज़ा जोई के लिये अपनी जान (तक भी) दे देते हैं और अल्लाह बन्दों पर बड़ा ही शफ़क़त रखता है (कि बन्दों के ज़ोफ़ पर नज़र करके उसने दीन में हर तरह की आसानी रक्खी है) ० मुसल्मानो ! इस्लाम में पूरे २ आ जाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है ० फिर जब कि तुम्हारे पास साफ़ हुक्म पहुँच चुके और इस पर भी फिसल जाओ, तो जान रक्खो कि अल्लाह ज़बर्दस्त (और) हिकमत वाला है, (उसकी पकड़ से तुम नहीं बच सकोगे ० क्या यह लोग इसी के मुन्तज़िर हैं कि अल्लाह बादलों का छत्तर लगाये फ़रिश्तों को साथ ले इन के सामने आ मौजूद हो और जो कुछ होना है, हो चुके (यानी क़यामत आ जाय, मगर यह अभी तो मंज़ूर नहीं) और सब काम अल्लाह ही के हवाले हैं ० (ऐ पैग़म्बर !) बनी इस्राईल से पूछो कि हमने उनको कितनी कुछ खुली हुई निशानियां दीं और जब कोई शख़्स (ऐसा नालायक़ हो कि .ख़ुदा उसको एक नेअ़मत मसलन किताब आस्मानी दे और वह) .ख़ुदा की (उस) नेअ़मत के अपने पास आये पीछे (उसको) बदल डाले, तो .ख़ुदा की मार बड़ी सख़्त है ० जो लोग (दीन हक़ से) मुन्किर हैं, दुनिया की ज़िन्दिगी उन को उम्दा कर दिखाई गई है और मुसल्मानों के साथ मख़ौल करते हैं, हालांकि जो लोग परहेज़गार हैं (यानी मुसल्मान, उन के दर्जे) क़यामत के दिन उन (काफ़िरों) से (कहीं) बढ़ चढ़ कर होंगे—

सो इन (दुष्टों) के लिये केवल नर्क (ही) ठीक है और वह (अत्यन्त) निकृष्ट स्थान है ॥

और कुछ ऐसे हैं, जो अल्लाह की इच्छा पूर्ण करने के लिये जान (तक) दे देते हैं। अल्लाह (भी इन) बन्दों पर बहुत (ही) मेहरबान है ॥

ऐ नव लोगो ! जो ईमान लाये हो, पूरी तरह इस्लाम में आ जाओ * (केवल नाम मात्र के और अधकचरे मुसलमान न रहो) और दिल में चिन्ता अर्थात् धुकड़ पुकड़ रख कर) शैतान के पद-चिन्हों पर न चलो। (उस के बहकाने में न फँसो) वह तो तुम्हारा स्पष्ट शत्रु है ॥

* टीका—जिस तरह अकसर हिन्दुस्तानी मुसलमान अपने देश के कुछ रिवाजों को इस्लाम-धर्म के विरुद्ध होने पर भी निबाहे चले जाते हैं, इसी तरह अ़रब के मुसलमान भी आरम्भ में अपनी प्राचीन आदतों को न बदल सके थे; जैसे यहूदियों से जो मुसलमानों में आये-इन में से कुछ लोग 'यौमे सब्त' अर्थात् सनिश्चर के दिन का आदर किये जाते थे और ऊँट का मांस न खाते थे। क्योंकि वह यहूदियों के यहां हराम है:—हसन निज़ामी ॥

साफ साफ (इस्लाम की आज्ञाएँ) तुमको (पहुँचा दी गई हैं। उन के) पहुँचने के बाद (भी) तुम डिग मगा जाओ, तो जान रक्खो अल्लाह बड़ा शक्ति-शाली और बुद्धिमान व सर्व दर्शी है ॥

(यह लोग क्या इसी की राह देखते हैं) क्या इसी के मुन्तज़िर (प्रतीक्षक) हैं कि अल्लाह फ़रिश्तों (की फ़ौज) को साथ लेकर बादलों की छाया में (दुःखों का मेंह बरसाने) आ उपस्थित हो ? और सब क़िस्सा मिट जाय। (विश्वास रखना चाहिये) तमाम क़िस्से (एक दिन) अल्लाह (ही) के आगे उपस्थित होने वाले हैं ॥

(ऐ हमारे पैग़म्बर ! इन) इस्राईल के वंश वालों से पूछो (तो) हमने (अपनी) कैसी (कैसी) स्पष्ट-निशानियां इन पर प्रकट की थीं। जो अल्लाह की नेअ़मत (ईश्वरीय-प्रसाद) को प्राप्त करके (इस नेअ़मत को) विपत्ति से बदल ले, (तो उसे याद रहे कि) अल्लाह का दण्ड बड़ा कठोर है ॥

सांसारिक जीवन काफ़िरों के लिये भड़क दार (वैभव-पूर्ण) बना दिया गया है और (इस लिये) वह (ग़रीब और निर्धन) मुसल्मानों पर हँसते हैं (और उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं)—यद्यपि (मुसलमान, जो द्वैतवादी होने और दूसरे पापों से) परहेज़ करते हैं, वह प्रलय के दिन (इन धनवान काफ़िरों से उच्च (पद) प्राप्त करेंगे—

وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ كَانَ
النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ
مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ط
وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْ بَعْدِ
مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ط
وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ
الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ط مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ
وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ط اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ۝
يَسْئَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ط قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ

और अल्लाह जिसे चाहे, बे हिसाब रोज़ी दे ० (शुरू में सब) लोग एक ही दीन रखते थे। फिर (आपस में लगे इख़्तिलाफ़ करने—तो) अल्लाह ने पैग़म्बर भेजे, जो (ईमान वालों को .ख़ुशनूदी .ख़ुदा की) .ख़ुश ख़बरी देते और (काफ़िरों को अज़ाब इलाही से) डराते और उन की मार्फ़त सच्ची किताबें भेजीं, ताकि जिन बातों में लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, किताब इलाही उनमें उन बातों का फ़ैसला कर दे और (इस पर भी लोगों का इख़्तिलाफ़ बन्द न हुआ कि) जिन लोगों को किताब दी गई थी, वही (लोग) अपने पास खुले खुले अहक़ाम आए पीछे आपस की ज़िद से लगे उन में इख़्तिलाफ़ करने। तो (आख़िरकार) वह राह हक़—जिस में लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे थे, .ख़ुदा ने अपनी इनायत से मुसल्मानों को दिखा दी और अल्लाह जिस को चाहे, राह रास्त दिखाये ० (मुसल्मानो !) क्या तुम ऐसा ख़याल करते हो कि (मज़े से) बहिश्त में जा दाख़िल होगे ? हालाँकि अभी तक तुम को उन लोगों की सी हालत पेश नहीं आई, जो तुम से पहिले हो गुज़रे हैं कि उन को सख़्तियाँ (भी) पहुंचीं और तक्लीफ़ें (भी पहुँचीं) और झड़ झड़ाए (भी) गये। यहां तक कि पैग़म्बर और ईमान वाले—जो उनके साथ थे, चिल्ला उट्ठे कि (आख़िर) .ख़ुदा की मदद (के आने) का कोई वक़्त भी है ? (हमने उनकी बेक़रारी देखकर तसल्ली दी और फ़र्माया) सँभलो (सँभलो) अल्लाह की मदद (का वक़्त) बस क़रीब (आ लगा) है ० (ऐ पैग़म्बर !) तुम से (लोग) पूछते हैं कि (.ख़ुदा की राह में) क्या ख़र्च करें, तो (उन को) समझा दो कि (ख़ैर ख़ैरात के तौर पर) जो माल भी ख़र्च करो—

(और संसार के धन, दौलत पर क्या घमंड,) अल्लाह जिस को चाहता है, असंख्य धन, दौलत दे देता है। (मुसलमान सदैव ऐसे ग़रीब और निर्धन नहीं रहेंगे) ॥ (आदि सृष्टि में) समस्त आदम के वंश वाले एक नियम (और एक विश्वास) के अनुयायी * थे, (किसी प्रकार का उनमें भेद-भाव न था, परन्तु धीरे २ मत-भेद प्रकट हुआ। इस लिये) अल्लाह ने नबी भेजे (जो नेक मनुष्यों को तो परलोक का) मंगल-समाचार सुनाते थे और (दुष्टों को परलोक के दु:खों से) डराते थे और उन (नबियों) को न्याय-विधान की किताबें दीं—जिस से कि आदम की सन्तान ने जिन बातों में मत-भेद पैदा कर लिया है, वह उन का निपटारा कर दें। (मगर फिर भी इख़्तिलाफ़ अर्थात विभिन्नता न मिटी)। स्वयं वही, जिन के लिये किताबें उतरी थीं, यह होते हुए भी कि पैग़म्बर (अपनी और किताबों की सत्यता के प्रमाण में) उनके पास खुली खुली स्पष्ट निशानियां लाये, (केवल) परस्पर के (पक्षपात और) विद्रोह के कारण उन के मतों में भेद प्रकट करने लगे। मगर जिन के दिलों में ईमान था, उन्हें अल्लाह ने अपनी कृपा से वह सत्य-मार्ग, जिस के सम्बन्ध में विभिन्नता थी—दिखा ही दिया। अल्लाह जिसे चाहता है, सीधी राह दिखा देता है ॥

* टीका—जो शिक्षा .क़ुरआन दे रहा है, सिद्धांत की दृष्टि से इस में और उस शिक्षा में, जो हज़रत आदम (उन पर सलाम) के बेटों और पोतों को दी गई थी, बिल्कुल भेद-भाव नहीं है। अलबत्ता समय और परिस्थिति की दृष्टि से छोटी २ बातों में भेद था; जिस प्रकार हज़रत शाह अब्दुल्क़ादिर साहब के कथनानुसार शरीर के लिये स्वास्थ्य एक वस्तु है और रोग हज़ारों। अब जैसा रोग होगा, उसका वैसा ही इलाज किया जायगा। परन्तु हर इलाज का उद्देश आरोग्यता और स्वास्थ्य होगा। इसी प्रकार आत्मा की आरोग्यता भी एक ही है, और उसके बिगाड़ने वाली बातें असंख्य। हज़रत आदम के पढ़ाये हुए सबक़ को जब उनकी सन्तान भूलने लगी, तो उसे याद दिलाने के लिये फिर नबी भेजे गये; जिन्होंने सिद्धांत की दृष्टि से वही सिखाया, जो हज़रत आदम एक बार सिखा चुके थे। पर सामयिक दशा और आवश्यकताओं का ख़याल रक्खा और यूं ही यह सिलसिला जारी रहा। यहां तक कि वह दिन आ पहुँचा कि संसार की दशा और आवश्यकताओं का ठिकाना न रहा। तब अन्तिम समय के पैग़म्बर को उत्पन्न किया गया कि सिद्धान्तिक शिक्षानुसार पूर्ण रूप से मनुष्यों को संसार में रहना बतायें। बुराई की अपरिमित उन्नति को मिटा कर भलाई का उच्च आदर्श पेश करें, और केवल पेश ही नहीं करें, स्वयं नमूना बन कर दिखा दें, और नमूने बना कर दिखा दें कि मनुष्य को ऐसा होना चाहिये। आँ हज़रत के बाद नबी पैदा होना समाप्त हो गया। क्योंकि आप ऐसी पूर्ण शिक्षा व ज्ञान ले आये कि चाहे कोई परिस्थिति हो और कोई आवश्यकता हो, वह कहीं बन्द नहीं है। साढ़े तेरह सौ वर्ष का अनुभव तो हमारे और आपके साम ने है। आज भी जो कुछ प्रकाश दृष्टि गोचर होता है, वह उसी प्रज्वलित दीपक की ज्योति है। यद्यपि अज्ञान मुसल्मानों की भी बुद्धि में यह बात न समाय, परन्तु समझदार ग़ैर-मुसलिम भी इसे जानते हैं और उनके दिल इसे मानते हैं:—ह.सन निज़ामी ॥

(ऐ मुसल्मानो !) क्या तुम समझते हो कि तुम स्वर्ग में दाख़िल हो जाओगे। यद्यपि अभी तुम्हें उन लोगों के समान कष्ट उपस्थित नहीं हुये, जो तुम से पहिले गुज़र चुके हैं। पहिले लोगों ने कष्ट सहन किये, हानि उठाई और वह आपत्तियों से हिला २ दिये गये यहां तक कि (उस समय के) रसूल और (सब) उनके साथी ईमान वाले पुकार उट्ठे कि अल्लाह की सहायता कब आवेगी (और अल्लाह को उन्हें मंगल-समाचार देना पड़ा कि) धैर्य रक्खो, अल्लाह की सहायता शीघ्र आना चाहती है ॥ (ऐ, रसूल ! मुसलमान) तुम से पूछते हैं कि (हम अपनी सम्पत्ति में से) अल्लाह की राह पर क्या ख़र्च करें? (उन्हें) समझा दो (कि यह तुम्हारे प्रेम और शक्ति पर निर्भर है, परन्तु) जो (कुछ भी अल्लाह का) राह पर ख़र्च करो—

فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ
بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ
لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ
عَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْئًا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ
قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاِخْرَاجُ
اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ
الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ
عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ
عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ

ع

آدھ

तो वह (तुम्हारे) माँ बाप का हक़ है और क़रीब के रिश्तेदारों का और यतीमों का और मोहताजों का और मुसाफ़िरों का और तुम कोई सी भलाई भी (लोगों के साथ) करोगे, तो अल्लाह उसको ख़ूब जानता है ० (मुसलमानो!) तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया और वह तुम को नागवार भी गुज़रेगा और अजब नहीं कि एक चीज़ तुम को बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और अजब नहीं कि एक चीज़ तुम को भली लगे और वह तुम्हारे हक़ में बुरी हो और अल्लाह जानता और तुम नहीं जानते ० (ऐ पैग़म्बर! मुसलमान तुम से) अदब वाले महीनों की निस्बत यानी उन में लड़ाई करने की निस्बत दर्याफ़्त करते हैं (कि क्या हुक्म है?) तो (इनको) समझा दो कि अदब वाले महीनों में लड़ना बड़ा गुनाह है, मगर अल्लाह की राह से रोकना और ख़ुदा को (जैसा उसके मानने का हक़ है) न मानना और अदब वाली मस्जिद (यानी ख़ानए काबा) में न जाने देना और (उन लोगों को, जो) उस (मस्जिद में रहने और उसमें इबादत करने) के अह्ल (हैं, यानी मुसलमानों) को उसमें से निकाल देना (कि ख़ानए ख़ुदा में ख़ुदा की इबादत न कर सकें) अल्लाह के नज़्दीक (उस से भी) बढ़ कर है और फ़साद (का बर्पा रहना कुश्त व) ख़ून से (भी) बढ़ कर है और (यह कुफ़्फ़ार) सदा तुम (मुसल्मानों) से लड़ते ही रहेंगे। यहाँ तक कि इन का बस चले, तो तुम को तुम्हारे दीन (इस्लाम) से बर्गश्ता कर दें और जो तुम में अपने दीन से बर्गश्ता होगा और कुफ़्र ही की हालत में मर जायगा, तो ऐसे लोगों का किया कराया (क्या) दुनिया और (क्या) आख़िरत, (दोनों) में अकारत और यही हैं, दोज़ख़ी—

(उस में इस बात का ध्यान रखना कि) माता, पिता, सम्बन्धियों, अनाथों, निर्धनों और यात्रियों (सब) का (क्रमानुसार) हक़ है और जो दान (या लोगों के साथ किसी प्रकार की भलाई) तुम करते हो, अल्लाह को उस का ज्ञान रहता है (और वह एक २ का फल देगा)॥

(ऐ मुसलमानो! मज़हब के लिये कुफ़्फ़ार से लड़नो अर्थात्) जिहाद (धर्म—युद्ध) तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है। वह तुम्हें (जीवन और धन नष्ट होने के कारण) भारी (तो) मालूम होगा, परन्तु (ऐसा) हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें भारी गुज़रे और वह (वास्तव में) तुम्हारे लिये अच्छी हो और (ऐसा भी) सम्भव है कि एक वस्तु तुम्हें अच्छी लगे और वह तुम्हारे हित के लिये बुरी हो। अल्लाह ही (वास्तविक सच्चाई और तुम्हारी भलाई की बात को) अच्छी तरह जानता है और तुम (कुछ) नहीं जानते॥

(ऐ रसूल! मुसलमान) तुम से पवित्र महीनों के सम्बन्ध में पूछते हैं कि इन में युद्ध किया जाय (या नहीं?) कह दो! इन (पवित्र और आदरनीय महीनों) में युद्ध करना महान् पाप है। परन्तु अल्लाह के मार्ग (पर आने वालों) से रोक टोक करना और अल्लाह को न मानना और पूजनीय मसजिद (काबे के स्थान) में दाख़िल न होने देना और उस में से उन्हें निकालना, जो उसके (भीतर उपासना करने के) योग्य हैं— (यह बातें) अल्लाह की दृष्टि में सब से अधिक पाप हैं। (क्योंकि विद्रोह के मुक़ाबले में बध कर देना कोई चीज़ नहीं,) विद्रोह क़त्ल से भी अधिक पाप है॥

और (यह काफ़िर लोग) तुम से लड़ना नहीं छोड़ेंगे, ताकि यदि बस चल सके, तो तुम को तुम्हारे दीन से फेर दें और (याद रक्खो) जो तुम में से अपने धर्म से फिरेगा और (इसी धर्म-परिवर्तन और कुफ़्र की दशा में) मर जायगा, तो इस प्रकार के लोगों के (समस्त) शुभ-कर्म नष्ट हो जायँगे। संसार में (भी) और परलोक में (भी)। यह लोग नर्क में जायँगे—

هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَالَّذِينَ
هَاجَرُوا وَجٰهَدُوا فِي سَبِيلِ اللّٰهِ أُولٰٓئِكَ
يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ فِيهِمَآ إِثْمٌ
كَبِيرٌ وَّمَنٰفِعُ لِلنَّاسِ ۡ وَإِثْمُهُمَآ أَكْبَرُ مِنْ
نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْـَٔلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۝ قُلِ الْعَفْوَ ۝
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ
فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ۗ قُلْ
إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۗ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَأَعْنَتَكُمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ وَلَا تَنْكِحُوا
الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۗ وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ
مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا

(और) वह हमेशा (हमेशा) दोज़ख़ ही में रहेंगे ० जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अल्लाह की राह में हिजरतें भी कीं और जिहाद भी किये, यही हैं जो .ख़ुदा की रहमत की आस लगाये (बैठे) हैं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ० (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुम से शराब और जुए के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, (तो इन लोगों से) कह दो कि इन दोनों (चीज़ों) में बड़ा गुनाह है और लोगों के (कुछ) फ़ायदे भी हैं, मगर इनके फ़ायदे से इनका गुनाह (और नुक़सान) बढ़ कर है और तुम से दर्याफ़्त करते हैं कि (.ख़ुदा की राह में) कितना ख़र्च करें, तो (इन को) समझा दो कि जितना (तुम्हारी हाजत से) ज़ियादा हो। इसी तरह अल्लाह (अपने) अहकाम तुम लोगों से खोल खोल कर बयान करता है, ताकि तुम दुनिया और आख़िरत (के मुआमिलात) में ग़ौर करो ० और (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुम से यतीमों के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, (तो उनको) समझा दो कि (जिस में) उन (यतीमों) की बेहतरी (हो, वही) बेहतर है और अगर उन से मिल जुल कर रहो, तो (वह) तुम्हारे भाई हैं, (कोई ग़ैर नहीं) और अल्लाह बिगाड़ने वाले को सँवारने वाले से (अलग) पहिचानता है और अगर .ख़ुदा चाहता, तो तुम को मुश्किल में डाल देता। बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त (और) हिकमत वाला है ० और (मुसलमानो !) मुश्रिक औरतें जब तक ईमान न लाएँ, उन से निकाह न करो और शिर्क करने वाली औरत कैसी ही तुम को भली (क्यों न) लगे, उससे मुसलमान लौंडी बेहतर और मुश्रिक मर्द जब तक ईमान न ले आएँ, अपनी औरतें उनके निकाह में न दो—

और सदैव (सदैव) वहीं रहेंगे ॥

(इनके मुक़ाबले में) जो लोग ईमान लाये (और ईमान पर स्थिर रहे) और (ईमान लाने के बाद) जिन्होंने (अल्लाह के लिये) स्वदेश का त्यागन किया और जिन्होंने अल्लाह के मार्ग में धर्म-युद्ध (जिहाद) किये, वही अल्लाह की कृपा की आशा रख सकते हैं, और अल्लाह (उनकी ना समझियों और ग़लतियों को) क्षमा करने वाला और (उन पर) कृपा (अवतीर्ण) करने वाला है ॥

(ऐ रसूल ! मुसलमान) तुम से शराब और जुवे के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं (कि इन दोनों के बारे में क्या आज्ञा है ? इन से) कह दो कि इन दोनों (अर्थात् शराब के पीने और जुवे के खेलने) में बड़ा पाप (और हानि) है। (यद्यपि शराब पीने और जुआ खेलने में) लोगों के (कुछ) लाभ भी हैं, परन्तु उनका पाप (और हानि) उन के लाभ से बहुत अधिक है ॥

और तुम से पूछते हैं कि (अल्लाह के मार्ग में) कितना (धन ख़र्च किया) करें, तो (उन्हें) बता दो कि जितना (तुम्हारी अपनी) आवश्यकताओं से अधिक हो। (दुनिया को भी रखना है और अन्तिम काल का भी ख़याल करना है। शक्ति की सीमा से आगे न बढ़ो। जितना सम्भव है, उतना दो)। अल्लाह इसी तरह (अपनी) आयतें तुम्हारे सामने खोल २ कर बयान करता है, जिस से कि तुम ध्यान कर सको। (सांसारिक) बातों में भी और परलोक में भी। (संसार की बातें हों या परलोक की, सब सोच समझ कर करनी चाहियें) ॥

और तुम से अनाथ बालकों के बारे में पूछते हैं, तो कह दो (जिस बात में) उनकी भलाई (हो, वही बात) अच्छी है। (उनकी भलाइयों पर दृष्टि रक्खो और उनके हित को आवश्यक समझो। उनका अलग प्रबन्ध करना उनके लिये लाभ-प्रद हो, तो अलग प्रबन्ध करो) और यदि (देखो कि मिले जुले रहना ठीक है और इस लिए) उन को (अपने साथ) मिला लो (अपने खाने, पीने, पहिनने, ओढ़ने में उन्हें सम्मिलित कर लो,) तो (वह) तुम्हारे भाई हैं। (निःसंकोच मिल जुल कर और शरीक होकर रहो) और (जिनके स्वभाव में विद्रोह है और सम्मेल में अपना प्रयोजन देखते हैं, तो) अल्लाह ख़ूब जानता है, कौन (अनाथों को) बरबाद करता है और कौन (उन की) भलाई की कोशिश करता है और अल्लाह यदि चाहता, तो (अनाथों के साथ मिल जुल कर न रहने की आज्ञा देकर) तुम्हें कठिनता (और मुश्किल) में डाल देता। किन्तु अल्लाह शक्ति-शाली और बुद्धिमान है, (जो ऐसा नहीं करता) ॥

और (ऐ, मुसलमानो !) मुश्रिक औरतें जब तक (मुश्रिक रहें और) ईमान न लायें, उनसे निकाह (ब्याह) न करो और मुसलमान दासियां, मुश्रिक (स्वतन्त्र स्त्री) से श्रेष्ठ हैं। (चाहे वह अपने वंश व जाति, सौन्दर्य व ख़ूबसूरती, सम्पत्ति तथा धन के कारण) तुम्हें कितनी ही अच्छी लगें ॥

और मुसलमान औरतों को मुश्रिक मर्दों के साथ न ब्याहो—

औरत मुश्रिक तुम को कैसा ही भला (क्यों न) लगे, उस से मुसलमान .गुलाम बेहतर। यह मुश्रिक (मर्द व ज़न) तो लोगों को दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं और अल्लाह अपनी इनायत से बहिश्त और मग़्फ़िरत की तरफ़ बुलाता है और अपने अहकाम लोगों से खोल २ कर बयान करता है, ता कि वह होशियार रहें ० और (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुम से हैज़ के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, तो (उन को) समझा दो कि वह गन्दगी है। तो हैज़ के दिनों में औरतों से अलग रहो और जब तक पाक न हो लें, उनके पास न जाओ। फिर जब नहा धो लें, तो जिधर से अल्लाह ने तुम को बता दिया है, उन पास आओ। बेशक अल्लाह तौबा करने वालों को दोस्त रखता है और (नीज़) सफ़ाई रखने वालों को दोस्त रखता है ० तुम्हारी बीवियां (गोया) तुम्हारी खेतियां हैं, तो अपनी खेती में जिस तरह चाहो आओ और अपने लिये आयन्दा (यानी आक़िबत) का भी बन्दोबस्त रक्खो और अल्लाह से डरो और जाने रहो कि तुम को उसके हुज़ूर में हाज़िर होना है और (ऐ पैग़म्बर !) ईमान वालों को .खुश ख़बरी सुना दो ० और (मुसलमानो !) अपनी (बेहूदा) क़स्मों (के हीले) से .खुदा को (यानी उस के नाम को लोगों के साथ) सुलूक करने और परहेज़गारी रखने और लोगों में मिलाप कराने का मानेअ़ (व मुज़ाहिम) न ठहराओ और अल्लाह सुनता (और) जानता है ० तुम्हारी क़स्मों में जो लायानी (कसमें) हैं, उन पर तो .खुदा तुम से कुछ मुआख़िज़ा करता नहीं, लेकिन उन (क़स्मों) पर तुम से (ज़रूर) मुवाख़िज़ा करेगा—

ٱلْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا۟ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ
خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ أُو۟لَـٰٓئِكَ يَدْعُونَ
إِلَى ٱلنَّارِ وَٱللَّهُ يَدْعُوٓا۟ إِلَى ٱلْجَنَّةِ وَٱلْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِۦ
وَيُبَيِّنُ ءَايَـٰتِهِۦ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝
٤ وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلْمَحِيضِ قُلْ هُوَ أَذًى فَٱعْتَزِلُوا۟
ٱلنِّسَآءَ فِى ٱلْمَحِيضِ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ
فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ ٱللَّهُ إِنَّ
يُحِبُّ ٱلتَّوَّٰبِينَ وَيُحِبُّ ٱلْمُتَطَهِّرِينَ ۝ نِسَآؤُكُمْ
حَرْثٌ لَّكُمْ فَأْتُوا۟ حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ وَقَدِّمُوا۟ لِأَنفُسِكُمْ
وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّكُم مُّلَـٰقُوهُ وَبَشِّرِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۝
وَلَا تَجْعَلُوا۟ ٱللَّهَ عُرْضَةً لِّأَيْمَـٰنِكُمْ أَن تَبَرُّوا۟
وَتَتَّقُوا۟ وَتُصْلِحُوا۟ بَيْنَ ٱلنَّاسِ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
لَّا يُؤَاخِذُكُمُ ٱللَّهُ بِٱللَّغْوِ فِىٓ أَيْمَـٰنِكُمْ وَلَـٰكِن يُؤَاخِذُكُم

ع ۲۰ نصف

जब तक वह भी मुसलमान न हो जायँ। संयमी मुसलमान-.गुलाम (स्वतंत्र) मुश्रिक से श्रेष्ठ है, (उस की अमीरी और प्रतिष्ठा) तुम्हें कितनी ही पसंद आया करे॥ यह (मुश्रिक औरतें और मुश्रिक मर्द–ऐ मुसलमान मर्दो ! और मुसलमान औरतो !) तुम्हें नर्क की ओर खींचते हैं और अल्लाह अपनी आज्ञाओं (के द्वारा) तुम्हें स्वर्ग तथा मुक्ति की ओर बुलाता है और अपनी आज्ञाओं को लोगों के सामने विस्तृत-रूप से वर्णन करता है, जिस से कि वह (जागृत और) सचेत * हों॥

* टीका—रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने 'मुर्सद' नामक एक सहाबी (रसूल के साथी मुसलमान) को किसी काम के लिये मदीने भेजा था। हज़रत मुर्सद की, मुसलमान होने से पूर्व-मदीने की एक स्त्री से मित्रता थी। उस स्त्री ने अब भी चाहा कि हज़रत मुर्सद उस से मिलें। हज़रत मुर्सद ने फ़रमाया अब मैं निकाह के बिना तुझ से मिलना पाप समझता हूं। वह निकाह पर राज़ी हो गई, तो यह आयत उतरी कि मुश्रिक से निकाह सम्भव नहीं और इस आयत का सम्बन्ध अब्दुल्लाह इब्न रिवाजा (सहाबी) से भी है कि उन्हों ने अपनी किसी अवज्ञा पर अपनी मुसलमान दासी को थप्पड़ मारा। दासी ने रसूलुल्लाह के सन्मुख फ़रयाद की। रसूलुल्लाह ने हज़रत अब्दुल्लाह से फ़रमाया कि इस से नेकी का व्यवहार करो। हज़रत अब्दुल्लाह ने उसे स्वाधीन करके, उस से विवाह कर लिया। इस पर लोगों ने कटाक्ष किया, तो अल्लाह ने उन को उत्तर दिया कि मुसलमान दासी मुश्रिक स्वतंत्र स्त्री से श्रेष्ठ है:—.हसन निज़ामी॥

और (ऐ रसूल ! मुसलमान) तुम से हैज़ (मासिक-धर्म) का आदेश पूछते हैं। कह दो, वह अपवित्र वस्तु है, इस लिये हैज़ (के दिनों में) स्त्रियों से अलग रहो और जब तक वह पवित्र न हो जायँ, उन से सहवास न करो। जब पवित्र हो जायँ और स्नान करलें, तो उन के पास जाओ। जिस तरह अल्लाह ने तुम से फ़र्मा दिया है। (अब तक यदि किसी ने ग़लती से ख़िलाफ़ कर लिया है, तो ख़ैर)। अल्लाह तौबा करने वालों को (भी) प्रेम से रखता है (और) पवित्र रहने वालों को भी॥

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियां हैं। अपनी खेती में जिस प्रकार चाहो आओ। (तात्पर्य, खेत में बीज डालना अर्थात् औलाद पैदा करना है, जिस प्रकार भी हो। हाँ, ऐसा कोई कार्य्य न करना चाहिये जिस से सन्तान पैदा होने का उद्देश न प्राप्त होता हो) और अपने लिये (कुछ) भविष्य का (भी) ख़याल रक्खो। (सांसारिक वासनाओं में लिप्त होकर अन्तिम परिणाम से आँखें बन्द न करलो) और अल्लाह से डरते रहो और याद रक्खो कि (एक दिन) अल्लाह के सामने तुम्हारी पेशी होनी है और (ऐ रसूल !) संयमी लोगों को (जो हम से डरते हैं, हमारी प्रसन्नता का) शुभ-समाचार सुनादो॥

और (मुसलमानो !) अपनी सौगंधों के कारण लोगों के साथ सलूक करने, बुद्धिमानी से व्यवहार करने और एकता कराने में अल्लाह के नाम पर बहाना न बनाओ। (अर्थात् क्रोध या किसी और कारण से इन अच्छी बातों के न करने की यदि शपथ खा बैठो, तो आगे भी इन बातों से बचने के लिये यह बहाना न पेश किया करो, कि हम शपथ खा बैठे हैं। ऐसी बेहूदा शपथों को कफ़्फ़ारा † देकर तोड़ देना चाहिये)। अल्लाह तुम्हारे (बचनों और प्रतिज्ञाओं) को सुनता और (तुम्हारे हृदयी भावों को) जानता है॥

† टीका—कफ़्फ़ारा उस वस्तु को कहते हैं, जो किसी पाप के निवारणार्थ बदले में दी जाय:—.हसन निज़ामी॥

अल्लाह तुम्हारी इन शपथों पर (तो) तुम से उत्तर नहीं माँगेगा, जो व्यर्थ और बे इरादे हों। परन्तु जो शपथ तुम (किसी बुरे उद्देश को दृष्टि में रख कर) हार्दिक-संकल्पों के अनुसार खाओगे, उन पर तुम्हारी पकड़ करेगा—

بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللّٰهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ لِلَّذِينَ
يُؤْلُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ فَإِنْ
فَاءُو فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَإِنْ عَزَمُوا
الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللّٰهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقٰتُ
يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوءٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ
أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ
إِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَبُعُولَتُهُنَّ
أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذٰلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا
وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَلِلرِّجَالِ
٤
عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللّٰهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ الطَّلَاقُ
مَرَّتَانِ فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ
وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا
إِلَّا أَنْ يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللّٰهِ فَإِنْ خِفْتُمْ

जो तुम्हारे दिली इरादे से हों और अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है ० जो लोग अपनी बीबियों पास जाने को क़सम खा बैठें, उनको चार महीने की मोहलत है। फिर (इस मुद्दत में) अगर रुजू करलें, तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ० और अगर तलाक़ की ठान लें, तो (भी) अल्लाह सुनता (और) जानता है ० और जिन औरतों को तलाक़ दी गई हो, वह अपने आप को तीन दफ़े कपड़ों के आने तक रोके रक्खें और अगर अल्लाह और रोज़ आख़िरत का यक़ीन रखते हैं—तो जो कुछ भी (बच्चे की क़िस्म से) ख़ुदा ने उन के पेट में पैदा कर रक्खा हो, उसका छिपाना उनको जायज़ नहीं और उनके शौहर (उनको) अच्छी तरह रखना चाहें, तो वह इस अस्ना में उनको (अपनी ज़ौजियत में) वापिस लेने के ज़ियादा हक़दार हैं और जैसे (मर्दों का हक़) औरतों पर, वैसे ही दस्तूर के मुताबिक़ औरतों का (हक़ मर्दों पर)। हाँ मर्दों को औरतों पर फ़ौक़ियत है और अल्लाह ग़ालिब (और) हिकमत वाला है ० तलाक़ (जिस के बाद रुजू भी हो सक्ता है, वह तो दो ही तलाक़ें हैं, जो) दो दफ़े (करके दी जायँ)। फिर (दो तलाक़ों के बाद या तो) दस्तूर के मुताबिक़ (ज़ौजियत में) रखना है या हुस्न सुलूक के साथ रुख़्सत कर देना और जो तुम उनको दे चुके हो, उस में से तुमको कुछ (भी वापिस) लेना जायज़ नहीं। मगर यह कि मियां बीबी को (इस बात का) ख़ौफ़ हो कि ख़ुदा ने (मियां बीबी के सलूक की) जो हद्दें ठहरा दी हैं—उन पर क़ायम नहीं रह सकेंगे, तो इस सूरत में कि तुम लोगों को इस बात का ख़ौफ़ हो—

और अल्लाह क्षमा करने वाला और सहन शील है। (ऐसी बातों पर पकड़ नहीं करता, जिनका सम्बन्ध हृदय और संकल्प से न हो *) ॥

* टीका—यहां वह क़समें भी सम्मिलित हैं, जो बे इरादे बोल चाल में ज़बान से निकल जाती हैं, जैसी वल्लाह, बिल्लाह अकसर लोगों की ज़बान पर होता है :—हसन निज़ामी ॥

जो लोग अपनी स्त्रियों (के पास जाने) से शपथ खालें, उनको चार महीने की मोहलत (ढील) है। सो (चार मास में) अगर शपथ को वापस लेलें (और फिर उनसे सम्बन्ध क़ायम करलें, तब तो अल्लाह क़सम तोड़ने के अपराध को क्षमा कर देगा और दया करेगा) अल्लाह क्षमा करने वाला और दयालु है ॥

और यदि तलाक़ (विवाह-सम्बन्ध-विच्छेद) ही देने पर बिलकुल उद्यत हो जायँ, तो अल्लाह (शपथ खाने वाले की शपथ को) सुनता है और (शपथ खाने वालों के भावों को) जानता है। (चार महीने के बाद तलाक़ हो जायगी) ॥

और तलाक़ (विवाह-सम्बन्ध-विच्छेद) पाई हुई औरतें तीन हैज़ों (के आने) तक अपने आप को (पुनर्विवाह से) बचाये रक्खें और यदि यह (तलाक़ पायी हुई औरतें) अल्लाह और परिणाम-दिवस (प्रलय) को मानती हैं, तो उन्हें जायज़ नहीं है कि अल्लाह ने उनके गर्भों में जो कुछ पैदा कर रक्खा हो, उसे छिपायें। (पेट से हों, तो साफ २ कह दें) ॥

और इस समय (और ऐसी दशा) में उनके (छोड़ने वाले) पति अनुकूलता (और सद् व्यवहार) का इरादा करें, तो वह इनको (बिना पुनर्विवाह किये स्त्री-रूप में) वापिस ले लेने के अति अधिकारी हैं, और (देखो ! ! इस्लाम में) औरतों के (मर्दों पर) वैसे ही हुक़ूक़ (अधिकार) हैं। (जैसे कि साधारण-नियम के अनुसार मर्दों के) उन पर हैं। अलबत्ता मर्दों का दर्जा (पद) उन से बढ़ा हुआ है और अल्लाह बुद्धिमान और अधिकार रखने वाला है, (जिसे चाहता है अपनी बुद्धिमानी से श्रेष्ठता देता है) ॥

वह तलाक़ (जिस में रुजअ अर्थात् पति के पास वापिस लौटना सम्भव है,) दो (तलाक़ें) हैं (जो दो दफ़े करके दी जायँ)। फिर (इसके बाद दोनों सूरतें मुमकिन हैं। अथवा) चाहे साधारण-नियम के अनुसार उन्हें (पत्नी बना कर) रख ले या सद्व्यवहार से विदा करदे ॥

और तुम्हें जायज़ नहीं (है) कि जो (महर † वग़ैरा की क़िस्म से) तुम उन्हें दे चुके हो, उस में से कुछ लेलो। सिवा एक सूरत के कि (पति पत्नी) दोनों को भय हो कि (इस सम्बन्ध में रह कर हम) अल्लाह के बताये हुए नियमों की पाबन्दी नहीं कर सकेंगे ॥

† टीका—इस्लामी ब्याह में जो धन पति की ओर से पत्नी को देने के लिये नियत किया जाता है, उसे महर कहते हैं :—हसन निज़ामी ॥

सो (ऐ, मुसल्मानो !) यदि तुम्हें (यह) भय हो—

أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا
افْتَدَتْ بِهِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا ۚ
وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ●
فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِن بَعْدُ حَتَّىٰ تَنكِحَ
زَوْجًا غَيْرَهُ ۗ فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا
أَن يَتَرَاجَعَا إِن ظَنَّا أَن يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۗ وَ
تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ● وَإِذَا
طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ
ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوا ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَقَدْ
ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ۚ وَاذْكُرُوا
نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّنَ الْكِتَابِ
وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُم بِهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

بصير

कि मियां बीबी अल्लाह की (बांधी हुई) हदों पर क़ायम नहीं रह सकेंगे और औरत (अपना पीछा छुड़ाने के एवज़) कुछ दे निकले, तो इस में दोनों पर कुछ गुनाह नहीं। यह अल्लाह की (बांधी हुई) हदूदें हैं, तो इन से (आगे) मत बढ़ो और जो अल्लाह की (बांधी हुई) हदों से आगे बढ़ जाएँ, तो यही लोग सर सरे नाहक़ हैं ० अब अगर औरत को (तीसरी बार) तलाक़ देदो, तो इस के बाद जब तक औरत दूसरे शौहर से निकाह न करे, उस के लिये हलाल नहीं (हो सक्ती) । हां अगर (दूसरा शौहर हम बिस्तर होकर) उस को तलाक़ देदे, तो दोनों (मियां बीबी) पर कुछ गुनाह नहीं कि (फिर) एक दूसरे की तरफ़ रुजू करलें, बशर्ते कि दोनों को तवक़्क़ो हो कि अल्लाह की (बांधी हुई) हदों पर क़ायम रह सकेंगे और यह अल्लाह की (बांधी हुई) हदूदें हैं-जिन को उन लोगों के लिये बयान फ़र्माता है, जो (मसालेह ख़ाना दारी को) समझते हैं ० और जब तुमने औरतों को (दो बार) तलाक़ देदी और उन की इद्दत पूरी होने को आई, तो (दो बातों में से एक बात इख़्तियार कर लो ; या तो रुजू करके) दस्तूर के मुताबिक़ उन को (ज़ौजियत में) रक्खो या (तीसरी तलाक़ देकर) उन को अच्छी तरह रुख़्सत कर दो और ईज़ादिही के लिये उन को (अपनी ज़ौजियत में) न रखना कि (बाद को उन पर) लगो ज़ियादती करने। और जो ऐसा करेगा (तो वह कुछ) अपना ही खोएगा और अल्लाह के अहकाम को हंसी (खेल) न समझो और अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं, उन को याद करो और (उसका) यह (एहसान भी याद करो) कि उसने तुम पर किताब और अक़्ल की बातें उतारीं (और मन्ज़ूर यह है) कि तुम को इन के ज़रीए से नसीहत करे और अल्लाह से डरते रहो, और जान रक्खो कि अल्लाह—

कि पति पत्नी अल्लाह के बताये हुए अधिकारों को क़ायम (रख कर परस्पर निर्वाह) नहीं कर सकेंगे (अर्थात् इन दोनों में अनकूलता न हो सकेगी) तो स्त्री (छुटकारा पाने के लिये) कुछ देदे, तो (वियोग की इस दशा में—जिसका इस्लामी नाम .ख़ुलअ है—स्त्री से तलाक़ का बदला स्वीकार करने के कारण) पति पत्नी दोनों में किसी से कुछ पूछ गछ न की जायगी। यह अल्लाह के (बनाये हुए) क़ानून हैं—इन को तुम अवज्ञा न करना। जो अल्लाह के नियमों की अवज्ञा करते हैं, वही (अवज्ञाकारी) अत्याचारी (होते) हैं ॥

और यदि (कोई) औरत को (तीसरी बार भी) तलाक़ देदे, तो फिर इसके बाद वह उस पर हलाल न होगी। जब तक (इद्दत अर्थात् वह समय कि जिस में औरत तलाक़ के बाद दूसरा पति न कर सके—समाप्त करके किसी) दूसरे पुरुष से ब्याह न करे। फिर यदि दूसरा पति (सहवास करके प्रसन्नता-पूर्वक) तलाक़ देदे, तो पहिले पति और उक्त तलाक़ दी हुई पत्नी के (दूसरी तलाक़ की इद्दत समाप्त होने के बाद) फिर दूसरी बार विवाह कर लेने में इन दोनों पर कोई पाप नहीं होगा। बशर्ते कि दोनों को विश्वास हो कि वह (एक दूसरे के अधिकारों को अच्छी तरह अदा कर सकेंगे और) अल्लाह की (नियत की हुई) मर्यादा पर स्थित रह सकेंगे और यह अल्लाह के क़ानून (न्याय-विधान) हैं, जिन्हें वह उन लोगों के लिये खोल २ कर वर्णन करता है, जो सूझ बूझ रखते हैं (और गृहस्थ-व्यवहारों पर ध्यान देते हैं) ॥

और जब तुमने अपनी स्त्रियों को रजई (फिर सकने वाली तलाक़) दी हो और उनकी इद्दत (का समय) समाप्त होने के निकट आ जाय, तो (या तो) उन्हें सलूक के साथ निकाह ही में रक्खो या अच्छी तरह से विदा करदो। यह न करना कि निकाह में !उनको (केवल) तकलीफ़ पहुँचाने * के विचार से रहने दो और फिर उन पर अत्याचार करो और जो ऐसा करेगा, वह अपनी ही जान पर अत्याचार करेगा ॥

* टीका—इस्लाम से पहिले लोग दस दस बार तलाक़ देकर रुजूअ कर लिया करते थे अर्थात् उन स्त्रियों से वियोग न करते थे। और कुछ इन्द्रिय-लौलुप-पुरुष यह करते कि इद्दत समाप्त होने को हुई और औरत को बुला लिया और दो चार रोज़ के बाद फिर से तलाक़ देदी। इस्लाम ने तलाक़ में पक्की शर्तें लगादीं, जिस से कि मर्द औरतों को परेशान न कर सकें। बस दो तलाक़ तक रुजूअ जायज़ रक्खा और तीसरी पर कह दिया कि अब औरत किसी दूसरे के निकाह और सहवास में जाकर तलाक़ देने वाले को मिल सक्ती है:—हसन निज़ामी ॥

और अल्लाह की आज्ञाओं को हँसी में न उड़ाओ (उनके पालन में सुस्ती न करो। यह आज्ञायें तुम्हारे लिये ईश्वरीय प्रसाद हैं)। अल्लाह की इन नेअ़मतों को, जो उसने तुम्हें दी हैं न भूलो। विशेषतया: उसके सब से बड़े एहसान को कि उसने तुम पर किताब और बुद्धिमानी की बातें उतारी हैं, जिस से कि इनके द्वारा तुम्हें शिक्षा दे। अल्लाह से डरो और याद रक्खो कि (जो कुछ तुम करते हो) अल्लाह को—

بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ
أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ
إِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ذٰلِكَ يُوعَظُ
بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ ذٰلِكُمْ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَأَطْهَرُ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ
أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ
يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ
وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا
وُسْعَهَا لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ
لَهُ بِوَلَدِهِ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ فَإِنْ
أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْهِمَا وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ تَسْتَرْضِعُوا

सब कुछ जानता है ० और जब तुम औरतों को (तीन बार) तलाक़ दे दो और वह अपनी (इद्दत की) मुद्दत पूरी कर लें और जायज़ तौर पर आपस में (किसी से) उनकी मर्ज़ी मिल जाय, तो उनको (दूसरे) शौहरों के साथ निकाह कर लेने से न रोको। यह नसीहत उसको की जाती है, जो तुम में अल्लाह और रोज़ आख़िरत पर ईमान रखता हो। यह तुम्हारे लिए बड़ी पाकीज़गी और बड़ी सफ़ाई की बात है और (ख़ानेदारी की मस्लहतों को) अल्लाह (ही ख़ूब) जानता है और तुम (वैसा) नहीं जानते ० और जो शख़्स (बीवी को तलाक़ दिये पीछे अपनी औलाद को) पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे, तो उसकी ख़ातिर माएँ अपनी औलाद को पूरे दो बरस दूध पिलाएँ और जिसका वह बच्चा है (यानी बाप) उस पर दस्तूर के मुताबिक़ माओं का खाना कपड़ा देना लाज़िम है। (नान व नफ़्क़े के ठैराव में) किसी को तकलीफ़ न दीजाए, मगर वहीं तक कि उसकी गुन्जायश हो। माँ को उसके बच्चे की वजह से नुक़सान न पहुँचाया जाय और न उसको जिसका बच्चा है। (यानी बाप को) उसके बच्चे की वजह से (किसी तरह का नुक़सान पहुँचाया जाय) और (दूध पिलाने का नान व नफ़्क़ा जैसा अस्ल बाप पर) वैसा (उसके) वारिस पर। फिर अगर (वक़्त से पहिले माँ बाप) दोनों अपनी मर्ज़ी और सलाह से (दूध) छुड़ाना चाहें, तो उन पर कुछ गुनाह नहीं और अगर तुम अपनी औलाद को (किसी दाया से) दूध पिलवाना चाहो—

(उसके सब अंशों का) ज्ञान है ॥

और जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो और उनकी (इद्दत) का समय समाप्त हो जाय (और तुम इद्दत के समय तलाक़ से रुजूअ न करो) तो (मुसलमानो !) यदि मर्द, औरत शरीअत के अनुसार परस्पर दूसरी बार निकाह करने पर राज़ी हो जायँ, तो उन औरतों को अपने पतियों के साथ निकाह करने से मत रोको ॥

(ख़ुदा की) इन (आज्ञाओं) से शिक्षा तुम में से वह लोग हासिल करते हैं, जो लोग अल्लाह और कर्मों के फल मिलने वाले दिन पर विश्वास रखते हैं और यह शिक्षायें तुम्हारे लिये सब से अच्छी और सब से पवित्र हैं। इन की मस्लहतों (सुसाधकताओं) को अल्लाह ही (ख़ूब) जानता है, तुम नहीं जानते। (अतएव संयमी लोगों को निःसङ्कोच ख़ुदा की आज्ञाओं का पालन करना चाहिये) ॥

और (बाप ने मां को तलाक़ देदी हो, या बाप मर गया हो, इन दो सूरतों में) मातायें अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलायें। इस अवस्था में कि (तलाक़ देने वाला बाप या मरने वाले बाप का उत्तराधिकारी) पूरे समय तक दूध पिलवाना चाहे (या शेष समय को पूरा करना चाहे अर्थात् जिन (तलाक़ दी हुई औरतों की गोद में बच्चा हो, वह अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलायें। यदि इन को तलाक़ देने वाले पति पूरे समय तक इन से दूध पिलवाना चाहें) और (दूध पिलाने के समय में) उन (तलाक़ दी हुई या विधवा माताओं) का खाना और कपड़ा यथा-शक्ति बच्चे के बाप (या दूसरे उत्तराधिकारी) के ज़िम्मे होगा ॥

(खाने और कपड़े के मामले में) किसी पर उसकी शक्ति से अधिक भार न डाला जाय और न माता को उसके बच्चे के कारण दुःख पहुँचे और न बाप को अपनी सन्तान के कारण (हानि उठानी पड़े। माँ कम उजरत की वजह से दूध पिलाने पर उद्यत न हो, तो उस पर दबाव न डालना चाहिये, या माता अपनी ख़ुशी से बच्चे को दूध पिलाना चाहे, तो बच्चे को ज़बरदस्ती उस से अलग न करना चाहिये और बाप से उसकी शक्ति से अधिक ख़र्च न मांगा जाय और न केवल बाप को परेशान करने के लिये बच्चे को दूध पिलाने से इनकार किया जाय) और (ऐसी दशा में, जो पाबन्दियां इस्लामी धर्मानुसार बच्चे के बाप पर आवश्यक हैं) वैसी ही (पाबन्दियां बाप के) वारिस (उत्तराधिकारी) पर हैं ॥

पुनः यदि (माता पिता या माता और पिता का उत्तराधिकारी) परस्पर की रज़ामन्दी और परस्पर के सलाह व मशवरे से (दूध पीने के समय से पहिले ही बच्चे का) दूध छुड़ाना पसन्द करें, तो उन पर कोई पाप नहीं है ॥

और यदि तुम (माताओं के बदले) अपनी सन्तान को (किसी धाय वग़ैरा से) दूध पिलवाना चाहो—

أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُمْ
بِالْمَعْرُوفِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ
أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا
فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ
فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ
النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ عَلِمَ اللَّهُ
أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِنْ لَا تُوَاعِدُوهُنَّ
سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝ وَلَا تَعْزِمُوا
عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ وَاعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَّقْتُمُ

(तो इस में भी) तुम पर कुछ गुनाह नहीं, बशर्ते कि जो तुमने दस्तूर के मुताबिक़ (उनको) देना किया था (उनके) हवाले करो और अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो कि जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसको देख रहा है ० और तुम में जो लोग मर जायें और बीवियाँ छोड़ मरें, तो (औरतों को चाहिये कि) चार महीने और दस दिन अपने तईं रोके रहें। फिर जब अपनी (इद्दत की) मुद्दत पूरी कर लें, तो जायज़ तौर पर जो कुछ अपने हक़ में करें, उसका तुम (वारिसान मय्यत) पर कुछ इल्ज़ाम नहीं। और तुम लोग जो कुछ (भी) करते हो, अल्लाह को उस की ख़बर है ० और अगर तुम किसी बात की आड़ में (इन) औरतों को निकाह का पयाम दो या अपने दिलों में छुपाए रक्खो, तो इस में (भी) तुम पर कुछ गुनाह नहीं। अल्लाह को मालूम है कि तुम को इन (औरतों से निकाह कर लेने) का ख़याल आएगा (सो मुज़ायक़े की बात नहीं)। मगर इन से (निकाह का) ठहराव तो चुपके से भी न करना। हाँ, जायज़ तौर पर बात कह गुज़रो (तो कुछ हर्ज की बात नहीं)। और जब तक मिआ़द मुक़र्रर (यानी इद्दत) इख़्तताम को न पहुँच ले अक़्द निकाह की बात पक्की न कर बैठना और जाने रहो कि जो कुछ तुम्हारे जी में है, अल्लाह (उसको) जानता है। तो उससे डरते रहो और (यह भी) जाने रहो कि अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है ० अगर तुमने औरतों को हाथ तक न लगाया हो और न उनका महर ठैराया हो और इस से पहिले उनको तलाक़ दे दो, तो इस में तुम पर कोई गुनाह नहीं—

तो (इसमें भी) कुछ हर्ज नहीं है। इस दशा में कि (धाय का अधिकार) जो तुम ठहरा चुके हो, (उसे) सद्व्यवहार के साथ अदा कर दो और अल्लाह से डरते रहो और विश्वास रक्खो कि जो जो तुम्हारे कर्म हैं, (सब) अल्लाह की दृष्टि में हैं॥

और तुम में जो लोग मर जायें और पत्नियाँ (अपने पीछे) छोड़ें, तो (उन पत्नियों को चाहिये कि) चार महीने और दस दिन अपनी इन्द्रियों को दबाये रक्खें (अर्थात् इद्दत * में रहें और इद्दत की शर्तों को पूरा करें)। जब वह अपनी (यह) अवधि (इद्दत) पूरी कर चुकें, तो उचित-रूप से अपने लिए जो (नियम-पालन) करें, उसकी ज़िम्मेदारी तुम (मृतक के उत्तराधिकारियों) पर नहीं है। अल्लाह तुम्हारे (सब) कामों से सचेत है॥

* टीका—निकाह न करें, घर से बाहर न निकलें और श्रृङ्गारादि से बचें:—हसन निज़ामी॥

और यदि तुम गुप्त संकेतों से (इन तलाक़ † दी हुई या बिधवा) औरतों पर उनके साथ निकाह करने का इरादा प्रकट कर दो। या (उन से निकाह करने की इच्छा को) अपने दिल में छिपाये रहो, तो इस से तुम पर कोई पाप न लगेगा। अल्लाह जानता है कि (तुम्हारे दिल में इन औरतों से निकाह करने की इच्छा वर्तमान है और) तुम शीघ्र उनसे (इसका स्पष्ट) ज़िक्र करने वाले हो। (इस लिये इनकी इद्दत के समय ही में इस इच्छा के दिल में रखने या संकेत से इन पर इसके प्रकट कर देने की तुमको आज्ञा दी जाती है) परन्तु (इद्दत के समय में) निकाह के बारे में कोई दृढ़ वचन या प्रतिज्ञा इन से गुप्त-रूप से न करना। हाँ, जहाँ तक शरअ़ (इस्लामी धर्म-शास्त्र) ने आज्ञा दी है, वहाँ तक सम्भाषण कर सकते हो॥

† टीका—वह तलाक़ दी हुई स्त्री, जिसे पूरी तलाक़ मिल चुकी हो:—हसन निज़ामी॥

और (तलाक़ दी हुई या विधवा) औरतों से जब तक नियत की हुई (इद्दत) का समय समाप्त न हो जाय, निकाह कदापि न करना। याद रक्खो !! जो कुछ तुम्हारे दिलों में होता है, अल्लाह उसे (ख़ूब) जानता है। अतएव उस से डरो और जाने रहो कि (जो अल्लाह से डरते हैं) अल्लाह (उन्हीं को) क्षमा करता है और (उनके साथ) सहन शीलता का बर्ताव करता है॥

(और) तुम अगर औरतों को (निकाह के बाद) उनके पास जाने और उनका महर नियत करने से पहिले * तलाक़ दे दो, तो यह (भी) अनुचित नहीं है—

* टीका—निकाह के समय महर तै न हो और इस का तै करना आगे के लिये उठा रक्खा जाय, तब भी निकाह दुरुस्त हो जाता है:—हसन निज़ामी॥

النساء ما لم تمسوهن او تفرضوا لهن فريضة
ومتعوهن على الموسع قدره وعلى المقتر قدره
متاعا بالمعروف حقا على المحسنين وان طلقتموهن
من قبل ان تمسوهن وقد فرضتم لهن فريضة
فنصف ما فرضتم الا ان يعفون او يعفوا الذي
بيده عقدة النكاح وان تعفوا اقرب
للتقوى ولا تنسوا الفضل بينكم ان الله بما
تعملون بصير حافظوا على الصلوات والصلوة
الوسطى وقوموا لله قانتين فان خفتم
فرجالا او ركبانا فاذا امنتم فاذكروا الله
كما علمكم ما لم تكونوا تعلمون والذين
يتوفون منكم ويذرون ازواجا وصية
لازواجهم متاعا الى الحول غير اخراج فان

हां, ऐसी औरतों के साथ कुछ सुलूक कर दो। मक़्दूर वाले पर अपनी हैसियत के क़द्र (सुलूक करना लाज़िम है) और बे मक़्दूर पर अपनी हैसियत के क़द्र। (और) सुलूक (जो कुछ भी हो) दस्तूर के मुताबिक़। जिन का शेवा एहसान करने का है, उन पर (ऐसी औरतों का यह भी एक तरह का) हक़ है ० और अगर हाथ लगाने से पहिले औरतों को तलाक़ दे दो और उनका महर ठहरा चुके हो, तो जो कुछ तुमने ठहराया था, उसका आधा (देना आएगा) मगर यह कि (औरतें) छोड़ बैठें या (मर्द) जिसके हाथ में अक़्द निकाह (का जोड़े रखना या तोड़ देना) है, वह (अपना हक़) छोड़ दे (यानी पूरा महर देने पर राज़ी हो) और (अपना हक़) छोड़ दो, तो यह पहेज़गारी से ज़ियादा क़रीब है और आपस की बड़ाई को मत भूलो। जो (कुछ भी तुम) करते हो, अल्लाह उसको देख रहा है ० (मुसल्मानो ! तमाम) नमाज़ों का (उमूमन) और बीच की नमाज़ का (ख़ुसूसन) तक़य्यद रक्खो और (नमाज़ में) अल्लाह के आगे अदब से खड़े रहो ० फिर अगर तुमको (दुश्मन का) डर हो (और अर्कान नमाज़ पूरे पूरे न बजा लासको,) तो पैदल या सवार (जिस हालत में हो और जैसी करते बन पड़े, नमाज़ अदा कर लो)। फिर जब तुम मुत्मइन हो जाओ, तो जिस तरह अल्लाह ने तुमको (पैग़म्बर की मार्फ़त नमाज़ का तरीक़ा) सिखाया है कि तुम (उसको) पहिले नहीं जान्ते थे, उसी तरीक़े से अल्लाह की याद करो ० और जो लोग तुम में से मर जाएँ और बीबियां छोड़ मरें, तो अपनी बीबियों के हक़ में एक बरस तक के सुलूक (यानी नान व नफ़्क़े) और (घर से) न निकालने की वसीयत कर मरें। फिर—

अलबत्ता (महर * के बजाय) इन्हें सद् व्यौहार के रूप में कुछ अदा कर देना चाहिये। धनी लोग अपनी शक्ति के अनुसार अदा करें और निर्धन अपनी शक्ति के अनुसार। नेकी करने वाले लोगों पर यह (भी) एक (प्रकार का) हक़ है ॥

* टीका—ऐसी दशा में महर नहीं देना पड़ता, परन्तु महर से अतिरिक्त थोड़ा बहुत सलूक कर देने की आज्ञा है। कम से कम एक जोड़ा या एक दुपट्टा ही सही:—हसन निज़ामी ॥

और यदि इस दशा में इन्हें स्पर्श किये बिना तलाक़ दो कि तुमने उनसे महर ठहरा लिया हो, तो तुम पर आधे महर का प्रदान करना आवश्यक होगा। हाँ, तलाक़ दी हुई स्त्रियां इसे क्षमा करदें (तो वह भी क्षमा है) या तलाक़ देने वाला पुरुष—जिस के अधिकार में निकाह का क़ायम रखना (और निकाह का विच्छेद करना) है, अपना अधिकार छोड़ दे (अर्थात् पूरा महर दे डाले, तो बहुत अच्छा है)। अपने अधिकार को छोड़ देना अधिक परहेज़गारी की बात है। इस श्रेष्ठता को मत भुलाओ, जो तुम्हारे बीच (स्थापित कर दी गई) है। (मर्द यदि स्त्री से आर्थिक दशा में बढ़ा हुआ है, तो वह स्त्री को पूरा महर देकर स्त्री पर पूरा एहसान करे और अगर औरत की आर्थिक-दशा मर्द की आर्थिक-दशा से अच्छी है, तो मर्द से आधा महर लेने पर व्यर्थ आग्रह न करे)। अल्लाह, जो कुछ तुम करते हो, उसे देख रहा है ॥

(और मुसल्मानो ! केवल निकाह व तलाक़ ही के क़िस्सों में न पड़े रहो, कुछ दूसरे कार्यों की भी चिन्ता करो। समस्त) नमाज़ों और (विशेष-रूप) बीच † वाली नमाज़ का बहुत ध्यान रक्खो !! (नमाज़ें ठीक समय पर पंक्ति में खड़े होकर एकाग्र और पवित्र हृदय से पढ़ो) और अल्लाह के सामने विनय और अधीनता के साथ खड़े हुआ करो ॥

† टीका—बीच वाली नमाज़ से बहुत से व्याख्या करने वाले और इस्लाम-धर्म-शास्त्र के जानने वालोंने अस्र की नमाज़ से तात्पर्य लिया है, क्योंकि फ़ज्र व ज़ुहर की नमाज़ें इसके एक तरफ़ हैं और मग़्रिब और इशा की नमाज़ें इसके दूसरी तरफ़। अस्र की नमाज़ की ताकीद मुख्य रूप से इस लिये की गई है कि वह समय सांसारिक कार्यों के आधिक्य (जमघट) का होता है:—हसन निज़ामी ॥

(हां) अगर (तुम लड़ाई के मैदान या निर्जन बन में हो और वहां) तुम्हें (शत्रु या कष्ट पहुँचाने वाले जानवर का) भय हो (और नमाज़ के पूरे अरकान अर्थात् संस्कार अदा न हो सके हों,) तो (इशारों से) खड़े २ पढ़ लो (खड़े २ या चलते चलते) या सवार रह कर (अगर पैदल हो, तो चलते चलते या खड़े २ पढ़ लो। घोड़े इत्यादि पर हो, तो घोड़ा चलता जाय और तुम नमाज़ पढ़ते जाओ। मुँह क़िब्ले की ओर न कर सके हो, तो क़िब्ले की ओर मुँह भी न सही, नमाज़ हो जायगी)। फिर जब (भय न रहे और तुमको शान्ति मिले, तो अल्लाह को याद करो (और उन्हीं नियमों से नमाज़ पढ़ो,) जिन नियमों को उस ने तुम्हें बताया है। (और) तुम (पहिले) नहीं जानते थे ॥

और जो (लोग) तुम में से मरें और (मरते समय) पत्नियाँ छोड़ें, (उन्हें चाहिये कि) वह अपनी स्त्रियों के लिये एक वर्ष तक नान-नफ़क़ा (भोजन वस्त्रादि) देने और (घर से) न निकालने की वसीयत ‡ करदें —

‡ टीका—यह ज्ञान स्त्रियों का भाग नियत होने और इद्दत की अवधि ते पाने के बाद से मंसूख़ अर्थात् इस आज्ञानुसार आचरण करना वर्जित है:—हसन निज़ामी ॥

خرجن فلا جناح عليكم في ما فعلن في انفسهن
من معروف والله عزيز حكيم ● وللمطلقت متاع بالمعروف
حقا على المتقين ● كذلك يبين الله لكم ايته لعلكم
تعقلون ● الم تر الى الذين خرجوا من ديارهم
وهم الوف حذر الموت فقال لهم الله موتوا ثم
احياهم ان الله لذو فضل على الناس و
لكن اكثر الناس لا يشكرون ● وقاتلوا
في سبيل الله واعلموا ان الله سميع عليم ●
من ذا الذي يقرض الله قرضا حسنا فيضعفه
له اضعافا كثيرة والله يقبض ويبصط
واليه ترجعون ● الم تر الى الملا من بني اسرائيل
من بعد موسى اذ قالوا لنبي لهم ابعث لنا
ملكا نقاتل في سبيل الله قال هل عسيتم

ان كتب

ع

अगर औरतें (अज़ ख़ुद घर से) निकल खड़ी हों, तो जायज़ बातों में से जो कुछ अपने हक़ में करें, उस का तुम पर कुछ गुनाह नहीं और अल्लाह ज़बर्दस्त (और) हिकमत वाला है ० और जिन औरतों को तलाक़ दी जाए, उन के साथ (मह्र के अलावा भी) दस्तूर के मुताबिक़ (जोड़े वग़ैरा से कुछ) सुलूक करना मुनासिब है कि पर्हेज़गारों पर (उन का यह भी एक तरह का) हक़ है ० इसी तरह अल्लाह तुम लोगों (की हिदायत) के लिये अपने अहकाम खोल २ कर बयान फ़र्माता है, ताकि तुम (उन की मस्लहतों को) समझो ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उन लोगों (के हाल) पर नज़र नहीं की, जो अपने घरों से मौत के डर के मारे निकल खड़े हुए और वह हज़ारों ही थे। फिर ख़ुदा ने उनको हुक्म दिया कि मर रहो (और वह मर गए) फिर (ख़ुदा ने) उनको जिला उठाया। बेशक अल्लाह तो लोगों पर (बड़ा मेहर्बान है, लेकिन अक्सर लोग (उसका) शुक्र नहीं करते ० और (मुसल्मानो !) ख़ुदा की राह में (ख़ुदा के दुश्मनों यानी काफ़िरों से) लड़ो और जाने रहो कि अल्लाह (सब की) सुन्ता (और सब कुछ) जान्ता है ० कोई है, जो ख़ुदा को ख़ुश दिली के साथ क़र्ज़ दे ? कि ख़ुदा उसके क़र्ज़ को उसके लिये कई गुना बढ़ा देगा और अल्लाह (लोगों को) तंग दस्त भी करता है और कुशायश भी देता है और उसी की तरफ़ तुम (सब) को लौट कर जाना है ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने बनी इस्राईल के सर्दारों (की हालत) पर नज़र नहीं की, कि एक ज़माने में उन्होंने मूसा के बाद अपने (वक़्त के) पैग़म्बर (अशमूईल) से दरख़्वास्त की थी कि हमारे लिये एक बादशाह मुक़र्रर कीजिये कि हम (उस के सहारे से) अल्लाह की राह में जिहाद करें, (पैग़म्बर ने) कहा, अगर तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया जाए, तो तुम से कुछ बईद नहीं कि तुम न लड़ो—

हां, अगर वह (इस अवधि के बीच में स्वयं ही पति के) घर से चली जायँ, तो जो कुछ वह अपने हक़ में उचित समझें—करें, इसका तुम (मृतक के वारिसों अर्थात् उत्तराधिकारियों) पर कोई पाप नहीं। (वह चाहें दूसरा विवाह करलें, चाहें अच्छे वस्त्र और श्रृङ्गारादि पहनें। अपने कार्यों में स्वाधीन हैं)। अल्लाह बड़ा बुद्धिमान है (उसकी कोई बात ज्ञान और बुद्धि से ख़ाली नहीं होती) ॥

और तलाक़ पाने वालियों के साथ (भी सख़्ती नहीं की जा सकी। इन से तलाक़ के समय तक अगर महर नियत न हुआ हो, तो इन से) नियमानुसार सलूक करना (आवश्यक) है (और महर नियत हो चुका हो, तो महर देना चाहिये और इसके अतिरिक्त जो शक्ति हो--यह देने वाले की ख़ुशी पर निर्भर है। और अल्लाह से डरने वालों और) संयमी लोगों पर (महर के अतिरिक्त भी कुछ सलूक करना—तलाक़ दी हुई स्त्रियों का) एक हक़ है ॥इसी तरह अल्लाह अपनी आज्ञाओं को तुम लोगों (की हिदायत) के लिये (खोल खोल कर) बयान करता है, जिस से कि तुम (उन्हें) समझ लो (और उन पर अमल करो) ॥

(अच्छा, अब फिर जिहाद के विषय की ओर ध्यान करो। मुसल्मानो ! तुम्हें किस बात की चिन्ता है ?) क्या तुमने (मूसा की जाति के) उन लोगों की दशा पर ध्यान नहीं किया, जो (एक अवसर पर) मृत्यु के डर से सहस्रों की संख्या में अपने घरों को (छोड़) छोड़ कर भागे थे (यह विचार करके कि कदाचित इस तरह जीते बच रहेंगे)। अल्लाह ने उनके लिये मर जाने की आज्ञा दी (और जब वह मर गये, तो मूसा (उन पर सलाम) के तीसरे ख़लीफ़ा हरक़ील नबी की दुआ से) फिर उनको ज़िन्दा कर दिया। अल्लाह लोगों पर बड़ी कृपा करने वाला है। परन्तु लोग अक्सर (ऐसे हैं कि) उसकी (दया व कृपा के) कृतज्ञ नहीं होते। (मुसल्मानों को समझना चाहिये कि जीवन और मृत्यु अल्लाह के हाथ में है। इन के बचाने से जान बच नहीं सकी। अल्लाह सब कुछ कर सका है। इन्हें काफ़िरों से लड़ने में जी न चुराना चाहिये। मुसल्मान की शान (गौरव) तो यह है कि उसे बात २ में अल्लाह की दया दृष्टि गोचर हो) ॥ (चलो) और अल्लाह के मार्ग में (अपने शत्रु काफ़िरों से) मार काट (युद्ध) करो और जाने रहो कि अल्लाह (बहाने बाज़ों की बातों को) सुनता है और (उनके हार्दिक-भावों) को जानता है ॥ कौन है, जो अल्लाह को क़र्ज़ दे † अच्छा क़र्ज़, (जो केवल अल्लाह ही को प्रसन्न करने के लिये दिया जाय और उस में कोई सांसारिक प्रयोजन सम्मिलित न हो। जितना वह देगा,) अल्लाह उसको उससे कई गुणा बढ़ाकर दे देगा। (निर्धनता और धनवानता की चिन्ता न करो) अल्लाह ही दरिद्र बनाता है और (अल्लाह ही) धनवान बनाता है। (सब उसके हाथ हैं) और अन्त में तुम्हें उसी के पास जाना है। (वहां भी वही स्वामी व अधिकारी है। उस से व्यवहार करने में हानि नहीं है, लाभ ही लाभ है) ॥ (और) क्या मूसा के बाद के (इन) इस्राईल वंश के नेताओं (की घटनाओं) को तुम नहीं जानते (कि) जब (बनी इस्राईल ने फिर विद्रोह आरम्भ किया और मूसा की आधीनता से जो बात इन्हें प्राप्त हो गई थी, वह बिगड़ने लगी, तो) उन्होंने (एक जालूत नामक शत्रु की चढ़ाई के अवसर पर, जो इन पर ग़ालिब आ गया था) अपने (समय के) पैग़म्बर (अशमूईल) से प्रार्थना की कि हमारे लिये कोई बादशाह नियत कर दो। जिस से कि (उसकी आधीनता में रह कर) हम अल्लाह के मार्ग में (शत्रु से) जिहाद करें ॥ (अशमूईल नबी ने उन से) कहा, क्या तुम्हारा अब यह इरादा है—

† टीका—अल्लाह को क़र्ज़ दे अर्थात् अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करे :--हसन निज़ामी ॥

اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ۗ قَالُوْا وَمَا
لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ
دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا ۗ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ
تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ●
وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ
طَالُوْتَ مَلِكًا ۗ قَالُوْآ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ
عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ
سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۗ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ
وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِى الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۗ وَاللّٰهُ يُؤْتِيْ
مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ●
وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ
مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ

बोले कि हम अपने घरों और अपने बाल बच्चों से तो निकाले जा चुके, तो हमारे लिये अब कौन सा उज़्र है कि .खुदा की राह में न लड़ें। फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया, तो उन में से मादूदे चन्द के सिवा बाक़ी सब फिर बैठे और अल्लाह तो नाफ़र्मानों को ख़ूब जान्ता है ० और उन के पैग़म्बर ने उन से कहा कि अल्लाह ने (तुम्हारी दरख़्वास्त के मुताबिक़) तालूत को तुम्हारा बादशाह मुक़र्रर किया। (इस पर) लगे कहने कि उस को हम पर क्यों कर .हुकूमत मिल सक्ती है, हालाँकि उस से तो हुकूमत के हम ही ज़ियादा हक़दार हैं कि उसको तो माल (व दौलत के एतिबार) से भी कुछ ऐसी फ़ारिग़ुलबाली नसीब नहीं। (पैग़म्बर ने) कहा कि अल्लाह ने तुम पर (हुक्मरानी के लिये) इसी को पसन्द फ़र्माया है (और माल में नहीं, तो) इ.ल्म (में) और जिस्म में इसको (बड़ी) फ़राख़ी दी है ० और अल्लाह अपना मुल्क जिस को चाहे दे और अल्लाह (बड़ी) गुन्जायश वाला (और सब के हाल से) वाक़िफ़ है ० और उनके पैग़म्बर ने उन से कहा कि तालूत के (मिन जानिबिल्लाह) बादशाह होने की यह निशानी है कि वह सन्दूक़, जिस में तुम्हारे पर्वर्दिगार की (भेजी हुई) तसल्ली (यानी तौरात) है और (नीज़) मूसा और हारून जो (यादगार) छोड़ मरे हैं, उन में की बची कुची चीजें (भी उस में) हैं। (वह बे लड़े) तुम्हारे पास आ जायगा (और) फ़रिश्ते उसको उठा लाएँगे—

कि (एक और पाण मोल लो और) जब तुम पर जिहाद फ़र्ज़ कर दिया जाय, तो लड़ने से बचना चाहो। बोले जब कि हम अपने घरों और अपने बाल बच्चों से अलग कर दिये गये, तो अब हम को अल्लाह के रास्ते में (अपने शत्रुओं से) जिहाद करने में कौन सी बात बाधा डाल सक्ती है॥

लेकिन (अशमूईल * का ख़याल ठीक सिद्ध हुआ, परन्तु) जब उन्हें जिहाद की आज्ञा मिल गई, तो उन में से कुछ मनुष्यों को छोड़ कर शेष ने (इस के पालन से) मुँह फेर लिया और अल्लाह ज़ालिमों (और अविज्ञाकारों) को भली भाँति जानता है॥

* टीका—तर्क वितर्क के उपरान्त हज़रत अशमूईल ने अल्लाह से दुआ करदी कि बनी इस्राईल के लिये बादशाह नियत करदे। अतः अल्लाह तआला ने तालूत नामक एक मनुष्य को इन का बादशाह नियत कर दिया:—हसन निज़ामी॥

(इस पर) उनके नबी (अशमूईल) ने उनसे कहा कि अल्लाह ने तुम्हारा बादशाह तालूत को बनाया। (तालूत के बादशाह बनने की सूचना पाकर बनी इस्राईल अपने स्वभाव के अनुसार अशमूईल से झगड़ा करने लगे)। बोले, (भला) इसे हमारी बादशाही कैसे मिल सक्ती है ? इस से अधिक तो हम शासन के अधिकारी हैं। (सभ्यता और बंश तो अलग रहा) उसे तो धन (व दौलत की ओर) से भी कुछ सहारा नहीं है। (यह कहां से बादशाही का प्रबन्ध कर सकेगा)॥ (अशमूईल † नबी ने) कहा (इसके लिये यही यथेष्ट है कि) इसे अल्लाह ने तुम पर (शासक बनने के लिये) चुना है और (प्रगट में भी) उसे विद्या और शरीर भी (तुम से) अधिक विस्तृत दिया है। (युद्ध-विद्या का ज्ञाता है और डोल डौल का अच्छा है और इन दृष्टियों से तुम में से कोई भी उसका मुक़ाबला नहीं कर सक्ता) और (दूसरी बात यह है कि देश अल्लाह का है) अल्लाह जिसको चाहे, अपना देश उसी को देदे। (उसकी दया धनवानों और अपने आप को सभ्य बताने वालों के साथ निर्दिष्ट नहीं है)। वह अपरिमित है, (न कि परिमित)। और (हर मनुष्य के साहस और हौसला और आदर से) अभिज्ञ है॥

† टीका—जब बनी इस्राईल का यह उत्तर मिला, तो उन्हों ने हज़रत अशमूईल से कहा कि तालूत की ताईद में कोई प्रमाण और भी दो, जिस से हमारा हृदय उसकी ओर आकर्षित हो जाय और हम उसकी आधीनता के लिये तैयार हो जायँ! हज़रत अशमूईल ने ख़ुदा से प्रार्थना की और वहां से एक निशानी तालूत के शासन-स्वरूप प्राप्त करली। बनी इस्राईल में एक सन्दूक़ बहुत दिनों से चला आता था, जिस में बहुत से ईश्वरीय प्रसाद थे, जैसे वह कपड़ा जिस पर तौरेत लिखी हुई उतरी थी या हज़रत मूसा की लाठी और जूतियां इत्यादि। इस सन्दूक़ को बनी इस्राईल लड़ाइयों के अवसर पर बरकत के ख़याल से अपने आगे लेकर चलते थे। जब तक वह सन्दूक़ बनी इस्राईल के यहां रहा, वह विजय प्राप्त करते रहे। लेकिन जब बनी इस्राईल का रङ्ग बदला, तो वह सन्दूक़ उनसे छिन गया। किन्तु उस सन्दूक़ के छीनने वाले काफ़िरों को वह लाभ दायक न हुआ वरन् उनके लिये हानि कारक सिद्ध हुआ। अन्त में काफ़िरों ने उस सन्दूक़ को दो बैलों पर लाद कर स्वतंत्र कर दिया। अल्लाह ने इस सन्दूक़ को तालूत के दर्वाज़े पर पहुँचवा दिया और हज़रत अशमूईल से फ़र्माया कि तालूत की बादशाहत की यह दलील है कि उसके पास पवित्र सन्दूक़ आ जायगा:—हसन निज़ामी॥

और उनके नबी (अशमूईल ‡) ने उनसे कहा (कि लो) तालूत के अल्लाह की ओर से बादशाह होने का यह बड़ा प्रमाण है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक़ आ जायगा, जिस में तुम्हारे पालन-कर्त्ता की (प्रदान की हुई) धैर्य्य और सन्तोष की किताब है और मूसा और हारून व उनकी सन्तान ने जो यादगारें छोड़ी थीं, उनकी बची हुई कुछ वस्तुएँ हैं। फ़रिश्ते इस (सन्दूक़) को उठा लायेंगे—

‡ टीका—बनी इस्राईल इस चिन्ह को देखकर तालूत की आधीनता में जालूत से लड़ने चल दिये:—हसन निज़ामी॥

अगर तुम ईमान रखते हो, तो यही एक बात तुम्हारे लिये निशान (काफ़ी) है ० फिर जब तालूत फ़ौजों समेत (अपने मक़ाम से) रवाना हुआ, तो (उसने अपने हमराहियों से) कहा कि (रस्ते में एक नहर पड़ेगी) । अल्लाह (उस) नहर से तुम्हारी (यानी तुम्हारे सब्र की) जाँच करने वाला है। तो (जो सेर होकर) उसका पानी पीलेगा, वह हमारा नहीं और जो उसको नहीं पियेगा, वह हमारा है । मगर (हाँ) अपने हाथ से कोई एक (आध) चुल्लू भरे (और पीले, तो मुज़ायक़ा नहीं)। पस उन लोगों में से मादूदे चन्द के सिवा सभी ने तो उस (नहर) में से (सेर होकर) पी लिया। फिर जब तालूत और ईमान वाले जो उसके साथ थे, नहर के पार हो गए, तो (जिन लोगों ने तालूत की ना फ़र्मानी की थी) लगे कहने कि हम में तो जालूत और उसके लश्कर से मुक़ाबिला करने का आज दम है नहीं। (इस पर) वह लोग, जिन को यक़ीन था कि उनको ख़ुदा के हुज़ूर में हाज़िर होना है—बोल उठे, अक्सर (ऐसा हुआ कि) अल्लाह के हुक्म से थोड़ी जमाअ़त बड़ी जमाअ़त पर ग़ालिब आ गई है और अल्लाह सब्र करने वालों का साथी है ० और जब जालूत और उसकी फ़ौजों के मुक़ाबिले में आए, तो दुआ की कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हम पर सब्र (की पखालें) उँडेल दे और (मारके जङ्ग में) हमारे पावँ जमाए रख और काफ़िरों की जमाअ़त पर हम को फ़तह दे ० फिर उन लोगों ने अल्लाह के हुक्म से दुश्मनों को भगा दिया और जालूत को दाऊद ने क़त्ल किया और उनको ख़ुदा ने सल्तनत दी और (इन्तिज़ामी) अक़्ल (अता फ़र्माई)—

٥

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ● فَلَمَّا
فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم
بِنَهَرٍ فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن لَّمْ
يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ
فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ
بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم
مُّلَاقُو اللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً
كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ● وَلَمَّا
بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
الْكَافِرِينَ ● فَهَزَمُوهُم بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ
دَاوُودُ جَالُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ

ع

(और वह बिना किसी लड़ाई झगड़े के तुम्हें मिल जायगा) । अगर तुम मानने वाले होंगे, तो इसी एक बात में तुम्हारे लिये (तालूत को बादशाह मानने के लिये यथेष्ट) प्रमाण (मौजूद) हैं ॥

जिस समय तालूत सेना के साथ निकला (है, यह बड़ी गर्मी का समय था । तालूत ने अपनी सेना से) कहा कि (रस्ते में एक नहर मिलेगी) अल्लाह (उस) नहर से तुम्हारी परीक्षा करने वाला है (कि तुम कितने सन्तोषी व सहन-शील हो। उसकी आज्ञा पर इस गर्म मौसम और प्यास की अधिकता में पानी के होते हुए भी पानी पीने से रुक सके हो या नहीं ?) । पस (याद रक्खो) जिसने (तृप्त-पूर्वक) उसका पानी पी लिया, वह हमारा नहीं है और जो पानी न पियेगा वही हमारा है । हाँ, अपने हाथ से (अगर) कोई एक चुल्लू भर (कर पी) ले, (तो इसमें कुछ हानि नहीं है । अधिक न पीना चाहिये) ॥ लेकिन उन में से कुछ लोगों के अतिरिक्त सब ने उस नहर का पानी (ख़ूब) पिया । फिर जब तालूत * और उनके संयमी-साथी नहर से पार उतर गये, तो (जिन्हों ने तालूत की आज्ञा के विरुद्ध पेट भर अर्थात् इच्छानुसार पानी पी लिया था और ख़ुदा की परीक्षा में पूरे नहीं उतरे थे,) कहने लगे कि आज तो हम में जालूत और उसकी सेना से लड़ने की शक्ति नहीं है ॥ (उनके सामने चुल्लू भर पानी पीने वाले, जिनका ईमान दृढ़ था और) जिन्हें विश्वास था कि अल्लाह के सामने उन्हें जाना है, बोले कि बहुत दफ़ा (ऐसा हुआ है) कि अल्लाह की आज्ञा से छोटी जमाअ़त (समूह) ने बड़ी जमाअ़त (समूह) पर विजय प्राप्त की है । (हम लड़ेंगे, हमने पानी के मामले में सन्तोष से काम लिया, अल्लाह ने हमारी प्यास बुझा दी। अब लड़ाई में सन्तोष करेंगे और तकलीफ़ों से व्याकुल न होंगे, तो इसका भी हमें फल मिलेगा) अल्लाह सन्तोष करने वालों के साथ है । (उनकी सहायता करता है) ॥ (अत: तालूत ने इन्हीं चन्द साथियों के लश्कर के साथ जालूत पर धावा किया) और जब (यह मनुष्य पंक्तियाँ बना कर) जालूत और उसकी सेना के सामने आये, तो उन्हों ने प्रार्थना की, कि ऐ हमारे पालन-कर्त्ता ! हमें पूरा सन्तोष, धैर्य्य प्रदान कर और (लड़ाई के मैदान में हमारे क़दम जमाये रख) और काफ़िरों के समूह (के मुक़ाबिले) हमको सहायता दे (हमें विजय प्राप्त करा)। अत: अल्लाह की आज्ञा से संयमियों ने उन (काफ़िरों) को पराजित कर लिया और जालूत को दाऊद † ने मार डाला और दाऊद को अल्लाह ने शासन दे दिया और (शासन करने की) बुद्धि(प्रदान की) और जो कुछ उसके जी में आया सिखाया ‡ ॥

* टीका—तालूत ने कूच करने से पहिले अपनी जाति के संयमियों ही को साथ ले जाना चाहा था। लेकिन समस्त जाति हठ करके उन के साथ चली गई और उनकी परीक्षा नहर पर हो गई। युद्ध क्षेत्र में अस्सी हज़ार में से केवल तीन सौ तेरह मनुष्य तालूत के साथ रह गये जिन्हों ने चुल्लू से पानी पिया था। शेष अपनी अवज्ञा के कारण साहस छोड़ बैठे :— हसन निज़ामी॥

† टीका—तालूत के तीन सौ तेरह साथियों में हज़रत दाऊद (उन पर सलाम) और उनके बाप भाई भी थे। जब तालूत—जालूत के मुक़ाबिले में युद्ध करने पर तत्पर हुआ, तो उस ने कहा कि जो जालूत का सिर काट लायेगा, उसे मैं अपनी कन्या ब्याह दूँगा और राज्य का आधा भाग दूँगा। हज़रत दाऊद इस परीक्षा में कृतार्थ हुए। इस कारण उन्हें राज्य मिल गया :—हसन निज़ामी ॥

‡ टीका—जैसे ज़िरह बनाना, या जानवरों की बोलियाँ समझना :—हसन निज़ामी ॥

مِمَّا يَشَاۤءُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ
لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ
بِالْحَقِّ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ تِلْكَ الرُّسُلُ
فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ
وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ
مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ وَلَوْ
شَاۤءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ
مَا جَاۤءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ
مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ وَلَوْ شَاۤءَ اللّٰهُ مَا
اقْتَتَلُوْا وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ
اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ

और जो (इल्म व हुनर) उसकी मर्ज़ी में आया, उनको सिखा दिया ० और अगर अल्लाह बाज़ लोगों के ज़रिये से बाज़ को (कुर्सीए हुकूमत पर से) न हटाता रहे, तो (मुल्क का इन्तिज़ाम) दरहम बरहम हो जाए। लेकिन अल्लाह दुनिया जहान के लोगों पर (बड़ा) मेहर्बान है ० (ऐ पैग़म्बर !) यह अल्लाह की आयतें हैं, बहक़-जो हम तुमको (जिब्रील हामिले वही के ज़रिये से) पढ़ पढ़ कर सुनाते हैं और बेशक तुम पैग़म्बरों में से हो ० यह पैग़म्बर (जो) हमने (भेजे) इनमें से बाज़ को बाज़ पर बर्तरी दी। इन में से कोई तो ऐसे हैं, जिनके साथ (ख़ुद) अल्लाह ने कलाम किया और बाज़ के दर्जे (और तरह पर) बुलन्द किये और मर्यम के फ़र्ज़न्द ईसा को हमने खुले खुले मोजिज़े दिये और रूहुलक़ुदुस (यानी जिब्रील) से उनकी ताईद की। और अगर ख़ुदा चाहता, तो जो लोग उन (पैग़म्बरों) के बाद हुए-अपने पास खुले हुए निशान आए पीछे एक दूसरे से न लड़ते, लेकिन (ताहम) लोगों ने एक दूसरे से इख़्तिलाफ़ किया। तो इनमें से बाज़ वह थे, जो ईमान लाए और बाज़ वह थे, जो काफ़िर हुए। और अगर ख़ुदा चाहता, तो (यह लोग) आपस में न लड़ते। मगर अल्लाह जो चाहता है, करता है ० मुसल्मानो ! हमारे दिए हुए में से (कुछ नेक राह में भी) ख़र्च कर लो, (मगर) इससे पहिले कि वह दिन आ मौजूद हो (यानी क़यामत)। जिस में न (ख़रीद व) फ़रोख़्त होगी और न यारी (आशनाई) और न सिफ़ारिश—

अल्लाह अगर कुछ लोगों (के हाथ) से कुछ लोगों को बचाता न रहता, (विशेष कर शासन की गद्दी से न हटवाता) तो संसार में झगड़ा ही झगड़ा फैल जाता। (धन और शासन का नशा शीघ्र ही मनुष्य को आपे से बाहर कर देता है। यह नशा यदि अल्लाह इस प्रकार न उतर्वाता रहे तो धन और शासन के मतवाले संसार को बिलकुल युद्ध-क्षेत्र बना कर छोड़ें)। परन्तु अल्लाह की कृपा समस्त संसार पर है (वह केवल धन-वानों और राजाओं का ख़ुदा नहीं है। मिट्टी के बिछौने पर लेटने वालों में योग्यता पाता है, तो उसे बादशाही सिंहासन पर पहुँचा देता है और बादशाही सिंहासन के उत्तराधिकारी को बपौती का अधिकारी नहीं समझता, तो उसे ख़ाक में मिला देता है। तात्पर्य यह है कि संसार के मनुष्य बहुत दिन तक बुरे लोगों के आधीन नहीं रहते)॥

(पूर्व गुज़रे हुए पैग़म्बरों और उनकी उम्मतों (वह समूह जो पैग़म्बर का अनुयायी होता है) की यह घटनायें अल्लाह के चिन्ह हैं। इन्हें हम तुम से बयान कर रहे हैं और बिलकुल घटना के अनुसार ही बयान कर रहे हैं। (अतः जो लोग तुम्हारी पैग़म्बरी पर विश्वास नहीं करते, उनको समझ लेना चाहिये कि ऐसे पैग़म्बर को-जिसने इन घटनाओं को न किसी किताब में पढ़ा हो और न कभी कहीं सुना हो, बिना अल्लाह की सूचना के किस प्रकार इनका ज्ञान हो सक्ता था। अतएव इन्हें तुम्हारे ईश्वरीय संदेशिया होने से इन्कार न करना चाहिये)। निःसन्देह तुम अल्लाह के रसूलों में से हो। (और मुसल्मानों को इन घटनाओं से परिणाम निकालना चाहिये कि पिछले पैग़म्बरों की उम्मतों और अपने संयमी बन्दों को अल्लाह ने कभी संख्या के आधीन नहीं किया। उनके मुट्ठी भर आदमी काफ़िरों की असंख्य सेनाओं के मुंह फेर देने को काफी हुए हैं। फिर जो उसके प्यारे रसूल का स्मरण करने वाले हैं, उन्हें अल्लाह कैसे नीचा दिखायेगा। अलबत्ता केवल स्मरण करने से कुछ नहीं बनता, वरन् इस पैग़म्बर की आधीनता और अनुकरण करना शर्त है)॥ इन रसूलों में से हमने कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता दी है। कुछ पैग़म्बरों (को यह सम्मान प्रदान किया कि उन)से अल्लाह ने सम्भाषण किया (जैसे आदम व मूसा)। कुछ (पैग़म्बरों) को अल्लाह ने (और तरीक़ों से) उच्च पदों पर पहुँचाया। (एक पैग़म्बर को अत्यन्त परिमित स्थान के लिये नियत किया, तो दूसरे को बड़ा स्थान दिया)। मर्यम के बेटे ईसा को हमने खुले खुले मोजिज़े (सिद्धियां) दिये और उनकी पवित्र-आत्मा से सहायता की। (अर्थात् बिना बाप के उनको पैदा किया)॥

और अगर अल्लाह चाहता, (तो) इन (पैग़म्बरों) के पश्चात् (पैदा) होने वाले स्पष्ट (ज़ाहिरा) प्रमाणों के पहुँच जाने के बाद परस्पर न लड़ते, लेकिन (ऐसा नहीं हुआ और) उन्होंने (एक दूसरे से) मत भेद किया। अतएव कोई इनमें से मुसल्मान बना और कोई काफ़िर। (वास्तव में यह सत्य बात है कि) अल्लाह चाहता, तो वह (एक दूसरे से) न लड़ते (और कुफ़्र व इस्लाम का भेद * न पड़ता)। लेकिन (इस पर आश्चर्य न करो) अल्लाह (तमाम मस्लहतों को प्राणियों से अधिक जानता है और स्वामी व स्वाधीन है)। जो चाहता है, करता है ॥

* टीका—अल्लाह ने भिन्न २ स्वभाव रक्खे हैं। किसी का झुकाव सत्य की ओर है, किसी का असत्य की ओर। लेकिन इसके साथ साथ सत्य व असत्य के ग्रहण करने की बुद्धि (विवेक) दे दी है। जो चाहे सत्य का मार्ग ग्रहण करे और जो चाहे असत्य का:—हसन निज़ामी॥

ऐ मुसल्मानो ! (अगर तुम अल्लाह की कृपा के इच्छुक हो और अगर यह कामना है कि भिन्नता (मतभेद) पड़ने की दशा में तुम ईमान के साथी रहो। तुम्हारा शुमार शान्ति के प्रचारकों में हो-कुफ़ के प्रचारकों में न हो, तो उसके अनुसार अमल करो)। जो कुछ हमने (आज धन दौलत) तुम्हें दे रक्खा है, इस में से (हमारी राह में) ख़र्च कर लो। उस दिन के आने से पहले, जिसमें न तो ख़रीद व फ़रोख़्त (क्रय विक्रय) हो सकेगी (अर्थात् न कर्मों के लेन देन का अवसर होगा) और न (किसी की) मित्रता व सिफ़ारिश काम आयेगी—

وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ● اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ مَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ
عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا
بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ●
لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ
فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ
اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى لَا انْفِصَامَ لَهَا
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ● اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ
مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓؤُ
هُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ

اولٰئك

और जो (राह ख़ुदा में ख़र्च न करके नेअमत की) नाशुक्री करते हैं वह लोग (कुछ अपना ही) नुक़सान करते हैं ० अल्लाह (वह ज़ात पाक है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं। ज़िन्दा (कारख़ानए आलम का) सँभालने वाला न उसको ऊँघ आती है और न नींद। उसी का है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। कौन है, जो उसके इज़्न के बग़ैर उस की जनाब में (किसी की) सिफ़ारिश करे। जो कुछ लोगों को पेश (आ रहा) है, (वह) और जो कुछ उनके बाद (होने वाला) है, (वह) उसको (सब) मालूम है और लोग उसकी मालूमात में से किसी चीज़ पर दस्त रस नहीं रखते, मगर जितनी वह चाहे। उसकी कुर्सी (सल्तनत) आस्मान व ज़मीन (सब) पर फैली हुई है। और आस्मान व ज़मीन की हिफाज़त उस पर (मुतलक़) गरां नहीं। और वह (बड़ा) आलीशान (और) अज़मत वाला है ० दीन में ज़बर्दस्ती (का कुछ काम) नहीं, गुमराही से हिदायत (अलग) ज़ाहिर हो चुकी है। तो जो झूटे माबूदों को न माने और अल्लाह (ही) पर ईमान लाए, तो उसने मज़बूत रस्सी पकड़ रक्खी है, जो टूटने वाली नहीं (और उसका बेड़ा पार है)। और अल्लाह (सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० अल्लाह ईमान वालों का हामी (व मददगार) है, कि उनको (कुफ़्र की) तारीकियों से निकाल कर (ईमान की) रोशनी में लाता है। और जो लोग (दीन हक़ से) मुन्किर हैं, उनके हिमायती शैतान हैं कि उनको (ईमान की) रोशनी से निकाल कर (कुफ़्र की) तारीकियों में धकेलते हैं—

और जो (अल्लाह की राह में ख़र्च करने से जान चुराते हैं और इस तरह उसकी मेहरबानियों को) कृतघ्नता करते हैं, वह अपना (ही) नुक़सान करते हैं॥

अल्लाह को जानते हो ? अल्लाह कौन है ? वह-वह है कि उसके सिवा कोई पूज्य (इष्ट देव) नहीं (केवल एक उपासना योग्य व्यक्ति)। वह (सदैव से) जीवित है (और हमेशा ज़िन्दा रहेगा। वह—जो साँसारिक कारख़ाने का) सँभालने वाला (है)। (मृत्यु तो क्या) उसे (कभी) ऊँघ और नींद (तक) नहीं आती। जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है (सब) उसी का है। कौन (साहस रखता) है, जो उसकी आज्ञा के बिना (प्रलय के दिन) उस से (किसी की) सिफ़ारिश कर सके॥

उसे मालूम है, जो कुछ (आज) लोगों को पेश (आ रहा) है और (वह जानता है,) जो कुछ उनके बाद होना है। (वह बर्तमान से भी अभिज्ञ है और भविष्य से भी वाक़िफ़। उपस्थित को भी जानता है और अदृष्य भी उसे ज्ञात है)। उस की मालूमात (अभिज्ञता) के किसी अंश का केवल उन (मालूमात) को छोड़ कर—जिन्हें उसने (बतलाना) चाहा है, प्राणीमात्र घेरा नहीं कर सके। (प्राणी) केवल (इतना ही जानते हैं) जितना (ख़ुद) उस ने (बतला दिया है या बतलाना) चाहा है। उस (के शासन) का सिंहासन (समस्त) आकाशों और पृथ्वी को घेरे हुए है और पृथ्वी व आकाश की सुरक्षता उसको (बिलकुल) भार नहीं मालूम होती। वह (बड़ा) उच्च पद वाला (और) महान है॥

(जिस धर्म ने एक अल्लाह के महान गुणों को ऐसे विस्तृत रूप से वर्णन कर दिया हो, उसके प्रसन्न तथा शुद्ध हृदय से स्वीकार करने में किसी विचार शील और नेक स्वभाव मनुष्य को संकोच नहीं हो सकता। जो मनुष्य इस धर्म को स्वीकार करते हैं, वह अपनी श्रद्धा और इच्छा से करते हैं—न किसी के विवश करने से। यह) धर्म (ऐसा है, जिस के स्वीकार कराने और प्रचार करने) में बलात्कार (का काम) नहीं। धर्म-गुण गुमराही के मुक़ाबले में (ख़ूब) स्पष्ट प्रकट हो चुके हैं। (अब) जो (प्रसन्न चित्त से अर्थात् अपनी ख़ुशी से) असत् पूज्यों को मानना छोड़ दे और अल्लाह पर ईमान ले आये, उसने (मानों बड़ी) मज़बूत रस्सी को थाम लिया, जो टूटने की नहीं। अल्लाह (मुसल्मान करने वालों और मुसल्मान होने वालों के वचनों को) सुनता (और उन के दिलों का हाल) जानता है॥

अल्लाह उनका पोषक व सहायक है, जो ईमान ले आते हैं कि उनको गुमराही (के अन्धकारों) से निकाल कर (हिदायत की) रोशनी में पहुँचाता है और जो काफ़िर हैं, उनके सर परस्त शैतान हैं, जो उन्हें (हिदायत की) रोशनी से बचाकर (गुमराही के) अंधकारों में ले जाते हैं—

यही लोग दोज़खी हैं और वह हमेशा (हमेशा) दोज़ख़ ही में रहेंगे ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उस शख़्स (के हाल) पर नज़र नहीं की, जो सिर्फ़ इस वजह से कि ख़ु़दा ने उस को सल्तनत दे रक्खी थी, (शेख़ी में आकर) इब्राहीम से उन के पर्वर्दिगार के बारे में लगा हुज्जत करने । जब इब्राहीम ने (उस से) कहा कि मेरा पर्वर्दिगार तो वह है, जो (लोगों को) जिलाता और मारता है। (इस पर) वह लगा कहने कि मैं (भी) जिलाता और मारता हूँ। इब्राहीम ने कहा कि (अच्छा) अल्लाह तो आफ़ताब को मश्रिक़ से निकालता है. आप उस को मग्रिब से निकालें, (तो जानें,) इस पर वह काफ़िर हक्का बक्का होकर रह गया (और फिर भी ईमान न लाया)और अल्लाह हट धर्म लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ० या (ऐ पैग़म्बर ! क्या तुमने) मसलन उन (बुज़ु़र्ग के हाल) पर नज़र नहीं की, जो एक बस्ती पर (से होकर) गुज़रे और वह (ऐसी उजड़ी पड़ी थी कि) अपनी छतों पर ढई पड़ी थी। (देख कर तअ़ज्जुब से) लगे कहने, कि अल्लाह इस (बस्ती) को इसके मरे (यानी इस क़दर उजड़े) पीछे कैसे ज़िन्दा (यानी आबाद) कर देगा। इस पर अल्लाह ने उनको सौ बरस तक मुर्दा रक्खा, फिर उनको जिला उठाया (और) पूछा तुम (इस हालत में) कितनी मुद्दत रहे। कहा एक दिन रहा हूँगा या एक दिन से भी कम। फ़र्माया (नहीं) बल्कि तुम सौ बरस (इसी हालत में) रहे। अब अपने खाने और अपने पीने की चीज़ों को देखो कि कोई बुसी तक नहीं और अपने गधे की तरफ़ (भी) नज़र करो (जिस पर तुम सवार थे) और (तुम्हारे इतने दिनों मुर्दा रखने और फिर जिला उठाने से) मक़सद यह है कि हम तुमको लोगों के लिये (अपनी कु़द्रत का) एक नमूना बनाएं और (गधे की) हड्डियों की तरफ़ नज़र करो—

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى
الَّذِىْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِىْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ
اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّىَ الَّذِىْ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ قَالَ
اَنَا اُحْىٖ وَاُمِيْتُ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِىْ
بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ
فَبُهِتَ الَّذِىْ كَفَرَ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَوْ كَالَّذِىْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِىَ
خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا قَالَ اَنّٰى يُحْىٖ هٰذِهِ
اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ
بَعَثَهٗ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ
بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ
اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانْظُرْ اِلٰى
حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى

(और) यह (शैतान की सर परस्ती में रहने वाले) ही नार्कीय हैं और यह नर्क में सदैव २ रहेंगे ॥

तुम्हें क्या उस शख़्स * का हाल मालूम नहीं, जिसने इब्राहीम (उन पर सलाम) से उस के सृष्टि कर्त्ता (की व्यक्ति व गुणों) के सम्बन्ध में हुज्जत बाज़ी की थी (इस घमंड पर) कि अल्लाह ने उसे राज्य दे रक्खा था। जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा सृष्टि कर्त्ता वह है, (जो सब को) जीवन और मृत्यु देता है। तो वह बोला कि (यह तो मैं भी करता हूँ) मैं भी जिलाता और मारता हूँ (मुझे यह शक्ति प्राप्त है कि अगर किसी को फाँसी का हुक्म हो चुका है, तो उसको जीवन दान कर दूं और जिसे चाहूँ फाँसी पर चढ़ा दूं ॥

* टीका--शख़्स से तात्पर्य नमरूद है, जो हज़रत इब्राहीम के समय में उन के देश पर शासन करता था और ख़ु़दाई का दावेदार थाः—हसन निज़ामी ॥

(नमरूद के इस निकम्मे व तुच्छ जवाब पर) इब्राहीम (उन पर सलाम) ने (दूसरी बात पेश की और) कहा–अल्लाह (सदैव) पूर्व से सूरज निकालता है, (तुम एक ही दिन) उसे पच्छिम से निकाल कर दिखाओ। यह सुन कर वह काफ़िर भौचक्का हो गया, (लेकिन फिर भी ईमान न लाया) और अल्लाह (ऐसे ही हठ धर्मी और) अन्यायी लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ॥

या (उन बुज़ु़र्ग † का हाल तुम्हें मालूम होगा) जिनका एक शहर में गुज़र हुआ था और वह (शहर ऐसा उजाड़ था कि उसका प्रत्येक घर) अपनी छतों के बल गिरा पड़ा था (इन बुज़ु़र्ग ने दिल में) कहा कि इसकी (इस दर्जे की) मौत (को पहुँच जाने) के बाद अल्लाह इसे किस प्रकार दूसरी बार जीवित (और आबाद) करेगा। इस पर अल्लाह ने उन (बुज़ु़र्ग) को मार डाला (और) सौ वर्ष (तक मरा रक्खा और) फिर उन्हें ज़िन्दा कर उठाया ॥

† टीका-कहते हैं यह बुज़ु़र्ग हज़रत उज़ैर (उन पर सलाम) थे। बुख़्त नस्र बादशाह ने जब बैतुलमक़्दस को नष्ट व बरबाद किया है, तो उसी अवसर पर हज़रत उज़ैर उधर से गुज़रे और उस की तबाही व बरबादी के दृश्य से आप के हृदय पर वह प्रभाव पड़ा, जिसका उपरोक्त आयत में वर्णन है। इस पर अल्लाह ने अपनी शक्ति दिखाई अर्थात् उन्हीं को मार कर जिला दिया :—हसन निज़ामी ॥

(और एक फ़रिश्ते के द्वारा) पूछा (इस दशा में) तुम कितने दिन रहे ? कहने लगे कोई एक दिन रहा हूँगा या एक दिन से (भी) कुछ कम। फ़र्माया (नहीं एक और आधा दिन कैसा) बल्कि (तुम तो इस हालत में) सौ वर्ष रहे हो। अपने खाने और अपने पीने (की चीज़ों) को देखो कि यह (भी) नहीं सड़ीं ॥

और (फिर) ज़रा अपने गधे की ओर (भी) दृष्टि करो (उस का माँस और खाल सब ग़ायब है। हड्डियाँ ही हड्डियाँ रह गयी हैं) और (यह सब कुछ हम ने) इसलिये (किया है) कि (मरने के बाद दूसरी बार ज़िन्दा होने के सम्बन्ध में तुम्हारी तसल्ली हो जाय और) हम तुम्हीं लोगों के लिये (अपनी शक्ति का) एक चिन्ह बना दें और (अब अपने गधे की) हड्डियों को देखो !

الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا فَلَمَّا تَبَيَّنَ
لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ● وَإِذْ قَالَ
إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ قَالَ أَوَلَمْ
تُؤْمِنْ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي قَالَ فَخُذْ
أَرْبَعَةً مِنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ
عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ
سَعْيًا وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ● مَثَلُ الَّذِينَ
يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ
أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِائَةُ
حَبَّةٍ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ
عَلِيمٌ ● الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى لَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

ع

يَحْزَنُونَ

कि हम कैसे उनको (जोड़ जाड़ कर उनका ढाँच बना) खड़ा करते (और) फिर उन पर गोश्त मढ़ते हैं। फिर जब उन (बुज़ुर्ग) पर (क़ुद्रत इलाही का यह करिश्मा) ज़ाहिर हुआ, तो बोल उठे, कि अब मैं यक़ीन (कामिल) करता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० और (ऐ पैग़म्बर ! उस वाक़िए को भी याद करो कि) जब इब्राहीम ने (ख़ुदा से) दर्ख्वास्त की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! (एक नज़र) मुझ को (भी तो) दिखा कि तू (क़यामत के दिन) मुर्दों को क्योंकर ज़िन्दा करेगा ? ख़ुदा ने फ़र्माया-क्या तुम को (इसका) यक़ीन नहीं ? अर्ज़ किया-क्यों नहीं, (तेरे फ़र्माने से यक़ीन तो है,) मगर (एक नज़र देखना भी चाहता हूँ) ताकि मेरा दिल (पूरा पूरा) मुत्मइन हो जाए। फ़र्माया, तो (अच्छा) चार परन्द लो और उनको अपने पास मंगवाओ (और बोटी बोटी कर डालो) फिर एक एक पहाड़ी पर उन का एक एक टुकड़ा रख दो, फिर उन को बुलाओ, तो वह (आप से आप) तुम्हारे पास दौड़े चले आएंगे (यह नमूनए क़ुद्रत देखो) और जाने रहो कि अल्लाह ज़बर्दस्त (और) हिक्मत वाला है ० जो लोग अपने माल ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं, उनकी (ख़ैरात की) मिसाल उस दाने की सी है, जिससे सात बालें पैदा हुईं। हर बाल में सौ दाने और अल्लाह बरकत देता है, जिस को चाहता है और अल्लाह (बड़ी) गुन्जायश वाला (और हर एक चीज़ के हाल से) वाक़िफ़ है ० जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, फिर ख़र्च किये पीछे (किसी तरह का) एहसान नहीं जताते और न (लेने वाले को किसी तरह की) ईज़ा देते हैं, उन (को उनके दिये) का सवाब उनके पर्वर्दिगार के हाँ मिलेगा और (आख़िरत में) न तो उन पर (किसी क़िस्म का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वह (किसी तरह पर) आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे ०

किस तरह हम उन्हें (संगठित करके उनका ढाँचा बना) खड़ा करते हैं (और) फिर (किस तरह) उन पर मांस (और खाल) चढ़ाते हैं॥

मतलब यह है कि जब (अल्लाह की शक्ति को) उन्होंने आँखों से देख लिया, तो पुकार उठे (अब) मैं (ख़ूब) जान गया, कि अल्लाह का हर बात पर अधिकार है (अल्लाह सब कुछ कर सक्ता है)॥

और (वह अवसर भी) याद करो जब इब्राहीम (उन पर सलाम) ने कहा था कि मेरे पालन कर्ता! मुझे, दिखा दे-तू कैसे मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा। (उनके पालन कर्ता ने) कहा, क्या तुम्हें (इस पर) ईमान नहीं है ? वह बोले ईमान तो है, परन्तु (चाहता हूँ कि इस क़ुद्रत (शक्ति) का तमाशा (चमत्कार) आँखों से देखकर) मेरे दिल को (और) तसल्ली हो जाय॥

(अल्लाह ने) फ़र्माया, अच्छा तो एक चार (भिन्न भिन्न प्रकार के) पक्षी ले आओ (उन्हें अपने पास रखकर हिलाओ और) उनकी सूरतें (आकृतियाँ) अपने ज़ेहन में जमालो (और) फिर (उनके टुकड़े २ करके) उनका एक (एक) टुकड़ा सब पहाड़ों पर डाल दो (और) इसके पश्चात उन्हें पुकारो, वह तुम्हारे पास दौड़ते हुए आ जावेंगे (और इसी से तुम को समझ लेना चाहिये कि) अल्लाह (बहुत) शक्तिशाली और बुद्धिमान है *॥

* टीका-साहस बंधाने वाले यह तीन क़िस्से सुनाकर फिर वही जिहाद व ख़ैरात का मज़मून आरम्भ होता है :—
हसन निज़ामी॥

जो लोग अपना धन (व सम्पत्ति) अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, उन (के इस अमल) का उदाहरण अन्न के उस दाने के समान है, जो (बोया जाता है एक और) बालें सात पैदा करता है। (ऐसी बालें कि) हर बाल में सौ सौ दाने होते हैं। अल्लाह जिसके लिये चाहता है, (फल या पुरस्कार में इस से भी अधिक) बढ़ा देता है। अल्लाह (के ख़ज़ाने में कुछ कमी नहीं। वह बड़े) विस्तार वाला है (और कर्मों तथा भावों से) अभिज्ञ है। (जानता है कि किस की ख़ैरात अधिक पुरस्कार (फल) के योग्य है॥

जो लोग अपना धन व सम्पत्ति अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, और जो कुछ ख़र्च करते हैं, ख़र्च करने के बाद, उसका एहसान नहीं जताते और न (ख़ैरात लेने वाले को ताना (कटाक्ष) देकर या ख़िदमत लेकर) दुःख देते हैं। उनको उन (की इस निष्प्रयोजन ख़ैरात) का उनके पालन कर्त्ता के यहाँ बड़ा फल मिलेगा और (प्रलय के दिन) उन्हें न (भविष्यत का) भय होगा और न गुज़श्ता (भूतकाल) का ग़म॥

تَحْزَنُونَ ۝ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّن صَدَقَةٍ
يَتْبَعُهَآ أَذًى ۗ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ۝ يَـٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا
لَا تُبْطِلُوا صَدَقَـٰتِكُم بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِى
يُنفِقُ مَالَهُۥ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْءَاخِرِ ۖ فَمَثَلُهُۥ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ
فَأَصَابَهُۥ وَابِلٌ فَتَرَكَهُۥ صَلْدًا ۖ لَّا يَقْدِرُونَ
عَلَىٰ شَىْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكَـٰفِرِينَ ۝
وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ
اللَّهِ وَتَثْبِيتًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ
بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَـَٔاتَتْ أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ
فَإِن لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ۝ أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَن تَكُونَ لَهُۥ جَنَّةٌ مِّن
نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَـٰرُ لَهُۥ

नर्मी से जवाब दे देना और (सायल के इसरार से) दर गुज़र करना उस ख़ैरात से बहुत बेहतर है, जिसके (दिये) पीछे (सायल को किसी तरह की) ईज़ा हो और अल्लाह बे नियाज़ (और) बुर्दबार है ० मुसलमानो ! अपनी ख़ैरात को एहसान जताने और (सायल को) ईज़ा देने से उस शख़्स की तरह अकारत मत करो, जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करता है और अल्लाह और रोज़ आख़िरत का यक़ीन नहीं रखता, तो उस की (ख़ैरात की) मिसाल चटान की सी है, कि उस पर (कुछ थोड़ी सी) मिट्टी (पड़ी) है, फिर उस पर बर्सा ज़ोर का मेंह और उस को सपाट कर (के बह बहा) गया। (इसी तरह क़यामत में) रियाकारों को उस (ख़ैरात) में से जो उन्होंने की थी, कुछ भी हाथ नहीं लगेगा और अल्लाह उन लोगों को, जो (नेअ्मत की) ना शुक्री करते हैं, हिदायत नहीं दिया करता ० और जो लोग खु.दा की रज़ा जोई के लिये और अपनी नीयत साबित रख कर अपने माल ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल एक बाग़ की सी है; जो ऊँचे पर (वाक़े) है। उस पर पड़ा ज़ोर का मेंह, तो वह अपना दो चन्द फल लाया और अगर उस पर ज़ोर का मेंह न (भी) पड़ा, तो (उसको) हलकी फुवार (भी बस करती है) और तुम लोग जो कुछ भी करते हो, अल्लाह (उस को) देख रहा है ० भला तुम में से कोई भी इस बात को पसन्द करेगा कि खजूरों और अंगूरों का उसका एक बाग़ हो, उसके तले नहरें (पड़ी) बह रही हों —

(प्रार्थी को) अच्छे शब्दों (और मुलायम तरीक़े से टाल देना) और (उसके अनुचित आग्रह इत्यादि पर) ध्यान न करना उस ख़ैरात से अच्छा है, जिसके पश्चात् (प्रार्थी या याचक के लिये) तकलीफ़ (लगी) हो। (अर्थात् जिसके बाद प्रार्थी से हृदय को दुखाने वाला व्यवहार किया जाय) अल्लाह महान् (और) शीलवान है। (तुम भी महान् और शीलवान् बन जाओ) ॥

ऐ वह लोगो ! जो इमान ले आये हो, अपनी ख़ैरात को एहसान रख कर और दुःख पहुँचा कर (ख़राब और) नष्ट न करो। उस मनुष्य की तरह, जो अपना माल (केवल) लोगों को दिखाने के हेतु ख़र्च करता है और अल्लाह और प्रलय पर ईमान नहीं रखता। सो उसका उदाहरण ऐसा ही है, जैसे किसी चिकने पत्थर पर (कुछ) मिट्टी (जम गई) हो, फिर उस पर ज़ोर का मेंह पड़े (जो मिट्टी को बहाकर) पत्थर को साफ़ कर दे (जिस तरह ऐसी मिट्टी में बीज डालने और उस पर परिश्रम व उद्योग करने का कोई फल नहीं निकलता, इसी प्रकार वह लोग (भी जो केवल दिखावे के लिये ख़ैरात करते या ख़ैरात देकर एहसान जताते और ख़ैरात लेने वालों के मन को क्लेश पहुँचाते हैं) अपने (उन दिखावटी) आचरणों से कुछ प्राप्त नहीं कर सके (और अपने कर्मों का कोई अच्छा फल नहीं पा सके। एक दाने से सैंकड़ों दाने तो उसी दशा में पैदा हो सक्ते हैं, जब वह दाना अच्छी ज़मीन में बोया जाय) और अल्लाह तआला ऐसे मनुष्यों को, जो (उसकी नेमत का दुरुपयोग करके) कृतघ्नता करते हैं, हिदायत नहीं देता ॥

और जो लोग अपने माल (व धन) को अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ख़र्च करते हैं और अपने हृदय (की प्रेरणा) से (पुण्य-प्राप्ति का) विश्वास रखकर (ख़र्च करते हैं) उनका उदाहरण एक ऐसे बाग़ के समान है, जो किसी ऊंचे स्थान पर स्थित हो (और) उस पर ज़ोर का मेंह बरसे, जिससे वह दुगना फल लाये और उस पर ज़ोर की वर्षा न (भी) हो, तो (उसे) हलकी सी फुवार (भी यथेष्ट होती है। भाव अच्छे चाहियें, थोड़ी सी ख़ैरात भी बेड़ा पार कर सक्ती है) और अल्लाह तुम्हारे कर्मों (और तुम्हारे हृदयों या भावों) को देख रहा है (जिस भाव से तुम ख़ैरात करोगे, वैसा ही फल तुम को मिलेगा) ॥

क्या तुम में से किसी को यह बात पसन्द आयेगी कि उस के पास कुछ खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, जिसके नीचे नहरें बहती हों —

हर तरह के फल उस को वहाँ मयस्सर और बुढ़ापे ने उस को आ लिया और उस के (छोटे छोटे) ना तवान बच्चे हैं। अब उस (बाग़) पर चला एक बगूला, जिस में (भरी) थी आग, तो (बाग़) जल भुन कर रह गया। इसी तरह अल्लाह (अपने) अहकाम खोल खोल कर तुम लोगों से बयान करता है, ताकि तुम ग़ौर करो ० मुसलमानो ! (खु.दा की राह में) उम्दा चीज़ों में से ख़र्च करो, तुम ने (तिजारत वग़ैरा से) आप कमाई हों, तो-और हमने तुम्हारे लिये ज़मीन से पैदा की हों,तो-और नाकारा चीज़ के देने का इरादा भी न करना कि लगो उस में से ख़र्च करने, हालाँकि (वही चीज़ कोई तुम को देनी चाहे, तो) तुम उस को (कभी खुश दिली से) न लो, मगर यह कि (दीदा व दानिस्ता) उस (के लेने) में चश्म पोशी करो और जाने रहो कि अल्लाह बेनियाज़ (और) सज़ावार हम्द (व सना) है ० शैतान तुमको तङ्ग दस्ती से डराता और शर्म की बात (यानी बुख़्ल) पर बरङ्गेख़्ता करता है और अल्लाह अपनी तरफ़ से (क़ुसूरों की) माफ़ी और बरकत का तुम से वादा फ़र्माता है और अल्लाह (बड़ी) गुन्जायश वाला (और सबके हाल से) वाक़िफ़ है ० जिस को चाहता है (बात की) समझ देता है और जिस को (बात की) समझ दी गई, तो बेशक उसने बड़ी दौलत पाई और नसीहत भी वही मानते हैं, जो समझदार हैं ० और जो ख़र्च भी तुम (खु.दा की राह में) उठाओ, या (उसके नाम की) कोई मन्नत मानो, वह (सब) अल्लाह को मालूम है और जो लोग (ग़ैर खु.दा की मन्नत वग़ैरा मान कर खु.दा का) हक़ मारते हैं, (क़यामत के दिन) कोई उनका मददगार न होगा ०

فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ
ضُعَفَآءُ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ●
يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ
وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ
مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا
فِيْهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ● اَلشَّيْطٰنُ
يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ وَاللّٰهُ
يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا وَاللّٰهُ وَاسِعٌ
عَلِيْمٌ ● يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ وَمَنْ يُّؤْتَ
الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا وَمَا يَذَّكَّرُ
اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ● وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ
اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ

उसमें बाग़ के मालिक के लिये अनेक प्रकार के फल मौजूद हों और उस मनुष्य (मालिक) को बुढ़ापा आ जाय (ऐसी दशा में कि) उसके (छोटे २) कमज़ोर बच्चे हों। फिर उस (बाग़) पर एक आग से भरे हुए हवा के झोंके का गुज़र हो (अर्थात् अत्यन्त कठोर लू-का एक झोंका आये) जिस से बाग़ झुलस (कर रह) जाय (तो उस समय जैसी सख़्त निराशा बाग़ के मालिक को होती है, वैसी ही सख़्त निराशा उन ख़ैरात करने वालों को मृत्यु के बाद होगी, जो ख़ैरात करके एहसान रखते हैं या ख़ैरात लेने वालों का दिल दुखाते हैं। वह लोग दुनिया में ख़ैरात करके इस आशा में रहेंगे कि मरणान्त (परलोक) में उनकी ख़ैरात का फल मिलेगा, परन्तु उनकी आशा कठोर निराशा में बदल जायगी। जब वह यह देखेंगे कि एहसान जताने और दिल दुखाने के कारण उनकी ख़ैरात मलियामेट हो गई) अल्लाह तआला अपनी आज्ञाओं को इस प्रकार विस्तार के साथ (उदाहरण दे देकर) समझाता है, जिससे कि तुम (उन पर) ध्यान करो (और उन को अपने हृदय पर अंकित कर लो) ॥

ऐ ईमान लाने वालो ! जो (रुपया पैसा) तुमने (अपनी मेहनत मज़दूरी या तिजारत वग़ैरह से कमाया हो,उस में) से और जो कुछ हमने तुम्हारे लिये ज़मीन से पैदा किया हो (अर्थात् अन्न, मेवे, तरकारियाँ) उसमें से (अच्छा और) पवित्र (अंश अल्लाह की राह में) ख़र्च किया करो। उसके (निकृष्ट और) अशुद्ध (अंश) को अपनी इच्छा से (अल्लाह की राह में) ख़र्च न करना (ऐसी निकम्मी चीज़ क्या अल्लाह की राह में देने योग्य होती है) कि (अगर कोई तुम्हें दे, तो) तुम (खु.द भी) उसको (मुरव्वत और) अनिच्छा से लो। (यह ख़ैरात व सदक़ात खु.दा के नाम पर जो फ़क़ीरों को दिया जाय-सब तुम्हारे अपने फ़ायदे के लिये है) अल्लाह को (इस की) इच्छा नहीं। (इच्छा रहित होना ही उस की महिमा है। हाजतमन्दी तो बुरी वस्तु है और अल्लाह आद्योपान्त अर्थात् पूर्णतया इच्छा रहित और निष्काम-भाव) प्रशंसा व स्तुति के योग्य है॥

शैतान (ख़ैरात से रोकने के लिये तुम्हारे दिलों में) निर्धनता का सन्देह पैदा करता है और तुम को (कृपणता के समान) ज़लील बातों के लिये आमादा करता है और अल्लाह (ख़ैरात करने पर) तुम से अपनी क्षमा व दया का वादा फ़र्माता है। तुम्हें शैतान की इस दुष्ट भावना का, कि ख़ैरात करने से तुम मोहताज हो जाओगे, कुछ ख़याल न करना चाहिये। क्योंकि अल्लाह बड़े विस्तार वाला है (उस के लिये अपने वादे के अनुसार ख़ैरात किये हुये माल का कई गुणा कर देना कुछ कठिन नहीं है और) अल्लाह (बड़ा) ज्ञानी है। (उसके ज्ञान से शैतान के ज्ञान का क्या मुक़ाबला) ॥

(अल्लाह) जिसको चाहता है (ख़ैरात और दूसरी समस्त नेकियों के साधन की) बुद्धि प्रदान कर देता है, और जिसे (इस प्रकार की) बुद्धि मिल गई, समझ लो कि उसे बड़ी दौलत मिल गई और नसीहत उन्हीं पर कारगर होती है, जिन्हें (यह) समझ मिली हो॥

और जो कुछ भी तुम (ख़ैरात में) ख़र्च करते हो या जो नज़रें (भेंट) भी तुम मानते हो, निस्सन्देह अल्लाह को उन सबका ज्ञान है और जो लोग (खु.दा तआला की नियत की हुई सीमा से) आगे बढ़ते हैं -

مِنْ اَنْصَارٍ ۝ اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ وَاِنْ
تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ
وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ۝ لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ وَ
مَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ وَمَا تُنْفِقُوْا
مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝
لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ يَحْسَبُهُمُ
الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ
بِسِيْمٰهُمْ لَا يَسْئَلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا وَمَا
تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ اَلَّذِيْنَ
يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا

(लोगो !) अगर ख़ैरात ज़ाहिर में दो, तो वह भी अच्छा (कि इससे ख़ैरात के अलावा दूसरों को भी तर्ग़ीब होती है) और अगर उसको छुपाओ और हाजतमन्दों को दो, तो यह तुम्हारे हक़ में ज़्यादा बेहतर है (कि इसमें नाम व नमूद का दख़्ल नहीं होने पाता) और (ऐसा देना) तुम्हारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा होगा और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उससे ख़बरदार है ० (ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों को राह रास्त पर लाना तुम्हारे ज़िम्मे नहीं, बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है, राह रास्त पर लाता है और तुम लोग (अपने) माल में से जो कुछ भी (ख़ैरात के तौर पर) ख़र्च करोगे, सो अपने लिये और तुम तो .ख़ुदा ही की रज़ा जोई के लिए ख़र्च करते हो ना और (अपने) माल में से जो कुछ भी (ख़ैरात के तौर पर) ख़र्च करोगे, (क़यामत के दिन) तुम को पूरा पूरा भर दिया जायगा और तुम्हारा (कुछ) हक़ न मारा जायगा ० (ख़ैरात तो) उन हाजतमन्दों का हक़ है, जो अल्लाह की राह में घिरे बैठे हैं, मुल्क में किसी तरफ़ को (जाना चाहें तो) जा नहीं सक्ते (जो शख़्स इनके हाल से) बे ख़बर (है, वह) इन की .ख़ुद दारी (की वजह) से इन को ग़नी समझता है, (लेकिन ऐ मुख़ातिब !) तू (इन को देखे तो) इन की सूरत से इन को (साफ़) पहिचान जाए (कि मोहताज हैं, मगर हाँ) लग लिपट कर लोगों से नहीं मांगते और जो कुछ भी तुम लोग(अपने) माल में से (ख़ैरात के तौर पर) ख़र्च करोगे, तो (ख़ूब यक़ीन रक्खो कि) अल्लाह उसको जानता है ० जो लोग रात और दिन छुपे और ज़ाहिर अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं–

उनका कोई सहायक नहीं है (किसी ग़ैरुल्लाह अर्थात् अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे की नज़र मान कर न तो वह उस से कोई लाभ उठा सकते हैं और न दिखावे की ख़ैरात से) ॥

ख़ैरात अगर प्रकट रूप से (अर्थात खुल्लम खुल्ला) करो, तो यह (भी) अच्छा है (तुम्हारा यह कार्य दूसरों के लिये प्रोत्साहन देने या प्रेरित करने का कारण होगा । भाव शुद्ध हों, तो इसमें कोई हानि नहीं) और यदि ख़ैरात को गुप्त रक्खो और उसे (ख़ास ज़रूरत मन्दों अर्थात जिन्हें वास्तव में आवश्यकता हो) उनके पास (इस तरह) पहुँचा दो (कि एक हाथ से दूसरे हाथ को पता न लगे,) तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है (इससे लेने वाले को लज्जित होना नहीं पड़ता और देने वाले का निष्काम-भाव प्रकट होता है) और (ऐसी ख़ैरात) तुम्हारे (बहुत से) पापों को झाड़ देगी और अल्लाह जो कुछ तुम करते हो, उसे जानता है (चाहे प्रकट करके ख़र्च करो, चाहे गुप्त रूप से) ॥

(और ऐ रसूल ! तुम्हारा काम यह है कि हमारी इन बातों को लोगों तक पहुँचा दो) उन को राह पर ले आने के तुम ज़िम्मेदार नहीं हो। (कोई मनुष्य किसी मनुष्य का दिल नहीं बदल सक्ता) लेकिन हां, अल्लाह (की यह शान है कि) जिसको चाहता है, हिदायत कर देता है और (ऐ मुसलमानो !) जो माल व धन तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे, वह अपने ही (लाभ के लिये करोगे। उसका लाभ तुम्हें ही पहुँचेगा) ॥

और तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता के सिवा और किसी प्रयोजन के लिये ख़ैरात करनी उचित नहीं है और जो माल भी तुम (उस के नाम पर) ख़र्च करोगे, उस का पूरा फल तुम्हें दिया जायगा और तुम्हारे साथ अन्याय न होगा ॥

(ख़ैरात के) अधिकारी वह (मजबूर) हाजतमन्द हैं, जो अल्लाह के रास्ते में (पड़ जाने के कारण एक स्थान पर पाबन्द हो गये हैं और देश में (जीविका के लिये कहीं) जा आ नहीं सक्ते। ना वाक़िफ़ (अनभिज्ञ) मनुष्य इनके सवाल न करने के कारण समझता है कि (वह) धनवान हैं। तुम उनकी सूरत (चेहरे) से उनका हाल मालूम कर सक्ते हो। वह मांगने के लिये लोगों से लिपटते नहीं। (तुम्हें ऐसे लोगों की सहायता का विशेष रूप से ख़याल रखना चाहिये) और जो कुछ अल्लाह के निमित्त (ऐसे लोगों के लिये) ख़र्च करोगे (उसके लिये विश्वास रक्खो कि) अल्लाह को उसका ज्ञान हो जाता है ॥

जो लोग अपना धन (व सम्पत्ति) रात को और दिनको गुप्त –

وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ
الرِّبَوٰا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ
الشَّيْطَٰنُ مِنَ الْمَسِّ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا
الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَوٰا ۗ وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَوٰا ۚ
فَمَن جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّهِ فَانتَهَىٰ فَلَهُ
مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ
أَصْحَٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ۝ يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَوٰا
وَيُرْبِي الصَّدَقَٰتِ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ
أَثِيمٍ ۝ إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ وَأَقَامُوا
الصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُا الزَّكَوٰةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ يَٰأَيُّهَا الَّذِينَ
ءَامَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَوٰا إِن

तो उन (के दिये) का सवाब उन के पर्वर्दिगार के हां उनको मिलेगा और (क़यामत में) उन पर न (तो किसी क़िस्म का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वह (किसी तरह) आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे ० जो लोग सूद खाते हैं, (क़यामत के दिन) खड़े नहीं हो सकेंगे, मगर उस शख़्स का सा खड़ा होना, जिस को शैतान ने (अपनी) चपेट से मख़्बूतुल हवास कर दिया हो। यह उन के इस कहने की सज़ा है कि जैसा मुआमिला बैअ़-वैसा ही मुआमिला सूद, हालाँकि बैअ़ को तो अल्लाह ने हलाल किया है और सूद को हराम, (तो सूद को बैअ़ पर क़यास करना सरीह ग़लत है) तो जिस पास उसके पर्वर्दिगार की तरफ़ से नसीहत (की बात) पहुँची और (वह आयन्दा के लिये) बाज़ आ गया, तो जो पहिले (ले चुका) है, वह उस का (हो चुका) और उसका मुआमिला ख़ुदा के हवाले और जो (मनाही हुए पीछे) फिर (सूद) ले, तो ऐसे ही लोग दोज़ख़ी हैं (और) वह दोज़ख़ ही में हमेशा (हमेशा) रहेंगे ० अल्लाह सूद को घटाता और ख़ैरात को बढ़ाता है और जितने ना शुक्र हैं (और) कहना नहीं मानते, ख़ुदा उनसे राज़ी नहीं ० जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम (भी) किये और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहे, उन (के किये) का सवाब उनके पर्वर्दिगार के हाँ उनको मिलेगा और उन पर (आख़िरत में) न (तो किसी क़िस्म का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वह (किसी तरह) आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे ० मुसलमानो! अगर तुम ईमान रखते हो, तो अल्लाह से डरो और जो सूद (लोगों के ज़िम्मे) बाक़ी है, (उसको) छोड़ बैठो ० ॥

तथा प्रकट रूप से (जब अवसर होता है और जैसा अवसर होता है, अल्लाह की राह में) ख़र्च करते रहते हैं, उनका फल उनके पालन कर्त्ता के द्वार से उन्हें मिलेगा और उनको (प्रलय के दिन) न (किसी प्रकार का) खटका होगा और न वह (उस दिन) शोकातुर होंगे ॥

(और) जो लोग (हमारे बताये हुये तरीक़े पर नहीं चलते और अपने सजातीय मनुष्यों के साथ सुलूक करने के बजाय उन से उलटा) सूद (ब्याज) खाते हैं, वह (प्रलय के दिन) इस तरह खड़े होंगे; जैसे कोई (बावला) खड़ा होता है, जिस को शैतान ने अपनी झपट से बावला कर दिया हो। यह (हाल उनका) इस लिये (होगा) कि ब्योपार व ब्याज को समान कहा करते थे। यद्यपि ब्योपार को अल्लाह ने हलाल फ़र्माया है और सूद (ब्याज) को हराम किया है। सो जिस के पास उस के पालन कर्त्ता की ओर से (यह) नसीहत पहुँची (कि सूद मत लो) और (उस ने इसे माना और) वह (इस बुराई से) बचा रहा, तो जो कुछ पहिले (ले चुका) है, वह उसका है और उस का मामला अल्लाह के सुपुर्द रहा और जो (न माने और) फिर (अर्थात् स्पष्ट आज्ञा के पश्चात भी ब्याज) लिये जाय, तो यही लोग नार्कीय हैं (और) उस (नर्क) में सदैव सदैव रहेंगे ॥

अल्लाह सूद (की कमाई) को बरबाद करता है और सदक़ात (दान व ख़ैरात से लोक व परलोक) में उन्नति देता है और अल्लाह किसी ऐसे मनुष्य से प्रसन्न नहीं, जो (ख़ुदा के दिये हुए माल व धन में से ख़ैरात न करके उस की नेमत की) कृतघ्नता करता (और सूद के हराम ठहराये जाने पर भी सूद लेकर ख़ुदा की) अवज्ञा करता है ॥

(और) जो ईमान ले आये हैं और शुभ कर्म करते हैं और (ख़ास कर) नमाज़ के पाबन्द हैं और ज़कात देते हैं (कि इन धार्मिक कर्तव्यों की पाबन्दी ही में समस्त आज्ञाओं के पालन करने का रहस्य छिपा हुआ है,) तो उनका पुरस्कार निस्सन्देह उन के पालनकर्त्ता के पास है और न उन्हें (किसी प्रकार का) भय होगा और न वह किसी बात से निराश होंगे ॥

ऐ मुसलमानो! अल्लाह से डरो और सूद में से (किसी के ज़िम्मे) जो कुछ बाक़ी रहा हो उसे छोड़ दो-

كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ
مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَإِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوسُ
أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ۝ وَإِنْ
كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَنْ
تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝
وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ
كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ إِلَىٰ
أَجَلٍ مُسَمًّى فَاكْتُبُوهُ ۚ وَلْيَكْتُبْ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ
بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا
عَلَّمَهُ اللَّهُ ۚ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ
الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ
فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا

और अगर (ऐसा) नहीं करते, तो अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने के लिये होशियार हो रहो और अगर तौबा करते हो, तो अपनी अस्ल रक़म तुम को (लेनी पहुँचती है) न तुम (किसी का) नुक़सान करो और न कोई तुम्हारा नुक़सान करे ० और अगर (कोई) तंगदस्त (तुम्हारा मक़रूज़) हो, तो फ़राग़्ों तक की मोहलत (दो) और अगर समझो तो तुम्हारे हक़ में यह ज़ियादा बेहतर है कि उसको (अस्ल क़र्ज़ा भी) बख़्श दो ० और उस दिन से डरो, जब कि तुम अल्लाह की तरफ़ लौटा कर लाए जाओगे। फिर हर शख़्स को उस के किये का पूरा पूरा बदला दिया जायगा और लोगों पर (ज़र्रा भर) ज़ुल्म न होगा ० मुसलमानो ! जब तुम एक मीआद मुक़र्रर तक उधार का लेन देन करो, तो उस को लिख लिया करो और (अगर तुम को लिखना न आता हो, तो) तुम्हारे दर्मियान में (तुम्हारी बाहमी क़रार दाद को) कोई लिखने वाला इन्साफ़ के साथ लिखदे और (जिस से लिखवाओ, तो उस) लिखने वाले को चाहिये कि लिखने से इन्कार न करे, जिस तरह ख़ुदा ने उस को (लिखना पढ़ना) सिखाया है, (उसी तरह) उस को भी चाहिये कि (बे उज़्र) लिख दे और जिस के ज़िम्मे क़र्ज़ आयद होगा, (वही दस्तावेज़ का) मतलब बोलता जाय और अल्लाह से कि वही उसका (हक़ीक़ी) कार साज़ है, डरे और (बताते वक़्त क़र्ज़ दिहन्दा के) हक़ में से किसी तरह की काट छाँट न करे। फिर जिस के ज़िम्मे क़र्ज़ आयद होगा, अगर वह कम अक़्ल हो या मअ़ज़ूर–

अगर तुम (सच्चे) मुसल्मान हो, (तो मुसलमान को यही उचित है कि वह तुरन्त अल्लाह की आज्ञा का पालन करे) और अगर तुमने ऐसा नहीं किया (अर्थात् सूद न छोड़ा और अल्लाह की आज्ञा की पर्वाह न की) तो समझलो कि तुम अल्लाह और उस के रसूल से लड़ाई (मोल) ले रहे हो। और अगर तौबा (किसी बुरे काम को फिर न करने की प्रतिज्ञा करना) कर लो, तो तुम्हारा मूल-धन तुम्हें मिलना चाहिये। तुम (सूद लेकर) किसी पर ज़ुल्म न करो और न (तुम्हारा मूल-धन दबा कर) कोई तुम पर ज़ुल्म करे ॥

और (हाँ) अगर (तुम्हारे) क़र्ज़दार का हाथ तङ्ग है, तो उस की आर्थिक दशा अच्छी होने तक (उसे) मोहलत देनी चाहिये और (ऐसी दशा में) अपनी (क़र्ज़ की रक़म को) अल्लाह के निमित्त माफ़ कर देना तुम्हारे लिये (और भी) अच्छा है। अगर तुम जानते हो (कि अल्लाह की आज्ञापालन का क्या दर्जा है, तो इस बात को समझोगे और इस का ख़याल करोगे) ॥

और (तात्पर्य यह है कि इस प्रकार के समस्त कार्यों में) उस दिन का डर (सामने) रक्खो, जिस दिन यहां से लौट कर अल्लाह के पास जाओगे (और) फिर (तुममें से) हर एक मनुष्य को अपने कर्मों का पूरा पूरा फल दिया जायगा और किसी के साथ अन्याय न होगा ॥

ऐ मुसलमानो ! जब (कभी) तुम एक नियत समय तक (के लिये) किसी को क़र्ज़ दो, तो उसे लिख लिया करो (जिस से कि यह लेख आवश्यकता पड़ने पर काम आवे और अगर) तुम्हारे दर्मियान (की क़रार दादें अर्थात् जो कुछ तुम्हारे बीच ते पावे, उसे तीसरा मनुष्य लिखे, तो उस) कातिब (लेखक) को चाहिये कि न्याय के साथ (अर्थात् बिना किसी के पक्षपात के) लिखे (धोके के शब्द न लिख दे और शब्दों में घटत बढ़त न करे) और लिखने वाले (को चाहिये कि) लिखने से इन्कार (भी) न करे। जिस तरह अल्लाह ने उसे लिखना सिखाया है, इसी तरह वह (अल्लाह के बन्दों के काम आये और उनकी तहरीर) लिख दे और (तहरीर) का मज़मून वह बोले, जो क़र्ज़ा ले रहा हो और (वह भी) अल्लाह (अर्थात्) अपने पालन कर्त्ता से डरे और लेन देन के इस व्योहार में ज़रा कमती बढ़ती न करे। (यह अल्लाह ही की पालन-शक्ति है कि आदमी का काम आदमी से निकलवाता है) ॥

और यदि क़र्ज़ लेने वाला (ना समझ) या बुद्धि हीन हो–

اَوْ لَا يَسْتَطِيعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ
وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ فَاِنْ لَّمْ
يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ
مِنَ الشُّهَدَاۤءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ
اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَاۤءُ اِذَا
مَا دُعُوْا وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا
اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ
وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ
تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ
فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا
تَبَايَعْتُمْ وَلَا يُضَاۤرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ وَاِنْ
تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَيُعَلِّمُكُمُ
اللّٰهُ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ٢٨٢ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ

या ख़ुद अदाए मतलब न कर सकता हो, तो (जो) उसका मुख़्तार कार (हो, वह) इन्साफ़ के साथ (दस्तावेज़ का) मतलब बोलता जाय और अपने लोगों में से (जिन लोगों पर तुम्हारा इत्मिनान हो) दो मर्दों को गवाह कर लिया करो । फिर अगर दो मर्द न हों, तो एक मर्द और दो औरतें कि उनमें से कोई एक भूल जायगी, तो एक दूसरे को याद दिला देगी और जब गवाह (अदाए शहादत के लिये) बुलाए जायँ, तो (हाज़िर होने से) इन्कार न करें और मुआमिला मीआदी छोटा हो या बड़ा, उस (की दस्तावेज़) के लिखने में काहिली न करो । ख़ुदा के नज़दीक यह बहुत ही मुन्सिफ़ाना (कार्रवाई) है और गवाही के लिये भी यही तरीक़ा बहुत ठीक है और ज़ियादातर क़रीन (क़यास) है कि तुम (आयन्दा किसी तरह का) शक (व शुबहा) न करो, मगर सौदा दस्ते नक्द हो, जिस को तुम (हाथों हाथ) आपस में लिया दिया करते हो । तो उस (की दस्तावेज़) के न लिखने में तुम पर कुछ गुनाह नहीं और (हाँ,) जब (इस तरह की) ख़रीद व फ़रोख़्त करो, तो (एहतियातन) गवाह कर लिया करो और कातिब (दस्तावेज़) को (किसी तरह का) नुक़्सान न पहुँचाया जाय और न गवाह को और ऐसा करोगे, तो यह तुम्हारी शरारत है और अल्लाह से डरो और अल्लाह तुमको (मुआमिले की सफ़ाई) सिखाता है और अल्लाह सब कुछ जानता है ० और अगर सफ़र में हो–

या (रोग आदि कारणों से निढाल और) शक्ति हीन हो या (दस्तावेज़ के) मज़मून बताने की योग्यता न रखता हो, तो (वह) मज़मून उस का वली (या मुख़्तार) बोल दे (परन्तु वही) सच सच और (इस मामले और तहरीर का) अपने आपस के दो मर्दों को गवाह बना लो, जिन की गवाही पर तुम्हारा भरोसा हो और अगर दो मर्द (मौजूद) न हों, तो एक मर्द और दो औरतें । क्योंकि यदि उन में से कोई एक औरत भूल जाय, तो दूसरी औरत उस को याद दिला दे और जब गवाह को (गवाही देने के लिये) बुलाया जाय, तो (गवाह बनने और गवाही देने से) विमुख न हो अर्थात् इन्कार न करे ॥

और उस (दस्तावेज़ की तहरीर लिखने) में सुस्ती न करो, चाहे मीआदी मामला छोटा हो या बड़ा, (लिखवाने वाले लज्जा के कारण और लिखने वाले कुछ अपना अपमान सा समझ कर दस्ताबेज़ों के लिखने में सुस्ती (संकोच) किया करते हैं–यह ठीक नहीं है । इसका परिणाम साधारणतया ख़राब निकलता है) अल्लाह के लिये यह (लिखने का तरीक़ा) बहुत (ठीक और) न्याय-युक्त है और गवाही की अधिक सचाई का कारण है और (इस दृष्टि से भी) बहुत (मुनासिब और बुद्धि के) अनुकूल है कि (इसके उपरान्त तुम किसी तरह का) सन्देह (व शुबहा) न कर सको, लेकिन अगर सौदा हाथों हाथ हो कि तुम में से एक ने इस हाथ दिया और दूसरे ने उस हाथ लिया (न लेता भूले न देता) तो उस की तहरीर न करो, तो तुम पर कोई अपराध न आयेगा । और (हाँ इतना ऐसे मामलों के लिये भी अच्छा है कि) जब मामला करो, तो (एहतियात के तौर पर एक आध को) गवाह बनालो और (जिस तरह कातिब व गवाह के लिये हुक्म है कि मामले दारों में से किसी को नुक़सान न दें, इसी तरह मामले दारों को भी चाहिये कि) कातिब और गवाह को तकलीफ़ न पहुँचे और अगर (ऐसा) करोगे, तो उस का तुमको पाप होगा और (देखो !) अल्लाह से डरो और (सोचो !) कि अल्लाह तुम को (मामलों के बारे में कैसी अच्छी बातें) सिखलाता है और अल्लाह सब कुछ जानता है ॥

और (क़र्ज़ लेते समय) अगर तुम सफ़र में हो–

وَلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ
وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ
وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى
الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ
تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟
وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ
الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا

और तुम को कोई लिखने वाला न मिले (और क़र्ज़ लेना हो) तो रहन वा क़ब्ज़ा (रख कर लो)। पस अगर तुममें से एक का एक एतिबार करे (और बे रहन रक्खे क़र्ज़ देदे) तो जिस पर एतिबार किया गया है (यानी क़र्ज़ लेने वाला) उसको चाहिये कि क़र्ज़ देने वाले की अमानत (यानी क़र्ज़) को (पूरा पूरा) अदा करदे और ख़ुदा से जो उसका कार साज़ (हक़ीक़ी) है, डरे और गवाही को न छुपाओ और जो उसको छुपाएगा, तो वह दिल का खोटा है और जो कुछ (भी) तुम लोग करते हो, अल्लाह को सब मालूम है ० जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है, (वह सब) अल्लाह ही का है और (लोगो !) जो तुम्हारे दिल में है, अगर उसको ज़ाहिर करो या उसको छुपाओ, अल्लाह तुम से उसका हिसाब लेगा। फिर (दिलके के खोट पर) जिस को चाहे, बख़्शे और जिसको चाहे अज़ाब दे और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० (हमारे यह) पैग़म्बर (मुहम्मद) उस किताब को मानते हैं, जो उनके पर्वर्दिगार की तरफ़ से उन पर उतरी है और (पैग़म्बर के साथ दूसरे) मुसलमान भी (यह सब के) सब अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाए कि (सब पैग़म्बरों का दीन एक है और कहते हैं कि) हम ख़ुदा के पैग़म्बरों में से किसी एक को (भी) जुदा नहीं समझते (यानी सबको मानते हैं) और बोल उठे कि (ऐ हमारे पर्वर्दिगार !) हमने (तेरा इर्शाद) सुना और तस्लीम किया। ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! (बस) तेरी ही मग़्फ़िरत (दरकार है) और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है ० अल्लाह किसी शख़्स पर बोझ नहीं डालता, मगर उसी क़दर, जिस (के उठाने) की उसको ताक़त हो–

और तुम्हें कातिब न मिले, तो कोई चीज़ (रुपये देने वाले के पास) गिरवीं रख दो और अगर तुम्हें एक दूसरे का विश्वास हो (और बिना गिरवीं क़र्ज़ का मामला हो जाय) तो जिस पर विश्वास किया गया है (अर्थात् क़र्ज़ लेने वाला) उसे चाहिये कि क़रारदाद के मुताबिक़ (अर्थात् जो कुछ तै हुआ है, उस के अनुसार देने वाले को) उस की अमानत (अर्थात् क़र्ज़) अदा करदे और अपने पालन कर्त्ता, अल्लाह से डरे (क़र्ज़ चुकाने में बहाना न करे) और (ऐ गवाहो ! यदि गवाही देने का मौक़ा हो, तो) गवाही को छिपाओ नहीं और जिसने गवाही को छिपाया उस का दिल स्याह (कलुषित) है और अल्लाह सब जानता है, जो कुछ तुम करते हो (मनुष्यों से गवाही छिपालो, मगर अल्लाह से नहीं छिप सकती) ॥

जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी पर (सब) अल्लाह का है (उस की शक्ति और अधिकार से कोई चीज़ भी बाहर नहीं है) और जो कुछ तुम्हारे दिल के भीतर है, उसे चाहे प्रकट करो, चाहे गुप्त रक्खो, अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा। फिर (लोगों के कलुषित हृदय होने पर भी) जिसे चाहे क्षमा करदे और जिसे चाहे दुःख या दण्ड दे और अल्लाह (की शक्ति व अधिकार की कोई सीमा नहीं। वह) हर बात पर अधिकार रखने वाला (और क़ाबिज़) है (और हर बात में पूरा स्वाधीन है *) ॥

* टीका-यह आयत जब उतरी तो सहाबा ने रसूलुल्लाह (उन पर सलाम) से अर्ज़ की कि हुज़ूर इस का प्रभाव बहुत दूर तक पहुँचता है । हार्दिक वासनायें भी गिरफ़्त (पकड़) के योग्य ठहराई गईं और दिल क़ाबू में रखने की चीज़ नहीं है। अब हम क्या करें, हम को बड़ी परेशानी है। रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि बनी इस्राईल (इस्राईल के वंशजों) को तरह कठहुज्जती करनी ठीक नहीं। जो आज्ञा आवे, उसे स्वीकार करो और फिर आज्ञा करने वाले से सहायता चाहो और प्रार्थना करो कि आज्ञा पालन करने की शक्ति दे। अतएव सहाबा ने तुरन्त कहा--स्वीकार है और हम इस पर ईमान लाये। यह बात अल्लाह को भली लगी और निम्न लिखित आज्ञा हुईः- हसन निज़ामी ॥

रसूल ने उस (चीज़) को--जो उन के पालन कर्त्ता की ओर से उस पर उतरी है, मान लिया और (उसके साथ दूसरे) मुसलमान (भी) ईमान ले आये ; सब के सब ईमान ले आये, अल्लाह पर और उस के फ़रिश्तों पर और उस की किताबों पर और उन के पैग़म्बरों पर (और वह कहते हैं कि) हम (यहूदियों और नस्रानियों की तरह) अल्लाह के पैग़म्बरों में से किसी एक को (भी) अलग नहीं समझते (हर पैग़म्बर सच्चा था और अल्लाह का सच्चा धर्म लाया था) और पुकार उठे कि (ऐ अल्लाह !) हमने (तेरी आज्ञा) सुनी और हमने (उसे) स्वीकार किया। ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! (हम) तेरी क्षमा (के इच्छुक हैं) और (हमें) तेरे पास लौट कर आना है † ॥

† टीका--इस के जवाब में ख़ुदा ने फ़रमाया:--हसन निज़ामी ॥

(विश्वास रक्खो) अल्लाह किसी को (ऐसा) हुक्म नहीं देता, जो उस की शक्ति § से बाहर हो–

§ टीका-हार्दिक वासनाओं पर गिरिफ़्त (पकड़) की आज्ञा मन्सूख़ हो गई थीः-हसन निज़ामी ॥

مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا
إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا
إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا
رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ
عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا
فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

سورة آل عمران مدنية وهي مائتا آية

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
الم ۝ اللهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۝ نَزَّلَ عَلَيْكَ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنْزَلَ
التَّوْرَاةَ وَالْإِنْجِيلَ ۝ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِلنَّاسِ
وَأَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
اللهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَاللهُ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ

जिसने अच्छे काम किये, तो (उसका नफ़ा भी) उसी के लिये है और जिसने बुरे काम किये (उनका बबाल भी) उसी पर । ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! अगर हम भूल जाएँ या चूक जाएँ, तो हम को (उसके बबाल में) न पकड़ । और ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! जो लोग हमसे पहिले हो गुज़रे हैं, जिस तरह उन पर तूने (उनके गुनाहों की पादाश में अ (काम सख़्त का) बार डाला था, वैसा बार हम पर न डाल और ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! इतना बोझ, जिस (के उठाने) की हमको ताक़त नहीं, हमसे न उठवा और हमारे क़ुसूरों से दरगुज़र और हमारे गुनाहों को माफ़ कर और हम पर रहम फ़र्मा । तूही हमारा (हामी व) मददगार है । तू उन लोगों के मुक़ाबिले में, जो काफ़िर हैं, हमारी मदद कर ० ॥

सूरत आलि-इम्रान

मदनी यानी मदीने में नाज़िल हुई; इसमें २०० आयतें और २० रुकूअ हैं ।

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) अलिफ़् लाम्मीम ० अल्लाह (वह ज़ात पाक है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं । ज़िन्दा (कारख़ानए आलम का) संभालने वाला ० (ऐ पैग़म्बर !) उसी ने तुम पर यह किताब बर्हक़ उतारी, जो उन (आस्मानी किताबों) की तस्दीक़ करती है, जो इससे पहिले (नाज़िल हो चुकी) हैं और उसीने (इस से) पहिले लोगों की हिदायत के लिये तौरात और इन्जील उतारी और उसी ने (और चीज़ों को भी) नाज़िल किया, (जिस से हक़ व बातिल का) फ़र्क़ (ज़ाहिर होता है) । जो लोग ख़ुदा की आयतों से मुन्किर हैं, बेशक उनको सख़्त अज़ाब होगा और अल्लाह ज़बर्दस्त है, बदला लेने वाला ०–

(और) जिस ने शुभ कर्म किये, अपने लिये किये और जिस ने दुष्कर्म किये, (उस की मुसीबत) उस पर पड़ेगी (और अल्लाह के प्रति यह प्रार्थना बहुत अच्छी है कि) ऐ हमारे पालनकर्त्ता ! अगर हम (तेरे किसी हुक्म को) भूल जायं या (अनजान पन से) कोई अपराध कर बैठें, तो हमारी पकड़ न कीजो (और) ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! हम पर (ऐसा भारी) बोझ (सख़्त आज्ञाओं का) न डालियो, जैसा तूने हम से पहिले के लोगों * पर (उन की भूलों और अपराधों के पश्चात्) डाला था और ऐ हमारे पालनकर्त्ता ! हम से (वह भार) न उठवा–जिस (के उठाने) की हम में सामर्थ नहीं है और हमारे पापों को क्षमा कर, और हमें बख़्श दे, और हम पर दया कर, तू हमारा मौला है, तू क़ाफ़िरों की जाति के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर ॥

* टीका--पहिले के लोगों की तौबा बिना जान दिये स्वीकार न होती थी । चौथाई माल ज़कात देना पड़ता था । कपड़ा अशुद्ध हो जाता था, तो अशुद्ध भाग को काटने की आज्ञा थी, इत्यादि--हसन निज़ामी ॥

सूरत आलि-इम्रान

मदनी, अर्थात् मदीने में उतरी, इस में २०० आयतें और २० रुकूअ हैं ॥

अल्लाह (ही) की व्यक्ति है कि पूजा के योग्य है, उस के सिवा कोई पूजने योग्य नहीं । (वह हमेशा से) ज़िन्दा (है और वही इस संसार--चक्र का) संभालने वाला (है) । उसी ने (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व आलिही व सल्लम !) तुम पर इस सच्ची (और समय तथा सत्यता के अनुकूल) किताब (अर्थात् क़ुर्आन) को अवतीर्ण किया किया है, जो उन (समस्त आकाश से उतरी हुई किताबों) का समर्थन करता है, जो उस से पहिले (उतरी हैं) और (निस्सन्देह) उसी ने तौरेत व इन्जील को इस (क़ुर्आन) से पहिले लोगों की हिदायत (शिक्षा) के लिये उतारा (था) और उसी ने (सत्य व असत्य में भेद प्रकट कर देने के विचार से) मोजिज़े (सिद्धियां) भेजे॥

निस्सन्देह (विश्वास करो कि) जिन्हों ने अल्लाह की आयतों से इन्कार किया है, उन्हें घोर दुःख मिलेगा और अल्लाह (बड़ा शक्तिशाली और सब पर) ग़ालिब है (अर्थात् सब उस के आधीन हैं और) बदला लेने (की शक्ति रखने) वाला है ॥

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا
فِي السَّمَاءِ هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ
كَيْفَ يَشَاءُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ هُوَ الَّذِي
أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ آيٰتٌ مُحْكَمٰتٌ هُنَّ أُمُّ
الْكِتٰبِ وَأُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي
قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ
الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ
إِلَّا اللّٰهُ وَالرّٰسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا
بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُوا
الْأَلْبَابِ ۝ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا
وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝
رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ
اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ

बेशक अल्लाह (ऐसा दाना व बीना है कि) उससे कोई चीज़ छुपी नहीं, (न) ज़मीन में और न आस्मान में ० वही (क़ादिर मुत्लक़) है, जो माँ के पेट में जैसी चाहता है, तुम लोगों को सूरतें बनाता है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। ज़बर्दस्त है, हिकमत वाला ० (ऐ पैग़म्बर !) वही (ज़ात पाक) है, जिसने तुम पर यह किताब उतारी, जिस में से बाज़ आयतें पक्की (यानी साफ़ व सरीह) हैं कि वही अस्ल किताब हैं और (बाज़) दूसरी मुबहम (कि उनके मानों में कई पहलू निकल सकते हैं,) तो जिन लोगों के दिल में कजी है, वह तो क़ुर्आन की उन ही मुबहम आयतों के पीछे पड़े रहते हैं, ताकि फ़साद पैदा करें और ताकि उनके अस्ल मतलब की टोह लगाएँ, हालाँकि अल्लाह के सिवा उनका अस्ली मतलब किसी को मालूम नहीं। और जो लोग इल्म में बड़ी पायगाह रखते हैं, वह तो इतना ही कह कर रह जाते हैं कि इस पर हमारा ईमान है, (यह) सब (कुछ) हमारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से है और (समझाए) वही समझते हैं, जिनको अक़्ल है ० (और इल्म वाले यह दुआ माँगते रहते हैं कि) ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमको राह रास्त पर लाए पीछे हमारे दिलों को डावाँ डोल न कर और अपनी सरकार से हमको रहमत (का ख़लअत) अता फ़र्मा। कुछ शक नहीं कि तू बड़ा देने वाला है ० ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! तू एक (न एक) दिन-जिस (के आने) में (किसी तरह का) शुबहा ही नहीं, लोगों को (आमाल की जज़ा, सज़ा के लिये) इकट्ठा करे हीगा. (तो उस दिन हम पर तेरी मेहर की नज़र रहे) । बेशक अल्लाह वादा ख़िलाफ़ी नहीं किया करता (और उसका वादए क़यामत ज़रूर पूरा होकर रहेगा) ० जो लोग (दीन इस्लाम से) मुन्किर हैं--

---

(और) अल्लाह वास्तव में (इतना अभिज्ञ और सचेत) है कि उस से पृथ्वी व आकाश (किसी) में कोई चीज़ (और कोई बात) छिपी हुई नहीं है। वही तो है कि जैसी चाहता है, गर्भों (पेटों) में तुम्हारी सूरतें (आकृतियां) बना देता है। उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। वह (बड़ा) शक्ति शाली (और) बुद्धिमान है ॥

वही है, जिस ने (ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम) तुम पर इस किताब (क़ुर्आन) को उतारा है (कि) इस की कुछ आयतें दृढ़ (व मज़बूत) हैं (अर्थात् इन में जो वर्णन है, वह व्याख्या सहित है और बिलकुल स्पष्ट व साफ़ है और) यही (आयतें) अस्ल (अर्थात् मूल) पुस्तक हैं और कुछ (आयतें) अस्पष्ट हैं (कि उन के भिन्न भिन्न अर्थ निकल सकते हैं)। सो ऐसे मनुष्यों के अलावा जिन के दिलों में खोट है, वह तो उस की उन्हीं आयतों की ओर झुके रहते हैं, जिन की व्याख्या गोपनीय है (और अर्थ अस्पष्ट हैं) जिस से कि कोलाहल पैदा करें और उन की (ग़लत सलत) व्याख्या करें। यद्यपि इन का (ठीक ठीक) अर्थ सिवा अल्लाह तआला के कोई नहीं जानता और जो पक्के विद्वान् हैं, वह (केवल इतना) कहते हैं कि हमारा इन पर ईमान है। यह सब हमारे पालन कर्त्ता की ओर से हैं और नसीहत वही स्वीकार करते हैं, जो बुद्धिमान हैं ॥

(और जो पक्के आलिम अर्थात धुरंधर विद्वान् हैं, वह यह दुआ करते हैं कि) ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! हमें हिदायत देकर (और अपना सीधा मार्ग दिखाकर) हमारे दिलों में टेढ़ापन न डाल (और हमें गुमराही से बचा) और अपने द्वार से हम पर कृपा कर (और स्थिरता प्रदान कर) निस्सन्देह कि तू बड़ा दाता है ॥

(और कहते हैं कि) ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! निस्सन्देह तू (सब) लोगों को एक दिन एकत्रित करेगा, जिस (दिन) के आने में कुछ सन्देह नहीं है। (फिर तू उस दिन अपने वादे के अनुसार उन के कर्मों का फल देगा)। निस्सन्देह अल्लाह अपने वादे से फिरने वाला नहीं है। (अर्थात् वह कभी प्रतिज्ञा भङ्ग नहीं कर सकता) ॥

निश्चित रूप से काफ़िरों को—

تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
وَأُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ۝ كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ
وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ
بِذُنُوبِهِمْ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ قُلْ لِلَّذِينَ
كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ
الْتَقَتَا فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ
كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ مِثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ وَاللَّهُ
يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ مَنْ يَشَاءُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً
لِأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ
مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ
مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ
وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

وَاللَّهُ

अल्लाह के हाँ न तो उनके माल ही उनके कुछ काम आएँगे और न उनकी औलाद ही (उनके कुछ काम आएगी) और यही हैं, (जो) दोज़ख़ के ईंधन (होंगे) ० (इनकी भी वही) फ़िर्औन वालों और उनसे पहिले लोगों की सी गत (होनी है) कि उन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, तो अल्लाह ने उनको उनके गुनाहों की पादाश में धर पकड़ा और अल्लाह की मार बड़ी सख़्त है ० (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग (दीन इस्लाम से) मुन्किर हैं, उनसे कह दो कि कोई दिन जाता है कि (मुसलमानों के मुक़ाबिले में) तुम मग़लूब होगे और (मरे पीछे क़यामत के दिन दुबारा जिलाए और) जहन्नम की तरफ़ हाँके जाओगे और (क्या ही) बुरा सामान है, (जो तुम्हारे लिये वहाँ तय्यार है) ० (दीन इस्लाम से इन्कार रखने वालो !) उन दो (मुख़ालिफ़) गिरोहों में तुम्हारे (समझने के) लिये ख़ुदा (की क़ुद्रत की बड़ी भारी) निशानी (ज़ाहिर) हो चुकी है, जो (बद्र के मुक़ाम पर) एक दूसरे से गुथ गए। (उनमें से) एक गिरोह तो (मुसलमानों का था, जो) ख़ुदा की राह में लड़ता था और दूसरा (गिरोह) मुन्किरों का था, जिनको आँखों देखते मुसलमानों का गिरोह अपने से दो चन्द दिखाई दे रहा था और अल्लाह अपनी मदद से जिसकी चाहता है, ताईद फ़र्माता है। इसमें शक नहीं कि जो लोग (दिलकी) सूझ रखते हैं, उनके लिये इस (वाक़िए) में (बड़ी) इब्रत है ० लोगों (की बनावट इस तरह की वाक़े हुई है कि उन) को (दुनिया की) मर्ग़ूब चीज़ों यानी (मसलन) बीवियों और बेटों और सोने चाँदी के बड़े बड़े ढेरों और उम्दा उम्दा घोड़ों और मवेशियों और खेती के साथ दिल बस्तगी भली मालूम होती है, (हालाँकि) यह (तो) दुनिया की ज़िन्दिगी के (चन्द रोज़ा) फ़ायदे हैं–

उनकी दौलत और उनकी सन्तान अल्लाह (के दुःख अर्थात् दंड) से ज़रा न बचा सकेगी और यह (काफ़िर) ही (नर्क की) आग का ईंधन होंगे ॥

इनका भी वैसा ही परिणाम होता है, जैसा कि फ़िर्औन के वंशजों और उन से पहिले के लोगों का हुआ--कि उन्होंने हमारी आयतों को झूठा कहा और अल्लाह ने उनको उनके कुकर्मों के कारण मार डाला और अल्लाह (अत्यन्त) घोर दुःख (अर्थात दंड) देने वाला है ॥

(ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम) काफ़िरों से कह दो कि (ज़रा ज़रा सी सफलताओं पर क्या ऐंठे फिरते हो) अत्यन्त शीघ्र तुम (मुसलमानों से) पराजित होगे और (प्रलय के दिन) तुम्हें एकत्रित करके नर्क की ओर हंकाया जायगा और (नर्क बहुत) बुरा स्थान है॥

(ऐ काफ़िरो ! सोचो तो) तुम्हारे लिये (इन) दो समूहों की लड़ाई में (ही मुहम्मद सल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के सच्चे रसूल होने के यथेष्ट) चिन्ह या प्रमाण (मौजूद) हैं, (जिन्होंने बद्र के स्थान पर युद्ध में भाग लिया) एक समूह अल्लाह की राह में अर्थात् इस्लाम-धर्म के लिये लड़ रहा था और दूसरा (समूह) तुम काफ़िरों का था, जिन्हें आँखों देखते मुसलमान अपने से दुगने दिखाई देते थे। (यद्यपि मुसलमान वास्तव में काफ़िरों से आधे भी नहीं, केवल एक तिहाई थे अर्थात काफ़िरों की संख्या नौ सौ पचास थी और मुसलमानों की तीन सौ तेरह. मगर) अल्लाह जिसको चाहता है, अपनी (गुप्त) सहायता (व इमदाद) से (भी) शक्ति प्रदान कर देता है। इस (घटना या वृतान्त) में बुद्धिमान मनुष्यों के लिये नितान्त शिक्षा और नसीहत (का सामान) है ॥

(आम तौर पर) लोगों (के स्वभाव में यह बात शामिल है कि उन) को (उन) प्रिय वस्तुओं अर्थात स्त्रियों और पुत्रों और सोने चाँदी के इकट्ठा हुए ख़ज़ानों और मुख्य २ घोड़ों और दूसरे जानवरों और खेती (बाड़ी) के साथ सम्बन्ध रखना भला मालूम होता है, (परन्तु) यह (सब क्षणिक) सांसारिक जीवन के (आनन्द व) सुख हैं–

وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ۝ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ
مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ
مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ
بِالْعِبَادِ ۝ اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا
فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اَلصّٰبِرِيْنَ
وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ
بِالْاَسْحَارِ ۝ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ
وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ
مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ

और (हमेशा का) अच्छा ठिकाना तो उसी अल्लाह के हाँ है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि (अगर चाहो, तो) मैं तुम को इन (दुनियावी चन्द रोज़ा फ़ायदों) से बहुत बेहतर चीज़ बताऊँ । (वह यह कि) जिन लोगों ने परहेज़गारी इख़्तियार की, उनके लिये उनके पर्वर्दिगार के हाँ (बहिश्त के) बाग़ हैं, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही हैं (और वह) उनमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे और (बाग़ों के अलावा उनके लिये) पाक साफ़ बीबियाँ हैं और (सब से बढ़कर) .ख़ुदा की .ख़ुशनूदी (है) और अल्लाह बन्दों (के नेक व बद) को देख रहा है ० (यह) वह लोग (हैं) जो दुआएँ माँगा करते हैं कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हम (तुझ पर) ईमान लाए हैं । तू हम को हमारे गुनाह माफ़ फ़र्मा और हमको अज़ाब दोज़ख़ से बचा ० (यही लोग हैं,) सब्र करने वाले और सच बोलने वाले और (.ख़ुदा के) फ़र्मां बर्दार और (.ख़ुदा की राह में) ख़र्च करने वाले और आख़िर शब के वक़्तों में (तौबा व) इस्तिग़्फ़ार करने वाले ० (.ख़ुद) अल्लाह इस बात को गवाही देता है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं और फ़रिश्ते और इल्म वाले भी (गवाही देते हैं और नीज़ यह कि अल्लाह अद्ल व) इन्साफ़ के साथ (कारख़ानए आलम को) सँभाले हुए (है,) उसके सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बर दस्त (और) हिकमत वाला है ० दीन (हक़) तो .ख़ुदा के नज़दीक यही इस्लाम है (और बस) और अह्ल किताब (यानी यहूद व नसारा) ने--जो (दीन हक़ से) मुख़ालिफ़त की, तो (हक़ बात) मालूम होने के बाद (की और) आपस की ज़िद से (की)। और जो शख़्स .ख़ुदा की आयतों से मुन्किर हो, तो अल्लाह को (उससे) हिसाब लेते (और उसको ना फ़र्मानी की सज़ा देते) कुछ देर नहीं लगती ० (पस ऐ पैग़म्बर !) अगर (अह्ल किताब) इस पर भी तुम से हुज्जत करें, तो (उन से) कह दो–

(अन्यथा) उच्च कोटि का ठिकाना (और स्थायी सुख) अल्लाह ही के पास है ॥

(ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम उन से) कहो कि क्या मैं तुम्हें तुम्हारी इन (समस्त वर्णित वस्तुओं) से श्रेष्ठ वस्तु बतलाऊं । (जो) संयमी मनुष्यों के लिये उनके पालन कर्त्ता के यहां (मौजूद) है । (वह) स्वर्ग हैं कि उन के नीचे नहरें बहती हैं । जिन में (वह) सदैव सदैव रहेंगे और (वह) पवित्र स्त्रियाँ हैं और (वह) अल्लाह की प्रसन्नता है और अल्लाह (अपने) बन्दों (के पीछे समस्त बुरे कर्मों) को देख रहा है ॥

(परहेज़गार अर्थात् संयमी मनुष्य कौन होते हैं ?) वह--जो कहते हैं कि ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! हम (शुद्ध हृदय से) ईमान ले आये । अतएव तू हम को हमारे पाप क्षमा करदे और हम को (नर्क की) आग के दुःखों से सुरक्षित रख (और परहेज़गार अर्थात् संयमी कौन होते हैं ? वह) जो विपत्ति पड़ने के समय धैर्य रखते हैं और (कितनी ही हानि क्यों न हो जाय) सत्य बोलते हैं और (कितने ही मजबूर (विवश) क्यों न हों, अल्लाह की) आज्ञा का पालन किये जाते हैं और (कितने ही कंगाल क्यों न हों) अल्लाह की राह में कुछ न कुछ माल ख़र्च किये जाते हैं और (कितने ही शुभ कर्म क्यों न करें, हर समय) .ख़ुदा से डरते रहते हैं और रात के पिछले समय (उठ कर उस से अपने पाप) क्षमा कराने की प्रार्थना करते हैं ॥

(यह जो कुछ वह कहते और करते हैं) ठीक कहते और करते हैं । अल्लाह ऐसी ही श्रद्धा व भक्ति का अधिकारी और (योग्य है । स्वयं) अल्लाह (इसकी) गवाही देता है कि अल्लाह (वह) है कि उस के अतिरिक्त और कोई पूज्य नहीं और (इस गवाही में) फ़रिश्ते और (समस्त) विद्वान (शरीक हैं और पूज्य भी ऐसा कि न्याय व) इन्साफ़ के साथ (संसार के कारख़ाने को) संभाले हुए (है और गवाही वग़ैरा की कुछ ज़रूरत नहीं । सत्य बात यह है कि) अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, जो शक्तिशाली (भी है और) बुद्धिमान (भी और इस में भी सन्देह नहीं कि सच्चा और प्रिय) धर्म अल्लाह के समीप (केवल) इस्लाम (ही) है ॥

और (यह बात) किताब वालों (को मालूम थी, लेकिन उन्हों) ने (केवल) परस्पर के मनोमालिन्य (नाचाक़ी और द्वेष) के कारण ज्ञान प्राप्त हो जाने के बाद मुख़ालफ़त (विरोध) की ॥

और जिन्हों ने (जान बूझ कर) अल्लाह की आयतों से इन्कार किया (उन्हें ध्यान रहना चाहिये कि) अल्लाह (बहुत) जल्द उनसे हिसाब लेने वाला है ॥

अतएव अगर (यह लोग धर्म के मामले में) तुम से हुज्जत करें (और उलझे चले जावें) तो (उन से) कह दो–

أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَقُل لِّلَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ أَأَسْلَمْتُمْ ۚ فَإِنْ
أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوا ۖ وَّإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا
عَلَيْكَ الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ● إِنَّ
الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ
النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ
يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ
أَلِيمٍ ● أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ● أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ
أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ
كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ
وَهُم مُّعْرِضُونَ ● ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا
النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۖ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِم

ع

कि मैंने तो ख़ुदा के आगे अपना सरे तस्लीम ख़म कर दिया (यानी इस्लाम ले आया) और जो लोग मेरे पैरो हैं, (उनका भी यही हाल है) और (ऐ पैग़म्बर!) अह्ल किताब और (अरब के) जाहिलों से कहो कि तुम भी इस्लाम लाते हो (या नहीं?) पस अगर इस्लाम ले आएँ, तो बेशक राह रास्त पर पड़ लिये और अगर मुँह मोड़ें, तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम पर (हुक्म इलाही का) पहुँचा देना है और बस, और अल्लाह बन्दों (के हाल) को ख़ूब देख रहा है ० जो लोग अल्लाह की आयतों से इन्कार रखते हैं, और नाहक़ (ना रवा) पैग़म्बरों को क़त्ल करते और (नीज़) उन लोगों को क़त्ल करते, जो (उन्हें) इन्साफ़ करने को कहते। तो (ऐ पैग़म्बर!) ऐसे लोगों को अज़ाब दर्द नाक की ख़ुश ख़बरी सुना दो ० यही हैं जिन का सारा किया धरा दुनिया और आख़िरत (दोनों) में अकारत और न (ख़ुदा के मुक़ाबिले में) कोई उनका मददगार ० (ऐ पैग़म्बर!) क्या तुम ने उन (उलमाए यहूद के हाल) पर नज़र नहीं की, जिनको (फ़ह्म) किताब (तौरात) से एक हिस्सा मिला था, (अब) उनको किताबुल्लाह (यानी उसी तौरात) की तरफ़ बुलाया जाता है, ताकि (वही) उनका झगड़ा चुका दे। इस पर भी उनमें का एक गिरोह फिर बैठता है और वह (तस्लीम हुक्म तौरात से) मुनहरिफ़ हैं ० यह (ख़ुद सरी इन में) इस से (पैदा हुई) कि इन को दावा है कि हम को दोज़ख़ की आग छुएगी भी, तो बस गिन्ती के चन्द रोज़ और जो इफ़्तरा पर्दाज़ियाँ यह करते रहे हैं, उसीने इनको इनके दीन (के बारे) में मुग़ालते दे रक्खे हैं ०–

مَا كَانُوا

कि मैं तो (इस्लाम लाकर) अल्लाह के आगे अपना सर झुका चुका और मेरे अनुयायी भी, और उन किताब वालों और (मुश्रिक)
मूर्खों से पूछो कि तुम भी मुसल्मान होते हो (या नहीं?) सो अगर वह मुसल्मान हो जायं, तो (बहुत अच्छा) सचाई के मार्ग पर आ गये
और अगर न मानें (और इन्कार पर अड़े ही रहें,) तो तुम्हारा काम तो केवल तब्लीग़ (प्रचार करना) है, (जो तुम कर चुके)। और अल्लाह
अपने बन्दों को ख़ूब देख रहा है (तुम्हारी कोशिशें भी उस के सामने हैं और इन्कार करने वालों की ग़फ़लतें और शरारतें भी) ॥

यह (इसी प्रकार के) लोग (हैं) जो (सदैव से) अल्लाह के हुक्मों को झूठा बताते (रहे) हैं और नाहक़ (व अनुचित रूप से)
पैग़म्बरों की जानें (तक) ले लेते हैं और (पैग़म्बरों पर ही निर्भर नहीं है) जो लोग भी (सत्य व) न्याय का प्रचार करते हैं, उन को क़त्ल
कर डालते हैं *। उन (सब) को दारुण दुःख का मङ्गल-समाचार सुना दो ॥

* टीका – बनी इस्राईल ने एक दिन प्रातःकाल के समय चालीस पैग़म्बरों को बध किया। इस पर उन में के कुछ आदमी
जिन की संख्या एक सौ सत्तर थी, उन्हें धिक्कारने लगे। इन समझाने वालों (धिक्कार करने वालों) को भी शाम होने से पहिले पहिले मार
डाला गया। व्याख्या करने वालों की राय है कि इस आयत में उसी घटना का संकेत है:—हसन निज़ामी ॥

यही लोग हैं कि इनके कर्म (चाहे प्रकट रूप से अच्छे मालूम हों) संसार में (भी) व्यर्थ हुए और परलोक में (भी)। और
(प्रलय के दिन) कोई उन का (मित्र) सहायक न होगा ॥

(और) क्या तुमने इन (यहूदी विद्वानों की स्वच्छन्दता) पर ध्यान नहीं किया कि जिन्हें किताब (तौरात के समझने का
काफ़ी हिस्सा मिला है। (जब) उन्हें इसी अल्लाह की किताब (अर्थात् तौरात) की ओर बुलाया (और ध्यान दिलाया) जाता है कि
(वही) इन के झगड़े को तै कर दे, तो उन में का एक समूह मुंह फेर लेता है और वह (वास्तव में तौरात से भी) विमुख (ही) हैं † ॥

† टीका—एक यहूदी स्त्री से ज़िना (व्यभिचार) का अपराध हो गया था। यह स्त्री बहुत मालदार थी। जिस तरह हमारे
आज कल के विद्वान भी मालदारों की रिआयत करने लगे हैं, इसी प्रकार कुछ यहूदी विद्वानों ने इसे बचाना चाहा और कुछ विद्वान
तौरात की आज्ञा के अनुसार संगसारी (पत्थरों से मार डालना) का फ़तवा (व्यवस्था) देते थे। जब इन में यह झगड़ा
बहुत बढ़ा, तो सब की राय हुई कि चलो मुहम्मद (उन पर सलाम) से दर्याफ़्त करें। वह पैग़म्बरी के दावेदार हैं। देखें-क्या कहते हैं।
अतएव रसूलुल्लाह की ख़िदमत में आये। रसूलुल्लाह ने संगसारी के लिये फ़र्माया। संगसारी के मुख़ालिफ़ बोले कि हमारे यहाँ संगसारी का
हुक्म नहीं है। रसूलुल्लाह ने आज्ञा दी कि तौरात लाओ। वह आप को उम्मी (अनपढ़) ख़याल करके तुरन्त तौरात ले आये। लेकिन एक
पढ़े लिखे सहाबी भी वहाँ मौजूद थे। उन्हों ने हुक्म निकाल कर दिखा दिया:–हसन निज़ामी ॥

(उन का) यह (हाल) इस लिये (है) कि (उन के हृदय में समा गया है और) उनका कहना है कि नर्क की आग हमें (नहीं
छुयेगी और) छुयेगी भी, तो गिनती के कुछ दिन और उनकी (इसी प्रकार की) झूठी मन घड़त बातों ने उन को उन के धर्म (सम्बन्धी
मामलों) में धोखे में डाल रक्खा है ॥

مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ○ فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ
لَّا رَيْبَ فِيهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ○ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي
الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ
وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ
إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○ تُولِجُ الَّيْلَ فِي
النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ
مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ
تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ○ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ
الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ
يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا
مِنْهُمْ تُقٰىةً وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهُ وَإِلَى اللّٰهِ الْمَصِيرُ ○
قُلْ إِنْ تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمْهُ

फिर (देखना) उस दिन (यानी क़यामत को) जिस (के आने) में कुछ भी शुबहा नहीं (इनकी) कैसी (गत) बनेगी, जब कि हम इन को (अपने हुज़ूर में हिसाब किताब के लिये) जमा करेंगे और हर शख़्स को--जैसा उसने (दुनिया में) किया है, पूरा पूरा भर दिया जायगा और लोगों पर (किसी तरह का) ज़ुल्म नहीं होगा ० (ऐ पैग़म्बर !) तुम (तो यह) दुआ माँगो कि ऐ ख़ुदा ! (सारे) मुल्क के मालिक तू (ही) जिसको चाहे सल्तनत दे और तू (ही) जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और तू (ही) जिस को चाहे इज़्ज़त दे और तू (ही) जिसे चाहे ज़िल्लत दे, (हर तरह की ख़ैर व) ख़ूबी तेरे ही हाथ में है। बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है ० तू (ही गर्मियों में) रात को (घटा कर) दिन में शामिल कर दे और तू (ही जाड़ों में) दिनको (घटा कर) रात में शामिल कर दे और तू (ही) बे जान से जानदार और तू (ही) जानदार से बे जान निकाले और तू (ही) जिसको चाहे बे हिसाब रोज़ी दे। तू अपने फ़ज़्ल से मुसलमानों को मुल्कदारी और दुनियावी इज़्ज़त से भी हिस्सा दे ० मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमानों को छोड़ कर काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाएँ और जो ऐसा करेगा, तो उस से और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं, मगर (इस तदबीर से) किसी तरह पर उन (की शरारत) से बचना चाहो, (तो ख़ैर) और अल्लाह तुमको अपने (जलाल) से डराता है और (आख़िरकार) अल्लाह ही की तरफ़ जाना है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कह दो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, उसे छुपाओ या उसे ज़ाहिर करो। वह (बहर हाल) अल्लाह को तो (फ़िल वक़्त) मालूम हो ही जायगा–

क्या दशा होगी (उन लोगों की) जब हम उन्हें उस दिन कि जिसके होने में (बिलकुल) सन्देह नहीं (हिसाब किताब के लिये) एकत्रित करेंगे और प्रत्येक मनुष्य को उस के कर्मों का पूरा बदला दिया जावेगा और किसी पर ज़ुल्म (व अत्याचार) नहीं होगा। (पुरस्कार के अधिकारी को पुरस्कार और दण्ड के अधिकारी को दण्ड मिलेगा) ॥

ऐ मुहम्मद ! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम (तो यह) कहो कि ऐ अल्लाह ! (सारी सृष्टि के पालन कर्ता !) राज्य के (सच्चे) मालिक ! तू जिस को चाहता है, राज्य दे देता है और जिस से चाहता है, राज्य छीन लेता है और जिसको चाहता है, सम्मान प्रदान कर देता है और जिसको चाहता है, ज़लील करता है। तेरे ही हाथ में सब (प्रकार की) भलाई है। निस्सन्देह तू हर बात पर शक्ति रखता है (जो चाहे कर सकता है) ॥

रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है (अर्थात एक मौसम में हम लोग रातें बड़ी और दिन छोटे देख रहे होते हैं कि अचानक मौसम बदलता है और रात का कुछ हिस्सा दिन में बढ़ जाता है और यही हाल दिन का है, कि एक मौसम में दिन बड़ा होता है और दूसरे मौसम में उस का कुछ भाग रात में लग जाता है) और तू मुर्दे से ज़िन्दे को पैदा करता है और ज़िन्दे से मुर्दे को पैदा करता है। (अर्थात नुत्फ़ा (वीर्य) से जानदार मनुष्य या अंडे से पक्षी, बीज से वृक्ष, काफ़िरों के पेट से वलियों और नबियों को पैदा कर देता है और जानदार मनुष्य से नुत्फ़ा और पक्षी से अंडा, वृक्ष से बीज और वलियों और नबियों के वंश में दुष्ट काफ़िर) और जिसे चाहता है, बे शुमार अन्न प्रदान कर देता है (संसार के अल्लाह ! अर्थात जगत पिता तू कुफ़्र के अन्धकार को इस्लाम के प्रकाश में बदल दे और मुसलमानों के बे जान शरीर में जान डाल दे और इन्हें सांसारिक गौरव तथा राज्य का भी हिस्सेदार बना और साँसारिक वैभव से माला माल कर !!) ॥

मुसलमानों को चाहिये कि वह मुसलमानों को छोड़ कर काफ़िरों से मित्रता न जोड़ें और जो ऐसा करता है, उसे अल्लाह की दोस्ती से कोई लगाव नहीं है। (हाँ) मगर (ऐसी दशा में कि) तुम्हें उन (के विद्रोह) से किसी प्रकार बचना (अभीष्ट) हो (तो और) और अल्लाह तुम्हें अपने (जलाल या तेज) से डराता है और (अन्त में) अल्लाह ही की तरफ़ जाना है ॥

(ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम काफ़िरों से मेल जोल रखने वाले मुसलमानों से) कह दो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में होगा, चाहे तुम उस को छिपाओ, चाहे प्रकट करो, (हर दशा में) अल्लाह को उस का ज्ञान हो जायगा

और जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है, (वह तो सबको) जानता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० (लोगो ! उस दिन को पेश नज़र रक्खो) जब कि हर शख़्स जो कुछ भलाई (दुनिया में) कर गया है, (ख़ुदा के हाँ चलकर) उसको मौजूद पाएगा और (अला हाज़लक़यास) जो कुछ बुराई कर गया है, (उस को भी मौजूद पाएगा और) आर्ज़ू करेगा कि ऐ काश ! उस में और उस (दिन) में ज़मानए दराज़ (हायल) होता और अल्लाह तुम को अपने (जलाल) से डराता है और अल्लाह (अपने) बन्दों पर हद दर्जे की शफ़क़त (भी) रखता है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कह दो कि अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो, तो मेरी पैरवी करो कि अल्लाह (भी) तुम को दोस्त रक्खे और तुम को तुम्हारे गुनाह माफ़ करदे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कह दो कि अल्लाह और रसूल की फ़र्मांबर्दारी करो, फिर अगर (यह लोग) न मानें, तो (समझे रहें कि) अल्लाह ना फ़र्मानों को पसन्द नहीं करता ० अल्लाह ने दुनिया जहान के लोगों पर (तर्जीह देकर) आदम और नूह और ख़ानदान इब्राहीम और ख़ानदान इम्रान को चुन लिया है। (यह लोग एक ही आदम की) औलाद (थे)। एक की (नस्ल) एक और अल्लाह (सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० एक वक़्त था कि इम्रान की बीवी ने (ख़ुदा की जनाब में) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मेरे पेट में जो (बच्चा) है, उस को मैं (दुनिया के काम काज से) आज़ाद करके तेरी नज़र करती हूँ। तू मेरी तरफ़ से (यह नज़र) क़बूल फ़र्मा कि तू (सबकी) सुनता (और सबकी नियतों को) जानता है ० फिर जब उन्होंने बेटी जनी और अल्लाह को ख़ूब मालूम था कि उन्होंने किस रुतबे की (बेटी) जनी है (और वह उसकी हक़ीक़त से वाक़िफ़ न थीं) तो लगीं कहने कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! (अब क्या करूं) -

اللّٰهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ● يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا
عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ
بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا بَعِيْدًا ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ
وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ ● قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ
فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ● قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ● اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى
اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى
الْعٰلَمِيْنَ ● ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ● اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ● فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ

और अल्लाह को (तो) आकाशों और पृथ्वी की हर एक वस्तु का ज्ञान है और अल्लाह हर बात पर पूर्ण अधिकार रखता है॥

जिस दिन कि सब लोग अपने सुकर्मों को (भी) अपने सामने देख लेंगे और दुष्कर्मों को (भी, उस दिन) प्रत्येक मनुष्य यह चाहेगा कि क्या अच्छा होता, यदि उस (के दुष्कर्मों) के और उसके बीच (एक) लम्बी दूरी (विस्तृत समय) होती और अल्लाह तुमको अपने (दुःख व कष्ट व अज़ाब) से (भी) डराता है और अल्लाह (अपने) बन्दों पर अत्यन्त कृपालु (भी) है॥

(ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम-अल्लाह की महब्बत के दावेदारों से) कह दो कि अगर तुम अल्लाह को प्यार करते हो, तो मेरी आधीनता करो। अल्लाह भी तुम को प्यारा रक्खेगा और तुम्हें तुम्हारे अपराध क्षमा कर देगा और अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला और बड़ी कृपा करने वाला है (और यही उसकी महब्बत का अर्थ है कि पूजकों का प्रेम यह है कि वह अपने पूज्य के आधीन रहें अर्थात उस में भक्ति रक्खें और पूज्य का प्रेम यह है कि पूजक पर कृपा बनाये रक्खें)॥

(और) कह दो कि अल्लाह और (उसके) रसूल की आज्ञा का पालन करो। फिर अगर वह न मानें, तो (उन्हें जता दो कि) अल्लाह अवज्ञा करने वालों का दोस्त नहीं बनता॥

निःसन्देह, अल्लाह ने आदम और नूह और आल-इब्राहीम (इब्राहीम का बंश) और आल-इम्रान * (इम्रान का बंश) को समस्त संसार (और समस्त प्राणियों) में (श्रेष्ठ ठहरा कर पैग़म्बरी के लिये) चुन लिया है। उन में के कुछ लोग कुछ लोगों की सन्तान थे (और कुछ दूसरों की और आदम तो सब के पूर्वज हैं ही)। और अल्लाह (बड़ा सुनने वाला और ज्ञानवान है) सुनता है और सब जानता है (किसी का कोई वचन और किसी का कोई कर्म उस से छिपा नहीं है। जिस के वचन व कर्म को इस योग्य पाता है कि उस को पैग़म्बरी दे, तो उसे पैग़म्बरी प्रदान कर देता है। अतएव मुहम्मद (उन पर सलाम) के पैग़म्बर होने पर आश्चर्य करना व्यर्थ है । शङ्का और आश्चर्य से अलग रहो और उनकी आधीनता स्वीकार करो)॥

* टीका--इम्रान हज़रत मूसा के बाप का भी नाम था और हज़रत मर्यम के बाप का भी। लेकिन यहाँ हज़रत मर्यम के बाप और उन के ख़ानदान (वंश) ही से तात्पर्य मालूम होता है। क्योंकि आगे साफ़ साफ़ मर्यम के पिता इम्रान का वर्णन आ रहा है:--हसन निज़ामी॥

(मुहम्म सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम इन्हें वह क़िस्सा सुनाओ) जब इम्रान (मर्यम के पिता) की स्त्री (मर्यम की माता) ने कहा (था) कि ऐ पालन कर्त्ता ! मेरे पेट में जो (बच्चा) है, (साँसारिक झगड़ों से) स्वतन्त्र करके तेरी भेंट करती हूँ। मेरी (यह) भेंट स्वीकार कर। तू निश्चित रूप से (मेरे कहने को) सुनता और (मेरे हृदय की हालत को) जानता है॥

सो जिस समय उनके यहाँ (बच्चा) पैदा हुआ, तो उन्होंने (पश्चाताप से) कहा कि ऐ मेरे पालन कर्त्ता !

إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ط
وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنثَىٰ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا
مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ
الرَّجِيمِ ۝ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنبَتَهَا
نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا كُلَّمَا دَخَلَ
عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا قَالَ
يَا مَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ إِنَّ
اللَّهَ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ هُنَالِكَ
دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ
ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝ فَنَادَتْهُ
الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ
يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَ
سَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ۝ قَالَ

मैं ने तो यह लड़की जनी है और लड़का लड़की की तरह (गया गुज़रा) नहीं होता और मैंने इसका नाम मर्यम रक्खा है और मैं इसको और इसकी नस्ल को शैतान मर्दूद (के इग़वा) से तेरी पनाह में देती हूँ ० तो उनके पर्वर्दिगार ने (उनकी नज़र यानी) मर्यम को .ख़ुशी से क़बूल फ़र्मा लिया और उसको ख़ूब अच्छा उठाया और ज़करीया को उनका ख़बरगीराँ बनाया। जब जब ज़करीया मर्यम (के देखने को उन) पास (उनके रहने के) हुजरे में जाते, तो मर्यम के पास (मेवाजात की क़िस्म में से कुछ न कुछ) खाने की चीज़ मौजूद पाते। (बारे एक दिन मर्यम से) पूछा कि ऐ मर्यम! यह (खाने की चीज़) तुम्हारे पास कहाँ से (आती है? मर्यम ने) कहा, यह .ख़ुदा के हाँ से (आती है)। अल्लाह जिस को चाहता है, बे हिसाब रोज़ी देता है ० (यह जवाब सुन कर) उसी दम ज़करीया ने अपने पर्वर्दिगार से दुआ की (और) कहा कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार! अपनी जनाब से मुझ को (भी) नेक औलाद इनायत फ़र्मा कि तू (सब की) दुआएँ सुनता है ० अभी ज़करीया हुजरे में खड़े दुआ ही माँग रहे थे कि उनको फ़रिश्तों ने आवाज़ दी कि .ख़ुदा तुम को (एक फ़र्ज़न्द) यह्या (के पैदा होने) की .ख़ुश ख़बरी देता है (और उन में इतनी फ़ज़ीलतें होंगी कि ईसा जो सिर्फ़) .ख़ुदा के हुक्म (फ़र्मा देने से बिन बाप के पैदा होंगे—यह्या उन) की (पैग़म्बरी की तस्दीक़ करेंगे और (लोगों के) पेशवा होंगे और (औरतों की सोहबत से) रुके रहेंगे और नबी होंगे (ग़रज़ अल्लाह के) नेक बन्दों में से होंगे ०—

मेरे यहां (तो) लड़की पैदा हुई है और अल्लाह अधिक जानता था कि उन्हों ने कैसी लड़की जनी है (और जिस लड़के की उन्हें इच्छा थी) वह लड़का (भी) उस लड़की की बराबरी नहीं कर सकता। (मगर इम्रान की स्त्री ने कहा ख़ैर) मैंने उस का नाम मर्यम अर्थात अल्लाह की दासी रक्खा और मैं उसे और उस की सन्तान को तेरी शरण में देती हूं (कि) दुष्ट शैतान से (सुरक्षित रहें)॥

अतएव उस के पालन कर्त्ता ने उस (भेंट) को ऐसी मेहरबानी से स्वीकार किया, जो स्वीकार करने का हक़ था और उस का बहुत अच्छे तरीक़े से पालन पोषण किया और उसे ज़करिया पैग़म्बर (उन पर सलाम) को सौंप दिया। जब ज़करिया मर्यम के पास (उन के) हुजरे (स्थान) में जाते, तो उन के सामने खाने की वस्तुएं (रक्खी) पाते (और कभी कभी बे मौसम के मेवे भी। एक दिन उन्हों ने) पूछा ऐ मर्यम! यह (वस्तुएं) तुम्हें कहां से मिलती हैं, उन्होंने जवाब दिया अल्लाह के यहां से। अल्लाह जिस को चाहता है, अनगिनत रोज़ी पहुँचाता है॥

(यह उत्तर सुन कर) ज़करिया (उन पर सलाम) को ख़्याल हुआ कि मैं बूढ़ा हो गया और मेरे औलाद नहीं हुई, तो मैं .ख़ुदा से प्रार्थना करूं—ताकि वह इस योग्य आयु न होते हुए भी मुझे पुत्र प्रदान करदे। आप ने उसी जगह अपने पालनकर्त्ता से (पुत्र के लिये) दुआ की-कहा, ऐ मेरे पालन कर्त्ता! अपने द्वार से मुझे नेक संतान प्रदान कर। तू प्रार्थनाओं को सुनाता है। (ज़करिया की इस प्रार्थना पर अल्लाह ने उन्हें बे मौसम के फलों की तरह बेटा दे दिया)॥

वह (मर्यम के) स्थान में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे (और प्रार्थना कर रहे थे कि) इन को फ़रिश्तों ने आवाज़ दी कि अल्लाह तुम्हें (एक बेटे) यह्या की सूचना देता है (अर्थात् अल्लाह ने उस का नाम भी रख दिया है--यह्या। यह लड़का) अल्लाह का कलमा * (अर्थात हज़रत ईसा के रूहुल्लाह होने) की तसदीक़ करेगा और (स्वयं भी) सरदार तथा इन्द्रियों पर क़ाबू रखने वाला और नबी होगा। (तात्पर्य यह है कि बड़ा) सदाचारी मनुष्य होगा॥

* टीका—हज़रत ईसा को अल्लाह का कलमा इस लिये कहा गया है कि आप बे बाप के केवल .ख़ुदा के कलमे कुन (ऐसा वाक्य जो किसी कार्य्य के हो जाने के लिये कहा जाय) कहने से पैदा हुये थे:—हसन निज़ामी॥

رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِىَ الْكِبَرُ
وَامْرَاَتِىْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ
قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّىْٓ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ
النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِىِّ وَالْاِبْكَارِ ۝ وَاِذْ قَالَتِ
الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ
وَاصْطَفٰكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِىْ
لِرَبِّكِ وَاسْجُدِىْ وَارْكَعِىْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝ ذٰلِكَ
مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ
اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا
كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ۝ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ
يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ
الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا

(ज़करीया ने) अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मेरे (हाँ) कैसे लड़का हो सकता है और (मेरा हाल यह है कि) मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है और मेरी बीबी बाँझ है। (अल्लाह ने) फ़र्माया इसी तरह अल्लाह जो चाहता है, करता है ० (ज़करीया ने) अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मेरे (इत्मिनान के) लिये कोई निशानी ठहरा, (जिस से मैं समझूँ कि मेरी दुआ़ क़बूल हुई। अल्लाह ने) फ़र्माया निशान जो तुम माँगते हो यह है कि तीन दिन तक लोगों से बात न करो, मगर इशारतन (यानी रोज़े रखना) और (रोज़ों में) कसरत से अपने पर्वर्दिगार का ज़िक्र और सुबह व शाम (उसी की) तस्बीह (व तक़्दीस) करते रहना ० और जब फ़रिश्तों ने (मर्यम से) कहा ऐ मर्यम ! तुम को अल्लाह ने बर्गुज़ीदा फ़र्माया और (गुनाह की आलूदगियों से भी) तुमको पाक साफ़ रक्खा और (इसी वजह से) तुम को दुनिया जहान की औरतों पर (तर्जीह देकर) इन्तिख़ाब फ़र्माया ० (तो) ऐ मर्यम ! अपने पर्वर्दिगार की फ़र्मां बर्दारी करती रहो और (उसकी जनाब में) सज्दा किया करो और रुकूअ़ करने वालों (यानी नमाज़ियों) के साथ (तुम भी) रुकूअ़ में झुकती रहो ० (ऐ पैग़म्बर !) यह ग़ैब की ख़बरें हैं, जो हम तुम को वही के ज़रीये से पहुँचाते हैं और (ऐ पैग़म्बर !) न तो उन (दावेदारान सर परस्ती मर्यम) के पास तुम उस वक़्त मौजूद थे, जब वह लोग अपनी क़लम (नदी में) डाल रहे थे कि कौन (है, जिसका क़लम नदी के चढ़ाव की तरफ़ को बहे और वह) मर्यम का सरपरस्त बने और न तुम उनके पास उस वक़्त मौजूद थे, जब कि वह आपस में झगड़ रहे थे ० (और) जब फ़रिश्तों ने (मर्यम से) कहा कि ऐ मर्यम (सिर्फ़ ख़ुदा के हुक्म से एक लड़का तुम्हारे बल से पैदा होगा, सो) ख़ुदा तुम को अपने (उस) हुक्म की ख़ुश ख़बरी देता है (और) उस का नाम होगा, ईसा मसीह इब्न मर्यम। दुनिया–

(ज़करिया ने) पूछा ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! मेरे (यहाँ) बेटा किस तरह होगा ? (क्या मुझे फिर जवान किया जायगा)। मुझ पर तो बुढ़ापा आ चुका है और मेरी स्त्री बांझ है। आज्ञा हुई (जवानी की ज़रूरत नहीं। तुम दोनों को इन्हीं हालतों अर्थात दशाओं में अल्लाह तआ़ला बच्चा देगा)। इसी तरह अल्लाह जो चाहता है, करता है ॥

(अधिक विश्वास के लिये ज़करिया ने) कहा, ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! मुझे कोई निशानी बतादे (जिस से कि स्त्री के गर्भ हो, तो मैं समझ लूं कि दुआ़ क़बूल करली गई)। फ़र्माया तुमको इस से पता चल जायगा कि (उस समय) तीन दिन तक इशारे करने के सिवा लोगों से बोल न सकोगे। (लेकिन ख़ुदा तआ़ला का ज़िक्र कर सकोगे। अतएव उस समय) अपने पालन कर्त्ता का ख़ूब ज़िक्र करना और शाम व सुबह उस की पाकी का वर्णन करते रहना ॥

और (वह समय भी वर्णन करने योग्य है) जब फ़रिश्तों ने (मर्यम से) कहा कि ऐ मर्यम ! अल्लाह ने तुम्हें श्रेष्ठ और मुख्य बना दिया है और (पापों में सनने से) बरी रक्खा है और समस्त संसार की स्त्रियों पर तुम्हें श्रेष्ठता दी है ॥

(अतएव) ऐ मर्यम ! अपने पालन कर्त्ता की आज्ञा का पालन करती रहो और (उस के आगे) सज्दे (मस्तक नवाना) करती रहो और रकूअ़ करने वालों (अर्थात नमाज़ियों) के साथ रकूअ़ करती (अर्थात नमाज़ पढ़ती) रहो ॥

(और ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) यह (सब) ग़ैब (अदृष्ट) की ख़बरें हैं, जो हमने तुम को वही (ख़ुदाई सन्देश) के द्वारा पहुँचाई हैं और (क्या काफ़िर इतना नहीं समझते कि तुम उम्मी हो। तुम्हें इन वृतान्तों की कहां से सूचना मिल सकती है। ज़करिया और मर्यम और यहाा के वृतान्त तुम को क्या मालूम) ॥

तुम उन (बैतुलमक़्दस के पुजारियों) के पास (उस समय उपस्थित) न थे, जब वह अपने क़लमों को (दरिया में) डाल रहे थे (यह देखने के लिये कि) कौन उन में से मर्यम का रक्षक होता है और तुम (उस समय भी) उनके पास न थे, जब वह झगड़ रहे थे (और यह निपटारा कर रहे थे कि सब अपने क़लम दरिया में डाल दें और जिस का क़लम चढ़ाव की तरफ़ बहे, वह मर्यम को पाले पोसे। आख़िर यह नेअ़्मत अर्थात मर्यम के पालन पोषण करने का भार मर्यम के मौसा ज़करिया के हिस्से में आया *) ॥

* टीका--बैतुलमक़्दस के पुजारियों में से हर मनुष्य की यह इच्छा थी कि बीबी मर्यम की सेवा और पालन पोषण का भार उस के ज़िम्मे कर दिया जाय और इस सवाल पर उनके बीच बहुत झगड़ा था। आख़िर यह तै पाया कि वह अपने अपने तौरेत लिखने के क़लम दरिया में डालें और जिस का क़लम चढ़ाव की ओर बहे, उसे इस पुण्य का अधिकारी समझा जाय:--हसन निज़ामी ॥

(अब तुम इन काफ़िरों को आगे का वृतान्त सुनाओ) जब फ़रिश्तों ने (मर्यम से) कहा कि ऐ मर्यम ! (सिर्फ़ अल्लाह की आज्ञा से तुम्हारे एक बेटा होगा)। अल्लाह तुम्हें इस आज्ञा का ज्ञान कराता है। उस का नाम मर्यम का बेटा मसीह, ईसा (रक्खा गया)। वह दुनिया में भी उच्च पद पावेगा—

وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝ وَيُكَلِّمُ النَّاسَ
فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ قَالَتْ
رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ
قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا
فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ وَيُعَلِّمُهُ
الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۝
وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ
مِّنْ رَّبِّكُمْ اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ
الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ
وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ
الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ
وَمَا تَدَّخِرُوْنَ فِيْ بُيُوْتِكُمْ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَمُصَدِّقًا

और आख़िरत (दोनों) में रूदार और (.ख़ुदा के) मुक़र्रब बन्दों में से (एक मुक़र्रब बन्दा) ० और झूले में और बड़ी उम्र का होकर लोगों के साथ (यक्साँ) कलाम करेगा और (अल्लाह के) नेक बन्दों में से (एक वह भी) होगा ० वह लगीं कहने कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मेरे (हाँ) कैसे लड़का हो सकता है, हालाँकि मुझको तो किसी मर्द ने छुआ तक भी नहीं। (अल्लाह तआ़ला ने) फ़र्माया, इसी तरह अल्लाह जो चाहता है, पैदा करता है । जब वह किसी काम का करना ठान लेता है, तो बस उसे फ़र्मा देता है कि हो !! और वह हो जाता है ० और .ख़ुदा (तुम्हारे बेटे) ईसा को (तमाम) कुतुब आस्मानी और अक्ल की बातें और (ख़ास कर) तौरात और इन्जील (सब कुछ) सिखा देगा ० और (वह हमारे) पैग़म्बर (होंगे, जिन को हम) बनी इस्राईल की तरफ़ (भेजेंगे और वह उनसे कहेंगे कि) मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से निशानियाँ (यानी मोजिज़े) लेकर आया हूँ। (और मुझ को .ख़ुदा ने यह .क़ुद्रत दी है) कि मैं तुम्हारे (इत्मिनान ख़ातिर के) लिये मिट्टी से परन्द की शक्ल का सा (एक जानवर) बनाऊं, फिर उसमें फूंक मार दूं और वह .ख़ुदा के हुक्म से उड़ने लगे और .ख़ुदा ही के हुक्म से मादर ज़ाद अन्धों और कोढ़ियों को भला चङ्गा और मुर्दों को ज़िन्दा कर दूं और जो कुछ तुम खाकर आओ वह, और जो कुछ तुमने अपने घरों में सैंत रक्खा है (वह सब) तुम को बता दूं। अगर तुम में ईमान (की सलाहियत) है, तो बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये (.क़ुद्रत .ख़ुदा की बड़ी) निशानी है ०–

और परलोक में भी और (संक्षिप्त बात यह है कि) वह अल्लाह के मुख्य भक्तों में से है। (बचपन के) झूले (में पड़े रहने के समय) में बातें करेगा और बड़ा होकर (भी) और (उस की गणना) बहुत नेक बन्दों में होगी॥

मर्यम ने कहा या अल्लाह ! मेरे लड़का कैसे हो सकता है ? मुझे तो किसी मर्द ने छुआ (तक) नहीं। फ़र्माया, ऐसे ही (होगा) अल्लाह (में सब शक्ति है) जिसे (जैसे) चाहे पैदा करदे। जब अल्लाह किसी काम का इरादा करता है, तो बस उससे इतना कहता है कि हो जा ! सो वह हो जाता है। (अल्लाह को साधनों के आधीन न समझो अर्थात अल्लाह को किसी काम के करने के लिये साधन जमा करने की आवश्यकता नहीं है। अल्लाह उसे बिना बाप के पैदा करेगा) और उसे ज्ञान व बुद्धिमानी सिखायेगा और तौरेत व इंजील (सिखायेगा) और बनी इस्राईल (इस्राईल का वंश) के पास (उसे) पैग़म्बर (बना कर भेजेगा, जिन से वह कहेगा कि) मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालन कर्त्ता की निशानियां लेकर आया हूँ। (प्रथम) यह कि मैं तुम्हें पक्षी (की शकल) की सी (एक) शकल मिट्टी से बना (कर) देता हूँ। फिर उस के भीतर फूंक मारता हूँ। अल्लाह की आज्ञा से वह (सचमुच का) पक्षी बन जायगा (और उड़ने लगेगा)। और (दूसरे यह) कि अल्लाह के हुक्म से जन्म के अन्धे और कोढ़ी को अच्छा और मुर्दे को ज़िन्दा कर सकता हूँ और तुम्हें बतला सकता हूँ कि तुम ने क्या क्या खाया है और क्या क्या घर में रख छोड़ा है। अगर तुम में ईमान (लाने की सुपात्रता) है, तो यह बातें (मेरी पैग़म्बरी और) तुम्हारे (ईमान लाने के) लिये (यथेष्ट) निशानियां हैं–

لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ
الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ۝ إِنَّ اللّٰهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝ فَلَمَّا أَحَسَّ
عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِي إِلَى
اللّٰهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللّٰهِ آمَنَّا
بِاللّٰهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝ رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا
أَنزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ
وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللّٰهُ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ۝
إِذْ قَالَ اللّٰهُ يَا عِيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ
إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ
اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ

ع ٦

تَخْتَلِفُونَ

और (हाँ) तौरेत, जो मेरे ज़माने में मौजूद है, मैं उसकी तस्दीक़ करता हूँ और (मेरे पैग़म्बर बनाकर भेजने से) एक ग़रज़ यह भी है कि बाज़ चीज़ें जो तुम पर हराम हैं, (ख़ुदा के हुक्म से उनको) तुम्हारे लिये हलाल कर दूँ और (ज़बानी दावे से नहीं, बल्कि) मैं तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से निशानियाँ (यानी मोजिज़े) लेकर तुम्हारे पास आया हूँ, तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो ० बेशक अल्लाह (ही) मेरा पर्वर्दिगार है और (वही) तुम्हारा पर्वर्दिगार है, तो उसी की इबादत करो (कि) यही (नजात का) सीधा रस्ता है ० तो जब ईसा ने यहूद (की तरफ़) से इन्कार देखा, तो पुकार उठे कि कोई है, जो अल्लाह की तरफ़ होकर मेरी मदद करे ? (यह सुन कर) हवारी बोले कि अल्लाह के तरफ़दार हम । हम अल्लाह पर ईमान लाए और (हज़रत ! आप भी) इस बात के गवाह रहिये कि हम तावेदार हैं ० (और जनाब इलाही में अर्ज़ किया कि) ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! (इन्ज़ील) जो तूने उतारी है, हम उस पर ईमान लाए और हमने (तेरे) रसूल (यानी ईसा) की पैरवी इख़्तियार करली । तू हमको (भी उन की) तस्दीक़ करने वालों में लिख रख ० और यहूद ने (ईसा से) दाव किया और अल्लाह ने (उन से) दाव किया और दाव करने वालों में अल्लाह (सब से) बेहतर (दाव करने वाला) है ० उसी ज़माने में अल्लाह ने (ईसा से) फ़र्माया कि ऐ ईसा ! दुनिया में तुम्हारे रहने की मुद्दत पूरी करके हम तुमको अपनी तरफ़ उठा लेंगे और काफ़िरों (की सोहबत की गन्दिगी) से तुमको पाक करेंगे और जिन लोगों ने तुम्हारी पैरवी की है, उनको रोज़ क़यामत तक (तुम्हारे) मुन्किरों (यानी यहूद) पर ग़ालिब रक्खेंगे, फिर तुम (सब) को हमारी तरफ़ लौट कर आना है । तो (उस दिन) जिन (जिन) बातों में तुम (दुनिया में) इख़्तिलाफ़ करते थे, हम उन (के बारे) में तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर देंगे ०–

और जो किताब मुझ से पहले आ चुकी है अर्थात् तौरेत उसका मैं समर्थन करता हूँ । (वह सच्ची है और अल्लाह की भेजी हुई) । और (मेरे प्रकट होने अर्थात् पैदा होने का एक उद्देश) यह (भी है) कि कुछ चीज़ें-जो (अब तक) तुम पर हराम थीं, उन्हें हलाल (व जायज़) कर दूँ और मैं तुम्हारे पास पैग़म्बरी के प्रमाण (और शरीअत) लेकर आया हूँ । अतएव अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो और मेरा कहना यही है कि अल्लाह मेरा भी पालन कर्त्ता है और तुम्हारा भी पालन कर्त्ता है, उसी की पूजा करो । यह कामयाबी की सीधी और सही राह है॥

(लेकिन यहूदी कब किसी की सुनने वाले थे, वह उल्टे सुनाने वाले के शत्रु हो गये और उसकी जान लेने पर उतर आये) । सो जब ईसा ने उन (की ओर) से इन्कार पाया (और देखा कि क़त्ल की तैयारियां हो रही हैं) तो बोले कौन कौन अल्लाह की राह में मेरा मददगार (बनता) है । हवारियों* ने कहा हम अल्लाह (के धर्म) के सहायक हैं । हम अल्लाह पर ईमान लाये और आप गवाह रहियेगा कि हम मुसल्मान हैं ॥

* टीका–हवारी के अर्थ धोबी के हैं । दो धोबी थे, जो सब से पहिले हज़रत ईसा पर ईमान लाये थे । फिर उनके बाद दस और आदमी ईसाई हुए । यह धोबी नहीं थे, लेकिन अपने से पहिले के ईसाइयों के साथ मिल कर हवारी कहलाये:– हसन निज़ामी ॥

(और अल्लाह के द्वार में उन्होंने प्रार्थना की कि) ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! हम तेरी उतारी हुई (किताब इन्जील) पर ईमान ले आये और हमने तेरे रसूल (ईसा) का अनुयायी होना (स्वीकार) कर लिया । अतएव तू हमको (अपनी अद्वैता और ईसा की पैग़म्बरी का) सच मानने वालों में लिख ले । (मगर यह दावा करने वाले कुछ काम न आये और समय पर भाग निकले) ॥

और (यहूदियों ने ईसा के ख़िलाफ़) जोड़ तोड़ किये और अल्लाह ने (उनका †) उपाय कर दिया और अल्लाह उत्तमोत्तम उपाय करने वाला है । (उसका कोई क्या मुक़ाबला कर सकता था) ॥

† टीका–यहूदियों ने उस समय के बादशाह को बहकाया और हज़रत ईसा के लिये सूली का हुक्म ले लिया । मगर अल्लाह ने ऐसा प्रबन्ध किया कि एक और ख़ूनी की शकल हज़रत ईसा जैसी बन गई, जो उनके साथ जेलख़ाने में था और उसको हज़रत ईसा के धोखे में सूली दे दी गई:–हसन निज़ामी॥

(ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम उस वृत्तान्त का भी वर्णन करदो) जब अल्लाह ने (ईसा से) फ़र्माया था कि ऐ ईसा ! मैं तुम्हारी जीवन-अवधि पूरी करूंगा और (जीवन-अवधि पूरी करके) तुम्हें अपनी तरफ़ उठाऊंगा और तुम्हें उन लोगों से, जो (तुम्हारे) मुन्किर हैं-मुक्ति दूंगा और तुम्हारे अनुसरण करने वालों को उन काफ़िरों अर्थात् यहूदियों पर प्रलय तक के लिये विजयी कर दूंगा । फिर तुम सबको मेरी ही तरफ़ वापिस आना होगा और मैं उन बातों के बारे में, जिनके विषय में तुम (संसार में) झगड़ रहे हो, तुम्हारे परस्पर फ़ैसला करूंगा ॥

تختلفون ● فاما الذين كفروا فاعذبهم
عذابا شديدا في الدنيا والاخرة وما لهم
من نصرين ● واما الذين امنوا وعملوا الصلحت
فيوفيهم اجورهم والله لا يحب الظلمين ●
ذلك نتلوه عليك من الايت والذكر الحكيم ●
ان مثل عيسى عند الله كمثل ادم خلقه
من تراب ثم قال له كن فيكون ● الحق
من ربك فلا تكن من الممترين ● فمن حاجك
فيه من بعد ما جاءك من العلم فقل
تعالوا ندع ابناءنا وابناءكم ونساءنا و
نساءكم وانفسنا وانفسكم ثم نبتهل فنجعل
لعنت الله على الكذبين ● ان هذا لهو
القصص الحق وما من اله الا الله وان الله

तो जिन्होंने (तुम्हारी नुबूवत से) इन्कार किया, उन को तो दुनिया और आख़िरत (दोनों) में बड़ी सख़्त मार देंगे और कोई उन का (हामी व) मददगार न होगा (कि उनको हमसे बचाए) ० और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल (भी) किये, तो ख़ुदा उन को उन के सवाब पूरे पूरे देगा और अल्लाह ना फ़र्मानों को पसन्द नहीं करता ० (ऐ पैग़म्बर !) यह जो हम तुम को पढ़ पढ़ कर सुना रहे हैं, आयात (इलाही) और जँचे तुले तज़्किरे हैं ० अल्लाह के हाँ जैसे आदम वैसे ईसा कि (ख़ुदा ने) मिट्टी से आदम (के पुतले) को बना कर उस को हुक्म दिया कि (आदम) बन, और वह (आदम) बन गया ० (ऐ पैग़म्बर ! यह है) हक़ (बात, जो तुम को) तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से (बताई जाती है) । तो कहीं तुम भी शक करने वालों में न हो जाना ० फिर जब तुम को (ईसा की) हक़ीक़त मालूम हो चुकी । इस के बाद भी तुम से उन के बारे में कोई कट हुज्जती करने लगे, तो (ऐसे लोगों से) कहो कि (अच्छा तो मैदान में) आओ। (इधर) हम अपने बेटों को बुलाएँ और (उधर) तुम अपने बेटों को (बुलाओ) और (नीज़) हम अपनी बेटियों को (बुलाएँ) और तुम अपनी बेटियों को (बुलाओ) और हम अपने तईं (भी शरीक करें) और तुम (भी) अपने तईं (शरीक करो) । फिर हम (सब मिल कर ख़ुदा की बार्गाह में) गिड़ गिड़ाएँ और झूटों पर ख़ुदा की लानत करें ० (ऐ पैग़म्बर !) यह (जो हम ने फ़र्माया) बेशक यही बयान वाक़ई है और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और बेशक अल्लाह–

अतएव जिन्हों ने (ऐ ईसा !) कुफ़्र किया है (और तुम्हारी पैग़म्बरी को नहीं माना है,) उन्हें अत्यन्त दारुण दुःख (अज़ाब) दूंगा । संसार (में भी) और परलोक में (भी) और उन्हें कोई सहायक (मेरे मुक़ाबले में) न मिल सकेगा ॥

और जो (तुम पर) ईमान ले आये और सुकर्म करते रहे, उन को उन (के कर्मों) का पूरा फल दिया जायगा और अल्लाह ज़ालिमों (अत्याचारियों) को पसंद नहीं करता ॥

(ऐ हमारे रसूल !) यह जो (पिछले लोगों की कथा व वृतान्त) हम तुम को पढ़ कर सुना रहे हैं (यह क़िस्से कहानियां नहीं हैं । समझदारों के लिये तुम्हारे सच्चे होने की) निशानी (और प्रमाण) हैं और (यह) पक्के (और बिलकुल सच्चे) वृतान्त हैं । (इन को कोई ग़लत साबित नहीं कर सकता) ॥

(और यह जो ईसा के बे बाप पैदा होने पर ईसाई उन्हें अल्लाह का बेटा कहने लगे हैं, यह उन की नासमझी है) । अल्लाह के समीप (तो) ईसा का वही पद है, जो आदम का था (बल्कि) आदम को (तो केवल) मिट्टी से पैदा किया था (उन के बाप के साथ मां भी नहीं थीं) । अतएव इस (मिट्टी के पुतले) से कहा गया प्रकट हो जा, अतः वह हो गया (ईसाइयों के हिसाब से आदम उच्च श्रेणी के अल्लाह के बेटे होने चाहियें और अगर आदम अल्लाह के बेटे नहीं हैं, तो ईसा अल्लाह के बेटे कैसे हो सकते हैं ?) ॥

(ऐ मुहम्मद ! यह बातें जो तुम्हें) तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (बताई गई हैं, बिलकुल) सत्य (और वास्तविक) हैं । अतः तुम सन्देह करने वालों में न मिल जाना । (जिस अल्लाह में आदम को बे बाप और बिना माँ पैदा करने की शक्ति है, उसी ने ईसा को बिना बाप के पैदा कर दिया, तो क्या आश्चर्य की बात हुई । अल्लाह ने केवल अपनी महिमा प्रकट की) ॥

अतः इस के बाद कि तुम्हें (सत्यता का) ज्ञान हो गया है, कोई ईसा के बारे में तुम से तर्क करे (और झगड़े) तो (उस से) कह दो, आओ हम अपने पुत्रों को बुला लें और तुम अपने पुत्रों को (बुला लो) और हम अपनी पुत्रियों को (तलब करें) और तुम अपनी पुत्रियों को (तलब करलो) और स्वयं हम (भी) हों और तुम (भी) हो । फिर (सब मिल कर) दुआ माँगें और झूठों पर अल्लाह की लानत (धिक्कार) करें * ॥

* टीका--अतएव यह अवसर उपस्थित हुआ । रसूलुल्लाह अपने नाती हज़रत इमाम हुसैन को गोद में लेकर और दूसरे नाती हज़रत इमाम हसन की उङ्गली पकड़ कर निकले और आप की पुत्री हज़रत फ़ातिमा और दामाद हज़रत अली रसूलुल्लाह के पीछे पीछे थे । उधर से ईसाई पादरी भी पहुँच गये और सब एक मकान में जमा हुए, परन्तु इन पाँच पवित्र शरीरों पर दृष्टि पड़ते ही ईसाई घबरा उठे और उन के पादरी बोले कि यारो ! इन का मुक़ाबला छोड़ो और इन की आधीनता स्वीकार करो:--हसन निज़ामी ॥

(ईसा अलैहि-स्सलाम के जन्म लेने के विषय में क़ुर्आन मजीद में जो वृतान्त वर्णन किया गया है) वह यही सच्ची (घटना और सच्चा) वर्णन है और (ईसाइयों को ईसा के बिना बाप के पैदा होने से उन की ईश्वरीयता का जो भ्रम हो गया है, वह बिल्कुल निरा-धार है और न उनकी तस्लीस (तीन ख़ुदा मानना) का सिद्धान्त कोई सचाई रखता है) । अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है और अल्लाह ही–

هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ
بِالْمُفْسِدِينَ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ
سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ
بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ
دُونِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا
مُسْلِمُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ
فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَاةُ وَالْإِنْجِيلُ
إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ
حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا
لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝
مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَٰكِنْ
كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝
إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَٰذَا

النبي

वही (सब से) ज़बर दस्त (और) हिक्मत वाला है ० इस पर (भी) अगर (यह लोग) भाग खड़े हों, तो अल्लाह फ़ितना पर्दाज़ों (के हाल) से ख़ूब वाक़िफ़ है, (वह उन से समझ लेगा) ० (ऐ पैग़म्बर ! इन से) कहो कि ऐ अह्ल किताब ! आओ, ऐसी बात की तरफ़ (रुजू करो) जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान में यकसाँ (मानी जाती) है कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न ठहराएँ और अल्लाह के सिवा हम में से कोई किसी को (अपना) मालिक न समझे। फिर अगर (ऐसी सीधी और सच्ची बात के मानने से भी) मुँह मोड़ें, तो (मुसल्मानो ! इन लोगों से) कह दो कि तुम इस बात के गवाह रहो कि हम तो (एक ही ख़ुदा को) मानते हैं ० ऐ अह्ल किताब ! इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो (कि वह यहूदी थे या नस्रानी) और तौरात और इन्जील (जिन से यहूद व नसारा की इब्तिदा है, वह) तो उन के बाद नाज़िल हुईं। क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते ० सुनो जी ! तुम लोगों ने ऐसी बातों में झगड़ा किया, जिन की बाबत तुम को कुछ (न कुछ सही या ग़लत) इल्म था, (तो ख़ैर एक बात भी थी)। मगर जिस की बाबत तुमको (सिरे से कुछ भी) इल्म नहीं, उसमें तुम क्यों झगड़ा करते हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते० इब्राहीम न यहूदी थे और न नस्रानी, बल्कि (हमारे सर्कार के)एक बन्दए फ़र्मांबर्दार थे और मुश्रिकों से (भी) न थे ० इब्राहीम के साथ ख़ुसूसियत के बड़े हक़दार तो वह लोग थे, जिन्होंने उनकी पैरवी की और यह -

---

सब से अधिक शक्तिशाली और बुद्धिमान है ॥

अतएव अगर (लोग) विमुखता किये जायें अर्थात् इस ओर से मुंह फेरे रहें, तो अल्लाह विद्रोह करने वालों (से भुगत लेगा। अल्लाह इन्हें) ख़ूब जानता है ॥

(ऐ पैग़म्बर ! इन से) कहो कि ऐ किताब वालो ! (यहूद व नसारा) उस एक बात की ओर आओ, जो हम में और तुम में दोनों में साझी है। (अर्थात) यह कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी की पूजा न करें और किसी को उसके साथ साझी न ठहरायें और (यह कि हम में से) एक (मनुष्य) दूसरे (मनुष्य) को अल्लाह के बजाय अपना मालिक न समझे ॥

फिर भी अगर न मानें और मुंह मोड़े रहें, तो ऐ मुसल्मानो ! उन से कह दो कि इस बात के गवाह रहना कि हम तो मुसल्मान हैं ॥

(और) ऐ किताब वालो ! तुम इब्राहीम के विषय में क्यों कट हुज्जती किये जाते हो। (नसारा कहते हैं, इब्राहीम नसरानी थे, और यहूदी कहते हैं, वह यहूदी थे। वह न नसरानी थे, न यहूदी)। तुम इतना नहीं समझते कि तौरेत व इन्जील (दोनों) उनके बाद उतरी हैं (और यहूद व नसारा उन के बाद पैदा हुए हैं। वह नसरानी या यहूदी कैसे हो सकते थे) ॥

अरे तुम वह (निर्बुद्धि) लोग हो कि उस बात पर झगड़ चुके हो, जिस का तुम्हें (अच्छी तरह) ज्ञान था। (अर्थात तौरेत व इन्जील और मूसा व ईसा के सम्बन्ध में)। फिर क्यों (और मूर्ख बनते हो और) ऐसी बात पर तर्क करते हो, जिसे तुम जानते ही नहीं। (अर्थात इब्राहीम के विषय में कि वह यहूदी थे या नसरानी)। और (ठीक) ज्ञान तो (हर बात का) ख़ुदा ही को है और तुम (कुछ) नहीं जानते ॥

इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी थे, बल्कि केवल अल्लाह वाले और अल्लाह के आज्ञाकारी थे और मुश्रिक (द्वैत वादी) नहीं थे (जैसे कि वर्तमान समय के यहूदी और नसरानी हैं) ॥

इब्राहीम से विशेषता रखने वाले तो वह थे, जिन्हों ने उनका अनुकरण किया--

لنَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ●
وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ
يُضِلُّوْنَكُمْ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا
يَشْعُرُوْنَ ● يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ● يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ
وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ● وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُوْنَ ● وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ قُلْ
اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ
مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ اِنَّ
الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ

ع

पैग़म्बर (आख़िरुज़्ज़माँ) और (मुसलमान) जो ईमान लाए और अल्लाह तो मुसलमानों के पल्ले पर है ० (मुसल्मानो !) अह्ल किताब में से एक गिरोह तो यह चाहता है कि किसी तरह तुम को गुम्राह कर दें, हालाँकि (अपनी तदबीरों से तुम को नहीं, बल्कि) अपने ही तईं गुम्राह करते हैं और (इस बात को) नहीं समझते ० ऐ अह्ल किताब ! अल्लाह की आयतों से क्यों इन्कार करते हो, हालाँकि तुम (दिल में) क़ायल हो ० ऐ अह्ल किताब ! क्यों हक़ व बातिल को गड मड करते और हक़ को छुपाते हो, हालाँकि (तुम हक़ीक़तुल हाल से) वाक़िफ़ हो ० और अह्ल किताब में से एक गिरोह अपने (लोगों को) समझाता है कि मुसलमानों पर जो किताब नाज़िल हुई है, अव्वल रोज़ उस पर ईमान लाओ और आख़िर रोज़ (उस से) इन्कार कर दिया करो। शायद (इस तदबीर से) मुसलमान (इस नए दीन से) फिर जायं और जो तुम्हारे दीन की पैरवी करे, उसके सिवा दूसरे (की बात) का एतिबार न करो। (ऐ पैग़म्बर ! इन से) कहो कि (अस्ल़ी) हिदायत तो (वही) अल्लाह की हिदायत है (और यह ज़रूर नहीं कि अह्ल किताब के सिवा किसी और को न हो, और अपने लोगों को यह भी समझाते हैं कि भला कहीं हो सकता है) कि जैसा (उम्दा दीन) तुम (अह्ल किताब) को दिया गया है, वैसा ही (दीन) किसी और को दिया जाय या दूसरे लोग ख़ुदा के हाँ (चल कर) तुम से झगड़ें (और वर रहें। ऐ पैग़म्बर ! इन से) कहो कि बड़ाई तो अल्लाह ही के हाथ में है, जिस को चाहे। दे और अल्लाह बड़ी गुन्जायश वाला-

और (फिर) यह (संसार के अन्तिम नबी मुहम्मद हैं, जिनकी शरीअत (धर्म शास्त्र) अधिकाँश बातों में हज़रत इब्राहीम की शरीअत का अनुमोदन करती है) और वह (मुसलमान हैं) जो (इन संसार के अन्तिम नबी पर) ईमान लाये हैं और अल्लाह (इन) ईमान लाने वालों का सहायक है ॥

किताब वालों में का एक समूह चाहता है कि किसी प्रकार तुम्हें पथ-भ्रष्ट कर दे। यद्यपि (वास्तव में) वह अपने ही आप को (और अधिक) पथ-भ्रष्ट कर रहे हैं और (कुछ) नहीं समझते (कि क्या कर रहे हैं) ॥

ऐ किताब वालो ! (जान बूझ कर) अल्लाह की आयतों से क्यों इन्कार करते हो ? (तौरेत व इन्जील में मुहम्मद रसूलुल्लाह का वर्णन है) और तुम (उस से) वाक़िफ़ हो ॥

ऐ किताब वालो ! (तौरेत के शब्द और अर्थ बदल कर) क्यों सत्य में झूठ की मिलावट करते हो और (क्यों अल्लाह की उतारी हुई बातें मिटा मिटा कर) सत्य को छिपाते हो और तुम को मालूम है (कि सत्य क्या है और असत्य क्या। तौरेत में कितना हिस्सा अस्ली बाक़ी रक्खा है और कितना ख़ुद घड़ कर मिला लिया है) ॥

और किताब वालों में से एक समूह (आपस में मशवरे कर रहा है और) कहता है कि मुसलमानों की किताब (क़ुर्आन) पर सुबह ईमान लाओ और शाम को (उस से) इन्कार कर दो। कदाचित (इस उपाय और धोखे से मुसलमान प्रभावान्वित हों और हमें अपने साथ मिलाते मिलाते) वह (स्वयं) ही (इस धर्म से) फिर जायं*। (एक मनुष्य के अस्थिर होने से दूसरा मनुष्य भी अस्थिर हो जाता है) ॥

* टीका–ख़ैबर के कुछ यहूदियों ने यह षड्यन्त्र रचा था कि बनावटी तौर से मुसलमान हो जाना चाहिये और फिर कहना चाहिये कि मुहम्मद रसूलुल्लाह को तौरेत की भविष्य वाणी के अनुसार नहीं पाया। अतः हम अपने सच्चे धर्म में जाते हैं। इस प्रकार मुसलमानों को हमारा विश्वास होगा और वह समझेंगे कि उन्होंने कुछ देखा है, जो मुसलमान हो जाने के बाद यहूदी बनते हैं, तो ज़रूर इस्लाम में कुछ ख़राबी है। परन्तु इन दुष्ट स्वभाव वालों का षड्यन्त्र चल न सका और अल्लाह ने इसे प्रकट कर दियाः– हसन निज़ामी ॥

और (यहूदियों के इस समूह ने अपनी जाति के लोगों से यह भी कहा कि) तुम उस मनुष्य के अतिरिक्त, जो तुम्हारे धर्म का अनुयायी हो और किसी पर ईमान न लाना। (ऐ हमारे रसूल!! उन से) कह दो कि (धर्म की) शिक्षा (ऐसी चीज़ नहीं है, जो तुम्हारे लिये विशेष हो जाय। यह तो) ख़ुदा की (ओर से भेजी हुई) शिक्षा या उपदेश है (और ख़ुदा अपनी दया व कृपा से यह कर सकता है कि) जैसा (धर्म) तुम्हें दिया गया है, वैसा ही किसी और को भी दे दिया जाय या (दूसरों को तुम से भी श्रेष्ठ–ऐसा धर्म दे दिया जाय कि वह प्रलय के दिन) तुम्हारे पालन कर्त्ता के सामने तुम ही पर (पथ-भ्रष्टता और असत् पूजा का) अपराध रक्खें ॥

ऐ पैग़म्बर ! (यह भी) कह दो कि बड़ाई (प्रतिष्ठा) देना अल्लाह ही के हाथ में है। वह जिसे चाहता है, (श्रेष्ठता व) महानता प्रदान करता है और अल्लाह बड़े विस्तार वाला (और) बुद्धिमान (व दृष्टि वाला) है। (वह जानता है कि कौन किस योग्य है और जिस को जिस योग्य समझता है, उस को वही प्रदान करता है) ॥

عَلِيْمٌ ۝ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيْمِ ۝ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ
بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ
لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ
عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ بَلٰى مَنْ
اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا
قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ
وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَاِنَّ مِنْهُمْ
لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ
الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ

عِنْدِ

(और सब कुछ) जानता (और अह्ल ना अह्ल को खूब पहिचानता) है ० जिस को चाहे अपनी रहमत के लिये ख़ास कर ले और अल्लाह का फ़ज़्ल बड़ा है ० और अह्ल किताब में से बाज़ ऐसे हैं कि अगर उन पास ज़रे नक़द का ढेर (भी) अमानत रखवा दो, तो (जब माँगो, उठा) तुम्हारे हवाले करें और उनमें से बाज़ ऐसे हैं कि (ज़ियादा नहीं) एक (बहुत छोटी सी) अशर्फ़ी (भी) उन के पास अमानत रखवा दो, तो वह तुम को बिदून इस के वापस न दें कि हमा वक़्त तक़ाज़े के लिए उन (के सर) पर खड़े रहो। (उन लोगों में) यह (बद मुआमिलगी) इस से (आई) कि वह (पुकारे) कहते हैं कि (अरब के) जाहिलों (का हक़ मार लेने) में हम से बाज़ पुर्स नहीं होगी और जान बूझ कर अल्लाह पर झूट बोलते हैं ० इन से बाज़ पुर्स हो और हो। (क्योंकि) जो शख़्स अपना इक़रार पूरा करे और (बद मुआमिलगी से) बचे, तो अल्लाह (बद मुआमिलगी से) बचने वालों को दोस्त रखता है (न उनको, जो बद मुआमिला हैं) ० जो लोग (अपने) अहद (के बदले, जो) ख़ुदा (से किया था) और (नीज़) अपनी क़स्मों के बदले बे हक़ीक़त (दुनियावी) मुआविज़े ले लेते हैं (और क़ौल व क़सम का पास नहीं करते)--यही लोग हैं, जिनको आख़िरत में कुछ बहरा नहीं और क़यामत के दिन ख़ुदा इन से बात भी तो नहीं करेगा और न इन की तरफ़ (नज़र भर कर) देखेगा और न इन को (गुनाहों की गन्दिगी से) पाक करेगा और इन के लिये अज़ाब दर्द नाक है ० और इन ही (अह्ल किताब) में एक फ़िर्क़ा है, जो किताब (यानी तौरात) पढ़ते वक़्त अपनी ज़बानों को मड़ोड़ते (तड़ोड़ते और कुछ का कुछ पढ़ देते) हैं। ताकि तुम समझो कि (जो कुछ पढ़ रहे हैं) वह किताब (इलाही) का जुज़ है, हालाँकि वह किताब (इलाही) का जुज़ नहीं। और कहते हैं कि यह (जो हम पढ़ रहे हैं)-

---

(वह) जिसे चाहे अपनी कृपा के लिये विशेष कर ले और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला (कृपालु) है ॥

और किताब वालों में से कुछ लोग (तो) वह हैं कि अगर उन के पास तुम ख़ज़ाने (का ख़ज़ाना) अमानत रखवा दो, तो (अपने आप को अमानत दार ही समझे रहें और जब मांगो) उसे तुम्हें देदें और कुछ लोग उनमें से ऐसे हैं कि अगर एक दीनार (एक प्रकार का सिक्का) अमानत रखवाओ, तो जब तक उन (के सर) पर (सवार न हो और तक़ाज़ों के लिये बार बार जाकर) खड़े न हो, इस एक दीनार को भी तुम्हें न अदा करें ॥

यह (उन का दुराचरण या दुष्कर्म) इस कारण से (है) क्योंकि उन का क़ौल (सिद्धान्त) है कि मूर्खों (और दूसरे धर्म वालों का माल मार लेने) के बारे में हम से कुछ पूछ गछ नहीं होगी और (यह) जान बूझ कर अल्लाह के नाम से झूठी बातें कहते और फैलाते (हैं) * ॥

* टीका—यहूदी कहते थे कि यह तौरेत में लिक्खा है कि मूर्खों तथा अनपढ़ (अशिक्षित) लोगों और दूसरे मज़हब (धर्म) वालों का माल जिस रीति से हाथ लगे, ले लेना चाहियेः—हसन निज़ामी ॥

(ऐसे लोगों की, उन के दुराचरणों की पकड़) अवश्य (होगी और) जो लोग अपने इक़रार (व प्रतिज्ञा) को पूरा करते और (दुष्कर्मों से) परहेज़ (घृणा) करते हैं, निश्चित रूप से अल्लाह ऐसे परहेज़गारों से प्रेम रखता है ॥

(और) जो लोग (तौरेत की आज्ञाओं के अनुसार कार्य करने और संसार के अन्तिम नबी पर ईमान लाने के विषय में अपनी) उस प्रतिज्ञा को, जो अल्लाह से उन्हों ने की थी और अपनी (उन) शपथों को, (जो उस प्रतिज्ञा पर स्थिर रहने के विषय में उन्हों ने खाई थीं-बिना किसी पूंजी या माल के केवल साँसारिक लाभों के लिये अर्थात् बिल्कुल) कम मूल्य में बेच डालते हैं । उन का परलोक में (कोई अच्छा) भाग नहीं है। प्रलय के दिन न अल्लाह उन से बात चीत करेगा और न उन की ओर (कृपा दृष्टि से) देखेगा और न उन्हें (पापों के सम्पर्क से) पाक करेगा। उनके लिये (वहां केवल) सख़्त अज़ाब (दारुण दुःख) है ॥

और उन (किताब वालों) में कुछ लोग हैं कि किताब (तौरेत के पढ़ने) में अपनी ज़बानों को (ख़ूब तोड़ते) मोड़ते हैं (इस प्रकार पढ़ते हैं कि न अस्ल, अस्ल मालूम हो और न नक़ल, नक़ल)। जिस से कि तुम समझ लो कि वह भी, (जो उन्हों ने उसमें मिला दिया है, अस्ल) किताब की चीज़ है। यद्यपि वह (अस्ल) किताब की चीज़ नहीं और (यह लोग इन मन घड़त बातों के विषय में प्रकट रूप से भी) कहते हैं कि यह अल्लाह की (फ़र्माई हुई) बातें हैं-

عِندِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِندِ اللّٰهِ وَيَقُولُونَ
عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ● مَا كَانَ
لِبَشَرٍ أَن يُؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ
ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِّي مِن
دُونِ اللّٰهِ وَلٰكِن كُونُوا رَبَّانِيِّينَ بِمَا كُنتُمْ
تُعَلِّمُونَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنتُمْ تَدْرُسُونَ ●
وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَن تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ
أَرْبَابًا ۗ أَيَأْمُرُكُم بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنتُم
مُّسْلِمُونَ ● وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ
لَمَآ آتَيْتُكُم مِّن كِتٰبٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُولٌ
مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنصُرُنَّهُ ۚ
قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذٰلِكُمْ إِصْرِي ۖ
قَالُوٓا أَقْرَرْنَا ۚ قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُم مِّنَ

अल्लाह के हां से (उतरा) है, हालां कि वह अल्लाह के हां से नहीं (उतरा) और जान बूझ कर अल्लाह पर झूट बोलते हैं ० किसी इन्सान को तो (यह बात) शायां है नहीं कि ख़ुदा उस को (अपनी) किताब और अक़्ल (सलीम) और पैग़म्बरी अता फ़र्माए और वह लोगों से लगे कहने कि ख़ुदा को छोड़ कर मेरे बन्दे बनो। बल्कि (वह तो यही कहेगा कि) ख़ुदा परस्त होकर रहो, इस लिये कि तुम लोग (दूसरों को) किताब (इलाही) पढ़ाते रहे हो और इस लिये कि तुम (ख़ुद भी) पढ़ते रहते हो ० और वह तुम से (कभी भी) नहीं कहेगा कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा मानो, भला (कहीं ऐसा हो सक्ता कि) तुम तो इस्लाम ला चुके हो और वह इस के बाद तुम्हें कुफ़्र करने को कहे ० और (ऐ पैग़म्बर ! इन को वह वक़्त याद दिलाओ) जब कि अल्लाह ने पैग़म्बरों से अहद लिया कि हम जो तुम को (अपनी) किताब और अक़्ल (सलीम) दें (और) फिर कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास आये (और) जो (किताब) तुम्हारे पास है, उसकी तसदीक़ (भी) करे, तो देखो ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर उसकी मदद करना। (और) फ़रमाया कि क्या तुमने इक़रार कर लिया और इन बातों पर, जो हमने तुम से अहद व पैमान लिया है, इसको तस्लीम किया ? (पैग़म्बरों ने) अर्ज़ किया कि (हां) हम इक़रार करते हैं। (ख़ुदा ने) फ़र्माया अच्छा तो (आज के क़ौल व क़रार के) गवाह रहो और तुम्हारे साथ गवाहों में से (एक गवाह) हम (भी) हैं ०

यद्यपि अल्लाह से (इन का बिलकुल सम्बन्ध) नहीं और यह लोग जान बूझ कर अल्लाह के विषय में झूठ बोलते हैं ॥

(उन लोगों ने एक यह भी झूठी बात मशहूर कर रक्खी है कि ईसा अपने आप को ख़ुदा कहलवाते थे और कहते थे कि मेरी बन्दिगी (बन्दना) आवश्यक है)। कोई मनुष्य (ऐसा) नहीं कर सकता कि अल्लाह (तो) उसे किताब और बुद्धिमानी और पैग़म्बरी दे और (वह) लोगों से (यह) कहे कि अल्लाह के बजाय मेरे बन्दे बन जाओ, बल्कि (वह तो यही कहेगा कि केवल) अल्लाह वाले होकर रहो। क्योंकि तुम (दूसरों को भी) अल्लाह की किताब पढ़ाते हो और (स्वयं भी उसे) पढ़ते हो। (इस पढ़ने पढ़ाने का यही नतीजा होना चाहिये कि तुम उस पर अमल करो)। और न वह तुम्हें यह आज्ञा दे सकता है कि फ़रिश्तों और नबियों को अपना पालन कर्त्ता मानो। भला वह तुम्हारे मुसलमान हो जाने के उपरान्त (उलटा) तुम से कुफ़्र के लिये कहेगा ॥

और (ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम इन लोगों से उस समय का वर्णन करो) जब अल्लाह ने नबियों से (इस बात का) वचन लिया था कि जो किताब और ज्ञान मैं ने तुम्हें दिया है (तुम उसका प्रचार करो)। फिर कोई रसूल तुम्हारे पास आवे, जो उस (किताब व ज्ञान) का समर्थन करे अर्थात सच्चा ठहरावे--जो तुम्हारे पास है, तो उस पर अवश्य ईमान लाना और अवश्य उसकी सहायता करना। (अल्लाह तआला ने नबियों से) फ़रमाया था कि क्या तुम इक़रार करते हो ? और इस वचन की पाबन्दी अपने ऊपर लेते हो। सब ने कहा था कि हम इक़रार करते हैं। (और अल्लाह ने) फ़र्माया था कि अच्छा (अपनी प्रतिज्ञा के) साक्षी रहना और तुम्हारे साथ हम भी गवाहों में (शामिल) हैं ॥

तो बात के) इस (क़दर पक्के हुए) पीछे जो कोई (क़ौल से) मुनहरिफ़ हो, तो वही लोग ना फ़र्मान हैं ० क्या यह लोग अल्लाह के दीन के सिवा (किसी और दीन) की तलाश में हैं, हालां कि जो (फ़रिश्ते) आस्मानों (में हैं) और (जो लोग) ज़मीन में हैं, चार व नाचार उसी के हुक्म बर्दार हैं और उसी की तरफ़ सब को लौट कर जाना है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि (हमारा दीन तो यह है कि) हम अल्लाह पह ईमान लाए और जो किताब हम पर उतरी है, उस पर। और जो सहीफ़े इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और औलाद याक़ूब पर उतरे-उन पर। और मूसा और ईसा और (दूसरे) पैग़म्बरों को, जो किताबें उनके पर्वर्दिगार की तरफ़ से इनायत हुईं, उन पर। हम तो उन (पैग़म्बरों) में से किसी एक में फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी (एकँ ख़ुदा) को मानते हैं ० और जो शख़्श इस्लाम के सिवा किसी और दीन की तलाश में हो, तो ख़ुदा के हां उसका वह दीन मक़बूल नहीं और वह आख़िरत में ज़ियांकारों में होगा ० ख़ुदा ऐसे लोगों को क्यों हिदायत देने लगा, जो (तौरात की पेशीन गोइयों से पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मां पर) ईमान लाए पीछे लगे कुफ़् करने। और दह इक़रार कर चुके थे कि पैग़म्बर (आख़िरुज़्ज़माँ का आना) बर्हक़ है और उनके पास (इसके) खुले सुबूत भी आ चुके। और अल्लाह (ऐसे) हट धर्म लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ० यह (हैं रांदए दर्गाह इलाही और) इनकी सज़ा यह है कि इन पर-

الشهدين • فمن تولى بعد ذلك فاولئك
هم الفسقون • افغير دين الله يبغون وله
اسلم من في السموت والارض طوعا و
كرها واليه يرجعون • قل امنا بالله وما
انزل علينا وما انزل على ابرهيم واسمعيل
واسحق ويعقوب والاسباط وما اوتي
موسى وعيسى والنبيون من ربهم لا نفرق
بين احد منهم ونحن له مسلمون • ومن يبتغ
غير الاسلام دينا فلن يقبل منه وهو في
الاخرة من الخسرين • كيف يهدي
الله قوما كفروا بعد ايمانهم وشهدوا ان
الرسول حق وجاءهم البينت والله لا يهدي
القوم الظلمين • اولئك جزاؤهم ان عليهم

अतः इस बचन और प्रतिज्ञा के बाद जो लोग इस बचन और प्रतिज्ञा को भंग करेंगे, वह निश्चित रूप से पापी हैं॥

फिर क्या (यह प्रतिज्ञा भंग करने वाले लोग) अल्लाह के धर्म के अतिरिक्त (किसी और धर्म के) इच्छुक हैं। यद्यपि आकाशों और पृथ्वी में जो कुछ भी है, सब उसी के आधीन है। चाहे ख़ुशी से हो या बे ख़ुशी से। और उसी की ओर (सब को) लौट कर जाना है॥

(ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम और ऐ मुसलमानो !) तुम (तो) कह दो कि हम अल्लाह पर और उसकी किताब पर-जो हमें भेजी गई है, ईमान ले आये। और उन किताबों पर (भी) जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उन की सन्तान को मिली थीं। और (शेष) उन (किताबों) पर भी, जो अल्लाह की तरफ़ से मूसा और ईसा और (दूसरे) नबियों को प्रदान हुई थीं। हम उन नबियों में से किसी में भिन्नता नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी हैं॥

और जो कोई इस्लाम के अतिरिक्त (किसी और) धर्म का इच्छुक हो, तो उसका (धर्म) कदापि स्वीकार न होगा और वह मर्णान्त में हानि उठायेगा॥

अल्लाह ऐसी जाति को क्या शिक्षा दे, जिन्हों ने ईमान लाने के बाद कुफ़् किया है और जो (एक बार) इक़रार कर चुके हैं कि रसूल (मुहम्मद रसूलुल्लाह) सच्चे हैं और उनके पास ज्वलन्त प्रमाण (भी मुहम्मद रसूलुल्लाह की सच्चाई के) आ चुके हैं। अल्लाह (इस प्रकार के) बेढंगे लोगों को हिदायत (शिक्षा) नहीं दिया करता॥

ऐसे लोगों की यही सज़ा है कि उन पर-

لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۙ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَ
لَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ
ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۟ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ
ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الضَّآلُّوْنَ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَا
تُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ
مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ
لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ
وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ
كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا

ख़ुदा की और फ़रिश्तों की और (दुनिया जहान के) लोगों की-सब की फिटकार० कि इसी (फिटकार) में हमेशा (हमेशा) रहेंगे। न तो (आख़िरत में) इन से अज़ाब ही हलका किया जायगा और न इन को मोहलत ही दी जायगी ० मगर जिन लोगों ने ऐसा किये पीछे तौबा की और (अपनी हालत की) इस्लाह करली, तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० जो लोग ईमान लाए पीछे फिर बैठे और फिर उन का कुफ़्र बढ़ता चला गया, तो ऐसों की तौबा किसी तरह क़बूल नहीं होगी और यही लोग (हैं, जो परले दर्जे के) गुम्राह हैं ० जो लोग (इस्लाम से) मुन्किर हुए और इन्कार ही की हालत में मर गए, उन में का कोई शख़्श (कुरह) ज़मीन (की गोल) भर कर भी सोना मुआविज़े में देना चाहे, तो हरगिज़ क़बूल नहीं किया जायगा। यही लोग हैं, जिनको (आख़िरत में) दर्द नाक अज़ाब होगा और (उस वक़्त) इनका कोई भी मददगार नहीं होगा ० (लोगो !) जब तक (ख़ुदा की राह में) उन चीज़ों में से न ख़र्च करोगे-जो तुम को अज़ीज़ हैं, नेकी (के दर्जे) को हरगिज़ न पहुँच सकोगे। और कोई सी चीज़ भी ख़र्च करो अल्लाह उसको जानता है ० जो चीज़ याक़ूब ने अपने ऊपर हराम करली थी, उस को छोड़ कर तौरात के उतरने से पहिले खाने की सब (मुबाह) चीज़ें बनी इस्राईल के लिये हलाल थीं-

अल्लाह और फ़रिश्तों और (सब) आदमियों की लानत (धिक्कार) होती है ॥

(और) इसी (दशा) में यह सदैव रहेंगे और (यह) दुःख उन (पर) से कभी हलका नहीं किया जायगा। और उन्हें (इस दुःख के बीच कभी) छुटकारा नहीं मिलेगा ॥

परन्तु जिन्हों ने इस (भूल) के बाद तौबा करली और नेक बन गये, तो अल्लाह क्षमा करने वाला और कृपालु है ॥

हाँ, जिन लोगों ने ईमान लाने के बाद इन्कार किया और फिर उन की विमुखता बढ़ती (ही) गई, तो (उन्हें तौबा करने का साहस नहीं मिलेगा और वह तौबा करेंगे भी, तो ऐसे समय कि) उन की तौबा स्वीकार नहीं होगी और यह लोग बिल्कुल गुमराह (पथ-भ्रष्ट) हैं ॥

निश्चित रूप से (समझ लो कि) जो लोग काफ़िर रहे और कुफ़्र की दशा (ही) में मर गये, उन में से किसी एक से भी-अगर वह (अपने) बचाव के लिये समस्त पृथ्वी को भर के सोना देना चाहे, तो स्वीकार न होगा। यही तो हैं, जिन्हें (अल्लाह के यहां) दर्दनाक अज़ाब (दारुण दुःख) मिलेगा और (फिर उस समय) उनका कोई (सहायक व) मददगार न होगा ॥

(लोगो ! तुम) नेकी (के वास्तविक पद) को (उस समय तक) न पा सकोगे (और ख़ुदा की सर्वाधिक प्रसन्नता उस समय तक प्राप्त नहीं कर सकोगे) जब तक (यहां इस कर्म-क्षेत्र में) उस वस्तु को (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च न करोगे, जो तुम्हें (अत्यन्त) प्रिय है। और (वैसे) जो भी तुम ख़र्च करते हो, अल्लाह उसको जानता है (और उसको उसके अधिकार के अनुसार अर्थात् यथा योग्य पुण्य प्रदान करता है) ॥

(और यह जो यहूदी आक्षेप करते हैं कि मुसलमान, इब्राहीम के धर्म पर हैं, तो ऊंट का मांस क्यों खाते हैं ? और ऊंटनी का दूध क्यों पीते हैं ? तो उन का यह आक्षेप ग़लत है। यही) समस्त वस्तुयें (इब्राहीम के समय में खाई पी जाती थीं और) तौरेत के उतरने से पूर्व बनी इस्राईल (अर्थात् इस्राईल का वंश) के यहां (भी) हलाल (व जायज़) थीं। सिवा उस -

حَرَّمَ إِسْرَاءِيلُ عَلَىٰ نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرَاةُ
قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَاةِ فَاتْلُوهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ
فَمَنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ قُلْ صَدَقَ اللَّهُ فَاتَّبِعُوا
مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ
إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا
وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مَقَامُ
إِبْرَاهِيمَ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ
حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا وَمَنْ
كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ قُلْ يَا أَهْلَ
الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ شَهِيدٌ
عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبْغُونَهَا عِوَجًا وَأَنْتُمْ

(ऐ पैग़म्बर ! इन यहूद से) कहो कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो, तो तौरात ले आओ और उस को (हमारे सामने) पढ़ो ० फिर इस (हुज्जत) के बाद भी–जो कोई अल्लाह पर झूटे (झूटे) बोहतान बांधे, तो (समझ रक्खो कि) ऐसे ही लोग हट धर्म हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! इन यहूद से) कहो कि अल्लाह ने सच फ़र्माया, सो (अब उसी के इर्शाद के मुताबिक़) इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करो, जो एक (ख़ुदा) के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे ० लोगों (की इबादत) के लिये जो पहिला घर ठहराया गया, वह यही है, जो (शहर) मक्के में है। बरकत वाला और दुनिया जहान के लोगों के लिये (मूजिब) हिदायत ० इस में (फ़ज़ीलत की) बहुत सी खुली हुई निशानियाँ हैं, (अज़ाँ जुम्ला) इब्राहीम के खड़े होने की जगह। और जो इस घर में आ दाख़िल हुआ, अम्न में आ गया। और लोगों पर फ़र्ज़ है कि ख़ुदा के लिये ख़ानए काबा का हज करें, जिसको उस तक पहुँचने का मक़्दूर हो। और जो (मक़्दूर रक्खे पीछे नेअ़मत की) ना शुक्री करे (और हज को न जाय) तो अल्लाह दुनिया जहान से बेनियाज़ है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि ऐ अह्ल किताब ! अहकाम इलाही से क्यों मुन्किर होते हो? और जो कुछ भी तुम कर रहे हो, अल्लाह उसका शाहिद हाल है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन से) कहो कि ऐ अह्ल किताब ! दीदा व दानिस्ता अल्लाह के रस्ते में (नाहक़ की) कजी निकाल निकाल कर ईमान लाने वालों को उससे क्यों रोकते हो–

(ऊंट के माँस और ऊंटनी के दूध) कि, जिन्हें इस्राईल (अर्थात् याक़ूब) ने अपनी व्यक्ति के लिये (मन्नत * मान कर तौरेत के उतरने से पूर्व) हराम कर लिया था (और याक़ूब (उन पर सलाम) के अनुकरण में उनकी सन्तान भी इन दोनों वस्तुओं को छोड़ बैठी थी। ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम इन आक्षेप करने वालों से) कहो कि (अगर हमारी यह बात नहीं मानते और अपने आक्षेपों में) सच्चे हो, तो तौरेत ले आओ और उसे पढ़ लो ॥

* टीका – ऊंट का मांस और ऊंटनी का दूध हज़रत याक़ूब (उन पर सलाम) को बहुत प्रिय था। एक बार आप अत्यन्त बीमार हो गये और मन्नत मान ली कि अगर मैं अच्छा हो जाऊंगा, तो इन दोनों प्रिय वस्तुओं का उपयोग करना छोड़ दूंगा। लेकिन यहूदी इस घटना को छिपा कर उल्टी सीधी बातें बनाते हैं और जो अल्लाह ने नहीं किया, उसे अल्लाह के नाम लगाते हैं:—हसन निज़ामी ॥

अतः जो लोग इस (वृतान्त के वर्णन) के पश्चत् भी अल्लाह के नाम झूठी बात लगायें, तो वह निश्चित रूप से अत्याचारी हैं ॥

कह दो, (ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम-अल्लाह सच्चा है और) अल्लाह ने (जो कुछ फ़र्माया है) सच फ़र्माया है। अतएव इब्राहीम के धर्म का अनुकरण करो। (वह इब्राहीम) जो केवल अल्लाह तआला के मानने वाले थे और मुश्रिकों में से नहीं थे ॥

(अल्लाह का) वह पहिला घर, जो लोगों के (पूजा करने के) लिये बनाया गया–यही है, जो मक्के में है (अर्थात् काबे का स्थान। और जो) बरकत वाला और संसार-मात्र के लिये शिक्षा (का स्थान) है। (इसे हज़रत इब्राहीम ने बनाया था †) ॥

† टीका–यहूदियों का कहना था कि हज़रत इब्राहीम और उनका कुटुम्ब सदैव शाम देश में रहा और वह सब बैतुलमक़्दस को क़िबला (पूजा की दिशा) मानते थे और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम और उनके अनुयायी मक्के से उठे हैं और काबे को क़िबला (वह स्थान, जिस की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं। यह स्थान पूजा के योग्य होता है) बताते हैं, तो यह किस तरह हज़रत इब्राहीम के उत्तराधिकारी हो सक्ते हैं। इसका उत्तर इन आयतों में दिया गया है :–हसन निज़ामी ॥

इस में (मुसल्मानों के दावे की सत्यता के अनेक) चिन्ह (मौजूद) हैं। (इन चिन्हों में से एक) इब्राहीम का स्थान है (अर्थात हज़रत इब्राहीम के खड़े होने की जगह)। और (उसकी महिमा यह है कि) जो उस में आ जाता है, वह निष्कंट (व सुरक्षित) हो जाता है ॥

और लोगों पर अल्लाह के प्रति कर्तव्य है कि जिन्हें इस (घर) तक पहुँचने की शक्ति हो, वह (अल्लाह के इस) घर (तक पहुँचें। और उस) का हज करें और जो अल्लाह की (यह) आज्ञा नहीं मानेंगे, (वह अल्लाह की कुछ हानि नहीं करेंगे, बल्कि अपनी ही हानि करेंगे)। अल्लाह तो समस्त संसार से इच्छा रहित (और महान) है ॥

(मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ! इन किताब वालों से) कहो कि ऐ किताब वालो ! तुम अल्लाह की आयतों को क्यों नहीं मानते ? यद्यपि, जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह (उसको देख रहा है और) उसका साक्षी है ॥

(और) कहो कि ऐ किताब वालो ! (तुम स्वयं विश्वास नहीं लाते-न लाओ, मगर) जो कोई (दूसरा ईमान लाता होता है या) ईमान ले आता है, उसे अल्लाह के रास्ते में क्यों रोकते हो। तुम जान बूझ कर (ख़ुदा के) रास्ते में गुत्थी (व त्रुटि) ढूंढते हो–

श्रौर जो कुछ भो तुम कर रहे हो, श्रल्लाह उससे ग़ाफ़िल नहीं ० मुसलमानो! श्रगर तुम श्रह्ल किताब के किसी फ़िर्क़े का भो कहा मानोगे, तो वह तुम्हारे ईमान लाए पीछे तुम को फिर काफ़िर बना छोड़ेंगे ० श्रौर तुम कैसे कुफ़् करने लगोगे, हालाँकि श्रल्लाह की श्रायतें तुम को पढ़ पढ़ कर सुनाई जाती हैं श्रौर उस के रसूल (मुहम्मद) तुम में मौजूद हैं श्रौर जो शख़्स श्रल्लाह (के दीन) को मज़बूती से पकड़े रहे, तो वह सीधे रस्ते लग लिया ० मुसलमानो ! श्रल्लाह से डरो, जैसा उस से डरने का हक़ है श्रौर इस्लाम ही पर मरना ० श्रौर सब (मिल कर) मज़बूती से श्रल्लाह (के दीन) की रस्सी को पकड़े रहो श्रौर एक दूसरे से श्रलग न होना श्रौर श्रल्लाह का वह पहसान याद करो, जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे । फिर श्रल्लाह ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त पैदा की श्रौर तुम उस के फ़ज़्ल से भाई (भाई) हो गए श्रौर तुम श्राग के गढ़े (यानी दोज़ख़) के किनारे (श्रा लगे) थे, फिर उसने तुमको उस से बचा लिया। इसी तरह श्रल्लाह श्रपने श्रहकाम तुम से खोल खोल कर बयान करता है, ताकि तुम राह रास्त पर श्रा जाश्रो ० श्रौर तुम में एक ऐसा गिरोह भी होना चाहिये-

شُهَدَآءُ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ● يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ● وَكَيْفَ
تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ
وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ● يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ● وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا
تَفَرَّقُوْا وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ
فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا
حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ● وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ

श्रौर (मुसल्मानों श्रौर मुसलमान होने वालों को बहकाते हो)। श्रल्लाह तुम्हारे कर्मों से उदासीन नहीं है ॥

ऐ मुसलमानो ! श्रगर तुम इन किताब वालों में से किसी समूह के कहने में श्रा गये, तो यह तुमको तुम्हारे ईमान ले श्राने के पश्चात-फिर (इस्लाम-धर्म से फेर कर) काफ़िर बना देंगे ॥

श्रौर तुम किस प्रकार कुफ़् को (सहन) कर सक्ते हो ? ऐसी दशा में कि तुम्हें श्रल्लाह की श्रायतें पढ़ २ कर सुनाई जाती हैं श्रौर उस के रसूल (मुहम्मद) तुम में (मौजूद) हैं। श्रौर (याद रक्खो !) जिसने श्रल्लाह (की रस्सी) को दृढ़ता से पकड़ लिया, वह श्रवश्य सीधे मार्ग पर लग गया ॥

ऐ मुसल्मानो ! श्रल्लाह से डरो, जैसा कि वास्तव में उस से डरना चाहिये श्रौर मृत्यु पर्यन्त इस्लाम पर स्थिर व दृढ़ रहना ॥

श्रौर श्रल्लाह की रस्सी को सब (मिल कर) मज़बूत पकड़ लो श्रौर (परस्पर की) एकता न तोड़ो श्रौर श्रल्लाह के (इस) प्रसाद (श्रौर कृपा) को याद रक्खो, जो (उस ने) तुम पर की है--कि एक समय तुम (एक दूसरे के) शत्रु थे, तो (श्रल्लाह ने) तुम्हारे दिलों में (एक दूसरे का) प्रेम उत्पन्न कर दिया श्रौर तुम उसकी मेहर्बानी से भाई (भाई) हो गए । श्रौर (दूसरी कृपा यह की कि तुम श्राग के एक गढ़े (श्रर्थात् नर्क) के किनारे (खड़े) थे, मगर उसने तुम्हें उस से बचा लिया (श्रर्थात् इस्लाम-धर्म प्रदान किया)। श्रल्लाह श्रपने (इन) उपकारों को इस लिये तुम्हारे सामने वर्णन कर रहा है कि तुम धर्म पर (स्थिर) रहो ॥

श्रावश्यकता है कि तुम में (ऐ मुसलमानो !) कुछ लोग ऐसे रहें-

جو (लोगों को) नेक कामों की तरफ़ बुलाएँ और अच्छे काम (करने) को कहें और बुरे कामों से मना करें और (आख़िरत में) ऐसे ही लोग अपनी मुराद को पहुँचेंगे ० और उन जैसे न बनो, जो (एक दूसरे से) बिछुड़ गए और अपने पास खुले खुले अहकाम आए पीछे लगे आपस में इख़्तिलाफ़ करने। और यही हैं, जिन को (आख़िरत में) बड़ा अज़ाब होगा ० जिस दिन (बाज़ लोगों के) मुंह सुफ़ैद होंगे और (बाज़ के) मुंह स्याह। तो जो लोग रूस्याह होंगे, (उन से कहा जायगा) कि तुम ईमान लाए पीछे काफ़िर हो गए थे ना!! तो (अब) अपने कुफ़्र की सज़ा में अज़ाब (के मज़े) चक्खो ० और जो लोग सुफ़ैद रू होंगे (वह) अल्लाह की रह्मत (यानी बहिश्त) में होंगे। (और) वह उसी में हमेशा (हमेशा) रहेंगे ० (ऐ पैग़म्बर!) यह वाक़ई अल्लाह की (यानी हमारी) आयतें हैं, जो हम (जिब्रील की मार्फ़त) तुम को पढ़ पढ़ कर सुनाते हैं और अल्लाह दुनिया जहान के लोगों पर (किसी तरह का) ज़ुल्म करना नहीं चाहता ० और जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है और (सब) कामों की पहुँच (आख़िर कार) ख़ुदा ही तक है ० लोगों (की रहनुमाई) के लिये जिस क़दर उम्मतें पैदा हुईं, उन में तुम (मुसलमान) सब से बेहतर हो कि अच्छे (काम करने) को कहते और बुरे (कामों) से मना करते–

أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ●
وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ
بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ● يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ
فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُمْ
بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُونَ ● وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ
فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ تِلْكَ آيَاتُ
اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا
لِلْعَالَمِينَ ● وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ
وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ● كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ ع
أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ

٩٠

जो लोगों को भलाई की ओर आकर्षित करें और अच्छी बातों का उपदेश या आज्ञा दें और बुरी बातों से रोकें और (जो लोग यह कर्तव्य पालन करेंगे) उन का (निश्चित रूप से) कल्याण होगा ॥

और (मुसलमानो!) तुम उन लोगों के समान न होना, जिन में विद्वेष फैल गया और जो इसके बाद कि उनके पास (साफ़ और) स्पष्ट आज्ञायें आ चुकी (थीं, परस्पर) मत भेद करने लगे। यही हैं, जिनको (प्रलय के दिन) अज़ाब (घोर दुःख) दिया जायगा। उस दिन कि (कुछ के) मुख सफेद (अर्थात् ज्योति–पूर्ण) होंगे और (कुछ मनुष्यों के) मुख काले होंगे। अतः जिनके मुख काले होंगे (उनसे कहा जायगा) तुम ही हो, ना–वह लोग, जो ईमान लाकर काफ़िर हो गये थे? (अच्छा) तो अब अपने कुफ़्र के बदले में दुःख (का स्वाद) चक्खो ॥

और जिनके चेहरे सफेद (व ज्योति–पूर्ण) होंगे, तो (वह) अल्लाह की कृपा (अर्थात् स्वर्ग) में होंगे। (और) वह इसी में सदैव (सदैव) रहेंगे ॥

यह अल्लाह की आयतें हैं, जिन्हें हम (स्वयं) सही सही तुम्हें पढ़ कर सुना रहे हैं। काफ़िरों को निश्चित रूप से घोर दुःख होगा और ईमानदारों को निश्चित रूप से स्थायी पुण्य और (इसमें किसी के साथ अन्याय नहीं होगा)। अल्लाह अपने किसी प्राणी पर अत्याचार करना नहीं चाहता ॥

और जो कुछ आस्मानों में है और पृथ्वी में है (सब) अल्लाह ही का है और (सब के) मुक़द्दमे अल्लाह ही के पास पहुँचने हैं ॥

(ऐ मुहम्मद के साथियो!) लोगों (की शिक्षा) के लिये जितने सम्प्रदाय (आज तक) पैदा हुए हैं, तुम उन (में) सब से श्रेष्ठ समूह हो। तुम लोगों को अच्छे कामों के (करने के) लिये कहते हो और बुरे कामों (के करने) से रोकते हो -

عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ
لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝
لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ
الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ
اَيْنَ مَا ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ
وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ
يَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا
وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ
يَسْجُدُوْنَ ۝ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَيُسَارِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ

और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर (इसी तरह) अह्ल किताब (भी सब के सब) ईमान ले आते, तो उनके हक़ में बेहतर था। (मगर) उन में से थोड़े ईमान लाए और उन में अक्सर ना फ़र्मान हैं ० (मुसलमानो ! मामूली) ईज़ा दिही के सिवा वह हरगिज़ तुम को किसी तरह का (कोई बड़ा) नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेंगे और अगर तुम से लड़ेंगे, तो उन को तुम से पीठ फेरते ही बन पड़ेगी। फिर (यह भी इत्मिनान रक्खो कि) उन को (कहीं से) मदद (भी) नहीं मिलेगी ० जहाँ देखो ज़िल्लत उन (के सर) पर सवार है, मगर अल्लाह के (अह्द व पैमान के) ज़रिए से और (नीज़) लोगों के (अह्द व पैमान के) ज़रिए से (कहीं उन को पनाह मिल गई, तो दूसरी बात है)। और ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरिफ़्तार, और मोहताजी है कि (अलग) उन के पीछे पड़ी है। यह इस की सज़ा है कि वह अल्लाह की आयतों से इन्कार रखते थे और (इन्कार के अलावा) पैग़म्बरों को (भी) नाहक़ (ना रवा) क़त्ल किया करते थे। यह इस की सज़ा है कि उन्होंने ना फ़र्मानियाँ कीं और हद से बढ़ गए थे ० (फिर भी इन) सब (का हाल) यक्साँ नहीं; अह्ल किताब में से कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो रातों को (नमाज़ में) खड़े रह कर आयात इलाही पढ़ते और (ख़ुदा के आगे) सज्दे करते हैं ० (और) अल्लाह और रोज़ आख़िरत पर ईमान रखते और अच्छे (काम करने) को कहते और बुरे (कामों) से मना करते और (ख़ुद भी) नेक कामों में दौड़ पड़ते हैं और यही लोग–

और अल्लाह पर (सच्चे दिल से) ईमान रखते हो और अगर समस्त किताब वाले (तुम्हारे समान) ईमान ले आते, तो उन के प्रति अच्छा होता। उन में से (कुछ तो) ईमान ले आये हैं, परन्तु अधिकांश उन में के अवज्ञाकारी हैं॥

यह (यहूदी) कदापि तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेंगे, सिवा इस के कि (ज़बान से) थोड़ा सा कष्ट पहुँचा दें और अगर तुम से लड़ेंगे, तो तुम्हें (सदैव) पीठ दिखायेंगे (अर्थात् तुम्हारे सामने से भागेंगे। और) फिर उन्हें (कोई) सहायता न मिलेगी (कि दूसरी बार तुम्हें पराजित कर सकें)॥

इन (यहूदियों) के भाग्य में दुर्दशा और अपमान लिख दिया गया है। जहां भी मिलेंगे, (अपमानित व दुर्दशा में मिलेंगे) केवल उस (दशा) के (अतिरिक्त) कि (किसी कारण से) अल्लाह (ही की ओर) से (इन को) शरण मिल जाय या (मुसलमान) आदमियों (के साथ प्रतिज्ञा कर लेने के कारण सुरक्षित हो जायँ) और (यह लोग) ख़ुदा के क्रोध के अधिकारी हो गये हैं और इन पर (अपमान के साथ) निर्धनता भी स्थिर कर दी गई है (कि मालदार होने पर भी कंगाल मालूम होते हैं)। यह (सब) इसका दण्ड है कि वह (सदैव) अल्लाह की आज्ञाओं को ठुकराते रहे और व्यर्थ (अनुचित रूप से) नबियों की हत्या करते रहे। (और) यह इसका दण्ड है कि उन्हों ने (बराबर) अवज्ञायें (भी) कीं और (सदैव) विद्रोह करते रहे॥

(किताब वालों और किताब वालों में भेद है) सब किताब वाले एक समान नहीं हैं। किताब वालों में एक दल ऐसा है, जो सत्य पर स्थिर है। (यह लोग) रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और यह (लोग) सज्दे में (पड़े) रहते हैं॥

(यह) अल्लाह पर ईमान रखते हैं और प्रलय पर (भी) और भलाई करने का उपदेश करते हैं और बुराई से रोकते हैं और नेक कामों में आगे बढ़ते हैं और यह लोग–

آ.११४ नेक बन्दों में (दाख़िल) हैं • और नेकी किसी तरह की भी करें, ऐसा हर्गिज़ न होगा कि उन की उस नेकी की क़द्र न की जाय और अल्लाह पर्हेज़गारों (के हाल) से ख़ूब वाक़िफ़ है ० जो लोग मुन्किर (दीन हक़) हैं, उन के माल और उनकी औलाद अल्लाह के हां हर्गिज़ उनके कुछ भी काम न आएगी और यही लोग दोज़ख़ी हैं (और) यह हमेशा (हमेशा) दोज़ख़ ही में रहेंगे ० दुनिया की इस ज़िन्दगी में जो कुछ भी यह लोग (इस्लाम की मुख़ालिफ़त में) ख़र्च करते हैं, उसकी मिसाल उस हवा की सी है, जिस में बड़ी ठिर थी (और) वह उन लोगों के खेत को जा लगी, जो (ख़ुदा की ना फ़र्मानियों से) अपना ही कुछ खो रहे थे और आख़िरकार उस (खेत) को (मार कर) तबाह कर गई और अल्लाह ने उन पर (किसी तरह का) ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वह अपने ऊपर आप ही ज़ुल्म किया करते थे ० मुसल्मानो ! अपने लोग छोड़ कर (मुख़ालिफ़ीन में से) किसी को अपना राज़दार न बनाओ कि वह तुम्हारी ख़राबी में कुछ उठा नहीं रखते। चाहते हैं कि तुम को तकलीफ़ पहुँचे। दुश्मनी तो उनकी बातों से ज़ाहिर हो ही चुकी है और (ग़ैज़ व ग़ज़ब) जो उनके दिलों में (भरे) हैं, वह (उस से भी) बढ़ कर हैं। हमने तुम को पते की बातें बता दी हैं। अगर तुम को अक़्ल (मुआमिला फ़हम) है, (तो तुम्हारे काम आएगी) ० सुनो जो ! तुम कुछ ऐसे (सीधे सुभाव के) लोग हो कि तुम तो उन से दोस्ती रखते हो और वह तुम से (मुत्लक़) दोस्ती नहीं रखते और तुम ख़ुदा की सारी किताबों पर ईमान रखते हो-

الصلحين • وما يفعلوا من خير فلن يكفروه
والله عليم بالمتقين • ان الذين كفروا لن
تغني عنهم اموالهم ولا اولادهم من الله
شيا واولئك اصحب النار هم فيها خلدون •
مثل ما ينفقون في هذه الحيوة الدنيا
كمثل ريح فيها صر اصابت حرث قوم ظلموا
انفسهم فاهلكته وما ظلمهم الله و
لكن انفسهم يظلمون • يايها الذين امنوا لا
تتخذوا بطانة من دونكم لا يالونكم خبالا
ودوا ما عنتم قد بدت البغضاء من
افواههم وما تخفي صدورهم اكبر قد بينا لكم
الايت ان كنتم تعقلون • هانتم اولاء
تحبونهم ولا يحبونكم وتؤمنون بالكتب

كله

नेक मनुष्यों में से हैं ॥

और इनके सुकर्म नष्ट नहीं होंगे और अल्लाह सदाचारी लोगों (को दशा व कर्मों) से अभिज्ञ है ॥

(और) जो (लोग इनमें से) कुफ़्र पर (जमे) रहे, निश्चित रूप से उन्हें अल्लाह (के दुःखों) से न उन की सन्तान लेश मात्र बचा सकेगी और न उनका माल, और यह लोग नार्कीय हैं, नर्क (ही) में रहेंगे ॥

काफ़िर जो कुछ साँसारिक जीवन में (अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध) ख़र्च करते हैं, उसका उदाहरण–उस हवा के समान है, जिस में ठिर हो (और) वह (हवा) ऐसे लोगों की खेती पर चले, जिन्होंने (दुष्कर्मों से) अपने आप को ख़राब कर रक्खा हो और उस (खेती) को बरबाद करदे। अल्लाह ने इन पर (कोई) अत्याचार नहीं किया, बल्कि इन्होंने ही अपने आप को हानि पहुँचाई है। (ख़र्च वही लाभ दायक हो सकते हैं, जो अल्लाह की इच्छानुसार किये जायँ; लोक में भी और परलोक में भी। अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध ख़र्च करके न इस लोक में भलाई मिलती है और न परलोक में, बल्कि ऐसे ख़र्च उल्टे हानि के कारण बन जाते हैं और मनुष्य अपने हाथों नर्क मोल लेता है) ॥

(ख़ैर) ऐ मुसलमानो ! तुम (अब) अपनों के अतिरिक्त (अर्थात् अपने सधर्मी भाइयों के सिवा) किसी (दूसरे) को (अपना) भेद जानने वाला (मित्र) न बनाओ। वह तुम्हारी बर्बादी में कसर नहीं करते। उनकी तो यही कामना है, कि तुम्हें तकलीफ़ पहुँचे। कपट (व द्वेष) तो उनकी बातों (ही) से टपकने लगा है और जो कुछ उन्होंने अपने दिलों में छिपा रक्खा है, वह (और) बढ़ कर है। हमने तुम को पते की बातें बता दी हैं। अगर तुम बुद्धि रखते हो, (तो समझ लोगे) ॥

सुनो ! तुम तो उनसे प्रेम करते हो और वह तुम से प्रेम नहीं करते और तुम समस्त (आकाश की) पुस्तकों को मानते हो (मगर वह तुम्हारे क़ुर्आन और बहुत सी दूसरी किताबों को नहीं मानते)-

كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ
الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۭ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ
تَسُؤْهُمْ ۡ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ۭ
وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُھُمْ
شَيْـًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ وَاِذْ غَدَوْتَ
مِنْ اَھْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۭ
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِذْ ھَمَّتْ طَّاۗىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ
اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ اِذْ تَقُوْلُ
لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ
اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُنْزَلِيْنَ ۝ بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا

ع

(और वह तुम्हारे .कुर्आन के मुन्किर हैं) और जब तुम से मिलते हैं, तो कह देते हैं कि हम भी ईमान ले आए हैं और जब अकेले होते हैं, तो मारे .गुस्से के तुम पर अपनी उंगलियाँ काटते हैं। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि अपने .गुस्से में (जल) मरो! जो (कपट हमारी तरफ़ से तुम्हारे) दिलों में है, अल्लाह को सब मालूम है ० (मुसलमानो!) अगर तुमको कोई फ़ायदा पहुँचे, तो उनको बुरा लगता है और अगर तुमको कोई गज़न्द पहुँचे, तो उस से .खुश होते हैं और अगर तुम (उनकी ईज़ाओं पर) सब्र करो और (इन्तिक़ाम में ज़ियादती से) बचे रहो, तो (इत्मिनान रक्खो कि) उनके फ़रेब से तुम्हारा कुछ भी तो नहीं बिगड़ने का। क्योंकि जो कुछ भी यह कर रहे हैं, (उसका दफ़ीया) अल्लाह के इहाते (.कुद्रत) में है ० और (ऐ पैग़म्बर!) एक वक़् वह भी था कि तुम सुबह सवेरे अपने घर से चले (और) लगे मुसलमानों को लड़ाई के मौक़ों पर बिठाने और अल्लाह (सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० यह उसी वक़् का वाक़िआ है कि तुम में से दो गिरोहों ने हिम्मत हार देनी चाही, मगर (सँभल गए, क्योंकि) अल्लाह उनकी मदद पर था। और मुसलमानों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें० (तुम मुसलमानों को हिम्मत हार देनी क्या मुनासिब थी?) दराँ हाले कि बद्र (की लड़ाई) में अल्लाह तुम्हारी मदद कर ही चुका था और (उस वक़् दुश्मन के मुक़ाबिले में) तुम्हारी कुछ भी हक़ीक़त न थी। तो अल्लाह (की ना रज़ामन्दी) से डरो (और डरोगे, तो) अजब नहीं तुम (उसके एह-सानात याद करके) शुक्र गुज़ारी भी करो ० (ऐ पैग़म्बर! उसी बद्र की लड़ाई का वह वाक़िआ याद करो) जब कि तुम मुसलमानों को समझा रहे थे कि क्या तुमको इतना काफ़ी नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार (आस्मान से) तीन हज़ार फ़रिश्ते भेज कर तुम्हारी मदद करे? (ज़रूर काफ़ी है) ० बल्कि अगर तुम साबित क़दम रहो–

और (यह उनकी शरारत है कि) जब तुम से मिलते हैं, तो कह देते हैं कि हम ईमान ले आये हैं और जब अकेले होते हैं, तो तुम पर क्रोध (की अधिकता) से अपनी उङ्गलियाँ चबाने लगते हैं। (ऐ मुहम्मद! उन से) कहो कि अपने क्रोध (की आग) में (जल) मरो! (और) अल्लाह (उनके और सबके) दिलों के हाल से अभिज्ञ है ॥

(उनकी दशा यह है कि) यदि तुमको (कोई) भलाई और सम्पदा प्राप्त होती है, तो वह उनको बुरी मालूम होती है और तुम पर यदि (कोई आपदा या) ख़राबी आ जाती है, तो इस से वह .खुश होते हैं। (यह घोर शत्रुता का चिन्ह है) ॥

और (ख़ैर उनकी दशा उनके साथ है)। तुम (ऐ मुसलमानो!) अगर (उनकी समस्त बातों पर) सन्तोष व संयमता से काम लो, तो उनकी (शत्रुता और उनकी) चाल बाज़ी तुम्हारा कुछ (भी) न बिगाड़ सकेगी। उनका कोई काम अल्लाह के अधिकार (व शक्ति) से बाहर नहीं है ॥

और (वह भी याद है) जब (ऐ मुहम्मद! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम) तुम (उहद की लड़ाई के अवसर पर) प्रातः काल के समय (सवेरे सवेरे) अपने घर से निकल कर मुसलमानों को मुक़ाबला करने के लिये उचित स्थानों पर जमा रहे थे। (उस समय जो कुछ हुआ था, अल्लाह ने उसे सुना था और उस से अल्लाह परिचित है)। अल्लाह सुनने वाला (और) जानने वाला है ॥

उसी समय (की तो घटना * है कि) तुम (मुसलमानों) में से (भी) दो समूहों ने कायरता (दिखाने) का इरादा कर लिया था और (बनावटी मुसलमान अब्दुल्लाह बिन उबई के बहकाने में आकर लड़ाई से फिर चले थे)। अल्लाह (ही) उनका सहायक था (जो उन में फिर साहस पैदा हो गया)। अतः मुसलमानों को (हर दशा में) अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये (और कभी हिम्मत न हारनी चाहिये) ॥

*टीका--यह उहद की लड़ाई की घटना है। तीन हज़ार काफ़िरों ने चढ़ाई की थी, जिन में सात सौ आदमी ज़िरह पहने हुए थे और दो सौ घोड़ों पर सवार और बाक़ी ऊंट सवार और पैदल। कुछ मुसलमान यह चाहते थे कि शहर के भीतर रह कर लड़ाई की जाय। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम की भी यही राय थी, पर दूसरों ने आग्रह किया, कि हम इसे निर्लज्जता समझते हैं। हम युद्ध क्षेत्र में उतरेंगे। अतः मैदान ही की ठहरी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक हज़ार मुहाजिर और अन्सार को साथ लेकर निकले। वहां अब्दुल्लाह बिन उबई नामक बनावटी मुसलमान ने अपना रंग दिखाया और बोला, तुमने हमारा कहना न माना और मैदान में आ गये। अब हम तुम्हारा साथ नहीं देते। अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके तीन सौ साथियों की देखा देखी रसूलुल्लाह के सहायकों अर्थात अन्सारियों के भी दो दल फिरने लगे। उनके सरदारों ने उनको संभाला और सात सौ मुसलमानों का तीन हज़ार काफ़िरों से मुक़ाबला हुआ :- हसन निज़ामी ॥

और (उस घटना को भी याद करो! जब कि) अल्लाह ने (उहद से पहिले) तुमको बद्र (की लड़ाई) में सहायता दी थी। उस दशा में तुम बहुत (ही निर्बल और) निराधार थे। (अनुभव के बाद उहद के अवसर पर क्यों घबरा गये?)। अल्लाह की (अप्रसन्नता) से डरते रहो (और कृतज्ञता का भाव पैदा करो) सम्भव है, तुम कृतज्ञ हो जाओ ॥

(और ऐ मुहम्मद! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम- उस समय को भी याद करो) जब (कि बद्र की लड़ाई में) तुमने मुसलमानों से कहा था कि क्या तुम्हारे लिये यह यथेष्ट नहीं है कि तुम्हारा पालन कर्त्ता (आकाश से) उतारे हुए तीन हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हें सहायता दे ॥

(बिल्कुल यथेष्ट है) बल्कि अगर तुम (लड़ाई में ठहरे रहो और आपत्तियों को) धैर्य (के साथ सहन) करो –

وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّن فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُم
بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ۝
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ
قُلُوبُكُم بِهِ ۗ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ
الْحَكِيمِ ۝ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ
يَكْبِتَهُمْ فَيَنقَلِبُوا خَائِبِينَ ۝ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ
شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ۝
وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ
لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا ٤
أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝
وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝ وَأَطِيعُوا
اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَسَارِعُوا إِلَىٰ

और (ख़ुदा और रसूल की ना फ़र्मानी से) बचो। और (दुशमन) अभी इसी दम तुम पर चढ़ आएँ, तो तुम्हारा पर्वर्दिगार पाँच हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा, जो बड़ी सज धज से आ मौजूद होंगे ० और यह इमदाद तो ख़ुदा ने सिर्फ़ तुम्हारे ख़ुश करने को की और इस लिये (की) कि तुम्हारे दिल इस से तसल्ली पाएं। वर्ना (अस्ली) मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से है, (जो) बड़ा ज़बर्दस्त (और) हिकमत वाला (है) ० (और मदद भी की, तो) इस लिये कि काफ़िरों को कुछ कम करे या ऐसा ज़लील करे कि (खिस्याने होकर) ना मुराद वापस चले जायँ ० (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा तो कुछ भी इख़्तियार नहीं, चाहे ख़ुदा उन पर रहम करे, या उनकी ज़ियादतियों पर नज़र करके उनको सज़ा दे ० और जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है। जिस को चाहे मुआफ़ करे और जिसको चाहे सज़ा दे। और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० मुसल्मानो ! सूद (दर सूद) न खाओ (कि अस्ल में मिल मिल कर) दुगना चौगुना (होता चला जाय) । और अल्लाह से डरो, अजब नहीं (आख़िरत में) तुम फ़लाह पाओ ० और दोज़ख़ (के अज़ाब) से डरते रहो, जो काफ़िरों के लिये तय्यार है ० और अल्लाह और रसूल का हुक्म मानो, अजब नहीं तुम पर रहम किया जाय ० और अपने पर्वर्दिगार की मग़फ़िरत और जन्नत की तरफ़ लपको-

معنقہ

और (अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञाओं के विरोध से) बचते रहो और (शत्रु) तुम पर (अचानक) तुरन्त टूट पड़ें, तो अभी तुम्हारा पालन कर्त्ता तुम्हारी पांच हज़ार फ़रिश्तों से सहायता करेगा। जो एक विशेष रूप में होंगे (और जिन्हें देख कर तुम तुरन्त पहिचान लोगे कि वह फ़रिश्ते हैं) ॥

और यह (फ़रिश्तों की सहायता) अल्लाह ने केवल इस लिये दी, कि तुम्हारे लिये (विजय का) मङ्गल-समाचार हो जाय। और इस लिये कि, इस (सहायता) से तुम्हारे दिल (जो शत्रु की अधिक संख्या और अपनी अल्प संख्या के कारण निरुत्साह हैं) तसल्ली पायें। (लड़ाई में शत्रुओं की अधिक संख्या और अपनी अल्प संख्या का विचार न करना चाहिये) । सहायता तो अल्लाह (ही) की (ओर से होती) है, जो बड़ा अधिकार रखने वाला और युक्ति वाला है। (और फ़रिश्तों की सहायता) इस लिये (दी गई) कि काफ़िरों में से कुछ को बध करदे या (कम से कम इतना) अपमानित कर दे, कि (अपना मुंह छिपा कर) असफल लौट जायँ * ॥

* टीका-इन आयतों में बद्र की लड़ाई का वर्णन था। प्रथम उहद की लड़ाई का वर्णन किया और फिर बद्र का हवाला देना आरम्भ कर दिया। उहद की लड़ाई में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर को पहाड़ की एक घाटी पर नियुक्त कर दिया था और आज्ञा दी थी कि विजय हो या पराजय, तुम और तुम्हारी सेना किसी दशा में इस घाटी को न छोड़े। सब यहीं एकत्रित रहना। लेकिन विजय प्राप्त होते ही सेना युद्ध-प्राप्त-सम्पत्ति के लालच में शत्रु का माल लूटने की ओर झुक गई और घाटी पर ज़ुबैर के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह और कुछ गिनती के आदमी रह गये। शत्रुओं ने इस अवसर से लाभ उठाया; घाटी पर पलट पड़े और फिर युद्ध आरम्भ हो गया। जिस में ज़ुबैर के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत हमज़ा रसूलुल्लाह के चचा और बहुत लोगों ने धर्म के लिये प्राण निछावर किये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पवित्र दांत भी शहीद हुआ और थोड़ी देर के लिये विजय के पश्चात पराजय का मुंह देखना पड़ गया। परन्तु अन्त में जब रसूलुल्लाह ने फिर सबको एकत्रित करके मुक़ाबला किया, तो काफ़िर चल दिये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने अपने चचा हज़रत हमज़ा और धर्म पर प्राण देने वाले दूसरे लोगों को ख़ून और मिट्टी में लिथड़ा देखा, तो आप को बड़ा क्लेश हुआ और चाहा कि काफ़िरों के लिये बद दुआ(श्राप) करें। इस पर निम्न लिखित आयत उतरी कि:-हसन निज़ामी॥

(ऐ पैग़म्बर !) इस विषय में तुम्हारा कुछ (अधिकार) नहीं है। (अल्लाह अपने अनुग्रह से) चाहे उन्हें (तौबा करने की शक्ति देदे और) क्षमा करदे या चाहे तो इस लिये कि वह ज़ालिम हैं, उन्हे अज़ाब दे (तुम्हें श्राप न देना चाहिये) ॥

और (किसी को भी ऐसे विषयों में दख़ल देने की ज़रूरत नहीं) अल्लाह ही का है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ पृथ्वी में है। (अल्लाह अपनी सृष्टि के साथ जैसा व्यवहार करना चाहे, करे। वह मालिक है) जिसको चाहे क्षमा करदे और जिसको चाहे अज़ाब दे। (लेकिन) अल्लाह (की क्षमा करने की महिमा अधिक बढ़ी हुई है। वह) क्षमा करने वाला और दयालु है ॥

ऐ वह लोगो ! जो ईमान ले आये हो, ब्याज न खाओ (जो मूल रुपये में मिल कर) दुगना और चौगुना (हो जाय)। और अल्लाह से डरो. जिस से कि (मर्णान्त में) तुम्हें (दुःख से) छुटकारा मिले॥

और डरो उस आग से, जो अवज्ञा कारियों के लिये तैयार की गई है और आज्ञा पालन करो अल्लाह की, और (अल्लाह के) रसूल (उन पर सलाम) की, जिस से कि तुम पर दया की जाय ॥

और अपने पालन कर्त्ता की (कृपा और) क्षमा की ओर दौड़ो—

مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ
وَالْاَرْضُ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ
فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ
وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ
يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۠ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا
فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ
مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ هٰذَا بَيَانٌ
لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَلَا

जिसका फैलाव (इतना बड़ा है) जैसे ज़मीन व आस्मान (का फैलाव । सजी सजाई) उन पर्हेज़गारों के लिये तय्यार है ० जो .ख़ुश हाली और तङ्ग दस्ती (दोनों हालतों) में (.ख़ुदा के नाम) ख़र्च करते और .ग़ुस्से को रोकते और लोगों (के .क़ुसूरों) से दर गुज़र करते हैं। और (लोगों के साथ) नेकी करने वालों को अल्लाह दोस्त रखता है ० और वह लोग ऐसे (नेक दिल) हैं कि (ब तक़ाज़ाए बशरीयत) जब कोई बे हयाई का काम कर बैठते हैं या (कोई और बेजा बात करके) अपना (यानी अपने दीन का कुछ) नुक़सान कर लेते हैं, तो .ख़ुदा को याद करके अपने गुनाहों की माफ़ी माँगने लगते हैं और .ख़ुदा के सिवा (बन्दों के) गुनाहों को माफ़ करने वाला (और) है ही कौन ? और जो (बेजा बात) कर बैठते हैं, तो दीदा व दानिस्ता उस पर इसरार नहीं करते० यही लोग हैं, जिनका बदला उनके पर्वर्दिगार की तरफ़ से मग़फ़िरत है और (मग़फ़िरत के अलावा बहिश्त के) बाग़, जिन के तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी (कि वह) उन में हमेशा (हमेशा) रहेंगे और (नेक) काम करने वालों के भी (कैसे) अच्छे अज्र हैं ० (मुसल्मानो !) तुमसे पहिले भी (बहुत से) वाक़िआत हो गुज़रे हैं, तो मुल्क में चलो फिरो और देखो कि जिन लोगों ने (अपने वक़्त के पैग़म्बरों को) झुटलाया, उनका कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ ० यह (जो कुछ हमने फ़र्माया-इससे सब) लोगों को समझाना (मक़्सूद) है। लेकिन हिदायत और नसीहत तो इससे वही लोग पकड़ते हैं, जिनके दिल में (.ख़ुदा का) डर है०–

और स्वर्ग की ओर (भी) जिसकी चौड़ाई अस्मान और पृथ्वी (के समान विस्तृत) है। (वह उन) संयमी लोगों (और अल्लाह से डरने वालों) के लिये तैयार की गई है, जो (नर्मी गर्मी) निर्धनता धनवानता (हर एक अवसर) पर अल्लाह के मार्ग में (अपना माल) ख़र्च करते हैं। और (जो) क्रोध को सहन करने वाले और लोगों (के अपराधों) को क्षमा करने वाले हैं। और अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है ॥

और उन लोगों के लिये कि जब (कभी मानसिक प्रेरणाओं के कारण) उनसे कोई बड़ा पाप हो जाता है या (और किसी प्रकार की अनुचित बात से) अपनी (कुछ) हानि कर लेते हैं, तो अल्लाह को याद करते हैं। फिर (उस से) अपने पापों की क्षमा मांगते हैं और अल्लाह के अतिरिक्त कौन है, जो पापों को क्षमा कर सकता है ? और (इन संयमी लोगों में एक बात यह होती है कि) अपने (अनुचित) कर्मों पर जान बूझकर अड़ते नहीं, अर्थात् ज़िद नहीं करते ॥

यही लोग हैं कि (उनकी इच्छाओं को अस्वीकृत नहीं किया जाता और) उनका फल उनके पालन कर्त्ता की ओर से क्षमा (ही के रूप में मिलता है) और (यह भी कि रहने को) स्वर्ग (दिये जाते हैं) जिनके नीचे नहरें बहती हैं। (और) उन (स्वर्गों) में वह सदैव सदैव रहेंगे। और (अच्छे) कर्म करने वालों के फल बहुत ही अच्छे हैं ॥

(और ऐ मुसलमानो ! उहद की लड़ाई के बिगड़ जाने का तुमने भला ख़याल किया)। तुमसे पहिले (भी बहुत से समूह हो चुके हैं और उनके साथ) भी (बहुत कुछ) घटनायें घटित हो चुकी हैं। संसार में चलो, फिरो और देखो कि (अन्त में सत्य को) असत्य बताने वालों का कैसा (ख़राब) परिणाम हुआ। (विजय और पराजय ढलती फिरती छाया है। जय-एक दिन तुम्हारी ही होनी है। आरम्भ में सत्य पर चलने वालों को कष्ट पहुँचते हैं और सत्य पर चलने वालों की परीक्षा की जाती है) ॥

यह (जो कुछ हमने) वर्णन (किया-यह) लोगों के लिये (यथेष्ट) है और अल्लाह से डरने वालों के लिये शिक्षा और उपदेश (का साधन) ॥

تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝ إِنْ يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ
قَرْحٌ مِثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ
وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۗ
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ
آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَافِرِينَ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ
تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا
مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَقَدْ كُنْتُمْ
تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ
وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۝ وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ
انْقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ ۚ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ
فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا ۗ وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۝

وما كان

और हिम्मत न हारो और (इस इत्तिफ़ाक़ी शकस्त से) आ.ज़ुर्दा (ख़ातिर) न हो और अगर तुम (सच्चे) मुसलमान हो, तो (आख़िरकार) तुम्हारा ही बोल बाला है ० अगर तुमको (इस लड़ाई में शकस्त की) खुड़च लगी. तो (बे दिल मत हो, क्योंकि जङ्ग बद्र में) तरफ़ सानी को भी इसी तरह की खुड़च लग चुकी है । और यह इत्तिफ़ाक़ात वक़्त हैं, जो हमारे हुक्म से नौबत ब नौबत (सब) लोगों को पेश आते रहते हैं और (तुमको इत्तिफ़ाक़ ना मुलायम जंग उहद में पेश आया, तो इस से) .खुदा को सच्चे मुसलमानों का देखना मन्ज़ूर था और तुम में से बाज़ को शहादत के दर्जे देने थे। वर्ना .खुदा (तो किसी तरह भी इन) ज़ालिमों (यानी काफ़िरों) का रवादार नहीं ० और (नीज़ यह मन्ज़ूर था कि) अल्लाह मुसलमानों को (शक व शुबहे के मैल कुचैल से) निखार दे और काफ़िरों का ज़ोर तोड़ दे ० क्या तुम इस ख़याल में हो कि जन्नत में जा दाख़िल होगे, हालाँकि अभी तक अल्लाह ने न तो उन लोगों को जाँचा, जो तुम में से जिहाद करने वाले हैं, और न उन लोगों को जाँचा, जो (लड़ाई में) साबित क़दम रहते हैं ० और तुम तो मौत के आने से पहिले (.खुदा की राह में) मरने की आर्ज़ूएँ किया करते थे । सो अब तो तुमने उसको अपनी आँखों से देख लिया (फिर लड़ने से क्यों जी चुराते हो!)० और मुहम्मद इससे बढ़ कर और क्या?कि एक रसूल हैं और बस । इन से पहिले (और) भी रसूल हो गुज़रे हैं। पस अगर (मुहम्मद अपनी मौत से) मर जायँ या मारे जायँ, तो क्या तुम अपने उल्टे पैरों (कुफ़्र की तरफ़) फिर लौट जाओगे? और जो अपने उल्टे पैरों (कुफ़्र की तरफ़) लौट जायगा, वह .खुदा का तो कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा । और जो लोग (इस्लाम की नेअ्मत का) शुक्र करते हैं, उनको .खुदा अन्क़रीब जज़ाए (ख़ैर) देगा ० –

और (ऐ मुसलमानो ! किसी आकस्मिक और अस्थायी पराजय से उदास और सुस्त न हो । कभी हिम्मत न हारो । किसी प्रकार का) शोक न करो । (तुम उच्च पद प्राप्त करने के लिये पैदा किये गये हो)। यदि तुम धार्मिक हो (अर्थात् तुम्हारे भीतर धार्मिक विश्वासों का शक्ति है, हमारी बातों को सच्चा जानते हो) तो तुम ही (सब पर) विजय प्राप्त करोगे ॥

तुम्हें अगर (एक बार) घाव लग गया (और कुछ हानि पहुँची) तो (क्या है । मुक़ाबले की) जाति को भी वैसा ही घाव (पहिले बद्र की लड़ाई में) पहुँच चुका है और यह दिन (कभी अच्छे होते हैं, कभी बुरे और) हम इन्हें, लोगों में अदलते बदलते रहते हैं (इस लिये कि लोग शिक्षा ग्रहण करें और) इस लिये कि जो ईमान वाले हैं, अल्लाह उन (की दृढ़ता) को मालूम करे और तुम में से (एक को दूसरे का) गवाह बनावे (अर्थात् संसार के सामने तुम्हारे ईमान की दशा को प्रगट करे)। अन्यथा (वास्तव में) अल्लाह काफ़िरों को पसन्द नहीं करता (कि किसी दशा में भी तुम्हें उनसे पराजय दिलाये) । और (यह अमल) इस लिये (है) कि अल्लाह मुसलमानों को अलग छाँट ले और काफ़िर (बनावटी मुसलमानों) को (अलग करके) मिटा देवे ॥

क्या तुमने यह ख़याल कर रक्खा है कि (यूंही) स्वर्ग में चले जावोगे ? यद्यपि अभी अल्लाह ने न उनकी परिक्षा की, जो तुम में से धर्म-युद्ध करने वाले हैं और न उनकी जांच की, जो (लड़ाई में) दृढ़ता से स्थिर रहते हैं ॥

और तुम तो मृत्यु का सामना होने से पूर्व (अल्लाह की राह में) मरने के इच्छुक (रहा करते) थे । सो अब तुमने मृत्यु को आंखों के सामने देख लिया । (फिर भी घबराते हो, वह कोई घबराने की वस्तु नहीं है) ॥

और (ऐ मुसलमानो ! यह क्या हरकत थी कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के सम्बन्ध में उहद की लड़ाई में एक काफ़िर ने ख़बर उड़ादी कि उनका देहान्त हो गया, तो तुम घबरा उठे)। मुहम्मद (.खुदा) तो (हैं नहीं) एक रसूल हैं। इनके पहिले (भी) बहुत से रसूल हो चुके हैं (वह मृत्यु को प्राप्त हो गये और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम को भी एक न एक दिन मरना है)। फिर क्या अगर वह मर गये या मार डाले गये, तो (क्या) तुम (धर्म) से उल्टे पांव फिर जाओगे ? और जो मनुष्य (धर्म से) उल्टे पाँव फिर जायगा, तो वह अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा (अपना ही कुछ खोयेगा) । और जो लोग (धर्म पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने स्थिर हैं और उनकी मृत्यु के बाद भी स्थिर रहेंगे अर्थात् हमारी इस इस्लाम की नेमत के लिये) कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं (या करते रहेंगे) अल्लाह उन्हें (अच्छा) फल देगा ॥

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا
مُؤَجَّلًا ۗ وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ
وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَسَنَجْزِي
الشّٰكِرِيْنَ ● وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ مَعَهٗ
رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۗ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ● وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ
قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ
اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
الْكٰفِرِيْنَ ● فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا
وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ●
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ●

ع

और कोई शख़्स बे हुक्म ख़ुदा मर नहीं सकता (हर एक की मौत का) वक़्त मुक़र्रर लिक्खा हुआ है। और जो शख़्स दुनिया में (अपने किये का) बदला चाहता है, हम उसका बदला यहीं दे देते हैं और जो आख़िरत में बदला चाहता है, हम उसको वहीं देंगे। और जो लोग (इस्लाम की नेअ़्मत का) शुक्र करते हैं, हम उनको अ़न्क़रीब जज़ाए (ख़ैर) देंगे ० और बहुत से पैग़म्बर हो गुज़रे हैं, जिनके साथ होकर बहुत से अल्लाह वाले लोग (दुश्मनों से) लड़े, तो जो मुसीबत उनको अल्लाह के रस्ते में पहुँची, उस की वजह से न तो उन्होंने हिम्मत हारी और न बोदा पन किया। और न (दुश्मनों के आगे) आजिज़ी (का इज़हार किया) और अल्लाह (मुसीबत में) साबित क़दम रहने वालों को दोस्त रखता है ० और सिवाय इसके उनके मुँह से एक बात भी तो नहीं निकली कि लगे दुआएँ माँगने कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमारे गुनाह माफ़ कर और हमारे कामों में जो हम से ज़ियादतियाँ हो गई हैं, उन से दर गुज़र फ़र्मा और (दुश्मनों के मुक़ाबिले में) हमारे पाँव जमाए रख और काफ़िरों के गिरोह पर हमको फ़तह दे ० तो अल्लाह ने उनको दुनिया में बदला दिया (सो दिया) आख़िरत में भी अच्छा बदला दिया और अल्लाह ख़ुलूस दिल से काम करने वालों को दोस्त रखता है ० मुसलमानो ! अगर तुम काफ़िरों के कहे में आ जाओगे, तो वह तुम को उल्टे पैरों (कुफ़्र की तरफ़) लौटा कर ले जायँगे, फिर तुम ही उल्टे घाटे में आ जाओगे ० --

---

और (याद रक्खो !) अल्लाह की आज्ञा के बिना कोई नहीं मर सक्ता। (हर मनुष्य की मौत का) एक नियत समय (हमारे यहाँ) लिखा हुआ है और जो कोई संसार में फल चाहेगा, हम उसको संसार में (फल) दे देंगे। और जो परलोक का फल चाहेगा, हम उसे परलोक का फल दे देंगे और जो (हमारे इस्लाम-धर्म-रूपी प्रसाद का मान करेंगे और हमारे) अनुग्रहीत होंगे, उन्हें हम (लोक और परलोक का) फल देंगे ॥

और बहुत नबी (ऐसे हो चुके) हैं, जिनके साथ होकर अक्सर अल्लाह वाले (काफ़िरों से) लड़े हैं। उन लोगों को ख़ुदा के मार्ग में जो कष्ट पहुँचे, वह उनकी वजह से हिम्मत नहीं हारे और उदास नहीं हुये और दब (कर) नहीं (रह) गये। और अल्लाह सब्र करने वालों (दृढ़ रहने वालों) को (ही) प्यार करता है ॥

इन (अल्लाह वालों) का अगर कोई क़ौल रहा, तो यही रहा कि ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! हमारे पापों को क्षमा करदे और हमारे काम में जो अनौचित्य हम से हुआ, उसको (भी)। और (हमारे सत्य के मार्ग में) हमें अटल रख और काफ़िरों की जाति (के मुक़ाबले) में हमारी सहायता कर ॥

फिर अल्लाह ने उन्हें (क्या क्या न दिया) संसार में (पूरा) फल प्रदान किया (सब पर विजय हुई)। और (इस पर विशेषता यह कि मरणान्त का सर्व श्रेष्ठ फल प्रदान किया)। अल्लाह नेक काम करने वालों से प्रेम करता है ॥

ऐ ईमान वालो ! अगर तुम काफ़िरों का कहा मानोगे, तो (बार बार सुन लो कि) वह तुम्हें (कुफ़्र की ओर) उल्टे पाँव फेर देंगे (और) फिर तुम हानि (के गढ़े) में जा पड़ोगे * ॥

* टीका—जब उहद की लड़ाई बिगड़ी और प्रसिद्ध हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम शहीद हो गये, तो काफ़िरों ने मुसलमानों से कहना आरम्भ किया, कि अब तो हमने जय प्राप्त कर ली। अब तुम्हें अपने प्राचीन धर्म में आ जाना चाहिये। ऊपर लिखित आयत में इसी के विरुद्ध कहा गया है। अर्थात अगर मुसलमानों ने काफ़िरों की सलाह मानी, तो वह तबाह हो जायंगे और आगे फ़र्माता है कि शत्रुओं के धोके में न आओ और घबराओ नहीं:——हसन निज़ामी ॥

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۝ سَنُلْقِيْ فِيْ
قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا
بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ
وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ
اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا
فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ
بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۭ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ
لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ
عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ
عَلٰٓي اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ
فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰي
مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ اَصَابَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

ع

(काफ़िर तुम्हारे ख़ैर ख़्वाह नहीं) बल्कि तुम्हारा (हक़ीक़ी) ख़ैर ख़्वाह अल्लाह है और वह सब मददगारों से बेहतर (मददगार) है ० (घबराओ नहीं) हम अन्क़रीब तुम्हारा हैबत काफ़िरों के दिलों में बैठा कर रहेंगे। क्योंकि उन्होंने उन चीज़ों को .ख़ुदा का शरीक बनाया है, जिन (के शरीक होने) की .ख़ुदा ने कोई सी सनद भी नहीं भेजी और (आख़िरकार) उन लोगों का ठिकाना दोज़ख़ है। और ज़ालिमों का (भी क्या ही) बुरा ठिकाना है ० और (मुसलमानो !) जिस वक़् तुम .ख़ुदा के हुक्म से काफ़िरों को तहे तेग़ कर रहे थे, (उस वक़्) .ख़ुदा ने तुमको अपना वादए (फ़तह) सच्चा कर दिखाया। यहाँ तक कि तुमको तुम्हारी ख़ातिर ख़्वाह जीत दिखा दी। इसके बाद तुम (माल ग़नीमत देखकर लड़ाई से) बुज़्दिल हो गए और तुमने (रसूल के) हुक्म (यानी मोरचे पर जमे रहने) के बारे में आपस में झगड़ा किया और (रसूल की) ना फ़र्मानी की। बाज़ तो तुम में से (मोरचा छोड़ कर) दुनिया (यानी ग़नीमत) के पीछे पड़ गए और बाज़ (मोरचे पर क़ायम रह कर सवाब) आख़िरत की फ़िक्र में लगे (और शहीद हो गए)। फिर तो .ख़ुदा ने तुमको दुश्मनों (की तरफ़) से फेर दिया (और तुम भाग खड़े हुए। इस से) .ख़ुदा को तुम्हारा (ईमान व इख़्लास) आज़माना मन्ज़ूर था और (फिर भी) .ख़ुदा ने तुम से दर गुज़र की। और मुसलमानों पर .ख़ुदा का (बड़ा) करम है ० (उस वक़् को याद करो) जब तुम (बद हवास) भागे चले जाते थे और बा वजूदे कि रसूल तुम्हारे पीछे (खड़े) तुमको बुला रहे थे। (लेकिन) तुम मुड़ कर किसी की तरफ़ को नहीं देखते थे। पस (इस मुख़ालिफ़त से, जो तुमने रसूल को आ.ज़ुर्दा किया, इस) रन्ज के बदले .ख़ुदा ने तुमको (शिकस्त का) रन्ज पहुँचाया। ताकि जब कभी तुम से कोई मतलब फ़ौत हो जाय या तुम पर कोई मुसीबत आ पड़े, तो तुम (सब्र की आ़दत रक्खो और) उसका रन्ज न करो। और तुम कुछ भी करो, अल्लाह को उसकी ख़बर है ०--

---

बल्कि अल्लाह पर भरोसा रक्खो। अल्लाह तुम्हारा सहायक है और उसकी सहायता सब से श्रेष्ठ है॥

निकट भविष्य में हम काफ़िरों के दिलों में (तुम्हारा) भय बिठा देंगे। इस लिये कि (वह अल्लाह के चोर हैं)। उन्होंने (दूसरी वस्तुओं को) अल्लाह का शरीक बनाया है। जिस का अल्लाह की ओर से उतारा हुआ (इनके पास) कोई प्रमाण नहीं है। और (अन्त में) उनका ठिकाना नर्क (होगा)। और ज़ालिमों (अर्थात् काफ़िरों) का (कैसा) बुरा ठिकाना है॥

और अल्लाह ने तो (उहद की लड़ाई में भी) अपना वादा (जो) तुम से (किया था) सच्चा कर दिखाया (था। अर्थात् तुम ने काफ़िरों पर अधिकार जमा लिया था) जिस समय तुम उनको अल्लाह की आज्ञा से वध कर रहे थे। फिर जब बाद इसके कि (अल्लाह) तुम्हें तुम्हारी प्रिय वस्तु (अर्थात् सफलता) दिखा चुका (तुम लालच में फँस गये और युद्ध-प्राप्त-सम्पत्ति पर टूट पड़े)। तुम ने कायरता (प्रकट) की (भाग निकले) और काम में झगड़ा डाल दिया और अवज्ञा करने पर उतर आये। कोई तुम में से संसार की इच्छा करने लगा (अर्थात युद्ध-प्राप्त-सम्पत्ति के पीछे पड़ गया)। और कोई तुम में से परलोक का इच्छुक हुआ (अर्थात् मोरचे पर रसूल की आज्ञानुसार डटा रहा, तो .ख़ुदा ने भी लड़ाई का रङ्ग बदल दिया। अर्थात् ऐसी दशा में जो उचित था, वह किया गया अर्थात्) तुम्हें काफ़िरों (पर धावा करने का साहस देने के स्थान में उनकी ओर) से (तुम्हारा मुंह) फेर दिया (और तुम भाग निकले और यह) इस लिये (किया) कि तुम्हारी परीक्षा कर ली जाय (कि कितना ईमान व सचाई रखते हो)। और (ख़ैर) अल्लाह ने तो तुम (भागने वालों) को (भी) क्षमा कर दिया और मुसलमानों पर अल्लाह की बड़ी कृपा है॥

(वह समय भी याद करो) जब तुम (भागने वाले काफ़िरों पर) बढ़े चले जाते थे * और किसी को पीछे मुड़ कर न देखते थे। यद्यपि तुहारे पीछे रसूल (खड़ा) तुम्हें पुकार रहा था। सो तुमको (अल्लाह) ने, शोक के बदले शोक दिया है। (अर्थात् यह जो कुछ हुआ रसूलुल्लाह को क्लेश पहुँचाने का बदला है) जिस से कि (तुम शिक्षा ग्रहण करो और भविष्य में चाहे) कुछ तुम्हारे हाथ से जाय और (चाहे) कोई विपत्ति तुम्हारे सामने उपस्थित हो (रसूल की आज्ञा के सामने) उसका ग़म न किया करो और अल्लाह तुम्हारे आचरणों से अभिज्ञ है॥

* टीका--यह भी उहद की लड़ाई की एक घटना है कि मुसलमानों ने काफ़िरों का पीछा किया और रसूलुल्लाह काफ़िरों का पीछा करना अनुचित समझते थे और मुसलमानों को रोकते थे, लेकिन मुसलमान बढ़े चले गये और एक न सुनी :--हसन निज़ामी॥

فِر (जब तुम शिकस्त का) ग़म (व अफ़सोस कर चुके, तो इस) के बाद .खुदा ने तुम पर एक इत्मिनान की हालत तारी की कि तुम में से एक (गरोह के) गरोह को (यानी सच्चे मुसलमानों को) नींद ने आ दबाया और बाज़ (मुनाफ़िक़ थे) जिन को (उस वक़्त भी) अपनी जानों की पड़ी थी। अल्लाह की जनाब में नाहक़ (नारवा) जाहिलीयत (के वक़्त) की सी बद गुमानियाँ कर रहे थे (और) कहते थे कि हमारे बस की क्या बात है ? (ऐ पैग़बर ! तुम इन से) कह दो कि सब काम .खुदा ही के इख़्तियार में हैं। (ऐ पैग़म्बर ! ज़बानी शिकायतों के अलावा) इनके दिलों में और और बातें भी मख़्फ़ी हैं. जिनको तुम पर ज़ाहिर नहीं करते। (जी ही जी में) कहते हैं, कि हमारा कुछ भी बस चलता होता, तो हम यहां मारे ही न जाते। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कह दो कि तुम अपने घरों में भी होते, तो जिन की क़िस्मत में मारा जाना लिखा था, (घरों से) निकल कर (.खुद अपने) अपने पछड़ने की जगह आ मौजूद होते। और (इस लड़ाई के हार जाने में भी चन्द दर चन्द मस्लहतें थीं, अज़ाँ जुम्ला यह कि) .खुदा को मन्ज़ूर था कि तुम्हारे माफ़िज़्ज़मीर को आज़माए और तुम्हारे दिली ख़यालात को (वस्वसों के मैल कुचैल से) साफ़ करे और अल्लाह तो सब के जी की बात जानता है ० जिस दिन (मक़ाम उहद में मुसल्मानों और काफ़िरों की) दो जमाअतें (आपस में) भिड़ गईं (और) तुम (मुसल्मानों) में से (बहुत) लोग भाग खड़े हुए, तो (उनका भागना कुफ़्र व इर्तिदाद की वजह से न था, बल्कि उस की) सिर्फ़ (यह वजह हुई कि) उनके बाज़ गुनाहों (यानी हुक्म रसूल की मुख़ालिफ़त) की वजह से शैतान ने उनके पांव (जगह से) उखाड़ दिये और बेशक .खुदा ने उन (के इस .क़ुसूर) से दर गुज़र की । अलबत्ता अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है ० मुसल्मानो ! उन लोगों जैसे न बनो-

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُعَاسًا يَغْشَىٰ
طَائِفَةً مِنْكُمْ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنْفُسُهُمْ
يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُولُونَ
هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ
يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ
لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا هَاهُنَا قُلْ
لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ
عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ
مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ
يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ
بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا

(जब तुम शोक व क्लेश उठा चुके, तो) फिर (शोक व) क्लेश के बाद (अल्लाह तआला ने) तुम में से एक समूह को (जो पवित्र मुसल्मानों का था, ऐसा) धैर्य्य दे दिया, कि वह (निश्चिन्त होकर) ऊँघने लगे और एक समूह को (जो बनावटी तथा कपटी मुसल्मानों का था, उस समय भी) अपने प्राणों की चिन्ता हो रही थी। वह अल्लाह के विषय में असभ्यता-काल जैसे अनुचित विचार बांध रहे थे (और कटाक्ष से) कहते थे, कोई बात भी हमारे अधिकार में है। कह दो (ऐ पैग़म्बर ! इन से) कि कुल बातें अल्लाह के इख़्तियार (और अल्लाह के अधिकार) में हैं। (इनके कहने का अभिप्राय कुछ और * है) जो उन्होंने अपने दिल में छिपा रक्खा है। उसे तुम पर प्रगट नहीं करते। कहते हैं--यदि हमारे हाथ कोई बात होती,(अर्थात् कमान हमारे हाथ में होती या हमारी राय मानी जाती) तो हम यहां मारे न जाते। (तुम ऐ रसूल !) कह दो कि (ऐ मुनाफ़िक़ो ! अर्थात् बनावटी मुसल्मानो !) अगर तुम अपने घरों में भी होते, तो (आज) जिन के लिए मारा जाना (भाग्य में हो चुका था और) लिख दिया गया था, वह बाहर निकलते और अपने बध स्थान पर (पहुँचते) और अल्लाह को (तो) इसे प्रगट करना था, जो तुम्हारे चित्त में है और साफ़ करना था, जो तुम्हारे हृदय में है और अल्लाह दिलों के रहस्य जानता है ॥

* टीका--लड़ाई की इस ख़राबी से जिनको .खुदा के लिये प्राण देने थे, वह शहीद हो गये। और जो भागने थे, वह भाग उठे और जो युद्ध--क्षेत्र में ठहरे रहे, उनको ऊंघ आ गई। जिस से काफ़िरों का जो रोब पड़ा हुआ था, वह बिलकुल नष्ट हो गया। इतनी देर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम पर भी मूर्छा छाई रही। फिर जब आपको होश आया, तो सब ने आपके चारों ओर एकत्रित होकर युद्ध का सामान किया। उस समय मुनाफ़िक़ (बनावटी मुसल्मान) कहने लगे कि कुछ भी काम हमारे हाथ है। इस का यह अभिप्राय था कि लड़ाई के बिगड़ने के बाद कुछ भी हमारा काम बना रहेगा या बिल्कुल आया गया हुआ। या यह कि अल्लाह ने चाहा सो किया। हमारा क्या अधिकार, और चित्त में यह बात थी कि हमारी सम्मति पर अमल न किया, जो इतने लोग मरे। अल्लाह तआला ने दोनों अभिप्रायों का उत्तर दे दिया और फ़र्माया कि इस में यह युक्ति गुप्त थी, कि सच्चे की सच्चाई और बनावटी की बनावट प्रकट हो जाय :--हस्सन निज़ामी ॥

(मुनाफ़िक़ों को तो निफ़ाक़ का दण्ड भुगतना ही पड़ेगा, लेकिन मुसल्मानो !) तुममें से जो लोग (उहद की लड़ाई में) दोनों फ़ौजों के परस्पर आमने सामने होने के दिन भाग खड़े हुए थे, तो (बात केवल यह थी कि) इन्हें इनके कुछ दुराचरणों (अर्थात् रसूल का कहना न मानने) के कारण शैतान ने बहका दिया (था) और अल्लाह ने इनको क्षमा कर दिया। अल्लाह क्षमा करने वाला, तथा सहन करने वाला है ॥

मुसल्मानो ! तुम उन लोगों जैसे (विचार के) न बन जाना (और उन मुनाफ़िक़ों की बातों से प्रभावान्वित न होना)-

كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا
فِي الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا
مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً
فِيْ قُلُوْبِهِمْ وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ● وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ
اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ● وَلَئِنْ مُّتُّمْ
اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ● فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ
اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ
لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ
لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ● اِنْ يَّنْصُرْكُمُ
اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ
يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهٖ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ●

जो (ज़बानी दावए इस्लाम करते हैं और दिल से) मुन्किर हैं और उन के भाई बन्द परदेस में निकले हों या जिहाद करने गए हों (और वहाँ मर जायं) तो उनके बारे में कहने लगते हैं कि हमारे पास (ठहरे रहे) होते, तो न मरते और न मारे जाते। .खुदा ने इन लोगों के ऐसे ख़यालात इस लिये कर दिये हैं कि (सारी उम्र) इनके दिलों में यही हसरत रहे और (यूं तो) अल्लाह ही जिलाता और मारता है और जो कुछ भी तुम कर रहे हो, अल्लाह उस को देख रहा है ० और अल्लाह के रस्ते में अगर तुम मारे जाओ या (उसके रस्ते में अपनी मौत से) मर जाओ, तो .खुदा की बख़्शिश और मेहर (जो आख़िरत में तुम पर होगी) उस (माल व दौलत) से--जो लोग (चन्द रोज़ जी कर) जमा कर लेते हैं, कहीं बेहतर है ० और तुम (अपनी मौत से) मरो या मारे जाओ, (आख़िरकार) अल्लाह ही तरफ़ खेंच बुलाए जाओगे ० तो (ऐ पैग़म्बर ! यह भी) अल्लाह का बड़ा ही फ़ज़्ल हुआ कि तुम उनको नर्म दिल (सर्दार) मिले हो और अगर (.खुदा न ख़्वास्ता) तुम मिज़ाज के अक्खड़, (और) सख़्त दिल होते, तो यह लोग (कभी के) तुम्हारे पास से तित्तर बित्तर हो गए होते। तो तुम (अपनी जिबिल्ली आदत क्यों छोड़ो। इस जङ्ग उहद के मुआमिले में भी) इनके .कुसूर माफ़ करो और (.खुदा से भी) इनके गुनाहों की मग़फ़िरत चाहो, और मुआमिलात (सुलह व जङ्ग) में (बदस्तूर साबिक़ इनको) शरीक मश्वरा कर लिया करो। फिर (मश्वरे के बाद) तुम्हारे दिलमें एक बात ठन जाय, तो (बे तअम्मुल उसको कर गुज़रो। मगर) भरोसा .खुदा ही पर रखना। जो लोग (.खुदा पर) भरोसा रखते हैं, .खुदा उनको दोस्त रखता है ० (मुसलमानो ! अगर .खुदा तुम्हारी मदद पर है, तो फिर कोई भी तुम पर ग़ालिब आने वाला नहीं और अगर वह तुम को छोड़ बैठे, तो उसके (छोड़े) पीछे (दूसरा) कौन है, जो तुम्हारी मदद को खड़ा हो ? और मुसलमानों को चाहिये कि अल्लाह ही का भरोसा रक्खें ०--

जो (प्रकट में मुसलमान हैं और वास्तव में) काफ़िर हैं। और जो अपने भाई बन्धुओं के विषय में जब कि वह देश में यात्रा को निकले हों या धर्म--युद्ध कर रहे हों (और वहां मर जायँ) तो कहने लगते हैं कि यह लोग हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। (यह उन का विचार) इस लिये (है) कि अल्लाह (चाहता है कि) इस विचार से उनके दिलों में हसरत (निराशा व अफ़सोस) भरदे। (अन्यथा वास्तव में यह नहीं है। यह क्या किसी के मरने या मारे जाने को रोक सक्ते हैं ?)। अल्लाह ही (जिसको चाहता है) जिलाता है और (जिसको चाहता है) मारता है। (तुम अवश्य तक़दीर पर अविश्वास करने वाले मुनाफ़िक़ों के अनुसरण से बचना)। अल्लाह तुम्हारे सब कर्मों को देखता है ॥

और अगर तुम अल्लाह के मार्ग में (काफ़िरों से लड़ते हुए) मारे गये या (किसी और नेक काम को करते हुए) मर गये, तो (याद रक्खो !) अल्लाह की क्षमा और (अल्लाह की) कृपा (जो तुम्हें प्राप्त होगी, वह) इस (माल व धन) से कहीं श्रेष्ठ है। जिसे (कुछ दिन जीवित रह कर यह मुनफ़िक़) लोग जमा कर लेते हैं। (अतएव मृत्यु से जी चुराना न चाहिये) ॥

और (अपनी मृत्यु से) मरो या मारे जाओ (हर दशा में मृत्यु के बाद) तुम्हें अल्लाह ही के पास जमा होना (और उसी को हिसाब देना) होगा ॥

(उहद की लड़ाई में भागने वाले मुसलमानों ने तो अपनी करनी में कसर की नहीं, परन्तु ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम यह) अल्लाह की बड़ी कृपा है कि तुम (जैसे) कोमल हृदय (पैग़म्बर) इन्हें मिले हो और अगर (कहीं) तुम तीक्ष्ण-स्वभाव और कठोर हृदय होते, तो (यह सब) तुम्हारे पास से इधर उधर हो जाते। सो, (अपने स्वभावानुसार) तुम इनके अपराध क्षमा करदो। और (हम से) इनके लिये क्षमा (की दुआ) मांगो। और (युद्ध के) विषयों में इन से परामर्श लो (और) फिर (परामर्श के उपरान्त) जब तुम्हारे दिल में कोई बात ठन जाय, तो (उसे कर डालो और) अल्लाह पर भरोसा रक्खो। अल्लाह (अपने ऊपर) भरोसा रखने वालों से प्रेम करता है ॥

अगर अल्लाह तुम्हारी सहायता करे (अल्लाह की सहायता तुम्हारी स्थिति में सम्मिलित हो) तो तुम पर कोई अधिकार नहीं जमा सकता और अगर वह तुम्हें छोड़ दे, तो उसके अतिरिक्त कौन तुमको मदद दे सकता है ? (अतएव) चाहिये कि मुसलमान, अल्लाह (ही) पर भरोसा करें ॥

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ● اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْ
بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ
الْمَصِيْرُ ● هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ
بِمَا يَعْمَلُوْنَ ● لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ
بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ
اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ
وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ● اَوَلَمَّآ
اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ
اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ● وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ
فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ● وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ

और पैग़म्बर (की शान) से (निहायत) बईद है कि (पैग़म्बर होकर) ख़यानत करे और जो (जुर्म) ख़यानत का मुर्तकिब होगा, तो जो चीज़ ख़यानत की है, क़यामत के दिन (ख़ुदा के रूबरू बेऐनिही वही चीज़) उसको ला हाज़िर करनी होगी। फिर जिस ने जैसा किया है, उसको उसका पूरा पूरा बदला दिया जायगा और किसी पर (किसी तरह का ज़ोर व) ज़ुल्म नहीं होगा ० भला जो शख़्स अल्लाह की मर्ज़ी का तावे हो, कहीं (उस से) उस शख़्स जैसा (फ़ेल सर्ज़द) हो सकता है, जो ख़ुदा के ग़ज़ब में आ गया हो और (आख़िरकार) उसका ठिकाना दोज़ख़ हो और वह (बहुत ही) बुरा ठिकाना है ० अल्लाह के हाँ लोगों के (अलग अलग) दर्जे हैं और वह लोग जो कुछ भी कर रहे हैं, अल्लाह उसको देख रहा है ० अल्लाह ने मुसलमानों पर (बड़ा ही) फ़ज़्ल किया कि उन में उन ही में का एक रसूल भेजा। जो उनको ख़ुदा की आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाता है और उनको (कुफ़्र व शिर्क की गन्दिगी से) पाक करता और किताब इलाही (यानी क़ुरआन) और दानाई (की बातों) की उनको तालीम देता है, वर्ना (इन पैग़म्बर के आने से) पहिले तो यह लोग खुली हुई गुमराही में थे ही ० क्या जब तुम (मुसलमानों) पर (जङ्ग उहद में शिकस्त की) मुसीबत आ पड़ी, हालाँकि तुम (जङ्ग बद्र में) इस से दूनी मुसीबत (अपने दुश्मनों पर) डाल चुके हो (यानी यह मुसीबत उससे आधी है)। तो (भी) तुम (बेदिल होकर) लगे कहने कि (यह आफ़त) कहाँ से (आ गई ? ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि यह (आफ़त आई तो) तुम्हारे अपने (किये) से (आई)। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० और जिस दिन (मक़ाम उहद में मुसलमानों और काफ़िरों की) दो जमाअतें भिड़ गईं और तुम (मुसलमानों) को (शिकस्त की) मुसीबत पहुँची, तो ख़ुदा का हुक्म यूँही था और यह भी ग़रज़ थी कि ख़ुदा (सच्चे) ईमान वालों को मालूम कर ले ०–

और (तुम जो मोरचा छोड़ कर भागे थे, तो क्या तुम्हें यह गुमान था कि युद्ध-प्राप्त-सम्पत्ति में से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम कुछ रख लेंगे; जैसा कि बद्र की लड़ाई के अवसर पर भी तुम्हारे दिल में इस प्रकार का झूठा विचार पैदा हुआ था। तुम्हें कभी ऐसी बद गुमानी न करनी चाहिये)। ख़यानत करना नबी का गौरव नहीं है (ख़यानत महान पाप है)। और जो कोई ख़यानत करेगा, प्रलय के दिन उसे ख़यानत की हुई वस्तु को उपस्थित करना पड़ेगा। हर मनुष्य अपनी कमाई को (वहाँ) पूरा (पूरा) पायेगा (अर्थात् जैसा जिस ने किया होगा, उस को बदला मिल जायगा)। और लोगों पर (जो कुछ उस दिन बीतेगा, वह कोई) अत्याचार न होगा (उस के वह अधिकारी होंगे)॥

क्या ऐसा मनुष्य, जो अल्लाह की इच्छा के आधीन है, उस जैसा हो सक्ता है–जिसने अल्लाह का क्रोध (मोल) ले लिया हो और जिसका ठिकाना नर्क है और वह (बहुत ही) बुरा ठिकाना है। (ख़यानत तो नीचों और नार्कियों का काम है)॥

(और) अल्लाह के यहाँ लोगों के भिन्न भिन्न पद हैं और जो कुछ (लोग) करते हैं, अल्लाह (सब को) देखता है॥

अल्लाह ने (तो) मुसलमानों पर उपकार किया है कि उन्हीं में से उनमें (एक) पैग़म्बर भेजा है, जो उनके सामने अल्लाह की आयतें पढ़ता है और उनके हृदयों को पवित्र करता है और उनको अल्लाह की किताब और बुद्धिमानी की बातें सिखाता है। (अन्यथा उसके आने से) पहिले (सब लोग) स्पष्ट गुमराही में (फंसे हुए) थे॥

(बद्र की लड़ाई में तुमने सत्तर काफ़िरों को क़त्ल और सत्तर को गिरफ़्तार किया था और उहद की लड़ाई में तुम्हारे केवल सत्तर शहीद हुए हैं। गोया अब भी उनके नुक़्सान की संख्या दुगनी है। फिर) क्या (यह कोई उचित बात है कि) जब (उहद की लड़ाई में) एक (ऐसी ही) तकलीफ़ तुम्हें पहुँची, जिससे दुगनी तुम (बद्र की लड़ाई में काफ़िरों को) पहुँचा चुके हो, तो तुम कहते हो कि यह (मुसीबत) कहाँ से आ गई ? कह दो (कि आई कहाँ से) यह तकलीफ़ (भी) तुम्हारे अपने (ही) हाथों से पहुँची है (कि रसूल की आज्ञा न मानी और मोरचे से हट गये। बहर हाल) अल्लाह हर बात पर अधिकार रखता है (विजय पर भी और पराजय पर भी। तुम्हें उदास होने की आवश्यकता नहीं)॥

उस दिन (की उहद की लड़ाई में) दो दल (परस्पर) मुक़ाबला कर रहे थे। जो कुछ (क्लेश) तुम्हें पहुँचा, वह अल्लाह की आज्ञा से था। (उस में एक) और भी प्रयोजन था, कि अल्लाह तआला मोमिन और मुनाफ़िक़ अर्थात विश्वास करने वाले तथा बनावटी, दोनों को प्रकट करदे –

नَافَقُوا وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا
قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنَاكُمْ هُمْ لِلْكُفْرِ
يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِم
مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ
الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا
مَا قُتِلُوا قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ أَنفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن
كُنتُمْ صَادِقِينَ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ
فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ
بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ
مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ
الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِن بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ

और मुनाफ़िक़ों को भी मालूम कर ले, और मुनाफ़िक़ों से कहा गया कि आओ अल्लाह के रस्ते में लड़ो या (इस लिये न लड़ो, तो दुश्मन को अपने पर से) हटा (तो) दो। तो लगे कहने कि अगर हम समझते (कि आज) लड़ाई (होगी) तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते। यह लोग उस रोज़ बनिस्बत ईमान के कुफ़्र से नज़दीक तर थे। मुंह से ऐसी बात कहते हैं, जो इनके दिलों में नहीं और (ख़बासत) जिस को छुपाते हैं, अल्लाह (उस को) ख़ूब जानता है ० (यह वही लोग हैं,) जो (आप मज़े से) बैठे रहे और अपने (शहीद) भाइयों की निस्बत लगे कहने कि हमारा कहा मानते, तो मारे न जाते। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अगर तुम (अपने बयान में) सच्चे हो, तो अपने ऊपर से मौत को टाल देना ० और (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग अल्लाह के रस्ते में मारे गए हैं, उन को मरा हुआ ख़याल न करना। (यह मरे नहीं हैं) बल्कि अपने पर्वर्दिगार के पास जीते (जागते मौजूद) हैं। (उसके ख़्वान करम से) उन को रोज़ी मिलती है ० (और) जो कुछ अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन को दे रक्खा है, उस में मगन हैं और जो लोग इनके बाद (ज़िन्दा रहे और) अभी इन में आकर शामिल नहीं हुए, उनकी निस्बत (यह ख़याल करके) ख़ुशियाँ मनाते हैं कि (यह भी शहीद हों, तो हमारी तरह) इन पर (भी) न (किसी क़िस्म का) ख़ौफ़ (तारी) हो और न यह (किसी तरह) आज़ुर्दा ख़ातिर रहें० अल्लाह की नेअ्मतों की और (उस के) फ़ज़्ल की ख़ुशियाँ मना रहे हैं और (नीज़) इस की, कि अल्लाह ईमान वालों के सवाब को ज़ाए नहीं होने देता ० जो लोग (लड़ाई में) ज़ख़्म खाए पीछे ख़ुदा और रसूल के बुलाने पर चल खड़े हुए--

---

और (जब) उन (मुनाफ़िक़ों) से कहा गया कि आओ, अल्लाह के मार्ग में लड़ो (या किसी और उपाय से शत्रुओं की शरारत को) दूर करो (तो कटाक्ष से) कहने लगे (कि तुम तो हमारी सलाहों को मानते ही नहीं-हम भला लड़ना क्या जानें) । अगर हम युद्ध-विद्या से परिचित होते, तो हम अवश्य तुम्हारे साथ चलते। यह लोग ईमान की अपेक्षा कुफ़्र से उस दिन अधिक समीप थे। (और) मुंह से वह बात कह रहे थे, जो उनके दिलों में नहीं थी (अर्थात् लड़ाई पर न जाने के लिये अज्ञानता का बहाना पेश करते थे। यद्यपि उनके न लड़ने का कारण कुछ और ही था)। और जिसे यह छिपाते हैं, अल्लाह उसे जानता है ॥

(यह) वह लोग हैं, जो (स्वयं तो आराम से) बैठे रहे (और) अपने (शहीद अर्थात धर्म पर प्राण देने वाले) भाइयों के बारे में कहने लगे कि अगर वह हमारा कहना मानते, तो मारे न जाते। (उनसे) कह दो कि (अगर मारा जाना तुम्हारे अधिकार में है और) तुम (इस दावे में) सच्चे हो, तो अब अपने ऊपर से मौत को टाल देना ॥

और (उन शहीद होने वालों को मुर्दा समझना ही भूल है)। तुम उनको, जो अल्लाह के मार्ग में मारे गये हैं, मुर्दा न समझो। (वह मरे नहीं हैं) बल्कि अपने पालन कर्त्ता के पास जीवित (व सुरक्षित मौजूद) हैं। उन्हें भोजन दिया जाता है (और) जो (जो कुछ) अल्लाह ने उन्हें अपनी कृपा से प्रदान कर रक्खा है, उससे प्रसन्न व सन्तुष्ट हैं और जो (मुसलमान) उनके बाद (रह गये हैं और अभी) उन में आकर शामिल नहीं हुए, उन के विषय में (यह विचार करके) ख़ुशियाँ मनाते हैं, कि (यह भी शहीद होंगे, तो हमारे समान) उन पर (भी) न (किसी प्रकार का) भय छायेगा और न उन्हें (कोई) शोक सतायेगा। (और वह) अल्लाह के प्रसादों और (अल्लाह की) कृपा से प्रसन्न हैं और इस बात से कि अल्लाह ईमान वालों के पुराय को नष्ट नहीं करता ॥

(और) जिन्हों ने इसके बाद कि उन्हें (एक बार उहद की लड़ाई में) घाव लग गया था, अल्लाह और रसूल का हुक्म माना (और दूसरी लड़ाई के अवसर पर लड़ने से नहीं हिचकिचाये)-

ऐसे नेकोकार और मुत्तक़ियों के लिए बड़े अज्र हैं ० (यह) वह लोग (हैं) जिन लोगों ने (आकर) ख़बर दी कि (मुख़ालिफ़) लोगों ने तुम्हारे (साथ लड़ने के) लिये बड़ी भीड़ जमा की है, (ज़रा) उन से डरते रहना। तो (बजाय इस के कि इस ख़बर को सुन कर इस्लाम की तरफ़ से शक करने लगते) इस से उनके यक़ीन और ज़ियादा (मज़बूत) हो गए और बोल उट्ठे कि हमको अल्लाह बस है और वह बेहतरीन कार साज़ है ० ग़रज़ (हिम्मत करके लड़ाई के इरादे से गए। लड़ाई वड़ाई तो कुछ हुई हुवाई नहीं, हाँ) यह लोग अल्लाह की नेअ्मतों और (उस के) फ़ज़्ल से लदे फँदे (घरों को) वापस आए (और) उन को (किसी तरह का) गज़न्द नहीं पहुँचा और अल्लाह की मर्ज़ी पर कार बन्द हुए (सो अलग) और अल्लाह का फ़ज़्ल बड़ा है ० यह (मुख़बिर) बस एक शैतान था, जो (तुम मुसलमानों को) अपने रफ़ीक़ों का डरावा दिखाता था। तो तुम उन से (ज़रा भी) न डरना और (सच्चे) मुसलमान हो, तो हमारा ही डर रखना ० और (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग कुफ़्र (के फैलाने) में दौड़े (दौड़े पड़े) फिरते हैं, तुम इन लोगों की वजह से आज़ुर्दा ख़ातिर न होना। (क्योंकि) यह लोग (इस से) ख़ुदा का तो कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। (बल्कि) ख़ुदा चाहता है कि (सवाब) आख़िरत में (से) उन को कुछ हिस्सा न दे और उनको बड़ा अज़ाब होना है ० जिन लोगों ने ईमान देकर कुफ़्र मोल लिया, ख़ुदा को तो हरगिज़ किसी तरह का नुक़सान पहुँचा नहीं सकेंगे, बल्कि उन ही को अज़ाब दर्दनाक होगा ० और जो लोग (दीन इस्लाम से) इन्कार कर रहे हैं, इस ख़याल में न रहें कि हम जो इनको ढील दे रहे हैं, यह कुछ इनके हक़ में बेहतर है—

الْقَرْحُ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝
الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ
فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا ۝ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ
وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝ فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ
لَمْ يَمْسَسْهُمْ سُوءٌ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ وَاللَّهُ
ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ۝ إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ
أَوْلِيَاءَهُ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝ وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ
فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا يُرِيدُ اللَّهُ
أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ
لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلَا
يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِأَنْفُسِهِمْ

174

ऐसे पुण्य-कार्यों तथा संयमी लोगों के बड़े पुरस्कार हैं॥

(यह) वह हैं कि इन से लोगों ने (आ आ कर) कहा कि तुम्हारे (मुक़ाबले के) लिये (दूसरी ओर बहुत) आदमी एकत्रित हुए हैं-उन से डरते रहना। तो (डरने के बजाय) उनका विश्वास और बढ़ गया और (वह) बोले कि अल्लाह हमें यथेष्ट है और वही भरोसा करने के लिये सब से अच्छा है॥

(अतएव बड़ी दृढ़ता के साथ युद्ध के लिये यह लोग निकले * मगर काफ़िरों का केवल कोलाहल ही था। उहद की लड़ाई के बाद भी उनका साहस टूटा रहा और वह मुसलमानों के सामने न आये। जब यह दशा देखी, तो) फिर (अल्लाह के मार्ग में लड़ने वाले मुसलमान, काफ़िरों की बाट देख देख कर घर) चले आये (और) अल्लाह के प्रसाद और कृपा के साथ (आये)। कुछ कष्ट (भी) इनको नहीं पहुँचा और अल्लाह की इच्छानुसार कार्य (भी) कर लिया और अल्लाह बड़ी कृपा वाला है॥

* टीका--उहद का युद्ध समाप्त हो जाने के बाद काफ़िरों के सर्दार अबूसुफ़यान ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम को संदेश भेजा था कि अब के तो कसर रह गई और मुसलमानों का अन्त न हो सका। अगले साल बद्र में हम फिर लड़ेंगे। जब दूसरा वर्ष आया, तो रसूलुल्लाह ने मुसलमानों को सचेत किया। सन्देह था कि उहद की लड़ाई की असफलता का प्रभाव कमज़ोर जवाब दिलायेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। यह होते हुए भी, कि उधर से भय भीत करने की कोशिश की गई, मुसलमानों ने साहस नहीं छोड़ा। वास्तव में अल्लाह को फिर से मुसलमानों का रोब जमाना था। उधर था वा कुछ नहीं--केवल बातें ही बातें थीं। मुसलमान दूर तक गये और आनन्द से बिना लड़े रोब जमा आये और वह जो एक प्रकार का आतङ्क साल भर रहा था, सब जाता रहा:--हसन निज़ामी

(मुसलमानों को काफ़िरों से डराने वाली झूठी ख़बरों का उड़ाना) शैतान के अतिरिक्त और (किसी का काम) नहीं है। वही अपने मित्रों से डराता है। अतः सच्चे मुसलमान हो, तो तुम (शैतान की बातों में न आना और उस के) इन (मित्रों) से न डरना और मुझ (ही) से डरना॥

और (ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम) तुम इन लोगों (के कारण) शोकातुर † न हो, जो (मुसलमानों के अन्दर घुस कर) कुफ़्र की ओर दौड़ते हैं। यह अल्लाह का कुछ न बिगाड़ सकेंगे (बल्कि) अल्लाह तआला को यह मन्ज़ूर है कि परलोक (के पुण्य) में से इन्हें कोई हिस्सा न दे और इनको बड़ा अज़ाब (दुःख) होगा॥

यह अवश्य है कि यह लोग ईमान देकर कुफ़्र ख़रीदने वाले निश्चित रूप से अल्लाह को तनिक हानि नहीं पहुँचा सकें। हां, उनको दर्दनाक अज़ाब (दारुण दुःख) मिलना है और (यह) काफ़िर यह कल्पना न करें कि हम--जो उनको ढील दे रहे हैं, यह उनके लिये अच्छी (बात) है--

† टीका--अर्थात् मुनाफ़िक़ हज़ार उपाय करें, जो सच्चे दिल से ईमान ले आया है, वह नहीं फिरेगा। परलोक अपना आपत्तियों को थोड़ा सा और बढ़ा लेंगे:--हसन निज़ामी॥

اِنَّمَا نُمْلِیْ لَهُمْ لِیَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ
مَا كَانَ اللّٰهُ لِیَذَرَ الْمُؤْمِنِیْنَ عَلٰی مَآ اَنْتُمْ عَلَیْهِ
حَتّٰی یَمِیْزَ الْخَبِیْثَ مِنَ الطَّیِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِیُطْلِعَكُمْ عَلَی الْغَیْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ یَجْتَبِیْ مِنْ
رُّسُلِهٖ مَنْ یَّشَآءُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ
تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِیْمٌ ۝ وَلَا یَحْسَبَنَّ
الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَیْرًا
لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَیُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ یَوْمَ
الْقِیٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِیْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ۝ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِیْنَ
قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِیْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِیَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ
مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِیَآءَ بِغَیْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ
ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِیْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْكُمْ

وان الله

हम तो इनको सिर्फ़ इस लिये ढील दे रहे हैं, ताकि और गुनाह समेट लें और (आख़िर कार) इन को ज़िल्लत की मार है ० (मुनाफ़िक़ो ! अल्लाह ऐसा नहीं है कि जिस हाल में तुम हो, अच्छे बुरे की तमीज़ किये बिदून इसी हाल पर मोमिनों को (तुम्हारे साथ मिला जुला) रहने दे और अल्लाह ऐसा भी नहीं कि तुमको ग़ैब की बातें बता दे । हाँ, अल्लाह अपने रसूलों में से जिसको चाहता है, इन्तिख़ाब फ़र्मा लेता है (और उनको बक़द्र मुनासिब बता भी देता है) । तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ (और ग़ैब की टोह के पीछे न पड़ो) । और अगर ईमान लाओगे और (निफ़ाक़ से) बचते रहोगे, तो तुमको बड़ा अज्र मिलेगा ० और जिन लोगों को ख़ुदा ने अपने फ़ज़्ल (व करम) से (मक़्दूर) दिया है और वह (राह ख़ुदा) उस (के ख़र्च करने) में बुख़्ल करते हैं, वह इस (बुख़्ल) को अपने हक़ में बेहतर न समझें । (बेहतर नहीं,) बल्कि वह उनके हक़ में बदतर है । (क्योंकि) जिस (माल) का बुख़्ल करते हैं, अन्क़रीब क़यामत के दिन उसका तौक़ बना कर उनके गले में पहनाया जायगा और आस्मान व ज़मीन (आख़िर कार सब) का वारिस अल्लाह ही है । और जो (कुछ भी तुम लोग) कर रहे हो, अल्लाह को उस की (सब) ख़बर है ० जो लोग अल्लाह को मोहताज और अपने तईं मालदार बताते हैं, उनकी यह (बकवास) अल्लाह ने सुनी । यह लोग जो नाहक़ (नारवा) पैग़म्बरों को क़त्ल करते चले आये हैं, उसके साथ हम उनकी इस बकवास को भी (उनके नामए आमाल में) लिक्खे रखते हैं । और उन (की तमाम शरारतों) का जवाब (क़यामत के दिन) हमारी तरफ़ से (बस) यह होगा कि अज़ाब दोज़ख़ (के मज़े पड़े) चक्खा करो ० यह उन्हीं आमाल का बदला है, जिनको तुमने पहिले से अपने हाथों (ज़ाद आख़िरत बना कर) भेजा है--

---

हम उन्हें ढील केवल इस लिये देते हैं कि वह अपने पाप और बढ़ा लेवें और (फिर तो) उनके लिये दुर्गति करने वाला अज़ाब (दुःख) है (ही) ॥

अल्लाह मुसलमानों को इस दशा में नहीं छोड़ सक्ता, जिस में कि तुम (इस समय) हो । जब तक कि, (वह तकलीफ़ें और विपत्तियाँ डाल कर तुम्हारी परीक्षा न करले और) अपवित्रों को पवित्रों से अलग न करदे और अल्लाह यह (भी) नहीं कर सक्ता कि तुम्हें अदृष्ट की सूचनायें देदे । (और परीक्षा करने से पहिले सब मुनाफ़िक़ों के नाम से तुमको सूचित करदे) । हां, अल्लाह अपने रसूलों में से, जिसे चाहता है (आवश्यकतानुसार अदृष्ट की ख़बरें देने के लिये) चुन लेता है । अतएव (अदृष्ट की ख़बरों की इच्छा करने के बजाय इस बात का उद्योग करो कि अल्लाह की परीक्षा में सच्चे और पक्के मुसलमान सिद्ध हो । अतः सच्चे दिल से) अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान ले आओ और अगर (सच्चे दिल से) ईमान ले आओगे और संयमता पर (स्थिर) रहोगे, तो तुमको बड़ा फल मिलेगा ॥

और जो लोग (ख़ुदा के मार्ग में) उस (माल) के ख़र्च करने में कृपणता करते हैं, जो अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से उन्हें प्रदान किया है, उन्हें यह विचार न करना चाहिये कि उनके हक़ में (यह कृपणता (कोई) उत्तम (वस्तु) है । बल्कि (उन्हें समझ लेना चाहिये कि) यह उनके लिये बहुत बुरा है । ऐसा माल जिस (को ख़ुदा के मार्ग में ख़र्च करने) में उन्होंने कृपणता की होगी, निकट भविष्य में प्रलय के दिन उनके गलों में उसका कुण्डल बनाकर डाला जायगा । आकाश और पृथ्वी अल्लाह ही के अधिकार में है । (तुम्हारी कृपणता से जमा की हुई सम्पत्ति अन्त में उसी के पास पहुँचेगी । फिर अपने हाथ से ही क्यों न दे दो) । अल्लाह जो (भी) तुम करते हो, उसे जानता है ॥

और (यहूदी) जो कहते हैं कि अल्लाह फ़क़ीर (भिखारी) है और हम धनवान हैं, तो अल्लाह ने उनका (यह) कहना सुन लिया है । उन्हों ने जो नबियों की व्यर्थ (अनुचित रूप से) हत्या की हैं, उसके साथ अब हम उनकी (इस) बात को भी लिख रक्खेंगे और (उनकी तमाम शरारतों के जवाब में प्रलय के दिन) हम कहेंगे कि जलती हुई आग के दुःखों का स्वाद चक्खो ॥

(और कहेंगे कि) जो तुमने अपने हाथों से आगे भेजा था, यह उसका फल है--

وان الله ليس بظلام للعبيد ● الذين قالوا
ان الله عهد الينا الا نؤمن لرسول حتى
ياتينا بقربان تاكله النار قل قد جاءكم
رسل من قبلي بالبينت وبالذي قلتم فلم
قتلتموهم ان كنتم صدقين ● فان
كذبوك فقد كذب رسل من قبلك جاءو
بالبينت والزبر والكتب المنير ● كل نفس
ذائقة الموت وانما توفون اجوركم
يوم القيمة فمن زحزح عن النار وادخل
الجنة فقد فاز وما الحيوة الدنيا الا متاع
الغرور ● لتبلون في اموالكم وانفسكم
ولتسمعن من الذين اوتوا الكتب
من قبلكم ومن الذين اشركوا اذى كثيرا

वर्ना अल्लाह तो अपने बन्दों पर किसी तरह का .ज़ुल्म रवा नहीं रखता० (यह वही लोग हैं) जो कहते हैं कि अल्लाह ने हम से कह रक्खा है कि जब तक कोई पैग़म्बर हमको नज़र व नियाज़ (का यह मोजिज़ा) न दिखाए कि (.ख़ुदा की दर्गाह में नज़र व नियाज़ करे और) उस को (आस्मान से) आग (आकर) चट कर जाय, तब तक हम उस पर ईमान न लाएँ । (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मुझ से पहिले (बहुत से) पैग़म्बर तुम्हारे पास खुली खुली निशानियाँ लाए और जिस (निशानी) की तुम (अब) फ़र्मायश करते हो, (वह भी लाए,) तो अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो, तो फिर तुमने उनको किस लिये क़त्ल किया ० (ऐ पैग़म्बर !) इस पर भी अगर वह तुम को झुटलाए चले जायं, तो (तुम को बेदिल होने की कोई वजह नहीं कि) तुम से पहिले (भी बहुत से) पैग़म्बर खुले मोजिज़े लाए और सहीफ़े (भी लाए) और नूरानी किताबें (भी लाए) फिर भी (बहुत) लोगों ने उन को झुटलाया ० हर शख़्स (एक न एक दिन) मौत (का मज़ा) चखने वाला है और (जो अमल तुम लोग कर रहे हो, उन का) पूरा पूरा बदला तो तुम को क़यामत ही के दिन दिया जायगा । तो (उस दिन) जो शख़्स (दोज़ख़ की) आग से परे हटा दिया गया और उसको (रहने के लिये) जन्नत में जगह दी गई, तो उसने (मन मानी) मुराद पाई और दुनिया की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ धोके की पूंजी है (और बस) ० (मुसलमानो !) तुम्हारे मालों (के नुक़सान) और तुम्हारी जानों (के ज़ियाँ) में ज़रूर तुम्हारी (ईमानदारी की) आज़मायश की जायगी और जिन लोगों को तुम से पहिले (आस्मानी) किताब दी जा चुकी है (यानी यहूद व नसारा) उनसे और मुश्रिकीन (मक्का) से तुम बहुत सी ईज़ा की बातें (भी) ज़रूर सुनोगे--

---

अन्यथा अल्लाह बन्दों पर अत्याचार नहीं करता ॥

और जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ने हमसे प्रतिज्ञा लेली है कि हम किसी पैग़म्बर को न मानें, जब तक कि वह हमारे पास ऐसी .क़ुर्बानी न लाये, जिसे आग खा जाय । तो (ऐ मुहम्मद ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम उन से) कह दो कि मुझसे पहिले कितने ही पैग़म्बर तुम में निशानियां लेकर आ चुके हैं और यह (चिन्ह) भी * जिसकी तुमने चर्चा की । फिर अगर (वास्तव में कोई ऐसी प्रतिज्ञा .ख़ुदा ने तुम से कराली थी और) तुम (अपनी उस प्रतिज्ञा में) सच्चे हो, तो (उनके साथ क्यों बुरा व्योहार किया ?) उन्हें तुमने क्यों बध कर डाला । (यह कुछ आवश्यक नहीं है कि सब नबियों को एक ही प्रकार का चमत्कार दिया जाय) ॥

* टीका-हज़रत ज़करीया और हज़रत यहया (उन पर सलाम) को यह सिद्धि या चमत्कार भी दिया गया था कि .क़ुर्बानी को आग खा जाती थी । अर्थात् वह भेंट-स्वरूप कोई वस्तु रखते थे और आकाश से आग उतर कर उसे भस्म कर देती थीः-हसन निज़ामी ॥

अतः (ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम अगर यह लोग तुम्हें झुटलायें, तो उदास न हो और ख़याल करलो कि) तुम से पहिले के पैग़म्बर (भी) झुठलाये जा चुके हैं, जो स्पष्ट प्रमाण और छोटी और बड़ी रोशन आस्मानी किताबें लेकर आये थे ॥

हर मनुष्य का (अन्त में) मौत (का स्वाद) चखना है और (उसके बाद) प्रलय के दिन तुम (सब) को (तुम्हारे कर्मों के) पूरे (पूरे) फल मिलेंगे । सो (उस दिन) जो नर्क से बचा लिया गया और स्वर्ग में दाख़िल कर लिया गया, उसका काम बन गया । अन्यथा (यह) सांसारिक जीवन तो (कुछ भी) नहीं है, सिवा इसके कि (एक) धोके की वस्तु है ॥

(मुसल्मानो !) तुम (इस संसार में) अपने धनों व प्राणों की परीक्षा में अवश्य डाले जाओगे (अर्थात् तुम्हें जान और माल की हानियां सहन करनी पड़ेंगी) । और (इसके साथ) तुम्हें उन लोगों से, जिन्हें तुम से पहिले किताब मिल चुकी है और मुश्रिकों से (कड़वी कसीली) क्लेश पहुँचाने वाली बातें बहुत सुननी पड़ेंगी—

وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ
الْأُمُورِ ۝ وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ
فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا
قَلِيلًا فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ
يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوا وَّيُحِبُّونَ أَن يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ
يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُم بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِنَّ
فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ ع
اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ الَّذِينَ
يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ
وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

رَبَّنَا

और अगर सब्र किये रहो और पर्हेज़गारी (को हाथ से न जाने दो) तो बेशक यह (बड़ी) हिम्मत के काम हैं ० और (ऐ पैग़म्बर ! अह्ल किताब को वह वक़् क्यों नहीं याद दिलाते) जब ख़ुदा ने अह्ल किताब से क़ौल व क़रार लिया कि (यह किताब, जो तुमको दी गई है) लोगों से इसका मतलब साफ़ साफ़ बयान कर देना और इस (की किसी बात) को छुपाना मत। मगर उन्हों ने (इस क़ौल की कुछ भी पर्वा न की और) उसको अपने पसे पुश्त फेंक दिया और उसके एवज़ में थोड़े से दाम (यानी दुनियावी फ़ायदे) हासिल किये। सो (क्या ही) बुरा (सौदा) है, जो यह लोग ले रहे हैं ० और जो लोग अपने किये से ख़ुश होते और किया (कराया तो कुछ है) नहीं और इस पर चाहते हैं कि उनकी तारीफ़ हो। तो (ऐ पैग़म्बर !) ऐसे लोगों की निस्बत हरगिज़ ख़याल न करना कि यह लोग अज़ाब से बचे रहेंगे, बल्कि उनके लिये अज़ाब दर्द नाक (तय्यार मौजूद) है ० और आस्मान व ज़मीन का इख़्तियार (सब) अल्लाह ही को है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० कुछ शक नहीं कि आस्मान और ज़मीन की बनावट और रात और दिन के रद्दो बदल में अक़्ल मन्दों (के समझने) के लिये (क़ुदरत ख़ुदा की बहुतेरी) निशानियां (मौजूद) हैं ० जो खड़े और बैठे और पड़े ख़ुदा को याद करते और आस्मानों और ज़मीन की साख़्त में ग़ौर करते हैं—

१९०

और अगर तुम (इन सब बातों पर) धैर्य रक्खो और संयमी (बने) रहो, तो यह साहस के काम हैं॥

और (ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम इन किताब वालों को ज़रा वह समय तो याद दिलाओ) जब किताब वालों से अल्लाह ने (यह) प्रतिज्ञा ली (थी) कि (जो किताब तुम्हें दी गई है) उस (के अभिप्राय) को साफ़ साफ़ बयान कर देना और उस (के किसी भाग) को गुप्त न रखना। पर उन्होंने (प्रतिज्ञा की ओर से आंखें बन्द कर लीं और) उसको अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और इसके मुक़ाबले में (संसार का) तुच्छ फल ले लिया। सो क्या बुरा (सौदा) है, जो यह लोग ख़रीद रहे हैं॥

(यह लोग कि) जो अपने (इन) आचारणों पर प्रसन्न हैं और बिना किसी (प्रशंसनीय) कार्य के सम्पन्न किये चाहते हैं कि उन की प्रशंसा* हो, तो (ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऐसे लोगों के विषय में (यह) कदापि न समझना कि यह दुःख से बच जायंगे। इनके लिये दर्द नाक अज़ाब (दारुण दुःख तय्यार) है॥

* टीका—किताब वाले रिश्वतें अर्थात् घूंस खाकर ग़लत सिद्धान्त बता देते थे। और रसूलुल्लाह के सम्बन्ध में जितनी २ भविष्य वाणियां उनकी किताबों में थीं, उन्हें छिपाते थे और ख़ुश होते थे, कि हमें कोई नहीं पकड़ सकता और आशा रखते थे कि लोग हमारी प्रशंसा करेंगे, कि ऐसे विद्वान और सत्यधारी हैं:—हसन निज़ामी॥

आकाश और पृथ्वी का शासन अल्लाह के हाथ में है और अल्लाह हर बात पर अधिकार रखता है। (कोई उसके अधिकार और शक्ति से नहीं निकल सकता, चाहे कितना ही उद्दंड हो)॥

आकाश और पृथ्वी की सृष्टि (अर्थात् रचना) और रात दिन के अदलने बदलने में बुद्धिमान मनुष्य के लिये (अल्लाह के यथेष्ट) चिन्ह (मौजूद) हैं॥

(परन्तु किन बुद्धिमानों के लिये ?) जो अल्लाह को खड़े और बैठे और लेटे याद करते हैं और आकाश और पृथ्वी की सृष्टि पर सोच विचार करते हैं—

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا
عَذَابَ النَّارِ ۝ رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ
اَخْزَيْتَهٗ ۗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَآ اِنَّنَا
سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ
فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا
سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا
وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ
اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ
اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ
اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا
وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ
وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ
وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

(और बे इख़्तियार बोल उठते हैं कि) ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! तू ने इस (कारख़ानए आलम) को बे फ़ायदा (तो) नहीं बनाया । तेरी ज़ात (ऐसे फ़ेल अबस के करने से) पाक है (और यह कारख़ाना ख़बर दे रहा है कि आख़िरत में नेकी की जज़ा और बदी की सज़ा होनी है) । तो (ऐ हमारे पर्वर्दिगार !) हमको दोज़ख़ के अज़ाब से महफ़ूज़ रखियो ० ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! जिस को तू ने दोज़ख़ में डाला, उसको (बहुत ही) रुस्वा किया और (वहां) गुनहगारों का कोई भी मददगार नहीं ० ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमने एक मुनादी करने वाले (यानी पैग़म्बर) को सुना कि ईमान की मुनादी कर रहे थे (और लोगों को समझा रहे थे) कि अपने पर्वर्दिगार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आए । पस ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमको हमारे क़ुसूर माफ़ फ़र्मा और हम (पर) से हमारे गुनाह दूर कर और नेक बन्दों के शुमूल में हमारा (भी) ख़ातिमा (बिल्ख़ैर) कीजियो ० और ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! जैसे (जैसे नेअ्मतों के) वादे अपने रसूलों की मार्फ़त तू ने हम से फ़र्माए हैं, हमको नसीब कर और क़यामत के दिन हमको रुस्वा न कीजियो । तू (कभी) वादा ख़िलाफ़ी तो किया ही नहीं करता ० तो उनके पर्वर्दिगार ने उनकी दुआ क़बूल करली (और फ़र्माया) कि हम तुम में से किसी (नेक) अमल करने वाले के अमल को अकारत नहीं जाने देते । मर्द हो या औरत (इस बारे में मर्द, औरत में कुछ फ़र्क़ नहीं, क्योंकि) तुम सब एक दूसरे की जिन्स हो । तो जिन लोगों ने हमारे लिये (अपने) देस छोड़े और (हमारी ही वजह से) अपने घरों से निकाले और सताए गए और लड़े और मारे गए, हम उनकी ख़ताओं को उन (के नामए आमाल में) से ज़रूर महव कर देंगे और उनको ऐसे बाग़ों में (लेजा) दाख़िल करेंगे, जिन के नीचे नहरें (पड़ी) बह रही होंगी–

(और बे इख़्तियार पुकार उठते हैं कि) ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! यह (सब कुछ) तू ने (.फ़ुज़ूल और) व्यर्थ नहीं बनाया । तेरी व्यक्ति (.फ़ुज़ूल और व्यर्थ काम करने से) पाक है। (यह सृष्टि इस लिये नहीं पैदा की गई कि एक दिन बिल्कुल नष्ट हो जाने के बाद फिर उसका कोई प्रभाव बाक़ी न रहे । या उसके पैदा और नष्ट होने का कोई परिणाम न निकले । परिणाम निश्चित रूप से निकलेगा और प्रलय अवश्य आयेगी) तो (ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! प्रलय के दिन) हमें नर्क के अज़ाब (दुःख) से सुरक्षित रखियो ॥

(और कहते हैं कि) ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! जिस को तू ने नर्क में डाल दिया, उसको (बिल्कुल) ज़लील ही कर दिया और (पापियों) अत्याचारियों का कोई भी सहायक नहीं ॥

(और बुद्धिमान् वह हैं, जो कहते हैं कि) ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! हमने सुना कि एक पुकारने वाला पुकारता था (और) ईमान की ओर बुलाता था (अर्थात् कहता था) कि अपने पालन कर्त्ता को मानो । अतएव हमने (तुझे) मान लिया (तुझ पर ईमान ले आये) । अतः ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! हमारे (अगले पिछले) पापों को क्षमा करदे और हम से हमारी बुराइयां दूर कर दे और हमारी मौत सौभाग्य वालों के साथ कर ॥

(और कहते हैं कि) ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! हमें वह (सब कुछ) दे, जिसका तू ने हम से अपने पैग़म्बरों के द्वारा वादा फ़र्माया है और हमें प्रलय के दिन ज़लील न कीजियो । निश्चित रूप से तू वादे का उलंघन नहीं करता ॥

उनकी प्रार्थना को, उनके पालन कर्त्ता ने (यह कह कर) स्वीकार कर लिया कि मैं तुम में से किसी अमल (कर्म) करने वाले का अमल व्यर्थ नहीं जाने दूंगा । (चाहे) मर्द हो या औरत (क्योंकि) तुम सब एक ही (मनुष्य जाति से सम्बन्ध रखते) हो । (पुरस्कार और दंड में स्त्री, पुरुष का कोई भेद नहीं किया जायगा) । और वह लोग; जिन्हों ने देश त्याग दिया और अपने घरों से निकाले गये और हमारे मार्ग में सताये गये और (काफ़िरों से) लड़े और शहीद हुये, उनकी समस्त बुराइयां धो डालूंगा और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा, जिनके नीचे नहरें बहती हैं—

نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ
لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ
مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ
لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ
وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ لَا يَشْتَرُوْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ
اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ
سُوْرَةُ النِّسَاءِ مَدَنِيَّةٌ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سورة النساء

अल्लाह के हाँ से (यह उनके किये का) बदला (है) और अच्छा बदला तो अल्लाह ही के हाँ है ० (ऐ पैग़म्बर !) शहरों में काफ़िरों का चलना फिरना तुमको (किसी तरह के) मुग़ालते में न डाले ० (यह) थोड़े से (चन्द रोज़ा) फ़ायदे हैं. फिर (आख़िरकार) इन (काफ़िरों) का ठिकाना दोज़ख़ है और वह (बहुत ही) बुरी जगह है ० लेकिन जो लोग अपने पर्वर्दिगार से डरते रहे, (आख़िरत में) उनके लिये बाग़ हैं; जिन के तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी (और वह) उनमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे। अल्लाह के हाँ से(यह उनकी) मेहमानदारी होगी और जो(साज़ व सामान) ख़ुदा के यहाँ है, (दुनिया के साज़ व सामान से) नेकोकारों के हक़ में कहीं बेहतर है ० और अह्ल किताब में से बेशक कुछ लोग ऐसे (भी) हैं, जो ख़ुदा पर ईमान रखते हैं और जो किताब तुम (मुसलमानों) पर उतरी है और जो उन पर उतरी है, उन (सब) पर (भी) ईमान रखते हैं (और हर वक़्त) अल्लाह के आगे झुके रहते हैं (और) अल्लाह की आयतों के एवज़ में (दुनियावी फ़ायदों के) थोड़े दाम नहीं लेते। यही वह लोग हैं, जिनके अज्र उनके पर्वर्दिगार के हाँ (तय्यार मौजूद) हैं। (उनको अज्र के हासिल करने में ज़्यादा इन्तिज़ार नहीं उठानी पड़ेगी, क्योंकि) अल्लाह जल्दी हिसाब करने वाला है ० मुसलमानो ! (उन तकलीफ़ों को, जो ख़ुदा की राह में तुमको पेश आएं) बर्दाश्त करो और एक दूसरे को सब्र की तालीम दो (और दुश्मन के मुक़ाबिले के लिये तय्यार रहो)। और अल्लाह से डरो, ताकि (आख़िर कार) तुम (अपनी) मुराद को पहुँचो ०

सूरत—निसाअ

मदनी यानी मदीने में नाज़िल हुई। इसमें १७७ आयतें और २४ रुकूअ हैं॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाल मेहर्बान (है)॥

यह (सब) अल्लाह की ओर से (उनके कर्मों का) बदला होगा और अल्लाह (ही) के यहाँ (वास्तविक रूप में) अच्छा बदला (मिलता) है॥

(और ऐ मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम) तुम्हें (कहीं यह) काफ़िरों का शहरों में चलना, फिरना (और व्यौपार करके रुपये कमाना) धोके में न डाल दे (कि यह बड़े आनन्द में हैं। यह) थोड़े से (कुछ दिन के) लाभ हैं, फिर (तो) इनका ठिकाना नर्क होगा और वह बहुत बुरा ठिकाना है॥

लेकिन वह लोग, जो अपने पालन कर्त्ता (के अज़ाब) से डरते रहे, उनके लिये (मर्णान्त में) बाग़ हैं; जिनके नीचे नहरें बहती हैं। (यह लोग) उन (बाग़ों) में सदैव (सदैव) रहेंगे। अल्लाह के यहां से (यह उनका) अतिथि-सत्कार होगा और जो (कुछ) अल्लाह के यहां है, (वह संसार की वस्तुओं से) सत्कर्म करने वालों के लिये बहुत श्रेष्ठ है॥

और किताब वालों में कुछ ऐसे भी हैं, जो अल्लाह पर ईमान लाये हैं और उस पर (भी) जो तुम पर उतरा है और जो उन पर (पहिले) उतर चुका है। (और बराबर) अल्लाह के आगे दिल से आजिज़ी (व विनती) करते रहते हैं (और) अल्लाह की आयतों के बदले में (संसार के) थोड़े (लाभों और) मूल्य को नहीं स्वीकार करते। यही हैं, वह-जिनको उनके पालन कर्त्ता के यहां से उनके (कर्मों के बड़े) फल मिलेंगे। निस्सन्देह अल्लाह तआला बहुत जल्द हिसाब करने वाला है॥

ऐ मुसलमानो ! (काफ़िरों के दुःख देने पर) सन्तोष करो और (काफ़िरों के मुक़ाबले में अधिक) दृढ़ रहो और (अल्लाह से) दिल लगाये रहो और अल्लाह से डरो, जिस से कि (तुम्हारी) कामना पूर्ण हो॥

सूरत-निसाअ

मदनी अर्थात मदीने में उतरी है और इस में १७७ आयतें और २४ रुकूअ हैं॥

लोगो ! अपने पर्वरदिगार से डरो, जिस ने तुमको तने वाहिद (यानी आदम) से पैदा किया और (यह इस तरह पर कि पहिले) उससे उस की बीबी (हव्वा) को पैदा किया और उन दो (मियां बीबी) से बहुत से मर्द व औरत (दुनिया में) फैला दिये और जिस ख़ुदा का वास्ता दे दे कर, तुम अपने कितने काम निकाल लेते हो, उसका और रिश्तों का पास मलहूज़ रक्खो, क्योंकि अल्लाह तुम्हारा निगरान हाल है ० और यतीमों के माल उनके हवाले करो और माल तय्यब के बदले माल हराम न लो ० और उनके माल अपने मालों में मिला कर ख़ुर्द बुर्द न करो, क्योंकि यह (बहुत ही) बड़ा गुनाह है ० और अगर तुमको इस बात का अन्देशा हो कि यतीम लड़कियों (के बारे) में इन्साफ़ क़ायम न रख सकोगे, तो अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ दो दो और तीन तीन और चार चार औरतों से निकाह कर लो । फिर अगर तुमको इस बात का अन्देशा हो कि (कई बीवियों में) बराबरी (के साथ बर्ताव) न कर सकोगे, तो (इस सूरत में) एक ही (बीबी करना) या जो (लौंडी) तुम्हारे क़ब्ज़े में हो, (उसी पर क़नाअ़त करना) । ना मुन्सिफ़ाना बर्ताव से बचने के लिये यह तदबीर ज़ियादा तर क़रीन मस्लहत है ० और औरतों को उनके महर ख़ुश दिली के साथ दे डालो । फिर अगर वह ख़ुश दिली के साथ उस में से कुछ तुम को छोड़ दें, तो उसको रचता पचता (समझ कर मज़े से) खाओ (पियो) ० और माल-जिसको ख़ुदा ने तुम्हारे लिये (एक तरह का) सहारा बनाया है, उन (यतीमों) के हवाले न करो, जो कम अक़्ल हों—

يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ
وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا
كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ
وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝ وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى
اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۖ وَلَا
تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا
كَبِيْرًا ۝ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى
فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ
وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝
وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ
عَنْ شَىْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓــًٔا مَّرِيْٓــًٔا ۝ وَلَا
تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ

ऐ आदमियो ! अपने पालन कर्त्ता से डरते रहो, जिसने तुम्हें एक मनुष्य (अर्थात् हज़रत आदम) से पैदा किया और (वह इस प्रकार से कि पहिले) उस (मनुष्य अर्थात् हज़रत आदम) से उनका जोड़ा निकाला । (अर्थात् हज़रत हव्वा को हज़रत आदम की पसली से पैदा किया) । और (फिर) इन दोनों से असंख्य स्त्री और पुरुषों को फैला दिया । (तुम्हें स्थिति-रहित होने से स्थिति में लाने वाला अल्लाह ही है, इस लिये उसका ध्यान रखना और भय मानना, तुम्हारा कर्त्तव्य होना चाहिये) । और डरते रहो अल्लाह से, जिस (के नाम) की दुहाई देते हो (और) आपस में (काम चलाते हो अर्थात् अल्लाह की मेहर्बानी से केवल स्थिति-रहित होने से स्थिति में ही नहीं आये हो, बल्कि उसी के सहारे बाक़ी और मौजूद भी हो और रहोगे) और (अल्लाह के बाद) सम्बन्धियों के सत्वों का (भी) ध्यान रक्खो और अल्लाह तुम्हारी दशा का निरीक्षक है ॥

और अनाथों को (जब वह युवा हो जायँ, तो) उनके माल दे दो और (उनके पालन-काल में उनकी किसी) अच्छी वस्तु को (अपनी) बुरी वस्तु से न बदलो और न उनके माल को अपने माल में मिलाकर ख़ुद न खालो । (अनाथ का रक्षक अपना और अनाथ का खाना पीना शामिल रख सका है । लेकिन इस बहाने से अनाथ का माल खा जाना) यह (बहुत) बड़ा पाप है ॥

और अगर तुम्हें डर हो कि तुम अनाथ लड़कियों (के विषय) में न्यायोचित व्यवहार न कर सकोगे (और उनसे विवाह करने के पश्चात उनके महर और उनके रहन सहन में तुम से उनकी कमज़ोरी और अपनी वासनाओं के कारण कमी हो जायगी) तो (उनसे विवाह करने के बजाय अच्छा है कि) दूसरी स्त्रियों से; जो तुम्हें प्रिय हैं (एक छोड़) दो दो, तीन तीन, चार चार, विवाह करलो (और दूसरी स्त्रियों के साथ भी) यदि आशंका हो कि समान व्यवहार न कर सकोगे, तो (बस) फिर एक (ही ठीक) है या (कोई) लौंडी, जो तुम्हारे अधिकार में हो, (उसी पर सन्तोष करो) । इस में आशा है कि तुम एक ओर न झुक पड़ोगे । (और दो दो, तीन तीन, चार चार स्त्रियों को फाँस कर परेशान करना भी कुछ कम बुरा नहीं है) ॥

और स्त्रियों को उनके महर ख़ुशी से अदा करो । हां, अगर (वह स्वयं) अपनी प्रसन्नता से उसमें से तुम्हें कुछ दे दें, तो उस को रचता पचता (समझ कर) खाओ (पीओ) ॥

और उन (अनाथों) को, जो कम अक़्ल हैं, (जब तक वह युवा और समझदार न हो जाँय) अपनी (रक्षा में किया हुआ) माल न दो; जिसे अल्लाह ने तुम्हारे (अर्थात् तुम मनुष्यों के) लिये

وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ
قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا
النِّكَاحَ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ
اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ
يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَ
مَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ فَاِذَا
دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ
الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا
تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۭ
نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝ وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى
وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا
لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝ وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ

خَلْفِهِمْ

हाँ उसमें से उनके खाने पहिनने में सर्फ़ करो और उनको नर्मी से समझा दो ० और यतीमों को (दुनिया के) कार व बार में लगाए रहो, यहां तक कि निकाह (की उम्र) को पहुँचें। उस वक़्त अगर उन में सलाहियत देखो, तो उनके माल उनके हवाले कर दो और ऐसा न करना कि उनके बड़े होने के अन्देशे से फ़ुज़ूल ख़र्ची करके जल्दी जल्दी उनका माल खा (पी) डालो और जो (वली सर्परस्त) वा मक़्दूर हो, उसे (माल यतीम के अपने ऊपर ख़र्च करने से) बचा रहना चाहिये और जो हाजत मन्द हो, वह दस्तूर के मुताबिक़ (बक़द्र ज़रूरत) खाले, (तो मुज़ाएक़ा नहीं)। फिर जब उनके माल उनके हवाले करने लगो, तो (लोगों को) उन (के माल के लेने) का गवाह कर लो, वर्ना हिसाब लेने को (तो हक़ीक़त में) अल्लाह बस है ० माँ, बाप और रिश्तेदारों के तरके में थोड़ा हो या बहुत मर्दों का हिस्सा है और (ऐसा ही) माँ, बाप और रिश्तेदारों के तरके में औरतों का भी हिस्सा है (और यह) हिस्सा (हमारा) ठहराया हुआ (है) ० और जब तक़सीम (तरका) के वक़्त (दूर के) रिश्तेदार और यतीम बच्चे और मसाकीन आ मौजूद हों, तो उसमें से उनको कुछ दे दिया करो और (उनकी ख़्वाहिश के क़द्र देते न बन पड़े, तो) उन को नर्मी से समझा दो ० और वारिसान हक़दार को डरना चाहिये कि अगर (ख़ुद) अपने (मरे) पीछे औलाद ज़ईफ़ छोड़ जाते-

---

जीविका का साधन बनाया है। हाँ, उनको उसमें से खिलाते पहिनाते रहो और (माल उनके अधिकार में न देने की बावत) उन्हें उचित-रूप से समझा दो (कि हम तुम्हारे ही लाभ की दृष्टि से तुम्हारे माल की रक्षा कर रहे हैं) ॥

और अनाथों को (काम काज में लगा कर) सधाते रहो, यहां तक कि वह विवाह (की आयु) को पहुँचें। फिर अगर उनमें (अपने हानि लाभ की समझ और माल की रक्षा व प्रवन्ध की) योग्यता * पाओ, तो उनका माल उनके सुपुर्द करदो और (कभी) इस विचार से, कि वह बड़े न हो जायँ (और माल अपने अधिकार से न जाता रहे) उनके माल को जल्दी जल्दी अपव्यय कर करके खा न जाना और जिस (रक्षक अर्थात् वली) को आवश्यकता न हो, तो (उसे चाहिये कि) अनाथ के माल से (बिल्कुल) बचा रहे और जो (वली को) आवश्यकता हो, तो (ख़ैर वह) नियम (और आवश्यकता) के अनुसार खा (पी) ले और जब उनका माल उनके सुपुर्द करो, तो उसके गवाह बनालो (जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर काम आयें और वैसे तो) अल्लाह हिसाब लेने को काफ़ी है (उसे गवाह इत्यादि किसी की आवश्यकता नहीं है। यह सब बातें तुम्हारी सफ़ाई और आसानी के लिये नियत करदी हैं) ॥

* टीका–पचीस साल की आयु होने के उपरान्त योग्यता का सवाल भी नहीं रहता। योग्यता हो या न हो माल दे देना चाहियेः– हसन निज़ामी ॥

(और यह बात ठीक नहीं है कि लड़कियों को बपौती का माल नहीं दिया जाता)। थोड़ा हो या बहुत-माँ, बाप और सम्बन्धियों की छोड़ी या उनसे प्राप्त हुई सम्पत्ति में मर्दों का (भी) हिस्सा है और माँ, बाप और सम्बन्धियों से प्राप्त हुई सम्पत्ति में स्त्रियों का (भी) हिस्सा है (बच्चे हों या जवान और यह) हिस्से हमारे नियत किये हुये हैं (उनके देने में किसी का अधिकार न छिनना चाहिये) ॥

और (वरसा या बपौती के) विभाग करते समय जब सम्बन्धी और अनाथ और फ़क़ीर (भी कुछ) मौजूद हों, तो उन्हें (भी) उस में से (यथा शक्ति) कुछ दे दो और (अगर कोई धार्मिक विवशता हो, तो) उन्हें नर्मी से समझाओ (कि इस कारण से नहीं दे सकते) ॥

उन लोगों को (जिनके अधिकार में किसी की बपौती हो और दूसरे सब लोगों को) डरते रहना चाहिये कि अगर (वह स्वयं) अपने (मरने के) बाद छोटे बच्चे छोड़ जाते-

خلفهم ذرية ضعفا خافوا عليهم فليتقوا الله وليقولوا
قولا سديدا ۝ ان الذين يأكلون اموال اليتمى
ظلما انما يأكلون في بطونهم نارا وسيصلون
سعيرا ۝ يوصيكم الله في اولادكم للذكر
مثل حظ الانثيين فان كن نساء فوق اثنتين
فلهن ثلثا ما ترك وان كانت واحدة
فلها النصف ولابويه لكل واحد منهما السدس
مما ترك ان كان له ولد فان لم يكن له ولد
وورثه ابواه فلامه الثلث فان كان له
اخوة فلامه السدس من بعد وصية يوصي
بها او دين اباؤكم وابناؤكم لا تدرون ايهم
اقرب لكم نفعا فريضة من الله ان الله كان
عليما حكيما ۝ ولكم نصف ما ترك ازواجكم ان

तो उन (के हाल) पर उनको (कैसा कुछ) तरस (न) आता। तो चाहिये कि (ग़ुरबा के साथ सख़्ती करने में) अल्लाह से डरें और (उनसे) सीधी तरह बात करें ० जो लोग नाहक़ (नारवा) यतीमों के माल ख़ुर्द बुर्द करते हैं, वह अपने पेट में बस अंगारे भरते हैं और अन्क़रीब (मरे पीछे) दोज़ख़ में पड़ेंगे ० (मुसलमानो !) तुम्हारी औलाद (के हिस्सों के बारे) में अल्लाह तुम से कहे रखता है कि लड़के को दो लड़कियों के बराबर हिस्सा (दिया करो)। फिर अगर लड़कियाँ (दो या) दो से ज़ियादा हों, तो तरके में उनका (हिस्सा) दो तिहाई और अगर अकेली हो, तो उसको आधा और मय्यत के माँ बाप को (यानी) दोनों में हर एक को तरके का छटा हिस्सा उस सूरत में कि मय्यत की औलाद हो। और अगर उसके औलाद न हो और उसके वारिस (सिर्फ़) माँ बाप हों, तो उसकी माँ का हिस्सा एक तिहाई (बाक़ी बाप का)। फिर अगर (मां बाप के अलावा) मय्यत के (एक से ज़ियादा) भाई (या बहनें) हों, तो माँ का छटा हिस्सा। (मगर यह हिस्से) मय्यत की वसीयत (की तामील) और (अदाए) क़र्ज़ के बाद (दिये जायँ)। तुम अपने बाप (दादों यानी उसूल) और बेटों (पोतों यानी फ़ुरूअ) को नहीं जान सकते कि नफ़ा रसानी के एतिबार से इनमें कौन सा तुम से ज़ियादा क़रीब है। (पस अपनी राय को दख़्ल न दो और यूं समझो कि) हिस्सों का क़रारदाद अल्लाह का ठहराया हुआ है। अल्लाह बिला शुबहा (सब कुछ) जानता (और सब मस्लहतों से) वाक़िफ़ है ० और जो (तर्का) तुम्हारी बीबियां छोड़ मरें, अगर उनके औलाद नहीं, तो उनके तर्के में तुम्हारा आधा—

तो उन्हें उनकी दशा पर भय होता (या नहीं कि हमारे पीछे उनका भी ऐसा ही हाल होगा)। अतएव चाहिये कि अल्लाह से डरें और (अनाथों व दुर्बलों से) सीधी तरह बात करें ॥

(संक्षिप्त बात यह है) जो लोग अनाथों का माल व्यर्थ (अनुचित-रूप से) खा जाते हैं, वह अपने पेटों में आग भरते हैं और यथा शीघ्र आग (ही) में प्रवेश करेंगे ॥

(और) अल्लाह तुमको तुम्हारी सन्तान के विषय में बताये देता है कि लड़के का भाग दो लड़कियों के भाग के बराबर है और अगर लड़कियाँ ही (लड़कियां) हों (और दो या) दो से अधिक (हों) तो वह तरके (पैतृक सम्पत्ति) में से दो तिहाई भाग की अधिकारिणी हैं और अगर केवल एक हो, तो उसे आधा मिलना चाहिये और मृतक मनुष्य के माँ बाप के लिये अर्थात दोनों में से हर एक के लिये छोड़ी हुई सम्पत्ति में से (छटा) छटा हिस्सा है-ऐसी दशा में कि मृतक मनुष्य के सन्तान हो और अगर मृतक के सन्तान न हो और (केवल) माँ बाप (ही) उसके अधिकारी रहें, तो उसकी माँ को एक तिहाई (दिया जाय और शेष दो तिहाई बाप को)। और अगर मृतक मनुष्य के कई भाई (बहिन भी) हों (एक से अधिक-चाहे सगे, चाहे माँ या बाप में शरीक और सन्तान न हो) तो मां का छटा भाग होगा * (शेष बाप का, और भाई बहिन इससे वञ्चित रहेंगे। मगर इन हिस्सों के अनुसार कार्य) उस वसीयत (के पूरा करने) के उपरान्त, जो मरने वाला कर गया हो और (मृतक मनुष्य का) ऋण (चुकाने) के उपरान्त (किया जाय)। तुम्हारे बाप (दादा) और तुम्हारे बेटे (पोते) तुम नहीं जान सकते कि (इन में से लाभ की दृष्टि से) कौन तुम से अधिक निकट है (और कौन कम। इन सब का) हिस्सा अल्लाह का नियत किया हुआ है। (अतएव जिस प्रकार अल्लाह ने हिस्से नियत कर दिये हैं, उसी तरह उनका पालन करो और अपनी बुद्धि उस में न लड़ाओ)। अल्लाह विद्वान और युक्तिवान है (सब युक्तियों को जानता है और जो कुछ करता है, उसमें बुद्धिमानी होती है) ॥

* टीका—एक भाई अथवा एक बहिन होने की दशा में माँ को एक तिहाई और बाप को दो तिहाई मिलते हैं :— हसन निज़ामी ॥

और तुम्हारी स्त्रियां जो छोड़ें, उसमें से आधा तुम्हारा है—

إِن لَّمْ يَكُن لَّهُنَّ وَلَدٌ فَإِن كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ
الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا
أَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّكُمْ
وَلَدٌ فَإِن كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا
تَرَكْتُم مِّن بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ
وَإِن كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوِ امْرَأَةٌ
وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ
فَإِن كَانُوا أَكْثَرَ مِن ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ
مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ
وَصِيَّةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ تِلْكَ حُدُودُ
اللَّهِ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ

और अगर उनके औलाद है, तो उनके तर्के में तुम्हारा चौथाई, (मगर) उनकी वसीयत (की तामील) और (अदाए) क़र्ज़ के बाद। और तुम कुछ (तर्का) छोड़ मरो और तुम्हारे कुछ औलाद न हो, तो बीबियों का (हिस्सा) चौथाई और अगर तुम्हारे औलाद हो, तो तुम्हारे तर्के में से बीबियों का आठवां (हिस्सा और यह हिस्से भी) तुम्हारी वसीयत (की तामील) और (अदाए) क़र्ज़ के बाद (दिये जायँ)। और अगर किसी मर्द या औरत की मीरास हो और उसके बाप बेटा (यानी अस्ल व फ़रअ) न हो और (दूसरी माँ से) उसके भाई या बहिन हो, तो उन में से हर एक का छटा (हिस्सा) और अगर एक से ज़ियादा हों, तो एक तिहाई में (बराबर के) सब शरीक। (यह हिस्से भी) मय्यत की वसीयत (की तामील) और (अदाए) क़र्ज़ के बाद (दिये जायँ) बशर्ते कि मय्यत ने (किसी को) नुक़सान न पहुँचाना चाहा हो। (यह) फ़र्मान इलाही है और अल्लाह (सब कुछ) जानता (और लोगों की ना फ़र्मानियों पर) बर्दाश्त करता है ० यह अल्लाह की (बाँधी हुई) हद्दें हैं और जो अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलेगा, (आख़िरत में) उसको अल्लाह (बहिश्त के) ऐसे बाग़ों में (लेजा) दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें (पड़ी) बह रही होंगी। (और वह) उनमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे और यही बड़ी कामयाबी है ० और जो अल्लाह और उसके रसूल की ना फ़र्मानी करे और अल्लाह की (बांधी हुई) हदों से बढ़ चले—

शर्त यह है कि उनके सन्तान न हो और अगर उनके सन्तान हो, तो तुम उनके तर्के (अर्थात छोड़ी हुई सम्पत्ति) में चौथाई के मालिक हो। जो वसीयत वह कर जायँ, उसका पालन करो और ऋण चुकाने के उपरान्त और तुम्हारी सम्पत्ति में उनका (अर्थात तुम्हारी स्त्रियों का; चाहे एक स्त्री हो, चाहे एक से अधिक हों) चौथाई भाग है, और अगर तुम्हारे सन्तान हो, तो तुम्हारी सम्पत्ति में वह (केवल) आठवें भाग की हिस्सेदार हैं। (वही) तुम्हारी की हुई वसीयत (की तामील) और (ऋण चुकाने के बाद)॥

और यदि (किसी) पुरुष या स्त्री (की यह स्थिति हो) कि उसने बपौती छोड़ी है (लेकिन) न उसके कोई ऊपर है और न नीचे (अर्थात न तो मां बाप रखता है और न बेटा, बेटी) और उसके (केवल) एक भाई या एक बहिन (सगी माँ * के पेट और सोतेले बाप के वीर्य से) है, तो (उन) दोनों में से हर एक को छठा हिस्सा मिलेगा और अगर (इस प्रकार के भाई बहिन, जिनकी मां एक और बाप विभिन्न हैं) एक से अधिक हैं, तो सब एक तिहाई में शरीक होंगे (और यह हिस्से भी) मृतक मनुष्य की वसीयत (के अनुसार कार्य करने) और ऋण (चुका देने) के पश्चात (बटेंगे) और उस दशा में कि मृतक मनुष्य ने (किसी को वसीयत में) नुक़सान न दिया † हो। यह अल्लाह की आज्ञा है (इसका उलंघन न किया जाय) और अल्लाह सब को जानता है (कि किसने उसकी आज्ञा के अनुसार कार्य्य किया और जो उसकी आज्ञा के अनुसार कार्य नहीं करते, उनको भी दण्ड देने में शीघ्रता नहीं करता, बलिक) सहन ‡ करता है॥

* टीका—जिनकी मां एक और बाप विभिन्न हों, उन्हें अख़याफ़ी भाई बहिन कहते हैं। जिनका बाप एक और मातायें दो हों, उन्हें अल्लानी और जो एक माँ और एक बाप से हों, उन्हें ऐनी:—हसन निज़ामी॥

† टीका—वसीयत, बपौती पर मुक़द्दम है, परन्तु उसी दशा में कि वसीयत ठीक नियम से की गई हो। प्रथम तो वसीयत तिहाई माल से अधिक की न करनी चाहिये। दूसरे, जिसको हिस्सा मिलने वाला हो, उसे वसीयत के द्वारा कुछ न दिया जाय और यदि सब वारिस स्वीकार करलें, तो कोई हानि नहीं:—हसन निज़ामी॥

‡ टीका—रुकूअ के आरम्भ से यहाँ तक जितनी बपौतियां वर्णन की गई हैं, उन्हें ज़विल-ए.फ़ुरूज़ कहते हैं:-हसन निज़ामी॥

(बहर हाल) यह सीमायें अल्लाह की बांधी हुई हैं और जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञानुसार चलेगा (अल्लाह) उसको बाग़ों में जगह देगा: जिनके नीचे नहरें बहती हैं और उनमें (ऐसे लोग) सदैव (सदैव) रहेंगे और यही बड़ी सफलता है और जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा न मानेगा और अल्लाह की (बाँधी हुई) सीमाओं से निकल जायगा—

يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝ وَاللَّاتِي يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِنْكُمْ فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ۝ وَاللَّذَانِ يَأْتِيَانِهَا مِنْكُمْ فَآذُوهُمَا فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْآنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

(तो अल्लाह) उसको दोज़ख में (लेजा) दाख़िल करेगा (और वह) उस में हमेशा (हमेशा) रहेगा और उसको ज़िल्लत की मार दी जायगी ० और (मुसलमानो !) तुम्हारी औरतों में से जो औरतें बदकारी की मुर्तकिब हों, तो उन (की बदफ़ेली) पर अपने लोगों में से चार की गवाही लो। पस अगर गवाह (उनकी बदकारी की) तस्दीक़ करें, तो (सज़ा के तौर पर) उन (औरतों) को घरों में बन्द रक्खो। यहां तक कि मौत उनका काम तमाम करदे, या अल्लाह उनके लिये कोई (और) रास्ता निकाले ० और जो दो शख़्स तुम लोगों में से बदकारी के मुर्तकिब हों, तो उनको मारो पीटो। फिर अगर तौबा करें और अपनी हालत की इस्लाह करलें, तो उनसे (और ज़ियादा) तअर्रुज़ न करो, क्योंकि अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला मेहर्बान है ० अल्लाह तौबा (तो) क़बूल करता (ही) है, (मगर) उन ही लोगों की, जो नादानी से कोई बुरी हर्कत कर बैठे। फिर जल्दी से तौबा करले, तो अल्लाह भी ऐसों की तौबा क़बूल कर लेता है। और अल्लाह (सब का हाल) जानता (और दुनिया और दीन की मस्लहतों से) वाक़िफ़ है ० और उन लोगों की तौबा (क़बूल) नहीं, जो (उम्र भर) बुरे काम करते रहे, यहां तक कि उनमें से जब किसी के सामने मौत आ खड़ी हो, तो लगे कहने कि अब मेरी तौबा। और (इसी तरह) उनकी (तौबा) भी (क़बूल) नहीं, जो काफ़िर ही मर गए। यही हैं, जिनके लिये हमने अज़ाब दर्द नाक तय्यार कर रक्खा है ० मुसलमानो !—

उसको (अल्लाह) आग में डालेगा और (यह) उसमें सदैव (सदैव) रहेगा और उसके लिये दुर्दशा का अज़ाब (दुःख) होगा ॥

और (मुसलमानो !) तुम्हारी स्त्रियों में से-जो दुराचरण कर बैठें, तो उन (के दुराचरण) पर अपने (आपस) में से चार आदमियों की गवाही लो। फिर अगर वह गवाही दे देवें, तो उनको घरों में बन्द रक्खो (और लोगों से मिलने जुलने से रोको) यहाँ तक कि वह मर जायँ या अल्लाह उनके लिये कोई (दूसरा) मार्ग * नियत करदे ॥

* टीका-अतएव यह मार्ग नियत किया गया। कारे ज़ानी और कारी ज़ानिया के लिये सौ सौ दुर्रे (एक प्रकार का कोड़ा) और ज़िना अर्थात व्यभिचार करने वाली विवाहित स्त्री व विवहित पुरुष के लिये पत्थरों से मार कर प्राण लेने का दण्ड। यह आज्ञा आगे सूरत नूर में आयेगी :- हसन निज़ामी ॥

और (ऐ मुसलमानो !) तुम में से जो दो मनुष्य दुराचरण करेंगे (चाहे वह एक पुरुष व एक स्त्री † हो या दोनों पुरुष) तो उनकी (डाँट डपट करो और ज़रूरत समझो, तो हाथ तक से) दुःख पहुँचाओ। फिर अगर वह दोनों तौबा करलें और अपने सुधार करने पर लग जायँ, तो उनका पीछा छोड़ दो। अल्लाह बड़ा तौबा स्वीकार करने वाला दयालु है ॥

† टीका-एक मर्द और एक औरत की यह आज्ञा भी मन्सूख़ अर्थात इस पर अमल करना वर्जित है:-हसन निज़ामी ॥

तौबा तो अल्लाह (अपनी कृपा से बहुधा बड़े बड़े पापियों की) स्वीकार करता है। (मगर) जो अज्ञानता से बुरा काम कर बैठते हैं (और) फिर शीघ्रता से तौबा कर लेते हैं, तो अल्लाह उनको (अवश्य) क्षमा कर देता है और अल्लाह सब कुछ जानता है। (उसको मालूम है कि किसने अज्ञानता से पाप किया और किसने शुद्ध हृदय से तौबा की और) अल्लाह युक्ति वाला है। (जिस तौबा का स्वीकार करना युक्ति-संगत होता है, उसी को स्वीकार करता है)॥

और ऐसों की तौबा (तौबा) नहीं (है) जो बुरे काम किये (चले) जाते हैं। यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मौत आ पहुँचती है, तब वह कहता है कि अब मैं तौबा करता हूँ। और न ऐसों की तौबा (लाभ दायक है) जो काफ़िर ही मर गये। उनके लिये तो हमने दर्दनाक अज़ाब (दारुण दुःख) तैयार कर रक्खा है ॥

(मगर) ऐ मुसलमानो–

لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ
لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِينَ
بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ
فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا
شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ۝ وَإِنْ أَرَدْتُمُ
اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ
قِنْطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا ۚ أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا
وَإِثْمًا مُبِينًا ۝ وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ
بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنْكُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا
وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا
مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ
سَبِيلًا ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ ع
وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَ

तुमको रवा नहीं कि औरतों को मीरास (मय्यत) समझ कर ज़बर्दस्ती उन पर क़ब्ज़ा करलो और जो कुछ तुमने उनको (तर्क-ए शौहरी में से) दिया है, उसमें से कुछ छीन लेने की नियत से उनको (घरों में) क़ैद न रक्खो (कि दूसरे से निकाह न करने पाएँ) । हाँ उनसे कोई खुली हुई बदकारी सर्ज़द हो, (तो क़ैद रखने का मुज़ायक़ा नहीं) । और बीबियों के साथ हुस्न सुलूक से रहो सहो और तुमको (किसी वजह से) बीबी ना पसन्द हो, तो अजब नहीं कि तुमको एक चीज़ ना पसन्द हो और अल्लाह उसमें बहुत सी ख़ैर (व बरकत) दे ० और अगर तुम्हारा इरादा एक बीबी को बदल कर उसकी जगह दूसरी बीवी करने का हो, तो गो तुमने पहिली बीबी को ढेर सा माल दे दिया हो, ताहम उसमें से कुछ भी (वापस) न लेना । क्या (तुम्हारी ग़ैरत जायज़ रखती है कि) किसी क़िस्म का बोहतान लगाकर और सरीह बेजा बात करके अपना दिया हुआ (उससे वापस) लेते हो ० और दिया हुआ कैसे (वापस) ले लोगे, हालाँकि तुम एक दूसरे के साथ सोहबत कर चुके हो और बीबियाँ (निकाह के वक़्त महर व नफ़्क़े वग़ैरा का) तुम से पक्का क़ौल ले चुकी हैं ० और जिन औरतों के साथ तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो, तुम उनके साथ निकाह न करना, मगर जो हो चुका (सो हो चुका । ताहम) यह बड़ी बेहयाई और ग़ज़ब की बात थी और बहुत ही बुरा दस्तूर था ० (मुसलमानो !) तुम्हारी माएँ और तुम्हारी बेटियां और तुम्हारी बहिनें और तुम्हारी फूफियां और तुम्हारी ख़ालाएँ और भतीजियां–

सिवा उस (दशा) के कि स्त्रियाँ दुराचरण के पाप की भागी बनें । तुम्हें (इस समय यह) जायज़ नहीं है कि स्त्रियों को वर्षोती समझ कर ज़बरदस्ती उन पर अधिकार जमा लो या (अगर तुम उन्हें निबाह नहीं सकते, तो केवल) इस विचार से कि तुमने जो कुछ उनको दे दिया है, उसमें से थोड़ा (बहुत) छीन लो (उन्हें अपने घरों में) क़ैद न रक्खो । और स्त्रियों के साथ सलूक और सद्व्यवहार से रहो और वह तुम्हें न (भी) भावें, तो (क्या हानि है) । आश्चर्य नहीं कि एक वस्तु तुमको ना पसन्द हो और अल्लाह ने उसमें बहुतसी विशेषतायें रक्खी हों ॥

और (ख़ैर) अगर (निभाने की कोई सूरत न रहे और) तुम एक स्त्री छोड़ दूसरी स्त्री करने का इरादा (ही) कर लो, तो यदि तुमने पहिली स्त्री को ख़ज़ाना (ही) दे दिया हो, तब भी उसमें से कुछ वापिस न लेना । क्या तुम व्यर्थ (इलज़ाम लगा लगा कर) और खुले पाप (और अत्याचार) करके उस (माल) को प्राप्त करना चाहते हो † ॥

† टीका–इस्लाम से पूर्व काफ़िर ऐसा करते थे कि जब कभी किसी स्त्री से दिल फिरा और दूसरी की सूझी, तो पहली पर कोई दोष लगा दिया और जो विवाह से तलाक़ तक दिया दिलाया था, वह ज़बरदस्ती छीन लिया या इतना सताया कि वह बेचारी स्वयं महर आदि वापिस करने के लिये विवश हो गई । इस्लाम इससे मना करता है और कहता है कि देकर लेना ठीक नहीं :- हसन निज़ामी ॥

और उसको ले कैसे सकते हो, जब कि तुम एक दूसरे से लाभ उठा चुके हो (इसके बदले में महर आदि, पुरुष पर वाजिब हो गया । फिर उसको ज़बरदस्ती वापिस लेने का कोई कारण सम्भव नहीं और न महर शेष रहने की दशा में महर दबाया जा सकता है) और स्त्रियां (तो विवाह के समय) तुम से पक्की प्रतिज्ञा ले चुकी हैं (जिस के बाद तुम्हें उन पर अधिकार रखने का इख़्तियार मिला । अब अधिकार प्राप्त करके प्रतिज्ञा भंग करना बहुत बुरी बात है) ॥

और (देखो !) उन स्त्रियों से विवाह न करो, जिन से (कभी) तुम्हारे बाप (दादा या नाना) विवाह कर चुके हैं । परन्तु (इस आज्ञा से पूर्व) जो हो गया (वह हो गया) । यह (बड़ी) निर्लज्जता (की बात) है और (अल्लाह को) क्रोध (में लाने) का काम है और (बहुत) बुरा (और अनुचित) दस्तूर * है ॥

* टीका – अज्ञानता के समय में काफ़िर अपनी सौतेली माताओं से विवाह कर लिया करते थे : – हसन निज़ामी ॥

तुम पर तुम्हारी मातायें † हराम हैं और तुम्हारी पुत्रियां और तुम्हारी बहिनें ‡ और तुम्हारी फूफियां और तुम्हारी मौसियां § और भतीजियाँ ——

† टीका—माता के हुक्म में नानी तथा दादी भी शामिल हैं और बेटी-विषयक आज्ञा में धेवती और पोती भी शामिल हैं:-हसन निज़ामी॥

‡ टीका--सगी बहिन-सौतेली बहिन (अर्थात सगे बाप की दूसरी स्त्री की पुत्री) तथा वह बहिन, जो सगी मां से पैदा हुई हो, चाहे बाप दूसरा हो अर्थात सौतेले बाप की पुत्री । यह तीनों भी हराम हैं:-हसन निज़ामी ॥

§ टीका—बाप दादा की फूफियां और मां नानी की मौसियां सब तीनों प्रकार की और इसी प्रकार भतीजियों और भानजियों के विषय में भी यही सूरत है । अर्थात तीन पीढ़ियां । : हसन निज़ामी ॥

وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِىْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ
مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ
الّٰتِىْ فِىْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِىْ دَخَلْتُمْ
بِهِنَّ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ
وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ
النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ كِتٰبَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا
بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ فَمَا
اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْ بَعْدِ
الْفَرِيْضَةِ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ لَّمْ

और भानजियां और तुम्हारी (रज़ाई) माएं, जिन्होंने तुमको दूध पिलाया और तुम्हारी दूध शरीकी बहिनें और तुम्हारी सासें (यह सब) तुम पर हराम हैं और जिन बीवियों के साथ तुम सोहबतदारी कर चुके हो, उनकी गैलड़ लड़कियां, जो (ग़ालिबन) तुम्हारी गोदों में पर्वरिश पाती हैं, (तुम पर हराम हैं)। लेकिन अगर इन बीवियों के साथ तुमने सोहबतदारी न की हो, (तो गैलड़ लड़कियों के साथ निकाह कर लेने से) तुम पर कुछ गुनाह नहीं और (तुम्हारी बहुवें यानी) तुम्हारे (अपने) सुलबी बेटों की बीवियाँ (भी तुम पर हराम हैं) और दो बहिनों का एक साथ (निकाह में) रखना (भी तुम पर हराम है,) मगर जो हो चुका (सो हो चुका)। बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला मेहर्बान है ० ॥

और वह औरतें (भी हराम हैं,) जो (दूसरों की) क़ैद (निकाह) में हों। मगर वह जो (काफ़िरों की लड़ाई में क़ैद होकर) तुम्हारे क़ब्ज़े में आई हों, (यह) ख़ुदा का हुक्म तहरीरी है, (जो) तुम पर (लाज़िम किया जाता है)। और (जो औरतें तुम पर हराम की गईं) उनके अलावा (सब औरतें) तुम्हारे लिये हलाल हैं। बशर्ते कि शहवत रानी के लिये नहीं, बल्कि क़ैद (निकाह) में लाने की ग़रज़ से माल (यानी महर) के बदले (निकाह करना) चाहो। फिर जिन औरतों से तुमने लुत्फ़ (सोहबत) उठाया हो, तो उनसे जो महर ठैरा था, उनके हवाले करो और ठैराये पीछे (महर के कम व बेश करने पर) आपस में राज़ी हो जाओ, तो तुम पर इसमें कुछ गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह (सब के हाल से) वाक़िफ़ है (और सब काम) हिकमत (व तदबीर) से करता है ०—

और भानजियां और तुम्हारी (दूध-मातायें अर्थात धाय) मातायें, जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया हो और तुम्हारी दूध * शरीक बहिनें और तुम्हारी स्त्रियों की मातायें (अर्थात सासें, सब हराम हैं) और उन (स्त्रियों) की गैलड़ बेटियां (भी) जिनका (साधारणतया) तुम्हारी गोद में पालन पोषण होता है। (उन स्त्रियों की बेटियों से अभिप्राय है) जो उन स्त्रियों के पेट से हों, जिनसे तुमने सहवास कर लिया हो और यदि तुमने उनसे सहवास नहीं किया (और सहवास करने से पूर्व तलाक़ देदी) तो (तुम उनसे विवाह कर सकते हो) तुमको कोई पाप नहीं होगा और तुम्हारे बेटों ‡ की स्त्रियाँ (अर्थात बहुयें भी हराम हैं; ऐसे बेटों की स्त्रियां) जो तुम्हारे शरीर से पैदा हुए हों और यह (भी हराम है) कि दो बहिनों को एक साथ (विवाह में) रक्खा जावे §। मगर पहिले जो हो चुका (वह हो चुका)। अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है ॥

* टीका— तीनों सम्बन्ध, जो अपने कुटुम्ब में हराम हैं, दूध पिलाने वाली माता के सम्बन्धियों से भी हराम हैं :—हसन निज़ामी ॥

‡ टीका — अपने शरीर के पोते और नवासे भी इस आज्ञा में दाख़िल हैं : — हसन निज़ामी ॥

§ टीका— स्त्री की बहिन की तरह स्त्री की फूफी, मौसी भतीजी और भानजी से भी एक साथ विवाह उचित नहीं है। अलबत्ता स्त्री की मृत्यु के बाद जायज़ है :— हसन निज़ामी ॥

और (समस्त) वह औरतें (भी तुम पर हराम हैं) जिनके पति हों, लेकिन जो (धर्म युद्ध के सिलसिले में लूट के तौर पर काफ़िरों से) तुम्हारे हाथ लगें (वह जायज़ हैं। परन्तु उस दशा में जब कि उनके पति भी उनके साथ तुम्हारी क़ैद में न आयें और क़ैद में आने के बाद मुसलमान न हो जायँ। पतियों के मुसलमान हो जाने की दशा में उनकी पत्नियां उनको दे देनी चाहियें और यह भी कि वह स्त्री किताब वालों में से हो, मुश्रिक न हो। यह) अल्लाह की आज्ञायें हैं (जिन्हें उसने ब्याह के विषय में) तुम पर फ़र्ज़ किया है ॥

और उन (उपरोक्त स्त्रियों) के अतिरिक्त और (समस्त) स्त्रियां तुम्हें हलाल हैं, परन्तु (केवल) वासना तृप्ति (अर्थात ज़िनाकारी) के लिये नहीं। बल्कि (सदैव की नियत से विवाह) बंधनमें लाने लिये (स्वीकार व साक्षी करके) अपने माल (अर्थात् महर) के बदले (उन्हें प्राप्त करना) चाहो॥

और जिनसे तुम लाभ उठा चुको, तो उन्हें (वह) महर देदो, जो उनसे तै पाया हो और (महर के एक बार) तै पाने के उपरान्त अगर तुम (दोनों) परस्पर प्रसन्नता से कोई (और) बात तै करलो (अर्थात् स्त्री अपनी ख़ुशी से महर कम करदे या मर्द अपनी ख़ुशी से महर बढ़ादे) तो (उनसे) तुमको (किसी प्रकार का) पाप न होगा। (अर्थात् यह आवश्यक नहीं है कि रज़ामन्दी होते हुए भी नियत किया हुआ महर ही दिया जाय। हां परस्पर की रज़ामन्दी ज़रूरी है)। अल्लाह (तुम्हारी सुसाध्यकताओं और हानि लाभ को अच्छी तरह) जानता है (और) बुद्धिमान है (जो आज्ञा देता है, वह बुद्धिमानी से पूर्ण होती है और उसके पालन करने में तुम्हारे लिये लोक परलोक की भलाई और कल्याण है और विरोध में हानि और ख़राबी है) ॥

और तुम में से, जिसे इतनी शक्ति न हो——

يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ
فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ فَانْكِحُوْهُنَّ
بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ
مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ
فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ
مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ
الْعَنَتَ مِنْكُمْ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ وَاللّٰهُ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ
وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا
عَظِيْمًا ۝ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ

ع ४

ضَعِيْفًا

और तुम में से जिसको मुसलमान बीबियों से निकाह करने का मक़दूर न हो तो (खैर) लौंडियां (ही सही) । जो (काफ़िरों की लड़ाई में) तुम मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ जायं, बशर्ते कि ईमान रखती हों । और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है, (आदम ज़ाद होने के एतिबार से) तुम एक दूसरे के हम जिन्स हो । पस (बेतअम्मुल) लौंडी वालों के इज़्न से उनके साथ निकाह करलो और दस्तूर के मुताबिक़ उनके महर उनके हवाले करदो । मगर शर्त यह है कि क़ैद (निकाह) में लाई जाएं (और) न (तो तुम से) बाज़ारी औरतों का सा तअल्लुक़ रखना चाहती हों और न ख़ानगियों का सा ० फिर अगर क़ैद (निकाह) में आये पीछे कोई बेहयाई का काम करें, तो जो सज़ा बीबी की, उसकी आधी लौंडी की ० लौंडी से निकाह करने की इजाज़त उसी को है, जिसको तुम में गुनाह (कर बैठने) का ख़ौफ़ हो और सब्र करो, तो तुम्हारे हक़ में ज़ियादा बेहतर है और अल्लाह मुआफ़ करने वाला मेहर्बान है ० अल्लाह चाहता है कि (अम्बिया व सुलहा) जो तुमसे पहिले (हो गुज़रे) हैं, उनके तरीक़े तुम से खोल खोल कर बयान करे और तुमको उन ही तरीक़ों पर चलाये और तुम पर मेहर (की नज़र) रक्खे । और अल्लाह (सब कुछ) जानता (है और हर एक काम) हिक्मत (से) करता है ० और अल्लाह चाहता है कि तुम पर मेहर (की नज़र) रक्खे । और जो लोग नफ़्सानी ख़्वाहिशों के पीछे पड़े हैं, उनका मतलब यह है कि तुम (राह रास्त से भटक कर) बहुत दूर हट जाओ ० अल्लाह चाहता है कि तुम (पर) से (बोझ) हलका करे, क्योंकि इन्सान (तबीअत का) कमज़ोर पैदा किया गया है-

---

कि (स्वतन्त्र और स्वाधीन) मुसलमान स्त्रियों से विवाह कर सके (और उनके महर और दूसरे ख़र्चों को बर्दाश्त कर सके) तो (वह) उन दासियों से विवाह करले, जो तुम लोगों के अधिकार में हों (और) मुसलमान (हों) । और अल्लाह तुम्हारे ईमान को अच्छी तरह जानता है । (बहुधा दासियाँ ईमान में स्वतन्त्र पत्नियों से बढ़ी हुई होती हैं और जब मुसलमान हो गये, तो) तुम (सब) परस्पर एक हो (और वंश की दृष्टि से भी सब एक आदम और एक हव्वा की सन्तान हो) । सो (किसी की दासी होने की चिन्ता न करो और) दासियों के स्वामियों की आज्ञा लेकर उनके साथ विवाह करलो और (उन्हें भी) नियमानुसार उनके महर दो । (और यह दासियां भी) विवाह (बन्धन) में आने वाली हों (अर्थात् नियमानुसार पत्नी बन कर रहें) बाज़ारी स्त्रियों का सा सम्बन्ध न रखती हों और न चोरी छिपवाँ मिलती हों ॥

और जब वह विवाह-बन्धन में बंध जायं और फिर कोई निर्लज्जता का आचरण करें, तो उनके लिये (स्वतन्त्र व स्वाधीन) पत्नियों के मुक़ाबले में आधी * सज़ा है । यह (दासियों से विवाह करने की आज्ञा) उस (मनुष्य) के लिये है, जो तुम में से भयभीत हो (कि विवाह न हुआ, तो) पाप में (फंसना पड़ेगा) । अन्यथा सन्तोष (व दमन) करो, तो (सन्तोष व दमन) तुम्हारे लिये (अधिक) अच्छा है। और अल्लाह (सन्तोष करने वालों को बहुत) क्षमा करता है और (सन्तोषियों पर बड़ा) कृपालु है ॥

* टीका-दासी और दास चाहे क्वारे हों, चाहे व्याहे-अगर वह व्यभिचार करें, तो उनके लिये केवल पचास कोड़ों का दण्ड है:- हसन निज़ामी ॥

(इन आज्ञाओं के देने से) अल्लाह का अभिप्राय यह है कि तुमको तुमसे पहिले लोगों के नियम बता दे । और तुम्हें (उन पर चलने की) हिदायत करदे । (समस्त भूत-पूर्व-नबी और भूत-पूर्व उम्मतें अर्थात् समूह उन बातों के पाबन्द थे, जो वर्णन की गई हैं और तुम उन्हीं के मार्ग पर लाये जा रहे हो) और (उनके मार्ग पर लाकर अल्लाह चाहता है कि) तुम्हें क्षमा प्रदान करे । और (विश्वास रक्खो) अल्लाह को (तुम्हारी आवश्यकताओं का तुम से अधिक) ज्ञान है (और वह) बुद्धिमान है । (उसकी बराबर युक्ति दर्शिता किसी और में नहीं है। जो आज्ञा देता है, तुम्हारे लाभ की देता है । तुम्हें रोक टोक से घबराना न चाहिये) ॥

और अल्लाह चाहता है कि तुम पर कृपा (दृष्टि) रक्खे और जो लोग अपनी इच्छाओं का अनुकरण करते हैं, वह यह चाहते हैं कि तुम (उन जैसे हो जाओ और) सच्चे मार्ग से बहुत दूर जा पड़ो । (बुद्धिमानी इसी में है कि तुम शैतानों को निराश करदो) ॥

(और यह रोक टोक कुछ असह्य नहीं है) । अल्लाह (तुम पर कोई बोझ नहीं डालना चाहता, बल्कि अल्लाह तो) चाहता है कि तुम (पर) से बोझ (को और) हलका करदे (क्योंकि आख़िर उसी ने मनुष्य को बनाया है) और (वह जानता है कि) मनुष्य (स्वभाव का) निर्बल पैदा किया गया है (और कठोर आज्ञाओं को सहन नहीं कर सकता) ॥

(और अहकाम सख़्त के बार का मुतहम्मिल नहीं हो सकता)० मुसलमानो! नाहक़ (नारवा) एक दूसरे के माल ख़ुर्द बुर्द न किया करो। हां आपस की रज़ामन्दी से ख़रीद व फ़रोख़्त हो (और उसमें कुछ हाथ लग जाय, तो वह नारवा नहीं) और (आप) अपने तईं हलाक न करो (तुम से यह बात इस लिये कही जाती है कि) अल्लाह तुम्हारे हाल पर मेहरबान है० और जो ज़ोर व ज़ुल्म से ऐसा (काम) करेगा (यानी पराया माल खा जायगा) तो हम उसको (क़यामत के दिन दोज़ख़ की) आग में (लेजा कर) झोंक देंगे और यह अल्लाह के नज़्दीक (एक) आसान (सी बात) है ० जिन (कामों के करने) से तुमको मना किया जाता है, अगर तुम उनमें से बड़े बड़े गुनाहों से बचते रहोगे, तो हम तुम्हारे (छोटे छोटे) क़ुसूर (तुम्हारे नामए आमाल से) मह्व कर देंगे और तुमको लेजा कर मक़ाम इज़्ज़त (यानी बहिश्त) में जगह देंगे ० और ख़ुदा ने जो तुम में से एक को दूसरे पर बर्तरी दे रक्खी है, उसका कुछ अर्मान न करो ० मर्दों ने जैसे अमल किये हों, उनको (सवाब में से) उनका हिस्सा और औरतों ने जैसे अमल किये हों, उनको (सवाब में से) उनका हिस्सा और (हर वक़्त) अल्लाह से उसका फ़ज़्ल मांगते रहो। अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है ० और जो (तर्का) माँ, बाप और रिश्तेदार छोड़ मरें, तो हमने हर एक (मरने वाले की मीरास) के हक़दार ठैरा दिये हैं और जिन लोगों के साथ तुम्हारा अहद व पैमान है, तो (बतौर ख़ुद) कुछ हिस्सा उनको भी दे दो-

ضَعِيفًا ● يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ
بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ
تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۗ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ
رَحِيْمًا ● وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا
● فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا
اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ
سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ● وَلَا
تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۗ
لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ۗ وَلِلنِّسَآءِ
نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۗ وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ
فَضْلِهٖ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ● وَلِكُلٍّ
جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۗ
وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ۗ

ऐ ईमान वालो! आपस में एक दूसरे का माल अनुचित (और ना जायज़ तरीक़ों से) न खाओ, लेकिन यह (जायज़ है) कि परस्पर की रज़ामन्दी से व्योपार हो (और उससे एक मनुष्य दूसरे के माल से लाभ उठाये) और (शेष यह भी कि) आपस में (एक दूसरे का) ख़ून न करो। अल्लाह तुम पर मेहरबान है (कि बिना कारण किसी के माल या जान पर अधिकार करने के लिये मना करता है)॥

और जो कोई घोर अत्याचार और ज़ुल्म से यह काम कर बैठेगा (अर्थात् किसी का माल या किसी की जान बिना कारण और अनुचित रूप से नष्ट करेगा) तो उसे हम आग में डालेंगे और यह (बात) अल्लाह के लिये आसान है। (कोई अपने बल और धन के अभिमान में यह न समझ ले कि अल्लाह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सक्ता। उसके लिये बलवान अत्याचारियों को दण्ड देना भी उतना ही आसान है, जितना कि निर्बल अत्याचारियों को सज़ा देना)॥

(और देखो!) यदि तुम बड़े बड़े धर्म-विरुद्ध कार्य (और महान पापों) से बचते रहोगे, तो हम तुम्हें तुम्हारे (बहुधा) छोटे (छोटे) पाप क्षमा कर देंगे और तुमको आदर के स्थान (स्वर्ग) में दाख़िल करेंगे॥

और (ऐ औरतो! तुम्हें जो यह शिकायत है कि पुरुषों को जिहाद में शरीक होने के कारण युद्ध प्राप्त सम्पत्ति अर्थात् लूट का माल मिलता है जो तुम्हें नहीं मिलता और बपौती में पुरुषों का भाग दोहरा नियत किया गया है और तुम्हारा इकहरा, तो तुम्हें इस शिकायत के भाव को दिल से निकाल देना चाहिये)। अल्लाह ने जिन बातों में तुम (औरतों और मर्दों) में से किसी को किसी पर श्रेष्ठता दी है, उसकी (एक दूसरे को) लालच (व हिर्स) न करनी चाहिये। (क्योंकि इस से दिलों में द्वेष व कपट पैदा होता और साँसारिक प्रबन्ध में बाधा पड़ती है। पुरुषों को उनके कर्म (और उनकी योग्यता) के अनुसार हिस्सा मिलता है और स्त्रियों को उनके कर्म (और उनकी योग्यता) के अनुसार। अतएव (एक दूसरे की श्रेष्ठता या बड़ाई पर ईर्षा व द्वेष करने के बजाय तुम्हें चाहिये कि) अल्लाह से उसके फ़ज़्ल (व दया) के प्रार्थी हो। (जिस से कि वह तुम्हें नेक काम करने की शक्ति और उन कर्मों का उत्तमोत्तम फल प्रदान करे)। अल्लाह को हर एक बात का ज्ञान है (वह हर एक की योग्यता और हर एक के अधिकार को जानता है और उसी के अनुसार हर एक के साथ मामला करता है)॥

जो (माल) माता, पिता और (दूसरे) सम्बन्धी छोड़ कर मर जायँ, उसमें से हर एक के हमने वारिस (उत्तराधिकारी) नियत कर दिये हैं। (इन वारिसों की मौजूदगी में बशर्ते कि वह मुसलमान हों, किसी और को बपौती में से हिस्सा पाने का अधिकार नहीं है)। और (अगर ऐसे लोग भी मौजूद हों) जिनसे तुम्हारा भाई चारा हुआ हो (तो तुम्हें चाहिये कि) उनको (भी) उनका हिस्सा दे दो

إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝ الرِّجَالُ
قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ
بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۚ فَالصَّالِحَاتُ
قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ ۚ وَاللَّاتِي
تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ
فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ ۖ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا
تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا ۝
وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا
مِنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِنْ أَهْلِهَا إِنْ يُرِيدَا إِصْلَاحًا
يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ۝
وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ
وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ
وَالْمَسَاكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ

والمحصنٰت

हर चीज़ अल्लाह के पेश नज़र है० मर्द औरतों के सर धरे हैं। (इसके दो) सबब (हैं, एक) यह कि (आदमियों में) अल्लाह ने बाज़ (यानी मर्दों) को बाज़ (यानी औरतों) पर (दिल की मज़बूती और जिस्मानी तवानाई में) बर्तरी दी है और (दूसरा) सबब यह कि मर्दों ने (औरतों पर) अपना माल ख़र्च किया है। तो जो नेक (बीबियाँ) हैं (मर्दों का) कहा मानती हैं (और) ख़ुदा की इनायत से (उनके) पीठ पीछे (हर एक चीज़ की) हिफ़ाज़त रखती हैं और तुमको जिन बीबियों के सर चढ़ने का अन्देशा हो, तो (पहिली दफ़ा) उनको समझा दो। फिर उनके साथ हम बिस्तरी मौक़ूफ़ करो और (इस पर भी न मानें, तो) उनके साथ मार पीट से पेश आओ। फिर अगर तुम्हारी बात मानने लगें, तो तुम भी उन पर (नाहक़ के छुद्दे रखने के) पहलू न ढूँढते फिरो। क्योंकि अल्लाह (सब पर) ग़ालिब (और) बड़ा (ज़बरदस्त) है, (तो उससे डरते रहो)० और अगर तुमको मियाँ बीबी में खट पट का अन्देशा हो, तो एक पञ्च मर्द के कुनबे में से मुक़र्रर करो और एक पञ्च औरत के कुनबे में से। अगर पञ्चों का (दिली) इरादा (मियाँ बीबी में) इस्लाह (करा देने) का होगा, तो अल्लाह (उनके समझाने बुझाने से) दोनों में मुवाफ़िक़त करा देगा। बेशक अल्लाह (सब के दिली इरादों से) वाक़िफ़ (और) ख़बरदार है० और (लोगो!) अल्लाह ही की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक मत ठराओ और माँ, बाप और क़राबत वालों और यतीमों और मोहताजों और क़राबत वाले पड़ोसियों और अजनबी पड़ोसियों–

(जो न्याय से तुम उचित समझो। चाहे मरने से पहिले या मरते समय, वसीयत के द्वारा। यह मुंह बोले भाई वास्तविक उत्तराधिकारी की मौजूदगी में अगर कुछ पा सके हैं, तो इसी रूप से)। अल्लाह की दृष्टि में हर वस्तु है (और वह सम्बन्धों के समस्त रूपों को जानता है)॥

मर्द औरतों के सिर धरे हैं (प्रथम तो) इस लिये कि अल्लाह ने (स्त्री और पुरुषों में) एक को एक पर (शारीरिक दृष्टि से) श्रेष्ठता दे दी है और (दूसरे) इस लिये कि मर्द (औरतों पर) अपना माल ख़र्च करते हैं (अर्थात् उनको महर देते या उनका ख़र्च उठाते हैं)। सो, जो स्त्रियां नेक (व भली) हैं, वह (मर्दों की) ताबेदार हैं। उनकी अनुपस्थिति में अल्लाह की कृपा से (उन समस्त वस्तुओं की) रक्षा करती हैं (जिनकी रक्षा करना उनके लिये आवश्यक है)। और (जो बद हों और) जिनके बुरे स्वभाव का तुम्हें डर हो, तो (पहिले तो) उनको समझाओ (बुझाओ) और (फिर) उन्हें साथ सोने से वञ्चित करदो। और (इस पर भी न मानें, तो) उन्हें पीटो। सो यदि (मारने पीटने से) तुम्हारे कहने पर चलने लगें, तो तुम भी दोषारोपण के साधन न तलाश करो। अल्लाह (सब पर) ग़ालिब (और) बड़ा (शक्ति शाली) है (उस से डरते रहो)॥

और (ऐ मुसल्मानो!) अगर तुम्हें (कभी कहीं) उन दोनों (अर्थात् किसी पति पत्नी) के बीच बिगाड़ का सन्देह हो, तो एक पंच मर्द वालों में से नियत करलो और एक पंच औरत वालों में से। अगर यह दोनों (सच्चे दिल से) सन्धि करानी चाहेंगे, तो अल्लाह उन दोनों में एकता कर देगा। अल्लाह (सब के दिलों के हाल और दिलों के इरादों से) अभिज्ञ और सचेत है॥

और (ऐ मुसल्मानो! केवल) अल्लाह की उपासना करो और किसी वस्तु को उसका शरीक न बनाओ। (नेक काम भी यदि अल्लाह को प्रसन्न करने और परलोक का पुण्य प्राप्त करने के बजाय, गर्व व प्रसिद्ध के लिये किया जाय, तो वह भी एक प्रकार का शिर्क (द्वैत पूजा) है। अतएव इस से बचो) और (प्रत्येक कर्म करते समय अल्लाह ही का ख़याल रक्खो। अल्लाह ही का अधिकार हर समय पर ध्यान में रहे। पर उसका यह अभिप्राय नहीं है कि संसार को तज कर बैठ जाओ; बल्कि संसार और संसार के लोगों के साथ अल्लाह की इच्छानुसार व्योहार करना स्वयं एक बड़ी पूजा है। यथा योग्य सबके अधिकार प्रदान करो)। माता, पिता, सम्बन्धी, अनाथ, निर्धन, समीप के पड़ोसियों और दूर के पड़ोसियों–

وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا
فَخُورًا ۝ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ
وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهِ وَأَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۝ وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ
أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَلَا
بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا
فَسَاءَ قَرِينًا ۝ وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ وَكَانَ اللّٰهُ
بِهِمْ عَلِيمًا ۝ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ
وَإِنْ تَكُ حَسَنَةً يُضَاعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ
أَجْرًا عَظِيمًا ۝ فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ
بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا ۝ يَوْمَئِذٍ

और पास के बैठने वालों और मुसाफ़िरों और जो (लौंडी .ग़ुलाम) तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं, इन (सब) के साथ सुलूक करते रहो। क्योंकि अल्लाह उन लोगों को पसन्द नहीं करता, जो इतराएँ (और) बड़ाई मारते फिरें ० आप बुख़्ल करें (सो करें, दूसरे) लोगों को भी बुख़्ल करने की सलाह दें और अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उनको जो कुछ दे रक्खा है, उसको छुपाएँ। और हमने उन लोगों के लिये, जो (हमारी नेअ़मतों की) नाशुक्री करें, ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रक्खा है ० और माल ख़र्च करें, (तो) लोगों के दिखाने को और ईमान (पूछो तो) न अल्लाह का और न रोज़ आख़िरत का और शैतान जिसका साथी हो, तो वह (बहुत ही) बुरा साथी है ० और अगर (यह लोग) अल्लाह और रोज़ आख़िरत पर ईमान लाते और जो कुछ .ख़ुदा ने इनको दे रक्खा था, उसको (.ख़ुलूस नीयत से .ख़ुदा की राह में) ख़र्च करते, तो इनका क्या बिगड़ता। और अल्लाह तो इन (के हाल) से वाक़िफ़ (ही) है ० अल्लाह (किसी पर) ज़र्रह भर भी .ज़ुल्म नहीं करता, बल्कि (किसी ने ज़र्रह भर भी) नेकी (की) हो, तो उसको बढ़ाता और अपने पास से बड़ा सवाब अ़ता फ़र्मा देता है ० भला तो (उस दिन इन लोगों का) क्या हाल होना है, जब (सब लोग जमा हों और) हम हर उम्मत के गवाह (यानी रसूल) को तलब करें (जो उनकी निस्बत गवाही दे) और (ऐ पैग़म्बर !) हम तुम को भी तलब करें कि (अपनी उम्मत के) उन लोगों की निस्बत गवाही दो ०—

पास बैठने वालों, यात्रियों और (दास दसियों--यहां तक कि पशु पक्षी भी) जो तुम्हारे अधिकार में हों, उन सब से उपकार के साथ पेश आओ। अल्लाह (ऐंठने और) इतराने वालों (और अपने आपको) बड़ा समझने वालों को पसन्द नहीं करता। जो स्वयं कंजूसी करते हैं और (दूसरे) लोगों को (भी अपने बचन या कर्म से) कंजूसी की ओर प्रेरित करते हैं और जो (धन व ज्ञान का प्रसाद) अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से दिया है, उसे छिपाये रखते हैं (और उस से किसी को लाभ नहीं पहुँचाते–इन) ऐसे कृतघ्नों के लिये हमने दुर्दशा का अज़ाब (दुःख) तैयार कर रक्खा है॥

(इन मन चाही करने वालों और डींग मारने वालों में ऐसे भी हैं) जो अपने माल (अल्लाह को प्रसन्न करने के लिये तो नहीं, बल्कि) लोगों के दिखाने के लिये ख़र्च करते हैं और अल्लाह पर और प्रलय पर ईमान नहीं लाते। (अर्थात् न उन्हें अल्लाह को प्रसन्न करने की कामना है, न परलोक के पुण्य की)। इनको तो केवल अपनी इन्द्रियों का आनन्द अर्थात् शैतान को प्रसन्न करना मंज़ूर है और जिस (किसी) का साथी शैतान बन गया, तो (समझ लो कि) बहुत ही बुरा साथी बना॥

और इनका क्या बिगड़ जाता, अगर (यह लोग) अल्लाह पर और प्रलय के दिन पर ईमान ले आते और अल्लाह के दिये हुये (माल व धन) में से (गर्व व प्रसिद्ध के उद्देश्य से ख़र्च करने के बजाय अल्लाह को प्रसन्न करने के लिये) ख़र्च करते। और अल्लाह को उन (के दिलों) की अच्छी तरह ख़बर है। (वह जानता है कि वह क्या कर रहे हैं और किस भाव से कर रहे हैं)॥

अल्लाह किसी पर रत्ती बराबर (भी) ज़ुल्म नहीं करता और अगर (किसी ने कोई) नेकी (की) हो, तो उसे दो गुणा कर देता है और (फिर) अपने पास से बड़ा सवाब (पुण्य-इनाम के तौर पर) प्रदान करता है॥

क्या हाल होगा (उन लोगों का उस दिन) जब हम प्रत्येक उम्मत में से एक गवाह (अर्थात् उसके रसूल को) तलब करेंगे और तुम्हें (भी) उन (के कर्मों) की गवाही देने के लिये बुलायेंगे॥

जिन लोगों ने (दीन हक़ के क़बूल करने से) इन्कार किया और रसूल (के हुक्म) की नाफ़र्मानी की, उस दिन तमन्ना करेंगे कि ऐ काश ! उन्हें ज़मीन का पैवन्द कर दिया जाय और (उस दिन यह लोग) ख़ुदा से कोई सी बात भी नहीं छुपा सकेंगे ० (मुसल्मानो !) जब तुम नशे की हालत में हो, तो नमाज़ के पास भी न जाना। यहाँ तक कि (नशा उतर जाय और) जो कुछ (मुंह से) कहते हो, (उसको) समझने लगो। और (इसी तरह) नहाने की हाजत हो, तो भी नमाज़ के पास न जाना-यहां तक कि ग़ुस्ल करलो। हाँ (सफ़र की हालत में) रस्ते चले जा रहे हो (और पानी न मिले और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ लो, तो ख़ैर)। और अगर तुम बीमार हो, या सफ़र में हो, या तुम में से कोई जाय ज़रूर से (होकर) आये, या औरतों से हम सोहबत हो और तुमको पानी मयस्सर न आये, तो पाक मिट्टी लेकर तयम्मुम यानी मुंह और हाथों का मसह कर लो, बेशक अल्लाह दर गुज़र करने वाला (और) बख़्शने वाला है ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उन लोगों (के हाल) पर नज़र नहीं की, जिनको किताब (आस्मानी) से हिस्सा दिया गया था। वह (बावजूद इसके) लगे गुमराही इख़्तियार करने और चाहते हैं कि तुम (मुसल्मान) भी गुमराह हो जाओ ० और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है और अल्लाह हामी बस है और अल्लाह ही मददगार बस है ० (ऐ पैग़म्बर !) यहूद में कुछ (लोग ऐसे भी) हैं, जो अल्फ़ाज़ को उनकी जगह (यानी अस्ली मानों) से फेरते हैं—

ع

يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى
بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ۝ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى
حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِىْ
سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ
عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ
لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا
طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَفُوًّا غَفُوْرًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ
اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ؕ ۝ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى
بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ۝ مِنَ الَّذِيْنَ
هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ

سَمِعْنَا

उस दिन यह लोग; जिन्होंने कुफ़्र किया है और रसूल की आज्ञा नहीं मानी है, इच्छा करेंगे कि क्या अच्छा हो, यदि वह पृथ्वी में समा जायँ (कि हिसाब किताब देने की लज्जा से बचें। मगर ऐसा नहीं होगा, उन्हें हिसाब देना पड़ेगा) और वह अल्लाह से कोई बात न छिपा सकेंगे ॥

(और) ऐ मुसल्मानो ! (नमाज़ के लिये होश व हवास का ठीक होना और सफ़ाई व पवित्रता ज़रूरी है। अतएव) जिस समय तुम नशे * (की हालत) में हो, तो नमाज़ के पास भी न जाना, जब तक (यह बात न हो जाय कि) जो (कुछ ज़बान से) कहो, उसे समझने लगो और न जिनाबत (अपवित्रता) की दशा में (नमाज़ पढ़ना) जब तब कि स्नान न करलो (नमाज़ नहीं पढ़ सकते)। सिवाय ऐसी दशा के कि तुम (सफ़र में) मार्ग तै कर रहे हो और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो, या कोई तुम में से पाख़ाने (दिशा होकर) से आया हो, या तुम स्त्रियों के पास गये हो (और) फिर तुम्हें पानी न मिले, तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो। (अर्थात् पवित्र मिट्टी पर हाथ मार कर उन हाथों को) अपने चेहरों और हाथों पर फेर लिया करो। (यही तयम्मुम उपरोक्त विवशताओं में वज़ू और स्नान का काम देता है)। अल्लाह दर गुज़र करने वाला और क्षमा करने वाला है। (और बन्दों को तंग नहीं करता और आज्ञायें आने से पहिले पहिले जो भूलें बन्दों से हो गई हैं, उन्हें क्षमा करता है) ॥

*टीका—यह आयत नशे के हराम होने से पहिले उतरी थी। अब नशा नमाज़ और नमाज़ के अतिरिक्त हर दशा में हराम है :— हसन निज़ामी ॥

(ऐ रसूल !) क्या तुमने उन लोगों की दशा पर ध्यान नहीं दिया, जिन्हें (अल्लाह की) किताब से भाग मिला है। (परन्तु) वह (इसके होते हुए भी) गुमराही (अल्लाह के मार्ग से भटक जाना) स्वीकार करते हैं और चाहते हैं कि तुम भी सीधे मार्ग से बहक जाओ (और गुमराह बन जाओ)। अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को ख़ूब जानता है (और तुम्हें उनसे बचाता है)। और अल्लाह तुम्हारा हिमायती काफ़ी है और अल्लाह तुम्हारा सहायक यथेष्ट है ॥

यहूदियों में कुछ ऐसे लोग हैं, जो बात को उसकी जगह (अर्थात् उसके वास्तविक अर्थों) से फेरते हैं (और अर्थ में परिवर्तन करके कुछ का कुछ बना देते हैं)—

और अपनी ज़बानों को मरोड़ मरोड़ कर और दीन (इस्लाम) में ताने की राह से समिअ्ना व असैना और इस्मअ् ग़ैर मुस्मइन् और राइना कह कर (तुम से) ख़िताब करते हैं और अगर वह समिअ्ना व अत.अ्ना और (फ़क़त) इस्मअ् और उन्ज़ुर्ना कह कर ख़िताब करते, तो उनके हक़ में बेहतर होता और बात भी सीधी (सीधी) होती। मगर उन पर तो उनके कुफ़्र की वजह से .ख़ुदा की फिटकार है, पस उनमें से (बहुत ही) थोड़े (लोग) ईमान लाते हैं ० ऐ अह्ल किताब (.क़ुर्आन) जो हमने नाज़िल फ़र्माया है और वह उस (किताब) की-जो तुम्हारे पास है, तस्दीक़ भी करता है, उस पर ईमान ले आओ। (मगर) इससे पहिले कि (लोगों के) मुंह बिगाड़ कर हम उल्टे उनकी गुद्दियों में लगादें ० या जिस तरह हमने अस्हाब सब्त को फिटकार दिया था, इसी तरह इनको भी फिटकार दें। और जो .ख़ुदा को मन्ज़ूर है, वह तो होकर रहेगा ० अल्लाह तो इस (जुर्म) को माफ़ करने वाला है नहीं कि उसके साथ (किसी को) शरीक गर्दाना जाय। हाँ इसके सिवा जो गुनाह जिसको चाहे, माफ़ करदे। और जिसने (किसी को) .ख़ुदा का शरीक गर्दाना, तो उसने (.ख़ुदा पर) तूफ़ान बाँधा (जो बहुत ही) बड़ा गुनाह (है) ० (ऐ पैग़म्बर!) क्या तुमने उन लोगों (के हाल) पर नज़र नहीं की, जो आप बड़े मुक़द्दस बनते हैं। (अपने आप मुक़द्दस बनने से क्या होता है) बल्कि अल्लाह जिस को चाहता है, मुक़द्दस बनाता है। और (.ख़ुदा के हाँ) .ज़ुल्म तो लोगों पर एक तुस बराबर भी न होगा ०-

سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَرَاعِنَا
لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا
سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا
لَهُمْ وَأَقْوَمَ وَلَٰكِنْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ● يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ
مِنْ قَبْلِ أَنْ نَطْمِسَ وُجُوهًا فَنَرُدَّهَا عَلَىٰ
أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ ۚ
وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ● إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ
يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ
وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ●
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ بَلِ اللَّهُ
يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ● انْظُرْ

और सच्चे धर्म पर दोष लगाने के निमित्त ज़बानों को मरोड़ मरोड़ कर (ऐसे मिलते जुलते उच्चारण और विभिन्न अर्थों के शब्द मुंह से निकालते या ऐसे शब्द-जिनके दो विभिन्न अर्थ होते हों; प्रयोग करते हैं कि प्रकट में उन शब्दों के अर्थ कुछ और समझे जाते हैं और दिल में उनके कुछ और अर्थ होते हैं; जैसे) वह कहते (तो) हैं "समिअ्ना व असैना" (अर्थात् हमने सुना और नहीं माना। लेकिन "असैना" के शब्द को ज़बान मरोड़ कर इस प्रकार उच्चारण करते हैं कि वह "अत.अ्ना" समझा जाता है; जिस के यह अर्थ हैं कि हमने मान लिया) या (जैसे जब रसूलुल्लाह से कुछ प्रार्थना करनी होती है, तो कहते हैं) 'इस्मअ् ग़ैर मुस्मइन' ("इस्मअ्" के अर्थ हैं, सुनो और "ग़ैर मुस्मअ्" एक प्रार्थना का शब्द है। जिसका शब्दानुवाद है "न सुनाया जाइयो"। यह वाक्य अच्छे अर्थों में यदि प्रयोग किया जाय, तो उससे अभिप्राय यह होगा कि "तुमको किसी से दुर्वचन न सुनना पड़े"। और यदि बुरे अर्थों में प्रयोग किया जाय, तो अभिप्राय होगा कि "तुम बहरे हो जाओ"। यहूदी इस वाक्य को बुरे अर्थों में प्रयोग करते हैं और दिखाते यह हैं कि वह दुआ दे रहे हैं) और (उसी तरह वह रसूलुल्लाह को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये कहते हैं) "राइना" (जिसके अर्थ हैं "हमारी ओर ध्यान करो" लेकिन वह (इ) को दीर्घ कालिक करके पढ़ते हैं। जिस से (राइना) के बजाय "राईना" हो जाता है; जिसके अर्थ हैं कि "ऐ हमारे चर्वाहे !" इस से भी उनका प्रयोजन अल्लाह के रसूल का अपमान करना होता है)॥

अल्लाह तआ़ला इन यहूदियों की इस शरारत से रसूलुल्लाह को सूचित करता है और उनकी हिदायत के लिये आज्ञा देता है कि:--

(यदि वह उपरोक्त शब्दों को बुरे अर्थों में प्रयोग करने के स्थान में अच्छे अर्थों में प्रयोग करते) और (सीधे तरीक़े से यह) कहते कि हमने (आपके उपदेशों को) सुन लिया और स्वीकार कर लिया। आप (हमारा वृतान्त) सुनिये और हमारी ओर ध्यान कीजिये, तो यह उनके हित में अच्छा होता और उचित होता। लेकिन उन पर तो उनके (प्राचीन) कुफ़्र के कारण अल्लाह की फिटकार है। इस लिये उन में से (बहुत) कम ईमान लाते हैं॥

ऐ किताब वालो! इस से पहिले कि हम (काफ़िरों के) चेहरों का रूप बदल दें और उन्हें उलट पुलट कर पीठ की तरफ़ लगा दें। या जिस प्रकार हमने "अस्हाब-सब्त" (सनीचर वालों) को मलऊन (व मर्दूद) कर दिया था, उसी प्रकार इन (वर्तमान काफ़िरों) को भी मलऊन (व मर्दूद) करदें। (तुम) इस किताब (अर्थात् .क़ुर्आन) पर ईमान ले आओ, जो हमने (इस समय) उतारी है और जो उस (किताब) का समर्थन करती है, जो तुम्हारे पास है। (और तुम ईमान लाओ या न लाओ) अल्लाह को जो मं.जूर है, वह तो होकर ही रहेगा। (तुम्हारे विरोध कदापि सफल न होंगे)॥

अल्लाह उसको (कदापि) क्षमा न करेगा कि उसके साथ किसी को (ईश्वरीयता और आराधना में) शरीक ठहराये। अलबत्ता अल्लाह इस से नीचे के जितने पाप (हैं, उन्हें) जिसे चाहे क्षमा कर दे। और जिसने अल्लाह का (किसी को) शरीक ठहराया, उसने (बड़ा) तूफ़ान उठाया (और) बड़ा पाप (किया)॥

(ऐ रसूल!) क्या तुमने उन लोगों (की दशा) पर दृष्टि नहीं की, जो (इतनी ख़राबियों के होते हुये भी) अपने आप को बड़ा पवित्र कहते हैं और अपने आप को अल्लाह के बेटे और अल्लाह के प्रेमी बताते हैं। यह सब झूठे और स्वार्थ के दावे हैं। कोई अल्लाह का बेटा नहीं हो सकता और न अपने (पवित्र बनने से कोई पवित्र बन सकता है)। बल्कि अल्लाह (ही) जिसको चाहता है, पवित्र बनाता है और (यह पवित्रता का दावा करने वाले यदि वास्तव में पवित्र होते, तो उन से बिगाड़ का क्या सम्बन्ध रहता। अल्लाह के यहां) .ज़ुल्म तो लोगों पर एक तागे के बराबर भी न होगा॥

(ऐ पैग़म्बर !) देखो (तो सही) यह लोग अल्लाह पर कैसे (कैसे) झूठ (बोहतान) बांध रहे हैं और सरीह गुनाह के लिये तो यही बस करता है० (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उन लोगों (के हाल) पर नज़र नहीं की, जिन को किताब (आस्मानी) से हिस्सा दिया गया। वह लगे बुतों का और शैतान का कल्मा भरने। और (नीज़) मुश्रिकीन की निस्बत कहने-कि मुसल्मानों से तो यही लोग ज़ियादा रुबराह हैं ० (ऐ पैग़म्बर !) यही लोग हैं, जिनको अल्लाह ने फिटकार दिया है और जिसको अल्लाह फिटकारे, मुमकिन नहीं कि तुम (किसी को) उसका मददगार पाओ ० आया इन के पास सल्तनत का कोई हिस्सा है ? और इस वजह से लोगों को तिल बराबर भी (उसमें से) देना नहीं चाहते ० या ख़ुदा ने जो अपने फ़ज़्ल से लोगों को नेअ्मत (क़ुर्आन) अता फ़र्माई है, उस पर जले मरते हैं। सो (यह कोई नई बात नहीं, पहिले भी) ख़ानदान इब्राहीम (के लोगों) को हमने किताब दी और इल्म (दिया) और उनको बड़ी भारी सल्तनत (भी) दी ० फिर लोगों में से कोई तो उस (किताब) पर ईमान लाया और कोई उससे ठिटक रहा और (जो ठिटक रहा, उसके लिये दहक्ती हुई) दोज़ख़ (की सज़ा) बस करती है ० जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया, हम उनको (क़यामत के दिन) दोज़ख़ में (लेजा) दाख़िल करेंगे। जब उनकी खालें गल जायेंगी, तो हम इस ग़रज़ से कि वह अज़ाब (का मज़ा अच्छी तरह) चक्खें, गली हुई खालों की जगह उनकी दूसरी (नई) खालें पैदा कर देंगे—

كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ وَكَفٰى بِهٖٓ
اِثْمًا مُّبِيْنًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ
يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ
لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَاۗءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ۝ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ
يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ۝ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ
مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ۝ اَمْ
يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰي مَآ اٰتٰىھُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ
فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَاٰتَيْنٰھُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ۝ فَمِنْھُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ
وَمِنْھُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ۭ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ۭ
كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُھُمْ بَدَّلْنٰھُمْ جُلُوْدًا غَيْرَھَا

(ज़रा) देखो ! (तो) अल्लाह पर कैसे (कैसे) झूठ (बोहतान) बाँध रहे हैं (कि अपने आप को अल्लाह के बेटे बताते हैं)। और यही स्पष्ट पाप (इन लोगों के दण्ड के लिये) यथेष्ट है॥

(ऐ रसूल !) क्या तुमने उन (लोगों के हाल पर) विचार नहीं किया, जिन्हें (अल्लाह की) किताब से भाग मिला है। (अर्थात् किताब वाले हैं, परन्तु) वह (अब) बुतों को और शैतानों को मानते हैं और काफ़िरों (मुश्रिकों) के विषय में कहते हैं कि मुसल्मानों से वह लोग अधिक सचाई के मार्ग पर हैं। (ऐ रसूल !) यही वह लोग हैं, जिन पर अल्लाह ने लानत की है (अर्थात् जिस पर अल्लाह की फिटकार है)। और जिसे अल्लाह फिटकार दे, तो (विश्वास रक्खो कि) फिर उसका तुम्हें कोई सहायक नहीं मिलेगा (न इस लोक में, न परलोक में)। क्या इन (काफ़िर यहूदियों) का (हुकूमत व) राज्य में कोई भाग (और ठेका) है ?कि जिसके आधार पर यह (दूसरे) लोगों को (उसमें से) एक तिल बराबर देना नहीं चाहते। या अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल (व दया) से लोगों को, जो (लौकिक और परलौकिक) नेअ्मत (व प्रसाद) दी है, उससे जले मरते हैं। सो (यह उनकी मूर्खता है)। इब्राहीम के वंश को हमने (पहिले भी) किताब दी (थी) और ज्ञान (दिया था) और बड़ा महान राज्य दिया (था। और अब भी यह नेअ्मतें इब्राहीम ही के वंश को दी गई हैं)॥

सो इनमें कुछ लोग तो उस पर (अर्थात् मुहम्मद रसूलुल्लाह पर) ईमान ले आये और कुछ उनमें बिमुख रहे और (इन बिमुख होने वालों के लिये) नर्क की भड़कती हुई आग काफ़ी है॥

जो लोग हमारी आयतों से इन्कार करते रहे (हैं) उन्हें हम निश्चित रूप से शीघ्र आग में डालेंगे। (और) जब (एक बार) उन की त्वचा (खाल) जल जायगी, तो हम उनकी दूसरी खाल बदल देंगे—

لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ●
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَهُمْ
فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ ۖ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ●
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ
أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا
بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
سَمِيعًا بَصِيرًا ● يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ
وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ ۖ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ
فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ
تَأْوِيلًا ● أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا
بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ

बेशक अल्लाह (बड़ा) ज़बरदस्त साहबे तदबीर है ० और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम (भी) किये, तो हम उनको अन्क़रीब (बहिश्त के) ऐसे बाग़ों में (लेजा) दाख़िल करेंगे, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी (और वह) उनमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे। उन (बाग़ों) में उन के लिये बीबियां (भी) होंगी, साफ़ सुथरी और हम उनको घनी घनी छावँ में लेजा कर रक्खेंगे ० (मुसलमानो !) अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि अमानत (रखने) वालों की अमानतें (जब माँगें) उनके हवाले कर दिया करो। और जब लोगों के बाहमी झगड़े फ़ैसल करने लगो, तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो। अल्लाह जो तुमको नसीहत करता है, (तुम्हारे हक़ में) बहुत अच्छी है। इसमें शक नहीं कि अल्लाह (सब की) सुनता (और सब कुछ) देखता है ० मुसलमानो ! अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो और जो तुम में से साहबे हुकूमत हैं (उनका भी)। फिर अगर किसी अम्र में तुम (और हाकिम बक़्) आपस में झगड़ पड़ो, तो अल्लाह और रोज़ आख़िरत पर ईमान लाने की शर्त यह है कि उस अम्र में अल्लाह और रसूल (के हुक्म) की तरफ़ रुजू करो (कि) यह (तुम्हारे हक़ में) बेहतर है और अन्जाम के एतिबार से भी (यही तरीक़ा) बहुत अच्छा है ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उन (मुनाफ़िक़ मुसलमानों के हाल) पर नज़र नहीं की, जो (मुंह से तो यह) कहते हैं कि वह क़ुर्आन पर ईमान रखते हैं, जो तुम पर उतारा गया है और उन (आस्मानी किताबों) पर (भी) जो तुम से पहिले उतारी गई हैं (और) चाहते यह हैं—

जिस से कि अज़ाब (दुःख) का मज़ा चक्खे जायँ। अल्लाह (बड़ा) युक्तिवान है।(उसे काफ़िरों को ऐसा दण्ड देने में कोई कठिनता नहीं होगी और जो दण्ड देगा, वह बुद्धिमानी से पूर्ण होगा) ॥

और जो ईमान ले आये (हैं) और (फिर जिन्हों ने) अच्छे कर्म किये (हैं) शीघ्र उन्हें (हम स्वर्ग के) बाग़ों में दाख़िल कर देंगे कि उनके नीचे नहरें बहती हैं और वहाँ उनका स्थान सदैव के लिये (और) स्थायी रूप से होगा और वहाँ उनके लिये पवित्र व स्वच्छ पत्नियाँ होंगी (समस्त दोषों अर्थात् अवगुणों से रहित) और हम उनको गहरी और घनी छायों में रक्खेंगे ॥

(ऐ मुसलमानो !) अल्लाह तुम्हें आज्ञा देता है कि धरोवर रखने वालों को (उनकी) धरोवर (जब वे माँगें, बिना किसी विलम्ब के) दे दिया करो। और (दूसरे यह भी कि) जब लोगों (के किसी झगड़े) का फ़ैसला करने बैठो, तो न्याय से फ़ैसला किया करो। काफ़िरों-विशेषतया यहूदियों का यह आचरण कि वह ग़ैर अमानतदार हैं और अन्यायी हैं, बहुत ख़राब हैं। तुमको हर मामले में उनका अनुकरण करने से बचना चाहिये। (और) अल्लाह तुम्हें (जो) नसीहत करता है (अच्छी ही करता है)। अल्लाह (सब कुछ) सुनता है और (सब कुछ) जानता है (अमानत व ख़यानत, ज़ुल्म व इन्साफ़-सबका हाल उसे मालूम है)॥

(और) ऐ मुसलमानो ! (तुम्हें चाहिये कि) तुम अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो और तुम में से-जो शासक (और हाकिम हों) उनकी आज्ञा का पालन करो और यदि किसी मामले में तुम्हारे (परस्पर या तुम्हारे शासक के) बीच मतभेद हो जाय, तो यदि (तुम वास्तव में) अल्लाह और प्रलय पर ईमान लाये हो, तो इस मामले में अल्लाह और रसूल की (आज्ञाओं की) ओर आकर्षित हो—अल्लाह और रसूल ही से फ़ैसला चाहो। यह (ढंग तुम्हारे हित में) अच्छा और परिणाम की दृष्टि से बहुत अच्छा है ॥

(ऐ रसूल !) क्या तुम इन (मुनाफ़िक़ों) को नहीं देखते, जो दावे (तो) करते हैं कि जो (किताब) तुम पर उतरी है, उस पर और जो (किताबें) तुमसे पहिले उतर चुकी हैं, उन (सब) पर ईमान ला चुके हैं। (परन्तु) [illegible]

أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا
بِهِ ۖ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى
الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ
صُدُودًا ۝ فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا
قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ
أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ
وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا
مِنْ رَسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ
ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ
لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ فَلَا وَرَبِّكَ
لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ

कि अपना मुक़द्दमा एक शरीर (आदमी-कअ़्ब बिन अश्रफ़ यहूदी) के पास ले जायँ। हालांकि उनको हुक्म दिया जा चुका है कि उसकी बात न मानें और शैतान चाहता है कि उनको भटका कर (राह रास्त से) बड़ी दूर ले जाय ० और जब उनसे कहा जाता है कि आओ ! अल्लाह ने जो (हुक्म) उतारा है, उसकी तरफ़ और रसूल की तरफ़ (रुजू करें)। तो तुम (उन) मुनाफ़िक़ों को देखते हो कि वह तुम्हारे पास (आने) से भिचते (और रुकते) हैं ० तो (उस वक़्त उनकी) कैसी (कुछ रुस्वाई) होगी) जब उन ही के अपने करतूत की वजह से उन पर कोई मुसीबत आ पड़े। तो तुम्हारे पास क़समें खाते हुये (दौड़े) आएँ कि ब.ख़ुदा हमारी ग़रज़ तो हुस्न सुलूक और मेल मिलाप की थी० यह ऐसे (मुफ़्सिद) हैं कि जो (फ़साद) इनके दिलों में है, (बस) .ख़ुदा (हीं) को (.ख़ूब) मालूम है। तो (ऐ पैग़म्बर !) इनके पीछे न पड़ो और (नसीहत के तौर पर) इनको (इनके निफ़ाक़ के नतीजे) समझादो। और इनसे ऐसी बातें करो कि (निफ़ाक़ के बुरे नतीजे) अच्छी तरह इनके ज़ेह्न नशीन हो जायँ ० और जो रसूल हमने भेजा, उसके भेजने से हमारा मक़सूद (हमेशा) यही रहा है कि अल्लाह के (यानी हमारे) हुक्म से उसका कहा माना जाय। और (ऐ पैग़म्बर !) जब इन लोगों ने (तुम्हारी नाफ़र्मानी करके) अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया था, अगर (उस वक़्त यह लोग) तुम्हारे पास आते और .ख़ुदा से माफ़ी मांगते और रसूल (यानी तुम भी) उन की माफ़ी चाहते, तो (यह लोग) देख लेते कि अल्लाह बड़ा ही तौबा क़बूल करने वाला मेहर्बान है ० पस (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे (ही) पर्वर्दिगार की (यानी हमको अपनी) क़सम है कि जब तक यह लोग अपने बाहमी झगड़े तुम ही से फ़ैसला न करायें–

कि (अपना) झगड़ा शैतान (और शैतान के अनुयाइयों) के पास ले जायँ (कि वह उसे चुकायें)। यद्यपि उन्हें (इस्लाम की ओर से) आज्ञा मिल चुकी है कि शैतान का कहा न मानें और शैतान की (तो) इच्छा है कि उन्हें बहका कर (सीधे मार्ग से) दूर डालदे॥

(किसी झगड़े के अवसर पर) जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो (किताब) उतारी है, आओ उसकी तरफ़ और (उसके) रसूल की तरफ़ (चित्त) लगावें, तो प्रगट में इस्लाम का दावा करने के कारण साफ़ (इन्कार तो कर नहीं सकते. परन्तु) तुम देखते हो इन मुनाफ़िक़ों को तुम्हारे पास (आने और अल्लाह की किताब पर चलने) से झिजकते और रुकते हैं (और इधर उधर को भागे फिरते हैं)॥

फिर (उस समय) कैसी (जान पर) बनती है कि जब (स्वयं) अपने हाथों उन पर मुसीबत पड़ती है * और वह तुम्हारे पास सौगन्ध खाते हुए आते हैं कि अल्लाह की क़सम !! हमारा प्रयोजन तो (दूसरी जगह जाने से) केवल यह था कि सलूक और मिलाप होजाय॥

* टीका—एक यहूदी और एक मुनाफ़िक़ (ऐसा मनुष्य, जो भीतर से काफ़िर हो और प्रकट में मुसल्मान) के बीच झगड़ा था। यहूदी बावजूद यहूदी होने के रसूलुल्लाह को न्यायी बनाना चाहता था। परन्तु मुनाफ़िक़ की कोशिश अश्रफ़ के बेटे 'कअ़्ब' एक यहूदी सर्दार के पास जाने की थी। क्योंकि वह झूठा था और रसलुल्लाह मुसल्मान के झूठ को भी सच नहीं मान सकते थे और अश्रफ़ के बेटे कअ़्ब के यहां घूस दी जाती थी। परन्तु अन्त में इन दोनों का मुक़द्दमा रसूलुल्लाह ही की सेवा में पेश हुआ और उसी यहूदी के हक़ में फ़ैसला किया गया। इस पर मुनाफ़िक़ को सूझी कि हज़रत उमर के पास चलना चाहिये। वह मुझे मुसल्मान समझ कर ज़रूर मेरी रिआयत करेंगे। हज़रत उमर को जब मालूम हुआ कि यह रसूलुल्लाह के फ़ैसले का अपील करने आया है, तो उसे क़त्ल कर डाला और फ़र्माया कि जो ऐसे क़ाज़ी अर्थात् न्याय करने वाले के फ़ैसले को न माने, उसका फ़ैसला यह है। बध किये गये मनुष्य के वारिसों ने हज़रत उमर पर .ख़ून का दावा किया। और रसूलुल्लाह से शपथें खाकर कहा कि हमारा प्रयोजन हज़रत उमर के पास जाने से केवल यह था कि वह परस्पर समझौता करादें। आप के फ़ैसले के ख़िलाफ़ उनसे फ़ैसला कराने का प्रयोजन नहीं था। इस पर यह आयतें उतरीं:-• हसन निज़ामी॥

यह वह लोग हैं कि (बस) अल्लाह (ही .ख़ूब) जानता है, जो (कुछ) उनके दिल में है। सो तुम उन (की बातों) की परवाह न करो और (बस) उनको उपदेश करते रहो (कि तुम्हारी हरकतें अच्छी नहीं हैं और उनका परिणाम ख़राब होगा)। और उनसे (ऐसी) बातें कहो कि उनके दिल में जगह करलें॥

और हमने जो रसूलों को भेजा है, तो इस लिये कि ईश्वरीय आज्ञा स्वरूप उनकी आज्ञा का पालन किया जाय और अगर वह (मुनाफ़िक़) जिस समय उन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था (उसके बाद भी) तुम्हारे पास आ जाते और अल्लाह से क्षमा मांगते और रसूल (अर्थात् तुम भी) उनकी क्षमा चाहते, तो अल्लाह को क्षमा करने वाला (और) दयालु भी पाते। (परन्तु उन्होंने तो यह ग़ज़ब किया कि प्रथम तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम की आज्ञा से विमुख हुए, और फिर जब उसकी विपत्ति उन पर पड़ी, तो लगे झूठी शपथें खाने और बातें बनाने। तो अब उनकी क्षमा हो, तो किस प्रकार हो) ॥

सो शपथ है, तुम्हारे पालन कर्त्ता की—यह लोग उस समय तक (सच्चे) मुसल्मान नहीं होंगे, जब तक कि (अपने आपस के झगड़ों, क़िस्सों में) तुम्हारा (ही) हुक्म न मानें—

لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ
وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ○ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ
أَنِ اقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا مِن دِيَارِكُم مَّا
فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا
يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ
تَثْبِيتًا ○ وَإِذًا لَّآتَيْنَاهُم مِّن لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا
وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ○ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ
وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم
مِّنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ
وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ○ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ○ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا
حِذْرَكُمْ فَانفِرُوا ثُبَاتٍ أَوِ انفِرُوا جَمِيعًا ○ وَ
إِنَّ مِنكُمْ لَمَن لَّيُبَطِّئَنَّ فَإِنْ أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ

ع

और (सिर्फ़ फ़ैसला ही नहीं, बल्कि) जो कुछ तुम फ़ैसला कर दो, उस से किसी तरह दिल्गीर भी न हों, बल्कि (दिल व जान से उसको) क़बूल करलें, (ग़रज़ जब तक यह सब कुछ न करें, उस वक़्त तक) इनको ईमान से बहरा नहीं ० और अगर हम इनको हुक्म देते कि आप अपने तईं हलाक करो या घर बार छोड़ (परदेस निकल) जाओ, तो इनमें से चन्द आदमियों के सिवा (बहुतेरे हमारे) इस (हुक्म) की तामील न करते और जो कुछ इनको समझाया जाता, अगर उसकी तामील करते, तो इनके हक़ में बेहतर होता और इसकी वजह से (दीन पर भी) मज़बूती के साथ जमे रहते ० और इस सूरत में हम इनको ज़रूर अपनी तरफ़ से बड़ा (अच्छा) बदला देते ० और इनको राह रास्त पर (भी) ज़रूर लगा देते० और जो अल्लाह और रसूल का कहा माने, तो ऐसे ही लोग (जन्नत में) उन (मक़बूल बन्दों) के साथ होंगे, जिन पर अल्लाह ने (बड़े बड़े) एहसानात किये-यानी नबी और सिद्दीक़ और शहीद और (दूसरे) नेक बन्दे और यह लोग (क्या ही) अच्छे साथी हैं ० यह अल्लाह का फ़ज़्ल है और अल्लाह ही का जानना बस करता है (कि उसके फ़ज़्ल में से किस को कितने का इस्तिहक़ाक़ है) ० मुसलमानो ! अपनी एहतियात (और होशियारी) रक्खो और (दुश्मनों के मुक़ाबिले में निकला करो, तो) दस्ते (के दस्ते) बन कर निकला करो या (सब के सब) एक साथ निकल खड़े हुआ करो ० और तुम में कोई (कोई) ऐसा (मुनाफ़िक़) भी है, (जिसने क़सम खाई है) कि (वह जिहाद में जाने से) ज़रूर पीछे हट रहेगा। फिर अगर तुम पर (कोई) मुसीबत आ पड़े—

और फिर जो कुछ तुम फ़ैसला कर दो अपने दिल में (ज़रा) मैल न आने दें और (उसे) शुद्ध हृदय से स्वीकार कर लें। (केवल अपने आप को मुसल्मान कह देने से यह अल्लाह को और उसके सच्चे बन्दों को धोका नहीं दे सक्ते। उनके लिये न यहाँ भलाई है, न मर्णान्त में) ॥

और अगर हम इन (मुनाफ़िक़ों या धर्म में कच्चे लोगों) को आज्ञा देते कि अपने आप को मार डालो या अपने घर (बार) छोड़ (कर) निकल जाओ (जैसा पहिली उम्मतों को हुक्म कर चुके हैं) तो (यह जो मुसलमान होने के दावे कर रहे हैं) उन में से थोड़े (ही) ऐसा करते। और अगर यह लोग—जो कुछ उनसे कहा जाता है, वह करने लगें, तो उनके हक़ में (बहुत ही) अच्छा हो और उनका ईमान दृढ़ हो जाय और उस दशा में हम (भी) अपनी तरफ़ से उनको बड़ा अच्छा फल दें और उनको सच्चे मार्ग पर (ही) लगा दें। (और उनका लोक व परलोक सुधार दें। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलही व सल्लम के द्वारा जो आज्ञायें आई हैं, वह बिलकुल सरल हैं । लेकिन अज्ञान लोग उनका मान नहीं करते और उनकी नर्मी को ग़नीमत नहीं जानते और उनके पालन करने से भी जान चुराते हैं) ॥

और जो अल्लाह और (उसके) रसूल का हुक्म मानेगा, तो वह (स्वर्ग में) उन लोगों के साथ होगा, जिन पर अल्लाह ने इनाम फ़र्माया है। अर्थात् नबियों और सिद्दीक़ों और शहीदों और सालिहीन (के साथ) और उन लोगों का साथ बहुत (ही) अच्छा (साथ) है । (महा पुरुषों के मण्डल में तुम्हें सम्मिलित कर लेना) यह अल्लाह की (केवल) दया है (कुछ तुम्हारी आधीनता करने की उजरत नहीं है)। और बस अल्लाह ही ख़ूब जानता है (कि तुम में से कौन उसके इस फ़ज़्ल का अधिकारी है) ॥

(अच्छा) ऐ मुसल्मानो ! (अब तुम अपनी रक्षा की चिन्ता करो और) अपने हथियार सँभाल लो। फिर (अलगर) दल बन कर या एकत्रित होकर निकलो। और तुम में कोई (कोई मुनाफ़िक़) ऐसा है कि (वह जिहाद में जाने से) बचता है और देर लगाता है और अगर तुम पर कोई विपत्ति आये—

तो लगे कहने कि .खुदा ने मुझ पर (बड़ा ही) एहसान किया कि मैं इन (मुसल्मानों) के साथ मौजूद न था ० और अगर तुम पर .खुदा का फ़ज़्ल हो, तो (जानी दुश्मनों की तरह कि) गोया तुम में और उस में (किसी तरह की) दोस्ती (महब्बत) थी ही नहीं-बोल उठे कि ऐ काश ! मैं (भी) इनके साथ होता, तो मुझको (भी) बड़ी कामयाबी हासिल होती ० सो जो लोग (फ़लाह) आ़क़िबत के इवज़ में (इस) दुनिया की ज़िन्दगी (यानी जान तक) दे डालने को मौजूद हैं, उनको चाहिये कि .खुदा की राह में (दुश्मनों से) लड़ें और जो .खुदा की राह में (दुश्मनों से) लड़े और फिर मारा जाय या ग़लबा पाये, तो (दोनों सूरतों में क़यामत के दिन) हम उसको बड़ा अज्र देंगे ० और (मुसल्मानो !) तुमको क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में और उन बे बस मर्दों और औरतों और बच्चों के लिये (दुश्मनों से) नहीं लड़ते, जो (आजिज़ आकर .खुदा से) दुआएँ माँग रहे हैं कि ऐ हमारे पर्वरदिगार ! हमको इस बस्ती (यानी मक्के) से (कहीं) नजात दे, जहां के रहने वाले (हम पर) .ज़ुल्म कर रहे हैं और (.खुद ही) अपनी तरफ़ से किसी को हमारा हामी बना और (.खुद ही) अपनी तरफ़ से किसी को हमारा मददगार बना ० जो ईमान रखते हैं, वह तो अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो (दीन इस्लाम से) मुन्किर हैं, वह शैतान की राह में लड़ते हैं, तो (मुसल्मानो !) तुम शैतान के तरफ़दारों से लड़ो—

قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ●
وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ
تَكُنْۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ
مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ● فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ وَمَنْ
يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ
نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ● وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ
الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ
وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۭ ● اَلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ

الشَّيْطٰنِ

तो कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर (बड़ी) दया की कि मैं उनके साथ मौजूद न हुआ और यदि तुम पर अल्लाह की कृपा हो (अर्थात् युद्ध में विजय और लूट का माल प्राप्त हो, तो ग़ैरों की तरह) कहने लगे कि कदाचित् मैं (भी) उनके साथ होता, तो मुझे (भी) बड़ी सफलता प्राप्त होती। मानो तुम्हारे और उसके बीच कोई व्यवहार (और सम्बन्ध) ही नहीं है। (और तुम्हें जो सफलतायें प्राप्त हुईं, उनसे उसका कोई लगाव ही नहीं है)॥

सो (मुनाफ़िक़ जिहाद से रुके रहें और साँसारिक लाभ व हानि को तकते रहें)। जो लोग परलोक के (सुख के) बदले साँसारिक जीवन (अर्थात् अपनी जान तक) बेच चुके हैं (उन्हें) चाहिये कि अल्लाह की राह में (शत्रुओं से निस्संकोच) लड़ें और जो अल्लाह की राह में (शत्रुओं से) लड़े और मारा जाय या विजित हो, तो (दोनों दशाओं में) हम उसे बड़ा पुण्य देंगे॥

और (ऐ मुसल्मानो !) तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में नहीं लड़ते और उन लाचार पुरुषों और स्त्रियों और बच्चों के लिये (शत्रुओं के मुक़ाबले को क्यों नहीं खड़े हो जाते) जो (मक्के में पड़े हैं और मक्के के काफ़िरों से तङ्ग आकर) दुआयें माँग रहे हैं कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता ! हमें इस बस्ती से निकाल। क्योंकि यहाँ के मनुष्य ज़ालिम हैं और किसी को अपनी ओर से हमारा सहायक बना और अपनी ओर से किसी को हमारी सहायता के लिये भेज॥

जो मनुष्य ईमान वाले हैं, वह अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं, वह शैतान की राह में लड़ते हैं। सो (ऐ मुसल्मानो!) तुम शैतान के तरफ़दारों से लड़ो—

الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۝
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ
اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ
عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۭ قُلْ
مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۣ
وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ
الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۭ وَاِنْ
تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ۭ قُلْ
كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ فَمَالِ هٰٓؤُلَاۗءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ
يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ۝ مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ

(और उनकी कसरत की कुछ परवाह न करो, क्योंकि) शैतान की (जितनी) तदबीरें (हैं, सब) बोदी हैं ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उन लोगों (के हाल) पर नज़र नहीं की, जिनको हुक्म दिया गया कि (चन्दे) अपने हाथों को रोके रहो और (इस वक़् इन्तज़ाम के लिये इतना ही बस करता है कि) नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात दिया करो। फिर जब इन (लोगों) पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ, तो एक फ़रीक़ तो उनमें से (ऐसा बोदा निकला कि) लगे लोगों से डरने, जैसे कोई .खुदा से डरता है, बल्कि (.खुदा के डर से भी) बढ़ कर। और (घबरा कर .खुदा से) लगे शिकायत करने कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! तू ने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया ? हमको थोड़े दिनों की मोहलत और क्यों न दी ? (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि दुनिया के फ़ायदे (बहुत ही) थोड़े (फ़ायदे) हैं। और जो शख़्स (.खुदा का) डर रक्खे, उसके लिये (फ़लाह) आक़िबत (दुनिया के फ़ायदों से कहीं) बेहतर है और (वहां) तुम लोगों (में से किसी) की तुस बराबर भी हक़ तल्फ़ी न होगी ० (लोगो !) तुम कहीं भी हो, मौत तो तुमको आकर रहेगी। अगर्चे पक्के (पक्के) गुम्बदों (ही) में (क्यों न) हो। और (ऐ पैग़म्बर !) इन (लोगों) को कुछ फ़ायदा पहुँच जाता है, तो कहने लगते हैं कि यह .खुदा की तरफ़ से है और अगर इनको कुछ नुक़सान पहुँच जाता है, तो कहने लगते हैं कि (ऐ पैग़म्बर !) यह तुम्हारी तरफ़ से (यानी तुम्हारी वजह से) है। (सो ऐ पैग़म्बर ! तुम इनसे) कहदो कि (नफ़ा हो या नुक़सान) सब अल्लाह की तरफ़ से है। तो इन लोगों का क्या हाल है कि बात को समझ (यानी अक़्ल) के पास होकर भी नहीं फटके ० (ऐ बन्दे ! हक़ीक़त हाल तो यह है कि) तुझको कोई फ़ायदा पहुँचे, तो (समझ कि) अल्लाह की तरफ़ से है–

(और किसी प्रकार का डर अपने दिल में न लाओ अल्लाह तुम्हारा सहायक है और) शैतान का माया जाल निर्बल है (चलने वाला नहीं है) ॥

(ऐ रसूल !) क्या तुमने उन लोगों की दशा पर दृष्टि नहीं डाली, कि जिनको (प्रारम्भ में) आज्ञा हुई थी कि (इस समय) अपने हाथों को रोके रक्खो (और शत्रुओं के दुर्व्यवहार पर सन्तोष और सहन शीलता से काम लो) और (केवल) नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो। फिर (अब) जब कि उन्हें जिहाद की आज्ञा हुई, तो तुरन्त ही उनमें एक दल मनुष्यों से इस प्रकार डरने लगा; जिस प्रकार अल्लाह का डर हो, बल्कि उस से भी (कुछ) अधिक। और (यह कायर मनुष्य) कहने लगे कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता ! हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया। क्यों न थोड़े दिन और हमें अवकाश दिया (कि हम दुनिया का और कुछ आनन्द भोग लेते। ऐ रसूल ! इन से) कहो कि दुनिया के लाभ तुच्छ हैं और .खुदा से डरने वालों के लिये परलोक (की सफलता) सांसारिक लाभों से अच्छी है। और (तुम जिहाद करके तो देखो ! अल्लाह के यहाँ) तुम्हारा बाल बराबर भी हक़ या पुरस्कार न रक्खा जायगा (और तुम्हारी मेहनत और तुम्हारे बलिदान का पूरा बदला मिलेगा) ॥

(और यदि तुम जिहाद से जान चुराओगे, तो जान बचेगी नहीं)। मौत (तो) तुम जहां कहीं हो, तुम्हे पा लेगी; चाहे (अत्यन्त) मज़बूत क़िलों में (छिपकर बैठो)। और (ऐ रसूल ! इन लोगों की यह दशा है कि) यदि इनको कोई लाभ पहुँच जाता है, तो कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से है और यदि इनको कोई हानि होती है, तो कहते हैं कि यह तुम्हारे कारण से है। कह दो ! कि (भलाई बुराई) सब अल्लाह की ओर से है। यह उन लोगों की क्या दशा है कि बात की समझ (अर्थात् बुद्धि) के पास होकर नहीं फटके ॥

(बल्कि ऐ बन्दे ! वास्तविक बात तो यह है कि) जो भलाई तुझे पहुँचती है, वह अल्लाह की ओर से होती है–

وَمَا أَصَابَكَ مِن سَيِّئَةٍ فَمِن نَّفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَاكَ
لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝ مَّن يُطِعِ
الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۖ وَمَن تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۝ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا
مِنْ عِندِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي
تَقُولُ ۖ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ ۖ فَأَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝ أَفَلَا
يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ اللَّهِ
لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ۝ وَإِذَا جَاءَهُمْ
أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ
إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ
يَسْتَنبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

وقف لازم

और तुमको कोई नुक़सान पहुँचे, तो (समझ कि) तेरे नफ़्स की तरफ़ से है। और ऐ पैग़म्बर !) हमने तुमको लोगों की तरफ़ पैग़ाम पहुँचाने वाला (बना कर) भेजा है और (तुम्हारे पैग़म्बर होने के लिये) .ख़ुदा की गवाही बस करती है०जिसने रसूल का हुक्म माना, उसने अल्लाह ही का हुक्म माना और जो फिर बैठा, तो (ऐ पैग़म्बर ! तुम से उसकी कुछ बाज़ पुर्स नहीं, क्योंकि) हमने तुम को कुछ इन लोगों का पासबान (बना कर) नहीं भेजा ० और (यह लोग मुंह से कहने को तो) कह देते हैं कि (जो तुम कहते हो) हम तस्लीम करते हैं, लेकिन जब तुम्हारे पास से (उठकर) बाहर जाते हैं, तो इनमें से कुछ लोग रातों को (बैठ २ कर) अपने कहे के ख़िलाफ़ (दूसरे २) मश्वरे करते हैं। और जैसे जैसे मशवरे रातों को (बैठ बैठ कर) करते हैं, अल्लाह (का फ़रिश्ता सब) लिखता जाता है। तो इन (के मश्वरों) की कुछ पर्वा न करो और अल्लाह पर भरोसा रक्खो और अल्लाह कारसाज़ बस है ० तो क्या यह लोग .क़ुरान (के मतालिब) में ग़ौर नहीं करते (कि कहीं सरे मू फ़र्क़ नहीं)। और अगर (.क़ुरान) .ख़ुदा के सिवा (किसी और) के पास से (आया) होता, तो ज़रूर उसमें बहुत से इख़्तिलाफ़ पाते ० और जब इनके पास अम्न की, या ख़ौफ़ की कोई ख़बर आती है, तो उसको (सब में) उड़ा देते हैं और अगर उस (ख़बर) के बारे में रसूल की तरफ़ और उन लोगों की तरफ़ रुजू करते, जो उनमें से बर सरे हुकूमत हैं, तो पैग़म्बर और हाकिमों में से, जो लोग उस (बात की असलियत) को खोद निकालने वाले हैं, उस (की हक़ीक़त) को मालूम कर लेते (और ग़लत ख़बर के मशहूर होने की नौबत न आती)। और (मुसल्मानो !-) अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी मेहर न होती, तो (मादूदे) चन्द के सिवा-तुम (सब के सब) शैतान के पीछे लग लिये होते ०-

और जो बुराई तुझे पहुँचती है, वह .ख़ुद तेरी तरफ़ से होती है। और (ऐ रसूल !) हमने तुम्हें सब मनुष्यों के लिये रसूल बनाकर भेजा है। तुम्हारा काम किसी को हानि पहुँचाना नहीं है। और (तुम्हारे रसूल होने के लिये) अल्लाह की गवाही काफ़ी है ॥

जिसने रसूल की आज्ञा मानी, उसने अल्लाह की आज्ञा मानी। और जो (ऐ रसूल ! तुम से) फिर गया, तो हमने लोगों के पास तुम्हे चौकीदार (बनाकर) नहीं भेजा है (कि उनके कर्मों का तुम से जवाब लें। उन्हें अपने कर्मों का स्वयं जवाब देना होगा। तुम केवल अपना काम किये जाओ) ॥

और (यह लोग तुम्हारे सामने तो) कहते हैं कि (जो आज्ञा हो) हमें स्वीकार है। परन्तु जब तुम्हारे पास से (उठकर) बाहर जाते हैं, तो जो (कुछ) तुम से कह चुके होते हैं, उसके विरुद्ध उन लोगों में से कुछ मनुष्य रात के समय (अनेक प्रकार की) सलाहें करते हैं। और अल्लाह लिखता (रहता) है , जो मशवरे वह करते हैं। सो तुम उनकी पर्वाह न करो और अल्लाह पर भरोसा रक्खो अल्लाह कामों के बनाने में यथेष्ट है ॥

यह (दीवाने) क्या .क़ुरान को सोच बिचार से नहीं समझते ? यदि यह अल्लाह के सिवा किसी और का (भेजा हुआ) होता, तो वह इसमें बहुत मत भेद पाते। (मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम की सच्चाई तो .क़ुरान पर थोड़ा सा ध्यान देने से प्रकट हो जाती है) ॥

और (मुनाफ़िक़ों के साथ बहुधा निर्बुद्धि* मुसल्मानों की दशा यह है कि) जब उनको कोई विश्वास दिलाने वाली या भय में डालने वाली सूचना मिलती है, तो उसका ढिंडोरा पीट देते हैं। यदि ऐसी सूचना को (प्रसिद्ध करने से पहिले) वह रसूल और (अपने दूसरे मुसल्मान) सर्दारों को पहुँचाते, तो उनमें जो (बात की) सत्यता को पहुँचने वाले (और मस्लहतों को जानने वाले मनुष्य) हैं, (वह) उसकी सत्यता को पहुँचते (और व्यर्थ एक बात को प्रसिद्ध न होने देते)। और (ऐ मुसल्मानो !) यदि तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और अल्लाह की मेहर्बानी न होती (और वह तुम्हारे सुधार और पोषण के लिये बराबर आज्ञाएँ न भेजता रहता) तो गिने चुने कुछ (पूर्ण ज्ञानी और पूर्ण धार्मिक मनुष्यों) के अतिरिक्त तुम (सब) शैतान के पीछे हो लिये थे ॥

* टीका-एक सज्जन एक जगह ज़कात वसूल करने के लिये भेजे गये थे। वहां मुसल्मान इनका स्वागत करने के लिये निकले कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के दूत थे। मगर इन अक़्लमन्द ने समझा कि सब मुझे मारने आ रहे हैं और भाग कर मदीने में आ गये और प्रसिद्ध कर दिया कि वह तो जाति की जाति इस्लाम-धर्म से फिर गई। ज़कात देने के बजाय मुझे मारने आई। बाद में जाँच करने पर असल बात प्रकट हुई। ऊपर लिखित आयत में इसी घटना की ओर संकेत है। ऐसी ग़लतियाँ और भी हुआ करती थीं, जिन से अल्लाह के धर्म को हानि पहुँचती थी :-हसन निज़ामी ॥

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَ
حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكُفَّ بَأْسَ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ
تَنْكِيلًا ۝ مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ
نَصِيبٌ مِنْهَا وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ
لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُقِيتًا ۝
وَإِذَا حُيِّيتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ
رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا
اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۝
فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُمْ
بِمَا كَسَبُوا أَتُرِيدُونَ أَنْ تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ
اللَّهُ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۝ وَدُّوا

तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम अल्लाह की राह में (दुश्मनों से) लड़ो। तुम पर अपनी ज़ात ख़ास के सिवा किसी की ज़िम्मेदारी नहीं और (हाँ) मुसल्मानों को (भी लड़ाई के लिये) उभारो। अजब नहीं कि अल्लाह काफ़िरों के ज़ोर को रोक दे और अल्लाह का ज़ोर (सब से) ज़ियादा क़वी और उसकी सज़ा (सब से) ज़ियादा सख़्त है ० जो शख़्स नेक (बात की) सिफ़ारिश करे (क़यामत के दिन) उस (नेक काम के अज्र) में से उस को भी हिस्सा मिलेगा। और जो बुरी (बात की) सिफ़ारिश करे, उस (के वबाल) में वह भी शरीक होगा और अल्लाह हर चीज़ पर ज़ाबित है ० और (मुसल्मानो !) जब तुमको किसी तरह पर सलाम किया जाय, तो तुम (उसके जवाब में) उससे बेहतर (तौर पर) सलाम करो या (कम से कम) वैसा ही जवाब दो। अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है, (जैसा करोगे, तुमको वैसा अज्र देगा) ० अल्लाह (वह पाक ज़ात है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं। इसमें (ज़रा भी) शक नहीं कि क़यामत के दिन वह तुम (सब) को (एक जगह) ज़रूर जमा करके रहेगा और अल्लाह से बढ़ कर किसकी बात सच्ची (हो सकती) है०सो (मुसल्मानो!) तुम्हारा क्या हाल है कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो फ़रीक़ हो रहे हो, हालांकि अल्लाह ने उनके करतूतों की सज़ा में उन (की अक़्लों) को औंधा कर दिया है, (जिससे वह मुर्तद हो गये)। क्या तुम यह चाहते हो कि जिसको ख़ुदा ने गुम्राह कर दिया, उसको राह रास्त पर ले आओ। और जिसको अल्लाह गुम्राह करे, मुमकिन नहीं कि तुम (ऐ पैग़म्बर !) उसके लिये रस्ता निकाल सको ० —

सो (ख़ैर, जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा)। तुम (ऐ रसूल !) अल्लाह के मार्ग में (काफ़िरों से) लड़े जाओ। तुम पर अपनी व्यक्ति के अतिरिक्त किसी का उत्तर-दायित्व नहीं है। (यदि एक मनुष्य भी तुम्हारे साथ लड़ने के लिये तैयार न हो, तो तुम अकेले लड़ो)। अलबत्ता मुसल्मानों को (लड़ाई की) ताकीद करते रहो। यह कुछ असम्भव नहीं कि अल्लाह काफ़िरों का ज़ोर तोड़ दे। अल्लाह की युद्ध-शक्ति महान है और उसका दण्ड अत्यन्त कठोर है *। (अल्लाह की शक्ति और अल्लाह की सज़ा के मुक़ाबले में काफ़िरों की शक्ति से डरना और उनके हाथ से मारे जाने की चिन्ता करना मूर्खता है)॥

* टीका–इस आयत के उतरने के बाद रसूलुल्लाह ने फ़र्माया कि ख़ुदा की क़सम, जिसकी शक्ति के अधिकार में मेरी जान है, मैं लड़ाई के लिये अकेला निकलने को तैयार हूँ। अतएव आप केवल सत्तर सवारों के साथ निकल खड़े हुये। यह देख कर मुसलमान--जो बार बार के समझाने पर भी लड़ाई से घबराते थे, स्वयं आकर्षित हो गये। और अन्त में अल्लाह ने काफ़िरों का ज़ोर तोड़ दिया :— हसन निज़ामी॥

(बहर हाल नेक कामों का प्रस्ताव अर्थात् आरम्भ करते रहना चाहिये)। जो मनुष्य (नेक काम का आरम्भ करके) किसी का भला चाहेगा (प्रलय के दिन) उसको (भी) उस (नेक काम के फल) में से हिस्सा मिलेगा। और जो (किसी बुरे काम का प्रारम्भ करके) किसी का बुरा चाहेगा, उस (बुराई) का भार उस (की गर्दन) पर भी होगा। और अल्लाह (हार्दिक भावों को जानता है और पुरस्कार व दण्ड) सब पर उसका अधिकार है॥

और (ऐ मुसलमानो !) जब तुमको कोई दुआ के शब्द कहे (जैसे सलाम करे) तो (जैसे दुआ व सलाम के शब्द उसके हों) उस से उत्तम (शब्द) दुआ (व सलाम) तुम (कह) दो या (कम से कम) उन्हीं (शब्दों) को दुहरादो। अल्लाह प्रत्येक वस्तु का हिसाब लेने वाला है। (दुआ देना और सलाम करना भी एक प्रकार की भलाई का प्रस्ताव है और उसका उत्तर देने पर पुरस्कार मिलेगा और उत्तर न देने पर दण्ड)॥

अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं है (जो पुरस्कार व दण्ड देने में बाधा डाल सके)। निश्चित-रूप से वह तुम (सब) को प्रलय के दिन इकट्ठा करेगा। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है और अल्लाह से (अधिक) किस की बात सच्ची (हो सक्ती) है॥

फिर तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफ़िक़ों के मामले में दो दल बन रहे हो। अल्लाह ने उनके कर्मों के बुरे फल के रूप में उन (की बुद्धियों) को औंधा कर दिया है। क्या तुम उसे मार्ग पर लाना चाहते हो, जिसे अल्लाह ने गुमराह कर दिया। जिसे अल्लाह गुमराह करदे, उसके लिये कोई मार्ग नहीं निकाल सके—

لَوْ تَكْفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً فَلَا
تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَإِن تَوَلَّوْا فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَد
تُّمُوهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا
إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ
أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَن يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ
يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ
فَلَقَاتَلُوكُمْ فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا
إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا
سَتَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَن يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا
قَوْمَهُمْ كُلَّمَا رُدُّوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا
فَإِن لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوا
أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ

इन (मुनाफ़िक़ों) की ख़्वाहिश यह है कि जिस तरह ख़ुद काफ़िर हो गये हैं, उसी तरह तुम (सब मुसलमान) भी कुफ़ करने लगो (और वह) और तुम (सब) एक ही तरह के हो जाओ । तो जब तक (यह लोग) ख़ुदा की राह में (यानी ख़ुदा के लिये) हिजरत न कर आयें, इनमें से (किसी को अपना) दोस्त न बनाना । फिर अगर (हिजरत से मुंह मोड़ें) तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो और उन में से (किसी को अपना) दोस्त और मददगार न बनाना ० मगर जो लोग ऐसी क़ौम से जा मिले हों कि तुम में और उनमें (सुलह का) अहद (व पैमान) है, या तुम्हारे साथ लड़ने से या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से तंग दिल हो कर तुम्हारे पास आयें, (तो ऐसे लोगों से मेल मिलाप रखने का मुज़ायक़ा नहीं) । और अगर ख़ुदा चाहता, तो इन (लोगों) को तुम पर ग़लबा देता-- तो यह तुम से लड़ते पर लड़ते । पस अगर (ऐसे लोग) तुमसे किनारा कश रहें और तुमसे न लड़ें और तुम्हारी तरफ़ (पैग़ाम) सुलह डालें, तो ऐसे लोगों पर (दस्त दराज़ी करने का) तुम्हारे लिये अल्लाह ने कोई रस्ता नहीं रक्खा ० कुछ और लोग तुम ऐसे भी पाओगे, जो तुम से (भी) अम्न में रहना चाहते हैं और अपनी क़ौम से (भी) अम्न में रहना चाहते हैं । (मगर हाल यह है कि) जब कभी उनको कोई फ़साद की तरफ़ लौटा कर ले जाय, तो औंधे मुंह उसमें जा गिरने को मौजूद । सो (ऐसे लोग) अगर तुमसे किनारा कश न रहें और तुम्हारी तरफ़ (पैग़ाम) सुलह डालें और न (लड़ाई से) अपने हाथ रोकें, तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो—

आगे आने वाली आयतों में उस घटना का वर्णन है कि:–

जब उहद की लड़ाई में हज़ार आदमियों में से तीन सौ आदमी उबई के बेटे अब्दुल्लाह मुनाफ़िक़ के साथ मुसलमानों की सेना से अलग होकर मदीने को चले आये, तो सात सौ आदमी जो रसूलुल्लाह के साथ रह गए थे, उनके दो दल हो गये । कुछ लोग तो यह कहते थे कि यह तीन सौ आदमी चूँकि ठीक अवसर पर इस्लाम की सेना का साथ छोड़ कर एक मुनाफ़िक़ के बहकाने से घर जा बैठे । इस लिये अब यह लोग इस्लाम-मण्डल से ख़ारिज हो गये । अब अवसर मिले, तो उनको क़त्ल करना लाज़िम है और कुछ लोग कहते थे कि नहीं-वह हमारे भाई मुसलमान हैं । न हम उनसे लड़ेंगे और न उनको बध करेंगे । अल्लाह तआला ने मुसलमानों का मत भेद दूर करने के लिये, यह आयत अवतीर्ण की :—हसन निज़ामी ॥

(यह मुनाफ़िक़ तो यह) चाहते हैं कि जिस तरह वह काफ़िर हैं (उसी तरह) तुम भी काफ़िर हो जाओ । जिससे कि फिर तुम सब एक हो जाओ । सो (ऐ मुसलमानो !) तुम उनमें से किसी को (अपना) मित्र न समझो, जब तक कि वह अल्लाह की राह में घर बार न छोड़ें (और जिहाद में शरीक न हों) । और यदि (यह जिहाद से) मुंह मोड़ें (और अपनी गुमराही की दशा में पड़े रहें) तो उन को जहाँ चाहो, पकड़ लो और मार डालो और उनमें से किसी को (कदापि अपना) मित्र व सहायक न बनाओ । हाँ, जो लोग कि उन लोगों में जा मिले हैं, जिनसे तुम्हारी प्रतिज्ञा हो चुकी है या (ऐसे लोग) जो अपनी जाति के साथ तुमसे लड़ने से या तुम्हारे साथ अपनी जाति से लड़ने से निराश (और तंग) होकर तुम्हारे पास आ गये हों (तो उनको गिरिफ़्तार करना और क़त्ल करना ठीक नहीं) । और अगर अल्लाह चाहता, तो उन्हें तुम पर विजित कर देता (और) फिर वह ज़रूर तुमसे लड़ते । (लेकिन अल्लाह ने यह न चाहा और तुम पर कृपा की और उनके दिलों को भय भीत कर दिया) । फिर (अब) यह लोग अगर तुम (को सताने) से बाज़ रहें और तुमसे न लड़ें और तुमसे सद्व्यवहार रक्खें, तो अल्लाह ने ऐसे लोगों पर (सख़्ती करने का) तुमको कोई अधिकार नहीं दिया ॥

उन शान्ति प्रेमी काफ़िरों पर तो तुम्हें सख़्ती नहीं करनी चाहिये । अलबत्ता काफ़िरों में कुछ ऐसे (मक्कार) भी तुम्हें मिलेंगे, जो (तुम्हारे सामने ईमान प्रकट करके) तुम्हारी शान्ति में आना चाहते हैं और (अपनी जाति के सामने कुफ़ प्रकट करके) उनसे (भी) शान्ति में रहना चाहते हैं । (और उनकी दशा यह है) कि जब उन्हें विद्रोह (व उपद्रव) की ओर निमन्त्रण दिया जाता है, तो उस की ओर (तुरन्त) पलटते हैं (और उसमें ध्यान पूर्वक हिस्सा लेते हैं) । सो (ऐसे लोग) यदि तुमसे दूर न रहें (अर्थात् तुम्हें कष्ट पहुँचाने से बाज़ न आयें) और तुम्हारे साथ सद्व्यवहार न करें और अपने हाथ (लड़ाई से)न रोकें, तो उनको पकड़ो और उन्हें जहाँ पाओ क़त्ल डालो—

وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ وَمَا
كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ
قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ
وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ۭ
فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۭ وَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍۢ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى
اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ
فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۡ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَكَانَ
اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَاۗؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا

ع

और यही लोग हैं, जिनके मुक़ाबिले में हमने तुम्हारे लिये खुली हुई हुज्जत पैदा करदी है ० और किसी मुसलमान को रवा नहीं कि मुसलमान को (जान से) मार डाले, मगर ग़लती से (मार डाला हो, तो दूसरी बात है)। और जो मुसलमान को ग़लती से (भी) मार डाले, तो एक मुसलमान बर्दा आज़ाद करे और वारिसान मक़तूल को ख़ूं बहा दे (सो अलग)। मगर यह कि (वारिसान मक़तूल ख़ूं बहा) माफ़ करदें । फिर अगर मक़तूल उन लोगों में का हो, जो तुम मुसलमानों के दुश्मन हैं और वह ख़ुद मुसलमान हो, तो (बस) एक मुसलमान बर्दा आज़ाद करना होगा। और अगर (मक़तूल) उन लोगों में का हो, जिनमें और तुम में (सुलह का) अहद (व पैमान) है, तो (क़ातिल को चाहिये कि) वारिसान मक़तूल को ख़ूं बहा पहुँचाये और (इसके अलावा) एक मुसलमान बर्दा (भी) आज़ाद करे और जिसको (मुसलमान बर्दा आज़ाद करने का) मक़दूर न हो, तो लगातार दो महीने के रोज़े रक्खे कि तौबा का यह तरीक़ा अल्लाह का ठैराया हुआ है। और अल्लाह (सब के हाल से) वाक़िफ़ है। (और) उसका इन्तिज़ाम (बड़ा) पक्का (इन्तिज़ाम) है ० और जो मुसलमान को दीदा व दानिस्ता मार डाले, तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है, जिसमें वह हमेशा (हमेशा) रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब (नाज़िल) होगा और उस पर ख़ुदा की फिटकार पड़ेगी और अल्लाह ने उसके लिये बड़ा (सख़्त) अज़ाब तय्यार कर रक्खा है ० मुसलमानो ! जब तुम अल्लाह की राह में (लड़ने के लिये) बाहर निकलो, तो (जिन लोगों पर चढ़ कर जाओ—उन का हाल) अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लिया करो—

और यही लोग हैं कि जिनके (बध करने और गिरिफ़्तार करने के) लिये हमने तुम्हें स्पष्ट प्रमाणिक अधिकार दे दिया है। (कोई बुद्धिमान और न्यायी मनुष्य तुमको ऐसे विद्रोही और उपद्रवियों को बध करने पर अपराधी नहीं ठहरा सक्ता)॥

और (याद रक्खो ! किसी) मुसलमान को बध करना, मुसलमान का काम नहीं है। मगर ग़लती से (ऐसा हो जाय, तो दूसरी बात है)। और जो (मुसलमान किसी) मुसलमान को (ग़लती से) बध कर दे, तो (उसे चाहिये कि) एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करदे और उस (बध किये गये मनुष्य) के घर वालों को ख़ूं बहा (रक्तपात का बदला) दे। मगर (एक सूरत में ख़ूं बहा देने की ज़रूरत नहीं है। वह) यह कि (ख़ूं बहा लेने वाले ख़ूं बहा न लें और) माफ़ कर दें॥

और यदि बध किया गया मनुष्य ऐसे लोगों में से हो, जो तुम्हारे शत्रु हैं और ख़ुद वह मुसलमान हो, तो (उस दशा में भी केवल) एक मुसलमान ग़ुलाम का आज़ाद कर देना (काफ़ी है। ख़ूं बहा देने की ज़रूरत नहीं है)॥

और यदि बध किया गया मनुष्य ऐसे लोगों में से है कि उनमें और तुम में प्रतिज्ञा हो चुकी है, तो उसके वारिसों को ख़ूं-बहा देना (पड़ेगा) और एक मुसलमान ग़ुलाम (भी) आज़ाद करना होगा। और जिसमें (ग़ुलाम आज़ाद करने की) शक्ति न हो, तो (वह) अल्लाह से पाप क्षमा कराने के लिये, दो महीने के लगातार रोज़े रख ले और अल्लाह (सब के हाल का) जानने वाला बुद्धिमान है॥

और जो कोई जान (बूझ) कर मुसलमान को बध कर डाले, तो उसका दण्ड नर्क है। जिसमें वह सदैव सदैव रहेगा और उस पर अल्लाह का कोप रूपी दण्ड (अवतीर्ण) होगा और अल्लाह की फिटकार पड़ेगी और अल्लाह ने उसके लिये बड़ा (दारुण) अज़ाब (दुःख) तैयार कर रक्खा है॥

ऐ ईमान वालो ! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद आदि करने के लिये) निकला करो, तो (मुसलमान और ग़ैर मुसलमान की) जाँच कर लिया करो—

لِمَنْ أَلْقَىٰ إِلَيْكُمُ السَّلَٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ
عَرَضَ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ
كَذَٰلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا
إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَا يَسْتَوِي
الْقَٰعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ
وَالْمُجَٰهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَٰهِدِينَ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى
الْقَٰعِدِينَ دَرَجَةً وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ
وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَٰهِدِينَ عَلَى الْقَٰعِدِينَ أَجْرًا
عَظِيمًا ۝ دَرَجَٰتٍ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً وَكَانَ
اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّىٰهُمُ الْمَلَٰئِكَةُ ع
ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ
فِي الْأَرْضِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَٰسِعَةً فَتُهَاجِرُوا

فِيهَا

और जो शख़्स (इज़हार इस्लाम के लिये) तुमसे सलामु-अलैक करे, उस से यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं। (और इस कहने से) तुम्हारा मक़सूद (यह) दुनिया की ज़िन्दगी का साज़ व सामान (ताकि उसको दुश्मन ठैरा कर लूट लो)। सो (ऐसी लूट पर क्या गिरते हो) ख़ुदा के हां (तुम्हारे लिये) बहुत सी (जायज़) ग़नीमतें (तय्यार मौजूद) हैं। पहिले तुम भी तो ऐसे ही (खुल कर इज़हार इस्लाम करते हुये डरते) थे। फिर अल्लाह ने तुम पर अपना फ़ज़्ल किया (कि खुल्लम खुल्ला इज़हार इस्लाम करने लगे, तो दूसरे नौ मुस्लिमों की कमज़ोरी पर नज़र करके लड़ पड़ने से पहिले) अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लिया करो। क्योंकि जो कुछ भी तुम कर रहे हो, अल्लाह उससे बाख़बर है ० जिन मुसलमानों को (किसी तरह की) माज़ूरी नहीं और वह (जिहाद से) बैठ रहे (और उनके शरीक होने की चन्दां ज़रूरत भी न थी) ० (यह लोग दर्जे में) उन लोगों के बराबर नहीं (हो सकते) जो अपने माल व जान से ख़ुदा की राह में जिहाद कर रहे हैं। अल्लाह ने माल व जान से जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर दर्जे के एतिबार से बड़ी फ़ज़ीलत दी है। और (यूं) ख़ुदा का वादा नेक तो सब ही (मुसलमानों) से है। और अल्लाह ने सवाब अज़ीम के एतिबार से जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर बड़ी बर्तरी दी है ० (यह लोगों के) मदारिज हैं, (जो) ख़ुदा के हाँ से (ठैरे हुये हैं)। और उसकी बख़्शिश और मेहर है। और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० जो लोग (मुश्रिकीन में पड़े रहने और अपने दीन की ख़राबी से) अपने ऊपर आप ज़ुल्म कर रहे हैं, फ़रिश्ते उनकी जान क़ब्ज़ किये पीछे उनसे पूछते हैं कि तुम (दारुल हर्ब में पड़े पड़े) क्या करते रहे? तो वह जवाब देते हैं कि हम तो वहां बेबस थे। (इस पर फ़रिश्ते उनसे) कहते हैं कि क्या अल्लाह की (इतनी लम्बी चौड़ी) ज़मीन (इस क़दर) गुञ्जायश नहीं रखती थी कि तुम उसमें (किसी तरफ़ को) हिजरत कर के चले जाते—

और जो मनुष्य तुम्हें (इस्लामी) सलाम * करे, उससे यह मत कहो कि तू मुसलमान नहीं है। (अगर तुम) साँसारिक जीवन का साधन (अर्थात् युद्ध में लूटा हुआ माल प्राप्त करना) चाहते हो, तो अल्लाह के यहाँ बहुत सी सम्पत्तियाँ (मौजूद) हैं। (बिना कारण किसी को शत्रु ठहरा कर, उसे लूटने की क्या ज़रूरत है)। अब से पहिले तुम्हारी भी यही दशा थी (कि इस्लाम को साफ़ साफ़ प्रकट करने से घबराते थे)। फिर अल्लाह ने तुम पर (अपनी) कृपा कर दी (और तुम्हारी दशा इस योग्य हो गई कि तुम खुल्लम खुल्ला अपने इस्लाम-धर्म का प्रकाश करने लगे)। अतएव (इसी का विचार करके दूसरे नवीन मुसलमानों के विषय में) जाँच कर लिया करो (और बिना जाँच किये न उलझ पड़ा करो)। जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उस से अभिज्ञ है॥

* टीका—इसकी कथा यह है कि एक मुसलमान सर्दार ने दूसरे ग़ैर-मुस्लिम ख़ानदार पर हमला किया। तो उन लोगों ने मुसलमान सर्दार को इस्लामी तरीक़े का सलाम किया। मगर मुसलमान सर्दार ने सलाम करने वालों को यह कह कर मार डाला कि इन लोगों ने मक्कारी से इस्लामी तरीक़े का सलाम किया था और यह मुसलमान नहीं थे। इसके विरुद्ध उपरोक्त आयत उतरीः—हसन निज़ामी॥

(लेकिन इस डर से कि भूल से हमारे हाथ से किसी मुसलमान का ख़ून न हो जाय, जिहाद से न रुको)। जिन मुसलमानों को कोई विवशता न थी और वह (जिहाद पर न गये और घरों में) बैठे रहे (ऐसे मुसलमान) उन मुसलमानों के बराबर नहीं (हो सकते) जो अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद कर रहे हैं। अल्लाह ने माल व जान से जिहाद करने वालों का पद (घरों में) बैठे रहने वालों से बहुत बढ़ा दिया है। और (ऐसे) अल्लाह ने भलाई का वादा हर एक (मुसलमान) से किया है। और अल्लाह ने महा पुण्य की दृष्टि से जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर श्रेष्ठता दी है। (यह) श्रेणियाँ हैं, (जो) अल्लाह के यहां से (नियत की की गई हैं) और उसकी क्षमा व मेहर्बानी है और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है। (जो वादा कर चुका है, वह अवश्य पूरा करेगा--जिहाद से कदापि न रुको)॥

(जो मुसलमान काफ़िरों के दल में फंसे होने के कारण प्रकट रूप से अपने धर्म की उन्नति नहीं कर सके और काफ़िरों के साथ मिल कर मुसलमानों के विरुद्ध लड़ने पर विवश होते हैं; उन्हें चाहिये कि हिजरत करके काफ़िरों के समूह से निकल जायँ। परन्तु) जो (इन कठिनाइयों के होते हुए हिजरत नहीं करते और काफ़िरों के समूह में रहे चले जाते हैं और इस भांति अपने धर्म को नष्ट करके) अपनी आत्मा पर स्वयं अत्याचार कर रहे हैं; फ़रिश्ते जब उनके प्राण निकालते हैं, तो उनसे पूछते हैं, कि तुम (आख़िर) किस (विवशता) में थे? (जो तुमने अपने धर्म की ओर ध्यान न किया)। तो यह उत्तर देते हैं, हम उस मुल्क में विवश थे। फ़रिश्ते कहते हैं कि क्या अल्लाह की पृथ्वी (इतनी) विस्तृत न थी कि तुम देश त्याग कर उस (के किसी और भाग) में चले जाते—

فيها فاولئك ماويهم جهنم وساءت
مصيرا ۝ الا المستضعفين من الرجال والنساء
والولدان لا يستطيعون حيلة ولا يهتدون
سبيلا ۝ فاولئك عسى الله ان يعفو عنهم
وكان الله عفوا غفورا ۝ ومن يهاجر في
سبيل الله يجد في الارض مراغما كثيرا
وسعة ومن يخرج من بيته مهاجرا
الى الله ورسوله ثم يدركه الموت
فقد وقع اجره على الله وكان الله غفورا
رحيما ۝ واذا ضربتم في الارض فليس
عليكم جناح ان تقصروا من الصلوة ان
خفتم ان يفتنكم الذين كفروا ان الكفرين
كانوا لكم عدوا مبينا ۝ واذا كنت فيهم فاقمت

ع

ग़रज़ यह वह लोग हैं, जिनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह (बहुत ही) बुरी जगह है ० मगर (हां) जो मर्द और औरतें और बच्चे इस क़दर बेबस हैं कि उनसे कोई हीला करते नहीं बन पड़ता और न उनको (बाहर निकल जाने का) कोई रस्ता सूझ पड़ता है ० तो उम्मीद है कि अल्लाह ऐसे लोगों को माफ़ करे और अल्लाह माफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है ० और जो शख़्स ख़ुदा की राह में (यानी ख़ुदा के लिये) अपना वतन छोड़ देगा, तो (रूए) ज़मीन में उसको (रहने सहने के लिये) वाफ़िर जगह और (हर तरह की) कुशायश मिलेगी और जो शख़्स अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ हिजरत करके निकले, फिर उसको आये मौत, तो अल्लाह के ज़िम्मे उसका अज्र साबित हो चुका और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और (मुसल्मानो !) जब तुम (जिहाद के लिये) कहीं को जाओ और तुमको ख़ौफ़ हो कि (नमाज़ पढ़ने में कहीं) काफ़िर तुमसे (लड़ाई की) छेड़ छाड़ (न) करने लगें तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि नमाज़ में से (कुछ) घटा दिया करो। बेशक काफ़िर तो तुम्हारे खुले दुश्मन हैं, (तुमको इतमीनान से नमाज़ नहीं पढ़ने देंगे) ० और (ऐ पैग़म्बर !) जब तुम मुसल्मानों (की फ़ौज) के हमराह हो और (इमाम बन कर) उनको नमाज़ पढ़ाने लगो—

संक्षिप्त बात यह है कि ऐसे लोगों का ठिकाना नर्क है और वह बहुत बुरा ठिकाना है ॥

परन्तु निर्बल स्त्री और पुरुष और बच्चे जिन से कोई उपाय नहीं बन पड़ता और (जिन्हें देश त्याग करने का) कोई मार्ग नहीं मिलता, तो ऐसों को आशा है-अल्लाह क्षमा करदे और अल्लाह माफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है ॥

और जो मनुष्य अल्लाह के मार्ग में देश त्याग करेगा (और देश से विदेश होगा, तो उसके मुक़ाबले में) उसे भू (मंडल) पर बहुत जगह मिलेगी और (उसकी जीविका में समृद्धि होगी। इस से न डरो कि देश छोड़ देंगे, तो कहाँ जायेंगे और क्या खायेंगे)। और (यह शंका भी हृदय में न लाओ कि मार्ग में मृत्यु ने आ लिया, तो इधर के रहेंगे न उधर के)। जो मनुष्य देश त्याग करके अल्लाह और रसूल की ओर (जाने के लिये) अपने घरसे निकल खड़ा हुआ। फिर (घर से निकलते ही, चाहे) उसे मृत्यु आ जाय, तो पुण्य उसका अल्लाह के यहाँ नियत हो चुका। (इस दशा में भी देश त्याग करने का पूरा सवाब मिलेगा)। अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है ॥

और (मुसल्मानो !) जब तुम (जिहाद के लिये) कहीं का सफ़र करो और तुम्हें भय हो कि (नमाज़ में) काफ़िर तुमको सतायेंगे, तो इसमें कुछ पाप न होगा कि तुम नमाज़ को कम कर दो *। काफ़िर निस्सन्देह तुम्हारे स्पष्ट शत्रु हैं (तुम्हें चैन से नमाज़ भी नहीं पढ़ने देंगे) ॥

* टीका – यह आज्ञा पहिले जिहाद के लिये विशेष थी, परन्तु इस आज्ञा के अवतीर्ण होने के बाद रसूलुल्लाह ने काफ़िरों के भय से आज़ाद होकर भी जितने सफ़र किये, उनमें इस क़स्र (नमाज़ को आधा कर देने का नाम क़स्र है) को जारी रक्खा। इस लिये अब यह आज्ञा हर यात्रा पर लागू होती है; जो कम से कम तीन पड़ाव की हो। जो आज कल के हिसाब से ४८ मील होते हैं :- हसन निज़ामी ॥

और (ऐ रसूल ! लड़ाई की दशा में) जब तुम मुसल्मानों के साथ उपस्थित हो—

لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا
اَسْلِحَتَهُمْ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ
وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ
وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ
عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ
كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا
اَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ
قِيَامًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ
فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ۝ وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ اِنْ
تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ

तो मुसलमानों की एक जमाअत (मुक़्तदी बन कर) तुम्हारे साथ खड़ी हो और अपने हथियार लिये रहें। फिर जब सज्दा कर चुकें, तो पीछे हट जायँ और दूसरी जमाअत-जो (अब तक) शरीक नमाज़ नहीं हुई, आकर तुम्हारे साथ नमाज़ में शरीक हो और होशियारी (रक्खें) और अपने हथियार लिये रहें। काफ़िरों की (तो) यह तमन्ना है कि तुम (ज़रा भी) अपने हथियारों और साज़ व सामान (जङ्ग) से ग़ाफ़िल हो जाओ, तो यक बारगी तुम पर टूट पड़ें। और अगर तुम लोगों को मेंह की वजह से कुछ तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो, तो अपने हथियार उतार रखने में (भी) तुम पर कुछ गुनाह नहीं, हाँ अपनी होशियारी रक्खो। बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब तय्यार कर रक्खा है ० फिर जब तुम नमाज़ (ख़ौफ़) पूरी कर चुको, तो (उसके बाद) खड़े और बैठे और लेटे अल्लाह की यादगारी में लगे रहो। फिर जब तुम (दुश्मन की तरफ़ से) मुत्मइन हो जाओ, तो (मामूल के मुताबिक़) नमाज़ पढ़ो, क्योंकि मुसलमानों पर नमाज़ बक़ैद वक़्त फ़र्ज़ है ० और (मुसलमानो !) लोगों (यानी दुश्मनों) के पीछा करने में हिम्मत न हारो। अगर (लड़ाई में) तुमको तकलीफ़ पहुँचती है, तो जैसे तुमको तकलीफ़ पहुँचती है-उनको भी तकलीफ़ पहुँचती है—

और उन्हें नमाज़ पढ़ाने लगो, तो (यह) चाहिये (कि) उनमें से एक दल तुम्हारे साथ (नमाज़ पढ़ने) खड़ा हो और अपने शस्त्र (अपने) पास रक्खे। फिर जब (यह लोग) सज्दा कर चुकें, तो तुम्हारे पीछे से हट जायँ और दूसरा दल आये, जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी (है। अब) वह तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ें। और वह भी अपने बचाव के सामान और अपने हथियार (अपने) पास रक्खें। काफ़िर चाहते हैं कि किसी तरह तुम अपने हथियारों और साज़ व सामान से अनभिज्ञ हो, तो तुम पर एक दम धावा करदें॥

और यदि तुम्हें वर्षा के कारण कुछ दुःख हो या तुम रोगी हो, तो इसमें भी तुम पर (कोई) गुनाह न होगा कि (नमाज़ में) अपने हथियार उतारे रहो। अलबत्ता अपने बचाव (का ध्यान अवश्य) रक्खो। (और परेशान होने की कोई बात नहीं है-अल्लाह काफ़िरों की तुम्हारे हाथ से दुर्दशा करायेगा और) अल्लाह ने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब (दुःख) तैयार कर रक्खा है॥

(और इस प्रकार की नमाज़ों में अनिश्चिन्ता के कारण, जो त्रुटि और दोष रह जाय, तो उसका बदला इस तरह करो कि) जब नमाज़ पढ़ चुको, तो अल्लाह को खड़े और बैठे और लेटे (हर दशा में और हर समय, यहाँ तक कि युद्ध के अवसर पर भी) याद करो। और जब (शत्रुओं का) भय जाता रहे, तो नमाज़ को (पूरे नियम पूर्वक) ठीक (ठीक अदा) करो। (उक्त रिआयत केवल नमाज़ के ख़ौफ़ के लिये थी, इसे साधारण न समझना)। नमाज़ मुसलमानों पर फ़र्ज़ है (और) नियत समय पर (अदा होनी चाहिये। युद्ध और बीमारी के समय में भी नमाज़ माफ़ नहीं है)॥

और (काफ़िरों के घात लगाने और) पीछा करने से हिम्मत न हारो। (युद्ध में) यदि तुम सुख रहित होते हो, तो तुम्हारी तरह वह भी (तो) सुख रहित होते हैं—

وَتَرْجُونَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرٰىكَ اللّٰهُ ۚ وَلَا تَكُنْ
لِلْخَائِنِينَ خَصِيمًا ۝ وَاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۖ إِنَّ اللّٰهَ
كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ
يَخْتَانُونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ
خَوَّانًا أَثِيمًا ۝ يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا
يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ
مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُونَ
مُحِيطًا ۝ هٰأَنْتُمْ هٰؤُلَاءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝ وَمَنْ يَعْمَلْ
سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ

और (तुम्हारी जीत यह है कि) तुमको .खुदा से वह वह उम्मीदें हैं, जो उनको नहीं। और अल्लाह (सब का हाल) जानता (और तदबीर जङ्ग को) .खूब समझता है ० (ऐ पैग़म्बर !) हमने (जो) किताब बर हक़ तुम पर नाज़िल की है (तो इस लिये) कि जैसा तुमको .खुदा ने बता दिया है, उसके मुताबिक़ लोगों के बाहमी झगड़े चुका दिया करो और दग़ाबाज़ों के तरफ़दार न बनो ० और अल्लाह से (भूल चूक की) माफ़ी चाहो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और जो लोग (दूसरों को दग़ा देकर हक़ीक़त में अन्जाम बद के लिहाज़ से) अपने तईं दग़ा दे रहे हैं, ऐसों की तरफ़ होकर (लोगों से) रद व कद न करो। क्योंकि दग़ाबाज़ ख़ताकार आदमी को .खुदा पसन्द नहीं करता०(यह ऐसे अहमक़ हैं कि) लोगों से तो पर्दा करते हैं और .खुदा से पर्दा नहीं करते। हालांकि जब रातों को (बैठ २ कर) उन बातों के मश्वरे करते हैं, जिनसे .खुदा राज़ी नहीं, तो .खुदा उनके साथ (मौजूद) होता है। और जो कुछ (यह) करते हैं (सब) .खुदा के इहाते (इल्म) में है ० (मुसल्मानो !) सुनो ! तुमने (इस) दुनिया की ज़िन्दगी में उनकी तरफ़ होकर रद व कद की (सो की-भला यह) तो (बताओ कि) क़यामत के दिन उन (की तरफ़)से अल्लाह के साथ कौन रद व कद करेगा? या कौन उनका वकील बनेगा०और जो शख़्स कोई बुरा काम करे या (झूटी क़सम वग़ैरह से) आप अपनी जान पर .ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से (अपना गुनाह) बख़्शवाये, तो पायेगा कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है०—

और तुमको (तो) अल्लाह से (फल की) आशा है, जो उन्हें नहीं है। (इस लिये तुम्हें काफ़िरों के मुक़ाबले में युद्ध करने के लिये अधिक साहस और दृढ़ता प्रकट करनी चाहिये)। और अल्लाह (तुम्हारी भलाइयों को .खूब) जानता है (और तुम्हारे लाभ को) समझता है। (और तुम्हें व्यर्थ आज्ञायें नहीं देता) ॥

(ऐ रसूल !) हमने (अपनी) सच्ची किताब को तुम पर इसलिये उतारा है कि तुम हमारे बताये हुये (नियम) के अनुसार लोगों में न्याय करो और धोखा करने वाले लोगों की तरफ़ होकर न झगड़ो (चाहे वह मुसलमान हों या मुसलमान न हों *) ॥

* टीका—एक मुसलमान ने एक मुसलमान के यहाँ चोरी की, और ऐसी युक्ति की, कि अपराध एक यहूदी पर ढल गया। अल्लाह तआला ने अपने रसूल को वास्तविक बात से अभिज्ञ कर दिया और चूंकि चोर की दग़ाबाज़ी और धोखे से रसूलुल्लाह को भी कुछ देर के लिये सन्देह हुआ था। इस लिये आज्ञा होती है, कि दग़ाबाज़ों की तरफ़दारी न करो :—हसन निज़ामी ॥

और (इस सिलसिले में जो भूल तुम से हुई है, उसकी) अल्लाह से क्षमा मांगो। अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है ॥

और जो लोग दिल में धोखा रखते हैं, उनकी तरफ़ होकर लोगों से विमुखता न करो। जो दग़ाबाज़, पापी हो, अल्लाह को वह पसन्द नहीं। (यह लोग) मनुष्यों से तो छिपते हैं (कि अकीर्ति के विचार से अपने पापों को प्रकट करना पसन्द नहीं करते) और अल्लाह से नहीं छिपते। यद्यपि अल्लाह इनके पास होता है, जब रातों को (ऐसी बातों का) मशवरा करते हैं, जिनसे वह प्रसन्न नहीं है। और जो कुछ वह करते हैं (सब) अल्लाह के ज्ञान से बाहर नहीं है ॥

(और लोगो !) सुनो, तुम संसार के (क्षणिक) जीवन में (तो) इन (अपने दग़ाबाज़ भाइयों) की तरफ़ से झगड़ रहे हो, लेकिन अल्लाह से प्रलय के दिन इनके बदले (होकर) कौन झगड़ेगा और कौन उनकी विकालत करेगा ॥

(तुम्हारी तरफ़दारी करने से वह अल्लाह के दुःख रूपी अज़ाब से नहीं बच सके। उनको अल्लाह से क्षमा मांगनी चाहिये) और जो मनुष्य कोई बुरा काम करे या आप अपनी जान पर अत्याचार करे (और) फिर अल्लाह से क्षमा चाहे, तो (वह) अल्लाह को—

غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ
عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَن يَكْسِبْ
خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ
بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ
وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ أَن يُضِلُّوكَ
وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ ۖ وَمَا يَضُرُّونَكَ مِن شَيْءٍ
وَأَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ ۚ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ
عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝ لَّا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ
إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ
بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ
اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَمَن يُشَاقِقِ
الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ

श्रौर जो शख़्स किसी बदी का इर्तिकाब करता है, तो वह उसके इर्तिकाब से (कुछ) अपनी ही ख़राबी करता है। श्रौर अल्लाह (तो सब का हाल) जानता (श्रौर हर एक के मुनासिब हालत) हुक्म देने वाला है ० श्रौर जो शख़्स किसी ख़ता या गुनाह का मुर्तकिब हो, फिर वह अपने .क़ुसूर को किसी बेगुनाह पर थोप दे, तो उसने बोहतान श्रौर गुनाह सरीह (का बोझ अपनी गर्दन पर) लादा ० श्रौर (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल श्रौर उसकी मेहर न होती, तो उनमें से एक गिरोह तुमको बहका देने का इरादा कर ही चुका था। श्रौर यह लोग बस अपने ही तईं गुमराह कर रहे हैं। श्रौर तुमको (यह लोग) कुछ भी तो नुक़सान नहीं पहुँचा सकते, क्योंकि अल्लाह ने तुम पर किताब उतारी है श्रौर फ़हम (सलीम दी है) श्रौर तुम को ऐसी बातें सिखादी हैं, जो (पहिले) तुमको मालूम न थीं श्रौर तुम पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है ० इन लोगों की अक्सर सरगोशियों में नेकी (का तो नाम) नहीं, मगर (हाँ) जो ख़ैरात या (किसी श्रौर) नेक काम या लोगों में मेल मिलाप की सलाह दे (यह अलबत्ता नेकी है) । श्रौर जो .ख़ुदा की .ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये ऐसे (नेक) काम करेगा, तो हम (क़यामत के दिन) उसको बड़ा सवाब अता फ़र्मायेंगे ० श्रौर जो शख़्स राह रास्त के ज़ाहिर हुये पीछे पैग़म्बर से किनारा कश रहे—

क्षमा करने वाला (श्रौर) दयालु पायेगा ॥

श्रौर जो मनुष्य पाप करता है, वह अपना ही (कुछ) खोता है। श्रौर अल्लाह (सब का हाल) जानता है (श्रौर दशा के अनुसार ही) हुक्म देता है ॥

श्रौर जो मनुष्य कोई अपराध या पाप करे (श्रौर) फिर अपने (उस) अपराध को किसी निरापराध के ज़िम्मे थोप दे, तो उसने अपने सिर पर (एक श्रौर) बोहतान श्रौर स्पष्ट पाप लिया (श्रौर अपने ज़िम्मे श्रौर वबाल बढ़ाया) ॥

श्रौर (ऐ रसूल !) यदि तुम पर अल्लाह की कृपा न होती श्रौर उसकी मेहर्बानी न होती, तो उन (दग़ाबाज़ों) में एक दल तो इरादा कर ही चुका था कि तुम्हें बहका (कर तुमसे यहूदी के विरुद्ध फ़ैसला दिलवा) दे। (ख़ैर) यह लोग बस अपने ही आप को बहकाते हैं, तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अल्लाह ने तुम पर किताब श्रौर बुद्धिमानी अवतीर्ण की है श्रौर तुम्हें वह बातें सिखाई हैं, जिन्हें तुम (पहिले) नहीं जानते थे श्रौर अल्लाह की तुम पर बहुत बड़ी दया है ॥

(यह लोग, जो तुम्हारे कानों में आ आकर बातें किया करते श्रौर परस्पर काना फूसी करते हैं, तो) उनके यह गुप्त परामर्श अक्सर अच्छे नहीं (होते श्रौर स्पष्ट श्रौर सच्ची बातों को कान में कहने की क्या आवश्यकता है। स्पष्ट श्रौर सच्ची बातें छिपा छिपा कर नहीं की जाया करतीं) । मगर जो मनुष्य दान करने को कहे या (श्रौर किसी) नेक काम का उपदेश करे, या लोगों में सन्धि कराने का प्रयत्न करे (तो उसे अलबत्ता छिपाना उचित है) । श्रौर जो मनुष्य यह (उल्लिखित) काम अल्लाह की प्रसन्नता के लिये करेगा, तो हम उसको बड़ा पुण्य देंगे ॥

श्रौर जो मनुष्य इसके पश्चात भी कि उस पर सत्य (बात) प्रकट हो चुकी है, रसूल का विरोध किये जाय–

غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ
جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ● إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ
أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ
وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ●
إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا وَإِن يَدْعُونَ
إِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيدًا ● لَّعَنَهُ اللَّهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ
مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ● وَلَأُضِلَّنَّهُمْ
وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ
الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَ
مَن يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِّن دُونِ اللَّهِ فَقَدْ
خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا ● يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ
وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ● أُولَٰئِكَ
مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا

और मुसलमानों के रस्ते के सिवा (दूसरे रस्ते) हो ले, तो जो (रस्ता) उसने इख़्तियार कर लिया है, हम उसको उसी रस्ते चलाये जायेंगे और (आख़िरकार) उसको जहन्नम में (लेजा) दाख़िल करेंगे और वह (बहुत ही) बुरी जगह है ० अल्लाह यह (गुनाह) तो माफ़ करता नहीं कि उसके साथ (किसी को) शरीक गर्दाना जाय और इससे कम जिस को चाहे माफ़ करे। और जिसने अल्लाह के साथ शरीक गर्दाना, वह (राह रास्त से बड़ी) दूर भटक गया० (यह मुश्रिक) ख़ुदा के सिवा तो बस औरतों ही को पुकारते हैं, यानी बस उस शैतान सर्कश (के कहे में आकर उन) को पुकारते हैं ० जिसको (रोज़ अज़ल में) ख़ुदा ने फिटकार दिया । और वह लगा कहने कि मैं तो तेरे बन्दों से (नज़र व नियाज़ का) एक मुअय्यन हिस्सा ज़रूर (ही) लिया करूंगा ० और उनको ज़रूर ही बहकाऊंगा और उनको उम्मीदें (भी) ज़रूर दिलाऊंगा और उनको ज़रूर समझाऊंगा। तो वह (मेरी हिदायत के मुताबिक़ बुतों की नियाज़ के) जानवरों के कान (भी) ज़रूर चीरा करेंगे। और उनको समझाऊंगा तो वह (मेरी हिदायत के मुताबिक़) ख़ुदा की बनाई हुई सूरतों को (भी) ज़रूर बदला करेंगे। और जो शख़्स ख़ुदा के सिवा शैतान को दोस्त बनाये (और उसकी पैरवी करे) तो वह सरीह घाटे में आ गया ० (शैतान) उनको वादे देता और उनको उम्मीदें दिलाता है। और शैतान उनसे जो (कुछ भी) वादा करता है, निरा धोका (ही धोका) है ० यह हैं, जिनका (आख़िरी) ठिकाना दोज़ख़ है और वहां से कहीं भागने न पायेंगे० —

और मुसलमानों का मार्ग छोड़ कर दूसरा मार्ग इख़्तियार करे, तो हम उसे उसी (मार्ग) पर चलायेंगे, जिसको उसने इख़्तियार किया है और उसको नर्क में डालेंगे और वह बहुत बुरा स्थान है॥

अल्लाह कदापि २ ऐसे मनुष्य को नहीं क्षमा करता, जो उसका (किसी को) शरीक ठहराये। और उसके अतिरिक्त जिसे चाहता है, क्षमा कर देता है॥

(यह शिर्क करने वाले) अल्लाह के बजाय पुकारते हैं, तो (किन को ?) स्त्रियों (के से नाम वाले बुतों; उज़्ज़ा, नाइला, मनात) को, और (किसके कहने से पुकारते हैं ? उपद्रवी शैतान के कहने से। तो मानो) इस उपद्रवी शैतान (ही) को पुकारते हैं, जिस पर अल्लाह ने फिटकार की थी और (जिस ने) कहा था कि मैं (तो फिटकारा गया ही हूँ,परन्त) तेरे बन्दों से (भी) अपना नियत किया हुआ हिस्सा (आधीनता कराना) ज़रूर लूंगा और उन्हें बहकाऊंगा और उन्हें (अनेक प्रकार की झूठी) आशायें दिलाऊंगा और उन्हें सिखलाऊंगा कि वह (बुतों की भेंट के लिये) जानवरों के कान चीरें * और उन्हें समझाऊंगा कि अल्लाह की बनाई हुई सूरतें बदलें (बदन को गोदें, मर्दन की चोटियाँ रक्खें और अन्त में उन्हें नर्क में ले जाऊंगा)। जो मनुष्य अल्लाह को छोड़ कर शैतान (जैसे शत्रु) को (अपना) मित्र बनाये (और उसकी आज्ञा का पालन करे) तो वह स्पष्ट रूप से घाटे में आ गया॥

* टीक—काफ़िरों का नियम था कि जानवरों के बच्चे किसी बुत के नाम पर छोड़ते थे और छोड़ते समय उनके कान चीर देते थे और कान में कोई निशानी कर देते थे :—हसन निज़ामी॥

(शैतान) उनसे प्रतिज्ञा करता है और उनको आशायें दिलाता है (कि ऐसी द्वैत-पूजा और झूठी हरकतें करने से उनको लौकिक और सांसारिक लाभ प्राप्त होगा)। मगर शैतान, जो (यह) वादे करता है, वह सब धोखा ही धोखा है॥

यह (शैतान के अनुयायी) ही हैं (कि) उनका स्थान नर्क (में) है। और (यह) उस (में) से भाग न सकेंगे॥

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا
لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ
مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ● وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ
مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ
الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ● وَمَنْ اَحْسَنُ
دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ
وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ
خَلِيْلًا ● وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ● وَيَسْتَفْتُوْنَكَ
فِي النِّسَآءِ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ

और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम (भी) किये, हम अन्क़रीब उनको (बहिश्त के) ऐसे बाग़ों में (लेजा) दाख़िल करेंगे, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी। (और वह) उनमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे। (उनके साथ यह) अल्लाह का पक्का वादा है और अल्लाह से बढ़ कर बात का सच्चा (और) कौन (होगा ?) ० (मुसलमानो ! फ़लाह आक़िबत) न तुम्हारी आर्ज़ूओं पर (मौक़ूफ़) है और न अह्ल किताब की आर्ज़ूओं पर (बलिक अमल पर मौक़ूफ़ है। तो) जो शख़्स बुरा काम करेगा, उसकी सज़ा पायेगा और ख़ुदा के सिवा उसको न (तो) कोई हिमायती (ही) मिलेगा और न मददगार ० और जो शख़्स कोई नेक काम करेगा, मर्द हो या औरत, और वह ईमान भी रखता होगा, तो इन सिफ़तों के लोग जन्नत में (जा) दाख़िल होंगे और तिल बराबर भी उनकी हक़ तल्फ़ी न होगी ० और उस शख़्स से किसका दीन बेहतर (हो सकता) है, जिसने अल्लाह के आगे अपना सर (तस्लीम) ख़म कर दिया ० और वह नेकोकार भी है और इब्राहीम के मज़हब पर चलता है कि वह एक ही (ख़ुदा) के हो रहे थे और इब्राहीम को अल्लाह ने अपना (बन्दा) मुख़्लिस भी क़रार दिया था ० और अल्लाह ही का है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और सब चीज़ें अल्लाह (ही) के क़ाबू में हैं ० और (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुमसे (यतीम) औरतों (के साथ निकाह करने) का हुक्म माँगते हैं, तो (तुम उनको) समझादो कि अल्लाह तुमको उनके (निकाह के) बारे में इजाज़त देता है (और पहिले भी इजाज़त ही थी)। और (पहिले) क़ुर्आन में जो (हुक्म) तुमको सुनाया जा चुका है—

और जो लोग ईमान लाये (हैं) और नेक काम करते (हैं) उन्हें अलबत्ता हम (स्वर्ग के) बाग़ों में दाख़िल करेंगे (कि) उनके नीचे नहरें बहती हैं और (वह) सदैव सदैव उसमें रहेंगे। अल्लाह ने जो प्रतिज्ञा की है (वह) सच्ची (है)। और अल्लाह से बढ़ कर (प्रतिज्ञा का) सच्चा और कौन हो सक्ता है ? (फिर ऐसे सत्यवान की प्रतिज्ञाओं को छोड़ कर--जो कोई शैतान की झूठी बातों में आये, उसकी गुमराही और दुर्भाग्य में क्या सन्देह है) ॥

(और ऐ मुसलमानो ! परलोक की अच्छाई) न तुम्हारी अभिलाषाओं पर (निर्भर) है और न किताब वालों की इच्छाओं * पर। (इसके लिये कार्य की आवश्यकता है)। जो मनुष्य बुरा काम करेगा, उसका बदला पायेगा। और अल्लाह के अतिरिक्त उसको न कोई हिमायती मिलेगा और न सहायक, और जो मनुष्य कोई नेक काम करेगा, (वह) पुरुष हो या स्त्री, और वह मुसलमान (भी) होगा, तो ऐसे लोग स्वर्ग में दाख़िल होंगे और तिल के समान भी इनका स्वत्व नष्ट न होगा ॥

* टीका—किताब वाले अर्थात् यहूदी और ईसाई यह समझते थे कि हम चाहे कितने ही गुनाह करें, हमारे पैग़म्बर हमें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे। इसी प्रकार के विचार कुछ मूर्ख मुसलमान भी स्थिर कर लिया करते थे। और अब तो कदाचित् सबको यही आशा सन्तुष्ट किये हुये है। अल्लाह तआला ने स्पष्ट कह दिया कि मुक्त केवल विचार और आशा पर नहीं प्राप्त होगी। क्योंकि अल्लाह की आज्ञानुसार कार्य न किया, तो किसी की हिमायत न प्राप्त होगी :—हसन निज़ामी ॥

और उस मनुष्य से अच्छा किसका धर्म (हो सक्ता) है, जिसने अपने आपको अल्लाह के अर्पण कर दिया। और जो नेक काम करता रहा और (सब असत्य पूज्यों से मुंह मोड़ कर और) एक ओर होकर इब्राहीम (ही) के धर्म का अनुयायी हो गया (हज़रत इब्राहीम का अल्लाह के यहाँ बड़ा दर्जा था) और अल्लाह ने इब्राहीम को (अपना) मित्र बना लिया था। (पस पूरी मुक्ति तो उसी की हो सक्ती है, जो इब्राहीम के वंश का सच्चा अनुयायी है। न अपने आप को यहूदी कहने से मुक्ति हो सक्ती है, न ईसाई कहने से और न मुसलमान कहने से) ॥

और अल्लाह (ही) का है, जो कुछ आस्मानों (आकाशों) में है और जो कुछ पृथ्वी में है। (पृथ्वी व आकाश में जो कुछ है, उसी की सृष्टि और उसी की प्रजा है)। और अल्लाह (की शक्ति) का प्रत्येक वस्तु पर अधिकार है। (नेक और बुरे काम और सच्चे और झूठे धर्म के अनुकरण करने का पुरस्कार व दण्ड के विषय में, जो क़ानून उसने नियत कर दिये हैं, कोई उनको तोड़ नहीं सक्ता। और न कोई अल्लाह के क़ानूनों का विरोध करके लोक व परलोक के संकट से बच सक्ता है) ॥

और (ऐ रसूल !) तुम से (जो मुसलमान अपनी रक्षित) स्त्रियों (से निकाह करने) के विषय में व्यवस्था माँगते हैं। (तो उनसे) कह दो कि अल्लाह तुम्हें उन (से निकाह करने) की आज्ञा देता है। और क़ुर्आन में (पहिले) जो (हुक्म) तुमको सुनाया गया है—

فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ
مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ
وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَاَنْ تَقُوْمُوْا
لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ
كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ● وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا
نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا
بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ
الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ● وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا
بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ
فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ● وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ
كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ●

सो (वह वाक़े में) उन यतीम औरतों के बारे में है, जिनको तुम (उनका) हक़, जो उनके लिये ठहरा दिया गया है, नहीं देते और (बावजूद इसके) उनके साथ निकाह करने की तरफ़ राग़िब हो। और नीज़ (.ख़ुदा) बेबस बच्चों के बारे में (भी हुक्म देता है कि उनके हु.क़ूक़ की हिफ़ाज़त करो)। और (ख़ास कर) यह कि यतीमों के हक़ में इन्साफ़ को मलहूज़ रक्खो और (यतीमों के साथ) किसी क़िस्म की भी नेकी करोगे, तो अल्लाह उसको जानता है (यानी तुमको उसका अज्र देगा) ० और अगर किसी औरत को अपने शौहर की तरफ़ से ज़ियादती या बे रग़बती का अन्देशा हो, तो (मियाँ बीवी) दोनों (में किसी) पर कुछ गुनाह नहीं कि (इस्लाह की कोई बात ठैरा कर) आपस में सुलह करलें और सुलह (बहर हाल) बेहतर है और (थोड़ा बहुत) बुख़्ल तो सब ही की तबीअत में होता है। और अगर (एक दूसरे के साथ) सुलूक करो और (सख़्तगीरी से) बचे रहो, तो .ख़ुदा तुम्हारे (इन नेक) कामों से बाख़बर है (वह तुम को इसका अज्र देगा) ० और तुम (अपनी तरफ़ से) बहुतेरा चाहो लेकिन यह तो तुमसे हो नहीं सकेगा कि (कई कई) बीबियों में (पूरी पूरी) बराबरी कर सको। तो बिल्कुल (एक ही की तरफ़) मत झुक पड़ो कि दूसरी को (इस तरह) छोड़ बैठो-गोया (अधर में) लटक रही है और अगर (आपस में) मुवाफ़िक़त करलो और (एक दूसरे पर ज़ियादती करने से) बचे रहो, तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और अगर (मियाँ बीवी में इस्लाह की कोई सूरत न बन पड़े और एक दूसरे से) जुदा हो जायँ, तो अल्लाह अपने ख़ज़ाने (ग़ैब) से दोनों को बेनियाज़ कर देगा और अल्लाह के हाँ (बड़ी) गुन्जायश है। (और) उसकी तदबीर (बड़ी) मुहकम (तदबीर) है ०—

(तो) वह उन अनाथ लड़कियों के विषय में है, जिनको (अनाथ व विवश जान कर) तुम (वह सत्व) नहीं देते, जो (अल्लाह की ओर से) उनके लिये नियत कर दिया गया है। और चाहते हो कि (ख़ाली .ख़ूली) उन्हें निकाह में ले आओ। और यह भी कि (अल्लाह तआला अनाथ व) बेबस (और यतीम) लड़कों के विषय में (भी आज्ञा देता है कि उनके स्वत्व भी नष्ट न करो)। और यह कि अनाथों के मामले में इन्साफ़ पर स्थिर रहो और (तुम अनाथ व विवश लड़कों व लड़कियों के साथ) जो भलाई करोगे, तो अल्लाह उसको जानता है (और तुम्हें उसका बदला देगा) ॥

और यदि कोई स्त्री अपने पति के लड़ने या दिल के फिरने से भयभीत हो, तो दोनों (में से किसी) पर कुछ गुनाह न होगा, अगर वह आपस में किसी तरह सन्धि करलें। (जैसे यदि अपने महर या भोजन छाजन इत्यादि में से कुछ कम करके स्त्री, पुरुष को प्रसन्न करे, तो यह घूस नहीं समझी जायगी और इससे न पुरुष गुनहगार ठहरेगा, न स्त्री)। सन्धि (हर दशा में) अच्छी वस्तु है और ईर्षा प्रत्येक मनुष्य के साथ लगी हुई है। (यदि स्त्री, पुरुष को कुछ लाभ पहुँचावेगी, तो पुरुष प्रसन्न हो जावेगा)। और (ऐ मुसलमानो !) यदि तुम अपनी स्त्रियों के साथ (नेक बर्ताव करोगे और .ज़ुल्म व अत्याचार से) बचे रहोगे, तो अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की ख़बर है। (वह तुम्हारे नेक बर्ताव और ज़ुल्म व अत्याचार से बचने का अच्छा बदला देगा) ॥

और (कई पत्नियां होने की दशा में) तुम (अपनी ओर से चाहे) कितना भी चाहो (यह तो) हो नहीं सक्ता कि (सब पत्नियों को) अपने दिल में बिलकुल बराबरी (की जगह) दे सको। तो (भी) बिलकुल एक ही ओर न ढल जाओ कि (दूसरी) स्त्री को अपने बन्धन में डाल कर न इधर की रक्खो और न उधर की। (न स्वयं उससे अच्छा बर्ताव करो और न तलाक़ दो कि वह ग़रीब किसी और के पल्ले ही बंध जाय, और ख़ैर इस समय तक किसी ने ऐसी बे पर्वाही की हो, तो अब वह तौबा करे)। और यदि अपनी हालत का सुधार करलो और (.ज़ुल्म व अत्याचार से) बच सको, तो अल्लाह क्षमा करने वाला, मेहर्बान है (पिछली ग़लतियों को क्षमा कर देगा) ॥

और यदि (समझौता असम्भव हो और) दोनों (एक दूसरे से अलग ही होना पसन्द करें और) अलग हो जायँ, तो अल्लाह (कारसाज़ है)। प्रत्येक को अपने अदृष्ट ख़ज़ाने से (सहायता देकर) सन्तुष्ट कर देगा। और अल्लाह (महान) समृद्धिवान और बड़ी हिक्मत वाला है ॥

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ
وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ
وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
غَنِيًّا حَمِيْدًا ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝
اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ
الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا
قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ
اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ
فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى
اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ

और जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, (सब) अल्लाह ही का है। और (मुसल्मानो !) जिन लोगों को तुम से पहिले किताब मिली थी, उनसे और तुमसे हमने बताकीद यही कह रक्खा है कि अल्लाह (की ना रज़ामन्दी) से डरते रहो। और अगर (उसका हुक्म) नहीं मानोगे, तो (वह तुम्हारी कुछ पर्वा नहीं रखता, क्योंकि) जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है (सब) अल्लाह ही का है और अल्लाह बे नियाज़ (बहमा सिफ़त) मौसूफ़ है ० और अल्लाह ही का है, जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह ही कारसाज़ बस है ० लोगो ! अगर वह चाहे तुमको (दुनिया के परदे से) उठा कर दूसरों को ला बसाये और अल्लाह ऐसा करने पर क़ादिर है ० जिसको (अपने आमाल का) बदला दुनिया में दर्कार हो, तो अल्लाह के पास दुनिया और आख़िरत (दोनों) के अज्र (मौजूद) हैं, (पस दीन व दुनिया दोनों के अज्र उससे क्यों न माँगे जायँ)। और अल्लाह (सब की) सुनता (और सबका हाल) देखता है ० मुसल्मानो ! मज़्बूती के साथ इन्साफ़ पर क़ायम रहो (और) ख़ुदा लगती गवाही दो, अगर्चे (यह गवाही) तुम्हारे अपने या माँ बाप और रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ ही (क्यों न) हो। अगर (उनमें) कोई मालदार या मोहताज है, तो अल्लाह (सबसे) बढ़ कर उनकी पर्दाख़्त करने वाला है। तो तुम (उनकी ख़ातिर अपनी) ख़्वाहिश की पैरवी न करो कि लगो हक़ से इनहिराफ़ करने। और अगर दबी ज़बान से गवाही दोगे या (सिरे से गवाही के देने से) पहलू तिही करोगे, तो (जैसा करोगे, वैसा भरोगे। क्योंकि) जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे बा ख़बर है ० मुसल्मानो ! अल्लाह पर ईमान लाओ—

और अल्लाह ही का है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ पृथ्वी में है। (अल्लाह जिसको चाहे दे सका है)। और हमने उन्हें भी (आज्ञा दी थी) जिन्हें तुम से पूर्व किताब मिली थी और तुम्हें भी हुक्म दिया है कि अल्लाह से डरते रहो (और कोई ऐसी बात न करो, जिसे अल्लाह पसन्द न करे)। और यदि तुम उसकी आज्ञा न मानोगे, तो (फिर सुन लो) अल्लाह ही का है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ पृथ्वी में है (अल्लाह को किसी की पर्वाह नहीं है)। और अल्लाह इच्छा रहित है और (सर्व गुण) सम्पन्न है॥

और (यदि आधीनता करोगे, तब भी समझ लो कि) अल्लाह ही का है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ पृथ्वी में है (तुम्हारे सब काम बना सका है)। और अल्लाह यथेष्ट कारसाज़ है॥

ऐ लोगो ! अल्लाह यदि चाहे, तो तुम (सब) को (एक दम इस लोक से) उठा ले और (तुम्हारी जगह) और लोगों को ला बसाये (जो उसकी आज्ञा पालन करें)। और अल्लाह में इसकी शक्ति है (परन्तु अल्लाह को इसकी आवश्यता और मोहताजी नहीं है। वह तो तुमसे भी अधीनता के लिये जो कहता है, तो तुम्हारे ही लाभ के लिये कहता है)॥

जो संसार में (अपने कर्म का) बदला चाहता है (उसे ज्ञात होना चाहिये कि) अल्लाह के पास (तो) लोक और परलोक (दोनों) के फल (मौजूद) हैं। (उसकी आधीनता करो, तो तुमको संसार भी दे और परलोक भी तुम्हारा अच्छा कर दे। फिर क्यों कोई केवल दुनिया के पीछे पड़े और अवज्ञा करके परलोक के फल से वञ्चित रहे। यह बड़ी मूर्खता की बात है)। और अल्लाह (सबकी बातें) सुनता है (और सबके काम देखता है और उन्हें) जानता है। (जिस वस्तु के इच्छुक होगे, वह वही देगा)॥

और ऐ मुसल्मानो ! न्याय पर दृढ़ रहो और गवाही ख़ुदा लगती दो, चाहे तुम्हारा या (तुम्हारे) माता, पिता और सम्बन्धियों ही का मामला क्यों न हो। और यह भी कि मामले वालों में चाहे कोई धनी हो या कंगाल, (किसी की रिआयत की आवश्यकता नहीं है)। अल्लाह (का पक्ष) उन दोनों (के पक्ष) से अधिक अच्छा है। अतः तुम इन्द्रियों द्वारा उत्पन्न वासनाओं का अनुकरण न करो (कि सत्य से) विमुख हो जाओ। यदि गवाही में पच पेच से काम लोगे या (सिरे ही से गवाही के देने ही से) बचोगे, तो (समझ लो) अल्लाह (तुम्हारी सब बातों और) तुम्हारे सब आचरणों से अभिज्ञ है॥

ऐ मुसल्मानो ! अल्लाह पर (सच्चे दिल से) ईमान लाओ –

وَرَسُولِهِ وَالْكِتٰبِ الَّذِي نَزَّلَ عَلٰى رَسُولِهِ وَالْكِتٰبِ
الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰئِكَتِهِ
وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ
ضَلٰلًا بَعِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ
آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَمْ يَكُنِ
اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ۝ بَشِّرِ
الْمُنٰفِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ
الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ أَيَبْتَغُونَ
عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيعًا ۝ وَقَدْ
نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيٰتِ
اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ
حَتّٰى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ إِنَّكُمْ إِذًا مِثْلُهُمْ
إِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِينَ وَالْكٰفِرِينَ فِي جَهَنَّمَ

और उसके रसूल (मुहम्मद) पर और उस किताब (.कुर्आन) पर, जो उसने अपने रसूल (मुहम्मद) पर उतारी है और उन किताबों पर, जो (.कुर्आन से) पहिले (दूसरे पैग़म्बरों पर) उतारीं। और जो शख़्स अल्लाह का मुन्किर हो, और उसके फ़रिश्तों का, और उसकी किताबों का, और उसके रसूलों का, और रोज़ आख़िरत का, तो वह (राह रास्त से) बड़ी दूर भटक गया ० जो लोग इस्लाम लाये, फिर (इस्लाम से) फिर बैठे, फिर इस्लाम लाये, फिर (इस्लाम से) फिर बैठे (और फिर बैठे) पीछे कुफ़्. में बढ़ते गये, तो .खुदा न तो उनकी मग़फ़िरत ही करेगा और न उनको राह (रास्त) ही दिखायेगा ० (ऐ पैग़म्बर !) मुनाफ़िक़ों को .खुश ख़बरी सुना दो, कि उनको (आख़िरत में) दर्दनाक अज़ाब होना है ० कि यह लोग मुसल्मानों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त बनाते (फिरते) हैं। क्या काफ़िरों के हां (अपनी) इज़्ज़त (बढ़ानी) चाहते हैं ? सो इज़्ज़त तो सारी अल्लाह की है ० हालांकि तुम (मुसल्मानों) पर अल्लाह (अपनी) किताब (यानी .कुर्आन) में यह (हुक्म) नाज़िल कर चुका है कि जब तुम (अपने कानों से) सुन लो कि अल्लाह की आयतों से इन्कार किया जा रहा है और उनकी हंसी उड़ाई जाती है, तो ऐसे लोगों के साथ मत बैठो। यहां तक कि] किसी दूसरी बात में लग जायँ, वर्ना इस सूरत में तुम भी उन ही जैसे (काफ़िर) हो जाओगे। बेशक अल्लाह मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों सब को दोज़ख़ में (एक जगह) जमा करके रहेगा ०

और उसके रसूल पर (भी) और उस किताब पर (भी) जिसे (अल्लाह ने) अपने रसूल पर अवतीर्ण फ़र्माया है। और उस किताब पर (भी) जो तुम से पूर्व अवतीर्ण की गई थी और जो अल्लाह पर .और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी (अवतीर्ण की हुई समस्त अगली पिछली) किताबों पर, और उसके (सब) रसूलों पर, और प्रलय के दिन पर ईमान न लाया, वह (सच्चे मार्ग से) भटक कर दूर जा पड़ा ॥

जो इस्लाम स्वीकार करे, उसे आवश्यक है कि अल्लाह की तमाम आज्ञाओं को दिल से माने। उसकी आज्ञाओं में से किसी एक को भी न मानना, मुसल्मान होने में शुबहा डाल देता है और जो लोग मुसल्मान हुए और फिर काफ़िर हो गये और फिर मुसल्मान हुये और फिर काफ़िर हो गये और फिर कुफ़्. ही में उन्नति करते रहे, तो उनको अल्लाह कदापि क्षमा नहीं करेगा और न उनको सीधे मार्ग पर लायेगा ॥

और ऐ रसूल ! मुनाफ़िक़ों को मंगल-समाचार सुना दो, कि उनको घोर अज़ाब होगा। यह लोग मुसल्मानों को छोड़ कर काफ़िरों को अपना मित्र और साथी बनाते हैं। क्या वह काफ़िरों के पास सम्मान की तलाश करते हैं ? सो सम्मान तो सब अल्लाह ही के अधिकार में है और उसी को मिलेगा, जो अल्लाह की आधीनता करेगा ॥

और .कुर्आन में तुम्हें आज्ञा दी जा चुकी है कि जब (किसी संगत या सभा में) अल्लाह की आयतों का इन्कार होते और (उन पर) हंसी उड़ते सुनो, तो उन (इन्कार करने वालों और हंसी उड़ाने वालों) के समीप न बैठो, जब तक कि (वह) कोई और बात आरम्भ न कर दें। अन्यथा इस दशा में तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे। अल्लाह मुनाफ़िक़ों को और काफ़िरों, सब को—नर्क में एक स्थान पर जमा करेगा ॥

جَمِيعًا ۝ الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ
مِّنَ اللَّهِ قَالُوٓا أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ وَإِن كَانَ
لِلْكَٰفِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوٓا أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ
وَنَمْنَعْكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ
الْقِيَٰمَةِ وَلَن يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَٰفِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ
سَبِيلًا ۝ إِنَّ الْمُنَٰفِقِينَ يُخَٰدِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ ٤
خَٰدِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوٓا إِلَى الصَّلَوٰةِ قَامُوا كُسَالَىٰ
يُرَآءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا
قَلِيلًا ۝ مُّذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذَٰلِكَ لَآ إِلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ
وَلَآ إِلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ
لَهُ سَبِيلًا ۝ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَٰفِرِينَ
أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ أَتُرِيدُونَ أَن
تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَٰنًا مُّبِينًا ۝ إِنَّ الْمُنَٰفِقِينَ

कि यह (मुनाफ़िक़ हनोज़) तुम्हारे (मआल कार के) मुन्तज़िर हैं (कि देखिये काफ़िरों के मुक़ाबिले में जीतते हैं या हारते हैं)। तो अगर अल्लाह (के करने) से तुम्हारी फ़तह हो गई, तो (तुम से) कहने लगते हैं (क्यों जी !) क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर काफ़िरों को (फ़तह) नसीब हुई, तो (इज़हार ख़ुसूसियत के लिये काफ़िरों से) कहने लगते हैं कि क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं हो गये थे और तुमको मुसल्मानों (के हाथों) से नहीं बचाया ? तो (मुसल्मानो !) अल्लाह तुम में (और मुनाफ़िक़ों में) क़यामत के दिन फ़ैसला कर देगा। और ख़ुदा काफ़िरों को मुसल्मानों पर (हर तरह) वर रहने का मौक़ा हरगिज़ नहीं देगा ० मुनाफ़िक़ (मुसल्मानों को धोखा देकर गोया) ख़ुदा को धोखा देते हैं, हालाँकि (हक़ीक़त में) ख़ुदा उन ही को धोखा दे रहा है और (यह लोग) जब नमाज़ के लिये खड़े होते हैं, तो अलकसाये हुये खड़े होते हैं। (ज़ाहिरदारी करके) लोगों को दिखाते हैं और (दिल से) अल्लाह को याद नहीं करते, मगर कुछ यूँ ही सा ० कुफ़्र और ईमान के बीच में पड़े झूल रहे हैं, न इन (मुसल्मानों) की तरफ़ और न उन (काफ़िरों) की तरफ़ और (ऐ पैग़म्बर !) जिस को अल्लाह भटकाये, तो मुम्किन नहीं कि तुम उसके लिये रस्ता ढूँढ निकालो ० मुसल्मानो ! मुसल्मानों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त न बनाओ। क्या तुम यह चाहते हो कि ख़ुदा का इल्ज़ाम सरीह अपने ऊपर आयद करो ० कुछ शक नहीं कि मुनाफ़िक़—

यह मुनाफ़िक़ तो तुम्हारे इन्तिज़ार में रहते हैं (कि जीतते हो या हारते हो)। यदि तुम्हें अल्लाह की ओर से विजय प्राप्त होती है, तो कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे और यदि विजय काफ़िरों को प्राप्त होती है, तो कहते हैं कि—क्या हम दिखावे के लिये मुसल्मानों के साथ मिल कर तुम पर विजयी नहीं होने लगे थे? और क्या (हमने मुसल्मानों को धोखा देकर) तुम्हें मुसल्मानों से बचा नहीं लिया *। सो (ऐ मुसल्मानो !) अल्लाह प्रलय के दिन तुम्हारा और उनका फ़ैसला करेगा। और अल्लाह काफ़िरों को मुसल्मानों पर (सदैव) ग़ालिब रहने का मौक़ा (अवसर) न देगा ॥

* टीका—लड़ाई में मुनाफ़िक़ रहते तो थे, मुसल्मानों के साथ। परन्तु कुछ ऐसा ढंग रखते थे कि न मुसल्मानों से बुरे बनते और न काफ़िरों से, बरन् दोनों को पागल बनाने का उद्योग करते। मुसल्मान जीत जाते, तो कहते कि हम तुम्हारे साथ थे। हमें मिले हुये धन में से भाग दिलवाओ, और काफ़िर जीतते, तो उन्हें समझाते कि हम मुसल्मानों को सहायता थोड़ा ही दे रहे थे। हम तो तुम्हारे बचाव के लिये उन में जा मिले थे। हमने उन्हें मिल कर मारा है और हम तुम्हारी लूट में भागी हैं:—हसन निज़ामी ॥

मुनाफ़िक़ लोग (मुसल्मानों से क्या धोखे बाज़ी करते हैं) अल्लाह से धोखे बाज़ी करते हैं (परन्तु वह क्या किसी को धोखा दे सकते हैं। वास्तव में) अल्लाह ही उन्हें धोखा दे रहा है। (उनकी दशा यह है कि जिहाद इत्यादि तो ठीक भाँति यह क्या करेंगे) जब नमाज़ (जैसी बिना हानि की इबादत) को (भी) खड़े होते हैं, तो हारे जी से। (केवल) लोगों को दिखाने के लिये (खड़े होते हैं कि उनके कुफ़्र न प्रकट हो जायँ)। और (यह लोग) अल्लाह को (बिल्कुल) स्मरण नहीं करते। मगर कुछ तो यों हीं सा (प्रकट रूप का दिखावा कर देते हैं) ॥

(यह लोग मुसल्मानों और काफ़िरों) दोनों के बीच अधर में लटके हुये हैं। न इनकी ओर हैं—न उनकी ओर हैं। और (ऐ रसूल !) जिसे अल्लाह भटकाये, उसके लिये तुम कदापि कोई (कल्याण का) मार्ग न निकाल सकोगे ॥

ऐ ईमान वालो ! (यदि तुम ईमान वाले हो, तो) ईमान वालों को छोड़ कर काफ़िरों को (अपना) मित्र न बनाओ। क्या तुम यह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह तआला का स्पष्ट प्रमाण स्थिर करलो और खुल्लम खुल्ला अपराध के भागी बन जाओ ॥

(याद रक्खो !) मुनाफ़िक़—

فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ
نَصِيْرًا ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا
بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ مَا
يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ وَكَانَ
اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ۝ لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ
بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا
عَلِيْمًا ۝ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا
عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ
يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ
بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا
بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا

दोज़ख़ के सब से नीचे के दर्जे में होंगे और (ऐ पैग़म्बर ! वहां) तुम किसी को भी इनका मददगार न पाओगे ० मगर (इन में से) जिन लोगों ने तौबा की और अपनी हालत दुरुस्त करली और अल्लाह का सहारा पकड़ा और अपने दीन को .ख़ुदा के वास्ते ख़ालिस कर लिया, तो यह लोग मुसल्मानों के साथ (बहिश्त में) होंगे और अल्लाह मुसल्मानों को (आख़िरत में) बड़े अज्र देगा ० अगर तुम लोग (.ख़ुदा की) शुक्र गुज़ारी करो और (उस पर) ईमान रक्खो, तो .ख़ुदा को तुम्हें अज़ाब देकर क्या करना है। बल्कि .ख़ुदा (तो शुक्र गुज़ारों का) क़द्रदान (और उनके हाल से) वाक़िफ़ है ० अल्लाह को पसन्द नहीं कि कोई (किसी को) मुँह फोड़ कर बुरा कहे, मगर जिस पर (किसी तरह का) ज़ुल्म हुआ हो (और वह मुंह फोड़ कर ज़ालिम को बुरा कह बैठे, तो माज़ूर है)। और अल्लाह (सबकी) सुन्ता (और सब कुछ) जान्ता है ० (दूसरों के साथ) भलाई खुल्लम खुल्ला करो या छुपा कर करो या (तुम्हारे साथ कोई बुराई करे और तुम) बुराई से दर गुज़र करो (कि यह भी एक क़िस्म की भलाई है) तो अल्लाह (भी लोगों के साथ भलाई ही करता है कि) बा वजूद .क़ुद्रत के दर गुज़र करता है, (तुम भी दर गुज़र किया करो) ० जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों से बर्गश्ता हैं और अल्लाह और उसके रसूलों में जुदाई डालनी चाहते हैं और कहते हैं कि हम बाज़ (पैग़म्बरों) को मानते हैं और बाज़ को नहीं मानते, और चाहते हैं कि (पैग़म्बरों में मुग़ाइरत क़रार देकर) कुफ़् व ईमान के बीच बीच में (कोई दूसरा) रस्ता इख़्तियार करें ० तो ऐसे ही लोग यक़ीनन काफ़िर हैं—

नर्क के सब से नीचे दर्जे में होंगे और (ऐ रसूल !) तुम वहां उनका कोई भी (तो) सहायक न पाओगे। (हां) मगर (उन में से) जिन जिन ने तौबा करलो और अपनी दशा को सँवार लिया और अल्लाह का साहारा पकड़ा और केवल अल्लाह की बन्दगी (स्वीकार) की, तो यह ईमान वालों के साथ होंगे। और ईमान वालों को अल्लाह बड़ा पुण्य प्रदान करेगा ॥

(लोगो !) यदि तुम कृतज्ञता प्रकाश करो और ईमान ले आओ, तो तुम्हें अज़ाब देकर अल्लाह को क्या करना है, बल्कि अल्लाह तो (अपने अच्छे बन्दों का) क़द्रदान है। (और वह उनके हाल से) अभिज्ञ है ॥

(किसी में किसी प्रकार का दोष या अवगुण पाओ, तो उसका ढिंडोरा न पीटो; चाहे वह दोष-द्वेष का ही क्यों न हो)। अल्लाह को (यह बात) पसन्द नहीं है कि किसी की बुरी बात को खुल्लम खुल्ला ज़बान पर लाया जाय। (इस से स्पर्द्धा और बढ़ जाती है)। अलबत्ता जिस पर (कोई) अत्याचार हुआ हो (तो वह विवश है)। और अल्लाह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (दोष किसी का प्रगट किया जाय अथवा न किया जाय, उसे सब मालूम है कि किस में क्या दोष है) ॥

तुम (किसी के साथ) प्रगट रूप से भलाई करो या गुप्त (रूप से) करो * (सब कुछ अल्लाह को मालूम है)। या (कोई तुम्हारे साथ बुराई करे और) तुम (उसे) क्षमा करदो (और उसकी बुराई पर ध्यान न दो) तो (यह भी दूसरे के साथ भलाई करने के बराबर है)। अल्लाह शक्ति-शाली होने पर भी बुराई के बदले बुराई नहीं करता है। (इस लिये तुम्हें भी दूसरों की बुराई के जवाब में बुराई न करनी चाहिये। सार यह है कि अत्याचार-पीड़ित-मनुष्य को अत्याचार करने वाले से बदला लेना जायज़ है। परन्तु यदि वह क्षमा करदे, तो विशेषता इसी में है। अल्लाह की सृष्टि का सुधार मुसल्मानों का कर्तव्य होना चाहिये। शत्रु-शत्रुता करता है, तो मानो उसकी दशा में सुधार करने की आवश्यकता है। उसकी शत्रुता पर संतोष और क्षमा से काम लो और उस की भलाई का स्पष्ट तथा गुप्त-रूप से प्रयत्न करो) ॥

* टीका—यहां इस ओर संकेत है कि मुनाफ़िक़ों के आचरणों से क्रोधित न हो। उनके कष्ट पहुँचाने और उनकी उद्दण्डता का धैर्य और क्षमा से मुक़ाबला करो। उन्हें एकान्त में समझाओ। आवेश में आकर उनके द्वेष को प्रसिद्ध न करो। प्रगट रूप से भला बुरा कहोगे, तो वह भी खुल्लम खुल्ला विरोधी हो जायँगे :—हसन निज़ामी ॥

जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों से इन्कार करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों में भेद-भाव प्रकट करें। (अर्थात् अल्लाह को तो मानें, परन्तु उसके रसूलों की आज्ञा पालन न करें) और कहते हैं कि हम कुछ (रसूलों) को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते और चाहते हैं कि इस (प्रकार कुफ़् व इस्लाम) के बीच एक (नया) मार्ग निकालें। यह लोग निश्चित रूप से काफ़िर हैं—

وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ
سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝
يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا
مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ
فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ
بِظُلْمِهِمْ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ
الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا
مُّبِيْنًا ۝ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ
وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا
تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝
فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا

६

ع

और काफ़िरों के लिये हमने ज़िल्लत का अज़ाब तय्यार कर रक्खा है ० और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाये और उन में से किसी एक को दूसरे से जुदा न समझा, तो ऐसे ही लोग हैं, जिन को अल्लाह (आख़िरत में) उनके अज्र अता फ़रमायेगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ० (ऐ पैग़म्बर!) अहूल किताब (यानी यहूद जो) तुम से (लग़्व) दरख़्वास्त करते हैं कि तुम उन पर कोई (लिक्खी लिखाई) किताब आस्मान से (ला) उतारो, तो (तुम उनको बकने दो। कट हुज्जती तो उन की आदत ही है। उनके बड़े) मूसा से इससे भी बड़ी (लग़्व) दरख़्वास्त कर चुके हैं—लगे कहने कि हमें (तो) अल्लाह को खुले (ख़ज़ाने) दिखाओ। फिर उनको उनकी शरारत की वजह से बिजली ने आ दबोचा। (और वह मर गये। और मूसा की दुआ से) फिर (ज़िन्दा हुए)। इस (वाक़िए) के बाद भी बा वजूदे कि उनके पास (ख़ुदा की वहदानियत की दलीलें और) मोजिज़े आ चुके थे, (परस्तिश के लिये) बछड़े को ले बैठे। फिर हमने (उन के) इस (क़ुसूर) से (भी) दर गुज़र की (कि उनकी तौबा क़बूल फ़र्माई) और मूसा को हमने खुला हुआ ग़लबा दिया ० और उन (लोगों) से क़ौल वासिक़ लेने के लिये हमने (कोह) तूर को उन (के सिरों) पर ला लटकाया और (नीज़) हमने उनको हुक्म दिया कि (शहर के) दर्वाज़े में सज्दा (शुक्र) करते हुए दाख़िल होना और हमने उनको (यह भी) हुक्म दिया कि हफ़्ते के दिन (के बारे) में (हमारे हुक्म से) तजावुज़ न करना और हमने उनसे पक्का क़ौल ले लिया ० पस उनके क़ौल तोड़ने की वजह से और अह काम इलाही के न मानने की वजह से और नाहक़ (ना रवा) पैग़म्बरों को क़त्ल करने की वजह से (हमने भी उनको फिटकार दिया)। और (नीज़) उनके इस कहने की वजह से कि हमारे दिल—

और हमने काफ़िरों के लिये नीचता का अज़ाब (दुःख) तैयार कर रक्खा है ॥

और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान ले आये हैं और उनमें से किसी को (दूसरे से विभिन्न और) प्रथक नहीं समझते, उन्हें (अल्लाह) उनका फल शीघ्र देगा। अल्लाह क्षमा करने वाला (और) कृपालु है ॥

(ऐ रसूल! यह वर्तमान काल के) किताब वाले (जो) तुम से प्रार्थना करते हैं कि तुम उन पर कोई (लिखी लिखाई) किताब आस्मान से मँगवा दो, तो (उनके पूर्वज) मूसा से इस से भी बड़ी वस्तु का सवाल कर चुके हैं। उन्हों ने तो कहा था कि हमें अल्लाह को बिल्कुल साक्षात दिखा दो। सो उन पर उनकी (इस) धृष्टता के कारण बिजली आ गिरी (और वह मर गये। लेकिन मूसा की दुआ से) फिर (जीवित हुए और) बहुत सी निशानियाँ पहुँच चुकने के उपरान्त (भी उन्हों ने) बछड़े को (पूज्य अर्थात् अपना इष्ट-देव) बना लिया। हमने (उन का) वह (अपराध) भी क्षमा कर दिया (और उनकी तौबा को स्वीकार कर के) मूसा को स्पष्ट विजय प्रदान की। (अर्थात् फिर मूसा की आज्ञानुसार उस बछड़े को बध करके आग में जलाया और उस की राख हवा में उड़ा दी और सत्तर हज़ार आदमी बछड़े को मस्तक नवाने वाले बध किये)॥

और (जब फिर यहूदी अस्थिर होने लगे और उन्हों ने कहा कि तौरेत की आज्ञायें कठिन हैं। हम उनका नियम पूर्वक पालन नहीं कर सकें, तो) उन से पक्की प्रतिज्ञा लेने के अभिप्राय से हमने उनके ऊपर तूर (पहाड़) को अधर लटका दिया। और हमने उनसे कहा कि दाख़िल हो दर्वाज़े में मस्तक नवाते हुए। और हमने उन्हें आज्ञा दी कि सनीचर के दिन (के विषय) में अनर्थ न करो और हमने उनसे दृढ़ प्रतिज्ञा कराली। फिर (उन को जो दंड मिला, तो) उनकी (इस) प्रतिज्ञा भंग करने और अल्लाह की आज्ञा न मानने और नबियों को बिना प्रयोजन बध करने और उस कहने के कारण (मिला) कि हमारे दिलों पर—

غُلْفٌ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ
اِلَّا قَلِيْلًا ۝ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ
بُهْتَانًا عَظِيْمًا ۝ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى
ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَ
لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ
لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ
الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۝ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ
وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ
وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۝ فَبِظُلْمٍ
مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ
اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۝
وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ

महफ़ूज़ हैं (और किसी की नसीहत हम पर असर नहीं करती, महफ़ूज़ नहीं) बल्कि उनके कुफ़्र की वजह से ख़ुदा ने उन (के दिलों) पर मुहर करदी है। पस माइदे चन्द के सिवा (अक्सर) ईमान नहीं लाते ० और (नीज़) उनके कुफ़्र की वजह से और मर्यम की निस्बत बड़े (सख़्त) बोहतान (की बातें) बकने की वजह से ० और उनके इस कहने की वजह से कि हम ने मर्यम के बेटे ईसा मसीह को, जो रसूल ख़ुदा (होने का दावा करते) थे—क़त्ल कर डाला और (हक़ीक़तुल हाल यह है कि) न तो उन्हों ने उनको क़त्ल किया और न उनको सूली चढ़ाया। (वाक़े में वह किसी और को सूली दे रहे थे,) मगर उनको ऐसा ही मालूम हुआ (कि हम ईसा को सूली दे रहे हैं)। और जो लोग इस बारे में इख़्तिलाफ़ करते हैं (और समझते हैं कि ईसा को सूली दी गई,) तो इस मामिले में (यह लोग नाहक़ के) शक में पड़े हैं। इनको इसकी (वाक़ई) ख़बर तो है नहीं, मगर सिर्फ़ अटकल के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं और यक़ीनन ईसा को लोगों ने क़त्ल नहीं किया ० बल्कि उनको अल्लाह ने अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह ज़बरदस्त (और) हिकमत वाला है ० और (जब क़यामत के क़रीब ईसा दुबारा दुनिया में आयेंगे, तो) जितने अहल किताब हैं, ज़रूर उनके मरने से पहिले सब के सब उन पर (मुसल्मानों का सा) ईमान लायेंगे ० और क़यामत के दिन ईसा इन (मुन्किरीन) के ख़िलाफ़ में गवाही देंगे ० अल्ग़रज़ यहूदियों की (इन) शरारतों की वजह से हमने (बहुत सी) पाक चीज़ें—जो उनके लिये हलाल थीं, उन पर हराम करदीं, (ताकि दाइरए रिज़्क़ उन पर तंग हो) । और (नीज़) इस वजह से कि अक्सर राह ख़ुदा से (लोगों को) रोकते थे ० और (नीज़) इस वजह से कि हर चन्द उनको सूद की मुमानिअत करदी गई थी, इस पर भी सूद लेते थे—

आवरण चढ़ा हुआ है (और हमारे दिल सुरक्षित हैं। अर्थात् हम पर किसी की बात का प्रभाव नहीं हो सका)। सो यह बात नहीं है (कि कोई आवरण इनके दिल पर चढ़ा हुआ है)। बल्कि अल्लाह ने कुफ़्र (करते रहने) के कारण उनके दिलों पर मोहर कर दी है। इस लिये (वह) केवल थोड़े मनुष्यों के अतिरिक्त शेष ईमान नहीं लाते ॥

और (उनको दंड) उनके ईसा का) इन्कार करने के कारण से (भी मिला) और मर्यम के प्रति सख़्त बोहतान लगाने और यह कहने के कारण * से (भी) कि हमने मर्यम के बेटे ईसा मसीह को बध किया, जो अल्लाह के रसूल (होने का दावा करते) थे ॥

* टीका—यहूदी बड़े गर्व से यह कहा करते हैं कि हमने हज़रत ईसा को मार डाला:—हसन निज़ामी ॥

यद्यपि न उन्हों ने उनको बध किया और न उन्हें सूली पर चढ़ाया (सूली वास्तव में दूसरे मनुष्य को दी गई)। लेकिन उन्हें उस पर (ईसा का) सन्देह हो गया और जिन लोगों को इस विषय में मत भेद है, वह उसी सन्देह में पड़े हुए हैं। उन्हें उस की (वास्तविक सचाई की) बिल्कुल ख़बर नहीं। केवल अटकल पर चल रहे हैं। निश्चित रूप से उनको उन्हों ने बध नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उन्हें अपनी ओर उठा लिया और अल्लाह शक्ति-शाली (और) बुद्धिमान है। (काफ़िरों के सब मन्सूबे ख़ाक में मिला सका और जो कुछ करता है किसी युक्ति से करता है)॥

और (यह) किताब वालों के जितने समूह हैं, उनकी मौत से पहिले बिल्कुल उन पर ईमान लायेंगे। (अर्थात् जब वह प्रलय के समीप दूसरी बार संसार में आयेंगे, तो सब इनके विषय में यही इक़रार करेंगे, जो मुसल्मानों का है) और (जो आज इस विश्वास में इन्कार करते हैं) प्रलय के दिन ईसा उनके विरुद्ध गवाही देंगे, कि यहूदियों ने मुझे न माना और ईसाइयों ने माना, तो ख़ुदा का बेटा माना ॥

यहूदियों की (इन्हीं) उद्दण्डताओं के कारण हमने (उन्हें परेशान करने के लिये) उन पर बहुत सी पवित्र वस्तुयें हराम करदीं, जो (पहिले) उनके लिये हलाल थीं और (शेष) इस कारण से (यह किया गया) कि वह (स्वयं तो अलग रहे) बहुधा (और लोगों को भी) अल्लाह के रास्ते से रोकते थे। और (इस कारण से कि वह) सूद लेते थे। यद्यपि उन्हें इसके लिये मनाही हो चुकी थी—

اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ
مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ
وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ۭ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ اِنَّآ اَوْحَيْنَآ ٤
اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْ بَعْدِهٖ ۚ
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ
وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ
زَبُوْرًا ۝ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ
وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۭ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى
تَكْلِيْمًا ۝ رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ

النساء

और (नोज़) इस वजह से कि लोगों के माल नाहक़ ख़ुर्द बुर्द करते थे और इनमें जो लोग (ख़ुदा का हुक्म) नहीं मानते, उनके लिये हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रक्खा है ० लेकिन (ऐ पैग़म्बर !) इनमें से जो इल्म में (बड़ी) पायेगाह रखते हैं, (वह) और मुसलमान (यह दोनों फ़रीक़ तो) उस (किताब) पर, जो तुम पर उतरी है और उन (किताबों) पर, जो तुम से पहिले (दूसरे पैग़म्बरों पर) उतरी हैं (सब पर) ईमान लाते और नमाज़ें पढ़ते और ज़कात देते और अल्लाह और रोज़ आख़िरत का यक़ीन रखते हैं—यह लोग हैं, जिनको हम अन्क़रीब बड़ा अज्र अता फ़रमायेंगे ० (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुम्हारी तरफ़ (उसी तरह) वही भेजी है, जिस तरह हमने नूह और (दूसरे) पैग़म्बरों की तरफ़—जो उनके बाद हुये, वही भेजी थी और (जिस तरह) हमने इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और औलाद याक़ूब और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की तरफ़ वही भेजी थी और हमने दाऊद को ज़बूर दी थी ० और (तुम्हारी तरह हम) कितने पैग़म्बर (भेज चुके हैं) जिन का हाल हम (इससे) पहिले तुमसे बयान कर चुके हैं और कितने पैग़म्बर (और) जिन का हाल हमने तुमसे (अब तक) बयान नहीं किया। और अल्लाह ने मूसा से (तो) बातें (भी) कीं ० (वह सब) पैग़म्बर (नेकों को जन्नत की) ख़ुश ख़बरी देने वाले और (बदों को अज़ाब ख़ुदा से) डराने वाले (थे)। ताकि—

और (शेष) इस कारण से कि व्यर्थ लोगों का माल खा जाते थे और उनमें (अर्थात् इस्राईल के वंश वालों में) जो (अल्लाह की आज्ञा) नहीं मानते, उनके लिये हमने दारुण अज़ाब (दुःख) तैयार कर रक्खा है ॥

लेकिन (ऐ रसूल !) इन यहूदियों में—जो लोग धर्म शास्त्र में पक्के हैं और जो उस किताब पर भी ईमान रखते हैं, जो तुम पर उतरी है और उन किताबों पर भी, जो तुम से पहिले उतर चुकी हैं और नमाज़ पढ़ने वाले और ज़कात देने वाले और अल्लाह तथा प्रलय के दिन को मानने वाले—इन सबको हम निकट भविष्य में बहुत बड़ा पुण्य प्रदान करेंगे ॥

(ऐ रसूल !) हमने तुम पर वही (ख़ुदाई—सन्देश) भेजा है, जिस प्रकार नूह और उनके बाद के नबियों पर भेजा था। और हमने इब्राहीम पर ख़ुदाई सन्देश भेजा और इस्माईल पर, और इस्हाक़ पर, और याक़ूब पर, और उनकी सन्तान पर, और ईसा पर, और अय्यूब पर, और यूनुस पर, और हारून पर, और सुलैमान पर, और दाऊद को हमने ज़बूर (ईश्वरीय-पुस्तक) दी ॥

और (जिन पैग़म्बरों पर हमने वही अर्थात ख़ुदाई सन्देश भेजा, उनमें) कुछ पैग़म्बर तो वह हैं, जिनका हमने पहिले तुमसे वर्णन किया है और (बहुत से) ऐसे हैं, जिनका हाल हमने तुम्हें नहीं सुनाया और अल्लाह ने मूसा से (तो) बातें करने की तरह बातें (भी) कीं ॥

(यह सब) रसूल (भले मनुष्यों को) मंगल-समाचार देने वाले थे और (बुरों को) भयभीत करने वाले। जिससे कि—

لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيزًا
حَكِيمًا ۝ لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ
بِعِلْمِهِ ۚ وَالْمَلٰئِكَةُ يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
شَهِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلٰلًا بَعِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا
لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ۝ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرًا ۝ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ
قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِنْ رَبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا
لَكُمْ ۚ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ يٰٓأَهْلَ
الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللّٰهِ
إِلَّا الْحَقَّ ۚ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللّٰهِ

पैग़म्बरों के (आये) पीछे लोगों को .खुदा पर (किसी तरह का) उज़्र (रखने का मौक़ा बाक़ी) न रहे और .खुदा ग़ालिब (और) हिकमत वाला है ० (ऐ पैग़म्बर ! गो अह्ल किताब न भी मानें) लेकिन जो कुछ .खुदा ने तुम्हारी तरफ़ उतारा है—अल्लाह गवाही देता है कि (तुमको उसका अह्ल) समझ कर उसको (तुम पर) उतारा है और (न सिर्फ़ एक .खुदा, बल्कि) फ़रिश्ते (भी इस की) गवाही देते हैं और गवाही को तो (अकेला) अल्लाह ही बस है ० बेशक जिन लोगों ने (दीन इस्लाम से) इन्कार किया और राह .खुदा से (दूसरों को भी) रोका, वह राह (रास्त) से बड़ी दूर भटक गये ० जो लोग कुफ़्र और (कुफ़्र के साथ) .ज़ुल्म (भी) करते रहे, उनको .खुदा न तो बख़्शे ही गा और न उनको राह (रास्त) ही दिखायेगा ० बल्कि (उन को) जहन्नम ही का रस्ता (दिखायेगा,) जिस में हमेशा २ रहेंगे और अल्लाह के नज़दीक यह (एक) आसान (सी बात) है ० लोगो ! (यह) रसूल (मुहम्मद) तुम्हारे पास तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से (दीन) हक़ लेकर आये हैं। पस ईमान लाओ कि तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर न मानोगे, तो अल्लाह (बे नियाज़ है। उसी) का है, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और अल्लाह (सब के हाल से) वाक़िफ़ है। (जो जैसा करेगा, उसको उसका एवज़ देगा और) हिकमत वाला (है, जो कुछ भी करता है, मस्लहत से करता है) ० ऐ अह्ल किताब ! अपने दीन में हद (एतिदाल) से तजावुज़ (यानी इफ़रात व तफ़रीत) न करो और .खुदा की निस्बत हक़ बात के सिवा (एक लफ़्ज़ भी) मुँह से न निकालो। (हक़ बात तो इतनी ही है कि) मर्यम के बेटे ईसा मसीह बस अल्लाह के (एक) रसूल हैं—

रसूलों के (आ जाने के) पश्चात लोगों को अल्लाह पर दोष (लगाने का अवसर) न रहे और अल्लाह शक्ति शाली (और) बुद्धिमान है ॥

(तात्पर्य यह है कि ऐ मुहम्मद ! पिछले नबियों की तरह तुम पर भी वही अर्थात् .खुदाई सन्देश भेजा गया है और किताब वाले मानें या न मानें) लेकिन अल्लाह तआला उस (किताब) के द्वारा—जो उसने तुम पर अवतीर्ण की है (और) अपने (मुख्य) ज्ञान के साथ अवतीर्ण की है (उस की) साक्षी दे रहा है (कि यह किताब वास्तव में आकाश से सम्बन्ध रखने वाली और ईश्वरीय किताब है और तुम उसके रसूल हो) और फ़रिश्ते भी इसके गवाह हैं और अल्लाह तआला की गवाही यथेष्ट है ॥

जिन्हों ने (तुम्हारी पैग़म्बरी से .खुद भी) इन्कार किया है और (दूसरों को भी) अल्लाह के मार्ग से रोका है, वह निश्चत रूप से (अल्लाह के) मार्ग से बहुत दूर जा पड़े हैं ॥

जो लोग काफ़िर और ज़ालिम रहे (अर्थात् .खुद भी कुफ़्र करते रहे और दूसरों को भी कुफ़्र करने के लिये तैयार करते रहे) उन्हें अल्लाह कदापि क्षमा नहीं करेगा और न उन्हें शिक्षा–मार्ग (ही) दिखलायेगा, बल्कि नर्क का मर्ग (दिखलायेगा)। उस में (वह) सदैव २ रहेंगे और अल्लाह के लिये यह एक आसान (बात) है ॥

ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से सच्चा (धर्म) लेकर रसूल आ चुका। सो (उस की बात) मान लो, जिस से कि तुम्हारा कल्याण हो जाय और अगर न मानोगे, तो (तुम्हारा ही कुछ बिगड़ेगा, अल्लाह का कुछ न बिगड़ेगा। यह) जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है (सब) अल्लाह का है। (अल्लाह तुम्हारे मानने न मानने के आधीन नहीं है) और अल्लाह (तुम्हारे) समस्त (वृतान्त) को जानने वाला है और युक्तिवान है। (तुम्हारे कर्मों का हिसाब करके बदला देगा) ॥

(और) ऐ किताब वालो ! अपने धर्म में अत्युक्ति न करो (और त्रुटि व कमी से काम न लो)। और अल्लाह के प्रति सत्य बात के अतिरिक्त (कोई बात) न कहो। (सच बात केवल इतनी ही कि) ईसा मसीह मर्यम के बेटे, अल्लाह के रसूल—

وَكَلِمَتُهٗ اَلْقٰهَا اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ فَاٰمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ اِنْتَهُوْا خَيْرًا
لَّكُمْ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ
وَلَدٌ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَ
كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۞ لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ
اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ
وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ
فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ۞ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ
مِّنْ فَضْلِهٖ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا
فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۞ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۞ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ
قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا

مُبِيْنًا

और .खुदा का हुक्म—जो उसने मर्यम की तरफ़ कहला भेजा था (कि बे शौहर हामिला हो जाओ और वह हो गई) और (वह एक) रूह (थी, जो ख़ास) .खुदा की तरफ से (दुनिया में आई) तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और तीन (.खुदा) न कहो। (इससे) बाज़ आओ (कि यह) तुम्हारे हक़ में बेहतर है। बस अल्लाह ही अकेला माबूद है, वह इससे बरी है कि उसके कुछ औलाद हो। उसीका है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह (सबका) कारसाज़ बस है ० मसीह को .खुदा का बन्दा होने से हरगिज़ (किसी क़िस्म की) आर नहीं और न फ़रिश्तों को, जो (.खुदा के) मुक़र्रब हैं और जो .खुदा का बन्दा होने से आर रक्खे और बड़ाई की ले, तो अन्क़रीब .खुदा उन सबको अपने पास खेंच बुलायेगा ० फिर (.खुदा के .हुज़ूर में हाज़िर हुये पीछे) जो लोग ईमान रखते और नेक अमल करते थे, .खुदा उनको उन (के किये) का सवाब पूरा (पूरा) देगा और अपने फ़ज़्ल से (कुछ और) ज़ियादा भी देगा। और जो लोग (बन्दा बनने से) आर रखते और बड़ाई की लेते थे, .खुदा उनको अज़ाब दर्दनाक की सज़ा देगा ० और .खुदा के सिवा उनको न कोई यार मिलेगा और न मददगार ० लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से हुज्जत आ चुकी और हम तुम्हारी तरफ़ जगमगाता हुआ नूर (हिदायत यानी .क़ुर्आन) भेज चुके ०

और अल्लाह का हुक्म है—जो उसने मर्यम पर नाज़िल किया था (कि बिना पति के गर्भवती हो जाओ और वह एक) आत्मा (थी, जो ख़ास) अल्लाह की ओर से (संसार में आई)। सो अल्लाह और उसके रसूलों को मानो और न कहो (कि अल्लाह) तीन हैं। (इस असत्य विचार और व्यर्थ बात से) रुक जाओ (कि यह) तुम्हारे लिये श्रेष्ठ है। निश्चित रूप से एक मात्र अल्लाह ही पूजने योग्य है। (और यह बात) उस के गौरव के योग्य नहीं है कि उसके सन्तान हो। (उसे सन्तान की क्या आवश्यकता पड़ी है)। उसी का है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ पृथ्वी में है और अल्लाह (इन सब का) रचियता है॥

मसीह को अल्लाह का बन्दा होने से कदापि लज्जा नहीं और न (अल्लाह के) समीप वर्त्ती फरिश्तों को (लज्जा है, जिन्हें मुश्रिक अल्लाह की पुत्रियां बताते हैं)। और जिसे अल्लाह की बन्दगी से लज्जा आये और (जो) घमंड करे, तो अल्लाह उन सब को अपने पास बुलाने वाला है॥

फिर (वहां) जो लोग ईमानदार और शुभ-कर्म करने वाले होंगे, उन्हें अल्लाह उनका पूरा (पूरा) फल देगा। और (फल के अतिरिक्त) अपने फ़ज़्ल (कृपा) से (कुछ) और अधिक (भी) देगा। और जिन्हें (अल्लाह की बन्दगी से) लज्जा आई होगी और जिन्होंने घमंड किया होगा, तो अल्लाह उनको दुःख रूपी अज़ाब (दंड) देगा—दारुण दुःख। और (यह काफ़िर) अल्लाह के अतिरिक्त अपने लिये कोई हिमायती और सहायक न पायेंगे॥

ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से प्रमाण आ चुका और हम तुम को प्रगट ज्योति (अर्थात .क़ुर्आन) पहुँचा चुके॥

مُبِيْنًا ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ
فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ
اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝ يَسْتَفْتُوْنَكَ ۭ قُلِ اللّٰهُ
يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ۭ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ
لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗٓ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ
يَرِثُهَآ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ۭ فَاِنْ كَانَتَا
اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ۭ وَاِنْ كَانُوْٓا
اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَاۗءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْاُنْثَيَيْنِ ۭ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

سُوْرَةُ الْمَاۗئِدَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّثَلٰثٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۝ اُحِلَّتْ
لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ

सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये और उन्होंने उसी का सहारा पकड़ा, तो अल्लाह (भी) उनको अन्क़रीब अपनी रहमत (के साये) और फ़ज़्ल (की पनाह) में लेलेगा और उनको अपने (हुज़ूर) तक (पहुँचने) का सीधा रस्ता (भी) दिखा देगा ० (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुम से (कलाला के बारे में) फ़तवा तलब करते हैं, (तो इन लोगों से) कह दो कि अल्लाह कलाला के बारे में तुमको हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा मर्द मर जाय, जिसके औलाद न हो (और न बाप दादा, कि इसी को कलाला कहते हैं) और उसके (सिर्फ़ एक) बहन हो, तो बहन को उसके तरके का आधा। और बहन (मर जाय और उस) के औलाद न हो, तो, उस (के सारे माल) का वारिस यह (भाई)। फिर अगर बहनें दो हों (या ज़ियादा,) तो उनको उसके तरके में से दो तिहाई। और अगर भाई बहन (मिले जुले) हों, (कुछ) मर्द और (कुछ) औरतें, तो दो औरतों के हिस्से की क़द्र एक मर्द का हिस्सा। तुम लोगों के भटकने के ख़्याल से अल्लाह (अपने हुक्म) तुम से खोल खोल कर बयान फ़रमाता है और अल्लाह सब कुछ जानता है ०

सूरत-माइदह

मदनी यानी मदीने में नाज़िल हुई और इस में १२० आयतें और १६ रुकूअ़ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० मुसल्मानो ! (अपने) क़रारों को पूरा करो ० चार पाये जानवर तुम्हारे लिये हलाल कर दिये गये हैं, मगर वह जो तुमको (आगे) पढ़ कर सुनाये जायँगे—

अत: जो लोग अल्लाह पर ईमान ले आये और (जिन्हों ने) उसे (अपना सहारा बना कर) मज़बूत पकड़ लिया, तो (अल्लाह) उन्हें अपनी दया और कृपा (की छाया) में ले लेगा। और उन्हें अपने पास (पहुँचने) का सीधा मार्ग बता देगा ॥

(ऐ रसूल !) लोग तुमसे (कलाला अर्थात् उन लोगों के विषय में, जिनके न कोई सन्तान हो और न माँ बाप हों) व्यवस्था माँगते हैं। सो (उनसे) कहदो, अल्लाह तुम्हें कलाला के विषय में हुक्म फर्माता है (कि) अगर कोई मर जाय और उसके सन्तान न हो (और न उसके माँ बाप हों) और उसके (केवल) एक बहिन हो, तो बहिन को उसके छोड़े हुये (माल) का आधा भाग मिलेगा। और (अगर) बहिन (मरे और उस) के सन्तान न हो, तो उस (के पूरे के पूरे माल) का वारिस यह (भाई) होगा और यदि दो बहिने हों, तो छोड़े हुए माल में से उन्हें दो तिहाई पहुंचेगा। और अगर (कई मनुष्य) हों (इस रिश्ते के) कुछ मर्द और कुछ औरतें, तो एक मर्द का भाग दो स्त्रियों के (भागों के) बराबर (है। इसी हिसाब से छोड़ी हुई सम्पत्ति को विभाजित कर लिया जाय)। अल्लाह तुम्हारे लिये (अपनी आज्ञायें) खोल कर वर्णन करता है, जिससे कि तुम गुमराह न हो और अल्लाह हर वस्तु से अभिज्ञ (व सचेत) है ॥

सूरत-माइदह

मदनी अर्थात् यह सूरत मदीने में उतरी है और इसमें १२० आयतें और १६ रुकूअ़ हैं ॥

ऐ मुसल्मानो ! (जब तुम मुसल्मान हो गये हो, तो मानो अल्लाह और उसके रसूल की कुल आज्ञाओं को नियमानुसार पालन करने की प्रतिज्ञा कर चुके। अतएव तुम्हें चाहिये कि सब) प्रतिज्ञाओं को पूरा करो। (अर्थात् समस्त धार्मिक आज्ञाओं का पालन करो। देखो !) चौपाये (जैसे ऊँट, बकरा, बकरी, भैंस इत्यादि) तुम्हारे लिये हलाल ठहराये गये हैं, सिवा उनके-जिनका वर्णन आगे आता है—

لیکن جب تم احرام کی حالت میں ہو...

مُحِلِّي الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ۞
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ
الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَآ آٰمِّيْنَ
الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ
وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ
شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا
تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۞ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ
الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ
بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ
وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۫ وَمَا ذُبِحَ عَلَى
النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ؕ

اَلْيَوْمَ

लेकिन जब तुम एहराम की हालत में हो, तो शिकार को हलाल न समझ लेना। बेशक ख़ुदा जैसा चाहता है, हुक्म देता है० मुसल्मानो! ख़ुदा के (ठैराये हुये दीनी) आदाब व अर्कान की बे तौक़ीरी न करो और न (किसी) हुर्मत वाले महीने की, और न (हज की) क़ुर्बानी की। और न उन (जानवरों) की, जिन (को ख़ुदा की नियाज़ के लिये ख़ास करके शिनाख़्त के तौर पर उन) के (गलों में) पट्टे बाँध दिये हों और न उन (लोगों) की, जो इज़्ज़त वाले घर (यानी ख़ानए काबा की ज़ियारत) को जा रहे हों (और ज़िमनन) अपने पर्वर्दिगार की बरकत (यानी मन्फ़अ़त तिजारत के) और (असालतन उसकी) रज़ामन्दी के तलबगार हों। और जब एहराम से बाहर आ जाओ, तो (इजाज़त है कि चाहो तो बदस्तूर) शिकार करो। और (मुसल्मानो!) बाज़ लोगों ने जो तुमको हुर्मत (व इज़्ज़त) वाली मसजिद (यानी ख़ानए काबा में जाने) से रोका था, यह अ़दावत तुमको (उन पर किसी तरह की) ज़ियादती करने की बाइस न हो और नेकी और पर्हेज़गारी (के कामों) में एक दूसरे के मददगार हो जाया करो। और गुनाह और ज़ियादती (के कामों) में एक दूसरे के मददगार न बनो और अल्लाह (के ग़ज़ब) से डरो, क्योंकि अल्लाह का अ़ज़ाब (बहुत ही) सख़्त है० मरा हुआ (जानवर) और लहू और सुवर का गोश्त और जो (जानवर) ख़ुदा के सिवा किसी और के नाम ज़द किया गया हो और जो गला घुटने से मर गया हो और जो चोट से मरा हो और जो ऊपर से गिर कर मरा हो और जो (किसी जानवर का) सींग लग कर मरा हो, यह सब चीज़ें तुम पर हराम करदी गईं। और (नीज़ वह जानवर) जिसको दरिन्दों ने (फाड़) खाया हो, मगर जिस (के मरने से पहिले तुम उस) को हलाल करलो, (तो वह हराम नहीं)। और (नीज़) जो किसी थान पर (चढ़ा कर) ज़िबह किया गया हो और यह (भी मना है) कि (साझे के जानवर का गोश्त जुए के तौर पर) तीरों (के पासों) से आपस में तक़्सीम करो (कि) यह गुनाह (की बात) है—

लेकिन (हां) एहराम* की दशा में हो, तो शिकार को हलाल न समझ लेना। (निःसन्देह अल्लाह जैसी चाहता है, आज्ञा देता है)॥

* टीका—एहराम उस कपड़े को कहते हैं, जो सिला हुआ न हो। उसको आधा बाँध लेते हैं और आधा ओढ़ लेते हैं। काबे का हज करने के समय सब औरतों, मर्दों को यही कपड़ा पहिनना आवश्यक है:—हसन निज़ामी॥

ऐ मुसल्मानो! अल्लाह के (नियत किये हुए) शआयर (हज की मज़हबी रस्मों) का अपमान न करो और न आदरणीय महीने का। और न उस जानवर का, जो (काबे का) चढ़ावा या भेंट (के तौर पर लाया गया) हो। (अर्थात् काफ़िर भी काबे का चढ़ावा या भेंट लावें, तो उन पर हाथ न डालो)। और न उन (जानवरों) का, जिन (को भेंट देने के अभिप्राय से काबे में लाया जाता है और उनके गलों में पहिचान के लिये) पट्टे बाँध दिये जाते हैं और न उन (लोगों) का, जो आदरणीय घर (अर्थात् काबे के स्थान) के (दर्शन करने के लिये) आ रहे हों (और) अपने पालन कर्त्ता की कृपा और प्रसन्नता तलाश करने जाते हों॥

और जब एहराम से निकल आओ, (तो शिकार की मनाही नहीं है। चाहो) तो शिकार करो और (याद रक्खो!) उन लोगों की शत्रुता, जो (एक समय) तुम्हें आदरणीय मसजिद (काबे में जाने और उपासना करने) से रोकते थे, तुमको (इस पर तैयार न करदे। इस बात का) कारण न हो (जाय) कि (कोई) अनर्थ कर बैठो। और आपस में (एक दूसरे की) नेकी और संयमता (के विषय) में मदद किया करो। पाप और अत्याचार (के कामों) में सहायता न करो और अल्लाह (के दुःख रूपी अज़ाब) से डरते रहो। अल्लाह का अज़ाब (अत्यन्त) कठोर है॥

तुम पर मुर्दा जानवर और लहू हराम किया गया और सुअर का माँस (भी हराम किया गया)। और जो जानवर कि ख़ुदा के सिवा किसी और के नाम (पर) छोड़ा गया हो, (वह भी) और जो (जानवर) गला घोंटने से या चोट से मर गया हो या (जो जानवर) ऊँचे से गिर कर या सींग मारने से (मरा हो)। और (या) जिसको दरिन्दा (जंगली जानवर, जैसे शेर, चीता वग़ैरा) खाने लगे—(यह सब भी हराम हैं)। मगर जिस (दरिन्दे के पकड़े हुए जानवर) को (उसकी जान निकलने से पहिले २) तुमने ज़िबह कर लिया हो (वह तुम पर हलाल है)। और (हराम है) जो किसी पूजा करने के स्थान पर (चढ़ा कर) ज़िबह किया गया (हो)। और यह (भी हराम है) कि (जुए के तौर पर) तीरों † से आपस में बाँटो, यह पाप है—

† टीका—अरब के काफ़िर तीरों से जुआ खेला करते थे। इन तीरों से जुआ खेलने का एक ढंग यह भी था, कि कतिपय मनुष्यों ने मिलकर किसी जानवर को बध किया और उस जानवर के माँस को तीर फेंक फेंक कर बाँट लिया:—हसन निज़ामी॥

(मुसल्मानो !) अब काफ़िर तुम्हारे दीन की तरफ़ से ना उम्मीद हुये (कि तुम में और उनमें इत्तिफ़ाक़ नहीं हो सकता और वह तुम्हारी सख़्त मुख़ालिफ़त करेंगे,) तो उनसे न डरो और हम ही से डरो। अब हम तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिये कामिल कर चुके और हमने तुम पर अपना एहसान पूरा कर दिया। और हमने तुम्हारे लिये (इसी) दीन इस्लाम को पसन्द फ़र्माया। फिर (इस पर भी) जो भूक से बे क़रार हो (और) गुनाह की तरफ़ उसका मैलान न हो (और वह बमजबूरी कोई हराम चीज़ खाले) तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुमसे पूछते हैं कि कौन कौन सी चीज़ें उनके लिये हलाल की गई है। सो तुम उनको समझा दो कि (खाने की) सुथरी चीज़ें (सब) तुम्हारे लिये हलाल कर दी गई हैं। और शिकारी जानवर-जो तुमने शिकार के लिये सधा रक्खे हों (और शिकार का तरीक़ा) जैसा तुमको ख़ुदा ने सिखा रक्खा है, वैसा ही तुमने उनको सिखा दिया हो, तो (यह शिकारी जानवर) जो (शिकार) तुम्हारे लिये पकड़ रक्खें (और वह ज़िबह करने से पहिले मर जाय) तो उसको (बेतअम्मुल) खालो। मगर (इतनी एहतियात रक्खो कि जिस तरह ज़िबह करते वक़् ख़ुदा का नाम लिया करते हो, उसी तरह) शिकारी जानवर के छोड़ते वक़् ख़ुदा का नाम ले लिया करो। और अल्लाह से डरते रहो कि (उसके हुक्म के ख़िलाफ़ कोई हराम चीज़ न खा लेना)। क्योंकि ख़ुदा फटके भर में हिसाब ले लेगा, (तो वहां की जवाब दिही का ख़याल रक्खो) ० आज (तमाम) पाकीज़ा चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल कर दी गईं और अह्ल किताब का खाना (बशर्ते कि तुम्हारे हाँ भी रवा हो) तुम्हारे लिये हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है। और मुसल्मान ब्याहता बीबियां और जिन लोगों को तुमसे पहिले किताब दी जा चुकी है, उनमें की (भी) ब्याहता बीबियां (तुम्हारे लिये) हलाल हैं। बशर्ते कि उनके मह्र उनके हवाले करो—

اليوم يئس الذين كفروا من دينكم فلا تخشوهم
واخشون اليوم اكملت لكم دينكم واتممت
عليكم نعمتي ورضيت لكم الاسلام
دينا فمن اضطر في مخمصة غير متجانف
لاثم فان الله غفور رحيم ۝ يسئلونك ماذا
احل لهم قل احل لكم الطيبت وما علمتم
من الجوارح مكلبين تعلمونهن مما علمكم
الله فكلوا مما امسكن عليكم واذكروا اسم
الله عليه واتقوا الله ان الله سريع الحساب ۝
اليوم احل لكم الطيبت وطعام الذين
اوتوا الكتب حل لكم وطعامكم حل
لهم والمحصنت من المؤمنت والمحصنت
من الذين اوتوا الكتب من قبلكم اذا اتيتموهن

(मुसल्मानो !) अब काफ़िर तुम्हारे (इस्लाम) धर्म (से फिरने) से निराश हो गये (हैं। अब वह तुम्हारा घोर विरोध करेंगे)। सो तुम उनसे डरना नहीं और मेरा ही डर रखना। अब मैं तुम्हारे धर्म को तुम्हारे लिये पूर्ण कर चुका। और तुम पर मैंने अपना पुरस्कार पूर्ण कर दिया। और मैंने तुम्हारे लिये (सर्व श्रेष्ठ) इस्लाम-धर्म को पसन्द फ़र्माया (है। तुम भी इस्लाम की पूरी पूरी पाबन्दी करो और हराम, हलाल का सदैव ध्यान रक्खो; जैसे खाने की जिन वस्तुओं को ऊपर हराम बताया गया है, उन्हें कभी हलाल न समझो)। अलबत्ता अगर कोई भूख से विवश हो जाय (परन्तु) उसके साथ उसका चित्त पाप की ओर न झुका हो, तो (उसे इस्लाम-हराम की हुई वस्तुयें भी खा लेने की आज्ञा देता है)। अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है॥

(ऐ रसूल ! मुसल्मान) तुमसे पूछते हैं कि (और) कौन (कौन) सी चीज़ें उनके लिये हलाल हैं। (उनसे) कह दो कि (सब) सुथरी चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल हैं, और शिकार पर दौड़ाने के लिये, जो शिकारी जानवर तुमने सधाये हों (और शिकार का तरीक़ा) अल्लाह ने जैसा तुम्हें सिखा रक्खा है, वैसा ही तुमने उन्हें सिखाया हो, तो (वह) जो (शिकार) तुम्हारे लिए पकड़ें, उसे खालो। (ऐसे शिकारी जानवरों के पकड़े हुए शिकार को मरने से पहिले ज़िबह करना ज़रूरी नहीं है) मगर (यथा शक्ति यह विचार रहे कि) शिकारी जानवर को छोड़ते समय अल्लाह का नाम लेलो (जिस तरह ज़िबह करते समय लिया करते हो)। और अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है॥

आज सब सुथरी चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल हो गईं और किताब वालों का (पकाया हुआ जायज़) खाना (भी) तुमको हलाल है। और तुम्हारा खाना तो उनको हलाल है (ही)। और तुमको पतिव्रता मुसल्मान स्त्रियाँ (भी) हलाल हैं और उनमें की पतिव्रता स्त्रियाँ (भी) जिन्हें तुमसे पहिले किताब दी गई (है) इस शर्त के साथ कि उन्हें उनके मह्र दे दो—

أُجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسٰفِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِيٓ
أَخْدَانٍ ۗ وَمَن يَكْفُرْ بِالْإِيمٰنِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ
وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِينَ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ
اٰمَنُوٓا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ
وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ
وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِن كُنتُمْ جُنُبًا
فَاطَّهَّرُوا ۚ وَإِن كُنتُم مَّرْضٰىٓ أَوْ عَلٰى سَفَرٍ
أَوْ جَآءَ أَحَدٌ مِّنكُم مِّنَ الْغَآئِطِ أَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ
فَلَمْ تَجِدُوا مَآءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا
بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُم مِّنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ
عَلَيْكُم مِّنْ حَرَجٍ وَلٰكِن يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ
نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي

واثقكم

(और) तुम्हारा इरादा (उनको) क़ैद (निकाह) में लाने का हो। न खुल्लम खुल्ला बदकारी करने का, और न चोरी छुपे आशना बनाने का, और जो ईमान (की इन बातों) को न माने, तो उसका किया (धरा सब) अकारत और आख़िरत में (भी) वह नुक़्सान उठाने वालों में होगा ० मुसल्मानो ! जब नमाज़ के लिये आमादा हो, तो अपने मुँह धो लिया करो और कोहनियों तक अपने हाथ और अपने सरों का मसह कर लिया करो और (हां) टख़नों तक अपने पांव (भी धो लिया करो) । और अगर तुमको नहाने की हाजत हो, तो (ग़ुस्ल करके) अच्छी तरह पाक साफ़ हो जाओ और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई जाए ज़रुर से (होकर) आया हो या तुमने औरतों से सोहबत की हो और तुम को पानी मयस्सर न हो, तो सुथरी मिट्टी लेकर उससे तयम्मुम यानी अपने मुँहों और हाथों का मसह करलो ० अल्लाह तुम पर किसी तरह की तङ्गी करनी नहीं चाहता, बल्कि तुमको साफ़ सुथरा रखना (चाहता है) । और (नीज़) यह (चाहता है) कि तुम पर अपनी एहसान पूरा करे, ताकि तुम (उसका) शुक्र करो ० और अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं, उनको याद करो और उसके अहद व पैमान को (भी याद करो) जिस (के पूरा करने) का उसने (अपने रसूल की मार्फ़त) तुमसे पक्का क़ौल ले लिया है—

और उन्हें पत्नी बना कर रक्खो । न तो खुल्लम खुल्ला दुराचार करो और न गुप्त रूप से व्यभिचार । और जिसने ईमान (की इन बातों) से इन्कार किया, तो उसकी (समस्त) मेहनत (व परिश्रम) व्यर्थ गया और वह मरणान्ति में हानि उठायेगा ॥

ऐ मुसल्मानो ! जब तुम नमाज़ के लिये उठा करो, तो अपने मुँह धो लिया करो और हाथ (भी) कोहनियों तक (धोया करो) । और अपने सिर का हाथों से मसह (भीगे हुए हाथों को फेरना) किया करो और अपने पैरों को (भी) टख़नों अर्थात् गुरवा तक (धोया करो) । और अगर तुम्हें अपवित्रता के कारण (स्नान करने की आवश्यकता) हो, तो (स्नान किया करो) और ख़ूब (साफ़) हो जाया करो। और अगर तुम रोगी हो या सफ़र में हो या कोई तुम में से पाख़ाने से आया हो, या तुम स्त्रियों के पास गये हो (और) फिर तुम्हें पानी न मिले, तो तयम्मुल कर लिया करो। (अर्थात्) सुथरी मिट्टी लो और उससे अपने मुंह और दोनों हाथों का मसह कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुमको तंग करे, लेकिन (वह अवश्य) चाहता है कि तुम्हें पवित्र करे और अपना उपकार तुम पर पूरा करे, जिससे कि तुम (उसकी) कृतज्ञता प्रकाश करो ॥

और अल्लाह के (वह) उपकार याद करो, जो (उसने) तुम पर (किये) हैं । और उसकी (वह) प्रतिज्ञा (याद करो)—

वَاثَقَكُمْ بِهٖٓ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ
اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ● يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِ
مَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا اِعْدِلُوْا هُوَ
اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ ● وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ● وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ●
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ
اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ● وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا وَقَالَ اللّٰهُ

कि जब (उसने तुमको इस्लाम लाने का हुक्म दिया, तो) तुमने कहा कि (पर्वरदिगार !) हमने (तेरा हुक्म) सुना और क़बूल किया और ख़ुदा (की ना फ़र्मानी) से डरते रहो, क्योंकि अल्लाह दिलों (तक) की बातें जानता है ० मुसल्मानो ! ख़ुदा वास्ते इनसाफ़ के साथ गवाही देने को आमादा रहो और लोगों की अदावत तुमको इस जुर्म (के इर्तिकाब) की बाइस न हो कि (मामिलात में) इन्साफ़ न करो। (नहीं, हर हाल में) इन्साफ़ करो कि (शेवये) इन्साफ़ परहेज़गारी से क़रीब तर है और अल्लाह (की ना फ़र्मानी) से डरते रहो, क्योंकि जो कुछ तुम करते हो—अल्लाह उससे बा ख़बर है ० जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल (भी) किये, अल्लाह का उनसे वादा है कि (आख़िरत में) उनके लिये मग़फ़िरत और बड़ा सवाब है ० और जिन लोगों ने (दीन हक़ के क़बूल करने से) इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वह दोज़ख़ी हैं ० मुसल्मानो ! अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं, (उनको) याद करो कि जब कुछ लोगों ने तुम पर दस्त दराज़ी करने का क़स्द किया, तो ख़ुदा ने तुमसे उनके हाथों को रोक दिया और अल्लाह से डरते रहो और मुसल्मानों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें० और अल्लाह (पहिले भी) बनी इस्राईल से अहद (इताअ़त) ले चुका है और हमने (यानी अल्लाह ने) उन ही में के बारह सर्दार (उन पर) मामूर फ़र्माये। और अल्लाह ने (बनी इस्राईल से यह भी) फ़र्माया—

जो (उसने) तुमसे ली थी, जब तुमने (इस्लाम ग्रहण करते समय कहा था, कि) हमने (अल्लाह की आज्ञाओं को) सुन लिया और मान लिया और (देखो !) अल्लाह से डरते रहो। अल्लाह तुम्हारे दिलों (तक) की बात जानता है ॥

और ऐ ईमान लाने वालो ! अल्लाह के लिये न्याय की गवाही देने को (सदैव) तैयार रहा करो और किसी जाति की शत्रुता के कारण न्याय को न छोड़ो। (सबके साथ) न्याय करो। यही बात संयमता से अधिक निकट है और अल्लाह से डरते रहो। जो (कुछ) तुम करते हो, अल्लाह को (उस की) अच्छी तरह ख़बर है ॥

अल्लाह का ईमान वालों और शुभ कर्म करने वाले लोगों से वादा है कि उनको क्षमा किया जावेगा और उनको बड़ा फल मिलेगा ॥

और जो लोग कुफ़्र करते हैं और हमारी आयतों को झूठा बताते रहे हैं, वह नार्कीय हैं ॥

और ऐ ईमान वालो ! अल्लाह का (वह) उपकार याद करो (जो उसने) तुम पर (किया है) कि जिस समय लोगों ने तुम पर हाथ चलाने का इरादा किया, तो (अल्लाह ने) उनके हाथ तुम (पर चलने) से रोक दिये। और अल्लाह से डरते रहो और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा (रखना) चाहिये ॥

और अल्लाह ने इस्राईल के वंशजों से (भी इस प्रकार की) प्रतिज्ञा ली थी और हमने (अर्थात् अल्लाह ने उनपर) उन (ही) में के बारह सर्दार * नियत किये थे और अल्लाह ने कहा था—

* टीका—फ़िर्औन के डूब कर मर जाने के बाद जब हज़रत मूसा ख़ुदा की आज्ञानुसार इस्राईल के वंशजों को लेकर शाम देश के समीप पहुँचे, तो उन्हों ने इस्राईल के वंशजों के बारह कुटुम्बों में से बारह मनुष्यों को—जो उन कुटुम्बों के मुखिया थे, चुन कर अमालक़ा जाति की दशा का खोज लगाने के लिये भेजा, जो उस समय शाम देश में बसती थी और बड़ी बलवान और शक्तिमान कही जाती थी। मूसा (उन पर सलाम) ने इन बारह मनुष्यों से यह प्रतिज्ञा ले ली थी, कि जब वह अमालक़ा जाति की दशा मालूम करके वापस आयें, तो उनके बल या शक्ति आदि का कोई ऐसा वर्णन इस्राईल के वंशजों से न करें, जिससे इस्राईल के वंशज साहस छोड़ बैठें और अमालक़ा जाति का मुक़ाबला न करें। परन्तु जब वह बारह सर्दार शाम देश से वापस आये, तो उन में से दस अपनी प्रतिज्ञा पर क़ायम न रहे और इस्राईल के वंशजों को आमलक़ा जाति की दशा से परचित कर दिया। इन सर्दारों के इस प्रतिज्ञा भंग के कारण इस्राईल के वंशज भी उस प्रतिज्ञा पर स्थिर न रहे—जो उन्हों ने हज़रत मूसा से की थी, कि वह हर दशा में उनकी सहायता करेंगे। एक प्रतिज्ञा तो इस्राईल के वंशजों की यह थी, और दूसरी प्रतिज्ञा वह है, जिसका वर्णन आगे आया है:—हसन निज़ामी ॥

إِنِّي مَعَكُمْ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَوٰةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَوٰةَ
وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ
قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ
وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ
فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ
سَوَاءَ السَّبِيلِ ● فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّٰهُمْ
وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَٰسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ
عَنْ مَوَاضِعِهِ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ
وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَىٰ خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا
مِنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِينَ ● وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَٰرَىٰ أَخَذْنَا
مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ
فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ

कि हम तुम्हारे साथ हैं। अगर तुम नमाज़ें पढ़ते और ज़कात देते और हमारे पैग़म्बरों पर ईमान लाते और उनकी मदद करते और (जब जब ज़रूरत पड़े) ख़ुश दिली से ख़ुदा को क़र्ज़ देते रहोगे, तो हम ज़रूर बिज़्ज़रूर तुम्हारे गुनाह तुम (पर) से दूर कर देंगे और ज़रूर बिज़्ज़रूर तुमको (बहिश्त के) ऐसे बाग़ों में (लेजा) दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें (पड़ी) बह रही होंगी। इसके बाद (भी) जो तुम में से इनहिराफ़ करेगा, तो (ख़ूब समझे रहना कि) तहक़ीक़ वह सीधे रस्ते से भटक गया ० पस उन ही लोगों के अपने अहद तोड़ने की वजह से हमने उनको फिटकार दिया और उनके दिलों को सख़्त कर दिया (कि तौरात के) लफ़्ज़ों को उनकी जगह (यानी असली मानों) से फेरते हैं। और उनको जो नसीहत की गई थी, उसमें से एक (बड़ा) हिस्सा (यानी पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़माँ पर ईमान लाना) भुला बैठे और (ऐ पैग़म्बर ! अब उनका हाल यह हो गया है कि) उन में से चन्द लोगों के सिवा सब की (किसी न किसी) चोरी की इत्तिला तुमको होती ही रहती है ० तो इन लोगों (से परख़ाश न करो, बल्कि इन) के क़ुसूर माफ़ करो और (इन से) दर गुज़र करो, क्योंकि अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है● और जो लोग अपने आप को नसारा कहते हैं, (इसी तरह) हमने उनसे (भी) अहद (वपैमान) लिया था। तो जो कुछ उनको नसीहत की गई थी, (वह भी) उस में से (बड़ा) हिस्सा (यानी पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़माँ पर ईमान लाना) भुला बैठे। तो (उसकी सज़ा में) हमने उन में अदावत और कीने (की आग) को रोज़ क़यामत तक भड़का दिया—

कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। अगर तुम नमाज़ पढ़ते रहोगे और ज़कात देते रहोगे और मेरे रसूलों पर ईमान लाते और उनकी सहायता करते रहोगे और प्रसन्न चित्त से अल्लाह को क़र्ज़ हसना देते रहोगे (अर्थात् अल्लाह के मार्ग में अल्लाह के बन्दों को सूदके बिना क़र्ज़ देते रहोगे) तो अवश्य तुम्हारे पाप तुम (पर) से दूर कर दूँगा और अवश्य तुम्हें (स्वर्ग के) ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा, जिनके नीचे नहरें बहती हैं। इस पर (भी) तुम में से जो कोई कुफ़्र करेगा, तो (समझ लो कि) वह सीधे रास्ते से भटक गया (और उसने अपने ऊपर मुसीबत लेली)॥

(इस्राईल के वंशजों ने उन प्रतिज्ञाओं को तोड़ा) तो हमने (भी) उनकी प्रतिज्ञा भंग के कारण उन पर लानत भेजी और हमने उनके दिलों को कठोर कर दिया (और) उनका यह हाल हो गया कि (अल्लाह के) कलाम को उलट पलट (कर कुछ का कुछ कर) देते हैं और उनको जो उपदेश किये गये थे, (वह) उनका बड़ा हिस्सा भूल गये और कतिपय को छोड़ कर उन (सब ही) की किसी (न किसी) दग़ा (और चालाकी) की तुम्हें बराबर सूचनायें मिलती रहती हैं। सो तुम (उन की बातों से व्यर्थ प्रभावान्वित न हो और उन से द्वेष न रक्खो, बल्कि) उन को क्षमा कर दो और (उन पर) ध्यान न दो। अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम रखता है॥

और वह, जो अपने आप को नसारा (ईसाई) कहते हैं, उन से भी हमने वचन लिया था और (वह भी) उन उपदेशों में का—जो उन्हें दिये गये थे, बड़ा हिस्सा भूल गये। सो (इस के दंड के तौर पर) हमने उनके बीच प्रलय तक (के लिये) शत्रुता और ईर्षा डाल दी—

औरआख़िरकार (क़यामत के दिन) .ख़ुदा उनको बता देगा कि (दुनिया में) क्या करते रहे ० ऐ अह्ल किताब ! तुम्हारे पास हमारा रसूल (मुहम्मद) आ चुका है और किताब (इलाही) में से जो कुछ तुम छुपाते रहे हो, वह उसमें से बहुत कुछ तुमसे साफ़ साफ़ बयान करता है। और बहुतेरी (बातें ऐसी भी हैं, जिन) से (वह दीदा व दानिस्ता तुम्हारी दिलाज़ारी के लिहाज़ से) चश्म पोशी करता है। (ग़रज़ कि) अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे पास नूर (हिदायत) और .क़ुर्आन आ चुका है (जिसके अह्काम) साफ़ (व सरीह हैं) ० जो लोग .ख़ुदा की रज़ामन्दी के तलबगार हैं, उनको अल्लाह .क़ुर्आन के ज़रिए से सलामती के रस्ते दिखाता है और अपने फ़ज़्ल (व करम) से उनको (कुफ़्र की) तारीकियों से निकाल कर (ईमान की) रोशनी में लाता और उनको राह रास्त दिखाता है ० जो लोग कहते हैं कि मर्यम के बेटे मसीह वही .ख़ुदा हैं, कुछ शक नहीं कि यह काफ़िर हो गये। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो (कि भला बताओ तो सही) कि अगर अल्लाह मर्यम के बेटे मसीह को और उनकी वालिदा को और जितने लोग ज़मीन में हैं, सब को हलाक करना चाहे, तो ऐसा कौन है जिसका .ख़ुदा के आगे कुछ भी ज़ोर चलता हो ? और आसमानों और ज़मीन और जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब पर अल्लाह ही की हुकूमत है— जो चाहता है, पैदा करता है। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, (अज़ाँ जुम्ला बाप के बिदून ईसा के पैदा करने पर भी) ० और यहूद व नसारा दावा करते हैं कि हम अल्लाह के बेटे—

الْقِيٰمَةِ ۚ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ
لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ
وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۬ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ
كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ۙ يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ
سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى
النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ
ابْنُ مَرْيَمَ ۭ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ
اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي
الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۭ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۬ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰۗؤُا اللّٰهِ

और अन्त में (प्रलय के दिन) अल्लाह उन्हें, जो कुछ (वह संसार में) करते रहे हैं, जता देगा ॥

ऐ किताब वालो ! तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है (और हमारी) किताब में से जिन (बातों) को तुम छिपाते थे (उनमें से) बहुत सी बातों को तुम पर साफ़ साफ़ प्रकट कर देता है और बहुत सी बातों पर ध्यान नहीं देता (है। संक्षिप्त बात यह है) तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से ज्योति (शिक्षा) और खुली हुई किताब आ गई (अर्थात् .क़ुर्आन, जिसकी आज्ञायें साफ़ और खुली हुई हैं और) जो अल्लाह की इच्छा के आधीन हैं, अल्लाह .क़ुर्आन के द्वारा उन्हें कल्याण का मार्ग दिखाता है और उन्हें अपनी कृपा से (कुफ़्र के) अन्धकारों से निकाल कर (ईमान के) प्रकाश में लाता है और उनको सीधे रास्ते पर चलाता है ॥

जो लोग कहते हैं कि अल्लाह तो वही मर्यम का बेटा मसीह है, वह निश्चित रूप से काफ़िर हैं। (ऐ रसूल !) तुम (उनसे) कह दो कि अगर अल्लाह चाहे कि मर्यम के बेटे मसीह को, और उनकी माता को, और जितने आदमी पृथ्वी में (बसते हैं) सबको मार डाले, तो उसके आगे किस का बस चल सका है ? (किसी का नहीं, तो फिर मर्यम के बेटे मसीह कैसे .ख़ुदा हो सके हैं ?) और (ऐ रसूल ! उन्हें समझाओ कि) आसमानों और पृथ्वी में और जो कुछ उन (दोनों) के बीच में है, सब पर अल्लाह ही का शासन है। (वह) जो चाहता है, पैदा करता है (और जिस तरह चाहता है, पैदा करता है। ईसा को बे बाप के पैदा करना अल्लाह के लिये कोई बड़ी बात नहीं) और (यही क्या) अल्लाह हर वस्तु पर अधिकार रखता है ॥

और यहूदी व ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के बेटे हैं—

और उसके चहीते हैं। (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो (कि अगर तुम ख़ुदा के बेटे और चहीते होते) तो वह तुम्हारे गुनाहों के बदले में तुम को (वक़्तन फ़वक़्तन) सज़ा ही क्यों दिया करता है ? (तो तुम न अल्लाह के बेटे हो न चहीते) बल्कि ख़ुदा ने जो (और बशर) पैदा किये हैं, उन ही में के बशर तुम भी हो। ख़ुदा जिस को चाहे माफ़ करे और जिस को चाहे अज़ाब दे और आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, सब अल्लाह ही के इख़्तियार में है और (सब को) उसी की तरफ़ लौट कर जाना है ० ऐ अहल किताब ! जब रसूलों का आना मुद्दतों तक नाग़ा रहा, तो हमारा (यह) रसूल (मुहम्मद) तुम्हारे पास आया, जो (अहकाम इलाही) तुमसे साफ़ साफ़ बयान करता है। (और हमने यह रसूल इस ग़रज़ से भेजा) कि (मबादा कल कलाँ को कहीं) तुम कहने लगो कि हमारे पास न तो कोई (नजात की) ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला आया और न (अज़ाब इलाही से) डराने वाला। तो अब तो (तुम को इस उज़्र की भी गुन्जायश न रही, क्योंकि) तुम्हारे पास ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला आ चुका, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, (अज़ाँ जुम्ला रसूल के भेजने पर भी) ० और (ऐ पैग़म्बर ! बनी इस्राईल को एक वाक़िआ यह भी याद दिलाओ कि) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयो ! अल्लाह ने जो तुम पर एहसानात किये हैं, उनको याद करो कि उसने तुम (ही) में (बहुतेरे) पैग़म्बर बनाये और तुम को बादशाह (भी) बनाया और तुम को वह वह नेअमतें दीं, जो, दुनिया जहान के लोगों में से किसी को नहीं दीं ० भाइयो ! (शाम का) मुक़द्दस मुल्क जो ख़ुदा ने तुम्हारी तक़्दीर में लिख दिया है (कि तुम वहां हुक्मरानी करोगे—चल कर) उस में दाख़िल हो और (दुश्मन के मुक़ाबिले में) पीठ न फेरना (कि ऐसा करोगे) तो तुम उल्टे घाटे में आ जाओगे ० वह (लोग) लगे कहने कि ऐ मूसा ! उस मुल्क में तो बड़े ज़बर्दस्त लोग (रहते) हैं और जब तक वह वहां से न निकल जायँ, हम तो उस (मुल्क) में क़दम रखते हैं नहीं,—

وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلۡ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمۡ بِذُنُوۡبِكُمۡ ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ
بَشَرٌ مِّمَّنۡ خَلَقَ ؕ يَغۡفِرُ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ
مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا
بَيۡنَهُمَا ۫ وَاِلَيۡهِ الۡمَصِيۡرُ ● يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ قَدۡ
جَآءَكُمۡ رَسُوۡلُنَا يُبَيِّنُ لَـكُمۡ عَلٰى فَتۡرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ
اَنۡ تَقُوۡلُوۡا مَا جَآءَنَا مِنۡۢ بَشِيۡرٍ وَّلَا نَذِيۡرٍ فَقَدۡ
● جَآءَكُمۡ بَشِيۡرٌ وَّنَذِيۡرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ
وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰى لِقَوۡمِهٖ يٰقَوۡمِ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَةَ ٤
اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ اِذۡ جَعَلَ فِيۡكُمۡ اَنۡۢبِيَآءَ وَجَعَلَـكُمۡ
● مُّلُوۡكًا ۖ وَّاٰتٰٮكُمۡ مَّا لَمۡ يُؤۡتِ اَحَدًا مِّنَ الۡعٰلَمِيۡنَ
يٰقَوۡمِ ادۡخُلُوا الۡاَرۡضَ الۡمُقَدَّسَةَ الَّتِىۡ كَتَبَ اللّٰهُ
● لَـكُمۡ وَلَا تَرۡتَدُّوۡا عَلٰۤى اَدۡبَارِكُمۡ فَتَـنۡقَلِبُوۡا خٰسِرِيۡنَ
قَالُوۡا يٰمُوۡسٰۤى اِنَّ فِيۡهَا قَوۡمًا جَبَّارِيۡنَ ۖ وَاِنَّا لَنۡ نَّدۡخُلَهَا

حَتّٰى يَخۡرُجُوۡا

और उसके ख़ास महबूब (प्रिय) हैं। (ऐ रसूल ! तुम उनसे) कहो (कि जब यह बात है, तो) फिर (अल्लाह) तुम्हारे पापों पर तुम्हें दण्ड क्यों देता रहता है ? (ना समझो ! बेटे और प्रिय) कुछ (भी) नहीं (हो) बल्कि तुम भी और प्राणियों के समान एक साधारण आदमी हो। (वह) जिसको चाहे, क्षमा करे और जिस को चाहे, अज़ाब करे और आस्मानों और पृथ्वी और जो कुछ उन (दोनों) में है, सब अल्लाह के अधिकार में है और (सब को) उसी की ओर लौट कर जाना है॥

ऐ किताब वालो ! रसूलों (के आगमन) के (अधिक काल तक) रुके रहने के पश्चात हमारा रसूल (मुहम्मद) तुम्हारे पास आया है। जो (हमारी आज्ञायें) तुम्हारे सामने खोल खोल कर बयान करता है। (जिस से कि) कहीं तुम यह न कहने लगो, कि हमारे पास (तो) कोई (क्षमा का) मंगल समाचार सुनाने वाला आया न (दुःख रूपी अज़ाब से) डराने वाला। सो अब (इस प्रकार की बातों की गुंजायश नहीं रही और) तुम्हारे पास मंगल समाचार सुनाने वाला और डराने वाला आ गया। और (मुहम्मद की पैग़म्बरी पर आश्चर्य न करो) अल्लाह का हर वस्तु पर अधिकार है (जिसे चाहे पैग़म्बर बना दे)॥

और (ऐ रसूल ! इन लोगों को वह घटना याद दिलाओ) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा था कि, ऐ मेरी जाति ! अल्लाह का (वह) उपकार याद करो (जो वह) तुम पर (कर चुका है) कि तुम में नबी पैदा किये और तुम्हें बादशाह बना दिया और तुम्हें (वह कुछ) दिया, जो संसार में (और) किसी को नहीं दिया था॥

(और कहा था कि) मेरे भाइयो ! (चलो और शाम के) पवित्र देश में जा घुसो। जिस (के शासन) को अल्लाह ने तुम्हारे हिस्से में लिख दिया है और (भय खाकर) उल्टे न फिरो (क्योंकि उल्टे फिरोगे) तो तुम उल्टे घाटे में आ जाओगे॥

(मूसा की इन बातों के उत्तर में) उन्होंने कहा कि ऐ मूसा ! वहां (तो बड़े मज़बूत और) ज़बरदस्त लोग (बसते) हैं और हम कदापि वहां न जायेंगे—

حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ
قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا
ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ
غٰلِبُوْنَ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا
فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا
قٰعِدُوْنَ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِيْ
وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ
قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً
يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفٰسِقِيْنَ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ
اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ
مِنَ الْاٰخَرِ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ

ع

हाँ (वह लोग) उस में से निकल जायँ, तो हम ज़रूर (जा) दाख़िल होंगे ० (.खुदा का) डर मानने वालों में से दो आदमी (यूशअ और कालिब) थे कि उन पर .खुदा ने (अपनी ख़ास) मेहर्बानी की। और (उन को हिम्मत दी और) वह बोल उठे (कि दुश्मनों के जिस्म की तरफ़ ख़याल न करो, वह दिलों के बहुत बोदे हैं)। उन पर (चढ़ाई करके बैतुल्मक़्दस के) दर्वाज़े में तो घुस पड़ो और जब तुम दर्वाज़े में घुस पड़े, तो बिला शुबहा तुम्हारी फ़तह है और अगर तुम ईमान रखते हो, तो अल्लाह ही पर भरोसा रक्खो ० वह बोले ऐ मूसा ! जब तक उस में दुश्मन हैं, हम तो कभी भी उस में क़दम नहीं रक्खेंगे। हाँ तुम और तुम्हारा .खुदा (दोनों) जाओ और (उन लोगों से) लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं ० (इस पर मूसा ने) दुआ की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! अपनी ज़ात ख़ास और मेरे भाई (हारून) के सिवा और कोई मेरे बस का नहीं। तो (अज़ाब नाज़िल करते वक़्त) हम में और इन ना फ़र्मान लोगों में इम्तियाज़ कीजो, (कहीं हम इनकी लपेट में न आ जायँ) ० (इस पर .खुदा ने) फ़र्माया अच्छा तो वह मुल्क चालीस बरस तक इनको नसीब न होगा। (मिस्र के) जङ्गल में भटके भटके फिरेंगे, तो तुम ना फ़र्मान लोगों (के हाल) पर कुछ अफ़्सोस न करना ० और (ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों को आदम के दो बेटों (हाबील और क़ाबील) के वाक़ई हालात पढ़ कर सुनाओ कि जब दोनों ने (.खुदा की जनाब में) नियाज़ें चढ़ाईं कि उन में से एक (यानी हाबील) की क़बूल हुई और दूसरे (यानी क़ाबील) की क़बूल न हुई, तो (क़ाबील मारे हसद के भाई से) लगा कहने कि मैं ज़रूर तुझ को क़त्ल करके रहूँगा। उसने जवाब दिया कि अल्लाह तो सिर्फ़ परहेज़गारों की (नियाज़ें) क़बूल करता है०—

जब तक वह वहाँ से निकल न जायँ और अगर वह वहाँ से निकल जायँगे, तो (फिर हमें कोई इन्कार न होगा) हम अवश्य (वहाँ) चले जायँगे॥

(उन में से कुछ लोग अल्लाह से डरने वाले भी थे। सो ऐसे ही) अल्लाह से डरने वाले दो मनुष्य (यूशा और कालब) कि अल्लाह की उन पर दया थी (अपनी जाति का यह उत्तर सुन कर) बोले (कि अल्लाह का पैग़म्बर जो कहता है, उसे मानो और शत्रुओं के बल आदि का विचार न करो। उनके केवल शरीर ही शरीर हैं। दिल के कमज़ोर हैं) उन पर धावा करके (बैतुलमक़्दस के) दरवाज़े में घुसो तो सही, और जब तुम उस में घुस जाओगे, तो (विश्वास रक्खो !) तुम ही विजयी होगे और अल्लाह पर भरोसा करो, अगर तुम ईमान वाले हो॥

(जाति ने) कहा, ऐ मूसा ! जब तक वह (लोग) वहाँ हैं, हम वहाँ कदापि कदापि आयु भर नहीं जायँगे। तुम जाओ और तुम्हारा अल्लाह (जाये) और तुम दोनों (उन लोगों से) लड़ो। हम तो यहीं बैठे हैं॥

(यह सुन कर मूसा ने) दुआ की, कि ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! मेरे अधिकार में अपने और अपने भाई (हारून) के अतिरिक्त कोई मनुष्य नहीं है। (अब) तू (ही) हमारे और इन अविज्ञा कारियों के बीच न्याय कर॥

.खुदा की आज्ञा हुई कि अच्छा, चालीस वर्ष तक इस देश से यह लोग वञ्चित रहेंगे और देश प्राप्त के बजाय जंगल में मारे २ फिरेंगे। फिर तुम (उन) अवज्ञाकारी लोगों (की दशा) पर शोक * न करना॥

* टीका—इस घटना के वर्णन करने से यह तात्पर्य है, कि हज़रत मूसा की जाति ने हज़रत मूसा का कहा न माना, तो अल्लाह ने उन्हें शाम देश के शासन से वञ्चित कर दिया और दूसरों के हाथ से उसे विजय कराया। तुम भी मुहम्मद रसूलुल्लाह की आज्ञानुसार कार्य न करोगे, तो तुम जानो। अल्लाह का इस बात पर अधिकार है, कि तुम्हारे स्थान पर दूसरे लोगों को ले आये और धार्मिक तथा सांसारिक प्रसाद जो तुम्हें देने चाहता है, वह उन्हें देदे। अल्लाह तो तुम पर अपनी कृपाओं व दयाओं की वर्षा करने के लिये तैयार है। तुम अल्लाह की पहिली शिक्षाओं को भूल बैठे थे। उसने एक दीर्घ काल तक नबियों को न भेजने के पश्चात्, मुहम्मद रसूलुल्लाह जैसा मंगल-समाचार देने वाला और भय भीत करने वाला नबी तुम में भेज दिया। अब तुम अल्लाह पर कोई दोष नहीं रख सके, कि हमारे सामने शिक्षा का साधन न था। इस कारण से हमारी शिक्षा न हो सकी। इसी के सम्बन्ध में एक दूसरा वृतान्त वर्णन करने की भी आज्ञा होती है—फ़र्माता है :—हसन निज़ामी॥

और (ऐ रसूल !) उन लोगों को आदम के दो बेटों (हाबील और क़ाबील) का वृतान्त (भी) सही सही सुना दो। जब (उन) दोनों ने भेंट पेश की और वह एक (हाबील) की स्वीकार और दूसरे (क़ाबील) की अस्वीकार † हो गई। तो (जिस की भेंट अस्वीकार हुई थी, उसने द्वेष से अपने भाई से) कहा कि मैं तुझ को बिलकुल जान से मारूँगा। उसने उत्तर दिया कि अल्लाह केवल संयमी लोगों की (भेंट) स्वीकार किया करता है—

† टीका—हज़रत आदम के यहाँ एक गर्भ से दो बच्चे होते थे। एक लड़का और एक लड़की। एक गर्भ से पैदा हुए बच्चे दूसरे गर्भ के बच्चों के साथ ब्याह दिये जाते थे। एक लड़की को हज़रत आदम ने अपने आज्ञाकारी बेटे हाबील को देना चाहा। इस पर क़ाबील ने कहा कि यह रिश्ता तो मैं करूँगा। हज़रत आदम ने कहा कि दोनों अल्लाह की भेंट चढ़ाओ। जिस को भेंट स्वीकार हो जाय, वह लड़की लेले। हाबील की भेंट स्वीकृत हो गई और क़ाबील की अस्वीकृत। अतः क़ाबील ने अपने भाई हाबील को बध कर डाला:—हसन निज़ामी॥

मिनल मुत्तक़ीन ● لَئِن بَسَطتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي

من المتقين ● لئن بسطت الى يدك لتقتلنى
ما انا بباسط يدى اليك لا قتلك انى اخاف
الله رب العلمين ● انى اريد ان تبوا باثمى
واثمك فتكون من اصحب النار وذلك
جزؤا الظلمين ● فطوعت له نفسه قتل
اخيه فقتله فاصبح من الخسرين ● فبعث
الله غرابا يبحث فى الارض ليريه كيف
يوارى سواة اخيه قال يويلتى اعجزت
ان اكون مثل هذا الغراب فاوارى سواة
اخى فاصبح من الندمين ● من اجل ذلك
كتبنا على بنى اسراءيل انه من قتل نفسا
بغير نفس او فساد فى الارض فكانما
قتل الناس جميعا ومن احياها فكانما احيا

الناس

अगर मेरे क़त्ल करने के इरादे से तू मुझ पर अपना हाथ चलायेगा, तो भी मैं तुझे क़त्ल करने के लिये तुझ पर अपना हाथ चलाने वाला नहीं। क्योंकि मैं अल्लाह रब्बुल आलमीन से डरता हूँ ० मैं तो यह चाहता हूँ कि (ज़ियादती हो, तो तेरी ही तरफ़ से हो और) तू मेरा और अपना (दोनों का) गुनाह समेटे और दोज़ख़ियों में (जा शामिल) हो। और ज़ालिमों की यही सज़ा है ० इस पर भी उसके (यानी क़ाबील के) नफ़्स ने उसको अपने भाई के मार डालने पर आमादा किया। (चुनांचे) आख़िरकार उसको मार डाला और (आप ही) घाटे में आ गया ० इसके बाद अल्लाह ने एक कव्वा भेजा, वह ज़मीन को कुरेदने लगा। ताकि उसको (यानी क़ाबील को) दिखाये कि उसे अपने भाई की फ़ज़ीहत (यानी उसकी बोसीदा लाश) को क्यों कर छुपाना चाहिये। (चुनांचे वह कव्वे को ज़मीन कुरेदते देख कर) बोल उठा हाय मेरी शामत ! क्या मैं (ऐसा) गया गुज़रा हुआ कि(बला से) इस कव्वे (ही) जैसा (होशियार) होता, तो अपने भाई की फ़ज़ीहत (यानी लाश) को तो छुपा देता। अलग़रज़ वह (अपने किये से बहुत ही) पशेमान हुआ ० इसी (वाक़िए की) वजह से हमने बनी इस्राईल को तहरीरी हुक्म दिया कि जो कोई जान के बदले नहीं, और मुल्क में फ़साद फैलाने (की सज़ा) के तौर पर नहीं, (बल्कि नाहक़) किसी को मार डाले, तो (उसकी निस्बत ऐसा समझा जायगा कि) गोया उसने तमाम आदमियों को मार डाला और जिसने मरते को बचा लिया, तो गोया उसने तमाम आदमियों को बचा लिया—

(तुम से कोई संयमता के विरुद्ध आचरण हो गया है, जो तुम्हारी भेंट स्वीकार नहीं हुई। अतएव मुझे बध करने की चिन्ता करने के बजाय, अपने सुधार का उपाय करो) ॥

(और) अगर (तू ने मेरे क़त्ल का फ़ैसला ही कर लिया है और) तू मुझे मारने के लिये मुझ पर हाथ उठायेगा, तो (मैंने भी यह इरादा कर लिया है कि) मैं तुझ पर बध करने के लिये हाथ न उठाऊँगा। मैं अल्लाह से डरता हूँ, जो समस्त संसार का पालन कर्त्ता है (कदाचित तेरे ही बध करने से वह मुझ से नाराज़ हो जाय) ॥

(यद्यपि ऐसी दशा में कि बिना कारण कोई किसी को मारने लगे, तो आज्ञा है कि जिस पर अत्याचार किया जाय वह उत्तर दे। लेकिन) मैं (तो यह) चाहता हूँ कि (अगर मेरे और तेरे बीच झगड़ा हो, तो) मेरा पाप * तेरे ज़िम्मे रहे और तेरा पाप भी (तेरे ज़िम्मे)। जिस से कि (मेरी गणना तो सन्तोषियों में हो और) तू नार्कीय मनुष्यों में शामिल हो जाय और अत्याचारियों के लिये यही दंड है (कि उन्हें नर्क में डाल दिया जाय) ॥

* टीका—हज़रत हाबील भी अगर प्रतिकार लेने के लिये क़बील को बध कर देते, तो यह क़त्ल उन का पाप न समझा जाता। परन्तु चूँकि किसी की जान लेनी प्रतिकार के रूप में ही क्यों न हो, एक अनुचित कार्य है। इस लिये हज़रत हाबील इस जायज़—परन्तु अनुचित कार्य्य को भी पाप ठहराते हैं:—हसन निज़ामी ॥

(परन्तु क़ाबील पर इस वार्तालाप का कोई प्रभाव न हुआ और वह अपने इरादे पर अड़ा रहा)। अतएव दुर्वासनाओं ने उसे अपने भाई का ख़ून करने पर (बिल्कुल) तैयार कर लिया और (उसने) उसको मार डाला और हानि उठाई ॥

(यह आदम के वंश की पहिली मौत थी अर्थात् पहिले पहिल यही आदमी मरा था। क़बील को मालूम न था कि मृतक देह का क्या किया करते हैं। वह हाबील को क़त्ल तो कर गया, परन्तु डर रहा था कि अगर किसी ने हाबील को मृतक देह को देख लिया, तो क्या होगा। इस लिये वह उसको कई रोज़ तक गठरी बांधे लिये लिये फिरा)। इसके बाद अल्लाह ने एक कव्वा भेजा, जो ज़मीन को कुरेदता था। जिस से कि उसको दिखादे कि अपने भाई की लाश क्यों कर छिपाये † (कव्वे के सिखाने से क़ाबील को समझ हुई और वह) बोला हाय अफ़सोस ! मुझ से कव्वे की बराबरी भी न हो सकी कि (उसकी शिक्षा के बिना) अपने भाई की लाश दफ़न कर देता। अभिप्राय यह है कि वह (बहुत) पछताया ॥

† टीका—कहते हैं कि कव्वे ने ज़मीन खोद कर एक मुर्दा कव्वे को दफ़न भी किया था। इस से उसकी सहानुभूति प्रकट हुई और क़बील पर प्रभाव पड़ा कि जानवर अपनी जाति से सहानुभूति रखता है और मैंने अपने भाई की जान लेली:—हसन निज़ामी ॥

(परन्तु क़ाबील वह मनुष्य था, जिसने पाप करने की नीव डाली। इस से पहिले पाप करना कोई जानता भी न था। बाद में जिन लोगों ने पाप किये, उन सब का सिलसिला इसी से मिलता है। अर्थात् इसी के अनुकरण स्वरूप पाप होते हैं। और वह अपने साथ दूसरों के पापों का भोग भी भुगतेगा। अतः) इसी लिये हमने इस्राईल के वंशजों को (यह) आज्ञा लिखी, कि जो किसी को (बिना प्रयोजन) क़त्ल करेगा (अर्थात् किसी की जान लेने पर (प्रतिकार-रूप से) नहीं या देश में झगड़ा फैलाने (के दंड स्वरूप) नहीं, (बल्कि बुरी वासना से या अपने अनुचित व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये) तो (उसके विषय में ऐसा समझा जायगा, जैसे) मानो उसने समस्त आदम के वंश को क़त्ल कर डाला और जिसने मरते को बचा लिया, तो (उसके विषय में समझा जायगा) मानो उसने समस्त मनुष्य जाति को बचा लिया—

لنَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ
ثُمَّ اِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ
لَمُسْرِفُوْنَ ۝ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا
اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ
مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ذٰلِكَ لَهُمْ
خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا
عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ
وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ
جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ

۶

और बनी इस्राईल के पास हमारे रसूल खुले खुले मोजिज़े लेकर आ भी चुके हैं। फिर इसके बाद (भी) इनमें से बहुतेरे (लोग) मुल्क में ज़ियादतियां करते फिरते हैं ० जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते और फसाद (फैलाने) की ग़रज़ से मुल्क में दौड़े दौड़े फिरते हैं, उनकी सज़ा तो बस यही है कि (ढूंढ २ कर) क़त्ल कर दिये जायँ या उनको सूली दी जाय या उनके हाथ पांव उल्टे (सीधे) काट दिये जायँ या उनको देस निकाला दिया जाय। यह तो दुनिया में उनकी रुस्वाई हुई और (इसके अलावा) आख़िरत में उनके लिये बड़ा अज़ाब (तैयार) है ० मगर (मुसल्मानो !) जो लोग इससे पहिले कि तुम उन पर काबू पाओ-तौबा कर लें, तो (उनके हाल से तअर्रुज़ न करो और) जाने रहो कि अल्लाह (लोगों के क़ुसूर) माफ करने वाला मेहर्बान है ० मुसल्मानो ! अल्लाह से डरते और (नीज़) उस तक (पहुँचने) के ज़रिये की जुस्तुजू करते रहो और उसके रस्ते में जान लड़ा दो, ताकि तुम फलाह पाओ ० जिन लोगों ने कुफ्र (इख़्तियार) किया—अगर उनके पास वह सारा (माल व मता भी) हो, जो ज़मीन में है और उतना ही उसके साथ और भी, ताकि रोज़ क़यामत के अज़ाब के बदले में उसको दे निकलें—

(क्योंकि नेकी हो या बुराई, एक के आरम्भ करने से दूसरों को प्रेरणा होती है)। और इस्राईल के वंश वालों के पास हमारे रसूल (जिनके द्वारा यह आज्ञा दी गई थी) खुली निशानियां लेकर आ चुके हैं। (मगर) इस पर भी उन में से बहुधा मनुष्य देश में अनर्थ (ही) करते फिरते हैं॥

(और) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से युद्ध करते हैं और देश में झगड़ा फैलाते फिरते हैं, उनका यही दंड है, कि उन्हें बध कर दिया जाय या (उन्हें) सूली पर चढ़ा दिया जाय या उनके हाथ और पाँव आमने सामने की ओर से काट डाले जायँ। (अर्थात् हाथ दायां हो, तो पांव बायां) या (जहाँ वह हों) उस जगह से (उन्हें) हटा दिया जाय। (अर्थात् स्वदेश से विदेश कर दिया जाय)। यह (तो) उनकी संसार में बदनामी (का साधन) है और मरणान्त में उनके लिये बड़ा (घोर) अज़ाब (दुःख तैयार) है। मगर (ऐ मुसल्मानो !) जिन्होंने तुम्हारे आधीन होने से पहिले तौबा कर ली, तो जान लो कि अल्लाह (लोगों के) अपराध क्षमा करने वाला दयालु है। (उनसे कुछ मत कहो)॥

ऐ मुसल्मानो ! अल्लाह से डरते रहो और उस तक (पहुँचने का) साधन ढूंढते रहो। (अर्थात् अल्लाह का रसूल अल्लाह की जो आज्ञा तुम्हें दे, उनके पालन करने का अधिक से अधिक प्रयत्न करो)। और अल्लाह की राह में जिहाद (धर्म-युद्ध) करो, जिससे कि तुम्हारा (परलोक में भी) भला हो (और संसार में भी)॥

जो लोग कि काफ़िर हैं, उनके पास प्रलय के दुःखों से बचने के लिये अपने बदले में देने के लिये यदि भू-मंडल की समस्त वस्तुयें (और समस्त धन, दौलत हो) और (बल्कि) इसके साथ इतना ही और (भी) हो—

(ताहम यह मावज़ा) उनसे क़बूल नहीं किया जायगा और उनके लिये अज़ाब दर्दनाक (तैयार मौजूद) है ० चाहेंगे कि (दोज़ख़ की) आग से निकल भागें, मगर वह वहां से नहीं निकलने पायेंगे और उनके लिये अज़ाब है (जो उनकी जान का) लागू (हो जायगा) ० और (मुसल्मानो !) मर्द चोरी करे, तो–और औरत चोरी करे, तो–उनके (इस) करतूत के बदले में (बिला इम्तियाज़) दोनों के (दहिने) हाथ काट डालो। (यह) ताज़ीर (उनके हक़ में) ख़ुदा (की तरफ़) से (क़रार पाई) है और अल्लाह ज़बरदस्त (और इन्तिज़ामी मस्लहतों से) वाक़िफ़ है ० तो जो अपने क़ुसूर के पीछे तौबा कर ले और (अपनी आदत) सँवार ले, तो अल्लाह उसकी तौबा क़बूल कर लेता है, क्योंकि अल्लाह (बन्दों के गुनाह) बख़्शने वाला मेहर्बान है ० (ऐ मुख़ातब ! चोर की तौबा क़बूल होने का तअज्जुब न कर)। क्या तुझ को मालूम नहीं कि आस्मानों और ज़मीन में अल्लाह ही की हुकूमत है। जिस को चाहे अज़ाब दे और जिस को चाहे माफ़ करे और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० ऐ पैग़म्बर ! जो लोग कुफ़्र पर लपकते हैं, उनकी वजह से तुम आज़ुर्दा ख़ातिर न हो। (यह दो क़िस्म के लोग हैं)। बाज़ तो ऐसे (मुनाफ़िक़) हैं, जो अपने मुंह से तो कह देते हैं कि हम ईमान लाये और उनके दिल (हैं कि मुतलक़) ईमान नहीं लाये और बाज़ यहूदी हैं (झूठी) झूठी बातों की कन्सुइयाँ लेते फिरते हैं। (और) कन्सुइयाँ (भी) लेते फिरते हैं, (तो) दूसरे (दूसरे) लोगों के वास्ते। जो (हनोज़) तुम्हारे पास (तक) नहीं आये—

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ
مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ
فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ
اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهٖ
وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ۭ
وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ
لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ
الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ
قُلُوْبُهُمْ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۚ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ
سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ۭ يُحَرِّفُوْنَ

ع

तो उनका (यह सब धन दौलत व्यर्थ है। वह) स्वीकार न किया जायगा और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब (दारुण दुःख आवश्यक) है। (वह) अग्नि-पूर्ण (नर्क) से निकल भागना चाहेंगे, (लेकिन) वह उससे निकल न सकेंगे। उन्हें स्थायी अर्थात् सदैव के लिये अज़ाब (दुःख) होगा ॥

और (मुसल्मानो !) पुरुष चोर हो या स्त्री चोर (अर्थात् चोरी करने वाला पुरुष हो या स्त्री–बिना किसी भेद के) उनके (उस) आचरण के बदले में उनके (दाहिने) हाथ (गट्टे पर से) काट डालो। (यह) अल्लाह की ओर से उनका दंड (नियत हुआ) है, और (इस दण्ड की कठोरता पर आश्चर्य न करो)। अल्लाह शक्ति शाली (और) बुद्धिमान है (दुनिया की समस्त युक्तियां जानता है) ॥

फिर (इसी के साथ २ यह भी बात है कि) जो (शख़्स) अपने अपराध के बाद तौबा करले और (अपना) सुधार करले, तो अल्लाह उसकी तौबा स्वीकार कर लेगा। (क्योंकि) अल्लाह क्षमा करने वाला (और) कृपालु है ॥

(ऐ सम्बोधित मनुष्य !) क्या तुझे नहीं मालूम, कि आस्मानों और पृथ्वी का शासन अल्लाह ही का है। (वह) जिस को चाहे अज़ाब दे और जिस को चाहे क्षमा करे और अल्लाह हर वस्तु पर अधिकार रखता है ॥

जो (अभागे स्वयं) कुफ़्र पर दौड़ (दौड़) कर गिरते हैं, उनका ऐ रसूल ! तुम शोक न करो। (यह लोग तुम्हारी सहानुभूति के अधिकारी नहीं हैं)। कुछ तो (उनमें) वह लोग हैं, कि (केवल) अपने मुंह से कहते हैं कि हम मुसलमान हैं। अन्यथा (वास्तव में) उनके दिल मुसल्मान नहीं (हैं। फिर इन बातों से कुढ़ने की क्या ज़रूरत है ? उन्हें काफ़िर ही समझो) और कुछ उनमें वह हैं, जो (खुल्लम खुल्ला) यहूदी हैं। वह (तुम्हारे पास आते हैं और) कनसुइयाँ लेते हैं (अर्थात् जासूसी करते हैं। जिस से कि) झूठ बोलने के लिये (साधन प्राप्त करें)। वह दूसरे लोगों के—जो तुम तक नहीं आये, जासूस हैं—

الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ يَقُولُونَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ
هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا وَمَنْ يُّرِدِ
اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا
خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝
سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ فَاِنْ
جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ
وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا وَاِنْ
حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ اِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ
وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ
مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝
اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۝ يَحْكُمُ

(यहकाम तौरात मसलन हुक्म सङ्गसारी के) अल्फ़ाज़ को उनके ठिकाने (यानी मानी मुतश्रय्यन हुये पीछे जगह) से बे जगह करते हैं (और लोगों से) कहते हैं कि (हम जो कहते हैं) अगर (मुहम्मद की तरफ़ से) तुमको यही (हुक्म) दिया जाय, तो उसको (तस्लीम कर) लेना और अगर तुमको (बेपैगिही) यही हुक्म न दिया जाय, तो (उस से) पहतियात करना और (ऐ पैग़म्बर ! (जिसको अल्लाह (बे दीनी की) बला में मुब्तला रखना चाहे, तो उसके लिये ख़ुदा पर तुम्हरा कुछ भी ज़ोर नहीं चल सक्ता। यह वह लोग हैं कि ख़ुदा भी उनके दिलों को (मासियत की गन्दिगी से) पाक करना नहीं चाहता । इन लोगों की दुनिया में (भी) रुस्वाई है आख़िरत में (भी) इनके लिये बड़ा सख़्त अ़ज़ाब है ० (यह लोग झूटी) झूटी बातों की कन्सुइयां लेते फिरते हैं (और)माल हराम डकोसे चले जाते हैं। तो (ऐ, पैग़म्बर !) अगर (यह लोग अपने मामिलात फ़ैसला कराने को) तुम्हारे पास आयें तो तुम (को इख़्तियार है कि) इन में फ़ैसला करो या इन (के मामिलात में दख़्ल देने) से किनारा कशी करोगे, तो (यह) तुमको किसी तरह का भी नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेंगे । और अगर फैसला करो, तो इन्साफ़ के साथ फैसला करना। क्योंकि अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है ० और (यह लोग) क्यों तुम्हारे पास झगड़े फ़ैसले को लाते हैं, जब कि ख़ुद इनके पास तौरात है (और) उस में हुक्म ख़ुदा (मौजूद) है। फिर इसके बाद (भी हुक्म ख़ुदा से) रूगर्दानी करते हैं और इनको (सिरे से) ईमान ही नहीं ० बेशक हम (ही) ने तौरात नाज़िल की, जिस में (हर तरह की) हिदायत और नूर(ईमान) है—

यह कलाम (इलाही) को उसके ठिकाने से बे ठिकाने कर देते हैं और कहते हैं—अगर तुम्हें (मुहम्मद के यहां से) यह आज्ञा * मिले (जो हम बतलाते हैं) तो स्वीकार कर लेना और यह आज्ञा न मिले, तो (उस से) इन्कार करना। (सो ऐसे लोगों से क्या आशायें हो सकी हैं। उनके आचरणों से प्रभावान्वित न हो)। और (ऐ रसूल !) जिसे अल्लाह गुम्राह रखना पसन्द करे, तो उसके लिये अल्लाह पर तुम्हारा कुछ ज़ोर नहीं चल सक्ता । यह वह लोग हैं, जिन को अल्लाह नहीं चाहता कि उनके दिल पवित्र करे। उनके (भाग्य में) संसार में नीचता लिखी हुई है और प्रलय में उन्हें बड़ा अ़ज़ाब होगा॥

* टीका—रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम का जब प्रभाव बढ़ गया, तो बहुधा काफ़िर भी अपने मुक़द्दमे रसूलुल्लाह की ख़िदमत में लाने लगे। परन्तु उन की इच्छा यह होती थी, कि फ़ैसला वह किया जाय, जो वह चाहें। रसूलुल्लाह ऐसा नहीं करते थे, तो उन्हें रसूलुल्लाह का फ़ैसला भी स्वीकार न होता था और उस से रसूलुल्लाह को रंज पहुँचता था। इस आयत में इसी बात की ओर संकेत है और आगे की आयत भी इसी बात के विषय में है। अतः आज्ञा होती है:—हसन निज़ामी॥

(यह लोग) कनसुइयां लेते फिरते हैं (जिस से कि) झूठ बोलने के लिये (साधन प्राप्त करें)। और (यह लोग) हराम (के माल) को बेधड़क खाने वाले हैं। तो (ऐ रसूल !) यदि (अपने मुक़द्दमे लेकर यह) तुम्हारे पास आयें, तो तुम्हें (अधिकार है—उचित समझो तो) उनका फ़ैसला कर दिया करो (उचित न समझो, तो) उन (के मामले) से अलग रहो और अगर तुम उनके मामलों में दख़ल देने से बचोगे, तो (यह) तुम्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकेंगे और अगर फैसला करो, तो (रिआयत व भय की आवश्यकता नहीं है)। उनका (भी) न्याय (ही) के साथ फैसला करना। अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है॥

और यह लोग तुम्हें क्या न्याय कर्त्ता बनायेंगे (तुम्हारे न्याय को क्या मानेंगे)। इनके पास तौरेत (मौजूद) है, जिस में अल्लाह की (यही) आज्ञा (लिखी हुई) है। इसके होते हुये (उस से तो) फिरे जाते हैं। यह लोग मानने वाले हैं भी नहीं † ॥

† टीका—हुआ यह था कि एक प्रतिष्ठित यहूदी और एक मुख्य यहूदन ने ज़िना अर्थात् व्यभिचार किया था और उनके प्रतिष्ठित होने के कारण यहूदियों की जाति वालों ने चाहा कि तौरेत में जो ज़िना करने वालों को पत्थर मार कर जान से मार डालने की आज्ञा है, वह इन पर से टल जाय। इस लिये यह विचार करके भी, कि देखें रसूलुल्लाह ऐसे अभियुक्त को क्या दंड देते हैं। इन व्यभिचारियों का मुक़द्दमा रसूलुल्लाह ही की सेवा में उपस्थित कर दिया गया । मगर आपने भी जब पत्थर मार कर जान लेने की आज्ञा दी, तो मुक़द्दमा पेश करने वाले सिट पिटाये और कहने लगे कि हमारे धर्म के अनुसार न्याय नहीं हुआ। अन्त में झूठों को घर तक पहुँचाया गया और तौरेत में से भी हुक्म निकाल कर दिखाया गया। इस घटना का वर्णन कदाचित पहिले भी किसी स्थान पर आ चुका है:—हसन निज़ामी॥

तौरेत (तो उनके समीप भी) निश्चित-रूप से हम (ही) ने अवतीर्ण की (थी और यह लोग) मानते हैं कि उस में (हर प्रकार का) उपदेश व ज्ञान है—

بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ
وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ
وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ
وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا
وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْكٰفِرُوْنَ ● وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ اَنَّ
النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ
بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ
وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ
كَفَّارَةٌ لَّهٗ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ● وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ
بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ
التَّوْرٰىةِ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى

وَنُوْرٌ

(.खुदा के) फ़र्मां बर्दार (बन्दे) अम्बिया (बनी इस्राईल) उसी के मुताबिक़ यहूदियों को हुक्म देते चले आये हैं और (अम्बिया के अलावा यहूदियों के) रिब्बी (यानी मशायख़) और उ़लमा (भी)। क्योंकि किताबुल्लाह के मुहाफ़िज़ ठैराये गये थे और (वह) उसकी मुहाफ़िज़त करते भी रहे। तो (ऐ इस वक़् के यहूदियो !) लोगों से न डरो और हमारा ही डर मानो और हमारी आयतों के माविज़ में (दुनिया के) नाचीज़ फ़ायदे न लो और जो .खुदा की उतारी हुई (किताब) के मुताबिक़ हुक्म न दे, तो यही लोग काफ़िर हैं ० और हमने तौरात में यहूद को तहरीरी हुक्म दिया था कि जान के बदले जान, और आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत, और ज़ख़्मों का बदला (वैसे ही ज़ख़्म)। फिर जो (मज़्लूम) बदला माफ़ कर दे, तो वह उस (के गुनाहों) का कफ़्फ़ारा होगा और जो .खुदा की उतारी हुई (किताब) के मुताबिक़ हुक्म न दे, तो वही लोग बे इन्साफ़ हैं ० और बाद को इन ही (पैग़म्बरों) के क़दम ब क़दम हमने मर्यम के बेटे ईसा को चलाया कि वह तौरात कि जो उनके (वक़् में) पहिले से (मौजूद) थी, तस्दीक़ करते थे। और उनको हमने इन्जील (भी) दी, जिस में (हर तरह की) सूझ—

उसी के अनुसार अल्लाह के आज्ञाकारी (यहूदी) नबी, यहूदियों को हुक्म देते थे और (उसी के अनुसार) संत और ज्ञानी (अर्थात् उनके महापुरुष और विद्वान भी) आज्ञा देते रहे। क्योंकि नबियों के बाद संत, विद्वान ही अल्लाह की किताब के रक्षक ठहराये गये थे और उसकी रक्षा करते थे। सो (ऐ आज कल के यहूदियों ! सत्य बात का ख़्याल करो और) लोगों से न डरो और मुझ से डरो और मेरी आयतों को (संसार के) थोड़े लाभ के बदले में न बेचो। जो अल्लाह की अवतीर्ण की हुई (किताब) के अनुसार आज्ञा न दे, तो ऐसे ही लोग (तो) काफ़िर (होते) हैं॥

हमने तौरेत में यहूदियों को लिखित आज्ञा दी थी, कि जान का बदला जान है और आँख का बदला आँख, और नाक का बदला नाक, और कान का बदला कान, और दाँत का बदला दाँत, और घावों का बदला उनके बराबर के घाव। इसमें अमीर, ग़रीब का कोई भेद नहीं है। यूं अगर कोई (अत्याचार पीड़ित अपने ऊपर अत्याचार करने वाले का अपराध) क्षमा कर दे, तो यह उस (के पापों) का प्रायश्चित हो जावगा। और जो अल्लाह की उतारी हुई (किताब) के अनुसार आज्ञा न दे, तो ऐसे ही लोग (तो) अत्याचारी (होते) हैं, (कि धनवान अपराधियों की रिश्वत करते और न्याय को अलग रख देते हैं)॥

और (उन पैग़म्बरों के) पश्चात हमने मर्यम के बेटे ईसा को भेजा—उन ही के क़दम ब क़दम। (वह) अपने से पहिली किताब तौरेत का समर्थन करते थे। और उन्हें हमने इन्जील (नामक किताब) दी कि उस में (भी) शिक्षा—

وَنُوْرٌ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ
وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ
الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۭ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ
بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ
وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ عَمَّا جَاۗءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۭ
لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ
لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ
فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ
جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝
وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَ
هُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

और नूर (हिदायत मौजूद) है और तौरात जो इस के (नुज़ूल के ज़माने में) पहिले से (मौजूद) थी, (यह इन्जील) उस की तस्दीक़ भी करती और (ख़ुद भी) परहेज़गारों के लिये हिदायत और नसीहत है ० और अहल इन्जील को (ईसाई होने की हैसियत से) चाहिये (था) कि जो (हुक्म) ख़ुदा ने उस में उतारे है, उसी के मुताबिक़ हुक्म दिया करें और जो ख़ुदा के उतारे हुये (हुक्मों) के मुताबिक़ हुक्म न दें, तो यही लोग ना फ़र्मान हैं ० और (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुम्हारी तरफ़ (भी) किताब बरहक़ उतारी कि जो किताबें इसके (उतरने के वक़्त) पहिले से (मौजूद) हैं, उनकी तस्दीक़ करती है और उनको मुहाफ़िज़ (भी) है। तो जो कुछ ख़ुदा ने (तुम पर) उतारा है, तुम (भी) उसी के मुताबिक़ इन लोगों में हुक्म दो और जो हक़ बात तुमको (ख़ुदा से) पहुंची है, उसको छोड़ कर इनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो। हमने (वक़्त फ़वक़्त) तुम में से हर एक (फ़रीक़) के लिये एक शरीअत ठैराई और तरीक़ा (ख़ास) और अगर अल्लाह चाहता, तो तुम सबको एक ही (दीन की) उम्मत करता। लेकिन (मुख़्तलिफ़ शरीअतों के भेजने से) यह मक़्सूद (रहा) है कि जो हुक्म (तुम्हारी हालत के मुनासिब वक़्त फ़वक़्त) तुमको दिये, उन में (वक़्त फ़वक़्त) तुमको आज़माये। तो (मुसलमानो !) तुम (इस वक़्त की इस्लामी शरीअत के मुताबिक़) नेक कामों की तरफ़ लपको, (क्यों कि) तुम सबको अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है। तो जिन २ बातों में तुम लोग (दुनिया में) इख़्तिलाफ़ करते रहे हो, वह तुमको (सब का हाल) बता देगा। (ग़रज़ ऐ पैग़म्बर ! तुम तो अपनी शरीअत पर क़ायम रहो) ० और जो (किताब) ख़ुदा ने (तुम पर) उतारी है, उसी के मुताबिक़ इन लोगों में हुक्म दो और इनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो और इन (के दांव घात) से डरते रहो कि जो (किताब) ख़ुदा ने तुम्हारी तरफ़ उतारी है (मबादा) उसके किसी हुक्म से यह लोग तुम को भटका दें—

व प्रकाश अर्थात् ज्ञान था और (वह भी) अपने से पहिली किताब-तौरेत को समर्थक थी और (ख़ुद अल्लाह से) डरने वालों के लिये शिक्षा वं उपदेश (का पूर्ण संग्रह) था ॥

इन्जील वालों को (भी) चाहिये, कि अल्लाह ने जो कुछ उस में उतारा है, उसी के अनुसार आज्ञा दिया करें और जो उसके अनुसार हुक्म नहीं करता कि जो अल्लाह ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग (तो) अवज्ञा कारी हैं ॥

और (ऐ रसूल !) हमने तुम पर (भी) सच्ची किताब अवतीर्ण की है। जो अपने से पहिली किताबों का समर्थन (भी) करती है और
उन (के विषय) की रक्षक (भी) है। सो जो कुछ अल्लाह ने (तुम पर) अवतीर्ण किया है, उसी के अनुसार उन (के परस्पर मामलों) में
फ़ैसला किया करो और जो सच्ची बात तुम्हें पहुंची है, उसे छोड़ कर उन लोगों की इच्छा के अनुसार कार्य्य न करो। हमने तुम में से प्रत्येक के लिये
(उस की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार) एक (ख़ास) ईश्वरीय नीति व नियम नियत करदी थी (लेकिन विभिन्न जातियों का उन पर प्रकट
रूप से विभिन्न ख़ुदाई नीतियों और विभिन्न मार्गों में वास्तविक और सिद्धन्त रूप से कोई मत भेद नहीं था) अल्लाह चाहता, तो तुम सब को एक ही
उम्मत (और एक ही जाति) बना देता। लेकिन (विभिन्न ईश्वरीय नीतियों के भेजने से) प्रयोजन यह था, कि जो (नई) आज्ञाएँ तुम्हें ऐसी दी गई
हैं (जो प्रकट रूप से तुम्हें पूर्व की ईश्वरीय नीतियों के विरुद्ध मालूम होती हैं) उन में (अल्लाह तआला) तुम्हारी परीक्षा करे (कि तुम धर्म की सत्यता
और धार्मिक सिद्धान्तों को कहाँ तक समझते हो। नई आज्ञाओं को अपने लिये लाभ दायक और पूर्व की ख़ुदाई नीतियों का समर्थक समझ कर और
उनको अल्लाह ही की आज्ञायें मान कर उन पर अमल करते हो या अन्ध अनुकरण में फँस कर और नई आज्ञाओं को पहिली धर्म पुस्तकों का विरोधी
समझ कर उनको अल्लाह की ओर से नहीं मानते)। अतः (लोगो !) तुम (धर्म की सच्चाई को समझो और उन) नेक बातों की तरफ़ दौड़ो
(जिनका इस समय की ईश्वरीय नीतियों ने तुम्हें उपदेश दिया। धर्म सब अल्लाह के हैं) और तुम सबको अल्लाह ही को ओर लौट कर जाना है।
वहाँ अल्लाह तआला तुम्हें, जिन २ बातों में तुम मत-भेद करते रहे हो (सब की वास्तविक सच्चाई) बता देगा ॥

(अभिप्राय यह है कि तुम तो अपनी शरीअत पर क़ायम रहो) । जो कुछ (तुम पर) अल्लाह ने अवतीर्ण किया है, उसी के अनुसार (लोगों)
के परस्पर फ़ैसला करो और उनकी इच्छाओं के पीछे न चलो और उन से बचते रहो कि वह तुम्हें ख़ुदा के भेजे हुए किसी हुक्म से बहकायें—

اِلَيْكَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ
يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ
النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ۞ اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ
وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۞
ع يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰى
اَوْلِيَآءَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ
مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ۞ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ تُصِيْبَنَا
دَآئِرَةٌ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِىَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ
فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَآ اَسَرُّوْا فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ۞
وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ
جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا

خٰسِرِيْنَ

फिर अगर (यह लोग तुम्हारा कहा) न मानें, तो जाने रहो कि ख़ुदा ही को मन्ज़ूर है कि इनके बाज़े गुनाहों की वजह से इन पर कोई मुसीबत ला नाज़िल करे और बेशक बहुत से लोग अल्बत्ता ना फ़र्मान हैं ० क्या (इस वक़् में ज़मानए) जाहिलीयत का हुक्म चाहते हैं? और जो लोग यक़ीन करने वाले हैं, उनके लिये अल्लाह से बेहतर हुक्म देने वाला (और) कौन हो सकता है ? ० मुसल्मानो ! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ। यह (लोग तुम्हारी मुख़ालिफ़त में बाहम) एक दूसरे के दोस्त हैं और तुम में से कोई इनको दोस्त बनायेगा, तो बेशक (वह भी) इन ही में का (एक) है। क्योंकि ख़ुदा (ऐसे) ज़ालिम लोगों को राह रास्त नहीं दिखाया करता ० तो (ऐ पैग़म्बर !) जिन लोगों के दिलों में (बेईमानी का) रोग है, तुम उनको देखोगे कि इन (यहूद व नसारा के दोस्त बनाने) में (बड़ी) जल्दी करते हैं। कहते (क्या) हैं कि हमको तो इस बात का डर लग रहा है कि कहीं (ऐसा न हो, बैठे बिठाये) हम किसी मुसीबत के फेर में आ जायँ। सो कोई दिन जाता है कि अल्लाह (मुसल्मानों की) फ़तह या कोई (और) अम्र अपनी तरफ़ से पेश लायेगा। तो (उस वक़् यह मुनाफ़िक़) उस (बद गुमानी) पर—जो (इस्लाम के ग़लबे और उसकी सदाक़त की निस्बत) अपने दिलों में छुपाते थे, पशेमान होंगे ० और (इस से मुसल्मानों पर इनका निफ़ाक़ खुल जायगा, तो) मुसल्मान (इनके हाल पर अफ़्सोस करके आपस में) कहेंगे कि क्या यह वही लोग हैं, जो (ज़ाहिर में) बड़े ज़ोर से अल्लाह की क़स्में खाते (और हम से कहा करते) थे कि हम तुम्हारे साथ हैं (और अन्दर अन्दर यहूद की ताईद में कोशिशें करते थे। तो) इनका सारा किया (धरा) अकारत हुआ —

और यदि (वह तुम्हारी बात) न मानें, तो जान लो कि अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें उनके बाज़े गुनाहों का मज़ा चखाये और लोगों में बहुधा अवज्ञाकारी (ही) होते हैं। (इस लिये उनके न मानने से प्रभावान्वित न होना चाहिये) ॥

(यह लोग) क्या अब अज्ञानता (के समय) का (सा) फ़ैसला चाहते हैं ? (चाहते हैं, तो चाहा करें। अल्लाह के हुक्म पर) यक़ीन रखने वालों के लिये अल्लाह (के हुक्म) से अच्छा किस का हुक्म हो सक्ता है ॥

ऐ मुसल्मानो ! (धर्म के मुक़ाबले में) यहूदी व ईसाइयों को मित्र न बनाओ। (क्यों कि) यह (दोनों तुम्हारे मुक़ाबले में) एक दूसरे के मित्र हैं और तुम में से, जो कोई (अपने धर्म के विरुद्ध) उनको मित्र बनायेगा (तो समझ लो कि) वह उन्हीं में का एक (व्यक्ति) है। अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं (दिया) करता ॥

अतएव—जिनके दिल में (धर्म में अविश्वास करने का) रोग है, तुम उन्हें देखोगे कि उन (यहूदियों और ईसाइयों) में (कैसे) भाग भाग कर (जाते हैं और) मिलते हैं। (यह लोग इस विचार में हैं और) कहते (भी) हैं कि हमको डर लगता है कि कहीं (यहूदियों और ईसाइयों से बिल्कुल अलग हो जाने के कारण) हम पर आपत्ति न आ जाय। यथा शीघ्र अल्लाह (मुसल्मानों की) विजय या कोई (और) बात अपनी तरफ़ से प्रकट करेगा (उस समय यह मुनाफ़िक़ अपने) इस (विचार पर लज्जित होंगे, जिसे दिल में छिपाये हुये थे (अर्थात् इस्लाम का न जाने क्या परिणाम हो। फिर अपने पुराने साथियों को क्यों छोड़ा जाय) ॥

और (जब उनका द्वेष खुल जायगा, तो) मुसल्मान (आपस में) कहेंगे कि क्या यह वही लोग हैं, जो बड़े ज़ोर से अल्लाह की शपथें खाते थे (और कहते थे) कि हम तुम्हारे साथ हैं। उनके (सब) कर्म नष्ट हो गये और (यह) घाटे में आ गये ॥

और (सरासर) नुक़सान में आ गये ० मुसल्मानो ! तुम में से कोई अपने दीन (इस्लाम) से फिर जाय, तो ख़ुदा (को इसकी ज़रा भी पर्वा नहीं। वह) ऐसे लोग (ला) मौजूद करेगा, जिनको वह दोस्त रखता होगा और वह उसको दोस्त रखते होंगे। मुसल्मानों के साथ नर्म, काफ़िरों के साथ कड़े, अल्लाह की राह में अपनी जानें लड़ा देंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का (कुछ) बाक नहीं रक्खेंगे। यह (भी) ख़ुदा का (एक) फ़ज़्ल है, जिसको चाहे दे और अल्लाह (की रहमत बड़ी) वसीअ़ (है और वह सब के हाल से) वाक़िफ़ है ० (मुसल्मानो !) बस तुम्हारे तो यही दोस्त हैं, अल्लाह और अल्लाह का रसूल, और मुसल्मान, जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और वह (हमा वक़्त ख़ुदा के आगे) झुके रहते हैं० और जो अल्लाह और अल्लाह के रसूल और मुसल्मानों का दोस्त होकर रहेगा, तो (वह अल्लाह वाला है और) अल्लाह वालों ही का बोल बाला है ० मुसल्मानो ! जिन्हों ने तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बना रक्खा है (यानी यहूद व नसरा,) जिनको तुम से पहिले किताब दी जा चुकी है (उनको) और मुश्रिकीन को (अपना) दोस्त न बनाओ। और अगर तुम (सच्चे) मुसल्मान हो, तो ख़ुदा से डरते रहो ० और जब तुम (अज़ान देकर लोगों को) नमाज़ के लिये बुलाते हो—

خٰسِرِيْنَ ۞ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ
دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ
اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ
يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ
لَآئِمٍ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۞ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ۞ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۞
يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا
دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۞ وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ

ऐ मुसल्मानो ! तुम में से जो कोई (इस्लाम) धर्म से फिरेगा, तो (अल्लाह को उस की पर्वाह नहीं है)। अल्लाह (उनकी जगह) बहुत जल्द ऐसे लोगों को ले आयेगा, कि अल्लाह उनको चाहता है और वह उसको चाहते हैं। (और जो) मुसल्मानों के साथ नर्म हैं और काफ़िरों के साथ सख़्त (और जो) अल्लाह के मार्ग में जिहाद (धर्म-युद्ध) करते हैं और किसी की धिक्कार (और मलामत) से नहीं डरते। यह अल्लाह की कृपा है, जिस पर चाहता है-करता है और अल्लाह विस्तार वाला और सचेत * है॥

* टीका—यह यमन देश के मुसल्मानों के विषय में मंगल समाचार दिया गया था। जिन्हों ने रसूलुल्लाह की मृत्यु के उपरान्त हज़रत सिद्दीक़ अकबर की हिदायत के अनुसार इस्लाम-धर्म त्यागने वाले अरब निवासियों को ठीक किया और अल्लाह के मार्ग में अपनी जानें लड़ा दीं—हसन निज़ामी॥

(ऐ मुसल्मानो ! अगर तुम सच्चे दिल से मुसल्मान हो गये हो, तो काफ़िरों से मित्रता क्यों करते हो ?) तुम्हारा मित्र तो केवल अल्लाह और उसका रसूल और वह मुसल्मान हैं, जो नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के आगे आजिज़ी (बिनती) से सिर झुकाते हैं॥

और जो अल्लाह और उसके रसूल और (अपने साथी) मुसल्मानों को मित्र रक्खेगा, तो (वही विजयी रहेगा)। अल्लाह ही का दल सब पर ग़ालिब (आया करता) है॥

ऐ मुसल्मानो ! जो लोग तुम्हारे धर्म को हँसी और खेल बनाते हैं। अर्थात् वह, जिन्हें तुम से पहिले किताब दी जा चुकी है (उनको) और (दूसरे) काफ़िरों (मुश्रिकों) को अपना मित्र न बनाओ और अगर तुम वास्तव में मुसल्मान हो, तो अल्लाह से डरो॥

जब तुम नमाज़ के लिये (लोगों को) पुकारते हो—

اتَّخَذُوهَا هُزُوًا وَلَعِبًا ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ
قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُونَ مِنَّا إِلَّا
أَنْ آمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ
وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فٰسِقُونَ ● قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ
بِشَرٍّ مِنْ ذٰلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللّٰهِ مَنْ لَعَنَهُ اللّٰهُ
وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ
وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ أُولٰئِكَ شَرٌّ مَكَانًا
وَأَضَلُّ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ● وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا
آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا
بِهِ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ● وَتَرَىٰ كَثِيرًا
مِنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ●
لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ

तो यह लोग नमाज़ को हँसी और खेल बनाते हैं। (और) यह (हरकत बेजा इनसे) इस लिये (सरज़द होती है) कि यह ऐसे (बेवकूफ़) लोग हैं कि (बिल्कुल) नहीं समझते ० (ऐ पैग़म्बर ! यहूद से) कहो कि ऐ अहल किताब ! हम (मुसल्मानों) में क्या ऐब पाते हो ? यही ना–कि हम अल्लाह पर और जो (कु़र्आन) हमारी तरफ़ उतरा है, उस पर और जो (किताब इस से) पहिले उतर चुकी है, उस पर ईमान ले आये हैं और यह कि तुम में के अक्सर ना फ़रमान हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि भला मैं तुमको (वाक़ई ऐबदार) बताऊँ, जो ख़ुदा के नज़दीक (तुम्हारे) इन (फ़र्ज़ी ऐबदारों) से कहीं बदतर बदले के मुस्तौजिब हैं। (वाक़ई ऐबदार) वह (हैं) जिन पर ख़ुदा ने लानत की और उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल किया और बाज़ (की सूरतें मस्ख़ करके उन) को बन्दर और सुअर बना दिया और उन्होंने (ख़ुदा को छोड़ कर) शैतान (के बहकाने से बछड़े) की परस्तिश की। तो यह लोग (यानी तुम) दर्जे में (हम से कहीं) बदतर ठैरे और राह रास्त से बहुत (दूर) भटके हुये ० और (मुसल्मानो !) जब (यह लोग) तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं, हम ईमान लाये। हालांकि कुफ़्र ही को साथ लेकर आये थे और वह कुफ़्र ही को साथ लिये चले भी गये। और जो (निफ़ाक़ दिल में) छुपाये हुये थे, अल्लाह उसको ख़ूब जानता है ० और (ऐ पैग़म्बर !) तुम इनमें से बहुतेरों को देखोगे कि गुनाह की बात (यानी झूठ) और ज़ुल्म और माल हराम के खाने पर गिरे पड़ते हैं। अलबत्ता बहुत ही बुरे हैं, वह (काम) जो (यह लोग) करते रहे हैं ० इनको इनके रिब्बी (यानीं मशायख़) और उलमा झूठ बोलने और माल हराम के खाने से क्यों नहीं मना करते—

तो यह (किताब वाले और मुश्रिक तुम्हारे) इस (कार्य) को हँसी और खेल ठहराते हैं। यह इस लिये कि यह लोग निर्बुद्धि हैं। (इतना नहीं ख़याल करते कि अज़ान में अल्लाह की बड़ाई बयान की जाती है और अल्लाह की बड़ाई से कोई धर्म ख़ाली नहीं है)॥

(ऐ रसूल !) तुम (उन से) पूछो कि, ऐ किताब वालो ! तुमको हम से क्या शत्रुता है ? यही ना, कि हम अल्लाह पर और जो कुछ हमारी ओर अवतीर्ण हुआ है और जो कुछ पहिले अवतीर्ण हो चुका है, उस पर ईमान ले आये हैं। यद्यपि तुम में से बहुधा (लोग) दुराचारी हैं॥

(उन से) कहो कि मैं तुमको बतलाऊँ—अल्लाह के समीप इन (मुसल्मानों और काफ़िरों) में (वास्तव में) कौन बुरे फल के अधिकारी हैं। वह, जिन पर अल्लाह ने फिटकार की और उन पर अपना क्रोध अवतीर्ण किया और उनमें से बाज़ को बन्दर और बाज़ को सुअर कर दिया और (यह इन बड़ाई के दावे करने वालों के बड़ों का हाल है)। उन्होंने शैतान को (अपना) पूज्य बना लिया। (उसके कहने पर चलने लगे)। प्रकट है कि यह लोग (मुसल्मानों से) पद में कहीं निकृष्ट हैं और सच्चे मार्ग से बहुत (दूर) भटके हुए हैं॥

और (ऐ मुसल्मानो ! इन किताब वालों का यह हाल है कि) जब तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं–हम ईमान ले आये (हैं)। यद्यपि काफ़िर ही आते हैं और काफ़िर ही चले जाते हैं। और (यह लोग) जो कुछ (दिल में) छिपाये हुए (होते) हैं, अल्लाह उसे ख़ूब जानता है॥

और (ऐ रसूल !) तुम उनमें से बहुधा (लोगों) को देखोगे कि पाप (अर्थात् झूठ बोलने) पर और ज़ुल्म (करने) पर और हराम खाने पर गिरे पड़ते हैं। बहुत ही बुरे काम हैं, जो (यह) लोग कर रहे हैं॥

इनके महा पुरुष और विद्वान् उन्हें पाप की बात कहने—

الاثم واكلهم السحت لبئس ما كانوا يصنعون
وقالت اليهود يد الله مغلولة غلت ايديهم
ولعنوا بما قالوا بل يداه مبسوطتن ينفق كيف
يشاء وليزيدن كثيرا منهم ما انزل اليك
من ربك طغيانا وكفرا والقينا بينهم
العداوة والبغضاء الى يوم القيمة كلما
اوقدوا نارا للحرب اطفاها الله ويسعون
في الارض فسادا والله لا يحب المفسدين
ولو ان اهل الكتب امنوا واتقوا لكفرنا
عنهم سياتهم ولادخلنهم جنت النعيم
ولو انهم اقاموا التورىة والانجيل وما انزل
اليهم من ربهم لاكلوا من فوقهم ومن
تحت ارجلهم منهم امة مقتصدة وكثير

अलबत्ता (बहुत हो) बुरी है, वह (दर गुज़र) जो (इनके मशायख़ और उ़लमा) करते रहे हैं ० और यहूदी कहते हैं कि ख़ुदा का हाथ (इन दिनों) तंग है, इन ही के हाथ तंग हो जायँ और इनके (इस) कहने पर इनको (ख़ुदा की) फिटकार । (ख़ुदा का हाथ तंग नहीं) बलिक उसके दोनों हाथ कुशादा हैं। जिस तरह चाहता है, ख़र्च करता है और (ऐ पैग़म्बर ! चूँ कि यह लोग तुम से ह़सद रखते हैं, यह क़ुर्आन) जो तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, ज़रूर इन में से बहुतेरों की सर्कशी और कुफ़्र के ज़ियादा होने का बाइस होगा। और (इसी हसद की सज़ा है कि) हमने इनके आपस में (भी) अ़दावतें और कीने डाल दिये हैं (कि वह) क़यामत तक (निकलने वाले नहीं) । जब जब लड़ाई की आग भड़काते हैं, अल्लाह उसको बुझा देता है और मुल्क में फ़साद फैलाते (पड़े) फिरते हैं और अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता ० और अगर अह्ल किताब ईमान लाते और (ख़ुदा से) डरते, तो हम इन (पर) से इनके गुनाह ज़रूर उतार देते और इनको (बहिश्त के) बाग़ों में भी ज़रूर (लेजा) दाख़िल करते, जिन में (सब तरह की) नेअ़मतें (मौजूद) हैं ० और अगर यह तौरात और इन्जील और उन (सहीफ़ों) को, जो इन पर इनके पर्वर्दिगार की तरफ़ से उतरे हैं, क़ायम रखते–तो ज़रूर (हम इनको ऐसी बरकत देते कि इनके) ऊपर से (रिज़्क़ बरसता) और पाँव के तले से (उबलता और यह फ़राग़त से) खाते। इन में से कुछ लोग एतिदाल पर (भी) हैं और इन में से अक्सर—

और हराम खाने से क्यों नहीं मना करते ? उन (के साधू सन्तों और विद्वानों) का (भी) यह काम बहुत ख़राब है ॥

और (जब जिहाद या दूसरी धार्मिक आवश्यकताओं के लिये मुसलमानों से चन्दा माँगा जाता है, तो) यहूदी कहते हैं कि (मुसलमानों के) अल्लाह का हाथ (अब) तंग हो गया। उन्हीं के हाथ तंग हो जायँ और उनके (इस) कहने पर उन पर (अल्लाह की) फिटकार हो। (अल्लाह के हाथों को तंग कहना सख़्त कुफ़्र की बात है। अल्लाह के हाथ तंग नहीं हैं) बलिक उसके तो दोनों हाथ खुले हुए हैं। जिस तरह चाहता है, ख़र्च करता है। और (ऐ रसूल ! ईर्षा के कारण इस (कलाम से, जो तुम पर तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से अवतीर्ण हुआ हैं, उन में से बहुतों की अवज्ञा और उद्दण्डता बढ़ेगी (और वह इस से भी अधिक सख़्त कुफ़्र से भरे हुए कलमे मुँह से निकालेंगे) और (इसी द्वेष का दंड है कि) हमने प्रलय के दिन तक (के लिये) उनके बीच शत्रुता और अ़दावत डाल दी है (कि तुम्हारा मुक़ाबला न कर सकें) । जब कभी (यह आपस में मिलने की कोशिश करते और मुसलमानों से) लड़ाई के लिये आग भड़काते हैं, अल्लाह उसे बुझा देता है। और (यह लोग) देश में फ़साद करते फिरते हैं और अल्लाह फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता (और उनका साथ नहीं देता) ॥

और अगर (यह) किताब वाले (हमारे रसूल मुहम्मद पर) ईमान ले आते और (जिन २ बातों से वह डरा रहे हैं, उन से) डरते, तो हम उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर देते और उन्हें ईश्वरीय प्रसाद के बाग़ों में दाख़िल करते ॥

और अगर यह तौरेत और इन्जील को और जो जो कुछ उन पर उनके पालन कर्त्ता की ओर से अवतीर्ण हुआ था, उस (सब) को (असली हालत पर) क़ायम रखते, तो (हमारा हाथ तंग होना कैसा, हम तो उन्हें इतना देते कि) अपने ऊपर (आकाश) से (भोजन बरसता) और अपने पाँव तले से (भोजन उबलता देखते और बिलकुल निश्चिन्तता से) खाते (पीते) । उन में कुछ लोग सीधी राह पर (भी) हैं और बहुत (अधिक)—

तो (बद किदार है । और जो कुछ कर रहे हैं, बहुत ही) बुरा कर रहे हैं ० ऐ पैग़म्बर ! जो (अहकाम तुम पर तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से नाज़िल हुये हैं (बिला कम व कास्त लोगों को) पहुँचा दो और अगर तुमने (ऐसा) न किया, तो (समझा जायगा कि) तुमने ख़ुदा का (कोई) पैग़ाम (भी लोगों को) नहीं पहुँचाया। और अल्लाह तुमको लोगों (के शर) से महफ़ूज़ रक्खेगा। क्योंकि अल्लाह उन लोगों को, जो कुफ़्र करते हैं (ऐसा) रस्ता (ही) नहीं दिखायेगा (कि तुम पर दस्त दराज़ी कर सकें) ० (ऐ पैग़म्बर ! यहूद व नसारा से) कहो कि ऐ अह्ल किताब ! जब तक तुम तौरात और इन्जील और उन (सहीफ़ों) को, जो तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुये हैं, क़ायम न रक्खोगे, तो (दीन से, जिसका तुम दावा करते हो) तुमको कुछ बहरा नहीं और (ऐ पैग़म्बर ! चूँ कि यह लोग तुम से हसद रखते हैं, तो यह क़ुर्आन) जो तुम पर तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, इन में बहुतेरों की सर्कशी और (नीज़ उनके) कुफ़्र के ज़ियादा होने का ज़रूर बाइस होगा। तो (इन) लोगों (के हाल) पर, जो काफ़िर हैं, तुम (मुतलक़) अफ़सोस न करो ० इस में कुछ शक नहीं कि जो मुसल्मान हैं और जो यहूदी हैं और साबी और नसारा (इन में से) जो कोई अल्लाह और रोज़ आख़िरत पर ईमान लाये और नेक अमल (भी) करे, तो (क़यामत के दिन) ऐसे लोगों पर न (किसी क़िस्म का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वह (किसी तरह पर) आज़ुर्दा ख़ातिर रहेंगे ० (बनी इस्राईल अगर क़बूल हक़ से इन्कार करें, तो यह कोई नई बात नहीं। पहिले भी) हम (इन) बनी इस्राईल (यानी इन के बड़ों) से अह्द ले चुके हैं (कि तौरात पर क़ायम रहना) । और हमने इनकी तरफ़ (बहुत से) रसूल भी भेजे। (मगर) जब कभी कोई रसूल इनके पास ऐसे अहकाम लेकर आया—जिन को उनके दिल नहीं चाहते थे, तो कितनों को—

مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ ● يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ
رِسٰلَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ● قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ
وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ
عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ● اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ
هَادُوْا وَالصّٰبِئُوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ● لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِىْٓ
اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا
جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا

كَذَّبُوْا

उन में ऐसे ही हैं, जो बुरे काम कर रहे हैं॥

ऐ रसूल ! जो (कुछ) तुम पर तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से अवतीर्ण हुआ है, (उसे बिना कमी किये व घटाये लोगों को) पहुँचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया (और किसी हुक्म को किसी मस्लहत अर्थात् सुसाधकता के कारण प्रकट न किया) तो (मानो) तुमने अल्लाह का सन्देश पहुँचाया ही नहीं। (तुम्हें ईश्वरीय आज्ञाओं के पहुँचाने में किसी से डरने की ज़रूरत नहीं है)। अल्लाह तुम्हें लोगों (के उपद्रव) से सुरक्षित रक्खेगा। (क्यों कि) अल्लाह काफ़िरों (की घातों के पूरा करने में उन) की सहायता नहीं किया करता॥

(ऐ रसूल ! इन से साफ़) कहो, कि ऐ किताब वालो ! (तुम्हारा किताब वाले होने का दावा केवल दावा ही दावा है)। तुम (धर्म के) किसी नियम पर (भी) नहीं हो। जब तक कि तौरेत और इन्जील और जो जो कुछ तुम्हारे लिये तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से अवतीर्ण हो चुका है, उसे (उसकी असली हालत पर) क़ायम न रक्खो और (निश्चित रूप से ऐ रसूल !) इस कलाम से, जो तुम पर तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से अवतीर्ण हुआ है, उन में से अक्सर का अविश्वास और अवज्ञा का भाव बढ़ेगा। मगर तुम इस काफ़िरों की जाति (की दशा) पर कुछ अफ़सोस न करो (उन की यह दशा उनके कुफ़्र के कारण है, न कि किताब वाले होने के कारण)॥

(यह वास्तव में किताब वाले हैं ही नहीं। अन्यथा) मुसल्मान और यहूदी और साबी और ईसाई (उन में) जो कोई अल्लाह पर और प्रलय के दिन पर ईमान लायेगा और नेक कर्म (भी) करेगा, तो ऐसे लोगों पर निश्चित रूप से (प्रलय में) न (किसी प्रकार का) भय छावेगा और न वह (किसी तरह से) निराश होंगे॥

(लेकिन इन) इस्राईल के वंशजों (की दशा यह है कि उन) से हमने (तौरेत की पाबन्दी की) पक्की प्रतिज्ञा (ले) ली थी और (फिर) उनके पास (लगातार) रसूल भेजे। (मगर) जब कोई रसूल उनके पास ऐसा हुक्म लाया, जिसे उनका दिल पसन्द नहीं करता था, तो कुछ (पैग़म्बरों) को—

كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ۝ وَحَسِبُوا أَلَّا تَكُونَ
فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ وَاللَّهُ بَصِيرٌ
بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ
اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ
بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ
النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝ لَقَدْ كَفَرَ
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ
إِلَّا إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنْ لَمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ
لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝
أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ وَاللَّهُ
غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ

झुटलाया और कितनों को लगे क़त्ल करने ० और समझे कि (ऐसा करने से) कोई बला नहीं आयेगी और (इस ख़याल ग़लत की वजह से) अन्धे और बहरे हो गये (कि न राह रास्त देखी और न हक़ बात सुनी)। फिर (भी एक मुद्दत बाद उन्होंने तौबा की और) ख़ुदा ने उनकी तौबा क़बूल कर ली। (लेकिन) फिर भी इनमें से बहुतेरे (दुबारा) अन्धे और बहरे बने और (इस ज़माने के यहूदी भी) जो कुछ कर रहे हैं—अल्लाह (उसको भी) देख रहा है ० जो लोग कहते हैं कि ख़ुदा तो यही मर्यम के बेटे मसीह हैं, यह लोग (इस कहने से) बेशक काफ़िर हो गये और मसीह (तो यूँ) समझाया करते थे कि ऐ बनी इस्राईल ! अल्लाह (ही) की इबादत करो कि वह मेरा (भी) पर्वर्दिगार है और तुम्हारा (भी) पर्वर्दिगार (है और) इसमें शक नहीं कि जो अल्लाह के साथ (किसी को भी) शरीक गरदाने, तो अल्लाह की तरफ़ से बहिश्त उस पर हराम हो चुकी और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और (ऐसे) ज़ालिमों का कोई भी मददगार नहीं ० जो लोग कहते हैं कि ख़ुदा तो यही तीन में का (एक) तीसरा है। (यह लोग भी इस कहने से) बेशक काफ़िर हो गये। हालाँकि ख़ुदाए वाहिद के सिवा और कोई माबूद (यानी ख़ुद[illegible] नहीं और (ख़ुदा के बारे में) जैसी जैसी बातें यह लोग कहते हैं, अगर उनसे बाज़ नहीं आयेंगे, तो जो लोग इनमें से कुफ़्र करते रहेंगे, उन पर अज़ाब दर्दनाक नाज़िल हो और हो ० तो क्या (इतने समझाने पर भी) ख़ुदा के आगे तौबा और इस्तिग़फ़ार नहीं करते, हालाँकि अल्लाह (तो बड़ा) बख़्शने वाला मेहर्बान है ० मर्यम के बेटे मसीह तो सिर्फ़ एक रसूल हैं (और बस)—

(तो उन लोगों ने) झूठा बताया और कुछ को वध कर डाला ॥

और ख़याल कर लिया (कि हमारे इन कर्मों से) कोई ख़राबी (पैदा) नहीं होगी और (परिणाम की ओर से बिल्कुल) अन्धे और बहरे हो गये। फिर (भी जब उन्हें होश आया और उन्होंने तौबा की, तो) अल्लाह ने उनकी तौबा क़बूल फ़र्माई। (मगर) फिर उनमें से बहुधा (ऐसे ही विचारों में तल्लीन होकर) अन्धे और बहरे बन गये और अल्लाह (बराबर) देख रहा है, जो कुछ वह कर रहे हैं ॥

बिल्कुल काफ़िर हो गये, वह–जिन्होंने कहा कि अल्लाह (तो) यही मर्यम के बेटे मसीह हैं। यद्यपि मसीह ने (तो यह) बताया (था) कि ऐ इस्राईल के वंशजो ! अल्लाह की उपासना करो (कि वह) मेरा (भी) पालन कर्त्ता है और तुम्हारा (भी) पालन कर्त्ता है (और) निस्सन्देह जिस ने (किसी को) अल्लाह का शरीक ठहराया, तो (जान लो कि) अल्लाह ने (भी) उस पर स्वर्ग हराम कर दिया और उसका घर नर्क है और ज़ालिमों का कोई (भी) सहायक न होगा ॥

(और वह भी) निस्सन्देह काफ़िर (थे और) हैं, जिन्होंने कहा (और कहते हैं) कि (ख़ुदा तीन * हैं। उन) तीन में से एक अल्लाह (भी) है। (यह ग़लत है) वास्तविक बात यह है, कि अल्लाह (तो केवल) एक (ही है। उस) के अतिरिक्त कोई ख़ुदा नहीं और जो बातें (यह लोग) कहते हैं, उनसे अगर (यह) बाज़ न आयेंगे, तो जो लोग (भी) उन में से कुफ़्र पर क़ायम रहेंगे, उन पर निश्चित रूप से दर्दनाक अज़ाब (दारुण दुःख) उतरेगा ॥

* टीका—अर्थात् एक अल्लाह—एक मसीह–और एक रूहुल्कुदुस (पवित्रात्मा या जिब्रील फ़रिश्ता) :—हसन निज़ामी ॥

(यह लोग) हमारी इन चेतावनियों के बाद क्यों अल्लाह के आगे तौबा और इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) नहीं कर लेते ? अल्लाह तो (बड़ा) बख़्शने वाला (और) मेहर्बान है ॥

(उन्हें बुद्धि से काम लेना चाहिये और सोचना और ध्यान करना चाहिये) मर्यम के बेटे मसीह तो रसूल (होने) के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं—

इन से पहिले (भी बहुतेरे) रसूल हो गुज़रे हैं और उनकी वालिदा (मर्यम भी ख़ुदा की एक) सच्ची (बन्दी) थीं। (दूसरे आदमियों की तरह यह) दोनों (माँ बेटे) खाना खाते थे। (ऐ पैग़म्बर!) देखो तो सही-हम (अपने) दलायल किस तरह खोल खोल कर इन लोगों से बयान करते हैं (और) फिर देखो कि (शैतान के बहकाने से) यह लोग किधर उलटे भटके चले जा रहे हैं ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो, क्या तुम ख़ुदा के सिवाय ऐसी चीज़ों की इबादत करते हो, जिनके इख़्तियार में तुम्हारा नफ़ा व नुक़सान (कुछ भी) नहीं, (इख़्तियार तो दर कनार, उनको तुम्हारे नफ़े व नुक़सान की ख़बर तक भी नहीं)। और अल्लाह ही है, (जो सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता (और बा इख़्तियार है) ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि ऐ अहूल किताब! अपने दीन में नाहक़ (नारवा) ज़ियादती न करो और न उन लोगों की (यानी अपने बड़ों की नफ़्सानी) ख़्वाहिशों पर चलो, जो (तुम से) पहिले गुम्राह हो चुके हैं और बहुतेरों को गुम्राह कर चुके हैं और सीधे रस्ते से भटक गये हैं ० बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन पर दाऊद और मर्यम के बेटे ईसा की (बद) दुआ से (ख़ुदा की) फिटकार पड़ी। यह (फिटकार उन पर) इस से (पड़ी) कि नाफ़र्मानी करते थे और हद से बढ़ते जाते थे ० (और) जो बुरा काम (एक बार) कर बैठते थे, उस से बाज़ न आते थे। अलबत्ता (बहुत ही) बुरे फ़ेल थे, जो (वह लोग) किया करते थे ० (ऐ पैग़म्बर!) तुम इन (यहूद) में से बहुतेरों को देखोगे कि मुश्रिकीन से दोस्ती रखते हैं। अलबत्ता उन्हों ने अपने हक़ में (बहुत ही) बुरी तमहीद उठाई (जिस का नतीजा यह हुआ)—

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ كَانَا
يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ انْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ
ثُمَّ انْظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ● قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَاللَّهُ هُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ● قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا
فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ
قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا
عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ● لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي
إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ
مَرْيَمَ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ● كَانُوا
لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا
كَانُوا يَفْعَلُونَ ● تَرَىٰ كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ

ع

أن سخط

(ऐसे ही, जैसे) उन से पहिले बहुत से रसूल हो चुके हैं और उनकी माता (केवल एक) सच्ची साधु (स्त्री) थीं। (यह) दोनों (साधारण मनुष्यों के समान) खाना खाते थे। (अर्थात् समस्त मानसिक आवश्यकतायें इनके साथ लगी हुई थीं। यह अल्लाह की महिमा नहीं हो सकी। ऐ रसूल!) देखो, हम उन लोगों से (अपने) प्रमाण किस तरह खोल खोल कर बयान करते हैं (और) फिर देखो कि यह किधर उल्टे चले जा रहे हैं॥

(उन से) पूछो, कि अल्लाह को छोड़ कर क्या तुम ऐसी चीज़ की उपासना करते हो, जो न तुम्हारे बुरे की मालिक है और न भले की (अर्थात् न तुम्हें हानि पहुँचा सकी है और न लाभ। मसीह का काम केवल यह था कि तुम्हें सत्य बात समझायें)। और अल्लाह (वह है कि तुम्हारे हर दु:ख को हर समय) सुनता है और (तुम्हारे प्रत्येक कार्य को हर समय) जानता है (और तुम्हें हानि भी पहुँचा सकता है और लाभ भी)॥

(ऐ रसूल! उन से) कहो, कि ऐ किताब वालो! अपने धर्म की बातों में व्यर्थ की अत्युक्ति न करो और उन लोगों के विचारों पर न चलो, जो (तुम से) पहिले गुम्राह हो चुके हैं और बहुतों को गुम्राह कर चुके हैं और सीधी राह से भटक गये हैं (अर्थात् अपने काफ़िर बाप दादों का अनुकरण न करो)॥

(तुम्हारे उन बुज़ुर्गों पर अर्थात्) इस्राईल के वंश में से, जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन पर दाऊद और मर्यम के बेटे ईसा के कहने से (अल्लाह की) फिटकार पड़ी (और) यह (फिटकार उन पर) इस लिये (पड़ी) कि वह अवज्ञाकारी थे और (बहुत) सीमा से बढ़ गये थे॥

(इतनी बे पर्वाही थी कि) बुरे कामों से, जो वह करते थे, एक दूसरे को न रोकते थे और बहुत (ही) बुरे थे, वह काम, जो वह (लोग) किया करते थे॥

(ऐ रसूल!) तुम उन (किताब वालों) में से बहुतों को देखोगे, कि (वह) काफ़िरों (मुश्रिकों) से मित्रता रखते हैं। उन्हों ने अपने लिये क्या ही बुरे कर्म (अल्लाह के यहां) भेजे हैं—

اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝
وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ
مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
فٰسِقُوْنَ ۝ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ
مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى
ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى
الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا
عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا
مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا
مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ
الصّٰلِحِيْنَ ۝ فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

कि (दुनिया में भी) .खुदा इनसे नाराज़ हुआ और (आख़िरत में भी) । यह हमेशा (हमेशा) अज़ाब में रहेंगे ० और अगर (यह लोग) अल्लाह और (अपने) पैग़म्बर (यानी मूसा) पर और जो किताब उन (पैग़म्बर) पर नाज़िल हुई, उस पर ईमान रखते होते, तो मुश्रिकों को दोस्त न बनाते । लेकिन इनमें से बहुतेरे नाफ़र्मान हैं ० (ऐ पैग़म्बर !) मुसल्मानों के साथ दुश्मनी के एतिबार से यहूद और मुश्रिकीन को तुम सब लोगों में बड़ा सख़्त पाओगे और मुसल्मानों के साथ दोस्ती के एतिबार से सब लोगों में उनको क़रीब तर पाओगे, जो कहते हैं कि हम नसारा हैं । (मुसल्मानों की तरफ़ नसारा का) यह (मैलान) इस सबब से है कि उनमें उलमा और मशायख़ हैं और (नीज़) यह कि यह लोग तकब्बुर नहीं करते ० और जब (.कुर्आन को) सुनते हैं, जो (हमारे इस) रसूल (मुहम्मद) पर नाज़िल हुआ है, तो ऐ मुख़ातब ! तू उनकी आंखों को देखता है कि उनसे आंसू जारी हैं । इस लिये कि उन्होंने हक़ बात को पहिचान लिया है । (.कुर्आन को सुन कर) दुआ मांगने लगते हैं कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हम तो ईमान ले आये, तो (दीन हक़ की) तस्दीक़ करने वालों के साथ हमको भी लिख रख और हमको क्या (जुनून हो गया) है कि अल्लाह पर और जो हक़ बात हमारे पास आई है, उस पर तो ईमान लायें नहीं और तवक़्क़ो यह रक्खें कि हमारा पर्वर्दिगार हमको नेक बन्दों के साथ (बहिश्त में ले जा) दाख़िल करेगा । तो इनके इस कहने के सिले में .खुदा ने इनको (बहिश्त के) ऐसे बाग़ अता फ़र्माये—

(जिस का परिणाम) यह (हुआ) कि अल्लाह उनसे नाराज़ हो गया और वह सदैव (सदैव) अज़ाब में रहेंगे ॥

और अगर (यह लोग) अल्लाह पर और (अपने) नबी पर और जो कुछ नबी पर उतरा, उस पर (सच मुच) ईमान रखते (होते) तो काफ़िरों (मुश्रिकों) को (कभी) मित्र न बनाते । परन्तु उन में से बहुधा (वास्तव में) फ़ासिक़ (पापी) हैं (और उनको अल्लाह और अपने नबी से भी प्रयोजन नहीं है) ॥

(ऐ रसूल !) तुम मुसल्मानों का सब लोगों से अधिक शत्रु यहूदियों और मुश्रिकों को (ही) पाओगे । (यह दोनों समूह मुसल्मानों के विरोध में एक हो गये हैं) और मुसल्मानों के प्रेम की दृष्टि से अधिक समीप तुम्हें वह दिखाई देंगे, जो अपने आप को ईसाई कहते हैं । (मुसल्मानों की तरफ़ ईसाइयों का) यह (झुकाव) इस लिये (है) कि ईसाइयों में विद्वान हैं और साधु हैं और इस लिये कि वह अभिमान नहीं करते ॥

और जब इस (.कुर्आन) को सुनते हैं, जो (हमारे) रसूल पर उतरा है, तो तुम उनके नेत्रों को देखते हो, कि उनसे आंसू बह रहे हैं । इस कारण से कि उन्हों ने सत्य को पहिचान लिया है (और .कुर्आन को सुन कर यह लोग) कहते हैं, कि ऐ हमारे रब ! (पालन कर्त्ता ! हम तेरी किताब और तेरे रसूल पर) ईमान ले आये । तू हमें भी (अपने धर्म का) समर्थन करने वालों में लिख ले ॥

(और उनसे कोई ईमान लाने के सम्बन्ध में प्रश्न करता है, तो) कहते हैं कि हम अल्लाह पर और उस सत्य (धर्म) पर जो, अल्लाह ने हम को प्रदान किया है—क्यों न ईमान * लायें । यद्यपि हमारी (हार्दिक) अभिलाषा यह है, कि हमारा रब (पालन कर्त्ता) हमें नेक लोगों में शामिल करले ॥

* टीका—इन आयतों में हब्श के बादशाह नजाशी के वृत्तान्त की ओर संकेत है । जब काफ़िरों ने मुसल्मानों पर अत्याचार की हद करदी, तो रसूलुल्लाह ने उन्हें आज्ञा दी कि वह किसी दूसरे देश में चले जायँ । अतएव अस्सी मुसल्मान हब्श पहुंचे । वहां भी दुष्टों ने पीछा न छोड़ा और बादशाह को जा लगाया कि यह लोग हज़रत ईसा का अनादर करते हैं और तुम्हारे देश में विद्रोह फैलाने आये हैं । बादशाह ने मुसल्मानों को बुलवाया और उनसे बयान मांगा और फिर उनका बयान और अल्लाह का .कुर्आन सुन कर बे इख़्तियार वह भी रो पड़ा और उसके दर्बार के विद्वान और साधू संत भी । नजाशी गुप्त रूप से मुसल्मान भी हो गया था:—हसन निज़ामी ॥

सो अल्लाह ने (भी उनकी इस अभिलाषा को स्वीकृत कर लिया और) उनके इस कहने पर उनको (स्वर्ग के) वह बाग़ प्रदान किये—

जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही हैं (और वह) उनमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे और ख़ुलूस दिल से नेकी करने वालों का यही बदला है ० और जिन लोगों ने (दीन हक़ यानी इस्लाम को) न माना और हमारी आयतों को झुठलाया, यही दोज़ख़ी हैं० मुसलमानो ! ख़ुदा ने जो सुथरी चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल करदी हैं (उनको अपने ऊपर) हराम न करो और हद से भी न बढ़ो। क्योंकि अल्लाह हद से बढ़ने वालों को दोस्त नहीं रखता ० और ख़ुदा ने जो तुमको हलाल सुथरी रोज़ी दी है, उसको (बे तअम्मुल) खाओ और जिस ख़ुदा पर तुम्हारा ईमान है, उस से डरते रहो ० तुम्हारी क़स्मों में जो लायानी हैं, उन पर तो ख़ुदा तुम से (कुछ) मुवाख़िज़ा करता नहीं । हाँ, पक्की क़सम खालो (और फिर उसके ख़िलाफ़ करो) तो ख़ुदा तुमसे (उसका) मुवाख़िज़ा करेगा । तो इस (पक्की क़सम के तोड़ने) का कफ़्फ़ारा दस मिस्कीनों को मुतवस्सित दरजे का खाना खिला देना है; जैसा तुम अपने अह्ल व अयाल को खिलाया करते हो । या उन (ही दस मस्कीनों) को कपड़े बना देना या एक बर्दा आज़ाद करना । फिर जिसको बर्दा मयस्सर न हो, तो तीन दिन के रोज़े। यह तुम्हारी क़स्मों का कफ़्फ़ारा है, जब कि तुम क़सम (तो) खालो (और उस में पूरे न उतरो) । और अपनी क़स्मों (के पूरा करने की) एहतियात रक्खो । इसी तरह अल्लाह अपने अहकाम तुमसे खोल २ कर बयान फ़र्माता है, ताकि तुम (उसकी) शुक्र गुज़ारी करो (कि वह तुमको अदब सिखाता है)—

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَذٰلِكَ جَزَآءُ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا
تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ
اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ
مُؤْمِنُوْنَ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ
وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ
فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ
مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ
رَقَبَةٍ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ذٰلِكَ
كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

ع

جزو

जिनके नीचे नहरें बह रही हैं और जहाँ वह (सदैव) सदैव रहेंगे और (अल्लाह के यहाँ) नेक (लोगों और अच्छे) काम करने वालों का यही बदला है। इसके विरुद्ध जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमरी निशानियों को झुठलाया, वह नार्कीय हैं ॥

(परन्तु) ऐ मुसल्मानो ! (ईसाई विद्वानों और ईसाई संतों अर्थात् धर्मात्माओं की प्रशंसा से यह तात्पर्य्य नहीं हैं, कि तुम भी उन्हीं की भाँति बिल्कुल संसार से विरक्त हो जाओ और किसी वस्तु से कोई सम्बन्ध ही न रक्खो) । अल्लाह ने जो पवित्र वस्तुयें तुम्हारे लिये हलाल करदी हैं, तुम उन्हें (कभी) हराम न ठहराओ और (हाँ अलबत्ता) सीमा से (भी) न बढ़ो । (अपनी नियत की हुई) सीमा से आगे बढ़ने वालों को अल्लाह कदापि पसन्द नहीं करता ॥

अल्लाह ने जो कुछ हलाल * शुद्ध (वस्तुयें) तुम्हें दी हैं, उन्हें (निस्संकोच) खाओ (पीओ) । और उस अल्लाह से डरते रहो, जिस पर तुम ईमान लाये हो (और ख़याल रक्खो कि तुम्हारे अपने ऊपर व्यर्थ की पाबन्दियाँ लगाने से वह रुष्ट न हो जाय) ॥

* टीका—अल्लाह की हलाल की हुई वस्तुओं को बिना कारण अपने लिये हराम कर लेना हमारे धर्म में बुरा है। यदि किसी हलाल वस्तु से बचने को सौगंध तुमने बिना इरादा खाई है, तो कोई हरज नहीं:—हसन निज़ामी ॥

तुम्हारी (ऐसी अस्पष्ट और) व्यर्थ सौगंधों (के तोड़ने) पर अल्लाह तुमसे (कोई) उत्तर नहीं माँगेगा। अलबत्ता (किसी हलाल वस्तु को छोड़ने के विषय में या किसी और मामले में) पक्की शपथ खा लेने (और फिर उसे तोड़ देने) पर अल्लाह तुमसे उत्तर माँगेगा। सो इस (पक्की शपथ के तोड़ने) का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) दस कंगालों को (उसी प्रकार का) साधारण दर्जे का भोजन खिला देना है (जैसा कि) तुम अपने घर वालों को खिलाया करते हो या दस कंगलों को कपड़ा पहिना देना या एक ग़ुलाम को स्वतन्त्र करना। और जिसे (यह तीनों वस्तुयें) प्राप्त न हों, तो (वह) तीन दिन के रोज़े (रखले । बस) यह तुम्हारी सौगंधों का प्रायश्चित है । जब कि तुम क़सम खा बैठो (और उसकी पाबन्दी न करो। क़स्मों को बिना नैतिक आवश्यकता के तोड़ना बड़ी बुरी बात है। सदा) अपनी क़स्मों (के विषय) में सावधानी रक्खो । (न तो बिना आवश्यकता के सौगंध खाओ और न बिना नैतिक आवश्यकता के उसे तोड़ो) । इसी प्रकार अल्लाह तुमसे अपनी आज्ञाएँ (स्पष्ट रूप से) वर्णन करता है, ताकि तुम कृतज्ञता प्रकाश करो (और उन आज्ञाओं का पालन करो)—

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ
وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ
اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي
الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ
الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ۝ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ لَيْسَ
عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا
طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ
اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ
مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ

ع

मुसल्मानो! शराब और जुवा और बुत और पांसे (इन में का हर एक काम) तो बस नापाक शैतानी काम है। तो इस से बचते रहो, ताकि तुम फ़लाह पाओ० शैतान तो बस यही चाहता है कि शराब और जुवे की वजह से तुम्हारे आपस में दुशमनी और बुग़्ज़ डलवादे और तुमको याद इलाही से और नमाज़ से बाज़ रक्खे। तो क्या (शैतान के मक्र पर इत्तिला पाये पीछे अब भी) तुम बाज़ आओगे (या नहीं ?) ० और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो और (ना फ़र्मानी से) बचते रहो। इस पर भी अगर तुम (हुक्म ख़ुदा से) फिर बैठोगे, तो जाने रहो कि हमारे रसूल के ज़िम्मे तो (हमारे हुक्मों का) साफ़ तौर पर पहुंचा देना है और बस (तो न मानने से तुम अपना ही कुछ खोओगे) ० जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने नेक अमल भी किये, तो जो कुछ (मनाही से पहिले) खा पी चुके, उस में उन पर (किसी तरह का) गुनाह नहीं। जब कि उन्हों ने (हराम चीज़ों से) परहेज़ किया और ईमान लाये और नेक काम किये। फिर (हराम चीज़ों से) परहेज़ किया और ईमान लाये। फिर (हराम चीज़ों से) परहेज़ किया और अच्छा (परहेज़) किया (जैसा करने का हक़ है)। और अल्लाह ख़ुलूस दिल से नेक काम करने वालों को दोस्त रखता है ० मुसल्मानो ! एक ज़री सी बात यानी शिकार से, जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुँच सकें - ख़ुदा ज़रूर तुम्हारी (फ़र्मां बर्दारी की) आज़माइश करेगा। ताकि अल्लाह मालूम करे कि कौन (ऐसा है कि)—

ऐ मुसलमानो ! शराब और जुआ तथा बुत और पांसे (यह) सब अशुद्ध (और) शैतानी काम हैं। सो इन से बिल्कुल अलग रहो, ताकि तुम कल्याण प्राप्त करो। (व्यर्थ और बिना प्रयोजन सावधानियों के बजाय तुम्हें इन धर्म विरुद्ध बातों से बचने की आवश्यकता है। और इन्हीं से बचने में तुम्हारा कल्याण है) ॥

शैतान तो चाहता ही यह है कि मदिरा और जुये के द्वारा तुम में शत्रुता और द्वेष डलवादे और (यहां तक कि) तुम्हें अल्लाह के स्मरण और नमाज़ से रोके, तो (अब इस ज्ञान के पश्चात् भी) क्या तुम इन वस्तुओं से बचोगे (या नहीं ?) ॥

और (देखो !) अल्लाह की आज्ञा मानो और (अल्लाह के) रसूल की आज्ञा मानो और (गुनाहों से) बचते रहो और यदि तुम (अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञाओं से) फिर जाओगे, तो ध्यान रक्खो कि हमारे रसूल का कार्य तो केवल (हमारे सन्देशों को) ठीक तौर पर पहुंचा देना है ॥

(लेकिन) जो लोग ईमान ले आये और नेक काम करते रहे, तो (शराब की क्रमानुसार मनाही से पहिले) जो कुछ वह खा (पी) चुके हैं, उस (के विषय) में उन पर (ऐसी दशा में) कोई पूछ गछ नहीं। जब कि वह (शराब के सम्बन्ध में और दूसरी आज्ञायें आने पर) संयमता और ईमान पर (दृढ़) रहे और नेक कर्म करते रहे और फिर (जब शराब की बिल्कुल मनाही हो गई, तब भी) परहेज़ और ईमान पर (दृढ़) रहे। और (पहिले से भी अधिक) नेक काम करने लगे *। अल्लाह (तआ़ला) ऐसे अच्छे काम करने वालों को (बहुत) प्रिय रखता है ॥

* टीका—शराब एक बार ही हराम नहीं कर दी गई थी। बल्कि पहिले उसकी बुराइयां प्रकट करके ख़ास ख़ास अवसरों पर उसके पीने की मनाही की गई थी। फिर जब लोग शनैः शनैः उसके छोड़ने के आदी हो गये, तो बिल्कुल हराम होने की आज्ञा उतर आई। शराब के हराम होने का हुक्म उतरने पर मुसलमानों के दिलों में यह सन्देह पैदा हुआ, कि जो लोग हराम का हुक्म आने से पहिले शराब पीते रहे हैं, कदाचित उन से भी कुछ उत्तर मांगा जाय। इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने उनके इस सन्देह को दूर किया है। मगर साथ ही इसके यह भी आज्ञा हुई कि उत्तर केवल उन लोगों से नहीं मांगा जायगा, जिनके विश्वासों और कर्मों में शराब-विषयक क्रमानुसार आज्ञायें अवतीर्ण होने से कुछ क्रांति नहीं हुई और वह प्रत्येक आज्ञा के पश्चात सच्ची ईमानदारी और पूरी परहेज़गारी से उस आज्ञा का पालन करने लगे—हसन निज़ामी ॥

ऐ मुसलमानो ! एक ज़रा सी चीज़ (और भी है, जिस) में अल्लाह अवश्य तुम्हारी परीक्षा करेगा। अर्थात् उस शिकार (के विषय) में, जिस तक तुम्हारे हाथ और बर्छे पहुँच सकें। (अर्थात् एहराम की दशा में पशु तुम्हारे इतने समीप भी आ जायेंगे कि तुम उन्हें हाथ से पकड़ सको। और तुम से इतनी दूरी पर भी होंगे कि तुम बर्छियों से उनका शिकार कर सको। किन्तु तुम्हें एहराम की दशा में उनके शिकार करने की मनाही करदी जायगी और इस तरह तुम्हारी परीक्षा होगी)। जिस से कि अल्लाह (तुम्हारे कर्मों द्वारा) मालूम करे कि (तुम में से) कौन—

يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ● يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ
وَأَنتُمْ حُرُمٌ وَمَن قَتَلَهُ مِنكُم مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ
ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَدْيًا بَالِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةٌ
طَعَامُ مَسَاكِينَ أَوْ عَدْلُ ذَٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوقَ
وَبَالَ أَمْرِهِ عَفَا اللَّهُ عَمَّا سَلَفَ وَمَنْ عَادَ فَيَنتَقِمُ
اللَّهُ مِنْهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ● أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ
الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ
صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي
إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ● جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ
الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ
وَالْقَلَائِدَ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي

उससे बिन देखे डरता है। फिर इस (मनाही) के बाद जो ज़ियादती करे, तो उसके लिये अज़ाब दर्दनाक (तय्यार मौजूद) है ० मुसलमानो! जब तुम एहराम की हालत में हो, शिकार न मारो। और जो कोई तुम में से जान बूझ कर शिकार मारेगा, तो जैसे जानवर को मारा है, उसके बदले चारपायों में से उसी से मिलता हुआ (जानवर) जो तुम में के दो मुन्सिफ़ ठहरादें (उसको) देना पड़ेगा। (और यह) नियाज़ काबे पहुंचाई जाय या कफ़्फ़ारा (यानी उसकी क़ीमत में जितने) मोहताजों (की गुन्जाइश हो, उन) का खाना या मिस्कीनों की गिनती के बराबर रोज़े। ताकि अपने किये की सज़ा (का मज़ा) चक्खे। जो हो चुका-उससे तो ख़ुदा ने दर गुज़र किया और जो फिर (ऐसा काम) करेगा, तो अल्लाह उस से (ना फ़र्मानी का) बदला लेगा और अल्लाह ज़बर्दस्त (और) बदला लेने वाला (भी) है ० दरियाई शिकार और खाने की दरियाई चीज़ें (जो बे शिकार हाथ लगें, एहराम की हालत में भी) तुम्हारे लिये हलाल की जाती हैं। ताकि तुमको फ़ायदा पहुंचे और (दूसरे) मुसाफ़िरों को (भी फ़ायदा पहुंचे)। और जङ्गल का शिकार जब तक एहराम में रहो, तुम पर हराम है। और अल्लाह से डरते रहो, जिसकी तरफ़ तुम (सब) को इकट्ठे होकर जाना है ० ख़ुदा ने काबे को कि वह (ख़ुदा का) मुअ़ज़्ज़ज़ घर है, लोगों के (अमन व इतमीनान के) क़ायम रखने का मूजिब क़रार दिया है और (इसी तरह) हुर्मत वाले महीनों को और (हज की) क़ुर्बानी (के जानवरों) को और उन (जानवरों) को, जिन (को ख़ुदा की नियाज़ के वास्ते ख़ास करके शिनाख़्त के लिये उन) के (गले में) पट्टे बाँध देते हैं। यह इस लिये कि तुमको मालूम रहे कि जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है, अल्लाह (सब) जानता है—

उस से बिन देखे डरता है (और उसकी आज्ञा पालन करता है)। तो जो इस (स्पष्ट आज्ञा के आ जाने) के पश्चात उस (की सीमा) से आगे बढ़ेगा (और ज़ियादती करेगा) उसके लिये (दारुण) दुख देने वाला अज़ाब (मौजूद) है। (अतः) ऐ मुसलमानो! (तुमको आज्ञा दी जाती है कि) जिस समय तुम एहराम बाँधे हुये हो, तो शिकार को न मारो और जो कोई तुम में जान कर उसे मारे (गा) तो उसे इसके मारने का बदला देना वाजिब (आवश्यक) होगा। जो कि समान होगा उस (पशु) के, जिसे उसने बध किया है। जिसका फ़ैसला तुम में से दो विश्वास-पात्र मनुष्य करदें। (चाहे वह बदला) चौपायों में से हो, बशर्ते कि चढ़ावे के रूप में काबे पहुंचाया जाय। चाहे कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित-इस ढंग से अदा) हो (कि) कंगालों को भोजन (दिया जाय या जितने कंगालों को भोजन दिया जाता, कंगालों की) उसी (संख्या) के बराबर रोज़े (रक्खे जायँ और यह आज्ञा इस लिये है) ताकि (शिकार मारने वाला) अपने किये की सज़ा का (मज़ा) चक्खे। (शिकार को हराम करने की आज्ञा से पहिले) जो कुछ हो चुका, उसे अल्लाह ने क्षमा किया और जो फिर (ऐसा) करेगा, तो अल्लाह उस से बदला लेगा और अल्लाह शक्तिवान (भी) है (और) बदला लेने वाला (भी है *)॥

* टीका—एहराम की दशा में शिकार मारने की मनाही है। यदि कोई जान बूझ कर इस दशा में शिकार मारे, तो उस पर कफ़्फ़ारा वाजिब होता है। कफ़्फ़ारे के तीन साधन हैं; एक यह कि जैसा पशु मारा है, उसी के मूल्य का कोई चौपाया जानवर लेकर काबे में उसकी क़ुर्बानी की जाय। या यह कि बजाय चौपाये जानवर की क़ुर्बानी करने के उसकी क़ीमत का भोजन कंगालों को खिला दिया जाय। या उस क़ीमत के भोजन में जितने कंगाल खाते, उतने ही रोज़े रक्खे जायँ:—हसन निज़ामी॥

पानी का शिकार पकड़ना और पानी का शिकार खाना (एहराम की दशा में भी) हलाल किया गया है। ताकि तुमको और (दूसरे) यात्रियों को लाभ पहुँचे और ख़ुश्की का शिकार पकड़ना (वैसे तो हलाल है, लेकिन) जब तक तुम एहराम की दशा में हो (वह) तुम्हारे लिये हराम कर दिया गया है। और अल्लाह से डरते रहो, जिसके पास तुम (सब) को एकत्रित होकर जाना है॥

अल्लाह ने काबे को, जो कि आदरणीय स्थान है, लोगों के लिये ठहने (अर्थात् शान्ति व निश्चिन्तता) का साधन बना दिया है। और आदरणीय महीनों को (भी)-और क़ुर्बानी के जानवरों को (भी, जो काबे के चढ़ावे के तौर पर क़ुर्बान किये जायँ)। और उन जानवरों को (भी) जिन के गले में (पहिचान के) पट्टे पड़े होते हैं। यह (सब) इस लिये है कि तुमको विश्वास हो जाय, कि जो कुछ अस्मान और पृथ्वी में है, अल्लाह को (ख़ूब) मालूम है—

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝
اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا
تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝ قُلْ لَّا يَسْتَوِي
الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

४

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ
لَكُمْ تَسُؤْكُمْ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ
تُبْدَ لَكُمْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ قَدْ
سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ۝
مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا
وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝

और यह कि अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है० जाने रहो कि अल्लाह का अज़ाब (भी बड़ा) सख़्त है और यह भी कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० पैग़म्बर के ज़िम्मे सिर्फ़ (हुक्म ख़ुदा का) पहुंचा देना है (और बस)—और जो कुछ तुम लोग ज़ाहिर में करते हो और जो छुपा कर करते हो, अल्लाह सब कुछ जानता है ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि गन्दी (यानी हराम) और सुथरी (यानी हलाल चीज़ दरजे में) बराबर नहीं हो सकी, अगर्चे गन्दी चीज़ की इफ़रात तुमको भली (ही क्यों न) लगे। तो ऐ अक़्ल-मन्दो! ख़ुदा से डरते रहो, ताकि तुम फ़लाह पाओ० मुसलमानो! बहुत बातें (कुरेद कुरेद कर) न पूछा करो कि अगर तुम पर ज़ाहिर कर दी जायँ, तो तुम को बुरी लगें और ऐसे वक़्त में कि क़ुर्आन नाज़िल हो रहा है—बातों की (बहुत) पूछ पाछ लगाओगे, तो तुम पर ज़ाहिर (भी) करदी जायेंगी (फिर बुरा मानोगे। अब तो) अल्लाह ने इस (हरकत) से दर गुज़र किया और अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है ० तुम से पहिले भी लोगों ने ऐसी ही बातें (अपने पैग़म्बरों से) दर्याफ़्त की हैं। फिर (जब बता दिया गया, तो) लगे उन (की तामील) से इनकार करने ० (न तो) बहीरा और न साइबा और न वसीला और न हाम (इनमें से) कोई चीज़ ख़ुदा ने नहीं ठहराई। बल्कि काफ़िर अल्लाह पर (झूट) बोहतान बांधते हैं और इन (में) के अकसर अक़्ल नहीं रखते०—

और यह कि अल्लाह प्रत्येक बात से भली भाँति अभिज्ञ है। (उसको मालूम था कि अरब में दिन रात लड़ाई झगड़े होते रहते हैं। इस लिये उसने बड़ी बुद्धिमानी और चतुराई से अरब वालों की हालत को दृष्टि में रखते हुए काबे को शान्ति का स्थान, क़ुर्बानियों को आदरणीय और ज़ीक़ाद, ज़िलहिज, मुहर्रम, रजब—इन चार महीनों को माननीय महीने ठहरा दिया। और अरब की दशा को जानने वाले जान सकते हैं, कि यह समस्त बातें अल्लाह के अपार ज्ञान की सूचक हैं) ॥

लोगो! विश्वास रक्खो (कि जो लोग उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करते, उनको) अल्लाह तआला सख़्त अज़ाब (दारुण दु:ख) देने वाला है। और (जो लोग उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहते हैं, उनके लिये) वह (बड़ा) क्षमा करने वाला दयालु है ॥

(और) रसूल के ज़िम्मे (तो) केवल (ख़ुदा तआला की आज्ञायें) पहुँचा देना है। (आगे उनका पालन करना न करना तुम्हारा कार्य है)। और (केवल दिखावटी आज्ञा पालन करना भी काफ़ी नहीं। क्योंकि) अल्लाह तुम्हारे उन कामों से (भी) अभिज्ञ है, जिनको तुम प्रकट रूप करते हो। और उन बातों को (भी) जानता है, जिन्हें तुम (हृदय में) छिपाते हो ॥

(ऐ रसूल! लोगों से) कह दो कि (जो बात शरीअत के हुक्म के अनुसार है, वह पवित्र है और जो बात शरीअत के हुक्म के विरुद्ध हो, वह अपवित्र है और) अपवित्र और पवित्र समान नहीं (हो सकते)। यद्यपि अपवित्र (वस्तु) की अधिकता तुम्हें विस्मित कर देती हो। (तुम अपवित्र व पवित्र वस्तुओं की अधिकता और न्यूनता का विचार न करो)। और ऐ बुद्धिमानो! अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुमको मुक्ति प्राप्त हो ॥

(लोगों का स्वभाव होता है कि किसी समय वह ऐसे प्रश्न कर बैठते हैं, जो नहीं करने चाहियें। तो) ऐ मुसलमानो! (जब कि तुमको यह मालूम है कि ख़ुदा तआला प्रत्येक बात से परिचित है और इस लिये हर अवस्था में तुम्हारे लाभ का काम करता है) तुम ऐसी वस्तुओं के सम्बन्ध में प्रश्न न करो; जिन (की वास्तविकता) को यदि तुम्हारे सामने प्रकट कर दिया जाय, तो तुमको बुरा मालूम हो (और इस प्रकार ख़ुदा के सम्बन्ध में तुम्हारे विश्वास में अस्थिरता आ जाय)। और यदि तुम उनके विषय में क़ुर्आन के अवतीर्ण होने के समय प्रश्न करोगे, तो वह (अवश्य) तुम्हारे सामने प्रकट कर दी जावेंगी और तुम्हारी असहाता का कारण होंगी। इस मनाही से पूर्व—जो प्रश्न तुम कर चुके हो, उनको (तो) ख़ुदा ने क्षमा किया और अल्लाह (अपने बन्दों की अज्ञानता की ग़लतियों को इसी प्रकार) क्षमा करने वाला (और) बड़ा सहन शील है (कि ग़लतियों की तुरन्त ही पकड़ नहीं करता) ॥

(तुम्हारे यह व्यर्थ के सवाल कोई नवीन वस्तु नहीं हैं)। तुम से पहिले और लोग (भी) ऐसे प्रश्न कर चुके हैं। फिर (तुमने परिणाम देख लिया कि क्या हुआ? उनको ना गवार उत्तर सुनने पड़े, जिनसे उनके ईमान और अक़ीदों (विश्वासों) में अस्थिरता उत्पन्न हो गई और) वह काफ़िर हो गये ॥

(काफ़िरों ने पशुओं को बुतों के लिये मन्नत करने या उनको स्वतन्त्र छोड़ देने को जो रस्में—बहीरा, साइबा, वसीला और हामी की निकाल रक्खी हैं, यह सब मुश्रिकाना (द्वैतता) और बुरी रस्में हैं)। ख़ुदा तआला ने न बहीरा (की रस्म) को नियत किया है, न साइबा (की रस्म) को, न वसीला (की रस्म) को, न हामी (की रस्म) को। परन्तु कुफ़्र करने वाले लोग (इन मुश्रिकाना रस्मों को मज़हबी रस्में बना कर) अल्लाह की ओर झूटी बातें लगाते हैं और उनमें से बहुधा (बिल्कुल) अबोध हैं (जो इतनी बात भी नहीं समझते कि ख़ुदा ऐसी मुश्रिकाना रस्में कैसे नियत कर सकता है) ॥

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ
قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ
آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ●
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ لَا
يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ
جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ● يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ
حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ آخَرَانِ
مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ
فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ الْمَوْتِ تَحْبِسُونَهُمَا مِن
بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي
بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ
اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ● فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا

اسحق

और जब (इन लोगों) से कहा जाता है कि जो (.कुर्आन) अल्लाह ने उतारा है, उसकी—और रसूल (.खुदा) की तरफ़ चलो (और जो हुक्म दें, सो मानो। इसके जवाब में) कहते (क्या) हैं कि जिस (तरीके) पर हमने अपने बाप दादों को (चलते हुये) पाया है (वही तरीका) हमारे लिये बस करता है। क्या (यह लोग उसी पुरानी लकीर के फ़क़ीर रहेंगे ?) अगर्चे इनके बाप (दादा) कुछ न जानते और न राह रास्त पर रहे हों ० मुसल्मानो ! तुम अपनी ख़बर रक्खो, जब तुम राह रास्त पर हो, तो कोई भी गुमराह हुआ करे (उसका गुमराह होना) तुमको (कुछ भी) नुक़सान नहीं पहुँचा सक्ता। तुम सबको अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। (जब उस पास जाओगे) तो जो कुछ (दुनिया में) करते रहे हो (उसका नेक व बद) तुमको बता देगा ● मुसल्मानो ! जब तुम में से किसी के सामने मौत आ मौजूद हो (और वह वसीयत करने लगे) तो वसीयत करते वक़्त तुम में गवाही (का यह क़ायदा होना चाहिये कि) तुम में के दो मोतबर (आदमियों) की (गवाही) हो या अगर तुम कहीं को सफ़र करो और (हालत सफ़र में) तुम पर मौत की मुसीबत आ पड़े (और मुसल्मान गवाह मयस्सर न हों) तो तुम मुसल्मानों के सिवा दो (गवाह ग़ैर ही सही। फिर) अगर तुमको (उनकी सदाक़त में किसी तरह का) शक (वाक़े) हो, तो उन दोनों को नमाज़ (अस्र) के बाद रोक लो। फिर वह दोनों अल्लाह की क़सम खायें (और बयान करें) कि हमको इज़हार हक़ का मुआविज़ा लेना मक़सूद नहीं। अगर्चे वह शख़्स (जिसके हक़ में हम गवाही दें, हमारा) क़राबत दार (ही क्यों न) हो और हम .खुदा लगती गवाही को छुपा नहीं रक्खेंगे। ऐसा करें, तो हम बेशक (.खुदा के) गुनहगार। फिर अगर (गवाही दिये पीछे) मालूम हो जाय कि दोनों (गवाह)—

उन लोगों से जब कहा जाता है कि जो (किताब) अल्लाह ने अवतीर्ण की है, उसकी तरफ़ और (अल्लाह के) रसूल की ओर आकर्षित हो (तो) वह कहते हैं (कि) हमको (उनकी ओर आकर्षित होने की आवश्यकता नहीं। हमारे लिये) वही (ढंग) काफ़ी है, जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया है। (तो) क्या (यह उन्हीं की लकीर को पीटे जायँगे ?) चाहे उनके पूर्वज न कुछ ज्ञान रखते हों और न सीधे मार्ग पर हों ॥

ऐ मुसल्मानो ! (ऐसे मूर्खों को उनके हाल पर छोड़ो और उनकी गुमराही से प्रभावान्वित न हो) तुम अपनी चिन्ता करो। जब तुम सच्चे मार्ग पर आ गये, (तो) जो (लोग) गुमराही पर हैं, वह तुम्हें हानि नहीं पहुँचा सकते। तुम सबको .खुदा ही के पास वापिस जाना है, तो (उस समय) वह तुमको बता देगा (कि) तुम क्या करते थे। (तुम में से किन के कर्म .खुदा को पसन्द थे–मुसल्मानों के या अपने पूर्वजों का अन्ध अनुकरण करने वाले काफ़िरों के) ॥

ऐ मुसल्मानो ! (.खुदा तआला के अपार ज्ञान पर इस से बढ़ कर और क्या प्रमाण होगा कि अपने अदृष्ट का ज्ञानी होने के कारण जहां एक ओर वह तुम्हारे धार्मिक लाभों के काम करता है और ऐसी आज्ञायें अवतीर्ण करता है, कि तुमको अपनी धार्मिक आज्ञायें पालन करने में कोई कठिनाई न हो, तो दूसरी ओर वह तुम्हारी सांसारिक भलाइयों पर भी बिना ध्यान किये नहीं रहता और सांसारिक कामों के सम्बन्ध में भी तुमको हिदायत फ़रमाता है कि) यदि तुम में से किसी को मौत आ जाय, तो वसीयत के समय दो विश्वास-पात्र मनुष्यों को अपने (ही) में से (अर्थात् मुसल्मानों में से वसीयत का) गवाह बना देना (उचित) है। या यदि तुम कहीं सफ़र में गये हुए हो और (वहां) तुम पर मौत की मुसीबत आ जाय (और कोई मुसल्मान गवाह न मिल सके) तो ग़ैर (मुसलिम) लोगों ही में से दो (आदमियों) को गवाह कर लिया जाय। (फिर) अगर तुम (मृतक मनुष्य के वारिसों) को (इन गवाहों पर कोई) सन्देह हो, तो दोनों को नमाज़ के बाद रोक लो। (ताकि दूसरे नमाज़ियों के सामने वह अपनी बदनामी के ख़याल से वास्तविक बात को छिपाने का साहस न कर सकें)। फिर वह दोनों अल्लाह की शपथ खायें, कि (हम सच्चे हैं और सच्ची गवाही दे रहे हैं और) इस शपथ से कुछ लाभ प्राप्त करना नहीं चाहते। चाहे वह (जिसके हक़ में हम शपथ खा रहे हैं, हमारा) रिश्तेदार ही क्यों न हो और हम .खुदा लगती गवाही को छिपायेंगे नहीं, क्योंकि इस दशा में हम पाप के भागी होंगे ॥

फिर अगर (किसी तरह) मालूम हो जाय (कि) वह दोनों (गवाह)—

اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ
الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيَانِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ
لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا
إِنَّا إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ۝ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ يَأْتُوا
بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ وَجْهِهَا أَوْ يَخَافُوا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌ
بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا ۗ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ
الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ ۖ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ
إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝ إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى
ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَتِكَ
إِذْ أَيَّدْتُكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي
الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۖ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَالتَّوْرَاةَ وَالْإِنْجِيلَ ۖ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ

गुनाह (हज़फ़ दरोग़ो) के मुर्तकिब हुये, तो (इनकी तरदीद पर) इनकी जगह दूसरे दो (गवाह) उन लोगों में से (गवाही देने) खड़े हों, जिनका हक़ (इन दोनों गवाहों में से हर एक ने) दबाना चाहा था। (और यह नये गवाह फ़रीक़ मज़लूम के) क़रीबी रिश्तेदार (हों)। फिर (यह दो नये गवाह) अल्लाह की क़सम खायें कि पहिले दो गवाहों की गवाही से हमारी गवाही ज़ियादा मोतबर है। और हमने (अदाए शहादत में किसी तरह की) ज़ियादती नहीं की। ऐसा किया हो, तो हम बेशक ज़ालिम हैं ० इस तरह की क़सम से यह बात क़रीन क़यास है (कि लोग आख़िरत के डर से) जैसी की तैसी गवाही दें या (दुनिया की रुसवाई से) डरें कि (ऐसा न हो हमारी) क़स्में फ़रीक़ सानी की क़स्मों के बाद रद कर दी जायँ। और (मुसल्मानो !) अल्लाह (की नाफ़र्मानी) से डरते रहो और (उसका हुक्म अच्छी तरह) सुन लो और अल्लाह नाफ़र्मान लोगों को राह रास्त नहीं दिखाया करता ० (और उस दिन को याद करो) जब कि अल्लाह पैग़म्बरों को जमा करके पूछेगा कि तुमको (अपनी उम्मतों की तरफ़ से) क्या जवाब मिला। वह कहेंगे कि (हमको अपने जीते जी तक का हाल मालूम है और वह भी लोगों का ज़ाहिर हाल—इसके सिवा) हमको कुछ मालूम नहीं। ग़ैब की बातें तो तू ही ख़ूब जानता है ० उस दिन (यह मामला भी पेश आयेगा कि) अल्लाह फ़र्मायेगा कि ऐ मर्यम के बेटे ईसा ! हमने तुम पर और तुम्हारी वालिदा पर जो एहसान किये हैं (उनको) याद करो ! जब कि हमने रुहुल्क़ुदुस (यानी जिब्रील) से तुम्हारी मदद की (एक- दूसरे यह कि जब तुम निरे बच्चे थे और) झूले में (पड़े झूला करते थे, उस उम्र में) और बड़े होकर तुम (दोनों हालतों में) लोगों से (यक्साँ) कलाम करते थे। और (तीसरे) जब कि हमने तुमको लिखना और दानाई (की बातें) और तौरात और इन्जील (यह सब चीज़ें) सिखाईं। और (चौथे) जब कि तुम हमारे हुक्म से परिन्द की सूरत की एक मिट्टी की मूरत बनाते—

पाप के भागी हुए हैं। तो उन लोगों में से–जिनका हक़ दबा (लिया गया) है और दो आदमी, जो (मृतक मनुष्य के) रिश्ते में सब से अधिक समीपी हों, गवाहों की जगह खड़े हों और ख़ुदा की शपथ खायें (कि) हमारी गवाही (अर्थात् शपथ) इन दोनों (गवाहों) की गवाही से ज़ियादा सही है। और हमने (इन गवाहों की तरह अपनी गवाही में) कोई न्यूनता या अधिकता नहीं की है। ऐसा किया हो, तो हम निस्सन्देह ज़ालिम हैं॥

(वसीयत के गवाहों पर सन्देह हो जाने की दशा में मृतक मनुष्य के निकट सम्बन्धियों से शपथ लेने का) यह तरीक़ा (इस प्रयोजन के लिये) सब से मुनासिब (तरीक़ा) है, कि लोग गवाही वैसी ही (सच्ची) दें; जैसो कि (देनी) चाहिये। और (इस बात से) डरते रहें, कि उनकी शपथों के बाद फिर इन शपथों के विरुद्ध शपथें भी खाई जायँगी। (अर्थात् इनको गवाही के विरोध में सम्बन्धियों को भी शपथ खाने का अवसर दिया जायगा)। और (ऐ मुसल्मानो ! झूठी सौगंध खाना बहुत बुरा है)। अल्लाह से डरो और (जो आदेश शपथों के विषय में तुमको दिये गये हैं, उनको ध्यान पूर्वक) सुनो (और उन पर अमल करो)। और अल्लाह तआला (अपने आदेशों पर अमल न करने वाले) फ़ासिक़ (दुर्जन व दुराचारी) लोगों को हिदायत नहीं करता॥

(लोगो ! उस दिन से डरो) जिस रोज़ अल्लाह तआला (अपने) रसूलों को एकत्रित करेगा। फिर (उनसे) पूछेगा (कि जब तुमने अपनी उम्मतों को मेरे सन्देश पहुँचाये, तो उनकी तरफ़ से) तुमको क्या जवाब मिला ? (तो) वह (सम्मान पूर्वक) कहेंगे (कि तेरे सामने), हमें कुछ मालूम नहीं। निस्सन्देह तू ही अदृष्ट का जानने वाला है। (तुझ से न उनका जवाब छिपा है और न उनके दिलों का हाल)॥

(ऐ मनुष्यो ! उस हालत को याद करो) जब कि अल्लाह तआला मर्यम के बेटे (हज़रत) ईसा से कहेगा (कि) तुम पर और तुम्हारी माँ पर ख़ुदा ने उपकार किया था, उसको याद करो। जब कि मैंने तुम्हारी पवित्र आत्मा (अर्थात् हज़रत जिब्रील फ़रिश्ते) के द्वारा सहायता की थी। तुम (अभी) पालने में (थे कि) लोगों से (उसी तरह) वार्तालाप करते थे (जिस तरह) अधेड़ आयु में (करते थे। और उस समय को याद करो !) जब कि मैंने तुमको अक़्ल (व समझ की बातें) और तौरेत व इन्जील सिखाई। (और उस समय को याद करो !) जब कि तुम गीली मिट्टी से—

फिर उस में फूंक मार देते, तो वह हमारे हुक्म से परिन्द हो जाती और (पाँचवें) जब कि तुम मादर ज़ाद अन्धे और कोढ़ी को हमारे हुक्म से अच्छा कर देते और (छठे) जब कि तुम हमारे हुक्म से मुर्दों को (ज़िन्दा कर क़ब्रों में से) निकाल कर खड़ा करते और (सातवें) जब कि हमने बनी इस्राईल को तुम पर (दस्तदराज़ी करने) से रोका कि जिस वक़्त तुम उन पास मोजिज़े लेकर आये, तो उन में से जो लोग (तुम्हारी रिसालत के) मुनकिर थे (मोजिज़े देख कर) लगे कहने कि यह तो सरीह जादू है ० और बस और (आठवें) जब हमने हवारियों को ईमा किया कि हम पर और हमारे रसूल (ईसा) पर ईमान लाओ, तो उन्हों ने कहा—हम ईमान लाये, और (ऐ ख़ुदा!) तू इस बात का गवाह रह कि हम फ़र्मां बर्दार (बन्दे) हैं०(ऐ पैग़म्बर! तुम यह वाक़िआ भी लोगों को याद दिलाओ कि) जब हवारियों ने दरख़्वास्त की कि ऐ मर्यम के बेटे ईसा! क्या तुम्हारे पर्वर्दिगार से हो सकेगा कि हम पर आसमान से (खाने का) एक ख़्वान उतारे! (ईसा ने) कहा अगर तुम (ख़ुदा की क़ुद्रत और मेरी नुबूवत पर) ईमान रखते हो, तो ख़ुदा से डरो (और ऐसी) बेहूदा फ़र्मायश न करो, जिस में एक तरह का इम्तिहान मालूम होता (है)। वह बोले (हमको इम्तिहान मन्ज़ूर नहीं है) बल्कि हम चाहते हैं कि (तबर्रुक समझ कर) उस (ख़्वान) में से कुछ खायें और हमारे दिल (आप की रिसालत से पूरे पूरे) मुत्मइन हो जायँ और हम (तजरिबे से) मालूम करलें कि बेशक आपने हमारे आगे रिसालत का सच्चा दावा किया था और हम (आप के) इस (मोजिज़े ख़्वान) के गवाह रहें ० (इस पर) ईसा इब्न मर्यम ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! ऐ हमारे पर्वर्दिगार! हम पर—

كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا
بِإِذْنِي وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي
وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي
إِسْرَائِيلَ عَنكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ●
وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي
وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ ●
إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ
رَبُّكَ أَن يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ قَالَ
اتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ● قَالُوا نُرِيدُ أَن
نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَن
قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ●
قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنزِلْ عَلَيْنَا

مائدہ

जानवर का एक पुतला मेरी आज्ञा से बनाते थे। फिर तुम उस (पुतले) में मेरे हुक्म से फूंक मारते थे। फिर वह (पुतला तुम्हारे फूंक मारते ही) मेरी आज्ञा से पक्षी बन जाता था और तुम जन्म के अन्धे को, सफ़ेद कोढ़ के रोगी को—मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे। (और उस समय को याद करो!) जब कि तुम मेरी आज्ञा से मुर्दे को (ज़िन्दा करके उसकी क़ब्र से) निकाल देते थे। (यद्यपि सब जानते हैं कि यह समस्त कार्य मनुष्य की शक्ति से बाहर हैं और कोई मनुष्य इन में से कोई कार्य ख़ुदा की सहायता के विना नहीं कर सकता। और उस समय को याद करो!) जब कि तुम ने बनी इस्राईल को (उपर्युक्त और इसके अतिरिक्त दूसरे) स्पष्ट (मोजिज़े अर्थात् चमत्कार) दिखलाये, तो (तुम्हारे इन अत्यन्त स्पष्ट चमत्कारों को देख कर) उन मनुष्यों ने, जो (ख़ुदा के आदेश और ख़ुदा की शक्ति के इन्कार करने के कारण) काफ़िर हो गये थे—(यह) कहा (कि यह तो) अत्यन्त खुला हुआ जादू है। अर्थात् इस्राईल के बंश को तुम से बचाये रक्खा (और किसी प्रकार की कोई हानि और दुःख तुमको पहुंचाने नहीं दिया और यद्यपि इन लोगों ने अपने ख़्याल में तुमको सूली भी देदी। परन्तु यह उनकी अपनी ग़लती है। तुम तक तो किसी का हाथ नहीं पहुँच सका और उस समय को भी याद करो!) जब कि मैं ने (तुम्हारे) हवारियों (ईसा के अनुयाइयों) को (इन्जील के द्वारा) आज्ञा दी, कि मुझ पर और मेरे रसूल (हज़रत ईसा) पर ईमान लाओ (तो) उन्हों ने कहा कि हम (ख़ुदा और उसके रसूल पर) ईमान लाए और (ऐ ईसा!) आप गवाह रहें, कि हम (ख़ुदा की आज्ञाओं के) अनुयायी हैं (और किसी प्रकार ख़ुदा की आज्ञाओं के विरुद्ध कार्य करना नहीं चाहते)॥

(और उस समय को याद करो!) जब कि हवारियों ने (हज़रत ईसा से कहा कि ऐ मर्यम के बेटे ईसा! क्या तुम्हारा ख़ुदा इस (बात) की शक्ति रखता है, कि हम पर वह आसमान (आकाश) से भोजन उतारे (और हम को कोई परिश्रम या ख़र्च करना न पड़े, तो) तुमने कहा कि अगर तुम (मुझ पर और ख़ुदा पर) ईमान रखते हो (तो) ख़ुदा से डरो। (ख़ुदा तआला तुम्हारे लिये आकाश से भोजन भेजने में असमर्थ तो नहीं है, लेकिन कहीं तुम्हारे इस प्रकार के प्रश्न-अनादर के कारण तुम्हारे लिये हानि कारक न हों। क्योंकि अगर तुमको ख़ुदा की शक्ति व ताक़त पर ईमान है, तो ऐसे सवालों का क्या परिणाम?)॥

(तो हज़रत ईसा के जवाब में) उन्हों ने कहा (कि ख़ुदा न करे—इस सवाल से अभिप्राय ख़ुदा तआला के सम्बन्ध में अपमान करना नहीं या उसकी शक्ति का अविश्वास नहीं है, बल्कि) हम (यह) चाहते हैं (कि) हम उस भोजन में से (जो आकाश से हमारे लिये भेजा जाय) खायें और हमारे हृदयों को (अनुभव से) विश्वास प्राप्त हो जाय और (साथ ही) हमको (यह भी) ज्ञात हो जाय कि आप ने (ख़ुदाई सन्देशों के प्रचार में) हम से सत्य कहा है और (आप के सत्य की ओर बुलाने के) हम गवाह भी हो जायँ (कि जो मनुष्य इस समय मौजूद नहीं हैं, उनको हमारी गवाही से अधिक बल प्राप्त हो)॥

(हवारियों का यह उत्तर सुन कर और यह मालूम करके कि उनका यह प्रश्न केवल हृदय को सन्तुष्ट करने के लिये है) मर्यम के बेटे (हज़रत) ईसा ने (ख़ुदा से) प्रार्थना की (कि) ऐ हमारे ख़ुदा! ऐ हमारे पालन कर्त्ता!! (अपनी दया व कृपा से जैसे कि इस से पूर्व तू कर चुका है) हम पर—

مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا
وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ
الرّٰزِقِيْنَ ۝ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ
يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْۤ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا
لَّاۤ اُعَذِّبُهٗۤ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ
يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ
وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا
يَكُوْنُ لِيْۤ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ بِحَقٍّ ؕ اِنْ كُنْتُ
قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَاۤ
اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝
مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَاۤ اَمَرْتَنِيْ بِهٖۤ اَنِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا
مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ

आस्मान से (खाने का) एक ख़्वान उतार (और) ख़्वान (का उतरना) हमारे लिये (यानी) हमारे अगलों और पिछलों (सब) के लिये ईद करार पाये। और (यह) तेरी तरफ़ से (हमारे हक़ में तेरी क़ुद्रत की एक) निशानी (हो) और हमको (अपने ख़्वान करम से) रोज़ी दे और तू सब रोज़ी देने वालों में बेहतर (रोज़ी देने वाला) है० अल्लाह ने फ़र्माया (बहुत ख़ूब) बेशक हम वह ख़्वान तुम लोगों पर उतारेंगे—तो जो शख़्स फिर भी तुम में से (हमारी ख़ुदाई का) इन्कार करता रहेगा, तो हम उसको (ऐसे) सख़्त अज़ाब की सज़ा देंगे कि दुनिया जहान में किसी को भी वैसी सज़ा नहीं देंगे ० और (क़यामत के दिन यह मामिला भी पेश आयेगा कि) उस दिन अल्लाह (ईसा से) पूछेगा कि ऐ मर्यम के बेटे ईसा ! क्या तुमने लोगों से यह बात कही थी कि ख़ुदा के अलावा मुझ को और मेरी वालिदा को (भी) दो ख़ुदा मानो। (ईसा) अर्ज़ करेंगे कि (ऐ पर्वर्दिगार !) तेरी ज़ात पाक है। मुझ से यह क्यों कर हो सक्ता है कि मैं (तेरी शान में) ऐसी बात कहूँ, जिसके कहने का मुझको कोई हक़ नहीं। अगर मैंने ऐसा कहा होगा, तो मेरा कहना तुझ को ज़रूर ही मालूम हुआ होगा। क्योंकि तू (तो) मेरे दिल (तक) की बात जानता है और मैं तेरे दिल की बात नहीं जानता। ग़ैब की बातें तो तूही ख़ूब जानता है ० तू ने जो मुझको हुक्म दिया था, बस वही मैंने इन लोगों को कह सुनाया था कि अल्लाह जो मेरा और तुम्हारा (सब का) पर्वर्दिगार है, उसी की इबादत करो। और जब तक मैं इन लोगों में (मौजूद) रहा—मैं इनका निगरान (हाल) रहा। फिर जब तू ने मुझको (दुनिया से) उठा लिया, तो तूही—

आकाश से भोजन उतार, कि वह हमारे लिये और हमारे अगले पिछलों के लिये ख़ुशी (की बात) और तेरी एक निशानी हो जाय। और हमको (जो कुछ हम तुझ से माँग रहे हैं) प्रदान कर और तू ही सब प्रदान करने वालों से श्रेष्ठ है। (हज़रत ईसा की प्रार्थना सुन कर) ख़ुदा तआला ने (उत्तर में) फ़रमाया (कि मैं तुम्हारी इच्छानुसार तुम्हारे लिये आकाश से) भोजन उतारने वाला हूँ। परन्तु इसके पश्चात जो मनुष्य तुम में से (मेरे आदेशों के सम्बन्ध में किसी प्रकार का) अविश्वास करेगा, तो मैं उसको (इस अविश्वास के बदले) अज़ाब (दण्ड भी) ऐसा (कठिन) दूँगा, कि उस प्रकार का अज़ाब दुनिया वालों में से किसी को न दूँगा॥

(परन्तु ध्यान देने की बात है, कि वह हज़रत ईसा; जिन पर ख़ुदा तआला ने इतने उपकार किये और इस क़द्र पुरस्कार दिये, जिनका उपर्युक्त आयत में स्वयं ख़ुदा तआला ने वर्णन किया है। जब कि केवल इस आधार पर कि अज्ञान और मूर्खों ने आपको सन्देशिया व बन्दे होने के दर्जे से बढ़ा कर ख़ुदाई का पद दे दिया—लोगों की इस असभ्यता-पूर्ण हरकत पर सवाल से न बच सकेंगे और ख़ुदा तआला स्वयं उन्हीं से प्रश्न करेगा, तो तुम उस स्थिति पर विचार तो करो) जब कि अल्लाह तआला कहेगा—ऐ मर्यम के बेटे ईसा ! क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझ को और मेरी माँ को ख़ुदा के अतिरिक्त दो पूज्य बना लो ? (परन्तु इसके उत्तर में हज़रत) ईसा (यही) कहेंगे—तू पवित्र है। (मैं किसी प्रकार तेरे साथ किसी दूसरे को सम्मिलित नहीं कर सकता) मुझको यह किसी प्रकार उचित नहीं है कि मैं कोई ऐसी बात कहदूँ, जिसका मुझे कोई अधिकार न हो। (और) यदि मैंने (लोगों से) ऐसा कहा है (तो) तू उसको जानता है। (तेरी तो यह महिमा और क़ुद्रत है कि) तू उन बातों को (भी) जानता है, जो मेरे हृदय में हैं, और मैं जो तेरे हृदय में है, उसको नहीं जान सकता हूँ। निस्सन्देह तू समस्त छिपी हुई बातों को ख़ूब जानने वाला है। (और कोई बात तुझ से छिपी हुई नहीं रह सकती)॥

मैंने तो इसके अतिरिक्त लोगों से कुछ और नहीं कहा है, जिस की तूने मुझे आज्ञा की थी, कि (ऐ लोगो ! केवल) उस ख़ुदा को पूजा करो, जो मेरा और तुम्हारा (सब का) पालने वाला है। और जब तक मैं उन में बसा रहा, मैं उनके (प्रत्येक अनुचित और अनुपयुक्त कर्मों के विरुद्ध) उन पर गवाह हूँ। और जब तूने मुझको (अपने समीप) उठा लिया, तो तू (स्वयं)—

इनका निगहबान था और तू तमाम चीज़ों की ख़बर रखता है ० अगर तू इनको अज़ाब दे, तो (तुझको इख़्तियार है) यह तेरे बन्दे हैं। और अगर तू इनको माफ़ करे, तो (कोई तेरा हाथ नहीं पकड़ सक्ता। क्योंकि) बेशक तू (ही सब पर) ग़ालिब (और) हिकमत वाला है ० (ईसा की यह मअ़रूज़ात सुनकर) अल्लाह (तआ़ला) फ़र्मायेगा कि यही (आज का) दिन है कि सच्चे बन्दों को उनका सच काम आयेगा। उनके लिये (बहिश्त के) बाग़ होंगे, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी (और वह) उनमें हमेशा हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे ख़ुश और वह अल्लाह से ख़ुश। यह है बड़ी क़ामयाबी ० आसमान और ज़मीन और जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब पर अल्लाह ही की हुकूमत है और वह सब चीज़ पर क़ादिर है ॥

सूरत-अनआ़म

मक्की यानी मक्के में नाज़िल हुई और इसमें १६५ आयतें और २० रुकूअ़ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह ही को सज़ावार है, जिसने आसमानों को पैदा किया और (नीज़) ज़मीन को और अँधेरे बनाये और (नीज़) चांदना ० इस पर भी काफ़िर (ख़ुदा के सिवा और चीज़ों को) अपने पर्वर्दिगार के साथ बराबरी के दरजे में रखते हैं ० वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने तुम (लोगों) को मिट्टी से पैदा किया। फिर (हर एक के लिये ज़िन्दिगी की) एक मीआद ठहरादी और एक मीआद (क़यामत की है, जिसका वक़्त किसी को मालूम नहीं, मगर) उसके नज़दीक मुतअ़य्यन है। फिर भी तुम (लोग उसकी ख़ुदाई में) शक करते हो०—

الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ
إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ
فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ قَالَ اللَّهُ هَٰذَا
يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ
لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ وَهُوَ عَلَىٰ
سورة الأنعام كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَ
جَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ۝ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ
ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا وَأَجَلٌ مُسَمًّى عِنْدَهُ ثُمَّ أَنْتُمْ تَمْتَرُونَ

وهو

उनका रक्षक रहा और तू तो हर बात की (भली भाँति) ख़बर रखता है। (उनके इस असभ्य और अनुचित कार्य के कारण) यदि तू उनको दण्ड दे, तो (तुझको हर प्रकार का अधिकार है। कोई तुझे रोकने वाला नहीं। क्योंकि) वह तेरे बन्दे हैं और (यदि उनकी निर्बलताओं का ध्यान करके) तू उनको क्षमा करदे, तो निस्सन्देह तूही शक्तिवान है। (कोई तेरे समान नहीं और) बुद्धिमान है, (कोई तेरी सुसाधकताओं को नहीं समझ सकता) ॥

(हज़रत ईसा का उत्तर सुन कर) ख़ुदा तआ़ला कहेगा—यह वह दिन है, जिस में सच्चों को उनका सच कल्याण-कारक होगा (कि) उनके लिये (वहाँ) ऐसे बाग़ होंगे, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी (और) जहाँ वह सदैव सदैव रहेंगे (और एक बार प्रविष्ट होने के पश्चात फिर वहाँ से न निकलेंगे और फिर सब से बढ़ कर यह बात होगी कि) अल्लाह उनसे प्रसन्न होगा और वह ख़ुदा (की प्रसन्नता) से प्रसन्न होंगे। (मनुष्य के लिये) ख़ुदा का प्रसन्न होना ही बहुत बड़ी सफलता है ॥

(सच्चे लोगों को पारितोषिक व पुरस्कार देने में कोई मनुष्य ख़ुदा का हाथ नहीं रोक सकता कि) लोक और लोक की वस्तुओं के अतिरिक्त (सब कुछ) ख़ुदा तआ़ला के अधिपत्य में है और वह प्रत्येक वस्तु पर अधिकार रखता है ॥

सूरत-अनआ़म

मक्की अर्थात् मक्के में उतरी, इस में १६५ या १६६ आयतें और २० रुकूअ़ हैं ॥

समस्त प्रशंसायें (अज़ल से अबद तक *) उस (पवित्र) ख़ुदा (ही) के लिये हैं, जिसने (केवल अपनी शक्ति व बुद्धि से) आसमानों (आकाशों) और पृथ्वी (जैसी वस्तुओं) को उत्पन्न किया। जिनकी वास्तविकता व तत्व को जानना और पहिचानना भी मनुष्य की पहुंच से बाहर है और (जिसने) उजाले और अँधेरों को बनाया (जिन पर संसार की प्रत्येक वर्तमान वस्तु निर्भर है)। फिर (इन समस्त बातों के होते हुये, जो ख़ुदा की क़ुदरत और उसके हर एक प्रशंसा के योग्य होने के सुबूत में अत्यन्त स्पष्ट प्रमाण हैं) काफ़िर अपने (सच्चे) पालन कर्त्ता के बराबर (ऐसी चीज़ों को) ठहराते हैं, (जो उसकी इन विराट सृष्टि के मुक़ाबले में घास के तिनके के बराबर भी नहीं) ॥

* टीका—अज़ल-उस समय को कहते हैं, जब ख़ुदा की व्यक्ति के अतिरिक्त कोई वस्तु मौजूद न थी और अबद, उसको कहते हैं कि जब संसार और आकाश और उसकी सब वस्तुएँ नष्ट हो जायेंगी और ख़ुदा के सिवा कुछ शेष न रहेगा:—हसन निज़ामी ॥

(फिर केवल यही नहीं कि ख़ुदा ने आकाशों और पृथ्वी ही को उत्पन्न किया हो, प्रकाश व अँधेरों को बनाया हो, वरन्) तुमको (भी) उसी ने पैदा किया है (और) मिट्टी से (पैदा किया है)। फिर (तुम्हारे लिये) उसने एक समय नियत किया (कि न उसके पश्चात तुम्हारे लिये संसार में रहना सम्भव है और न उसके पूर्व संसार में आना सम्भव है) और एक (दूसरी) अवधि (अर्थात प्रलय) का ज्ञान उसी के पास है। (कोई नहीं कह सकता कि प्रलय कब होगी और यह सब कुछ जान लेने के उपरान्त) फिर (भी) तुम (ख़ुदा की शक्ति व महानता और उसकी ख़ुदाई में) सन्देह करते हो ॥

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ
وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝ وَمَا
تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا
مُعْرِضِيْنَ ۝ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۝
فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ
اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ
مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَ
اَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا وَّجَعَلْنَا
الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ
وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝ وَلَوْ نَزَّلْنَا
عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ
لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝
وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۭ وَلَوْ اَنْزَلْنَا

और (क्या) आसमानों में और (क्या) ज़मीन में वही-अल्लाह (माबूद) है। जो कुछ तुम (लोग) छुपा कर कहते हो (वह) और जो कुछ पुकार कर कहते हो (वह) उसका (सब) मालूम है। और जो कुछ तुम करते हो (वह भी सब) उसको मालूम है ० और उनके पर्वर्दिगार की (वहदानियत की) दलीलों में से कोई दलील इन लोगों के सामने पेश नहीं होती, मगर उस से रूगर्दानी ही करते रहते हैं० चुनांचे जब (क़ुरआन बर) हक़ (भी) इनके पास आया, उसको भी झुठला ही दिया। तो यह लोग जिस चीज़ की हँसी उड़ा रहे हैं, उसकी हक़ीक़त इनको आगे चल कर मालूम हो जाएगी ० क्या इन लोगों ने (इस बात पर) नज़र नहीं की कि हमने इनसे पहिले कितनी उम्मतों को हलाक कर मारा, जिनकी हमने मुल्क में ऐसी (मजबूत) जड़ बाँध दी थी कि (ऐ मुन्किरो ! अभी तक भी) तुम्हारी ऐसी जड़ नहीं बाँधी और हमने (पानी की इस क़दर इफ़रात की कि ऊपर से तो) उन पर मूसला धार मेंह बरसाया और उनके नीचे नहरें रवाँ करदीं। फिर हमने उनके गुनाहों की सज़ा में उनको हलाक कर मारा और उनके (हलाक हुये) पीछे और उम्मतें निकाल खड़ी कीं ० और (ऐ पैग़म्बर !) अगर हम काग़ज़ पर (लिखी लिखाई) किताब (भी) तुम पर उतारते और यह लोग उसको अपने हाथों से छू (भी) लेते, तो हम जो लोग मुन्किर हैं, यही बात कहते कि यह तो बस सरीह जादू है ० और (काफ़िर) कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं नाज़िल हुआ ? और अगर हम फ़रिश्ते को भेजते—

और (वही .खुदा–जिसने पृथ्वी व आकाश और तुमको उत्पन्न किया है) आकाशों और पृथ्वी में पूजने योग्य है। (उसका ज्ञान इतना विस्तृत है कि) वह तुम्हारे (हृदयों के) भेद को (भी) जानता है और तुम्हारे प्रगट कर्मों को भी जानता है। और वह (यह भी) जानता है (कि उन कर्मों पर) तुम क्या कुछ (पाप व पुण्य) संचय कर रहे हो ॥

(इन काफ़िरों के सामने .खुदा की .खुदा वन्दी की यही निशानियाँ नहीं आईं। और उन लोगों ने केवल इन्हीं निशानियों का इन्कार नहीं किया, बल्कि) उनके सामने (तो) उनके पालन कर्त्ता के चिन्हों में से, जो चिन्ह (भी) आता है। वह—उसका इन्कार करते हैं ॥

(इन सब चिन्हों के उपरान्त सब से अन्त में) काफ़िरों ने (तो) सच्चे रसूल (अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम) को (भी) जब वह उनके पास (.खुदा की किताब .कुरआन मजीद लेकर) आये, (तो यह कह कर) झूठा बता दिया (और आप के बुलावे और .खुदा के सन्देश को सुनने से इन्कार कर दिया कि आप उन्मत्त कवि और असत्य बातें बनाने वाले हैं और .कुरआन में पुरानी झूठी घड़ी हुई कहानियां हैं, इत्यादि–परन्तु यह उनकी भूल थी)। उनके पास (बहुत) जल्द उस वस्तु (अर्थात् अल्लाह के सन्देश के फलने फूलने और एक थोड़े समय में समस्त अरब देश में विस्तृत हो जाने) की ख़बरें आ जायेंगी, जिनकी (वह अपने विचार में ध्यान देने योग्य न समझ कर) हँसी उड़ाया करते थे ॥

क्या इन लोगों को (जो आज हमारी किताब और हमारे रसूल क झूठा बता रहे हैं) इस बात की ख़बर नहीं (कि) हम उनसे पूर्व (आद व समूद और नूह की जाति के समान) कितनी ऐसी जातियों को मार चुके हैं, जिनको हमने संसार में वह (विजय और) शक्ति दी थी, जो तुम को नहीं दी है और हमने उन पर (आवश्यकता के समय) ख़ब वर्षा की थी और हमने (उनके लिये) नहरें बनाई थीं, जो उनके नीचे से बहती थीं। फिर (जब उन्हों ने हम से इन प्रसादों से कृतज्ञ न हुए, बल्कि अवज्ञा और कृतघ्नता में लिप्त हो गये, तो) हमने उनको उनके (इन) पापों के कारण मार डाला और (उनकी जगह) उनके पश्चात दूसरी जातियों को पैदा कर दिया ॥

और (इन लोगों के दिल तो इतनी बुरी तरह बदल गये हैं और सत्य को ग्रहण करने की इतनी पात्रता इन से निकल गई है कि) यदि हम तुम पर कोई काग़ज़ पर लिखी हुई किताब अवतीर्ण कर देते–फिर यह लोग उस किताब को (न केवल आँखों से देख लेते, वरन्) हाथों से स्पर्श (भी) कर लेते, तब भी (यह ऐसे हठ धर्मी) काफ़िर (हैं, कि यह उसको भी) यही कहते (कि) यह तो साफ़ जादू है ॥

और यह लोग (यह भी तो) कहते हैं (कि हज़रत) मुहम्मद (अपने दावे में यदि सच्चे हैं, तो इन) पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया ? (जिस से इनकी सत्यता प्रकट होती)। और (इन मूर्खों को अल्लाह का स्वभाव तो मालूम ही नहीं है)। यदि हम फ़रिश्ते को (इसी भाँति) अवतीर्ण करते—

مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ
مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝
وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ
سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ قُلْ
سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ قُلْ لِّلّٰهِ ۭ كَتَبَ عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۭ لَيَجْمَعَنَّكُمْ
اِلٰي يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي
الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ قُلْ اَغَيْرَ
اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ
يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۭ قُلْ اِنِّىْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ
مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّىْٓ

اخاف

तो झगड़ा ही चुक गया था (कि फ़रिश्ते के आने पर भी न मानते, तो ज़रूर फ़ौरन अज़ाब नाज़िल होता)। फिर इनको (किसी तरह की) मोहलत (भी) न मिलती ० और अगर हम रसूल का मददगार कोई फ़रिश्ता बनाते, तो उसको भी आदमी ही बनाते (क्योंकि इनको फ़रिश्तों के देखने की सलाहियत ही नहीं)। और जो शुबहे (यह लोग अब) कर रहे हैं, वही शुबहे हम (उस वक़्त भी) इन (के दिलों) पर तारी कर देते ० और (ऐ पैग़म्बर !) तुमसे पहले भी पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई जा चुकी है, तो जिन लोगों ने पैग़म्बरों से हँसी की, वह (अज़ाब) जिसकी हँसी उड़ाते थे (आख़िर) उन पर आ नाज़िल हुआ ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मुल्क में चलो फिरो, फिर देखो कि (पैग़म्बरों के) झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है (यह सारा कारख़ाना) किसका है ? (फिर इनके जवाब का मुन्तज़िर रहना ज़रूर नहीं, तुम आप ही) कह दो कि (यह सब कुछ) अल्लाह का है। उसने (अज़ ख़ुद लोगों पर) मेहरबानी करने को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है। (और) वह क़यामत के दिन तक–जिसके आने में कुछ भी शुबहा नहीं, तुम लोगों को ज़रूर जमा करके रहेगा। (मगर कितना ही समझाओ) जो लोग आप अपना नुक़सान कर रहे हैं, वह तो ईमान लायेंगे नहीं ० और उसी (ख़ुदा) का है, जो कुछ रात (के अँधेरे) और दिन (की रोशनी) में (रूये ज़मीन पर) बसता है। और वह (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि ख़ुदा, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, क्या उसके सिवा (किसी और को मैं अपना) कारसाज़ बनाऊँ ? और वह (सब को) रोज़ी देता है और कोई उसको रोज़ी नहीं देता (क्योंकि वह पाक और बेनियाज़ है। ऐ पैग़म्बर ! यह तो इस सवाल का क्या जवाब देंगे, तुम ही इन से) कह दो कि मुझको तो यह हुक्म मिला है कि सब से पहले मैं (सिर्फ़ एक ख़ुदा का बन्दा) फ़र्मां बर्दार बनूँ और (उसने मुझसे फ़र्मा दिया है कि) ख़बरदार ! मुश्रिकों में (शामिल) न होना ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो—

(कि वह भी देख लेते, तो फिर) तो मामला (ही) ख़त्म हो जाता। (और) फिर उनको (कोई) अवसर (भी) न मिलता। (क्योंकि असली रूप में फ़रिश्ता यदि अवतीर्ण होता और यह काफ़िर फिर इन्कार कर देते, तो अवश्य अज़ाब अर्थात् दण्ड अवतीर्ण होता। परन्तु अल्लाह को उन पर अज़ाब उतारना स्वीकार न था। इस लिये फ़रिश्ता प्रकट–रूप से अवतीर्ण नहीं किया) ॥

और यदि हम (उनकी माँग के अनुसार) रसूल को फ़रिश्ता बनाते, तो (चूंकि मनुष्य अपनी शारीरिक आँखों से फ़रिश्तों को अपने असली रूप में देख नहीं सकता। इस लिये) हम उसको मनुष्य (की आकृति के अनुसार) बनाते (कि वह उसको देख सकें)। और (इस दशा में) हम (अपने इस काम से) उन पर (इसी प्रकार) कठिनाइयां पैदा कर देते, जिस प्रकार (कि) वह (स्वयं कठिनतायें पैदा) करते हैं। (अर्थात् यदि हम मनुष्य के रूप में फ़रिश्ते को अवतीर्ण करते, तो जो आक्षेप और सन्देह उनको पैदा होते हैं; वही सन्देह पैदा होने का कारण हमारा यह काम स्वयं होता-तो क्या लाभ होता ?) ॥ और (इन काफ़िरों की यह व्यर्थ माँगें केवल हँसी और टाल मटोल की बातें हैं। ऐ हमारे रसूल ! तुमको इससे दुखित न होना चाहिये)। तुमसे पूर्व (भी) बहुत से नबियों की हँसी उड़ाई जा चुकी है। फिर जिन लोगों ने उन (पवित्रात्माओं) से हँसी की थी, उनको (ख़ुदा के) उस (अज़ाब) ने आ घेरा; जिसका उन्होंने (रसूल की ज़बान से सुन कर कभी विश्वास न किया था और जिसकी वह सदैव) हँसी उड़ाया करते थे ॥

(ऐ हमारे रसूल ! तू इन हँसी करने वालों से) कह दे (कि किसी को सच्चा या झूठा ठहराने का यह कोई बुद्धि–युक्त रूप नहीं है, कि किसी मनुष्य को केवल इस लिये झूठा ठहराया जाय–कि वह जो कुछ कहता है, तुम्हारे सिद्धान्तों व विचारों के विरुद्ध है। बल्कि इसकी उत्तम सूरत यह है कि) तुम संसार में चलो (और सैर करो)। फिर देखो कि झूठा बताने वालों का क्या परिणाम हुआ। (फिर उस समय तुम्हारी आत्मा तुमसे जो कुछ कहे, वह करना) ॥ (ऐ हमारे रसूल ! इन लोगों से) पूछो (कि यह सब) संसार व संसारिक वस्तुयें किसके अधिकार में हैं ? (और वह तो भला क्या स्वीकार करेंगे) तुम (ही) कहो (कि यह सब कुछ) अल्लाह (ही) का है। (परन्तु इतनी शक्ति व सत्ता रखते हुए भी) उसने अपने ऊपर (अपनी तुच्छ सृष्टि पर) मेहरबानी करना अनिवार्य (भी) कर लिया है। (अन्यथा इस कुफ़्र व शिर्क के बाद किसको कल्याण मिल सकता था)। वह प्रलय के दिन, जिसमें कोई सन्देह (व शंका) नहीं, तुम (सब) को एकत्रित (भी) ज़रूर करेगा (और) जो लोग (अपने कुफ़्र व शिर्क और रसूलों का मज़ाक़ उड़ा कर) अपने आपको नष्ट कर चुके हैं, तो वह ईमान न लायेंगे ॥

(और ऐ हमारे रसूल ! तुम लोगों से कह दो कि) संसार की प्रत्येक (स्थायी व अस्थायी या पायदार व ना पायदार सृष्टि) जो रात व दिन में होती है, ख़ुदा ही के अधिकार में है। और वही (सबकी बातों का) सुनने वाला (और सबकी गुप्त से गुप्त दशाओं का अच्छी तरह) जानने वाला है। (उससे किसी की कोई बात छिपी नहीं है) ॥

(ऐ हमारे रसूल ! लोगों से) कह दो कि क्या उस ख़ुदा के सिवा मैं कोई (और) पूज्य बनाऊँ ? जो आकाशों और पृथ्वी का पैदा करने वाला है। वही (समस्त सृष्टि को तो) अन्न देता है और उसको (कोई) अन्न नहीं देता है। (और ऐ हमारे रसूल ! लोगों से) कह दो (कि मैं ख़ुदा के सिवा किसी और को किस प्रकार पूज्य बना सकता हूं)। मुझको (तो) आदेश दिया गया है कि सब से पहिले (ख़ुदा के आदेशों के सामने) सर झुका दूँ। और (ऐ रसूल !) तुम कदापि २ मुश्रिक (लोगों में शामिल) न हो जाना ॥ (ऐ हमारे रसूल ! लोगों से) कह दो (कि) अगर मैंने—

أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ مَنْ
يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ
الْمُبِينُ ۝ وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ
لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ
الْخَبِيرُ ۝ قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ
لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ
أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا
هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ۝
الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ
أَبْنَاءَهُمُ ۘ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا
يُؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ

ع

कि अगर मैं अपने पर्वरदिगार की ना फ़र्मानी करूँ, तो मुझको (क़यामत के) रोज़ सख़्त अज़ाब से (बड़ा ही) डर लगता है ० उस दिन जिस (के सर पर) से अज़ाब टल गया, तो उस पर ख़ुदा ने बड़ा ही रहम किया और यह सरीह कामयाबी है० और (ऐ बन्दे !) अगर अल्लाह तुझको (किसी क़िस्म की) तकलीफ़ पहुँचाये, तो उसके सिवा कोई उस (तकलीफ़) का दूर करने वाला नहीं। और अगर तुझको (किसी क़िस्म का) फ़ायदा पहुंचाये, तो वह हर चीज़ पर क़ादिर है०और वही अपने बन्दों पर ज़ाबित है और वही हिकमत वाला (और) बाख़बर है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि गवाही के एतिबार से बड़ा (मोतबर गवाह) कौन ? (यह तो क्या जवाब देंगे, तुम आप ही इनसे) कहदो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान (बड़ा मोतबर) गवाह ख़ुदा है। और यह क़ुर्आन मेरी तरफ़ इसी लिये वही किया गया है कि इसके ज़रिये से तुमको और जिसे (इसकी ख़बर) पहुँचे (उसको अज़ाब ख़ुदा से) डराऊं। क्या तुम पक्के बन कर इस बात की गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे माबूद भी हैं ?(ऐ पैग़म्बर ! तुम इन से) कहो कि (तुम लोग पड़े गवाही दिया करो) मैं तो (इस बात की) गवाही देता नहीं। (तुम इन लोगों से) कहो कि वह तो सिर्फ़ एक माबूद है (और बस) । और जिन चीज़ों को तुम ख़ुदा का शरीक बनाते हो, मैं (तो) इन (के शरीक होने) का रवादार नहीं ० जिन लोगों को हमने किताब दी है (यानी यहूद व नसारा) वह तो जैसा अपने बेटों को पहिचानते हैं, वैसा ही (हमारे) इस पैग़म्बर मुहम्मद को भी पहिचानते हैं। (मगर) जो (अपने हाथों) अपना नुक़सान कर रहे हैं, वह तो (किसी तरह) ईमान लाने वाले हैं नहीं ० और जो शख़्स ख़ुदा पर झूठ बोहतान बांधे—

अपने ख़ुदा की अवज्ञा की (और तुम्हारे मुश्रिकों जैसे स्वभाव व आचरणों को ग्रहण कर लिया, तो) मुझ को (प्रलय के) बड़े दिन (के अज़ाब) का (जो संसार के दिनों की दृष्टि से एक हज़ार वर्ष के बराबर होगा) भय है (कि वहाँ ख़ुदा के सामने मैं क्या जवाब दे सकूँगा) ॥

(उस रोज़ अर्थात् प्रलय के दिन तो) जिस मनुष्य से अज़ाब हटा लिया जायगा, उस पर ख़ुदा ने बड़ी कृपा की। और (वास्तव में मनुष्य की) यही (बहुत बड़ी और) स्पष्ट सफलता (और सौभाग्य) है। (संसार का क्षणिक जीवन तो बुरा भला व्यतीत हो ही जायगा। ख़ुदा प्रलय के अज़ाब से सुरक्षित रक्खे, जिसके कष्ट की कोई सीमा नहीं) ॥

और अगर ख़ुदा (तआला) तुमको (कोई) दुःख (और मुसीबत) पहुँचाये, (तो) फिर (ख़ुदा की पहुंचाई हुई) उस (मुसीबत) का ख़ुदा के सिवा कोई दूर करने वाला (भी) नहीं हो सकता और अगर ख़ुदा तुझको (कोई) ख़ुशी पहुंचाये, तो वह प्रत्येक वस्तु पर अधिकार रखता है (कि न उसकी लाई हुई मुसीबत को कोई टाल सकता है और न उसकी पहुंचाई हुई भलाई को कोई रोक सकता है) ॥

और (लोगो ! यह ख़ुदा ही की शान है कि) वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है। (जिस प्रकार का सलूक उनके साथ चाहता है, करता है। किसी में इतनी सत्ता नहीं है कि उसके इरादे का विरोध कर सके)। और वही (अपने समस्त काम) बुद्धिमानी (से करने) वाला और (अपनी समस्त सृष्टि की दशा से) बहुत (अच्छी तरह) ख़बर रखने वाला है। (न उसका कोई काम बुद्धिमानी से ख़ाली है और न किसी की कोई बात उस से छिपी हुई है) ॥

(ऐ हमारे रसूल ! लोगों से) कहो (तुम्हारे विचार से) गवाही (के विषय) में कौन (सी) वस्तु सब से बड़ी है ? (कि मैं अपने सन्देशिया होने की गवाही में उसको पेश करूँ)। और (ऐ रसूल !) तुम (इन से) कह दो (कि मेरे निकट तो गवाही के विषय में सब से बड़ी चीज़) अल्लाह है (जो) मेरे तुम्हारे बीच साक्षी है। और (अल्लाह की गवाही) यह क़ुर्आन है, जो मेरी ओर (इस लिये) वही (ख़ुदाई सन्देश के रूप से) आया है, जिस से कि मैं तुमको (यह दिखा कर) डराऊँ और तुमसे दूसरे शिक्षा ग्रहण करें (कि यद्यपि यह तुम्हारी अपनी भाषा में है और तुमको अपनी भाषा-विज्ञता का दावा भी है। लेकिन तुम उसकी तरह एक 'सूरत' भी नहीं बना सकते हो। तो इससे बढ़ कर मेरे—ख़ुदा का रसूल होने की और क्या गवाही होगी ? ऐ लोगो !) क्या तुम (यही) गवाही दोगे कि ख़ुदा तआला के साथ (कुछ) और दूसरे पूज्य (भी) हैं (और क्या तुम्हारी आत्मा भी यही कहती है ? ऐ रसूल !) तुम कह दो (कि) मैं (तो यह) गवाही नहीं देता। तुम (तो ऐ रसूल ! यही) कहो (कि बस) ख़ुदा तो एक ही पूज्य है और मैं निस्सन्देह तुम्हारे शिर्क से अलग हूँ ॥

(और इन काफ़िरों में से) जिन लोगों को हमने किताब दी है (अर्थात् यहूदी और ईसाई) वह (तो हमारे) रसूल (हज़रत मुहम्मद के रसूल अर्थात् सन्देशिया होने) को इस तरह जानते हैं (और इसी तरह उनको तुम्हारे रसूल होने का विश्वास है) जिस तरह वह अपनी सन्तान को पहिचानते हैं (और उनके विषय में उन्हें विश्वास है। और ऐ हमारे रसूल !) जो लोग अपने आपको (तुम पर ईमान न लाकर) हानि पहुँचा चुके हैं, वह (अपने हृदयों को इतनी बुरी तरह बदल चुके हैं कि अब भी) ईमान न लायेंगे ॥

और (ऐ लोगो ! विचार तो करो) उन लोगों से बढ़ कर (और) कौन ज़ालिम होगा, जो अल्लाह तआला पर झूठा दोष लगाते हैं—

كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝
وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا
اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝
ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا
مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى
اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا وَاِنْ
يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ
يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْــٔـَوْنَ عَنْهُ
وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝
وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ

وقف لازم

या उसकी आयतों को झुठलाये, उससे बढ़ कर ज़ालिम (और) कौन ? (और) ज़ालिमों को किसी तरह फ़लाह होनी नहीं ० और (एक दिन होगा) जब कि हम इन सब को (अपने हुज़ूर में) जमा करेंगे, फिर उन लोगों से जो (हमारे साथ दूसरे माबूदों को) शरीक करते थे, पूछेंगे कि कहां हैं? तुम्हारे (ठहराये हुए) वह शरीक, जिनको तुम (शरीक ख़ुदाई) समझते थे ० फिर इससे बढ़ कर इनका और झूठ क्या होगा। कहेंगे हमको ख़ुदा ही की क़सम, जो हमारा पर्वर्दिगार है कि हम तो (किसी को उसका) शरीक नहीं बनाते थे ० (ऐ पैग़म्बर !) देखो तो सही (यह लोग) किस तरह अपने ऊपर आप झूठ बोलने लगे और इनकी इफ़तरा पर्दाज़ियाँ (सब) उनसे गई गुज़री हो गई ० और (ऐ पैग़म्बर ! बाज़) इनमें से ऐसे भी हैं कि तुम्हारी (बातों की) तरफ़ कान लगाते हैं और उनके दिलों पर हमने (गफ़लत और हठ धर्मी के) पर्दे डाल दिये हैं और इनके कानों में टेंट ताकि तुम्हारी बात न समझ सकें। और अगर यह (दुनिया जहान की) सारी निशानियाँ (यानी मोजिज़े) भी देख लें; ताहम ईमान लाने वाले नहीं। (इनकी हठ धर्मियां तो) यहां तक (बढ़ी हुई हैं) कि जब तुम्हारे पास तुमसे झगड़ते हुए आते हैं, तो (यह) काफ़िर (क़ुर्आन को सुन कर) बोल उठते हैं कि क़ुर्आन (में और रक्खा ही क्या है ? इसमें) तो सिर्फ़ अगलों की कहानियां (ही कहानियां) हैं० और यह लोग क़ुर्आन (के सुनने) से दूसरों को मना करते हैं और (आप भी) उससे भागते हैं। और (ऐसी शरारतों से) बस अपनी ही हलाकत के दरपै हैं और (ग़ज़ब यह है कि इस नुकते को) नहीं समझते ० और (ऐ पैग़म्बर !) काश तुम (इनको) ऐसी हालत में देखो कि दोज़ख़ पर (ला) खड़े किये जायँ और (उसको देख कर) लगें कहने, ऐ काश! हम (फिर दुनिया में) वापिस भेज दिये जायँ—

(और ख़ुदा की ख़ुदाई में ख़ुदा की किसी तुच्छ वस्तु को शरीक ठहराते हैं) या—(ख़ुदा तआला के एक होने का चिन्ह जब उनके सामने आता है और रसूल के द्वारा जब उनको कोई चिन्ह दिखाया जाता है, तो) ख़ुदा की निशानियों को झूठा बताते हैं। (इन लोगों से कह दो कि) निस्सन्देह ख़ुदा ज़ालिमों को (किसी प्रकार की कोई) भलाई (दुनिया में और प्रलय में) नहीं देगा। (दुनिया में भी बहुत शीघ्र उनको ज़लील होना पड़ेगा और प्रलय में तो जो कुछ होगा, वह होगा)॥

(ऐ लोगो ! उस दिन को याद करो) जिस दिन हम उन सब को (अपने सामने प्रलय के मैदान में) एकत्रित करेंगे। फिर जिन लोगों ने (संसार में हमारे साथ दूसरे लोगों को) शरीक किया (था) हम कहेंगे (कि) आज तुम्हारे वह (ख़ुदा के) शरीक कहां हैं ? जिनके मौजूद होने का तुम्हें विश्वास था। (और यह कि वह ख़ुदा के सामने तुम्हारी शफ़ाअत अर्थात् सिफ़ारिश करेंगे, मगर) फिर इन (लोगों) का इसके अतिरिक्त और कोई बहाना न होगा (कि उस) अल्लाह की शपथ—जो हमारा पालन कर्त्ता है, हम (तो ख़ुदा एक के साथ किसी और को) शरीक नहीं बनाते थे। (ऐ रसूल ! ज़रा विचार करना और ध्यान करना कि) यह (लोग) किस प्रकार (स्वयं) अपने विरुद्ध झूठ बोलेंगे। (यहां तो जो कुछ चाहें झूठी बातें बनायें, मगर वहां एक न चलेगी। बल्कि वहां तो) जो कुछ वह झूठी बातें बनाते थे (सब) अदृष्ट हो जायेंगी (और बचाव के लिये उनको झूठ ही बोलना पड़ेगा-मगर व्यर्थ)॥

(ऐ हमारे रसूल !) इन (काफ़िरों में से कुछ ऐसे (लोग भी) हैं, जो (हमारे क़ुर्आन को) तुम्हारी तरफ़ (कान लगा कर) ध्यान-पूर्वक सुनते हैं। यद्यपि (इनके कुफ़्र के अनुरोध के कारण) हमने उनके दिलों पर (इस लिये) पर्दे डाल दिये हैं कि वह उसको समझ न सकें। और उनके कानों में (सुनना) भार है (कि वह सत्य बात को सुनते भी कठिनता से हैं) और अगर वह (तुम्हारे सच्चा रसूल होने की) हर (एक) निशानी (भी) देखलें, तो (वह तो इस प्रकार के हठ धर्मी और अविश्वासी हैं कि) वह (फिर भी) उस पर ईमान न लायेंगे। (और केवल इतना ही नहीं, वह तो) यहां तक (बढ़े हुए हैं कि) जब वह तुम्हारे पास आते हैं (तो) तुम से झगड़ा करते हैं। (और यह) काफ़िर लोग (तो क़ुर्आन को सुन कर ईमान लाना तो अलग रहा—यह) कहते हैं कि यह तो अगले लोगों की बे सिर पैर की बातें हैं॥

यह लोग क़ुर्आन (को सुन कर सत्य को स्वीकार करने) से (स्वयं भी) अलग रहते हैं और (दूसरों को) उस (के सुनने और सत्य स्वीकार करने) से रोकते (भी) हैं (परन्तु अपने इस कार्य से) वह अपने ही आप को हलाक करते हैं और (इस को बिल्कुल) नहीं समझते हैं (कि उनका यह ढंग उनके लिये किसी प्रकार लाभ दायक नहीं हो सकता)॥

(और ऐ हमारे रसूल !) यदि तुम (इन लोगों की दशा उस समय) देखो, जब यह (लोग) नर्क के पास खड़े किये जायेंगे, तो कहेंगे क्या अच्छा होता (यदि) हमको दूसरी बार (संसार में) वापिस किया जावे—

وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ●
بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَوْ رُدُّوْا
لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ● وَقَالُوْا
اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ●
وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا
بِالْحَقِّ ۚ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا
كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ● قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِلِقَآءِ اللّٰهِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا
يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ
عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ۚ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ● وَمَا الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۚ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ● قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ
الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ

ग्रौर अपने पर्वर्दिगार की आयतों को न झुठलायें ग्रौर ईमान वालों में से हों ० (फिर भी उनकी यह नदामत तहे दिल से नहीं) बल्कि जिस (बेईमानी) को पहले छुपाते थे (अब) उनके आगे आई (ग्रौर उसको देख कर लगे हसरत का इज़हार करने)। ग्रौर अगर (दुनिया में) वापिस भेज दिये जायँ, तो जिस चीज़ से इनको मना किया गया है, उसको फिर दुबारा करें ग्रौर करें। ग्रौर कुछ शक नहीं कि यह झूठे हैं ० ग्रौर (काफ़िर यह भी) कहते हैं कि यह जो हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, इसके अलावा ग्रौर किसी तरह की ज़िन्दगी नहीं। ग्रौर यह ग़लत है कि हम मरे पीछे जिला उठाये जायँगे ० ग्रौर (ऐ पैग़म्बर !) काश ! तुम (इनको उस वक़्) देखो जब यह लोग अपने पर्वर्दिगार के रूबरू ला खड़े किये जायँगे (ग्रौर वह इनसे) पूछेगा क्या यह तुम्हारा जी उठना (अब भो) सही नहीं ? वह जवाब देंगे, हमको अपने पर्वर्दिगार की क़सम, हां (सही तो है—इस पर ख़ुदा) फ़र्मायेगा कि तुम जो (दुनिया में इस ज़िन्दगी का) इनकार करते रहे (अब) उसकी सज़ा में अज़ाब (के मज़े) चक्खो ० जिन लोगों ने (क़यामत के दिन) अल्लाह के हुज़ूर में हाज़िर होने को झूठ जाना, बिला शुबहा वह लोग (बड़े) घाटे में रहे। (उनका इन्कार) वहीं तक (है) कि (क़यामत नहीं आई)। जब एक दम क़यामत इन (के सर) पर आ मौजूद होगी, तो चिल्ला उठेंगे कि ऐ अफ़सोस ! हमारी कोताही पर, जो क़यामत के बारे में हमसे हुई, (यह कहते जायँगे) ग्रौर अपने (गुनाहों के) बोझ अपनी पीठों पर लादे होंगे। देखो तो (क्या ही) बुरा (बोझ) है, जिसको यह लोग लादे (लादे फिर रहे) होंगे ० ग्रौर (यह) दुनिया की ज़िन्दगी तो निरा खेल ग्रौर तमाशा है। ग्रौर कुछ शक नहीं कि जो लोग परहेज़गार हैं, उनके लिये आख़िरत का घर कहीं बेहतर है। क्या तुम लोग (इतनी बात भी) नहीं समझते ० (ऐ पैग़म्बर !) हम इस बात को जाने बैठे हैं कि यह लोग जैसी जैसी बातें (तुमसे) कहते हैं, बेशक तुमको अर्ज़ुदा करते हैं। पस (तुमको सब्र करना चाहिये, क्योंकि) यह तुम को नहीं झुठलाते, बल्कि—

ग्रौर (अगर अब इस बार हम संसार में भेज दिये जायँ, तो) हम अपने पालन कर्त्ता की निशानियों को झूठा नहीं ठहरायेंगे। ग्रौर (इस बार) हम ईमान लाने वालों में होंगे ॥

(इन काफ़िरों की यह कामना बिल्कुल व्यर्थ है) बल्कि (आज तो) इससे पूर्व (संसार में अपने जिन आचरणों को) वह छिपाते थे, वह (भी) उनके सामने आ गये हैं। ग्रौर यदि (इनकी अभिलाषा के अनुसार) यह (लोग फिर संसार में) वापिस किये जायँ, तो फिर यह उन्हीं (बातों) को करें, जिनसे रोका गया है ग्रौर यह निस्सन्देह झूठे हैं। (यदि इनको अवसर मिले, तो यह अपने आचरणों से कभी बाज़ न आयें ग्रौर कभी ईमान न लायें) ॥

ग्रौर (इन काफ़िरों से हमारा रसूल जब यह कहता है कि मरने के बाद फिर प्रत्येक मनुष्य जीवित किया जायगा ग्रौर उसके कर्मों का हिसाब होगा, तो) वह कहते हैं कि ज़िन्दगी केवल हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है। ग्रौर (जब एक बार मर गये, तो फिर दूसरी बार) हम ज़िन्दा न किये जावेंगे। ग्रौर (ऐ रसूल !) यदि तुम (इन लोगों की उस समय की दशा) देखो, जब यह (लोग) अपने ख़ुदा के सामने खड़े किये जायेंगे (ग्रौर फिर उस समय) ख़ुदा तआला (उनसे यह) कहेगा (कि) क्या यह (मरने के बाद की दूसरी ज़िन्दगी) सच नहीं है ? (तो फिर उस समय उनको कोई चारा न होगा। ग्रौर) कहेंगे—हमारे पालन कर्त्ता की सौगन्ध ! हाँ (यह ज़िन्दगी सच है। परन्तु उस समय यह इक़रार व्यर्थ होगा। ग्रौर) ख़ुदा (तआला भी) कहेगा (कि) अपने कुफ़्र करने (ग्रौर सत्य का इक़रार न करने) के बदले (नर्क के) अज़ाब (का मज़ा) चक्खो ॥

(ऐ हमारे रसूल !) जिन लोगों ने (आज) ख़ुदा से मिलने (ग्रौर उसके सामने जाने) को झूठ बताया है, उन्होंने (ख़ुद) अपने आपको नुक़सान पहुँचा लिया है। (ग्रौर उनकी) यहाँ तक (आँखें न खुलेंगी कि वह नियत) समय उन (की आँखों) के सामने आ जायगा (उस समय उनको ख़बर होगी ग्रौर) कहेंगे—हाय अफ़सोस !! हमारी (उस) त्रुटि पर (जो अब तक) हमने की है। (फिर उस दिन उनकी दशा यह होगी कि) अपने (पापों) का भार अपनी पीठ पर लादे हुए होंगे। (ग्रौर) ख़ूब सुनलो (कि) वह (चीज़) जिसको वह (अपने ऊपर) लादे होंगे, (बहुत) बुरी होगी ॥

ग्रौर (ऐ लोगो !) सांसारिक जीवन तो केवल क्रीड़ा (ग्रौर खेल कूद) है (कि जिस तरह खेल कूद प्रकट रूप से मनोरञ्जक होते हैं, मगर एक विचार शील मनुष्य उस से अपना दिल नहीं लगाता। इसी तरह संसार प्रकट रूप से अत्यन्त मनोरञ्जक वस्तु है, परन्तु बुद्धिमान मनुष्य को उससे दिल न लगाना चाहिये। क्योंकि अल्लाह से) डरने वालों के लिये (तो) प्रलय का घर (ही) अच्छा (ग्रौर दिल लगाने का स्थान) है। (तो) क्या (तुमको बता देने के बाद भी) तुम (कुछ) सोचते (ग्रौर बुद्धि से काम) नहीं (लेते) हो ॥

(ऐ हमारे रसूल !) हम अच्छी तरह जानते हैं कि इन (काफ़िरों) के बचन तुमको दुखित करते हैं (तो ऐ हमारे रसूल ! उनके बचनों पर तुमको शोक न करना चाहिये)। क्योंकि वह तुमको झूठा (कह कर वास्तव में तुमको झूठा) नहीं कहते, बल्कि—

الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ
مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا
حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ
جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ
عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا
فِى الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِى السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ
وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا
لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ
عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ
بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِى الْكِتٰبِ

مِنْ شَيْءٍ

(यह) ज़ालिम (हक़ीक़त में) अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं (तो वह इनसे इन्तिक़ाम लेलेगा) ० और तुम से पहिले भी रसूल झुठलाये जा चुके हैं, तो उन्हों ने लोगों के झुठलाने पर और उनकी ईज़ादिही पर सब्र किया-यहां तक कि हमारी मदद उनके पास आ पहुंची। और कोई (हेकड़ से हेकड़ भी) ख़ुदा की बातों का बदलने वाला नहीं। और पैग़म्बरों के हालात तो तुमको पहुँच ही चुके हैं ० और अगर इन (मुन्किरों) की सर्कशी तुम पर गरां गुज़रती है और तुम से हो सके कि ज़मीन के अन्दर (अन्दर कोई) सुरङ्ग तलाश करो या आस्मान में कोई सीढ़ी (लगी हुई बहम पहुँचाओ) और (इन तदबीरों से) कोई (फ़र्मायशी) मोजिज़ा इनको ला दिखाओ (तो अपनी सी कर देखो, मगर इससे कुछ होना हुवाना नहीं) और अगर अल्लाह को मन्ज़ूर होता, तो इन (सब) को राह रास्त पर मुत्तफ़िक़ कर देता। तो देखो ! तुम कहीं नादानों में न (शामिल) हो जाना (कि लगो वक़्त से पहिले इनके लिये अज़ाब की जल्दी मचाने) ० (तुम्हारा समझाना तो) वही मानते हैं, जो (गोश दिल से) सुनते हैं। और (यह काफ़िर तो गोया) मुर्दे (हैं)। इनको ख़ुदा (क़यामत के दिन ज़िला) उठायेगा। फिर उसी की तरफ़ लौटाये जायँगे (तब मानेंगे और उस वक़्त का मानना कुछ मुफ़ीद न होगा) ० और (काफ़िर) कहते हैं कि इस (मुद्दई रिसालत) के पर्वर्दिगार की तरफ़ से कोई निशान (यानी मोजिज़ा; जैसा हम कहते हैं) क्यों नहीं उतरा ? (ऐ पैग़म्बर ! तुम इनके जवाब में) कहो कि अल्लाह निशान (यानी फ़र्मायशी मोजिज़े) के उतारने पर (भी) क़ादिर है, मगर इनमें के अक्सर (ख़ुदा की मस्लहतों को) नहीं जानते ० और जितने हैवानात ज़मीन में (चलते फिरते) हैं, और जितने परिन्द अपने दो परों पर उड़े २ फिरते हैं- यह सब भी तुम लोगों की तरह की मख़्लूक़ात हैं। लौह महफ़ूज़ में (सब लिखे हुये मौजूद हैं)। हमने (लिखने से)—

(यह) ज़ालिम अल्लाह की निशानियों का इन्कार करते हैं। (क्योंकि तुम और तुम्हारा निमंत्रण अर्थात् बुलावा ख़ुदा की निशानी है और तुम्हें झूठा बताना ख़ुदा की निशानियों को झूठा बताना है) ॥

और (ऐ हमारे रसूल ! तुमको इस कारण से भी शोक न करना चाहिये कि तुम्हें झूठा बताया जाना कोई नई बात नहीं है)। तुमसे पहिले भी बहुत (से) रसूलों को झूठा बताया जा चुका है। तो उन्हों ने (अपने को) झूठा (कहा जाने पर) सन्तोष किया। और (उनको केवल झूठा नहीं बताया गया, बल्कि) तकलीफ़ (भी) दी गई। (मगर उन्हों ने) यहां तक (सन्तोष किया कि) उनके पास हमारी सहायता पहुंची (कि हमने समस्त झूठा बताने वालों को मार डाला)। और अल्लाह तआला की (इन) बातों का कोई बदलने वाला नहीं है (कि वह अपने रसूलों की सहायता करेगा और उनके झूठा बताने वालों को मार डालेगा। इस लिये तुम भी ऐ रसूल ! धैर्य रक्खो) और तुम्हारे पास (तो क़ुरआन के द्वारा) नबियों के बहुत से वृतान्त (भी) पहुंच चुके हैं ॥

और (ऐ रसूल !) यदि तुमको इन (काफ़िरों) की विमुखता बुरी मालूम होती है (और बुरी लगती है) तो अगर तुम में यह क़ुद्रत हो (कि) पृथ्वी में कोई सुरंग या आकाश में कोई सीढ़ी पा लो, कि उनके सामने कोई निशान ला सको (तो करो और निशानी लाओ। मगर यह लोग फिर भी सच्चे मार्ग पर न आयेंगे)। और (अगर इनसे यह आशा होती, तो) यदि ख़ुदा चाहता, तो उनको (सच्चे) मार्ग पर एकत्रित कर देता। अतएव (तुम उनसे बिल्कुल आशा न रक्खो और उनसे इस प्रकार की शुभ आशा करके) ना समझ न बनो ॥

(तुम्हारे निमन्त्रण को) केवल वही लोग मानते हैं, जो सुनते हैं (और जिनके दिलों में सत्य को ग्रहण करने की पात्रता है। रहे वह मुर्दा दिल, जो इस सांसारिक जीवन में भी ऐसे ही निरर्थक हैं; जिस तरह मुर्दे । तो) मुर्दों को अल्लाह तआला (प्रलय के दिन) ज़िन्दा करेगा। फिर वह सब ख़ुदा ही की तरफ़ लौट कर जायेंगे (और फिर वहां उनको मालूम हो जायगा कि नबियों को झूठा बताने का क्या परिणाम है) ॥

और (यह काफ़िर लोग) कहते हैं (कि) इन (मुहम्मद) पर इनके पालन कर्त्ता की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी ? (तो ऐ रसूल !) तुम (इन लोगों से कह दो कि निश्चित रूप से) निशानी भेजना ख़ुदा के अधिकार में है। लेकिन (किसी निशानी के उतारने से क्या लाभ ? जब कि) इनमें से बहुधा (लोग तो) नहीं जानते हैं (कि निशानी उतारने के पश्चात फिर अवसर न मिलेगा) ॥

और (ऐ लोगो ! ख़ुदा के विचार में निशानी उतारने की आवश्यकता नहीं है और यदि आवश्यकता होती, तो वह निश्चित रूप से उतार देता और कभी कृपणता न करता। तुम इसको नहीं देखते हो कि) समस्त पृथ्वी पर चलने वाले (प्राणी) और हवा पर अपने दोनों परों से उड़ने वाले (पक्षी) तुम ही जैसे प्राणी हैं। (और) हमने किताब (लौह महफ़ूज़ अर्थात सुरक्षित ग्रन्थ) में कोई बात नहीं छोड़ी है—

مِن شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ مَن يَشَإِ اللَّهُ
يُضْلِلْهُ وَمَن يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝
قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ
السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝
بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ
إِن شَاءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا
إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ
لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ۝ فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُم بَأْسُنَا
تَضَرَّعُوا وَلَٰكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا
عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا
أُوتُوا أَخَذْنَاهُم بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ ۝

ع

कोई चीज़ फ़रो गुज़ाश्त नहीं की। फिर (क़यामत के दिन सब के सब) अपने पर्वर्दिगार के हुज़ूर में ला हाज़िर किये जायँगे ० और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं (उनको मिसाल ऐसी है, जैसे) अँधेरे में गूँगे और बहिरे (होते हैं) । ख़ुदा जिसे चाहे, गुमराह करदे और जिसे चाहे, उसे राह रास्त पर लगादे ० (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि भला देखो तो सही अगर अज़ाब ख़ुदा तुम्हारे सामने आ मौजूद हो या फ़र्ज़ करो कि उसी दम क़यामत तुम्हारे सामने आ खड़ी हो, तो अगर तुम (अपने दावे शिर्क में) सच्चे हो, तो क्या (उस वक़्त भी) ख़ुदा के सिवा (दूसरे माबूदों को) पुकारने लगोगे ० दूसरे माबूदों को तो नहीं, बल्कि उसी (एक ख़ुदा) को पुकारोगे। तो जिस (आफ़त के दूर करने) के लिये (उसको) पुकारोगे, अगर उसकी मर्ज़ी में आयेगा, तो उसको दूर कर देगा और जिन (माबूदों) को तुम शरीक (ख़ुदाई) बनाते हो (उस वक़् सब को) भूल जाओगे० और (ऐ पैग़म्बर!) तुमसे पहिले जो उम्मतें हो गुज़री हैं, हम उनकी तरफ़ भी (पैग़म्बर) भेज चुके हैं। फिर (जब उन्हों ने पैग़म्बरों का कहा न माना, तो) हमने उनको सख़्ती और तक्लीफ़ में मुब्तला किया, ताकि वह (हमारे हुज़ूर में) गिड़ गिड़ायें ० तो जब उन पर हमारा अज़ाब आया था, क्यों नहीं गिड़ गिड़ाये ? (कि हम अज़ाब को दफ़ा कर देते)। मगर (वह इस वजह से नहीं गिड़ गिड़ाये कि) उनके दिल सख़्त हो गये थे और जो (आमाल बद) करते थे, शैतान ने उन (की नज़रों में उन) को आरास्ता कर दिखाया था ० फिर जिस (मुसीबत के ज़रिये) से उनको आगाह किया गया था, जब (उसका) भूल (बिसर) बैठे (तो) हमने (भी उनको मुग़ाल्ते में डालने के लिये) उन पर हर तरह की (दुनियावी) नेअमतों के दर्वाज़े खोल दिये। यहां तक कि जो नेअमतें उनको दी गई थीं, जब उनको पाकर ख़ुश हुये. यका यक हमने उनको (अज़ाब में) धर पकड़ा और अज़ाब का आना था कि वह बे आस होकर रह गये०—

(सब पशु व पत्तियों का उसमें हाल है और किसी के साथ हमने किसी प्रकार की अनुदारता नहीं की है। जिसको जिस चीज़ की आवश्यकता थी, उसको लिख दिया है)। फिर (तुम्हारी तरह) वह (सब) अपने पालन कर्त्ता के पास एकत्रित होंगे ॥

और जिन लोगों ने हमारी निशानियों (की सुसाधकताओं को न समझ कर उन) को झूठा बताया है, वह बहिरे हैं, गूँगे हैं (और शंकाओं की तरह तरह की) अँधेरियों (और अन्धकारों) में हैं। जिस मनुष्य को ख़ुदा चाहता है (सत्य मार्ग से) भटका देता है और जिसको चाहता है, सीधे मार्ग पर लगा देता है ॥

(ऐ हमारे रसूल ! उन लोगों से) पूछो (कि) बताओ तो सही—अगर तुम पर ख़ुदा का अज़ाब उतरे या तुम पर प्रलय आ जावे, तो क्या ख़ुदा के अतिरिक्त (किसी) और को (अपनी सहायता के लिये) पुकारोगे ? (और) यदि तुम सच्चे हो (तो ठीक ठीक बताओ कि ऐसे समय तुम ख़ुदा को पुकारोगे या किसी और को, अपने पूज्यों में से पुकारोगे ?) ॥

बल्कि (तुम इक़रार करो या न करो, वास्तविकता यह है कि) तुम उसी (ख़ुदा) को पुकारोगे। तो ख़ुदा-जिसके लिये तुम (उसको) पुकारोगे (तुम्हारी उस विपत्ति को) अगर चाहेगा (तो दूर भी कर देगा)। और (फिर विपत्ति के समय) तुम जिन (जिन) को (ख़ुदा का) शरीक बनाते हो, भूल (भी) जाओगे (और तुम्हारी ज़बान से सहसा उसी का नाम निकलेगा) ॥

और (ऐ हमारे रसूल ! तुम उन काफ़िरों की अवज्ञा करने का कोई ख़्याल न करो)। हमने तुमसे पहिले (भी दूसरी जातियों) के पास रसूल भेजे हैं। (और उन जातियों ने रसूलों की अवज्ञायें भी की हैं और जब उन्हों ने अवज्ञायें कीं) तो (इस लिये) हमने उनको कड़े फ़ाक़ों और बीमारियों (और अनेक प्रकार की विपत्ति) में लिप्त कर दिया, कि कदाचित वह (ख़ुदा के सामने) विनती करें (और अपनी अवज्ञाओं पर लज्जित हों) ॥

तो (ऐ हमारे रसूल !) उन्हों ने (तुमको मालूम है कि) जब हमारी (ओर से उनको) कष्ट पहुँचा, क्यों विनती नहीं की ? (क्यों नहीं गिड़ गिड़ाये ? ताकि हम उनसे विपत्तियों को दूर कर देते)। लेकिन (हम क्या करें) उनके दिल (तो पत्थर जैसे) कठोर हो गये थे और शैतान ने उनके कर्मों को उनकी दृष्टि में (सजा कर) दिखाया था (ताकि उसी में लिप्त रहें और निकल न सकें और इसी लिये उन्हों ने विनती नहीं की) ॥

फिर (ऐ हमारे रसूल !) जब वह उन बातों को (बिल्कुल ही) भूल बैठे, जो उनको याद दिलाई गई थीं, तो (फिर) हमने (भी) उनके लिये हर वस्तु के ख़ज़ाने खोल दिये (कि ख़ूब दिल खोल कर हमारी अवज्ञा कर सकें। और) यहां तक (हमने उनको अवसर दिया, कि वह पहिले कष्टों को भूल कर) दी हुई वस्तुओं पर प्रसन्न होने लगे, तो हमने (तुरन्त ही) अपना अज़ाब (दंड) उन पर उतार दिया। फिर (इस अचानक अज़ाब आने पर वह तो अत्यन्त) निराश (और उदास) हो गये—

और ज़ालिम लोगों की जड़ कट गई। और .ख़ुदा का शुक्र है, जो सारे जहान का मालिक है (कि क़िस्सा पाक हुआ) ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि भला देखो तो सही, अगर .ख़ुदा तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगादे, तो .ख़ुदा के सिवा और कोई माबूद है कि यह नेअ़मतें तुमको लादे ? (ऐ पैग़म्बर !) देखो तो क्यों कर हम (अपनी .क़ुद्रत की) दलीलें तरह तरह पर बयान करते हैं। इस पर भी यह लोग मुंह फेरे चले जाते हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि भला देखो तो सही, अगर अज़ाब .ख़ुदा यकायक या जता बता कर तुम पर आ नाज़िल हो, तो क्या ना फ़र्मान लोगों के सिवा (कोई और भी) हलाक किया जायगा ० और पैग़म्बरों को हम सिर्फ़ इस ग़रज़ से भेजा करते हैं कि (नेकों को .ख़ुशनूदी .ख़ुदा की) .ख़ुश ख़बरी सुनायें और (बदों को अज़ाब से) डरायें ० तो जो ईमान लाया और उसने (अपनी हालत की) इस्लाह करली, तो ऐसे लोगों पर (क़यामत के दिन) न (किसी तरह का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वह आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे ० और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उनको नाफ़र्मानियों की सज़ा में (हमारा) अज़ाब उन पर नाज़िल हो (कर रहे) गा ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास .ख़ुदा (की सर्कार) के ख़ज़ाने हैं। और न मैं ग़ैब जानता हूं और न मैं तुमसे कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं। मैं तो बस उसी (हुक्म) पर चलता हूं, जो मेरी तरफ़ वही किया जाता है। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि आया अन्धा और जिसको सूझ पड़ता है (दोनों) बराबर हो सक्ते हैं ? क्या तुम (लोग इतनी बात भी) नहीं सोचते० और (ऐ पैग़म्बर!) .क़ुर्आन के ज़रिये से उन लोगों को (अज़ाब .ख़ुदा से) डराओ, जो इस बात का ख़ौफ़ रखते हैं कि (क़यामत के दिन)—

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ط وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ○ قُلْ اَرَاَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ
وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ط
اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ○
قُلْ اَرَاَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً
هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ○ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ
اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ○ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ○
قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ
الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ج اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا
يُوْحٰٓى اِلَيَّ ط قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ط اَفَلَا
تَتَفَكَّرُوْنَ ○ وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا ع

फिर (यह भी नहीं कि उनको उदासी में लिप्त रक्खा हो, बल्कि उस) अत्याचारी जाति का (बीज नष्ट कर दिया गया और उसकी) जड़ काट दी गई। और समस्त सृष्टि के पालने वाले (.ख़ुदा) की समस्त स्तुति योग्य हैं (कि उसने इन कुकर्मियों और अधम जातियों को बरबाद करके संसार को उनकी उद्दण्डता से सुरक्षित कर दिया) ॥

(ऐ हमारे रसूल ! इन काफ़िरों से) कहो (कि) अगर .ख़ुदा तुम्हारी आँखों (की ज्योति) और कानों (की श्रवण शक्ति) को हरण करले और तुम्हारे दिलों पर (उनकी अनुभव शक्ति को वापिस लेकर) मुहर करदे (कि तुम कुछ न समझ सको, तो फिर) .ख़ुदा के अतिरिक्त कोई और पूज्य है, जो तुमको यह वस्तुयें (दोबारा) दे सके ? (ऐ हमारे रसूल !)तुम देखो (तो सही) हम (इन लोगों के सामने) किस प्रकार विभिन्न चिन्ह उपस्थित करते हैं (मगर) यह (लोग) फिर (भी) मुँह फेरते हैं (और हमारी ओर ध्यान नहीं देते हैं) ॥

(ऐ हमारे रसूल ! इन लोगों से) कहो (कि अच्छा तुम मुझे बताओ तो सही) कि अगर अल्लाह का अ़ज़ाब गुप्त रूप से अथवा प्रगट रूप से आ जाय, तो क्या (तुम)ज़ालिम लोगों के अतिरिक्त कोई और मारा जायगा ? (नहीं नहीं। तुम ही मारे जाओगे। किसी प्रकार नहीं बच सकोगे। डरो .ख़ुदा से और उसके रसूलों पर ईमान लाओ) ॥

और हम रसूलों को केवल इस लिये भेजते हैं कि वह (.ख़ुदा के आज्ञाकारी बन्दों को उसकी प्रसन्नता व कृपा का) मंगल समाचार सुनावें और (अवज्ञा कारियों को उसके अज़ाब से) डरावें। फिर जो लोग (रसूलों द्वारा भेजे गये मंगल समाचार और धमकी को सुन कर सच्चे दिल से) ईमान ले आये हैं और उनकी शिक्षा व घोषणा के अनुसार (अपनी दशा का) सुधार करते हैं (तो) ऐसे लोगों को न (अज़ाब का) कोई भय है और न (प्रलय में) उनको कोई दुःख होगा और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झूठा ठहराया है, उनको अपनी अवज्ञा के कारण दुःख पहुँचेगा ॥

(ऐ हमारे रसूल ! लोगों से) कह दो (कि ऐ लोगो !) न तो मैं तुम से यह कहता हूं (कि) मेरे पास .ख़ुदा के ख़ज़ाने हैं और न (यह कि) मुझे अदृष्ट विद्या है। और मैं समस्त छिपी हुई बातों को जानता हूं) और न (मैं तुम से) यह कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं। बल्कि (उन बातों (और उन आदेशों) का अनुसरण करता हूं, जो मुझ पर .ख़ुदा के सन्देश के रूप में उतरते हैं। (ऐ रसूल ! इन लोगों से) पूछो कि क्या अन्धा और देखने वाला बराबर है ? तो तो क्या तुम सोच विचार नहीं करते हो ॥

और (ऐ रसूल ! तुम इन काफ़िरों का बहुत अधिक ख़याल न करो)। इस (.क़ुर्आन) से (तो) तुम उन लोगों को डराओ, जिन्हें यह भय है कि (कदाचित कहीं वह ऐसी दशा में) अपने पालन कर्त्ता के सामने उठाये जावें—

إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَعَلَّهُمْ
يَتَّقُونَ ۝ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ
وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ
مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَ
هُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ وَكَذَٰلِكَ فَتَنَّا
بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِيَقُولُوا أَهَٰؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
مِنْ بَيْنِنَا أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ۝ وَإِذَا جَاءَكَ
الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ
رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا
بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ
سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ
تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ لَا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ قَدْ

ع

अपने पर्वर्दिगार के हुज़ूर में ला हाज़िर किये जायँगे ।(और उस वक़्) ख़ुदा के सिवा न कोई उनका दोस्त होगा और न सिफ़ारिश करने वाला । अजब नहीं यह लोग (तुम्हारे डराने से) परहेज़गारी इख़्तियार करें ० और (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग सुबह व शाम अपने पर्वर्दिगार ही का मुंह करके उससे दुआयें मांगते हैं, उनको (अपने पास से) मत निकालो । न तो उन (के आमाल) की जवाब दिही किसी तरह तुम्हारे ज़िम्मे है और न तुम्हारी जवाब दिही किसी तरह उनके ज़िम्मे है (कि जवाब दिही के डरसे) लगो उनको धक्के देने । (ऐसा करोगे) तो तुम ज़ालिमों में (शुमार) होगे ० और इसी तरह (इख़्तिलाफ़ हालत से) हमने बाज़ लोगों को बाज़ से आज़माया, ताकि (मक़्दूर वाले ग़रीबों को देख कर) कहने लगें कि क्या यही (ज़लील) लोग हैं । जिन पर अल्लाह ने हम में से (इस्लाम की तौफ़ीक़ देकर) अपना फ़ज़्ल किया है । (इनको इतना तो समझना चाहिये था कि) क्या अल्लाह शुक्र गुज़ार बन्दों (के हाल) से बख़ूबी वाकिफ़ नहीं ? ० और (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं-जब तुम्हारे पास आया करें, तो (तुम उनकी दिल दिही करो और) कहो कि (ख़ुदा की तरफ़ से) तुमको सलामती (की ख़ुश ख़बरी) हो (और) तुम्हारे पर्वर्दिगार ने (बन्दों पर) मेहर्बानी करना (अज़ ख़ुद) अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है कि जो कोई तुममें से बराह नादानी कोई गुनाह कर बैठे, फिर किये पीछे तौबा और (अपनी हालत की) इस्लाह करले, तो (ख़ुदा उसको बख़्श देगा । क्योंकि) वह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और इसी तरह हम (अपनी आयतों को तफ़सील के साथ बयान करते हैं (ताकि लोग समझें) और ताकि गुनहगारों का तरीक़ (सब पर) ज़ाहिर हो जाय ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहदो कि मुझ को इस बात की मुमानिअत है कि मैं उन (माबूदों) की इबादत करूँ, जिन को तुम ख़ुदा के सिवा (हाजत पड़े पर) बुलाते हो । (इन लोगों से) कहो कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों पर तो चलता नहीं—

कि ख़ुदा के अतिरिक्त उनका कोई स्वामी व सहायक न हो, ताकि वह (लोग निषेध कर्मों से) बचें ॥

और (ऐ रसूल ! इन काफ़िरों को सच्चाई के मार्ग पर लाने की आशा में) उन लोगों को (अपने पास से) न निकालो, जो ख़ुदा की प्रसन्नता (प्राप्त करने) के लिये सुबह शाम अपने ख़ुदा को (नमाज़ों में) पुकारते हैं। तुमसे उनके हिसाब का कोई सम्बन्ध नहीं है। और तुम्हारे हिसाब की उन पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है । (ऐसा न हो कि कहीं) तुम उनको निकाल कर (ख़ुद भी) ज़ालिमों (की श्रेणी) में (सम्मिलित) हो जाओ ॥

और हमने (तो) इसी प्रकार एक को दूसरे के द्वारा परीक्षा में डाल रक्खा है। जिससे कि (यदि बुद्धिमान हैं, तो भलाई को समझ कर एक की दूसरे पर श्रेष्ठता के साधन मालूम करके ख़ुद भी वैसे ही बनाने की कोशिश करें। और यदि उनके मस्तक जातीय अभिमान से सरमस्त हैं, तो यह) कहें कि यही वह लोग हैं, जिन पर ख़ुदा ने (हम में से चुन कर अपना) उन पर एहसान किया है । (परन्तु यदि यह लोग मूर्ख हैं और ख़ुदा के एहसानों के साधनों को समझ नहीं सकते हैं, तो) क्या ख़ुदा (भी) कृतज्ञ लोगों को अच्छी तरह नहीं जानता ॥

और (ऐ रसूल !) जब तुम्हारे पास वह (लोग) आयें, जो हमारी निशानियों पर ईमान लाते हैं, तो तुम (उन से) कहो (कि) तुम पर (ख़ुदा का) कल्याण हो । तुम्हारे पालन कर्त्ता ने अपने ज़िम्मे मेहर्बानी करनी इख़्तियार करली है, कि तुम में से जो मनुष्य भूल से कोई बुराई कर बैठेगा, फिर (अपनी उस भूल पर पश्चाताप करके) उसके पश्चात तौबा करेगा और (आगे से अपनी हालत का) सुधार करेगा, तो वह (ख़ुदा अपने तौबा करने वाले बन्दों के) ऐसे भूल से किये गये अपराधों को बहुत अधिक क्षमा करने वाला (और) दयालु है ॥

और (ऐ रसूल ! लोगों की शिक्षा के लिये) हम उसी तरह (अपनी) निशानियों को स्पष्ट रूप से पेश करते हैं और ताकि (जो लोग इससे लाभ नहीं उठाते हैं और अपने असभ्यता-पूर्ण आचरणों से बाज़ नहीं आते हैं, तो) तुमको पापियों का ढंग (भी अच्छी तरह) सफ़ाई से मालूम हो जाय ॥

(ऐ हमारे रसूल ! इन काफ़िरों से) कह दो कि मुझको (इस से) मनाही की गई है (कि) मैं उन उन पूज्यों की पूजा करूँ, जिनकी तुम ख़ुदा के अतिरिक्त पूजा करते हो। (और ऐ हमारे रसूल !) तुम (इन काफ़िरों से) कह दो (कि) मैं तुम्हारी (इन) अभिलाषाओं का (कि मैं भी तुम्हारे समान तुम्हारे असत् पूज्यों की पूजा करने लगूँ-कभी) अनुकरण न करूँगा—

ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۝ قُلْ إِنِّي عَلَىٰ
بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ مَا عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ
إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ۝
قُلْ لَوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۝ وَعِنْدَهُ
مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي
الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا
وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ
وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي
يَتَوَفَّاكُمْ بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ
ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُسَمًّى ثُمَّ 1
إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ७

ऐसा करूं, तो मैं इस सूरत में गुमराह हो चुका। और उन लोगों में न रहा, जो राह रास्त पर हैं ० (इन लोगों से) कहो कि मैं तो अपने पर्वर्दिगार के (दीन के) खुले रस्ते पर हूं और तुम उसको झुठलाते हो। जिस (अज़ाब) की तुम जल्दी मचा रहे हो, वह मेरे पास (यानी मेरे इख़्तियार में) तो है नहीं। अल्लाह के सिवा और किसी का इख़्तियार नहीं। वह हक़ (हक़ बातें) बयान करता है और वह सब फ़ैसला करने वालों से बेहतर (फ़ैसला करने वाला) है ० (इन लोगों से) कहो कि जिस (अज़ाब) की तुम जल्दी मचा रहे हो, अगर मेरे पास (यानी मेरे इख़्तियार में) होता, तो मेरे और तुम्हारे दर्मियान (में जो) झगड़ा (है, कभी का) चुक गया होता। और अल्लाह ज़ालिम लोगों (के हाल) से बख़ूबी वाक़िफ़ है ० और उसी के पास ग़ैब की कुन्जियां हैं, जिनको उसके सिवा कोई नहीं जानता। और जो कुछ ख़ुशकी व तरी में है (उसको भी वही) जानता है। और कोई पत्ता तक (दरख़्तों पर से) नहीं गिरने पाता, मगर वह उसको मालूम रहता है। और ज़मीन के अंधेरों (के परदों) में जो दाना हो और (दुनिया की) तर व ख़ुश्क (चीज़ें सब ही तो) किताब वाज़ेह (यानी लौह मह़फ़ूज़) में (लिखी हुई मौजूद) हैं ० और (लोगो !) वही (क़ादिर मुतलक़) है, जो रात के वक़्त (नींद में एक तरह पर) तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ कर लेता है। और जो कुछ तुमने दिन में किया था (वह उसको भी) जानता है। फिर दिन के वक़्त तुमको उठा खड़ा करता है, ताकि (रात दिन की आमद व शुद से वह) मीआद (हयात, जो उसके इल्म में) मुक़र्रर (है, एक दिन) पूरी हो। फिर (आख़िरकार) उसी की तरफ़ तुम (सब) को लौट कर जाना है। फिर (उस वक़्त) जो कुछ तुम (दुनिया में) करते रहे हो, वह तुमको (उस का बुरा भला) बता देगा ० और वही अपने बन्दों पर ज़ाबित है—

(क्योंकि यदि मैं तुम्हारा साथ दूँगा, तो) मैं इस (दशा) में गुमराह हूंगा। और सीधे मार्ग चलने वालों में न हूंगा ॥

(ऐ हमारे रसूल ! तुम इन काफ़िरों से) कह दो (कि) मैं एक रोशन मार्ग पर हूं (जो) मेरे पालन कर्ता की ओर से (मुझे प्रदान हुआ है) और तुम (उस विश्वासनीय बात) को झूठा ठहरा चुके हो। मेरे पास वह (अज़ाब) नहीं है, (जिससे मैं तुमको डराता हूं और तुम इस विचार से) उसमें जल्दी करते हो (कि तुमको मेरे कहने का विश्वास नहीं है। मगर इसमें मुझको कोई शक्ति नहीं है)। हुक्म केवल ख़ुदा का है। (वह जब चाहेगा, तुमको वह अज़ाब दिखा भी देगा, जिसका तुमको आज विश्वास नहीं है)। और वह तो एक एक अक्षर सच कहता है और वही सर्वोत्तम न्यायकारी है ॥

(ऐ हमारे रसूल ! इन काफ़िरों से) कह दो (कि) यदि मेरे पास वह (अज़ाब) होता, जिसकी तुम शीघ्रता कर रहे हो, (तो फिर) तो मेरे तुम्हारे बीच क़िस्सा ही ख़त्म था। (जिस अज़ाब का तुम बार बार तक़ाज़ा करते हो, वह आ जाता और तुमको तुम्हारे आचरणों का दण्ड मिल जाता)। और (यद्यपि इस समय कोई फ़ैसला नहीं हुआ है, तथापि) अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब अभिज्ञ है। (वह जिस समय चाहेगा, उनको दण्ड देगा) ॥

और अदृष्ट की कुंजियाँ अल्लाह ही के पास हैं, जिनका उसके अतिरिक्त और किसी को ज्ञान नहीं है। (तो फिर कोई कैसे यह जान सकता है कि इस अज़ाब के बारे में तुम इतनी जल्दी करते हो, वह कब आयेगा और उसका आना ख़ुदा के निकट भी अच्छा है या नहीं)। और जल व स्थल में जो कुछ (भी) है, उसे (भी) वह जानता है। और कोई पत्ता (पेड़ पर से) नहीं झड़ता, जिसका अल्लाह को ज्ञान न हो। और पृथ्वी के अन्धकारों में कोई (ऐसा गुप्त) दाना नहीं है और न (ऐसी) कोई सूखी गीली चीज़ है, जो किताब-मुबीन (लौह मह़फ़ूज़) में न हो ॥

और वही तो है, जो रात के समय (तो) तुमको (नींद में) मुर्दे (के समान) कर देता है और दिन में जो (जो) कुछ तुम करते हो, उसकी ख़बर रखता है (और वह चाहे, तो तुमको दूसरी बार जागना न मिले। परन्तु) वह दिन में तुमको फिर उठा खड़ा करता है; जिस से कि (हर मनुष्य के जीवन की) नियत अवधि पूरी हो जाय। (और जीवन की मात्रा चाहे कितनी ही बड़ी हो, अन्त में) फिर तुमको उसी के पास लौट कर जाना है। फिर (वहाँ) वह तुमको बतायेगा (कि संसार में) तुम क्या क्या करते थे (और उसका क्या बदला है) ॥

और वह (ख़ुदा) अपने बन्दों पर (इस तरह) विजित (और अधिकार-प्राप्त) है—

وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ
تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ● ثُمَّ رُدُّوٓا إِلَى
اللَّهِ مَوْلَىٰهُمُ الْحَقِّ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ
الْحَٰسِبِينَ ● قُلْ مَن يُنَجِّيكُم مِّن ظُلُمَٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ
تَدْعُونَهُۥ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَّئِنْ أَنجَىٰنَا مِنْ هَٰذِهِۦ
لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّٰكِرِينَ ● قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُم مِّنْهَا
وَمِن كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنتُمْ تُشْرِكُونَ ● قُلْ هُوَ
الْقَادِرُ عَلَىٰٓ أَن يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّن فَوْقِكُمْ
أَوْ مِن تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ
بَعْضَكُم بَأْسَ بَعْضٍ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ
الْآيَٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ● وَكَذَّبَ بِهِۦ قَوْمُكَ
وَهُوَ الْحَقُّ قُل لَّسْتُ عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ● لِّكُلِّ
نَبَإٍ مُّسْتَقَرٌّ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ● وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ

और तुम लोगों पर निगहबान (फ़रिश्ते) तईनात रखता है। यहां तक कि जब तुम में से किसी को (वाक़ई) मौत आती है, तो हमारे फ़रिश्ते उसकी रूह (पूरे तौर पर) क़ब्ज़ करते हैं और वह (तामील हुक्म में किसी तरह की) कोताही नहीं करते ० फिर (इसी तरह सब लोग) ख़ुदा की तरफ़, जो उनका कारसाज़ हक़ीक़ी है (दुनिया से) वापिस बुला लिये जाते हैं। सुन रक्खो ! कि उसी का हुक्म (चलता) है और वह सब से ज़ियादा जल्द हिसाब लेने वाला है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि तुमको ख़ुश्की और तरी के अंधेरों से कौन नजात देता है ? कि तुम (ऐसे मवाक़े पर) गिड़ गिड़ा (गिड़ गिड़ा) कर और चुपके (चुपके) उससे दुआयें माँगते हो (और अह्द करते हो कि) अगर ख़ुदा हमको इस (मुसीबत) से नजात दे, तो हम उसके ज़रूर शुक्र गुज़ार (बन्दे) हो कर रहेंगे ० (ऐ पैग़म्बर ! यह तो इसका क्या जवाब देंगे—तुम ही इनसे) कहो कि इन (अंधेरों) से और हर तरह की सख़्ती से ख़ुदा ही तुमको नजात देता है। फिर (इस पर भी) तुम (ख़ुदा के) शरीक ठहराते हो ० (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि वही (ख़ुदा) इस पर क़ादिर है कि तुम्हारे ऊपर (की तरफ़) से, या तुम्हारे पैरों के तले से, कोई अज़ाब तुम्हारे लिये निकाल खड़ा करे या तुमको गिरोह गिरोह करके (एक दूसरे से) भिड़ा मारे और तुममें से बाज़ को बाज़ की लड़ाई का मज़ा चखाये। (ऐ पैग़म्बर !) देखो तो सही, हम (अपनी) आयतों को किस (किस) तरह फेर फेर कर बयान करते हैं, ताकि यह लोग समझें ० और क़ुर्आन को तुम्हारी क़ौम ने झुठलाया, हालाँकि वह (किताब) बरहक़ है। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मैं तुम पर (कुछ मुहाफ़िज़ की तरह तो) मुसल्लत (हूं) नहीं (कि तुमको कुफ़्र न करने दूँ) ० हर एक ख़बर (की तस्दीक़) का एक वक़्त (ख़ास) मुक़र्रर है और कुछ दिनों बाद (मेरा सच) तुमको मालूम हो जायगा और जब ऐसे लोग (कहीं) तुम्हारी नज़र पड़ जायँ—

(कि कोई उसके अधिकार व इख़्तियार से बाहर नहीं)। और तुम पर संरक्षक (फ़रिश्ते) नियुक्त करता है। यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मृत्यु आ जाती है, तो हमारे फ़रिश्ते उसके प्राण निकाल लेते हैं और वह (हमारी आज्ञा के पालन करने में कोई) त्रुटि नहीं करते॥

फिर (इसी तरह मरने के बाद सब लोग) अपने सच्चे स्वामी अल्लाह के पास वापिस कर दिये जावेंगे। (और अच्छी तरह सुनलो और याद रक्खो कि यद्यपि भूल से तुम किसी को स्वामी व पूज्य समझते हो, परन्तु वास्तव में) फ़ैसला (और हुक्म) अल्लाह ही के अधिकार में है और वह हिसाब लेने में बहुत जल्दी करेगा॥

(ऐ हमारे रसूल ! इन काफ़िरों से यह तो) कहो कि (जब तुम) स्थल और जल की आपत्तियों (में फँस जाते हो, तो उन) से कौन तुम्हें मुक्ति देता है ? जिसको दिल ही दिल में गिड़ गिड़ा कर पुकारते हो (और कहते हो) कि यदि उसने हमें इस (विपत्ति से) बचा लिया, तो हम अवश्य उसके अनुग्रहीत होंगे॥

(ऐ हमारे रसूल ! यह काफ़िर तो भला इसका क्या जवाब देंगे। तुम ही उनसे) कहो (कि) इस विपत्ति से और (इसके अतिरिक्त) हर विपत्ति से अल्लाह ही तुम्हें बचाता है। (परन्तु अफ़सोस !! ज़बान से कृतज्ञता प्रकाश करने की प्रतिज्ञा करने के उपरान्त) फिर (भी) तुम (कृतघ्नता करते हो और अपनी मुक्ति को दूसरे कारणों पर ठहरा कर) शिर्क (द्वैत पूजा) करने लगते हो॥

(ऐ हमारे रसूल ! इनसे) कहो कि अल्लाह ही इस पर (भी) अधिकार रखता है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर (की तरफ़) से (पत्थर आदि बरसा कर या हवा आदि चला कर) या तुम्हारे नीचे से (पृथ्वी को धँसा कर) तुम्हारे लिये अज़ाब भेजदे या (इस तरह भी वह अज़ाब उतार सकता है कि तुम में फूट डालदे और) तुमको विभिन्न दलों में करके (आपस में) भिड़ादे और (इस तरह) एक को दूसरे की लड़ाई (का मज़ा) चखादे। (ऐ हमारे रसूल !) देखो (तो) हम किस तरह (अपनी) निशानियों को अदल बदल कर पेश करते हैं, जिस से कि यह लोग समझें (और ईमान लावें)॥

और (ऐ हमारे रसूल !) तुम्हारी जाति ने इस (क़ुर्आन) को झूठा ठहराया—यद्यपि वह (किताब) सच्ची है। अगर यह ऐसी खुली हुई निशानियों के उपरान्त भी क़ुर्आन को और क़ुर्आन उतारने वाले को नहीं मानते, तो न मानें—तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं हो। उनसे साफ़ तौर से कह दो कि मैं तुम पर कोई दारोग़ा (बना कर) नहीं (भेजा गया) हूं। (और अगर तुम नहीं मानोगे, तो इसकी ज़िम्मेदारी कुछ मुझ पर नहीं आयेगी। तुम ही अपनी करनी का मज़ा चक्खोगे। मेरा काम केवल इतना है कि तुमको ख़ुदा का सन्देश पहुंचा दूँ। उस पर अमल करना न करना तुम्हारा काम है। लेकिन यह ख़ूब याद रक्खो कि) हर ख़बर (के पूरे होने) का एक समय नियत है। और तुमको शीघ्र मालूम हो जायगा (कि क़ुर्आन की ख़बरें और उसके वादे और अज़ाब देने की प्रतिज्ञायें बिल्कुल ठीक हैं)॥

और (ऐ हमारे रसूल !) जब तुम ऐसे लोगों को देखो—

يَخُوضُونَ فِيٓ ءَايَٰتِنَا فَأَعۡرِضۡ عَنۡهُمۡ حَتَّىٰ يَخُوضُواْ فِي
حَدِيثٍ غَيۡرِهِۦۚ وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ ٱلشَّيۡطَٰنُ فَلَا
تَقۡعُدۡ بَعۡدَ ٱلذِّكۡرَىٰ مَعَ ٱلۡقَوۡمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝ وَمَا
عَلَى ٱلَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنۡ حِسَابِهِم مِّن شَيۡءٖ وَلَٰكِن
ذِكۡرَىٰ لَعَلَّهُمۡ يَتَّقُونَ ۝ وَذَرِ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُواْ
دِينَهُمۡ لَعِبٗا وَلَهۡوٗا وَغَرَّتۡهُمُ ٱلۡحَيَوٰةُ ٱلدُّنۡيَاۚ وَذَكِّرۡ
بِهِۦٓ أَن تُبۡسَلَ نَفۡسُۢ بِمَا كَسَبَتۡ لَيۡسَ لَهَا مِن
دُونِ ٱللَّهِ وَلِيّٞ وَلَا شَفِيعٞ وَإِن تَعۡدِلۡ كُلَّ عَدۡلٖ
لَّا يُؤۡخَذۡ مِنۡهَآۗ أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ أُبۡسِلُواْ بِمَا كَسَبُواْۖ
لَهُمۡ شَرَابٞ مِّنۡ حَمِيمٖ وَعَذَابٌ أَلِيمُۢ بِمَا كَانُواْ
يَكۡفُرُونَ ۝ قُلۡ أَنَدۡعُواْ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا ८
يَنفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰٓ أَعۡقَابِنَا بَعۡدَ إِذۡ هَدَىٰنَا
ٱللَّهُ كَٱلَّذِي ٱسۡتَهۡوَتۡهُ ٱلشَّيَٰطِينُ فِي ٱلۡأَرۡضِ

जो हमारी आयतों का मशग़ला बना रहे हों, तो उन (के पास) से टल
जाओ—यहाँ तक कि हमारी आयतों के सिवा (दूसरी) बातों में लग जायँ।
और अगर शैतान तुमको (हमारी यह नसीहत किसी वक़्) भुलादे, तो
याद आये पीछे (ऐसे) ज़ालिम लोगों के साथ हरगिज़ न बैठना ० और
(अगचें) पहेज़गारों पर ऐसे (वाही तबाही) लोगों के हिसाब (आमाल)
की किसी तरह की ज़िम्मेदारी नहीं, व लेकिन (ताहम इनको) नसीहत
करनी (तो ज़रूर है)। ताकि (कहे सुने से) यह (भी) पहेज़गारी
इख़्तियार करलें ० और जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया
है और (इस दुनिया की) ज़िन्दिगी ने उनको धोखे में डाल रक्खा है—ऐसे
लोगों को (उनही के हाल पर) छोड़ दो। और (मौक़ा पाकर) क़ुरआन के
ज़रिये से (उनको) समझाते रहो कि कहीं (ऐसा न हो) कोई शख़्स (क़यामत
में) अपने करतूत के बदले मुब्तलाए आफ़त हो जाय कि (उस वक़्) ख़ुदा
के सिवा न कोई उसका हामी होगा और न सिफ़ारशी। और (जितने) मुआविज़े
(मुम्किन हैं) अगर वह सब भी दे, ताहम (कोई मुआविज़ा) उससे न
लिया जाय। यही वह लोग हैं, जो अपने करतूत के सबब मुब्तलाए आफ़त
हुये। इनको पीने के लिये खौलता हुआ पानी (मिलेगा) और अज़ाब दर्द
नाक होगा (सो अलग)। क्योंकि यह कुफ़्र किया करते थे० (ऐ पैग़म्बर! इन
लोगों से) पूछो, क्या (तुम यह चाहते हो कि) हम (मुसलमान) ख़ुदा को
छोड़ कर उन (झूठे माबूदों) को (अपनी मदद के लिये) बुलायें, जो न हम
को नफ़ा पहुँचा सके हैं और न हमको नुक़सान पहुँचा सके हैं। और जब
अल्लाह हमको सीधा रस्ता दिखा चुका, तो क्या हम इसके बाद भी उल्टे पैरों
(कुफ़्र की तरफ़) लौट जायँ। और (हमारी वह मिसाल हो, जैसे किसी शख़्स
को भुतने बहका कर ले जायँ (और वह चारों तरफ़) जङ्गल (बियाबान) में—

जो हमारी निशानियों का उपहास कर रहे हैं, तो तुम उन (के पास) से (उस समय तक के लिये) अलग हो जाओ, जब तक कि वह (हमारी निशानियों के मज़ाक़ को छोड़ कर) दूसरी बातों में न लग जायँ। और यदि शैतान (कभी हमारी यह नसीहत) तुम्हें (और तुम्हारे साथियों को) भुला दे, तो याद आ जाने के बाद (उस नसीहत पर अमल करो और) इन ज़ालिमों के साथ (कदापि) न बैठो ॥

और (यदि सावधानी करने पर भी ऐसी संगतों से समागम हो ही जाय, तो) इन हँसी करने वालों के आचरणों का कोई हिसाब उन लोगों को नहीं देना होगा, जो (ख़ुदा से) डरते हैं। अलबत्ता (ऐसी दशा में विवेकी मनुष्यों का कर्तव्य केवल उन मुश्रिकों को) उपदेश देना है। कदाचित वह (इस प्रकार बार बार याद दिलाने से प्रभावान्वित होकर) संयमी बन जायँ (और ख़ुदा की निशानियों की हँसी उड़ाना छोड़दें ॥

और (ऐ हमारे रसूल !) इन लोगों को (उनके हाल पर) छोड़ दो, जिन्हों ने अपने धर्म को खेल तमाशा बना लिया है। और जिनको (इस) सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल दिया है। और इस (क़ुरआन) के द्वारा उनको यह स्मरण कराते रहो, कि (खेल कूद से बाज़ आ जाओ)। कदाचित कोई मनुष्य अपने कर्मों के बदले में (बुरी तरह) विपत्ति में न फँस जाय। (ऐसा विपत्ति में फँसे) कि अल्लाह के अतिरिक्त न तो उसका कोई सहायक हो और न कोई सिफ़ारिश करने वाला। और यदि वह संसार भर का भी बदला देना चाहे, तो स्वीकार न किया जाय। (क्योंकि) जो लोग अपने कर्मों के कारण पकड़े जायँगे, उनके लिये (नर्क में) उनके कुफ़्र के कारण पीने को गर्म खौलता हुआ पानी होगा और (अत्यन्त) दर्दनाक अज़ाब दिया जायगा ॥

(ऐ हमारे रसूल ! इन मुश्रिकों से) कहो—क्या (तुम्हारे समान) हम (भी) ख़ुदा के अतिरिक्त ऐसी वस्तुओं की पूजा करें, जो न (तो) हमको हानि पहुँचा सकती हैं और न लाभ पहुँचा सकती हैं। और जब कि अल्लाह हमें (सत्य-धर्म का) सीधा रास्ता दिखा चुका, तो (क्या) इस के उपरान्त (भी) हम फिर उल्टे पाँव (कुफ़्र की ओर) लौट जायँ ? (और हमारी वह दशा हो) जैसे किसी को शैतानों ने (जिस को भूत प्रेत कहते हैं) जंगल में भटका दिया हो—

حَيْرَانَ لَهٗۤ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗۤ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا
قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ
لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ
وَهُوَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ
فَيَكُوْنُ ۝ قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي
الصُّوْرِ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ
وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً
اِنِّيْۤ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَكَذٰلِكَ
نُرِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ
رَاٰ كَوْكَبًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ اُحِبُّ
الْاٰفِلِيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ فَلَمَّاۤ

قَالَ

हैरान (परेशान मारा मारा पड़ा फिरे)। उसके कुछ साथी हैं (और) वह उसको सीधे रस्ते की तरफ़ बुला रहे हैं कि (इधर) हमारे पास आ। (ऐ पैग़म्बर ! यह तो इसका क्या जवाब देंगे—तुम ही इनसे) कहो कि अल्लाह का (बताया हुआ) रस्ता वही सीधा रस्ता है। और हम (मुसल्मानों) को (तो यही) हुक्म मिला है कि हम (अल्लाह) रब्बुल आलमीन के फ़र्मांबर्दार (बन्दे) होकर रहें ० और (उसी ने हम से फ़र्मा दिया है कि) नमाज़ पढ़ते और ख़ुदा से डरते रहो। और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिस के हुज़ूर में (तुम सब लोग क़यामत के दिन) हाज़िर लाये जाओगे ० और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने (किसी) मस्लहत (ख़ास) से आसमानों और ज़मीन को पैदा किया। और जिस दिन (क़यामत की निस्बत) फ़र्माएगा कि हो, पस वह (फ़ौरन) हो जायगी ० उसका फ़र्मूदा सच्चा है (यानी क़यामत होकर रहेगी)। और जिस दिन सूर फूंका जायगा, उसी की हुकूमत होगी। (वह) ग़ायब और हाज़िर (सब) का जानने वाला है। और वही साहिब तद्बीर (और सब चीज़ से) बा ख़बर है ० और (ऐ पैग़म्बर ! उस वक़्त को याद करो) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा–क्या तुम बुतों को माबूद मानते हो ? मैं तो तुमको और तुम्हारी क़ौम को सरीह गुमराही में (मुब्तला) पाता हूं ० और (जिस तरह इब्राहीम के दिल में हमने यह ख़याल पैदा किया) इसी तरह हम इब्राहीम को आस्मानों व ज़मीन का इन्तिज़ाम दिखाने लगे, ताकि वह (कामिल) यक़ीन करने वालों में से हो जायँ ० तो जब उन पर रात छा गई, उनको एक सितारा नज़र आया (और उसको देख कर) लगे कहने कि यही मेरा पर्वर्दिगार है। फिर जब वह ग़ुरूब हो गया, तो बोले कि ग़ुरूब हो जाने वाली चीज़ों को तो मैं पसन्द नहीं करता (कि ख़ुदा मान लूँ) ० फिर जब चाँद को देखा कि पड़ा जग मगा रहा है, तो लगे कहने कि यही मेरा पर्वर्दिगार है। फिर जब (वह भी)—

(और) वह विस्मित (होकर मारा मारा फिरता) हो। (और) उसके साथी (यद्यपि) उसको (यह कह कर) सीधे मार्ग की ओर बुलाते हों कि हमारे पास आओ, (परन्तु वह उनकी ओर ध्यान न देता हो। ऐ हमारे रसूल ! तुम इन मुश्रिकों से) कह दो कि सीधा मार्ग तो केवल बस अल्लाह ही का बताया हुआ मार्ग है। (हम इस मार्ग को छोड़ कर दूसरा मार्ग ग्रहण नहीं कर सकते)। हमको (तो यही) आदेश दिया गया है, कि हम संसार के पालन कर्ता के सन्मुख आज्ञा पालन के लिये मस्तक झुका दें और (उसके आदेशों का पालन करें। सब से बड़ा आदेश उसका तुम सब के लिये) यह (है) कि तुम नमाज़ अदा करते रहो और ख़ुदा से डरा करो। वहीं तो है, जिसके पास तुम सब एकत्रित किये जाओगे ॥

और वही है, जिसने आस्मानों (आकाशों) को और पृथ्वी को ठीक ठीक पैदा किया है, (जैसा कि पैदा करने का हक़ था)। और जिस समय वह (प्रलय से) कहेगा (कि) हो जा, तो वह (तुरन्त) हो जायेगी। (और) उसका बचन सच्चा है (प्रलय अवश्य होगी)। और जिस दिन सूर (अर्थात् प्रलय के समय बजाने का सींग) फूंका जायगा (उस दिन केवल) उसी का शासन होगा। वह प्रत्येक प्रकट व गुप्त बात का जानने वाला है। (प्रत्येक कर्म का फल देगा, चाहे प्रगट हो या गुप्त)। वह बड़ी बुद्धि वाला (है कि उसका कोई काम बुद्धि व युक्ति से ख़ाली नहीं। और बड़ा) सचेत है (कि कोई वस्तु उसके ज्ञान से बाहर नहीं) ॥

और (ऐ हमारे रसूल ! इन मुश्रिकों से कहो कि तुम अपने आपको इब्राहीम के धर्म का अनुयायी बतलाते हो, परन्तु उस समय को तो याद करो) जब (हज़रत) इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा था (कि) क्या तुम मूर्तियों को (अपना) पूज्य बनाते हो ? मैं (तो) तुमको और तुम्हारी जाति को स्पष्ट गुमराही (पथ भ्रष्टता) में लिप्त देखता हूं। (तो ऐ मुश्रिको ! यदि वास्तव में तुम इब्राहीम के धर्म के अनुयायी हो, तो तुम को मूर्ति पूजा न करनी चाहिये) ॥

और (जिस तरह हमने इब्राहीम को उनकी जाति की गुमराही की वास्तविकता से परिचित कर दिया) उसी तरह हम इब्राहीम को आकाशों और पृथ्वी की अद्भुत वस्तुओं को दिखाने लगे, जिस से कि उनको (हमारी अद्वैता का) पूरा विश्वास हो जाय। अतएव जब रात (का अन्धकार) उन पर छा गया (और) उन्हें एक (प्रकाश युक्त) तारा दिखाई दिया, (तो उसे देखकर) कहने लगे—यह है, मेरा पालन कर्त्ता। (परन्तु) फिर जब वह अदृष्ट हो गया, तो बोले–मैं अदृष्ट होने वाली वस्तुओं को पसन्द नहीं करता (और इस योग्य नहीं समझता कि उन्हें पूज्य बनाया जाय) ॥

फिर जब आपने (हज़रत इब्राहीम ने) चन्द्रमा को चमकता देखा, (तो) कहा (वह नहीं) मेरा पालन कर्त्ता–यह है। फिर जब—

अَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَأَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ
الضَّآلِّيْنَ ● فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ
هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا
تُشْرِكُوْنَ ● اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ●
وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ۚ قَالَ اَتُحَآجُّوْنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۚ
وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ
رَبِّيْ شَيْئًا ۚ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ●
وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ
اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۚ
● فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ
لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ● وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ ع

गुरूब हो गया, तो बोले अगर मुझको मेरा पर्वदिगार राह रास्त नहीं दिखाएगा, तो बेशक मैं (भी) गुमराह लोगों में हो जाऊंगा ० फिर जब सूरज को देखा कि बड़ा जगमगा रहा है, तो लगे कहने यही मेरा पर्वदिगार है कि यह (सब से) बड़ा (भी) है। फिर जब (वह भी) गुरूब हो गया, तो (अपनी क़ौम से मुख़ातिब होकर) बोले कि भाइयो ! जिन चीज़ों को तुम शरीक (ख़ुदा) मानते हो, मैं तो उनसे बेतअ़ल्लुक़ (महज़) हूँ ०मैं ने तो एक ही का होकर अपना रुख़ उसी (ज़ात पाक) की तरफ़ कर लिया है, जिसने आस्मानों और ज़मीन को बनाया और मैं तो मुश्रिकों में से नहीं हूँ ० और उनकी उम्मत के लोग लगे उनसे (इस बात पर) झगड़ने ० (तो इब्राहीम ने) कहा—क्या तुम मुझसे ख़ुदा (की वहदानियत के बारे) में झगड़ते हो। हालांकि वह तो मुझको (अपनी तौहीद का) सीधा रस्ता दिखा चुका है। और जिन (बुतों) को तुम उसका शरीक मानते हो, मैं तो उनसे कुछ डरता (वरता) नहीं कि (मुझको कुछ नुक़सान पहुंचा देंगे)। मगर हाँ मेरा पर्वदिगार ही (मुझको) कुछ (नुक़सान पहुंचाना) चाहे (तो उसकी मर्ज़ी)। मेरा पर्वदिगार तो इल्म की रू से सब चीज़ों पर हावी है। क्या तुम (इस बात का) ख़याल नहीं करते ० और जिन चीज़ों को तुम शरीक (ख़ुदाई) बताते हो, मैं उनसे क्यों डरने लगा। जब कि तुम इस बात से (मुतलक़) नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक (ख़ुदाई) बनाया, जिन (के माबूद होने) की सनद ख़ुदा ने तुम्हारे लिये नहीं उतारी। तो (हम) दोनों फ़रीक़ों में से कौन सा (फ़रीक़) अम्न (व इतमीनान से रहने) का ज़ियादा हक़दार है। अगर अक़्ल रखते हो, (तो तुम आप ही समझ लो) ० जो लोग (ख़ुदा पर) ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान में बे इन्साफ़ी (शिर्क) की आमेज़िश नहीं की—यही लोग हैं, जो अम्न (व इतमीनान ख़ातिर) के मुस्तहिक़ हैं। और यही लोग राह रास्त पर (भी) हैं ० और यह हमारी (सुझाई हुई) दलील थी, जो हमने—

चन्द्रमा (भी) अस्त हो गया (तो आपने दूसरी बार अपनी भूल का अनुभव किया और परेशान होकर) कहा (कि) यदि मेरे पालन कर्त्ता ने मेरी पथ प्रदर्शता (और सहायता) न की, तो मैं (भी) निश्चित रूप से गुमराहों (पथ-भ्रष्टों) की श्रेणी में (दाख़िल) हो जाऊँगा ॥

फिर जब आपने सूरज को जगमगाते देखा, तो कहने लगे (कि) यह (अवश्य) मेरा पालन कर्त्ता है (कि) यह सब से बड़ा है (और इसका प्रकाश सबसे अधिक है। परन्तु) फिर जब सूरज (भी) अस्त हो गया, तो आपने कहा (कि) ऐ मेरी जाति (के लोगो !) जिन (जिन चीज़ों) को तुम (अल्लाह का) शरीक ठहराते हो, (वह तो स्वयं विवश और किसी दूसरे के आधीन हैं)। मुझे उनसे कुछ प्रयोजन नहीं ॥

(और) मैं (तो) सब ओर से (अपने मन को) हटा कर, अब अपना मन केवल उसी (पवित्र व्यक्ति) की ओर करता हूं, जिसने आस्मानों (आकाशों) और पृथ्वी को पैदा किया है। और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं। और (जब हज़रत इब्राहीम के इस कथन पर) उनकी जाति (के लोग) उनसे झगड़ा करने लगे, (तो) आपने कहा (कि) क्या तुम मुझसे अल्लाह के विषय में झगड़ते हो ? यद्यपि वह मुझको सत्य का मार्ग दिखा चुका है। (तुम्हारी बातों का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं होगा) और मैं तुम्हारे उन पूज्यों से, जिनको तुम (ख़ुदा के साथ) शरीक करते हो, डरता नहीं। (वह मुझे कुछ हानि नहीं पहुँचा सकेंगे और अवश्य यदि किसी समय मुझको कोई कष्ट पहुँचे, तो वह तुम्हारे पूज्यों की ओर से नहीं होगा। हाँ) यदि मेरा पालन कर्त्ता ही कोई बात चाहेगा, (तो यह दूसरी बात है। तुम क्या जानो) मेरा पालन कर्त्ता तो हर वस्तु को अपने ज्ञान से घेरे हुये है। क्या तुम (इतना भी) नहीं सोचते ॥

और (यह मालूम हो जाने के पश्चात् कि मैं सत्य पर हूं और तुम असत्य पर हो) मैं उन (वस्तुओं) से क्यों डरूँ, जिन्हें तुम (अल्लाह का) शरीक ठहराते हो। जब कि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक कर लिया है, जिनके (पूज्य होने के) विषय में अल्लाह ने कोई प्रमाण तुम्हारे पास नहीं भेजा। (अब) यदि तुम में (ज़रा भी) समझ है, (तो तुम ही बताओ कि हम दोनों पक्षों में से) कौन सा पक्ष शान्ति (व सन्तोष) का अधिकारी है। (निर्भय और सन्तुष्ट मुझे होना चाहिये या तुम्हें) ॥

(प्रगट है कि) जो लोग (सच्चे पूज्य पर) ईमान लाये हैं और उन्होंने अपने ईमान को शिर्क से सुरक्षित रक्खा है, केवल उन्हीं के लिये अमन (शान्ति व सन्तोष) है और वही सीधे मार्ग पर चल रहे हैं ॥

और यह हमारा प्रमाण था, (जो) हमने—

इब्राहीम को उनकी कौम के क़ायल माक़ूल करने के लिये बताई। हम जिस को चाहते हैं, (उसके) मर्तबे बुलन्द कर देते हैं। (ऐ पैग़म्बर !) बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार हिक्मत वाला (और सब कुछ) जानता है ० और हमने इब्राहीम को इस्हाक़ (बेटा) और याकूब (पोता—दो फ़र्ज़न्द) अता फर्माए। इन सबको हमने राह रास्त दिखाई और (इनसे) पहिले नूह को भी हमने राह रास्त दिखाई। और इन्हीं की नस्ल में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून (सब) को (हमने राह रास्त दिखाई)। और ख़ुलूस दिल से नेक काम करने वालों को हम ऐसे ही सिले अता फ़र्माया करते हैं ० (और अला हाज़ल क़यास) ज़करीया और यहा और ईसा और इल्यास को (कि यह) सब (हमारे) नेक बन्दों में से हैं ० और इस्माईल और अलयसअ और यूनुस और लूत—(इन सब) को (भी हमने राह रास्त दिखाई)। और सब ही को दुनिया जहान के लोगों पर बर्तरी दी और (न सिर्फ़ इन ही को, बल्कि) इनके बड़ों और इनकी औलाद और इनके भाई बन्दों में से (और बहुतेरों को)। और इन लोगों को हमने (अपने बन्दों में से) इन्तिख़ाब किया और इनको (दीन की) सीधी राह दिखाई ० और यह है अल्लाह की रहनुमाई—अपने बन्दों में से जिस को चाहे, इस तरह की हिदायत दे। और अगर यह (पैग़म्बर) शिर्क करते होते, तो इनका (सारा) किया धरा इनसे जाये हो जाता० यह (पैग़म्बर) वह लोग थे, जिनको हमने किताब (भी) दी और हुकूमत (भी दी) और पैग़म्बरी (भी दी) तो यह (कुफ़्फ़ार मक्का) अगर इन (नेअमतों) की क़द्र न (भी) करें—

اِبْرٰهِیْمَ عَلٰی قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ
رَبَّكَ حَكِیْمٌ عَلِیْمٌ ۝ وَ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ
وَ یَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَیْنَا ۚ وَ نُوْحًا هَدَیْنَا مِنْ
قَبْلُ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِهٖ دَاوٗدَ وَ سُلَیْمٰنَ وَ اَیُّوْبَ
وَ یُوْسُفَ وَ مُوْسٰی وَ هٰرُوْنَ ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِی
الْمُحْسِنِیْنَ ۝ وَ زَكَرِیَّا وَ یَحْیٰی وَ عِیْسٰی وَ اِلْیَاسَ ؕ
كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ الْیَسَعَ وَ یُوْنُسَ
وَ لُوْطًا ؕ وَ كُلًّا فَضَّلْنَا عَلَی الْعٰلَمِیْنَ ۝ وَ
مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ ذُرِّیّٰتِهِمْ وَ اِخْوَانِهِمْ ۚ وَ اجْتَبَیْنٰهُمْ
وَ هَدَیْنٰهُمْ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۝ ذٰلِكَ هُدَی
اللّٰهِ یَهْدِیْ بِهٖ مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ لَوْ اَشْرَكُوْا
لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ
اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ یَّكْفُرْ بِهَا

इब्राहीम को उनकी जाति के मुक़ाबले में (पेश करने के लिये) बताया था। (और) हम जिसके चाहते हैं, पद ऊँचे कर देते हैं। (और ऐ रसूल !) तुम्हारा पालन कर्त्ता बड़े ज्ञान और बुद्धि वाला है। (वह जिसके पदों में उन्नति करता है, किसी भलाई ही से करता है)॥

और हमने इब्राहीम को इस्हाक़ व याकूब (जैसे बेटे और पोते) प्रदान किये। (और) उन सबको (शिक्षा का) मार्ग दिखाया और उनसे पहिले नूह को (भी हमने सत्य के मार्ग का) उपदेश दिया था। और उन्हीं की सन्तान में दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून (हैं; जिन) को (हमने उपदेश किया)। और हम नेक काम करने वालों को ऐसे ही पुरस्कार दिया करते हैं (कि उनको नेक सन्तान प्रदान करते हैं)। और ज़करीया और यहा और इल्यास (को भी हमने शिक्षा प्रदान की)। यह सब (हमारे) नेक बन्दों में से हैं। और इस्माईल और अल यसअ और यूनुस और लूत को (भी)। और (उन में से) प्रत्येक को (उस समय के) समस्त संसार के लोगों पर श्रेष्ठता दी और (न केवल उन्हीं को, बल्कि) उनके बाप, दादा और उनकी सन्तान और उनके भाई बन्धुओं में से (भी) कुछ को (श्रेष्ठता दी) और हमने इन (सब) को प्रधान बनाया और उनको सचाई का मार्ग दिखाया॥

यह अल्लाह की पथ-प्रदर्शकता है। इसके द्वारा जिसको चाहता है, अपने बन्दों में से सत्य के मार्ग पर लगा देता है। और यदि (यह समस्त उपरोक्त पैग़म्बर भी, जिनके यह गुण वर्णन किये गये हैं) शिर्क करते होते, तो उनके (समस्त नेक) काम जो, उन्होंने किये थे, व्यर्थ हो जाते। यह वह लोग थे, जिनको हमने (अपनी) किताब प्रदान की और शरीअत व नुबूवत (दी)। तो यह (मक्के के मुश्रिक) अगर इन वस्तुओं का इन्कार करते हैं, करें—

तो (कुछ पर्वाह की बात नहीं)। हमने इन (नेअ्मतों) पर (इनसे बेहतर) लोग (यानी मुसल्मान) तईनात कर दिये हैं, जो (इन काफ़िरों की तरह) इन (नेअ्मतों) के क़द्र नाशिनास नहीं० यह (अगिले पैग़म्बर) वह लोग थे, जिनको अल्लाह ने राह रास्त दिखाई, तो (ऐ पैग़म्बर !) उनही के तरीक़े की (तुम भी) पैरवी करो। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहदो कि मैं .क़ुर्आन (के सुनाने) पर तुमसे कुछ मज़्दूरी (तो) नहीं मांगता। यह .क़ुर्आन तो दुनिया जहान के लोगों के लिये (महज़) नसीहत है और बस ० और (यहूद ने) जैसी क़द्र अल्लाह की जाननी चाहिये थी, वैसी उसकी क़द्र न जानी कि (मुसल्मानों की ज़िद से) लगे कहने कि .ख़ुदा ने किसी बशर पर (किताब की क़िस्म की) कोई चीज़ नहीं उतारी। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि (भला) वह किताब (तौरात, .ख़ुदा ने नहीं उतारी, तो) किसने उतारी ? जिसे मूसा लेकर आये (और वह) लोगों के लिये नूर (है कि उसकी रोशनी में चलें) और हिदायत है। (और) तुमने उसके (अलग अलग) वर्क़ बना रक्खे हैं (उनमें से जो तुम्हारे मतलब के हैं) उनको (लोगों पर ज़ाहिर करते हो)। और बहुतेरे (अवराक़ जो तुम्हारे मुद्दआ के ख़िलाफ़ हैं, उनको लोगों से) छुपाते हो और (उसी किताब के ज़रिये से) तुमको वह कुछ सिखाया गया, जिसको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप (दादा। यह तो इसका क्या जवाब देंगे, तुमही इनसे) कहो (कि वह किताब) अल्लाह (ही) ने (उतारी थी, । फिर इनको पड़े भक मारने दो कि (दीन की बातों का) खेल बनाया करें ० और (तौरात की तरह) यह (.क़ुर्आन भी) किताब (आसमानी) है, जिसको हमने उतारा है। बरकत वाली (किताब है और) जो (किताबें) इस (के ज़माने नुज़ूल) से पहिले (की मौजूद) हैं, उनकी तस्दीक़ (भी) करती है और (ऐ पैग़म्बर ! हमने इसको इस ग़रज़ से उतारा है) ताकि तुम (अह्ल) मक्का को और जो लोग उसके आस पास बस्ते हैं, उनको (अज़ाब .ख़ुदा से) डराओ। और जो लोग आख़िरत का यक़ीन रखते हैं, वह तो (बे तअम्मुल) इस पर ईमान ले आते हैं। और वह अपनी नमाज़ की (भी) ख़बर रखते हैं (कि क़ज़ा नहीं होने पाती)० और उससे बढ़कर ज़ालिम (और) कौन होगा, जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँधे, या दावा करे कि मेरी तरफ़ वही आई है—

هٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكٰفِرِينَ
أُولٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ قُل لَّا
أَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِينَ
وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللّٰهُ
عَلٰى بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِي
جَاءَ بِهِ مُوسٰى نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ
قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا وَعُلِّمْتُم
مَّا لَمْ تَعْلَمُوا أَنتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ قُلِ اللّٰهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ
فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ وَهٰذَا كِتٰبٌ أَنزَلْنٰهُ
مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ
أُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ

ع

الثلث

हमने उन (पर ईमान लाने) के लिये ऐसे लोगों को नियत कर दिया है, जो (ईमान लाने की पात्रता रखते हैं और) उन चीज़ों से इन्कार नहीं करते हैं ॥

यह लोग वह थे, जिनको अल्लाह ने सत्य का मार्ग दिखाया था। अतएव (और कोई उनका अनुकरण करे या न करे) तुम इन्हीं के ढंग पर चलो। (और उन काफ़िरों से) कह दो (कि) मैं इस (.क़ुर्आन के प्रचार) पर (जो उपरोक्त पैग़म्बरों की शिक्षा का संग्रह है) तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। यह (.क़ुर्आन तो) समस्त साँसारिक मनुष्यों के लिये बस एक उपदेश (का केन्द्र) है। (जो इस पर अमल करेगा, स्वयं लाभ उठायेगा। मेरा अपना स्वार्थ इसमें कुछ नहीं है) ॥

और (इन यहूदियों ने) जैसा कि अल्लाह को पहिचानने का हक़ था, अल्लाह को नहीं पहिचाना। जब (ही तो तुम्हारी ज़िद में आकर यह) कह दिया कि अल्लाह ने किसी मनुष्य पर (किताब की तरह की कोई) वस्तु नहीं उतारी। (माना उन्होंने किसी मनुष्य पर किताब का उतारना .ख़ुदा की सत्ता से बाहर समझ। इनसे यह तो) पूछो कि उस किताब को किसने उतारा था, जिसे मूसा लेकर आये थे ? जो लोगों के लिये एक रोशनी और शिक्षा (का साधन) थी। (और) जिसको तुमने पृष्ठ पृष्ठ (करके) रख छोड़ा है। (उनमें से जिनका प्रगट करना अगर अपने पक्ष में लाभ दायक समझते हो) उन्हें प्रगट करते हो और बहुत सी बातें, (जिन्हें तुम प्रगट करना नहीं चाहते, उन्हें) छिपाते हो। और (जिस किताब के साथ तुम्हारा यह व्यवहार है, वही तो थी; जिसके द्वारा) तुमको वह कुछ सिखाया गया, जिसे न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा। (ऐ हमारे रसूल ! यह तो इसका क्या जवाब देंगे) तुम (ही) कह दो (कि वह किताब) अल्लाह (ही) ने उतारी (थी)। इसके बाद (भी अगर यह लोग मनुष्य पर किताब उतारने के क़ायल न हों, तो) इनको छोड़ो, कि वह अपनी अनुचित बातों में लिप्त रहें ॥

और (तुम विश्वास रक्खो कि जिस तरह तौरेत को हमने उतारा था, इसी तरह) यह (.क़ुर्आन भी आकाश की) किताब है। (जिसे) हम (ही) ने उतारा है। (और यह) बरकत वाली (किताब) है (और) पहिली किताबों (तौरेत, इन्जील इत्यादि) को सच्चा ठहराने वाली (किताब) है। (और उसे इस लिये उतारा गया है) ताकि तुम (ऐ रसूल ! इसके द्वारा) मक्का के निवासी और उसके चारों ओर के लोगों को (अल्लाह के अज़ाब से डराओ)। और जिन्हें प्रलय का विश्वास है, वह (तो) उस (किताब) पर (तुरन्त) ईमान ले आते हैं और (केवल ईमान ही नहीं ले आते, बल्कि उसके अनुसार कर्म करके उसका प्रमाण देते हैं)। वह अपनी नमाज़ (की ओर) से (सावधान) और सचेष्ट (रहते) हैं। (नमाज़ में कमी) सुस्ती नहीं करते (कि नमाज़ ही सदाचारी मनुष्यों का सब से बड़ा चिन्ह है) ॥

और उस मनुष्य से अधिक अत्याचारी (और) कौन हो सकता है, जो अल्लाह पर झूठा दोष लगावे, या जो ऐसी दशा में कि उसकी तरफ़ वही (.ख़ुदाई सन्देश आदि) कुछ न भेजा गया हो—कहने लगे कि मुझ पर वही (.ख़ुदाई सन्देश) आई है—

الي ولم يوح اليه شيء ومن قال سانزل مثل ما
انزل الله ولو ترى اذ الظلمون في غمرت
الموت والملئكة باسطوا ايديهم اخرجوا
انفسكم اليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم
تقولون على الله غير الحق وكنتم عن ايته
تستكبرون ۝ ولقد جئتمونا فرادى كما خلقنكم
اول مرة وتركتم ما خولنكم وراء ظهوركم
وما نرى معكم شفعاءكم الذين زعمتم انهم
فيكم شركؤا لقد تقطع بينكم وضل عنكم ما
كنتم تزعمون ۝ ان الله فالق الحب والنوى
يخرج الحي من الميت ومخرج الميت من
الحي ذلكم الله فانى تؤفكون ۝ فالق الاصباح
وجعل اليل سكنا والشمس والقمر حسبانا

६

हालांकि उसकी तरफ़ कुछ भी वही न आई हो। और (नीज़ उससे बढ़ कर भी ज़ालिम और कौन होगा) जो दावा करे कि (.कुरआन) जिस (की निस्बत तुम कहते हो कि इस) को अल्लाह ने उतारा है (कहो तो) ऐसा ही मैं अभी उतारदूँ। और (ऐ पैग़म्बर !) काश तुम (इन) ज़ालिमों को उस वक़् देखो कि मौत की बेहोशियों में (पड़े) हैं। और फ़रिश्ते (इनकी जान निकालने के लिये इन पर तरह तरह की) दस्त दराज़ियां कर रहे हैं (और कहते जाते हैं) कि अपनी जानें निकालो। अब तुमको ज़िल्लत के अज़ाब की सज़ा दी जायगी, इस लिये कि तुम .ख़ुदा पर नाहक़ (ना रवा) झूठ बोलते और उसकी आयतों (को सुन कर उन) से अकड़ा करते थे ० और (क़यामत के दिन हम उनसे ख़िताब करके इर्शाद करेंगे कि) पहिली बार जैसा हमने तुमको पैदा किया था, वैसे ही अकेले तुम हमारे हुज़ूर में (आख़िर) आए (पर आए) और जो कुछ (साज़ व सामान) हमने तुमको (दुनिया में) दिया था (वह सब) अपनी पीठ पीछे छोड़ आए। और तुम्हारी सिफ़ारिश करने वालों को हम तुम्हारे साथ (कहीं) नहीं देखते, जिनको तुम समझते थे कि वह तुम में (यानी तुम्हारे पैदा करने वाले और तुमको रोज़ी वग़ैरा देने में .ख़ुदा के) शरीक हैं। अब तुम्हारे आपस के राब्ते (सब) टूट (टाट) गये, और जो दावे तुम किया करते थे, (सब) तुमसे गए गुज़रे हो गए ० (यह दाना और गुठली, जो ज़मीन के अन्दर फूट कर उससे दरख़्त निकलता है, तो) .ख़ुदा ही (उस) दाने और गुठली का फाड़ने वाला है। (वही) ज़िन्दे को मुर्दे से निकालता है, (जैसे मसलन अंडे से मुर्ग़ी)। और (वही) ज़िन्दे से मुर्दे का निकालने वाला है, (जैसे मसलन मुर्ग़ी से अंडा। लोगो !) यही तो (तुम्हारा) .ख़ुदा है, फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो० उसी के किये से सुबह की पौ फटती है। और उसी ने आराम के लिये रात और (साल व माह के) हिसाब के लिये सूरज और चांद बनाए हैं—

(और मैं .ख़ुदा का रसूल हूं)। और (यह कि उससे अधिक भी और कौन ज़ालिम हो सकता है) जो (यह) कहता है, कि जिस (कलाम) को (तुम बयान करते हो कि) अल्लाह ने उतारा है, मैं (भी) उसी तरह का (कलाम) ला सकता हूं। और (ऐ रसूल! यदि) तुम (इन) ज़ालिमों को उस समय देखो (जब) कि (यह) मृत्यु के कष्टों में (लिप्त हों और फ़रिश्ते यह कहते हुए उनकी तरफ़) अपने हाथ बढ़ा रहे हों (कि लाओ) अपनी जानें निकालो (और हमें सौंपो कि) आज तुमको अधमता का दण्ड दिया जायगा। इस लिये कि तुम अल्लाह पर झूठे दोष लगाते थे और उसकी आयतों (पर ईमान लाने) से अपने आपको श्रेष्ठ समझते थे ॥

और (फिर प्रलय के दिन हम उनसे सम्बोधन करेंगे कि) आज (अन्त में) तुम हमारे पास उसी तरह अकेले आ गये, जिस तरह (अकेले) हमने तुमको (संसार में) पहिली बार (भेजा था और) पैदा किया था। और (मित्र, सखा, रुपया, पैसा) जो कुछ हमने तुमको (तुम्हारे सांसारिक जीवन में) दिया था (वह सब) अपने पीछे छोड़ आये और (आज) हम तुम्हारे साथ तुम्हारे (उन) सिफ़ारिश करने वालों को (भी) नहीं देखते, जिनके विषय में तुम्हारा विचार था कि वह तुम (को पैदा करने और पालने) में (हमारे) शरीक हैं। अब (उनके और) तुम्हारे बीच का सहारा जाता रहा। और जो कुछ तुम ख़याल करते थे, वह गया गुज़रा हुआ ॥

(लोगो ! तुम बड़ी भूल में हो) अल्लाह (ही) है, जो (पृथ्वी के भीतर से) दाना और गुठली को फोड़ कर निकालता है (और उन तुच्छ सी वस्तुओं से तने वाला पेड़ पैदा करता है। वही) बे जान (और मुर्दा चीज़) से ज़िन्दा (और सजीव चीज़) को निकालता है और (वही) ज़िन्दे से मुर्दे को निकालने वाला है। (और लोगो !) वही तो (तुम्हारा) अल्लाह है। फिर तुम (उस सच्चे पूज्य को छोड़ कर इधर उधर) कहां भटके चले जा रहे हो ॥

(वही) प्रातःकाल को उदय करने वाला है और (उसीने) रात को आराम के लिये और सूरज और चांद को हिसाब के लिये बनाया है—

ذٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ
لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ
قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي
اَنْشَاَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ
قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي
اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ
فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُتَرَاكِبًا
وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنّٰتٍ
مِنْ اَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ
مُتَشَابِهٍ اُنْظُرُوا اِلٰى ثَمَرِهٖ اِذَا اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ اِنَّ فِي
ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَجَعَلُوا لِلّٰهِ شُرَكَاءَ
الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهٗ بَنِينَ وَبَنٰتٍ بِغَيْرِ
عِلْمٍ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُونَ ۝ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ

यह (उसी .खुदाए) ज़बर्दस्त (और) दाना के बांधे हुये अन्दाज़े हैं ० और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने तुम लोगों के लिये सितारे बनाये, ताकि .खुश्की और तरी के अंधेरों में इन (के पतों) पर चलो। जो लोग समझदार हैं, उनके लिये तो हमने (अपनी .कुद्रत की) निशानियाँ खुब तफ़्सील के साथ बयान कर दी हैं ० और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने तुम (सब) को (एक) तन वाहिद (आदम) से पैदा किया। फिर (हर एक शख़्स के लिये) एक वक़् मुक़र्रर है (कि उस वक़् तक दुनिया में रहे)। और (मरे पीछे) सौंपे (यानी दफ़्न किये) जाने की जगह। जो लोग (बात को) बूझते हैं, उनके लिये तो हम (अपनी .कुद्रत की) निशानियाँ (खूब) तफ़्सील के साथ बयान कर चुके हैं ● और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिस ने आसमान से पानी बर्साया, फिर (पानी बर्साए पीछे) हम (ही) ने उससे हर क़िस्म (की रोईदगी) के कोए निकाले। फिर कोयों से हम ही ने हरी हरी टहनियाँ निकाल खड़ी कीं कि उनसे हम गुथे हुये दाने निकालते हैं। और खजूर के गाभे में से गुच्छे, जो (मारे बोझ के) झुके पड़ते हैं। और अंगूर के बाग़ और ज़ैतून और अनार (ज़ाहिर में एक दूसरे से) मिल्ते जुल्ते और (मज़े के एतिबार से) मिल्ते जुल्ते नहीं। लोगो! (इनमें से हर एक चीज़) जब पकती है, तो उसका फल और फल का पकना (क़ाबिल दीद है, इसको नज़र ग़ौर से) देखो। बेशक जो लोग (.खुदा पर) ईमान रखते हैं, उनके लिये इन (सब चीज़ों) में (.कुद्रत .खुदा की बहुतेरी) निशानियाँ (मौजूद) हैं ० और मुश्रिकों ने जिन्नात को .खुदा का शरीक बना खड़ा किया। हालांकि .खुदा ही ने जिन्नात को पैदा किया और इन लोगों ने बे जाने बूझे .खुदा के लिए बेटे और बेटियाँ (भी अपनी तरफ़ से) तराश लीं। (.खुदा की निस्बत) जैसी जैसी बातें यह लोग बयान करते हैं, वह उनसे पाक और बालातर है ० (वही इस नादिर) आसमान व ज़मीन का मूजिद है—

यह (रात और दिन, वर्ष और महीने के) अन्दाज़े (उसी) शक्ति शाली (और) बुद्धिमान के बाँधे हुए हैं॥

और वही तो है, जिसने तुम्हारे लिये (सुविधा पहुंचाने को) तारे बना दिये हैं कि तुम जल व स्थल के अन्धकारों में उनके सहारे से मार्ग मालूम कर सको। (इन प्रमाणों से) हमने उन लोगों के लिये, जो (तनिक भी) बुद्धि (व समझ) रखते हैं (अपनी) निशानियों को भली भाँति स्पष्ट कर दिया है॥

और (सुनो ! अल्लाह) वही (सर्व शक्तिमान) है, जिसने (केवल) एक मनुष्य (आदम) से तुम (सब) को पैदा किया। फिर (पैदा होने के उपरान्त तुम्हारे दो ठिकाने होते हैं; संसार और परलोक। सो परलोक तो) सर्वदा रहने की जगह है और (संसार) थोड़े समय रहने की जगह। हमने उन लोगों के लिये, जो ध्यान और सोच विचार करते हैं (अपनी) निशानियों को ब्यौरेवार वर्णन कर दिया है॥

और वही तो है, जिसने आस्मान (आकाश) से पानी बरसाया। फिर इस (पानी) के द्वारा हमने हर प्रकार की वनस्पतियाँ उगाईं (और) फिर हमने उन (वनस्पतियों) में से हरी हरी शाखायें निकालीं। (और) शाखाओं में से हम (ऐसे ख़ोशे) निकालते हैं (जिनके) दाने एक दूसरे पर चढ़े हुए (होते हैं)। और खजूर के गाभे से (ऐसे) ख़ोशे (पैदा करते हैं, जो फलों के भार से पृथ्वी पर) झुके पड़ते हैं और (इसी पानी से) हमने अंगूर और ज़ैतून और अनार के बाग़ (खड़े कर दिये; जिनके फल) एक दूसरे से मिलते जुलते भी हैं और नहीं भी मिलते जुलते। (फल होने की दृष्टि से सब फल एक हैं, परन्तु स्वाद हर एक का अलग अलग है। लोगो ! ज़रा) हर पेड़ के फल को देखो (तो, कि) जब वह (वृक्ष) फल लाता है, (तो किस तरह लाता है)। और (फिर) इस (फल) के पकने को (देखो कि वह किस तरह पकता है। यदि ध्यान व चिन्तन करने की आदत हो और बुद्धि से काम लिया जाय, तो) इन चीज़ों में ईमान वालों के लिये (अल्लाह की सत्ता की निशानियाँ ही) निशानियाँ हैं॥

और (लोगों ने इसके विरुद्ध) अल्लाह के साथ जिनों को शरीक ठहरा लिया है। यद्यपि (वह किसी तरह .खुदा के शरीक नहीं हो सकते। क्योंकि स्वयं) जिनों को (भी) अल्लाह (ही) ने पैदा किया है। और (केवल यही नहीं, बल्कि इन मूर्खों ने) बिना किसी ज्ञान के .खुदा के बेटे और बेटियाँ (भी) मान रक्खी हैं। अल्लाह उन बातों से, जिनको यह लोग उससे सम्बन्ध जोड़ते हैं, निर्लिप्त और श्रेष्ठ है॥

वह आकाश और पृथ्वी का आविष्कार कर्त्ता है—

وَالْاَرْضِ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ
وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ
فَاعْبُدُوْهُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَا تُدْرِكُهُ
الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ
الْخَبِيْرُ ۝ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ اَبْصَرَ
فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ
بِحَفِيْظٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا
دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِتَّبِعْ مَآ
اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَاَعْرِضْ
عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا
وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ
بِوَكِيْلٍ ۝ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

और उसके औलाद क्यों होने लगी, जब कि कभी उसकी कोई जोरू ही नहीं रही। और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया है और वही हर चीज़ (के हाल) से वाक़िफ़ है ० (लोगो !) यही अल्लाह तुम्हारा पर्वर्दिगार है, उसके सिवा कोई (और) माबूद नहीं। (वही) तमाम चीजों का पैदा करने वाला है, तो उसी की इबादत करो। और वही हर चीज़ का निगहबान है ० (मख़्लूक़ात की) नज़रें तो उसको मालूम कर नहीं सकतीं। और (लोगों की) नज़रों को वह ख़ूब जानता है। और वह बड़ा बारीक बीं बा ख़बर है ० (लोगो !) तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से दिल की आँखें तो तुम्हारे पास आ ही चुकी हैं। फिर (अब) जो देखे (और समझे) तो (उसका नफ़ा) उसी की ज़ात को है। और जो (दीदा व दानिस्ता) अन्धा हो जाय, तो (उसका वबाल भी) उसी की जान पर है। और (ऐ पैग़म्बर ! इनसे कहो कि) मैं तुम लोगों का कुछ मुहाफ़िज़ तो हूं नहीं ० और इसी तरह हम (अपनी) आयतें (तरह तरह) फेर फेर कर बयान करते हैं (ताकि मुन्किरों पर हुज्जत तमाम हो) और ताकि उनको क़ायल होना पड़े कि तुमने (उनको क़ुर्आन) पढ़ कर सुनाया (समझाया) और ताकि जो लोग समझ रखते हैं, हम उनको क़ुर्आन (का मतलब) अच्छी तरह समझादें ० (ऐ पैग़म्बर ! क़ुर्आन) जो तुम्हारे पर्वर्दिगार के हां से तुम्हारी तरफ़ वही के ज़रिये से भेजा गया, उसी (की हिदायत) पर चले जाओ। ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं। और मुश्रिकों से किनारा कश रहो ० और अगर ख़ुदा चाहता, तो यह शिर्क न करते। और हमने तुमको इन पर (कोई) मुहाफ़िज़ तो (मुक़र्रर) किया नहीं। और न तुम इन पर तईनात हो (कि इनको भटकने न दो) ० और (मुसल्मानो !) जो लोग ख़ुदा के सिवा (दूसरे) दूसरे माबूदों को (हाजत रवाई के लिये) बुलाया (यानी उनकी परस्तिश किया) करते हैं, उनको बुरा न कहो—

(और) उसके सन्तान कैसे हो सकती है, जब कि उसके कोई स्त्री (ही) नहीं है। (वह तो केवल रचना करने वाला और स्वामी है)। और उसी ने हर वस्तु को उत्पन्न किया है और वही (अपने प्राणियों में से) हर वस्तु के विषय में (हर प्रकार का) ज्ञान रखता है ॥

यही अल्लाह (जिसके इतने गुण वर्णित हुए हैं) तुम्हारा (वास्तविक) पालन कर्त्ता है। उसके अतिरिक्त और कोई पूजा के योग्य नहीं है। (वही) प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला है। अतएव तुम (सबको छोड़ कर) उसकी (और केवल उसी की) पूजा करो। और वही प्रत्येक वस्तु का, (जिस को उसने पैदा किया है) संरक्षक है ॥

(प्राणियों की) आँखें उसे नहीं देख सकतीं और वह (सब की) आँखों को देखता है। वह अत्यन्त सूक्ष्म-दर्शी (और) सचेष्ट है ॥

(और ऐ हमारे रसूल ! इन मुश्रिकों से कह दो कि) तुम्हारे पास तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (ऐसे) प्रमाण आ चुके हैं, (जिनके द्वारा तुम सत्य के मार्ग को आसानी से मालूम कर सकते हो)। फिर (इस ईश्वरीय पुरस्कार के बाद) जो मनुष्य (उनसे लाभ उठाता और सत्य के मार्ग को) देख लेता है, तो (उससे) उसी को लाभ होगा और जो मनुष्य (सांसारिक वैभव के विचार से) अन्धा हो जाता है (और सत्य के मार्ग को नहीं देखता, तो) उसका वबाल (भी) उसी पर पड़ेगा। और मैं तुम्हारा कोई संरक्षक नहीं हूं। (मेरा काम केवल इन सत्यता के प्रमाणों का तुमको पहुंचा देना है और बस) ॥

और हम इसी प्रकार (अपनी) निशानियों को भिन्न (भिन्न) रूप से बयान करते हैं (जिससे कि तुम-लोगों में अल्लाह के एक होने का अच्छी तरह प्रचार कर सको)। और ताकि (मुश्रिक एक बे पढ़े मनुष्य से ऐसी निशानियाँ सुन कर ईमान न लाने का नया बहाना घड़ लें और) कहें (कि तुमने तो यह बातें) किसी से पढ़ली हैं। (अन्यथा तुमको इनका ज्ञान किस प्रकार हो सकता था)। और ताकि जो लोग जानते (और समझते हैं) उनके लिये हम इस (क़ुर्आन) को, (जो हमारी सबसे बड़ी निशानी है) भली भाँती सिद्ध करदें (कि वह किसी मनुष्य के विचार नहीं हैं, बल्कि किसी) ऐसी व्यक्ति के आदेश और तर्क हैं, जो मानसिक बुद्धि की पहुँच से बाहर हैं ॥

(और ऐ रसूल ! कोई इन आयतों पर ईमान लाये या न लाये) तुम उस नियम का अनुकरण करते रहो, जो तुमको तुम्हारे पालन कर्त्ता
की ओर से बताया जाता है। (क्योंकि न) उसके अतिरिक्त और कोई पूजा के योग्य है (और न किसी का बताया हुआ तरीक़ा अनुसरण करने
योग्य हो सकता है)। और मुश्रिकों (के ईमान न लाने और इन स्पष्ट प्रमाणों को स्वीकार न करने का कोई विचार न करो और उन) से अलग रहो॥

और (ऐ रसूल !) यदि अल्लाह चाहता, तो यह (लोग) शिर्क न करते। और (ऐ रसूल !) हमने तुमको उन पर संरक्षक (नियत)
नहीं किया है (कि तुम उनको उनके शिर्क से भी बाज़ रक्खो)। और न तुम उनके ज़िम्मेदार हो (कि उनके अपराधों पर तुमसे कोई पूछ गछ होगी)॥

और (ऐ रसूल ! मुसल्मानों से कह दो कि) तुम उन लोगों को बुरा न कहो, जो ख़ुदा को छोड़ कर औरों की पूजा करते हैं—

اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا
لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ
لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ
عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَنُقَلِّبُ اَفْئِدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا
بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝
وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى
وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا
اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ۝
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ
وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ
غُرُوْرًا وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا

يَفْتَرُوْنَ

कि यह लोग (भी) बराह नादानी नाहक़ (ना रवा) ख़ुदा को बुरा कह बैठेंगे। इसी तरह हमने हर फ़रीक़ के आमाल उनको उम्दा कर दिखाए हैं, फिर (आख़िरकार) इन (सब) को अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ लौट कर जाना है। तो जैसे २ आमाल (दुनिया में) कर रहे थे, (ख़ुदा उनका बुरा भला) इनको बता देगा ० और (कुफ़्फ़ार मक्का) अल्लाह की (बड़ी) सख़्त क़समें खा (खा) कर (मुसल्मानों से) कहते हैं कि (अगर उनके कहने के मुताबिक़) कोई मोजिज़ा उनके सामने आये, तो वह ज़रूर उस पर ईमान ले आयेंगे। (ऐ पैग़म्बर !) तुम (मुसल्मानों को) समझा दो कि मोजिज़े तो अल्लाह ही के पास हैं (यानी उसी के इख़्तियार में हैं)। और (मुसल्मानो!) तुम लोग क्या जानो, यह लोग तो मोजिज़े देख कर भी ईमान नहीं लाएँगे ० और हम इनके दिलों और इनकी आँखों को उलट देंगे, (तो यह मोजिज़े देख कर भी ईमान नहीं लायेंगे) जैसे क़ुर्आन पर पहिली दफ़ा ईमान नहीं लाये थे। और हम इनको इनकी सर्कशी (की हालत) में रहने देंगे कि पड़े भटका करें ० और अगर हम (आसमान से) इन पर फ़रिश्तों को भी उतारते और मुर्दे भी इनसे बातें (चीतें) करते और जितनी चीज़ें (इनकी नज़र से बिलफ़ेल मख़्फ़ी) हैं (जैसे दोज़ख़ व जन्नत वग़ैरा-उन सबको भी) इनके सामने ला खड़ा करते, तब भी तो यह बे मशीयत इलाही ईमान न लाते। लेकिन उन में अक्सर (मशीयत इलाही को) नहीं समझते ० और (ऐ पैग़म्बर ! जिस तरह यह कुफ़्फ़ार मक्का तुम्हारे साथ दुश्मनी रखते हैं) उसी तरह हमने शरीर आदमियों और जिनों को (पैग़म्बरों का सब्र आज़माने के लिये) हर एक नबी का दुश्मन बना दिया था, कि धोखा देने की ग़रज़ से एक के कान में एक चिकनी चुपड़ी बातें फूंकता रहता था। और (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम्हारा पर्वर्दिगार चाहता, तो यह लोग ऐसी हरकत न करते। तो इनको और इनकी इफ़्तिरा पर्दाज़ियों को (अल्लाह पर) छोड़ दो (वह इनसे समझ लेगा) ०—

अन्यथा वह मूर्खता में (फँस कर) हद से बढ़ कर ख़ुदा को बुरा कहेंगे। प्रत्येक जाति के कर्मों को हमने उसी तरह उनकी दृष्टि में प्रिय बना रक्खा है, (परन्तु उन्हें संसार में सदैव स्वतन्त्र नहीं छोड़ा जायगा। बल्कि अन्त में) फिर उन (सब) को अपने पालन कर्त्ता की ओर लौट कर जाना होगा। तब (वहाँ) वह उनको अच्छी तरह बता देगा (कि) वह (संसार में) जो कुछ करते थे, (वह कहाँ तक ठीक था) ॥

और यह (काफ़िर) बड़े ज़ोर शोर से अल्लाह की शपथें खाते हैं (और कहते हैं कि यदि उनके चाहे हुए चिन्हों में से) कोई निशानी उनके पास आ गई, तो वह उस पर ज़रूर ईमान ले आयेंगे। (ऐ रसूल !) तुम (इनसे) कह दो (कि) निशानियाँ ख़ुदा के अधिकार में हैं (और उनका तुम्हारी इच्छानुसार उपस्थित करना मेरे अधिकार से बाहर है)। और (ऐ मुसल्मानो !) तुमको क्या मालूम, कि जब (उनकी माँगी हुई) निशानी आ जायगी (तो यह लोग ऐसे हठ धर्मी हैं कि उस समय भी) ईमान न लायेंगे ॥

और (ऐ रसूल ! यदि उनकी माँगी हुई निशानियाँ आ भी जावें, तो) हम उनके दिलों को (सत्य ग्रहण करने से) और उनकी आँखों को (सत्य को देखने से उसी तरह) फेर देंगे, जिस तरह वह पहिली बार (माँगे बिना) निशानियों (के आने) पर ईमान न लाये थे। (और उनके दिल सत्य ग्रहण करने और आँखें सत्य को देखने की पात्रता से वञ्चित रही थीं)। और (अब भी) हम उनको उनकी सर्कशी में लिप्त छोड़ देंगे। (तो ऐ रसूल ! अगर अल्लाह न चाहे, तो उनकी यह तजवीज़ें उनको क्या लाभ देंगी। यह तो केवल उनके बहाने हैं। अन्यथा ईमान लाने वाले के लिये उपर्युक्त प्रमाण ही बहुत काफ़ी हैं। जिसे अल्लाह हिदायत देनी चाहता है, वह प्रथम ही शिक्षा ग्रहण कर लेता है) ॥

और (ऐ मुहम्मद !) यदि हम (तुम्हारी पैग़म्बरी के समर्थन के लिये मक्का ही के काफ़िरों के कथनानुसार आकाश से) उन पर फ़रिश्ते अवतीर्ण करदें और मुर्दे (भी) उनसे बातें करने लगें और (सृष्टि के) प्रत्येक परिमाणु को (तुम्हारी सच्चाई का साक्षी बनाकर) उनके सामने ला खड़ा करें, तब भी यह (सदैव के अभागे) ईमान न लायेंगे। सिवा उस (दशा) के, कि अल्लाह ही (इन्हें ईमान की दौलत प्रदान) करना चाहे। (ईमान केवल निशानियों के आने पर निर्भर नहीं है, बल्कि उसके लिये अल्लाह की इच्छा का होना भी आवश्यक है। अतएव इनका ईमान लाने के लिये बार २ निशानियाँ तलब करना एक व्यर्थ बात है)। लेकिन इनमें के बहुधा (लोग वास्तविक दशा को) नहीं जानते ॥

और (ऐ मुहम्मद ! इन मूर्खों की दुश्मनी तुम्हारी ही व्यक्ति तक परिमित नहीं है, बल्कि जिस प्रकार यह मक्का के काफ़िर तुमसे जलते हैं) उसी प्रकार हमने हर नबी का शैतान आदमियों और जिनों को शत्रु बना दिया था, जो (तुम्हारे ही समय के काफ़िरों के समान) धोखा देने के अभिप्राय से एक दूसरे (के कान) में चिकनी चुपड़ी बातें भरा करते थे। (और ऐ रसूल !) यदि तुम्हारा पालन कर्त्ता चाहता, तो (इनकी क्या हस्ती है)। यह लोग (जो कुछ कर रहे हैं) ऐसा (कदापि) न करते। (मगर इसमें भी तुम्हारे पालन कर्त्ता की कुछ हिकमत है। अतएव) तुम (भी) इन्हें और इनके झूठे दोषों (के विचार) को छोड़ो। (वह जानें और उनको झूठी बातें-अल्लाह सबको देख लेगा) ॥

يفترون ● ولتصغى اليه افئدة الذين لا يؤمنون
بالاخرة وليرضوه وليقترفوا ما هم مقترفون ●
افغير الله ابتغي حكما وهو الذي انزل
اليكم الكتب مفصلا والذين اتينهم
الكتب يعلمون انه منزل من ربك بالحق
فلا تكونن من الممترين ● وتمت كلمت ربك
صدقا وعدلا لا مبدل لكلمته وهو السميع
العليم ● وان تطع اكثر من في الارض يضلوك
عن سبيل الله ان يتبعون الا الظن وان هم
الا يخرصون ● ان ربك هو اعلم من يضل عن
سبيله وهو اعلم بالمهتدين ● فكلوا مما
ذكر اسم الله عليه ان كنتم بايته مؤمنين ●
وما لكم الا تاكلوا مما ذكر اسم الله عليه وقد

और (इन शरीरों का एक दूसरे को इग़वा करना) इस लिये (भी था) कि जो लोग (रोज़) आख़िरत का ईमान नहीं रखते, उनके दिल इनकी बातों की तरफ़ तवज्जह करें और वह लोग इनकी बातों से रज़ामन्द हों और ताकि जो बद किरदारियां यह (ख़ुद) करते हैं, वह (भी) किया करें ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से पूछो कि) क्या (तुम यह चाहते हो कि) मैं (अपने और तुम्हारे दर्मियान) ख़ुदा के सिवा कोई और पञ्च तलाश करूं ? हालांकि वही (ज़ात पाक) है, जिसने तुम लोगों की तरफ़ (यह) किताब भेजी, जिसमें (हर तरह की) तफ़्सील (मौजूद) है। और (ऐ पैग़म्बर !) वह लोग, जिनको हमने (तुमसे पहिले) किताब दी है, इस बात को (भी ख़ूब) जानते हैं कि क़ुर्आन (भी) हक़ीक़त में तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से उतारा गया है। तो (ऐ पैग़म्बर ! ख़बर्दार) तुम कहीं शक करने वालों में न हो जाना ० और तुम्हारे पर्वर्दिगार का इर्शाद (यानी ग़लबए इस्लाम का वादा) सच्चाई और इन्साफ़ के साथ पूरा हुआ। कोई ऐसा (हेकड़) नहीं कि उसके किसी हुक्म को टाल दे और वही (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० और (ऐ पैग़म्बर !) अक्सर लोग तो दुनिया में ऐसे हैं कि अगर उनके कहे पर चलो, तो तुमको राह ख़ुदा से भटका छोड़ें। यह तो सिर्फ़ अपने ज़ेहनी ख़यालात पर चलते और निरी अटकलें (बैठे) दौड़ाते हैं (और बस) ० जो लोग ख़ुदा के रस्ते से भटके हुये हैं, बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार ही उनको ख़ूब जानता है और जो राह रास्त पर हैं, उनको भी वही ख़ूब जानता है ० पस अगर तुम लोगों को उसके हुक्मों का यक़ीन है, तो जिस (ज़बीहे) पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, उसी में से खाओ (और मुश्रिकों के बहकाने से मुर्दा जानवरों के खाने पर नज़र न दौड़ाओ) ० और जिस (ज़बीहे) पर ख़ुदा का नाम लिया गया हो, उसी में से तुम्हारे न खाने का सबब क्या? हालांकि–

और (इन शैतानों का यह काम इस प्रयोजन से होता है) कि अपनी (चालबाज़ी की शिक्षा की) और उन लोगों के दिलों को आकर्षित करलें, जिन्हें प्रलय का (पूरा पूरा) विश्वास नहीं है। और (केवल हृदय को आकर्षित करना ही नहीं चाहते, बल्कि यह कोशिश करते हैं) कि वह (ईमान के कच्चे) लोग उस (छल व कपट की शिक्षा) को पसन्द (भी) करलें (और उन पर विश्वास करने लगें)। और ताकि जो बुरे कर्म यह (बातें बनाने वाले) करते हैं, वह (बातें सुनने वाले भी निस्संकोच) करें॥

(ऐ हमारे रसूल ! इन मन्द बुद्धि वाले मनुष्यों से-जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने के लिये तरह २ की बातें निकालते हैं। और कहते हैं कि फ़ैसले के लिये हम तुम यहूदी और ईसाई लोगों में से पञ्च नियत करलें। यदि वह तुमको नबी मान लें, तो हम भी मान लेंगे। तो तुम उनको उत्तर दे दो कि) क्या मैं अल्लाह के अतिरिक्त और किसी को पञ्च बनाऊँ ? यद्यपि वह-वह (श्रेष्ठ व्यक्ति) है कि जिसने तुम पर (एक ऐसी) किताब उतारी (जो अल्लाह के एक मानने व पैग़म्बरी के दावे के लिये एक मज़बूत प्रमाण है और एक) व्याख्या-पूर्ण (किताब है)। और हम जिन लोगों को (तुमसे पहिले) किताब (अर्थात् तौरेत, इञ्जील आदि) दे चुके हैं, वह भली भाँति जानते हैं, कि यह (क़ुर्आन) वास्तव में तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से उतारा गया है। (ऐ रसूल ! यह हठ धर्मी के कारण ईमान नहीं लाते)। तो तुम कहीं (इनके हाथ में अपना फ़ैसला न दे देना और हमारी बातों के विषय में) सन्देह में न पड़ जाना॥

और तुम्हारे पालन कर्त्ता के वाक्य (अर्थात् अच्छे बुरे वादे) सचाई और न्याय (के कांटे) में (तुले हुए) बिलकुल पूरे और खरे हैं। उसके वाक्य (और आज्ञाओं) में परिवर्तन करने वाला कोई (भी) नहीं हो सक्ता। और (अगर कोई अल्लाह के मुक़ाबले में अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे को पञ्च बनाना चाहे, तो) अल्लाह (उसके बचनों को) सुनने वाला (और उसके कर्मों का) जानने वाला है॥

और (ऐ हमारे रसूल !) बहुत से लोग संसार में ऐसे हैं कि अगर तुम उनका अनुकरण करोगे, तो वह तुमको अल्लाह की राह (पर चलने) से (रोकेंगे) और बहकायेंगे। वह केवल वह्म व गुमान के पाबन्द और कल्पित बातों के अनुयायी हैं॥

(और) तुम्हारा पालन कर्त्ता निश्चित रूप से (इन कल्पना व गुमान के आधीनों अर्थात् अपनी अटकल व कल्पना के अनुसार आचरण करने वालों और) उसके (बताये हुये) मार्ग से भटक जाने वालों से ख़ूब परिचित है। और वह उन्हें भी अच्छी तरह जानता है, जो शिक्षा पाने वाले हैं॥

तो (ऐ हमारे रसूल ! तुम मुसलमानों से कह दो कि) तुम जिस (जानवर) पर (बध करते समय) अल्लाह का नाम पढ़ा गया हो, उसमें से खाओ (और काफ़िरों की तरह उसे हराम न समझो)। यदि तुम उसकी आज्ञाओं (की सचाई) का (सच्चे दिल से) विश्वास करते हो॥

और तुम्हारे (इस विश्वास के) लिये (आख़िर) कौन सा कारण हो सकता है, कि तुम उस (जानवर) में से न खाओ: जिस पर अल्लाह का नाम (बध करते समय) पढ़ लिया गया हो–

जो चीज़ें ख़ुदा ने तुम पर हराम कर दी हैं, उसने तफ़सील के साथ तुम से बयान करदीं (और उनमें मुर्दा जानवर दाख़िल हैं)। हां वह चीज़ कि (हराम तो है) मगर (भूख वग़ैरा की वजह से) तुम उस (के खाने) पर मजबूर हो जाओ (तो वह भी हराम नहीं)। और बहुत लोग तो ख़्वाही न ख़्वाही बिला तहक़ीक़ अपनी ख़्वाहिशों के मुताबिक़ (लोगों को) बहकाते रहते हैं। (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग (शरीअत की) हद से बाहर हो जाते हैं, तुम्हारा पर्वरदिगार ही उन (के हाल) से ख़ूब वाक़िफ़ है ० और (लोगो !) ज़ाहिरी गुनाह और पोशीदा गुनाह (सब ही) से किनारा कश रहो। जो लोग गुनाह समेटते हैं, उनको अपने करतूत का जल्द बदला मिल जायगा ० और जिस (ज़बीहे) पर ख़ुदा का नाम न लिया गया हो, उस में से न खाओ और उसमें से खाना अलबत्ता ना फ़र्मानी (की बात) है। और शयातीन तो अपने ढब के लोगों के दिलों में वस्वसे डालते ही रहते हैं, ताकि तुम्हारे साथ कज बहसी करें। और अगर तुमने उनका कहा मान लिया, तो (समझा जायगा कि) बिला शुबहा तुम (भी) मुश्रिक हो ० क्या (एक शख़्स) जो (पहिले) मुर्दा था, फिर हमने उसमें जान डाली और उसको एक नूर अता फ़र्माया, जिसकी मदद से वह लोगों में (ख़ासी तरह) चलता फिरता है-(क्या) वह उस जैसा हो सकता है, जिसका हाल यह है कि अंधेरों में (घिरा पड़ा) है, वहाँ से निकल नहीं सकता० (जिस तरह यह लोग हराम व हलाल में कठ हुज्जतियाँ करते हैं) इसी तरह (इन) काफ़िरों को जो कुछ भी कर रहे हैं, भला (ही भला) दिखाई देता है ० और (जिस तरह यह लोग दीन हक़ के ख़िलाफ़ कोशिश कर रहे हैं) इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े बड़े लोग पैदा किये कि वही उन बस्तियों में बद किर्दार भी थे, ताकि उनमें फ़ित्ना अंगेज़ियाँ करें। और जितनी भी फ़ित्ना अंगेज़ियाँ करते हैं, अपने ही हक़ में करते हैं-

فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ
إِلَيْهِ وَإِنَّ كَثِيرًا لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِمْ بِغَيْرِ
عِلْمٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ● وَذَرُوا ظَاهِرَ
الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ
سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ● وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا
لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَإِنَّ
الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَى أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ
وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ● أَوَمَنْ
كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي
بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ
لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ● وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ
مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا

१५

ऐसी दशा में जब कि अल्लाह तआला ने समस्त हराम चीज़ों (और जानवरों) को तुम्हारे लिये व्याख्या सहित वर्णन कर दिया हो (और बता दिया हो कि यह यह चीज़ें हर दशा में हराम हैं) मगर (तुम्हारी भूख के मारे बुरी दशा हो और) जब तुम उस (हराम जानवर के खाने) की तरफ़ विवश हो जाओ (और उसके न खाने में प्राण जाने का सन्देह हो, तो वह भी ऐसी दशा में हलाल है) ॥

और (सर्वसाधारण की कल्पना व विश्वास तो ध्यान देने योग्य नहीं। इस लिए कि) बहुत से लोग इन्द्रिय विषयक वासनाओं से उत्पन्न विचारों के अनुसार (दूसरों को) मूर्खता से बहकाते फिरते हैं। (जिसका परिणाम उन्हें बहुत बुरा भुगतना पड़ेगा, क्योंकि) तुम्हारा पालन कर्त्ता (उन पथ-भ्रष्ट करने वालों और ईमान की) सीमा से निकलने वालों को अच्छी तरह जानता है। (और उसने उनके लिये बहुत बड़ा दण्ड नियत कर रक्खा है। अतएव ऐ हमारे रसूल ! तुम लोगों को समझा दो, कि बड़ी सावधानी से काम लें) और प्रकट पाप, तथा गुप्त पाप (और मानसिक व कर्म सम्बन्धी हर प्रकार के पापों) को छोड़ दें (और कभी हलाल को हराम और हराम को हलाल न जानें। इसलिये कि) जो लोग पाप करते हैं (चाहे किसी प्रकार का पाप हो) वह निस्सन्देह (व बेशक) बहुत शीघ्र (प्रलय में) अपने कर्मों का दंड पायेंगे ॥

और (जिस प्रकार वह जानवर-जिस पर बध करते समय अल्लाह का नाम पढ़ लिया गया हो, उसे हलाल समझना ज़रूरी है। इसी तरह) जिस (जानवर) पर वध करते समय अल्लाह का नाम न पढ़ा गया हो, उसे न खाओ और (उसे हराम समझो। क्योंकि) यह नितान्त पाप (की बात) है। और (ऐ मुसलमानो ! याद रक्खो कि) यह सत्य बात है, कि शैतान अपने (काफ़िर) मित्रों (को ऐसी असत्य बातें सिखाते पढ़ाते रहते हैं और उन) के दिलों में (इसी प्रकार की निराधार बातें अर्थात् हराम को हलाल और हलाल को हराम समझना) डालते (रहते) हैं, ताकि वह तुम से लड़ें (और उन असत्य भावों की सहायता से तुम्हें भी बहकायें)। यदि तुम उनकी (शिक्षा की) पैरवी करोगे, तो निश्चित रूप से (उनकी तरह) मुश्रिक हो जाओगे ॥

(और ईमानदार व मुश्रिक में बड़ा भेद है। तुम स्वयं ही सोचो ! कि) भला वह मनुष्य--जो (पहिले) मुर्दा था (अर्थात् उस का दिल ईमान के प्रकाश से वञ्चित था) फिर हमने उसको जीवित किया (अर्थात् ईमानदार बनाया) और हमने उसको एक ऐसा (ईमान का) प्रकाश दिया, जिसे वह लोगों के बीच साथ लिये फिरता है (और अज्ञानता व पथ भ्रष्टता के अँधेरे से इस प्रकाश की बदौलत अपनी रक्षा करता है। तो क्या ऐसा मनुष्य) उस (अभागे मनुष्य) के समान (परेशान व दुःख का अधिकारी) हो सकता है, जो ऐसे अँधेरे (गढ़ों) में (गिरा) पड़ा है, कि उनसे वह निकल (भी) नहीं सकता। (मगर बा वजूद ऐसी बुरी दशा में होने के यह लोग अपने कुफ़्र से नहीं टलते और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। क्योंकि जिस प्रकार ईमानदारों को अपना ईमान भला लगता है) उसी तरह काफ़िरों को-जो (कुफ़्र) वह करते हैं, अच्छा मालूम होता है (और उसका परिणाम बुरा नज़र नहीं आता) ॥

(अतएव इसी लिये काफ़िर तुमसे झगड़ने में ज़रा भय नहीं करते) और (इन काफ़िरों का यह अन्धापन बहुत पुराना है। जिस तरह मक्के के बड़े २ लोग तुम्हारे प्रभाव को हर मुमकिन तरीक़े से मिटाने की कोशिश करते हैं--ऐ हमारे रसूल !) इसी प्रकार हमने हर नबी के लिये (जिस जगह और जिस उम्मत में वह अवतीर्ण हुआ, उस) बस्ती (और उस उम्मत) के बड़े २ लोगों (ही) को (अवज्ञाकारी और) गुनहगार बनाया। जिससे कि (वह अपने नबी के साथ ख़ूब दग़ा और) छल करें (और किसी प्रकार सत्य का प्रचार न होने दें। मगर यह उनका गुमान ही गुमान है। वास्तव में) वह जो मक्र करते हैं, अपने ही साथ करते हैं—

بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا
لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ
اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ
أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا
كَانُوا يَمْكُرُونَ ۝ فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ
يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ
يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي
السَّمَاءِ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَهَٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا قَدْ
فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ۝ لَهُمْ دَارُ
السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ
مِنَ الْإِنْسِ وَقَالَ أَوْلِيَاؤُهُمْ مِنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ

और (इस लिम को) नहीं समझते ० और जब इनके पास कोई आयत (क़ुर्आनी) आती है, तो कहते हैं, जैसी (नुबूवत) पैग़म्बरान .ख़ुदा को दी गई है, जब तक (इसी तरह की नुबूवत) हमको न दी जाय, हम तो ईमान लाने वाले हैं नहीं । (सो) .ख़ुदा जिस जगह अपनी पैग़म्बरी (की अमानत सुपुर्द) करता है, वह (उस जगह के महफ़ूज़ और क़ाबिल इतमीनान होने को भी) .ख़ूब जानता है । जो लोग जुर्म (.ख़ुद पसन्दी) के मुर्तकिब हैं, अन्क़रीब उनको उनकी फ़ितना अंगेज़ियों के बदले .ख़ुदा के यहाँ (चल कर) ज़िल्लत और बड़ी सख़्त मार पहुँचने वाली है ० तो जिस शख़्स को .ख़ुदा चाहता है कि उसे राह रास्त दिखाये, उसके सीने को (क़बूल) इस्लाम के लिये खोल देता है और जिस शख़्स को चाहता है कि उसे गुमराह करे, उसके सीने को तङ्ग (और) भिंचा हुआ कर देता है । गोया उसको आस्मान में चढ़ना पड़ता है । जो लोग ईमान नहीं लाते, उन पर इसी तरह अल्लाह की फिटकार पड़ती है ० और (ऐ पैग़म्बर !) यह (दीन इस्लाम ही) तुम्हारे पर्वर्दिगार का सीधा रस्ता है । जो लोग ग़ौर (और फ़िक्र) करते हैं, उनके लिये तो हम (अपनी) आयतें ख़ूब तफ़सील के साथ बयान कर चुके हैं ० उनके पर्वर्दिगार के यहाँ उनके लिये अम्न (चैन) का घर (यानी बहिश्त तैयार) है । और (दुनिया में) जो (नेक) अमल करते रहे, उसके सिले में वही उनका (हर तरह) ख़बरगीराँ होगा ० और जिस दिन .ख़ुदा सब (आदमियों और जिन्नात) को (अपने हु.ज़ूर में) जमा करेगा (और शयातीन की तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़र्मायेगा कि) ऐ गिरोह जिन्नात ! बनी आदम में से तो तुमने अच्छी बड़ी जमाअत अपनी तरफ़ कर ली । और (जो लोग) बनी आदम में से (दुनिया में) शयातीन के दोस्त (बने हुये थे, वह) कहेंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! (दुनिया में) हम एक दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे—

और वह जानते (भी) नहीं (कि इसका नुक़सान .ख़ुद उन्हें ही भुगतना पड़ता है) ॥

(और इन काफ़िरों की ना समझी व मूर्खता तो देखो !! पैग़म्बरी की इच्छा करते हैं) और जब उनके पास कोई आयत आती है तो (यद्यपि वह विषय और भाषा की सुन्दरता व उत्तमता और .ख़ुदाई सन्देश के उस दर्जे पर होती है, जिससे उसकी सचाई और अल्लाह की तरफ़ से उतरी हुई होने में कोई सन्देह नहीं रहना चाहिये। मगर) यह (लोग) कहते हैं, कि हम (अल्लाह की इस आयत और हुक्म पर) कदापि ईमान नहीं लायेंगे, जब तक कि जो कुछ रसूलों को दिया गया है (जैसे वही का उतरना, किसी पुस्तक या किताब का उतरना) हमको न दे दिया जाय । (मानो वह इस कुफ़्र रूपी अन्धकार व अज्ञानता के होते हुए भी पैग़म्बरी के अधिकारी हैं) । पैग़म्बरी के लिये जो स्थान (और जो मनुष्य) मुनासिब व उपयुक्त होता है, उसे अल्लाह (ख़ूब) जानता है । (काफ़िरों की यह इच्छा नहीं है; बल्कि गुस्ताख़ी, अदावत, घमंड व अभिमान जैसे महान पापों का समूह है) । शीघ्र ही उन लोगों को-जिन्होंने (इतना बड़ा) जुर्म किया, अपने छल (व कपट) के बदले अल्लाह के सामने ज़लील और दर्द नाक अज़ाब (दारुण दुःख) में लिप्त होना पड़ेगा ॥

(जो दिमाग़ अज्ञानता व मूर्खता के कूड़े करकट से पटे पड़े हैं, वह अल्लाह की शिक्षा को क्या समझेंगे और उस पर क्या ईमान लायेंगे) । इसी लिये तो अल्लाह जिसे हिदायत देता है, (पहिले उसके दिमाग़ को दुरुस्त करता है और) उसके सीने को इस्लाम (की शिक्षा और उसके ग्रहण करने) के लिये विस्तृत कर देता है । और जिसे वह गुमराह करना चाहता है, (उसके मस्तक को मूर्खता से भर पूर और) उसके सीने को तंग-बल्कि बेहद तंग कर देता है (कि इस्लाम के पद तक पहुँचना उसके लिये ऐसा ही कठिन होता है) मानो कि वह आकाश पर चढ़ (जाने की कोशिश कर) रहा है । जो ईमान नहीं लाते, अल्लाह उसी तरह उन लोगों (के दिलों) पर (फिटकार और सदैव की) अपवित्रता (की मोहर) लगा देता है ॥

और (ऐ हमारे रसूल !) यह (इस्लाम, जिसका हम वर्णन कर रहे हैं, तुम्हारे पालन कर्त्ता तक पहुँचाने के लिये) तुम्हारे पालन कर्त्ता का (बताया हुआ) सीधा रास्ता है । (और) निश्चित रूप से हमने उन लोगों के लिये, जो (शिक्षा लेनी और) नसीहत हासिल करनी चाहें. (अपने इस इस्लाम के मार्ग के प्रकाश अर्थात् ज्ञान और सचाई के लिये इसके समस्त)चिन्ह खोल खोल कर बयान कर दिये हैं ॥

इन (शिक्षा लेने और नसीहत हासिल करने वालों और अल्लाह के बताये हुए रास्ते पर चलने वालों) के लिये उनके पालन कर्त्ता के यहां (शान्ति व सुख और) कल्याण का घर है (अर्थात् स्वर्ग)। और अल्लाह उनके (नेक) कर्मों के कारण उनका दोस्त है ॥

और (ऐ हमारे रसूल ! इन उपद्रव करने वालों और अल्लाह के न मानने वालों को उस दिन का हाल सुना दो) जिस दिन अल्लाह (समस्त प्राणियों को और) उन सबको एकत्रित करेगा। (और फिर उनमें से शैतान-जिनों को सम्बोधन करके कहेगा कि) ऐ जिनों के समूह ! तुमने मनुष्यों को बहकाने में बड़ी सफलता प्राप्त की । (उस समय उन्हें विवश होकर स्वीकार करना पड़ेगा कि हाँ निस्सन्देह हम से गलती हुई) । और इन (शैतान जिनों) के जो मनुष्य मित्र हैं, (उनसे भी कहा जायगा और वह भी अपना अपराध स्वीकार करते हुए) कहेंगे कि ऐ हमारे पालने वाले ! (और पैदा करने वाले !) –

بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِیْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ
قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِیْنَ فِیْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ
اِنَّ رَبَّكَ حَكِیْمٌ عَلِیْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّیْ بَعْضَ
الظّٰلِمِیْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ۝ یٰمَعْشَرَ
الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ یَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ یَقُصُّوْنَ
عَلَیْكُمْ اٰیٰتِیْ وَیُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ یَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ
قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰۤى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا
وَشَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِیْنَ ۝ ذٰلِكَ
اَنْ لَّمْ یَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا
غٰفِلُوْنَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ
بِغَافِلٍ عَمَّا یَعْمَلُوْنَ ۝ وَرَبُّكَ الْغَنِیُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ
اِنْ یَّشَاْ یُذْهِبْكُمْ وَیَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا یَشَآءُ
كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّیَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِیْنَ ۝ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ

और (नतीजे आमाल के भुगतने का) जो वक्त तूने हमारे लिये मुक़र्रर किया था, हम अपने उस वादे (की मन्ज़िल) तक पहुँच गये। (अब क्या इर्शाद है ? ख़ुदा तआला) फ़र्मायगा कि तुम्हारा (सबका) ठिकाना दोज़ख़, उसी में हमेशा (हमेशा) रहोगे। आगे ख़ुदा की (यानी हमारी) मर्ज़ी। (ऐ पैग़म्बर !) बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार हिक्मत वाला (और सबके हाल से) वाक़िफ़ है ० और इसी तरह हम बाज़ (दूसरे) ज़ालिमों को बाज़ के साथ शामिल कर देंगे। (उनके) उस (करतूत) का बदला-जो (दुनिया में) करते रहे हैं ० (फिर हम जिन्नात और बनी आदम दोनों से मुख़ातिब हो कर पूछेंगे कि) ऐ गिरोह जिन व इन्स ! क्या तुम्हारे पास तुम ही में के पैग़म्बर नहीं आए कि तुम से हमारे अहकाम बयान करें ? और तुम्हारे इस रोज़ (क़यामत) के पेश आने से तुमको डरायें। वह अर्ज़ करेंगे, हम अपने ऊपर आप ही गवाही देते हैं (यानी अपने गुनाह का इक़रार करते हैं)। और (वाक़े में) दुनिया की ज़िन्दिगी ने उनको धोखे में रक्खा। और (अब) उन्होंने आप ही अपने ऊपर गवाही दी (यानी इक़रार किया) कि बेशक वह काफ़िर थे ० (ऐ पैग़म्बर ! पैग़म्बरों को भेज भेज कर बन्दों पर हुज्जत का तमाम करना) यह इस सबब से है कि तुम्हारा पर्वर्दिगार बस्तियों को ज़ुल्म (व ज़बर्दस्ती) से हलाक करने वाला नहीं (कि इधर इनको हलाक कर मारे) और (इधर) वहाँ के रहने वाले (ख़ुदा के मन्शा से) बे ख़बर हों ० और जैसे जैसे अमल किये हैं, उन्हीं (अमलों) की रू से सब (लोगों) के दर्जे होंगे। और जो कुछ (लोग दुनिया में) कर रहे हैं, तुम्हारा पर्वर्दिगार उससे बे ख़बर नहीं ० और (नीज़) तुम्हारा पर्वर्दिगार बेनियाज़ (और) रहम वाला है। अगर चाहे तुम (सब) को (दुनिया से उठा) ले जाय और तुम्हारे बाद जिसको चाहे, तुम्हारा जा नशीन बनाए; जैसा कि दूसरे लोगों की नस्ल में से (आख़िर) तुमको पैदा कर ही चुका है ० (लोगो !) जिस (रोज़ क़यामत) का तुम लोगों से वादा किया जाता है—

निस्सन्देह हम में से बाज़ ने बाज़ से (बहका सिखाकर सांसारिक) लाभ प्राप्त किया (और) हम (ने निस्सन्देह प्रलय से इन्कार किया था)। तेरी आज्ञा के अनुसार उस (अवधि) तक पहुँच गये, जिसे तूने हमारे लिये नियुक्त किया था। (अब तू मालिक है, जो चाहे कर)। अल्लाह कहेगा (कि) तुम्हारे रहने सहने की जगह आग है। तुम उसमें सदैव रहोगे-लेकिन अल्लाह ने चाहा, तो तुम्हें आग में से निकाल कर बड़ी ठंडक में डाल देगा। निस्सन्देह (ऐ रसूल !) तुम्हारा पालन कर्त्ता हिक्मत वाला है (और सबके हाल से) अभिज्ञ है॥

(जिस तरह अल्लाह के प्राणियों को गुमराह करने में ऐ शैतानो। तुम संगठित थे। उसी तरह हम भी तुम्हारी करतूतों की सज़ा में (तुम में से) बाज़ (को नर्क में) बाज़ से मिलाकर रक्खेंगे॥

(प्रलय के दिन अल्लाह तुमसे पूछ गछ करेगा कि) ऐ जिनों व इन्सानों के समूह ! क्या तुम्हारे पास तुम ही में के पैग़म्बर नहीं आये ? जो तुमसे मेरी आज्ञायें बयान करते और उस (प्रलय) के दिन (और उसके अज़ाब) के पेश आने से तुम्हें ख़ौफ़ दिलाते थे॥

वह विनय करेंगे (कि ऐ अल्लाह !) हम अपने ख़िलाफ़ ख़ुद ही गवाही देते हैं (और अपने अपराध का इक़रार करते हैं)॥

और (बात यह है कि) उन्हें संसार की (थोड़े दिन की) ज़िन्दगी ने भुलावे में डाल दिया था (कि ख़ुदा के हुक्मों की पर्वाह नहीं की। इस लिये उन्हें ख़ुद अपने ख़िलाफ़ इस (बात) की गवाही देनी पड़ी कि वह काफ़िर थे॥

(और इतना न ख़याल किया कि) यह (अर्थात् नबियों को भेजना) इस (ही) प्रयोजन से है (कि) तुम्हारा पालन कर्त्ता बस्तियों को (बस्ती वालों के) ज़ुल्म (व कुफ़्र व शिर्क) के कारण ऐसी हालत में हलाक नहीं करता (कि) उनके बाशिन्दे (नबियों के आने से) बे ख़बर हों॥

और (ऐ नबी ! अल्लाह तआला ने) प्रत्येक मनुष्य के कर्मानुसार दर्जे (नियत कर दिये) हैं॥ और तुम्हारा पालन कर्त्ता उन (लोगों में से किसी भले या बुरे) के कर्मों से बे ख़बर नहीं है॥ और (ऐ रसूल !) तुम्हारा पालन कर्त्ता इच्छा रहित है। कृपा (व दया) वाला है॥

यदि वह चाहे, तो तुमको (इस दुनिया से एक दम उठा) ले जाय (और अपनी शक्ति का चमत्कार दिखादे)। और तुम्हारे पश्चात् (तुम्हारा) क़ायम मुक़ाम जिसको चाहे (इस संसार में) बनादे; जैसा कि पिछली (दुराचरण करने वाली) जातियों (को पृथ्वी से मिटाकर उन) के वंश से तुमको पैदा कर (दिखाया और उनका तुमको उत्तराधिकारी बना) दिया॥

यक़ीन जानो (कि) जिस (प्रलय के आने) का वादा किया जा रहा है, वह अवश्य आने वाला है—

कुछ शक नहीं कि वह ज़रूर आने वाला है। और तुम (ख़ुदा को इस बात पर) मजबूर नहीं कर सकते (कि क़यामत को वाक़े न होने दें)० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि भाइयो ! तुम अपनी जगह अमल करो; मैं (अपनी जगह) अमल कर रहा हूँ। फिर आगे चल कर तुमको मालूम हो जायगा० कि आख़िरकार किसका अन्जाम बख़ैर है। (मगर हाँ) इसमें तो कुछ भी शक नहीं कि ज़ालिम तो किसी तरह फ़लाह पाने के नहीं ० और (यह काफ़िर) ख़ुदा की पैदा की हुई खेती (और उसी के पैदा किये हुये) चौपायों में अल्लाह का भी एक हिस्सा ठहराते हैं, तो अपने ख़याल के मुताबिक़ कहते (क्या) हैं कि इतना तो ख़ुदा का, और इतना हमारे शरीकों का। (यानी उन माबूदों का, जिनको हमने शरीक ख़ुदाई मान रक्खा है)। फिर (इनका बर्ताव यह होता है कि) जो (हिस्सा) उनके (ठहराये हुये) शरीकों का होता है, वह (तो) अल्लाह की तरफ़ पहुँचता नहीं और जो (हिस्सा) अल्लाह का होता है, वह इनके (ठहराये हुये) शरीकों को पहुँच जाता है। (क्या ही) बुरा हुक्म (तक़सीम) है, जो यह लोग लगाते हैं ० और इसी तरह बहुतेरे मुश्रिकीन को उनके (बनाए हुए) शरीकों ने उनके अपने बच्चे मार डालने को (उनकी नज़रों में) उम्दा कर दिखाया है, ताकि (आख़िरकार) उनको (अबदी) हलाकत में डाल दें और ताकि उनके दीन को उन पर मुश्तबह कर दें (कि सीधा रस्ता सुझाई न दे)। और ख़ुदा चाहता, तो यह लोग यह(बेरहमी का काम) न करते। तो (ऐ पैग़म्बर !) इनको और इनकी इफ़तरा पर्दाज़ियों को (अल्लाह पर) छोड़ दो (वह उनसे समझ लेगा)० और (यह लोग यह भी) कहा करते हैं कि (हमारे चारपायों और खेतों में से) फ़लाने चारपाए और (फ़लानी)खेती अछूती (चीज़ें) हैं कि इनको उस शख़्स के सिवा,जिसको हम अपने ख़याल के मुताबिक़ चाहें (दूसरा) नहीं खा सकता। और (कुछ) चारपाए (ऐसे) है कि उनकी पीठ (पर सवार होना या लादना) मना है—

لَاٰتٍ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى
مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ مَنْ
تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ
وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ
نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا
لِشُرَكَآئِنَا فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ
اِلَى اللّٰهِ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ
سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ
مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ
لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ وَلَوْ شَآءَ
اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا
هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ
نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا

और तुम (किसी शक्ति और किसी उपाय से हमें) आधीन नहीं कर सकते। (जहाँ जाओगे, मौत तुम्हारी जान पर सवार रहेगी और मरने के पश्चात तुम्हें हिसाब व किताब देना पड़ेगा और अपनी करतूतों का मज़ा चखना पड़ेगा) ॥

(ऐ रसूल ! इस क़दर समझाने के बाद भी यह सदैव के काफ़िर न समझें, तो तुम उनसे एक अन्तिम बात) कह दो (कि) ऐ लोगो ! तुम अपनी जगह (और अपनी अक़्ल) पर अमल करो। निस्सन्देह मैं (भी जिन हिदायतों को अमल करने योग्य ख़याल करता हूँ, उनके) अनुसार कार्य कर रहा हूँ। तुम बहुत जल्द (मरने के बाद ही) मालूम कर लोगे (कि) मर्णान्ति में परिणाम किसका बेहतर हुआ ॥

(और तुम समझो, तो अब भी यह प्रकाश पूर्ण दिवस के समान प्रकट है और इसमें ज़रा भी) सन्देह नहीं (है) कि (तुम जैसे अन्यायी और) ज़ालिम भलाई नहीं पा सकते (और प्रलय में तुम्हारा परिणाम अच्छा नहीं हो सकता) ॥

और (ऐ रसूल !) उन्होंने अल्लाह के पैदा किये हुए बैल भैंस आदि पशुओं और खेती में से (कुछ) हिस्सा अल्लाह के लिये नियत कर रक्खा है (और कुछ हिस्सा बुतों के नाम का नियुक्त कर रक्खा है और) फिर अपनी (बुरी) कल्पना (के आधार) पर कहते हैं कि (इन पशुओं और खेती में से) इतना अल्लाह का है और इतना हमारे शरीकों (अर्थात बुतों) का है। (जो उनके विचार से ख़ुदा की ख़ुदाई में शरीक हैं)। फिर (इस बराबर की तक़सीम के बाद) जो (जानवर या खेत) उनके शरीकों (अर्थात बुतों के हिस्से) का हो (और ख़ुदा के हिस्से में संयोग से मिल गया हो) तो (उसे तो निकाल कर बुतों के हिस्से में शामिल कर देते हैं और कहते हैं कि) वह (अल्लाह के हिस्से में शामिल नहीं किया जा सकता और) अल्लाह को नहीं पहुँच सकता। और जो (जानवर या खेत) अल्लाह (के हिस्से) का (संयोग से बुतों के हिस्से में जा मिला) हो, तो वह उनके शरीकों (अर्थात बुतों के हिस्से में शामिल हो सकता है और उन) को वह पहुँच सकता है। यह (तरह तरह की प्रथायें घड़ने वाले काफ़िर) जो (फ़ैसला और) न्याय करते हैं, वह कितना बुरा (और अक़्ल व हिकमत से कितना दूर) है (कि एक आधीन वस्तु को महान और शक्ति शाली ख़ुदा के बराबर समझ लिया-बल्कि ख़ुदा से इन निर्जीव व विवश बुतों को श्रेष्ठ ठहराया) ॥

और (जिस तरह पिछली अनुचित प्रथायें इन्हें अच्छी मालूम होती हैं) इसी तरह बहुत से मुश्रिकों के विचार में उनके (ख़ुद बनाये हुए) शरीकों ने (निर्धनता की दशा में) अपनी सन्तान को मार डालने (के कार्य) को प्रिय बना दिया। (और यह मूर्ख और अज्ञान अपनी जीती जागती बच्चियों को उनके बहकाने में आकर मौत के घाट उतारने लगे। और यह न समझे कि) वह उन्हें बरबाद करने के लिये (और उनका वंश मिटाने के लिये) और उनके (इब्राहीम के) धर्म को (भ्रमात्मक और) सन्देहात्मक करने के लिये (बहकाते और ग़लत सलत बातें बनाते हैं) ॥

और अगर अल्लाह तआला चाहें, तो यह (शैतान अर्थात् इनके सहयोगी) ऐसा न कर सकें (और किसी को न बहका सकें, परन्तु इस में उसकी कोई युक्ताधकता छिपी हुई है)। इस लिये तुम (भी ऐ रसूल !) इनको और इनके झूठी बात बनाने (के विचार) को छोड़ो (और शोक न करो। वह इनसे ख़ुद समझ लेगा) ॥

(पिछली बुरी प्रथाओं की तरह यह मुश्रिक लोग कुछ जानवर और खेत अपने बनाये हुए शरीकों और पूज्यों के नाम वक़्फ़ अर्थात संकल्प कर देते हैं)। और अपने (ख़राब) विचारों से (उनमें से कुछ के विषय में) कहते हैं (कि) यह (अछूते) जानवर और अछूती खेती है। उन (जानवरों और उस खेती) को कोई नहीं खा सकता-उस (मनुष्य) के अतिरिक्त, जिसे हम (खिलाना) चाहें। और (उन में से कुछ के विषय में कहते हैं, कि यह ऐसे) जानवर हैं, जिनकी पीठ (सवारी और बोझ ढोने के लिये ना जायज़ और) हराम करदी गई है

وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً
عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِم بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ وَقَالُوا
مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَ
مُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۖ وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ
شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝
قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۚ قَدْ
ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ
مَّعْرُوشَاتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ
مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا
وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ كُلُوا مِن ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا
حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۖ وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
الْمُسْرِفِينَ ۝ وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا

और (कुछ) चारपाए (ऐसे) हैं, जिन (को ज़िबह करते वक़् उन) पर अल्लाह का नाम नहीं लेते (और उन ढकोसलों को, जो ख़ुदा की तरफ़ मन्सूब करते हैं, तो) ख़ुदा पर (यह इनकी) इफ़्तरा पर्दाज़ियाँ हैं। (सो) जैसी जैसी इफ़्तरा पर्दाज़ियाँ यह लोग करते रहे हैं, अन्क़रीब ख़ुदा इनको उनकी सज़ा देगा ० और (यह भी) कहा करते हैं कि (हमने जो बुतों के नाम चारपाए छोड़ रक्खे हैं) इन चारपायों के पेट में (से) जो (बच्चा निकले और उस में जान) हो, निरा हमारे मर्दों के (खाने के) लिये है और हमारी औरतों पर (उसका खाना) हराम है। और अगर मरा हुआ हो, तो मर्द व औरत (सब) उस (के खाने) में शरीक। (सो) ख़ुदा इनको अन्क़रीब इनकी इन बातों की सज़ा देगा। बेशक वह हिकमत वाला बा ख़बर है ० बेशक वह लोग (बड़े ही) घाटे में हैं, जिन्होंने बद अक़्ली से बराह नादानी अपने बच्चों को मार डाला। और अल्लाह ने जो रोज़ी उनको दी थी, ख़ुदा पर झूठ झूठ बोहतान बाँध कर उसको (अपने ऊपर) हराम कर लिया। बिला शुबहा यह लोग (राह रास्त से) भटक गए और सीधे रस्ते पर आने वाले थे भी नहीं ० और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने बाग़ पैदा किये। (बाज़ तो टट्टियों पर) चढ़ाए हुए (जैसे अंगूर की बेलें) और (बाज़) नहीं चढ़ाये हुए। और खजूर के दरख़्त और खेती, जिनके फल (मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के) होते हैं। और ज़ैतून और अनार (कि बाज़ तो सूरत शक्ल मज़े में) एक दूसरे से मिल्ते जुल्ते (हैं) और (बाज़) नहीं (भी) मिल्ते जुल्ते। (लोगो !) यह सब चीज़ें जब फलें-इनके फल (बे तअम्मुल) खाओ और (इन नेअमतों के शुक्रिये में) इनके काटने (और तोड़ने) के दिन हक़ कुल्लाह (यानी ज़कात उसमें से) दे दिया करो। और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो, क्योंकि फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वालों को ख़ुदा पसन्द नहीं करता ० और (उसी ख़ुदा ने) चार पायों में (बाज़ बुलन्द क़ामत) बोझ उठाने वाले (पैदा किये; जैसे मसलन ऊँट)। और (बाज़) ज़मीन से लगे हुए—

और (इन में से कुछ जानवरों के बारे में कहते हैं कि यह ऐसे) जानवर हैं, जिन पर (बध करते समय अल्लाह का नाम न लेना चाहिये। अतएव अपने विश्वास के अनुसार) यह लोग (जब इन्हें बध करते हैं, तो) अल्लाह का नाम नहीं लेते। (और यह सब बातें) अल्लाह पर झूठ बोहतान लगाकर (कहते हैं)। वह इन्हें अभी (मरने के बाद ही) इनके झूठी बात बनाने की (काफ़ी) सज़ा देगा ॥

और जो (कुछ) उन (उपरोक्त) जानवरों के पेट में है, (उसके विषय में यह काफ़िर कहते हैं कि वह) केवल हमारे मर्दों के (उपयोग करने के) लिये (हलाल) हैं और हमारी स्त्रियों पर (इस बच्चे से किसी प्रकार का फ़ायदा उठाना) हराम कर दिया गया है ॥

और अगर वह (बच्चा) मरा हुआ (पैदा) हो, तो उस (से लाभ उठाने) में वह सब (मर्द औरत समान रूप से) शरीक हैं। (इन काफ़िरों की यह सब मन घड़न्त बातें हैं)। अल्लाह तआला शीघ्र इन्हें इनकी (बेहदा रस्मों और) झूठ बोलने की सज़ा देगा। वह निस्सन्देह बुद्धिमान (और इन पापियों की करतूतों का) जानने वाला है ॥

(संक्षिप्त यह है कि) उन (मूर्ख मुश्रिक) लोगों ने निश्चत रूप से नुक़सान उठाया, जिन्होंने बेजाने बूझे मूर्खता से अपनी सन्तान को मार डाला। और जो भोजन अल्लाह ने उन्हें दिया, उसे उस पर दोष लगा कर हराम कर लिया। निस्सन्देह यह लोग भटक गये और सीधी राह पर न आये ॥

और वह-वह (मानता व महिमा वाला ख़ुदा) है (जिसने ऐसे ऐसे मेवों के) बाग़ (भी लगा दिये और चमन) पैदा कर दिये, जो टट्टियों पर चढ़ाये जाते हैं (जैसे अंगूर)। और (ऐसे ऐसे फलों के बाग़ भी लगाये) जो टट्टियों पर नहीं चढ़ाये जाते (जैसे ख़रबूज़ा, तरबूज़ आदि) ॥

और (तनेदार पेड़ों को; जैसे) खजूर (और तरह तरह की तरकारियों के) खेत (पैदा किये) जो (फलों और स्वाद को दृष्टि से) कई तरह के होते हैं ॥

और (उसने) ज़ैतून और अनार (के पेड़ पैदा किये) जो (पत्तों के लिहाज़ से आपस में एक दूसरे के) समान रूप (हैं और स्वाद में) अलग अलग (हैं) ॥

(और ऐ लोगो !) जब यह (बाग़ अर्थात् उनके पेड़) फल लायें, (तो) तुम उनके फल (जितने जी चाहे; बेखटके) खाओ। और उनके काटने के दिन उनके (उस) हक़ को अदा करदो (जिसे तुम पर ख़ुदा ने आवश्यक ठहरा दिया है, अर्थात ज़कात आदि) और (तुम्हें समझा दिया कि) अपव्यय न करो। अल्लाह निस्सन्देह अपव्यय करने वालों (और सीमा से बढ़ने वालों) को (किसी मामले में भी) पसन्द नहीं करता ॥

और (उसने तुम्हारे आराम के लिये) जानवरों में से (कुछ बड़े और मज़बूत) बोझ ढोने वाले (जानवर पैदा किये) और (कुछ ऐसे कि छोटा होने के कारण) ज़मीन से लगे हुये (हैं) ॥

كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۙ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ
مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ
آٰلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ
عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۗ نَبِّئُوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۙ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ
اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آٰلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ
اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۗ اَمْ
كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ
مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ
قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ
يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا

(जो नहीं लादे जाते; जैसे मसलन भेड़ बकरी । लोगो !) ख़ुदा ने जो तुम को रोज़ी दी है, उसमें से (वे तअम्मुल) खाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो, क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है ० (ख़ुदा ने यह चार-पाए नर व मादा) आठ क़िस्म (के पैदा किये हैं)। भेड़ों में से (नर व मादा) दो, और बकरियों में से (नर व मादा) दो । (अब ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि ख़ुदा ने (भेड़ बकरी के) दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को? या वह (बच्चा) जिसको (इन) दो मादीनों के पेट अपने अन्दर लिये हुए हैं । अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो, तो (मुझको इसकी) सनद बताओ ० और ऊँटों (में) से (नर व मादा) दो, और गाय (की क़िस्म में) से (नर व मादा) दो। (अब ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि (ख़ुदा ने ऊँट गाय के) दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को? या वह (बच्चा) जिसको (इन) दो मादीनों के पेट अपने अन्दर लिये हुये हैं? या जिस वक़् ख़ुदा ने तुमको इन चीज़ों के हराम कर देने का हुक्म दिया था, उस वक़् तुम (ख़ुद) मौजूद थे । तो उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम (और) कौन होगा, जो लोगों के गुमराह करने के लिये बे समझे बूझे ख़ुदा पर बोहतान बांधे ? बेशक ख़ुदा सर्कश लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि कोई खाने वाला (इन चीज़ों में से, जिनको तुम हराम कहते हो) कुछ खाले, तो मेरी तरफ़ जो वही आई है, उसमें तो मैं उस पर कोई चीज़ हराम पाता नहीं । मगर यह कि वह चीज़ मुर्दार हो या बहता हुआ ख़ून—

(और तुमसे कह दिया कि) अल्लाह ने (अपनी कृपा से) जो कुछ तुमको प्रदान किया (है और जिन जानवरों या फलों को तुम्हारे लिये हलाल कर दिया, उन्हें हलाल समझो । और) उनमें से (जिस फल या जानवर को तबीअत चाहे) खाओ । और (बहकाने वाले) शैतान के अनुयायी न बनो (क्योंकि) वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है ॥

(परन्तु तुमने शैतान के बहकाने से जिन जानवरों को अपने ऊपर हराम किया, तो बताओ ! इस प्रकार के अल्लाह ने) आठ नर व मादा (पैदा किये) हैं । भेड़ें-दो (अर्थात् एक नर, एक मादा) और बकरी (की क़िस्म में) से-दो (एक नर, एक मादा) ॥

(ऐ नबी ! इन मूर्खों से) कहो (कि पशुओं के इन जोड़ों में से) क्या अल्लाह ने दोनों नरों को हराम किया है या दोनों मादीनों को ? या वह (बच्चा हराम किया है) जिसे (इन) दोनों मादीनों (भेड़ बकरी) के पेट ने (अपने भीतर रख) रक्खा हो ॥(अब) अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो, (तो) प्रमाण सहित (उत्तर) बयान करो ॥

और (ऐ नबी ! यदि यह झूठे कोई सबूत नहीं दे सके, तो अल्लाह ने) ऊंट (की क़िस्म में) से दो-(एक नर और एक मादा पैदा किए हैं)। और दो गाय (भैंस की क़िस्म में) से-(एक नर, एक मादा पैदा किए हैं । इनसे इनके विषय में पूछो और) कहो (कि इन दोनों जोड़ों में से) क्या अल्लाह ने दोनों नरों को हराम किया है? या दोनों मादीनों को ? (या वह बच्चा हराम किया है) जिसे (इन) दोनों मादीनों के पेट ने (अपने भीतर रख) रक्खा हो ॥

(ऐ नबी ! इन मूर्खों से पूछो) क्या उस समय तुम (स्वयं ख़ुदा के सामने) मौजूद थे, जिस समय पवित्र अल्लाह इस (हराम वस्तु विषयक आज्ञा) को बयान कर रहा था ॥

तो भला उस (मनुष्य) से अधिक अत्याचारी (और पापी) कौन हो सकता है, जो ख़ुदा (की व्यक्ति) पर झूठ दोषारोपण करे (और मन घड़न्त बातों को उसके नाम लगावे) ताकि लोगों को बिना किसी जांच के बहकाए । ऐसे मक्कारों और अत्याचारियों को अल्लाह (पवित्र) हिदायत से बिल्कुल वञ्चित रक्खेगा ॥

(ऐ नबी ! इन काफ़िरों से) कहदो (कि तुम्हारी हराम की हुई वस्तुओं की सूचना पहले मुझको मिलनी चाहिये थी । परन्तु) मैं (तो) जो ख़ुदाई वही मेरी ओर भेजी गई (और जो पूर्ण विधान मुझे प्रदान किया गया है अर्थात् क़ुरआन) उसमें (तुम्हारे हराम ठहराये हुए खेतों और जानवरों में से किसी को भी किसी खाने वाले (मर्द या खाने वाली औरत) पर-जो (भी) उसे खाले, हराम नहीं पाता ॥

(बल्कि उसमें तो अल्लाह तआला तुम्हारे ख़िलाफ़ आज्ञा देता है और फ़र्माता है कि) सिवा मुर्दार (जानवर) या बहते हुए ख़ून—

या सुअर का गोश्त कि यह चीज़ें बेशक नापाक हैं। या (वह जानवर) मूजिब ना फ़र्मानी हो कि .खुदा के सिवा किसी दूसरे के लिये (ज़िबह और) नाम ज़द किया गया हो। इस पर भी जो शख़्स (भूख से) लाचार (हो और) ना फ़र्मानी का इरादा न रखता हो और न (हद्द ज़रूरत से) तजावुज़ करने वाला हो (और वह इन नापाक चीज़ों में से कुछ खाले) तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार बेशक बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और यहूदियों पर हमने तमाम नाख़ुन वाले जानवरों को हराम कर दिया था और (नीज़) हमने गाय और बकरियों में से उन दोनों की चर्बियों को उन पर हराम कर दिया था, मगर वह (चर्बी) जो उनकी पीठ पर लगी हो या अँतड़ियों पर या हड्डी से मिली हो (वह हलाल थी। इस क़ैद के लगा देने से) यह हमने उन को उनकी सर्कशी की सज़ा दी थी (कि उन पर दाइरए रिज़्क़ तङ्ग हो)। और हम बेशक सच फ़र्माते हैं ० (ऐ पैग़म्बर !) अगर इस पर भी यह लोग तुम को झुठलायें, तो (इनसे) कहो कि तुम्हारा पर्वर्दिगार (बड़ी) वसीअ़ रह्मत वाला है और (इसी वजह से अब तक तुम पर अज़ाब नाज़िल नहीं हुआ, मगर तावकै)। गुनहगार लोगों से उसका अज़ाब (हमेशा के लिये तो) टलने वाला है नहीं ० मुश्रिकीन से कुछ बईद नहीं कि यह हुज्जत पेश करें कि अगर .खुदा चाहता, तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप (दादा ऐसा करते) और न हम किसी (हलाल) चीज़ को (अज़ .खुद अपने ऊपर) हराम करते। इसी तरह जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं (पैग़म्बरों को) झुठलाते रहे। यहाँ तक कि (आख़िरकार) हमारे अज़ाब का मज़ा चक्खा (पर चक्खा। ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि आया तुम्हारे पास कोई (किताबी) सनद भी है कि उसको हमारे (दिखाने के) लिये निकालो (और पेश करो। सनद तो तुम्हारे पास कुछ है नहीं)-निरे वाहिमों पर चलते और निरी अटकलें ही दौड़ाते हो ० (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो (कि तुम हारे और) अल्लाह की हुज्जत (तुम पर) तमाम हुई—

أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ
اللَّهِ بِهِ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ● وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ
ذِي ظُفُرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ
شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا
أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُم بِبَغْيِهِمْ
وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ● فَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل رَّبُّكُمْ
ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِينَ ● سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ
اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن شَيْءٍ
كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا
قُلْ هَلْ عِندَكُم مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا إِن تَتَّبِعُونَ
إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ● قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ

الْبَالِغَةُ

या सुअर के गोश्त (या दरिन्दे या पंजों से शिकार करने वाले परिन्दे) के (और कोई खेत या जानवर हराम नहीं। और यह वस्तुवें भी इस लिये हराम की गई हैं) कि वह बिल्कुल अपवित्र हैं॥

या (उस जानवर का खाना) पाप का कारण है, जो .खुदा के सिवा और किसी के नाम लगाया गया हो। (अर्थात् जो .खुदा के अतिरिक्त किसी और के नाम पर छोड़ा गया हो और जिस पर बध करते समय किसी बुत का नाम पढ़ा गया हो)॥

फिर (इसमें भी आसानी करदी और फ़र्मा दिया कि) जो (मनुष्य भूख के मारे) व्याकुल हो, (बशर्ते कि) अवज्ञाकारी (व विद्रोही) न हो और न (उचित सीमा से) बढ़ने वाला हो, तो (आवश्यकतानुसार खा ले, तो कुछ पाप नहीं। ऐ नबी !) वास्तव में तुम्हारा पालन कर्त्ता बहुत क्षमा करने वाला (और) दयालु है॥

और हमने यहूदियों पर प्रत्येक ना.खून वाले जानवर को हराम कर दिया (था)॥ और गाय बकरी (में) से उन पर(केवल) उनकी चर्बी को हमने हराम कर दिया (था)॥ मगर वह (चर्बी) जो उनकी पीठ या अँतड़ियों से लगी हुई हो, या जो हड्डी से मिली हुई होती है (हलाल थी)॥ (मगर) यह हमने उनकी शरारत (और बुरे कर्मों) का उन्हें बदला दिया (था)। और वास्तव में हम सच कहते हैं,(कि उनका उन चीज़ों को अब हराम समझना सही नहीं है)॥

यदि फिर (भी ऐ नबी !) यह (मूर्ख और टेढ़ी तर्क करने वाले लोग) तुमको झूठा बतायें, तो तुम (उनसे) कहो (कि) तुम्हारा पालन कर्त्ता बड़ी मेहर्बानी (व कृपा करने) वाला है (जो तुम जैसे कट्टर काफ़िरों को सज़ा देने में देर लगा रहा है)॥ (मगर यह याद रक्खो कि तुम सज़ा से बच नहीं सकते) और उसका अज़ाब (तुम जैसे महान) पापी लोगों (के सिर) से टल नहीं सकता॥

(ऐ रसूल ! हम भविष्य वाणी करते हैं कि) अब मुश्रिक (अपने स्वभावानुसार अल्लाह की मर्ज़ी का झगड़ा निकालेंगे और) कहेंगे(कि) अगर अल्लाह चाहता (और हमारी शिर्क-पूर्ण प्रथाओं को पसन्द न करता, तो उसकी .खुदाई में) न हम (किसी को) शरीक कर सक्ते और न हमारे बाप (दादा)। और न हम (उपर्युक्त वस्तुओं में से) कोई चीज़ (अपने ऊपर) हराम कर सकते॥

(ऐ रसूल !) इसी तरह (उनके पूर्वज) जो उनसे पहिले हो चुके हैं, उन्हों ने (सदैव पैग़म्बरों को) झूठा ठहराया। यहां तक कि उन्होंने हमारे अज़ाब का मज़ा चक्खा (और इसी संसार में हलाक व बरबाद हो गये)॥

(ऐ रसूल !) तुम (उनसे) कहो (कि) क्या तुम्हारे पास कोई (पुस्तकीय) दलील (भी) है ? (कि) जिसे तुम हमारे (सामने अपना दावा साबित करने के) लिये (पेश कर सको और) प्रकट करो। (किताबी दलील तुम्हारे पास क्या होगी) तुम लोग (तो केवल बुरे) गुमान के ताबेदार और असत् विचार के अनुयायी हो॥

(ऐ रसूल !) तुम (उनसे) कहदो (कि) अल्लाह ही का(प्रमाण पूरा हुआ और) दलील मज़बूत रही—

لَاٰتٍ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى
مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ مَنْ
تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ
وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ
نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا
لِشُرَكَاۗىِٕنَا فَمَا كَانَ لِشُرَكَاۗىِٕهِمْ فَلَا يَصِلُ
اِلَى اللّٰهِ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَاۗىِٕهِمْ
سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ
مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَاۗؤُهُمْ
لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ وَلَوْ شَاۗءَ
اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا
هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ
نَّشَاۗءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا

कुछ शक नहीं कि वह ज़रूर आने वाला है। और तुम (.खुदा को इस बात पर) मज्बूर नहीं कर सकते (कि क़यामत को वाक़े न होने दे)० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि भाइयो ! तुम अपनी जगह अमल करो; मैं (अपनी जगह) अमल कर रहा हूँ। फिर आगे चल कर तुमको मालूम हो जायगा० कि आख़िरकार किसका अन्जाम बख़ैर है। (मगर हाँ) इसमें तो कुछ भी शक नहीं कि ज़ालिम तो किसी तरह फ़लाह पाने के नहीं ० और (यह काफ़िर) .खुदा की पैदा की हुई खेती (और उसी के पैदा किये हुये) चौपायों में अल्लाह का भी एक हिस्सा ठहराते हैं, तो अपने ख़याल के मुताबिक़ कहते (क्या) हैं कि इतना तो .खुदा का, और इतना हमारे शरीकों का। (यानी उन माबूदों का, जिनको हमने शरीक .खुदाई मान रक्खा है)। फिर (इनका बर्ताव यह होता है कि) जो (हिस्सा) उनके (ठहराये हुये) शरीकों का होता है, वह (तो) अल्लाह की तरफ़ पहुँचता नहीं और जो (हिस्सा) अल्लाह का होता है, वह इनके (ठहराये हुये) शरीकों को पहुँच जाता है। (क्या ही) बुरा हुक्म (तक़सीम) है, जो यह लोग लगाते हैं ० और इसी तरह बहुतेरे मुश्रिकीन को उनके (बनाए हुए) शरीकों ने उनके अपने बच्चे मार डालने को (उनकी नज़रों में) उम्दा कर दिखाया है, ताकि (आख़िरकार) उनको (अबदी) हलाकत में डाल दें और ताकि उनके दीन को उन पर मुश्तबह कर दें (कि सीधा रस्ता सुझाई न दे)। और .खुदा चाहता, तो यह लोग यह(बेरह्मी का काम) न करते। तो (ऐ पैग़म्बर !) इनको और इनकी इफ़तरा पर्दाज़ियों को (अल्लाह पर) छोड़ दो (वह उनसे समझ लेगा)० और (यह लोग यह भी) कहा करते हैं कि (हमारे चारपायों और खेतों में से) फ़लाने चारपाए और (फ़लानी)खेती अछूती (चीज़ें) हैं कि इनको उस शख़्स के सिवा,जिसको हम अपने ख़याल के मुताबिक़ चाहें (दूसरा) नहीं खा सकता। और (कुछ) चार-पाए (ऐसे) है कि उनकी पीठ (पर सवार होना या लादना) मना है—

और तुम (किसी शक्ति और किसी उपाय से हमें) आधीन नहीं कर सकते। (जहाँ जाओगे, मौत तुम्हारी जान पर सवार रहेगी और मरने के पश्चात तुम्हें हिसाब व किताब देना पड़ेगा और अपनी करतूतों का मज़ा चखना पड़ेगा) ॥

(ऐ रसूल ! इस क़दर समझाने के बाद भी यह सदैव के काफ़िर न समझें, तो तुम उनसे एक अन्तिम बात) कह दो (कि) ऐ लोगो ! तुम अपनी जगह (और अपनी अक़्ल) पर अमल करो। निस्सन्देह मैं (भी जिन हिदायतों को अमल करने योग्य ख़याल करता हूँ, उनके) अनुसार कार्य कर रहा हूँ। तुम बहुत जल्द (मरने के बाद ही) मालूम कर लोगे (कि) मर्णान्ति में परिणाम किसका बेहतर हुआ ॥

(और तुम समझो, तो अब भी यह प्रकाश पूर्ण दिवस के समान प्रकट है और इसमें ज़रा भी) सन्देह नहीं (है) कि (तुम जैसे अन्यायी और) ज़ालिम भलाई नहीं पा सकते (और प्रलय में तुम्हारा परिणाम अच्छा नहीं हो सकता) ॥

और (ऐ रसूल !) उन्होंने अल्लाह के पैदा किये हुए बैल भैंस आदि पशुओं और खेती में से (कुछ) हिस्सा अल्लाह के लिये नियत कर रक्खा है (और कुछ हिस्सा बुतों के नाम का नियुक्त कर रक्खा है और) फिर अपनी (बुरी) कल्पना (के आधार) पर कहते हैं कि (इन पशुओं और खेती में से) इतना अल्लाह का है और इतना हमारे शरीकों (अर्थात् बुतों) का है। (जो उनके विचार से .खुदा की .खुदाई में शरीक हैं)। फिर (इस बराबर की तक़सीम के बाद) जो (जानवर या खेत) उनके शरीकों (अर्थात बुतों के हिस्से) का हो (और .खुदा के हिस्से में संयोग से मिल गया हो) तो (उसे तो निकाल कर बुतों के हिस्से में शामिल कर देते हैं और कहते हैं कि) वह (अल्लाह के हिस्से में शामिल नहीं किया जा सकता और) अल्लाह को नहीं पहुँच सकता। और जो (जानवर या खेत) अल्लाह (के हिस्से) का (संयोग से बुतों के हिस्से में जा मिला) हो, तो वह उनके शरीकों (अर्थात बुतों के हिस्से में शामिल हो सकता है और उन) को वह पहुँच सकता है। यह (तरह तरह की प्रथायें घड़ने वाले काफ़िर) जो (फ़ैसला और) न्याय करते हैं, वह कितना बुरा (और अक़्ल व हिकमत से कितना दूर) है (कि एक आधीन वस्तु को महान और शक्ति शाली .खुदा के बराबर समझ लिया-बल्कि .खुदा से इन निर्जीव व विवश बुतों को श्रेष्ठ ठहराया) ॥

और (जिस तरह पिछली अनुचित प्रथायें इन्हें अच्छी मालूम होती हैं) इसी तरह बहुत से मुश्रिकों के विचार में उनके (.खुद बनाये हुए) शरीकों ने (निर्धनता की दशा में) अपनी सन्तान को मार डालने (के कार्य) को प्रिय बना दिया। (और यह मूर्ख और अज्ञान अपनी जीती जागती बच्चियों को उनके बहकाने में आकर मौत के घाट उतारने लगे। और यह न समझे कि) वह उन्हें बरबाद करने के लिये (और उनका वंश मिटाने के लिये) और उनके (इब्राहीम के) धर्म को (भ्रमात्मक और) सन्देहात्मक करने के लिये (बहकाते और ग़लत सलत बातें बताते हैं) ॥

और अगर अल्लाह तआ़ला चाहे, तो यह (शैतान अर्थात् इनके सहयोगी) ऐसा न कर सकें (और किसी को न बहका सकें, परन्तु इस में उसकी कोई सुसाधकता छिपी हुई है)। इस लिये तुम (भी ऐ रसूल !) इनको और इनके झूठी बात बनाने (के विचार) को छोड़ो (और शोक न करो। वह इनसे .खुद समझ लेगा) ॥

(पिछली बुरी प्रथाओं की तरह यह मुश्रिक लोग कुछ जानवर और खेत अपने बनाये हुए शरीकों और पूज्यों के नाम वक़्फ़ अर्थात संकल्प कर देते हैं)। और अपने (ख़राब) विचारों से (उनमें से कुछ के विषय में) कहते हैं (कि) यह (अछूते) जानवर और अछूती खेती है। उन (जानवरों और उस खेती) को कोई नहीं खा सकता-उस (मनुष्य) के अतिरिक्त, जिसे हम (खिलाना) चाहें। और (उन में से कुछ के विषय में कहते हैं, कि यह ऐसे) जानवर हैं, जिनकी पीठ (सवारी और बोझ ढोने के लिये ना जायज़ और) हराम करदी गई है-

وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً
عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا
مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَ
مُحَرَّمٌ عَلٰۤى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ
شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝
قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْۤا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًۢا بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ قَدْ
ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ
مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ
مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا
وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا
حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ
الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ؕ

और (कुछ) चारपाए (ऐसे) हैं, जिन (को ज़िबह करते वक़्त उन) पर अल्लाह का नाम नहीं लेते (और उन ढकोसलों को, जो ख़ुदा की तरफ़ मन्सूब करते हैं, तो) ख़ुदा पर (यह इनकी) इफ़्तरा पर्दाज़ियाँ हैं। (सो) जैसी जैसी इफ़्तरा पर्दाज़ियाँ यह लोग करते रहे हैं, अन्क़रीब ख़ुदा इनको उनकी सज़ा देगा ० और (यह भी) कहा करते हैं कि (हमने जो बुतों के नाम चारपाए छोड़ रक्खे हैं) इन चारपायों के पेट में (से) जो (बच्चा निकले और उस में जान) हो, निरा हमारे मरदों के (खाने के) लिये है और हमारी औरतों पर (उसका खाना) हराम है। और अगर मरा हुआ हो, तो मर्द व औरत (सब) उस (के खाने) में शरीक। (सो) ख़ुदा इनको अन्क़रीब इनकी इन बातों की सज़ा देगा। बेशक वह हिक्मत वाला बा ख़बर है ० बेशक वह लोग (बड़े ही) घाटे में हैं, जिन्होंने बद अक़्ली से बराह नादानी अपने बच्चों को मार डाला। और अल्लाह ने जो रोज़ी उनको दी थी, ख़ुदा पर झूठ झूठ बोहतान बाँध कर उसको (अपने ऊपर) हराम कर लिया। बिला शुबहा यह लोग (राह रास्त से) भटक गए और सीधे रस्ते पर आने वाले थे भी नहीं ० और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने बाग़ पैदा किये। (बाज़ तो टट्टियों पर) चढ़ाए हुए (जैसे अंगूर की बेलें) और (बाज़) नहीं चढ़ाये हुए। और खजूर के दरख़्त और खेती, जिनके फल (मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के) होते हैं। और ज़ैतून और अनार (कि बाज़ तो सूरत शक्ल मज़े में) एक दूसरे से मिलते जुलते (हैं) और (बाज़) नहीं (भी) मिलते जुलते। (लोगो !) यह सब चीज़ें जब फलें–इनके फल (बे तअम्मुल) खाओ और (इन नेअमतों के शुक्रिये में) इनके काटने (और तोड़ने) के दिन हक़ कुल्लाह (यानी ज़कात उसमें से) दे दिया करो। और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो, क्योंकि फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वालों को ख़ुदा पसन्द नहीं करता ० और (उसी ख़ुदा ने) चार पायों में (बाज़ बुलन्द क़ामत) बोझ उठाने वाले (पैदा किये; जैसे मसलन ऊँट)। और (बाज़) ज़मीन से लगे हुए—

और (इन में से कुछ जानवरों के बारे में कहते हैं कि यह ऐसे) जानवर हैं, जिन पर (बध करते समय अल्लाह का नाम न लेना चाहिये। अतएव अपने विश्वास के अनुसार) यह लोग (जब इन्हें बध करते हैं, तो) अल्लाह का नाम नहीं लेते। (और यह सब बातें) अल्लाह पर झूठ बोहतान लगाकर (कहते हैं)। वह इन्हें अभी (मरने के बाद ही) इनके झूठी बात बनाने की (काफ़ी) सज़ा देगा ॥

और जो (कुछ) उन (उपरोक्त) जानवरों के पेट में है, (उसके विषय में यह काफ़िर कहते हैं कि वह) केवल हमारे मर्दों के (उपयोग करने के) लिये (हलाल) हैं और हमारी स्त्रियों पर (इस बच्चे से किसी प्रकार का फ़ायदा उठाना) हराम कर दिया गया है ॥

और अगर वह (बच्चा) मरा हुआ (पैदा) हो, तो उस (से लाभ उठाने) में वह सब (मर्द औरत समान रूप से) शरीक हैं। (इन काफ़िरों की यह सब मन घड़न्त बातें हैं)। अल्लाह तआला शीघ्र इन्हें इनकी (बेहूदा रस्मों और) झूठ बोलने की सज़ा देगा। वह निस्सन्देह बुद्धिमान (और इन पापियों की करतूतों का) जानने वाला है ॥

(संक्षिप्त यह है कि) उन (मूर्ख मुश्रिक) लोगों ने निश्चत रूप से नुक़सान उठाया, जिन्होंने बेजाने बूझे मूर्खता से अपनी सन्तान को मार डाला। और जो भोजन अल्लाह ने उन्हें दिया, उसे उस पर दोष लगा कर हराम कर लिया। निस्सन्देह यह लोग भटक गये और सीधी राह पर न आये ॥

और वह-वह (मानता व महिमा वाला ख़ुदा) है (जिसने ऐसे ऐसे मेवों के) बाग़ (भी लगा दिये और चमन) पैदा कर दिये, जो टट्टियों पर चढ़ाये जाते हैं (जैसे अंगूर)। और (ऐसे ऐसे फलों के बाग़ भी लगाये) जो टट्टियों पर नहीं चढ़ाये जाते (जैसे ख़रबूज़ा, तरबूज़ आदि) ॥

और (तनेदार पेड़ों को; जैसे) खजूर (और तरह तरह की तरकारियों के) खेत (पैदा किये) जो (फलों और स्वाद को दृष्टि से) कई तरह के होते हैं ॥

और (उसने) ज़ैतून और अनार (के पेड़ पैदा किये) जो (पत्तों के लिहाज़ से आपस में एक दूसरे के) समान रूप (हैं और स्वाद में) अलग अलग (हैं) ॥

(और ऐ लोगो !) जब यह (बाग़ अर्थात् उनके पेड़) फल लायें, (तो) तुम उनके फल (जितने जी चाहे; बेखटके) खाओ। और उनके काटने के दिन उनके (उस) हक़ को अदा करदो (जिसे तुम पर ख़ुदा ने आवश्यक ठहरा दिया है,अर्थात ज़कात आदि) और . (तुम्हें समझा दिया कि) अपव्यय न करो। अल्लाह निस्सन्देह अपव्यय करने वालों (और सीमा से बढ़ने वालों) को (किसी मामले में भी) पसन्द नहीं करता ॥

और (उसने तुम्हारे आराम के लिये) जानवरों में से (कुछ बड़े और मज़बूत) बोझ ढोने वाले (जानवर पैदा किये) और (कुछ ऐसे कि छोटा होने के कारण) ज़मीन से लगे हुये (हैं) ॥

كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۙ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ
مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ قُلْ
ءٰالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ
عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ نَبِّئُوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۙ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ
اثْنَيْنِ قُلْ ءٰالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ
اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ اَمْ
كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا فَمَنْ اَظْلَمُ
مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ
بِغَيْرِ عِلْمٍ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ
قُلْ لَّا اَجِدُ فِيْ مَاۤ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ
يَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا

ع

(जो नहीं लादे जाते; जैसे मसलन भेड़ बकरी । लोगो !) ख़ुदा ने जो तुम को रोज़ी दी है, उसमें से (बे तअम्मुल) खाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो, क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है ० (ख़ुदा ने यह चारपाए नर व मादा) आठ क़िस्म (के पैदा किये हैं)। भेड़ों में से (नर व मादा) दो, और बकरियों में से (नर व मादा) दो । (अब ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि ख़ुदा ने (भेड़ बकरी के) दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को? या वह (बच्चा) जिसको (इन) दो मादीनों के पेट अपने अन्दर लिये हुए हैं । अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो, तो (मुझको इसकी) सनद बताओ ० और ऊँटों (में) से (नर व मादा) दो, और गाय (की क़िस्म में) से (नर व मादा) दो। (अब ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि (ख़ुदा ने ऊँट गाय के) दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को? या वह (बच्चा) जिसको (इन) दो मादीनों के पेट अपने अन्दर लिये हुये हैं? या जिस वक़्त ख़ुदा ने तुमको इन चीज़ों के हराम कर देने का हुक्म दिया था, उस वक़्त तुम (ख़ुद) मौजूद थे । तो उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम (और) कौन होगा, जो लोगों के गुमराह करने के लिये बे समझे बूझे ख़ुदा पर बोहतान बाँधे ? बेशक ख़ुदा सर्कश लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि कोई खाने वाला (इन चीज़ों में से, जिनको तुम हराम कहते हो) कुछ खाले, तो मेरी तरफ़ जो वही आई है, उसमें तो मैं उस पर कोई चीज़ हराम पाता नहीं । मगर यह कि वह चीज़ मुर्दार हो या बहता हुआ ख़ून—

(और तुमसे कह दिया कि) अल्लाह ने (अपनी कृपा से) जो कुछ तुमको प्रदान किया (है और जिन जानवरों या फलों को तुम्हारे लिये हलाल कर दिया, उन्हें हलाल समझो । और) उनमें से (जिस फल या जानवर को तबीअत चाहे) खाओ । और (बहकाने वाले) शैतान के अनुयायी न बनो (क्योंकि) वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है ॥

(परन्तु तुमने शैतान के बहकाने से जिन जानवरों को अपने ऊपर हराम किया, तो बताओ ! इस प्रकार के अल्लाह ने) आठ नर व मादा (पैदा किये) हैं । भेड़ें-दो (अर्थात् एक नर, एक मादा) और बकरी (की क़िस्म में) से-दो (एक नर, एक मादा) ॥

(ऐ नबी ! इन मूर्खों से) कहो (कि पशुओं के इन जोड़ों में से) क्या अल्लाह ने दोनों नरों को हराम किया है या दोनों मादीनों को ? या वह (बच्चा हराम किया है) जिसे (इन) दोनों मादीनों (भेड़ बकरी) के पेट ने (अपने भीतर रख) रक्खा हो ॥(अब) अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो, (तो) प्रमाण सहित (उत्तर) बयान करो ॥

और (ऐ नबी ! यदि यह झूठे कोई सबूत नहीं दे सके, तो अल्लाह ने) ऊंट (की क़िस्म में) से दो-(एक नर और एक मादा पैदा किए हैं) । और दो गाय (भैंस की क़िस्म में) से-(एक नर, एक मादा पैदा किए हैं । इनसे इनके विषय में पूछो और) कहो (कि इन दोनों जोड़ों में से) क्या अल्लाह ने दोनों नरों को हराम किया है? या दोनों मादीनों को ? (या वह बच्चा हराम किया है) जिसे (इन) दोनों मादीनों के पेट ने (अपने भीतर रख) रक्खा हो ॥

(ऐ नबी ! इन मूर्खों से पूछो) क्या उस समय तुम (स्वयं ख़ुदा के सामने) मौजूद थे, जिस समय पवित्र अल्लाह इस (हराम वस्तु विषयक आज्ञा) को बयान कर रहा था ॥

तो भला उस (मनुष्य) से अधिक अत्याचारी (और पापी) कौन हो सकता है, जो ख़ुदा (की व्यक्ति) पर झूठ दोषारोपण करे (और मन घड़त बातों को उसके नाम लगावे) ताकि लोगों को बिना किसी जांच के बहकाए । ऐसे मक्कारों और अत्याचारियों को अल्लाह (पवित्र) हिदायत से बिल्कुल वञ्चित रक्खेगा ॥

(ऐ नबी ! इन काफ़िरों से) कहदो (कि तुम्हारी हराम की हुई वस्तुओं की सूचना पहले मुझको मिलनी चाहिये थी । परन्तु) मैं (तो) जो ख़ुदाई वही मेरी ओर भेजी गई (और जो पूर्ण विधान मुझे प्रदान किया गया है अर्थात् क़ुर्आन) उसमें (तुम्हारे हराम ठहराये हुए खेतों और जानवरों में से किसी को भी किसी खाने वाले (मर्द या खाने वाली औरत) पर-जो (भी) उसे खाले, हराम नहीं पाता ॥

(बल्कि उसमें तो अल्लाह तआला तुम्हारे ख़िलाफ़ आज्ञा देता है और फ़र्माता है कि) सिवा मुर्दार (जानवर) या बहते हुए ख़ून—

या सुअर का गोश्त कि यह चीज़ें बेशक नापाक हैं। या (वह जानवर) मूजिब ना फ़र्मानी हो कि .खुदा के सिवा किसी दूसरे के लिये (ज़िबह और) नाम ज़द किया गया हो। इस पर भी जो शख्स (भूख से) लाचार (हो और) ना फ़र्मानी का इरादा न रखता हो और न (हद्द ज़रूरत से) तजावुज़ करने वाला हो (और वह इन नापाक चीज़ों में से कुछ खाले) तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार बेशक बख्शने वाला मेहर्बान है ० और यहूदियों पर हमने तमाम नाखून वाले जानवरों को हराम कर दिया था और (नीज़) हमने गाय और बकरियों में से उन दोनों की चर्बियों को उन पर हराम कर दिया था, मगर वह (चर्बी) जो उनकी पीठ पर लगी हो या अँतड़ियों पर या हड्डी से मिली हो (वह हलाल थी। इस क़ैद के लगा देने से) यह हमने उन को उनकी सर्कशी की सज़ा दी थी (कि उन पर दाइरए रिज़्क़ तङ्ग हो)। और हम बेशक सच फ़र्माते हैं ० (ऐ पैग़म्बर !) अगर इस पर भी यह लोग तुम को झुठलायें, तो (इनसे) कहो कि तुम्हारा पर्वर्दिगार (बड़ी) वसीअ् रह्मत वाला है और (इसी वजह से अब तक तुम पर अज़ाब नाज़िल नहीं हुआ, मगर ताबकै)। गुनहगार लोगों से उसका अज़ाब (हमेशा के लिये तो) टलने वाला है नहीं ० मुश्रिकीन से कुछ बईद नहीं कि यह हुज्जत पेश करें कि अगर .खुदा चाहता, तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप (दादा ऐसा करते) और न हम किसी (हलाल) चीज़ को (अज़ .खुद अपने ऊपर) हराम करते। इसी तरह जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं (पैग़म्बरों को) झुठलाते रहे। यहाँ तक कि (आख़िरकार) हमारे अज़ाब का मज़ा चक्खा (पर चक्खा। ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि आया तुम्हारे पास कोई (किताबी) सनद भी है कि उसको हमारे (दिखाने के) लिये निकालो (और पेश करो। सनद तो तुम्हारे पास कुछ है नहीं)-निरे वाहिमों पर चलते और निरी अटकलें ही दौड़ाते हो ० (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो (कि तुम हारे और) अल्लाह की हुज्जत (तुम पर) तमाम हुई—

أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ
اللَّهِ بِهِ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ● وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ
ذِي ظُفُرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ
شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا
أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُم بِبَغْيِهِمْ
وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ● فَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل رَّبُّكُمْ
ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِينَ ● سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ
اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن شَيْءٍ
كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا
قُلْ هَلْ عِندَكُم مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا إِن تَتَّبِعُونَ
إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ● قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ

الْبَالِغَةُ

या सुअर के गोश्त (या दरिन्दे या पंजों से शिकार करने वाले परिन्दे) के (और कोई खेत या जानवर हराम नहीं। और यह वस्तुवें भी इस लिये हराम की गई हैं) कि वह बिल्कुल अपवित्र हैं ॥

या (उस जानवर का खाना) पाप का कारण है, जो .खुदा के सिवा और किसी के नाम लगाया गया हो। (अर्थात् जो .खुदा के अतिरिक्त किसी और के नाम पर छोड़ा गया हो और जिस पर बध करते समय किसी बुत का नाम पढ़ा गया हो) ॥

फिर (इसमें भी आसानी करदी और फ़र्मा दिया कि) जो (मनुष्य भूख के मारे) व्याकुल हो, (बशर्ते कि) अवज्ञाकारी (व विद्रोही) न हो और न (उचित सीमा से) बढ़ने वाला हो, तो (आवश्यकतानुसार खा ले, तो कुछ पाप नहीं। ऐ नबी !) वास्तव में तुम्हारा पालन कर्त्ता बहुत क्षमा करने वाला (और) दयालु है ॥

और हमने यहूदियों पर प्रत्येक ना.खून वाले जानवर को हराम कर दिया (था) ॥ और गाय बकरी (में) से उन पर(केवल) उनकी चर्बी को हमने हराम कर दिया (था) ॥ मगर वह (चर्बी) जो उनकी पीठ या अँतड़ियों से लगी हुई हो, या जो हड्डी से मिली हुई होती है (हलाल थी) ॥ (मगर) यह हमने उनकी शरारत (और बुरे कर्मों) का उन्हें बदला दिया (था)। और वास्तव में हम सच कहते हैं,(कि उनका उन चीज़ों को अब हराम समझना सही नहीं है) ॥

यदि फिर (भी ऐ नबी !) यह (मूर्ख और टेढ़ी तर्क करने वाले लोग) तुमको झूठा बतायें, तो तुम (उनसे) कहो (कि) तुम्हारा पालन कर्त्ता बड़ी मेहर्बानी (व कृपा करने) वाला है (जो तुम जैसे कट्टर काफ़िरों को सज़ा देने में देर लगा रहा है) ॥ (मगर यह याद रक्खो कि तुम सज़ा से बच नहीं सकते) और उसका अज़ाब (तुम जैसे महान) पापी लोगों (के सिर) से टल नहीं सकता ॥

(ऐ रसूल ! हम भविष्य वाणी करते हैं कि) अब मुश्रिक (अपने स्वभावानुसार अल्लाह की मर्ज़ी का झगड़ा निकालेंगे और) कहेंगे(कि) अगर अल्लाह चाहता (और हमारी शिर्क-पूर्ण प्रथाओं को पसन्द न करता, तो उसकी .खुदाई में) न हम (किसी को) शरीक कर सक्ते और न हमारे बाप (दादा)। और न हम (उपर्युक्त वस्तुओं में से) कोई चीज़ (अपने ऊपर) हराम कर सकते ॥

(ऐ रसूल !) इसी तरह (उनके पूर्वज) जो उनसे पहिले हो चुके हैं, उन्हों ने (सदैव पैग़म्बरों को) झूठा ठहराया। यहां तक कि उन्होंने हमारे अज़ाब का मज़ा चक्खा (और इसी संसार में हलाक व बरबाद हो गये) ॥

(ऐ रसूल !) तुम (उनसे) कहो (कि) क्या तुम्हारे पास कोई (पुस्तकीय) दलील (भी) है ? (कि) जिसे तुम हमारे (सामने अपना दावा साबित करने के) लिये (पेश कर सको और) प्रकट करो। (किताबी दलील तुम्हारे पास क्या होगी) तुम लोग (तो केवल बुरे) गुमान के ताबेदार और असत् विचार के अनुयायी हो ॥

(ऐ रसूल !) तुम (उनसे) कहदो (कि) अल्लाह ही का(प्रमाण पूरा हुआ और) दलील मज़बूत रही—

فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ قُلْ هَلُمَّ
شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا
فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۝ قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا
६
حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا
وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ
مِنْ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا
النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللّٰهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ
بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ
الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ أَشُدَّهُ
وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ لَا نُكَلِّفُ

फिर अगर वही चाहता, तो तुम सबको (दीन हक़ का) रस्ता दिखा देता ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अपने गवाहों को ला हाज़िर करो, जो इस बात की गवाही दें कि (यह चीज़ें, जिनको तुम हराम बताते हो) अल्लाह ने इनको हराम किया है। पस अगर (वह गवाह ले आयें और गवाह उनके मुवाफ़िक़) गवाही भी दें, तो तुम उनके साथ होकर उनकी सी न कहना। और न उन लोगों की नफ़्सानी ख़्वाहिशों पर चलना, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो (रोज़) आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते और वह (दूसरे माबूदों को) अपने पर्वर्दिगार के बराबर समझते हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि (इधर) आओ। मैं तुमको वह चीज़ें पढ़ कर सुनाऊँ, जो तुम्हारे पर्वर्दिगार ने तुम पर हराम की हैं। (वह) यह कि किसी चीज़ को ख़ुदा का शरीक मत ठहराओ और माँ बाप के साथ सुलूक करते रहो और मुफ़्लिसी (के डर) से अपने बच्चों को क़त्ल न करो। (क्योंकि) हम (ही) तुमको (भी) रिज़्क़ देते हैं और उनको (भी)। और बेहयाई की बातें, जो ज़ाहिर हों और जो पोशीदा हों, उनमें से किसी के पास भी न फटकना। और जान, जिस (के मारने) को अल्लाह ने हराम कर दिया है, (उसको) मार न डालना, मगर हक़ पर। यह हैं, वह बातें, जिनका हुक्म ख़ुदा ने तुमको दिया है, ताकि तुम (दुनिया में रहने का तरीक़ा) समझो ० और यतीम के माल के पास (भी) न जाना, मगर ऐसे तौर पर कि (उसके हक़ में) बेहतर हो। यहाँ तक कि वह अपनी जवानी (की उम्र) को पहुँचे और इन्साफ़ के साथ पूरी पूरी माप करो और (पूरी पूरी) तोल–

(तुम्हारा दावा झूठा हो गया। तुम्हारी दलील टूट गई और साबित हो गया कि तुम जैसे अन्यायी और अनुपयुक्त मनुष्य किसी प्रकार भी ईमान नहीं ला सक्ते) ॥

(सिवा इसके कि) अगर अल्लाह चाहे, तो निस्सन्देह तुम सबको सीधी राह बतादे (और सच्चे धर्म पर चलने की शक्ति देदे) ॥

(ऐ रसूल ! इन मुश्रिकों से) कह दो (कि तुमने अपनी पिछली दलील का हाल मालूम कर लिया। अब अगर तुम्हारे पास तुम्हारे दावे के लिये कोई और सुबूत मौजूद हो, तो पेश करो; जैसे कुछ) अपने गवाह लाओ, जो (सचाई से) गवाही दें। (और बतायें कि) निस्सन्देह अल्लाह तआला ने उन चीज़ों को हराम कर दिया, (जिन्हें तुम लोग हराम कहते हो) ॥

(यह सच्चे गवाह कहाँ से लायेंगे और अपनी इन झूठी और मन घड़त बातों की सच्ची गवाही क्या दिलवा सकेंगे) इस लिये अगर यह (झूठे गवाह झूठी) गवाही दें, तो तुम (ऐ रसूल !) ध्यान न देना और इन लोगों की (इन्द्रियों द्वारा उत्पन्न) वासनाओं का अनुकरण न करना; जो हमारी आयतों को झूठा ठहराते हैं और जो प्रलय पर विश्वास नहीं रखते और जो (दूसरों को) अपने पालन कर्त्ता के बराबर बताते हैं ॥

(ऐ मुहम्मद ! इन लोगों से) कह दो (कि) आओ ! मैं तुम्हें (ख़ुदा की किताब में से) उन (बातों और उन) चीज़ों को पढ़ कर सुनाऊँ (जिनहें) तुम्हारे पालन कर्त्ता ने तुम पर हराम किया है। (और वह) यह (हैं) कि तुम ख़ुदा के साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराओ और (अपने माँ बाप के साथ कोई बुरा व्यवहार न किया करो। बल्कि जहाँ तक हो सके अपने) माता पिता के साथ (सद् व्यवहार से पेश आया करो और) भलाई किया करो ॥

और अपनी सन्तान को निर्धनता (के भय) से बध न किया करो * (क्योंकि मान व अपमान, निर्धनता व भोजन के देने वाले हम हैं)। हम (ही) तुमको (भी) भोजन देते हैं और उनको भी (अर्थात तुम्हारी सन्तान को भी) ॥

* टीका—मुश्रिक लोग निर्धनता व लज्जा के कारण अपनी लड़कियों को जीवित ही पृथ्वी में गाड़ दिया करते थे। यहाँ अल्लाह तआला ने उन लोगों के इस कार्य के हराम होने का हुक्म दिया है। लेकिन हुक्म आम है--जिस में लड़कों और लड़कियों में विशेषता अर्थात भेद नहीं है। लड़कों का बध करना भी वैसा ही बुरा है; जैसा कि लड़कियों का :— हसन निज़ामी ॥

और निर्लज्जताओं (और दुराचरणों) के पास न जाओ; चाहे वह प्रकट हों और चाहे गुप्त, और जिस किसी को (बध करना या जिसकी जान लेना) अल्लाह ने हराम किया है, उसको बध न करो, मगर सत्य पर (होने अर्थात शरीअत के अनुसार अधिकार होने की दशा में–जैसे बदला व रज्म आदि के वाजिब होने की दशा में; अर्थात् किसी ख़ूनी को ख़ून के बदले में बध करने की किसी न्यायकारी ने आज्ञा दी हो, या पत्थर से मार डालने का हुक्म दिया हो)। यह हैं (वह बातें) जिनका अल्लाह तआला ने तुमको (अनुरोध पूर्वक) हुक्म दिया है, ताकि तुम्हें समझ आवे (और तुम मनुष्य बन जाओ)। जिस से तुम (इसे) समझो (और इस पर अमल करके मूर्खता व अज्ञानता के अन्धकार से निकल आओ। और ईमान के प्रकाश में जीवन व्यतीत करो और व्यर्थ की हलाकत व बरबादी से सुरक्षित रहो) ॥

और अनाथ के माल के पास (भी) न जाओ, सिवा उस दशा के कि उसके माल पर अधिकार करना (उसके हक़ में) अच्छा हो। (अनाथ के माल में) जब तक कि वह अपनी जवानी (की आयु) को पहुँचे (ऐसा अधिकार जायज़ है) ॥

और (अनाथ तो ख़ैर बड़ी चीज़ है, हक़ किसी का भी न रखना चाहिये। बल्कि किसी को कोई चीज़ माप तोल कर देनी हो, तो) माप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरी (पूरी) किया करो (मगर भूल चूक माफ़ है)—

نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ
ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ
مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ
بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝
ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ
اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً
لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَهٰذَا كِتٰبٌ
اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝
اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ
مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ۝
اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ
اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ

ع

وهدى

हम किसी शख़्स पर उसकी समाई से बढ़ कर बोझ नहीं डालते और (गवाही देनी हो या फ़ैसला करना पड़े) जब बात कहो तो गो (फ़रीक़ मुक़द्दमा अपना) क़राबतमन्द ही (क्यों न) हो, इन्साफ़ (का पास) करो और अल्लाह के (साथ जो) अहद (कर चुके हो, उस) को पूरा करो। यह हैं, वह बातें, जिनका तुमको ख़ुदा ने हुक्म दिया है, ताकि तुम नसीहत पकड़ो० और (उसने) यह (भी इर्शाद फ़र्माया है) कि यही हमारा सीधा रस्ता है, तो इसी पर चले जाव और (दूसरे) रस्तों पर न पड़ लेना कि यह तुमको ख़ुदा के रस्ते से (भटकाकर) तित्तर,बित्तर कर देंगे। (ग़रज़) यह (सब वह बातें) हैं, जिनका ख़ुदा ने तुमको हुक्म दिया है, ताकि तुम पर्हेज़गार बन जाओ०(फिर एक बात यह भी है कि) हमने मूसा को किताब (तौरात) अता फ़र्माई, जिससे नेकोकारों पर हमारी नेअ़मत पूरी हुई और उसमें कुल बातों के तफ़सीली अहकाम मौजूद हैं। और (लोगों के लिये) हिदायत और रहमत है। (और यह किताब मूसा को इस ग़रज़ से दी गई थी) ताकि लोग (उसको पढ़ सुनकर) अपने पर्वर्दिगार से (आख़िरकार) मिलने का यक़ीन लायें० और यह किताब (यानी क़ुर्आन भी) हम ही ने इसको उतारा है। बरकत वाली (किताब) है, तो इसी (के हुक्म) पर चलो और (ख़ुदा से) डरते रहो। अजब नहीं तुम पर रहम किया जाय० (और ऐ मुश्रिकीन अरब! यह किताब हमने इस लिये उतारी है) कि (मबादा कल कलाँ को) कहीं यह कह बैठो कि हम से पहिले (यहूद व नसारा) बस दोही गिरोहों पर किताब उतरी थी और हम तो उसके पढ़ने पढ़ाने से बिल्कुल बेख़बर थे० या यह उज़्र करने लगो कि अगर हम पर किताब उतरी होती, तो हम ज़रूर उन (यहूद व नसारा) से कहीं बढ़ कर राह रास्त पर होते। तो अब तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास दलील—

हम किसी को उसकी शक्ति से अधिक तकलीफ़ नहीं देते (कि वे इरादे कम नापने तोलने पर भी गिरिफ़्त अर्थात् पकड़ करें) ॥

और (सत्य व सचाई के विरुद्ध कभी न जाओ) जब तुम (किसी की गवाही या मामले में) बोलो (तो सच ही बात बोलो और जब कोई फ़ैसला करो) तो न्याय (ही से) करो; चाहे वह (गवाही दिलवाने वाला या फ़ैसला कराने वाला तुम्हारा प्रिय) सम्बन्धी (ही क्यों न) हो ॥

और (यह भी कि) अल्लाह की प्रतिज्ञा (के विरुद्ध न करो अर्थात् अल्लाह की सौगन्ध खाओ या उसकी भेंट बोलो, तो उस) को पूरा करो। यह हैं (वह बातें) जिनका अल्लाह तआला ने तुमको ताकीदी हुक्म दिया है। जिससे कि तुम उपदेश ग्रहण करो ॥

और यह (भी उसी का आदेश है) कि यह (इस्लाम-धर्म मेरा पसन्द किया हुआ धर्म और) मेरा (बताया हुआ) मार्ग है, (जो अत्यन्त) सीधा (और साफ़ है)। इस लिये (ऐ लोगो!) तुम इसके अनुसार कार्य करो और और मार्गों पर न चलो (क्योंकि) वह तुमको अल्लाह के रास्ते से अलग (करके) भटका देंगे ॥

इस (सीधे, सच्चे धर्म के अनुसरण करने) का अल्लाह तआला ने सानुरोध आज्ञा तुमको (इस लिये) दी है, ताकि तुम (संयमी बन जाओ और ऐसी बातों से) बचो, (जो संसार व परलोक में तुम्हारे लिये हानि कारक हैं) ॥

(फिर यह सीधा रास्ता कोई नया रास्ता नहीं है। वही रास्ता है, जिस पर पिछले पैग़म्बर ख़ुद चलते और अपनी उम्मतों को चलने की हिदायत करते रहे हैं। अतएव मूसा का भी-जिनके अनुयायी होने का आज यहूदी और ईसाई दावा करते हैं, यही रास्ता था और) हमने मूसा को (भी अपनी) किताब (तौरेत) दी थी। नेक काम करने वालों पर (अपनी) नेअ़मत के पूरा करने, समस्त (धार्मिक) आदेशों की व्याख्या करने और (संसार के मनुष्यों के लिये उसको) हिदायत व भ्रातृ-भाव (का साधन) बनाने के लिये-जिससे कि वह (प्रलय के दिन) अपने पालन कर्त्ता (की सेवा में उपस्थित किये जाने और उस) से मिलने पर विश्वास करें ॥

और यह (क़ुर्आन भी सच्ची और अल्लाह की ओर से भेजी गई) किताब है, जिसको हम (ही) ने उतारा है (और जो बड़ी) बरकत वाली है। (पहली किताबें उसी समय के लिये उपयुक्त थीं, जब कि वह उतारी गई थीं। उनका समय गुज़र गया। इस समय की इलहामी किताब यही क़ुर्आन है)। अतएव (अब) तुम्हें उसी के अनुसार चलना चाहिये और (उसी की हिदायतों पर अ़मल करके) संयमता धारण करनी चाहिये, जिस से कि तुम पर (अल्लाह की) कृपा (और उसका इनाम हो) ॥

(और ऐ अरब के मुश्रिको! हमने इस किताब को इस लिये उतारा है) कि कभी (प्रलय के दिन) तुम यह कहो कि (आकाश सम्बन्धी) किताबें (तो) हमसे पहिले (यहूदी व ईसाई बस) दो ही समूहों पर उतरी थीं। हम उनके पढ़ने पढ़ाने से (विवश और उनके आदेशों से) बे ख़बर थे या कभी (अपनी प्रतिभा व स्वाभाविक विशेषता के घमंड पर) यह कहने लगो कि अगर हम पर (कोई) किताब उतरती, (तो) हम बिल्कुल उन (यहूदियों और ईसाइयों) से कहीं अधिक (नेक और) राह पर चलने वाले होते ॥

सो तुम्हारे पास तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (एक ऐसा) प्रमाण (अर्थात् स्पष्ट पुस्तक) आ गई—

وَهُدًى وَرَحْمَةٌ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ
بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَنَجْزِي الَّذِينَ
يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا
يَصْدِفُونَ ۝ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ
الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ
رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ
نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ
فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا قُلِ انْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَسْتَ
مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ
بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ
عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى
إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي

और हिदायत और रहमत (सब चीज़ें) तो आ चुकीं। तो उससे बढ़ कर ज़ालिम (और) कौन होगा. जो अल्लाह की आयतों को झुठलाये और उनसे किनारा कशी इख़्तियार करे ? जो लोग हमारी आयतों से किनारा कशी इख़्तियार करते हैं, हम अन्क़रीब उनकी किनारा कशी के बदले उनको बुरी मार की सज़ा देंगे ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या यह लोग इसी बात के मुन्तज़िर हैं कि फ़रिश्ते (इनकी जान निकालने को) इनके पास आ मौजूद हों ? या तुम्हारा पर्वर्दिगार (.ख़ुद) उनके पास आये ? या तुम्हारे पर्वर्दिगार के बाज़ निशान (यानी क़यामत के बड़े आसार) ज़ाहिर हों ? तो जो शख़्स इससे पहिले ईमान नहीं लाया या अपने ईमान (की हालत) में उसने नेक काम नहीं किये-अब उसका ईमान लाना, उसको कुछ भी सूदमन्द न होगा । (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि (अगर तुम इसी बात के मुन्तज़िर हो, तो अच्छा) इन्तिज़ार करो, हम (मुसलमान) भी इन्तिज़ार कर रहे हैं ० (ऐ पैग़म्बर !) जिन लोगों ने अपने दीन में तफ़रक़ा डाला और कई फ़िर्क़े बन गए, तुमको उन (के झगड़ों) से कुछ सरोकार नहीं। उनका मामिला बस .ख़ुदा के हवाले (कि वह उनका हिसाब ले लेगा)। फिर जो कुछ (दुनिया में) किया करते थे, (उसका नेक व बद) उनको बता देगा ० जो शख़्स (क़यामत के दिन) नेकी लेकर आएगा, तो उसका दस गुना उसको (सवाब) मिलेगा। और जो बदी लेकर आएगा, तो बस उतनी ही सज़ा भुगतेगा। और लोगों पर (किसी तरह का) .ज़ुल्म नहीं किया जायगा०(ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मुझको तो मेरे पर्वर्दिगार ने सीधा रस्ता दिखा दिया है—

(जिसके बाद तुमको इस प्रकार के व्यर्थ हीले हवाले पेश करने का कोई मौक़ा नहीं रहा)। और (जो तुम्हारे लिये) उपदेश (का साधन) और कृपा (का कारण है)॥

फिर (भी तुम अवहेलना किये जाते हो। अभागो !) उस से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा, जो अल्लाह की आयतों को झूठा ठहराये और उनसे विमुखता करे ॥

जो लोग हमारी आयतों से विमुखता करते हैं, हम उन्हें (इस) विमुखता के बदले घोर दुःख का दण्ड देंगे ॥

(ऐ रसूल !) क्या यह लोग केवल इसको बाट जोहते हैं, कि फ़रिश्ते इनके पास (आकाश से इनके प्राण निकालने) आ पहुँचें, या तुम्हारा पालनकर्त्ता (प्रलय के दिन की तरह स्वयं इनका फ़ैसला चुकाने इनके पास) आ जाय, या (प्रलय के चिन्हों में से) तुम्हारे पालन कर्त्ता के (कुछ बड़े बड़े) निशान प्रकट हो जायँ ? (जैसे सूर्य पच्छिम की ओर से निकलने लगे)॥

(अर्थात् क्या यह लोग ईमान लाने के लिये प्रलय के चिन्ह या प्रलय के इन्तिज़ार में हैं ? यदि ऐसा है, तो ऐ रसूल ! इनसे कह दो कि तुम्हारा इन्तिज़ार व्यर्थ है। क्योंकि) जिस दिन (प्रलय के चिन्हों में से) तुम्हारे पालन कर्त्ता की कुछ (बड़ी बड़ी) निशानियां प्रकट हो जायँगी, तो (फिर) किसी (ऐसे मनुष्य) को उसका ईमान लाभ न देगा, जो (उस दिन से) पहिले ईमान नहीं लाया या जिसने अपने ईमान (की दशा) में काम अच्छे न किये ॥

(यदि प्रलय और प्रलय के चिन्हों ही का इनको इन्तिज़ार है, तो ऐ रसूल ! इनसे) कहदो कि तुम इन्तिज़ार किये जाओ, हम (भी) इन्तिज़ार कर रहे हैं। (जो कुछ उस समय होगा, हमारे तुम्हारे और सबके सामने आ जायगा)॥

(ऐ रसूल !) निस्सन्देह जिन लोगों ने अपने धर्म (व मज़हब) में भेद भाव डाला और (तरह तरह की विभिन्नतायें पैदा करके) समूह २ हो गये, तुम उनके कुछ ज़िम्मेदार नहीं हो। उनका मामला बस अल्लाह के हवाले है। (तो) फिर वही इन्हें बता देगा कि वह (दुनिया में) क्या कर रहे थे। (अपनी भलाई का प्रवन्ध या बरबादी का साधन) ॥

जो मनुष्य दुनिया में (एक) नेकी करेगा, तो उसे (प्रलय में इसका (पुण्य) दस गुना मिलेगा। और जो कोई (एक) बुराई करेगा, तो उसे केवल उतना ही दण्ड दिया जायगा (जितना कि उस एक बुराई के लिये नियत है)। और लोगों के साथ (कोई) अन्याय नहीं किया जायगा ॥

(ऐ रसूल ! तुम उन लोगों से, जो अल्लाह के दीन में भेद भाव डाल रहे हैं) कह दो (कि तुम इन भेद भाव डालने में पड़े रहो)। मुझे (तो) मेरे पालन कर्त्ता ने (वही द्वारा) सीधा रास्ता बता दिया—

कि यही ठीक दीन है। (यानी) इब्राहीम का तरीक़ा कि वह एक ही (.खुदा) के हो रहे थे और मुश्रिकों में से (भी) न थे ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मेरी नमाज़ और मेरी तमाम इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना (सब) अल्लाह के लिये है, जो सारे जहान का पर्वर्दिगार है ० कोई उसका शरीक नहीं और मुझको ऐसा ही हुक्म दिया है और मैं उसके फ़र्मांबरदारों में पहिला (फ़र्मांबर्दार) हूँ० (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि क्या (तुम्हारी यह मर्ज़ी है कि) मैं .खुदा के सिवा (कोई दूसरा) पर्वर्दिगार तलाश करूं। हालाँकि वही तमाम चीज़ों का पर्वर्दिगार है। और जो शख़्स कोई बुरा काम करता है, तो (उसका वबाल) उसी पर (पड़ेगा)। और कोई शख़्स किसी दूसरे (के गुनाहों) का बोझ (अपने ऊपर) नहीं लेगा। फिर तुम (सब) को अपने पर्वर्दिगार ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (जब उसके हु.जूर में हाज़िर होगे) तो (दुनिया में) जिन (जिन बातों) में इख़्तिलाफ़ करते रहे हो, वह (सब) तुमको बता देगा (कि कौन हक़ पर था और कौन नाहक़ पर) ० और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने ज़मीन में तुमको (अपना) नायब बनाया है (कि तुम दुनिया की चीज़ों में तसर्रुफ़ करते हो)। और तुम में से (मक़्दरत व हुकूमत वग़ैरा के एतिबार से) बाज़ को बाज़ पर दर्जों में फ़ौक़ियत दी। ताकि जो नेअ़्मतें तुमको दी हैं, उनमें तुम्हारी (शुक्र गुज़ारी और फ़र्मांबर्दारी की) आज़माइश करे। (ऐ पैग़म्बर !) बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार जल्द सज़ा देने वाला है और इसमें (भी) शक नहीं कि वह बख़्शने वाला मेहर्बान (भी) है ०॥

رَبِّىٓ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَٰهِيمَ
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ۝ قُلْ إِنَّ
صَلَاتِى وَنُسُكِى وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِى لِلَّهِ رَبِّ
ٱلْعَٰلَمِينَ ۝ لَا شَرِيكَ لَهُۥ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَ
أَنَا۠ أَوَّلُ ٱلْمُسْلِمِينَ ۝ قُلْ أَغَيْرَ ٱللَّهِ أَبْغِى رَبًّا وَ
هُوَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا
عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ
رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ
وَهُوَ ٱلَّذِى جَعَلَكُمْ خَلَٰٓئِفَ ٱلْأَرْضِ وَرَفَعَ
بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِى مَآ
ءَاتَىٰكُمْ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ ٱلْعِقَابِ وَإِنَّهُۥ لَغَفُورٌ

سورة الاعراف

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

सूरत--अअ़राफ़

मक्की यानी मक्के में नाज़िल हुई और इसमें २०६ आयतें और २४ रुकूअ़ हैं॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है)--

(और एक) पक्के धर्म (पर स्थिर कर दिया) जो (.खुदा के उन मुख्य पैग़म्बर) इब्राहीम का धर्म (है)। जो (सब ओर से मुंह मोड़ कर) एक (.खुदा) के हो गये थे और मुश्रिकों में नहीं थे॥

(और यह भी) कह दो कि निस्सन्देह मेरी नमाज़ और (एक नमाज़ क्या, बल्कि) मेरी समस्त आराधना और मेरा जीना और मेरा मरना (सब कुछ) अल्लाह ही के लिये है। जो सारे संसार का (एक मात्र सृष्टि कर्त्ता व) मालिक है। कोई उसका शरीक नहीं और मुझको यही आज्ञा दी गई है (कि मेरा हर काम अल्लाह के लिये हो) और मैं सबसे पहिला मुसलमान हूँ॥

(और इनसे) कहो कि क्या (तुम्हारे इस कहने से कि हमारे दीन में आ जाओ, हम तुम्हारे अ़ज़ाब और सवाब के ज़िम्मेदार हैं)-मैं अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा (सृष्टि कर्त्ता व) मालिक तलाश करूं ? और किसी दूसरे को अपना पूज्य बनाऊँ ? और यद्यपि (मैं जानता हूँ कि) हर चीज़ का (सृष्टि कर्त्ता और) स्वामी वही है। (और समझता हूँ कि) हर मनुष्य का किया उसी के सामने आयेगा और कोई किसी दूसरे (के पापों का) बोझ नहीं उठायेगा॥

(और मुझे मालूम है कि यह क्षणिक जीवन समाप्त करने के बाद) फिर तुम (सब) को अपने पालन कर्त्ता की ओर लौटना है। (और प्रलय के दिन जब उसके द्वार में पेश होंगे) तो (दुनिया में) जिस (जिस बात) में तुम झगड़ते थे, (सबकी वास्तविक दशा) वह तुमको बता देगा (और तुम्हें मालूम हो जायगा कि तुम सत्य पर थे या असत्य पर)॥

और (मुझे ख़बर है कि) वही (महान व श्रेष्ठ .खुदा) है, जिसने पृथ्वी में तुमको अपना ख़लीफ़ा बनाया। और तुममें से किसी को किसी पर दर्जे में बड़प्पन दिया, ताकि वह अपनी प्रदान की हुई नेअ़्मतों में तुम्हारे (आज्ञा पालन की) परीक्षा करे (कि तुम में से कौन आज्ञाकारी रहता है और कौन अवज्ञा और उद्दण्डता ग्रहण करता है)॥

(ऐ रसूल !) निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता (अपनी आज्ञा न मानने वालों को बहुत) जल्दी सज़ा देने वाला और निश्चित रूप से (आज्ञाकारियों के पापों को) वह क्षमा करने वाला (और उनकी दशा पर) दयालु है॥

सूरत--अअ़राफ़

मक्की अर्थात मक्के में उतरी। इसमें २०६ आयतें और २४ रुकूअ़ हैं॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है)—

अलिफ़् लाम् मीम् साद् ० (ऐ पैग़म्बर ! यह) किताब तुम पर इस ग़रज़ से उतारी गई है कि इसके ज़रिये से (काफ़िरों को अज़ाब .ख़ुदा से) डराओ और ईमान वालों को नसीहत हो, तो इस (किताब) की वजह से तुमको (किसी तरह) तङ्ग दिल न होना चाहिये ० (लोगो ! यह .क़ुर्आन) जो तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से तुम पर उतरा है, इसी (की हिदायत) पर चले जाओ और .ख़ुदा के सिवा (अपने बनाए हुए) कारसाज़ों (यानी माबूदों) की पैरवी न करो । (मगर) तुम लोग ग़ौर को बहुत ही कम काम में लाते हो ० और कितनी बस्तियाँ हैं, जिनको हमने हलाक कर मारा (कि लोगों ने हमारी ना फ़र्मानी की) । तो रात के वक़्त उन (बस्तियों) पर हमारा अज़ाब आ नाज़िल हुआ या (ऐसे वक़्त कि) वह दिन को पड़े सोते थे ० सो जिस वक़्त हमारा अज़ाब उन पर आ नाज़िल हुआ, तो उनसे इसके सिवा और कुछ कहते न बन पड़ा कि बोल उठे-हम ही बरसरे ज़ियादती थे ० (जिस दिन क़यामत आयगी) तो जिन लोगों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे गए थे, हम उनसे ज़रूर पूछ कर रहेंगे और .ख़ुद पैग़म्बरों से (भी) ज़रूर पूछ कर रहेंगे ० फिर हक़ीक़तुल हाल जो हमको (बख़ूबी) मालूम है, हम (उसको भी) उनसे ज़रूर बयान करके रहेंगे । और हम (उनके अमल के वक़्त उनसे) कहीं ग़ायब तो (हो ही) नहीं (गए) थे ० और (अमलों की) तोल उस दिन (बिल्कुल) ठीक (तौर पर) होगी । तो जिनके आमाल (नेक) का वज़न भारी होगा, तो वही लोग बामुराद होंगे ० और जिनके आमाल (नेक) का वज़न हलका ठहरेगा, तो यही वह लोग होंगे, जिन्होंने इस वजह से आप अपना नुक़सान किया कि हमारी आयतों की ना फ़र्मानी करते थे ० और (ऐ बनी आदम !) हमने तुमको ज़मीन में (रहने और उसमें तसर्रुफ़ करने के लिये) जगह दी—

المص ● كتب انزل اليك فلا يكن في صدرك
حرج منه لتنذر به وذكرى للمؤمنين ● اتبعوا
ما انزل اليكم من ربكم ولا تتبعوا من
دونه اولياء قليلا ما تذكرون ● وكم
من قرية اهلكنها فجاءها باسنا بياتا او هم
قائلون ● فما كان دعوىهم اذ جاءهم باسنا
الا ان قالوا انا كنا ظلمين ● فلنسـٔلن
الذين ارسل اليهم ولنسـٔلن المرسلين ●
فلنقصن عليهم بعلم وما كنا غائبين ●
والوزن يومئذ الحق فمن ثقلت موازينه
فاولئك هم المفلحون ● ومن خفت موازينه
فاولئك الذين خسروا انفسهم بما كانوا باياتنا
يظلمون ● ولقد مكنكم في الارض وجعلنا

अलिफ़्, लाम, मीम, साद्, (ऐ रसूल !) यह किताब (.क़ुर्आन) तुम पर (इस लिये) उतारी गई है, ताकि तुम इसके (शिक्षा-प्रद तथा प्रभाव जनक विषयों के) द्वारा (लोगों को अल्लाह के अज़ाब से) डराओ । और (इस लिये कि उसके उपदेश-प्रद आदेशों से) ईमानदारों को शिक्षा मिले । अतएव तुम्हारे दिल में इस (के प्रचार) से कोई संकोच (और रुकावट) न होनी चाहिये ॥

(और उन लोगों से कहना चाहिये कि यह .क़ुर्आन) जो तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से तुम पर अवतीर्ण हुआ है, उसी का अनुकरण करो । और अल्लाह के अतिरिक्त (जिनको तुमने अपना कुफ़् व नई २ प्रथाओं का पथ-प्रदर्शक और मित्र,कार्यकर्त्ता बना रक्खा है, उन) मित्रों के पीछे मत चलो । (मगर) तुम लोग (उपदेश पर) बहुत ही कम ध्यान देते हो और (यह नहीं सोचते कि इसी उपदेश पर ध्यान न देने और शिर्क व कुफ़् के कारण) कितनी ही बस्तियाँ ऐसी हैं (कि) जिनके रहने वालों को हमने (अचानक) मार डाला और उन पर हमारा अज़ाब (बे ख़बरी में कभी) रात को आ गया या (कभी) दोपहर के सोते समय । (और) जब हमारा अज़ाब (रूपी दण्ड) उन पर आया, तो उनके मुंह से इसके अतिरिक्त और कुछ न निकला, कि वास्तव में हम अत्याचारी थे (और यह सब कुछ हमारी ही करतूतों का फल है) ॥

(और जब प्रलय आयेगी) तो जिन लोगों के पास (नबी और) रसूल भेजे गये थे, हम निश्चित रूप से उनसे पूछेंगे (कि तुमने नबियों और रसूलों के उपदेश पर किस सीमा तक अमल किया) । और इन नबियों और रसूलों से भी पूछेंगे (कि तुमने अपने धार्मिक प्रचार के कर्तव्य को कहां तक पूरा किया) ॥

फिर हम (अपने) ज्ञानानुसार (जो कुछ वास्तविक हाल है) उनसे वर्णन कर देंगे । और हम (उनके अमलों के समय उनसे कुछ) दूर थोड़े ही थे । (उनसे तो केवल इस लिये पूछेंगे कि उनके पास उनके कर्मों का क्या जवाब है ?) ॥

और उस दिन (निश्चित रूप से कर्मों की) तोल होनी है (और) ठीक (तौर पर होनी है) । फिर जिनकी नेकियों का पल्ला भारी होगा, बस उन्हीं के मनोरथ सफल होंगे ॥

और जिनकी नेकियों का पल्ला हल्का होगा, तो यही वह लोग होंगे, जिन्होंने (हमारे) आदेशों (का इन्कार और उन) का विरोध करके अपने आपको हानि पहुँचाई ॥

(ऐ आदम की सन्तान ! तुम उस दिन से डरो) और (हमारे उपकारों की कृतज्ञता प्रकाश करो । देखो ! तो) हमने तुमको पृथ्वी में (रहने सहने और चलने फिरने के लिये) जगह दी—

ओर उसी में तुम्हारे लिये ज़िन्दगी के सामान मुहय्या किये। (सो) तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो ० और हम ही ने तुमको (यानी तुम्हारे बाप आदम को) पैदा किया और फिर तुम्हारी (यानी तुम्हारे बाप आदम की) शक्ल (व सूरत) बनाई। फिर हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि (ताज़ीमन) आदम के आगे झुको, तो (सब) झुक गए। मगर इब्लीस कि वह झुकने वालों में (शामिल) न हुआ ० (.खुदा ने इब्लीस से) पूछा कि जब हमने तुझको हुक्म दिया, तो (आदम के आगे) झुकने से तुझको कौन चीज़ माने हुई ? (वह) बोला-मैं इससे बेहतर हूं। (क्योंकि) मुझको तूने आग से पैदा किया और उसको ख़ाक से पैदा किया ० (इस पर .खुदा ने) फ़र्माया (कि तुझको यह शेख़ी है) तो बहिश्त से नीचे उतर, क्योंकि तेरी इतनी हस्ती नहीं कि तू बहिश्त में (रह कर) शेख़ी मारा करे। तू (यहां से) निकल (बाहर हो) कि (हज़ार) ज़लीलों में का (एक ज़लील) तू भी है ० वह लगा अर्ज़ करने कि जिस दिन (सब) लोग (दुबारा जिला कर) उठा खड़े किये जायँगे, उस दिन तक की मुझे मोहलत दे ० फ़र्माया (मंज़ूर) तुझको मोहलत दी गई ० (इस पर शैतान) बोला कि जैसी तूने मेरी राह मारी है, मैं भी तेरे सीधे रस्ते पर बनी आदम की ताक में बैठूं तो सही ० फिर अदबदा कर उनके आगे से आऊँ और उनके पीछे से (आऊं) और उनके दहिनी तरफ़ से (आऊं) और उनकी बाईं तरफ़ से (आऊं और जिस तरह बन पड़े उनको बहका कर रहूँ)। और तू अक्सर बनी आदम को (अपना) शुक्र गुज़ार नहीं पाएगा ० (.खुदा ने) फ़र्माया कि बहिश्त से निकल (बाहर हो और तू) ख़्वार (और) रांदए (दर्गाह है)। बनी आदम में से, जो तेरी पैरवी करेगा—

४

لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝ وَلَقَدْ
خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ
اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ لَمْ يَكُن
مِّنَ السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ
قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن
طِينٍ ۝ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَن
تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ۝ قَالَ
أَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ
قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ
الْمُسْتَقِيمَ ۝ ثُمَّ لَآتِيَنَّهُم مِّن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ
وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَن شَمَائِلِهِمْ ۖ وَ
لَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ۝ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا
مَذْءُومًا مَّدْحُورًا ۖ لَّمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ

और उसमें ज़िन्दगी के (समस्त) साधन तुम्हारे लिये उत्पन्न कर दिये। मगर तुम (इन प्रसादों और उपकारों के लिये) बहुत ही कम अनुग्रहीत हो॥

और हमने तुमको (अर्थात् तुम्हारे बाप आदम को) पैदा किया। फिर हम ही ने तुम्हारी (अर्थात् आदम की आकृति व) रूप बनाया। फिर हमने फ़रिश्तों से फ़र्माया कि आदम को (सम्मान-पूर्वक) मस्तक नवाओ। तो सबने मस्तक नवाया, सिवा इबलीस के (कि) वह सज्दा करने वालों (अर्थात् मस्तक नवाने वालों) में न था॥

(पवित्र अल्लाह ने इससे) पूछा (कि) जब मैं तुझे हुक्म दे चुका था, तो फिर क्या बात तुझे सज्दा करने से रोकती थी ? उसने उत्तर दिया कि मैं आदम से अच्छा हूँ। मुझको तूने आग (जैसी) शुद्ध वस्तु से पैदा किया (है) और उसे मिट्टी (जैसी अशुद्ध चीज़) से बनाया है॥

(इस पर अल्लाह ने फ़र्माया) तुझे (अपनी बड़ाई पर इतना घमंड है)। तू यहां से (नीचे) उतर, कि यहां रह कर तू गर्व नहीं कर सकता, निकल जा !! निश्चित रूप से तू (अत्यन्त) नीच व्यक्तियों में से है॥

(यह हुक्म सुन कर) इब्लीस ने कहा कि मुझे प्रलय के दिन तक (जीवित रहने का) अवसर दे। अल्लाह ने फ़र्माया कि (जा) तुझको अवसर दे दिया गया॥

(फिर) वह (गुस्ताख़) बोला, अच्छा तो जैसा तूने मुझे ख़राबी में डाला है, मैं (भी) इन (आदम के वंशजों) को बहकाने के लिये तेरे (बताये हुए) सीधे मार्ग (के नाके) पर जा बैठूंगा। फिर (इनको पथ भ्रष्ट और बरबाद करने के लिये) उनके आगे से और उनके पीछे से और उनके दायें से और उनके बायें से आऊँगा। (और जिस तरह बन पड़ेगा, उन्हें सीधे मार्ग पर चलने न दूंगा) और (ऐसी कोशिश करूंगा कि) तू इनमें से बहुधा को (ईमानदार और अपने प्रसादों का) अनुग्रहीत नहीं पायेगा। पवित्र अल्लाह ने फ़र्माया कि (जा और) निकल यहां से, नीच व निकृष्ट। (मुझे) शपथ है (अपने मान व तेज की, कि) इन (आदम के वंश) में से जो तेरे कहने पर चलेगा—

हम बिला शुबहा (तुझसे और उनसे यानी) तुम सब से जहन्नम भर देंगे ० और (हमने आदम से कहा कि) ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीबी (हव्वा) बहिश्त में रहो और जहाँ से चाहो-खाओ (पियो)। मगर इस दरख़्त (गन्दुम) के पास (भी) न फटकना। (ऐसा करोगे) तो तुम (आप अपना) नुक़सान करलोगे ० फिर शैतान ने दोनों (मियां बीबी) को बहकाया, ताकि उनके पर्दा करने की चीज़ें, जो उन (की नज़र) से मख़्फ़ी थीं (यानी उनका आगा पीछा) उन्हें खोल दिखाए। और (उन दोनों से) लगा कहने कि तुम्हारे पर्वर्दिगार ने जो इस दरख़्त (के फल खाने) की तुमको मनाही कर दी है, तो हो न हो इसका सबब यही है कि कहीं (ऐसा न हो) तुम दोनों फ़रिश्ते बन जाओ या दोनों हमेशा (हमेशा को जीते) रहो ० और उनसे क़स्में खा खा कर बयान किया कि मैं हक़ीक़त में तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूँ० ग़रज़ धोखे से उनको (दरख़्त ममनू के खाने की तरफ़) मायल कर लिया। तो जूँही उन्होंने दरख़्त (के फल को) चक्खा, तो दोनों के पर्दा करने की चीज़ें, उनको दिखाई देने लगीं। और लगे बहिश्त के पत्तों को अपने ऊपर चिपकाने। और उनके पर्वर्दिगार ने उन को डाँटा कि क्या हमने तुमको इस दरख़्त (के खाने) की मनाही नहीं की थी ? और (क्या) तुमसे नहीं कह दिया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है ० (यह) दोनों लगे कहने कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमने अपने तईं आप तबाह किया और अगर तू हमको माफ़ नहीं फ़र्माएगा और हम पर रहम नहीं करेगा—

جهنم منكم اجمعين ۝ ويآدم اسكن انت
وزوجك الجنة فكلا من حيث شئتما
ولا تقربا هذه الشجرة فتكونا من الظلمين ۝
فوسوس لهما الشيطن ليبدي لهما ما وري
عنهما من سوءتهما وقال ما نهكما ربكما
عن هذه الشجرة الا ان تكونا ملكين
او تكونا من الخلدين ۝ وقاسمهما اني لكما
لمن النصحين ۝ فدلهما بغرور فلما ذا
قا الشجرة بدت لهما سوءتهما وطفقا يخصفن
عليهما من ورق الجنة وناديهما ربهما
الم انهكما عن تلكما الشجرة واقل لكما
ان الشيطن لكما عدو مبين ۝ قالا ربنا
ظلمنا انفسنا وان لم تغفر لنا وترحمنا

मैं अवश्य (उनसे और तुझसे अर्थात) तुम सब से नर्क को भर दूंगा ॥

और (फिर हमने आदम को हुक्म दिया कि) ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी पत्नी-(दोनों) स्वर्ग में रहो और (इस में) जहां से चाहो, खाओ (पियो) मगर इस (गेहूँ के) वृक्ष के निकट न जाओ। (यदि तुम इसके पास गये और हमारी अवज्ञा की) तो तुम सीमा से बढ़ने वालों में होगे (और हानि उठाओगे) ॥

फिर शैतान ने इन्हें वहकाया, जिस से कि उन दोनों पर एक दूसरे के लज्जा-स्थान प्रकट करदे, जो (अब तक) उनसे छिपे हुये थे (और उनकी पाशविक वासनाओं को उकसादे)। और (यह) कहा (कि) तुम्हारे पालन कर्त्ता ने तुम दोनों को इस पेड़ (के फल खाने) से केवल इस लिये मना किया है, कि कभी तुम फ़रिश्ते न बन जाओ या अमर-जीवन न प्राप्त करलो और उनके सामने सौगन्ध खाई कि मैं वास्तव में तुम्हारा हितैषी हूँ (और जो कुछ तुमसे कहता हूँ, तुम्हारी ही भलाई के लिये कहता हूँ)॥

अतः उसने (छल व) धोखे से उनके पांव को फिसला दिया (और उनको निषेध किये हुए पेड़ का फल खाने की ओर आकर्षित कर लिया)। तो जब उन्हों ने इस पेड़ (के फल) को चक्खा (तो) उनकी गुप्त इन्द्रियां उनको दीखने लगीं (और स्वर्ग के पवित्र वस्त्र-अर्थात् वह वस्त्र जो केवल पाप रहित मनुष्य पहिनता है, जो उस समय तक उनके शरीर पर था-उन से छीन लिया गया) और वह (मारे लज्जा के अपना शरीर ढकने के लिये) अपने ऊपर स्वर्ग (के पेड़ों) के पत्तों पर पत्ते चिपकाने लगे। और उनके पालन कर्त्ता ने उन्हें (क्रोध से) ललकारा (और कहा) कि क्या मैंने तुम दोनों को इस पेड़ (के पास जाने और इसका फल खाने) से नहीं मना किया था ? और नहीं बता दिया था, कि शैतान (के कहने में न आना। यह) तुम्हारा खुला शत्रु है ॥

दोनों ने प्रार्थना की, (कि) ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! (तूने निस्सन्देह मना किया था)। हमने (तेरा कहा न मान कर) अपनी जानों पर (बड़ा) अत्याचार किया और (अब) हमको यदि तूने नहीं क्षमा किया। और हम पर दया न की—

لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ● قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ
اِلٰى حِيْنٍ ● قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ
وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ● يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ
لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا وَلِبَاسُ
التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ
يَذَّكَّرُوْنَ ● يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ
كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا
لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ
وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ اِنَّا جَعَلْنَا
الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ● وَاِذَا
فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا
وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ

ع

اتقولون

तो हम बिलकुल बर्बाद हो जायँगे ० (इस पर ख़ुदा ने) फ़र्माया कि तुम (मियां बीबी और शैतान तीनों बहिश्त से) नीचे उतर जाओ । तुम में एक का दुश्मन एक और तुम (बनी आदम) को एक वक़्त ख़ास (यानी मरते दम) तक ज़मीन पर रहना (होगा) । और (तुम्हारा) सामान (ज़ीस्त भी वहीं मुहय्या है) ० (ख़ुदा ने यह भी) फ़र्माया कि ज़मीन ही में ज़िन्दगी बसर करोगे और उसी में मरोगे और उसी में से (क़यामत के दिन दुबारा) निकाल खड़े किये जाओगे ० ऐ बनी आदम ! हमने तुम्हारे लिये (ऐसा) लिबास उतारा है, जो तुम्हारे परदे की चीज़ों को छुपाए और (मूजिब) ज़ीनत (भी हो) । और पर्हेज़गारी का लिबास-यह (सब लिबासों से) बेहतर है । यह (यानी लिबास का होना) ख़ुदा की (क़ुद्रत की) निशानियों (में) से है, ताकि लोग (इस बात में) ग़ौर करें ० ऐ बनी आदम ! (कहीं) शैतान तुमको (राह ख़ुदा से) बहका न दे, जिस तरह कि उसने तुम्हारे वालिदैन (आदम और हव्वा) को बहिश्त से निकलवाया कि लगा उनका (बहिश्ती) लिबास उनसे उतरवाने, ताकि उनके पर्दा करने की चीज़ें उन पर ज़ाहिर कर दे । (ग़रज़ इग़वाए शैतान से बचते रहो, क्योंकि) वह और उसकी ज़ुर्रियात तुमको (उधर से) देखते रहते हैं, जिधर से तुम उनको नहीं देखते । हमने शैतानों को उन्हीं लोगों का यार (हम्दम) बनाया है, जो ईमान नहीं लाते ० और (ऐसे गुस्ताख़ हैं कि) जब किसी बेजा हर्कत के मुर्तकिब होते हैं, तो कहते हैं कि हमने अपने बड़ों को इसी (तरीक़े) पर (चलते) पाया और अल्लाह ने हमको इसकी इजाज़त दी है । (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अल्लाह तो बेजा काम की इजाज़त देता नहीं—

तो हम निश्चित रूप से (तबाह व) बरबाद हो जायँगे ॥

फ़र्माया (कि अब) तुम (इस योग्य नहीं रहे कि स्वर्ग में रह सको । तुम दोनों भी इबलीस के साथ) नीचे उतरो । (अब) तुम एक दूसरे के शत्रु रहोगे । और तुम्हारे (रहने सहने के) लिये पृथ्वी में ठिकाना (कर दिया गया) । और वहीं एक नियत समय तक (ज़रूरत का तमाम) सामान (तुम्हारे लिये सुलभ) है ॥

(और यह भी) फ़र्माया (कि) तुम इसी (पृथ्वी ही) में जिओगे । और इसी पृथ्वी में मरोगे और (प्रलय के दिन) इसी में से उठाये जाओगे ॥

ऐ आदम की सन्तान ! हम तुम्हारे लिये ऐसे वस्त्र उतारे, जो तुम्हारे लज्जा-स्थानों को ढांकें और शोभा का कारण हों । और (असली वस्त्र तो इन्द्रिय-निग्रहता व) संयमता के वस्त्र हैं (और) यह (वस्त्र समस्त शोभा दायक वस्त्रों से) श्रेष्ठ हैं । यह (अर्थात् वस्त्रों का सामान और जीवन की दूसरी आवश्यक्ताओं का प्राप्त व सुलभ होना)--अल्लाह की निशानियों में से है, ताकि लोग (इन्हें देख कर ध्यान व विचार से काम लें और) उपदेश ग्रहण करें ॥

ऐ आदम की सन्तान ! (कहीं) शैतान तुमको (भी) बहका (सिखा कर किसी विपत्ति में लिप्त) न (कर) दे; जैसा कि तुम्हारे मां बाप (आदम व हव्वा) को इसने (बहकाया और) स्वर्ग से बाहर निकलवा दिया । (और) ऐसी दशा में (निकलवाया) कि उनके वस्त्र भी उनसे छिनवा दिये, ताकि (इन्हें बे पर्दा करदे और) इनके गुप्त स्थान इन्हें दिखा (कर इनकी वासनायें उकसा) दीं । और वह और उसकी सेना तुम्हें (हर समय) इस प्रकार ताकते रहते हैं कि तुम उन्हें नहीं देख सकते (अर्थात् इस प्रकार तुम्हारे दिल में दुविचार डाल देते हैं कि तुम्हें पता नहीं चलता । अतएव तुम ऐसे शत्रुओं के दाव, पेच से हर समय और हर घड़ी सावधान रहो और उन्हें अपना मित्र न बनने दो और याद रक्खो ! कि) हम निस्सन्देह (इन) शैतानों को उन्हीं लोगों का मित्र होने देते हैं, जो ईमान नहीं लाते ॥

और (जो अपनी इन्द्रियों के सेवक होते हैं कि) जब कोई बुरा काम करते हैं (और इससे उन्हें मना किया जाता है) तो कहते हैं (कि) हमने (तो) अपने बाप (व दादों) को इसी (तरीक़े) पर (चलते हुए) पाया है और अल्लाह ने (भी) हमको इसी का हुक्म दिया है । (तुम ऐ रसूल ! इन मूर्खों को समझाओ और इनसे) कहो (कि) अल्लाह तआला (तो कभी किसी) बुरे काम (या निर्लज्जता की बात के करने) का हुक्म नहीं देता—

أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ● قُلْ أَمَرَ رَبِّي
بِالْقِسْطِ ۖ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ● كَمَا بَدَأَكُمْ
تَعُودُونَ ● فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ
الضَّلَالَةُ ۗ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِن
دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ● يَا بَنِي
آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا
وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ●
قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ
وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ آمَنُوا
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ كَذَٰلِكَ
نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ● قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ
رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ

४

आया तुम लोग बे (सोचे) समझे .खुदा पर झूठ बोलते हो ? ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मेरे पर्वर्दिगार ने तो (हमेशा) ठीक (और बजा काम का) हुक्म दिया है । और (फ़र्माया है कि) हर एक नमाज़ के वक़्त (तुम सब .खुदा की तरफ़) मुतवज्जह हो जाया करो और ख़ालिस उसी की फ़र्मांबर्दारी मद्दे नज़र रख कर, उसको पुकारो ० जिस तरह तुमको पहिले (पैदा) किया था (उसी तरह क़यामत के दिन तुम) दुबारा भी (पैदा) होगे ० (उसी ने) एक फ़रीक़ को हिदायत दी और फ़रीक़ है कि गुमराही उन (के सर) पर सवार है । इन लोगों ने .खुदा को छोड़ कर शैतानों को (अपना) दोस्त बनाया और (बाईहमा) समझते हैं कि वह राह रास्त पर हैं ० ऐ बनी आदम ! हर एक नमाज़ के वक़्त (लिबास वग़ैरा से) अपने तईं आरास्ता कर लिया करो और खाओ और पिओ और .फ़ुज़ूल ख़र्चियां न किया करो। क्योंकि .खुदा .फ़ुज़ूल ख़र्च करने वालों को पसन्द नहीं करता ० (ऐ पैग़म्बर ! उन लोगों से) पूछो कि अल्लाह ने जो ज़ीनत के (साज़ व सामान) और खाने (पीने) की सुथरी चीज़ें अपने बन्दों के लिये पैदा की हैं, (उनको) किसने हराम किया है ? (यह तो इसका क्या जवाब देंगे, तुम ही इनको) समझा दो कि जो लोग (इस) दुनिया की ज़िन्दगी में ईमान लाए हैं, क़यामत के दिन यह (नेअ्मतें) ख़ास कर उन ही को दी जाएँगी । इसी तरह हम (अपने) अहकाम उन लोगों के लिये जो समझ रखते हैं, तफ़सील के साथ बयान करते हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मेरे पर्वर्दिगार ने तो सिर्फ़ बेहयाई के कामों को मना फ़र्माया है-वह (बेहयाई के काम) ज़ाहिर हों तो, और पोशीदा हों तो, और गुनाह को–

(तो) क्या तुम बे जाने बूझे (और बिना जांच किये) अल्लाह (तआ़ला)की तरफ़ (ऐसी) बातें लगाते हो(जो बिलकुल ग़लत और निराधार हैं)॥

(और यह भी उनसे) कह दो (कि) मेरे पालन कर्त्ता ने (तो) न्याय की आज्ञा दी है (अर्थात् समता की सीमा से न बढ़ने और दुष्कर्मों में लिप्त न होने की) । और (विशेषतया) इसकी कि हर उपासना के समय अपना ध्यान (अल्लाह ही की ओर) रक्खा करो और उसकी उपासना व आराधना इस प्रकार किया करो कि ख़ालिस उसी के लिये हो । (उसके हुक्म के मुक़ाबले में बाप दादा की प्रथाओं को श्रेष्ठता न दो । क्योंकि) जिस तरह उसने पहिले तुमको पैदा किया था (उसी तरह प्रलय के दिन) फिर तुम पैदा होगे (और अपने प्रत्येक भले व बुरे का हिसाब .खुद ही तुमको देना होगा । उस रोज़ तुम्हारे बाप दादे तुम्हारी नेकी के हिस्सेदार या बदी के ज़िम्मेदार न होंगे) ॥

(तुम में से) कुछ लोगों को (तो अल्लाह ने नेक) हिदायत दी (है) । और कुछ कुछ (लोग ऐसे) हैं कि उन पर पथ-भ्रष्टता स्थित हो गई (है) । इन ही (पथ-भ्रष्ट) लोगों ने पवित्र अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को (अपना) मित्र (व कारधारी) बनाया और (फिर उस पर) यह समझते हैं कि बस सीधे रास्ते पर हैं ॥

ऐ आदम की सन्तान ! (इस पथ-भ्रष्ट समूह की तुम किसी बात में रीस न करो और इसकी तरह नंगे होकर परिक्रमा न किया करो, बल्कि जहां तक हो सके स्वच्छ वस्त्रों का विचार रक्खो । मुख्यतया) प्रत्येक नमाज़ के समय (तो) अपने (साफ़ सुथरे और उत्तम) कपड़े (अवश्य) पहिन लिया करो और (काफ़िरों की तरह अपनी राय से हलाल चीज़ों को अपने ऊपर हराम न करो । बल्कि जो हलाल और सुथरी वस्तुयें .खुदा ने तुमको प्रदान की हैं, उनको)खाओ पियो । लेकिन (खाने, पीने और पहिनने में) अपव्यय (.फ़ुज़ूल ख़र्ची) न (किया) करो । क्योंकि अल्लाह .फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वालों को पसन्द नहीं करता ॥

(ऐ रसूल ! जिन लोगों ने हलाल चीज़ों को अपने लिये हराम कर रक्खा है, उनसे यह तो) पूछो कि अल्लाह के (प्रदान किये हुए) वस्त्रों को, जो उसने अपने बन्दों के लिये पैदा किये हैं और खाने पीने की पवित्र वस्तुओं को किसने हराम किया ? कहो (कि .खुदा ने तो इन चीज़ों को हराम किया नहीं । तुमने .खुद अपनी तरफ़ से हराम कर लिया है । अतएव) प्रलय के दिन यह वस्तुयें केवल उन्हीं लोगों के हिस्से में आवेंगी, जो इस संसार के जीवन में (.खुदा पर सच्चे दिल से) ईमान ले आये (और जिन्होंने उसके आदेशों में अपनी इन्द्रियों की वासनाओं और बाप दादों के अनुकरण को दख़्ल नहीं दिया) । इसी प्रकार हम उन लोगों के लिये जो समझ रखते हैं, अपनी आज्ञाओं की व्याख्या कर देते हैं ॥

(और ऐ रसूल ! इनसे यह भी) कहो कि मेरे पालन कर्त्ता ने तो बस (इन चीज़ों को) हराम किया है; समस्त बुरी (और निर्लज्जता की) बातों को-चाहे वह प्रकट (रूप से की गई) हों, या गुप्त (रूप से) । और (हर प्रकार के) पाप को

وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ
بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝
وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ
سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝ يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا
يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي
فَمَنِ اتَّقَى وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا
عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بِآيَاتِهِ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ
حَتَّى إِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوا أَيْنَ مَا
كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا
وَشَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۝ قَالَ

ادخلوا

और नाहक़ (नाहक़ किसी पर) ज़ियादती करने को। और इस बात को कि तुम किसी को ख़ुदा का शरीक क़रार दो, जिसकी उसने कोई सनद नहीं उतारी। और यह कि बे सोचे (समझे) ख़ुदा पर लगो बोहतान बांधने० और हर एक क़ौम (के मिटने) का एक वक़्त (मुक़र्रर) है। फिर जब उन का वक़्त आ पहुँचता है, तो (उससे) न एक घड़ी पीछे रह सकते हैं, और न (एक घड़ी) आगे बढ़ सकते हैं ० (जब हमने आदम को नाफ़र्मानी की सज़ा में बहिश्त से निकाला, तो उनकी नस्ल की रूहों को जमा करके यह भी फ़र्माया था कि) ऐ बनी आदम ! जब कभी तुम ही में से (हमारे) पैग़म्बर तुम्हारे पास पहुँचें (और) हमारे अहकाम तुमको पढ़ पढ़ कर सुनाएँ, तो (उनका कहा मान लेना)। क्योंकि जो शख़्स (उनके कहने के मुताबिक़) पर्हेज़गारी इख़्तियार करेगा और अपनी (हालत की) इस्लाह कर लेगा, तो (क़यामत के दिन) उन पर न तो (किसी तरह का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वह (किसी तौर पर) आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे ० और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाएँगे और उनसे अकड़ बैठेंगे, वही दोज़ख़ी होंगे कि वह दोज़ख़ में हमेशा (हमेशा) रहेंगे ० तो उससे बढ़ कर ज़ालिम (और) कौन होगा, जो ख़ुदा पर झूठ (झूठ) बोहतान बांधे, या उसकी आयतों को झुठलाए। यही लोग हैं, जिनको (तक़दीर के) लिखे हुवे में से उनका हिस्सा (रिज़्क़ वग़ैरा तो) उनको पहुँचेगा। यहां तक कि जब हमारे फ़रिश्ते उनकी रूहें क़ब्ज़ करने के लिये उनके सामने आ मौजूद होंगे, तो (उनसे) पूछेंगे कि अब वह कहाँ हैं, जिनको तुम ख़ुदा के सिवा (हाजत रवाई के लिये) बुलाया करते थे ? तो वह कहेंगे कि वह तो हमसे ग़ायब (गुल्ला) हो गए। और अपने ऊपर आप गवाही देंगे (यानी इक़रार करेंगे) कि बेशक वह काफ़िर थे ० (उस पर ख़ुदा उन को) हुक्म देगा—

और नाहक़ (किसी पर) ज़ुलम (व ज़बरदस्ती) करने को। और (शेष) इसको, कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक करो कि जिसका उसने कोई प्रमाण (तुम्हारे पास) नहीं भेजा। और इसको (भी) कि अल्लाह की तरफ़ ऐसी बातें लगाओ, जिन (की वास्तविक दशा) से तुम अभिज्ञ नहीं हो ॥

(इन पथ भ्रष्टों को केवल इस कारण से कि अभी तक इन पर कोई अज़ाब नहीं उतरा-यह न समझना चाहिये कि वह सत्य पर हैं)। हर एक जाति के लिये (अज़ाब अर्थात् दण्ड का) एक समय (नियत) है। अतः जिन लोगों (के अज़ाब) का समय आ जाता है, तो वह (किसी तरह उस से मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकें)। न एक क्षण की देर कर (के उस से बच) सक्ते हैं और न (एक क्षण की) जल्दी (करके) ॥

ऐ आदम की सन्तान ! (तुमसे हमने यह कह दिया था कि) जब (कभी) तुम (ही) में से (हमारे रसूल) तुम्हारे पास आयें, जो हमारी आयतें तुमको पढ़कर सुनायें, तो (तुम इनके पालन करने से मुंह न मोड़ना। क्योंकि) जो लोग (इनका अनुसरण करके पापों से बचाव व) परहेज़गारी इख़्तियार करेंगे और (अपने कर्मों में) सुधार कर लेंगे, तो उन्हें (प्रलय के दिन) न कोई डर होगा और न वह (किसी प्रकार) शोकातुर होंगे ॥

और जो लोग हमारी आयतों को झूठा ठहरायेंगे और उनसे (विमुखता व) सर्कशी करेंगे, वह नार्कीय होंगे। (और) सदैव सदैव नर्क (ही) में रहेंगे ॥

फिर (इसके बाद भी) जो मनुष्य अल्लाह तआला पर (झूठ) दोष लगावे (और ऐसी बातें उसके नाम लगावे,जो उसने नहीं फ़र्माईं) या उसकी आयतों को झूठा ठहराये (अर्थात् जो उसके आदेश हैं, उन्हें ख़ुदा के आदेश न समझे)-उस से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा ? इन लोगों को (भोजन आदि का) जो हिस्सा (इनके भाग्य में) लिखा है, वह (तो) इन्हें मिले (ही) गा। यहां तक कि (उनकी ज़िन्दगी के दिन पूरे हो जायँगे-उस समय) जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनके प्राण निकालने उनके पास आयेंगे, तो पूछेंगे (कहो !) वह (तुम्हारे ख़ुद बनाये हुए पूज्य अब) कहाँ हैं ? जिन्हें तुम ख़ुदा को छोड़ कर (अपनी सहायता के लिये) पुकारा करते थे। वह (अत्यन्त लज्जित होकर) कहेंगे (कि) वह (तो) हमसे छिप गये। और अपने विरुद्ध आप गवाही देंगे (और इक़रार करेंगे) कि निस्सन्देह हम काफ़िर थे ॥

ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُم مِّنَ الْجِنِّ
وَالْإِنسِ فِي النَّارِ ۖ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَّعَنَتْ
أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ
لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا
ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا
تَعْلَمُونَ ۝ وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ
لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ
تَكْسِبُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا
عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ
الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ
نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ۝ لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن
فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ

कि और काफ़िर उम्मतें (अज़ क़िस्म जिन व इन्स) जो तुमसे पहिले हो गुज़री हैं, उनमें (मिल कर तुम भी) दोज़ख़ में जा दाख़िल हो। (अगर्चे यह लोग सब दोज़ख़ में जायंगे, मगर इस क़द्र एक दूसरे के दुश्मन होंगे कि) जब एक उम्मत दोज़ख़ में जाएगी, तो अपनी साथन (यानी दूसरी उम्मत) पर लानत करेगी। यहां तक कि जब सब के सब दोज़ख़ में जमा होंगे, तो इनमें की पिछली उम्मत अपने से पहिली उम्मत के हक़ में बद दुआ करेगी कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार! इनही लोगों ने हमको गुमराह किया, तू इनको दोज़ख़ का दोहरा अज़ाब दे ० (इस पर अल्लाह तआ़ला) फ़र्माएगा कि (तुम में से) हर एक (फ़रीक़) को दोहरा (अज़ाब)-मगर तुम को (इसकी वजह) मालूम नहीं ० और (यह सुन कर) उनमें के पहिले लोग पिछले लोगों से कहेंगे कि अब तो तुमको (तख़फ़ीफ़ अज़ाब के लिए) हम पर किसी तरह की तरजीह न रही। तो (जिस तरह हम अपने किये की सज़ा में दोहरे अज़ाब के मज़े पड़े चख रहे हैं, तुम भी) अपने किए की सज़ा में दोहरे अज़ाब (के मज़े) चक्खो ० बेशक, जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे अकड़ बैठे, न तो उनके लिए आस्मान के दर्वाज़े खोले जायँगे और न बहिश्त (ही) में दाख़िल होने पायेंगे। यहां तक कि ऊँट सूई के नाके में से (होकर न) गुज़र जाय। और मुज्रिमों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं ० कि उनके लिए आग का बिछौना होगा और उनके ऊपर से (आग ही का) ओढ़ना। और सर्कश लोगों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं ० और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने (अपने मक़दूर भर) नेक अमल (भी) किए—

(फिर प्रलय के दिन) अल्लाह तआ़ला (उनसे) फ़र्मायेगा कि जिनों व आदमियों की जो (अवज्ञाकारी) उम्मतें तुम से पहिले गुज़र चुकी हैं, उनके साथ तुम (भी) नर्क में जाओ। (इस समय इन अवज्ञाकारियों की यह दशा होगी कि) जब कोई उम्मत (नर्क में) दाख़िल होगी, तो अपनी जैसी (पहिली अवज्ञाकारी) उम्मत पर लानत भेजेगी। यहाँ तक कि जब सब (के सब पापी और अवज्ञाकारी) नर्क में एकत्रित हो जायँगे, तो उनमें से (प्रत्येक) पिछली (उम्मत) अपने से पहिली (उम्मत) के विषय में कहेगी (कि) ऐ हमारे पालन कर्त्ता! हमको इन्हीं लोगों ने पथ-भ्रष्ट किया था, इस लिये तू इन्हें नर्क का दोहरा अज़ाब दे। अल्लाह फ़र्मायेगा कि (तुम) सबके लिये दोहरा (ही अज़ाब) है। (क्योंकि अगर उन्होंने बुरा आदर्श क़ायम किया था, तो तुमने उनकी दशा से शिक्षा ग्रहण नहीं की। क़ुसूर में दोनों बराबर हो गये)। मगर तुम (इसको) समझते नहीं॥

और (अल्लाह तआ़ला का यह जवाब सुन कर) उनमें के पहिले लोग बाद के लोगों से कहेंगे कि तुमको हम पर कोई श्रेष्ठता नहीं। अतएव अपनी करतूतों के बदले तुम (भी) उसी अज़ाब का स्वाद चक्खो, (जिसकी हमारे लिये इच्छा कर रहे थे)॥

(अभिप्राय यह है कि) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झूठ ठहराया और उनसे (विमुखता व) सर्कशी (इख़्तियार) की, तो न (तो) उनके लिये आकाशीय (कृपाओं के) दर्वाज़े खोले जायंगे और न वह (कभी) स्वर्ग (ही) में दाख़िल हो सकेंगे-जब तक कि ऊंट (ही) सुई के नाके में से न गुज़र जाय। (और ऊंट का सुई के नाके में से निकलना असम्भव है)। और (ऐसे) अपराधियों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं (कि) इन (के नीचे) का बिछौना (भी) नर्क (की आग) का (होता) है और उनके ऊपर का ओढ़ना (भी। अर्थात नर्क में इन्हें आग चारों तरफ़ से घेर लेती है)। और हम (तो कह चुके हैं कि ऐसे) सर्कश (व अवज्ञाकारी) लोगों को (हम) ऐसी (ही) सज़ा दिया करते हैं॥

और जो लोग (हम पर और हमारी आयतों पर) ईमान ले आये और उन्होंने नेक काम (भी) किये—

نَفۡسًا اِلَّا وُسۡعَهَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ هُمۡ فِيۡهَا
خٰلِدُوۡنَ ۝ وَنَزَعۡنَا مَا فِيۡ صُدُوۡرِهِمۡ مِّنۡ غِلٍّ
تَجۡرِيۡ مِنۡ تَحۡتِهِمُ الۡاَنۡهٰرُ وَقَالُوا الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ
الَّذِيۡ هَدٰىنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهۡتَدِيَ لَوۡلَاۤ
اَنۡ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَقَدۡ جَآءَتۡ رُسُلُ رَبِّنَا بِالۡحَقِّ
وَنُوۡدُوۡۤا اَنۡ تِلۡكُمُ الۡجَنَّةُ اُوۡرِثۡتُمُوۡهَا بِمَا
كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۝ وَنَادٰۤى اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ اَصۡحٰبَ
النَّارِ اَنۡ قَدۡ وَجَدۡنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلۡ
وَجَدۡتُّمۡ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمۡ حَقًّا قَالُوۡا نَعَمۡ فَاَذَّنَ
مُؤَذِّنٌۢ بَيۡنَهُمۡ اَنۡ لَّعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيۡنَ ۝
الَّذِيۡنَ يَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَيَبۡغُوۡنَهَا
عِوَجًا وَهُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ كٰفِرُوۡنَ ۝ وَبَيۡنَهُمَا
حِجَابٌ وَعَلَى الۡاَعۡرَافِ رِجَالٌ يَّعۡرِفُوۡنَ كُلًّا

بِسِيۡمٰهُمۡ

(और) हम तो किसी शख़्स पर उसकी समाई से बढ़ कर बोझ डाला ही नहीं करते। यही लोग जन्नती होंगे कि वह उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे ० और जो कुछ उनके दिलों में (एक दूसरे की तरफ़ से दुनियावी) रन्जिश होगी (उसको भी) हम निकाल देंगे। उनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी और बोल उठेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है, जिसने हमको इस (बहिश्त में आने) का रस्ता दिखाया। और अगर ख़ुदा हमको हिदायत न करता, तो हम (किसी तरह पर जन्नत का) रस्ता (ढूंढे) न पाते। बेशक हमारे पर्वर्दिगार के रसूल (दीन) हक़ लेकर आए थे ० और इन लोगों से पुकार कर कह दिया जायगा कि यही जन्नत है, जिसके तुम उन अमलों की बदौलत वारिस क़रार दिए गए हो, जिनको तुम (दुनिया में) करते थे ० और जन्नती लोग दोज़ख़ियों को पुकारेंगे (और पूछेंगे) कि हमारे पर्वर्दिगार ने जो हमसे वादा किया था, हमने तो (उसको) सच्चा पाया। तो क्या (तुम से) जो तुम्हारे पर्वर्दिगार ने वादा किया था, तुमने (भी उसको) सच्चा पाया (या नहीं ?)। वह कहेंगे-हां, इतने में (एक) पुकारने वाला (फ़रिश्ता) उनमें पुकार उठेगा कि ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत ०, जो अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोकते और (लोगों के दिलों में शुबहे डाल कर) उसमें कजी पैदा करनी चाहते और वह (रोज़) आख़िरत से (भी) इन्कार रखते थे ० और जन्नतियों और दोज़ख़ियों के बीच में एक आड़ (यानी हद्द फ़ासिल) होगी (जिसका नाम है, आराफ़)। और (उस) आराफ़ पर कुछ लोग होंगे, जो (जन्नतियों और दोज़ख़ियों) दोनों (फ़रीक़ों में से बाज़ २) को उनकी सूरतों से (जो दुनिया में देखी थीं) पहिचान लेंगे—

(और कोई नेक काम ऐसा नहीं है, जो मनुष्य की शक्ति से बाहर हो। क्योंकि) हम किसी मनुष्य को उसकी ताक़त (व शक्ति) से अधिक तकलीफ़ नहीं देते। ऐसे (ही ईमान वाले और नेक अमल लोग) स्वर्गीय हैं (और) वह सदैव स्वर्ग (ही) में रहेंगे ॥

और (उनमें नर्क वासियों की तरह परस्पर नफ़रत व अदावत न होगी, बल्कि) जो कुछ उनके दिलों में (सांसारिक झगड़ों के कारण नफ़रत व) अदावत होगी (भी, तो) हम उसे दूर कर देंगे। (ताकि वह अत्यन्त सुख और चैन से रहें। और वहां उनके लिये तरह तरह के बाग़ और महल होंगे और) उनके नीचे नहरें बहती होंगी। और वह (ख़ुश होकर) कहेंगे कि अल्लाह का हज़ार हज़ार एहसान है, जिसने इस (सुख व आनन्द के स्थान) तक हमें पथ-प्रदर्शित किया। और हम (तो कभी भी) हिदायत न पाते-अगर अल्लाह हमारा पथ-प्रदर्शक न बनता (और अपने रसूलों को भेज कर हमें पथ-भ्रष्टता से न बचाता)। निस्सन्देह हमारे पालन कर्त्ता के रसूल सत्य (सन्देश) लेकर (संसार में) आये थे। और फिर (अदृष्ट से) आवाज़ आयेगी कि यही वह स्वर्ग है (जिसके) तुम (अल्लाह के, और नबियों व रसूलों के कथनानुसार) अपने (नेक) कर्मों की बदौलत वारिस बनाये गये हो ॥

और स्वर्गवासी नर्क वासियों को पुकारेंगे (और उनसे कहेंगे) कि जो वादा हमारे पालन कर्त्ता ने (नबियों व रसूलों के द्वारा) हमसे किया था, हमने तो (उसे) सच्चा पाया। (तुम कहो !) तुमने भी अपने पालन कर्त्ता के वादे को सच्चा पाया ? वह कहेंगे-हां, (वास्तव में)। इस पर एक पुकारने वाला उनके बीच पुकारेगा कि उन ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत, जो (संसार में) अल्लाह की राह (पर चलने) से (लोगों को) रोकते और उसमें दोष पैदा करना चाहते थे और वह प्रलय से भी इन्कार करते थे ॥

और स्वर्ग वासियों और नर्क वासियों के बीच एक दीवार (हायल) होगी (जिसे आराफ़ कहते हैं)। और (इस) आराफ़ पर कुछ लोग (ऐसे खड़े) होंगे, जो समस्त (लोगों के स्वर्गीय या नार्कीय होने) को उनके चेहरे से पहिचान लेंगे—

बِسِيمٰهُمْ ۚ وَنَادَوْا أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۚ
لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ۝ وَإِذَا صُرِفَتْ
أَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ أَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوا رَبَّنَا لَا
تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ۝ وَنَادٰىٓ أَصْحٰبُ
الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ بِسِيمٰهُمْ قَالُوا
مَآ أَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ۝
أَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۚ
ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ أَنْتُمْ
تَحْزَنُونَ ۝ وَنَادٰىٓ أَصْحٰبُ النَّارِ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ
أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۚ
قَالُوٓا إِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِينَ ۝ الَّذِينَ
اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ

और जन्नतियों को पुकार कर सलामु अलैक करेंगे। (आराफ़ वाले ख़ुद भी) जन्नत में नहीं गए, मगर वह (जन्नत में जाने की) तवक़्क़ो कर रहे हैं० और जब उनकी नज़र दोज़ख़ियों की तरफ़ जा पड़ेगी, तो (उनकी ख़राबियां देख कर ख़ुदा से) दुआ मांगने लगेंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार! (इन) ज़ालिम लोगों के साथ हमको (शामिल) न कीजियो ० और आराफ़ वाले कुछ (दोज़ख़ी) लोगों को, जिन्हें उनकी सूरतों से (जो दुनिया में देखी थीं) पहिचानते होंगे, पुकार कर कहेंगे कि न (तो) तुम्हारे जथे ही कुछ तुम्हारे काम आए और (न तुम्हारी) शेख़ियाँ (ही) जो तुम (दुनिया में) मारा करते थे ० (और जन्नतियों की तरफ़ इशारा करके दोज़ख़ियों से पूछेंगे कि) क्या यही लोग हैं, जिनकी निस्बत तुम क़स्में खा खा कर कहा करते थे कि अल्लाह इन पर (अपनी) रह्मत नहीं करेगा। (यह तो जन्नत में आ दाख़िल हुए और इनको हुक्म मिल गया कि) जन्नत में चले जाओ। (यहां) तुम पर न (किसी तरह का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न तुम (किसी तौर पर) आज़ुर्दा ख़ातिर होगे ० और दोज़ख़ी पुकार (पुकार) कर जन्नतियों से कहेंगे कि हम पर थोड़ा सा पानी ही उँडेल दो या तुमको जो ख़ुदा ने (बड़ी फ़रागत से) रोज़ी दी है, उसमें से कुछ हमको (भी) दे डालो। वह कहेंगे कि ख़ुदा ने जन्नत का दाना पानी काफ़िरों पर हराम कर दिया है ० कि उन लोगों ने अपने दीन को हंसी और खेल बना रक्खा था और दुनिया की ज़िन्दगी उनको धोखे में डाले हुए थी। तो आज (क़यामत के दिन) हम उनको (क़स्दन) भुला देंगे; जैसा कि यह लोग (दुनिया में) अपने इस दिन के पेश आने को भूले—

और स्वर्ग वासियों से पुकार कर कहेंगे-सलामुन अलैकुम् (अर्थात् तुम्हारा कल्याण हो। और) यह (आराफ़ वाले वह लोग होंगे, जो अभी) स्वर्ग में (तो) दाख़िल नहीं हुए होंगे मगर (स्वर्ग में जाने की) वह आशा कर रहे होंगे॥

(स्वर्ग वासियों को देख कर तो आराफ़ वाले सलामुन अलैकुम् कहेंगे) और जब इनकी दृष्टियां नर्क वासियों की ओर जायेंगी, तो (उनका हाल देख कर अल्लाह तआला से) अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे पालन कर्त्ता! हमें (इन) ज़ालिमों के साथ (शामिल) न कीजो॥

और आराफ़ के लोग (नर्क में जाने वाले) लोगों को-जिन्हें वह उनके चेहरे से पहिचान लेंगे, पुकारेंगे (और) कहेंगे कि (आज के दिन) न तुम्हारा दल (और न जथा बन्दी) कुछ तुम्हारे काम आई। और न (तुम्हारी वह) शेख़ियां, जो तुम (संसार में) बघारते थे॥

(और स्वर्ग वासियों की ओर संकेत करके कहेंगे) यही हैं ना-वह लोग, जिनके बारे में तुम शपथें (खा) खाकर कहते थे कि इन पर अल्लाह की कृपा न होगी। (इन्हीं को तो यह आज्ञा मिली है कि) जाओ स्वर्ग में (सुख व चैन करो। वहां) न तुम्हें (किसी का) डर होगा और न तुम (किसी तरह) शोकातुर होगे॥

और नर्कवासी (इन बातों का उत्तर देने के बजाय) बैकुंठ वासियों को पुकारेंगे (और उनसे विनती करेंगे) कि (अल्लाह के लिये हमारे हाल पर तर्स खाओ और) थोड़ा सा पानी हमें प्रदान करदो या अल्लाह ने जो भोजन तुम्हें दे रक्खा है, उसमें से कुछ देदो। वह (जवाब में) कहेंगे कि अल्लाह ने (तुम जैसे) काफ़िरों पर-जिन्होंने (संसार में) अपने धर्म (व मज़हब) को बच्चों का खेल बना लिया था-(और) जिन्हें संसार के (क्षणिक) जीवन ने (ग़फ़लत व) अभिमान में डाल रक्खा था--यह दोनों चीज़ें हराम करदी हैं (अर्थात् बैकुंठ का खाना भी उनके लिये हराम है और पानी भी।)॥

सो (वास्तव में) जैसे कि यह (काफ़िर दुनिया में) इस (प्रलय के) दिन के उपस्थित होने को भूल गये थे--

हٰذَا وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ
بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ يَوْمَ
يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ
قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَّنَا مِنْ
شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ
كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ
يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ
مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ
اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً

8

الثمن

और हमारी आयतों का इन्कार करते रहे० और हमने तो इन (कुफ़्फ़ार मक्का) को .कुरआन (भी) पहुँचा दिया । (और) समझ बूझ कर उसमें हर तरह की तफ़सील भी करदी । (और वह) ईमान वाले लोगों के हक़ में हिदायत और रहमत है ० (जो वादा या वईद इस किताब में है) क्या यह लोग उस के वक़् ही के मुन्तज़िर हैं ? (सो) जिस दिन उसका वक़् होगा, तो जो लोग उसको पहिले से भूले (बैठे) थे, वह इक़रार कर लेंगे कि बेशक हमारे पर्वर्दिगार के पैग़म्बर हक़ बात लेकर आए थे । तो (उस वक़् उन को इसकी जुस्तुजू होगी कि) क्या हमारे कोई सिफ़ारशी भी हैं? कि (आज) हमारी सिफ़ारिश करें या हमको (दुनिया में) फिर लौटा दिया जाय; तो जैसे अमल हम (पहिले) किया करते थे, उनके ख़िलाफ़ (दीन दाराना) अमल करें । बेशक इन लोगों ने आप अपना नुक़सान किया और जो इफ़्तिरा पर्दाज़ियां किया करते थे, वह (सब) इनसे गई गुज़री हो गईं ० (लोगो !) बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार वही अल्लाह है, जिसने छः दिन में आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, फिर अर्श पर जा बिराजा । वही रात को दिन का पर्दापोश बनाता है, (गोया) रात (है कि) दिन के पीछे लपकी चली आ रही है। और उसी ने आफ़ताब और महताब और सितारों को पैदा किया कि यह सब ज़ेर फ़र्मान इलाही हैं। (लोगो !) सुन रक्खो कि .खुदा ही की ख़ल्क़ है और (.खुदा ही का) हुक्म । अल्लाह जो दुनिया जहान का पालने वाला है (उसकी ज़ात बड़ी) बा बरकत है ० (लोगो !) अपने पर्वर्दिगार से गिड़गिड़ा (गिड़गिड़ा) कर और चुपके (चुपके) दुआ करते रहो—

और हमारी आयतों को भूठा बताते रहते थे । (इसी तरह) आज (के दिन) हम भी इन्हें भूल जायँगे (और इनकी तकलीफ़ों का कदापि ख़याल न करेंगे) ॥

और हमने (इनकी हिदायत व समझाने के लिये) इनके पास एक (ऐसी) किताब पहुँचा दी (है) जिस (में अपने समस्त आदेश और नसीहत की कुल बातों) को हमने अपने (पूर्ण) ज्ञान से (व्याख्या सहित) वर्णन कर दिया (है) । जो उन लोगों के लिये (शिक्षा का साधन और) कृपा (का द्वार) है, जो ईमान ले आते हैं (या ईमान लाने की पात्रता रखते हैं) ॥

अब (इस किताब के पहुँचने के बाद) क्या (यह लोग) इसी के इन्तिज़ार में हैं कि इस (किताब) का विषय भी प्रकट हो जाय ? (सो) जिस रोज़ इसका विषय प्रकट हो जायगा (उस रोज़) जो लोग इसे पहिले से भूले हुए (बैठे) थे—वह कहेंगे (और इक़रार करेंगे कि) निस्सन्देह हमारे पालन कर्त्ता के पैग़म्बर सच्चा (धर्म) लेकर आये थे । (मगर उस समय उनका यह इक़रार उन्हें कुछ लाभ न देगा । यह लोग अपने बचाव का उपाय करते हुए जगह जगह मारे मारे पड़े फिरेंगे और हर एक से पूछेंगे कि देखना !) क्या कुछ हमारे सिफ़ारिश करने वाले (भी) हैं-कि वह हमारी सिफ़ारिश करदें (और हमें अज़ाब से बचावें) या (किसी तरह ऐसा भी हो सकता है कि) हम फिर (संसार में) वापिस भेज दिये जायँ । (यदि ऐसा हो जाय) तो हम जो (बुरे) काम (संसार में) किया करते थे, (उन सब को छोड़ दें और) उनके अतिरिक्त (नेक) काम किया करें । (परन्तु अब क्या होता है--समय निकल गया । वास्तविक बात यह है कि) इन्हों ने स्वयं अपनी जानों को घाटे में डाल दिया और (अपने जीवन को दुनिया के खेल, तमाशों और व्यर्थ और झूठी बातों में गुज़ार दिया । जिसका परिणाम यह है कि आज वह खेल तमाशे, जिन्हें यह दिल से प्यारा रखते थे) और वह (शिर्क की समस्त) बातें, जो यह दिल से बनाते थे-(अल्लाह के अज़ाब के ख़ौफ़ के कारण वह सब) इन (के मस्तकों) से निकल गई (और अब इन्हें अगले पिछले-सब मज़े आ रहे हैं)॥

(लोगो !) वास्तव में तुम्हारा पालन कर्त्ता वही है, जिसने (इतने बड़े बड़े) आस्मानों और (इतनी लम्बी चौड़ी) पृथ्वी को (केवल) छः दिन में बना डाला । (और) फिर (आदेश जारी करने के लिये अपने) शासन के तख़्त पर जा बिराजा (और अपनी .कुद्रत के चमत्कार दिखाने लगा) । वही दिन (के प्रकाश) से रात्रि (के अन्धकार) को छिपा देता है । (और उसी की शक्ति से) रात (मालूम होती है कि) दिन के पीछे तेज़ (दौड़ती हुई) चली आ रही है । (अर्थात् अपनी .कुद्रत से रात के बाद दिन कर देता है और दिन के बाद तुरन्त रात ले आता है) । और (उसी ने) चांद, सूरज और तारों को पैदा किया (है) जो (अपनी गर्दिश व हरकत में) उसकी आज्ञा के आधीन हैं । (लोगो !) सुनो (और याद रक्खो कि हर एक चीज़ का) पैदा करना उसी का काम है और शासन करना (व राज्य करना उसी को शोभा देता है । बड़ी) बरकत वाली (व्यक्ति) है, (उस) .खुदा (की) जो सारे संसार का पालन करने वाला (और पैदा करने वाला व स्वामी) है ॥

(तुम) अपने पालन कर्त्ता से (अत्यन्त) विनय (व नम्रता) और गम्भीरता (व आदर) के साथ दुआ माँगा करो—

إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا
إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَ
هُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهِ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ
لِبَلَدٍ مَيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ
مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ
بِإِذْنِ رَبِّهِ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا
نَكِدًا كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَشْكُرُونَ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ
فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قَالَ

(क्योंकि) वह (हद्दे उबूदियत से) बाहर क़दम रखने वालों को दोस्त नहीं रखता ० और (इन्तिज़ाम) मुल्क दुरुस्त हुए पीछे उसमें फ़साद न फैलाओ और (अज़ाब के) डर से और (फ़ज़्ल की) उम्मीद पर .ख़ुदा से दुआयें माँगते रहो, (क्योंकि) .ख़ुदा की रहमत .ख़ुलूस रखने वालों से (बहुत ही) क़रीब है ० और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जो (बारान) रहमत से आगे (आगे) हवाओं को भेजता है कि (लोगों को मेंह की आमद की) .ख़ुश ख़बरी पहुँचादें । यहां तक कि जब (हवा) भारी (बोझल) बादलों को ले उड़ती है, तो हम किसी बस्ती की तरफ़, जो (उफ़तादगी की वजह से गोया) मरी पड़ी थी, बादल को हाँक देते हैं। फिर (वहां) बादल से पानी बरसाते हैं। फिर पानी से हर तरह के फल (ज़मीन से) निकालते हैं। इसी तरह हम (क़यामत के दिन) मुर्दों को (ज़मीन से) निकाल खड़ा करेंगे। (हम अपनी .क़ुद्रत के आसार इस ग़रज़ से बयान करते हैं) ताकि तुम (लोग इन बातों में) ग़ौर करो (और क़यामत के दिन मुर्दों के जी उठने का यक़ीन लाओ) ० और जो बस्ती (ऐसी है कि उसकी ज़मीन) उम्दा है, उसके पर्वर्दिगार के हुक्म से उसकी पैदावार (भी उम्दा ही) निकलती है। और जो (बस्ती ऐसी है कि उसकी ज़मीन) नाक़िस है, उसकी पैदावार (भी) नाक़िस ही होती है। इसी तरह हम (अपनी .क़ुद्रत के) दलायल तरह तरह से उन लोगों के लिए बयान करते हैं, जिनका शेवा शुक्रगुज़ारी है ० बेशक, हम ही ने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ (पैग़म्बर बना कर) भेजा, तो उन्होंने (लोगों को जाकर) समझाया कि भाइयो ! अल्लाह (ही) की इबादत करो, (क्योंकि) उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं । (और अगर तुम मेरा कहा न मानोगे, तो) मुझको तुम्हारी निस्बत (क़यामत के) बड़े (हौल नाक) दिन के अज़ाब का (सख़्त) ख़ौफ़ है ०—

(और जहां तक हो सके, उसकी सेवकाई का ध्यान रक्खा करो)क्योंकि वह(बन्दिगी की)सीमा से निकल जाने वालों को पसन्द नहीं करता॥

और (साँसारिक प्रबन्ध के) सुधार के पश्चात उसमें (किसी प्रकार का) झगड़ा न फैलाओ। और (.ख़ुदा के दुःख रूपी अज़ाब का) भय और (.ख़ुदा की मेहर्बानी की) आशा करके पालन कर्त्ता (व सृष्टि कर्त्ता) .ख़ुदा की आराधना किये जाओ (और नेक कामों के लिये अपने जीवन को अर्पण करदो)। निस्सन्देह अल्लाह की रहमत (कृपा) नेक काम करने वालों से (बहुत ही) निकट है ॥

और वही (.क़ुद्रत, शक्ति, कृपा और दया वाला .ख़ुदा) है, जो अपनी रहमत से (अर्थात मेंह बरसाने से) पूर्व (ठंडी ठंडी) हवाओं को (इसका अर्थात जल रूपी जीवन का) मंगल-समाचार बनाकर भेजता है (कि इनके चलते ही मेंह के आने की सबको ख़बर हो जाती है)। यहां तक कि जब वह (हवाएं पानी से भरे हुए) भारी (भारी) बादलों को (ऊपर) उठा लेती हैं, (और आकाश पर बराबर बादल ही बादल छा जाते हैं) तो हम किसी मुर्दा बस्ती की ओर (जिसकी पृथ्वी वर्षा न होने के कारण सूखी व घास रहित हो) इन्हें हांक देते हैं। फिर (वहां) इस से पानी बरसाते हैं। फिर उस (पानी) के द्वारा हर प्रकार के फल (इस पृथ्वी में से) निकालते हैं। इसी प्रकार (प्रलय के दिन) हम मुर्दों को (भी जिला कर पृथ्वी से) निकाल खड़ा करेंगे। (यह सम्पूर्ण बातें इस तात्पर्य्य से वर्णन कीं) ताकि तुम ध्यान से काम लो (और मरने के पश्चात दूसरी बार जी उठने का विश्वास करो)॥

और जो बस्ती (ऐसी है कि उसकी पृथ्वी खेती क्यारी के लिये उपयुक्त और) उत्तम है, तो (उस पर वर्षा का प्रभाव अच्छा पड़ता है और) उसकी पैदावार उसके पालन कर्त्ता की आज्ञा से (उत्तम) निकलती है। और जो बस्ती (ऐसी है कि उसकी पृथ्वी खेती, क्यारी के लिये) ख़राब (और अनुपयुक्त) है, तो (उस पर बारिश का भी कुछ प्रभाव नहीं होता और) उसकी पैदावार (भी निकृष्ट और मात्रा में भी) बहुत कम निकलता है। इसी तरह हम उन लोगों के लिये, जो (हमारे) कृतज्ञ (और सराहने वाले) हैं, (अपनी .क़ुद्रत की) निशानियां विभिन्न प्रकार से बयान कर देते हैं ॥

(और ऐ मुहम्मद ! तुम्हें इन काफ़िरों के इन्कार से दुखित न होना चाहिये। क्योंकि अगली लग भग समस्त उम्मतों ने अपने नबियों का इन्कार किया है-जिनमें से कुछ के हाल हम सुनाते हैं, जैसे हज़रत नूह)। हमने नूह को उनकी उम्मत की ओर (अपना पैग़म्बर और दूत बना कर) भेजा, तो उन्हों ने (हमारे आदेशानुसार अपनी समस्त उम्मत को सम्बोधन करके) कहा (कि) ऐ लोगो ! (बुतों की पूजा छोड़ कर) अल्लाह की पूजा करो (कि) उसके सिवा तुम्हारा पूज्य और कोई नहीं (हो सक्ता और देखो ! मेरे उपदेश पर अमल करो। अगर तुमने मेरा कहा न माना, तो बड़ा दुख उठाओगे)। मुझे तुम्हारे ऊपर एक बड़े (भयानक) दिन के अज़ाब का (अर्थात तूफ़ान के आने की आशंका और) डर है ॥

الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝
قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ
مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي
وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝
أَوَعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَلَىٰ
رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ
فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ۝ وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ
هُودًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ
غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا
مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ
مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ

(इस पर) वह लोग, जो उनकी क़ौम में सरदार थे, लगे कहने कि हमारे नज़दीक तो तुम सरीह गुमराही में (पड़े) हो ० (इस पर नूह ने) कहा भाइयो ! मुझ में तो गुमराही (की कोई बात) है नहीं, बल्कि मैं तो पर्वरदिगार आलम का भेजा हुआ हूँ ० तुमको अपने पर्वरदिगार के अहकाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारे हक़ में ख़ैर ख़्वाही करता हूँ। और मैं अल्लाह (के बताने) से ऐसी (ऐसी) बातें जानता हूँ, जिनको तुम नहीं जानते ० क्या तुम इस बात से तअ़ज्जुब करते हो कि तुम ही में से एक शख़्स की (यानी मेरी) मार्फ़त तुम्हारे पर्वरदिगार का इर्शाद तुमको पहुँचा, ताकि वह तुम को (अज़ाब ख़ुदा से) डराए और ताकि तुम (ख़ुदा के ग़ज़ब से) बचो और ताकि (आख़िरकार) तुम पर रहम किया जाए ० बाईंहमा लोगों ने उनको झुठलाया, तो हमने नूह को और उन लोगों को, जो किश्ती में उनके साथ (सवार) थे, (तूफ़ान से) नजात दी। और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था, (उनको) ग़र्क़ कर दिया (क्योंकि) वह लोग (कुफ़्र की वजह से) अन्धे (हो रहे) थे ० और (हम ही ने क़ौम) आद की तरफ़ उनके भाई हूद को (पैग़म्बर बना कर भेजा)। उन्होंने (लोगों को जाकर) समझाया कि भाइयो ! अल्लाह (ही) की इबादत करो (क्योंकि) उसके सिवा तुम्हारा कोई (और) माबूद नहीं। तो क्या तुम (ख़ुदा के ग़ज़ब से) नहीं डरते ० (इस पर) उनकी क़ौम में जो लोग सरदार (और) मुन्किर थे, लगे कहने कि हम तो बिला शुबहा तुम को हुमुक़ में (मुब्तला) पाते हैं और (नीज़) बिला शुबहा हम तुमको झूठा समझते हैं ० (हूद ने) कहा भाइयो ! मुझ में हुमुक़ (की तो कोई बात है) नहीं—

(यह सुन कर) उसकी क़ौम के सर्दार बोले कि (तू हमें क्या उपदेश करता है)। हम तो तुझको (स्वयं) स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में लिप्त देख रहे हैं। (नूह ने) कहा (कि) ऐ लोगो ! मुझ में (एक बात भी) पथ-भ्रष्टता (की) नहीं, बल्कि मैं (तो) संसार के स्वामी का भेजा हुआ (नबी) हूँ। (और) मैं तो अपने पालन कर्त्ता की आज्ञायें तुम्हें पहुँचाता हूं। और ख़ुदा (के बताने और शिक्षा देने और ख़ुदा) की तरफ़ से तुम्हारी शुभ कामना (के लिये तुम्हें उपदेश) करता हूँ। मैं उन बातों से अच्छी तरह परिचित हूँ, जिन्हें तुम नहीं जानते ॥

क्या तुमको इस बात पर अचम्भा हुआ कि तुम्हारे पालन कर्त्ता की तरफ़ से तुम्हारे पास कोई उपदेश (की बात) एक ऐसे मनुष्य की ज़बानी पहुँची, जो तुम्हीं में से है। ताकि वह तुमको (ख़ुदा के अज़ाब से) भय दिलाये और ताकि तुम (उसके उपदेश पर अमल करके) संयमी (परहेज़गार) बन जाओ। और ताकि तुम पर (अल्लाह के अज़ाब के उतरने के बजाय अल्लाह की) रहमत (कृपा अवतीर्ण) हो ॥

अभिप्राय यह है (नूह ने हज़ार समझाया, पर) उन्होंने उनको झूठा बतलाया (और उनकी एक बात पर भी अमल न किया। नतीजा यह हुआ कि उन पर हमारा अज़ाब उतरा)। सो हमने नूह को और उनके साथ जो लोग नौका में (सवार) थे--उन्हें तो (इस अज़ाब अर्थात् तूफ़ान से) मुक्ति देदी और जिन लोनों ने हमारे आदेशों (को न माना और हमारे नबियों) को झूठा ठहराया, उन सबको हमने डुबो दिया (और थे भी वह इसी योग्य)। क्योंकि वह लोग (बिल्कुल) अन्धे लोग थे। (अपना हानि लाभ उन्हें कुछ नज़र न आता था) ॥

और (शेष यह कि हमने) आद (जाति) को तरफ़ उनके भाई हूद को (अपना पैग़म्बर बनाकर) भेजा (था। और नूह के समान) उन्होंने (भी अपनी जाति से जाकर) कहा (था कि) ऐ लोगो ! अल्लाह (एक) की पूजा करो। उसके सिवा और कोई तुम्हारा पूज्य नहीं। क्या (ख़ुद) तुम (इतना नहीं समझ सके ? और उसके अतिरिक्त किसी और को पूजते समय तुम) को भय नहीं लगता ॥

और (शेष नूह की जाति की तरह) उनकी जाति के काफ़िरों में-जो (लोग) माननीय थे, उन्होंने कहा कि (तू हमें क्या उपदेश करता है)। निश्चित रूप से हम (तो स्वयं) तुझको (स्पष्ट) मूर्खता में (लिप्त) देखते हैं। और निस्सन्देह तुझे झूटे लोगों में से ख़याल करते हैं ॥

(फिर नूह के समान) उन्होंने (यही) जवाब दिया था कि ऐ लोगो ! (तुम मेरे विषय में, जो कुछ कहते हो-अज्ञानता से कहते हो)। मुझ में कोई बात मूर्खता की नहीं—

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً
خَاسِئِينَ ۝ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ
إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۝
إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ
وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا مِنْهُمُ الصَّالِحُونَ
وَمِنْهُمْ دُونَ ذَٰلِكَ وَبَلَوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ
وَرِثُوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَٰذَا الْأَدْنَىٰ
وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِثْلُهُ
يَأْخُذُوهُ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيثَاقُ الْكِتَابِ أَنْ
لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ۝
وَالدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ
وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ إِنَّا

फिर जिस काम से उनको मना किया जाता था, जब उसमें हद से बढ़ गए, तो हमने उनको हुक्म दिया कि ज़लील व ख़्वार बन्दर बन जाओ (और वह बन्दर बन गए) ० और (ऐ पैग़म्बर ! बनी इस्राईल को वह वक़्त भी याद दिलाओ) जब तुम्हारे पर्वर्दिगार ने (बनी इस्राईल को) जता दिया था कि वह ज़रूर उन पर रोज़ क़यामत तक ऐसे हाकिम मुसल्लत रक्खेगा, जो उनको बुरी (बुरी) तक्लीफ़ें पहुँचाते रहेंगे। (ऐ पैग़म्बर !) बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार अल्बत्ता सज़ा भी बहुत जल्द देता है और बेशक वह बख़्शने वाला मेहर्बान भी है ० और हमने बनी इस्राईल को गिरोह गिरोह करके मुल्क (के अतराफ़ व जवानिब) में परागन्दा कर दिया, (सो) उनमें से बाज़ तो नेक थे और बाज़ नेक नहीं थे। और हमने उनको सुख और दुख (दोनों तरह) से आज़माया, ताकि यह (हमारी तरफ़) रुजू़ लाएँ ० फिर उनके बाद ऐसे ना ख़लफ़ (उनके) जा नशीन हुये कि (वह बड़ों की जगह) किताब (तौरात) के वारिस (तो) बने। (मगर किस तरह--कि तबदील हुक्म इलाही के सिले में उनको) इस दुनियाए दूँ की (कोई) चीज़ (मिले, तो उसको वे तअम्मुल) ले लेते हैं। और (चूंकि उनकी नज़र में इस गुनाह की कुछ अज़मत नहीं, इस लिये) कहते हैं कि यह गुनाह तो हमारा मुआफ़ हो ही जाएगा। और अगर इसी तरह की कोई दुनियावी चीज़ (फिर) उनके सामने आ जाए, तो उसे (भी) लेकर रहें। क्या इन लोगों से वह अहद, जो किताब (तौरात) में लिक्खा है, लिया नहीं गया ? कि हक़ बात के सिवा दूसरी बात ख़ुदा की तरफ़ मन्सूब नहीं करेंगे। और जो कुछ उस(किताब) में है,उन्होंने उसको पढ़ लिया। और जो लोग पर्हेज़गार हैं,आख़िरत का घर उनके हक़ में (इस दुनिया से) कहीं बेहतर है। (ऐ बनी इस्राईल !) क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते ० और (बनी इस्राईल में से) जो लोग किताब (तौरात) को मज़बूती से पकड़े हुये हैं और नमाज़ पढ़ते हैं, तो हम--

---

अर्थात् जिस बात से उन्हें रोका गया था-जब वह उसमें सीमा से बढ़ गये, तो हमने उनसे (क्रोध के साथ) कहा कि (ऐ अवज्ञा कारियो !) तुम (नीच व) अधम बन्दर बन जाओ ॥

और (ऐ रसूल ! इन लोगों को वह समय भी याद दिलाओ) जब कि तुम्हारे पालन कर्त्ता ने (समस्त बनी इस्राईल को यह) जताया था कि (यदि वह अपने इस विद्रोह और अवज्ञाओं से बाज़ न आये, तो) उन पर अल्लाह तआला प्रलय तक ऐसे शासकों को स्थित रक्खेगा, जो इनको कठोर दुःख पहुँचाते रहेंगे। निश्चित रूप से तुम्हारा पालन कर्त्ता बहुत जल्द दण्ड देने वाला भी है और वह क्षमा व दया करने वाला भी है। (स्वाधीन है, जिसे चाहे दम भर में दंड देदे और जिसे चाहे, क्षमा व दया से दम भर में निहाल करदे) ॥

और हमने उनको टुकड़ी टुकड़ी करके दुनिया में (जगह जगह) फैला दिया। उनमें से कुछ नेक थे और कुछ नेक न थे। और उनकी-सुख देकर (भी) परीक्षा ली और दुःख देकर (भी)। ताकि वह (अपनी करतूतों से) बाज़ आ जावें ॥

फिर (उन लोगों के) पश्चात् ऐसे (नीच) लोग उनके उत्तराधिकारी हुए, जो किताब (तौरेत) के वारिस (तो) बने हुए हैं, (किन्तु सम्मान उसका यह करते हैं कि उसके हुक्मों में परिवर्तन करके) इस असार संसार की (तुच्छ) दौलत को भी रिश्वत में ले लेते हैं। और (फिर उस पर) कहते हैं-अवश्य हमको क्षमा कर दिया जावेगा (क्योंकि हम तो अल्लाह मियाँ की सन्तान और उसके प्यारे सेवक हैं)॥

(एक ओर तो अल्लाह से विशेष सम्बन्ध रखने का दावा और क्षमा की आशा) और (दूसरी ओर पापों में तल्लीन होने की यह दशा कि) यदि उनके पास (फिर) उसी प्रकार की दौलत (अर्थात घूस) आ जावे, तो (निस्संकोच) स्वीकार करलें (और ख़ुदाई हुक्म को उस पर निछावर करदें) ॥

क्या इन लोगों से वह प्रतिज्ञा; जो किताब (तौरेत) में है-नहीं ली गई ? कि सच बात के अतिरिक्त दूसरी बात अल्लाह की ओर न लगावेंगे। यद्यपि जो कुछ किताब में है, वह (सब) उन्हों ने पढ़ लिया है और (वह भली भांति जानते हैं कि) प्रलय का घर उन लोगों के लिये है, जो (अल्लाह से) डरते हैं। (इस संसार और इसके माल व सम्पत्ति से) अच्छा है। (ऐ बनी इस्राईल !) क्या तुम अक़्ल नहीं रखते (कि जान बूझ कर संसार को प्रलय पर विशेषता देते हो) ॥

और (इनमें से) जो लोग अल्लाह की किताब के पूरे तौर से पाबन्द हैं और (नमाज़ की तरह) नमाज़ पढ़ते (और उपासना की तरह उपासना करते) हैं, तो हम—

لَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ
كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ خُذُوا مَا
آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝
وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ
وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ
شَهِدْنَا أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ
هَٰذَا غَافِلِينَ ۝ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا
مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِنْ بَعْدِهِمْ أَفَتُهْلِكُنَا
بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ
وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ
آيَاتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ
مِنَ الْغَاوِينَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَٰكِنَّهُ
أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ

ऐसे नेकोकारों के सवाब को ज़ाए नहीं होने देंगे ० और (ऐ पैग़म्बर ! अपने वक़्त के यहूद को वह वक़्त भी याद दिलाओ) जब हमने इन (के बड़ों) पर पहाड़ को इस तरह ला लटकाया कि गोया वह सायबान था। और समझे कि यह (पहाड़) इन पर अब गिरा (का गिरा । और हमने हुक्म दिया कि यह किताब तौरात) जो हमने तुमको दी है, (इसको ख़ूब) मज़बूती के साथ लिये रहना। और जो कुछ इसमें (लिक्खा) है, उसको याद रखना (कि ऐसा करने से) अजब नहीं तुम पहेंज़गार बनो ० और (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों को वह वक़्त भी याद दिलाओ) जब तुम्हारे पर्वर्दिगार ने बनी आदम से यानी उनकी पीठों से उनकी नस्लों को बाहर निकाला और उनके मुक़ाबिले में ख़ुद उन ही को गवाह बनाया। (इस तरह पर कि उनसे पूछा) क्या मैं तुम्हारा पर्वर्दिगार नहीं हूँ ? सब बोले हाँ, हम (इस बात के) गवाह हैं। (और यह इस ग़रज़ से किया कि ऐसा न हो) कहीं क़यामत के दिन तुम कहने लगो कि हम तो इस बात से बे ख़बर ही रहे (यानी किसी ने हमको जताया बताया नहीं) ० या कहने लगो कि शिर्क इब्तिदा में तो हमारे बड़ों ही ने किया और हम उन ही की औलाद थे (कि) उनके बाद (दुनिया में आये, जैसा बड़ों को करते देखा--हम भी वैसा ही करने लगे)। तो (ऐ ख़ुदा !) क्या तू हमको उन लोगों के जुर्म की पादाश में हलाक किये देता है, जिन्होंने (पहिले) ग़लती की ० और इसी तरह हम (अपनी) आयतों को तफ़सील के साथ बयान करते हैं, ताकि यह लोग (हमारी तरफ़) रुजू करें ० और (ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों को उस शख़्स का हाल पढ़ कर सुनाओ, जिसको हमने अपनी करामतें दी थीं। फिर उस ने वह केंचली उतार दी, तो शैतान उसके पीछे लगा (और उसको बहकाया) तो वह गुम्राहों में जा मिला ० और अगर हम चाहते, तो उन (ही करामतों) की बरकत से उसका मर्तबा बुलन्द करते। मगर उसने पस्ती में गिरना चाहा और अपनी ख़्वाहिश नफ़्सानी के पीछे लग लिया, तो उस की कहावत कुत्ते की सी कहावत हो गई--

नेक काम करने वालों के फल को नष्ट नहीं होने देंगे॥

और (वह समय भी वर्णन करने योग्य है) जब कि हमने पर्वत को (उठा कर) उनके (बाप दादों के शिरों के) ऊपर लटका दिया-इस तरह, जैसे छप्पर होता है और उनको आशंका हुई कि यह हम पर गिरने वाला है। (फिर हमने उनसे फ़र्माया कि) जो कुछ हमने तुमको दिया है, उसे मज़बूती से पकड़ो और जो कुछ उसमें लिखा है, उसे याद रक्खो-ताकि तुम संयमी (व पहेंज़गार) बन जाओ॥

और (ऐ मुहम्मद ! इन लोगों को वह समय भी याद दिलाना चाहिये) जब कि तुम्हारे पालन कर्त्ता ने आदम की सन्तान की पीठों से उनकी ज़ुर्रियात को निकाला (अर्थात उन आत्माओं को, जो प्रलय तक पैदा होने वाली थीं-अपने सामने एकत्रित किया)। और (स्वयं) उन (की प्रकृति) को उन पर गवाह बनाया (कि जब उनसे पूछा कि) क्या मैं तुम्हारा पालन कर्त्ता नहीं हूँ ? उन सबने कहा कि हां-हम इक़रार करते हैं (कि तू हमारा पालन कर्त्ता है और हम तेरे बन्दे हैं। और यह इक़रार इस उद्देश से लिया गया, जिससे) कि तुम प्रलय के दिन यह न कहने लगो कि हम तो इससे (बिलकुल) अनभिज्ञ थे॥

या यह कहने लगो कि शिर्क तो हमसे पहिले हमारे बाप दादों ने निकाला था और हम तो उनकी सन्तान थे (जो) उनके बाद (पैदा हुए। जैसा हमने उनको करते देखा, करने लगे)। तो क्या (ऐ हमारे पालन कर्त्ता !) तू इन ग़लत राह (निकालने) वालों के काम पर हमें मारता है॥

और हम इसी प्रकार अपनी आयतों को स्पष्ट (रूप से उपस्थित) करते हैं, ताकि वह (लोग अपने कुफ़्र व शिर्क से) बाज़ आ जावें॥

और (ऐ रसूल !) इन लोगों को (बनी इस्राईल के) उस (मनुष्य) का हाल पढ़ कर सुनाओ * जिसको हमने अपने चिन्ह (अर्थात करामतें) दी थीं। फिर उसने (अपनी पवित्रता का) वस्त्र उतार फेंका (और सत्य के मार्ग से हट गया) तो शैतान उसके पीछे लग गया और (वह) पथ-भ्रष्टों अर्थात गुमराहों में जा मिला॥

* टीका – व्याख्या करने वालों का इसमें मत भेद है कि वह मनुष्य कौन था, जिसका वृतान्त यहाँ वर्णन किया गया है। कुछ भी हो-वह कोई महा पुरुष और ख़ुदा तक पहुँचा हुआ मनुष्य था:— हसन निज़ामी॥

और यदि हम चाहते, तो उन निशानियों की बरकत से उसे उच्च पद पर पहुँचाते। परन्तु वह तो संसार की ओर ढल गया और उसने अपनी (इन्द्रियों की) वासनाओं का अनुकरण किया (और हमारी आज्ञाओं की अवहेलना की)। इस लिये (दुःख व अनादर में) उसका उदाहरण–

जَمِيعًا ۨ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيتُ فَاٰمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ
النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ
وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۞ وَمِنْ قَوْمِ مُوسٰٓى
اُمَّةٌ يَّهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُونَ ۞ وَقَطَّعْنٰهُمُ
اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوسٰٓى
اِذِ اسْتَسْقٰهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ
فَانْبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۗ قَدْ عَلِمَ كُلُّ
اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۗ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا
عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۗ كُلُوا مِنْ طَيِّبٰتِ
مَا رَزَقْنٰكُمْ ۗ وَمَا ظَلَمُونَا وَلٰكِنْ كَانُوٓا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ۞ وَاِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ
وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا

कि आस्मानों और ज़मीन की (तमाम) सल्तनत उसी की है। उसके सिवा कोई और माबूद नहीं, (वही) जिलाता और (वही) मारता है। तो (लोगो !) अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल नबी उम्मी (मुहम्मद) पर (भी) कि (वह ख़ुद भी) अल्लाह और उसकी किताबों पर ईमान रखते हैं। और उनही की पैरवी करो, ताकि तुम सीधे रस्ते पर आ जाओ० और मूसा की क़ौम में से कुछ लोग (ऐसे भी) हैं, जो हक़ बात की हिदायत और हक़ ही के मुताबिक़ (लोगों के मुआमिलात में) इन्साफ़ (भी) करते हैं ० और हमने बनी इस्राईल को बाँट कर एक एक दादा की औलाद के अलग अलग बारह क़बीले बनाए। और जब मूसा से उनकी क़ौम (के लोगों) ने (पीने को) पानी माँगा, तो हमने मूसा की तरफ़ वही की कि अपना असा इस (सामने वाले) पत्थर पर मारो। असा का मारना था कि पत्थर से बारह चश्मे फूट निकले। (और) हर एक क़बीले ने अपना अपना घाट मालूम कर लिया। और हमने बनी इस्राईल पर अब्र का साया किया और मन्न व सल्वा उतारा। (और इजाज़त दी) कि यह सुथरी रोज़ी जो हमने तुमको दी है, खाओ। और उन लोगों ने (जो नाफ़र्मानी की, कि वे हुक्म लगे ज़ख़ीरा करने, तो इस ना फ़र्मानी से) हमारा कुछ नुक़सान नहीं किया। बल्कि अपना आप ही नुक़सान करते रहे (कि आख़िरकार मन्न व सल्वा आना माक़ूफ़ हो गया) ० और जब बनी इस्राईल को हुक्म दिया गया कि इस गाँव (उरीहा) में चल कर रहो और इस (की पैदावार) में से जहाँ से तुम्हारा जो चाहे, खाओ। और मुँह से हित्तुन कहो और—

ऐसा अल्लाह कि (समस्त) आस्मानों (आकाशों) और ज़मीन का राज्य उसी का है। उसके अतिरिक्त कोई आराधना के योग्य नहीं। वही जिलाता है और वही मारता है। (ज़िन्दगी और मृत्यु उसी के हाथ में है)। अतः (ऐ लोगो ! उस सर्व शक्तिमान) अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके भेजे हुये उम्मी (अनपढ़) नबी पर, जो (स्वयं भी) अल्लाह और अल्लाह के पवित्र वाक्यों पर ईमान रखते हैं– उन्हीं की आधीनता करो, ताकि तुम सीधे मार्ग पर आ जाओ ॥

और मूसा की जाति में (अब भी) ऐसे लोग (मौजूद) हैं, जो सत्य बात की (लोगों को) हिदायत करते हैं। (स्वयं भी तौरेत की शिक्षानुसार उम्मी अर्थात् अनपढ़ नबी पर ईमान लाते और दूसरों को भी ईमान लाने का उपदेश देते हैं)। और (मामले में) सत्य (ही) के अनुसार न्याय करते हैं (जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम इत्यादि) ॥

और (जो इनमें से सच्चे धर्म का अनुकरण नहीं करते, वह हमारे उन उपकारों की कृतघ्नता करते हैं कि) हमने (उनकी जाति अर्थात् बनी इस्राईल की सन्तान में इतनी बरकत दी है कि) उनको बारह वंशो में बांट करके (बड़े बड़े बारह) दल बना दिये। और जब मूसा की जाति (को पानी की आवश्यकता हुई और उस) ने उनसे पानी माँगा, तो हमने मूसा को वही अर्थात् ख़ुदाई सन्देश भेजा-कि अपनी लाठी इस पत्थर पर मारो। अतएव (लाठी मारते ही) पत्थर से बारह सोते जारी हो गये(और)प्रत्येक कुटुम्ब ने अपना अपना घाट मालूम कर लिया। और (वहीं तीह की घाटी में जब वह धूप की अग्नि से व्याकुल थे, तो) हमने उन पर बादल की छाया की और उन पर हमने मन व सलवा अर्थात् एक प्रकार का भोजन उतारा। (और कह दिया कि) यह जो पवित्र चीज़ें हमने तुमको दी हैं, इनको खाओ (पियो। तिस पर भी, कि मन व सलवा एक ऐसा भोजन था, जिसके प्राप्त करने में उन्हें कुछ परिश्रम नहीं करना पड़ता था– किन्तु उन्हें अपने आलस्य के कारण हाथ पांव हिलाना भी सह्य न हुआ)। और (उन्होंने उसको सैंत २ कर रखना आरम्भ किया; जिससे उसका ताज़ापन जाता रहा और कई कई दिन की यह बासी ख़ूराक उनको बुरी मालूम होने लगी। अपनी इस कृतघ्नता तथा अदूरदर्शिता-पूर्ण कार्यों से) उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा, बरन् अपनी ही हानि करते रहे (और हमारे प्रसादों से वञ्चित हो गये) ॥

और (फिर) जब (उनकी नई नई ख़ूराकें तलब करने पर) उनसे कहा गया कि तुम इस गांव में (जाकर) रहो। और उस (के बाग़ों और खेतों इत्यादि) में से जहाँ से चाहो, खाओ। और (मुंह से) हित्तुन (अर्थात् तौबा है, तौबा है) कहते रहो—

दर्वाज़े में सज्दा करते हुए दाख़िल होना (कि ऐसा करोगे) तो हम तुम्हारे क़ुसूर मुआफ़ कर देंगे। (और) जो लोग ख़ुलूस दिल से हमारे हुक्म की तामील करेंगे, हम उनको (अपनी तरफ़ से कुछ) ज़्यादा भी देंगे ० तो जो लोग उनमें से ज़ालिम थे, वह दुआ जो उनको सिखाई गई थी, (उसको) बदल कर लगे कुछ और कहने। तो हमने उनकी शरारतों की पादाश में आस्मान से उन पर अज़ाब नाज़िल किया ० और (ऐ पैग़म्बर !) बनी इस्राईल (को याद दिलाने के लिये उन) से (ज़रा) उस गाँव का हाल तो दरयाफ़्त करो, जो दरिया किनारे वाक़े था। जब (उनके बड़े) लगे सब्त में ज़ियादतियाँ करने कि जब उनके सब्त का दिन होता, तो मछलियाँ सीना सिपर उनके सामने आ जमा होतीं। और जब उनके सब्त का दिन न होता, तो मछलियाँ उनके पास भी आकर न फटकतीं। चूंकि यह लोग ना फ़र्मान थे, हम भी इसी तरह इनको मुब्तलाए आज़माइश रखते ० और जब इनमें से बाज़ लोगों ने (दूसरे लोगों से, जो सब्त के दिन शिकार करने से मना करते थे) — कहा कि जिन लोगों को ख़ुदा हलाक करना या उनको अज़ाब सख़्त में मुब्तला करना चाहता है, (भला उनको) तुम (बेफ़ायदा) क्यों नसीहत करते हो। उन्होंने जवाब दिया कि (हम तो) तुम्हारे पर्वर्दिगार की जनाब में (अपने ऊपर से) इल्ज़ाम उतारने की ग़रज़ से (नसीहत करते हैं) और (यह भी ख़याल है) कि शायद यह लोग बाज़ आ जाएँ ० तो जब (इन नाफ़र्मान लोगों ने) वह नसीहतें जो इनको की गई थीं, भुला दीं, तो जो लोग बुरे काम से मना करते थे, उनको तो हमने बचा लिया। और जो लोग शरारत (पर इस्रार) करते रहे, उनकी नाफ़र्मानियों की पादाश में हमने उनको अज़ाब सख़्त में मुब्तला किया ०—

الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰتِكُمْ سَنَزِيْدُ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا
غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا
مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝ وَسْئَلْهُمْ
عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ اِذْ
يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ
يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ لَا تَاْتِيْهِمْ
كَذٰلِكَ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذْ قَالَتْ
اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ
اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى
رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ
اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَئِيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝

ع

६

और इस (बस्ती) के दर्वाज़े में शिर नवाते हुये प्रवेश करना। (यदि तुमने हमारी हिदायत पर अमल किया, तो) हम तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देंगे। (और सच्चे हृदय से) नेक काम करने वालों को (अपने प्रसाद और) अधिक देंगे ॥

किन्तु यह ज़ालिम, जो कुछ इन्हें बताया गया था, उसे बदल कर कुछ और कहने लगे। (हित्ततुन् के अतिरिक्त हिन्ततुन् हिन्ततुन् * उनकी ज़बान पर रहने लगा)। इस लिये हमने उन पर उनकी कृतघ्नता के दण्ड स्वरूप आकाशीय अज़ाब उतारा ॥

* टीका—उनसे कहा गया था कि हित्ततुन् कहो, जो तौबा अर्थात् पश्चाताप करने का एक वाक्य है। वह उसके बजाय हिन्तुन् कहने लगे-जिसके अर्थ गेहूँ के हैं। अर्थात् क्षमा के लिये तौबा करने के बजाय रोटी मांगने लगे:— हसन निज़ामी ॥

और (ऐ मुहम्मद ! अपने ज़माने के) यहूदियों से उस बस्ती के सम्बन्ध में (तो ज़रा) दर्याफ़्त करो, जो समुद्र के किनारे (बसी हुई) थी। जब कि (वहां के निवासी-जो उन्हीं के पूर्वजों में से थे) सनीचर के दिन (के हुक्म) के विषय में (शरीअ़त की सीमा से) आगे बढ़ने लगे थे। (अर्थात् हमने सनीचर के दिन उन्हें मछली का शिकार खेलने से मना किया था, किन्तु वह उसी दिन शिकार खेलते थे। केवल इस लालच से कि) जब उनके सनीचर (मनाने) का दिन आता, तो उनकी मछलियां पानी के ऊपर प्रकट हो होकर उन (की दृष्टियों) के सामने आ जाती थीं। (और वह सुगमता से जितनी चाहते, पकड़ सकते थे)। और जब सनीचर का दिन न मनाते, तो मछलियाँ उनके पास नहीं आती थीं। (जिसके कारण उन्हें शिकार करना कठिन हो जाता था। और यह केवल हमारी एक परीक्षा थी कि देखें उनके प्रति हमारी आज्ञा अधिक सम्मान रखती है या कुछ मछलियां)। उनकी कृतघ्नता के कारण हम इस प्रकार उनकी परीक्षा किया करते थे ॥

और (उस बस्ती के रहने वालों में कुछ लोग ऐसे भी थे, जो शरीअ़त की आज्ञा का सम्मान करते और सब्त अर्थात सनीचर के दिन शिकार को अच्छा नहीं समझते थे)। जब उनमें से एक समूह ने (जो सीमा से बढ़ने वालों के सुधार से निराश हो चुका था, दूसरे समूह से-जो सनीचर के दिन के शिकार से बाज़ रहने का उनको उपदेश किया करता था) कहा कि तुम उन लोगों को क्यों उपदेश करते हो, जिन्हें पालन कर्त्ता हलाक करने वाला है या उनको कठिन अज़ाब में लिप्त करने वाला है। तो उन्होंने उत्तर दिया कि (हमारा यह उपदेश और नसीहत अपने और) तुम्हारे पालन कर्त्ता के सामने निर्दोष होने के लिये और इस लिये (है) कि शायद यह लोग पर्हेज़गारी ग्रहण करलें (और पापों से बाज़ आ जावें) ॥

फिर जब उन अज्ञानों ने, जो कुछ उन्हें समझाया जाता था (उसे अपने दिल में स्थान न दिया और जो कुछ सुना, उसे) भुला दिया। तो हमने उन लोगों को तो (अपने अज़ाब से) मुक्त कर दिया, जो उनको (शरीअ़त के विरुद्ध कामों और) बुरी बातों से रोकते थे। और ज़्यादती करने वालों को उनकी अवज्ञाओं के बदले में एक कठोर अज़ाब में जकड़ दिया—

या (यही होगा कि) तुम लोग (चार व नाचार) हमारे मज़हब में लौट आवोगे। (शुऐब ने) कहा क्यों जी ! अगर्चे हम (तुम्हारे दीन को दिल से) ना पसन्द करते हों, (फिर भी ज़बर्दस्ती तुम्हारे मज़हब में आ मिलें) ० जिस हाल में कि ख़ुदा ने हमको तुम्हारे दीन (ग़लत) से नजात दी, अगर इसके बाद (भी) हम तुम्हारे दीन में लौट आएं, तो बेशक (इसके यह माने होंगे कि) हमने अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधा। और हमसे तो यह हो नहीं सका कि तुम्हारे दीन में लौट आएँ। मगर यह कि ख़ुदा जो हमारा पर्वर्दिगार है (वह) चाहे, (तो कुछ हमारा ज़ोर नहीं)। हमारा पर्वर्दिगार इल्म (व आ गही) की रू से तमाम चीज़ों पर हावी है, हमारा भरोसा अल्लाह ही पर है। ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हम में और हमारी क़ौम में (जो झगड़ा आकर पड़ा है, तूही उसका) हक़ हक़ फ़ैसला कर। और तू सब फ़ैसला करने वालों से बेहतर (फ़ैसला करने वाला) है ० और क़ौम शुऐब के जो लोग रूदार (और उनकी रिसालत से) मुन्किर थे, उन्होंने (आपस में) कहा कि अगर तुम शुऐब के कहे पर चले, तो इसमें शक न समझना कि फिर तो तुम बर्बाद हो लिये ० ग़रज़ कि इन लोगों को ज़ल्ज़ले ने आ लिया और अपने घरों में (जैसे बैठे थे) बैठे (के बैठे) रह गये ० जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया (ऐसे मिटे कि) गोया उन बस्तियों में कभी बसे ही न थे। जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया, वही बर्बाद हुये ० (जब क़ौम शुऐब अज़ाब इलाही से हलाक हो चुकी) तो शुऐब उन (के पास) से टल गये। और (चलते वक़्त उनसे मुख़ातिब हो कर) बोले कि भाइयो ! मैंने तो तुमको अपने पर्वर्दिगार के अहकाम पहुँचा ही दिये थे और तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करता रहा, (लेकिन तुमने न माना)-

أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ
قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ
بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا وَمَا يَكُونُ لَنَا
أَنْ نَعُودَ فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا
كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا افْتَحْ
بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ
وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ
لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَخَاسِرُونَ ۝
فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ
جَاثِمِينَ ۝ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَنْ لَمْ
يَغْنَوْا فِيهَا الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ
الْخَاسِرِينَ ۝ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ
أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ فَكَيْفَ

(अब) या (तो) तुम हमारे धर्म में फिर वापिस आ जाओ (या हमारी बस्ती से निकलो । शुऐब ने) कहा (क्या कुछ ज़बर्दस्ती है ?)। क्या हम (तुम्हारे मज़हब से) बेज़ार हों, तो भी (हमें उसे ही स्वीकार करना पड़ेगा ?) ॥

जब कि अल्लाह ने हमें उससे मुक्ति देदी (और हम पर सच व झूठ प्रकट कर दिया) उसके बाद यदि हम (फिर उसी झूठे धर्म अर्थात) तुम्हारे धर्म में लौट आयें, तो (इसके यह अर्थ होंगे कि) हमने अल्लाह पर झूठ दोष लगाया (और एक ऐसे धर्म को ख़ुदा का धर्म समझा, जो उसका धर्म नहीं था)। और हमसे तो यह हो नहीं सकता कि फिर तुम्हारे धर्म में लौट आवें। परन्तु यदि (ऐसा होना हमारे भाग्य में लिखा है और) हमारे पालन कर्ता ख़ुदा की मर्ज़ी यही है (तो दूसरी बात है)। हमारे पालन कर्त्ता का ज्ञान हर वस्तु में व्याप्त है। (जो कुछ उसके ज्ञान में है, वही होगा)। हमारा अल्लाह (ही) पर भरोसा है। ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! (यह लोग हमारी बात नहीं मानते और हमको ज़बर्दस्ती अपने धर्म में लाना चाहते हैं। अतएव अब तू ही) हमारे और हमारी जाति के बीच न्याय से फैसला कर दे और तू सर्वोत्तम फ़ैसला करने वाला है ॥

और उनकी जाति के सर्दारों ने--जो काफ़िर थे (शुऐब की यह बातें सुन कर अपनी जाति के लोगों से) कहा कि यदि तुम शुऐब के अनुयायी बनते हो, तो समझ लेना कि बस तुम बरबाद हो गये ॥

अभिप्राय यह कि (जब उनकी गुस्ताख़ी व विद्रोह हद से बढ़ गई, तो) उनको (कठिन) भूचाल ने आ लिया और वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये ॥

(और यह) शुऐब का झूठा बताने वाले (ऐसे मिटे) माना उन बस्तियों में कभी बसे ही न थे। (और) हानि उन्होंने ही उठाई, जो शुऐब को झूठा बताया करते थे ॥

(जब वह हलाक व बरबाद हो चुके और अपने किये का दंड पा चुके) तो शुऐब उनको छोड़ कर चल दिये। और (चलते समय) कहते गये कि भाइयो ! मैंने (तो) अपने पालन कर्त्ता के आदेश तुमको पहुँचा दिये (थे)। और (हर प्रकार) तुम्हारा कल्याण चाहा (था, किन्तु तुमने मेरी एक न सुनी) तो--

أَسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَٰفِرِينَ ۝ وَمَآ أَرْسَلْنَا فِى قَرْيَةٍ
مِّن نَّبِىٍّ إِلَّآ أَخَذْنَآ أَهْلَهَا بِٱلْبَأْسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ
لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ۝ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ ٱلسَّيِّئَةِ
ٱلْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوا۟ وَّقَالُوا۟ قَدْ مَسَّ ءَابَآءَنَا
ٱلضَّرَّآءُ وَٱلسَّرَّآءُ فَأَخَذْنَٰهُم بَغْتَةً وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ ٱلْقُرَىٰٓ ءَامَنُوا۟
وَٱتَّقَوْا۟ لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَٰتٍ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ
وَلَٰكِن كَذَّبُوا۟ فَأَخَذْنَٰهُم بِمَا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ۝
أَفَأَمِنَ أَهْلُ ٱلْقُرَىٰٓ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا بَيَٰتًا
وَهُمْ نَآئِمُونَ ۝ أَوَأَمِنَ أَهْلُ ٱلْقُرَىٰٓ أَن يَأْتِيَهُم
بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۝ أَفَأَمِنُوا۟ مَكْرَ ٱللَّهِ
فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلْقَوْمُ ٱلْخَٰسِرُونَ ۝
أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ ٱلْأَرْضَ مِنۢ بَعْدِ

أهلها

तो जिन लोगों ने (मेरी नसीहत को) न माना (अब) उन पर कैसे अफ़सोस करूँ ० और जिस बस्ती में हमने पैग़म्बर भेजा (और बस्ती वालों ने उसका कहा न माना, तो) वहां के रहने वालों को हमने मुब्तलाए सख़्ती व मुसीबत भी किया, ताकि यह लोग (हमारे हु.जूर में) गिड़ गिड़ाएँ० फिर हमने सख़्ती की जगह आसानी को बदला, यहां तक कि .ख़ूब बढ़े (चढ़े) । और लगे कहने कि इस तरह की सख़्ति़यां और राहतें, तो हमारे बड़ों को भी पहुँच चुकी हैं (यानी यह ज़माने के इत्तिफ़ाक़ात हैं) । तो (इस कज फ़ह्मी की सज़ा में) हमने उनको दफ़अ़तन (अ़ज़ाब में) धर पकड़ा और वह (उससे) बेख़बर थे० और अगर (इन) बस्तियों (के रहने) वाले (.ख़ुदा पर) ईमान लाते और परहेज़गारी (का तरीक़ा इख़्तियार) करते, तो हम आस्मान व ज़मीन की बरकतों (के दर्वाज़ों) को उन पर खोल देते । मगर उन लोगों ने (हमारे पैग़म्बरों को) झुठलाया, तो (उनकी) इन कर्तूतों की सज़ा में-जो वह करते थे, हमने उनको (अ़ज़ाब में धर) पकड़ा ० तो (ऐ पैग़म्बर !) क्या (तुम्हारी इन) बस्तियों के रहने वाले इससे निडर हैं कि उन पर हमारा अ़ज़ाब रातों रात आ नाज़िल हो और वह सोए पड़े हों ० या (तुम्हारी इन) बस्तियों के रहने वाले इससे निडर हैं कि उन पर हमारा अ़ज़ाब दिन दिहाड़े आ नाज़िल हो और वह खेल कूद में (मशग़ूल) हों ० तो क्या, अल्लाह के दाव से निडर हो गये हैं ? सो अल्लाह के दाव से तो वही लोग निडर होते हैं, जो (आख़िरकार) बर्बाद होने वाले हैं० जो लोग अह्ल ज़मीन के (हलाक हुए) पीछे ज़मीन के वारिस होते हैं, क्या इस बात से भी उनको हिदायत न हुई—

(अब) मैं ऐसे लोगों पर क्या अफ़सोस करूँ, जिन्होंने कुफ़्र किया (और मेरी बात नहीं मानी)॥

और जिस बस्ती में भी हमने कोई नबी भेजा (और उसके निवासियों ने उसकी आधीनता न की) तो (पहिले) हमने उसके रहने वालों को सख़्ती व विपत्ति में लिप्त किया, ताकि वह (दुःख पाकर सुधार पर आ जावें और अहंकार छोड़ कर) नम्रता (व विनय) करने लगें॥

(और) फिर हमने (उनकी) कठिनाई को सहल (और दुःख को सुख) से बदल दिया । यहाँ तक कि उन्हें .ख़ूब उरूज (प्राप्त) हुआ । (और फिर अचेतना के पर्दे उनकी आँखों पर पड़ गये) और कहने लगे कि सुख दुःख तो हमारे बाप दादों को भी पहुँचते रहे हैं । (वह-जो कुछ हमें दुःख पहुँचे, कुछ हमारे ही साथ विशेष नहीं थे । जब वह ऐसी उद्दण्डता की बातें करने लगे) तो हमने उनको अचानक (अपने अ़ज़ाब में) पकड़ लिया । ऐसी अवस्था में कि वह (बिलकुल) अचेत थे ॥

और यदि (इन) बस्तियों के रहने वाले (अल्लाह पर) ईमान ले आते और (संयमता) परहेज़गारी (ग्रहण) करते, तो हम (अ़ज़ाब के बजाय) पृथ्वी व आकाश की नेअ़मतों (के द्वारों) को उनके लिये खोल देते (और हमारी दया व बरकत हर तरफ़ से उन पर अवतीर्ण होती) । किन्तु उन्होंने (हमारे आदेशों और हमारे पैग़म्बरों को) झूठा बताया, तो हमने (भी) उनकी करतूतों के बदले उन्हें (अपने अ़ज़ाब में) गिरिफ़्तार किया ॥

तो क्या (वर्तमान) बस्तियों के रहने वाले इसकी ओर से निश्चिन्त हैं, कि हमारा अ़ज़ाब (अचानक) उन्हें रातों रात आ दबावे और वह सोये पड़े हों । या (उन) बस्तियों के रहने वाले इससे निश्चिन्त हैं, कि हमारा अ़ज़ाब उन पर दिन दिहाड़े (अचानक) आ पहुँचे और वह खेल (तमाशों) में (तल्लीन) हों ॥

(हाँ, तो) क्या वह अल्लाह की अचानक पकड़ (और उसके अकारण अ़ज़ाव) से (बिलकुल) निर्भय हो गये । (यदि वास्तव में उनकी यह दशा है) तो (अच्छी तरह जान लें कि) अल्लाह की पकड़ (और उसके अ़ज़ाब) से वही लोग निर्भय होते हैं, जो नष्ट होने वाले हैं ॥

जो लोग (पहिले) ज़मीन वालों (की मृत्यु) के पश्चात (अब) ज़मीन के वारिस हुये हैं--क्या (इन घटनाओं के बाद भी) यह बात उनकी समझ में नहीं आई--

أَهْلِهَا أَن لَّوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَنَطْبَعُ
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝ تِلْكَ الْقُرَىٰ
نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَائِهَا وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ
رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا
مِن قَبْلُ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۝
وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِم مِّنْ عَهْدٍ وَإِن
وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم
مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا
فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝
وَقَالَ مُوسَىٰ يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ
الْعَالَمِينَ ۝ حَقِيقٌ عَلَىٰ أَن لَّا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا
الْحَقَّ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ
مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝ قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ بِآيَةٍ

कि अगर हम चाहें, तो (पहिली उम्मतों की तरह) इनके गुनाहों के बदले इन पर (भी) मुसीबत ला नाज़िल करें, (मगर यह लोग इब्रत पिज़ीर हैं नहीं)। और हम इनके दिलों पर मुहर कर देते हैं, तो यह लोग (नसीहत की बात) सुनते ही नहीं ० (ऐ पैग़म्बर !) यह चन्द बस्तियाँ हैं, जिनके हालात हम तुमको सुनाते हैं, (ताकि तुम्हारी क़ौम को तनब्बुह हो)। और इनके पैग़म्बर इन लोगों के पास मोजिज़े भी लेकर आये, मगर यह लोग (ऐसी सरिश्त ही के) न थे कि जिस चीज़ को पहिले झुठला चुके हों, (मोजिज़े देख कर) उस पर ईमान ले आएँ। काफ़िरों के दिलों पर ख़ुदा इसी तरह मुहर लगा दिया करता है ० और हमने तो इनमें से अक्सरों पर (मुत्लक़न) अह्द (का पास) न पाया और हमने तो इनमें से अक्सरों को ना फ़र्मान ही पाया ० फिर (जिन पैग़म्बरों के हालात ऊपर बयान हुए) उनके बाद हमने मूसा को मोजिज़े देकर फ़िरऔन और उसके दर्बारियों की तरफ़ भेजा, तो उन लोगों ने मोजिज़ों के साथ (बड़ी बड़ी) गुस्ताख़ियां कीं। (तो ऐ पैग़म्बर ! ज़रा) देखना ! मुफ़्सिदों का कैसा अन्जाम हुआ ० और मूसा ने (फ़िरऔन से मुख़ातिब होकर) कहा कि ऐ फ़िरऔन ! मैं पर्वर्दिगार आलम (की तरफ़) से भेजा हुआ (आया) हूँ ० मेरा फ़र्ज़ मन्सबी है कि सच के सिवा ख़ुदा की तरफ़ कोई सी बात भी मन्सूब न करूं। बिला शुबहा मैं तुम लोगों के पास तुम्हारे पर्वर्दिगार (की तरफ़) से मोजिज़े लेकर आया हूँ, तो (ऐ फ़िरऔन !) बनी इस्राईल को मेरे साथ करदे ० (फ़िरऔन) बोला, अगर तू (वाक़े में) कोई मोजिज़ा लेकर आया है—

कि यदि हम चाहें, तो उनको (भी) उनके पापों का (वैसा ही) मज़ा चखायें (जैसा कि हमने पिछली उम्मतों को चखाया था)। और (वास्तविक बात यह है कि) हम उन (जैसे लोगों) के हृदयों पर मोहर कर देते हैं (कि) फिर वह (नसीहत की बात) सुनते ही नहीं ॥

और (ऐ पैग़म्बर !) यह (कुछ) बस्तियाँ, जिनके कुछ वृतान्त हम तुमको सुना रहे हैं--(वह बस्तियां हैं कि) उनके रहने वालों के पास उनके रसूल चमत्कार लेकर आये। (और उन्होंने हर प्रकार से उन लोगों को समझाया। परन्तु) फिर (भी) यह (हठी) लोग (ऐसे) न थे कि जिस बात को पहिले झूठ कह चुके (हों-चमत्कार देख कर) उसे (सच) मान लें। (सच है) अल्लाह इसी प्रकार काफ़िरों के दिलों पर (उनकी अवज्ञा के कारण) मोहर कर देता है ॥

और (इन लोगों ने विपत्ति व तकलीफ़ के समय अल्लाह पर ईमान लाने और उसके अनुग्रहीत होने की प्रतिज्ञायें तो बहुत कीं, परन्तु) हमने उनमें से अक्सर को प्रतिज्ञा का पाबन्द नहीं पाया। उनमें से अधिकतर हमको दुराचारी (व अवज्ञाकारी ही) मिले ॥

इन नबियों के पश्चात (जिनका ऊपर ज़िक्र हुआ है) फिर हमने मूसा को अपने चमत्कार देकर फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास भेजा, तो उन लोगों ने चमत्कारों (को जादू बताकर उन) से इन्कार कर दिया (और मूसा पर अनेक प्रकार की ज़ियादतियां करने लगे)। सो देख लो कि (इन अत्याचारियों और) उपद्रव करने वालों का परिणाम कैसा (बुरा) हुआ ॥

और (इस संक्षिप्त विवरण का ब्योरा इस प्रकार है कि) मूसा ने (फ़िरऔन के पास जाकर) कहा कि ऐ फ़िरऔन ! मैं संसार के पालन कर्त्ता (की ओर) से भेजा हुआ (रसूल) हूं। (मेरा) कर्त्तव्य यह है कि सत्य के सिवाय अल्लाह की ओर कोई बात न लगाऊँ। मैं (अपनी सत्यता के प्रमाण में) तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से अद्भुत चमत्कार (भी) तुम्हारे पास लाया हूँ। अतएव (ऐ फ़िरऔन ! मेरा कहा मान और) बनी इस्राईल को (अपने अत्याचार से छुटकारा दे और) मेरे साथ (उनके देश में) उन्हें भेज दे ॥

(फ़िरऔन) बोला-कि यदि तू (अपने दावे में) सच्चा है और (सचमुच) कोई चमत्कार लेकर आया है—

(और अपने दावे में) सच्चा है, तो वह (मोजिज़ा) ला दिखा० इस पर (मूसा ने) अपनी लाठी डाल दी, तो क्या देखते हैं कि वह सरीह एक अज़दहा है० और अपना हाथ (बाहर) निकाला, तो क्या देखते हैं कि वह देखने वालों की नज़रों में (पड़ा) चमक रहा है ० (इस पर) फ़िऔन के लोगों में से, जो (उसके) दर्बारी थे, (आपस में) लगे कहने कि यह तो बड़ा माहिर जादूगर है ० चाहता है कि तुम (सब) को तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करे, तो (अब तुम लोग) क्या सलाह देते हो ० (आख़िर-कार) सबने मिल कर (फ़िऔन से) कहा कि मूसा और उसके भाई हारून (के मुआमिले) को इस वक़्त मुल्तवी रखिये और (अतराफ़ व जवानिब के) क़स्बात में कुछ हर्कारे रवाना कीजिये ० कि तमाम माहिर जादूगरों को (जमा करके) आप के हुज़ूर में ला हाज़िर करें ० ग़रज़ कि जादूगर फ़िऔन के पास हाज़िर हुए (और) लगे कहने कि अगर हम (मूसा पर) ग़ालिब आए, तो हमको (सर्कार से बड़ा भारी) इनआम मिलना चाहिये ० (फ़िऔन ने) कहा हाँ (हाँ) और (न सिर्फ़ इनआम, बल्कि) ज़रूर तुम (बारगाह सुल्तानी के) मुक़र्रबों में से (भी) क़रार दिये जाओगे ० (इस पर) जादूगरों ने (मूसा से) कहा कि ऐ मूसा ! या तो तुम (अपनी लाठी सबके सामने) ला डालो (कि अज़्दहा बन जाए) और या (कहो तो) हम ही (अपनी लाठियाँ और रस्सियाँ) डाल चलें (कि सबकी सब साँप बन बन जाएँ) ० (मूसा ने) कहा (अच्छा पहिले) तुम (ही) डाल चलो । तो जब उन्होंने (अपनी लाठियाँ और रस्सियां) डाल दीं, तो जादू के ज़ोर से लोगों की नज़र बन्दी करदी (कि चारों तरफ़ साँप ही साँप नज़र आने लगे) । और उन (सब) को दहशत में डाल दिया । और (बहुत ही) बड़ा (भारी) जादू (बनाकर) लाए ० और (उस वक़्त) हमने मूसा की तरफ़ वही भेजी कि तुम भी अपनी लाठी (मैदान में) डाल दो । (मूसा ने लाठी डाल दी) तो क्या देखते हैं कि जादूगरों ने जो झूट मूट (के साँपों का ढोंडा) बना खड़ा किया था, लाठी (अज़्दहा बन कर सबको) निगले चली जा रही है ० पस (जो) हक़ बात (थी, वह सब पर) साबित हो गई और जो कुछ जादूगरों ने किया था, (सब) मलया मेट हो गया ० पस फ़िऔन और उसके लोग उस अखाड़े में हारे—

فَأْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ فَاَلْقٰى عَصَاهُ
فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ
لِلنّٰظِرِيْنَ ۝ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا ٤
لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ فَمَاذَا
تَاْمُرُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ
حٰشِرِيْنَ ۝ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝ وَجَآءَ
السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ
الْغٰلِبِيْنَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝ قَالُوْا
يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ۝
قَالَ اَلْقُوْا فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ
وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ۝ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ
عَصَاكَ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ۝ فَوَقَعَ الْحَقُّ
وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا

صٰغِرِيْنَ

तो ला (दिखा !! देखें--वह कौन सा चमत्कार है ?) इस पर (मूसा ने) अपनी लाठी (पृथ्वी पर) डाल दी और (पृथ्वी पर गिरते ही) वह लाठी (बिलकुल) स्पष्ट रूप से बड़ा भारी भुजंग बन गई । और उन्होंने अपना हाथ (गरेबान में डाल कर बाहर) निकाला, तो वह एक दम देखने वालों की दृष्टि में (सूरज की तरह) चमकने लगा ॥

(यह देख कर) फ़िऔन की जाति के सरदार (आपस में) कहने लगे कि यह तो कोई बड़ा अनुभवी जादूगर है । यह चाहता है (कि अपने जादू के ज़ोर से) तुम (सब) को तुम्हारे देश से निकाल बाहर करे । अब (क्या करना चाहिये ?) तुम (इस मामले में) क्या राय देते हो ॥

(फिर) सबने (परामर्श करके फ़िऔन से) कहा कि (अभी तो कुछ दिन) मूसा और उसके भाई (हारून) से कुछ शत्रुता न कर, और (चारों ओर के) शहरों में (अपने) हरकारे भेज दे कि जो गुणवान जादूगर मिले, वह उसे तेरी सेवा में ला उपस्थित करें ॥

(अतएव ऐसा ही किया गया) और जादूगर फ़िऔन के पास आ गये (और) बोले कि यदि हम (मूसा पर) ग़ालिब आ गये, तो हमें (उपयुक्त) पुरस्कार मिलना चाहिये । फ़िऔन ने कहा--हाँ (हाँ अवश्य) । और (पुरस्कार क्या) तुम (तो फिर हमारे) पास बैठने वालों में से हो जाओगे ॥

(इसके उपरान्त) जादूगरों ने (मूसा से) कहा कि ऐ मूसा ! तुम (अपनी लाठी) पहिले डालोगे या (पहिले) हम (अपनी लाठियाँ और रस्सियाँ) डालें ? (मूसा ने) उत्तर दिया कि (पहिले) तुम (ही) डालो । अतएव जब उन्होंने (अपनी लाठियाँ आदि) डालीं, तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और (चारों ओर साँप ही साँप दिखा कर) उनको चकित कर दिया । और (बड़े से) बड़े जादू (जो वह ला सकते थे) ले आये ॥

तब हमने मूसा को हुक्म भेजा कि तुम (भी) अपनी लाठी डालो । अतएव (मूसा ने भी अपनी लाठी डाली । लाठी का पृथ्वी पर गिरना था कि) वह (एक भयानक सर्प बन कर साँपों के उस) झूठे साँग को--जो उन्होंने बना रक्खा था, निगलने लगा ॥

अभिप्राय यह है कि जो सत्य (बात) थी, वह क़ायम रही और जो जादूगरों का काम था, वह असत्य हो गया ॥

अतः वह (अर्थात् फ़िऔन और उसके साथी) इस (मुक़ाबले) में हारे—

صٰغِرِيْنَ ۝ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝ قَالَ فِرْعَوْنُ
اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ
مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ
مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ قَالُوْٓا
اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ
اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ۝ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ
قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا
فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ قَالَ سَنُقَتِّلُ
اَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ
قٰهِرُوْنَ ۝ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ

ع

और ज़लील (व ख़्वार) हो गये ० और जादूगर सज्दे में गिर पड़े ० (और) बोल उठे कि हम तो पर्वर्दिगार आलम पर ० जो मूसा और हारून का पर्वर्दिगार है, ईमान लाये ० फ़िऔन बोला (क्या) इससे पहिले कि मैं तुमको इजाज़त दूं, तुम मूसा के ख़ुदा पर ईमान ले आए ? हो न हो यह तुम्हारा (और मूसा का) फ़रेब है कि (बाहम इत्तिफ़ाक़ करके) तुमने (इस) शहर में (आकर) यह पाखंड मचाया है, ताकि यहाँ लोगों को (यानी हम सब को) इस शहर से निकाल दो (और अपनी हुकूमत जमाओ) । तो (ज़रा सब्र करो) तुमको (अपने किये का नतीजा अभी) थोड़ी देर में मालूम हो जाएगा ० मैं तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव उलटे (सीधे) कटवाऊं, फिर तुम सबको सूली पर चढ़ाऊँ तो सही० वह लगे कहने (कि तेरी इस धमकी से नहीं डरते) हमको तो (मर कर) अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ लौट कर जाना ही है ० और तूने हम में क़ुसूर ही क्या पाया है ? यही ना कि जब हमारे पर्वर्दिगार के मोजिज़े हमारे सामने वाक़े हुये, तो हम उन पर ईमान ले आए । (और अब हमारी बस यही दुआ है कि) ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हम पर सब्र (की पखालें) उँडेल दे और (अपनो) फ़र्मांबर्दारी (ही) की हालत में हमको (दुनिया से) उठाले ० और फ़िऔन के लोगों में से सर्दारों ने (फ़िऔन से) कहा कि क्या आप मूसा और उसकी क़ौम (के लोगों) को (इसी हाल पर) रहने देंगे कि मुल्क में फ़साद फैलाते पड़े फिरें और वह आपसे और आपके (बनाए हुये) बुतों से सर्ताबी करता रहे । (फ़िऔन) बोला (नहीं) हम अभी इनके बेटों को ढूंढ ढूंढ कर मारेंगे और इनकी औरत ज़ात (यानी बेटियों) को (अपनी ख़िदमत के लिये) ज़िन्दा रक्खेंगे और हम इन पर (हर तरह से) ग़ालिब हैं ० (यह सुन कर) मूसा ने अपनी क़ौम (के लोगों) से कहा, अल्लाह से मदद माँगो—

और ज़लील हुए और जादूगरों ने मस्तक नवा दिये । (और) कह उठे कि हम तो संसार के पालन कर्त्ता पर-जो कि मूसा और हारून का पालन कर्त्ता है, ईमान ले आये ॥

फ़िऔन बोला कि तुम मुझसे पूछे बिना (ही) मूसा पर ईमान ले आये ? (तुम मिल गये हो) । निश्चित रूप से यह (तुम्हारी और मूसा की एक सम्मिलित) चाल है, जो तुम इस शहर में (आकर) चले हो । ताकि तुम इस (शहर) से उसके निवासियों (अर्थात् हम लोगों) को निकाल बाहर करो (और अपने शासन का ढंग डालो । ठहरो !) अभी तुम्हें पता चल जायगा । मैं तुम्हारे एक ओर के हाथ और दूसरी ओर के पैर काटूंगा । फिर तुम सब को सूली पर चढ़ाऊंगा ॥

उन्होंने उत्तर दिया (जो तेरा जी चाहे, कर । हम इन बातों से नहीं डरते) । हमको तो (हर दशा में) अपने पालन कर्त्ता की ओर लौट कर जाना ही है । और तुझे हम से यही शत्रुता है ना !! कि जब हमारे पालन कर्त्ता की निशानियां हमारे सामने आईं, तो हमने उन्हें मान लिया । ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! हमको (अपनी कृपा से) पूर्ण सन्तोष प्रदान कर और हमारा अन्त (धर्म) इस्लाम पर कर ॥

और फ़िऔन की जाति के सरदारों ने कहा, कि (ऐ फ़िऔन !) क्या तू मूसा और उसकी जाति को (यूंही) छोड़ देगा कि यह लोग देश में उपद्रव मचाते फिरें । और मूसा तुझे और तेरे पूज्यों (की ख़ुदाई अथवा ईश्वरीयता) को अलग उठाकर रखदें ॥

फ़िऔन ने उत्तर दिया, (नहीं) । हम (उन लोगों का भी प्रबन्ध करेंगे) उनके लड़कों को क़त्ल कर डालेंगे और उनकी स्त्रियों को जीवित रहने देंगे (कि हमारी सेवा करें) और (वह तो हमारे आधिपत्य में हैं) । हमें उन पर (पूरा) अधिकार प्राप्त है ॥

(फ़िऔन और उसके दरबारियों के यह इरादे मालूम करके हज़रत) मूसा ने अपनी जाति से कहा कि (इस कठिन समय में) अल्लाह से सहायता मांगो—

وَاصْبِرُوْا اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ● قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا
مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا قَالَ
عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ
فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ● وَلَقَدْ
اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ
الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ● فَاِذَا جَآءَتْهُمُ
الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ
يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ
عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ● وَقَالُوْا
مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ
لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ● فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ
وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ

مفصّلٰتٍ

और सब्र किये रहो। मुल्क तो सब अल्लाह ही का है। अपने बन्दों में से जिसको चाहता है, उसका वारिस बना देता है। और अन्जाम (बख़ैर) पर्हेज़गारों (ही) का है ० वह लगे कहने कि तुम्हारे आने से पहिले और तुम्हारे आए पीछे हमको तो (फ़िर्औन के हाथों से) तकलीफ़ें (ही तकलीफ़ें) पहुँचती रहीं। (मूसा ने) कहा, अब वह वक़्त क़रीब आ लगा है कि तुम्हारा पर्वर्दिगार तुम्हारे दुश्मन को हलाक करे और तुमको मुल्क में (उसका) जा नशीन बनाए। फिर देखे कि तुम कैसे अमल करते हो ० और हमने तो फ़िर्औन के लोगों को बरसों की ख़ुश्क सालियों और कमी पैदावार (के अज़ाब) में (भी) मुब्तला किया, ताकि वह लोग मुतनब्बह हों ० तो जब उनको कोई फ़ायदा पहुँचता, तो कहते--यह हमारा हक़ है (और हमारी वजह से है)। और अगर उन पर कोई मुसीबत आती, तो मूसा और उनके साथियों की नहूसत समझते। सुनो जी ! उनकी नहूसत तो बस ख़ुदा के हाँ (उनकी तक़दीर में लिखी जा चुकी) थी, लेकिन उनमें के अक्सरों को (यह हक़ीक़त) मालूम न थी ० और (फ़िर्औन के लोगों ने मूसा से) कहा तुम कोई सी निशानी भी हमारे सामने लाओ कि उसके ज़रिए से तुम हम पर अपना जादू चलाओ, तो (ख़ूब समझे रहो कि) हम तो तुम पर (किसी तरह) ईमान लाने वाले हैं नहीं ० पस हम ने उन पर तूफ़ान भेजा और (नीज़) टिड्डियाँ और जुएँ और मेंडक और ख़ून--

---

और धैर्य्य (से दुखों को सहन) करो। पृथ्वी अल्लाह की है। वह अपने बन्दों में से जिसे चाहे, उसका शासक बना दे। (फ़िर्औन को कुछ दिन और सुख भोग लेने दो)। और अन्त में तो सफलता संयमी मनुष्यों ही को मिलती है॥

(इस पर) जाति के लोगों ने कहा कि हम (तो फ़िर्औन के हाथों सदा) विपत्ति (ही) में रहे। आपके आने से पहिले (भी) और आपके आने के पश्चात (भी)॥

(हज़रत) मूसा ने फ़र्माया (घबराओ नहीं)। थोड़े ही समय में तुम्हारा पालन कर्त्ता तुम्हारे शत्रु को मार देगा और उनके स्थान में तुम्हें इस देश का शासक बनावेगा (और) फिर देखेगा कि तुम्हारे आचरण कैसे रहते हैं॥

और हमने फ़िर्औन वालों को (उनकी अवज्ञा और उद्दण्डता के बदले) अकाल और फलों की कमी (के अज़ाब) में गिरिफ़्तार किया, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें (और दुःख भोग कर सचाई के मार्ग पर आ जावें)। तो (बजाय इसके कि वह शिक्षा ग्रहण करते और सचाई के मार्ग पर आते, उनकी मूर्खता और बढ़ गई। यहाँ तक कि) जब उन्हें (कोई) लाभ पहुँचता, तो कहते--यह तो हमारा स्वत्व (था, जो हमें मिला) है। और यदि उन्हें (कोई) दुःख पहुँचता, तो मूसा और उनके साथियों की नहूसत बतलाते (और उसका कारण उन्हें ख़याल करते। लोगो !) याद रक्खो कि यह उन्हीं (के बुरे कर्मों) की नहूसत (है, जो) अल्लाह (तआ़ला) की ओर से (उन पर अवतीर्ण हुई) है। परन्तु उनमें के प्रायः लोग (इस बात को) जानते नहीं॥

और उन्होंने (मूसा से) कहा (चाहे) तुम कैसी ही अनोखी (व आश्चर्य जनक) बात हमारे सामने पेश करके उससे हमें आधीन (करने का उद्योग) करो, हम तुम पर ईमान लायेंगे नहीं॥

(जब उनकी सर्कशी की नौबत यहाँ तक पहुँच गई) तो हमने उन पर (पानी का) तूफ़ान और टिड्डियों और सुरसुरियों और मेंडकों और रक्त का अज़ाब भेजा। (अर्थात ढाई ढोई की वर्षा होने लगी। नील नदी चढ़ आई। टिड्डियाँ खेतों पर आ पड़ीं। सुरसुरयाँ अन्न में पड़ गईं। चारों ओर मेंडक ही मेंडक फैल गये। पीने और काम में आने वाला पानी लहू बन गया)। यह सब (दंड समझने वाले के लिये मूसा की सचाई की) अलग अलग निशानियाँ थीं--

مُفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ
وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ
لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ
بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ
فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا
عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا
يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا
الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى
عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝ بِمَا صَبَرُوْا ۗ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ
يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ۝
وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ

कि यह सब जुदे जुदे मोजिज़े थे। इस पर भी वह लोग अकड़े रहे और नाफ़र्मानी तो उन लोगों का शेवा ही था ० और जब (जब) उन पर अज़ाब नाज़िल होता, (तो) कहते. ऐ मूसा ! तुमसे जो ख़ुदा ने (क़बूल दुआ का) वादा कर रक्खा है, उसके आसरे पर अपने पर्वर्दिगार से हमारे हक़ में दुआ करो। (और) अगर तुमने हम पर से (इस) अज़ाब को टाल दिया. तो हम ज़रूर तुम पर ईमान ले आयेंगे और बनी इस्राईल को भी ज़रूर तुम्हारे साथ भेज देंगे ० फिर जब हम एक वक़ ख़ास के लिये जिस तक उनको पहुँचना था, अज़ाब को उनसे टाल देते, तो वह फ़ौरन ही बद अहदी करने लगते ० (ग़रज़) आख़िरकार हमने उनसे (उनकी शरारतों का) बदला लिया (पर लिया)। यानी इस (जुर्म) की पादाश में कि वह हमारी आयतों को झुठलाते और उनसे बेपर्वाई करते थे, हमने उनको समन्दर में ग़र्क़ कर दिया ० और (मुल्क शाम की) ज़मीन जिसमें हमने (ज़रख़ेज़ होने की) बरकत दी थी, (आख़िरकार) हमने उन लोगों को उसके पूरब और पच्छिम का मालिक कर दिया, जो (फ़िरऔन के यहां) कमज़ोर समझे जाते थे। और (ऐ पैग़म्बर ! चूंकि) बनी इस्राईल ने (फ़िरऔन के ज़ुल्मों पर) सब्र किया, इस लिये तुम्हारे पर्वर्दिगार का वादा नेक (जो उसने) बनी इस्राईल (से किया था, उन) के हक़ में पूरा हुवा ० और जो (सख़्तियां) फ़िरऔन और उसकी क़ौम (के लोग बनी इस्राईल के साथ) करते और (बड़ी बड़ी) ऊंची इमारतें (उनसे बेगार में) बनवाते थे, (उस सारे इन्तिज़ाम को) हमने दर्हम बर्हम कर दिया ० और हमने बनी इस्राईल को समन्दर पार पहुँचा दिया, तो वह ऐसे लोगों पर से होकर गुज़रे–

(परन्तु इन चिन्हों के होते हुए भी) उन लोगों ने विद्रोह किया। और यह (सर्कशी व) अवज्ञा, तो उन लोगों का स्वभाव हो गया था॥

और (इन अज़ाबों में से) जब कोई अज़ाब इन पर उतरता, तो (मूसा के पास दौड़े आते और) प्रार्थना करते कि ऐ मूसा ! अपने पालन कर्त्ता से हमारे वास्ते उस ढंग पर प्रार्थना करदो, जो उसने तुम्हें सिखाया है। अगर तुमने हम पर से इस अज़ाब को दूर कर दिया, तो हम तुम पर अवश्य ईमान ले आयेंगे। और (तुम्हारी इच्छानुसार) बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ अवश्य भेज देंगे॥

फिर जब हम (इनकी हलाकत के उस नियत) समय तक, जो (अन्त में) इन्हें पेश आना था, (अपने किसी) अज़ाब को उन पर से उठा देते, तो (अज़ाब के टलते ही) प्रतिज्ञा भंग करते (और फिर कुफ़्र व शिर्क में लिप्त हो जाते)। अन्त में (वह समय आ गया, जब) हमने उनसे (उनकी शरारतों और प्रतिज्ञा भंग करने का) बदला लिया। अर्थात् अपनी आयतों के झूठी बताने और उनसे बे पर्वाही करने की सज़ा में हमने उन्हें समुद्र में डुबो दिया॥

और हमने उस जाति (इस्राईल के वंश) को–जो (फ़िरऔन के मुक़ाबले में बिलकुल) निर्बल समझी जाती थी, पृथ्वी (शाम) के पूर्व व पश्चिम का स्वामी बना दिया कि जिसमें हमने (बड़ी) बरकत रक्खी है। (अर्थात् जिसे हमने बहुत उपजाऊ बनाया है)। और तुम्हारे पालन कर्त्ता की (वह) शुभ प्रतिज्ञा (कि हम तुमको शाम देश का मालिक बना देंगे) बनी इस्राईल के हक़ में पूरी हुई। इस कारण, कि उन्होंने (फ़िरऔन के अत्याचार सहन करने में) धैर्य्य से काम लिया। और फ़िरऔन और उसकी जाति (के लोगों) ने (अपनी शान दिखाने के लिये) जो चीज़ें बनाई थीं और जो ऊंची ऊंची इमारतें बनाई थीं, उन सब को मिटा दिया॥

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र पार पहुँचा दिया, तो वह उन लोगों के पास से (होकर) गुज़रे—

يَعْكُفُونَ عَلَىٰٓ أَصْنَامٍ لَّهُمْ قَالُوا يٰمُوسَى اجْعَل
لَّنَآ إِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ
إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ● قَالَ أَغَيْرَ اللّٰهِ أَبْغِيكُمْ إِلٰهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِينَ ● وَإِذْ أَنْجَيْنٰكُم مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ الْعَذَابِ يُقَتِّلُونَ أَبْنَآءَكُمْ
وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ وَفِي ذٰلِكُم بَلَآءٌ مِّن
رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ● وَوٰعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلٰثِينَ لَيْلَةً ع
وَأَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقٰتُ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ
لَيْلَةً وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ هٰرُونَ اخْلُفْنِي
فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ●
وَلَمَّا جَآءَ مُوسَىٰ لِمِيقٰتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ
رَبِّ أَرِنِيٓ أَنْظُرْ إِلَيْكَ قَالَ لَن تَرٰىنِي وَلٰكِنِ

انظر

जो अपने बुतों पर (परस्तिश के वास्ते) जमे बैठे थे, (उनको देख कर बनी इस्राईल मूसा से) लगे कहने कि ऐ मूसा ! जिस तरह इन लोगों के पास बुत हैं, (ऐसा ही) एक बुत हमारे लिये भी बनादो। (मूसा ने) जवाब दिया कि तुम (बड़े ही) जाहिल लोग हो ० (और) यह (बुत परस्त) लोग जिस (दीन) में हैं, वह तबाह होने वाला है और जो अमल यह लोग करते रहे हैं, (सब) लग़्व हैं ० (मूसा ने यह भी) कहा कि क्या (तुम चाहते हो कि) ख़ुदा के सिवा कोई (और) माबूद तुम्हारे लिये बहम पहुँचा दूं ? हालाँकि उसीने तुमको दुनिया जहान के लोगों पर बर्तरी दी है, (तो क्या उसके एहसान का यही बदला है) ० और (ऐ बनी इस्राईल ! वह वक़्त याद करो) जब हमने तुमको फ़िऔन के लोगों से नजात दी कि वह लोग तुमको (यानी तुम्हारे बड़ों को बहुत ही) बुरी तकलीफ़ें देते थे, तुम्हारे बेटों को (ढूंढ २ कर) क़त्ल करते और तुम्हारी औरतों (यानी बेटी ज़ात) को (अपनी ख़िदमत के लिये) ज़िन्दा रखते । और इसमें (तुम्हारे सब्र की) बड़ी (सख़्त) आज़माइश थी, (जो) तुम्हारे रब (की तरफ़) से (हो रही थी) ० और हमने मूसा से तीस रात का वादा किया और हमने दस (रातें और बढ़ाकर इन) से तीस को पूरा (चालीस) कर दिया। और यूं पर्वर्दिगार मूसा का वादा चालीस रात का पूरा (चिल्ला) हो गया। और मूसा (कोह तूर पर जाते वक़्त) अपने भाई हारून से कहते गये कि मेरी क़ौम (के लोगों) में मेरी नयाबत करते रहना और (उनमें) मेल जोल (क़ायम) रखना और मुफ़्सिदों के रस्ते न चलना ० और जब मूसा हमारे वादे के मुताबिक़ (कोह तूर पर) हाज़िर हुये और उनका पर्वर्दिगार उनसे हम कलाम हुआ, तो (मूसा ने) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! तू (अपने तईं) मुझे दिखा कि मैं तेरी तरफ़ एक नज़र देखूं। (ख़ुदा ने) फ़रमाया-तुम हमको हरगिज़ न देख सकोगे, मगर हाँ—

जा अपने बुतों के पूजने में लग रहे थे (अर्थात वहाँ भी उन्हें मूर्ति पूजकों से वास्ता पड़ा। उस मूर्ति पूजक जाति को देख कर) यह लोग लगे कहने (कि) ऐ मूसा ! तुम हमारे लिये भी एक ऐसा ही पूज्य बना दो, जैसे कि इन लोगों के पूज्य हैं। मूसा ने फ़र्माया कि वास्तव में तुम लोग हो (बड़े) मूर्ख। (इतना नहीं समझते कि) यह लोग जिस (धर्म) में हैं, वह असत्य, और जो कर्म वह कर रहे हैं (वह सब) झूठे (और निष्फल) हैं॥

(और) फ़र्माया-क्या (तुम्हारा यह मतलब है कि) मैं ख़ुदा के अतिरिक्त तुम्हारे लिये कोई और पूज्य तलाश करूं ? यद्यपि उसने तुमको समस्त संसार के मनुष्यों पर श्रेष्ठता दी है। (मूर्ति पूजा जैसा नीच कर्म तुम जैसी उच्च जाति के लिये शोभा नहीं देता) । और (ऐ बनी इस्राईल ! तुम्हें वह समय भी याद है) जब हमने तुम्हें फ़िऔनियों (की ग़ुलामी) से मुक्त किया, जो तुमको अत्यन्त कठिन दुःख देते थे। तुम्हारे बेटों को चुन चुन कर क़त्ल कर डालते थे और तुम्हारी स्त्रियों को (अपनी सेवा कराने के लिये) ज़िन्दा छोड़ देते थे। और इसमें तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (बड़ी कठिन) परीक्षा थी॥

और (जब मूसा और उनके साथी फ़िऔन और फ़िऔनियों की ओर से निश्चिन्त हो गये और बनी इस्राईल की प्रार्थनानुसार मूसा ने हमसे शरीअत की किताब माँगी, तो) हमने मूसा से तीस रातों का वादा किया और दस रातों को उन तीस रातों का अवशेष बनाया। इस तरीक़े से मूसा के पालन कर्त्ता का नियत किया हुआ समय चालीस रातों (में तौरेत देने) का पूरा हो गया॥

और मूसा ने (तूर पहाड़ पर जाते समय) अपने भाई हारून से कहा (कि जब तक मैं न आऊँ) तुम मेरी जाति (के लोगों) में मेरे प्रतिनिध रूप से रहना और (मेरी तरह उनका) सुधार करते रहना। और उपद्रवियों के ढंग पर (कदापि) न चलना॥

और जब मूसा हमारे नियत किये हुये समय पर (तौरेत लेने) आये और उनका पालन कर्त्ता उनसे सम्भाषण करने लगा, तो उन्होंने (दर्शन करने के उत्कण्ठा से बेचैन होकर) कहा कि ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! मुझे (अपना) दर्श दिखा। (मेरा जी चाहता है) कि मैं तुझे एक दृष्टि देख लूं। फ़र्माया (ऐ मूसा !) तुम मुझे कदापि न देख सकोगे, लेकिन--

انظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ
تَرَىٰنِي فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ
مُوسَىٰ صَعِقًا فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَٰنَكَ تُبْتُ
إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ يَٰمُوسَىٰ إِنِّي
اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَٰلَٰتِي وَبِكَلَٰمِي
فَخُذْ مَا ءَاتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ الشَّٰكِرِينَ ۝ وَكَتَبْنَا
لَهُ فِي الْأَلْوَاحِ مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا
لِّكُلِّ شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ
يَأْخُذُوا بِأَحْسَنِهَا سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفَٰسِقِينَ ۝
سَأَصْرِفُ عَنْ ءَايَٰتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِن يَرَوْا كُلَّ ءَايَةٍ لَّا يُؤْمِنُوا
بِهَا وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا
وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ذَٰلِكَ

(ऐसा ही शौक़ है, तो सामने के इस) पहाड़ पर नज़र करो (कि हम उस पर एक करिश्मए क़ुद्रत के ज़रिए से जलवा फ़र्मा होंगे)। पस अगर (यह पहाड़) अपनी जगह ठैरा रहा, तो (जानना कि) हमको (भी) देख सकोगे। फिर जब उनका पर्वर्दिगार पहाड़ पर जलवा फ़र्मा हुवा, तो (ज़ल्ज़ला आया और ख़ुदा ने) उसको चकना चूर कर दिया और मूसा ग़श खाकर गिर पड़े। फिर जब होश में आये, तो बोल उठे कि (ऐ पर्वर्दिगार !) तेरी ज़ात पाक है। मैं (ने जो देखने की बेजा दरख़्वास्त की थी) तेरी जनाब में (उससे) तौबा करता हूँ और (तुझ पर) ईमान लाने वालों में पहिला ईमान लाने वाला (बन्दा) मैं हूँ ० (ख़ुदा ने) फ़र्माया कि ऐ मूसा ! हमने तुमको अपनी पैग़म्बरी और हम कलामी से (दूसरे) लोगों पर इम्तियाज़ बख़्शा। तो जो (सहीफ़ए तौरात) हमने तुमको इनायत फ़र्माया है, उसको लो और शुक्र गुज़ार रहो ० और हमने (तौरात की) तख़्तियों में मूसा के (कारबन्द होने के) लिये हर तरह की नसीहत और हर चीज़ की तफ़सील लिखदी थी। तो (हमने मूसा को हुक्म दिया कि) इस (किताब तौरात) को (ख़ूब) मज़बूती से पकड़े रहो (यानी इस पर अमल करो)। और अपनी क़ौम (के लोगों) को (भी) हुक्म दो कि इस किताब की अच्छी अच्छी बातों को पल्ले बांधे रहें। (और उनको यह भी समझा दो कि) हम अन्क़रीब तुम लोगों को ना फ़र्मानों के घर भी दिखा देंगे (कि कैसे उजड़ते हैं) ० और जो लोग नाहक़ (ना रवा) मुल्क में अकड़ते (पड़े) फिरते हैं (यानी फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लोग) हम उनको अपने अहकाम से बर्गश्ता किये रहेंगे और (उनके दिलों को ऐसा सख़्त कर देंगे कि) अगर (दुनिया जहान के) सब मोजिज़े भी देखें, ताहम उन पर ईमान न लाएँ। और अगर सीधा रस्ता देख पाएँ, तो उसको (अपना) मस्लक (यानी तरीक़ा) न बनाएँ। और अगर गुमराही का रस्ता देख पाएँ, तो उसको (अपना) मस्लक बनालें। यह कज रवी—

(तुम्हें मेरे दर्शन करने की ऐसी ही इच्छा है, तो) तुम इस पहाड़ की ओर देखो ! (मैं उस पर अपनी ज्योति डालता हूँ)। यदि यह पहाड़ अपनी जगह पर ठहरा रहा, तो (समझ लेना कि) तुम (भी) मुझे देख सकोगे। अतएव जब उनके पालन कर्त्ता ने पहाड़ पर अपनी ज्योति डाली, तो उस (पहाड़) को चकनाचूर कर दिया और मूसा अचेत होकर गिर पड़े। (फिर) जब (कुछ) आराम हुआ (और होश में आये) तो (अत्यन्त लज्जा के साथ) कहने लगे कि (ऐ मेरे पालन कर्त्ता !) तेरा व्यक्ति पवित्र है। मैं (ने बुरा किया, जो अपनी हैसियत से बढ़ कर ऐसी प्रार्थना की--जो तेरे गौरव के अनुकूल नहीं थी। अब मैं) तेरे द्वार में (इससे) तौबा करता हूँ और (तेरी महानता व तेज पर) मैं सबसे पहिले ईमान लाता हूँ ॥

(अल्लाह तआला ने हुक्म) फ़र्माया--ऐ मूसा ! मैंने अपनी पैग़म्बरी और परस्पर के सम्भाषण से (और) लोगों पर तुमको श्रेष्ठता प्रदान की। अतएव जो कुछ मैंने तुमको दिया है, उसको लो और अनुग्रहीत हो ॥

और हमने मूसा के लिये (तौरेत की) तख़्तियों पर नसीहत की सब बातें और हर हर चीज़ की व्याख्या लिख दी थी। इस लिये (हमने मूसा को ताकीद की कि) उनको मज़बूती से पकड़े रहो (और उनकी पूरी २ पाबन्दी करो)। और अपनी जाति (के आदमियों) को भी हुक्म दो कि वह (भी) उनकी (उन) श्रेष्ठ बातों को ग्रहण करें। (और उन्हें समझा दो कि) हम शीघ्र तुम लोगों को अवज्ञा करने वालों का स्थान दिखा देंगे। (अर्थात् तुम्हें मालूम हो जावेगा कि विद्रोह व अवज्ञा करने वालों का क्या परिणाम होता है) ॥

(और) जो लोग ज़मीन पर व्यर्थ ऐंठते फिरते हैं (और ख़ुदा के बन्दों पर ज़ुल्म व अत्याचार ढाते हैं) अत्यन्त शीघ्र हम (उनके दिलों पर मोहर लगा कर) उनको अपनी आयतों से (सदैव के लिये) विमुख करदें। और (उनकी यह दशा कर दें कि) यदि समस्त (संसार के) अद्भुत चमत्कार भी यह लोग देखलें, तो उन पर ईमान न लायें। और यदि नेकी का मार्ग उन्हें दिखाई दे, तो उसे (अपना) आदर्श न बनायें। और पथ-भ्रष्टता का मार्ग दिखाई दे, तो उसे (अपना) मार्ग बनालें। यह

بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَ
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ ۭ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاتَّخَذَ
قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا
لَّهٗ خُوَارٌ ۭ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ
سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا سُقِطَ
فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ
يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝
وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ
بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ
وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۭ
قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا
يَقْتُلُوْنَنِيْ ۡ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ

مع القوم

उनमें इस से पैदा हुई कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से बेपर्वाई करते रहे ० और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और (रोज़) आख़िरत के पेश आने को न माना, उनका किया धरा-सब अकारत। यह सज़ा उनको उनही आमाल (बद) की दी जायगी, जो (दुनिया में) करते थे ० और मूसा के (कोह तूर पर गये) पीछे उनकी क़ौम (के लोगों) ने अपने ज़ेवर (गलाकर उस) का एक बछड़ा बना खड़ा किया कि वह एक जिस्म (बे रूह) था, जिसकी आवाज़ भी (बैल की सी) थी (और लगे उसकी परस्तिश करने)। क्या (अहमक़ों ने) इतनी बात भी न देखी कि वह इनसे बात चीत भी तो नहीं कर सकता और न इनको (दीन का कोई) रस्ता दिखा सकता है। (बहर कैफ़) यह लोग बछड़े को (परस्तिश के लिये) ले बैठे और (ऐसा करने से वह आप ही अपने ऊपर) .ज़ुल्म कर रहे थे ० और जब उनका किया उनके आगे आया और उन्होंने अपने तईं (राह रास्त से) भटका हुवा पाया, तो लगे कहने कि अगर हमारा पर्वदिगार हम पर रहम न करेगा और हमारे .क़ुसूर मुआफ़ न फ़र्मायगा, तो बेशक हम घाटे में आजायँगे ० और जब मूसा (कोह तूर से) अपनी क़ौम की तरफ़ .ग़ुस्से और रंज में भरे हुए लौटे, (तो लोगों से मुख़ातिब होकर) बोले कि मेरे (गये) पीछे मेरी ग़ैबत में तुमने यह (गोसाला परस्ती की बहुत ही) बुरी हरकत की। क्या तुम लोग अपने पर्वर्दिगार के हुक्म के मुन्तज़िर न रह कर जल्दी कर बैठे। और मूसा ने (मारे .ग़ुस्से के तौरात की) तख़्तियों को फेंक दिया और अपने भाई (हारून) के सर (के बालों) को पकड़ कर उनको लगे अपनी तरफ़ खींचने। (इस पर हारून ने) कहा, ऐ मेरे माँ जाए (भाई!) लोगों ने मुझको बे हक़ीक़त समझा और क़रीब था कि मुझको मार डालें, तो (मेरी बे हुर्मती करने से) दुश्मनों को मुझ पर हंसने का मौक़ा न दो—

इस कारण से कि उन्होंने हमारी आयतों को झूठा ठहराया और उसकी ओर से विमुख रहे॥

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और प्रलय के (दिन के) उपस्थित होने को झूठ बताया, उनके (सर्व) कर्म व्यर्थ गये। जैसे कर्म वह करते थे, वैसा ही (उनका) बदला पायेंगे॥

और मूसा की जाति ने उनके (तूर पर जाने के) पश्चात् अपने आभूषण (गला कर उन) का एक बछड़ा (अपने पूजने के लिये) बनाया। जो (केवल) एक ढांचा था, जिसमें (से गाय की सी) आवाज़ (निकलती) थी। (न मालूम उन मूर्खों ने कैसे उसे अपना पूज्य ठहरा लिया)। क्या उनको यह (भी) नहीं सूझा-कि वह (ऐसे को पूज्य बना रहे हैं, जो) न (तो) उनसे बात कर सकता है और न उनको (कोई) मार्ग दिखा सकता है। परन्तु यह होते हुए भी उन्होंने उसको (अपना) पूज्य क़रार दे लिया और (उसकी पूजा करने लगे। और सच पूछो, तो) वह (उसकी आराधना नहीं कर रहे थे, बल्कि अपने ऊपर) अत्याचार कर रहे थे॥

और जब वह (अपनी ग़लती को अनुभव करके) लज्जित हुए और उन्होंने देखा कि वास्तव में हम तो पथ-भ्रष्ट हो गये। तो कहने लगे कि यदि हमारे पालन कर्त्ता ने हम पर दया न की और हमारे अपराध को क्षमा न किया, तो हम निस्सन्देह (नष्ट व) बरबाद हो जायँगे॥

और जब मूसा (तूर पर्वत से) अपनी जाति की ओर (उनकी इन हरकतों पर) क्रोध और शोक से भरे हुए वापिस हुये, तो (जाति को सम्बोधन करके) कहा कि तुम लोगों ने मेरे बाद यह बड़ी नीचता-पूर्ण हरकत की (कि बछड़े को पूज्य बना बैठे)। तुम्हें (ऐसी) क्या जल्दी (पड़ी) थी (कि तुमने) अपने पालन कर्त्ता के हुक्म की (बाट न देखी और तौरेत के अवतीर्ण होने का इन्तिज़ार न किया)। और मूसा ने (मारे क्रोध के तौरेत की) तख़्तियाँ (पृथ्वी पर) डाल दीं। और अपने भाई (हारून) के सिर (के बालों) को पकड़ के उनको अपनी तरफ़ घसीटने लगे। हारून ने कहा ऐ मेरे माँ जाये (भाई ! वास्तविक बात यह है कि) इन लोगों ने मुझे कुछ समझा ही नहीं और वह तो (नसीहत करने के कारण मेरे ऐसे शत्रु हो गये थे कि) मुझे जान से ही मारे डालते थे। (मैंने अपनी करनी में कसर नहीं की इस लिये तुम (मुझे ज़लील करके) शत्रुओं को मुझ पर हँसने (का अवसर) न दो और—

مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۞ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِأَخِيْ
وَأَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۞
إِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ
٨ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَكَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُفْتَرِيْنَ ۞ وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا
مِنْ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۞ وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ أَخَذَ
الْأَلْوَاحَ وَفِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ
لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ۞ وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ
رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ
لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَإِيَّايَ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَاءُ مِنَّا إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا
مَنْ تَشَاءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَاءُ أَنْتَ وَلِيُّنَا

और मुझको (इन) ज़ालिम लोगों के साथ मत सानो०(इस पर मूसा ने मुतनब्बह होकर .खुदा से) दुआ की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मेरा और मेरे भाई का क़ुसूर मुआफ़ फ़र्मा, और हम (दोनों) को अपनी रहमत(के साए)में ले और तू तमाम रहम करने वालों से बड़ा रहम करने वाला है ० (.खुदा ने फ़र्माया कि मूसा !) जो लोग बछड़े को (परस्तिश के लिये) ले बैठे, अनक़रीब उन पर उनके पर्वर्दिगार का ग़ज़ब नाज़िल होगा और (इस) दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत (उसके अलावा)। और झूठ बोहतान बाँधने वालों को हम इसी तरह सज़ा दिया करते हैं०और जो लोग गुनाहों के मुर्तकिब हुए, फिर इसके बाद तौबा की और ईमान लाए, तो बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार तौबा के बाद अलबत्ता बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और जब मूसा का .गुस्सा फ़रो हुवा, तो उन्होंने (तौरात को) तख़्तियों को (ज़मीन पर से) उठा लिया । और तौरात के नुस्ख़े में उन लोगों के लिये, जो अपने पर्वर्दिगार से डरते हैं, (काफ़ी) हिदायत और (काफ़ी) रहमत है ० और मूसा ने हमारे वादे (पर हाज़िर लाने) के लिये अपनी क़ौम में से सत्तर आदमी मुन्तख़ब किये, फिर जब उनको ज़लज़ले ने आ लिया, तो (मूसा ने)अर्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! अगर तू चाहता, तो मुझ समेत इन लोगों को पहिले ही से हलाक कर देता । हम में से जो लोग अहमक़ हैं, वह एक हरकत कर बैठे, क्या उसकी पादाश में तू हमको हलाक किये देता है?यह सब तेरे करिश्मे हैं, इन (करिश्मों) से जिसको तू चाहे, गुमराह करे और जिसको चाहे,हिदायत दे । तू ही हमारा कारसाज़ है—

(इन) ज़ालिमों के साथ मुझे न सानो ॥

(हारून का उत्तर सुन कर) मूसा ने (.खुदा के दरबार में) प्रार्थना की कि ऐ पालन कर्त्ता ! मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर और हमको अपनी दया (रूपी गोद) में ले और तू सबसे बड़ा दयालु है ॥

(.खुदा के दरबार से उत्तर मिला कि) जिन लोगों ने बछड़े को (पूज्य बनाया) उन पर शीघ्र उनके पालन कर्त्ता की ओर से कोप प्रकट होगा । और (इस) लोक के जीवन (में) दुर्दशा (प्राप्त होगी) । और ऐसे--झूठ बात बनाने वालों को (जो झूठे पूज्यों को पूज्य बना लेते हैं) हम ऐसा ही दंड दिया करते हैं ॥

और जिन लोगों ने गुनाहों के काम किये, फिर इसके बाद तौबा करली और ईमान ले आये, तो तुम्हारा पालन कर्त्ता तौबा के बाद निस्सन्देह (उनके गुनाहों को क्षमा कर देगा--कि वह) क्षमा करने वाला (व) दयालु है ॥

और जब मूसा का क्रोध शान्ति हो गया, तो उन्होंने (पृथ्वी से तौरेत की) तख़्तियों को उठा लिया और उन (तख़्तियों) की लिखावट में उन लोगों के लिये कृपा व शिक्षा थी, जो अपने पालन कर्त्ता से डरते हैं ॥

और (इसके पश्चात) मूसा ने अपनी जाति में से सत्तर आदमी हमारे नियत किये हुये समय (पर अपने साथ तूर पर्वत पर लाने) के लिये चुन लिये । (ताकि वह .खुदा तआला के कहने पर बछड़े की पूजा से तौबा करें और स्वयं .खुदा के वाक्य सुन कर मूसा पर .खुदाई सन्देश अवतीर्ण होने के विषय में अपने सन्देह दूर करलें । परन्तु इन लोगों ने जब .खुदा का कलाम सुना, तो लगे कहने--कि हम तो जब तक अल्लाह तआला को अपनी आँखों से न देख लें, उस पर ईमान नहीं लावेंगे) ॥

और जब उनकी गुस्ताख़ी व बदगुमानी की नौबत यहाँ तक पहुँच गई, तो उन पर भूचाल का अज़ाब अवतीर्ण हुआ । अतः जब उनको भूचाल (के अज़ाब) ने पकड़ लिया (और मुर्दों की तरह निर्जीव वे हरकत कर दिया, तो मूसा घबरा कर) कहने लगे--ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! यदि तुझे (हम लोगों को मारना ही) अभीष्ट था, तो मुझे और उन्हें (यहाँ आने से) पहिले (ही) मार देता । (यदि इस समय इन्हें मारा गया, तो सारी जाति के लोग कहेंगे कि मूसा ने हमारी जाति के मुखिया लोगों को धोखे से एकान्त में लेजा कर उन्हें मरवा दिया) । क्या तू हम में के (कुछ) मूर्खों की हरकत पर हम (सब) को मार देगा ॥

यह सब तेरी परीक्षा है। इससे जिसे चाहे तू पथ-भ्रष्ट करदे और जिसे चाहे तू हिदायत देदे । (बहर हाल) तू (ही) हमारे काम बनाने वाला है—

فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ۝
وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي
الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَا اِلَيْكَ قَالَ عَذَابِيْ اُصِيْبُ بِهٖ
مَنْ اَشَآءُ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ فَسَاَكْتُبُهَا
لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ
بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ
الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي
التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ
الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ
كَانَتْ عَلَيْهِمْ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ
وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ۝ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ع

جمیع

तू हमारे .क़ुसूर मुआफ़ कर और हम पर रहम फ़र्मा और तू तमाम बख़्शने वालों से बेहतर (बख़्शने वाला) है ० और इस दुनिया और आख़िरत (दोनों) की बेहतरी हमारे नाम लिखदे, हम तेरी ही तरफ़ रुजू हुये । (.ख़ुदा ने) फ़र्माया कि हमारा जो अ़ज़ाब है, उसको हम जिस पर चाहते हैं (मुस्तौजिब समझ कर) नाज़िल करते हैं । और हमारी (जो) रहमत (है) वह (अह्ल व नाअह्ल) सब चीज़ों को शामिल है । तो हम उसको (ख़ास कर) उन लोगों के नाम लिख लेंगे, जो परहेज़गारी इख़्तियार करेंगे और ज़कात देंगे और जो हमारी आयतों पर ईमान लायेंगे ० (इनसे हमारी मुराद इस ज़माने के वह अह्ल किताब थे) जो (हमारे इन) रसूल, नबी उम्मी (मुहम्मद) की पैरवी करते हैं । जिन (की बशारत) को अपने हां तौरात और इन्जील में लिखा हुवा पाते हैं । वह उनको अच्छे काम (करने) को कहते और बुरे काम से उनको मना करते हैं । और पाक चीज़ों को उनके लिये हलाल और नापाक चीज़ों को उन पर हराम करते हैं । और (अहकाम सख़्त के) बोझ जो इन लोगों (के सरों) पर (लदे हुये) थे और फन्दे, जो इन पर (पड़े हुये) थे, (उन सबको) उन पर से दूर करते हैं । तो जो लोग इन (पैग़म्बर मुहम्मद) पर ईमान लाये और इनकी हिमायत की और इनको मदद दी और जो नूर (हिदायत यानी .क़ुर्आन) इनके साथ भेजा गया है, उसके पीछे हो लिये, यही लोग कामयाब हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! लोगों से) कहो कि लोगो ! मैं तुम सब की तरफ़ उस .ख़ुदा का भेजा हुवा (आया) हूँ—

हमारे अपराधों को क्षमा कर, और हम पर दया कर, और तू सब से बड़ा क्षमा करने वाला है ॥

और (ऐ .ख़ुदा !) तू इस लोक में (भी) हमारे लिये भलाई लिख दे और प्रलय में (भी) । हम तेरी ओर ध्यान लगाते हैं (और तेरे सामने तौबा करते हैं) ॥

(अल्लाह तआ़ला ने) आज्ञा दी कि (ऐ मूसा !) मेरा अ़ज़ाब तो उसी पर आता है, जिसे मैं (क्षमा के अयोग्य पाकर अ़ज़ाब देना) चाहता हूँ और मेरी रहमत (दया) हर वस्तु को घेरे हुए है । अतः जो लोग परहेज़गारी ग्रहण करते और ज़कात देते और हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, मैं अवश्य उनको कृपाओं का भागी बनाऊंगा ॥

(और इस ज़माने में जिन लोगों पर यह गुण घटते हैं, वह-वह लोग हैं) जो अनुकरण करते हैं (हमारे) इस रसूल (अर्थात् अनपढ़ नबी का.जिसके प्रगट होने की भविष्य वाणी)को वह अपने यहां तौरेत व इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं। जो उनको नेक कामों का हुक्म करते और बुरे कामों से रोकते हैं और पवित्र वस्तुओं को उनके लिये हलाल फ़र्माते हैं और गन्दी चीज़ों को उन पर हराम करते हैं और उन पर से उन (की कठिन शरीअ़त) के बोझ को और (कठिन आदेशों के) उन फन्दों को-जो उन पर (पड़े हुए) थे, दूर करते हैं । (अर्थात् जो कठिन आज्ञायें उनकी पहिली शरीअ़त में थीं, उनके अतिरिक्त ऐसी आज्ञायें देते हैं-जिनका पालन करना सरल हो) । तो कल्याण प्राप्त करने वाले लोग (अब) वही हैं, जो इन उम्मी (अनपढ़) नबी पर ईमान लाये और जिन्होंने उनकी हिमायत व सहायता की और उस (.क़ुर्आन के) ज्योति के अनुयायी हुए, जो उनके साथ भेजा गया है ॥

(ऐ मुहम्मद !) तुम (लोगों से) कह दो कि ऐ लोगो ! मैं तुम सब की ओर अल्लाह का भेजा हुआ (रसूल) हूँ——

الْكَلْبِ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ
ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاقْصُصِ
الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ● سَآءَ مَثَلًا الْقَوْمُ
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ●
مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ. وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا
مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ
بِهَا وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا وَلَهُمْ اٰذَانٌ
لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ
اَضَلُّ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ● وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ
الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ
فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ● وَمِمَّنْ
خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ●

कि अगर उसको खदेड़ो रगेदो, तो ज़बान बाहर लटकाए रहे और अगर उसको (उसी के हाल पर) छोड़े रक्खो, तो भी ज़बान बाहर लटकाए रहे। यही कहावत उन लोगों की है, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया। तो (ऐ पैग़म्बर !) यह क़िस्से (इन लोगों से) बयान करो, ताकि यह लोग सोचें ० जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उनकी (भी क्या ही) बुरी कहावत है और (इस झुठलाने से) वह कुछ अपना ही बिगाड़ते रहे हैं ० रू बराह तो वही हैं, जिनको .खुदा हिदायत दे और जिनको वह गुमराह करदे, तो वही लोग घाटे में हैं ० और हमने बहुतेरे जिन और इन्सान जहन्नम ही के लिये पैदा किये हैं। उनके दिल तो हैं, (मगर) उनसे समझने का काम नहीं लेते। और उनकी आंखें भी हैं, (मगर) उनसे देखने का काम नहीं लेते। और उनके कान भी हैं(मगर) उनसे सुनने का काम नहीं लेते। (ग़रज़) यह लोग चारपायों की तरह के हैं, बल्कि उन से भी गये गुज़रे हुये। यही वह (लोग) हैं, जो (दीन से बिल्कुल) बे ख़बर हैं ० और अल्लाह के (सब ही) नाम अच्छे हैं, तो उसके नाम लेकर उसको (जिस नाम से चाहो) पुकारो। और जो लोग उसके नामों में कुफ़्र करते हैं, उनको (उन ही के हाल पर) छोड़ दो, कोई दिन जाता है कि वह अपने किये का बदला पालेंगे ० और हमारी मख़्लूक़ात में ऐसे लोग भी हैं, जो हक़ बात की हिदायत और उसी के मुताबिक़ (लोगों के मुआमिलात में) इन्साफ़ भी करते हैं ० –

कुत्ते जैसा है। (और उस कुत्ते जैसा) कि जिससे यदि तुम कोई परिश्रम लो, जब भी हांपे और (परिश्रम न लो और स्वतन्त्र) छोड़ो, जब भी हांपे। (अर्थात् जो हर समय तकलीफ़ में रहे और किसी कल उसे चैन न पड़े)। यही उन (समस्त) लोगों की दशा है, जिन्होंने हमारी आयतों को झूठा बताया। अतएव (ऐ रसूल !) यह क़िस्से (इन लोगों से) वर्णन करो, ताकि वह (इनके विषय में ध्यान व) विचार करें॥

उन लोगों की (भी क्या) बुरी मिसाल है, जो हमारी आयतों को झूठा बताते हैं और (हमारी आज्ञाओं के विपरीत कार्य करते हैं। वास्तव में पूछो तो) वह (हमारा कुछ नहीं बिगाड़ते)। अपनी ही हानि करते हैं (और अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारते हैं)॥

(सच है-) जिन्हें अल्लाह हिदायत दे, वही हिदायत पाते हैं और जिन्हें अल्लाह गुम्राह करदे, वही लोग टोटे में आ जाते हैं॥

और हमने बहुत से जिनों और मनुष्यों को नर्क ही के लिये उत्पन्न किया है। उनके दिल (होते) हैं (किन्तु) उनसे (कुछ) समझते नहीं। उनके नेत्र (होते) हैं (किन्तु) उनसे (कुछ) देखते नहीं। उनके कान (होते) हैं (किन्तु) उनसे (कुछ) सुनते नहीं वह ऐसे हैं, जैसे चौपाये-वरन् इनसे भी गये गुज़रे (और अधम)। यही वह लोग हैं, जो (अपने नेक व बद से) अचेत हैं॥

(और ऐ मुसलमानो ! मुश्रिक लोग-जो अल्लाह और रह्मान इत्यादि के भिन्न भिन्न नामों से .खुदा को पुकारने पर तुम पर आक्षेप करते हैं, तो तुम इसका कुछ विचार न करो)। अल्लाह (के गौरव) के (अनुसार जितने) नाम (हैं) सब अच्छे हैं। उन (नामों में) से (जिस नाम से चाहो) उसे पुकारो। और उन लोगों (की बातों में न आओ और उन) से कुछ सम्बन्ध न रक्खो, जो उसके नामों में कुफ़्र करते हैं। (चाहे इस ढंग से कि .खुदा को ऐसे नामों से पुकारें, जो उसके गौरव के योग्य न हों, या इस ढंग से कि ग़ैर .खुदा में .खुदाई गुण बताकर उनको ऐसे नामों से पुकारें, जो .खुदा के लिये विशेष हों)। वह बहुत जल्द अपनी कर्तूतों का मज़ा चखने वाले हैं॥

और जिनको हमने पैदा किया है, उनमें ऐसे लोग भी हैं-जो सत्यार्थ का उपदेश करते और उसी के अनुसार लोगों के मामलों में न्याय करते हैं-

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۝ أَوَلَمْ
يَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِهِمْ مِنْ جِنَّةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا
نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ
أَنْ يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ
يُؤْمِنُونَ ۝ مَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَيَذَرُهُمْ
فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ
السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي
لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ثَقُلَتْ فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ
حَفِيٌّ عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, हम उन्हें इस तरह पर कि उनको ख़बर भी न हो, आहिस्ता आहिस्ता (जहन्नम की तरफ़ घसीट कर) ले जाएँगे ० और हम उनको (दुनिया में) मोहलत देते हैं, हमारा दाव बेशक बड़ा पक्का (दाव है) ० क्या इन लोगों ने ख़याल नहीं किया कि इनके साहब को (यानी हमारे इन पैग़म्बर मुहम्मद को) किसी क़िस्म का जुनून तो है नहीं, वह तो खुल्लम खुल्ला (लोगों को अज़ाब ख़ुदा से) डराने वाले हैं और बस ० क्या इन लोगों ने आसमानों और ज़मीन के इन्तिज़ाम और ख़ुदा की पैदा की हुई किसी चीज़ पर भी नज़र नहीं की ? और न इस बात पर कि अजब नहीं इनकी मौत क़रीब आ लगी हो। तो अब इतना समझाए पीछे और कौन सी बात है, जिसको सुन कर ईमान ले आएँगे ० जिसको ख़ुदा गुमराह करे, तो फिर कोई भी उसका राह दिखाने वाला नहीं। और ख़ुदा ही इन (काफ़िरों) को (इनके हाल पर) छोड़े हुए है कि अपनी सरकशी में पड़े भटका करें • (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुमसे क़यामत के बारे में पूछते हैं कि कहीं उसका थल बेड़ा भी है, तुम (इनको) जवाब दो कि उसका इल्म तो सिर्फ़ मेरे पर्वर्दिगार ही को है। बस वही उसको उसके वक़्त (मुक़र्रर) पर ला दिखाएगा। वह एक बड़ा भारी हादिसा है, (जो) आस्मानों और ज़मीन में (वाक़े होगा)। क़यामत तो बस अचानक तुम लोगों के सामने आ मौजूद होगी। (ऐ पैग़म्बर !) यह लोग तुमसे (क़यामत का हाल इस तरह इसरार के साथ) दर्याफ़्त करते हैं कि गोया तुम उसकी टोह में लगे रहे हो (और तुमको उस का वक़्त मालूम है)। तो (इनसे) कहो कि क़यामत का इल्म तो बस ख़ुदा ही को है, लेकिन अक्सर आदमी नहीं समझते ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मेरा अपना ज़ाती नफ़ा व नुक़सान भी मेरे इख़्तियार में नहीं–

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को असत्य ठहराया है, हम उन्हें धीरे धीरे मृत्यु (व बरबादी) की ओर ले जायंगे। इस ढंग से कि उन्हें (इसका) ज्ञान भी न हो। और हम उन (मक्कारों) को अवसर दे रहे हैं (ताकि वह खुल खेलें)। हमारा दावँ (और हमारी पकड़) निश्चित रूप से (बड़ी) ज़बरदस्त है॥

क्या यह लोग इस पर ध्यान नहीं देते कि उनके (दिन रात के) साथी (मुहम्मद) को कुछ पागलपन तो है नहीं (जो वह अपने जातीय सिद्धान्तों का विरोध करके समस्त जाति को अपना शत्रु बना रहे हैं)। वह तो बस (ख़ुदा की ओर से भेजे हुये) खुल्लम खुल्ला डराने वाले (पैग़म्बर) हैं। (इस लिये वह बुद्धिमान होते हुए भी अपनी जान व मान की पर्वाह न करके निर्भयता के साथ ख़ुदा का सन्देश पहुँचाते हैं)॥

और क्या वह आकाशों और पृथ्वी के (बड़े) राज्य (के प्रबन्ध) को, और उन वस्तुओं को, जो अल्लाह ने उत्पन्न की हैं-नहीं देखते ? (और क्या उनके देखने से उस ख़ुदा के एक होने का सन्देश सच्चा नहीं ठहरता ? जो मुहम्मद उनको ख़ुदा की ओर से पहुँचा रहे हैं और क्या यह लोग इसे नहीं सोचते कि) कहीं उन (की मृत्यु) का समय निकट न आ गया हो। आख़िर (यह चाहते क्या हैं ?) क़ुर्आन (जैसी प्रमाणिक किताब अवतीर्ण होने) के पश्चात (वह) कौन सी किताब (होगी, जिस) पर यह ईमान लायेंगे॥

(वास्तव में यह है कि) जिसे अल्लाह ताआला गुमराह करे (उसे) कोई राह बताने वाला नहीं। और अल्लाह ताआला ऐसे लोगों को छोड़ देता है कि वह अपने विद्रोह और गुमराही में भटकते रहें॥

(ऐ पैग़म्बर ! यह लोग) तुमसे प्रलय के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं कि वह कब क़ायम होगी ? तुम कह दो कि इसकी ख़बर तो बस मेरे पालन कर्त्ता ही को है। (और) वही उसके (नियत) समय पर उसको प्रकट कर देगा। (प्रलय की घटना) आकाश व पृथ्वी में (एक बड़ी) भारी घटना होगी। (और) जब भी वह घटना होगी, तुम पर अचानक (और अचेतना की दशा में) उपस्थित होगी। (ऐ नबी !) यह लोग तो तुमसे (प्रलय का वृतान्त कुछ इस भांति) पूछते हैं, मानो कि तुम उसका पूर्ण ज्ञान रखते हो (और तुम्हें उसकी ख़बर है और मालूम होते हुए भी तुम उन्हें नहीं बताते)। तुम (उनसे) कहदो (कि लोगो ! विश्वास करो कि) उसके घटित होने की ख़बर तो बस अल्लाह ही को है। परन्तु अक्सर लोग इस बात को नहीं समझते (कि बहुत सी बातें ऐसी हैं, जिनका ज्ञान पैग़म्बरों को भी नहीं होता)॥

(और इनसे) कहदो (कि प्रलय की घटना का ज्ञान तो दूर रहा) मुझे तो अपने व्यक्तिगत लाभ व हानि (के ज्ञान) तक भी पहुँच नहीं है–

(मैं बहुतेरा चाहूं) मगर (वही होकर रहता है) जो .ख़ुदा चाहे। और अगर मैं ग़ैब जानता होता, तो अपना बहुत फ़ायदा कर लेता और मुझ को (किसी तरह का) गज़न्द (ही) न पहुँचता। मैं तो उन लोगों को जो ईमान लाना चाहते हैं, (दोज़ख़ का) डर और (बहिश्त की) .ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला हूँ और बस ० (लोगो !) वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने तुमको तन वाहिद (आदम) से पैदा किया और उसी की जिन्स का उसका जोड़ा बनाया, ताकि मर्द-औरत की तरफ़ रग़बत करे। तो जब मर्द औरत से लिपट जाता है, तो औरत को एक हलका सा हमल रह जाता है। फ़िर वह उस हमल को लिये लिये फिरती है। फिर जब (हमल की वजह से औरत ज़्यादा) बोझल हो जाती है, तो (मियां बीबी) दोनों (मिल कर) .ख़ुदा से कि (वही) उनका पर्वर्दिगार है, दुआ मांगते हैं, कि (ऐ .ख़ुदा !) अगर तू हमको (जीता जागता) पूरा बच्चा इनायत करेगा, तो हम तेरा बड़ा एहसान मानेंगे ० फिर जब (.ख़ुदा) उनको (जीता जागता) पूरा बच्चा इनायत करता है, तो उस (औलाद) में, जो .ख़ुदा ने उनको इनायत की थी, .ख़ुदा के शरीक बनाने लगते हैं। सो उनके शिर्क से .ख़ुदा की शान बहुत ऊँची है ० क्या वह ऐसे (फ़र्ज़ी माबूदों यानी बुतों) को (.ख़ुदा का) शरीक बनाते हैं, जो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वह .ख़ुद (.ख़ुदा के) पैदा किये हुए हैं ० और न इन (शिर्क करने वालों) की मदद करने की क़ूवत रखते हैं और न आप अपनी मदद कर सकते हैं ० और अगर तुम उनको राह रास्त की तरफ़ बुलाओ, तो (बेजान होने की वजह से) तुम्हारी हिदायत पर न चल सकें, (तो दूसरों को क्या हिदायत कर सकेंगे)। चाहे तुम उनको बुलाओ या ख़ामोश रहो, (दोनों बातें) तुम्हारे लिये बराबर हैं०—

وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ
لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ
إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ●
هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ
مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشَّاهَا
حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ فَلَمَّا أَثْقَلَت
دَّعَوَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُونَنَّ
مِنَ الشَّاكِرِينَ ● فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ
شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا فَتَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ●
أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ●
وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ
وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ
عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنتُمْ صَامِتُونَ ● إِنَّ

परन्तु केवल उतना ही, जितना .ख़ुदा चाहे। और यदि मुझे अदृष्ट का ज्ञान होता, तो बहुत कुछ लाभ प्राप्त कर लेता और हानि मुझे कभी पहुँचती ही नहीं। मैं तो केवल एक डराने वाला और शुभ-समाचार सुनाने वाला हूँ। (और डराने वाला और शुभ-समाचार सुनाने वाला भी परिणाम की दृष्टि से)। उन (ही) लोगों के लिये, जो ईमान लाते हैं ॥

(लोगो ! अदृष्ट के ज्ञान इत्यादि की-जो पूर्ण विशेषतायें अल्लाह तआ़ला तक परिमित व विशेष हैं; उनमें किसी दूसरे को अल्लाह का शरीक न बनाओ। और इस पर ध्यान दो कि .ख़ुदा) वह है, जिसने तुम (सब) को एक शरीर अकेले (अर्थात् आदम) से उत्पन्न किया और उसी की जाति का उसका जोड़ा बनाया, ताकि वह उसकी ओर आकर्षित हो। फिर जब पुरुष ने स्त्री से सहवास किया, तो (आरम्भ में) उसको थोड़ा सा गर्भ रह गया कि वह उसको (आसानी से) लिये फिरती रही (और उसे मालूम भी न हुआ कि गर्भ है कि नहीं)। फिर जब वह (गर्भ के बढ़ जाने के कारण) बोझल हो गई (और मालूम हो गया कि गर्भ है) तो (अनेक प्रकार के सन्देह चित्त में आने लगे। इस लिये) दोनों (पति पत्नी) ने अल्लाह, अपने पालन कर्त्ता से (गिड़गिड़ा गिड़गिड़ा कर) दुआ मांगी कि (ऐ सृष्टि कर्त्ता !) यदि तूने हमें स्वस्थ व बलिष्ट (आयु वाला) बच्चा प्रदान किया, तो हम तेरे (बहुत बहुत) अनुग्रहीत होंगे ॥

फिर जब अल्लाह तआ़ला ने उन्हें स्वस्थ बालक प्रदान कर दिया, तो इस प्रसाद (के देने) में-जो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें प्रदान किया, वह अल्लाह के साथ दूसरों को (भी) शरीक करने लगे। (अर्थात् सन्तान होने को अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे का प्रभाव समझने लगे)। यद्यपि (वास्तविक बात यह है कि) अल्लाह (की व्यक्ति) उनके शिर्क से (बहुत) श्रेष्ठ (व उच्च) है ॥

क्या यह लोग (महान व श्रेष्ठ .ख़ुदा का) शरीक उन (निराधार बुतों) को बनाते हैं, जो किसी (छोटा से छोटा) वस्तु को (भी) पैदा नहीं कर सकें। और (किसी वस्तु को पैदा तो क्या करते) वह स्वयं ही (.ख़ुदा के) बनाये हुए (और अपने वजूद में .ख़ुदा के मोहताज) हैं। और वह उनको (अर्थात् अपने पुजारियों को किसी प्रकार की) सहायता नहीं दे सकते। (किसी और को सहायता देना तो दूर रहा) वह (स्वयं) अपनी व्यक्ति की भी सहायता नहीं कर सकें। (यहां तक कि अपने शरीर पर से मक्खी तक नहीं उड़ा सकते)। (यहां तक कि) यदि तुम उनको (अपने अनुयायी के रूप से) शिक्षा के मार्ग की ओर बुलाओ, तो वह बेजान होने के कारण तुम्हारा अनुकरण (भी) न कर सकें। तुम उनको पुकारो तो-या (न पुकारो और) चुप रहो, तो तुम्हारे लिये (सब) समान है ॥

ٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ
فَٱدْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا۟ لَكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ●
أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَآ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَآ
أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَآ أَمْ لَهُمْ ءَاذَانٌ يَسْمَعُونَ
بِهَا قُلِ ٱدْعُوا۟ شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ
فَلَا تُنظِرُونِ ● إِنَّ وَلِـِّۧىَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى نَزَّلَ ٱلْكِتَٰبَ
وَهُوَ يَتَوَلَّى ٱلصَّٰلِحِينَ ● وَٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن
دُونِهِۦ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَآ أَنفُسَهُمْ
يَنصُرُونَ ● وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى ٱلْهُدَىٰ لَا
يَسْمَعُوا۟ وَتَرَىٰهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ●
خُذِ ٱلْعَفْوَ وَأْمُرْ بِٱلْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ ٱلْجَٰهِلِينَ ●
وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ نَزْغٌ فَٱسْتَعِذْ بِٱللَّهِ
إِنَّهُۥ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ● إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ إِذَا مَسَّهُمْ طَٰٓئِفٌ

(ऐ मुश्रिको ! तुम) .ख़ुदा के सिवा जिन लोगों को (अपनी मदद के लिये) बुलाते हो, (वह भी) तुम जैसे बन्दे हैं तो उनको बुला देखो । पस अगर तुम (दावए शिर्क में) सच्चे हो, तो वह तुम्हारी फ़र्याद को पहुँचें ० क्या उनके ऐसे पांव हैं, जिनसे चलते हैं ? या उनके ऐसे हाथ हैं, जिनसे (चीज़ों को) पकड़ते हैं ? या उनकी ऐसी आँखें हैं, जिनसे देखते हैं ? या उनके ऐसे कान हैं, जिनसे सुनते हैं ? (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अपने (ठैराए हुए) शरीकों को (अपनी मदद के लिये) बुला लो । फिर (सब मिल कर) मुझ पर अपना दाव कर चलो और मुझको (ज़रा भी) मोहलत न दो ० अल्लाह, जिसने इस किताब (यानी .क़ुर्आन) को उतारा है, वही मेरा कारसाज़ है और वही (तमाम) नेक बन्दों की (मदद और) हिमायत करता है ० और उसके सिवा जिन (माबूदों) को तुम (अपनी मदद के लिये) बुलाते हो, न वह तुम्हारी मदद पर क़ादिर हैं और न आप अपनी मदद कर सकते हैं ० और अगर तुम उनको राह रास्त की तरफ़ बुलाओ, तो (तुम्हारी एक) न सुनें । और (ऐ मुख़ातब ! ज़ाहिर में) वह तुझको ऐसे दिखाई देते हैं कि (गोया) वह तेरी तरफ़ (टुकर टुकर) देख रहे हैं, हालाँकि वह देखते (भालते ख़ाक भी) नहीं ० (ऐ पैग़म्बर !) दर गुज़र (का शेवा) इख़्तियार करो और (लोगों से) नेक काम (करने) को कहो और जाहिलों से कनारा कश रहो ० और अगर शैतान के गुदगुदाने से (इन्तिक़ाम वग़ैरा की) गुदगुदी तुम्हारे दिल में पैदा हो, तो .ख़ुदा से पनाह मांग लिया करो । (क्योंकि) वह (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० जो लोग पहेंज़गार हैं, जब कभी शैतान की तरफ़ का कोई ख़याल उनको छू भी जाता है—

(ऐ मूर्ति पूजको !) तुम .ख़ुदा के अतिरिक्त जिनको (पूजा के लिये) पुकारते हो, वह भी तुम्हारे समान पराधीन वस्तु हैं। तुम उन्हें पुकार देखो । यदि तुम अपने दावे में सच्चे हो, तो उन्हें अवश्य तुम्हारी सुनाई करनी चाहिये ॥

क्या उनके पांव हैं, जिनसे वह चलते हों ? या उनके हाथ हैं, जिनसे वह पकड़ते हों ? या उनकी आँखें हैं, जिनसे वह देखते हों ? या उनके कान हैं, जिनसे वह सुनते हों ? (ऐ पैग़म्बर ! इन मुश्रिकों से) कह दो कि अपने (सब ठहराये हुए) शरीकों को (अपनी सहायता के लिये) बुला लो और फिर (सब मिल कर) मुझे हानि पहुँचाने का प्रयत्न करो और मुझको (ज़रा भी) अवसर न दो । (अभिप्राय यह है कि जो कुछ तुमसे हो सके, करके देख लो । किन्तु तुम्हारे सारे मक्र व फ़रेब व्यर्थ जायँगे और अन्त में अल्लाह तआला मुझको ही तुम पर ग़ालिब कर देगा) ॥

मेरी सहायता करने वाला (मेरा) अल्लाह है, जिसने (मुझ पर) अपनी किताब (.क़ुर्आन) को अवतीर्ण किया । और वही (अपने समस्त) नेक बन्दों की हिमायत करता है (और हिमायत करने की शक्ति रखता है । विपरीत उन बुतों के) जिन्हें तुम .ख़ुदा को त्याग कर (अपनी सहायता के लिये) बुलाते हो—न वह तुम्हारी सहायता करने की शक्ति रखते हैं और न अपनी ही (कुछ) सहायता कर सकते हैं ॥

और (ज़रा इन्हें देखो तो-यह पूजा योग्य हैं ?) तुम यदि इन्हें किसी बात के बतलाने के लिये आवाज़ दो, तो वह (तुम्हारी आवाज़ तक) न सुनें । और (प्रकट रूप में) वह ऐसे मालूम होते हैं कि (मानो) तुमको देख रहे हैं । यद्यपि देखते (वेखते कुछ) नहीं ॥

(ऐ रसूल ! जिन लोगों की बुद्धि ऐसी मारी गई है कि वह बेजान बुतों तक को अपना पूज्य बना लेते हैं । वह अपनी मूर्खता से-जो कष्ट भी तुम्हें दें, कम हैं । बहर हाल) तुम क्षमा करने (और दर गुज़र करने) को अपना कर्तव्य समझो । और अच्छी बातों का प्रचार करते रहो और मूर्खों के मुंह न लगो ॥

और यदि (इन काफ़िरों की ज़्यादती पर) शैतान (दुःख व क्रोध का कोई भाव तुम्हारे अन्दर पैदा करके) तुम्हें (व्यक्ति-गत प्रतिकार के लिये) उभारे, तो (तुरन्त) अल्लाह से शरण मांग लिया करो । वह (सब कुछ) सुनता (और) जानता है ॥

जिनके चित्त में अल्लाह का डर है, जब कोई शैतानी ख़याल उनको छू भी जाता है—

مِنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝
وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ۝
وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ
اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ هٰذَا بَصَآئِرُ
مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ
تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ
بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ
عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۝

سورة الانفال مدنية وهي خمس وسبعون آية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तो (फ़ौरन) मुतनब्बह हो जाते हैं (यानी पर्दए ग़फ़लत उनकी आंखों पर से दूर हो जाता है) । तो वह उसी दम (राह सवाब) देखने लगते हैं ० और इन (काफ़िरों) के भाई (शैतान) इनको गुमराही में घसीटे लिये चले जाते हैं. फिर (इनके बरबाद करने में) कोताही नहीं करते ० और (ऐ पैग़म्बर !) जब तुम इन लोगों के पास कोई (ख़ास क़िस्म की) आयत नहीं लाते हो, तो (अपने ख़याल बातिल के मुताबिक़) कहते हैं कि तुमने इसको (भी अपनी तरफ़ से) क्यों नहीं बना लिया । तुम (इनसे) कहो कि मैं तो (अपनी तरफ़ से कुछ भी नहीं बनाता, बल्कि) जो कुछ मेरे पर्वर्दिगार के हां से मेरी तरफ़ वही की जाती है, उसी पर चलता हूँ। (लोगो !) यह (क़ुर्आन) सूझ समझ की बातें हैं, जो तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से (उतरी) हैं । और जो लोग (इस पर) ईमान रखते हैं, उनके लिये हिदायत और रह्मत है ० और (लोगो !) जब क़ुर्आन पढ़ा जाया करे (यानी पैग़म्बर तुमको क़ुर्आन सुनाते हों) तो (ग़ुल न मचाओ, बल्कि) उसको कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो। अजब नहीं (इसकी बरकत से) तुम पर रह्म किया जाए ० और (ऐ पैग़म्बर !) अपने जी (ही जी) में गिड़गिड़ा (गिड़गिड़ा) कर और डर (डर) कर और (बहुत) ज़ोर की आवाज़ से नहीं, (बल्कि धीमी आवाज़ से) सुबह व शाम अपने पर्वर्दिगार की याद करते रहो और (उसकी याद से) ग़ाफ़िल न रहो ० जो (फ़रिश्ते) तुम्हारे पर्वर्दिगार के मुक़र्रब हैं, (वह तक भी) उसकी इबादत से सर्ताबी नहीं करते और उसी की तस्बीह (व तक़दीस) और उसी के आगे सज्दे करते रहते हैं ०

सूरत--अन्फ़ाल

मदनी यानी मदीने में नाज़िल हुई और इसमें ७५ आयतें और १० रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है)०—

तो वह (तुरन्त) चौंक पड़ते हैं और एक दम उनके नेत्र खुल जाते हैं । (और शैतान और उसके बिछाये हुये जाल की वास्तविकता प्रकट हो जाती है) ॥

और जो शैतानों के भाई (और शैतानों के प्रभाव में हैं) शैतान उनको गुमराही के गढ़े में खींचे लिये चले जाते हैं। (और) फिर (उनके नष्ट करने में) कसर नहीं छोड़ते ॥

और (ऐ नबी !) जब तुम (उनकी इच्छानुसार) कोई आयत उनके सामने लेकर नहीं जाते, तो वह (अपने झूठे आवेश के अनुसार) कहते हैं कि (ऐ मुहम्मद ! क़ुर्आन की और आयतों की तरह) तुम इस (आयत) को (भी) क्यों न बना लाये ? (तो ऐ पैग़म्बर ! तुम इनसे) कह दो (मैं अपनी ओर से कोई आयत नहीं घड़ा करता । वरन्) ख़ुदाई सन्देश मेरे पालन कर्त्ता की (ओर से) मेरे पास आते हैं, उसी का पालन कर्त्ता हूँ। यह (क़ुर्आन की आयतें) तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (भेजी हुई) समझने सोचने की बातें हैं और (पूर्णतया) हिदायत व दया हैं-उन लोगों के लिये, जो (उन पर) ईमान लाते हैं ॥

और (ऐ मुसल्मानो !) जब (तुम्हारे सामने) क़ुर्आन पढ़ा जाया करे, तो उसकी ओर (ध्यान-पूर्वक) कान लगा दिया करो। और (बड़े सम्मान के साथ) चुप (बैठे) रहा करो, ताकि तुम पर दया की जाय ॥

और (ऐ मुहम्मद !) अपने पालन कर्त्ता को दिल (ही दिल) में विनय और आधीनता के साथ और (ज़बान से अधिक) ऊंची आवाज़ के साथ नहीं (बल्कि धीरे धीरे) सुबह शाम (अर्थात् हर समय) याद किया करो । और (उसके स्मरण से कभी) अचेत न रहो ॥

निस्सन्देह, जो तुम्हारे पालन कर्त्ता के मुख्य-पात्र हैं, वह अल्लाह की पूजा से विमुख नहीं होते । उसका जाप करने (व स्मरण करने) में लगे रहते हैं और उसी को मस्तक नवाते हैं ॥

सूरत—अन्फ़ाल

मदनी अर्थात् मदीने में उतरी, इसमें ७५ आयतें और १० रुकूअ हैं ॥

(ऐ मुश्रिको ! तुम) .ख़ुदा के सिवा जिन लोगों को (अपनी मदद के लिये) बुलाते हो, (वह भी) तुम जैसे बन्दे हैं तो उनको बुला देखो। पस अगर तुम (दावए शिर्क में) सच्चे हो, तो वह तुम्हारी फ़र्याद को पहुँचें ० क्या उनके ऐसे पांव हैं, जिनसे चलते हैं ? या उनके ऐसे हाथ हैं, जिनसे (चीज़ों को) पकड़ते हैं ? या उनकी ऐसी आँखें हैं, जिनसे देखते हैं ? या उनके ऐसे कान हैं, जिनसे सुनते हैं ? (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अपने (ठैराए हुए) शरीकों को (अपनी मदद के लिये) बुला लो। फिर (सब मिल कर) मुझ पर अपना दाव कर चलो और मुझको (ज़रा भी) मोहलत न दो ० अल्लाह, जिसने इस किताब (यानी .क़ुर्आन) को उतारा है, वही मेरा कारसाज़ है और वही (तमाम) नेक बन्दों की (मदद और) हिमायत करता है ० और उसके सिवा जिन (माबूदों) को तुम (अपनी मदद के लिये) बुलाते हो, न वह तुम्हारी मदद पर क़ादिर हैं और न आप अपनी मदद कर सकते हैं ० और अगर तुम उनको राह रास्त की तरफ़ बुलाओ, तो (तुम्हारी एक) न सुनें। और (ऐ मुख़ातब ! ज़ाहिर में) वह तुझको ऐसे दिखाई देते हैं कि (गोया) वह तेरी तरफ़ (टुकर टुकर) देख रहे हैं, हालाँकि वह देखते (भालते ख़ाक भी) नहीं ० (ऐ पैग़म्बर !) दर गुज़र (का शेवा) इख़्तियार करो और (लोगों से) नेक काम (करने) को कहो और जाहिलों से कनारा कश रहो ० और अगर शैतान के गुदगुदाने से (इन्तिक़ाम वग़ैरा की) गुदगुदी तुम्हारे दिल में पैदा हो, तो .ख़ुदा से पनाह मांग लिया करो। (क्योंकि) वह (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० जो लोग पर्हेज़गार हैं, जब कभी शैतान की तरफ़ का कोई ख़याल उनको छू भी जाता है—

لَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ
فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ●
اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَا اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَا
اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَا اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ
بِهَا قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ
فَلَا تُنْظِرُوْنِ ● اِنَّ وَلِيِّ َۧ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ
وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ● وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ
يَنْصُرُوْنَ ● وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا
يَسْمَعُوْا وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ●
خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ●
وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ
اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ● اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ

(ऐ मूर्ति पूजको !) तुम .ख़ुदा के अतिरिक्त जिनको (पूजा के लिये) पुकारते हो, वह भी तुम्हारे समान पराधीन वस्तु हैं। तुम उन्हें पुकार देखो। यदि तुम अपने दावे में सच्चे हो, तो उन्हें अवश्य तुम्हारी सुनाई करनी चाहिये ॥

क्या उनके पांव हैं, जिनसे वह चलते हों ? या उनके हाथ हैं, जिनसे वह पकड़ते हों ? या उनकी आँखें हैं, जिनसे वह देखते हों ? या उनके कान हैं, जिनसे वह सुनते हों ? (ऐ पैग़म्बर ! इन मुश्रिकों से) कह दो कि अपने (सब ठहराये हुए) शरीकों को (अपनी सहायता के लिये) बुला लो और फिर (सब मिल कर) मुझे हानि पहुँचाने का प्रयत्न करो और मुझको (ज़रा भी) अवसर न दो। (अभिप्राय यह है कि जो कुछ तुमसे हो सके, करके देख लो। किन्तु तुम्हारे सारे मक्र व फ़रेब व्यर्थ जायँगे और अन्त में अल्लाह तआला मुझको ही तुम पर ग़ालिब कर देगा) ॥

मेरी सहायता करने वाला (मेरा) अल्लाह है, जिसने (मुझ पर) अपनी किताब (.क़ुर्आन) को अवतीर्ण किया। और वही (अपने समस्त) नेक बन्दों की हिमायत करता है (और हिमायत करने की शक्ति रखता है। विपरीत उन बुतों के) जिन्हें तुम .ख़ुदा को त्याग कर (अपनी सहायता के लिये) बुलाते हो—न वह तुम्हारी सहायता करने की शक्ति रखते हैं और न अपनी ही (कुछ) सहायता कर सकते हैं ॥

और (ज़रा इन्हें देखो तो-यह पूजा योग्य हैं ?) तुम यदि इन्हें किसी बात के बतलाने के लिये आवाज़ दो, तो वह (तुम्हारी आवाज़ तक) न सुनें। और (प्रकट रूप में) वह ऐसे मालूम होते हैं कि (मानो) तुमको देख रहे हैं। यद्यपि देखते (देखते कुछ) नहीं ॥

(ऐ रसूल ! जिन लोगों की बुद्धि ऐसी मारी गई है कि वह बेजान बुतों तक को अपना पूज्य बना लेते हैं। वह अपनी मूर्खता से-जो कष्ट भी तुम्हें दें, कम हैं। बहर हाल) तुम क्षमा करने (और दर गुज़र करने) को अपना कर्तव्य समझो। और अच्छी बातों का प्रचार करते रहो और मूर्खों के मुंह न लगो ॥

और यदि (इन काफ़िरों की ज़्यादती पर) शैतान (दुःख व क्रोध का कोई भाव तुम्हारे अन्दर पैदा करके) तुम्हें (व्यक्ति-गत प्रतिकार के लिये) उभारे, तो (तुरन्त) अल्लाह से शरण मांग लिया करो। वह (सब कुछ) सुनता (और) जानता है ॥

जिनके चित्त में अल्लाह का डर है, जब कोई शैतानी ख़याल उनको छू भी जाता है—

مِنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ
وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ
وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ
اِنَّمَا اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ هٰذَا بَصَآئِرُ
مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ
وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ
تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ
بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ
اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ
عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ

سورة الانفال مدنية وهي خمس وسبعون آية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तो (फ़ौरन) मुतनब्बह हो जाते हैं (यानी पर्दए ग़फ़लत उनकी आंखों पर से दूर हो जाता है) । तो वह उसी दम (राह सवाब) देखने लगते हैं ० और इन (काफ़िरों) के भाई (शैतान) इनको गुमराही में घसीटे लिये चले जाते हैं, फिर (इनके बरबाद करने में) कोताही नहीं करते ० और (ऐ पैग़म्बर !) जब तुम इन लोगों के पास कोई (ख़ास क़िस्म की) आयत नहीं लाते हो, तो (अपने ख़याल बातिल के मुताबिक़) कहते हैं कि तुमने इसको (भी अपनी तरफ़ से) क्यों नहीं बना लिया । तुम (इनसे) कहो कि मैं तो (अपनी तरफ़ से कुछ भी नहीं बनाता, बल्कि) जो कुछ मेरे पर्वर्दिगार के हां से मेरी तरफ़ वही की जाती है, उसी पर चलता हूँ । (लोगो !) यह (.कुर्आन) सूझ समझ की बातें हैं, जो तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से (उतरी) हैं । और जो लोग (इस पर) ईमान रखते हैं, उनके लिये हिदायत और रह्मत है ० और (लोगो !) जब .कुर्आन पढ़ा जाया करे (यानी पैग़म्बर तुमको .कुर्आन सुनाते हों) तो (.गुल न मचाओ, बल्कि) उसको कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो । अजब नहीं (इसकी बरकत से) तुम पर रह्म किया जाए ० और (ऐ पैग़म्बर !) अपने जी (ही जी) में गिड़गिड़ा (गिड़गिड़ा) कर और डर (डर) कर और (बहुत) ज़ोर की आवाज़ से नहीं, (बल्कि धीमी आवाज़ से) सुबह व शाम अपने पर्वर्दिगार की याद करते रहो और (उसकी याद से) ग़ाफ़िल न रहो ० जो (फ़रिश्ते) तुम्हारे पर्वर्दिगार के मुक़र्रब हैं, (वह तक भी) उसकी इबादत से सर्ताबी नहीं करते और उसी की तस्बीह (व तक़्दीस) और उसी के आगे सज्दे करते रहते हैं ०

सूरत--अन्फ़ाल

मदनी यानी मदीने में नाज़िल हुई और इसमें ७५ आयतें और १० रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहरबान (है)०—

तो वह (तुरन्त) चौंक पड़ते हैं और एक दम उनके नेत्र खुल जाते हैं । (और शैतान और उसके बिछाये हुये जाल की वास्तविकता प्रकट हो जाती है) ॥

और जो शैतानों के भाई (और शैतानों के प्रभाव में हैं) शैतान उनको गुमराही के गढ़े में खींचे लिये चले जाते हैं । (और) फिर (उनके नष्ट करने में) कसर नहीं छोड़ते ॥

और (ऐ नबी !) जब तुम (उनकी इच्छानुसार) कोई आयत उनके सामने लेकर नहीं जाते, तो वह (अपने झूठे आवेश के अनुसार) कहते हैं कि (ऐ मुहम्मद ! .कुर्आन की और आयतों की तरह) तुम इस (आयत) को (भी) क्यों न बना लाये ? (तो ऐ पैग़म्बर ! तुम इनसे) कह दो (मैं अपनी ओर से कोई आयत नहीं घड़ा करता । वरन्) .खुदाई सन्देश मेरे पालन कर्त्ता की (ओर से) मेरे पास आते हैं, उसी का पालन कर्त्ता हूँ । यह (.कुर्आन की आयतें) तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (भेजी हुई) समझने सोचने की बातें हैं और (पूर्णतया) हिदायत व दया हैं-उन लोगों के लिये, जो (उन पर) ईमान लाते हैं ॥

और (ऐ मुसल्मानो !) जब (तुम्हारे सामने) .कुर्आन पढ़ा जाया करे, तो उसकी ओर (ध्यान-पूर्वक) कान लगा दिया करो । और (बड़े सम्मान के साथ) चुप (बैठे) रहा करो, ताकि तुम पर दया की जाय ॥

और (ऐ मुहम्मद !) अपने पालन कर्त्ता को दिल (ही दिल) में विनय और आधीनता के साथ और (ज़बान से अधिक) ऊंची आवाज़ के साथ नहीं (बल्कि धीरे धीरे) सुबह शाम (अर्थात् हर समय) याद किया करो । और (उसके स्मरण से कभी) अचेत न रहो ॥

निस्सन्देह, जो तुम्हारे पालन कर्त्ता के मुख्य-पात्र हैं, वह अल्लाह की पूजा से विमुख नहीं होते । उसका जाप करते (व स्मरण करते) में लगे रहते हैं और उसी को मस्तक नवाते हैं ॥

सूरत-अन्फ़ाल

मदनी अर्थात् मदीने में उतरी, इसमें ७५ आयतें और १० रुकूअ हैं ॥

(ऐ पैग़म्बर ! मुसल्मान सिपाही) तुमसे माल ग़नीमत का हुक्म दर्याफ़्त करते हैं, तो (इन से) कहदो कि माल ग़नीमत तो अल्लाह और रसूल का है। तो तुम लोग (माल ग़नीमत की तक़सीम में झगड़ा न करो और) ख़ुदा (के ग़ज़ब) से डरो और अपना बाहमी मामिला ठीक रक्खो। और अगर तुम (सच्चे) मुसल्मान हो, तो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो ० (सच्चे) मुसल्मान तो बस वही हैं कि जब ख़ुदा का नाम लिया जाता है, तो उनके दिल दहल जाते हैं और जब आयात इलाही उनको पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो वह उनके ईमान को और भी ज़्यादा कर देती हैं और (हर हाल में) अपने पर्वर्दिगार ही पर भरोसा रखते हैं ० जो नमाज़ पढ़ते और हमने जो उनको रोज़ी दी है, उसमें से (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करते हैं ० यही हैं सच्चे ईमानदार, इनके लिये इनके पर्वर्दिगार के हाँ दर्जे हैं और (गुनाहों की) माफ़ी और इज़्ज़त (व आबरू) की रोज़ी ० (और ऐ पैग़म्बर ! माल ग़नीमत के बारे में इन लोगों को उसी तरह की ग़लती वाक़े हुई है) जैसी (जंग बद्र के वक़्त वाक़े हुई थी) कि तुम्हारे पर्वर्दिगार ने (लड़ाई के दो पहलुओं में से) सही (पहलू) इख़्तियार करके तुमको घर से निकलने पर आमादा किया। और मुसल्मानों का एक गिरोह (तुम्हारे निकल खड़े होने से उस वक़्त भी) ना ख़ुश था ० कि वह लोग (हक़ बात के) ज़ाहिर हुये पीछे तुम्हारे साथ हक़ बात में लगे झगड़ा करने (और मारे डर के पीछे हटने)। गोया उनको (ज़बर्दस्ती) मौत की तरफ़ धकेला जाता है और वह (मौत को आँखों से) देख रहे हैं० और (मुसल्मानो ! यह वह वक़्त था) जब ख़ुदा तुम मुसल्मानों से वादा फ़र्माता था कि (मुश्रिकीन मक्का की इन) दो जमाअतों में से (कोई सी) एक (भी तुम लड़ाई के लिये इख़्तियार कर लोगे, तो वह) तुम्हारे हाथ आ जायगी और तुम चाहते थे कि जिसमें (लड़ने का) बूता नहीं, वह तुम्हारे हाथ आ जाय और अल्लाह की मर्ज़ी यह थी —

ع

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ
الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ
وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ
مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
لَكٰرِهُوْنَ ۝ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ
كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝ وَاِذْ
يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ
اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ

اَنْ يُّحِقَّ

(ऐ रसूल !) यह लोग तुमसे माल ग़नीमत (धर्म-युद्धमें शत्रु से छीने हुए माल को ग़नीमत का माल कहते हैं) के विषय में पूछते हैं। (उनसे) कह दो कि ग़नीमत का माल (तो) अल्लाह और उसके रसूल का है। (उनका उस पर पूर्ण अधिकार है: जिसे जितना चाहें, दें)। इस लिये तुम (उनके बांटने के समय झगड़ा न किया करो। जो कुछ तुम्हें मिले, कृतज्ञता के साथ स्वीकार कर लिया करो)। ख़ुदा से डरते रहा करो और अपने परस्पर के सम्बन्ध ठीक रक्खो और यदि तुम (सच्चे) ईमानदार हो, तो (हर एक बात में) अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा पालन (फ़र्मां बरदारी) किया करो॥

(सच्चे) ईमानदार तो बस वही हैं कि जब (उनके सामने) ख़ुदा का वर्णन किया जाता है, तो (ईश्वर के भय से) उनके दिल दहल जाते हैं। और जब उसकी आयतें उन्हें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो वह उनके ईमान को और अधिक (दृढ़) कर देती हैं और वह (हर दशा में) अपने पालन कर्त्ता ही पर भरोसा रखते हैं॥

(और) वह (वह लोग हैं) जो नमाज़ (को नमाज़ की तरह पाबन्दी से) अदा करते हैं। और जो कुछ हमने उनको प्रदान किया है, उसमें से (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च करते हैं॥

सच्चे ईमानदार यही (लोग) हैं। उनके लिये उनके पालन कर्त्ता के यहां (बड़े) दर्जे हैं और (पापों की) क्षमा और सम्मान की जीविका॥

(कुछ लोगों को ग़नीमत के माल का उनकी इच्छानुसार तक़सीम न होना-चाहे कैसा ही असह्य क्यों न हो, परन्तु ऐ पैग़म्बर ! जो हुक्म इस विषय में तुमको दिया गया है-वह भी मुसल्मानों के लिये ऐसा ही उपयोगी और लाभ दायक है) जैसा कि (वह हुक्म था, जो बद्र की लड़ाई के मौक़े पर दिया गया था। जब कि) तुम्हारे पालन कर्त्ता ने (अबू जहल की सेना से मुक़ाबला करने को तुम्हारे) पक्ष (में अच्छा) समझ कर तुमको तुम्हारे घर (मदीने) से (बद्र के स्थान की ओर) भेजा था। और मुसल्मानों का एक दल (इस आज्ञा से ऐसा) अप्रसन्न था (कि उस दल के) लोग तुमसे (एक) सत्य (काम) में यह होते हुए भी कि (उसका) सत्य (और युक्ति-संगत होना उन पर रसूलुल्लाह के फ़र्माने से) प्रकट हो चुका था-इस प्रकार झगड़ते कि मानो उनको (ज़बरदस्ती) मृत्यु की ओर धकेला जा रहा है और वह (मृत्यु को अपनी आंखों के सामने) देख रहे हैं॥

और (यह समय-वह था) जब कि अल्लाह तआला तुमसे वादा करता था कि उन दोनों दलों (अर्थात् शाम के व्योपारी दल और अबू जहल की सेना) में से (जिस) एक दल (के साथ तुम्हारा मुक़ाबला होगा, वह) तुम्हारा (पराजित) हो जायगा। और तुम (अपनी साहस हीनता के कारण) चाहते थे कि जिसमें (कुछ) शक्ति न थी, वह तुम्हारी (पराजित) हो जाय और अल्लाह की मर्ज़ी यह थी —

أَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝
لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝
اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ
بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ
اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ
اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ
النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ
مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ
الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ
الْاَقْدَامَ ۝ اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ
فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا
مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

कि अपने हुक्म से (दीन) हक़ को क़ायम करे और काफ़िर की जड़ बुनियाद काट डाले० ताकि हक़ को हक़ और नाहक़ को नाहक़ कर दिखाये, गो काफ़िरों को बुरा ही (क्यों न) लगे० यह वह वक़्त था कि तुम (मुसल्मान) अपने पर्वर्दिगार के आगे फ़र्याद करते थे, तो उसने तुम्हारी सुनली (और फ़र्माया) कि हम लगातार हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेंगे ० और यह फ़रिश्तों को इम्दाद, जो ख़ुदा ने की, तो सिर्फ़ (तुम्हारे) ख़ुश करने को (की) और ताकि तुम्हारे दिल उसकी वजह से मुत्मइन हो जायँ, वर्ना फ़तह तो अल्लाह ही की तरफ़ से है। बेशक अल्लाह ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है ० यह वह वक़्त था कि ख़ुदा अपनी तरफ़ से (तुम मुसल्मानों की) तस्कीन (ख़ातिर) के लिये ऊँघ को तुम पर तारी कर रहा था और आस्मान से तुम पर पानी बरसा रहा था, ताकि उसके ज़रिए से तुमको पाक करे और शैतानी गन्दिगी को तुमसे दूर करदे। और ताकि तुम्हारे दिलों की ढारस बँधाये और उसी (पानी) के ज़रिए से (मैदान जंग में) तुम्हारे पाँव जमाये रक्खे ० (ऐ पैग़म्बर !) यह वह वक़्त था कि तुम्हारा पर्वर्दिगार फ़रिश्तों को हुक्म दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं, तो तुम मुसल्मानों को जमाये रक्खो, हम अन्क़रीब काफ़िरों के दिलों में दहशत डाल देंगे। (अच्छा) तो लगे (इन काफ़िरों की) गर्दनों पर और लगे इनकी पोर पोर पर ० यह इस बात की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की—

कि अपनी आज्ञा से सत्य (धर्म) को (ग़ालिब व) दृढ़ करदे और काफ़िरों की जड़ काट डाले । ताकि सच को सच और झूठ को झूठ कर दिखाये, चाहे काफ़िरों को (कितना ही) बुरा लगे ॥

(और यह वह समय था) जब तुम (अपनी अल्प संख्या और काफ़िरों की अधिक संख्या को देख कर) अपने पालन कर्त्ता से फ़र्याद कर रहे थे, तो उसने तुम्हारी (फ़र्याद) सुन ली (और कहा) कि हम लगातार एक हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करेंगे ॥

और यह (सहायता का वादा) जो उसने तुमसे किया था, केवल (विजय का) मंगल समाचार देने के लिये किया था । (ताकि तुम्हें अपनी विजय का विश्वास हो जाय) और ताकि तुम्हारे दिल (इस मंगल-समाचार से) निश्चिन्त हो जायँ ॥

और सहायता तो (जिस दशा में भी होती है) अल्लाह ही की ओर से (होती) है। निस्सन्देह अल्लाह तआला (बड़ा) ज़बरदस्त और (बड़ा) बुद्धिमान है ॥

(और यह-वह समय था) जब कि शत्रु ने बद्र के तालाब पर अधिकार कर लिया था और तुम प्यासे रेगिस्तान में खड़े हुए घबरा रहे थे और रेत में तुम्हारे पैर धसे जाते थे और शैतान के बहकाये में आकर युद्ध-क्षेत्र से भागना चाहते थे, तो) अल्लाह तआला ने अपनी ओर से (तुम्हारे) हृदय को सन्तुष्ट करने के लिये तुम पर ऊँघ छा दी थी और तुम पर आकाश से पानी बरसाया था, ताकि इसके द्वारा तुमको पवित्र करदे । और शैतानी अपवित्रता (और उसकी उत्पन्न की हुई दुर्वासनाओं) को तुमसे दूर करदे और तुम्हारे (टूटे हुए) दिलों को मज़बूत करदे । और उस (पानी) से (रणभूमि में तुम्हारे) पैरों को जमाये रक्खे ॥

(और यह-वह समय था) जब कि तुम्हारा पालन कर्त्ता फ़रिश्तों पर वही (ख़ुदाई सन्देश) उतार रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ । (तुम) ईमानदारों को (काफ़िरों के मुक़ाबले में) दृढ़ रक्खो । मैं अभी काफ़िरों के दिलों में भय उत्पन्न किये देता हूँ । तुम (निश्चिन्त होकर) इनकी गर्दनों पर वार करो और इनका पोर पोर काट डालो । यह दण्ड उन्हें अल्लाह और अल्लाह के रसूल का विरोध करने के कारण (मिला) है—

وَمَنْ يُشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝
ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا
فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ۝ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ
اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ
بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝
فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ
اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ
مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمْ
وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا
فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ
وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ
شَيْئًا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

امنى

और जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करेगा, तो (उसको ऐसी ही सज़ा मिलेगी, क्योंकि) अल्लाह की मार बड़ी सख़्त है ० (काफ़िरो ! तुम्हारी) यही (सज़ा) है, तो (ज़रा) इसका मज़ा चक्खो और (जाने रहो) कि (आख़िरकार) काफ़िरों को दोज़ख़ का अज़ाब (भी होना) है ० मुसल्मानो ! जब काफ़िरों से तुम्हारे लश्कर की मुठभेड़ हो जाय, तो उनको पीठ न देना ० और जो शख़्स ऐसे मौक़े पर काफ़िरों को अपनी पीठ देगा, तो (समझना कि) वह ख़ुदा के ग़ज़ब में आ गया और (आख़िरकार) उसका ठिकाना दोज़ख़ है और वह (बहुत ही) बुरी जगह है । मगर (हाँ) लड़ाई के लिये कन्नी काटता हो या (अपने) लोगों में जा शामिल होने के लिये (काफ़िरों के सामने से) टल जाय, (तो मुज़ायक़ा नहीं) ० तो (मुसल्मानो !) काफ़िरों को तुमने क़त्ल नहीं किया, बल्कि उनको अल्लाह ने क़त्ल किया । और (ऐ पैग़म्बर !) जब तुम ने तीर चलाये, तो तुमने तीर नहीं चलाये, बल्कि अल्लाह ने तीर चलाये, (ताकि कुफ़्र की बुनियाद को डिगमगा दे)। और ताकि मुसल्मानों को अपनी सर्कार से अच्छा इनआम (यानी फ़तह) इनायत फ़रमाये। बेशक अल्लाह (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है० यह बात (अच्छी तरह सुन रक्खो) और (जान लो कि) ख़ुदा को काफ़िरों की तदबीरों का बोदा करना मन्ज़ूर है ० (ऐ अह्ल मक्का !) तुम जो फ़तह माँगते थे (कि जो बर सरे हक़ है, उसकी फ़तह हो) तो (लो) फ़तह (भी) तुम्हारे सामने आ मौजूद हुई (कि मुसल्मान ग़ालिब आये, फिर इस्लाम लाने में अब तुमको क्या उज़्र है) । और अगर (आयन्दा के लिये इस्लाम की मुख़ालिफ़त से) बाज़ रहोगे, तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर होगा और अगर तुम फिर (इस्लाम की) मुख़ालिफ़त करोगे, तो हम भी फिर (अह्ल इस्लाम की मदद) करेंगे । और तुम्हारा जथा कितना ही बहुत (क्यों न) हो, कुछ भी तुम्हारे काम नहीं आयेगा । और यह (भी जाने रहो) कि अल्लाह मुसल्मानों के साथ है ० मुसल्मानो !—

और जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करता है, तो (उसे समझ लेना चाहिये कि) अल्लाह बड़ा कठिन अज़ाब (दण्ड) देने वाला है ॥

(अतः ऐ काफ़िरो ! दुर्दशा व पराजय का) यह दण्ड तो तुम (दुनिया में) भोगो । और (मरने के बाद तो तुम जैसे) काफ़िरों के लिये नर्क का अज़ाब है ही ॥

मुसल्मानो ! जब (रण भूमि में) काफ़िरों से तुम्हारी सेना का मुक़ाबिला हो जाय, तो (कभी) उन्हें पीठ न दिखाना ॥

(याद रक्खो !) जो ऐसे मौक़े पर उन्हे अपनी पीठ दिखायेगा, तो वह ख़ुदा के कोप में आ गया और उसका ठिकाना नर्क होगा और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है । किन्तु लड़ाई के लिये (किसी) युद्ध विषयक-युक्ति से काम लेने वाला (यदि अपने स्थान से हट जाय) या (किसी जंगी मस्लहत से अपनी) सेना में जाकर सम्मिलित होने वाला (यदि पीछे हट कर अपनी सेना में मिल जाय, तो इसमें कोई हर्ज नहीं) ॥

(मुसल्मानो ! जब तुम्हें यह मालूम हो गया कि बद्र के युद्ध में अल्लाह तआला तुम्हारी सहायता कर रहा था) तो (समझ लो कि) काफ़िरों को तुमने क़त्ल नहीं किया, वरन् अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया ॥

और (ऐ रसूल !) जब तुमने (उन पर) धूल फेंकी थी (वह वास्तव में) तुमने नहीं फेंकी थी, वरन् अल्लाह तआला ने फेंकी थी (ताकि काफ़िर व्याकुल हो जायं और उनके पांव रण-भूमि से उखड़ जायं) ॥

और ताकि अल्लाह तआला ईमानदारों को अपनी ओर से एक अच्छा पुरस्कार (अर्थात विजय) प्रदान करे। निस्सन्देह अल्लाह तआला (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है ॥

(बद्र के युद्ध के) यह वृतान्त (तुम्हारे सामने) हैं । और (उनको शिक्षा ग्रहण करने की दृष्टि से देख कर तुमको समझ लेना चाहिये कि) अल्लाह तआला काफ़िरों के मक्र (और इरादों) को (कमज़ोर व) निर्बल कर (के चलने नहीं) देगा ॥

(ऐ मक्के के मुश्रिको ! तुम जो काबे के परदे पकड़ पकड़ कर दुआ मांगा करते थे कि ख़ुदा वन्दा ! हम में और मुसल्मानों में जो न्याय पर हो, उसे विजय प्रदान कर । तो तुमने देख लिया कि विजय तुमको नहीं, वरन् मुसल्मानों को प्राप्त हुई । अतएव) यदि तुम (मुसल्मानों पर) विजय प्राप्त करने की इच्छा करोगे, तो ऐसी ही विजय तुम्हारे सामने आयेगी (जैसी कि बद्र के युद्ध में तुमको प्राप्त हुई है) ॥

और यदि तुम (उनका विरोध करने से) बाज़ रहोगे, तो यह तुम्हारे पक्ष में अच्छा होगा ॥

और यदि तुम फिर ऐसा करोगे, तो हम भी ऐसा ही करेंगे(अर्थात् तुम मुसल्मानों से लड़ोगे, तो हम भी उनको सहायता देंगे) । और तुम्हारा दल चाहे कितना ही अधिक हो,तुम्हारे कुछ काम न आयेगा । और (ख़ूब समझ लो कि) अल्लाह तआला ईमानदारों ही के साथ है ॥

امنوا اطيعوا الله ورسوله ولا تولوا عنه وانتم
تسمعون ۝ ولا تكونوا كالذين قالوا سمعنا
وهم لا يسمعون ۝ ان شر الدواب عند
الله الصم البكم الذين لا يعقلون ۝ ولو علم
الله فيهم خيرا لاسمعهم ولو اسمعهم لتولوا
هم معرضون ۝ يايها الذين امنوا استجيبوا لله
وللرسول اذا دعاكم لما يحييكم واعلموا ان الله
يحول بين المرء وقلبه وانه اليه تحشرون ۝
واتقوا فتنة لا تصيبن الذين ظلموا منكم
خاصة واعلموا ان الله شديد العقاب ۝ واذكروا
اذ انتم قليل مستضعفون في الارض
تخافون ان يتخطفكم الناس فاوىكم وايدكم
بنصره ورزقكم من الطيبت لعلكم تشكرون ۝

अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो और उस (के हुक्म) से सरताबी न करो और (हमारा इर्शाद तो) तुम सुन ही रहे हो ० और उन लोगों जैसे न बनो, जिन्होंने (मुंह से तो) कह दिया कि हमने सुना, हालांकि यह सुनते (सुनाते ख़ाक) नहीं ० अल्लाह के नज़्दीक बद तरीन हैवानात (यह काफ़िर हैं)-बहिरे, गूंगे, जो (कुछ) नहीं समझते ० और अगर अल्लाह इनमें (कुछ भी) बेहतरी पाता, तो इनको सुनने की क़ाबिलियत भी ज़रूर अता फ़र्माता। लेकिन (यह ऐसे कज सरिश्त हैं कि) अगर ख़ुदा इनको सुनने की क़ाबिलियत भी देता, ताहम यह बदी हुई बात है कि यह लोग मुंह फेर फेर कर उलटे भागते ० मुसलमानो! जब (हमारे यह) रसूल (मुहम्मद) तुमको ऐसे दीन की तरफ़ बुलाते हैं, जो तुम में नई रूह फूंकता है, तो तुम अल्लाह और रसूल का हुक्म (बगोश दिल सुनो और) मानो और जाने रहो कि अल्लाह (को ऐसी क़ुद्रत है कि वह) आदमी और उसके दिल (के इरादे) में आड़े आ जाता है। और (यह भी जाने रहो) कि (आख़िरकार) तुम (सब) उसी के हुज़ूर में हाज़िर किये जाओगे ० और उस बला से डरते रहो, जो ख़ास कर उन ही लोगों पर नाज़िल नहीं होगी, जिन्होंने तुम में से सरताबी की है, (बल्कि सब उसकी ज़द में आ जाओगे)। और जाने रहो कि अल्लाह की मार बड़ी सख़्त है ० और (वह वक्त) याद करो, जब तुम (मुसलमान) सर ज़मीन (मक्का) में थोड़े से थे (और) कमज़ोर समझे जाते थे (और) इस बात से डरते थे कि लोग तुमको ज़बर्दस्ती पकड़ कर (कहीं को) उड़ा ले जायँ। फिर ख़ुदा ने तुमको (मदीने में) जगह दी और अपनी मदद से तुम्हारी ताईद की और अच्छी अच्छी चीज़ें तुम्हे खाने को दीं (यह सब एहसानात) इस लिये कि तुम शुक्र करो ०—

ऐ ईमानदारो! अल्लाह और अल्लाह के रसूल की आज्ञा पालन करो और उस (के आदेशों) से विमुख न हो—ऐसी दशा में कि (अल्लाह ने तुमको कान दिये हैं और) तुम (उसके आदेशों को) सुनते हो॥

और उन लोगों की तरह न हो, जो कहते (तो यह) हैं कि हमने ख़ुदा के हुक्म को सुना और वह (ख़ाक भी) नहीं सुनते। (अर्थात उन पर अमल नहीं करते)॥

निस्सन्देह अल्लाह तआला के निकट जानदारों में (सबसे) निकृष्ट वही हैं, जो (श्रवण-शक्ति रखते हुए भी) बहिरे और (बोलने की शक्ति रखते हुए भी) गूँगे हैं। (अर्थात्) जो (सुनने और बोलने में) अक़्ल (और समझ) से काम नहीं लेते॥

और यदि अल्लाह तआला उनमें कोई विशेषता (और सत्य को स्वीकार करने की पात्रता) पाता, तो उनको सुनने (समझने) की योग्यता देता॥

और अब यदि उन्हें सुनने (समझने) की शक्ति भी दे, तब भी (स्वभाविक कुपात्र होने के कारण वह सत्य ग्रहण करने के पश्चात भी उस पर स्थिर नहीं रहेंगे) और निश्चित रूप से उससे मुँह फेर कर भाग जायँगे (अर्थात् इस्लाम से फिर जावेंगे)॥

ऐ ईमानदारो! जबकि (हमारा) रसूल तुम्हें ऐसे काम का निमन्त्रण दे रहा है, जिसमें तुम्हारा जीवन (और धर्म व संसार की भलाई व कल्याण) है, तो तुम्हें चाहिये कि अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों का पालन करो॥

और याद रक्खो कि अल्लाह तआला मनुष्य और उसके हृदय के बीच बाधा-स्वरूप हो जाता है। (अर्थात् जब लगातार अवज्ञा करने से स्वभाव कलुषित हो जाता है, तो मनुष्य का हृदय भी उसके अधिकार में नहीं रहता और वह सत्य को ग्रहण करने का इरादा करने पर भी नेकी से वञ्चित रहता है)। और (इस बात को भी न भूलो कि) निश्चित रूप से (एक दिन) अल्लाह ही के दरबार में (सब के) सब एकत्रित किये जायँगे (और अन्त में उसकी आज्ञाओं से विमुख होने वालों को पछताना पड़ेगा)॥

और उस आपत्ति से डरो—जिसमें तुममें से केवल वही लोग लिप्त नहीं होंगे, जो ज़ुल्म (व अत्याचार) करेंगे। (अतएव यदि तुम में से कुछ लोगों की कायरता और ईमान की कमज़ोरी के कारण काफ़िरों के मुक़ाबले में पराजय होगी, तो उसका प्रभाव केवल निर्बलों और कायरों पर ही नहीं पड़ेगा—वरन् समस्त जाति विपत्ति में फँस जावेगी)। और (यह बात अच्छी तरह) समझ लो कि अल्लाह तआला का अज़ाब अत्यन्त कठोर है॥

और (वह ज़माना) याद करो, जब कि तुम (संख्या में बहुत) थोड़े थे (और प्रभाव व शक्ति की दृष्टि से मक्के की) ज़मीन में (बहुत) कमज़ोर गिने जाते थे। (और तुम्हारी कमज़ोरी की यह दशा थी कि सदैव) इस बात से डरते थे कि (कहीं) तुमको (तुम्हारे विपक्षी) लोग (फूंक मार कर) उड़ा न दें। फिर अल्लाह ने (मदीने को) तुम्हारे रहने का ठिकाना बनाया और अपनी सहायता से तुम को शक्ति दी और तुमको पवित्र वस्तुयें प्रदान कीं, ताकि तुम (अल्लाह के) अनुग्रहीत हो॥

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا
اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ
وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ
عَظِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ ٤
لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ
لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ
يُخْرِجُوْكَ ۭ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ
خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ
سَمِعْنَا لَوْ نَشَاۗءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ
اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ
هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً
مِّنَ السَّمَاۗءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ اللّٰهُ

मुसल्मानो ! अल्लाह और रसूल की (अमानत में) ख़ियानत न करो और न अपनी अमानतों में ख़ियानत करो और तुम तो (ख़ियानत के वबाल से) वाक़िफ़ हो ० और जाने रहो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद बस (दुनिया के) बखेड़े हैं और नीज़ यह कि अल्लाह (वह ज़ात पाक है कि) उसके हां (नेकोकारों के लिये) बड़ा अज्र (मौजूद) है० मुसल्मानो ! अगर तुम ख़ुदा से डरते रहोगे, तो वह तुम्हारे लिये एक इम्तियाज़ पैदा कर देगा और तुम्हारे गुनाह तुमसे दूर कर देगा । और (आख़िरकार) तुम को बख़्शेगा (भी) । और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल (करने) वाला है ० और (ऐ पैग़म्बर ! वह वक़् याद करो) जब काफ़िर तुम पर दाव चलाना चाहते थे, ताकि तुमको गिरिफ़्तार कर रक्खें या तुमको मार डालें या तुमको जिला वतन करदें । और (हाल यह था कि) काफ़िर (अपना) दाव कर रहे थे और अल्लाह (अपना) दाव कर रहा था और अल्लाह सब दाव करने वालों से बेहतर (दाव करने वाला) है ० और जब हमारी आयतें इन काफ़िरों को पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो कहते हैं, (हां जी हां) हमने सुन (तो) लिया- अगर हम चाहें, तो हम भी इसी तरह का (क़ुर्आन) कहलें । यह तो अगले लोगों की कहानियां हैं और बस०और (ऐ पैग़म्बर ! वह वक़्त याद करो) जब इन काफ़िरों ने दुआयें मांगीं कि या अल्लाह ! अगर यह (दीन इस्लाम) यही (दीन) हक़ है (और) तेरी तरफ़ से (उतरा है) तो हम पर आस्मान से पत्थर बरसा या हम पर (कोई और) अज़ाब दर्दनाक ला नाज़िल कर ० और (ऐ पैग़म्बर!) ख़ुदा ऐसा (बे मुरव्वत) नहीं है—

ऐ ईमानदारो ! अल्लाह और अल्लाह के रसूल के स्वत्वों (को धरोहर समझो और उन) में ख़यानत न करो । (जिस ढंग से इन हक़ों को अदा करना तुम्हारे ज़िम्मे ठहराया गया है, उसी ढंग से उनको अदा करो)। और अपनी आपस की अमानतों में भी जान बूझ कर ख़यानत न करो ॥

और (इस बात को भी भली भाँति) समझलो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी सन्तान (तुम्हारे लिये) झगड़े हैं । (इनके प्रेम में अन्धे होकर अल्लाह के हक़ों और अमानतों में ख़यानत करना अपनी आत्मा की हत्या करना है) । और सांसारिक फल के मुक़ाबले में वह फल निश्चित रूप से बहुत बड़ा है (जो) अल्लाह के यहाँ (तुमको मिलेगा) ॥

ऐ ईमानदारो ! यदि तुम अल्लाह से डरते (और उसकी आधीनता व आज्ञा पालन करते) रहे, तो वह तुमको (काफ़िरों पर अधिकार व) श्रेष्ठता प्रदान करेगा और तुमसे तुम्हारी बुराइयों को दूर कर देगा और तुम्हें क्षमा करेगा और अल्लाह बड़ी अनुकम्पा वाला है ॥

और (ऐ मुहम्मद ! वह मक्के को छोड़ने का समय भी तुमको याद है) जब कि काफ़िर तुम्हारे लिये प्रयत्न कर रहे थे कि तुमको क़ैद करलें या तुमको (जान से) मार डालें या तुमको देश से निर्वासित करदें ॥

और वह तो अपनी युक्ति कर रहे थे और अल्लाह अपनी युक्ति कर रहा था । और अल्लाह सर्व श्रेष्ठ युक्तिवान है । (उसके मुक़ाबले में किस की युक्ति चल सकती है) ॥

और (उस समय इन काफ़िरों की यह हालत थी कि) जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती थीं, तो कहते थे (हां जी हां) हमने सुन लिया । यद्यपि हम चाहें, तो इस जैसी (बीसियों बातें स्वयं) कह डालें-(इनमें रक्खा ही क्या है ?) । यह तो केवल प्राचीन समय के लोगों के क़िस्से (कहानियां) हैं ॥

और जब यह काफ़िर कहा करते थे कि ख़ुदा वन्दा ! यदि यह सच्चा क़ुर्आन सच मुच तेरी ओर से (अवतीर्ण हुआ) है, तो (इस के न मानने के कारण) तू हम पर आकाश से पत्थर बरसा दे या (और) भयानक दुःख में हमें लिप्त करदे ॥

لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ
يَسْتَغْفِرُونَ ۝ وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ
يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ
إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝
وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ
حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ
يُحْشَرُونَ ۝ لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ
وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ
جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝
قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ

٤

कि तुम इन (लोगों) में (मौजूद) रहो और वह (तुम्हारे रहते) इन को अ़ज़ाब दे और अल्लाह ऐसा (बे रह्म भी) नहीं है कि (बाज़) लोग (गुनाहों की) माफ़ी (.खुदा से) मांगते रहें और वह इन (सब) को अ़ज़ाब दे ० और अब (कि तुम मदीने हिजरत करके चले आये, तो) इन (कुफ़्फ़ार मक्का) को क्या इस्तिहक़ाक़ रहा कि यह तो मसजिद हराम (यानी ख़ाने काबा के जाने) से (मुसलमानों को) रोकें और .खुदा इनको अ़ज़ाब न दे ? हालाँकि यह (गो उसके मुतवल्ली होने के मुद्दई हैं, मगर इन्साफ़न) उसके मुस्तहिक़ नहीं। उसके मुस्तहिक़ तो बस परहेज़गार लोग हैं। लेकिन इन (काफ़िरों) में से अक्सर (इस बात को) नहीं समझते ० और ख़ाने काबा के पास सीटियां और तालियां बजाने के सिवा इनकी नमाज़ ही क्या थी। तो (ऐ काफ़िरो !) जैसा तुम कुफ़्र करते रहे हो, अब उसके बदले अ़ज़ाब (के मज़े) चक्खो ० इसमें शक नहीं कि यह काफ़िर अपने माल (इस लिये) ख़र्च करते रहते हैं, ताकि (लोगों को) राह .खुदा से रोकें। सो (यह लोग तो) माल को (इसी तरह पर) ख़र्च करते ही रहेंगे। (मगर) फिर (आख़िरकार वही माल) इनके हक़ में (मूजिब) हसरत होगा, (ख़र्च भी करें और) फिर मग़लूब (भी) हों। और (क़यामत के दिन) काफ़िर (सब) जहन्नम की तरफ़ हांके जायँगे ० ताकि अल्लाह नापाक (लोगों) को पाक (लोगों) से अलग करे और नापाक (लोगों) को एक दूसरे पर रख कर उन सब का (एक) ढेर बनाये। फिर उस ढेर (के ढेर) को जहन्नम में झोंक दे। यही लोग हैं, जो घाटे में रहे ० (ऐ पैग़म्बर !) काफ़िरों से कहो कि अगर (अब भी अपनी शरारतों से) बाज़ आ जायँ, तो उनके पिछले .कुसूर माफ़ कर दिये जायँगे—

और (यह मूर्ख इससे अपरिचित थे कि) जब तक (.खुदा का वह रसूल, जो ईमानदार और काफ़िर—सबके लिये दया स्वरूप बनाकर भेजा गया है अर्थात्) तुम उनमें मौजूद हो, उस समय तक अल्लाह तआ़ला उन पर ऐसा अ़ज़ाब अवतीर्ण नहीं करेगा। और इस कारण से भी अल्लाह उनको ऐसे अ़ज़ाब में नहीं फँसायेगा कि उनमें से कुछ लोग (तौबा) क्षमा की प्रार्थना करते रहते हैं (और पहिली उम्मतों की तरह .खुदा के बिलकुल ही विद्रोही नहीं हो गये हैं) ॥

और (इन काफ़िरों का यह झूठा विचार है कि वह अ़ज़ाब के न आने को अपने कर्मों का परिणाम ठहराते हैं)। वह (तो) इसके (कदापि) अधिकारी नहीं हैं कि अल्लाह उनको अ़ज़ाब न दे। जिस दशा में कि वह (ईमान लाने वालों को) आदरणीय मस्जिद से रोकते हैं। यद्यपि (वास्तव में) वह इसके अधिकारी (या प्रबन्धक) नहीं हैं, (वरन् ज़बर्दस्ती अधिकारी बन गये हैं)। आदरणीय मस्जिद के अधिकारी तो केवल परहेज़गार ही हो सकते हैं। परन्तु इन (काफ़िरों) में से अक्सर (यह) नहीं जानते (कि वह उसके प्रबन्ध कर्त्ता होने की योग्यता नहीं रखते) ॥

और इनकी नमाज़ (भी) बस यह होती है कि वह काबे के स्थान के समीप सीटियाँ और तालियाँ बजाते हैं। (यही वह हैं, जिनसे प्रलय में कहा जायगा कि ऐ अभागो !) तुम अपने कुफ़् के बदले अ़ज़ाब का मज़ा चक्खो ॥

यह काफ़िर (ईमानदारों को) .खुदा के मार्ग से रोकने (और इस्लाम के प्रचार में रुकावटें पैदा करने) के लिये अपना माल ख़र्च करते हैं, और अभी और ख़र्च करेंगे। परन्तु अन्त में यह माल (का ख़र्च करना) उनके लिये पछतावा (व शोक) का कारण होगा और अन्त में वह (मुसल्मानों से) परास्त होकर रहेंगे ॥

और (परास्त होने के बाद भी) जो लोग कुफ़् पर स्थिर रहेंगे, वह नर्क की ओर हाँके जायँगे। ताकि अल्लाह तआ़ला अपवित्र लोगों (अर्थात् काफ़िरों) को पवित्र लोगों (अर्थात ईमानदारों) से अलग करदे। और फिर (समस्त) अपवित्र लोगों को एक दूसरे से मिला कर उन सबको इकट्ठा करदे। (और) फिर उनको नर्क में झोंक दे। (दोनों लोकों में) घाटे में रहने वाले यही लोग हैं ॥

(ऐ पैग़म्बर ! इन) काफ़िरों से कह दो कि यदि (अब भी) वह (अपनी करतूतों से) बाज़ आ जावें, तो उनके पहिले अपराध क्षमा कर दिये जायँगे—

وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ●
وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ
كُلُّهٗ لِلّٰهِ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ
وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ
النَّصِيْرُ ● وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ
خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ
وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى
الْجَمْعٰنِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ● اِذْ اَنْتُمْ
بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى
وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ
فِي الْمِيْعٰدِ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ●
لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ

और अगर फिर (शरारत) करेंगे, तो अगले लोगों की रविश पड़ चुकी है, (वही अन्जाम इनका भी होना है) ० और (मुसल्मानो !) काफ़िरों से लड़ते रहो, यहाँ तक कि फ़साद (नाम व निशान को बाक़ी) न रहे और दुहाई सारी .खुदा ही की हो । पस अगर (यह लोग फ़साद से) बाज़ आ जायँ, तो जो कुछ यह लोग करेंगे, अल्लाह उसको देख रहा है, (तो उसी के मुताबिक़ इनको जज़ा देगा) ० और अगर सरताबी करें, तो (मुसल्मानो!) तुम समझे रहो कि अल्लाह तुम्हारा हामी है। (और क्या ही) अच्छा हामी और(क्या ही)अच्छा मददगार है०और जान रक्खो कि जो चीज़ तुम(लड़ाई में) लूट कर लाओ, उसका पांचवाँ हिस्सा .खुदा का और रसूल का और (रसूल के) क़राबत दारों का और यतीमों का और मोहताजों का और मुसाफ़िरों का, (इसी तक़सीम पर तुमको अमल करना चाहिये) अगर तुम .खुदा का और उस (मदद ग़ैबी) का यक़ीन रखते हो, जो हम ने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर फ़ैसले के दिन (यानी जंग बद्र में) नाज़िल की थी, जिस दिन कि (मुसल्मानों और काफ़िरों के) दो लश्कर एक दूसरे से गुथ गए थे और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (और मुसल्मानों की यह फ़तह भी उसी की .कुद्रत से हुई) ० यह वह वक़्त था कि तुम (मुसल्मान मैदान जंग के) वरले सिरे पर थे और काफ़िर परले सिरे पर, और क़ाफ़िला (दरिया किनारे) तुमसे नीचे की तरफ़ को (हटा हुआ) । और अगर तुम (दोनों फ़रीक़ों) ने (पहिले से) आपस में (लड़ाई का) ठैराव किया होता, तो ज़रूर वक़्त (की पाबन्दी) में तुम (में किसी न किसी फ़रीक़) से अबेर सवेर होती पर होती, लेकिन (तुम को .खुदा ने अचानक एक दूसरे से भिड़ा दिया) । ताकि .खुदा को जो कुछ करना मन्ज़ूर था, उसको पूरा कर दिखाए (और) ताकि जो शख़्स हलाक होने वाला है, वह हुज्जत तमाम हुए पीछे हलाक हो और जो ज़िन्दा रहने वाला है, वह भी हुज्जत तमाम हुए पीछे ज़िन्दा रहे —

और यदि (बाज़ नहीं आयेंगे और) वही किये जायँगे, जो करते रहे हैं-तो पहिले लोगों का नमूना गुज़र चुका है। (जो परिणाम उनका हुआ, वह सबके सामने है) ॥ और (ऐ मुसल्मानो !) इन (काफ़िरों) से लड़ो । यहां तक कि (जो) झगड़े (इन लोगों ने फैला रक्खे हैं, उन) का अन्त हो जाय। और धर्म सब अल्लाह ही के लिये हो जावे (अर्थात् किसी को सत्य धर्म ग्रहण करने से काफ़िरों के ग़लबे का भय प्रतिबन्धक न हो) । फिर यदि यह (अपनी ज़ियादतियों से) बाज़ आ जावें, तो अल्लाह तआला इनके कर्मों को देखता है। (वह इनके नेक कर्मों का फल अवश्य देगा) ॥ और यदि वह बाज़ न आवें, तो विश्वास रक्खो कि अल्लाह तआला तुम्हारा सहायक है। (और वह) क्या ही अच्छा हामी और क्या ही अच्छा सहायक है ॥

और (ऐ मुसल्मानो !) यह तुम (अच्छी तरह) जान लो कि (लड़ाई में काफ़िरों की) जो चीज़ भी तुम लूट कर लाओ, तो उस (के पांच भाग करके चार भाग तो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करने वालों को देदो और एक भाग अर्थात् सारी लूट) का पंचम भाग (फिर पांच भागों में विभाजित करो और इन विभाजित किये हुए पांच भागों में से एक भाग) अल्लाह और उसके रसूल का है। (उसे रसूलुल्लाह की सेवा में पेश करदो। रसूलुल्लाह की सेवा में पेश करना .खुद अल्लाह ही की सेवा में पेश करना है) । और (शेष बचे हुए चार भागों में से एक भाग रसूलुल्लाह के) सम्बन्धियों का है और (एक) अनाथों का और (एक) फ़क़ीरों का और (एक) मुसाफ़िरों का ॥

(परस्पर के झगड़े को छोड़ कर ग़नीमत के माल को विभाजित करने के सम्बन्ध में उपर्युक्त आदेश को अमल करने योग्य समझो) । यदि तुम अल्लाह (के सच्चे पूज्य होने) और उस (की भेजी हुई फ़रिश्तों की उस अदृष्टि सहायता को अल्लाह की ओर से होने) का (सच्चे दिल से) विश्वास रखते हो, जो (धर्म अधर्म के) फ़ैसले (अर्थात् बद्र की लड़ाई) के दिन-जिस रोज़ (कि काफ़िरों और ईमानदारों के) दो दल (युद्ध परीक्षा के लिये) गुथ गये थे, हमने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर (उसके आज्ञा कारियों को विजयी और उसके अवज्ञाकारियों को पराजित करने के लिये अदृष्टि से) उतारी थी और (यह उसी सहाता का फल था कि ऐ मुसल्मानो ! तुम काफ़िरों के इतने बड़े समूह पर विजय पा गये) । सच है, अल्लाह का हर वस्तु पर अधिकार है। (यह विजय भी उसकी सत्ता का एक चमत्कार था, अन्यथा हज़ार सशस्त्र काफ़िरों के मुक़ाबले में तुम्हारे तीन सौ दस आदमी क्या बना सकते थे) ॥

(ऐ मुसल्मानो ! तुम्हारे लिये यह वह कठिन समय था) जब कि तुम तो (लड़ाई के मैदान के) वरले किनारे पर थे। (जहाँ पानी व घास का दूर दूर तक पता व निशान न था और रेत की अधिकता के कारण तुम्हारे पैर ज़मीन में धँसे जाते थे) । और (बर ख़िलाफ़ तुम्हारे) वह (काफ़िर मैदान जंग के) परले किनारे पर थे (जहां की ज़मीन सख़्त थी, पानी अधिकता से मौजूद था) और (वह) व्यौपारियों का दल (जिसके मुक़ाबले का इरादा करके तुम मदीने से चले थे) तुमसे (तीन मील दूर) नीचे की ओर (समुद्र के किनारे किनारे जा रहा) था। (उस समय अल्लाह ही ने तुम्हारी सहायता की और अपनी कृपा और पुरस्कार प्रदान किया) ॥

और (वास्तव में पूछो, तो इस लड़ाई का कारण भी अल्लाह ही है। क्योंकि) यदि तुम (अपने तौर पर उनसे लड़ने का) वादा करते, तो तुम (उनकी शक्ति को देख कर कभी उनके मुक़ाबले में न आते और) बिलकुल प्रतिज्ञा भंग करते ॥ मगर (वह तो अल्लाह तआला ने तुमको उनसे अचानक भिड़ा दिया) ताकि अल्लाह तआला को (सत्य व असत्य का) जो कुछ (फ़ैसला) करना था, उसे पूरा करदे ॥

(और) ताकि (तुम में से) जो बरबाद (व पथ-भ्रष्ट होने वाला) हो, वह (समस्त) प्रमाणों (के समाप्त होने) के उपरान्त बरबाद (व पथ-भ्रष्ट) हो। और जो जीवित (अर्थात सत्य धर्म का अनुयायी) हो (ना चाहे) वह (भी इन समस्त) प्रमाणों के उपरान्त जीवित (और इस्लाम का अनुयायी) हो (जिस से कि उसके सत्य होने में उसे कुछ भी शंका व सन्देह न रहे) ॥

عَنْ بَيِّنَةٍ ۗ وَإِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِذْ يُرِيكَهُمُ اللّٰهُ
فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ
وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي
أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ
أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝
६
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا
اللّٰهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَأَطِيعُوا اللّٰهَ وَرَسُولَهُ
وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَاصْبِرُوا ۚ
إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ
خَرَجُوا مِن دِيَارِهِم بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ
وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُونَ
مُحِيطٌ ۝ وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ

और बेशक अल्लाह ज़रूर (सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० (ऐ पैग़म्बर ! उसी वक़्त का वाक़िआ यह भी है) जब कि ख़ुदा ने तुम को ख़्वाब में काफ़िर थोड़े कर दिखाए। और अगर उन्हें तुमको बहुत कर दिखाता, तो तुम (मुसलमान) ज़रूर हिम्मत हार देते और लड़ाई के बारे में भी ज़रूर आपस में झगड़ने लगते (कि लड़ें या न लड़ें) मगर ख़ुदा ने (तुमको नामर्दी की रुस्वाई से) बचाया। बेशक वह (लोगों के) दिली ख़यालात तक से वाक़िफ़ है ० और (इसी लड़ाई में) जब तुम (दोनों फ़रीक़) एक दूसरे से भिड़ पड़े, काफ़िरों को तुम मुसलमानों की आँखों में थोड़ा कर दिखाया और काफ़िरों की आंखों में तुम मुसलमानों को थोड़ा कर दिखाया, ताकि ख़ुदा को जो कुछ करना मन्ज़ूर था-(उसको) पूरा कर दिखाए। और आख़िरकार सब कामों का मदार अल्लाह ही पर जाकर ठैरता है ० मुसलमानो ! जब (काफ़िरों की) किसी फ़ौज से तुम्हारी मुठ भेड़ हो जाया करे, तो साबित क़दम रहो और कसरत से अल्लाह को याद करो, ताकि (आख़िरकार) तुम फ़लाह पाओ ० और अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो और आपस में झगड़ा न करो कि (आपस में झगड़ा करने से) तुम हिम्मत हार दोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जायगी और (लड़ाई की तकलीफ़ों पर) सब्र करो। बेशक अल्लाह सब्र करने वालों का साथी है ० और उन (काफ़िरों) जैसे न बनो, जो मारे शेख़ी के और लोगों के दिखाने के लिये अपने घरों से निकल खड़े हुए और (किर्दार यह हैं कि लोगों को) राह ख़ुदा से रोकते हैं। और जो कुछ भी यह लोग करते हैं, अल्लाह के इहाते (इल्म) में है० और जब शैतान ने उन (काफ़िरों) की हरकात उनको उम्दा कर दिखाईं और (उनसे) कहा—

अल्लाह तआ़ला (सब की बातों को) सुनने वाला (और सबके हृदय भावों और हालतों का) जानने वाला है ॥
(ऐ पैग़म्बर ! यह भी उसी समय का वर्णन है) जब कि अल्लाह तआ़ला ने इन (काफ़िरों की संख्या) को स्वप्न (की दशा) में तुम्हें कम दिखाया (जिस से कि मुसलमान निर्भय होकर तुम्हारे साथ उनका मुक़ाबला करने जायँ) ॥

और यदि अल्लाह तआ़ला उन (की संख्या) को अधिक दिखाता (और ऐ मुसलमानो ! तुमको उनकी बहु संख्या का हाल मालूम हो जाता) तो तुम बिल्कुल सुस्ती बरतते। और इस (लड़ाई के) विषय में ज़रूर (कोई न कोई) झगड़ा (खड़ा) कर देते, मगर अल्लाह तआ़ला ने (तुमको इस कायरता और आलस्यता व अकीर्ति से) सुरक्षित रक्खा। निस्सन्देह-पवित्र अल्लाह हृदयों की (सब गुप्त) बातें अच्छी तरह जानता है ॥ और (ऐ मुसलमानो !) जब कि तुम (लड़ाई के लिये इन काफ़िरों के) सन्मुख हुए (तो उस समय) अल्लाह तआ़ला ने तुम मुसलमानों की दृष्टियों में काफ़िरों (की संख्या) को कम कर दिखाया था और काफ़िरों की दृष्टियों में तुम्हें (अर्थात् तुम्हारी संख्या को) कम कर दिया था। जिससे कि जो काम अल्लाह को करना (मंज़ूर) था, उसे कर दिखाये। और सब कामों का (वास्तविक कर्त्ता और) सहारा अल्लाह ही है ॥ ऐ ईमानदारो ! जब तुम्हारा (काफ़िरों के) किसी दल से मुक़ाबला आ पड़े, तो (निम्न लिखित चन्द बातों का अवश्य ख़याल रक्खा करो। प्रथम यह कि लड़ाई के मैदान में) दृढ़ रहा करो और (दूसरे यह कि) अल्लाह को ख़ूब याद किया करो, जिससे कि तुम (आपत्तियों से छुटकारा पाओ और अपने मनोरथों में) सफलता प्राप्त करो ॥

और (तीसरे यह कि) अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा पालन करो (और उनकी हिदायतों की पाबन्दी का ख़ास तौर पर ध्यान रक्खा करो)। और (चौथे यह कि) आपस में झगड़ा न करो (और जो वर्तमान समय के धार्मिक नेता का आदेश हो, उसके आगे आधीनता स्वरूप गर्दन झुका दिया करो। क्योंकि अहंकार और परस्पर का द्वेष वह बुरे दोष हैं, जो थोड़े दिनों में तुम्हारी शक्तियों को तित्तर बित्तर और तुम्हारे संगठन को तोड़ देंगे। यदि तुमने इनकी पर्वाह न की) तो तुम (अत्यन्त साहस हीन और) आलसी हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जायगी और (पांचवें यह कि लड़ाई के मैदान में कैसे से कैसा महान कष्ट तुमको उठाना पड़े, उसे) सन्तोष (व धैर्य के साथ सहन किया) करो। निस्सन्देह अल्लाह तआ़ला सन्तोष करने वालों के साथ है ॥

और (छठे यह कि बड़प्पन व स्वाभिमान में) उन (काफ़िरों) की तरह न बनो (जिनके दिल में धर्म व ईमान के प्रेम के अतिरिक्त छल व कपट भरा हुआ था और) जो (बद्र के जिहाद अर्थात् धर्म-युद्ध में सम्मिलित होने के लिये) अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को (अपनी शान) दिखाते हुए निकले (थे)। और (जिनका काम केवल यह था कि लोगों को) ख़ुदा के मार्ग (पर चलने) से रोकते थे और (नर्क में अपना घर बनाते थे, मगर यह जाने कहां है)। अल्लाह तआ़ला (का ज्ञान) इनके (समस्त) कर्मों को घेरे हुए है। (उसे उनकी सारी करतूत मालूम है। वह उन्हें दण्ड भी जैसी उनकी करतूत थीं, वैसा ही देगा)॥

(ऐ रसूल ! उस समय का भी इनसे वर्णन करो, जिस समय कि क़ुरैश के काफ़िर अपने शत्रु बनी कनाना के भय के मारे तुम्हारे मुक़ाबले में आते हुए झिझक रहे थे और) जबकि शैतान ने उनके (बुरे) कर्मों को संवारा (और उनके विचार में उन्हें श्रेष्ठ करके दिखाया) था और (बनी कनाना के सरदार के रूप में आकर उन्हें उभारा और) कहा था—

لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ فَلَمَّا تَرَاءَتِ
الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكُمْ
إِنِّي أَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللّٰهَ وَاللّٰهُ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ إِذْ يَقُولُ الْمُنٰفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي
قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ غَرَّ هٰؤُلَاءِ دِينُهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ فَإِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ وَلَوْ تَرٰى
إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلٰئِكَةُ يَضْرِبُونَ
وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ
الْحَرِيقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللّٰهَ
لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ۝ كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ
وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَفَرُوا بِآيٰتِ اللّٰهِ فَأَخَذَهُمُ
اللّٰهُ بِذُنُوبِهِمْ إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝
ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِعْمَةً أَنْعَمَهَا

कि आज लोगों में कोई ऐसा (सूर्मा) नहीं, जो तुम पर ग़ालिब आ सके और मैं तुम्हारा पुश्त पनाह हूँ। फिर जब दोनों फ़ौजें आमने सामने आईं, अपने उलटे पांव चलता बना और लगा कहने कि मुझको तुमसे कुछ सरोकार नहीं। मैं वह चीज़ देख रहा हूँ, जो तुमको नहीं सूझ पड़ती (यानी फ़रिश्ते)। मैं तो अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह की मार बड़ी सख़्त है० (यह वह वक़्त था) जब मुनाफ़िक़ और जिन लोगों के दिलों में (कुफ्र की) बीमारी थी, कहते थे कि इन (मुसलमानों) को तो इनके दीन ने मग़रूर कर दिया है। (सो मुसलमान मग़रूर नहीं हैं, बल्कि इनको ख़ुदा पर भरोसा है) और जो ख़ुदा पर भरोसा रक्खेगा, तो (वह क़वी दिल होहीगा। क्योंकि उसका मददगार) अल्लाह ज़बर्दस्त (और) हिक्मत वाला है ० और (ऐ पैग़म्बर !) काश तुम (उस वक़्त काफ़िरों की हालत) देखो जब कि फ़रिश्ते (इन) काफ़िरों की रूहें क़ब्ज़ कर रहे हैं (और) इनके मुंहों और गुद्दियों पर (मुक्के और लातें) मारते जाते हैं और (कहते जाते हैं कि लो) अज़ाब दोज़ख़ के मज़े (तो) चक्खो ० (काफ़िरो ! यह सख़्ती, जो तुम्हारे साथ की जाती है) यह तुम्हारे उन (आमाल बद) का बदला है, जो तुमने अपने हाथों पहिले से (ज़ाद आख़िरत बनाकर) भेजे हैं और (तुम इस सज़ा के मुस्तहिक़ हो)। इस लिये कि ख़ुदा तो (अपने) बन्दों पर किसी तरह का ज़ुल्म नहीं करता ० (काफ़िरो ! तुम्हारी भी वही गत हुई) जैसी गत फ़िरऔन की क़ौम और उन लोगों की हुई, जो उनसे पहिले हो गुज़रे हैं कि उन्होंने ख़ुदा की आयतों से इन्कार किया, तो ख़ुदा ने उनके गुनाहों के बदले उनको धर पकड़ा। बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त है (और) उसकी मार बड़ी सख़्त है ० यह (सज़ा उन लोगों को) इस वजह से (दी गई) कि जो नेअ़मत ख़ुदा ने किसी क़ौम को दी हो—

कि आज (समस्त संसार के) लोगों में कोई (ऐसा दल) नहीं, जो तुम पर विजय प्राप्त कर सके और (समझाया था कि बनी कनाना की ओर से किसी प्रकार की शंका न करो, क्योंकि) मैं तुम्हारा (साथी, संगती और सहायत व) मददगार हूँ॥

अतः जब (ईमानदारों और काफ़िरों के) दोनों दल (आमने) सामने हो गये (और ईमानदारों की सहायता के लिये उसने फ़रिश्तों को आकाश से उतरते हुए देखा) तो (डर के मारे) अपने उलटे पैरों लौट गया और कहता गया कि मुझको तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं। (अब तुम जानों और तुम्हारा काम। क्योंकि) मैं वह कुछ देख रहा हूँ, जो तुमको दिखाई नहीं पड़ता। मुझे अल्लाह से डर लगता है (कि कहीं वह संसार ही में किसी फ़रिश्ते के द्वारा मुझे मज़ा न चखा दे)। और अल्लाह तआ़ला घोर अज़ाब (दण्ड) देने वाला है। (उसका अज़ाब अर्थात् दण्ड सहन करना कठिन है)॥

(और वह समय भी वर्णन करने योग्य है) जब कि (बद्र की लड़ाई के दिन मुसलमानों में से कुछ) मुनाफ़िक़ (जो मुसलमानों के साथ लड़ाई के मैदान में मदीने से आये थे) और (वह लोग) जिनके दिलों में (कुफ़्र व शिर्क का) राग (मुसलमान हो जाने पर भी मौजूद) था (मुसलमानों की बे सरो सामानी और काफ़िरों की तड़क भड़क को देख कर भाग गये थे और मुसलमानों की हंसी उड़ाते थे और यह) कहते थे कि इन लोगों को इनके धर्म ने धोखा दिया है। (जिसकी सचाई के भरोसे पर यह ऐसे ख़तरे में आ फंसे) और (अपने मुक़ाबले वालों की अधिक संख्या का भी ख़याल न किया। इस पर अल्लाह तआ़ला ने जवाब दिया कि) जो अल्लाह पर विश्वास करता है, तो (उसे संसार में किसी और व्यक्ति का भय नहीं रहता। क्योंकि उसका सहायक) अल्लाह तआ़ला (है, जो प्रत्येक वस्तु पर) अधिकार रखता है (और) बुद्धिमान (है)॥

और (ऐ रसूल !) यदि तुम (उस समय का दृश्य) देखते, जब कि फ़रिश्ते (बद्र की लड़ाई में इन) काफ़िरों के प्राण निकाल रहे थे (और) इनके मुंहों और पीठों पर (मुक्के और दुहत्तड़) मारते थे और (कहते जाते थे कि अभी क्या है-आगे चल कर) तुम (नर्क में जलन व) तपिश का मज़ा चखना॥

(काफ़िरो !) यह (दण्ड) तुम्हारे उन (बुरे कर्मों) का परिणाम है, जो तुमने (स्वयं) अपने हाथों (प्रलय के मार्ग का सामान करके) भेजे हैं। अन्यथा अल्लाह तआ़ला (अपने) बन्दों के लिये ज़ालिम नहीं है॥

(काफ़िरो ! तुम्हारी भी वही आदत है) जैसी आदत फ़िरऔनियों और उन (काफ़िरों) की थी, जो उनसे पहिले (हो चुके) थे-कि उन्होंने अल्लाह की आयतों (को मानने) से इन्कार किया (और उसकी आज्ञाओं का उलङ्घन किया) तो अल्लाह तआ़ला ने उनको उनके पापों के कारण (अपने अज़ाब में) पकड़ लिया। निस्सन्देह अल्लाह तआ़ला बलवान है (और अपने अवज्ञाकारियों को) सख़्त अज़ाब (घोर दुःख) देने वाला (है। किसी की शक्ति नहीं कि उसके सम्मुख आ सके या उसके अज़ाब को रोक सके)॥

यह (दण्ड उनको) इस कारण (दिया गया) है कि (उन्होंने) अल्लाह तआ़ला (के नियत किये हुये नियम का ख़याल न किया। उसका नियम है कि वह) किसी प्रसाद को, जो उसने किसी जाति को दिया (हो-दण्ड या किसी बुरी वस्तु से) नहीं बदलता—

जब तक वह लोग आप ही अपनी सलाहियत को न बदलें, .ख़ुदा (की आदत) नहीं कि (उसमें कुछ) रद्दो बदल करे। और (नीज़) इस वजह से कि अल्लाह (सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता है (और वह उसके नज़दीक उस अज़ाब के मुस्तहिक़ थे) ० (काफ़िरो! तुम्हारी भी वही गत हुई) जैसी गत फ़िरऔन की क़ौम और उन लोगों की हुई, जो उनसे पहिले थे कि उन्होंने अपने पर्वर्दिगार की आयतों को भुठलाया, तो हमने उनको उनके गुनाहों के बदले हलाक कर मारा और फ़िरऔन के लोगों को ग़र्क़ कर दिया और (यह) सब (के सब बड़े) सर्कश थे०अल्लाह के नज़दीक बदतरीन हैवानात वह लोग हैं, जो कुफ़्र करते हैं। तो वह किसी तरह ईमान लाने वाले हैं नहीं ० (ऐ पैग़म्बर! यह काफ़िर) वह (हैं) जिनसे तुमने (सुलह का) अहद (व पैमान) किया, फिर अपने अहद (व पैमान) को हर बार तोड़ते और वह (बवाल बद अहदी से भी) नहीं डरते ० तो अगर तुम उनको लड़ाई में (मौजूद) पाओ, तो उन पर ऐसा ज़ोर डालो कि जो लोग उनकी पुश्ती पर हैं, उनको भागते देख कर उनको भी भागना ही पड़े। शायद यह लोग (शिकस्त से डर कर) इब्रत पकड़ें०और अगर तुमको किसी क़ौम की तरफ़ से दग़ा का अन्देशा हो, तो मसावात को मलहूज़ रख कर (उनके अहद को उल्टा) उन्हीं की तरफ़ फेंक मारो। बेशक अल्लाह दग़ाबाज़ों को दोस्त नहीं रखता ० और काफ़िर यह न समझें कि (हमारे क़ाबू से) निकल गये, वह हरगिज़ (हमको) हरा नहीं सकते ० और (मुसलमानो! सिपाहियाना) .क़ूवत से और घोड़ों के बाँधे रखने से जहां तक तुमसे हो सके काफ़िरों के (मुक़ाबिले के) लिये साज़ व सामान मुहय्या किये रहो कि ऐसा करने से अल्लाह के दुश्मनों पर और अपने दुश्मनों पर अपनी धाक बिठाए रक्खोगे-

عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ۙ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَا
اٰلَ فِرْعَوْنَ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ○ اِنَّ شَرَّ
الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ○ اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ
عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ○
فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ
لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ○ وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ
خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ
الْخَآئِنِيْنَ ○ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا
اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ○ وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ
مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ

६

(और अपने प्रसाद को उस जाति पर स्थिर रखता है) जब तक कि वही (अर्थात उस जाति के) लोग जो कुछ उनके दिलों में है (अर्थात .ख़ुदा के प्रसाद देने वाला होने का विश्वास) उसे बदल न डालें और (अपनी नेकी को बदी से बदल कर दंड का अधिकारी न बनालें)। निश्चित रूप से अल्लाह तआला (उनके वचनों को) सुनने वाला (और उनके विश्वास की दशा का) जानने वाला है। (उसने उनके वचनों को सुन कर और विश्वास की दशा को जान कर उन्हें दण्ड का अधिकारी ठहराया) ॥

(काफ़िरो! अवज्ञा करने में तुम्हारी बिल्कुल वही आदत है) जैसी फ़िरऔन वालों और उन (काफ़िरों) की आदत थी, जो उन से पहिले (हो चुके) थे-कि उन्होंने अपने पालन कर्ता की आयतों को झूठा ठहराया। सो हमने उनको उनके पापों के कारण (भूकम्प आदि दुखों से) बरबाद (व नष्ट भ्रष्ट) कर दिया और फ़िरऔन की सन्तान को (समुद्र में) डुबो दिया और (यह) सब (के सब बड़े उद्दण्ड व) अत्याचारी थे ॥

(इन लोगों को क्या हो गया कि यह ध्यान नहीं करते। हमने कैसे २ इनके साथ उपकार किये-फिर भी यह हमारी ओर आकर्षित नहीं होते)। सच तो यह है कि अल्लाह के समीप निकृष्ट पशु वह लोग हैं, जिन्होंने कुफ़्र किया (और वह अपने कुफ़्र पर इस प्रकार अड़े हुए हैं कि मानो) फिर वह ईमान लायेंगे ही नहीं ॥

(ऐ रसूल! यही वह लोग हैं) जिनसे तुमने (कई बार सन्धि की) प्रतिज्ञा बाँधी (लेकिन उन्होंने एक बार भी उसका पालन व लिहाज़ न किया। प्रतिज्ञा तो) हर बार (उन्होंने बांध ली, लेकिन एक प्रतिज्ञा तोड़े हुए कुछ दिन गुज़रने नहीं पाते कि) फिर अपनी (दूसरी) प्रतिज्ञा तोड़ देते हैं। और (प्रतिज्ञा भंग करते हुए) यह (.ख़ुदा का) भय नहीं खाते ॥

सो यदि (ऐ रसूल!) तुम इन (प्रतिज्ञा भंग करने वालों) पर लड़ाई में अधिकार प्राप्त कर लो, तो (उन्हें इस प्रकार अधिकार में करना कि अपने कार्य के ढङ्ग से) उनके साथ वालों में (भी) झगड़ा और हल चल मचा दो ॥

और अगर तुमको किसी जाति (की ओर) से विश्वास घात (अर्थात प्रतिज्ञा भङ्ग) का भय हो, तो (तुम भी) समता (को दृष्टि में) रख कर (उनकी प्रतिज्ञा) उन ही (के मुंह) पर फेंक मारो (और उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध व समझौता न रक्खो। क्योंकि) अल्लाह तआला विश्वास घात (व प्रतिज्ञा के विरुद्ध कार्य) करने वालों को पसन्द नहीं करता ॥

और (बद्र की लड़ाई में जो) काफ़िर (जान बचा कर भाग गये, वह अपने दिल में यह) न विचार करें कि (अब हम दण्ड से बिल्कुल) बच गये। (क्योंकि) वह (अल्लाह तआला को किसी प्रकार) आधीन नहीं कर सकते। (अगर वह दुनिया में मुसलमानों के हाथों से उन्हें बध न करायेगा, तो प्रलय में ज़रूर उनकी ख़बर लेगा) ॥

और (ऐ मुसलमानो! काफ़िरों के मुक़ाबले में बद्र के जिहाद अर्थात धर्म युद्ध की तरह बिना सरो सामान के जाना ठीक नहीं। इन को तुम विजय करना चाहते हो, तो .ख़ुदा पर भरोसा रखने के साथ अपने अन्दर हर प्रकार की पूरी पूरी) शक्ति (पैदा करो; जैसे धनुष विद्या सीखना, अपने पास हथियार रखना) और घोड़े बांधने से (शौक़ रक्खो और अब) इन (प्रतिज्ञा भङ्ग करने वालों से मुक़ाबला करने के लिये जितनी तु से हो सके तैयारी करो। (ताकि) इससे तुम्हारे और .ख़ुदा के शत्रुओं (अर्थात काफ़िरों) पर तुम्हारा रोब जमे—

وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ اَللّٰهُ
يَعْلَمُهُمْ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ
وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ● وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ● وَاِنْ يُّرِيْدُوْا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ
فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ●
وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ
اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ اِنَّهٗ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ● يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ
وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ● يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ
حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ اِنْ يَّكُنْ
مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ
وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ● اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ

और (नीज़) उनके सिवा दूसरों पर भी, जिनको तुम नहीं जानते । (और) अल्लाह उन (के हाल) से (ख़ूब) वाक़िफ़ है । और ख़ुदा की राह में जो कुछ भी ख़र्च करोगे, वह तुमको पूरा पूरा भर दिया जायगा और (किसी तरह भी) तुम्हारी हक़ तलफ़ी न होगी ० और (ऐ पैग़म्बर!) अगर (काफ़िर) सुलह की तरफ़ झुकें, तो तुम भी उसकी तरफ़ झुको और अल्लाह पर भरोसा रक्खो, क्योंकि वही (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है०और अगर उनका इरादा तुमसे दग़ा करने का(भी)होगा,ताहम(तुम कुछ पर्वाह न करो) अल्लाह तुमको बस करता है । (ऐ पैग़म्बर!) वही(क़ादिर मुतलक़)है, जिसने अपनी इम्दाद से और मुसलमानों से तुमको क़ूवत दी ० और मुसलमानों के दिलों में बाहम उल्फ़त पैदा कर दी । अगर तुम रूए ज़मीन के सारे ख़ज़ाने भी ख़र्च कर डालते, तो भी इनके दिलों में उल्फ़त न पैदा कर सकते । मगर (वह तो) अल्लाह (ही था, जिस) ने इन लोगों में उल्फ़त पैदा करदी । बेशक वह ज़बर्दस्त (और) साहब तदबीर है० ऐ पैग़म्बर ! अल्लाह और मुसलमान, जो तुम्हारे ताबे फ़र्मान हैं, तुमको बस करते हैं ० ऐ पैग़म्बर ! मुसलमानों को (काफ़िरों के साथ) लड़ने पर बरअंगेख़्ता करो कि अगर तुम (मुसलमानों) में से साबित क़दम रहने वाले बीस भी होंगे, (तो वह) दो सौ (काफ़िरों) पर ग़ालिब रहेंगे । और अगर तुम (मुसलमानों) में से (ऐसे) सौ होंगे, तो हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे । क्योंकि यह (काफ़िर) ऐसे लोग हैं, जो (अज्र आक़िबत को) समझते ही नहीं (कि उसके लिये जान देने में मुज़ायक़ा न करें) ० (मुसलमानो !) अब ख़ुदा ने तुम पर से (अपने हुक्म का बोझ) हलका कर दिया—

और इन (काफ़िरों) के अतिरिक्त दूसरों (अर्थात् मुनाफ़िक़ों) पर भी (प्रभाव पड़े) जिन्हें तुम (उनकी बनावट के कारण) जानते (भी) नहीं (कि यह तुम्हारे शत्रु हैं । और) अल्लाह तआला इन (की हालत) से (भली भांति) परिचित है ॥

और (मुसलमानो ! रुपये पैसे ख़र्च करने में संकोच न करना, क्योंकि) ख़ुदा के मार्ग (अर्थात् लड़ाई के सामान की तैयारी) में जो कुछ (भी) तुम ख़र्च करोगे, तुम्हें (उसका पुरस्कार) पूरा (पूरा) पहुँचाया जायगा और तुम पर (किसी प्रकार का) ज़ुल्म नहीं किया जायगा (अर्थात तुम्हारे फल में कमी नहीं की जायगी) ॥

और (ऐ रसूल !) अगर यह (काफ़िर) सन्धि (करने) के लिये (तुम्हारी ओर) झुकें, तो तुम भी सन्धि की ओर झुक जाओ (और बुरी भावनाओं को हृदय में स्थान न दो) और अल्लाह (की व्यक्ति) पर भरोसा रक्खो । वही (काफ़िरों के भी वचनों को) सुनने वाला (और दशा का) जानने वाला है । (और तुम्हें जो आदेश दे रहा है, काफ़िरों के वचनों को सुन कर और स्थिति को देख कर दे रहा है)। और यदि वह तुमको धोखा देना चाहेंगे, तो तुम्हें (उनके छल से बचाने के लिये) अल्लाह तआला यथेष्ट है ॥

(और ऐ रसूल ! वह) वह (ख़ुदा) है, जिसने अपनी मदद (व सहायता) और ईमानदारों (की बहुतायत) से तुमको शक्ति शाली बना दिया और ईमानदारों के दिलों में प्रेम (व एकता) पैदा करदी ॥

(ऐ रसूल !) यदि तुम सारा संसार भी ख़र्च कर डालते, तो (भी) तुम इनके दिलों में प्रेम पैदा न कर सकते । मगर (वह तो) अल्लाह तआला (ही का काम था, जो उस) ने इन लोगों में प्रेम (व एकता) को पैदा कर दिया । निस्सन्देह वह (अत्यन्त महान शक्ति व बल वाला और युक्ति व) बुद्धि वाला है ॥

तो ऐ रसूल ! तुम्हारे लिये अल्लाह और ईमानदारों में से वह लोग, जो तुम्हारे आधीन हैं (बहुत) काफ़ी हैं ॥

ऐ रसूल ! तुम मुसलमानों को जिहाद अर्थात धर्म-युद्ध के लिये उत्साहित करो (और उन्हें सूचित करदो कि) यदि तुम में से (दृढ़ता के साथ लड़ने वाले और कष्टों और आपत्तियों के समय) धैर्य करने वाले बीस (आदमी) भी होंगे, तो वह (अपने से दस हिस्से अधिक अर्थात) दो सौ (आदमियों) पर (लड़ाई में) विजयी रहेंगे । (अतएव यदि इस प्रकार का अवसर उपस्थित हो, तो तुम मुक़ाबला करने वालों से भय न खाना और युद्ध-क्षेत्र से भागना नहीं) ॥

और यदि तुम में से (इस प्रकार के) सौ (आदमी युद्ध में सम्मिलित) होंगे, तो वह काफ़िरों के हज़ार (आदमियों) पर विजयी रहेंगे । इस लिये कि वह (धर्म व मज़हब को तो) कुछ समझते नहीं (जो उन्हें अदृष्ट सहायता की आशा हो, या ईमानदारों की तरह उन की आशा व दुःख का भय उन में हिम्मत, साहस और वीरता पैदा कर सके) ॥ (मुसलमानो ! उपर्युक्त आदेश तुम्हें भार मालूम होता हो, तो लो) अब अल्लाह तआला ने तुम (पर) से (अपने आदेश का भार) हलका कर दिया—

عنکم و علم ان فیکم ضعفا فان یکن منکم مائة
صابرة یغلبوا مائتین و ان یکن منکم الف یغلبوا
الفین باذن الله والله مع الصبرین ۝ ما کان
لنبی ان یکون له اسری حتی یثخن فی
الارض تریدون عرض الدنیا والله یرید الاخرة
والله عزیز حکیم ۝ لولا کتب من الله سبق
لمسکم فیما اخذتم عذاب عظیم ۝ فکلوا مما
غنمتم حللا طیبا واتقوا الله ان الله غفور
رحیم ۝ یایها النبی قل لمن فی ایدیکم من
الاسری ان یعلم الله فی قلوبکم خیرا
یؤتکم خیرا مما اخذ منکم و یغفر لکم والله
غفور رحیم ۝ و ان یریدوا خیانتک فقد خانوا
الله من قبل فامکن منهم والله علیم حکیم

ع

और उसने देखा कि तुम में (अभी) कमज़ोरी है। तो अगर तुम में से साबित क़दम रहने वाले सौ होंगे (तो वह) दो सौ (काफ़िरों) पर ग़ालिब रहेंगे। और अगर तुम में से (ऐसे एक) हज़ार होंगे (तो वह) ख़ुदा के हुक्म से दो हज़ार (काफ़िरों) पर ग़ालिब रहेंगे। और अल्लाह उन लोगों का साथी है, जो (लड़ाई की तकलीफ़ों पर) सब्र करते हैं ० नबी जब तक मुल्क में (काफ़िरों को) अच्छी तरह मार धाड़ न ले, उसके पास क़ैदियों (की भीड़) का रहना मुनासिब नहीं। (मुसल्मानो !) तुम तो माल व मताअ दुनिया के ख़्वाहां हो और अल्लाह (तुमको) आख़िरत (की नेअ्मतें देनी) चाहता है। और अल्लाह ज़बर्दस्त (और) बा तद्बीर है० अगर ख़ुदा (के हाँ) से (तुम्हारे इस क़ुसूर की माफ़ी का) हुक्म तहरीरी पहिले से (नाफ़िज़) न हो चुका होता, तो जो कुछ तुमने (बद्र के क़ैदियों से उनको छोड़ देने के बदले में) लिया है, इस (क़ुसूर की सज़ा) में ज़रूर तुम पर बड़ा ही अज़ाब नाज़िल होता। ० तो (ख़ैर) जो कुछ तुमको ग़नीमत से हाथ लगा है, उसको हलाल तय्यब समझ कर खाओ और अल्लाह (के ग़ुस्से) से डरते रहो। (और उसकी माफ़ी के उम्मीदवार रहो, क्योंकि) अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० (ऐ पैग़म्बर ! बद्र के) क़ैदी जो (हनोज़) तुम मुसल्मानों के क़ब्ज़े में हैं, इनको समझा दो कि अगर अल्लाह देखेगा कि तुम्हारे दिलों में नेकी है, तो जो (माल) तुमसे छीना गया है, उससे बेहतर तुमको अता फ़र्माएगा और तुम्हारे क़ुसूर भी माफ़ करेगा। और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और (ऐ पैग़म्बर !) अगर यह लोग तुम्हारे साथ दग़ा करनी चाहेंगे, तो पहिले भी अल्लाह से दग़ा कर चुके हैं। तो (उस की सज़ा में) उसने इनको (तुम्हारे हाथों में) गिरिफ़्तार करा दिया। और अल्लाह (सब के हाल से) वाक़िफ़ (और) साहिब तद्बीर है ०—

और उसने मालूम कर लिया कि (अब) तुम में निर्बलता आ गई है। इस लिये (तुमको अब यह आज्ञा दी जाती है कि) यदि तुममें से (दृढ़ता के साथ लड़ने वाले और कष्ट व विपत्तियों के समय) धैर्य्य करने वाले सौ हों, तो वह दो सौ (काफ़िरों का मुक़ाबला करें। अल्लाह की कृपा व दया से वह अपने से दुगने) पर ग़ालिब रहेंगे ॥

और यदि तुममें से (इस प्रकार के) एक हज़ार (बहादुर) हों, तो वह अल्लाह की आज्ञा से (काफ़िरों के) दो हज़ार (आदमियों) पर विजयी रहेंगे। और (इसका कारण यह है कि सत्य की पूजा करने वालों, दृढ़ रहने वालों और विपत्तियों के समय) धैर्य्य करने वालों का अल्लाह साथी है॥

(ऐ मुसल्मानो ! बद्र के क़ैदियों के सम्बन्ध में तुम्हारी यह राय कि उन्हें फ़िद्या (क़ैदियों के छुड़ाने में जो माल दिया जाता है, उसे फ़िद्या करते हैं) लेकर छोड़ दिया जाय—बिल्कुल अनुचित थी। क्यों कि) किसी नबी को जब तक कि वह मुल्क में (काफ़िरों को) अच्छी तरह रक्त-पात (करके विजित व) दमन न करले—यह उचित नहीं है कि उसके पास क़ैदी हों (और वह उन्हें बध न करे और उनके बदले कुछ धन लेकर उन्हें जीवित छोड़ दे) ॥(मुसल्मानो !) तुम संसार (की थोड़े दिन की) दौलत के इच्छुक (होते) हो और अल्लाह तआ़ला (तुमको) प्रलय (की दौलत प्रदान करनी) चाहता है। (तुमको चाहिये था कि साँसारिक सम्पत्ति का ख़याल छोड़ कर उन इस्लाम के शत्रुओं अर्थात् क़ैदियों को बध करके प्रलय के पुण्य के अधिकारी बनते, मगर तुमने इसके विरुद्ध किया और फ़िद्या लेकर उन्हें मुक्त कर दिया)। और (इतना न ख़याल किया कि) अल्लाह (बड़ा) ज़बर्दस्त (शक्ति बल वाला और बुद्धि व) हिक्मत वाला है। (वह तुमको काफ़िरों पर विजय प्राप्त करा कर इतनी सम्पत्ति और इतना पुण्य दे सका है कि यह फ़िद्या स्वरूप प्राप्त हुए थोड़े से रुपये उसके आगे कुछ हक़ीक़त नहीं रखते) ॥

(मुसल्मानो ! यह आचरण तो तुमने बहुत अनुचित किया था, मगर ख़ैर हो गई)। अगर पहिले से लौह महफ़ूज़ (ख़ुदा की गुप्त लेखना अर्थात् सुरक्षित पुस्तक) में अल्लाह तआ़ला की ओर से (यह) लिखा न गया होता (कि रसूलुल्लाह के साथ बद्र के धर्म-युद्ध में जो लोग सम्मिलित होंगे, उन पर अल्लाह का दुःख रूपी अज़ाब कभी नहीं आयेगा) तो तुमने जो (फ़िद्या उन क़ैदियों को छोड़ कर) लिया था, उस (के दण्ड) में अवश्य तुम पर (कोई) बड़ा अज़ाब उतरता ॥ इस लिये (अब तो फ़िद्या या) ग़नीमत (का माल काफ़िरों) से (तुमने) जो कुछ प्राप्त किया है, उसको हलाल पवित्र वस्तु जान कर खाओ (पीओ) और (भविष्य के लिये) अल्लाह से भय खाते (और अपने पापों की क्षमा चाहते) रहो। निस्सन्देह अल्लाह तआ़ला क्षमा करने वाला दयालु है ॥ ऐ रसूल ! (बद्र के युद्ध में) जो क़ैदी तुम्हारे हाथों (अर्थात् अधिकार) में (आये) थे (उनमें से जो इस्लाम ले आये हैं) उनसे कह दो (कि) यदि अल्लाह को तुम्हारे हृदय में भलाई मालूम होगी (और वह देखेगा कि तुम इस्लाम और उसके आदेशों पर दृढ़ता-पूर्वक स्थिर रहे) तो जो (माल) तुम से (फ़िद्या में) लिया गया है-उससे श्रेष्ठ (और उससे अधिक) अल्लाह पाक तुमको प्रदान कर देगा। और तुम्हें क्षमा (रूपी सम्पत्ति) से (भी) माला माल करेगा। और अल्लाह (तआ़ला अपने नेक बन्दों के अगले पिछले पापों को) क्षमा करने वाला (और उनके हाल पर) मेहर्बान है ॥ और (ऐ रसूल !) अगर यह लोग तुमसे छल करना चाहें (कि फिर कुफ़्र का रूप धारण करलें, तो तुम कुछ परवाह न करना। अल्लाह तआ़ला इन्हें तुम्हारे हाथों में फिर गिरिफ़्तार करायेगा। जैसा कि) उन्हों ने पहिले भी अल्लाह से छल किया था, तो उसने उनको (तुम्हारे हाथों में) गिरिफ़्तार करा दिया। और अल्लाह तआ़ला (तो सब के हृदयों के भेद) जानने वाला (और) बुद्धिवान है। (यह जब उनके दिल में प्रतिज्ञा भंग व विश्वास घात के भय पायेगा, तो किसी प्रकार उन्हें तुम्हारे अधिकार में दे देगा)—

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا
أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ
يُهَاجِرُوا مَا لَكُم مِّن وَلَايَتِهِم مِّن شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ
وَإِنِ اسْتَنصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ
قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُن
فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَ
هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ
آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم
مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا
مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ
مِنكُمْ ۚ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي

जो लोग ईमान लाये और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रस्ते में अपने जान व माल से जिहाद किये और जिन लोगों ने (मुहाजिरीन को) जगह दी और (उनकी) मदद की, यही लोग एक के वारिस एक। और जो लोग ईमान तो ले आये और हिजरत नहीं की, तो तुम मुसल्मानों को उनकी विरासत से कुछ तअ़ल्लुक़ नहीं। यहां तक कि हिजरत करके तुम में (न) आ मिलें। हां, अगर दीन (के बारे) में तुमसे तालिब मदद हों, तो तुम को उनकी मदद करनी लाज़िम है, मगर उस क़ौम के मुक़ाबिले में नहीं कि तुम में और उनमें (सुलह का) अ़हद (व पैमान) हो। और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसको देख रहा है ० और काफ़िर एक के वारिस एक (उनको एक दूसरे की मीरास लेने दो)। अगर ऐसा न करोगे, तो मुल्क में शोरिश फैल जायगी और बड़ा फ़साद (मचेगा) ० और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रस्ते में जिहाद भी किये और जिन लोगों ने (मुहाजिरीन को) जगह दी और (उन की) मदद की, यही पक्के मुसल्मान हैं। इनके लिये (गुनाहों की) मुआफ़ी है और इज़्ज़त (व आबरू) की रोज़ी ० और जो लोग बाद को ईमान लाये और उन्होंने हिजरत की और तुम मुसल्मानों के साथ होकर जिहाद भी किये, तो वह तुम ही में दाख़िल हैं। और रिश्तेदार, अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ (ग़ैर आदमियों की निस्बत) एक दूसरे (की मीरास) के ज़ियादा हक़दार हैं।

(मुसल्मानो ! तुममें से) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने हिजरत की (घर छोड़ा और अल्लाह के मार्ग में अपनी जान व सम्पत्ति से जिहाद किया (अर्थात् मुहाजिरीन–देश त्यागने वाले) और जिन लोगों ने (इन देश त्यागने वालों को ठहरने के लिये अपने पास) जगह दी और (हर प्रकार उनकी) सहायता की (अर्थात् अन्सार–सहायता देने वाले) यह सब (अर्थात् मुहाजिरीन व अन्सार आपस में) एक दूसरे के सहायक (व मददगार और आपस में एक दूसरे के प्रिय और उत्तराधिकारी की तरह) हैं। (उन्हें सहायता व उत्तराधिकार या किसी और विषय में काफ़िरों से कुछ सम्बन्ध नहीं। यद्यपि काफ़िर इनके कैसे ही निकट सम्बन्धी क्यों न हों) ॥

और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने हिजरत (देश त्यागन) नहीं किया (और ख़ुदा व रसूल के आदेश के मुक़ाबले में अपने सम्बन्धियों और अपने देश को प्रिय समझा) तो तुम (मुसल्मानों) को जब तक वह हिजरत (देश त्यागन) न करें, उनकी सहायता (बपौती) से कुछ सम्बन्ध नहीं। और (हां) यदि वह धर्म (के विषय) में तुमसे सहायता (व मदद) के प्रार्थी हों, तो (उस समय) तुम्हारा (उनकी) सहायता (करना) कर्तव्य है। (उस समय उनके साथ मिल कर धर्म के शत्रुओं के मुक़ाबले में तुम अवश्य जाना)। सिवा उन लोगों के मुक़ाबले के कि उनके और तुम्हारे परस्पर (सन्धि का) समझौता (हो चुका है और देखो ! जो कुछ करो, सोच समझ कर करना। क्योंकि) अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को देखने वाला है ॥

और जो लोग काफ़िर हैं (वह यद्यपि परस्पर एक दूसरे के विरोधी हैं, परन्तु तुमको कष्ट पहुँचाने में एक दूसरे से मिल गये हैं और) एक दूसरे के मित्र (बन गये) हैं। (इस लिये ऐ मुसल्मानो !) यदि तुमने (आपस में एक दूसरे की) मदद (व सहायता) न की, तो देश में घोर उपद्रव व झगड़ा हो जायगा ॥

और जो लोग (अव्वल अव्वल) ईमान लाये और उन्होंने हिजरत की और ख़ुदा की राह में जिहाद किया (अर्थात् मुहाजिरीन) और जिन लोगों ने (मुहाजिरीन को अपने पास ठहरने के लिये) जगह दी और (उनकी हर प्रकार) सहायता की (अर्थात् अन्सार) यह सब (के सब) सच्चे मुसल्मान हैं। उनके लिये क्षमा (व कृपा) और सम्मान की जीविका (संसार में भी) है (और प्रलय में भी। क्योंकि उन्होंने ईमान लाने में पहिल की और इस्लाम के धार्मिक कर्तव्य पालन करने में पूरी दृढ़ता से काम लिया) ॥

और (ऐ सच्चे ईमानदारो !) जो लोग (तुम्हारे) पश्चात ईमान लाये और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ (मिल कर) उन्होंने जिहाद भी किया, तो वह (लोग भी) तुम ही में शामिल हैं ॥

और (इनमें जो लोग आपस में या तुम्हारे) रिश्तेदार (हैं, वह) अल्लाह की आज्ञानुसार (ग़ैर ईमानदारों की अपेक्षा) आपस में एक दूसरे (की या तुम्हारी छोड़ी हुई सम्पत्ति के लेने) के अधिक अधिकारी हैं। (यद्यपि बड़प्पन और पद में इनसे वह लोग बढ़े हुए हैं, जो इनसे पहिले ईमान लाये और तुम्हारे सम्बन्धी * नहीं हैं)। निश्चय रूप से अल्लाह हर वस्तु से अभिज्ञ है ॥

* टीका—जब मुसल्मान अपने घर व अपने देश का त्यागन करके मदीने में जा रहे, तो रसूलुल्लाह ने मुहाजिरीन और अन्सार में से हर एक को आपस में एक दूसरे का भाई बना दिया। और उनमें बपौती के बटवारे का सिलसिला भी जारी कर दिया, ताकि मुहाजिरीन को परदेस में किसी प्रकार का कष्ट न हो। जब इस्लाम ने उन्नति की और मुहाजिरीन अपने पैरों पर आप ही खड़े हो गये और अन्सार की सहायता की उन्हें आवश्यकता न रही, तो मुहाजिरीन व अन्सार में बपौती के बटवारे को रीत बन्द हो गई और इस आयत के अनुसार बपौती का नियम केवल सम्बन्धियों में सीमित कर दिया गया।—हसननिज़ामी॥

बेशक अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है, (अज़ाँ जुम्ला मीरास की मस्लहतों से भी) ०

सूरत—तौबा

मदनी यानी मदीने में नाज़िल हुई और इसमें १२९ आयतें और १६ रुकूअ हैं ॥

जिन मुश्रिकों के साथ तुम (मुसल्मानों) ने (सुलह का) अहद (व पैमान) कर रक्खा था, (अब) अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से उनको साफ़ जवाब है ० तो (ऐ मुश्रिको ! अम्न आम के) चार महीने (ज़ीक़ाद, ज़िल्हिज, मुहर्रम, रजब) मुल्क में चलो फिरो और जाने रहो कि तुम अल्लाह को (किसी तरह भी) हरा नहीं सकोगे और यह कि (आख़िरकार) अल्लाह काफ़िरों को (मुसल्मानों के हाथ से दुनिया में) रुस्वा करने वाला है ० और हज्ज अकबर के दिन अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से लोगों को (आगाह करने के लिये आम) मुनादी की जाती है कि अल्लाह और उसका रसूल मुश्रिकीन से दस्त बर्दार हैं। पस (ऐ मुश्रिको !) अगर तुम तौबा करो, तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। और अगर (अब भी ख़ुदा व रसूल से) फिरे रहो, तो जान रक्खो कि तुम अल्लाह को (किसी तरह) हरा नहीं सकोगे। और (ऐ पैग़म्बर !) काफ़िरों को अज़ाब दर्दनाक की ख़ुश ख़बरी सुनादो ० हाँ मुश्रिकीन में से जिनके साथ तुम (मुसल्मानों) ने (सुलह का) अहद (व पैमान) कर रक्खा था, फिर उन्होंने (ईफ़ाए अहद में) तुम्हारे साथ किसी तरह की कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबिले में किसी की मदद की, वह मुस्तस्ना हैं। तो उनके साथ जो अहद (व पैमान) है, उसे उस मुद्दत तक, जो उनके साथ ठैरी थी, पूरा करो। क्योंकि अल्लाह उन लोगों को, जो (बद अहदी से) बचते हैं, दोस्त रखता है०—

كِتٰبِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ مِائَةٌ وَتِسْعٌ وَعِشْرُوْنَ

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عَاهَدْتُّمْ
مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ
اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ
وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَاَذَانٌ مِّنَ
اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ
اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَرَسُوْلُهٗ فَاِنْ
تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ
غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ
اَلِيْمٍ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ عَاهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ
يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا
فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

सूरत-तौबा *

मदनी अर्थात मदीने में उतरी। इसमें १२९ आयतें और १६ रुकूअ हैं ॥

* टीका—क़ुरआन की आयतें, जो वही अर्थात् ख़ुदाई सन्देश के रूप में समय समय पर उतरीं, उनकी सूरतों का क्रम रसूलुल्लाह की आज्ञानुसार किया जाता था। सूरत तौबा क़ुरआन की अन्तिम सूरतों में से है। इसके स्थायी या किसी सूरत का भाग होने के विषय में कोई हिदायत रसूलुल्लाह से नहीं आई। जब क़ुरआन के संग्रह कर्ता अफ़्फ़ान के बेटे हज़रत उस्मान ने क़ुरआन को संग्रह करने का इरादा किया और इस सूरत की बारी आई, तो सहाबा के दो दल हो गये। एक दल ने इसे स्थायी सूरत कहा। दूसरे दल ने कहा कि यह सूरत–सूरत अन्फ़ाल ही का एक भाग है। स्वयं कोई स्थायी सूरत नहीं है। हज़रत उस्मान ने विषय की विशेषता और उपर्युक्त मत भेद को दृष्टि में रखते हुये इस सूरत की आयतों को सूरत अन्फ़ाल से अलग तो कर दिया। परन्तु बिस्मिल्लाह जो हर स्थायी सूरत के आरम्भ में लिखी जाती है, इस सूरत के आरम्भ में उसे नहीं लिखा। जिस से कि यह न तो स्थायी सूरत मालूम हो और न सूरत अन्फ़ाल का भाग:—हसन निज़ामी ॥

(ऐ मुसल्मानो !) जिन (प्रतिज्ञा भंग करने वाले) मुश्रिकों से तुमने (संधि की) प्रतिज्ञा कर रक्खी थी (अब) अल्लाह और उसके रसूल की ओर से उन्हें (साफ़) जवाब (दिया जाता) है। (अर्थात् उन्हें जताया जाता है कि अब मुसल्मानों और उनके बीच में किसी प्रकार का समझौता बाक़ी नहीं) ॥

तो (ऐ मुश्रिको !) तुम चार महीने इस देश में (और) चल फिर लो। (इसके पश्चात फिर तुम हो और हम)। और (इस अवधि में जो कुछ तुमसे हो सके, करलो। मगर) यह (अच्छी तरह) समझ लो कि तुम अल्लाह तआला को (किसी प्रकार) आधीन नहीं कर सकते और (फल देने वाला) अल्लाह तआला (तुम जैसे प्रतिज्ञा भंग करने वालों को और) काफ़िरों को ज़लील (व ख़्वार ही) करेगा ॥

और (आज) हज्ज अकबर के दिन अल्लाह और उसके रसूल की ओर से (सब) लोगों को सूचना (दी जाती) है कि ख़ुदा और उसका रसूल मुश्रिकों (की संधि) से (बिल्कुल) अलग हो चुका है। बस (ऐ मुश्रिको !) अगर तुम (अपने कुफ़्र व शिर्क से) बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे पक्ष में अच्छा है। और अगर (अब भी तुम ख़ुदा व रसूल से) फिरे रहो, तो (फिर अच्छी तरह) समझलो कि तुम अल्लाह तआला को (अपनी इस हठ धर्मी से) आधीन नहीं कर सकते (वह जब चाहेगा, तुम्हारी गर्दन दबा लेगा) और (तुम्हारे किये का तुम्हें मज़ा चखा देगा। ऐ रसूल !) इन काफ़िरों (और मुश्रिकों) को तुम (एक) कष्ट दायक अज़ाब का समाचार सुनादो ॥

मगर (हाँ) जिन मुश्रिकों से तुम (मुसल्मानों) ने (संधि की) प्रतिज्ञा की, फिर उन्होंने (अपनी प्रतिज्ञा निभाने में पूरे उद्योग से काम लिया और) कोई त्रुटि नहीं की, और न तुम्हारे मुक़ाबले में (तुम्हारे) किसी (शत्रु) की मदद की, तो तुम (उन्हें इस दस्त बरदारी से मुक्त करदो और) उनकी प्रतिज्ञा उनकी (संधि की नियत) अवधि तक (निबाहो और) पूरा करो (और प्रतिज्ञा से विमुख न हो)। निस्सन्देह अल्लाह तआला उन लोगों को, जो (प्रतिज्ञा भंग करने से) बचते हैं–पसन्द करता है ॥

الْمُتَّقِينَ ۝ فَإِذَا انسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا
الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ
وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ فَإِن
تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ
اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ
مَأْمَنَهُ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ ۝ كَيْفَ १
يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ اللَّهِ وَعِندَ
رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُتَّقِينَ ۝ كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا
يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً يُرْضُونَكُم بِأَفْوَاهِهِمْ
وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ۝ اشْتَرَوْا

फिर जब (अम्न व) अदब के महीने निकल जाएँ, तो मुश्रिकीन को जहाँ पाओ, क़त्ल करो और उनको गिरिफ़्तार करो और उनका मुहासिरा करो और हर घाट की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर अगर वह लोग तौबा करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें, तो उनका रस्ता छोड़ दो (यानी उनसे किसी तरह का तअ़र्रुज़ न करो)० क्योंकि अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है० और (ऐ पैग़म्बर !) मुश्रिकीन में से अगर कोई शख़्स तुमसे पनाह का ख़्वास्तगार हो, तो (उसको) पनाह दो, यहाँ तक कि वह (इत्मिनान से) कलाम ख़ुदा को सुन (समझ) ले। फिर उसको उसके अम्न की जगह वापिस पहुँचा दो। यह (रिआयत उन लोगों के हक़ में) इस वजह से (करनी ज़रूर) है कि यह लोग (इस्लाम की हक़ीक़त से) वाक़िफ़ नहीं० अल्लाह के नज़दीक और उसके रसूल के नज़दीक मुश्रिकीन का अहद (व पैमान सुलह) क्यों कर मोतबर हो (कि उन्होंने अहद शिकनी करके आप अपनी बेएतिबारी कर ली)। मगर जिन लोगों के साथ तुम (मुसलमानों)ने मस्जिद हराम (यानी ख़ानए काबा) के क़रीब (हुदैबिया में सुलह का) अहद (व पैमान) किया था (और उन्होंने अब तक उसको नहीं तोड़ा)। तो जब तक वह लोग तुमसे सीधे रहें, तुम भी उनसे सीधे रहो। क्योंकि अल्लाह उन लोगों को, जो (बद अहदी से) बचते हैं, दोस्त रखता है० (मुश्रिकीन का अहद) कैसे (मोतबर हो सक्ता है) और (उन का हाल यह है कि) अगर (यह लोग) तुम (मुसलमानों) पर ग़लबा पा जाएँ, तो तुम्हारे बारे में न क़राबत का पास मलहूज़ रक्खें और न अहद (व पैमान) का। अपनी ज़बानी बातों से तो तुमको रज़ामन्द कर देते हैं और उनके दिल (हैं कि उन बातों से) इन्कार रखते हैं। और उनमें अक्सर (ऐसे हैं कि बात कहते हैं और आप ही उस से) निकल भागते हैं०—

फिर जब (चारों) आदरनीय महीने पूरे हो जायँ, तो (इन प्रतिज्ञा से फिरने वाले) मुश्रिकों को जहाँ इन्हें पाओ, मार डालो। और उनको गिरिफ़्तार कर लो और उन्हें (चारों ओर से) घेर लो और (उन्हें हानि पहुँचाने के लिये) उनकी हर घात की जगह बैठे रहो। बस अगर यह (दुःख उठाकर अपनी करतूतों से) बाज़ आ जायँ और (धार्मिक कृत्य नियम पूर्वक करते रहें, जैसे) नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें, तो तुम (भी ऐ मुसल्मानो !) इनका मार्ग छोड़ दो। (और इन्हें किसी प्रकार का कष्ट न दो)। निस्सन्देह अल्लाह तआ़ला (हर तौबा करने वाले की तौबा स्वीकार करने वाला और उसके पापों को) क्षमा करने वाला (और उसके हाल पर) दयालु है॥

और (ऐ रसूल !) यदि (लड़ाई के समय इन) मुश्रिकों में से कोई (इस्लाम धर्म की ओर आकर्षित होकर) तुमसे शरण माँगे, तो तुम उसे शरण दो (और उसे अल्लाह का सन्देश सुनाओ)। वह जब अल्लाह का सन्देश सुनले (तो) फिर उसको उसके सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो। यह (रिआयत उनके लिये) इस कारण (उचित है) कि यह लोग (अभी इस्लाम धर्म की सत्यता से) अनभिज्ञ हैं॥

(भला) अल्लाह के समीप और उसके रसूल के समीप (अब इन) मुश्रिकों की प्रतिज्ञा कैसे (विश्वास योग्य) हो (सकती है ? जब कि उन्होंने बार २ प्रतिज्ञा भंग करके अपना विश्वास खो दिया)। मगर (हाँ इनमें से वह लोग) जिनसे (हुदैबिया की लड़ाई के अवसर पर) तुम (मुसल्मानों) ने (सन्धि की) प्रतिज्ञा आदरणीय मसजिद (अर्थात् काबे के स्थान) के निकट की थी (और जिन्हों ने उस समय तक उस समझौते का ध्यान रक्खा, वह अभी अवश्य बध करने योग्य नहीं हैं)। तो जब तक वह तुमसे सीधे (सीधे) रहें, तुम भी उनसे सीधे रहो कि अल्लाह तआ़ला (प्रतिज्ञा भंग व विश्वास घात से) बचने वालों को पसन्द करता है॥

(उनकी प्रतिज्ञा विश्वास योग्य हो जाय—भला यह कैसे उचित है। और) ऐसी दशा में (जबकि उनकी प्रतिज्ञा भंग व अपमान की नौबत यहाँ तक पहुँच चुकी हो) कि यदि यह (किसी प्रकार) तुम (मुसल्मानों) पर विजित हो जायँ, तो (फिर) तुम में न परस्पर का लिहाज़ (मान) रक्खें और न (अपने) बचनों का। यह तो (बस) अपनी ज़बानी बातों (और प्रतिज्ञाओं) से तुमको प्रसन्न कर देते हैं। और इनके दिल (इन बातों के मानने से) इन्कार करते हैं। (अर्थात् इनके दिल में कुछ होता है और ज़बान पर कुछ)। और इनमें से बहुधा लोग (प्रतिज्ञा भंग करने वाले व निर्लज्ज, पापी व) दुराचारी हैं॥

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ اِنَّهُمْ
سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا
وَّلَا ذِمَّةً وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝ فَاِنْ تَابُوْا
وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ
فِي الدِّيْنِ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ
نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ
دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ
لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ۝ اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا
اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ اَتَخْشَوْنَهُمْ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ
وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ
قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ

यह लोग (दुनिया के लालच में आकर) ख़ुदा की आयतों के बदले में थोड़ा सा (दुनियावी) फ़ायदा हासिल करके लगे ख़ुदा के रस्ते से (लोगों को) रोकने। (क्या ही) बुरी हरकतें हैं, जो यह लोग कर रहे हैं ० किसी मुसल्मान के बारे में न तो क़राबत का पास मलहूज़ रखते हैं और न अहद (व पैमान) का। और यही लोग बर सरे ज़ियादती हैं० फिर (ऐ मुसल्मानों!) अगर यह लोग (कुफ़ व शिर्क से) तौबा करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें, तो तुम्हारे दीनी भाई हैं। और जो लोग समझदार हैं, उनके लिये हम अपनी आयतों को तफ़सील के साथ बयान फ़र्माते हैं ० और अगर यह लोग अहद किये पीछे अपनी क़स्में को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में तानाज़नी करें, तो (इन) कुफ़ के पेशवाओं की क़स्में कुछ भी (एतिबार के क़ाबिल) नहीं। इनसे (ख़ूब) लड़ो, ताकि यह लोग (अपनी शरारतों से) बाज़ आ जाएँ ० (मुसल्मानो !) तुम उन लोगों से (दिल खोल कर) क्यों न लड़ो, जिन्होंने अपनी क़स्मों को तोड़ डाला और रसूल के निकाल देने का इरादा किया और तुमसे (छेड़ ख़ानी भी) अव्वल इन्हीं ही ने शुरू की। क्या तुम इन लोगों से डरते हो। पस अगर तुम ईमान रखते हो, तो (इन से) कहीं बढ़ कर ख़ुदा हक़ रखता है कि तुम उस से डरो ० इन लोगों से (बे तअम्मुल) लड़ो, ख़ुदा तुम्हारे ही हाथों इनको सज़ा देगा और इनको रुस्वा करेगा और इन पर तुमको फ़तह देगा और मुसल्मानों के गिरोह के कलेजों को ठंडा करेगा ० और इनके दिलों में—जो (काफ़िरों की तरफ़ से) ग़ुस्सा (भरा हुआ) है, उस (की ख़लिश) को भी दूर कर देगा—

(यह ऐसे मूर्ख लोग हैं कि) इन्होंने (लोभ में आकर) आयतों (व ख़ुदा के आदेशों पर ईमान लाने)के स्थान में थोड़ा सा (सांसारिक) लाभ प्राप्त किया। (और) फिर ख़ुदा के (बताये हुये सीधे) मार्ग (पर चलने) से रुक * गये। वास्तविक बात यह है कि जो काम यह कर रहे हैं, वह (सारे के सारे) बुरे हैं॥

* टीका—मुश्रिकों में कुछ लोग ऐसे अधम थे कि अपने आप तो इस्लाम के आदेशों पर क्या ईमान लाते-जो लोग ईमान लाने के लिये तय्यार भी होते, तो उन्हें नाना प्रकार के लालच देते। कच्ची बुद्धि के मनुष्य उनके लालच में आ जाते और उनके धोखे के जाल में फँस कर ईमान की सम्पत्ति से वञ्चित रहते। इस आयत में उन्हीं मूर्खों का वर्णन हैः—हसन निज़ामी॥

(यह तो ईमानदारों की जान के शत्रु हैं। जब इन्हें अवसर मिल जाता है, तो फिर) यह किसी ईमानदार के विषय में सम्बन्ध या प्रतिज्ञा की रिआयत नहीं करते। और (जहां तक बन पड़ता है, उसे हानि पहुंचाने की चेष्टा में कमी नहीं छोड़ते)। यही हैं (हर एक बात में) सीमा से बढ़ जाने वाले॥

सो यदि यह (अपनी करतूतों से) बाज़ आ जायँ और (अल्लाह के आदेशों को अमल करने योग्य जानें, जैसे) नमाज़ (को नमाज़ की तरह) पढ़ें और ज़कात (को शुद्ध हृदय के साथ) अदा करें, तो (मुसल्मानो ! यह) तुम्हारे धर्म के बन्धु हैं। और हम समझदार लोगों के लिये (अपनी समस्त) आयतों (और आदेशों) को (ख़ूब) खाल (खोल) कर वर्णन कर देते हैं॥

और यदि यह (वफ़ादारी व समझौते की) प्रतिज्ञा करने के बाद अपनी शपथों (और अपनी प्रतिज्ञाओं) को तोड़ डालें और तुम्हारे धर्म पर कटाक्ष करें (और तरह तरह के दोष निकालें) तो तुम (इन) कुफ़ के नेताओं से (जहां तक बन पड़े ख़ूब) लड़ो कि इनकी शपथें (और इनकी प्रतिज्ञायें तो रिआयत और विश्वास के योग्य) हैं ही नहीं। (अतएव तुम इनकी लेश मात्र रिआयत भी न करना और जितना इन्हें दंड दे सको, देना) जिस से कि यह (दंड पाकर अपनी करतूतों से) बाज़ आ जायँ॥

(मुसल्मानो!) क्या तुम ऐसे(नीच) लोगों से न लड़ोगे, जिन्होंने अपनी शपथों को तोड़ दिया(अपनी प्रतिज्ञाओं का पास व लिहाज़ न किया) और जिन्हों ने रसूल को (अपने देश मक्के से) निकाल देने की तजवीज़ की। और तुमसे (युद्ध करने और प्रतिज्ञा भंग करने में) पहिले उन्हों ने ही पहिल की। क्या तुम इनसे (या इनकी अधिक संख्या और अस्त्र शस्त्र की अधिकता से) भय खाते हो ? (तो) यदि तुम ईमानदार हो, तो (अच्छी तरह समझलो कि उनसे युद्ध करने का आदेश तुमको) ख़ुदा (दे रहा है। वह उनसे कहीं) अधिक (बलवान और साज़ व सामान रखता है। इस लिये वह अधिक) अधिकारी है (इस बात का) कि तुम उससे डरो (और उसकी अवज्ञा न करो)॥

इन काफ़िरों से क्या डरते हो। इन (काफ़िरों) से लड़ो। अल्लाह तआला तुम्हारे हाथों इन्हें (दारुण) दुःख देगा और (लोक और परलोक में) इन्हें पतित करेगा और उनके मुक़ाबले में तुम्हारी सहायता करेगा। (और तुम्हें विजय देगा) और (इस प्रकार सहस्रों) ईमानदार लोगों के कलेजों में ठंढक डाल देगा। और उनके दिलों (में जो प्रतिकार) की (जलन और) खौलन (है, उस) को दूर कर देगा—

وَيَتُوبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۞ اَمْ
حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
جَاهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ
لَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۗ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۞ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ
اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۗ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ ۚ وَفِى النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۞ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ
مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى
الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ
يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۞ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ
وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۞ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और अल्लाह जिसकी चाहे, तौबा क़बूल कर ले। और अल्लाह (सबके हाल से) वाक़िफ़ (और) हिकमत वाला है ० (मुसलमानो !) क्या तुमने ऐसा समझ रक्खा है कि (सस्ते) छूट जाओगे और अभी अल्लाह ने उन लोगों को (अच्छी तरह ठोक बजाकर) देखा तक नहीं, जो तुममें से जिहाद करते और अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों को छोड़ कर किसी को अपना दोस्त नहीं बनाते। और जो कुछ भी तुम लोग कर रहे हो, अल्लाह को उसकी (सब) ख़बर है ० मुश्रिकों को कोई हक़ नहीं कि (अपने जैसे काफ़िरों से) अल्लाह की मसजिदें आबाद रक्खें और (शिर्क के अफ़आल व अक़वाल से) अपने ऊपर कुफ़्र की गवाही भी देते जायँ। यही लोग हैं, जिनका किया धरा सब अकारत हुआ और यहीं लोग हमेशा (हमेशा) दोज़ख़ में रहने वाले हैं ० (हक़ीक़त में तो) अल्लाह की मसजिदों को वही आबाद रखता है, जो अल्लाह और रोज़ आख़िरत पर ईमान लाया और नमाज़ पढ़ता और ज़कात देता रहा। और जिसने ख़ुदा के सिवा किसी का डर न माना, तो ऐसे लोगों की निस्बत तवक़्क़ो की जा सकती है कि (आख़िरकार) उन लोगों में (जा शामिल) होंगे, जो मनज़िल मक़्सूद पर पहुँचे ० क्या तुम लोगों ने हाजियों के पानी पिलाने और (अदब व) हुर्मत वाली मसजिद यानी (ख़ानए काबा के) आबाद रखने को उस शख़्स (की ख़िदमतों) जैसा समझ लिया, जो अल्लाह और रोज़ आख़िरत पर ईमान लाया और अल्लाह के रस्ते में जिहाद करता है। अल्लाह के नज़दीक तो यह (लोग एक दूसरे के) बराबर नहीं और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह रास्त नहीं दिखाया करता ० जो लोग ईमान लाये—

और (इन काफ़िरों में जो लोग कुफ़्र व शिर्क से तौबा करेंगे, उनमें से) अल्लाह जिसकी तौबा चाहेगा, स्वीकार कर लेगा। और अल्लाह तआला बुद्धिवान व ज्ञानवान है। (वह अच्छी तरह जानता है कि कौन शुद्ध हृदय के साथ तौबा करता है और कौन अपनी दिखावटी तौबा से मुसल्मानों को धोखा देना चाहता है) ॥

(मुसल्मानो !) क्या तुमने यह समझ रक्खा था कि तुम (यूँ ही) छोड़ दिये जाओगे ? (तुम्हें इन काफ़िरों से जिहाद करना न पड़ेगा ?) यद्यपि (अभी) अल्लाह तआला ने उन लोगों को परखा (तक) भी नहीं, जिन्होंने तुममें से जिहाद किया हो। और अल्लाह और उसके रसूल को छोड़ कर (किसी बुत आदि को अपना) हार्दिक मित्र न बनाया हो और (अपने बड़े बड़े कर्मों को दिखा कर अपने आप को केवल उसी का सेवक, उसी का पूजक, उसी का आधीन और उसी का आज्ञाकारी सिद्ध कर दिया हो)। जो कुछ तुम्हारे कर्म हैं (प्रगट हैं) अल्लाह तआला को उन (सब) की ख़बर है। (यदि तुम्हारे दिल में ख़ुदा का प्रेम व श्रद्धा है, तो उसके सच्चे बन्दे बन कर दिखाओ। और यह जभी होगा, जब तुम जिहाद करोगे और ख़ुदा के अतिरिक्त और सब से मुंह मोड़ोगे और ख़ुदा के हर प्रकार के आदेश के आगे स्वीकृत स्वरूप मस्तक झुका दोगे) ॥

(और देखो ! आदरणीय मस्जिद अर्थात् काबे का स्थान हो या कोई और मस्जिद हो, वह केवल एक ख़ुदा की पूजा करने वालों के लिये एक विशेष पूजा-स्थान है)। मुश्रिकों (और काफ़िरों) को यह अधिकार (प्राप्त) नहीं कि वह अल्लाह की मस्जिदों को आबाद रक्खें। (अर्थात् उनकी मरम्मत आदि की चिन्ता करें या बिना आज्ञा उनमें प्रवेश करें और फिर) ऐसी दशा में कि (यदि धर्म व मज़हब के विषय में उन अनपढ़ लोगों से पूछा जाय, तो वह अपने) कुफ़्र (व शिर्क) की (स्वयं ही) अपने ऊपर गवाही देते हों। (और मुसल्मानो ! यह काफ़िर लोग, जो काबे के स्थान को परिक्रमा करते या हाजियों को पानी पिलाते हैं—इससे इन्हें कुछ लाभ नहीं पहुंच सकता। क्योंकि) यह लोग (वह हैं कि) इन के (सारे) कर्म (जब तक वह अपने कुफ़्र व शिर्क से बाज़ न आयें, बिल्कुल व्यर्थ और) अकार्य हैं। और (इनमें से जो लोग कुफ़्र की दशा पर मरेंगे) वह (नर्क की) आग ही में सदा (जलते) रहेंगे ॥

अल्लाह को मस्जिदों को तो वही आबाद रख सका है, जो अल्लाह और प्रलय के दिन पर ईमान ले आया। (और जिसने अल्लाह की शरीअत के हर फ़र्ज़ को नियमानुसार अदा किया। जैसे) नमाज़ (नमाज़ की तरह) पढ़ी और (शुद्ध हृदय के साथ) ज़कात दी और अल्लाह तआला के सिवा किसी का भय न माना। तो (इस प्रकार के जितने आदमी हों, सबके सम्बध में पूर्ण) आशा है कि वह (अपने हार्दिक मनोरथ अर्थात् स्वर्ग को) मार्ग पा लेने वालों में से हो जायँगे ॥

(ऐ मुश्रिको !) क्या तुमने हाजियों के पानी पिलाने और (कुफ़्र की दशा में) माननीय मस्जिद (अर्थात् काबे के स्थान) का ख़िदमत करने को उस (संयमी मनुष्य के कर्मों) के बराबर (बल्कि उससे श्रेष्ठ ख़याल) कर लिया, जो अल्लाह और प्रलय के दिन पर ईमान ले आया और (जिसने) ख़ुदा के मार्ग में जिहाद किया। (तुम चाहे कुछ भी समझो)—अल्लाह के समीप तो (तुम और वह) बराबर हो नहीं सकते। और अल्लाह तआला तो ज़ालिम लोगों को (नेक) हिदायत (और बड़ाई) देता नहीं ॥

(मुश्रिको ! कान खोल कर सुनो कि) जो लोग (ख़ुदा और उसके रसूल पर) ईमान लाये—

और (दीन के लिये) उन्होंने हिजरत की और अपने जान व माल से अल्लाह के रस्ते में जिहाद किये, (यह लोग) अल्लाह के हाँ दर्जे में कहीं बढ़ कर हैं। और यही हैं, जो मनज़िल मक़्सूद को पहुँचने वाले हैं ० इनका पर्वरदिगार इनको अपनी मेहर्बानी और रज़ामन्दी और ऐसे बाग़ों (में रहने) की .खुश ख़बरी देता है, जिनमें इनको दायमी आसायश मिलेगी ० (और यह लोग) उन बाग़ों में सदा को (और) हमेशा (हमेशा) रहेंगे। बेशक अल्लाह के हाँ सवाब (का) बड़ा (ज़ख़ीरा मौजूद) है ० मुसल्मानो ! अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुक़ाबिले में कुफ़्र को अज़ीज़ रक्खें, तो उनको (अपना) रफ़ीक़ न बनाओ और जो तुम में से ऐसे बाप भाइयों के साथ दोस्ती (का बर्ताव) रक्खेगा, तो यही लोग (हैं, जो .खुदा के नज़्दीक) नाफ़र्मान हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! मुसल्मानों को) समझा दो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे कुम्बेदार और माल, जो तुमने कमाये हैं और सौदागरी, जिसके मन्दा पड़ जाने का तुमको अन्देशा हो और मकानात, जिन (में रहने) को तुम्हारा जी चाहता है, (अगर यह चीजें) अल्लाह और उसके रसूल और अल्लाह के रस्ते में जिहाद करने से तुमको ज़ियादा अज़ीज़ हों, तो (ज़रा) सब्र करो। यहां तक कि जो कुछ .खुदा को करना है, वह (तुम्हारे सामने) ला मौजूद करे। और अल्लाह उन लोगों को, जो (उसके हुक्म से) सरताबी करें, हिदायत नहीं दिया करता ०—

وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنفُسِهِمْ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِندَ اللَّهِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْفَائِزُونَ ● يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُم بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ
وَجَنَّاتٍ لَّهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ ● خَالِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عِندَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ● يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ
إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم
مِّنكُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ● قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ
وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ
وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ
تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ
إِلَيْكُم مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا
حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ●

और उन्होंने हिजरत (स्वदेश त्यागन) की और .खुदा के मार्ग में अपने जान व माल से जिहाद किया (अर्थात् लड़ाई के लिये माल दिया और स्वयं भी लड़ाई में शरीक हुये। यह लोग) अल्लाह के समीप (सारी दुनिया के काफ़िरों से) मरतबे (और बड़ाई में) बढ़ चढ़ कर हैं। और (अपने दिल की) मुराद पाने वाले यही हैं ॥

इनका पालन कर्त्ता इन्हें अपनी कृपा व प्रसन्नता और ऐसे बाग़ों का मंगल समाचार देता है, जिनमें उनको सदैव का स्थायी सुख मिलेगा और जहाँ (वह) सदैव २ रहेंगे। निस्सन्देह (ऐसे कर्मों का) अल्लाह के यहाँ बड़ा फल (मिलता *) है ॥

* टीका—रसूलुल्लाह के चचा अब्बास अपने कुफ़्र की दशा में बद्र के क़ैदियों के साथ गिरिफ़्तार होकर आये, तो हज़रत अली ने उन्हें बहुत कुछ शर्म दिलाई और कहा कि तुमने अपने भतीजे और .खुदा के रसूल से लड़ाई की और सम्बन्ध विच्छेद किया। अब्बास ने कहा कि तुम मुसल्मान ! जब देखते हो हमारी बुराइयाँ ही देखते हो। यदि कभी हमारे गुणों पर ध्यान दो, तो तुम्हें मालूम हो जाय कि पद में हम तुमसे कहीं अधिक हैं। हम हाजियों को पानी पिलाते हैं और काबे के स्थान की सेवा में लगे रहते हैं। उपर्युक्त पाँचों आयतें काफ़िरों के अभिमान व गर्व के खंडन स्वरूप हैं और हज़रत अली के समर्थन में उतरी हैं। इनमें काफ़िरों को जवाब दिया गया है कि तुम्हारी कोई सेवा जब तक तुम ईमान न लाओ—एक ईमानदार, देश त्यागी व .खुदा के मार्ग में काफ़िरों से लड़ने वाले की सेवा के मुक़ाबले में कुछ भी महत्त्व नहीं रखती। एक ईमानदार तुम से अत्याधिक श्रेष्ठ और पुरस्कार व पुण्य का अधिकारी है:—हसन निज़ामी ॥

ऐ ईमानदारो ! अपने बाप और भाइयों को यदि वह ईमान के मुक़ाबिले में कुफ़्र को पसन्द करें, तो (तुम उन्हें अपना प्रिय व) साथी न बनाओ। और (उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध न रक्खो)। जो तुम में से उनके साथ (ऐसी दशा में) मित्रता (व दोस्ती का बर्ताव) करे, तो (समझ लो कि वह हृदय का निर्बल, बुद्धि का कच्चा और ईमान का कमज़ोर है और जान लो कि) यही वह (लोग) हैं, जो (.खुदा की अवज्ञा करके अपनी जानों पर) ज़ुल्म करने वाले (और अपने ईमान को बरबाद करने वाले) हैं ॥

(ऐ रसूल ! इनको) समझा दो कि यदि तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे सम्बन्धी और माल, जो तुमने कमाया है और व्यौपार, जिसके बन्द हो जाने का तुमको डर हो, और मकान, जिन्हें तुम (दिल से) पसन्द करते हो—(यदि यह समस्त उल्लिखित वस्तुएँ) अल्लाह और उसके रसूल और .खुदा के मार्ग में जिहाद करने से तुमको अधिक प्रिय हों, तो (ज़रा) ठहरो—यहाँ तक कि (तुम्हारे विषय में) अल्लाह तआ़ला अपना आदेश भेजे और (तुम्हें तुम्हारी अवज्ञा का मज़ा चखादे। याद रक्खो !) अल्लाह तआ़ला अवज्ञा करने वालों को (नेक) हिदायत नहीं दिया करता ॥

(मुसल्मानो !) अल्लाह बहुत से मवाक़े पर तुम्हारी मदद कर चुका है और (ख़ास कर) हुनैन (की लड़ाई) के दिन, जब कि तुम्हारी कसरत ने तुम को मग़रूर कर दिया था (कि हम बहुत हैं) । तो वह (कसरत) तुम्हारे कुछ भी काम न आई और (इतनी बड़ी) ज़मीन बा वजूद वुसअ़त, लगी तुम पर तंगी करने, फिर तुम पीठ फेर कर भाग निकले ० फिर अल्लाह ने अपने रसूल पर और (नीज़) मुसल्मानों पर अपनी (तरफ़ से) तसल्ली नाज़िल फ़रमाई और (तुम्हारी मदद को फ़रिश्तों के) ऐसे लश्कर भेजे, जो तुमको दिखाई नहीं देते थे । और (आख़िरकार) काफ़िरों को बड़ी सख़्त मार दी और काफ़िरों की यही सज़ा है ० फिर इसके बाद ख़ुदा जिसको चाहे, तौबा नसीब करे । और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० मुसल्मानो ! मुश्रिक तो (निरे) गन्दे हैं, तो इस बरस के बाद (अदब व हुर्मत वाली मसजिद (यानी ख़ानए काबा) के पास भी न फटकने पायें । और अगर (उनके साथ लेन देन बन्द हो जाने से) तुमको मुफ़्लिसी का अन्देशा हो, तो ख़ुदा पर (भरोसा रक्खो । वह) चाहेगा, तो तुमको अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा । बेशक ख़ुदा (सब की नीयतों को) जानता (और) हिकमत वाला है ० अह्ल किताब, जो न ख़ुदा को मानते हैं, (जैसा कि मानने का हक़ है) और न रोज़ आख़िरत को, और न अल्लाह और उसके रसूल की हराम की हुई चीज़ों को हराम समझते हैं, और न दीन हक़ को तस्लीम करते हैं, (मुश्रिकों के अलावा) इन (लोगों) से (भी) लड़ो—

٤

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِىْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ
اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا
وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ
مُّدْبِرِيْنَ ● ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ
عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ● ثُمَّ يَتُوْبُ
اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ● يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ ع
فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا
وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ
فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ● قَاتِلُوا الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ
مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ

مِنَ الَّذِيْنَ

(ऐ मूर्खो ! तुम उस) ख़ुदा (के मुक़ाबले में उन वस्तुओं को प्रिय रखते हो, जिस) ने बहुत से (कठिन) अवसरों पर तुम्हारी सहायता की । और (विशेषतया) हुनैन के (धर्म-युद्ध के) दिन, जबकि तुम्हारी अधिक (संख्या) ने तुमको अभिमान (के गढ़े) में डाल दिया था । (और) फिर वह तुम्हारे कुछ भी काम न आई और (काफ़िरों के तीर बरसाने से तुम ऐसे परेशान हुए कि ख़ुदा की) ज़मीन विस्तृत होते हुये भी तुम्हारे लिये संकुचित हो गई (कि) फिर (वहाँ) तुम (ठहर ही न सके । उन्हें) पीठ देकर भाग गये ॥

(और) फिर अल्लाह (ही) ने अपने रसूल और (तुम) ईमानदारों पर (आस्मान से) तसल्ली (व सान्त्वना) उतारी । (और तुम्हारे हृदय के ढाढ़स का साधन प्रस्तुत किया) और (फ़रिश्तों का) ऐसी सेना भेजी, जिसे तुम (तो) देख (भी) नहीं सके और (अल्लाह ने उसके द्वारा) काफ़िरों को (ऐसा) दंड दिया (कि वह बुरी तरह पराजित हुए और उनमें से बहुत से क़ैद हुए और बहुत से मरे) । और (संसार में) काफ़िरों (की करतूतों) का फल यही है (कि वह इस प्रकार अधम व नीच बन कर जीवन व्यतीत करें) ॥

(अगर यह अब भी अपने किये का नतीजा भुगत कर कुछ सँभल जायँ, तो) फिर इसके बाद (सम्भव है कि) अल्लाह तआ़ला (इनके हाल पर दया करे और इनमें से) जिसे चाहे (उसे) तौबा (करने की योग्यता) प्रदान करदे । और (इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि) अल्लाह तआ़ला (अपने बन्दों के पापों को) क्षमा करने वाला (और उनकी दशा पर) दयालु है । (जब भी कोई सच्चे दिल से उसके द्वार पर आ जाता है, वह उसे असफल वापिस नहीं करता) ॥

ईमानदारो ! मुश्रिक तो (अपने कर्मों व वचनों व विश्वासों के कारण बिल्कुल गन्दे और) अपवित्र हैं । इस लिये यह लोग इस वर्ष * के बाद (से) आदरणीय मस्जिद (अर्थात् काबे के स्थान) के समीप (तक) न आयें ॥

* टीका—सन् ९ हिजरी में अल्लाह का यह आदेश अवतीर्ण हुआ और इसके बाद से मुश्रिकों और काफ़िरों का काबे और उसके आस पास के स्थानों में जाना मना हो गया:—हसन निज़ामी ॥

और यदि तुमको (इनको रोकने और इनसे सम्बन्ध विच्छेद करने में) निर्धनता का भय हो, तो (अल्लाह पर भरोसा रक्खो) । वह यदि चाहेगा, तो अपनी मेहर्बानी (व कृपा) से तुमको शीघ्र धनवान कर देगा । निस्सन्देह अल्लाह तआ़ला (तुम्हारी दशाओं का) जानने वाला (और हर बात का उपाय व) युक्ति (का समझने) वाला है ॥

(मुसल्मानो ! मुश्रिकों के अतिरिक्त इन) किताब वालों में से (भी) जो लोग न ख़ुदा पर (पूरा) ईमान रखते हैं और न प्रलय के दिन पर, और न उन वस्तुओं को हराम जानते हैं, जिन्हें ख़ुदा और उसके रसूल ने हराम कर दिया है (जैसे शराब व सुअर) और न सच्चे धर्म (अर्थात् इस्लाम धर्म) को स्वीकार करते हैं, उनसे (भी) लड़ो—

यहाँ तक कि ज़लील होकर (अपने) हाथों से जिज़या दें ० और यहूद कहते हैं कि उज़ेर अल्लाह के बेटे हैं और नसारा कहते हैं कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं। यह उनके मुंह की कहन है। लगे उन ही काफ़िरों की सी बातें बनाने, जो इन से पहि ले(हो गुज़रे) हैं, .खुदा इनको ग़ारत करे। (देखो तो) किधर को (शैतान के) भटकाये (हुये भटके चले) जा रहे हैं ० इन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने आलिमों और अपने मशायख़ों और मर्यम के बेटे मसीह को .खुदा बना खड़ा किया, हालांकि (हमारे हां से) इनको यही हुक्म दिया गया था कि एक ही .खुदा की इबादत करते रहना। उसके सिवा कोई (और) माबूद नहीं। वह इनके शिर्क से पाक है ० चाहते हैं कि .खुदा के नूर (इस्लाम) को मुंह से (फूंक मार कर) बुझा दें और .खुदा को मन्ज़ूर है कि हर तरह पर अपने नूर (की रोशनी) को पूरा करके रहे, अगचें काफ़िरों को बुरा (ही क्यों न) लगे ० वही (ज़ात पाक) है, जिसने अपने रसूल (मुहम्मद) को हिदायत और दीन हक़ देकर भेजा। ताकि उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब करे, गो मुश्रिकों को बुरा (ही क्यों न) लगे ० मुसल्मानो!

مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ
عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ● وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ
نِ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ذٰلِكَ
قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِئُوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ●
اِتَّخَذُوْا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا اُمِرُوْا اِلَّا لِيَعْبُدُوْا
اِلٰهًا وَّاحِدًا لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا
يُشْرِكُوْنَ ● يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ
بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّا اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ
كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ● هُوَ الَّذِيْ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ
بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ
وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ● يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

यहाँ तक कि यह (आधीन और) ज़लील होकर (स्वयं अपने) हाथ से (तुमको) कर देने लगें॥

और (मुसल्मानो! यह किताब वाले ऐसे ईमान के पोच और बुद्धि हीन हैं कि .खुदा के नबियों को उसका बेटा बनाते हैं। और यह सारे के सारे एक ही से हैं। चाहे उनमें यहूदी हों या ईसाई)। यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि ईसा .खुदा के बेटे हैं। (मगर) यह उनके मुंह के वचन हैं (वास्तविकता से उसे कुछ सम्बन्ध नहीं) ॥

(वास्तव में) यह (मूर्ख) भूत पूर्व काफ़िरों के सिद्धान्तों की रीस करते हैं। (इनमें और उनमें केवल इतना अन्तर है कि वह फ़रिश्तों को .खुदा की बेटियाँ कहते थे। यह नबियों को .खुदा का बेटा बनाते हैं)। .खुदा इन्हें नष्ट करे—यह किधर पल्टे जाते हैं॥

इन्होंने तो .खुदा को छोड़ कर अपने विद्वानों और अपने साधुओं और (अपने पैग़म्बर) मर्यम के बेटे मसीह को अपना पालन कर्त्ता बना लिया। यद्यपि (आसमानी किताबों में) उन्हें केवल (यह) आज्ञा दी गई थी कि एक .खुदा की पूजा करें (और उसी को .खुदा मानें)। उसके अति-रिक्त कोई (और) पूजनीय नहीं (हो सका)। वह उनके शिर्क से (बिलकुल मुक्त और) पवित्र है (परन्तु उन्होंने एक न सुनी)॥

यह चाहते हैं कि अल्लाह की ज्योति (अर्थात् सच्चे धर्म) को अपने मुंह से (आक्षेपों की फूंकें मार मार कर) बुझा दें और अल्लाह तआ़ला अपनी ज्योति (के प्रकाश) को पूरे तौर पर फैलाये बिना नहीं रहेगा। (अर्थात् वह अपने धर्म की पूर्ण वृद्धि करेगा)। यद्यपि (इन) काफ़िरों को (कितना ही) बुरा लगे॥

वही (बुज़ुर्ग और श्रेष्ठ .खुदा) है, जिसने अपने रसूल (मुहम्मद) को हिदायत (व अनुकम्पा बना कर) और सच्चा धर्म देकर भेजा। ताकि उस (के धर्म) को समस्त धर्मों पर विजयी कर दे। चाहे (यह काफ़िर व) मुश्रिक (लोग उसे विजयी देख कर कितने ही क्रोधित हों और कितना ही) बुरा मानें॥

ऐ ईमानदारो!—

إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ
أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ
اللَّهِ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ
وَلَا يُنفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُم
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ● يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ
فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ
هَٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنتُمْ
تَكْنِزُونَ ● إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللَّهِ
اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَٰلِكَ الدِّينُ
الْقَيِّمُ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ
كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
مَعَ الْمُتَّقِينَ ● إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ

ع

(अहल किताब के) अक्सर आ़लिम और मशायख़ लोगों के माल नाहक़ (नारवा) डकारते और राह ख़ुदा से (लोगों को) रोकते हैं। और जो लोग सोना और चांदी जमा करते रहते और उसको (मुत्लक़न) ख़ुदा की राह में ख़र्च नहीं करते, तो (ऐ पैग़म्बर !) उनको (रोज़ क़यामत के) अ़ज़ाब दर्दनाक की ख़ुश ख़बरी सुनादो ० जब कि उस (सोने चाँदी) को दोज़ख़ की आग में (रख कर) तपाया जायगा, फिर उससे उनके माथे और उनकी करवटें और उनकी पीठें दाग़ी जायँगी (और उनसे कहा जायगा कि) यह है, जो तुमने अपने लिये (दुनिया में) जमा किया था। तो (आज) अपने जमा किये का मज़ा चक्खो ० जिस दिन ख़ुदा ने आसमान व ज़मीन पैदा किये हैं, (तब ही से) ख़ुदा के यहां महीनों की गिन्ती किताबुल्लाह (यानी लौह महफ़ूज़) में बारह महीने (लिक्खी चली आती) है, जिनमें से चार (महीने) अदब (व अम्न आ़म) के हैं। दीन (का) सीधा (रस्ता) तो यह है। तो मुसल्मानो ! (अम्न व अदब के) इन (चार महीनों) में (कुश्त व ख़ून से इन महीनों की बेहुर्मती करके) अपनी जानों पर जु़ल्म न करना। और तुम मुसल्मान सब मुश्रिकों से लड़ो, जैसे वह तुम सब से लड़ते हैं और जाने रहो कि अल्लाह (ज़ियादती से) बचने वालों का साथी है ० महीनों का सरका देना भी एक कुफ़्र मज़ीद है—

(इन यहूदी व ईसाइयों के) बहुधा विद्वान व महा पुरुष (जिन्हें यह मूर्ख अपना पालन कर्त्ता समझते हैं—ऐसे हैं कि) लोगों (को ग़लत सलत व्यवस्था देते हैं और इस तरह उन) का धन (व दौलत) व्यर्थ (अनुचित रूप से) डकार लेते हैं और (उन्हें) ख़ुदा के मार्ग (पर चलने) से रोकते हैं (और ख़ूब सांसारिक विभूतियाँ जमा करते हैं) ॥

और (ऐ रसूल !) जो लोग सोना चाँदी (रुपये, अशरफ़ियाँ, गहने) जोड़ जोड़ कर रखते हैं और उन्हें ख़ुदा के मार्ग में ख़र्च नहीं करते (उनमें से हक़दारों के हक़ अदा नहीं करते और ऋण दाताओं के ऋण और ज़कात आदि नहीं देते) तुम उन्हें एक भयानक अज़ाब का मंगल समाचार देदो। (अर्थात् उस दिनका हाल बता दो) जिस दिन कि उस (सोने चाँदी और उसके सिक्कों और गहनों) को नर्क की आग में तपाया जायगा। फिर उससे उनके मस्तक और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जायँगी (और उस दिन उनसे कहा जायगा कि) यही वह (सम्पत्ति) है, जिसे तुम अपने लिये जोड़ जोड़ कर रखते थे। सो (अब इसके) जोड़ने का मज़ा चक्खो ॥

(मुसल्मानो ! इन मूर्खों की तो अनोखी दशा है। इन्हें आज तक यही नहीं मालूम कि एक वर्ष के दिन कितने होते हैं और महीने कितने, कभी एक वर्ष के १३ महीने बताते हैं, कभी बारह। और आदरणीय महीनों को कभी आगे रखते हैं—कभी पीछे। तुम यदि समझदार हो, तो इनके कहे में न आना। क्योंकि) अल्लाह के समीप आकाश व पृथ्वी के पैदा करने के दिन (से आज तक वर्ष भरके) महीनों की संख्या अल्लाह की किताब (अर्थात् लौह महफ़ूज़) में बारह महीने (ही लिखी हुई) है। इनमें से चार (ज़ीक़ाद, ज़िल हिज्ज, मुहर्रम, रजब—आदरणीय महीने अर्थात्) सम्मान (और शान्ति) के (महीने) हैं। यह (अर्थात् कुल महीनों की संख्या बारह और उनमें से चार का आदरणीय नियत करना एक) सीधा (और सही) हिसाब है। तो (मुसल्मानो !) तुम (भी साल भर के बारह महीने समझो और उनमें से चारों आदरणीय महीनों का आदर स्थिर रखो और) उनमें (पाप करके) अपनी जानों पर ज़ुल्म न करो और जिस प्रकार यह (काफ़िर) तुमसे एकत्रित होकर लड़ते हैं (इसी प्रकार) तुम भी इनसे एकत्रित होकर लड़ो और (संयमता व परहेज़गारी का पल्ला हाथ से न छोड़ो और यह भली भांति) जान लो कि अल्लाह तआ़ला संयमता (परहेज़गारी) करने वालों के साथ है ॥

यह (महीनों का आगे) पीछे कर देना कुफ़्र (व अज्ञानता) में (एक प्रकार की) वृद्धि (करनी) है—

जिसकी वजह से काफ़िर (दीन के रस्ते से) गुमराह होते रहते हैं—एक बरस, एक (महीने) को हलाल समझ लेते हैं और उसीको दूसरे बरस हराम। (और इस से उनकी ग़रज़ यह होती है) कि अल्लाह ने जो (चार महीने) हराम किये हैं (अपनी गिन्ती से) उस गिन्ती को मुताबिक़ करके अल्लाह के हराम किये हुये (महीनों) को हलाल करलें। इनकी बद किर्दारियाँ इनको भली करके दिखाई गई हैं। और अल्लाह उन लोगों को, जो कुफ़्र करते हैं (तौफ़ीक़) हिदायत नहीं दिया करता ० मुसलमानो! तुमको क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि राह ख़ुदा में (लड़ने के लिये) निकलो, तो तुम ज़मीन पर ढेर हुये जाते हो। क्या आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी पर क़नाअ़त कर बैठे हो? (अगर यह बात है) तो (यह तुम्हारी सख़्त ग़लत फ़ह्मी है, क्योंकि) आख़िरत के (फ़ायदों के) मुक़ाबिले में (दुनिया की) ज़िन्दिगी के फ़ायदे महज़ बे हक़ीक़त हैं ० अगर तुम (बुलाये जाने पर भी राह ख़ुदा में लड़ने के लिये) न निकलोगे, तो ख़ुदा तुमको बड़ी दर्द नाक मार देगा० और तुम्हारे बदले दूसरे लोग (रसूल की मदद को ला मौजूद करेगा और तुम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकोगे। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० अगर तुम रसूल की मदद न भी करो, तो (कुछ पर्वाह की बात नहीं, अल्लाह उनका मददगार है और) उसीने अपने रसूल की मदद उस वक़् भी की थी, जब काफ़िरों ने उनको (ऐसा बे सरो सामन घर से) निकाल बाहर किया (कि सिर्फ़ दो आदमी और) दो में दूसरे (पैग़म्बर)। उस वक़ यह दोनों ग़ार (सौर) में थे (और) उस वक़् (पैग़म्बर) अपने साथी (अबू बक्र) को समझा रहे थे कि (कुछ) रंज (व फ़िक्र) न करो। बेशक अल्लाह हमारे साथ है। फिर अल्लाह ने अपने पैग़म्बर पर अपनी (तरफ़ से) तसल्ली उतारी और उनको (फ़रिश्तों की) ऐसी फ़ौजों से मदद दी, जिनको तुम लोग न देख सके और काफ़िरों की बात को हेटा कर दिया और—

يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا
لِيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ زُيِّنَ
لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ●
६
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انْفِرُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ أَرَضِيتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا
مِنَ الْآخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ
إِلَّا قَلِيلٌ ● إِلَّا تَنْفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ●
وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا وَاللَّهُ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ● إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ
اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ
هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ
اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ
لَمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ وَكَلِمَةُ

जिस से (समस्त) काफ़िर पथ-भ्रष्ट किये जाते हैं। वह (केवल अपने व्यक्ति गत स्वार्थ से) किसी साल एक (हराम*) महीने को हलाल और किसी साल (एक हलाल) महीने को हराम कर लेते हैं। ताकि जो महीने अल्लाह ने हराम किये हैं, उनकी गणना (तो किसी न किसी रीति से) पूरी करलें (और किसी प्रकार की विशेषता या निर्दिष्टता का लेश मात्र विचार न करें। और जब इसमें सफल हो जायँ) तो अल्लाह ने जिन (जिन महीनों) को हराम किया (और आदर दिया) है, उन्हें (बिलकुल ही) हलाल (और साधारण महीनों की तरह) करलें। उन्हें अपने बुरे कर्म अच्छे मालूम होते हैं और अल्लाह तआ़ला (इन) काफ़िर लोगों को (नेक) राह नहीं दिखाता॥

* टीका—हराम शब्द का मतलब इस जगह यह भी है कि यह महीने आरणीय हैं और यह भी है कि इन आदरणीय महीनों में युद्ध करना हराम अर्थात् पाप है:—हसन निज़ामी॥

ईमान वालो! तुमको क्या हो गया है? जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह के मार्ग में (लड़ने के लिये) निकलो, तो तुम पृथ्वी पर ढये (चले) जाते हो। (और अपनी जगह से टस से मस नहीं होते)। क्या तुम प्रलय के बदले संसार के (अल्प दिवस के) जीवन को पसन्द कर बैठे? (अगर यह सही है) तो (अच्छी तरह समझ लो कि) प्रलय (की नेअ़मतों और सुखों) के मुक़ाबले में साँसारिक जीवन के सुख (केवल निराधार और) बिलकुल थोड़े हैं†॥

† टीका—जब अरब देश में मक्के और हुनैन की विजय प्राप्त होने के बाद इस्लाम का चर्चा बढ़ गया, तो शाम देश के अरब ईसाई बादशाह ने जो रूम के ईसाई सम्राट का गवर्नर था, इरादा किया कि मदीने पर चढ़ाई करे और इस्लाम की उन्नति में बाधा डाले। रसूलुल्लाह को इसकी ख़बर हुई, तो आप मुसल्मानों की सेना लेकर स्वयं शाम देश की ओर गये और तबूक नामक स्थान पर डेरे डाले। शाम देश के ईसाई बादशाह को रूम के सम्राट की ओर से सहायता नहीं मिली। इस कारण शाम देश के बादशाह ने निराश होकर रसूलुल्लाह से सन्धि करली। यहाँ से इस धर्म-युद्ध का वर्णन आरम्भ होता है। यह युद्ध सन् ९ हिजरी में हुआ था और इसी समय मदीने आकर रसूलुल्लाह का स्वर्ग वास हुआ:—हसन निज़ामी॥

(याद रक्खो कि) यदि तुम (लड़ने के लिये) न निकलोगे, तो (अल्लाह तआ़ला) तुमको (एक) सख़्त अज़ाब (दारुण दुःख में लिप्त) करेगा और (अपने रसूल की सहायता के लिये) तुम्हारी जगह कोई (दूसरी) जाति तुम्हारे बदले में पैदा कर देगा। और तुम उसका (या उसके रसूल और उसके धर्म का) कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर अधिकार रखता है (तुम्हरी उसके सामने कुछ भी हक़ीक़त नहीं है)॥

(कम हिम्मतो!) यदि तुम (अल्लाह के) रसूल की सहायता न करोगे, तो (अपना ही कुछ खोओगे। उनकी सहायता के लिये तो) अल्लाह तआ़ला (की व्यक्ति यथेष्ट है। यह अवसर तो उसके समीप कुछ भी नहीं। उस) ने तो उनकी सहायता उस समय की (थी) जब काफ़िरों ने उन्हें (उनके देश मक्के से इस प्रकार) निकलने पर विवश किया (कि निकलते समय कुल दो आदमी थे और) दो में दूसरे (स्वयं) रसूल थे। इस समय यह दोनों (एक) गुफ़ा में (जाकर छिप रहे) थे। (और काफ़िर उन्हें खोजते २ जब ठीक उसी खोह के मुँह पर पहुँचे, तो) उस समय (उनके साथी तो घबरा रहे थे और) वह (रसूल) अपने साथी (को तसल्ली दे रहे थे और उन) से कह रहे थे कि (सिद्दीक़!) शोक न करो। (यह काफ़िर हमें कुछ कष्ट नहीं पहुँचा सकते)। निस्सन्देह हमारे साथ (हमारा) अल्लाह है॥

फिर अल्लाह तआ़ला ने उन पर (अपनी कृपा की और) अपनी तसल्ली (व सान्त्वना आकाश से) उतारी और उन्हें (फ़रिश्तों की) ऐसी सेनाओं से शक्ति पहुँचाई, जिन्हें (काफ़िरो!) तुम देख (भी) न सके और (उस समय) अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों की बात को नीचा कर दिया—

اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۞ اِنْفِرُوْا خِفَافًا
وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۞ لَوْ كَانَ
عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْ
بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۗ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا
لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۞ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى
يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ۞
لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
بِالْمُتَّقِيْنَ ۞ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ
رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ۞ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا

لهٗ عدّة

(सदा) अल्लाह ही का बोल बाला है और अल्लाह ग़ालिब (और) साहब तदबीर है ० (मुसल्मानो !) हलके (यानी बे हथियार हो, तो)–और बोझल (यानी मुसल्लह हो, तो–.खुदा की राह में लड़ने के लिये रसूल के बुलाने पर) निकल खड़े हुआ करो और अपनी जान व माल से .खुदा की राह में जिहाद करो। अगर तुम (जिहाद की मस्लहतों को) जानते हो, तो यह तुम्हारे हक़ में (बहुत) बेहतर है ० (ऐ पैग़म्बर !) अगर सरे दस्त फ़ायदा होता और सफ़र भी मुतवस्सित दर्जे का (और तुम इन मुनाफ़िक़ों को अपने साथ चलने को बुलाते) तो (यह बे तअम्मुल) तुम्हारे साथ हो लेते, लेकिन इनको मसाफ़त दूर मालूम हुई। और (तुम पीछे रह जाने का सबब पूछोगे, तो यह) .खुदा की क़समें खा खाकर कहेंगे कि अगर हमसे बन पड़ता, तो हम ज़रूर तुम लोगों के साथ निकल खड़े होते। यह लोग (झूठी क़समें खा खाकर अज़ाब आख़िरत के एतिबार से) आप अपने तईं हलाकत में डाल रहे हैं और अल्लाह को मालूम है कि यह लोग ज़रूर झूठे हैं ० (ऐ पैग़म्बर !) .खुदा तुम्हारा .कुसूर माफ़ करे, तुमने इनको (पीछे रह जाने की) इजाज़त ही क्यों दी। उस वक़्त तक (इन्तिज़ार किया होता) कि तुम पर सच्चे (अलहदा) ज़ाहिर हो जाते और झूठों को (अलग) मालूम कर लेते ० (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग .खुदा का और रोज़ आख़िरत का यक़ीन रखते हैं, वह तो तुम से इस बात की रुख़सत मांगते नहीं कि अपनी जान व माल से शरीक जिहाद न हों। और अल्लाह परहेज़गारों को ख़ूब जानता है ०(पीछे रह जाने के लिये) तुम से ख़्वाहाने इजाज़त वही लोग होते हैं, जो अल्लाह का और रोज़ आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हैं, तो वह अपने शक (की हालत) में हैरान हैं (कि क्या करें, क्या न करें) ० और अगर यह लोग (दिल में घर से) निकलने का इरादा रखते होते, तो उसके लिये कुछ तय्यारी करते—

और ऊँचा वचन तो (सर्वदा) अल्लाह ही का है और अल्लाह (बड़ी) भारी (.कुद्रत व शक्ति वाला और युक्ति व) बुद्धि वाला है ॥

(ईमान वालो !) तुम हलके हो-तब भी, और भारी हो-तब भी (अर्थात् तुम लिप्त हो-तब भी, और .फुरसत में हो-तब भी, और तुम्हारे पास युद्ध का सामान काफ़ी हो-तो भी, और कम हो-तो भी, जब हम तुमको आज्ञा दें, तो अवश्य ही) निकल खड़े हुआ करो और अपनी जान व माल से .खुदा के मार्ग में जिहाद किया करो। यदि तुम (जिहाद की विशेषताओं से) अभिज्ञ होगे, तो (स्वयं अच्छी तरह समझ लोगे कि) यह तुम्हारे पक्ष में बहुत ठीक है (और इसके विषय में तुमको आज्ञा देना तुम्हारे लिये अत्यन्त लाभ दायक है) ॥

(ऐ रसूल !) यदि कुछ माल (कहीं आस) पास (से इनके हाथ लगता) होता और (इन्हें एक) साधारण सी यात्रा करनी होती (और तबूक के स्थान की तरह कहीं दूर जाने की आवश्यकता न होती और उस समय तुम इन्हें बुलाते) तो (अत्यन्त प्रसन्नता के साथ) यह तुम्हारे साथ हो लेते। किन्तु (तबूक की तो) इन्हें यात्रा (भी) दूर मालूम हुई (और वहाँ कुछ माल की भी आशा दिखाई न दी । इस लिये यह यहीं रह गये) ॥

और अभी (जब तुम इनसे इसका कारण पूछोगे, तो यह इसका इक़रार थोड़ा ही करेंगे । बल्कि) अल्लाह की क़समें खा जायँगे (और कहेंगे) कि (.खुदा की क़सम हम ऐसे ही विवश थे, जो रह गये) । यदि हम शक्ति रखते, तो तुम्हारे साथ अवश्य चलते । यह लोग (झूठ बोल बोल कर) अपने आप को हलाक कर रहे (और अज़ाब के योग्य बना रहे) हैं और अल्लाह (इनसे अच्छी तरह) अभिज्ञ है कि यह (सरासर) झूठे हैं। (यदि जाना चाहते, तो हज़ार ढंगों से जा सक्ते थे) ॥

(ऐ रसूल !) अल्लाह तआला तुमको क्षमा करे। तुमने इन लोगों को (जिहाद में सम्मिलित न होने की इतनी जल्दी) आज्ञा क्यों दे दी थी ? (तुम्हें चाहिये था कि तुम जिहाद जैसी आवश्यकीय चीज़ में शरीक न होने की उस समय तक किसी को आज्ञा न देते) जब तक कि जिन्होंने सच कहा–वह तुमको अलग मालूम (न) हो जाते और झूठ बोलने वालों को तुम (अच्छी तरह न) जान लेते (और बनावटी मुसल्मानों की बनावट का और सच्चे मुसल्मानों की सचाई का तुमको अन्दाज़ा न हो जाता *) ॥

* टीका—तबूक के जिहाद अर्थात् धर्म युद्ध में सम्मिलित न होने के लिये लोगों ने बहुत से उज़्र पेश करके रसूलुल्लाह से आज्ञा और विदा मांगी थी। आप को मुनाफ़िक़ों के कपट का हाल उस समय तक मालूम न हुआ था। आपने उनके उज़्र को मंज़ूर कर लिया और उन्हें आज्ञा दे दी। इस आयत में उस आज्ञा का वर्णन किया गया है:—हसन निज़ामी ॥

जो लोग अल्लाह पर और प्रलय के दिन पर ईमान रखते हैं, वह तो तुमसे (.खुदा के मार्ग में) अपनी जान व माल से जिहाद न करने (और उसमें सम्मिलित न होने) की (कभी) आज्ञा मांगेंगे (ही) नहीं। और अल्लाह इन नेक और संयमी मनुष्यों की दशा को भली भाँति) जानता है ॥ (जिहाद जैसे नेक काम में सम्मिलित न होने की) आज्ञा तो तुमसे बस वही लोग मांगते हैं, जो अल्लाह पर और प्रलय के दिन पर (पूरे ढंग से) ईमान नहीं रखते और जिनके दिल सन्देह (के रोग) में (लिप्त) हैं। तो यह अपने सन्देह (व शंका) में (अत्यन्त) चिन्तित (और परेशान) हैं (कि क्या तुम्हारा विरोध करें या तुम्हारा पक्ष लें और इस्लाम धर्म को सच्चे हृदय से स्वीकार करें अथवा न करें) ॥

और यदि यह लोग (जिहाद के लिये घर से) निकलने का इरादा करते, तो उसके लिये कुछ (न कुछ) सामान तो अवश्य ही करते—

لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا
مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝ لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا
وَّلَاَاوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ
لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ
مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ
وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ
سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنْ تُصِبْكَ
حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا
قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ۝
قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ
بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۗ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ

पर करते, मगर अल्लाह को इनका जगह से हिलना ही ना पसन्द हुआ, तो उसने इनको अहदी बना दिया और (गोया इनसे) कह दिया गया कि जहाँ और (हारे मांदे) बैठे हैं, तुम भी उनके साथ बैठे रहो ० अगर यह लोग तुम (मुसल्मानों) में (मिल कर) निकलते भी, तो बस तुम में और ज़ियादा ख़राबियाँ ही डालते और तुम फ़साद फैलाने की ग़रज़ से तुम्हारे दर्मियान (इधर के उधर और उधर के इधर) दौड़े २ पड़े फिरते (सो अलग)। और (ग़ज़ब यह है कि) तुम में ऐसे भी हैं, जो उनकी सुन लेते हैं। और अल्लाह शरीर लोगों को ख़ूब जानता है ० (ऐ पैग़म्बर !) उन्होंने पहिले भी फसाद डलवाना चाहा और तुम्हारे (बिगाड़ने के) लिये तदबीरों की अलट पलट करते ही रहे, यहाँ तक कि (ताईद इलाही का) सच्चा वादा आ पहुँचा और ख़ुदा का हुक्म बर रहा और उनको ना गवार ही गुज़रा किया ० और इन (ही मुनाफ़िक़ों) में वह (नाबकार भी) है, जो (तुमसे) दरख़्वास्त करता है कि मुझको (पीछे रह जाने की) इजाज़त दीजिये और मुझको (हसीनाने रूम की) बला में न फँसाइये। सुनो जी ! यह लोग बला में तो (आही) गिरे, (हसीनाने रूम की बला न सही—ना फ़रमानी ख़ुदा की बला सही)। और बेशक जहन्नम (सब) काफ़िरों को घेरे हुये है ० (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुमको कोई भलाई पहुंच जाय, तो इन (मुनाफ़िक़ों) को बुरा लगता है और अगर तुमको कोई मुसीबत पहुंच जाय, तो कहने लगते हैं कि (इसी ख़याल से) हमने पहिले ही से अपना काम (ठीक ठाक) कर लिया था और (यह कह कर) ख़ुश २ (तुम्हारे पास से उठ) वापिस चले जाते हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से) कहो कि जो कुछ ख़ुदा ने हमारे लिये लिख दिया है, उसके सिवा (कोई और) मुसीबत तो हमको पहुंच सकती नहीं, वही हमारा कारसाज़ है। और मुसलमानों को चाहिये कि बस अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि तुम हमारे हक़ में दो भलाइयों में (ख़्वाह न ख़्वाह) एक (न एक) का तो इन्तिज़ार करते ही हो और हम तुम्हारे हक़ में इस बात के मुन्तज़िर हैं—

किन्तु (उनका तो आरम्भ से इरादा ही न था। इस लिये स्वयं) अल्लाह तआला (ही) ने (जिहाद के लिये) उनके तैयार होने को पसन्द न किया और उन्हें अल्लाह तआला ने वहीं का वहीं रहने दिया। और उनसे कह दिया कि (विवश और अपाहिज होकर) बैठने वालों के साथ तुम भी बैठ रहो ॥ (अच्छा हुआ यह न गये) अगर यह तुम (मुसल्मानों) में (शामिल होकर) निकलते (तो कुछ लाभ दायक न सिद्ध होते। बल्कि यह) तो छल (व कपट) ही की तुम में वृद्धि करते और तुम्हारे बीच उपद्रव (व झगड़ा) फैलाने ही के अभिप्राय से (इधर उधर) दौड़ते फिरते और (देखो ! चूकना नहीं) तुम में (अब भी) उनके जासूस (मौजूद) हैं और (उन) ज़ालिमों से अल्लाह तआला (अच्छी तरह) परिचित है। (इनके सम्बन्ध में जो कुछ आज्ञा होती है, वह बिलकुल सही होती है) ॥

(और यह इनका झगड़ा व उपद्रव फैलाने का प्रयत्न करना आज कोई नई बात नहीं है। बल्कि) उन्होंने इस से पहिले (उहद की लड़ाई में) भी (जब कि अब्दुल्लाह बिन सलूल अपने साथियों सहित तुम्हारा साथ छोड़ कर भाग गया था) झगड़ा (व उपद्रव फैलाने में सरतोड़) कोशिश की थी और तुम्हारे (नष्ट भ्रष्ट करने के) लिये (बहुत से) उपायों को अलटा पलटा था। यहाँ तक कि हक़ (अर्थात् अल्लाह की सहायता का उतरना सबको नज़र) आ गया और अल्लाह का हुक्म (उनकी सारी तदबीरों पर) ग़ालिब आया। यद्यपि वह (बहुतेरा) जलते रहे ॥

और (ऐ रसूल !) इन (मुनाफ़िक़ों) में (एक मनुष्य) वह भी है, जो कहता है कि तुम मुझे (जिहाद में शरीक न होने की) आज्ञा दो और मुझे (प्रेम व मोह की) मुसीबत * में न डालो। तो (अच्छी तरह) सुन लो कि यह मुसीबत (के गढ़े) में तो गिर ही पड़ा। (परन्तु प्रेम व मोह की मुसीबत में नहीं, बल्कि महान व श्रेष्ट अल्लाह की अवज्ञा और रसूल का विरोध करने की मुसीबत के गढ़े में गिरा) और नर्क (इन) काफ़िरों को घेरे हुए है ॥

* टीका—इन मुनाफ़िक़ों में एक मनुष्य जद बिन क़ैस नामक था। उसने जिहाद में शरीक न होने का उज़्र रसूलुल्लाह की सेवा में यह पेश किया था कि रूमी बहुत सुन्दर होते हैं। मैं उनके गालों की सुन्दरता के आगे न ठहर सकूँगा। इस लिये मुझे छोड़े रखिये:—हसन निज़ामी ॥

(ऐ रसूल ! इन मुनाफ़िक़ों के द्वेष व ईर्षा की यह हालत है कि) यदि तुम्हें कोई सुख प्राप्त होता है, तो (वह तो) उनको बुरा लगता है और यदि तुमको कोई दुःख पहुंच जाय, तो कहते हैं कि हमने (इसी वास्ते) पहिले ही से अपना मामला अपने हाथ में रक्खा था। और पीठ फेर कर ख़ुश होते हुए (तुम्हारे पास से) चले जाते हैं ॥

(ऐ रसूल ! तुम इनसे) कहदो कि सिवाय उस (मुसीबत) के, जो अल्लाह ने हमारे लिये (हमारे भाग्य में) लिख दी है और कोई मुसीबत हमको कभी पहुँच नहीं सकती (और) वह हमारा स्वामी (और हमारा मालिक) है। (हमारे लिये जो उचित समझे, करदे। उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त है। हमें चूँ व चरा की गुन्जायश नहीं। हमारा तो विश्वास है कि वह जो कुछ करता है, हमारे लिये अच्छा ही करता है)। और ईमानदारों को चाहिये (भी बस यही कि) अल्लाह पर (ऐसा) ही भरोसा रक्खें ॥

(और उनसे) कहो कि (ऐ हमारे अशुभ चाहने वालो ! तुम जो हमारा बुरा चाहते हो, तो तुम यह तो जानते हो नहीं कि वह बुरा भी नतीजे व परिणाम की दृष्टि से हमारे पक्ष में भला बन जाता है। तो) तुम तो (हर दशा में) हमारी दो भलाइयों में से एक की बाट जोहते हो और हम तुम्हारे लिये इस (बात) के मुन्तज़िर हैं—

يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا فَتَرَبَّصُوا
إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ ۝ قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَنْ
يُتَقَبَّلَ مِنْكُمْ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ وَمَا
مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا
بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ
كُسَالَىٰ وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَارِهُونَ ۝ فَلَا تُعْجِبْكَ
أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝
وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ وَمَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَٰكِنَّهُمْ
قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ۝ لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغَارَاتٍ
أَوْ مُدَّخَلًا لَوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ۝ وَمِنْهُمْ
مَنْ يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا
وَإِنْ لَمْ يُعْطَوْا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ

कि ख़ुदा तुम पर अपने हाँ से कोई अज़ाब नाज़िल करे या हमारे हाथों से (तुमको कोई सज़ा दिलवाये)। तो (अच्छा) तुम (भी) मुन्तज़िर रहो, हम (भी) तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि तुम ख़ुश दिली से ख़र्च करो या बे दिली से, तुम्हारी ख़ैरात तो (ख़ुदा के हाँ) किसी तरह क़बूल होनी नहीं, क्योंकि तुम नाफ़र्मान लोग हो ० और इनकी ख़ैरात के क़बूल होने को और कोई वजह माने नहीं हुई, मगर यही कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़र्मानी की और नमाज़ को आते हैं, तो बस अल्कसाये हुए और (राह ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं, तो बस बद दिली से ० तो (ऐ पैग़म्बर !) न तो इनके माल तुम्हारे लिये मूजिब हैरत हों और न इनकी औलाद (कि फिर ख़ुदा ने इनको दुनियवी बरकतें क्यों दे रक्खी हैं। बरकतें नहीं हैं, बल्कि) ख़ुदा चाहता है कि दुनिया की ज़िन्दिगी में इनको माल और औलाद की वजह से मुब्तलाये अज़ाब ही रक्खे और (यह कि) इनकी जान निकले और (उस वक़्त भी) यह काफ़िर (ही) हों ० और (मुसल्मानो ! यह मुनाफ़िक़ तुम्हारे सामने) क़समें खाते हैं कि वह भी तुम ही में के हैं, हालाँकि वह तुम में के नहीं हैं, बल्कि वह बुज़दिले लोग हैं ० अगर कहीं पनाह पायें या (छुप रहने के क़ाबिल) ग़ार या घुस बैठने की (कोई और) जगह, तो रस्सी तुड़ा तुड़ा कर उसकी तरफ़ दौड़ पड़ें ० और (ऐ पैग़म्बर !) इनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं कि (लोगों के माल) ख़ैरात (की तक़सीम) में तुम पर (बे इन्साफ़ी का) इल्ज़ाम लगाते हैं। फिर अगर इनको उसमें से (इनकी ख़्वाहिश की क़द्र) दिया जाय, तो ख़ुश रहते हैं और अगर इनको उसमें से (इनकी ख़्वाहिश की क़द्र) न दिया जाय, तो बस वह फ़ौरन ही बिगड़ बैठते हैं ०—

कि अल्लाह तआ़ला (स्वयं) अपने यहां से तुम पर कोई अज़ाब उतारे या हमारे हाथों से (तुमको दंड दिलवाये) तो तुम भी प्रतीक्षा करो। हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं * ॥

* टीका-अर्थात् हमारा दोनों दशा में लाभ है। हम युद्ध में विजय प्राप्त करते हैं, तो ग़ाज़ी कहलाते हैं और क़त्ल होते हैं, तो शहीद:—हसन निज़ामी॥

(और ऐ रसूल ! इन मुनाफ़िक़ों में से उन लोगों से, जो जिहाद में ख़ुद तो शरीक होते नहीं और अनिच्छा से कुछ रुपये देना चाहते हैं), कह दो कि तुम (अल्लाह की राह में) ख़ुश होकर (कुछ) ख़र्च करो या विवश होकर। तुम्हारी तरफ़ से कदापि (कुछ) स्वीकार नहीं किया जायगा। क्योंकि तुम (बड़े अवज्ञाकारी और) दुराचारी लोग हो॥

और उनकी ख़ैरात, जो उनकी तरफ़ से हो—उसके स्वीकृत होने के लिये कोई (और) बाधक सिवाय इसके नहीं है, कि उन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल (के हुक्म) की अवज्ञा की और (ख़ुदा के आदेशों का पूरी तरह पालन न किया; जैसे) नमाज़ को आते हैं, तो (अत्यन्त) उदास होकर। और (कुछ रुपये पैसे ख़ुदा के मार्ग में) ख़र्च करते (भी) हैं, तो (अत्यन्त) विवश (और निरुत्साह) होकर॥

(ऐ रसूल !) तुम्हें उनके माल और उनकी सन्तान विस्मित (व चकित) न करें। (अर्थात् तुम उनके माल व सन्तान की अधिकता पर आश्चर्य न करो। क्योंकि ऐसे बेहूदा लोगों को अल्लाह ने जितने पुरस्कार दे रक्खे हैं, वास्तव में यह पुरस्कार व इनआम नहीं हैं—बल्कि अज़ाब व अल्लाह का क्रोध है)। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि इस (धन व सन्तान) के द्वारा उन्हें संसार के जीवन में दु:ख दे। (अर्थात् माल व सन्तान का इन्हें इतना प्रेम दे दे कि उनके मरने का उन्हें हर समय खटका लगा रहे और उनमें इतने लिप्त हों कि वास्तविक लक्ष्य व उद्देश का इन्हें ख़याल तक भी न आये) और उनकी जानें कुफ़्र की दशा में (उनके शरीर से) निकलें (और वह प्रलय में नर्क का ईंधन बनें)॥

(दशा तो उनकी यह है और दावा उनका यह है कि हम ईमानदार हैं) और अल्लाह की क़समें खाते (हैं और कहते) हैं कि हम तो तुम (मुसल्मानों ही) में से हैं। यद्यपि वह तुम में से नहीं हैं। मगर (बात यह है कि) यह लोग (तुमसे) डरते हैं। (और क़समें खा खा कर अपनी कुफ़्र की हालत को छिपाते हैं कि कहीं उनके साथ भी तुम्हारी ओर से काफ़िरों जैसा बर्ताव न किया जाय)॥

(और यह लोग इस लिये भी तुम में घुसते और तुमसे डरते हैं कि उनका कोई दूसरा ठिकाना नहीं। अन्यथा) अगर यह लोग (कहीं) आश्रय का स्थान या (चैन से रहने के लिये पहाड़ों में कुछ सुरक्षित) खोह या घुस बैठने का (इनके अतिरिक्त कोई और) स्थान पालें, तो यह (तुम्हारी ओर से) मुंह फेर कर (सीधे) उधर अकड़ते (ऐंठते) चले जायँ॥

और इन (मुनाफ़िक़ों) में कोई (कोई) ऐसे (भी) हैं कि दान (और ज़कात और ख़ैरात के बटवारे) में (ऐ रसूल !) तुम पर (हक़ तलफ़ी का) इलज़ाम लगाते हैं तो-(और वास्तविक बात यह है कि यह अपने मतलब का बटवारा चाहते हैं। न्याय व इन्साफ़ करने से जलते हैं)। अगर उन (रुपयों व धन, ज़कात व ख़ैरात) में से इन्हें (इनकी इच्छानुसार हिस्सा) दे दिया गया, तो तो अत्यन्त प्रसन्न हैं। और अगर उनमें से (उनकी इच्छानुसार) उन्हें (हिस्सा) नहीं दिया गया, तो तुरन्त बिगड़ जाते हैं॥

رَضُوامَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ
سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ
رٰغِبُوْنَ ۝ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ
وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ
وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ فَرِيْضَةً
مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ قُلْ اُذُنُ
خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ
وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ
لِيُرْضُوْكُمْ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ
كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدًا فِيْهَا ذٰلِكَ

और जो ख़ुदा ने और उसके रसूल ने इनको दिया था, अगर यह उसको ख़ुशी से ले लेते और कहते कि हमको अल्लाह बस करता है—(और अब नहीं दिया, तो क्या है) आगे को अपने करम से अल्लाह और उसका रसूल हमको (बहुतेरा कुछ) देंगे, हम तो अल्लाह ही से लौ लगाये बैठे हैं (तो यह उनके हक़ में कहीं बेहतर होता) ० ख़ैरात (का माल) तो बस फ़क़ीरों का हक़ है और मोहताजों का और उन कार कुनों का, जो (माल) ख़ैरात (के वसूल करने) पर (तईनात) हैं और उन लोगों का, जिनके दिलों का परचाना मन्ज़ूर है। (इन मसारिफ़ में माल ख़ैरात यानी ज़कात को ख़र्च किया जाय)। और (नीज़ क़ैद ग़ुलामी से ग़ुलामों की) गर्दनों (के छुड़ाने) में और क़र्ज़दारों (के क़र्ज़) में और (नीज़) ख़ुदा की राह (यानी मुजाहिदीन के साज़ व सामान) में और मुसाफ़िरों (के ज़ादराह) में, (यह हुक़ूक़) अल्लाह के ठैराये हुये (हैं)। और अल्लाह जानने वाला (और) साहब तदबीर है (मुनासिब जगह ख़र्च करने का हुक्म देता है) ० और इन (मुनाफ़िक़ों) में से (बाज़) ऐसे भी हैं, जो पैग़म्बर को ईज़ा देते और कहते हैं कि यह शख़्स कान (का बड़ा कच्चा) है। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि कान (का कच्चा है, तो उसका कान का कच्चा होना) तुम्हारी बेहतरी का (मूजिब) है। वह अल्लाह का यक़ीन रखता है और मुसल्मानों (की बात) का भी यक़ीन रखता है और जो लोग तुम में से ईमान लाये हैं, उनके लिये (सर तासर) रहमत है। और जो लोग अल्लाह के रसूल को ईज़ा देते हैं, उनको (क़यामत के दिन) अज़ाब दर्दनाक होना है ० (मुसल्मानो ! यह लोग) तुम्हारे सामने ख़ुदा की क़स्में खाते हैं, ताकि तुमको राज़ी कर लें। हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल ज़ियादा हक़ रखते हैं कि यह लोग सच्चे मुसल्मान हैं, तो अल्लाह रसूल को राज़ी करें ० क्या उन्होंने अभी तक इतनी बात भी नहीं समझी कि जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करता है, तो उसके लिये दोज़ख़ की आग (तय्यार) है, जिसमें वह हमेशा (हमेशा) रहेगा। (और) यह—

और अल्लाह और उसके रसूल ने जो कुछ भी उनको दिया था—यदि वह (उस पर) प्रसन्न रहते और कहते कि (संसार का माल व धन क्या है) हमें अल्लाह (की व्यक्ति) यथेष्ट है। (यदि अब के कुछ थोड़ा बहुत कम मिला है, तो) हमें (हमारा) अल्लाह अपनी मेहर्बानी से और उसका रसूल (अपनी कृपा से बहुत कुछ) प्रदान कर देंगे। हम तो अल्लाह ही से ध्यान लगाते हैं। (हमें साँसारिक माल व धन की आवश्यकता नहीं है। तो यह उनके पक्ष में अत्यन्त लाभ दायक होता) ॥ ज़कात (व ख़ैरात में से हर एक का विभाग व हिस्सा करने की ज़रूरत नहीं। वह) तो केवल फ़क़ीरों और कंगालों और उन कार्य कर्त्ताओं का हक़ है, जो ज़कात (का धन वसूल करने) पर (नियुक्त) हैं और उनका हक़ है, जिनके दिलों में इस्लाम-प्रेम उत्पन्न करना है। (यह माल उन समस्त लोगों को दिया जाय) और (ग़ुलामों की) गर्दनों (के छुड़ाने और उन्हें आज़ाद करने) में और क़र्ज़दारों (के क़र्ज़ निबटाने) में और मुसाफ़िरों (की सहायता करने) में (यह रुपया ख़र्च किया जाय)। यह (ज़कात का इस तरह देना) अल्लाह की ओर से (हमारे ऊपर) फ़र्ज़ (कर्तव्य ठहराया गया) है। और अल्लाह जानने वाला (और) बुद्धिमान है। (उसकी जो बात होती है, ज्ञान व बुद्धिमानी पर निर्भर होती है) ॥

और कुछ उन (मुनाफ़िक़ों) में से ऐसे भी हैं, जो रसूलुल्लाह (के प्रति उनके पीठ पीछे धृष्टता करते और दुर्वचन कहते हैं और उन) को दुख पहुँचाते हैं। और (जब कोई उन्हें रोकता है, तो) कहते हैं कि वह तो (कान के कच्चे और हर एक की) सुन लेने वाले हैं। (यदि हमारी बातें सुन लेंगे, तो हमारी हानि कुछ नहीं है। हम झूठी सच्ची बातें मिलाकर उनके दिल से इस विचार को दूर कर देंगे)। तो (ऐ रसूल !) तुम कह दो कि (तुम्हारा यह ख़याल बिलकुल ग़लत है)। वह (तो बस) तुम्हारी भलाई को (बातें) सुन लेने वाले हैं (और) अल्लाह का और ईमानदारों (के वचन) का विश्वास रखते हैं। (सर्व साधारण की बात का नहीं)। और जो लोग तुम में से ईमानदार हैं, उनके लिये (पूर्ण रूप से) कृपा (व दया) हैं। और जो लोग (असभ्यता-पूर्ण वाक्य कहते और उनसे) रसूलुल्लाह (के दिल) को दुःख पहुंचाते हैं (वह यह न समझें कि झूठी सच्ची बातें मिला कर छूट जायँगे)। उनके लिये (प्रलय में) एक सख़्त अज़ाब (नियत) है * ॥

* टीका—एक बार कुछ मुनाफ़िक़ आपस में बैठे हुए रसूलुल्लाह के प्रति बुरे भले वाक्य प्रयोग कर रहे थे और इस्लाम-धर्म का मज़ाक़ उड़ा रहे थे। उनमें से एक ने कहा-भाइयो ! अपनी ज़बान को लगाम दो। यदि मुहम्मद सुन लेंगे, तो हम से बिगड़ जायँगे। उन्होंने जवाब दिया कि सुन लेंगे, तो क्या है। वह तो कानों के कच्चे और हर एक की बातों में आ जाने वाले आदमी हैं। जब हमसे कुछ पूछ गछ करेंगे, तो हम भी आयँ, बायँ, शायँ बातें बना देंगे और अपने ऊपर से इस दोष को दूर कर देंगे। उस दरबार में किसी बात की कुछ जाँच तो होती नहीं। जो कुछ किसी ने कह दिया, वही मान लिया जाता है। मुनाफ़िक़ों की अनुचित वार्त्तालाप पर उन्हें बुरा वादा (अर्थात् दंड देने की प्रतिज्ञा) और उनको इस दोषारोप राय और उसके खंडन का इस आयत में वर्णन है:—हसन निज़ामी ॥

(मुसल्मानो !) यह लोग तुम्हारे सामने अल्लाह की क़स्में खा रहे हैं, जिस से कि तुमको प्रसन्न कर लें (और तुम्हारे दिल में रसूलुल्लाह को कष्ट पहुँचाने के कारण जो इनकी ओर से दुःख व क्रोध है, उसे दूर कर दें)। यद्यपि अल्लाह और उसका रसूल ज़ियादा हक़दार हैं कि यदि यह ईमानदार हैं, तो उन्हें प्रसन्न रक्खें ॥ क्या इन्हें इस (बात) की भी ख़बर नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल (के हुक्म) के विरुद्ध करता है, तो उसके लिये नर्क की (दहकती हुई) आग है। जिसमें वह सदैव (सदैव पड़ा) रहेगा। (और) यह—

الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ۝ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُونَ أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ
سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ اسْتَهْزِءُوا
إِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَا تَحْذَرُونَ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ
لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللّٰهِ
وَآيٰتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ۝ لَا تَعْتَذِرُوا
قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمٰنِكُمْ ۚ إِنْ نَعْفُ عَنْ طَائِفَةٍ
مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝
الْمُنٰفِقُونَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ ۘ يَأْمُرُونَ
بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ
أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ هُمُ
الْفٰسِقُونَ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِينَ وَالْمُنٰفِقٰتِ
وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ
وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُقِيمٌ ۝ كَالَّذِينَ

बड़ी ही रुस्वाई (की बात) है ० मुनाफ़िक़ (इस बात से भी) डरते हैं कि (मबादा) ख़ुदा की तरफ़ से मुसलमानों पर (पैग़म्बर के ज़रिये से) ऐसी सूरत नाज़िल हो कि जो कुछ इनके दिलों में है, मुसलमानों को जता बता दे। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि (अच्छा) हँसो, जिस बात से तुम डर रहे हो, उसको तो ख़ुदा ज़ाहिर ही करके रहेगा ० और (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम इन लोगों से पूछो (कि यह क्या हरकत थी) तो वह ज़रूर यही जवाब देंगे कि हम तो यूँही बातें चीतें और हँसी मज़ाक़ कर रहे थे। (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि तुमको हँसी भी करनी थी, तो ख़ुदा ही के साथ और उसी की आयतों और उसी के रसूल के साथ ० बातें न बनाओ, हक़ तो यह है कि तुम ईमान लाये पीछे काफ़िर हो गये। अगर हम तुम में से बाज़ों के क़ुसूर माफ़ भी करदें, ताहम दूसरों को ज़रूर सज़ा देंगे कि (असल में) वही क़ुसूर-वार थे ० मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक के हम जिन्स एक; बुरे काम (करने) की (लोगों को) सलाह दें और भले कामों (के करने) से मना करें और (ख़ुदा की राह में ख़र्च करने का वक़्त आये, तो) अपनी मुट्ठियाँ भींच भींच लें। (हक़ीक़तुल हाल यह है कि) इन लोगों ने अल्लाह को भुला दिया, तो (उसके बदले में गोया) अल्लाह ने भी इनको भुला दिया। कुछ शक नहीं कि मुनाफ़िक़ (बड़े ही) सर्कश हैं ० मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों के हक़ में ख़ुदा ने दोज़ख़ की आग का क़रार-दाद कर लिया है कि यह लोग हमेशा (हमेश) उसमें रहेंगे। (और) वही इनको बस करती है, और ख़ुदा ने इनको फिटकार दिया है। और इनके लिये अज़ाब दायमी है०—

(बहुत) बड़ी दुर्दशा (व कष्ट की बात) है ॥

मुनाफ़िक़ (दिल ही दिल में) डरते (रहते) हैं कि कहीं मुसल्मानों पर (ख़ुदा के रसूल के द्वारा) ऐसी सूरत न उतर आवे कि (इस्लाम का विरोध करने के विषय में) जो कुछ उनके दिलों में (छिपा हुआ) है—उसे बतादे। (सो ऐ रसूल !) तुम (उनसे) कहदो कि (मुनाफ़िक़ो !) तुम (धर्म का) मज़ाक़ उड़ाने (और बेहूदा बकवास) में लगे रहो। जिस (बात) का तुमको खटका लगा हुआ है, अल्लाह तआला तो उसे अवश्य प्रकट करेगा ॥

और (ऐ रसूल !) यदि तुम इनसे (इनके मज़ाक़ उड़ाने के विषय में) पूछोगे, तो (यह साफ़ मुकर जायँगे और) कहेंगे कि हम तो केवल (आपस में) बोल चाल रहे थे और दिल बहला रहे थे। (ऐ रसूल !) तुम (इनसे) पूछो कि क्या (तुम दिल बहला रहे थे या) अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल का मज़ाक़ उड़ा रहे थे ॥

(बिना कारण) बहाने न बनाओ। (हमें निश्चय हो चुका है) कि तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये (अर्थात् तुम अपने आप को सदाचारी कह कर कुफ़्र करने लगे)। अगर हम (तुम में से) किसी किसी को (उनके क़ुसूर की कमी या तौबा करने के कारण) क्षमा भी कर देंगे, तो कुछ को (तो अवश्य ही) अज़ाब देंगे। इस लिये कि वह (कट्टर) अपराधी हैं ॥

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक थैली के चट्टे बट्टे हैं। यह बुरे काम (करने) की (लोगों को) राय देते हैं और नेक कामों से (उन्हें) मना करते हैं। और (जब ख़ुदा के मार्ग में ख़र्च करने की ज़रूरत होती है, तो) अपने हाथों को रोक लेते हैं। (वास्तविक बात यह है कि) उन्होंने अल्लाह को भुला दिया (और उसकी आधीनता व आज्ञा पालन करने से ग़ाफ़िल हो गये)। सो अल्लाह तआला ने भी उन्हें भुला दिया। (और अपनी कृपा व शिक्षा से वञ्चित कर दिया)। निस्सन्देह (यह सारे के सारे) मुनफ़िक़ (चाहे मर्द हों या औरत, बड़े ही उद्दंड, अवज्ञाकारी और कुकर्मी व) दुष्ट हैं ॥

मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और (खुल्लम खुल्ला) कुफ़्र करने वालों से अल्लाह तआला ने नर्क की आग का वादा कर लिया (है। और उनसे कह दिया है) कि वह उसमें सदैव (सदैव पड़े) रहेंगे। (और) वह उन (की जानों) को (दुःख पहुँचाने के लिये एक) यथेष्ट (अज़ाब अर्थात् दण्ड) है। और अल्लाह तआला ने उनको (अपनी शरण से वञ्चित और) धिक्कारित (व अधम) कर दिया है। और (उन्हें कोई अस्थायी अज़ाब नहीं दिया जायगा, बल्कि) उनके लिये सदैव का अज़ाब है ॥

مِن قَبْلِكُمْ كَانُوٓا أَشَدَّ مِنكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَٰلًا
وَأَوْلَٰدًا فَٱسْتَمْتَعُوا۟ بِخَلَٰقِهِمْ فَٱسْتَمْتَعْتُم
بِخَلَٰقِكُمْ كَمَا ٱسْتَمْتَعَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُم
بِخَلَٰقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَٱلَّذِى خَاضُوٓا۟ أُو۟لَٰٓئِكَ
حَبِطَتْ أَعْمَٰلُهُمْ فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ وَأُو۟لَٰٓئِكَ
هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ ۝ أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۝ وَقَوْمِ إِبْرَٰهِيمَ وَأَصْحَٰبِ
مَدْيَنَ وَٱلْمُؤْتَفِكَٰتِ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ
فَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ۝ وَٱلْمُؤْمِنُونَ وَٱلْمُؤْمِنَٰتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ
بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِٱلْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ ٱلْمُنكَرِ
وَيُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَيُطِيعُونَ
ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥٓ أُو۟لَٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ ٱللَّهُ إِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ

(मुनाफ़िक़ो ! तुम्हरी भी वही मसल हुई) जैसी मसल तुमसे पहिलों की (हुई थी) कि वह तुमसे बहुत ज़ियादा ज़ोरावर थे और माल और औलाद भी (तुमसे) ज़ियादा रखते थे, तो वह अपने हिस्से के (दुनियावी) फ़ायदे उठा गये। सो तुमने भी अपने हिस्से के (दुनियावी) फ़ायदे उठाये, जैसे तुमसे पहिलों ने अपने हिस्से के (दुनियावी) फ़ायदे उठाये थे। और जैसी बातें वह लोग किया करते थे, लगे तुम भी वैसी ही बातें करने। यह (वह) लोग (थे कि) दुनिया और आख़िरत (दोनों) में उनका किया धरा (सब) अकारत हुआ। और यही नुक़सान में भी रहे, (सो मुनाफ़िक़ो ! तुम्हारा भी यही अन्जाम होना है) ० क्या इन (मुनाफ़िक़ों) को उन लोगों की ख़बर नहीं मिली, जो इनसे पहिले हो गुज़रे हैं। (यानी) नूह की क़ौम और आद और समूद ० और इब्राहीम की क़ौम और मदयन के लोग और उल्टी हुई बस्तियों (यानी देहात क़ौम लूत) के रहने वाले कि इन (सब) के पैग़म्बर इनके पास खुले हुये मोजिज़े लेकर आये (और उन्होंने एक न सुनी और मुब्तलाये अज़ाब इलाही हुये)। सो ख़ुदा तो इन पर काहे को ज़ुल्म करने लगा था, मगर यह लोग (ख़ुदा की नाफ़रमानी करके) आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे० और मुसल्मान मर्द और मुसल्मान औरतें एक के रफ़ीक़ एक कि (लोगों को) नेक काम करने की हिदायत करते और बुरे काम (करने) से रोकते और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलते हैं। यही लोग हैं, जिन (के हाल) पर अल्लाह अन्क़रीब रहम करेगा। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त—

(मुनाफ़िक़ो ! तुम्हारी दशा तो बिलकुल वैसा ही है) जैसी उन लोगों की थी, जो तुमसे पहिले (संसार में आये) थे। (और) जो बल (व शक्ति) की दृष्टि से तुमसे अधिक मज़बूत और धन व सन्तान की दृष्टि से (तुमसे कहीं) बढ़ चढ़ कर थे। उन्हों ने (संसार के आनन्द व सुख और विषय वासना में से) अपने भाग्य के अनुसार (काफ़ी) फ़ायदे उठाये (और अपना अन्त बिगाड़ लिया)। तुमने अपने भाग्य के (मज़े उड़ाये और) आनन्द प्राप्त किये (और अपने परलोक को ख़राब कर दिया अर्थात्) जिस तरह उन लोगों ने जो तुमसे पहिले थे, (दुनिया के मज़े उड़ाये और) फ़ायदे उठाये (और अपने परलोक को संसार पर न्योछावर कर दिया था। इसी तरह तुमने भी किया) और (कुफ़्र तथा असत्य की आधीनता में) जैसे वह लोग घुसे थे, वैसे ही तुम भी घुसे। यह सब (वह लोग) हैं, जिनके करतूत लोक व परलोक में (बिल्कुल असत्य और) निरर्थक (व निष्फल सिद्ध हुए) हैं और (जो) सारे (के सारे) हानि उठाने वाले हैं। (और चूँकि तुम्हारे आचरण बिलकुल उन्हीं कैसे हैं, इस लिये तुम्हारे कर्म भी निरर्थक सिद्ध होंगे और तुम भी उन्हीं के समान हानि उठाओगे) ॥

क्या इन (मुनाफ़िक़ों) को उन लोगों (के हलाक व बरबाद होने) की ख़बर नहीं हुई, जो उनसे पहिले हो चुके हैं ? (जैसे) नूह व आद व समूद की जाति, और इब्राहीम की जाति, और मदयन (स्थान) के रहने वाले (अर्थात् शुऐब की जाति) और उलटी हुई बस्तियों के रहने वाले (अर्थात् लूत की जाति की उन बस्तियों के रहने वाले, जिनकी पृथ्वी का तल लौट दिया गया था। यह सब वह लोग हैं) कि उनके पास उनके रसूल (अपनी सच्चाई के) स्पष्ट चिन्ह ले लेकर आये। (परन्तु उन लोगों ने उनका अल्लाह का सन्देशिया होना स्वीकार ही न किया और बराबर अल्लाह के आदेशों का विरोध करते रहे, जिसके कारण अन्त में बरबाद व नष्ट हुये)। अल्लाह तआ़ला को तो यह महिमा नहीं है कि वह उन पर ज़ुल्म करता। परन्तु यह लोग (अपने आचरणों से) अपनी जानों पर आप ही अत्याचार किया करते थे ॥

और ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें (आपस में) एक दूसरे के सहायक हैं। (यह) नेक काम (करने) की (लोगों को) सलाह देते हैं और बुरे काम से (उनको) रोकते हैं और (धार्मिक आदेशों का पूरा पूरा पालन करते हैं और) नमाज़ (को नमाज़ की तरह) पढ़ते हैं और ज़कात (निष्काम भाव से) अदा करते हैं और (हर बात में) अल्लाह और उसके रसूल के आज्ञाकारी रहते हैं। इन लोगों पर अल्लाह तआ़ला शीघ्र (अपनी) कृपा भेजेगा। निस्सन्देह अल्लाह तआ़ला महान (शक्ति और अत्यन्त) युक्तिवान है। (वह पापियों को घोर से घोर दुःख और नेक काम करने वालों को उत्तम से उत्तम फल देता है और प्रत्येक सुकर्मी व कुकर्मी का फ़ैसला अत्यन्त बुद्धिमानी व युक्ति से करता है) ॥

حَكِيْمٌ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً
فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ
وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝
يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ
وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ
وَمَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ
فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ
عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا
مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝
فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ

مُعْرِضُوْنَ

(और) साहब तदबीर है ० ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों से अल्लाह ने (बहिश्त के) बाग़ों का वादा कर लिया है, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी (और वह) उनमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे और (नीज़ अल्लाह ने उनसे) दायमी बहिश्त में उम्दा (उम्दा) मकानों का (वादा कर लिया है)। और ख़ुदा की ख़ुशनूदी (जो इनसे होगी, वह इन सब नेअमतों से) बढ़ कर। यही है, बड़ी (आला दर्जे की) कामयाबी ० ऐ पैग़म्बर! काफ़िरों (के साथ हथियार से) और मुनाफ़िक़ों (के साथ ज़बान) से जिहाद करो और इन पर सख़्ती करो (कि यह इस सख़्ती के मुस्तहिक़ हैं)। और (आख़िरकार) इनका ठिकाना दोज़ख़ है। और वह (बहुत ही) बुरी जगह है ० (यह मुनाफ़िक़) अल्लाह की क़समें खाते हैं कि हमने तो यह (बेजा) बात नहीं कही, हालाँकि ज़रूर उन्होंने कुफ़्र का कल्मा कहा और इस्लाम लाये पीछे काफ़िर हो गये और (पैग़म्बर के साथ) गुस्ताख़ियाँ करनी चाहीं, जिन पर इनको दस्तरस न हुआ। और यह लोग काहे पर बिगड़े ? इसी पर ना ! कि अपनी मेहर्बानी से अल्लाह ने और उसके रसूल ने इनको मालदार कर दिया। सो यह लोग अगर अब भी तौबा करें, तो इनके हक़ में बेहतर होगा और अगर न मानें, तो अल्लाह इनको दुनिया और आख़िरत में (बड़ा) दर्दनाक अज़ाब देगा और रूये ज़मीन पर न कोई इनका हामी होगा और न मददगार ० और इन (मुनाफ़िक़ों) में से कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिन्होंने ख़ुदा के साथ क़ौल किया था कि अगर वह अपने फ़ज़्ल से हमको (माल व दौलत) देगा, तो हम ज़रूर ख़ैरात किया करेंगे और ज़रूर (ख़ुदा के) नेक बन्दे होकर रहेंगे ० फिर जब ख़ुदा ने उनको अपने फ़ज़्ल से (माल) अता फ़रमाया, तो लगे उसमें बुख़्ल करने। और सरताबी करके (अपने क़ौल से) फिर बैठे ०—

और अल्लाह ने (मुनाफ़िक़ों के विरुद्ध) ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों से ऐसे बाग़ों का वादा कर रक्खा है, जिनके नीचे नहरें बहती हैं कि उनमें वह सदैव रहेंगे। और अच्छे (अच्छे) मकानों का (वादा कर रक्खा है) जो (उन) सदैव रहने वाले बाग़ों में (बने हुए) होंगे। और (वास्तविक बात यह है कि) अल्लाह की (साधारण) प्रसन्नता (भी) बहुत बड़ी (वस्तु) है (और) वही तो (बहुत) बड़ी सफलता है ॥

ऐ रसूल ! इन काफ़िरों से (तलवार व बर्छे से) और मुनाफ़िक़ों से (ज़बान की तलवार से) जिहाद करो और (जहाँ तक बन पड़े) इन लोगों पर सख़्ती करो। (संसार में तो इनकी सज़ा यही है) और (प्रलय में) इनका ठिकाना नर्क है और वह (बहुत) बुरा स्थान है ॥

यह (मुनाफ़िक़ लोग बड़े झूठे हैं। यदि इनसे इनकी किसी असभ्यता-पूर्ण बात तथा बेहूदा इरादों के विषय में उत्तर माँगा जाता है, तो साफ़ मुकर जाते हैं और) अल्लाह की क़समें खा जाते हैं। (और कहते हैं) कि हमने (यह बात कभी) नहीं कही (और यह इरादा कभी नहीं किया)। यद्यपि वह कुफ़्र (और गुस्ताख़ी) का कलमा (वाक्य) उन्होंने (अवश्य) कहा और (अपने आप) इस्लाम (प्रकट करने) के बाद (प्रकट रूप से भी) काफ़िर हो गये। और उन्होंने वह (क़त्ल का) इरादा (भी अवश्य) किया था, जिस तक उनकी पहुँच (और जिसमें उन्हें सफलता प्राप्त) नहीं हुई। और यह उन्होंने केवल इसका बदला लिया है कि अल्लाह और उसके रसूल ने अपनी मेहर्बानी से (ज़कात व ख़ैरात और ग़नीमत के माल में से रक़में दे देकर) उन्हें मालदार कर दिया। (अर्थात् अल्लाह और रसूल ने तो उनके साथ हमेशा मेहर्बानी व कृपा का व्यवहार किया और यह उसके अनुग्रहीत होने के बजाय ऐसे बेहूदा इरादे और असभ्यता-पूर्ण आचरण करते हैं)। सो यदि यह (ही) लोग (अपनी करतूतों से) बाज़ आ जाएँ, तो यह इनके लिये बहुत अच्छा है और अगर यह (अब भी अल्लाह और उसके रसूल से) फिरे रहे, तो अल्लाह तआला उन्हें लोक व परलोक में सख़्त अज़ाब देगा और (सारी) दुनिया में न कोई उनका रक्षक (निकलेगा) और (न) सहायक होगा, (जो इन्हें उसके अज़ाब से बचा ले) ॥

और इनमें से कुछ ऐसे भी हैं, जिन्होंने अल्लाह तआला से वादा किया था कि अगर वह अपनी मेहर्बानी से हमको (सम्पत्ति) प्रदान करेगा, तो हम (फिर) अवश्य (ज़कात व) ख़ैरात देंगे और (फिर) हम (अवश्य) नेक (भी) हो जायँगे। सो जब अल्लाह तआला ने उनको अपनी मेहर्बानी से (माल) प्रदान किया, तो (यह अपना वादा बिल्कुल भूल गये और) उसमें कृपणता करने लगे। (यहाँ तक कि ज़कात तक की रक़म उनकी गाँठ से न निकली)। और (अल्लाह की आधीनता से) विमुख होते हुए (यह अपने वचन व प्रतिज्ञा से) फिर गये * ॥

* टीका—यह घटना सालबा नामक एक मनुष्य की है, जो रसूलुल्लाह के पास अपनी कंगाली की शिकायत लेकर आया था और प्रतिज्ञा की थी, कि यदि आप की प्रार्थना से धनवान हो जाऊंगा, तो ख़ूब दान पुण्य करूंगा और बिलकुल सदाचारी बन जाऊंगा। रसूलुल्लाह ने उत्तर दिया कि मैं तेरे लिये प्रार्थना करूंगा, परन्तु तू कदापि अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण नहीं करेगा। सो ऐसा ही हुआ। इस आयत में उसी घटना का वर्णन है :—हसन-निज़ामी ॥

مُعْرِضُوْنَ ۝ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِیْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰی یَوْمِ یَلْقَوْنَهٗ
بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ ۝
اَلَمْ یَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ
عَلَّامُ الْغُیُوْبِ ۝ اَلَّذِیْنَ یَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِیْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِیْنَ فِی الصَّدَقٰتِ وَالَّذِیْنَ لَا یَجِدُوْنَ اِلَّا
جُهْدَهُمْ فَیَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۝ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ
تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِیْنَ مَرَّةً فَلَنْ یَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی
الْقَوْمَ الْفٰسِقِیْنَ ۝ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ یُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِی الْحَرِّ ؕ
قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا یَفْقَهُوْنَ ۝

४

तो नतीजा यह हुआ कि उस दिन तक कि ख़ुदा से मिलेंगे (यानी रोज़ क़यामत तक) ख़ुदा ने उनके दिलों में निफ़ाक़ पैदा कर दिया। इसलिये कि उन्होंने जो ख़ुदा से वादा किया था, उसको पूरा न किया और (नीज़) इस लिये कि झूठ बोला करते थे ० क्या उन्होंने इतना भी न समझा कि अल्लाह इनके भेदों को और इनकी सरगोशियों को जानता है। और यह कि अल्लाह ग़ैब की बातों से भी ख़ूब आगाह है ० यह (मुनाफ़िक़) ही तो हैं कि मुसलमानों में जो लोग (बा मक़दूर हैं और) ख़ुश दिली से ख़ैरात करते हैं, उन पर (रियाकारी का) ऐब लगाते हैं। और जो लोग अपनी मेहनत (की कमाई) के सिवा (ज़ियादा का) मक़दूर नहीं रखते (और उस पर भी जो मुयस्सर आता है, ख़ुदा की राह में देने को मौजूद हो जाते हैं)—उन पर (नाहक़ की शेख़ी का) ऐब लगाते हैं। ग़रज़ उन (सब) पर हँसते हैं। सो अल्लाह इन मुनाफ़िक़ों पर हँसता है। और इनके लिये अज़ाब दर्दनाक (तय्यार) है ० (ऐ पैग़म्बर !) तुम इनके हक़ में मग़फ़िरत की दुआ करो या इनके हक़ में मग़फ़िरत की दुआ न करो (इनके लिये यक्साँ है)। अगर तुम सत्तर दफ़ा भी इनके लिये मग़फ़िरत की दुआ करोगे, तो ख़ुदा हरगिज़ इनकी मग़फ़िरत नहीं करेगा। यह उनके इस फ़ेल की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया। और अल्लाह (ऐसे) सर्कश लोगों को (तौफ़ीक़) हिदायत नहीं दिया करता ० जो (मुनाफ़िक़ उनके अपने इसरार से) पीछे छोड़ दिये गये, वह रसूल ख़ुदा (की राय) के ख़िलाफ़ अपने (घरों में) बैठ रहने से बहुत ख़ुश हुये। और राह ख़ुदा में अपनी जान व माल से जिहाद करना उनको नागवार हुआ। और (लोगों को भी) समझाने लगे कि (ऐसी) गरमी में (घर से) न निकलना। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि गरमी तो आतिश दोज़ख़ की बहुत सख़्त है। ऐ काश ! इनको (इतनी) समझ होती ०—

अतएव अल्लाह तआला ने भी प्रलय तक के लिये उनके दिलों में द्वेष (और भेद भाव का बीज) डाल दिया। इस कारण कि उन्होंने अल्लाह तआला से जो वादा किया था, उसके (सरासर) विरुद्ध किया और इस कारण कि वह (हर बात में) झूठ बोला करते थे ॥

(यह मुनाफ़िक़ लोग, जो हर बात में झूठी २ क़स्में खाते हैं और अल्लाह से झूठे २ वादे करते हैं और मुनाफ़िक़त व कुफ़्र और अल्लाह व रसूल की शत्रुता को अपने दिल में छिपाये बैठे हैं, तो) क्या यह (इतना) नहीं समझते कि अल्लाह तआला उनके (दिलों के) भेद और उनकी (आपस की) काना फूसी से (ख़ूब) वाक़िफ़ है। और (क्या) यह (इतना नहीं सोचते) कि अल्लाह तआला अदृष्ट (की सारी बातों) को ख़ूब अच्छी तरह जानता है ॥

(यह मुनाफ़िक़) वह लोग हैं, जो उन (मालदार) मुसलमानों पर तो, जो नफ़्ल * का दान देते हैं, उनके दान देने में (देखावे का दान बताकर) दोष लगाते हैं। और वह (मुसलमान) जो अपने परिश्रम (व उद्योग की कमाई) के अतिरिक्त (अपनी जेब में) और कुछ नहीं पाते (और फिर भी अल्लाह की राह में ख़ैरात करते हैं) तो उनसे यह लोग मज़ाक़ करते हैं। (अर्थात् दिखावा व प्रसिद्ध चाहने का दोष लगाने के अतिरिक्त इनको ग़रीब जान कर और ज़ियादा छेड़ते हैं और उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं। ख़ैर, यह तो उन पर हँसते और उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं और) अल्लाह तआला इन (मुनाफ़िक़ों की बुरी दशा) पर हँसता है। और उनके लिये एक सख़्त अज़ाब या दण्ड (उसके यहाँ बिलकुल तैयार) है ॥

* टीका—जो दान अल्लाह की ओर से नियत न हो, उसको यदि कोई भलाई के कारण करे, तो उसे नफ़्ल कहते हैं:—हसन निज़ामी ॥

(ऐ रसूल !) तुम उनके लिये क्षमा चाहो या न चाहो (सब निरर्थक है)। अगर तुम उनके लिये सत्तर † बार भी क्षमा चाहोगे, तब भी अल्लाह तआला उन्हें क्षमा नहीं करेगा। यह इस लिये कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया। और न अल्लाह तआला उन कुकर्मियों को हिदायत देगा ॥

† टीका—अर्थात् तुम चाहे इन मुनाफ़िक़ों की क्षमा के लिये कितनी बार दुआ माँगो, स्वीकृत न होगी। सत्तर से अभिप्राय यह नहीं है कि इकहत्तर बार अगर दुआ की जाय, तो क्षमा कर दिये जायँगे:—हसन निज़ामी ॥

यह (मुनाफ़िक़) जो (अपनी बहाने बाज़ी से तबूक के धर्म-युद्ध में नहीं गये और) पीछे छोड़ दिये गये—रसूलुल्लाह (की इच्छा) के विरुद्ध अपने (घरों में) बैठे रहने (और धर्म-युद्ध में सम्मिलित न होने और अपनी बहाने बाज़ी के चल जाने) से (बहुत) ख़ुश हुए (और उन्होंने ख़ूब ठट्ठे लगाये)। और उन्होंने अल्लाह की राह में अपनी जान व माल से जिहाद करने को बुरा समझा। और उन्होंने (दूसरों को भी रोकने की कोशिश की और उनसे) कहा कि (ऐसी) गर्मी में (घर से) न निकलो। तो (ऐ रसूल ! तुम इनसे) कहो कि नर्क की आग (इस से) बहुत (अधिक) गर्म है। क्या अच्छा होता, यदि तुम (भी इतना) समझते ॥

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَّلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۞ فَإِن رَّجَعَكَ اللَّهُ إِلَىٰ طَائِفَةٍ مِّنْهُمْ
فَاسْتَأْذَنُوكَ لِلْخُرُوجِ فَقُل لَّن تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا
وَلَن تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُم بِالْقُعُودِ
أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ ۞ وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰ
أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ إِنَّهُمْ
كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَاسِقُونَ ۞
وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ
أَن يُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ
كَافِرُونَ ۞ وَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ وَ
جَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو الطَّوْلِ
مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُن مَّعَ الْقَاعِدِينَ ۞ رَضُوا
بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ

لَا يَفْقَهُونَ

तो (एक दिन होगा कि) यह लोग हँसेंगे कम और रोयेंगे बहुत ।(और यह) बदला (होगा) उन आमाल का, जो (दुनिया में) किया करते थे ० तो (ऐ पैग़म्बर !) अगर ख़ुदा तुमको (जिहाद पर से) इन मुनाफ़िक़ों के किसी गिरोह की तरफ़ (सही सलामत) लौटा कर ले जाय और (फिर कभी यह लोग जिहाद के लिये) निकलने की तुमसे इजाज़त चाहें, तो तुम (उस वक़्त इनसे) कह देना कि तुम न तो कभी मेरे साथ (जिहाद के लिये) निकलोगे और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ोगे। (चूँकि) तुम पहिली मर्तबा (घरों में) बैठने से राज़ी हुये, अब भी फिसड्डियों के साथ (घरों में) बैठे रहो० और (ऐ पैग़म्बर !) अगर इनमें से कोई मर जाय, तो तुम हरगिज़ उस (के जनाज़े) पर नमाज़ न पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर (जाकर) खड़े होना, (क्योंकि) उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और यह सर्कशी ही की हालत में मर गये० और इनके माल और इनकी औलाद तुम्हारे लिये मूजिबत तअज्जुब न हों (कि फिर यह दुनियावी बरकत इनके हाँ क्यों है। हाँ यह दुनियावी बरकत इस लिये है कि) बस ख़ुदा चाहता है कि माल और औलाद की वजह से इनको दुनिया में मुब्तलाये अज़ाब रक्खे और इनकी जान निकाले और यह (उस वक़्त भी) काफ़िर ही हों ० और (ऐ पैग़म्बर !) जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है (और उसमें हुक्म होता है) कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ होकर जिहाद करो, तो (जो) इनमें से साहब मक़्दूर हैं, (वही) तुमसे इजाज़त माँगने लगते हैं और कहते हैं कि हम को (यहीं) छोड़ जाओ कि (दूसरे) बैठने वालों के साथ हम भी (घरों में बैठे) रहें ० इनको औरतों के साथ जो पीछे (घरों में बैठी) रहा करती हैं (पीछे बैठ) रहना पसन्द आया। और इनके दिलों पर मुहर करदी गई, तो यह लोग—

(अब) तो (यह मुनाफ़िक़ जितना चाहें हँस लें और खुश होलें, लेकिन एक दिन ऐसा आने वाला है कि) यह लोग (अपनी) उन (करतूतों) के बदले जो यह (दुनिया में) करते थे, हँसेंगे कम और रोयेंगे बहुत ॥

(ऐ रसूल ! अब तो तुमको इनकी वास्तविकता अच्छी तरह मालूम हो गई होगी)। अतएव (अब) अगर तुम (इस धर्म युद्ध से लौट कर) इनके किसी दल की ओर जा निकलो (और तुमको किसी नए धर्म युद्ध की आवश्यकता प्रतीत हो) तो (अगर) यह (पिछली अकीर्ति दूर करने के लिये इस समय तुम्हारे साथ) चलने की आज्ञा तुमसे माँगें, तो तुम (उस समय उनसे साफ़ साफ़) कह देना, कि तुम न तो (कहीं) मेरे साथ कदापि (किसी धर्म युद्ध के लिये घर से) निकलोगे और न कदापि कभी मेरे साथ किसी शत्रु से लड़ोगे। तुम (तो वही हो ना ! कि जिन्हों) ने पहिली वार (अपने घर में) बैठे रहने को पसन्द किया, तो तुम (अब भी उन्हीं) पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो ॥

(ऐ रसूल ! अगर) इनमें से कोई मर जाय, तो तुम कभी उस (के जनाज़े अर्थात् अर्थी) की नमाज़ न पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर (जाकर) खड़े होना। (क्योंकि) उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और (उसी अवज्ञा व उद्दण्डता व कुकर्म व) दुराचार की दशा में प्राण छोड़े ॥

और (ऐ रसूल !) तुमको इनका धन और इनकी सन्तान विस्मित (और चकित) न करें। (जिन वस्तुओं को तुम पुरस्कार समझे हु हो, वह इनके लिये पुरस्कार नहीं हैं—बल्कि ख़ुदाई अज़ाब हैं)। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनको इस (धन व सन्तान) के द्वारा संसार में (भी) अज़ाब (ही) दे और उनकी जानें कुफ़्र ही की दशा में निकलें (और प्रलय में भी यह नर्क का ईंधन बनें) ॥

और (ऐ रसूल) जब कोई सूरत उतारी जाती है (और उसमें लिखा होता है) कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ (होकर ख़ुदा के मार्ग में) जिहाद करो (और कोई अवसर उस पर अमल करने का आ जाता है) तो उनमें (जो कमज़ोर लोग हैं, उनका तो कहना ही क्या है) जो ताक़तवर (और हट्टे कट्टे) हैं (वह तक) तुमसे आज्ञा माँगने लगते हैं और कहते हैं कि (अपाहिज होकर घर में) बैठने वालों के साथ हमें (भी हमारे घरों ही में) छोड़ दो ॥

(यह-वह साहस हीन हैं कि) इनको पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ (जो मर्दों के जाने के बाद पीछे घरों में बैठी रहती हैं-घरों में बैठ) रहना पसन्द आया। (उन्होंने तो अपनी हालत यह की) और अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर मोहर (ही) कर दी कि यह—

لَا يَفْقَهُونَ ۝ لَٰكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ
الْخَيْرَاتُ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ
لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ
سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝
لَّيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا عَلَى
الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا
لِلَّهِ وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِن سَبِيلٍ وَاللَّهُ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ
لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوا وَّ
أَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا

ع

(जिहाद की मस्लहतों का कुछ) नहीं समझते ० लेकिन रसूल और जो उनके साथ (अल्लाह पर) ईमान लाये हैं, (इन सब ने) अपनी जान व माल से (खुदा की राह में) जिहाद किये। यही लोग हैं, जिनके लिये (दुनिया और आख़िरत की सब) ख़ूबियाँ हैं और (आख़िरकार) यही फ़लाह पाने वाले हैं ० इनके लिये अल्लाह ने (बहिश्त के) बाग़ तय्यार कर रक्खे हैं, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी। (और यह) उनमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे (और) यही बड़ी कामयाबी है ० और (ऐ पैग़म्बर !) देहातियों में से (भी कुछ) बहाना बाज़ (तुम्हारे पास) उज्र करते हुये आये, ताकि उनको (भी पीछे रह जाने की) इजाज़त दी जाय। और जिन लोगों ने (इस्लाम का ग़लत दावा करके) अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोला था, वह (घर ही) बैठे रहे (आये तक भी नहीं। सो ऐ पैग़म्बर !) इनमें से जिन्होंने कुफ़्र किया, अन्क़रीब उनको अज़ाब दर्दनाक पहुँचेगा ० (ऐ पैग़म्बर !) कमज़ोरों पर कुछ गुनाह नहीं और न बीमारों पर और न उन लोगों पर, जिनको ख़र्च मुयस्सर नहीं, बशर्ते कि (जिहाद से पीछे बैठे रह कर भी) अल्लाह और उसके रसूल की ख़ैर ख़्वाही में लगे रहें। (इन) नेकोकारों पर कोई इल्ज़ाम नहीं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और न उन लोगों पर (किसी तरह का इल्ज़ाम है) कि जिस वक़्त वह तुम्हारे पास (दर्ख़्वास्त लेकर) आये कि तुम उनके लिये सवारी बहम पहुँचा दो। तो तुमने (उनको) जवाब दिया कि मेरे पास तो कोई (सवारी) मौजूद नहीं कि तुमको उस पर सवार कर दूँ। (यह सुन कर वह लोग अपनी जगह) लौट गये और ख़र्च मुयस्सर न आने के ग़म के मारे उनकी आँखों से आँसू जारी थे०—

(जिहाद की विशेषताओं को समझना तो दूर रहा, अपनी किसी बुराई भलाई को भी) नहीं जानते ॥

लेकिन रसूल और उनके साथ जो (उन पर और अल्लाह पर) ईमान ले आये (वह इन मुनाफ़िक़ों की तरह टेढ़ी बुद्धि के नहीं हैं)। उन्होंने (उस सूरत के हुक्म के आगे मस्तक झुका दिया और) अपनी जान व माल से जिहाद किया और (सेवकाई का कर्त्तव्य पूरा किया)। यही वह (लोग) हैं, जिनके लिये (दीन व दुनिया की) भलाइयाँ हैं और (अन्त में) यही भलाई पाने वाले हैं ॥

अल्लाह तआला ने उनके लिये (अपने यहाँ) ऐसे (ऐसे) बाग़ बना रक्खे हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं (और) जिनमें (यह) सदैव रहेंगे। (और) यह (मनुष्य के लिये एक बहुत) बड़ी सफलता है ॥

और (शहरी मुनाफ़िक़ों ने तो इस तबूक के धर्म-युद्ध में सम्मिलित न होने की आज्ञा माँगी ही थी। इस अवसर पर) कुछ बहाने बनाने वाले देहाती (मुनाफ़िक़) भी आये, ताकि उन्हें भी (धर्म युद्ध में शरीक न करने और घर में बैठने वाली स्त्रियों की तरह घरों में बैठे रहने की) आज्ञा देदी जाय। और (इनमें से) वह लोग, जिन्होंने (अपने ऊपरी इस्लाम को भी न निबाहा और खुल्लम खुला तौर पर) अल्लाह और उसके रसूल को झूठा बताया, वह (तो बिना आज्ञा ही अपने घरों में) बैठ रहे—(मगर बच कर कहाँ जायँगे)। अभी इनमें से (जिन) जिन लोगों ने कुफ़्र किया (है) उन्हें (शीघ्र एक) सख़्त अज़ाब होगा ॥

(ईमानदार हों या शहरी हों या देहाती, उनमें से) निर्बलों पर कुछ दोष नहीं। और न रोगियों और न उन लोगों पर, जिन्हें (लड़ाई का सामान एकत्रित करने के लिये) ख़र्च नहीं मिलता, बशर्ते कि वह अल्लाह और उसके रसूल के शुभ चिन्तक रहें। (और किसी दशा में भी मुनाफ़िक़ों का अनुकरण न करें)। इन नेकी करने वालों पर (अपराध व पाप लागू होने का) कोई कारण नहीं है। और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है ॥

और न उन लोगों पर (कुछ पाप है) कि जिस समय वह (निर्धनता के हाथों तंग होकर जिहाद के शौक़ में) तुम्हारे पास (दौड़े) आये। (इस अभिप्राय से) कि तुम उनके लिये सवारी का प्रबन्ध करदो (और अपने साथ ले चलो)। तो तुमने (अपनी विवशता के कारण उनसे) कह दिया कि मेरे पास तो कोई सवारी नहीं है, जिस पर मैं तुमको सवार करदूँ। तो वह (तुम्हारा यह निराश करने वाला उत्तर सुन कर) इस शोक में कि उनके पास (इतना भी) ख़र्च नहीं (कि अपने लिये एक सवारी ख़रीद लें)—अपनी आँखों से आँसुओं (की लड़ियाँ) बहाते हुए (तुम्हारे पास से असफल) लौटे ॥

يَعْلَمُونَ ۞ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ
وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَ
طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۞ يَعْتَذِرُونَ
إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ قُلْ لَا تَعْتَذِرُوا لَنْ نُؤْمِنَ
لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ وَسَيَرَى اللَّهُ
عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَى عَالِمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۞ سَيَحْلِفُونَ
بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا
عَنْهُمْ إِنَّهُمْ رِجْسٌ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۞ يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنْ تَرْضَوْا
عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَى عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۞
الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا
حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۞

इलज़ाम तो (हक़ीक़त में) उन ही लोगों पर है, जो मालदार होते साते तुमसे (पीछे रह जाने की) इजाज़त चाहते हैं। इनको औरतों के साथ जो (उमूमन) पीछे (घरों में बैठी) रहा करती हैं, (पीछे बैठ) रहना पसन्द हुआ। और अल्लाह ने इनके दिलों पर मुहर लगादी है, तो यह (लोग जिहाद की मस्लहतों को) नहीं समझते ० (मुसल्मानो !) जब तुम (जिहाद से लौट कर) मुनाफ़िक़ों के पास वापिस जाओगे, तो (यह लोग) तुम्हारे सामने (तरह तरह के) उज़्र पेश करेंगे। (तो ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कह देना कि बातें न बनाओ, हम (मुसल्मान) किसी तरह तुम्हारा एतिबार करने वाले नहीं। और अभी तो अल्लाह अल्लाह तुम्हारे (सब) हालात हमको बता चुका है। और अभी तो अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे किर्दार को देखेंगे। फिर (आख़िरकार) तुम उस (क़ादिर मुतलक़) की तरफ़ लौटाये जाओगे, जो हाज़िर व ग़ायब (दोनों) को जानता है। फिर जो कुछ तुम (दुनिया में) करते रहे हो (वह सब) तुम को बता देगा ० (मुसल्मानो !) जब तुम (जिहाद से) लौट कर इनके पास वापिस जाओगे, तो यह लोग ज़रूर तुम्हारे आगे ख़ुदा की क़स्में खायेंगे, ताकि तुम इनसे दर गुज़र करो। तो तुम इनको मुंह न लगाना, क्योंकि यह लोग गन्दे हैं। और (आख़िरकार) इनका ठिकाना दोज़ख़ है। (और यह) उसका बदला (होगा) जो (दुनिया में) करते थे ०। यह तुम्हारे आगे क़स्में खाएंगे, ताकि तुम इनसे राज़ी हो जाओ। सो अगर तुम इनसे राज़ी (भी) हो जाओ, तो अल्लाह इन नाफ़र्मान लोगों से राज़ी होने वाला नहीं ० देहात के लोग कुफ़्र और निफ़ाक़ में बड़े सख़्त हैं और जिहालत की वजह से इसी लायक़ हैं कि ख़ुदा ने जो अपने रसूल पर किताब उतारी है, उसके अहकाम (कुछ) समझें बूझें नहीं और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है ०—

अतः अपराध तो उन्हीं लोगों पर है, जो मालदार (और पुष्ट शरीर) होते हुए भी तुमसे (धर्म–युद्ध में शरीक न होने की) आज्ञा मांगते हैं। (यह–वह निर्लज्ज लोग हैं कि) इनको पीछे रह जाने वाली स्त्रियों के साथ (जो मर्दों के जाने के बाद पीछे घरों में बैठी रहती हैं–बैठ) रहना पसन्द आया। (उन्होंने तो अपनी हालत यह की) और अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर मोहर (ही) कर दी कि यह (धर्म युद्ध व जिहाद की विशेषताओं को तो क्या—अपनी किसी बुराई भलाई को भी) नहीं जानते ॥

(मुसल्मानो !) जब तुम (लड़ाई ख़त्म करके) इन (बहाना बनाने वाले मुनाफ़िक़ों और लड़ाई से भागने वालों) के पास वापिस जाओगे तो यह तुम्हारे सामने (तरह तरह के) उज़्र पेश करेंगे (और कहेंगे कि हम इन इन कारणों से तुम्हारे साथ युद्ध में सम्मिलित न हो सके) ॥

तो (ऐ रसूल !) तुम (उस समय उनसे) कह देना कि (बस) बातें न बनाओ। हम (मुसल्मान) तुम्हारा (और तुम्हारी झूठी बातों का) विश्वास करने वाले नहीं। अल्लाह तुम्हारे (सब) वृतान्त हमको बता चुका है ॥

और अभी अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे कर्मों को (और) देखेगा (और तुम्हें इस बात का अवसर देगा कि तुम अपनी अवस्थाओं को ठीक कर लो)। फिर (अन्त में) तुम (सब) उसी की ओर लौटाये (ही) जाओगे, जो (हर) खुली ढकी बात का जानने वाला है। सो (उस समय) वह तुमको तुम्हारी करतूतें (और तुम्हारी गुप्त बातें इस तरह) बता देगा (कि तुमको बहाने की गुन्जाइश ही न मिलेगी) ॥

(और मुसल्मानो !) जब तुम उनके पास वापिस जाओगे, तो यह (तुम्हें अपनी असमर्थता का विश्वास दिलाने के लिये) तुम्हारे सामने अल्लाह की सौगन्ध खायेंगे। ताकि तुम उनके दुराचरणों को क्षमा करो ॥

तो तुम (भी) उनको उनकी हालत पर छोड़ दो (और उनसे कोई सम्बन्ध न रक्खो)। यह अपवित्र लोग हैं और इनका ठिकाना नर्क है। (और यही) उन कर्मों का बदला है, जो वह (संसार में) करते थे ॥

यह तुम्हारे सामने सौगन्धें (इस लिये) खायेंगे, ताकि तुम उनसे प्रसन्न हो जाओ (और उनके साथ मित्रता का सम्बन्ध स्थिर रक्खो) ॥

तो (मान लो) यदि तुम इनसे प्रसन्न (भी) हो जाओ, तो (भी) अल्लाह तआला (तो) इन दुष्टों से प्रसन्न नहीं (हो सकता) ॥

(और यह) गंवार कुफ़्र व छल कपट में (शहरी मुनाफ़िक़ों से भी) ज़्यादा सख़्त हैं (क्योंकि यह उनसे अधिक मूर्ख) और (पढ़े लिखों की संगत से कोसों दूर हैं)। और (इस लिये वह शहरियों के मुक़ाबले में) इसकी बहुत कम पात्रता रखते हैं कि वह उन आज्ञाओं को समझ सकें, जो अल्लाह तआला ने अपने रसूल पर उतारी हैं। और अल्लाह तआला (समस्त सुसाधकताओं को) जानने वाला और बड़ा बुद्धिमान है। (उन लोगों की इस दशा में भी अल्लाह की कुछ युक्ति है) ॥

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ
بِكُمُ الدَّوَآئِرَ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ۝ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ
الرَّسُوْلِ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ
رَحْمَتِهٖ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَالسّٰبِقُوْنَ
الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ
بِاِحْسَانٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ذٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ
مُنٰفِقُوْنَ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ
لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ
يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ۝ وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا

ع

और देहातियों में से कुछ लोग (ऐसे भी) हैं कि उनको (.खुदा की राह में) जो ख़र्च करना पड़ता है, उसको (नाहक़ की) चट्टी समझते और तुम मुसल्मानों के हक़ में (ज़माने की) गर्दिशों के मुन्तज़िर हैं। (सो) इन ही पर (ज़माने की) गर्दिश बद (का असर) पड़े। और अल्लाह (सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० और देहातियों में से कुछ ऐसे (भी) हैं, जो अल्लाह और रोज़ आख़िरत का यक़ीन रखते और जो कुछ (राह .खुदा में) ख़र्च करते हैं, उसको .खुदा की जनाब के तक़र्रुब और रसूल की दुआओं का ज़रिया समझते हैं। सो सुन रक्खो, हक़ीक़त में वह (ख़र्च करना) उनके लिये (मूजिब) .कुर्बत है भी कि ज़रूर (मरे पीछे) अल्लाह उनको अपनी रहमत में ले लेगा। बेशक, अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और मुहाजिरीन और अन्सार में से, जिन लोगों ने (इस्लाम के क़बूल करने में) सबक़त की (और) सबसे पहिले (ईमान लाये) और (नीज़) वह लोग, जो इनके बाद .खुलूस दिल से दाखिल ईमान हुए–.खुदा उनसे .खुश और वह .खुदा से .खुश। और .खुदा ने उनके लिये (बहिश्त के ऐसे) बाग़ तय्यार कर रक्खे हैं, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी। (और यह) उनमें हमेशा हमेशा रहेंगे (और) यही बड़ी कामयाबी है ० और (मुसल्मानो !) तुम्हारे आस पास के देहातियों में से (बाज़) मुनाफ़िक़ हैं। और .खुद मदीने के रहने वालों में से (भी) जो निफ़ाक़ पर अड़े बैठे हैं। (ऐ पैग़म्बर !) तुम इनको नहीं जानते, हम इनको (ख़ूब) जानते हैं। सो अभी तो हम (दुनिया में) इनको दोहरी मार देंगे। फिर (आख़िरकार क़यामत में) बड़े (सख़्त) अज़ाब की तरफ़ लौटाये जायँगे ० और (कुछ) और लोग हैं, जिन्होंने अपनी ख़ता का इक़रार किया—

और (उनमें से) कोई २ गंवार तो ऐसे (मूर्ख) हैं कि जो कुछ (.खुदा के मार्ग में) ख़र्च करते हैं, उसे (अपने ऊपर एक) दंड (और जुर्माना सा) समझते हैं। और तुम मुसल्मानों के लिये (साँसारिक) आपत्तियों की बाट जोहते रहते हैं (कि कब तुम पर विपत्ति आये और कब उन्हें इस कर व दंड से मुक्ति प्राप्त हो) ॥

(इन मूर्खों को नहीं मालूम है कि) बुरा वक़्त तो (स्वयं) उन्हीं पर पड़ने वाला है। (और इन मुनाफ़िक़ाना हरकतों से यह अपने आप को तबाही की ओर ले जा रहे हैं)। और अल्लाह तआला (उनकी सब बातों को) सुनता (और सारी दशाओं को) जानता है ॥

और इन ग्राम वासियों में से कुछ ऐसे (भी) हैं, जो अल्लाह और प्रलय के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ (.खुदा के मार्ग में) व्यय करते हैं, उसे अल्लाह तआला के समीप पहुँचने के लिये और (उसके) रसूल की दुआएँ प्राप्त करने का साधन जानते हैं ॥

तो सच मुच उनका (.खुदा के मार्ग में इस प्रकार प्रेम के साथ) ख़र्च करना, उनके लिये (.खुदा को प्राप्त करने का एक अच्छा उपाय) है। अल्लाह तआला अवश्य उनको अपनी दया (की गोद) ही में लेगा। अल्लाह बड़ी क्षमा और दया वाला है ॥

और जिन लोगों ने (ऐ रसूल !) सब से पहिले (तुम्हारे साथ देश छोड़े और मदीने के वह लोग, जिन्होंने तुम्हारी सहायता करने में) पहिल की अर्थात देश त्यागने वाले मुहाजिरीन और अन्सार, और (वह लोग) जिन्होंने (शुभ वचन व कर्म और) शुद्ध हृदय के साथ उसका अनुकरण किया, उन (सब) से अल्लाह प्रसन्न हुआ और वह (अपने) अल्लाह से प्रसन्न हुये। और अल्लाह ने उन (सब) के लिये (अपने यहाँ ऐसे) बाग़ तैयार कर रक्खे हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं (और जो श्रेष्ठता व सुन्दरता में अद्वितीय हैं। यह लोग) उनमें सदैव २ रहेंगे। यह (एक बहुत) बड़ी सफलता है (जो ऐसे लोगों के अतिरिक्त किसी दूसरे को नसीब नहीं) ॥

और (मुसल्मानो !) कुछ तुम्हारे आस पास के ग्रामीण और कुछ मदीने के निवासी (यह) ऐसे (कट्टर) मुनाफ़िक़ हैं, जो अपने छल कपट पर अड़े हुए हैं (और किसी प्रकार अपनी दुरंगी रफ़्तार को छोड़ना नहीं चाहते। ऐ रसूल !) तुम इनसे अभिज्ञ नहीं। (यह जैसे हैं) हम ही इन्हें (ख़ूब) जानते हैं। हम इन्हें दो बार कष्ट (तो दुनिया और क़ब्र में) देंगे (और) फिर (क़ब्रों से उठाने के पश्चात् परलोक में) वह बड़े कठिन अज़ाब की ओर भेजे जायँगे ॥

और (मुसल्मानो ! तुम में) कुछ (ऐसे लोग भी) हैं, जिन्होंने (मुनाफ़िक़ों की भाँति पाप तो किये, परन्तु उन पर अड़े नहीं। बाद में) अपने पापों को स्वीकार कर लिया—

بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ
أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ خُذْ مِنْ
أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ
عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَوٰتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ
وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝
وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ
وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم
بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَآخَرُونَ مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ اللَّهِ
إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝
وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا
بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
مِن قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ يَشْهَدُ

(और उन्होंने) मिले जुले अमल किये— कुछ) भले और कुछ बुरे। सो अजब नहीं कि अल्लाह उनकी (भी) तौबा क़बूल करले, क्योंकि अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० (ऐ पैग़म्बर ! यह लोग अपने माल की ज़कात दें, तो) इनके माल की (भी) ज़कात ले लिया करो कि ज़कात के क़बूल करने से तुम इनको (गुनाहों से) पाक व साफ़ करते हो। और इनको दुआये ख़ैर दो, क्योंकि तुम्हारी दुआ इनके लिये तस्कीन (की मूजिब होती) है। और अल्लाह (सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० क्या इन लोगों को इसकी ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता और वही ख़ैरात (का माल) लेता और अल्लाह ही बड़ा तौबा क़बूल करने वाला मेहर्बान है ० और (ऐ पैग़म्बर ! इनको) समझा दो कि तुम (अपनी जगह) अमल करते रहो, सो अभी तो अल्लाह तुम्हारे अमलों को देखेगा और अल्लाह का रसूल और मुसल्मान (भी देखेंगे)। और ज़रूर (मरे पीछे) तुम उस (क़ादिर मुतलक़) की तरफ़ लौटाये जाओगे, जो ग़ायब और हाज़िर (सब कुछ) जानता है। फिर जो कुछ तुम (दुनिया में) करते रहे हो, वह तुमको उस (की हक़ीक़त) से आगाह कर देगा० और (कुछ) और लोग हैं कि हुक्म ख़ुदा के इन्तिज़ार में उनका मामिला मुल्तवी है, (उसको इख़्तियार है) कि या तो उनको अज़ाब दे और या उनकी तौबा क़बूल करे। और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है ० और (एक क़िस्म के मुनाफ़िक़ वह भी हैं) जिन्होंने इस ग़रज़ से एक मस्जिद बना खड़ी की कि (मुसल्मानों को) नुक़्सान पहुंचायें। और (ख़ुदा व रसूल के साथ) कुफ़्र करें। और मुसल्मानों में फूट डालें। और उन लोगों को पनाह दें, जो अल्लाह और उसके रसूल के साथ पहिले लड़ चुके हैं। और (पूछा जायगा, तो) क़समें खाने लगेंगे कि हमने तो भलाई के सिवा और किसी क़िस्म का इरादा किया नहीं। और अल्लाह गवाही देता है—

ربع

(और उन पर लज्जित भी हुये*) और उन्होंने मिले जुले काम किये–(कुछ) अच्छे और कुछ बुरे। (निरी बुराइयाँ ही बुराइयाँ नहीं कीं। सो) आशा है कि अल्लाह तआला उनकी तौबा क़बूल करले। निस्सन्देह अल्लाह तआला क्षमा करने वाला मेहर्बान है ॥

* टीका—यह कथा उन मुसल्मानों की है, जो मुनाफ़िक़ों की देखा देखी रसूलुल्लाह के साथ तबूक के धर्म युद्ध में नहीं गये थे। परन्तु बाद में अपनी इस बात पर बहुत लज्जित हुये। और मसजिद में जाकर अपने शरीरों को मसजिद के थमों से बाँध दिया। और सौगन्ध खाली कि जब तक रसूलुल्लाह अपने हाथ से हमें न खोलेंगे, हम यूंही बँधे २ मर जायँगे। उस पर यह आयत उतरी और रसूलुल्लाह ने ख़ुद इनके बन्धन खोल दिये और इनको क्षमा कर दिया:—हसन निज़ामी ॥

(ऐ रसूल !) तुम (और मुसल्मानों की तरह अब) इन (लोगों) के धन में से (भी) ज़कात ले लो, कि उसके लेने से तुम इन्हें (इनके पापों से और इनके धन को मैल कुचैल से) शुद्ध व पवित्र कर दोगे। और तुम उनके लिये (शुभ) प्रार्थना किया करो, क्योंकि तुम्हारी दुआ उनके लिये शान्ति (व सान्त्वना का कारण होती) है। और (जिस तरह अल्लाह ने उनकी सुनी और उनकी आधीनता व लज्जा को देख लिया, उसी तरह) अल्लाह तआला (हर एक की दुआ) सुनने वाला (और हालत) जानने वाला है† ॥

† टीका—अपनी स्वाधीनता और तौबा के स्वीकृत हो जाने की ख़ुशी में यह लोग कुछ ज़कात, जो इनके ज़िम्मे वाजिब थी, लेकर रसूलुल्लाह की सेवा में उपस्थित हुए। रसूलुल्लाह को उसके क़बूल करने में कुछ संकोच हुआ। तब यह आयत उतरी और रसूलुल्लाह ने उनसे वह रक़म क़बूल फ़रमाई:—हसन निज़ामी ॥

क्या उन लोगों को यह नहीं मालूम कि अपने बन्दों की तौबा अल्लाह तआला ही क़बूल करता है और (उनकी) ज़कातें वह (स्वयं) ही लेता है। और (क्या वह यह नहीं जानते) कि अल्लाह ही बहुत बड़ा तौबा क़बूल करने वाला (और अपने बन्दों की हालत पर) मेहर्बानी करने वाला है ॥ और (ऐ रसूल !) तुम (उनसे) कह दो कि (अब तो जो कुछ होना था, वह हो चुका। परन्तु भविष्य में ऐसा न करना)। काम करो (और यह ध्यान रक्खो) कि अभी अल्लाह तआला तुम्हारे कर्मों को देखेगा और उसका रसूल और संयमी लोग (भी तुम पर दृष्टि रक्खेंगे)। और (यह विश्वास रक्खो कि मरने के बाद) तुम अवश्य उस (अल्लाह) की ओर लौटाये जाओगे, जो (हर) खुली ढकी (बात) जानता है। तो वह तुमको जो कुछ (भी) तुम (संसार में बुरा भला) कर रहे हो (सब) बता देगा (और तुम्हें तुम्हारे कर्मानुसार फल व दण्ड देगा) ॥

और (ऐ रसूल ! यह तो उनका ज़िक्र था, जिनकी तौबा स्वीकार कर ली गई। परन्तु) कुछ (ऐसे) लोग हैं कि उनका फ़ैसला अल्लाह के हुक्म पर निर्भर है। (उसे इख़्तियार है) चाहे उन्हें अज़ाब दे या उनकी तौबा स्वीकार करे। और अल्लाह तआला जानने वाला बुद्धिमान है। (वह जैसा मुनासिब समझेगा, फ़ैसला कर देगा) ॥

और (मुनाफ़िक़ों में कुछ ऐसे) लोग हैं कि उन्होंने (मुसल्मानों को) हानि पहुंचाने और (ख़ुदा व रसूल के साथ) कुफ़्र (व विद्रोह) करने और ईमानदारों में फूट डालने और जो अल्लाह और उसके रसूल से पूर्व लड़ चुका है, उसे आश्रय देने के लिये (एक) मसजिद बना डाली। और (यदि उनसे कहा जाय कि अमुक २ उद्देशों को पूरा करने के लिये तुमने मसजिद बनाई है, तो साफ़) सौगंधें खा जायँगे (और कहेंगे) कि (उसके बनाने से) भलाई के अतिरिक्त हमारा और कोई उद्देश नहीं है। और अल्लाह साक्षी है—

إِنَّهُمْ لَكَٰذِبُونَ ۝ لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى
التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَن تَقُومَ فِيهِ فِيهِ رِجَالٌ
يُحِبُّونَ أَن يَتَطَهَّرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ ۝ أَفَمَنْ
أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَم مَّنْ
أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي
نَارِ جَهَنَّمَ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّٰلِمِينَ ۝ لَا يَزَالُ
بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَن تَقَطَّعَ
قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَٰلَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَٰتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَىٰةِ
وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْءَانِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ
فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُم بِهِ وَذَٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ التَّٰئِبُونَ الْعَٰبِدُونَ الْحَٰمِدُونَ

कि यह ज़रूर झूठे हैं ० (सो ऐ पैग़म्बर !) तुम उस (मसजिद) में कभी (जाकर) खड़े भी न होना। हां वह मसजिद, जिसकी बुनियाद शुरू दिन से परहेज़गारी पर रक्खी गई–उसका अलबत्ता हक़ है कि तुम उसमें खड़े हो (कर इबादत किया करो। क्योंकि) उसमें ऐसे लोग हैं, जो ख़ूब साफ़ सुथरे रहने को पसन्द करते हैं। और अल्लाह ख़ूब साफ़ सुथरे रहने वालों को पसन्द फ़र्माता है ० भला जो शख़्स .ख़ुदा के ख़ौफ़ और उसकी .ख़ुशनूदी पर अपनी इमारत की बुनियाद रक्खे, वह बेहतर या वह, जो फुस फुसे खोखले कगारे के किनारे पर अपनी इमारत की बुनियाद रक्खे। फिर वह (इमारत धराम से) उसको जहन्नम की आग में ले गिरे। और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता ० यह इमारत जो इन लोगों ने बनाई है, इसकी वजह से इन लोगों के दिलों में हमेशा धुकड़ पुकड़ रहेगी। यहाँ तक कि (आख़िरकार इस इमारत के गिरा दिये जाने से) इनके दिलों के टुकड़े टुकड़े हो जायँ। और अल्लाह (सब का हाल) जानने वाला (और) साहब तदबीर है ० अल्लाह ने मुसल्मानों से उनकी जान और उनके माल (इस वादे पर) ख़रीद लिये हैं कि उनके बदले उनको जन्नत (देगा। यह लोग जान व माल की पर्वाह न करके) अल्लाह के रस्ते में लड़ते हैं। (और लड़ते हैं) तो (दुश्मनों को) मारते और (आप भी) मारे जाते हैं। यह .ख़ुदा का पक्का वादा है, जिसका पूरा करना उसने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है। (और यह वादा) तौरात और इन्जील और .क़ुर्आन (सब) में (लिक्खा हुआ मौजूद है)। और .ख़ुदा से बढ़ कर अपने क़ौल का पूरा और कौन हो सकता है। तो (मुसल्मानो !) अपने (इस) सौदे की, जो तुमने .ख़ुदा के साथ किया है, .ख़ुशियाँ मनाओ। और यह (मामला जो तुमने .ख़ुदा के साथ किया है, इसमें तुम्हारी) बड़ी कामयाबी है ० (यही लोग हैं, जिनमें इतनी सिफ़तें हैं)। तौबा करने वाले इबादत गुज़ार (.ख़ुदा की) हम्द (व सना) करने वाले—

वह (अपने इस दावे में) बिल्कुल झूठे हैं। (इसके बनाने से उनका इरादा नेकी और भलाई का कदापि नहीं है, वरन् वही उपरोक्त बातें अभीष्ट हैं)॥ (और यह मुनाफ़िक़, जो तुमसे हठ करते हैं कि मसजिद .क़ुबा को छोड़ कर इस मसजिद में आकर नमाज़ पढ़ो, तो ऐ रसूल !) तुम उसमें (जाकर) खड़े तक न होना। (यह भी कोई मसजिद में मसजिद है)। मसजिद वह है, जिसकी नीव प्रारम्भ के दिन से ही संयमता (परहेज़गारी) पर रक्खी गई है (जैसे मसजिद .क़ुबा)। वही इस योग्य है कि तुम उसमें (नमाज़ व उपासना के लिये जाकर) खड़े हो। उसमें ऐसे लोग हैं, जो शुद्ध और पवित्र रहना पसन्द करते हैं। और अल्लाह तआ़ला पवित्र मनुष्यों से (ही) प्रेम रखता है॥

(मुसल्मानो !) भला वह मनुष्य उत्तम है, जिसने अपने (कर्मों के भवन की) नीव अल्लाह के भय और (उसकी) प्रसन्नता पर रक्खी है–या वह मनुष्य, जिसने अपने (भवन की) नीव (एक) गिरने वाले खोखले कराड़े के किनारे पर रक्खी है ? कि फिर वह उसको लेकर नर्क की आग में ढे पड़े। और अल्लाह तआ़ला (ऐसे) अत्याचारियों को (कभी) हिदायत नहीं देता॥

यह इमारत, जो उन्होंने बनाई है (उसकी तरफ़ से) इनके दिलों में हमेशा (एक) परेशानी ही रहेगी। यहाँ तक कि उनके दिल (जो उन की विपति व परेशानी के द्वार व केन्द्र हैं) टुकड़े २ न हो जायँ। (अर्थात् वह मरते समय तक इसी मुसीबत व परेशानी में लिप्त रहेंगे और हमेशा कहेंगे कि हाय अफ़सोस ! कि क्या सोचा था और क्या हो गया)। और अल्लाह तआ़ला जानने वाला युक्ति वाला है। (उसका दण्ड उनके कर्मों के बिल्कुल अनुकूल होगा *)॥

* टीका—मुनाफ़िक़ों ने एक साज़िश (षडयन्त्र) की थी कि रसूलुल्लाह की मसजिद .क़ुबा के मुक़ाबिले में एक नई इमारत बनाई थी, ताकि रसूलुल्लाह के शत्रु उसमें एकत्रित होकर रसूलुल्लाह और मुसल्मानों को हानि पहुँचाने का प्रबन्ध किया करें। उस पर यह आयत उतरी और रसूलुल्लाह ने उस नई मसजिद को हुक्म देकर गिरवा दिया:—हसन निज़ामी॥

(जैसा कि अल्लाह तआ़ला इन कुकर्मियों को उनके बुरे कर्मों का दंड देगा, उसी तरह) निश्चित रूप से अल्लाह तआ़ला ने ईमानदारों से उन के जान व माल को स्वर्ग (जैसी अमूल्य वस्तु) के बदले में ख़रीद लिया है। (अर्थात्) यह (ईमानदार) अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते (और अपना माल धन ख़र्च करते) हैं। (और अल्लाह तआ़ला उसके बदले में उन्हें स्वर्ग प्रदान करता है)। अतएव यह (अल्लाह की प्रसन्नता के लिये काफ़िरों को) मारते हैं। और (ख़ुद भी उनके हाथ से) मारे जाते हैं। (अर्थात् .ख़ुदा के मार्ग में .ख़ुशी २ सिर कटाते हैं। अल्लाह ने इन ईमानदारों से जान व माल निछावर करने और काफ़िरों के साथ जिहाद करने पर स्वर्ग प्रदान करने का बिल्कुल पक्का और) सच्चा वादा (किया है। और इसका पूरा करना) उसके ज़िम्मे है। (और इस वादे का ज़िक्र) तौरेत, इन्जील, .क़ुर्आन (समस्त आस्मानी पुस्तकों) में (मौजूद) है॥

और अल्लाह से ज़ियादा अपने वादे का निबाहने वाला (और प्रतिज्ञा का सच्चा) कौन हो सका है ? (कोई नहीं)। इस लिये (मुसल्मानो !) ऐसे सौदे पर, जो तुमने अल्लाह के साथ किया है (ख़ूब) .ख़ुशियाँ मनाओ। और (इस बात को अच्छी तरह जान लो कि तुम्हारा) यह (जीवन क्षणिक है और तुम्हारा माल व असबाब मिटने के लिये है। इस असार और अस्थायी वस्तुओं के बदले सदैव २ के लिये स्वर्ग का मिल जाना) बहुत बड़ी सफलता (की वस्तु) है॥ यही (लोग पापों से) तौबा करने वाले, उपासक (व संयमी सन्तोषी व) कृतज्ञ—

السّٰٓئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ
بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ
لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ● مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا
اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ●
وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ
وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ۗ
اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ● وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا
بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ● اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ
يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۗ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ
وَّلَا نَصِيْرٍ ● لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ
وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ

بعد

(ख़ुदा की राह में) सफ़र करने वाले, रुकूअ़ करने वाले, सज्दा करने वाले (यानी नमाज़ गुज़ार, लोगों को) नेक काम की सलाह देने वाले और बुरे काम से मना करने वाले और अल्लाह ने जो हद्दें बांध दी हैं, उनके निगाह रखने वाले। और (ऐ पैग़म्बर ! ऐसे) मुसल्मानों को ख़ुश ख़बरियां सुना दो ० जब पैग़म्बर और मुसल्मानों को मुश्रिकीन का दोज़ख़ी होना (ख़ुदा के फ़र्माने से) मालूम हो गया, तो (अब) उनको ज़ेबा नहीं कि ऐसे लोगों की मग़फ़िरत की दुआयें मांगा करें। गो वह (उनके) क़राबत दार (ही क्यों न) हों ० और (वह जो) इब्राहीम ने अपने बाप के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ मांगी थी, सो (वह) एक वादे (की वजह) से (मांगी थी) जो इब्राहीम ने अपने बाप से कर लिया था, कि उनको (भी) जब मालूम हो गया कि यह दुश्मन ख़ुदा है, तो बाप से (मुत्लक़न) दस्त बर्दार हो गये। बेशक इब्राहीम अलबत्ता बड़े नर्म दिल (और) बुर्दबार थे ० और अल्लाह की शान से बईद है, कि एक क़ौम को हिदायत दिये पीछे गुमराह क़रार दे—ता वक़्ते कि उनको वह चीज़ें न बता दे, जिनसे वह बचते रहें। बेशक अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है ० बेशक आस्मान और ज़मीन की बादशाहत अल्लाह ही की है। (वही) जिलाता और (वही) मारता है। और मुसल्मानों !) अल्लाह के सिवा न तो तुम्हारा कोई हामी है और न कोई मददगार ० अलबत्ता ख़ुदा ने पैग़म्बर पर बड़ा ही फ़ज़्ल किया और (नीज़) मुहाजिरीन और अन्सार, जिन्होंने तङ्ग दस्ती के वक़्त में पैग़म्बर का साथ दिया—

(और ख़ुदा के मार्ग में दूर २) फिरने वाले, रुकूअ़ करने वाले, मस्तक नवाने वाले (अर्थात् नमाज़ अदा करने वाले, लोगों को) अच्छी बात की राय देने वाले और बुरी बात से रोकने वाले और अल्लाह की (नियत की हुई) सीमाओं के रक्षक (अर्थात् उसकी आज्ञाओं पर दृढ़ता से अमल करने वाले) हैं। और (ऐ रसूल !) तुम (इन सुकर्म करने वालों और) ईमान्दारों को (स्थायी सुख का) मंगल समाचार सुना दो ॥

नबी और (नबी पर) ईमान लाने वालों को (कदापि यह) मुनासिब नहीं कि वह मुश्रिकों के वास्ते क्षमा चाहें। चाहे वह (उनके कैसे से कैसे प्रिय व) सम्बन्धी (क्यों न) हों। (विशेषतया) इस (बात) के स्पष्ट (और निश्चित) हो जाने के बाद कि वह नार्कीय हैं ॥

और इब्राहीम का अपने (मुश्रिक) बाप के लिये क्षमा चाहना केवल (उस) वादे के कारण था, जो उन्होंने अपने बाप से कर लिया था। (लेकिन) फिर (भी) जब उन्हें (अच्छी तरह) प्रकट हो गया कि (उनका) पिता ख़ुदा का शत्रु है (और वह कुफ़्र ही की हालत में मर जायगा और मरने के बाद नर्क में जायगा) तो वह उससे (बिल्कुल) अलग हो गये। निस्सन्देह इब्राहीम बहुत नर्म दिल (और) कोमल (हृदय और प्रतिज्ञा के सच्चे) थे ॥

और अल्लाह तआ़ला ऐसा नहीं करता कि किसी जाति को हिदायत देने के बाद पथ भ्रष्ट करे, जब तक कि उन पर वह बातें न प्रकट करदे, जिनसे वह बचते रहें। निस्सन्देह अल्लाह तआ़ला हर बात को अच्छी तरह जानता है। (उसे यह भी ख़बर है कि किसी को किसी बात के जायज़ या नाजायज़ होने का बिना हमारे बताये हुए ज्ञान नहीं हो सक्ता) ॥

(लोगो !) पृथ्वी व आकाश का राज्य अल्लाह ही का है। वही (तुमको) जिलाता है और वही मारता है। (तुम्हें मारने वाला और जिलाने वाला और तुम पर हर प्रकार का अधिकार) और (इख़्तियार रखने वाला) अल्ला . . . । उस) के सिवाय (पृथ्वी व आकाश में) न कोई तुम्हारा मित्र है, न सहायक। (अतएव तुमको चाहिये कि उसकी प्रत्येक आज्ञा को अमल के योग्य समझो) ॥

अल्लाह तआ़ला ने नबी पर और (उन) देश त्यागने वाले और सहायता करने वालों पर (बड़ी) कृपा की, जिन्होंने (तबूक के धर्म-युद्ध जैसे) कठिन समय में (नबी का साथ न छोड़ा और) उसकी आज्ञा का पालन किया। जब कि—

अब कि इनमें से बाज़ के दिल डिगमिगा चले थे। फिर उसीने इन पर (भी) अपना फ़ज़्ल किया (कि इनको सँभाल लिया)। इसमें शक नहीं कि .खुदा इन सब पर निहायत दर्जे मेहर्बान (और इनके हाल हर अपनी) मेहर रखता है ० और (अला हाज़ल क़यास) उन तीन (शख़्सों) पर भी, जो (बइन्तिज़ार हुक्म .खुदा) मुल्तवी रक्खे गये थे। यहाँ तक कि जब ज़मीन बावजूद फ़राख़ी उन पर तंगी करने लगी और वह अपनी जान से भी तंग आ गये और समझ गये कि .खुदा (की गिरिफ़्त) से उसके सिवा और कहीं पनाह नहीं। फिर .खुदा ने उनकी तौबा क़बूल करली, ताकि (क़बूल तौबा के शुक्रिये में आयन्दा के लिये भी) तौबा किये रहें। बेशक, अल्लाह बड़ा ही तौबा क़बूल करने वाला मेहर्बान है ० मुसलमानो! .खुदा (के ग़ज़ब) से डरो और सच बोलने वालों के साथ रहो ० अहले मदीना और इनके गिर्दनवाह के देहातियों को मुनासिब न था कि रसूल .खुदा (के साथ) से पीछे रह जायँ, और न यह (मुनासिब था) कि रसूल की जान की पर्वाह न करके अपनी जानों की फ़िक्र में पड़ जायँ। यह इस लिये कि इन (जिहाद करने वालों) को .खुदा की राह में प्यास और मेहनत और भूख की तकलीफ़ पहुँचती है तो, और जिन मक़ामात पर काफ़िरों को इन का चलना नागवार गुज़रता है, वहाँ चलते हैं तो, और दुश्मनों से (कभी) कुछ मिल मिला रहता है तो, (ग़रज़ तकलीफ़ और राहत दोनों हालतों में) हर हर काम के बदले (.खुदा के यहाँ) इनका अमल नेक लिक्खा जाता है। बेशक अल्लाह .खुलूस (दिल से इस्लाम की ख़िदमत करने) वालों के अज्र को ज़ाए नहीं होने दिया करता ० —

بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ
عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ● وَعَلَى الثَّلَاثَةِ
الَّذِينَ خُلِّفُوا حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ
بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنفُسُهُمْ وَظَنُّوا
أَن لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ
لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ● يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ● مَا كَانَ
لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُم مِّنَ الْأَعْرَابِ أَن
يَتَخَلَّفُوا عَن رَّسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِ
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ
وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَئُونَ مَوْطِئًا
يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا إِلَّا
كُتِبَ لَهُم بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ●

ع

उनमें से एक समूह के हृदय (विपत्ती के बड़े २ सामान और अपनी असहायता, गर्मी की अधिकता और संकट मय यात्रा को देख कर सत्य के मार्ग से) भटक चले थे। फिर (यह) उन पर अल्लाह ही ने (अपनी) कृपा की (कि उन्हें सत्य मार्ग से भटकने और पथ-भ्रष्ट होने से बचा लिया। और रसूलुल्लाह की आज्ञा पालन करने पर दृढ़ रक्खा)। निस्सन्देह अल्लाह तआला इन (सब) पर अत्यन्त कृपा (और बड़ी) दया करने वाला है ॥

और (इसी तरह अल्लाह तआला) उन तीनों पर भी (मेहर्बान हो गया) जो (तौबा के स्वीकार होने और क्षमा मिलने के सम्बन्ध में अल्लाह की आज्ञा आने तक के लिये) पीछे (प्रतीक्षा में) छोड़ दिये गये थे। यहां तक कि जब पृथ्वी सविस्तार होते हुए भी उनके लिये संकुचित हो गई (अर्थात् जब उनके कष्ट का कोई अन्त न रहा) और वह अपने प्राणों से तंग आ गये * और उन्होंने जान लिया कि अल्लाह के अज़ाब (दंड) से (बचने के लिये) उसके (द्वार के) अतिरिक्त और कोई आसरा नहीं, तो फिर अल्लाह ने उनकी तौबा (पश्चाताप) स्वीकार करली। जिससे कि (जब कोई अपराध उनसे हो, तो) वह (इसी तरह उसका इक़रार करके उससे) तौबा कर लिया करें। निस्सन्देह अल्लाह तआला बड़ा ही तौबा क़बूल करने वाला (और तौबा करने वालों के हाल पर) मेहर्बान है ॥

* टीका—तीन मुसलमानों से उनके पापों के कारण सब मुसलमानों ने बोल चाल बन्द करदी थी और उन तीनों को इससे बड़ा कष्ट हो रहा था। जब यह आयत उतरी और उन तीनों की तौबा स्वीकार हो गई, तो मुसलमानों ने बोल चाल आरम्भ करदी :—हसन निज़ामी ॥

ऐ ईमानदारो! (संयमता व परहेज़गारी से अल्लाह तआला का पुरस्कार प्राप्त होता है। इस लिये तुम्हें चाहिये कि संयमता व त्याग ग्रहण करो। और प्रत्येक दशा में) अल्लाह तआला से डरते रहो और (जहाँ तक हो सके, ईमानदारों और) सच बोलने वालों के साथ रहो। (मुनाफ़िक़ों की तरह झूठ, छल, कपट अपना आचरण बनाकर नर्क में अपना घर न बनाओ) ॥

मदीने के लोग तथा उनके आस पास रहने वाले ग्राम वासियों को यह उचित न था कि रसूलुल्लाह (का साथ देने) से पीछे रह जायँ और अपनी जानों का ख़्याल करके रसूलुल्लाह की जान की परवाह न करें। (बल्कि उनका कर्तव्य तो यह था कि रसूलुल्लाह की आज्ञा पर प्राण निछावर कर देते और ऐसे समय पर अपनी कठिन से कठिन विपत्ति और बड़े से बड़े दुख को भूल जाते। और तबूक के स्थान पर रसूलुल्लाह के साथ जाकर अपनी हितैषिता और प्राण निछावर कर देने का भाव सिद्ध कर देते) ॥

(और) यह (केवल) इस लिये (ज़रूरी न था) कि (रसूल के प्रेम और अल्लाह की आधीनता करना आवश्यक था, बल्कि अपना लोक परलोक सुधारने के लिये भी इनका कर्तव्य था कि यह जिहाद करें। क्योंकि) इन (धर्म युद्ध करने वालों) को (बात बात पर पुण्य मिलता है। यहाँ तक कि उन्हें अल्लाह के मार्ग में) प्यास और थकन और भूख की तकलीफ़ पहुँचती है, जब भी, और जहाँ २ काफ़िरों को इनका चलना (फिरना) क्रोध में डालता है, वहाँ यह चलते हैं, जब भी। और इन अल्लाह रसूल के शत्रु काफ़िरों से कुछ ग़नीमत का माल इन्हें मिल जाता है, जब भी। (अभिप्राय यह है, दुख और सुख की दोनों दशाओं में) हर बात पर (इनके कर्मों की सूची में) एक शुभ कर्म लिखा जाता है। निस्सन्देह अल्लाह तआला (बड़ा न्यायकारी है। वह सच्चे दिल से) नेकी करने वालों के पुरस्कार (व फल) को नष्ट नहीं करता। (बल्कि अपनी कृपा व दया से उनकी नेकियों की मात्रा से कई गुणा अधिक पुण्य प्रदान कर देता है) ॥

وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا
يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ
أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ
لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ
طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ
إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا
فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝
وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ
زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ
إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم
مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ
كَافِرُونَ ۝ أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً

أَوْ مَرَّتَيْنِ

और (इसी तरह) थोड़ा या बहुत जो कुछ (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करते हैं, और जो मैदान उनको तै करने पड़ते हैं, यह सब (उनके नामए आमाल में) उनके नाम लिखा जाता है। ताकि अल्लाह इनको इनके आमाल का बेहतर से बेहतर बदला अता फ़र्मायें ० और (यह भी) मुनासिब नहीं कि मुसलमान सब के सब (अपने अपने घरों से) निकल खड़े हों (और मदीने में आ ठुसें)। ऐसा क्यों न किया कि उनकी हर एक जमाअ़त में से कुछ लोग (अपने घरों से) निकले होते कि दीन की समझ पैदा करते। और जब (सीख समझ कर) अपनी क़ौम में वापिस जाते, तो उनको (ना फ़र्मानी ख़ुदा से) डराते, ताकि वह लोग (भी बुरे कामों से) बचें ० मुसलमानो ! अपने आस पास के काफ़िरों से लड़ो और चाहिये कि वह तुम में करारापन मालूम करें (और किसी पर बेजा ज़ियादती न करो)। और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है, (जो ज़ियादती से) बचते हैं ० और जिस वक़्त कोई सूरत नाज़िल की जाती है, तो मुनाफ़िक़ों में से बाज़ लोग (एक दूसरे से) पूछने लगते हैं कि भला इस (सूरत) ने तुम में से किस का ईमान बढ़ा दिया ? सो जो (पहिले से) ईमान रखते हैं, इस (सूरत) ने उनका तो ईमान बढ़ाया और वह (अपनी जगह) ख़ुशियाँ मनाते हैं ० और जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का) रोग है, तो इस सूरत ने उनकी (पिछली) ख़बासत पर एक ख़बासत और बढ़ाई। और यह लोग कुफ़्र ही की हालत में मर गये ० क्या यह लोग (इतनी बात भी) नहीं देखते कि वह हर साल एक बार या दो बार मुब्तलाए मुसीबत होते रहते हैं—

और (इसी तरह) यह (जिहाद करने वाले) कम या ज़्यादा (अल्लाह के मार्ग में) जो कुछ भी ख़र्च करते हैं और (ख़ुदा की राह में आते जाते-जो) मैदान भी यह तै करते (और जितने पग यह धरते) हैं (इनमें से इनका एक २ पग और ख़र्च का एक २ पैसा ख़ुदा के यहाँ) लिख लिया जाता है। जिस से कि अल्लाह तआ़ला उनके (समस्त) कर्मों का अच्छे से अच्छा फल प्रदान करे॥

और (इमाम तथा समय के ख़लीफ़ा के सर्व साधारण आदेश के बिना) ईमानदारों को यह नहीं चाहिये कि (जिहाद के वास्ते सारे के) सारे (कूच कर बैठें और) निकल खड़े हों। (क्योंकि इसमें मुसलमानों का सरासर नुक़सान है)। अतएव ऐसा क्यों न कर लिया जावे कि इनके प्रत्येक (बड़े) दल में से एक समूह (लड़ाई में) जाया करे (और एक समूह रह जाया करे)। जिस से कि यह (घर पर रहे हुए समूह के) लोग धर्म में समझ (और ज्ञान) पैदा करें। और जिस से कि यह लोग अपनी जाति के (जिहाद करने वाले) लोगों को, जब वह इनके पास (जिहाद से) वापिस आवें, तो (धर्म की बातें सुनावें और ख़ुदा की अवज्ञा से इन्हें) भयभीत करें। कदाचित वह (अल्लाह रसूल की अवज्ञा से) बचें * ॥

* टीका—तबूक के धर्म युद्ध में जो लोग सम्मिलित नहीं हुए थे, उन पर अल्लाह ने बड़ा क्रोध प्रकट किया था। इससे सन्देह होता था कि जिहाद में सम्मिलत होना सदैव प्रत्येक मुसलमान का आवश्यक कर्त्तव्य है। अतएव इस आयत में इसी शंका का समाधान किया है:—हसन निज़ामी॥

ईमान्दारो ! जो काफ़िर तुम्हारे आस पास (रहते) हैं, उनसे लड़ो और (उनके साथ ऐसा बर्ताव रक्खो कि) जिस से वह तुम में कठोरता (व सबलता और शक्ति व जागृति) का अनुभव करें। और यह विश्वास कर लो कि अल्लाह तआ़ला (की सहायता संयमी) परहेज़गारों (और ईमान्दारों) के साथ है। (काफ़िर व मुनाफ़िक़ उससे बिल्कुल वञ्चित हैं। इस लिये तुमको उनसे दबने और डरने की आवश्यकता नहीं)॥

और (इन मुनाफ़िक़ों का तो बिल्कुल चरित्र ही बिगड़ गया है)। जिस समय (क़ुर्आन की) कोई सूरत (अल्लाह की तरफ़ से) उतारी जाती है, तो इनमें से कुछ लोग (इसका मज़ाक़ उड़ाते हैं। और अपने विचार में मुसलमानो ! तुमको लज्जित करने के लिये तुमसे) पूछते हैं कि इस (सूरत) ने तुम में से किस (किस) के ईमान को (दृढ़ और किस २ की धार्मिक तथा विश्वास शक्ति को) बढ़ाया ? तो (तुम इनको जवाब दो कि) जो ख़ुदा व रसूल पर ईमान रखते हैं, इस सूरत ने उनके ईमान को (तो वास्तव में दृढ़ और उनकी शक्ति को) बढ़ा दिया। और वह तो (इसके उतरने से अत्यन्त प्रसन्न और) प्रफुल्लित हो रहे हैं॥

(परन्तु) जिन लोगों के दिलों में (कुफ़्र व विद्वेष का) रोग (वर्तमान) है, इस (सूरत) ने (उन पर अच्छा प्रभाव न डाला, बल्कि) उनकी (आत्मिक) अशुद्धता पर कुछ अशुद्धता और बढ़ा दी। और (इनमें से जो लोग मरे भी, तो) वह कुफ़्र की दशा (व विद्रोह) ही में मरे (और अपनी आन्तरिक अशुद्धता और सत्य बात को ग्रहण करने की पात्रता नष्ट होने के कारण मरते समय तक क़ुर्आन की किसी सूरत से सुधार की ओर न आ सके)॥

क्या यह लोग इस (बात) को (भी) नहीं देखते कि वह प्रत्येक वर्ष में एक दो बार (किसी न किसी) आपत्ति में (अवश्य) फंसते हैं—

इस पर भी न तो तौबा ही करते हैं और न नसीहत ही पकड़ते हैं ० और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है, तो उनमें से एक की तरफ़ एक देखने लगता है। फिर (यह कह कर कि) कहीं तुमको कोई देखता तो नहीं (उठ कर) चल देते हैं। (यह लोग पैग़म्बर की मजलिस से क्या फिरे) अल्लाह ने इनके दिलों को (दीन हक़ से) फेर दिया। इस लिये कि यह ऐसे लोग हैं कि इनको मुतलक़ समझ नहीं ० (लोगो !) तुम्हारे पास तुम ही में के एक रसूल आये हैं। तुम्हारी तकलीफ़ इन पर शाक़ गुज़रती है। (और) इनको तुम्हारी बहबूद का हाका है, और मुसलमानों पर निहायत दर्जे शफ़ीक़ (और) मेहर्बान हैं ० इस पर भी यह लोग सर्ताबी करें, तो (ऐ पैग़म्बर ! इनसे साफ़) कहदो कि मुझको ख़ुदा बस करता है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं मैं उसी पर भरोसा रखता । और अर्श, जो (मख़लूक़ात में सब से) बड़ा है, उसका भी वही मालिक है ०

सूरत—यूनुस

मक्की यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें १०९ आयतें और ११ रुकूअ़ हैं॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रह्म वाला मेहर्बान (है) ० अलिफ़ लाम् रा ० यह ऐसी किताब की आयतें हैं, जिसमें (बड़ी बड़ी) माक़ूल बातें हैं ० क्या लोगों को इस बात से तअ़ज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं में से एक आदमी की तरफ़ इस बात की वही को कि लोगों को (अज़ाब ख़ुदा से) डराओ। और ईमान वालों को ख़ुश बरी सुनादो, कि उनके पर्वर्दिगार की बारगाह में उनकी बड़ी पायगाह है। काफ़िर (तो इस क़दर मुतअ़ज्जिब हुये कि) लगे कहने, हो न हो-यह (शख़्स) तो सरीह जादूगर है ० (लोगो !) तुम्हारा पर्वर्दिगार—

اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ۝ وَاِذَا
مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ هَلْ يَرٰىكُمْ
مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ
اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ
بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ
حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ
رَبُّ الْعَرْشِ سورة يونس مائة وتسع آيات الْعَظِيْمِ ۝
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
الٓرٰ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝ اَكَانَ لِلنَّاسِ
عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ
وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ
قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ رَبَّكُمُ

(देखते हैं, परन्तु) फिर (भी अपनी करतूतों से) बाज़ नहीं आते और शिक्षा ग्रहण नहीं करते॥

और जब कभी कोई सूरत उतारी जाती है (और यह मुनाफ़िक़ उस समय रसूलुल्लाह की सेवा में उपस्थित होते हैं) तो (उस समय उनकी विमुखता की यह दशा होती है कि रसूल की सेवा में उन्हें एक २ मिनिट व्यतीत करना कठिन हो जाता है। तुरन्त आपस में) एक दूसरे को देखने लगते हैं (और संकेतों द्वारा पूछते हैं कि यहाँ से खिसक चलने का अवसर है ?)। कोई (मुसलमान) तुमको देख तो नहीं रहा। फिर (अवसर पाकर वहाँ से अपने २ घर) पलट (ही) जाते हैं। (वहाँ ठहरते नहीं। यह लोग रसूलुल्लाह के दरबार से तो क्या फिरे) अल्लाह तआ़ला ही ने इनकी मूर्खता (व अज्ञानता) के कारण इनके दिलों को (सत्य के मार्ग से) पलट दिया॥

(लोगो !) तुम्हारे पास (अल्लाह की तरफ़ से) एक ऐसे रसूल आये हैं, जो तुम ही में के (एक मनुष्य) हैं। (और इतने दयालु हैं कि) जो दुःख तुम उठाते हो, उनके लिये (वह) असह्य (होता) है। (और वह हर समय और हर घड़ी) तुम्हारे (ही लाभ पहुंचाने के) विचार में डूबे रहते हैं। (विशेषतया) ईमान्दारों पर (तो) अत्यन्त हितैषिता करने वाले (और) मेहर्बान हैं॥

सो अगर यह (अभागे काफ़िर व मुनाफ़िक़ अब भी अल्लाह और उसके रसूल से) फिरे रहें, तो (ऐ रसूल !) तुम (इनसे) कह दो कि (मेरा तुम कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मेरी सहायता के लिये तो) अल्लाह मुझे (बहुत) काफ़ी है। उसके सिवाय कोई (रक्षक व सहायक और) उपासना के योग्य नहीं। मैं (तो) उसी पर भरोसा रखता हूँ। (क्योंकि वही मेरा भी मालिक है) और वही (समस्त सृष्टि व) महान आकाश का स्वामी है॥

सूरत—यूनुस

मक्की अर्थात् मक्के में उतरी। इसमें १०९ आयतें और ११ रुकूअ़ हैं॥

(ऐ रसूल !) यह (समस्त उपरोक्त और निम्न लिखित) आयतें (उस) युक्तिवाली किताब (अर्थात् श्रेष्ठ क़ुरआन) की हैं (जो बुद्धिमानी की बातों से माला माल है। और जिसे हमने तुम्हारी नुबूवत और तुम्हारे अल्लाह के सन्देशिया होने का एक स्पष्ट प्रमाण बनाकर तुम्हारे पास भेजा है)॥

क्या लोगों को इस बात से आश्चर्य हुआ कि हमने उनही में से एक मनुष्य (को अपना रसूल बनाया और उस) पर (बुद्धि के भंडार क़ुरआन को उतारा और यह) वही (ख़ुदा का सन्देश) भेजा कि तुम लोगों को (अल्लाह के अज़ाब से) डराओ। और ईमान लाने वालों को मंगल समाचार सुना दो कि उनके पालन कर्त्ता के यहाँ उनका बहुत बड़ा पद है। (तो यह बात तो बिलकुल आश्चर्य जनक नहीं। क्योंकि अल्लाह का नियम दीर्घ समय से इसी प्रकार प्रचलित है)। काफ़िर मूर्ख हैं, जो ऐ रसूल ! तुम्हारी नुबूवत व अल्लाह के संदेशिया होने को स्वीकार नहीं करते। और तुम्हारे विषय में) कहते हैं कि यह स्पष्ट जादूगर है॥

(लोगो ! इसमें) सन्देह न करो। (मुहम्मद तुम्हारे लिये रसूल बनाकर भेजे गये हैं। और) तुम्हारा पालन कर्त्ता—

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مَا مِنْ
شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ
اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۞ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا وَعْدَ اللّٰهِ
حَقًّا اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا
يَكْفُرُوْنَ ۞ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ
نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ
وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۞ اِنَّ فِى اخْتِلَافِ الَّيْلِ
وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا

ورضوا

वही अल्लाह है, जिसने छे दिन में आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया। फिर अर्श पर जा विराजा (कि वहीं से) हर एक अम्र का इन्तिज़ाम कर रहा है। (उसकी सर्कार में) कोई (किसी का) सिफ़ारिशी नहीं (हो सकता—मगर (हाँ) उसकी इजाज़त हुए पीछे। (लोगो!) यही अल्लाह तो तुम्हारा पर्वर्दिगार है, तो उसी की इबादत करो। क्या तुम ग़ौर को काम में नहीं लाते ० उसी की तरफ़ तुम सबको लौट कर जाना है। अल्लाह का (यह) वादा बरहक़ है। वही अव्वल बार मख़लूक़ को पैदा करता है, फिर (फ़ना हुए पीछे वही) उनको (क़यामत में) दुबारा ज़िन्दा करेगा। ताकि जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल भी किये, इन्साफ़ के साथ उनको (उनके किये का) बदला दे। और जो लोग कुफ़्र करते रहे, उनके लिये उनके कुफ़्र की सज़ा में पीने को खौलता हुआ पानी होगा और अज़ाब दर्दनाक (इसके अलावा) ० वही (क़ादिर मुत्लक़) है, जिसने आफ़ताब को चमकता हुआ बनाया और चांद को रोशन और उसकी मन्ज़िलें ठहराईं, ताकि तुम लोग बरसों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो ० यह (सब कुछ) ख़ुदा ने मस्लहत ही से बनाया है। जो लोग समझ रखते हैं, उनके लिये ख़ुदा (अपनी क़ुद्रत के) दलायल तफ़सील के साथ बयान फ़र्माता है ० जो लोग (ख़ुदा का) डर मानते हैं, उनके लिये रात और दिन के रद्दो बदल में, और जो कुछ ख़ुदा ने आस्मानों और ज़मीन में पैदा किया है, उसमें (ख़ुदा की क़ुद्रत की बहुतेरी ही) निशानियाँ (मौजूद) हैं ० जिन लोगों को (मरे पीछे) हमसे मिलने का खटका ही नहीं—

वही अल्लाह है, जिसने (इतने बड़े २) आस्मानों और (इतनी लम्बी चौड़ी) पृथ्वी को छ: दिन में बना डाला। फिर (हुक्म अहकाम जारी करने के लिये अपने शासन के) सिंहासन पर विराजमान हुआ। वह (शासक भी है और ज्ञानी भी)। प्रत्येक कार्य का (उचित) उपाय करता है। (उसकी अदालत में) उसके हुक्म के बिना कोई (किसी की) सिफ़ारिश नहीं कर सकता॥ (लोगो!) यही (महान शक्ति शाली) अल्लाह तुम्हारा पालने (पोसने) वाला है। अतएव तुम (को चाहिये कि संसार के पूज्यों से मुंह मोड़ कर) उसी की (आधीनता व) उपासना करो। क्या तुम (इतना समझने के बाद भी) नसीहत (व शिक्षा) ग्रहण नहीं करते॥

(और याद रक्खो! कि मरने के बाद) तुम सब को उसी (अल्लाह) की तरफ़ लौट कर जाना है। (और) अल्लाह का वादा (सदैव) सच्चा (हुआ करता) है। (और) सृष्टि (में से जो कोई पैदा होता है, उस) को पहिली बार भी वही पैदा करता है। फिर वही (जब चाहता है, उसे मार भी डालता है और जब चाहेगा, सब को एक दम मार के प्रलय कर देगा। फिर नये सिरे से) दूसरी बार उन्हें पैदा कर देगा। जिस से कि जो लोग (सांसारिक जीवन में) ईमान ले आये और ईमान लाने के बाद) उन्होंने नेक काम भी किये, उन्हें वह न्याय के साथ (उनके सुकर्मों का पूरा २) फल दे। और जो काफ़िर हुए, उन्हें उनके कुफ़्र के बदले (अल्लाह की तरफ़ से) खौलता हुआ पानी पीने को और कठोर अज़ाब मिले॥

वही (शक्ति वाला अल्लाह) है, जिसने (अपनी शक्ति से) सूरज को रोशन और चांद को ज्योति (का टुकड़ा) बनाया। और उसके (प्रत्येक दिन की यात्रा व गति के लिये) स्थान नियत किये। (जिस से कि दिन रात का क्रमानुसार आना और उनका घटना बढ़ना और ऋतुओं का परिवर्तित होना प्रकट हो। और) जिस से कि (लोगो!) तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो। (इसी तरह) जो जो चीज़ें अल्लाह तआला ने (दुनिया में) पैदा की हैं, वह (सब की सब किसी न किसी) युक्ति ही से (बनाई गई) हैं। (इनमें से एक चीज़ भी ऐसी नहीं, जो केवल असत्य और निरर्थक हो। बल्कि प्रत्येक वस्तु बड़ी लाभ दायक और उपयोगी है। और जब तुमको अनुभव से ज्ञात हो गया कि प्रत्येक वस्तु के लिये कोई न कोई सुसाधकता अवश्य है और कोई वस्तु व्यर्थ और निरर्थक नहीं है। तो तुम अपनी दशा को भी उन्हीं चीज़ों पर कल्पित कर लो। और जान लो कि तुम्हारा व्यक्तित्व भी निरर्थक और व्यर्थ नहीं है। और अवश्य तुमको भी प्रलय के दिन हिसाब के लिये उठना पड़ेगा। और यह अल्लाह की कृपा है कि इन) तर्कों को समझदार लोगों के लिये व्याख्या सहित वर्णन कर देता है॥

निस्सन्देह रात दिन की विभिन्नता (अर्थात् उनके परिवर्तन व उलट फेर) में और (इसके अतिरिक्त) जो कुछ भी आस्मान व पृथ्वी में अल्लाह तआला ने पैदा किया है, उसमें (अन गिनत लाभ और अल्लाह से) डरने वालों (और समझदारों) के लिये (अल्लाह की क़ुद्रत की बहुत सी) निशानियाँ (मौजूद) हैं। (जिस से कि वह उन पर विचार करके अल्लाह के होने और एक होने के क़ायल हों और प्रलय के दिन का विश्वास करें)॥

(तो) जो लोग (मरने के उपरान्त) हमसे (प्रसन्नता व निर्दोषता के साथ) मिलने की आशा (और परलोक के स्थायी जीवन की इच्छा) नहीं रखते—

وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ
هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا
سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ وَاٰخِرُ
دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَوْ
يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ
اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا
فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ
الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا
عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ كَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا

और (इस) दुनिया की ज़िन्दिगी से .खुश हैं और (ख़तर आक़िबत से फ़ारिग़ होकर) ब इतमीनान ज़िन्दगी बसर करते हैं। और जो लोग हमारी (.कुद्रत की) निशानियों से ग़ाफ़िल हैं ० यही लोग हैं, जिनके करतूत का बदला यह होगा कि उनका (आख़िरी) ठिकाना दोज़ख़ ० जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल (भी) किये, उनके ईमान की बरकत से उनको उनका पर्वर्दिगार (नजात का) रस्ता दिखा देगा कि (मरे पीछे) आसाइश के बाग़ों में (रहेंगे। और) उनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी ० उन (बाग़ों) में (दाख़िल होते ही) पुकार उठेंगे कि सुब्हान कल्लाहुम्म (यानी बारे .खुदाया! तेरी ज़ात पाक है)। और उन (बाग़ों) में उनकी (बाहमी) दुआए ख़ैर सलामु (अलैक) होगी। और (जब जन्नत में इतमीनान से बैठ लेंगे, तो) उनकी आख़िरी बात होगी, अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ लमीन–(यानी हर तरह की तारीफ़ .खुदा ही को सज़ावार है, जो दुनिया जहान का पर्वर्दिगार है) ० और जिस तरह लोग फ़ायदों के लिये जल्दी किया करते हैं, अगर (इसी तरह) .खुदा भी (उनकी बद आमालियों की सज़ा में) उनको जल्दी से नुक़सान पहुँचा दिया करता, तो उनकी मौत (कभी की) आ चुकी होती। और हम उन लोगों को, जिन्हें (मरे पीछे) हमारे पास आने का (ज़रा सा भी) खटका नहीं, छोड़े रखते हैं कि अपनी सर्कशी में पड़े भटका करें ० और जब इन्सान को (किसी क़िस्म की) तकलीफ़ पहुंच जाती है, तो पड़ा या बैठा या खड़ा (किसी हाल में हो) हमको पुकारे चला जाता है। (फिर जब हम उसकी तकलीफ़ को उस से दूर कर देते हैं, तो ऐसा (बे पर्वाह बन कर) चल देता है कि गोया उस तकलीफ़ के (दूर करने के) लिये, जो उसको पहुंच रही थी, हमको (कभी) पुकारा ही न था। जो लोग हद (बन्दिगी) से क़दम बाहर रखते हैं, उनको उनके आमाल इसी तरह भले कर दिखाये गये हैं ० और (लोगो!)—

और (उसके मुक़ाबले में) संसार के (क्षणिक) जावन से प्रसन्न हैं और उस से (इतने) सन्तुष्ट हैं (कि अल्लाह के अज़ाब की भी परवाह नहीं करते)। और जो हमारी आयतों (और हमारे आदेशों) से ग़ाफ़िल हैं (यह सब के सब बड़े मूर्ख हैं। और) यही वह (लोग) हैं कि उनकी करतूतों के बदले (नर्क की भड़कती हुई) आग उनका ठिकाना है॥ (हां) निस्सन्देह (वह लोग) जो ईमान ले आये और (ईमान लाने के बाद) उन्होंने नेक काम (भी) किये (वह बड़े समझदार हैं)। उन्हें उनका पालन कर्त्ता उनके ईमान (लाने) के कारण (हिदायत व कल्याण का) मार्ग बता देगा। (और मरने के उपरान्त वह अत्यन्त सुख व) आराम के बाग़ों में (निवास करेंगे। और) उनके नीचे (बहुत साफ़) नहरें बहता होंगी॥

(और) इन (बाग़ों) में (जिस समय वह प्रवेश करेंगे, तो वहां की अद्भुत वस्तुओं को देख कर सहसा वाह वाह कह उठेंगे। और जाप करने के शब्द अर्थात्) सुब्हानक–ल्लाहुम्म (तेरी व्यक्ति पवित्र है, ऐ अल्लाह!) पढ़ने लगेंगे। और वहां (उन बाग़ों में) उनका सलाम (जो आपस में एक दूसरे को .खुशी .खुशी करेंगे) सलामुन् (अलैकुम) होगा। और (जब) वह (सन्तुष्ट हृदय और निश्चिन्तता के साथ अपने २ निवासस्थान में पहुँच जावेंगे तो) अन्त में (अल्लाह की स्तुति व प्रशंसा अर्थात्) अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन् कहेंगे॥

और अगर अल्लाह तआ़ला (इन) लोगों (अर्थात् काफ़िरों) के अज़ाब (देने) में शीघ्रता से काम लेता, जिस तरह यह लोग भलाई (और दूसरे सांसारिक लाभ प्राप्त करने) में शीघ्रता करते हैं, तो इनकी मौत (कभी की) आ चुकी होती (और इनका अब तक सत्यानाश हो गया होता, परन्तु हमारा यह काम नहीं। हम जल्दी नहीं किया करते। बल्कि) हम तो उन लोगों को, जिन्हें (प्रलय के दिन) हमसे मिलने की आशा नहीं है (यूंही) छोड़ रखते हैं। जिस से) कि अपनी उद्दंडता (के क्षेत्र) में (जब तक जियें) भटकते फिरा करें। (और मरने के उपरान्त अपने किये का दंड भुगतें)॥

और (इन काफ़िरों में से) जब किसी मनुष्य को कोई दुःख पहुँचता है, तो (उस समय) वह (अपने समस्त पूज्यों को भूल जाता है। और) लेटा हो–तो, बैठा हो तो, खड़ा हो तो, (हर दशा में बस) हमें (ही) पुकारा करता है। फिर जब हम अपनी मेहर्बानी से उसकी चीख़ पुकार को सुन लेते और उसको तकलीफ़ को उस से दूर कर देते हैं, तो (फिर अपने पहिले ही ढंग पर) चलने लगता है। (और हमसे इतना ग़ाफ़िल हो जाता है कि) मानो उस दुःख के (निवारण करने के) लिये, जो उसको पहुंचा था—हमको (कभी) उसने पुकारा ही न था। (और उसको हमसे कोई काम पड़ा ही न था)। जो लोग (मनुष्यता की) सीमा से बढ़ जाने वाले हैं (उनकी दृष्टि में) उनके (बुरे) कर्म इसी तरह सँवार * दिये गये हैं॥

* टीका—अर्थात् अल्लाह तआ़ला ने उनकी अक़्लें इतनी ख़राब कर दी हैं कि उन्हें अपने कुकर्म अच्छे मालूम होते हैं:—हसन निज़ामी॥

الْقُرُونَ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم
بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ
الْمُجْرِمِينَ ● ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِن بَعْدِهِمْ
لِنَنظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ● وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا
بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا ائْتِ بِقُرْآنٍ
غَيْرِ هَٰذَا أَوْ بَدِّلْهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِن
تِلْقَاءِ نَفْسِي إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ إِنِّي أَخَافُ
إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ● قُل لَّوْ شَاءَ اللَّهُ
مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُم بِهِ فَقَدْ لَبِثْتُ
فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ● فَمَنْ
أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ● وَيَعْبُدُونَ مِن
دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ

तुमसे पहिले कितनी उम्मतें हो गुज़री हैं कि जब उन्होंने शरारत पर कमर बांधी, हमने उनको हलाक कर मारा। और उनके रसूल उनके पास खुले हुये मोजिज़े (भी) लेकर आये और (इस पर भी) उनको ईमान लाना नसीब न हुआ। गुनहगार लोगों को हम इसी तरह सज़ा दिया करते हैं ० फिर उन के (हलाक हुये) पीछे हमने ज़मीन में तुम लोगों को (उनका) जा नशीन बनाया, ताकि मुलाहिज़ा फ़र्मायें कि तुम कैसे अमल करते हो ० और (ऐ पैग़म्बर !) जब हमारे खुले २ अहकाम इन लोगों को पढ़ कर सुनाये जाते हैं, तो जिन लोगों को (मरे पाछे) हमारे पास आने का (ज़रा सा भी) खटका नहीं, वह (तुमसे) फ़र्माइश करते हैं कि इसके सिवा कोई (और) क़ुर्आन लाओ या इसी में रद्दो बदल करदो। (तो तुम इनसे) कहो कि मेरा ऐसा मक़दूर नहीं कि अपनी तरफ़ से इसमें किसी (क़िस्म का भी) रद्दो बदल करूँ। मेरी तरफ़ जो वही आती है, मैं तो उसी पर चलता हूं। अगर मैं अपने पर्वर्दिगार की नाफ़र्मानी करूँ, तो मुझे (क़यामत के) बड़े (मुश्किल) दिन के अज़ाब से (बहुत ही) डर लगता है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अगर ख़ुदा चाहता, तो मैं यह (क़ुर्आन) तुमको पढ़ कर सुनाता ही नहीं और न ख़ुदा तुमको इससे आगाह करता। इससे पहिले मैं मुद्दतों तुम में रह चुका हूं (और मैंने कभी वही का नाम भी नहीं लिया)। क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते ० तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन, जो ख़ुदा पर झूठ (झूठ) बोहतान बांधे या उसकी आयतों को झुठलाये। इसमें ज़रा शक नहीं कि (ऐसे) गुनहगार फ़लाह नहीं पाएँगे ० और (मुश्रिकीन) ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ों की परस्तिश करते हैं, जो न तो उनको नुक़सान ही पहुँचा सकी हैं और न उनको फ़ायदा ही पहुंचा सकी हैं। और कहते हैं कि—

और (ऐ काफ़िरो ! तुम्हें कुछ ख़बर भी है !)। तुमसे पहिले बहुत सी जातियाँ ऐसी हो चुकी हैं कि जब उन्होंने (अपने कुकर्म व कुफ़्र व शिर्क में ज़ियादती की और) ज़ुल्म पर कमर बांधी, तो हमने उन्हें हलाक (व बरबाद और पृथ्वी तल से नष्ट) कर दिया। और उनके पास भी (तुम्हारी तरह) उनके रसूल (उनकी ओर अल्लाह के होने के प्रमाण व) चमत्कार लेकर आये थे। और (तुम्हारी तरह) उनसे (भी) यह न हो सका (था) कि वह ईमान ले आते। (परिणाम यह हुआ कि हमने उनको कठिन से कठिन दंड दिया। याद रक्खो !) हम पापी लोगों को इसी तरह दण्ड दिया करते हैं॥ फिर हमने उनको (तबाह व बरबाद करने के) बाद पृथ्वी में तुम लोगों को (उनका) उत्तराधिकारी बनाया। ताकि देखें कि (उनकी बरबादी का हाल मालूम करके) तुम कैसे काम करते हो॥ और (ऐ रसूल ! इन काफ़िरों की तो अनोखी दशा है)। जब इनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, जो (अल्लाह के एक होने का खुला और) स्पष्ट (प्रमाण) हैं, तो यह लोग-जो (प्रलय के दिन) हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, कहते हैं कि इसके अतिरिक्त कोई और क़ुर्आन लाओ (जिसमें मूर्ति पूजा को बुरा न कहा गया हो) या इसीको (कहीं २ से) बदल दो। (और इसमें से मूर्ति पूजा आदि के खंडन को निकाल डालो। यदि इन दशाओं में से कोई सी दशा सम्भव हो, तो हम ईमान ला सके हैं, अन्यथा नहीं)॥

तो (ऐ रसूल !) तुम (उनसे) कहदो (कि तुम चाहे ईमान लाओ या न लाओ) मुझसे यह नहीं हो सक्ता कि मैं अपनी ओर से इस (क़ुर्आन) में (किसी प्रकार का) परिवर्तन कर दूँ। (या अल्लाह से कह दूँ कि मूर्ति पूजा सिखाने वाला क़ुर्आन भेज दे)। मुझे तो, जो आज्ञा भेजी जाती है (बस) मैं तो उसी का ताबेदार हूं। (और) यदि मैं अपने पालन कर्त्ता की अवज्ञा करनी (भी) चाहूं, तो (भी नहीं कर सक्ता। क्योंकि मैं तुम्हारी तरह ना समझ नहीं हूँ)। मुझे तो (प्रलय के) बड़े (भयंकर) दिन के अज़ाब से (बहुत ही) डर लगता है॥

(ऐ रसूल ! इन लोगों से) कहदो (कि मेरा तो प्रत्येक कार्य अल्लाह की इच्छा के अनुसार है)। अगर अल्लाह चाहता (कि मैं यह क़ुर्आन तुमको न सुनाऊँ) तो न मैं पढ़ कर तुमको उसे सुनाता और न अल्लाह तआला तुमको उसकी सूचना देता। (अगर मैं अल्लाह तआला की तरफ़ से अपने आप कुछ कह सकता) तो मैंने तो इससे पहिले (अपनी) आयु (का एक बड़ा समय) तुम में व्यतीत कर दिया (उस समय भी कहता। ख़ास इसी समय कहने की क्या आवश्यकता थी। लोगो !) क्या तुम (इतनी मोटी बात भी) नहीं समझते॥

(काफ़िरो ! यदि मैंने यह क़ुर्आन स्वयं लिख कर अल्लाह के नाम लगा दिया, तो निस्सन्देह मुझसे बड़ा ज़ालिम और पापी कोई नहीं हो सक्ता। और अगर यह बात नहीं है और वास्तव में क़ुर्आन अल्लाह का अवतीर्ण किया हुआ है, जैसा कि तर्क और चमत्कारों से सिद्ध है) तो फिर (मुझे बताओ कि) उस मनुष्य से अधिक ज़ालिम (दुनिया में) कौन हो सक्ता है ? जो अल्लाह पर (या उसके रसूल पर) झूठ तूफ़ान उठाये, या अल्लाह की आयतों को झूठा बताये। निश्चित रूप से (इस प्रकार के) पापी (कभी) कल्याण नहीं प्राप्त करेंगे॥

और यह (काफ़िर) अल्लाह को छोड़ कर उन (बुतों) की पूजा करते हैं, जो न उन्हें (कुछ) हानि पहुँचा सके हैं, और न (कुछ) लाभ पहुंचा सके हैं। और (ऐसी तुच्छ वस्तुओं के विषय में यह अधम लोग) कहते हैं कि—

هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا
يَعْلَمُ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً
وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝
وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ
اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ
الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝ وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ
ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِىْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ
مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ۝
هُوَ الَّذِىْ يُسَيِّرُكُمْ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا
كُنْتُمْ فِى الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّ
فَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ

(हमारे) यह (माबूद) अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो, क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ (के होने) की ख़बर देते हो, जिसको वह न (तो कहीं) आस्मानों में पाता है और न (कहीं) ज़मीन में। वह इन लोगों के शिर्क से पाक और बालातर है ० और (शुरू में) लोग (दीन के) एक ही तरीक़े पर थे। इख़्तिलाफ़ तो इनमें पीछे (पैदा) हुआ। और (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से (क़यामत का) वादा पहिले से न हुआ होता, तो जिन चीज़ों में यह लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, (कभी का) इनके दर्मियान उनका फ़ैसला कर दिया गया होता ० और कहते हैं, इस (पैग़म्बर मुहम्मद) को इसके पर्वर्दिगार की तरफ़ से कोई मोजिज़ा (जैसा हम चाहते हैं) क्यों नहीं दिया गया? तो (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि ग़ैब (की ख़बर तो) बस ख़ुदा ही को है। तो तुम (भी हुक्म ख़ुदा का) इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में हूं ० और जब लोगों को तकलीफ़ पहुँचने के बाद हम उनको (तकलीफ़ को दूर करके अपनी) मेहर्बानी का ज़ायक़ा चखा देते हैं, तो बस हमारी आयतों (की मुख़ालिफ़त) में कार साज़ियाँ कर चलते हैं। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि (तुम्हारी कारसाज़ियों से) अल्लाह की कार साज़ी ज़ियादा चलती हुई है। (वह फ़र्माता है कि) हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी कार साज़ियाँ (सब) लिखते (जाते) हैं ० वही (ख़ुदा तो) है, जो तुम लोगों को ख़ुश्की और तरी में लिये लिये फिरता है। यहां तक कि बाज़ औक़ात तुम किश्तियों में होते हो और वह लोगों को बादे मुवाफ़िक़ की मदद से लेकर चलती हैं और लोग उन (की रफ़्तार) से ख़ुश होते हैं, (नागाह) किश्ती को एक हवा का झोंका आ लगता है और लहरें (हैं कि) हर तरफ़ से उन पर (चढ़ी चली) आ रही हैं—

अल्लाह के दरबार में यह सब (के सब) हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं। (ऐ रसूल!) तुम (इनसे) कहो कि क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात बताते हो कि जिसका पता उसे न आस्मानों में चलता है और न पृथ्वी में। (यह लोग तो झूठे दोषारोपण करने वाले और काफ़िर व मुश्रिक हैं। और) अल्लाह तआला इनके झूठ और दोषारोपण और शिर्क से पाक और श्रेष्ठ है ॥ और (कदाचित यह काफ़िर यह समझते हैं कि उनके यह कुकर्म, मूर्ति पूजा, असत्यारोपण आदि स्वाभाविक वस्तुयें हैं, तो यह बिलकुल ग़लत है। शुरू २ अर्थात् सृष्टि के आरम्भ में) लोग एक ही प्रकार के (और एक ही धर्म के अनुयायी बन कर आये) थे। (परन्तु जब संसार में आकर इधर उधर की हवा खाई और इन्द्रिय लोलुपता में लिप्त हुए, तो) फिर यह विभिन्नता और मत भेद में पड़ गये ॥

और (ऐ रसूल!) यदि तुम्हारे पालन कर्त्ता की तरफ़ से (तुम्हारी जाति को संसार में अज़ाब न देने का) वादा पहिले न हो चुका होता, तो जिन बातों में यह मत भेद प्रकट कर रहे हैं, उनके बीच उन (सब) का फ़ैसला (कभी का) हो गया होता ॥

और यह (काफ़िर इन्द्रिय लोलुपता में अन्धे हो गये हैं। क्योंकि चमत्कार और तर्क से सत्य की जाँच हो चुकी, लेकिन फिर भी ईमान नहीं लाते। और) कहते हैं कि (अगर मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, तो) उन पर उनके पालन कर्त्ता की तरफ़ से (हमारे माँगे हुए चिन्हों में से) कोई चिन्ह क्यों नहीं उतारा जाता? तो तुम (ऐ रसूल!) कह दो कि (यह क़ुरआन सारे का सारा एक महान चमत्कार है, जो मेरी नुबूवत व अल्लाह का सन्देशिया होने और अल्लाह को अद्वैत सिद्ध करने के लिये बहुत काफ़ी है। इसके अतिरिक्त तुम्हारी बताई हुई निशानियों में से कोई सी निशानी मुझे दी जावेगी या नहीं—इसे मैं नहीं जानता। यह अदृष्ट की बात है और) अदृष्ट (का ज्ञान) केवल अल्लाह ही के लिये (विशेष) है। अतएव (किसी नए चिन्ह के उतरने की) तुम भी प्रतीक्षा करो (और) मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूं ॥

और (अगर इनकी माँग के अनुसार हम कोई चिन्ह उतार भी दें, तब भी यह दुष्ट ईमान नहीं लावेंगे। इनकी तो यह दशा है कि) जब हम इन लोगों को दुःख पहुंचने के बाद (अपनी कृपा व दया से सुख व) आनन्द का मज़ा चखाते हैं, तो हमारी आयतों (और हमारे आदेशों के विरोध) में तुरन्त ही छल (व कपट) करने लगते हैं। (अर्थात् उनकी हँसी उड़ाते हैं और उन्हें अमल के योग्य नहीं जानते) ॥

(ऐ रसूल!) तुम (इनसे) कह दो कि अल्लाह तआला यथा शीघ्र (इस) मक्र (व धोखे और विद्रोह व अवज्ञा) का दंड देगा। निस्सन्देह हमारे रसूल (अर्थात् फ़रिश्ते) तुम्हारी (सारी) मक्कारियों को लिख रहे हैं ॥

(और कदाचित यह लोग हमारी इस महान शक्ति से अचेत हैं कि हम उनकी समस्त करतूतों से सचेत हैं। तुम हमारी शक्ति का हाल इन्हें सुनाओ और कहो कि) वह ऐसा अल्लाह) है, जो तुमको जल व स्थल में चलाता (फिराता) है। (अर्थात् उसने तुमको बुद्धि व समझ, शक्ति व बल, शरीर के अंग और जड़ वस्तुयें आदि ऐसी समस्त चीज़ें दे रक्खी हैं, जिनसे तुम ऐसे यन्त्र और असबाब तैयार करते हो, जो स्थल और जल की दोनों यात्राओं में तुम्हें काम देते हैं)। यहाँ तक कि (प्रायः ऐसा होता है कि) तुम नौका में बैठे हुए) होते हो और (हवा अनुकूल होती है और) वह नौकायें लोगों को अनुकूल वायु की सहायता से लेकर चलती हैं। और लोग उन (की तीव्रगामिता) से ख़ुश (हो रहे) होते हैं कि (इतने में) प्रचंड वायु उनकी नौकाओं को आकर लगती है। और लोगों पर हर तरफ़ से लहरें (उठी) चली आती हैं—

مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ
مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ● لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ
مِنَ الشَّاكِرِينَ ● فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ
أَنْفُسِكُمْ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ
فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ● إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ
نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ
حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ
وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَادِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا
لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَنْ لَمْ تَغْنَ
بِالْأَمْسِ ● كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ
وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ

ع ●

और वह समझते हैं कि (बुरे) आ घिरे । तो बस ख़ालिस ख़ुदा ही को मान कर उससे दुआयें माँगने लगते हैं कि (बारे ख़ुदाया !) अगर (अपने फ़ज़्ल से) तू हमको इस (मुसीबत) से बचावे, तो हम ज़रूर (तेरे बड़े ही) शुक्र गुज़ार होंगे ० फिर जब वह उनको उस बला से) नजात दे देता है, तो वह ख़ुश्की पर पहुंचते ही नाहक़ की सर्कशी करने लगते हैं। लोगो ! तुम्हारी सर्कशी (का वाबाल) तुम्हारी ही जानों पर (पड़ेगा । यह भी इस) दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दिगी के फ़ायदे (हैं, सो ख़ैर, इनके मज़े उड़ा लो)। आख़िरकार तुमको हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है, तो (उस वक़्) जो कुछ भी तुम (दुनिया में) करते रहे, हम तुमको (उसका बुरा भला) बता देंगे ० (इस) दुनिया की ज़िन्दिगी की मिसाल तो बस पानी की सी है कि हमने उसको आस्मान से बर्सया, फिर ज़मीन की रोईदगी, जिसको आदमी और चारपाए खाते हैं, पानी के साथ मिल गई (इस तरह पर कि पानी को जज़्ब कर लिया और वह फली फूली)। यहाँ तक कि जब ज़मीन ने (फ़स्ल से) अपना सिंघार कर लिया और ख़ुशनुमा हुई और खेत वालों ने समझा कि (अब) वह इस पर क़ाबू पा गए (जब चाहेंगे काट लेंगे, नागाह) रात के वक़् या दिन के वक़् हमारा हुक्म (अज़ाब) उस पर आ नाज़िल हुआ । फिर हमने उसका ऐसा सतराव कर दिया कि गोया कल (खेत में) उसका नाम व निशान ही न था । जो लोग (बात को) सोचते समझते हैं, उन (की हिदायत) के लिये हम (अपनी क़ुद्रत की) दलीलें इसी तरह तफ़सील के साथ बयान फ़र्माते हैं ० और अल्लाह (लोगों को) सलामती के घर(यानी बहिश्त)की तरफ़ बुलाता है। और जिसको चाहता है—

और वह ख़याल करते हैं कि (आज) हम घेर लिये गये । तो (वह समय ऐसा होता है कि) यह (सारे के सारे) केवल अल्लाह के अधीन होकर अल्लाह को पुकारने लगते हैं । (और मूर्ति पूजा को छोड़ कर अत्यन्त विनय और नम्रता से अल्लाह की सेवा में प्रार्थना करते हैं) कि (ऐ हमारे स्वामी !) अगर (आज) तू हमको (इस विपत्ति से) मुक्त करदे, तो हम ज़रूर (अपनी अवज्ञा को छोड़ देंगे और तेरे) अनुग्रहीत होंगे ॥

फिर जब अल्लाह तआ़ला उनको (इस विपत्ति से) बचा लेता है (और आनन्द पूर्वक स्थल में पहुँचा देता है) तो वह तुरन्त पृथ्वी में (पग धरते ही उसी कुफ़्र व शिर्क में लिप्त हो जाते हैं । और) बिना प्रयोजन विद्रोह करने लगते हैं । (मूर्ख) लोगो ! (सुनो !) तुम्हारा विद्रोह (व अवज्ञा और पाप, कुफ़्र व शिर्क) का संकट तो तुम्हारी ही जानों पर (पड़ता) है । (किसी दूसरे को इससे कुछ हानि नहीं होती । यदि तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आती और तुम्हें इसी विद्रोह ही में आनन्द मिलता है, तो याद रक्खो ! कि यह) आनन्द (भी केवल) सांसारिक जीवन तक है । फिर तो तुम्हें (मरना है और मरने के बाद) हमारे पास लौट कर आना है । तो (उस समय) जो कुछ (भी) तुम (यहाँ) करते रहे, हम (उसका बुरा भला अच्छी तरह) बतावेंगे ॥

(लोगो !) सांसारिक जीवन (का भरोसा न करो । उस) का उदाहरण तो बस (वर्षा के) उस पानी का सा है, जिसे हमने आस्मान से उतारा (और) फिर ज़मीन की पैदावार—जिसे मनुष्य और पशु (सब ही) खाते हैं, उस (पानी) के साथ मिल गई । (और उसने पानी को, जो उसका भोजन है—अच्छी तरह अपने भीतर प्रविष्ट कर लिया)। यहाँ तक कि (वह समय आ जाता है) जब कि पृथ्वी अपना पूरा रंग रूप निकाल लेती है और (अच्छी तरह) श्रृङ्गार कर लेती है (अर्थात् ख़ूब फली फूली और हरी भरी हो जाती है)। और ज़मींदार जानते हैं कि (अब खेती तैयार है। और) हम उस पर (पूरा) अधिकार रखते हैं (जब चाहेंगे, काट लेंगे—कि इतने में) दिन के समय या रात के समय हमारा हुक्म (बिजली गिर जाने या पाला पड़ जाने या वैसे ही सूख जाने का) उस पर आ गया और हमने उसे (एक) कटा हुआ (ढेर) बना दिया । (और उसे ऐसा चटियल मैदान कर दिया, जिसे देख कर यह मालूम होने लगा) कि जैसे कल यहाँ कुछ उगा ही न था । (इसी के समान मनुष्यों की आत्मा की दशा है कि आकाश से आई, शरीर से मिली और फिर बल व शक्ति प्राप्त करके मनुष्योचित्त, पाशविक, बुरे भले हर प्रकार के काम उसने किये । तरह २ की विद्यायें सीखीं । जब एक विशेष उन्नति और मुख्य पद प्राप्त कर चुकी और उसके सम्बधियों को उसकी बुद्धि व प्रतिभा, विद्या व श्रेष्ठता पर पूरा भरोसा और पूर्ण विश्वास हो गया और उनके दिल में उसके कार्यों का आदर और उसकी व्यक्ति से पूर्ण प्रेम हो गया, तो सहसा मृत्यु का फ़रिश्ता आया । और प्राणों को शरीर से अलग कर ले गया । अब शरीर इस प्रकार पड़ा रह गया कि मानो कभी सजीव था ही नहीं) । हम उन लोगों के लिये, जो (ध्यान व) चिन्तन करते हैं—अपनी आयतों (और आदेशों) को इसी (उपरोक्त विस्तृता के) समान (व्याख्या सहित और) ब्यौरेवार वर्णन करते हैं ॥

(लोगो ! संसार असार है, उससे दिल न लगाओ)। और अल्लाह तआ़ला (जो) सलामती के घर (जिसमें सदैव २ सुख है, उस) की तरफ़ (तुम्हें) बुलाता और (तुम में से) जिसे चाहता है, सीधा मार्ग बताता है—

إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ● لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ
وَزِيَادَةٌ ۖ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ● وَالَّذِينَ
كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ
ذِلَّةٌ ۖ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۖ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ
وُجُوهُهُمْ قِطَعًا مِنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ● وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ
لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ ۚ
فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ ۖ وَقَالَ شُرَكَاؤُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِيَّانَا
تَعْبُدُونَ ● فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ
كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ ● هُنَالِكَ تَبْلُو كُلُّ
نَفْسٍ مَا أَسْلَفَتْ ۚ وَرُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۖ
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ● قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ

सीधे रस्ते की तरफ़ रहनुमाई कर देता है ० जिन लोगों ने (दुनिया में) भलाई की, उनके लिये (आख़िरत में भी वैसी ही) भलाई है और कुछ बढ़ कर भी। और (गुनहगारों की तरह) उनके मुंहों पर न कलौंस छाई होगी और न ज़िल्लत। यही हैं जन्नती कि वह जन्नत में हमेशा (हमेशा) रहेंगे ० और जिन लोगों ने बुरे काम किये, तो बुराई का बदला वैसी ही (बुराई)। और (इसके अलावा) उन (के मुंहों) पर ज़िल्लत छा रही होगी। अल्लाह (की मार) से कोई उनको बचाने वाला नहीं, (उनके मुंह ऐसे काले कलूटे होंगे कि) गोया शबे तारीक (की चादर को फाड़ कर उस) के टुकड़े उनके मुंहों पर ओढ़ा दिये हैं। यही हैं दोज़ख़ी कि वह दोज़ख़ में हमेशा (हमेशा) रहेंगे ० और (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों को उस दिन से डराओ) जिस दिन हम इन सब को (अपने हुज़ूर में) जमा करेंगे। फिर मुश्रिकीन को हुक्म देंगे कि तुम और जिनको तुमने शरीक (ख़ुदाई) बनाया था, वह ज़रा अपनी जगह ठहरो। फिर हम इनके आपस में फूट डाल देंगे और इनके शरीक (इनसे) कहेंगे कि (तुम झूठे हो)। हमारी परस्तिश तो तुम कुछ करते (कराते) थे नहीं ० पस (अब) हमारे और तुम्हारे दर्मियान बस ख़ुदा ही शाहिद है। हमको तो तुम्हारी परस्तिश की मुतलक़ ख़बर न थी ० (ग़रज़) वहां हर शख़्श अपने आमाल को, जो उसने (ज़ाद आक़िबत बना कर) पहिले से भेजे हैं जांच लेगा। और सब लोग अल्लाह की तरफ़ कि वह उनका मालिक हक़ीक़ी है, लौटा कर लाए जायंगे। और जो इफ़्तिरा परदाज़ियां (दुनिया में) करते रहे हैं, वह सब उनसे गई गुज़रा हो जायँगी ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से इतना तो) पूछो कि तुमको—

(उस से लौ लगाओ और उसकी आधीनता व उपासना में अपने इस क्षणिक जीवन को ख़त्म कर दो, ताकि सलामती के घर अर्थात् स्वर्ग तक तुम्हारी पहुंच हो जाय) ॥ (जो स्वर्ग का इच्छुक है, उसे स्मरण रखना चाहिये कि) जिन लोगों ने (दुनिया में नेकी को अपना कर्तव्य समझा और प्रत्येक के साथ) भलाई की, उनके वास्ते (प्रलय में भी उतनी ही) भलाई है। (बल्कि) और कुछ (उस पर) ज़्यादती भी है। और (बुरे काम करने वालों की तरह) उनके चेहरों पर न कलौंस होगी और न अकीर्ति (व नीचता की फिटकार)। स्वर्ग (में जाने) वाले (लोग) यही हैं। यही उसमें सदैव रहेंगे ॥

और जिन लोगों ने (संसार में आकर) बुरे काम किये, प्रलय में उनकी बुराई का बदला (उन्हें) उतना ही मिलेगा और उन (के चेहरों) को अधमता (और फिटकार) ढांक लेगी। (उस दिन) उन्हें अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने वाला कोई नहीं (मिलेगा। और चेहरे उनके अत्यन्त काले होंगे। यह मालूम होगा कि) मानो काली रात (की भांति काली चादर) के टुकड़े उनके चेहरों पर उढ़ा दिये गये हैं। नर्क (में जाने) वाले यही (लोग) होंगे। यही उसमें सदैव (पड़े) रहेंगे ॥

और (यह समस्त घटनायें उसी दिन होंगी) जिस दिन कि हम सब (लोगों) को (अपने समीप) इकट्ठे करेंगे। (और) फिर मुश्रिकों से कहेंगे कि अपने (बनाये हुये) शरीकों सहित अपनी जगह (सीधे खड़े) हो जाओ। (ताकि तुमसे तुम्हारे कर्मों के सम्बन्ध में उत्तर मांगा जाय)। फिर हम (उन में और) उनके (शरीकों के) बीच फूट डाल देंगे और उनके शरीक (अर्थात बेजान पत्थर, जिन्हें अपनी शक्ति से हम उस दिन बोलने की शक्ति प्रदान करेंगे—वह अपने पुजारियों से) कहेंगे कि तुम हमारी उपासना कभी नहीं करते थे। (और यदि करते भी थे, तो हमें इसकी ख़बर नहीं) ॥ यदि तुमको हमारा विश्वास नहीं है) तो (बस अब) हमारे और तुम्हारे बीच (इस बात का) अल्लाह ही गवाह है (कि) हमें तुम्हारी उपासना की बिलकुल ख़बर न थी ॥

(अभिप्राय यह है कि) उस समय (कोई नर्क वासी हो या स्वर्गवासी, मुश्रिक हो या काफ़िर) प्रत्येक मनुष्य अपने किये हुये कर्मों (को भलाई बुराई को) अच्छी तरह जांच लेगा। और समस्त मनुष्य—जो संसार में आये हैं, अल्लाह की तरफ़, जो उनका सच्चा स्वामी है, लौटाये जायँगे। और जो दोषारोपण (यहां यह काफ़िर व मुश्रिक) करते हैं, वह (सारे के सारे) उन (के हृदयों से उतर जायंगे और उनके मस्तिष्क) से नष्ट व भ्रष्ट हो जायँगे ॥

(ऐ रसूल !) तुम (इन मुश्रिकों से) पूछो ! (यदि तुम अल्लाह और उसकी शक्ति के मानने वाले नहीं, तो अच्छा बताओ ! वह) कौन है ? जो आसमान व पृथ्वी से तुमको अन्न पहुंचाता है। (अर्थात् आकाश से मेंह बरसाने वाला और पृथ्वी से फल फूल उगाने वाला कौन है ?)—

مِنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ
مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ
فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ
الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝
كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْا
اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ
يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ
ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ
شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ قُلِ اللّٰهُ
يَهْدِيْ لِلْحَقِّ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ
يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى فَمَا لَكُمْ
كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ

الظن

आस्मान व ज़मीन से कौन रोज़ी देता है। या (हक़ीक़त में तुम्हारे) कान और (तुम्हारी) आँखें किसके क़ब्ज़े (क़ुद्रत) में हैं ? और कौन (है, जो) ज़िन्दे को मुरदे से निकालता है और मुरदे को ज़िन्दे से निकालता है। और कौन (दुनिया का) इन्तिज़ाम चला रहा है ? तो वे तअम्मुल बोल उठेंगे कि अल्लाह। तो फिर तुम (इनसे) कहो कि क्या तुम इस पर भी (उससे) नहीं डरते ० फिर यही अल्लाह तो तुम्हारा पर्वर्दिगार बर हक़ है, तो हक़ (बात) के (मालूम हुए) पीछे (उसको न मानना) गुमराही नहीं तो और क्या है ? तो तुम लोग किधर को फिरे चले जा रहे हो ० (ऐ पैग़म्बर !) इसी तरह तुम्हारे पर्वर्दिगार का फ़र्मूदा (इन) ना फ़र्मान लोगों पर सादिक़ आकर रहा कि यह किसी तरह ईमान नहीं लाएँगे ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि तुम्हारे (ठहराये हुए) शरीकों में कोई ऐसा भी है, जो मख़लूक़ात को अव्वल बार पैदा करे, फिर उनको (मार कर) दुबारा पैदा करे। (यह तो इसका क्या जवाब देंगे, तुम ही इनसे) कहो कि अल्लाह ही मख़लूक़ात को अव्वल बार पैदा करता है, फिर (वही) उनको (मार कर) दुबारा पैदा करेगा। तो अब किधर को उल्टे चले जा रहे हो० (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि तुम्हारे (ठहराए हुये) शरीकों में से कोई भी ऐसा है, जो (दीन) हक़ की राह दिखा सके ? (तुम ही इनसे) कहो कि अल्लाह ही (दीन) हक़ की राह दिखाता है। तो क्या जो (दीन) हक़ की राह दिखाये, वह इसका ज़ियादा हक़ रखता है कि उस (के हुक्म) की पैरवी की जाय या जो ऐसा (आजिज़) है कि जब तक दूसरा उसको राह न दिखाये, वह ख़ुद भी राह नहीं पा सकता। तो तुम लोगों को क्या हो गया है, कैसे फ़ैसले करते हो ० और इन लोगों में के अक्सर तो बस अटकल पर चलते हैं—

या (यह पूछो कि तुम्हारा और तुम्हारे शरीर के भाग, और इन्द्रिय; जैसे कि तुम्हारे) कान और (तुम्हारी) आँखों का (सच्चा) मालिक कौन है ? और कौन है, जो ज़िन्दे को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को ज़िन्दे से निकालता है (अर्थात् उत्पन्न करता है। जैसे अंडे के अन्दर से मुर्ग़ी, और मुर्ग़ी के पेट में से अंडा)। और (वह) कौन है (जो दुनिया के हर एक) काम का प्रबन्धक है ? (यदि इस प्रकार के प्रश्न उनसे किये जायँ) तो यह (विवश होकर अन्त में यही) कहेंगे कि अल्लाह। (अल्लाह ही के अधिकार में सारे काम हैं)। तो (ऐ रसूल !) तुम कहो कि फिर (अपने कुफ़्र व शिर्क और विद्रोह से क्यों परहेज़ नहीं करते और उस सर्व शक्तिमान से) क्यों नहीं डरते ॥

(मूर्खो !) यही अल्लाह तुम्हारा सच्चा पालन कर्त्ता है, तो (अब तुमको चाहिये कि उस पर ईमान ले आओ और कुफ़्र व शिर्क से बाज़ आ जाओ। अन्यथा बताओ कि) सत्य के (प्रकट होने के) बाद (उस पर ईमान न लाना) पथ-भ्रष्टता (और हठ धर्मी) नहीं तो, और क्या है? (न मालूम तुम्हारी बुद्धियाँ कैसी हैं। तुम कैसे सच बात के स्वीकार करने से इन्कार करते हो। और) फिर (सत्य की ओर से मुँह फेर कर) कहाँ (उल्टे) फिरे जाते हो ॥

(वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला ने ईमान न लाना इन लोगों के भाग्य में लिख दिया था कि) इसी प्रकार (इन विद्रोही और अवज्ञाकार और) बदकार लोगों पर तुम्हारे पालन कर्त्ता का (यह) वचन, कि यह लोग ईमान नहीं लायेंगे-(सच साबित हो गया। अतएव वह सच) सिद्ध हुआ ॥

(ऐ रसूल ! तुम इन मुश्रिकों से यह भी) पूछो कि तुम्हारे (बनाये हुये) शरीकों में कोई ऐसा भी है, जो सृष्टि को पैदा करने का प्रारम्भ करे। (और फिर जब चाहे, उन सब को मिटा दे। और) फिर (प्रलय के दिन उन्हें) दुबारा पैदा करे। (यह तो क्या किसी को बता सकेंगे, तुम ही) कहो कि (ऐसी बड़ी शक्ति वाला) अल्लाह ही (है। वही) पहिली बार भी (सारी) सृष्टि (मख़लूक़) को पैदा कर दिखाता है। (और) फिर उन्हें (मार कर) दूसरी बार (प्रलय के दिन) भी वही पैदा कर दिखावेगा। (मूर्खो !) तुम (उसके मार्ग से) भटके चले जाते हो ॥

(ऐ रसूल !) तुम (इन मुश्रिकों से) कहो कि (पहिली बार या दूसरी बार संसार की सृष्टि का मौजूद करना तो बहुत कठिन है)। तुम्हारे शरीकों में से कोई इतना भी है ? जो सत्य की ओर मार्ग बता सके। (इनसे उसका उत्तर भी न बन पड़ेगा। तुम्हीं) कहो कि सत्य (धर्म) का मार्ग बताने वाला भी अल्लाह ही है। तो क्या जो सत्य मार्ग के लिये पथ प्रदर्शक बने, वह इस (बात) का अधिक अधिकारी है कि उसकी तावेदारी की जाय-या वह, जो ऐसा (विवश और इतना पराधीन अर्थात् मूर्ति) है कि जब तक उसे मार्ग न बताया जाय, वह स्वयं भी मार्ग न पा सके* आख़िर तुम लोगों को क्या हो गया है। तुम कैसे (ग़लत) विचार किया करते हो ॥

* टीका—मूर्तियों को जब तक कोई उठा कर न ले जाय, वह उठ नहीं सकतीं। स्वयं तो उन्हें हाथ पैर हिलाने की शक्ति नहीं है:—हसन निज़ामी ॥

और इन (मुश्रिकों) में से अक्सर तो केवल (गुमान व) कल्पनाओं के आधीन हैं—

الَّا ظَنًّا ۚ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ۚ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۞ وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ
اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ
الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ
فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ
قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۞ بَلْ كَذَّبُوْا
بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ۚ كَذٰلِكَ
كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۞ وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ
وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ۚ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۞
وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ
اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۞

सो अटकल के तुक्के हक़ के मुक़ाबिले में कुछ काम नहीं आते। जैसी जैसी (नादानियाँ) यह लोग कर रहे हैं, अल्लाह उनसे ख़ूब वाक़िफ़ है ० और यह क़ुर्आन इस क़िस्म की किताब नहीं कि ख़ुदा के सिवा कोई इसको अपनी तरफ़ से बना लाए। बल्कि जो (किताबें) इस (के ज़मानए नुज़ूल) से पहिले (मौजूद) हैं, (यह क़ुर्आन) पर्वर्दिगार आलम की तरफ़ से उनकी तस्दीक़ है और (उन्हीं) किताबों (के अहकाम) की तफ़सील है। (और) इस (के किताब आस्मानी होने) में कुछ भी शक नहीं ० क्या (यह लोग क़ुर्आन की निस्बत) कहते हैं कि इसको ख़ुद पैग़म्बर ने बना लिया है। तो (ऐ पैग़म्बर! तुम इनसे) कहो कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो (और जैसा तुम कहते हो, मैं इसके बना लेने पर क़ादिर हूं) तो (तुम भी अह्ले ज़बान हो) ऐसी ही एक सूरत तुम भी बना लाओ। और ख़ुदा के सिवा (जिस) जिसको तुमसे (बुलाते) बन पड़े (अपनी मदद के लिये) बुलालो ० सो (यह लोग इस पहलू से गुरेज़ करके) लगे उस चीज़ को झुठलाने, जिसके समझने पर इनको दस्तरस न हो। और अभी तक उसकी तस्दीक़ का मौक़ा ही इनको पेश नहीं आया। इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था, जो इनसे पहिले हो गुज़रे हैं। तो (ऐ पैग़म्बर!) देखो (उन) ज़ालिमों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ ० और इनमें से बाज़ लोग ऐसे हैं, जो क़ुर्आन पर (आयन्दा) ईमान ले आयेंगे और बाज़ ऐसे हैं, जो (आयन्दा भी) उस पर ईमान लाने वाले नहीं। और (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा पर्वर्दिगार मुफ़्सिदों को ख़ूब जानता है ० और (ऐ पैग़म्बर!) अगर (इतने समझाने पर भी यह लोग) तुमको झुठलाए ही चले जायँ, तो (इनसे) कहदो कि मेरा करना मुझको और तुम्हारा करना तुमको। तुम मेरे अमल के ज़िम्मेदार नहीं और मैं तुम्हारे अमल का ज़िम्मेदार नहीं ०—

(तौहीद और रिसालत पर शिर्क और पाप को बिना प्रमाण श्रेष्ठ ठहराते हैं। और अपने झूठे पूज्यों को अपना सिफ़ारिश करने वाला और मुक्ति दाता मानते हैं। और इतना नहीं समझते कि) गुमान, सत्य के मुक़ाबिले में कुछ लाभ नहीं देता। (और सत्य व विश्वास के सामने कोई पद नहीं रखता)। निस्सन्देह अल्लाह तआ़ला इनके (बेहूदा) कामों को (अच्छी तरह) जानता है (और एक दिन उन्हें सीधा कर देगा) ॥

और (उन्हें क्या हो गया है, जो क़ुर्आन की अद्भुत बातों पर ध्यान नहीं देते)। यह क़ुर्आन (अपनी भाषा की सुन्दरता की दृष्टि से) ऐसा है ही नहीं कि अल्लाह के अतिरिक्त (किसी और की ओर) लगाया जा सके। वरन् (यह तो अल्लाह की ओर से अवतीर्ण हुआ है। और) जो (किताबें जैसा कि तौरेत, इन्जील इत्यादि) इससे पहिले (अवतीर्ण हो चुकी) हैं, उनको सच्चा ठहराने (वाला) है। और किताब (अर्थात् वह आदेश, जो अल्लाह की किताब में लिखे हुए हैं–उन) की व्याख्या (और सम्मान करने वाला) है। और इसमें तनिक सा भी सन्देह नहीं कि वह संसार के पालन कर्त्ता की ओर से (अवतीर्ण हुआ) है। (और अपनी अद्वितीय विशेषताओं के कारण किसी मनुष्य की ओर नहीं लगाया जा सका। अर्थात् यह नहीं कहा जा सका कि यह किसी मनुष्य का बनाया हुआ है) ॥

क्या (अब भी) यह लोग (हमारे क़ुर्आन के विषय में यही) कहते हैं कि इसे (हमारा अशिक्षित) रसूल (स्वयं) बना लाया है। (और उसने हमारी ओर उसे झूठ लगा दिया है)। तो (ऐ रसूल!) तुम (उनसे) कहो कि (ऐ लोगो!) यदि तुम (अपने इस दावे में) सच्चे हो (कि मैंने इस क़ुर्आन को बनाया है) तो तुम (भी मेरी तरह अरबी भाषा के जानने वाले हो और अरबी साहित्य में संसार में प्रसिद्ध हो। मैं अनपढ़ तो इतना बड़ा क़ुर्आन बनाकर ले आया—तुम) इस जैसी (केवल) एक सूरत (ही) बना लाओ। और (यदि तुमको यह काम कुछ कठिन मालूम हो, तो) अल्लाह के अतिरिक्त (अपनी सहायता के लिये अपने पूज्यों में से) जिस (जिस) को बुला सको, बुला लो ॥

(ऐ रसूल ! यह लोग तुम्हारी बात का उत्तर तो क्या देते, उसे कान धर के उन्होंने सुना भी नहीं) वरन् (इस वार्तालाप को बदलने के लिये) ऐसी बातों (अर्थात् पुण्य, पाप, स्वर्ग, नर्क इत्यादि) को झूठा बताने लगे, जिसके समझने की उन्हें शक्ति नहीं है। और (इनको इस अज्ञानता और मूर्खता का कारण यह है कि) अभी तक इस (झूठा बताने व उद्दण्डता) का अन्तिम फल (अर्थात अज़ाब) उन्हें नहीं मिला। (अन्यथा इनके होश व हवास कभी के ठीक हो गये होते। जिस तरह आज यह तुम्हारी नुबूवत और क़ुर्आन के उतारने को झूठा बता रहे हैं) इसी प्रकार (इनके पूर्वज) जो इनसे पहिले गुज़र चुके हैं, उन्होंने (सदैव पैग़म्बरों को)झूठा बताया। (और आकाशीय पुस्तकों को झूठा बताया)। तो (ऐ रसूल !) देखो ! (इन विद्रोहियों व अवज्ञाकारियों और) अत्याचारियों का परिणाम कैसा बुरा हुआ। (अपने कौतकों से यह भी उसी परिणाम को पहुँचते दिखाई देते हैं) ॥ और (ऐ रसूल !) उनमें से कुछ ऐसे हैं, जो (कुछ दिन पश्चात्) उस पर (अर्थात् क़ुर्आन पर) ईमान ले आवेंगे। और उनमें से कुछ ऐसे हैं, जो (कभी) उस पर ईमान नहीं लावेंगे। और तुम्हारा पालन कर्त्ता (तो अदृष्ट का ज्ञानी है। वह उन अभागे) उपद्रवियों से भली भाँति अभिज्ञ है। (जो अल्लाह और उसके रसूल और क़ुर्आन का सदा इन्कार करते और बिना प्रयोजन उपद्रव फैलाते हैं। वह उन्हें प्रलय के दिन काफ़ी दंड देगा) ॥

और (ऐ रसूल !) यदि (इस प्रकार समझाने पर भी) यह लोग तुमको झूठा बताये चले जायँ, तो तुम (उनसे एक बात) कह दो, कि मेरे काम मेरे लिए हैं और तुम्हारे काम तुम्हारे लिये। तुम मेरे कामों से बरी हो और मैं तुम्हारे कामों से हाथ उठाये हुए हूं। (सच व झूठ का फ़ैसला अल्लाह पर है। जब समय आयेगा, तो वह स्वयं बता देगा कि कौन सत्य पर था और कौन असत्य पर) ॥

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ
وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ
أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ۝
إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَنْ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً
مِنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ
بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ
ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ۝ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ
فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا
نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ

أجلهم

और (ऐ पैग़म्बर !) इनमें से कुछ लोग (ऐसे भी) हैं कि तुम्हारी (बातों की) तरफ़ कान लगाते हैं, तो (क्या इससे तुमने समझ लिया कि लोग ईमान ले आएँगे ? और) क्या तुम (इन) बहिरों को सुना सकोगे, गो अक्ल न भी रखते हों ० और इनमें से कुछ लोग (ऐसे भी) हैं, जो तुम्हारी तरफ़ (बैठे) तकते हैं, तो क्या (इनके तकने से तुमने समझ लिया कि यह लोग ईमान ले आएँगे) ? और क्या तुम (इन) अन्धों का रस्ता दिखा दोगे, गो इनको (कुछ भी) न सूझ पड़ता हो ० अल्लाह तो लोगों पर ज़र्रा भी ज़ुल्म नहीं करता, लेकिन लोग (ख़ुदा की ना फ़र्मानियों से) आप ही अपने ऊपर ज़ुल्म किया करते हैं ० और जिस दिन (ख़ुदा) लोगों को अपने (हुज़ूर में) जमा करेगा, तो (उस दिन उनको ऐसा मालूम होगा कि) गोया (दुनिया में सारे दिन भी नहीं, बल्कि) दिन में से (बहुत) रहे होंगे (तो) घड़ी भर, (और वह) आपस में एक दूसरे को पहिचानेंगे (भी)। जिन लोगों ने ख़ुदा के हुज़ूर में हाज़िर होने को झुठलाया, वह बड़े ही टोटे में आ गये और (इस टोटे से बचने का) उनको रस्ता ही न सूझ पड़ा ० और (ऐ पैग़म्बर !) जैसे २ (अज़ाब के) हम इन लोगों से वादे करते हैं, चाहे हम तुमको उनमें से बाज़ (वादों का वक़्त) दिखायें या (वक़्त से पहिले तुमको (दुनिया से) उठालें (बहर हाल) इनको तो हमारी तरफ़ लौट कर आना है। अलावा बरीं जो कुछ यह कर रहे हैं, ख़ुदा (उसको) देख रहा है० और हर उम्मत का एक रसूल हुआ है, तो जब (क़यामत के दिन) उनका रसूल (अपनी उम्मत के साथ हमारे हुज़ूर में) हाज़िर होगा, तो उम्मत और रसूल में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायगा ० और लोगों पर (मुतलक़) ज़ुल्म न होगा ० और (मुसल्मानो ! यह लोग तुमसे) पूछते हैं कि अगर तुम सच्चे हो, तो यह (अज़ाब का) वादा कब (पूरा होगा) ० (ऐ पैग़म्बर ! तुम इनसे) कहो कि मेरा अपना नुक़सान और नफ़ा भी मेरे इख़्तियार में नहीं, मगर जो ख़ुदा चाहता है (वही होता है, उसके इल्म में) हर एक उम्मत (के दुनिया में रहने) का एक वक़्त मुक़र्रर है। जब उनका (वह) वक़्त आ पहुंचता है—

और (ऐ रसूल !) इनमें कोई (कोई ऐसे भी) हैं, जो तुम्हारे (उपदेश व शिक्षा की) और (प्रकट रूप से तो) कान लगाये रहते हैं (परन्तु हृदय में उनके ईमानदारी लेश मात्र भी नहीं होती। वास्तव में बात यह है कि सच बात के सुनने के लिये तो उनके पास कान भी नहीं हैं)। तो क्या तुम (इन) बहिरों को ; चाहे यह (कैसे ही) बुद्धिहीन हों (नसीहत की बातें) सुनाओगे ॥

और (यह कि) कोई (कोई) उनमें (ऐसे भी) हैं, जो (अपने प्रकट नेत्रों से) तुम (में नुबूव्वत के चिन्ह और तुम्हारी सच्चाई के प्रमाणों) को (बैठे) देखा करते हैं—(परन्तु उनका यह देखना व्यर्थ होता है। यदि हृदय की आँखों से देखें, तो उन्हें कुछ लाभ भी पहुंचे)। तो (ऐ रसूल !) क्या तुम (ऐसे) अन्धों को ; चाहे वह (कितने हीं) दृष्टि हीन हों (सत्य का) मार्ग बताओगे ॥

वास्तव में बात यह है कि अल्लाह तआला लोगों पर कुछ भी अत्याचार नहीं करता, किन्तु लोग अपने प्राणों पर स्वयं ही ज़ुल्म तोड़ते हैं (कि सत्य से अन्धे बहिरे बन कर नर्क में अपना घर बनाते हैं) ॥

और जिस दिन अल्लाह तआला उन्हें (अपने सामने) इकट्ठा करेगा, तो उन्हें मालूम होगा कि मानो (संसार में) हम (केवल एक) दिन की एक (आध) घड़ी रहे (होंगे। और वहाँ) यह परस्पर (एक दूसरे को) पहिचानते भी होंगे (किन्तु यह पहिचानना बिल्कुल व्यर्थ होगा। इस लिये कि वहाँ न यह किसी की सहायता कर सकेंगे और न किसी से सहायता ले सकेंगे)। वास्तव में यह जिन लोगों ने अल्लाह के सामने उपस्थित होने की बात को झूठ बतलाया, वह (अत्यन्त) हानि में रहे। और (इस हानि से बचने के लिये कोई) मार्ग उन्हें न मिला ॥

और (ऐ रसूल !) जिन (जिन अज़ाबों के देने) का हम इन (अवज्ञा कारियों) से वादा कर रहे हैं, उनमें से कोई (सा अज़ाब) हम तुमको दिखादें (और इनको तुम्हारे जीते जी उसका मज़ा चखादें) तो—या (उसके उतरने से पहिले) हम तुमको यहाँ से) उठालें। (अर्थात् उन्हें दुनिया में अज़ाब दें तो—या न दें तो) अन्त में (मर कर तो) उन्हें हमारे ही पास वापिस आना है। फिर (उन्हें अपने कुकर्मों का फल अच्छी तरह मालूम हो जायगा। और) अल्लाह तआला (जो) उनकी (समस्त) करतूतों का साक्षी है (प्रलय के दिन उनके कुकर्मों की पोल खोल कर रख देगा। और अपने अज़ाब का पूरा पूरा मज़ा चखा देगा) ॥

और (ऐ मुहम्मद ! हमने) प्रत्येक जाति (के विश्वास व उपदेश व प्रमाण) के लिये (तुम्हारी तरह एक नबी या) रसूल (भेजा) है। तो जब उनका रसूल (उनके पास) पहुंच गया (और उसने उनके लाभ तथा हानि को अच्छी तरह समझा दिया) तो उनमें इन्साफ़ से फ़ैसला किया गया (कि दुराचारियों पर हमने अपना अज़ाब अवतीर्ण किया, और नेकों को मुक्ति दी)। और लोगों पर (कभी) ज़ुल्म नहीं किया जायगा (न दुनिया में, न परलोक में। परन्तु बुरे कर्मों का दण्ड अवश्य मिलेगा) ॥ और (ऐ रसूल !) यह (काफ़िर तुमसे और मुसल्मानों से पूछते और) कहते हैं कि यदि तुम (अपनी इस बात में) सच्चे हो (कि अवज्ञा कारियों को अल्लाह का अज़ाब दिया जायगा) तो (बताओ कि) यह (अज़ाब का) वादा कब (पूरा) होगा ॥ तुम (उनसे) कहदो कि (यह अदृष्ट की बात है। इसे अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। मैं तो उसका एक बन्दा हूं और ऐसा बन्दा कि) मैं अपने व्यक्ति गत लाभ व हानि (तक) का (भी) मालिक नहीं हूं। (और) सिवाए उस (अधिकार) के, कि जिसे अल्लाह (ही मुझे देना) चाहे, (मुझे किसी बात पर अधिकार नहीं। बाकी इतना मैं जानता हूं कि) प्रत्येक जाति (के अज़ाब व सवाब) का एक समय (नियत) है—

أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا
مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ● أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ
آمَنْتُمْ بِهِ ۚ آلْآنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ●
ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ
تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ●
وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ
لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ● وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ
ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا
النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ
بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ● أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ● هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ

तो (उससे) एक घड़ी भी न पीछे हट सकते और न आगे बढ़ सकते हैं ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि भला देखो तो सही, अगर अज़ाब ख़ुदा रातों रात तुम पर आ नाज़िल हो या दिन दिहाड़े (बहर हाल वह अज़ाब ही होगा, तो) गुनहगार लोग उसके लिये काहे की जल्दी मचा रहे हैं ० तो क्या फिर जब (हक़ीक़त में) आ नाज़िल होगा, तब ही इसका यक़ीन करोगे ? (तो उस वक़् हम तुमसे कहेंगे कि) क्या अब (नाज़िल हुये पीछे तुमको यक़ीन आया)। और तुम तो (इसके आने में शक करके) इसके लिये जल्दी मचाया करते थे ० फिर (क़यामत के दिन) नाफ़र्मान लोगों को हुक्म दिया जायगा कि अब हमेशगी के अज़ाब (के मज़े) चक्खो। यह जो तुमको सज़ा दी जा रही है, तुम्हारे अपने ही करतूत का बदला है (और बस) ० और (ऐ पैग़म्बर ! यह लोग) तुमसे दर्याफ़्त करते हैं कि जो कुछ तुम इनसे कहते हो, क्या वाक़े में होकर रहेगा ? तुम (इनसे) कहो हां (हां) मुझे अपने पर्व-र्दिगार की क़सम अलबत्ता वह ज़रूर होकर रहेगा। और तुम (ख़ुदा को) हरा नहीं सकोगे ० और जिस जिस शख़्श ने (दुनिया में हमारी) नाफ़र्मानी की है, (क़यामत के दिन) अगर तमाम ख़ज़ाने, जो ज़मीन में हैं, उसके क़ब्ज़े में हों, तो वह ज़रूर उनको (अपनी जान के) बदले में दे निकले। और जब लोग अज़ाब को (अपनी नज़र से) देख लेंगे, तो इज़्हार नदामत करेंगे। और लोगों (के इख़्तिलाफ़ के बारे) में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायगा। और उन पर (मुतलक़) ज़ुल्म न होगा ० याद रक्खो कि अल्लाह ही का है, जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है। (और) याद रक्खो कि अल्लाह का वादा (क़यामत) बरहक़ है, मगर अक्सर लोग यक़ीन नहीं करते ०। वही जिलाता और मारता है—

जब उन (में से किसी जाति) का (नियत) समय आवेगा, तो न वह (उस समय बचने के लिये) घड़ी भर पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे ॥ (ऐ रसूल ! इन मुश्रिकों से) कहो कि तुम (जो घड़ी घड़ी ख़ुदा के अज़ाब के आने का समय पूछते हो, तो आख़िर) मुझे बताओ (तो सही कि तुमने अज़ाब को समझा क्या है)। यदि (मान लो) अल्लाह का अज़ाब (आज ही) रात को (सोते में) या दिन को (जब कि तुम अपने २ काम धाम में लगे हुए हो) तुम पर आ जाय, तो (तुमने कौन सी ऐसी जगह बना रक्खी है, जहाँ उससे बच सकोगे। आख़िर) इस (अज़ाब) में (बात) क्या है, जिसके लिये (यह) पापी (इतनी अधिक) जल्दी कर रहे हैं॥

(मुश्रिको ! हमारे अज़ाब से डरने और उस पर विश्वास करने का समय तो यही है। यदि इस समय तुमने उसका विश्वास न किया, तो) क्या जब (अज़ाब तुम पर) स्थित हो जायगा, जब उसका विश्वास करोगे ? (यदि तुम यही सोचे बैठे हो, तो अच्छी प्रकार कान खोल कर सुन लो कि उस समय तुम्हारा विश्वास व ईमान बिल्कुल निरर्थक सिद्ध होगा। उस समय तो हम तुमसे कहेंगे कि) क्या अब (हमारा अज़ाब देखने के बाद तुमको इसका यक़ीन आया)। और (उस समय हम तुम्हें याद दिलायेंगे कि) तुम तो (वही हो ना ! जो हमारे अज़ाब का यक़ीन न करके) उसके लिये जल्दी किया करते थे ॥ (शेष) फिर (इन) अवज्ञाकारियों से कहा जायगा कि सदैव के अज़ाब का स्वाद चक्खो। (आज) तुमको तुम्हारी (उन ही करतूतों का बदला दिया जा रहा है, (जो तुम संसार में किया करते थे) ॥

और (ऐ रसूल !) यह (मुश्रिक-जो) तुमसे मालूम करना चाहते हैं कि क्या यह (अज़ाब का वादा) सच्चा है ? तो तुम (उनसे) कह दो कि हाँ ! मेरे पालन कर्त्ता की शपथ, यह बिल्कुल सच है (कि तुम पर उसका अज़ाब उतरेगा)। और तुम (संसार के पालन कर्त्ता को इस अज़ाब के देने से विवश और) लाचार न कर सकोगे ॥

और (यह अज़ाब इतना कठिन होगा कि) यदि हर वह मनुष्य, जो (इन मुश्रिकों की तरह दुनिया में अपनी उद्दंडता व अवज्ञा में) सीमा पार कर गया हो, पृथ्वी (व आकाश) की (सारी) सम्पत्ति का मालिक हो जाय, तो वह उसको (इस कष्ट से अपनी) जान (बचाने) के लिए (अपने ऊपर से) अवश्य निछावर करदे (गा)। और जब यह (मुश्रिक) अज़ाब को (स्वयं अपनी आँखों से) देख लेंगे, तो दिल ही दिल में (बहुत) लज्जित होंगे। और उनका फ़ैसला (निहायत) इन्साफ़ के साथ किया जायगा। और उन पर (कभी) अत्याचार नहीं किया जायगा ॥

(मूर्खो !) याद रक्खो कि पृथ्वी और आस्मानों में जो कुछ भी है (चाहे वह जीवधारी हो—चाहे निर्जीव, बुद्धिमान हो या निर्बुद्धि—सब) अल्लाह तआ़ला ही का है। (वह दुनिया और दुनिया की समस्त वस्तुओं का अधिकारी है)। अल्लाह तआ़ला का वादा (चाहे प्रलय का हो या प्रलय में अज़ाब देने का) बिल्कुल सच्चा है। (वह अवश्य पूरा होकर रहेगा)। परन्तु इन (मुश्रिकों) में से प्रायः (ऐसे मूर्ख) हैं कि (इतनी स्पष्ट बात को भी) नहीं समझते ॥

वही (अत्यन्त शक्तिमान अल्लाह) है, जो (प्रत्येक जीवधारी को) जिलाता और मारता है—

وَإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ يٰۤأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ
مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۝
وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ
وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا
يَجْمَعُوْنَ ۝ قُلْ أَرَءَيْتُمْ مَّآ أَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ
فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا قُلْ آٰللّٰهُ أَذِنَ لَكُمْ
أَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝ وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ
عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ
فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ ع
وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَأْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ
وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا
إِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ
مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَآ أَصْغَرَ

مِنْ ذٰلِكَ

और उसी की तरफ़ तुम (सब) को लौट कर जाना है ० लोगो ! (इतमाम हुज्जत के तौर पर) तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास नसीहत आ चुकी और अमराज़ क़ल्बी (यानी शिर्क वग़ैरा) की दवा । और ईमान वालों के लिये हिदायत और रहमत ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो (यह क़ुर्आन अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत है। और) लोगों को चाहिये कि ख़ुदा का फ़ज़्ल और उसकी रहमत यानी इस क़ुर्आन को पाकर ख़ुश हों कि जिन (दुनियावी फ़ायदों) के जमा करने के पीछे पड़े हैं, यह उनसे कहीं बेहतर है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि भला देखो तो सही ख़ुदा ने तो तुम पर रोज़ी उतारी। अब तुम लगे उसमें से (बाज़ को) हराम और (बाज़ को) हलाल ठहराने। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि क्या ख़ुदा ने तुमको (इसकी) इजाज़त दी है या (अपनी तरफ़ से) ख़ुदा पर बोहतान बाँधते हो ० और जो लोग ख़ुदा पर झूठ बोहतान बाँधते हैं, वह रोज़ क़यामत को क्या समझे बैठे हैं। इसमें शक नहीं कि अल्लाह लोगों पर (बड़ा ही) फ़ज़्ल रखता (कि उनको फ़ौरन सज़ा नहीं देता) मगर बहुत लोग (इस पर भी उसका) शुक्र नहीं करते ० और (ऐ पैग़म्बर !) तुम किसी हाल में हो और क़ुर्आन की कोई सी आयत भी (लोगों को) पढ़ कर सुनाते और (लोगो !) तुम कोई सा अमल भी करते होते हो, हम (हमा वक़्) जब तुम उस काम में मश्ग़ूल होते हो, तुमको देखते रहते हैं। और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे पर्वर्दिगार (के इल्म) से ज़र्रह भर चीज़ भी ग़ायब नहीं रह सकती (न) ज़मीन में और न आस्मान में। और ज़र्रे से छोटी चीज़ हो—

और उसी की ओर (ऐ मुश्रिको !) तुम सबको (मरने के पश्चात) वापिस जाना है (और उसी को अपने बुरे भले का हिसाब देना है) ॥

लोगो ! (अब तुम पर अल्लाह के सब तर्क व प्रमाण पूर्ण हो चुके। क्यों कि) तुम्हारे पास तुम्हारे पालन कर्त्ता की तरफ़ से नसीहत (अर्थात् एक ऐसी किताब) पहुंच चुकी (जो आद्योपान्त उपदेश व शिक्षा है)। और उन रोगों (अर्थात् कुफ़्र व शिर्क आदि) की दवा (है) जो तुम्हारे सीनों (और तुम्हारे हृदयों) में (एक गोपनीय रहस्य की तरह छिपे हुए) हैं। और (जो) ईमानदारों के वास्ते हिदायत (व क्षमा) व कृपा (का साधन है) ॥

(ऐ रसूल ! लोगों को) तुम अच्छी तरह समझा दो कि उनको चाहिये कि अल्लाह की (इस) कृपा (व पुरस्कार) और उसकी (हिदायत व) कृपा अर्थात इस क़ुर्आन (के उतरने) से (अत्यन्त प्रसन्न और) प्रफुल्लित हों। यह (क़ुर्आन की दौलत समस्त) उस (सांसारिक माल धन) से, जिसे वह समेट समेट कर रखते (और देख देख कर ख़ुश होते) हैं, उत्तम है ॥

(ऐ रसूल ! यह लोग जो कुफ़्र व शिर्क में लिप्त हैं और अल्लाह पर तरह २ के झूठ बोहतान बाँधते हैं और हलाल चीज़ों को हराम कहते हैं— इनसे) कहो कि (आख़िर) मुझे (यह तो) बताओ कि जो अन्न अल्लाह तआला ने (अपनी मेहर्बानी व कृपा से) तुम्हारे लिये भेजा है (और तुम्हारे लिये हलाल व जायज़ कर दिया है) तो तुमने उसमें से कुछ को हलाल और (कुछ को) हराम (क्यों) बना लिया ? (और अपनी हराम की हुई वस्तुओं के हराम होने को अल्लाह के नाम क्यों लगा दिया ? ऐ रसूल इनसे) कहो कि (झूठो) क्या (इस प्रकार हलाल व हराम ठहराने का) तुम को अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है ? या अल्लाह पर (निराधार) तुम झूठ तूफ़ान उठाते हो ॥

और जो लोग अल्लाह पर असत्य दोषारोपण करते हैं, प्रलय के दिन के सम्बन्ध में उनका क्या विचार है ? (क्या वह समझते हैं कि प्रलय नहीं होगी। और उन्हें उनके असत्य भाषण और कुफ़्र व शिर्क का कुछ भी दण्ड न मिलेगा ?)। वास्तव में यह है कि अल्लाह तआला लोगों पर (बड़ा ही) मेहर्बान है (जो इतने बड़े २ पाप करते हुए देखता है और अपना अज़ाब नहीं भेजता। बल्कि उन्हें बुराई भलाई समझाने और हराम हलाल बताने के लिये अपने रसूलों को भेजता है और अपनी किताबों को उतारता है)। लेकिन उनमें से अक्सर (मूर्ख व अभागे अल्लाह तआला का ज़रा सा भी) शुक्र अदा नहीं करते ॥

और (ऐ रसूल ! तुम इन धृष्टता करने वाले काफ़िरों और मुश्रिकों की कुछ परवाह न करो। क्योंकि) तुम किसी स्थिति में भी हो, और (कुछ ही करते हो ; जैसे) कहीं से क़ुर्आन (लोगों के सामने) पाठ करते हो और (एक क़ुर्आन क्या) जब कभी तुम कोई सा काम भी करते हो और उसमें (कैसे ही) तल्लीन होते हो, हम तुम पर (हर दशा में) दृष्टि रखते (और तुम्हारी रक्षा करते रहते) हैं। और पृथ्वी व आकाश में एक रत्ती बराबर चीज़ भी तुम्हारे पालन कर्त्ता (की ज्ञान सीमा) से बाहर नहीं है। और (केवल यही नहीं कि उसे प्रत्येक वस्तु का ज्ञान है, बल्कि) परिमाणु से भी छोटी वस्तु हो, तो—

मِنْ ذٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتٰبٍ مُّبِينٍ ۝ أَلَآ إِنَّ
أَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝
الَّذِينَ اٰمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ
ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ
إِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ أَلَآ إِنَّ
لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَا
يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ۚ إِنْ
يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝
هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَسْمَعُونَ ۝ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ ۖ هُوَ
الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ

या बड़ी, (सब) किताब रोशन (यानी लौह महफ़ूज़) में लिखी हुई (मौजूद) है ० याद रक्खो ! ख़ासाने .खुदा (ऐसे अमन में हैं कि क़यामत के दिन) उन पर न (किसी क़िस्म का) ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वह (किसी तरह पर) आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे ० यह (वह) लोग (हैं) जो ईमान लाए और (.खुदा से) डरते रहे ० इनके लिये (इस) दुनिया की ज़िन्दिगी में भी (आफ़ियत की) .खुश ख़बरी है और आख़िरत में भी (नजात की)। .खुदा की बातों में (ज़र्रा भी) फ़र्क़ नहीं आता। यही बड़ी कामयाबी है ० और (ऐ पैग़म्बर !) इन (काफ़िरों) की (छेड़ ख़ानी की) बातों से तुम आज़ुर्दा ख़ातिर न रहा करो, क्योंकि इज़्ज़त सारी अल्लाह ही की है। वह (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० याद रक्खो ! कि जो (फ़रिश्ते) आसमानों में हैं और जो (लोग) ज़मीन में हैं, सब अल्लाह ही के (महकूम) हैं। और जो लोग .खुदा के सिवा (अपने ठहराये हुए) शरीकों को पुकारते हैं (कुछ मालूम है कि) किस (तरीक़े) पर चलते हैं ? वह सिर्फ़ वह्म पर चलते हैं और निरी अटकलें दौड़ाते हैं ० (लोगो !) वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने तुम्हारे लिये रात को बनाया, ताकि तुम उसमें आराम करो और दिनको (बनाया) ताकि तुम उसकी रोशनी में देखो भालो। इसमें कुछ शक नहीं कि रात दिन के बनाने में उन लोगों के लिये, जो (माक़ूल बात को गोश होश से) सुनते हैं (.कुद्रत .खुदा की बहुतेरी) निशानियाँ (मौजूद) हैं ० (बाज़ लोग) कहते हैं कि .खुदा ने बेटा बना रक्खा है (यह बिलकुल झूठ है)। वह (तमाम उयूब और नुक़सानात से) पाक है। (और) वह (औलाद से) बे नियाज़ । जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन है (सब) उसी का है —

और बड़ी हो, तो (प्रत्येक छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी वस्तु तुम्हारे पालन कर्त्ता के यहाँ एक) स्पष्ट पुस्तक (अर्थात् लौह महफ़ूज़) में (सुरक्षित और लिखी हुई) है ॥ याद रक्खो ! अल्लाह के समीपवर्ती (सारे के सारे इतने सन्तुष्ट और सामयिक घटनाओं से सुरक्षित होते) हैं कि न उन पर कोई भय (किसी आने वाले खटके से) छा जाता है और न वह (किसी बीती हुई बात से) शोक ग्रस्त होते हैं ॥ जो लोग (अल्लाह और उसके रसूल पर) ईमान लाये (और ईमान लाने के बाद उन्होंने नेक काम भी किये) और जो (अल्लाह रसूल की अवज्ञा करने से सदैव) भय मानते रहे, (वही अल्लाह के समीपी हैं) ॥

इन (अल्लाह के समीपियों) के लिये सांसारिक जीवन में भी (सुख व आनन्द का) मंगल समाचार है और प्रलय में भी (इनसे सुख व आनन्द का वादा अल्लाह ने किया है। और) अल्लाह की बातों में (ज़रा सा भी) परिवर्तन नहीं हुआ करता। (उन्हें बिल्कुल निराश और दुखी होने की आवश्यकता नहीं। और) यह (अर्थात लोक व परलोक में सुख व आनन्द और कष्टों से मुक्त होना) बहुत बड़ी सफलता (का बात) है ॥

और (ऐ रसूल ! यह अल्लाह के प्रिय बन्दों से जलने वाले मुश्रिक व काफ़िर तुम मुसलमानों को, जो घृणा की दृष्टि से देखते और तुम्हें छेड़ते हैं, तो) तुमको उनके असत्य सम्भाषणों के कारण शोक न करना चाहिये। क्योंकि समस्त आदर (व सम्मान) का मालिक अल्लाह ही है। (वह तुम्हें इतना सम्मान प्रदान करेगा कि यह काफ़िर, जो तुम को तुच्छ समझते हैं-तुम्हें आँखों पर बैठाने लगेंगे। और) वह (उनके असत्य भाषण को) सुनने वाला (और उनके हाल का) जानने वाला है। (जब समय आयेगा, तो उन्हें दण्ड दिये बिना नहीं छोड़ेगा) ॥

(मुसलमानो !) सुनो ! जो कुछ आसमानों और पृथ्वी में है, वह सब अल्लाह ही के अधिकार (और उसके इख़्तियार) में है। (किसी फ़रिश्ते, मनुष्य या जिन आदि की मजाल नहीं कि वह अल्लाह के मुक़ाबिले में आ सके। और तुम्हें आदर और काफ़िरों को उनको करतूतों का दंड न देने दे)। और वह लोग, जो अल्लाह को छोड़ कर (अपने मन घड़त) साझियों को (अपनी सहायता व सफलता के लिये) पुकारा करते हैं (तुम्हें कुछ ख़बर है कि वह) किस (वस्तु) की आधीनता (और पूजा पाठ) में लगे रहते हैं ? वह केवल (निकृष्ट) कल्पनाओं की ताबेदारी में लगे रहते हैं और (वह) केवल असत्य विचार के अनुयायी हैं ॥

(लोगो ! मूर्त्ति पूजा को छोड़ो और समझदारी से काम लो। देखो ! उपासना के योग्य) वह (अल्लाह) है, जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई। जिससे कि तुम (दुनिया के कामों से निवृत होकर) उसमें चैन (व आराम) प्राप्त करो। और दिन को प्रकाश का साधन बनाया (ताकि तुम अच्छी तरह देख भाल कर अपनी आवश्यकतायें पूरी कर सको। और जीवन निर्वाह के साधन प्राप्त कर सको)। निस्सन्देह उन लोगों के लिये, जो (हृदय के कानों से सत्य बात) सुनते हैं, इस (दिन रात के बनाने) में (अल्लाह के सच्चा पूज्य होने के अनगणित) चिन्ह (मौजूद) हैं ॥

(परन्तु जो हमारी किसी बात पर कान नहीं धरते, उन्हें इन चिन्हों से कुछ लाभ नहीं होता। यही अभागे लोग हैं, जो) कहते हैं कि अल्लाह तआला ने (एक) बेटा बना रक्खा है (सो यह उनकी बेहूदा बकवास है)। वह (सन्तान के जंजाल से) मुक्त है। वह (ऐसी वस्तुओं से) रहित है। (हां, निस्सन्देह) आकाशों और पृथ्वी में जो कुछ है, वह उसी का है। (और वह उसका स्वामी व प्रभु है, परन्तु वह किसी का बाप नहीं है। मूर्खों ! यह तुम्हारा कोरा दावा ही दावा है)।—

إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا أَتَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ
مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا
مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ
بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ
إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ
مَقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ
تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ
أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُونِ ۝
فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا
عَلَى اللّٰهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝
فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ
خَلٰٓئِفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيٰتِنَا فَانْظُرْ

كيف

(लोगो !) तुम्हारे पास इसकी कोई दलील तो है नहीं। तो क्या वे जाने बूझे ख़ुदा पर झूठ बोलते हो ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहदो कि जो लोग ख़ुदा पर झूठ बोहतान बांधते हैं, उनको फ़लाह होनी नहीं ० दुनिया के (आरज़ी) फ़ायदे हैं, (सो चन्द रोज़ मज़े उड़ा लें)। फिर (आख़िरकार) इनको हमारी तरफ़ लौट कर आना है। तब उनके कुफ़्र की सज़ा में हम उनको अज़ाब सख़्त (के मज़े) चखाएँगे ० और (ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों को नूह का हाल पढ़ कर सुनाओ कि जब उन्होंने अपनी क़ौम (के लोगों) से कहा कि भाइयो ! अगर मेरा रहना और ख़ुदा की आयतें (पढ़) पढ़ कर समझाना तुम पर गराँ गुज़रता है, तो मेरा भरोसा अल्लाह ही पर है। पस तुम और तुम्हारे (ठहराये हुये) शरीक (सब मिल कर) अपनी (एक) बात ठहरालो। फिर तुम्हारी (वह) बात तुम (में किसी) पर मख़फ़ी न रहे (ताकि सब उस तदबीर की तकमील में शरीक हो सकें)। फिर (जो कुछ तुमको करना है) मेरे साथ कर चुको और मुझे मोहलत न दो ० फिर अगर तुम (मेरे समझाने से) मुँह मोड़ बैठे, तो मैंने तुमसे कुछ मज़दूरी तो मांगी न थी (कि तुमने उसको चट्टी समझा)। मेरी मज़दूरी तो बस ख़ुदा ही पर है और (उसी की तरफ़ से) मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं उसके फ़र्मां बर्दारों (के ज़ुमरे) में रहूं ० फिर (इतना समझाने पर भी) लोगों ने उनको झुठलाया, तो हमने नूह को और जो लोग उनके साथ किश्ती में (सवार) थे, उनको (अज़ाब तूफ़ान से) नजात दी। और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन सबको ग़र्क़ करके इन लोगों को (उनका) जा नशीन बनाया। तो (ऐ पैग़म्बर !) देखो तो सही—

तुम्हारे पास इसका कोई प्रमाण तो है नहीं, तो क्या वे समझे (बूझे) अल्लाह पर (यह) दोष लगाते हो (कि उसके सन्तान है) ॥

(ऐ रसूल ! इन लोगों से, जो अल्लाह पर बोहतान लगाते और उसके लिये सन्तान सिद्ध करते हैं) कहदो कि अल्लाह तआ़ला पर झूठ तूफ़ान उठाने वाले कभी कल्याण प्राप्त नहीं कर सकेंगे (और वह संसार में भी व्याकुल रहेंगे और परलोक में भी) ॥

दुनिया में (कुछ थोड़ा सा) आराम (उनके लिये) है. (कुछ दिन उसका मज़ा उठालें)। फिर तो इन्हें (मर कर) हमारे ही पास वापिस आना है। फिर हम उन्हें उनके कुफ़्र (व शिर्क व बोहतान उठाने) के बदले कठिन (से कठिन) अज़ाब का मज़ा चखावेंगे ॥

और (ऐ रसूल ! तुम इन लोगों की उद्दंडता व अवज्ञा और आयतों को झूठा बताने और असत्य भाषण करने से निरुत्साह न हो और जहाँ तक हो सके उन्हें समझाये बुझाये चले जाओ। और यह कि इनके समझाने के लिये इनके कुछ पिछले नबियों और उनकी जातियों के क़िस्से सुनाओ। और सबसे पहिले) नूह का हाल इन्हें पढ़ कर सुनाओ। (विशेषतया उनके उस समय का हाल) जबकि उन्होंने अपनी जाति से (बिल्कुल निराश होकर) कहा था कि ऐ लोगो ! यदि (तुम में) मेरा रहना और मेरा अल्लाह की आयतों (और उसके आदेशों) का समझाना तुमको असह्य हो, तो (हुआ करे। मुझे इसकी कुछ भी परवाह नहीं)। मैं तो (अपने) अल्लाह पर भरोसा रखता हूं। अतः (मुझे हानि पहुंचाने के लिये) तुम सब मिल कर (जो) उपाय (भी कर सको) करो। और (अपनी सहायता के लिये) अपने साथियों को भी बुलालो। फिर (इसका प्रचार करो। इतना प्रचार करो कि) तुम्हारा (निश्चित किया हुआ) उपाय तुम (में से किसी) पर गोपनीय न रहे। फिर मेरे साथ (जो कुछ करना है) कर डालो और मुझे अवसर (बिल्कुल) न दो॥

सो अगर तुम (मेरी यह बात भी न सुनो और इससे भी) मुँह फेर लो, तो (यह तुम्हारी ना समझी है)। मैंने तुमसे कुछ मज़दूरी तो (अपनी किसी बात की) माँगी न थी (जो तुमने मेरी बात का सुनना भी पसन्द न किया)। मेरा (प्रचार विषयक सेवाओं का) पुरस्कार तो सिवाय अल्लाह के किसी पर नहीं है (वही मुझे प्रदान करेगा)। और मैं (जो यह सेवायें करता हूं, तो इसका कारण यह है कि) आज्ञा पालन (व आधीनता करना और प्रचार करने) का मुझे (अल्लाह की तरफ़ से) हुक्म दिया गया है ॥

(संक्षिप्त वृतान्त यह है कि नूह ने हज़ार समझाया) पर उन्होंने उनको झूठा ठहराया (और उनकी एक बात पर भी अमल न किया। परिणाम यह हुआ कि उन पर हमारा अज़ाब उतरा)। सो हमने नूह को और उनके साथ जो लोग नाव में (सवार) थे, उन्हें तो (इस अज़ाब अर्थात तूफ़ान से) मुक्त कर दिया। और जिन लोगों ने हमारे हुक्म (को न माना और हमारे नबी) को झूठा बताया, हमने उन (सब) को डुबो दिया। और उन (मुक्ति पाने वालों) को (उनका) स्थानापन्न बना दिया। तो (ऐ रसूल !) देखो—

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ
بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ
نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِ
هِمْ مُوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ
بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُجْرِمِينَ ۝
فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَٰذَا
لَسِحْرٌ مُبِينٌ ۝ قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَ
كُمْ ۖ أَسِحْرٌ هَٰذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُونَ ۝ قَالُوا أَجِئْتَنَا
لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا
الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا
بِمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سَاحِرٍ
عَلِيمٍ ۝ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ أَلْقُوا

जो लोग (अज़ाब तूफ़ान से) डराये जा चुके थे, उनका कैसा (ख़राब) अंजाम हुआ ० फिर नूह के बाद हमने (और) रसूलों को उनकी (अपनी अपनी) क़ौम की तरफ़ भेजा, तो यह पैग़म्बर उनके पास मोजिज़े भी लेकर आये। इस पर भी जिस चीज़ को यह लोग पहिले झुठला चुके थे, उस पर ईमान न लाये (पर न लाये)। इसी तरह हम उन लोगों के दिलों पर मुहर कर दिया करते हैं, जो (हद उबूदियत से) क़दम बाहर रखते हैं ० फिर इन (पैग़म्बरों) के बाद हमने मूसा और हारून को अपने निशान (यानी मोजिज़े) देकर फ़िर्औन और उसके दर्बारियों की तरफ़ भेजा, तो अकड़ बैठे। और यह लोग कुछ थे ही नाफ़र्मान ० तो जब इनके पास हमारी तरफ़ से हक़ बात पहुँची (यानी मोजिज़ात) तो वह लगे कहने कि यह तो ज़रूर खुला जादू है ० मूसा ने कहा कि जब हक़ बात तुम्हारे पास आई, तो क्या तुम उसकी निस्बत (ऐसी लग़्व बात) कहते हो--क्या यह जादू है ? और जादूगरों (का तो यह हाल है कि उन) को (कभी) कामयाबी नहीं होती ० वह लगे कहने क्या तुम इस ग़रज़ से हमारे पास आए हो कि जिस (दीन) पर हमने अपने बड़ों को (चलते हुये) पाया, उससे हमको बर्गश्ता कर दो और मुल्क में तुम दोनों (भाइयों) की बड़ाई हो। और हम तो तुम (दोनों) पर ईमान लाने वाले हैं नहीं ० और फ़िर्औन ने (अपने लोगों को) हुक्म दिया कि हर एक माहिर जादूगर को हमारे हुज़ूर में ला हाज़िर करो ० फिर जब जादूगर अखाड़े में आ मौजूद हुये, तो उनसे मूसा ने कहा—

जो (लोग अल्लाह के अज़ाब से) डरा दिये गये थे (और उन्होंने उसकी कुछ परवाह न की थी) उनका परिणाम कैसा (बुरा) हुआ ॥

फिर नूह के बाद हमने और रसूलों को उनकी जातियों की तरफ़ भेजा, तो यह रसूल भी (नूह की तरह) अपनी (अपनी) जातियों के पास (अपनी सचाई के) प्रमाण (और चमत्कार) लेकर आये। फिर (भी) जिस बात को वह (अर्थात् उनके जाति वाले तर्कों को सुनने और चमत्कार देखने से) पहिले झूठा बतला चुके थे (प्रमाण व तर्क सुनने और चमत्कार देखने के बाद) उस पर ईमान न लाये। (जिस प्रकार यह लोग विद्रोह व अवज्ञा करते २ सन्देहात्मक हृदय हो गये) हम इसी प्रकार (पाप और बेईमानी में) हद से बढ़ जाने वालों के दिलों पर मोहर कर देते हैं ॥

फिर इन (रसूलों) के बाद हमने मूसा और (उनके भाई) हारून को अपने चमत्कार देकर फ़िर्औन और उस (के राज्य) के उच्च कर्मचारियों की तरफ़ भेजा, तो उन्होंने विद्रोह किया (और मूसा पर ईमान लाने से साफ़ इन्कार कर दिया)। और वह लोग कुछ थे ही पापी (अर्थात् विद्रोह व पाप करने का उनका स्वभाव सा हो गया था और इसी में उन्हें मज़ा सा मिलता था) ॥

सो जब हमारी तरफ़ से उनके पास सत्य पहुंचा (अर्थात् उन्होंने हमारे चमत्कार देखे) तो कहने लगे यह तो साफ़ जादू है ॥

(इस पर) मूसा ने कहा कि (मैंने तुम्हें ऐसे समझाया, तो जब तुम्हारी समझ में न आया और अब कि) जब तुम्हारे पास सत्य (अर्थात् तुम्हारी आँखों के सामने अल्लाह का दिया हुआ चमत्कार) आया, तो तुम उसके विषय में (यह) बकवास करने लगे (कि यह जादू है। अरे मूर्खों !), यह जादू है ? (तुम इसे जादू कहते हो ?) यद्यपि (तुम जानते हो कि) जादूगरों को (अपनी जादूगरी में ऐसी स्पष्ट) सफलता (प्राप्त) नहीं होती ॥

(मूसा की इस बात का वह जवाब तो क्या देते-वही मूर्खता की बात फिर करने लगे और) कहने लगे कि तुम हमारे पास इस लिये आये हो, जिससे कि जिस (मार्ग) पर हमने अपने बाप (दादों) को (चलते हुए) पाया, तुम हमको उससे फेर दो। और ताकि तुम दोनों (भाइयों) को इस देश में सरदारी (व राज्य) प्राप्त हो। और (एक नए धर्म व राज्य की नीव डालो। परन्तु तुम चाहे कितनी ही कोशिश कर लो) हम तुम दोनों (की बात) को मानने वाले नहीं हैं ॥

और फ़िर्औन ने उन्हें (अर्थात् अपने दरबारियों को) हुक्म दिया कि तुम समस्त गुणवान जादूगरों को (चुन चुन कर) मेरे पास ले आओ (मैं मूसा के चमत्कार का रहस्य प्रकट कर दूँगा) ॥

संक्षिप्त वृतान्त यह है—जब (फ़िर्औन की इच्छानुसार समस्त) जादूगर आ गये (और एक मैदान में एक तरफ़ मूसा और एक तरफ़ जादूगर खड़े हो गये) तो मूसा ने (पहिले उन्हें अपनी बानगी दिखाने का अवसर दिया। अतएव) उनसे कहा कि—

कि तुमको जो कुछ डालना मन्ज़ूर है (मैदान में) डाल चलो ० तो जब उन्होंने (अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ को साँप बना बना कर) डाल दिया, तो मूसा ने कहा कि यह जो तुम (बनाकर) लाए हो, जादू है। (सो) बेशक अल्लाह इसको दम के दम में मलिया मेट कर देगा, क्योंकि अल्लाह मुफ़्सिद लोगों के काम बनने नहीं दिया करता ० और अल्लाह अपने कलाम (की बरकत) से हक़ बात को हक़ कर दिखायेगा, गो मुन्किरों को बुरा (ही क्यों न) लगे ० बाद हमा मूसा पर उनही की क़ौम की नस्ल के सिर्फ़ चन्द आदमी ईमान लाए, सो भी फ़िर्औन और उसके सर्दारों से डरते २ कि कहीं (फ़िर्औन) उन पर कोई मुसीबत न ला डाले। और (इनका ख़ौफ़ जा से भी था, इस लिये कि) फ़िर्औन मुल्क में बहुत बढ़ा चढ़ा था। और (नीज़ इस लिये कि) वह (लोगों पर) ज़ियादती किया करता था ० और मूसा ने (अपनी क़ौम के लोगों को) समझाया कि भाइयो ! अगर तुम (हक़ीक़त में) अल्लाह पर ईमान रखते हो, तो शर्त फ़र्मांबर्दारी यह है कि उसी पर भरोसा रक्खो ० इस पर उन्होंने जवाब दिया कि हमको ख़ुदा ही का भरोसा है।(और साथ ही दुआ की कि) ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हमको (इन) ज़ालिम लोगों के ज़ुल्म का तख़्तए मश्क़ न बना ० और अपनी रहमत से हमको (इन) लोगों (के पंजे) से नजात दे, जो कफ़िर हैं ० और हमने मूसा और उनके भाई (हारून) की तरफ़ वही भेजी कि मिस्र में अपने लोगों के (रहने के) घर बनालो। और (तुम सब लोग) अपने उनहीं घरों को मसजिदें क़रार दो और (वहीं) नमाज़ पढ़ो। और (ऐ मूसा !) ईमान वालों को ख़ुश ख़बरी भी सुनादो (कि अब तुम्हारी नजात का वक़्त क़रीब आ लगा) ० और मूसा ने दुआ माँगी कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! तू ने फ़िर्औन—

مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ● فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُمْ
بِهِ السِّحْرُ إِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ
الْمُفْسِدِينَ ● وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهِ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُجْرِمُونَ ● فَمَا آمَنَ لِمُوسَىٰ إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِنْ قَوْمِهِ
عَلَىٰ خَوْفٍ مِنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَائِهِمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ وَ
إِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ●
وَقَالَ مُوسَىٰ يٰقَوْمِ إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ
تَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ ● فَقَالُوا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ● وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِينَ ● وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ
وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوَّءَا لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا
وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَبَشِّرِ
الْمُؤْمِنِينَ ● وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ

तुमको जो चीज़ (भी) डालनी हो, डाल दो ॥

सो जब उन्होंने (अपनी रस्सियों और लाठियों को मैदान में) डाल दिया (और नज़र बन्दी करके लोगों को उनके साँप करके दिखाये) तो मूसा ने उनसे कहा कि जो कुछ भी तुम (अपने साथ) लाये हो (यह) जादू है। इसे तो (मेरा) अल्लाह अभी (पल भर में) मिटा डालेगा। (अतएव मूसा ने अल्लाह की आज्ञानुसार अपनी लाठी डाली। वह उसी समय बड़ा भारी साँप बन गई और उन समस्त बनावटी साँपों को निगल गया)। निस्सन्देह अल्लाह तआला (ऐसे) बाधकों के काम बनने नहीं देता ॥

और अल्लाह तआला अपने हुक्म (के ज़ोर) से सत्य को (इसी प्रकार) सिद्ध (और विजयी) कर दिखाता है, चाहे पापी (लोग कितना ही) बुरा मानें ॥

(लेकिन यह होते हुये भी कि फ़िर्औन और उसके साथी भरी सभा में इतने ज़लील हुए) फिर (भी) मूसा की जाति के कुछ ही युवक मूसा पर ईमान लाये। (और वह भी) फ़िर्औन और उसके दरबारियों से इस बात का भय करते हुए कि कहीं वह उन्हें (किसी) संकट में न फँसवादे। और (वास्तव में पूछो तो उनका डरना ठीक भी था) क्योंकि (उस समय) फ़िर्औन, देश में (बहुत) बड़ा (आदमी समझा जाता) था। और वह (बड़ा होने के साथ ज़ुल्म व) ज़्यादती करने वाला भी था ॥

और (जब) मूसा ने (उन्हें भय भीत पाया, तो अपनी जाति से) कहा कि लोगो ! अगर तुम अल्लाह पर (सच्चे दिल से) ईमान ले आये हो (और) अगर तुम पक्के) मुसल्मान हो, तो (तुम अल्लाह के सिवाय किसी से न डरो और) उसी पर भरोसा रक्खो ॥

(इस पर) उन्होंने (मूसा से) अर्ज़ किया कि (अब हमें दुनिया में किसी का भय नहीं। अब) हम अल्लाह ही पर भरोसा रखते हैं (और उसी से विनय करते हैं कि) ऐ हमारे पालन कर्ता ! हमको इन ज़ालिम लोगों के (ज़ुल्म) अभ्यास करने का साधन न बना। और अपनी मेहर्बानी (व कृपा) से हमें इन काफ़िर लोगों से मुक्ति दे ॥

(इन लोगों ने तो हमसे दुआ माँगी) और हमने मूसा और उनके भाई हारून को वही भेजी कि अपने (ईमानदार) लोगों के (रहने के) लिये मिस्र में मकान बनालो। और अपने मकानों में मुसल्ले (नमाज़ की जगह) बनालो। और (उन्हीं पर) नमाज़ पढ़ा करो। और (ऐ मूसा ! इन) ईमानदारों को मंगल समाचार सुनादो (कि संसार में भी बहुत जल्द तुम्हें विजय प्राप्त होगी और प्रलय में स्वर्ग मिलेगा) ॥

और मूसा (व हारून) ने अर्ज किया–ऐ हमारे पालन कर्ता ! तू ने फ़िर्औन—

और उसके सर्दारों को (इस) दुनिया की ज़िन्दिगी में (बड़ी) शान व शौकत और दौलत दे रक्खी है। (और) ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! (यह साज़ व सामान तूने इनको इसी ग़रज़ से दे रक्खा है) कि (लोगों को) तेरे रस्ते से बहकायें, तो ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! इनके मालों पर झाड़ू फेर दे। और इनके दिलों को सख़्त कर दे कि यह लोग अज़ाब दर्दनाक के देखे बिदून ईमान ह न लायें ० (ख़ुदा ने) फ़र्माया कि तुम दोनों (भाइयों) की दुआ क़बूल हुई, तो तुम दोनों साबित क़दम रहो और (इन) जाहिलों के रस्ते न चलना ० और हमने बनी इस्राईल को दरिया के पार उतार दिया, फिर फ़िरऔन और उसके लश्करियों ने सर्कशी और शरारत की राह से उनका पीछा किया। यहाँ तक कि जब फ़िरऔन (के सर) पर डुबाव (पानी) आ पहुंचा, तो लगा कहने कि अब मुझको यक़ीन आया कि जिस (ख़ुदा) पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं, उसके सिवा कोई (और) माबूद नहीं। और (अब) मैं (भी उसी के) फ़र्मांबर्दारों में हूं ० (तो ख़ुदा ने उसको मलामत की और फ़र्माया कि) क्या अब (ऐसे वक़्त में ईमान !) और (तेरा हाल तो यह था कि इससे) पहिले बराबर नाफ़र्मानी करता रहा। और तू मुफ़्सिदों में (का एक हो मुफ़्सिद) था ० तो आज (तेरी रूह को तो नहीं, मगर) तेरे बदन को हम (पानी में तह नशीन होने से) बचा देंगे। (वह भी इस ग़रज़ से) कि जो लोग तेरे बाद आने वाले हैं, तू उनके लिये (निशान) इब्रत हो। और अलबत्ता बहुत से लोग हमारी (क़ुद्रत की) निशानियों से ग़ाफ़िल हैं ० और हमने बनी इस्राईल को (मुल्क शाम में) एक सच्चे ठिकाने से जा बिठाया। और उनको उम्दा उम्दा चीज़ें (खाने को भी) दीं। तो बनी इस्राईल ने जो (दीन में) इख़्तिलाफ़ डाला—

وَمَلَأَهُ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا
عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝
قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا
تَتَّبِعَانِّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَجَاوَزْنَا بِبَنِي
إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا
وَعَدْوًا حَتَّىٰ إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ آمَنْتُ أَنَّهُ
لَا إِلَٰهَ إِلَّا الَّذِي آمَنَتْ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ وَأَنَا مِنَ
الْمُسْلِمِينَ ۝ آلْآنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِينَ ۝ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ
خَلْفَكَ آيَةً ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا
لَغَافِلُونَ ۝ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مُبَوَّأَ
صِدْقٍ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا اخْتَلَفُوا

ع

और उसके दरबारियों को सांसारिक जीवन में (जो) माल (व धन, आनन्द व सुख) गौरव व प्रतिष्ठा प्रदान की है, तो ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! (क्या इसी लिये) कि वह (लोगों को) तेरे मार्ग से बहकावें। (अगर तेरी यह इच्छा नहीं है, तो) ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! इनके मालों पर झाड़ू फेर दे और इनके दिलों को (ऐसा) कठोर कर दे कि वह कभी ईमान लाही न सकें। यहां तक कि कठोर अज़ाब (अपनी आंखों से) देख लें। (अर्थात् वह हृदय की कठोरता इन्हें घोर अज़ाब के योग्य बना दे) ॥

(अल्लाह की) आज्ञा हुई कि तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार हुई। (इनके मरने का समय बहुत निकट आ गया)। सो तुम (सन्तोषवान, कृतज्ञ और दृढ़ व) स्थिर रहना और मूर्ख लोगों के मार्ग पर न चलना ॥

और (जब फ़िरऔन के मरने व नष्ट होने का समय आ गया, तो मूसा व हारून हमारी आज्ञानुसार बनी इस्राईल को मिस्र से अपने साथ लेकर चले, तो समुद्र ने रास्ते में बाधा डाली। और हमने मूसा की दुआ की बरकत से समुद्र को फाड़ दिया और उसमें सड़कें बना दीं। और इसी तरह अपनी मेहर्बानी व कृपा से) हमने बनी इस्राईल को समुद्र पार उतार दिया। (जब फ़िरऔन को यह मालूम हुआ) तो फ़िरऔन और उसकी सेना शरारत व शत्रुता (के इरादे) से (मूसा और) उन (के साथियों) का पीछा करने के लिये चला। (और चाहा कि मूसा की तरह समुद्र से पार हो जाय। परन्तु समुद्र में उसके क़दम रखने की देर थी कि पानी ने उसे चारों तरफ़ से घेर लिया)। यहां तक कि जब उस पर डुबाउ (डुबाउ पानी) आ पहुँचा, तो (उसका सारा नशा हरन हो गया। और) लगा कहने कि (अब) मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि सिवाय उस पूज्य के—जिस पर कि बनी इस्राईल ईमान लाये, कोई पूज्य (उपासना के योग्य) नहीं। और मैं (आज से उसी पर ईमान रखता हूं और उसीका) आधीन हूं ॥

(उस समय उससे कहा गया कि) क्या अब (मौत के समय ईमान लाना है ? अब क्या रक्खा है)। और तू (तो वही है ना ! जो) पहिले अवज्ञा करता रहा और (लोगों को) बिगाड़ता रहा (अर्थात सारी आयु ने हमारे विरोध में व्यतीत की और अब हमारा अज़ाब देखने के बाद ईमान लाता है। इस समय तेरा ईमान स्वीकृत होने के योग्य नहीं) ॥

(हां इतनी बात अवश्य हो सकती है) कि आज हम तेरे शरीर (और लाश) को (नष्ट*होने से) बचा लेंगे। जिससे कि जो लोग तेरे पश्चात आने वाले हैं, उनके लिये (यह नसीहत व शिक्षा का) चिन्ह हो। (अतः निशानी बन गई)। और (इस प्रकार की सैकड़ों निशानियां और भी हैं, लेकिन) बहुत से लोग (हमारी क़ुद्रत व महानता की) निशानियों से (बिल्कुल) अभिज्ञ नहीं हैं ॥

* टीका—फ़िरऔन की लाश अब तक क़ाहिरा में, जो मिस्र देश की राजधानी है—एक बड़े अजायब घर में ज्यों की त्यों मौजूद है और क़ुर्आन मजीद के कथनानुसार न ख़राब हुई न नष्ट हुई :—हसन निज़ामी ॥

और हमने बनी इस्राईल को (फ़िरऔन व फ़िरऔन के वंशजों को नष्ट व बरबाद करने के बाद शाम में एक) अच्छा स्थान रहने को दिया। और (खाने पीने को उत्तम उत्तम और) पवित्र वस्तुएं प्रदान कीं—

حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ فَاِنْ كُنْتَ فِيْ
شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ
فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ
الْاَلِيْمَ ۝ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ
اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۭ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ
الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝
وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ
جَمِيْعًا ۭ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝

वह इल्म हुए पीछे (डाला। ऐ पैग़म्बर ! दुनिया में) यह लोग जिन २ बातों में इख़्तलाफ़ करते रहे हैं, तुम्हारा पर्वर्दिगार क़यामत के दिन इनमें उन इख़्तलाफ़ात का फ़ैसला कर देगा० तो (ऐ पैग़म्बर ! यह क़ुरआन) जो हमने तुम्हारी तरफ़ उतारा है, अगर (बतक़ाज़ाए बशरीयत) इसकी निस्बत तुमको किसी क़िस्म का वाहिमा हो, तो तुमसे पहिले (भी किताबें उतरी हैं) जो लोग (उन) किताबों को पढ़ते हैं, उनसे पूछ देखो (वह तसदीक़ कर देंगे कि पहिले भी लोगों पर वही नाज़िल हुई है)। कुछ शक नहीं कि तुम पर तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से किताब बरहक़ नाज़िल हुई है। तो हरगिज़ शुबहा करने वालों (के ज़ुमरे) में न होना० और न उन लोगों (के ज़ुमरे) में होना, जिन्होंने ख़ुदा की आयतों को झुठलाया (कि ऐसा करोगे) तो (आख़िरकार) तुम भी नुक़सान उठाने वालों में हो जाओगे० (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग (अपनी बद किर्दारियों की वजह से) तुम्हारे पर्वर्दिगार के हुक्म (अज़ाब) के मुस्तौजिब ठहर चुके हैं—वह तो जब तक अज़ाब दर्दनाक को (अपनी आंखों से) न देख लेंगे, किसी तरह ईमान लाने वाले हैं नहीं० अगर्चे (दुनिया जहान के तमाम) मोजिज़े इनके सामने (क्यों न) आ मौजूद हों० तो क़ौम यूनुस (की बस्ती) के सिवा और कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि (नुज़ूल अज़ाब से पहिले) ईमान ले आती और उनका ईमान लाना फ़ायदा देता कि (यूनुस की क़ौम के लोग) जब (अज़ाब आता हुआ देख कर झट से) ईमान ले आए, तो हमने दुनिया की (इसी) ज़िन्दिगी में उनसे रुसवाई के अज़ाब को दफ़े कर दिया और इनको एक वक़्त (ख़ास) तक रसाया बसाया० और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार चाहता, तो जितने आदमी रूए ज़मीन पर हैं, सबके सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगों को मजबूर कर सकते हो कि वह (सबके सब) ईमान ले आयें०

तो (उन्हें चाहिये था कि वह अपने खाने पीने तथा रहने सहने के इस प्रबन्ध पर हमारे अनुग्रहीत होते, लेकिन उन्होंने इसके बिल्कुल विरुद्ध किया। और ग़ज़ब यह कि अल्लाह के विरोधियों का परिणाम देखने के बाद डूबे। और अल्लाह का मान व श्रेष्ठता और गौरव को अच्छी तरह) समझने के उपरान्त उन्होंने (धर्म में अत्यन्त घोर) मत भेद किया। (ऐ रसूल ! समझने बूझने के बाद धर्म के मामले में इनका इस प्रकार झगड़ना हँसी खेल नहीं है) निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता इनके बीच प्रलय के दिन फ़ैसला करेगा। इनकी उन (समस्त) बातों का, जिनमें यह (दुनिया में) मत भेद करते रहे हैं॥

अतएव (ऐ रसूल ! क़ुरआन में जो यह क़िस्से हैं; जैसे फ़िरऔन का क़िस्सा) जिसे हमने तुम्हारी तरफ़ उतारा है। अगर तुम (इसकी तरफ़ से) सन्देह में हो, तो तुम उनसे पूछ देखो-जो तुमसे पहिले की किताबें (तौरेत, इन्जील आदि) पढ़ते हैं। (और इन क़िस्सों से अभिज्ञ हैं। तुमको मालूम हो जायगा कि) तुम्हारे पास (एक) सच्ची किताब तुम्हारे पालन कर्त्ता की तरफ़ से आई है। अतएव तुम कदापि सन्देह (व शंका करने वालों में से न होना॥

और न तुम उन लोगों में से होना, जिन्होंने अल्लाह तआला की आयतों (और उनके आदेशों) को झूठा बताया। अन्यथा तुम भी (इनके समान) हानि उठाने वालों में से हो जाओगे* ॥

* टीका यद्यपि प्रकट रूप से इस प्रकार की आयतों में रसूलुल्लाह को सम्बोधित किया जाता है, लेकिन वास्तव में प्रत्येक ऐसे मनुष्य को सम्बोधन किया जाता है, जो अल्लाह की आयतों में सन्देह करता है या उसे झूठा बताता है:—हसन निज़ामी।

(और न ऐ रसूल ! तुम उन लोगों के आयतों आदि को झूठा बताने या अल्लाह की आयतों में सन्देह करने वालों के शंका की परवाह करना) क्योंकि तुम्हारे पालन कर्त्ता की यह बात इन लोगों के बारे में (साबित और) जाँची जा चुकी है कि यह (सदैव के अभागे) कभी ईमान नहीं लावेंगे। (और क़ुरआन का आकाशीय पुस्तक होना स्वीकार न करेंगे)। यद्यपि सारे (संसार के) तर्क इनके पास पहुंच जावें जब तक कि (एक) घोर अज़ाब को (अपनी आँखों से न) देख लें॥

अतएव कोई (गाँव और) बस्ती ऐसी नहीं गुज़री कि जो (अज़ाब के आने से पहिले) ईमान ले आती, जिससे कि उसका ईमान उसे नफ़ा पहुंचाता। (और अज़ाब की नौबत न आती)। परन्तु हाँ, यूनुस (पैग़म्बर) की जाति (कि) जब (उस जाति के) लोग ईमान ले आये, तो हमने (अधोगति व) अकीर्ति का अज़ाब दुनिया की (इसी) ज़िन्दगी में उनसे दूर कर दिया। और एक समय तक (अर्थात् जीवन भर) उन्हें लाभ पहुंचाया। और (ऐ रसूल ! एक यूनुस की जाति क्या) अगर तुम्हारा पालन कर्त्ता चाहता, तो पृथ्वी भर में जितने (मनुष्य) भी बसते हैं, सारे के सारे ईमान ले आते। (और किसी को ईमान लाने में कुछ संकोच न होता। लेकिन तुम्हारे पालन कर्त्ता ने अपनी किसी युक्ति के कारण ऐसा करना उचित न समझा)। तो क्या (ऐ रसूल !) तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करोगे, जिससे कि वह (सबके सब) ईमानदार बन जावें॥

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَجْعَلُ
الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝ قُلِ انْظُرُوا
مَاذَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُغْنِي الْآيَاتُ
وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ
إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوا
إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝ ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ
آمَنُوا كَذَلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ ۝
قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي
فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ
أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا
وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِنْ
دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ

और बे हुक्म ख़ुदा किसी शख़्स के इख़्तियार में नहीं है कि ईमान ले आये। और (ख़ुदा शिर्क और कुफ़्र की) गन्दिगी उनही लोगों पर डालता है, जो (दलायल वहदानियत में) अक़्ल को काम में नहीं लाते ० (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि यह जो कुछ आस्मान व ज़मीन में है, ज़रा इसकी तरफ़ तो नज़र करो (तो ख़ुदा का होना और एक होना तुम पर मुन्कशिफ़ हो जायगा)। और जो लोग ईमान नहीं लाते, निशानियां और डरावे उनको कुछ भी सूदमन्द नहीं ० तो क्या (यह लोग भी) वैसी ही गर्दिशों के मुन्तज़िर हैं, जैसी इनसे पहिले लोगों पर आ चुकी हैं। (अगर ऐसा है, तो ऐ पैग़म्बर इनसे) कहदो अच्छा तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में हूं ० फिर (जब नुज़ूल अज़ाब का वक़्त आ पहुंचता है, तो) हम अपने रसूलों को (अज़ाब से) बचा लेते हैं, और अला हाज़ल क़यास उन लोगों को (भी) जो (उन पर) ईमान लाए। हमने अपने ज़िम्मे लाज़िम कर लिया है कि (ऐसे वक़्त में) ईमान वालों को बचा लिया करें। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि लोगो! अगर तुमको मेरे दीन के बारे में (किसी तरह का) शक हो, तो (मैं तुमसे साफ़ कहे देता हूं कि) ख़ुदा के सिवा जिन (माबूदों) की तुम परस्तिश करते हो, मैं तो उनकी परस्तिश करता नहीं। बल्कि मैं तो अल्लाह ही की इबादत करता हूँ, जो (ऐसा क़ादिर है कि) तुम (सब की रूहों) को क़ब्ज़ कर (के अपने पास बुला) लेता है। और मुझको (उसकी सर्कार से यह) हुक्म दिया गया है कि मैं ईमान वालों (के ज़ुमरे) में रहूँ ० और (नीज़ ख़ुदा ने मुझसे) यह (भी फ़रमाया है) कि (इसी) दीन की तरफ़ अपना मुँह किये सीधा चला जा और मुश्रिकों (के ज़ुमरे) में हरगिज़ (शामिल) न होना ० और ख़ुदा के सिवा किसी को न पुकारना कि वह तुझको न तो नफ़ा ही पहुंचा सकता है और न तुझको नुक़सान ही पहुंचा सकता है। और (इस पर भी) अगर तूने (ऐसा) किया—

यद्यपि (तुम जानते हो कि) अल्लाह के हुक्म बिना किसी मनुष्य को ईमान लाने का अधिकार नहीं है। (वह अल्लाह जिसे चाहता है, ईमान की दौलत नसीब कर देता है)। और वही उन लोगों पर (अपना) अज़ाब उतार देता है, जो (उसकी शक्ति की निशानियों पर ध्यान व चिन्ता और) बुद्धि (व विवेक) से काम नहीं लेते॥

ऐ रसूल! जो अल्लाह के एक होने की निशानियाँ देखना चाहते हैं, उनसे) कहो कि आकाशों व पृथ्वी में जो वस्तुएँ हैं, उन पर ध्यान करो।(यदि तुम कुछ भी बुद्धि रखते हो और सच्चे दिल से सत्य के ढूँढने वाले हो, तो तुमको पृथ्वी व आकाश की प्रत्येक वस्तु एक पूज्य की महिमा का भंडार दिखाई देगी)। और जो लोग (बिना सोचे समझे यह फैसला किये बैठे हैं कि कभी) ईमान नहीं लावेंगे, उनको (तर्क और) निशानियां व धमकियां (और डरावे) कुछ भी लाभ दायक नहीं॥

(जब यह लोग हमारी क़ुदरत की निशानियाँ देखने और डरावे और धमकियाँ सुनने के बाद भी ईमान नहीं लाते) तो (मालूम हो गया कि) यह लोग तो बस उन मुसीबतों का इन्तिज़ार कर रहे हैं, जो इनसे पहिले लोगों पर गुज़र चुकी हैं। (यदि वास्तव में यह बात है, तो ऐ रसूल!) तुम (इनसे) कहदो कि (अच्छा) तुम प्रतीक्षा करो। मैं भी तुम्हारे साथ (तुम्हारे लिये अज़ाब के अवतीर्ण होने का) प्रतीक्षक हूं॥

फिर जब अल्लाह का अज़ाब उतरता है, तो हम अपने रसूलों को उससे मुक्ति दे देते हैं। और उसी तरह उन लोगों को भी, जो ईमान लाये। (प्रतिज्ञानुसार हमारा सिद्धान्त है कि हम ईमान्दारों को (अपने अज़ाब से बचायें (और उनका परिणाम काफ़िरों जैसा न करें)॥

(ऐ रसूल! अब) तुम (इनसे एक न्यायोचित बात) कहदो कि लोगो! अगर (इतने समझाने के बाद भी) तुमको मेरे धर्म (के सत्य होने) में सन्देह (व शंका बाकी हो, तो (हुआ करे)। अल्लाह को छोड़ कर जिन (पूज्यों) की तुम उपासना करते हो, मैं तो उनकी उपासना कर नहीं सकता। बल्कि मैं तो उस सर्व शक्तिमान) अल्लाह की उपासना करता हूं, जो तुम्हारी जान निकालता है। और मुझे (उसकी तरफ़ से भी) यह (ही) हुक्म दिया गया है कि मैं (ऐसे अल्लाह पर) ईमान लाने वालों में हो जाऊँ॥

और यह (भी हुक्म दिया गया है) कि (ऐ रसूल! तुम अपने आप को (सत्य) धर्म ही की ओर लगाये रक्खो और कदापि २ मुश्रिकों में से न बनो।

और ऐ रसूल!) अल्लाह के सिवाय किसी ऐसे को (अपनी सहायता के लिये) न बुलाओ, जो तुमको (अपनी पूजा के फल स्वरूप) न (कुछ) लाभ पहुंचा सकता है और न (अवज्ञा के दंड स्वरूप कुछ) हानि पहुँचा सकता है। पस (मान लो) यदि तुमने ऐसा किया (अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे की पूजा की)—

فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظّٰلِمِينَ ۝ وَإِن يَمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ
فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ
لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ
الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قُلْ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ
الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ فَمَنِ اهْتَدٰى فَإِنَّمَا يَهْتَدِي
لِنَفْسِهِ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَآ أَنَا
عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوحٰىٓ إِلَيْكَ
وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِينَ ۝

سورة هود عليه السلام مائة ثلث و عشرون

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
الٓر ۝ كِتٰبٌ أُحْكِمَتْ آيٰتُهُ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِن لَّدُنْ
حَكِيمٍ خَبِيرٍ ۝ أَلَّا تَعْبُدُوٓا إِلَّا اللّٰهَ إِنَّنِي لَكُم
مِّنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ۝ وَأَنِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوٓا

إليه

तो उस वक़्त तू भी ज़ालिमों में (शुमार) होगा ० और अगर ख़ुदा तुझको कोई तकलीफ़ पहुँचाये, तो उसके सिवा कोई उस (तकलीफ़) का दूर करने वाला नहीं। और अगर तुझको किसी क़िस्म का फ़ायदा पहुँचाना चाहे, तो कोई उसके फ़ज़्ल का रोकने वाला नहीं। अपने बन्दों में से जिसको चाहे फ़ायदा पहुँचाये। और वह बख़्शने वाला मेहर्बान है ०(ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहदो कि लोगो! (जो) हक़ बात (थी, वह तो) तुम्हारे पर्वदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास आ चुकी। फिर जिसने राह रास्त इख़्तियार की, तो अपने ही (फ़ायदे के) लिये उसको इख़्तियार करता है। और जो भटका, तो वह भटक कर कुछ अपना ही खोता है। और मैं तुम पर (कुछ ठेकेदारों की तरह तो) मुसल्लत (हूं) नहीं ० और (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारी तरफ़ जो वही भेजी जाती है, इसी पर चले जाओ। और जब तक अल्लाह (तुम्हारे और काफ़िरों के दर्मियान) फ़ैसला करे (उनकी ईज़ाएँ) बर्दाश्त करो। और वही (सब) फ़ैसला करने वालों में बेहतर (फ़ैसला करने वाला) है०

सूरत-हूद

मक्की यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें १२३ आयतें और १० रुकूअ़ हैं॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) बड़ा मेहर्बान निहायत रह्मवाला (है) ० अलिफ़ लाम् रा (ऐ पैग़म्बर! लोगों से कहो कि यह क़ुर्आन ऐसी) किताब है (जो) हिकमत वाले बा ख़बर ख़ुदा की तरफ़ से (नाज़िल हुई है)। इसके मज़ामीन (दलायल व बराहीन से बख़ूबी साबित और) मुस्तह्कम और फिर ख़ूब तफ़्सील के साथ बयान किये गए हैं० (और उनका ख़ुलासा यह है) कि (लोगो!) ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो, मैं उसी की तरफ़ से तुमको (उसके अ़ज़ाब से) डराता और (ईमान वालों को उसकी ख़ुशनूदी की) ख़ुश ख़बरी सुनाता हूं० और (नीज़) यह कि अपने पर्वर्दिगार से (पिछले गुनाहों की) माफ़ी मांगो, फिर (आगे को) उसकी जनाब में तौबा करो—

तो तुम उस समय ज़ालिमों (और कुकर्मियों) में गिने जाओगे॥

और (यह भी कि मुझे हिदायत की गई है कि) अगर अल्लाह तआ़ला तुमको कोई दुख पहुँचाये, तो उसके सिवाय कोई और उस (दुख) का खोने वाला नहीं। और अगर वह तुमको कुछ आराम पहुँचावे, तो उसकी (इस) मेहर्बानी को कोई रोकने वाला नहीं। वह (पूर्ण अधिकारी है)। अपने बन्दों में से जिसे चाहे, आराम पहुँचावे (जिसे चाहे, दुख दे)। और वह क्षमा करने वाला मेहर्बान (भी) है (और कठोर दुख देने वाला भी है)॥

(ऐ रसूल!) तुम कहदो कि लोगो! तुम्हारे पास सच्चा (धर्म) तुम्हारे पालन कर्त्ता की तरफ़ से आ चुका। सो (अब) जो (इस पर ईमान लाया और) सीधे रास्ते चला, तो वह अपने व्यक्ति गत (लाभ) ही के लिये सीधे रास्ते चलेगा। और जो पथ भ्रष्ट हुआ, तो वह (भी अपनी जान ही को) हानि पहुँचाने के लिये पथ भ्रष्ट होगा। और मैं तुम्हारा रक्षक (और तुम्हारे कर्मों का संरक्षक और तुम्हारे ईमान का ठेकेदार) नहीं हूं॥

और (ऐ रसूल!) तुम पर जो वही (ख़ुदाई सन्देश) तुम्हारे पालन कर्त्ता की तरफ़ से भेजा जाता है, उसी की ताबेदारी करो। और (लोगों के ईमान लाने न लाने के विषय में परवाह न करो। और अपना कर्त्तव्य पालन किये जाओ और दृढ़ चित्त और) स्थिर रहो। यहां तक कि अल्लाह तआ़ला (तुम्हारे और काफ़िरों के बीच) फ़ैसला कर दे। और वह सर्वोत्तम न्यायकारी है॥

सूरत-हूद

मक्की अर्थात मक्के में उतरी। इसमें १२३ आयतें और १० रुकूअ हैं॥

अलिफ़, लाम, रा, (ऐ पैग़म्बर! लोगों से कहो कि) यह (क़ुर्आन) वह किताब है, जिसके विषय (अत्यन्त तर्क पूर्ण) सबल और ब्यौरेवार हैं। (और जो) युक्ति वाले बुद्धिमान (और दूर-दर्शी) पालन कर्त्ता की तरफ़ से (उतरी है, जिससे कि) तुम अल्लाह के सिवाय किसी की उपासना न करो॥

(और इनका विश्वास करो कि) मैं निस्सन्देह अल्लाह (ही) की तरफ़ से तुमको (तुम्हारे कुकर्मों के बुरे फल से) डराता (और नेक कर्मों के अच्छे फल का) मंगल समाचार सुनाता हूं। (और इस अभिप्राय से कि) तुम अपने पालन कर्त्ता के द्वार में पश्चाताप करो और उससे (अपने पापों की) क्षमा मांगो—

إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُم مَّتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ
كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۖ وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ● إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ● أَلَا إِنَّهُمْ يَثْنُونَ
صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ ۚ أَلَا حِينَ يَسْتَغْشُونَ
ثِيَابَهُمْ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ● إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ● وَمَا مِن دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ
إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا
كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ● وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ
عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا
وَلَئِن قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِن بَعْدِ الْمَوْتِ
لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ●

(ऐसा करोगे) तो वह तुमको एक वक़्त मुक़र्रर तक (दुनिया में) अच्छी तरह रसाए बसाए रक्खेगा-और जिसने (क़द्र वाजिब से) ज़ियादा किया है, उसको उसका ज़ियादा (सवाब) देगा। और अगर (उसके इर्शाद से) मुँह मोड़ोगे, तो मुझको तुम्हारी निस्बत बड़े (सख़्त) दिन (यानी क़यामत) के अज़ाब का (बड़ा ही) अन्देशा है ० (क्योंकि) तुम (सब) को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ० (ऐ पैग़म्बर!) सुनो कि यह (काफ़िर झुक झुक कर) अपने सीनों को दोहरा किये डालते हैं, ताकि ख़ुदा से छुपे रहें। (मगर) देखो कि जब (यह लोग सोते वक़्त) अपने कपड़े ओढ़ते हैं (उस वक़्त भी) ख़ुदा को (इनके तमाम अफ़आ़ल) जो छुपा कर करते हैं और जो खुल्लम खुल्ला करते हैं, (सब) मालूम रहते हैं ० वह तो दिलों के भेद तक का जानने वाला है ० और जितने (जान्दार) ज़मीन में चलते फिरते हैं, उन (सब) की रोज़ी अल्लाह ही के ज़िम्मे है। और वही उनके (जीते जी के) ठिकाने और (नीज़ मरे पीछे) उनके (ज़मीन में) सौंपे जाने की जगह को जानता है। सब कुछ किताब रोशन (यानी लौह महफ़ूज़) में (लिखा हुआ मौजूद) है ० और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छे दिन में पैदा किया और (उस वक़्त) उसका तख़्त (किब्रियाई) पानी पर था। (सो उसने दुनिया को इस ग़रज़ से बनाया) ताकि तुम लोगों को आज़माए कि तुम में किसके अमल बेहतर हैं। और (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुम (इन लोगों से) कहो कि मेरे पीछे तुम (सब दुबारा ज़िन्दा) उठा खड़े किये जाओगे, तो जो लोग मुन्किर हैं (इसको सुन कर) ज़रूर कहेंगे कि (जो कुछ तुम हमको समझाते हो) यह तो बस सरीह जादू (गरों कीसी बातें) हैं ० —

(यदि तुम ऐसा करोगे, तो मृत्यु के) नियत समय तक अल्लाह तआ़ला तुमको (संसार में भी) सर्वोत्तम लाभ पहुँचायेगा और (प्रलय में भी) हर अच्छे काम करने वाले को उसकी नेकी का बदला देगा॥

और यदि तुम (अपनी हरकत से बाज़ न आये और अल्लाह से) विमुख ही रहे, तो मुझे तुम पर एक (बहुत) बड़े दिन के अज़ाब (अर्थात प्रलय के अज़ाब के उतरने) का डर है॥

तुम (सब) को (मर कर) अल्लाह के पास वापिस जाना (और अपने कर्मों का हिसाब देना) है। और वह (अल्लाह) हर चीज़ पर (पूरा) अधिकार रखता है। (जिस तरह उसने प्रथम बार तुमको पैदा किया था, उसी तरह वह तुम्हें मारने, और मारने के बाद दूसरी बार जिलाने, और अपनी सेवा में बुलाने पर भी अधिकार रखता है। अतएव यदि तुम समझदार हो, तो सच्चे पूज्य को पहिचानो और उसकी शक्ति को मानो और तौबा व पश्चाताप और उसकी पूजा से अवहेलना न करो)॥

(और) हाँ यह (जो मूर्ख काफ़िर बात करने के समय काना फूसी करने के लिये इतने झुकते हैं कि) अपनी छातियों को दोहरा कर लेते हैं (और अपने मुँह कपड़ों से ढांक लेते हैं) जिस से कि वह अल्लाह से छिप * सकें। (और अपनी बातों को भी उससे गुप्त रख सकें, तो) याद रक्खो! कि वह जिस समय (अपने मुँह) अपने कपड़ों से ढाँकते (और अपनी छातियों को दोहरा कर लेते) हैं, अल्लाह उनकी समस्त खुली ढकी बातों को (अच्छी तरह) जानता है। निस्सन्देह अल्लाह तआ़ला तो दिलों के भीतर तक के भेदों से अभिज्ञ है॥

* टीका—काफ़िर, जो बातें इस्लाम-धर्म व मुसलमानों के विरुद्ध अपने घरों में बैठ कर किया करते थे, उसका जवाब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से क़ुरआन में उतर आता था। इससे काफ़िरों को सन्देह हुआ कि कहीं कोई जासूस तो हमारे पीछे नहीं लगा रहता, जो हमारी गुप्त बातें सुन सुन कर रसूलुल्लाह को उनकी सूचना दे देता है। अपने इस वहम का इलाज इन मूर्खों ने यह किया था कि जब कोई रहस्य की बात उन्हें कहनी होती, तो झुक जाते और मुँह पर कपड़ा ढांक लेते। इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने उनकी इसी मूर्खता का ज़िक्र किया है:—हसन निज़ामी॥

(अल्लाह की महिमा तो यह है कि) कोई (जीवधारी) ज़मीन पर चलने वाला ऐसा नहीं है कि जिसका भोजन अल्लाह के ज़िम्मे न हो। और अल्लाह तआ़ला (ज़िन्दगी में) उसके रहने की जगह और (मरने के बाद ज़मीन में) सौंपे जाने की जगह को न जानता हो। सब कुछ प्रकाश मय पुस्तक (अर्थात लौह महफ़ूज़) में (लिखा हुआ) मौजूद है॥

और वह ऐसा (ज़बरदस्त, शक्तिशाली) है, जिसने आकाश और पृथ्वी को (केवल) छ: दिन में पैदा कर दिया। और (उस समय) उस (की महानता) का तख़्त पानी पर था (अर्थात उस समय पानी के अतिरिक्त किसी प्राणी का नाम व निशान भी न था। और उसने यह तमाम साज़ व सामान इस लिये पैदा किया) जिस से कि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुम में से कौन (अपने सृष्टि कर्त्ता को पहिचानता और कौन) नेक अमल करता है॥

(ऐ पैग़म्बर!) यदि तुम (उन लोगों से) कहो कि मरने के बाद निस्सन्देह तुम फिर ज़िन्दा किये जाओगे, तो जो लोग कुफ़्र करने वाले हैं, वह निश्चित रूप से यह कहेंगे (कि अगर ऐसा हुआ, तो) यह तो एक खुला हुआ जादू होगा॥

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ
لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا
عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝
وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ
إِنَّهُ لَيَئُوسٌ كَفُورٌ ۝ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ
ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۚ إِنَّهُ
لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
أُولَٰئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ
بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَن
يَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ كَنزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۚ
إِنَّمَا أَنتَ نَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝ أَمْ
يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ
وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ

صديقين

और अगर हम अज़ाब (का नाज़िल करना) इन (लोगों) से गिन्ती के चन्द रोज़ तक मुल्तवी (भी) किये रहें, तो (यह लोग) ज़रूर कहेंगे कि कौन सी चीज़ अज़ाब को रोक रही है। सुनो जी! जिस दिन अज़ाब इन पर नाज़िल होगा (फिर) वह इन (पर) से किसी के टाले टलने वाला नहीं और जिस (अज़ाब) की यह लोग हँसी उड़ा रहे थे, वह इनको चिमट जायगा ० और अगर हम इन्सान को अपनी मेहर्बानी (की लज़्ज़त) चखाएँ फिर उस (नेअमत) को उससे छीन लें, तो (हमारी शिकायत करने लगता है, क्योंकि) वह (ज़री सी बात में) ना उम्मीद हो जाने वाला (और) ना शुक्र है ० और अगर उसको कोई तकलीफ़ पहुंची हो और उसके बाद हम उसको आराम (की लज़्ज़त) चखाएँ, तो कहने लगता है कि (अब) मुझ (पर) से सब सख़्तियां दूर हो गईं, क्योंकि वह बहुत ही (जल्द) ख़ुश हो जाने वाला (और) शेख़ीख़ोरा है ० मगर जो लोग सब्र (के ख़ूगर हैं) और नेक अमल करते हैं, (उनका यह हाल नहीं)। यही हैं, जिनके लिए (ख़ुदा के यहाँ) बख़्शिश और बड़ा अज्र है ० तो (ऐ पैग़म्बर!) अजब नहीं कि जो वही तुम पर नाज़िल की जाती है, (लोगों को सुनाते वक़्त) तुम (उसमें से) थोड़ा सा छोड़ देना चाहो और उसकी वजह से तंग दिल हो कि (मबादा यह लोग कहीं यह न) कह बैठें कि इस शख़्स पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं नाज़िल हुआ) या इसकी तस्दीक़ के लिये) इसके साथ (ख़ुदा की तरफ़ से) कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया। सो (ऐ पैग़म्बर!) तुम तो (इन लोगों को अज़ाब ख़ुदा से) डराने वाले हो और बस। और हर चीज़ ख़ुदा ही के इख़्तियार में है ० (ऐ पैग़म्बर!) क्या (काफ़िर) कहते हैं कि इस (शख़्स यानी तुम) ने क़ुर्आन को अपने दिल से बना लिया है, तो (इन लोगों से) कहो कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो (कि मैंने यह क़ुर्आन अपने दिल से बनाया है) तो तुम भी (अहले ज़बान हो) इसी तरह की बनाई हुई (ज़ियादा नहीं) दस ही सूरतें ले आओ और ख़ुदा के सिवा जिसको (मदद के लिये) तुमसे बुलाते बन पड़े बुला लो ०—

और अगर हम एक नियत समय तक इन (काफ़िरों) पर अज़ाब (के उतारने) में देर लगाते हैं (अर्थात दुनिया में उन्हें अज़ाब नहीं देते) तो (वह मज़ाक़ के तौर पर) कहते हैं (कि अल्लाह का अज़ाब कहां है?) उसे किसने रोक रक्खा है। याद रक्खो! कि जिस दिन वह (अज़ाब) उन पर आ जावेगा (फिर वह) उन पर से (किसी के टाले) न टलेगा। और जिस (अज़ाब) का वह मज़ाक़ उड़ा रहे हैं, वह उन्हें (चारों तरफ़ से) घेर लेगा ॥

और अगर हम मनुष्य को अपनी दया (व कृपा) का स्वाद चखा कर (फिर उस कृपा व दया को) छीन लेते हैं, तो वह निराश (और) कृतघ्न हो जाता है (और फिर हमारी शिकायतों का दफ़्तर खोल देता है) ॥

अगर हम उसको किसी तकलीफ़ के बाद, जो उसको पहुंची हो (अपनी) नेअमतों का मज़ा चखा दें, तो (पिछली तकलीफ़ों को बिल्कुल भूल जाता है। और) कहने लगता है कि (अब) मुझ पर से सारी सख़्तियां दूर हो गईं। (मानो अब उस पर कभी कोई मुसीबत न आयेगी)। निस्सन्देह मनुष्य बहुत (जल्द) ख़ुश हो जाने वाला और (बड़ा) शेख़ी बाज़ है। मगर जो लोग सन्तोष से काम लेते और अच्छे कर्म करते हैं (वह ऐसे नहीं होते)। यही लोग हैं, जिनके लिये (बड़ी) क्षमा और बहुत बड़ा फल है ॥

सो सम्भव है कि (ऐ रसूल!) तुम (भी मानसिक स्वभाव की प्रेरणा से आपत्तियों और असफलताओं से घबरा कर) बाज़ उन आदेशों (के प्रचार) को, जो वही द्वारा तुमको भेजे गये, छोड़ दो। और कदाचित तुम इस बात से संकीर्ण हृदय (और खिसयाने) हो जाओ कि यह (कृतघ्न काफ़िर) कहते हैं कि (अगर मुहम्मद अल्लाह के नबी हैं और उसके निकट सम्बन्धी हैं, तो) उन पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतरा? या उनके साथ (उनकी तस्दीक़ के लिये) कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया? (ऐ रसूल! तुम इन बातों की कुछ परवाह न करो। क्योंकि) तुम तो केवल डराने वाले हो और हर चीज़ पर (पूरा पूरा) इख़्तियार रखने वाला तो अल्लाह ही है (वह जो चाहेगा, करेगा। तुम सन्तुष्ट हृदय के साथ उसके आदेशों के प्रचार व प्रसिद्धि में लगे रहो, और उनकी मूर्खता व बेवक़ूफ़ी और बेहूदा बकवास की परवाह न करो) ॥

क्या यह (काफ़िर) इस (क़ुर्आन) के सम्बन्ध में (यह) कहते हैं कि इसे रसूल ने (स्वयं) बना लिया है, तो तुम (इनसे) कहो—अगर तुम (अपने इस दावे में) सच्चे हो, तो तुम (भी मेरी तरह भाषा पटु और साहित्य में ख़ूब प्रतिष्ठा पाये हुए हो। मैं अशिक्षित तो इतना बड़ा क़ुर्आन बनाकर ले आया, तुम) इस जैसी (अपनी बनाई हुई) दस सूरतें ही ले आओ, और (इसका भी तुमको इख़्तियार है कि) अल्लाह के सिवाय जिस जिस को (अपनी सहायता के लिये) बुला सको, बुला लो ॥

صٰدِقِيْنَ ● فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ
بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ●
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ
اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ●
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ
وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ● اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَ
يَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى
اِمَامًا وَّرَحْمَةً اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَمَنْ يَّكْفُرْ
بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ فَلَا تَكُ فِيْ
مِرْيَةٍ مِّنْهُ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ● وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى
اللّٰهِ كَذِبًا اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ

पस अगर (तुम्हारे यह मददगार) तुम्हारा कहना न कर सकें, तो जाने रहो कि (.कुर्आन) .खुदा ही के इल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, तो क्या (अब इस हुज्जत के तमाम हुए पर भी) तुम इस्लाम लाते हो, (या नहीं) ० (नेक काम करने से) जिनका मतलब (यह) दुनिया की ज़िन्दिगी और दुनियावी रौनक़ होती है, हम उनके अमलों का बदला (यहीं) दुनिया में उनको पूरा पूरा भर देते हैं। और वह दुनिया में (किसी तरह) घाटे में नहीं रहते ० (लेकिन यह) वह लोग हैं, जिनके लिये आख़िरत में दोज़ख़ के सिवा और कुछ नहीं। और जो (नेक) अमल इन लोगों ने दुनिया में किये (आख़िरत में सब) गए गुज़रे हुए और इनका किया धरा (सब) लग़ ० तो क्या जो लोग अपने पर्वर्दिगार के खुले रस्ते पर हों और उनके साथ (साथ) उनही में का एक गवाह हो (यानी .खुद उनका दिल और अक़्ल सलीम) और .कुर्आन से पहिले (उनकी रहनुमाई को) मूसा की किताब हो, जो (इसकी मुसद्दिक़ और दीन की) रहनुमा और (.खुदा की) रहमत है, (क्या ऐसे लोग मुन्किर .कुर्आन हो सके हैं ? नहीं, बल्कि) यह लोग तो (चार व नाचार) .कुर्आन पर ईमान लाते हैं। और (दूसरे) फ़िर्क़ों में से, जो इससे मुन्किर हों, उनका आख़िरी ठिकाना दोज़ख़ है ० तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम (भी) .कुर्आन की तरफ़ से (किसी तरह के) शक में न रहना। इसमें कुछ शक नहीं कि वह बरहक़ है (और) तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से (तुम पर नाज़िल हुआ है) लेकिन अक्सर लोग (इस पर) ईमान नहीं लाते ० और जो .खुदा पर झूठ झूठ बोहतान बांधे, उससे बढ़कर ज़ालिम कौन ? यही लोग (क़यामत के दिन) अपने पर्वर्दिगार के हुज़ूर में पेश किये जायँगे और—

फिर अगर यह (काफ़िर) तुम्हारी मांग पूरी न कर सकें (और .कुर्आन जैसी दस सूरतें भी बनाकर न ला सकें और प्रकट है कि न ला सकेंगे) तो तुम (इनसे कहो कि मूर्खों !) इस बात को (अच्छी तरह) जान लो कि यह .कुर्आन अल्लाह के ज्ञान (और उसी की शक्ति) से उतरा है। (और उसके बनाने में किसी अन्य का दख़ल नहीं) ॥

और यह (भी समझ लो) कि (तुम्हारे सारे के सारे पूज्य बिल्कुल निरर्थक हैं, जो .कुर्आन जैसी दस सूरतें भी तुम्हारे लिये नहीं बना सकते। और) अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य नहीं है, तो (क्या) तुम अब भी मुसल्मान होते हो (या नहीं ?) ॥

जो लोग (अपने दान पुण्य और अपने कर्मों के बदले में) दुनिया की ज़िन्दिगी और उसकी (इज़्ज़त व प्रतिष्ठा और शान व) ज़ीनत (गौरव प्राप्त करना) चाहते हैं (और परलोक के फल व पुण्य से उनको कोई सम्बन्ध नहीं होता, तो) हम उनके कर्मों का बदला (उनकी नीयत और उनकी इच्छा के अनुसार) दुनिया ही में भर पूर अदा कर देते हैं। और उनके लिये दुनिया में कुछ कमी नहीं होती ॥ (मगर) यह वह लोग हैं, जिनके लिये परलोक में (नर्क की) आग के सिवाय और कुछ नहीं है। और उन्होंने (शुभ कर्मों में से) जो कुछ (यहां) किया है (परलोक में) वह (सब) अकार्थ गया। और (वास्तव में समस्त वह) कर्म, जो यह लोग (सांसारिक स्वार्थ के लिये) करते हैं (जहाँ तक कि परलोक का सम्बन्ध है, बिल्कुल) असत्य (व प्रभाव रहित) हैं ॥

क्या वह लोग (जो परलोक के सवाब व अज़ाब से सम्बन्ध नहीं रखते, और सांसारिक प्रतिष्ठा व मान और तड़क भड़क ही को जीवन का उद्देश समझते हैं, उन पवित्रात्मा .खुदा के भक्तों की बराबरी कर सकते हैं ?) जिनका उनके पालन कर्त्ता ने (प्रलय पर विश्वास करने की) खुली राह पर लगा दिया है। और जिनके साथ (परलोक की स्थिति के प्रमाण स्वरूप) .खुदा की तरफ़ से (.कुर्आन का ज़बर्दस्त) गवाह मौजूद है। और (केवल .कुर्आन ही नहीं, बरन) .कुर्आन से पहिले (उतरने वाली) मूसा की किताब भी, जो (लोगों के लिये) पथ प्रदर्शक और कृपा (बन कर उतरी) थी (इसकी साक्षी दे रही है) । ऐसे लोग (तो निश्चित रूप से) .कुर्आन पर ईमान लाते (और प्रलय पर विश्वास रखते और अन्त का महान पुण्य प्राप्त करते हैं) ॥

और (असत् की पूजा करने वाले) समूहों में से, जो लोग (प्रलय और) .कुर्आन से इन्कार करते हैं, उनका ठिकाना (अन्त में) नर्क है। (वह दुनिया में चाहे कुछ दिन मज़े उड़ायें, लेकिन परलोक में ज़रूर नर्क का ईंधन बनेंगे) ॥

तो (ऐ समझदार मनुष्य ! बुद्धि व विचार से काम ले और) .कुर्आन की तरफ़ से शक (व सुब्हे) में न पड़। निस्सन्देह वह सत्य है (और) तेरे सृष्टि कर्त्ता की ओर से (उतारा गया है) । लेकिन बहुधा (मूर्ख उस पर) ईमान नहीं लाते ॥

और उससे अधिक ज़ालिम कौन हो सकता है, जो अल्लाह तआला पर झूठ बोहतान बांधे (और अपने असत्य पूर्वक दिल की घड़ी हुई बातों को अल्लाह की ओर लगावे) । ऐसे लोग (सारे के सारे प्रलय के दिन) अपने पालन कर्त्ता की सेवा में (अपराधी के रूप में) पेश किये जावेंगे—

الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ اَلَا
لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ
هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ
فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ
يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ
السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝
لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ مَثَلُ
الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَ
السَّمِيْعِ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝

ولقد

गवाह गवाही देंगे कि यही हैं, जिन्होंने अपने पर्वर्दिगार पर झूठ बोला था सुनोजी! (इन) ज़ालिमों पर .खुदा ही की मार ० जो .खुदा के रस्ते से (लोगों को) रोकते और उसमें कजी (पैदा करनी) चाहते हैं। और यही हैं, जो आख़िरत से (भी) मुन्किर हैं ० यह लोग न दुनिया ही में (.खुदा को) हरा सके और न .खुदा के सिवा इनका कोई हिमायती (ही) खड़ा हुआ। (तो क़यामत में) इनको दोहरा अज़ाब होगा, क्योंकि (मारे हसद के) न (हक़ बात) सुन सकते थे और न (आप सीधा रस्ता) इनको सूझ पड़ता था० यही लोग हैं, जिन्होंने आप अपना नुक़सान कर लिया और वह जो (दुनिया में) इफ़्तिरा पर्दाज़ियां किया करते थे (आख़िरत में सब) इनसे गई गुज़री हो गईं ० (बस) ज़रूर यही लोग आख़िरत में सब से ज़ियादा टोटे में होंगे ० जो लोग ईमान लाए और (ईमान के अलावा उन्होंने) नेक अमल (भी) किये और अपने पर्वर्दिगार के आगे आजिज़ी करते रहे, यही जन्नती लोग हैं कि वह बहिश्त में हमेशा (हमेशा) रहेंगे ० (काफ़िरों और मुसलमानों के) दो फ़रीक़ों की मिसाल अन्धे और बहिरे और आंखों वाले और सुनने वाले कीसी है। क्या दोनों की हालत यकसां हो सकती है? क्या तुम लोग ग़ौर नहीं करते ० —

और (उनकी कुकर्मों के) गवाह (फ़रिश्ते उस समय) कहेंगे कि यही वह (दुष्ट स्वभाव मनुष्य) हैं, जिन्होंने अपने पालन कर्त्ता पर झूठा दोष लगाया॥

सुनलो! कि ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत (और उसकी फिटकार) है—उन पर, जो (.खुदा के सेवकों को) .खुदा की राह (पर चलने) से रोकते, और उसमें (अपने नीच विचारों को दख़ल देकर) टेढ़ापन पैदा करना चाहते हैं। और यह ही हैं, जो प्रलय से इन्कार करते हैं॥

(और) यह (अभागे) न दुनिया में अल्लाह तआला को विवश कर सके और न (प्रलय में) अल्लाह के सिवाय कोई (वली वारिस इनकी सहायता के लिये) निकला। (आज के दिन) इन्हें दोहरी मार दी जावेगी। क्योंकि उन लोगों में (उनके ईर्षा व दुष्कर्मों के कारण) न तो सुनने की पात्रता रही थी (कि सत्य बात को सुन कर ग्रहण कर लेते) और न देखने की (शक्ति थी कि स्वयं सत्य को मालूम कर लेते)॥

यही वह लोग हैं, जिन्होंने आप ही अपने को टोटे में डाला और (अपना परलोक बिगाड़ा। आज वह) उनकी (समस्त मन घड़त) बातें, जिनको वह झूठ मूट .खुदा की ओर लगा (करने की व उपासना ख़याल) किया करते थे, इनके कुछ काम न आईं॥

(और अल्लाह और उसके रसूल पर) जो लोग ईमान लाये और (ईमान लाने के बाद) उन्होंने नेक काम भी किये और अपने पालन कर्त्ता के आगे आधीनता (व नम्रता) करते रहे (और गर्व व अभिमान की बू को अपने मस्तक से निकाल डाला, तो) यही (वह लोग हैं, जो) स्वर्ग वासी हैं (और) वह सदैव स्वर्ग ही में रहेंगे॥

(इन) दोनों पक्ष वालों (अर्थात काफ़िरों और ईमानदारों) का उदाहरण ऐसा है, जैसा कि एक मनुष्य (तो बिल्कुल) अन्धा और बहिरा हो, और दूसरा देखता भी हो और सुनता भी, क्या (किसी के विचार में अन्धे और बहिरे और देखने और सुनने वाले) दोनों एक ही जैसे हो सकते हैं? (तुम सोचते नहीं) तुम ग़ौर नहीं करते॥

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ
مُبِينٌ ۝ أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ۝ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِثْلَنَا
وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ
الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ
نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ
عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً مِنْ عِنْدِهِ
فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنْتُمْ
لَهَا كَارِهُونَ ۝ وَيَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا
إِنَّهُمْ مُلَاقُو رَبِّهِمْ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ۝
وَيَا قَوْمِ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طَرَدْتُهُمْ أَفَلَا

और हम ही ने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ (पैग़म्बर बनाकर) भेजा। (और उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से कहा) कि मैं तुमको (अज़ाब ख़ुदा का) साफ़ साफ़ डर सुनाने आया हूं ० (और तुमको समझाता हूं कि) ख़ुदा के सिवा (किसी और की) इबादत न किया करो। (ऐसा करोगे, तो) मुझको तुम्हारी निस्बत एक रोज़ के दर्दनाक अज़ाब का (बड़ा ही) ख़ौफ़ है ० इस पर उनकी क़ौम के सर्दार, जो (उनको) नहीं मानते थे, लगे कहने कि हमको तो तुम हमारे ही जैसे बशर दिखाई देते हो। और हमारे नज़्दीक सिर्फ़ वही लोग तुम्हारे पैरव हो गए हैं, जो हममें रिज़ाले हैं। (और पैरव हो भी गये हैं, तो सोचे समझे) सर सरी नज़र से। और हम तो तुम लोगों में अपने से कोई बर्तरी नहीं पाते, बल्कि हम तुमको झूठा समझते हैं ० (नूह ने) कहा भाइयो ! भला देखो तो सही, अगर मैं अपने पर्वर्दिगार के खुले रस्ते पर हूं और उसने मुझको अपनी सरकार से नेअ़्मत (पैग़म्बरी) अ़ता फ़र्माई है, फिर वह रस्ता तुमको दिखाई नहीं देता, तो क्या हम उस को (ज़बर्दस्ती) तुम्हारे गले मढ़ रहे हैं और तुम (हो कि) उसको ना पसन्द किये चले जाते हो ० और भाइयो ! मैं इस (समझाने) के सिले में तुमसे तालिब ज़र नहीं हूं (कि तुम इसको चट्टी समझो) । मेरी मज़दूरी तो बस अल्लाह ही पर है। और न मैं उन लोगों को जो ईमान ला चुके हैं (अपने पास से) निकाल दे सका हूं, क्योंकि उनको (भी) अपने पर्वर्दिगार के यहां जाना है (ऐसा न हो ख़ुदा से फ़र्याद करें)। मगर मैं देखता हूं कि तुम लोग (नाहक़ की) जिहालत करते हो ० और भाइयो ! अगर मैं इन (ग़रीब ईमान वालों) को निकाल भी दूँ, तो ख़ुदा के मुक़ाबिले में कौन मेरी मदद को खड़ा हो जायगा ? क्या—

और (लोगो ! जिस तरह हमने तुम्हारी हिदायत के लिये अपने बन्दे मुहम्मद को अपना नबी और अपना रसूल बनाकर भेजा है, इसी तरह) हमने नूह को (अपना नबी बनाकर) उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा (था। उन्होंने हमारी हिदायत के अनुसार अपनी जाति से कहा) कि (भाइयो !) मैं तुमको स्पष्ट रूप से (तुम्हारे दुष्कर्मों के परिणाम से) डराता हूं। और (बताता हूं) कि अल्लाह के सिवाय किसी की पूजा न करो। (यदि तुमने मेरा कहना न माना, तो) मुझे तुम पर एक दुःख पूर्ण दिन के अज़ाब (के उतरने) से (बड़ा ही) डर है ॥

इस पर उनकी जाति के सरदार, जो (उन्हें) नहीं मानते थे, बोले कि हमको तो तुम हमारे ही जैसे आदमी दिखाई देते हो। और हम देखते हैं कि तुम्हारा अनुगमन केवल उन्हीं लोगों ने किया है, जो हम में (नितान्त) नीच श्रेणी के हैं। (और वह भी बिना सोचे समझे) खोखली दृष्टि (रखने के कारण) से (तुम्हारे अनुयायी बन गये हैं) ॥

और हम तो तुम लोगों में कोई बात अपने से ज़्यादा नहीं पाते, बल्कि हम तो तुम (सब) को झूठा समझते हैं ॥

नूह ने जवाब दिया कि लोगो ! देखो तो सही, यदि मेरे पालन कर्त्ता ने मुझे एक खुले हुए (सीधे) रस्ते पर लगा दिया है (जिसकी सचाई प्रकट और रोशन है) और मुझको अपनी कृपा से (पैग़म्बरी की) नेअ़्मत प्रदान की है। और तुमको ऐसी (सीधी) बात (भी) नहीं सूझती (तो इनका मेरे पास क्या इलाज है) । क्या हम उसको (ज़बर्दस्ती) तुम्हारे सिर चपेक दें, ऐसी हालत में कि तुम उससे घृणा करते हो। (मेरा काम तो केवल समझा देना है। हिदायत की तौफ़ीक़ अर्थात् योग्यता बस अल्लाह ही दे सकता है) ॥

और ऐ लोगो ! मैं (तुम्हारी) इस (सेवा) के फल स्वरूप तुमसे माल (व धन) का इच्छुक नहीं। मेरा पुरस्कार तो बस अल्लाह ही देगा। और मैं उन लोगों को, जो ईमान ला चुके हैं (चाहे वह नीच हों या ऊँच, अमीर हों या ग़रीब, तुम्हारे कहने से) निकाल नहीं सकता। निस्सन्देह वह लोग (प्रलय के दिन) अपने पालन कर्त्ता से मिलेंगे। लेकिन (लोगो !) मैं तुमको देखता हूं कि (इन बातों से) तुम (बिल्कुल ही) अनभिज्ञ हो ॥

और ऐ लोगो ! अगर मैं इन (ग़रीब ईमानदारों) को (मानलो तुम्हारे कहने से) निकाल दूँ, (तो प्रलय के दिन, जिस समय मुझसे इनके विषय में पूछ गछ की जावेगी, तो उस समय) कौन (है, जो) मुझे अल्लाह के मुक़ाबले में सहायता देगा। (क्या उस समय तुम मुझे अल्लाह के अज़ाब व क्रोध से बचालोगे ? लोगो !) क्या तुम (इतनी सी बात भी) नहीं समझते ॥

تَذَكَّرُونَ ۝ وَلَآ أَقُولُ لَكُمْ عِندِى خَزَآئِنُ ٱللَّهِ وَ
لَآ أَعْلَمُ ٱلْغَيْبَ وَلَآ أَقُولُ إِنِّى مَلَكٌ وَلَآ أَقُولُ
لِلَّذِينَ تَزْدَرِىٓ أَعْيُنُكُمْ لَن يُؤْتِيَهُمُ ٱللَّهُ خَيْرًا ۖ ٱللَّهُ
أَعْلَمُ بِمَا فِىٓ أَنفُسِهِمْ ۖ إِنِّىٓ إِذًا لَّمِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝ قَالُوا۟
يَٰنُوحُ قَدْ جَٰدَلْتَنَا فَأَكْثَرْتَ جِدَٰلَنَا فَأْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ۝ قَالَ إِنَّمَا
يَأْتِيكُم بِهِ ٱللَّهُ إِن شَآءَ وَمَآ أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ۝ وَلَا
يَنفَعُكُمْ نُصْحِىٓ إِنْ أَرَدتُّ أَنْ أَنصَحَ لَكُمْ إِن كَانَ
ٱللَّهُ يُرِيدُ أَن يُغْوِيَكُمْ ۚ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝
أَمْ يَقُولُونَ ٱفْتَرَىٰهُ ۖ قُلْ إِنِ ٱفْتَرَيْتُهُۥ فَعَلَىَّ إِجْرَامِى
وَأَنَا۠ بَرِىٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُونَ ۝ وَأُوحِىَ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُۥ لَن
يُؤْمِنَ مِن قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ ءَامَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا
كَانُوا۟ يَفْعَلُونَ ۝ وَٱصْنَعِ ٱلْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا

وَوَحْيِنَا

तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते ० और मैं तुमसे दावा नहीं करता कि मेरे पास ख़ुदाई जाने हैं। और न (मैं यह दावा करता हूं कि) मैं ग़ैब जानता हूं और न मैं (अपनी निस्बत) कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं। और जो लोग तुम्हारी नज़रों में हक़ीर हैं, मैं उनकी निस्बत यह भी नहीं कह सकता कि ख़ुदा इन पर (अपना) फ़ज़्ल करेहीगा नहीं। इनके दिल की बात को अल्लाह ही ख़ूब जानता है। (अगर मैं बढ़ बढ़ कर ऐसी बातें करूँ, तो) इस सूरत में ज़ालिमों में का एक (ज़ालिम) मैं ० वह बोले नूह ! तू हमसे झगड़ा और बहुत झगड़ चुका। अगर तू सच्चा है, तो जिस (अज़ाब) से हमको डराता है, उसको हम पर लाचुक ० (नूह ने) कहा कि ख़ुदा को मन्ज़ूर होगा, तो वही अज़ाब को भी तुम पर ला नाज़िल करेगा। और (फिर) तुम (उसको) हरा (भी) न सकोगे ० और मैं तुम्हारी (कितनी ही) ख़ैर ख़्वाही करनी चाहूं, अगर ख़ुदा ही को तुम्हारा (राह रास्त से) बहकाना मंज़ूर है, तो मेरी नसीहत (कुछ भी) तुम्हारे काम नहीं आ सकती। वही तुम्हारा पर्वर्दिगार है और उसी की तरफ़ तुमको लौट कर जाना है ० (ऐ पैग़म्बर ! जिस तरह नूह की क़ौम ने नूह को झुठलाया था) क्या (उसी तरह कुफ़्फ़ार मक्का भी तुमको झुठलाते और तुम पर एतिराज़ करते और) कहते हैं कि क़ुरआन को (इस शख़्स यानी तुम) ने ख़ुद बना लिया है। तुम (इनको) जवाब दो कि अगर क़ुरआन मैंने ख़ुद बना लिया होगा, तो मेरा गुनाह मुझ पर और तुम जो (नाहक़ झुठलाने का) गुनाह करते हो, मैं उससे बरी (युज़्ज़िम्मा) हूं ० और नूह की तरफ़ वही भेज दी गई कि तुम्हारी क़ौम में जो लोग ईमान ला चुके हैं, उनके सिवा अब हरगिज़ कोई ईमान नहीं लाएगा। तो जैसी जैसी बद किर्दारियाँ यह लोग करते रहे हैं, तुम उसका (कुछ) ग़म न करो ० और हमारी निगरानी में और हमारे ईमा के मुताबिक़ एक किश्ती बना चलो—

और (लोगो !) मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न यह (कहता हूं) कि मैं अदृष्ट की विद्या जानता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और (ख़ज़ाना न रखने और अदृष्ट की विद्या न जानने और फ़रिश्ता न होने के होते हुये भी) मैं (अपने) उन (अनुयायियों) के सम्बन्ध में, जो तुम्हें अधम (व नीच नज़र आते हैं (तुम्हारी तरह) यह नहीं कहता कि अल्लाह तआला उन पर कृपा नहीं करेगा। (अल्लाह तआला की कृपा शुभ कर्मों पर निर्भर है, न कि वंश, गौरव और पथ प्रदर्शकों की धनवानता और अदृष्ट की विद्या जानने और फ़रिश्ता होने पर। और मैं तुम्हारी तरह यह भी नहीं कह सकता कि यह लोग केवल दिखावटी तौर पर और बे समझे बूझे ईमान ले आये हैं। क्योंकि) उनके दिलों का हाल तो अल्लाह ही ख़ूब जानता है। (अगर मैं कोई ऐसा दोष इन पर लगाऊँ, तो) निश्चित रूप से इस दशा में मैं ज़ालिमों में गिना जाऊँगा॥

(यह सुन कर) नूह की जाति के सरदार बोले कि ऐ नूह ! तुमने हमसे बहस करली और बहस भी बहुत (कुछ) करली। तो (अब तुम बहस को तो मौक़ूफ़ करो और) जिस (अज़ाब) का तुम हमको डरावा दिखाते हो, अगर तुम सच्चे हो, तो उसे ले आओ॥

(नूह ने) जवाब दिया कि अज़ाब तो तुम पर अल्लाह ही अगर चाहेगा, तो उतरेगा। और उसके सामने तुम्हारी कुछ पेश न चलेगी॥

और (लोगो ! असल बात तो यह है कि) मैं तुमको (चाहे कितनी ही) नसीहत करनी चाहूँ, अगर अल्लाह की इच्छा ही तुम्हें पथ भ्रष्ट रखने की हो, तो मेरी नसीहत तुमको (कुछ भी) लाभ नहीं दे सकती। वही तुम्हारा मालिक (व मुख़्तार) है और उसी की तरफ़ तुमको लौट कर जाना है (और अन्त में उसी से वास्ता पड़ना है)॥

(ऐ रसूल ! क्या यह (मक्के के काफ़िर भी नूह की जाति की तरह तुमको झूठा बताते हैं ! और) कहते हैं कि इस (क़ुरआन) को मुहम्मद ने ख़ुद घड़ लिया है (और यूँ ही झूठ मूट अल्लाह के नाम लगा दिया है) तो मेरे (इस) अपराध की विपत्ति मुझ पर (पड़ेगी, तुमको उससे कुछ सम्बन्ध न होगा)। और (यदि तुम बिना प्रयोजन का दोष मुझ पर लगाते हो, तो तुम उसकी सज़ा ख़ुद भुगतोगे)। मैं तुम्हारे अपराध से (बिल्कुल) मुक्त हूँ॥

और (ऐ रसूल ! जब) नूह (को समझाते समझाते एक समय गुज़र गया और इनकी जाति टस से मस न हुई, तो आख़िर उन) की तरफ़ इस (बात) की वही (ख़ुदा का सन्देश) भेज दी गई कि जो लोग ईमान ले आये, उनके सिवाय (अब) तुम्हारी जाति में से हरगिज़ कोई ईमान नहीं लायेगा। अतएव तुम (उनकी तरफ़ से आशा छोड़ दो और) उनकी करतूतों के कारण दुखित न हो॥

और (चूँकि हम उन्हें डुबोने के लिये तूफ़ान का अज़ाब भेजने वाले हैं, इस लिये) तुम हमारी संरक्षता और हमारे आदेशानुसार एक नौका तैयार करलो—

और ना फ़र्मान लोगों के बारे में हमसे कुछ अर्ज़ मारूज़ न करना, क्योंकि यह लोग ज़रूर ग़र्क़ होंगे ० चुनांचे नूह ने किश्ती बनानी शुरू की और जब कभी उनकी क़ौम के रुदार लोग उनके पास से होकर गुज़रते, तो उनसे तमस्खुर करते। नूह (उनके तमस्खुर का यह) जवाब देते कि अगर (आज) तुम हम पर हँसते हो, तो जिस तरह तुम (हम पर) हँसते हो (इसी तरह) हम (एक दिन) तुम पर हँसेंगे ० और थोड़े दिनों बाद तुमको मालूम हो जायगा कि किस पर अज़ाब नाज़िल होता है, जो (दुनिया में) उसकी रुस्वाई का मूजिब हो और (क़यामत में) अज़ाब दाइमी उसके सर पड़े (सो अलग) ० यहां तक कि जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा और (ग़ज़ब इलाही के) तनूर ने जोश मारा, तो हमने (नूह को) हुक्म दिया कि हर किस्म (के जानदारों) में से (नर व मादा) दो दो के जोड़े और जिसकी निस्बत (हमारा) पहिले इर्शाद हो चुका है (कि वह हलाक होगा) उसको छोड़ कर अपने (सब) घर वाले और (उनके सिवा और) जो (लोग) ईमान ला चुके हैं, (इन सबको) किश्ती में बिठालो । और उनके साथ ईमान भी बस थोड़े ही से लाए थे ० और (नूह ने किश्ती के सवार होने वालों से) कहा बिस्मिल्लाहि मज्रीहा व मुर्साहा किश्ती में सवार हो जाओ । बेशक मेरा पर्वर्दिगार अलबत्ता बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और किश्ती है कि पहाड़ जैसी (बुलन्द) लहरों में (नूह और) उन (के हमराहियों) को लिये चली जा रही है और नूह का बेटा (उनसे) अलग था । तो नूह ने उसको पुकारा कि बेटा ! हमारे साथ (किश्ती में) बैठ ले और काफ़िरों के साथ न रह ० वह बोला मैं अभी (तुम्हारे देखते देखते तैर कर) किसी पहाड़ के सहारे जा लगता हूँ —

وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُم
مُّغْرَقُونَ ۝ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ
مَلَأٌ مِّن قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ قَالَ إِن تَسْخَرُوا
مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ۝
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ
عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ
التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ
وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا
آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ۝ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا
بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِيهَا وَمُرْسَاهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادَىٰ
نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَا بُنَيَّ ارْكَب مَّعَنَا
وَلَا تَكُن مَّعَ الْكٰفِرِينَ ۝ قَالَ سَآوِي إِلَىٰ جَبَلٍ

और (बस अब) इन अपराधियों के विषय में हमसे कुछ न कहना । यह अवश्य डुबोये जावेंगे ॥

(तात्पर्य यह कि नूह ने नाव बनाने का सामान इकट्ठा किया) और वह नाव बनाने लगे। और (नाव बनाने में) उनकी जाति के प्रतिष्ठित लोग जब कभी उनके पास से होकर गुज़रते (और उन्हें नाव बनाने में संलग्न पाते और उनकी ज़बानी तूफ़ान की ख़बर सुनते) तो उनका मज़ाक़ उड़ाते। नूह (उनसे) कहते कि (लोगो !) अगर (आज) तुम हमारी हँसी उड़ा रहे हो, तो (याद रक्खो ! एक दिन आने वाला है कि) जिस तरह तुम (हमारा) मज़ाक़ उड़ा रहे हो, हम (भी) तुमारा मज़ाक़ उड़ायेंगे ॥

और शीघ्र ही तुम्हें पता लग जायगा कि किस पर अज़ाब उतरता है, जो उसे (दुनिया में) ज़लील (व बदनाम) करदे। और (परलोक में जो) सदैव रहने वाला अज़ाब उस पर उतरेगा (वह अलग है) ॥

(नूह और उनकी जाति के बीच यही झगड़े क़िस्से जारी थे)। यहां तक कि जब हमारा हुक्म (अर्थात अज़ाब का समय समीप) आ पहुंचा और तन्नूर (जैसी तपती हुई ज़मीन पर पानी) उबलने लगा, तब हमने नूह से कहा कि हर प्रकार के (जानवरों में से) दो दो अर्थात् (एक) नर, और (एक) मादा को (अपनी) नाव में बिठालो। और अपने बाल बच्चों को (भी) सिवाय उन लोगों के, जिनके बारे में (हमारा मृत्यु को प्राप्त होने का) आदेश पहिले (प्रचलित) हो चुका है। और (साथ ही) उन लोगों को, जो ईमान ले आये हैं। और उनके साथ (ईमान लाने वालों की संख्या थी ही कितनी) बहुत थोड़े ईमान लाये थे ॥

और नूह ने कहा कि (लोगो !) नाव में सवार हो जाओ (और कोई वहम दिल में न लाओ। क्योंकि) इस (नाव) का चलना और उसका ठहरना (सब) अल्लाह ने नाम (की बरकत) से है। निस्सन्देह मेरा पालन कर्त्ता (बड़ा) क्षमा करने वाला दयालु है (वह इस नाव को पार लगा देगा) ॥

(तात्पर्य यह कि सब नाव में सवार हो गये) और वह उन्हें पहाड़ जैसी लहरों में लेकर चलने लगी। और नूह ने अपने बेटे को, जो (उनके साथ नाव में नहीं था, बल्कि काफ़िरों के साथ होने के कारण नूह से) अलग था, पुकारा (और कहा) ऐ मेरे बेटे (देख ! अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आ। और) हमारे साथ (नाव में) सवार हो जा। और काफ़िरों (और लोक परलोक में नष्ट होने वालों) के साथ न हो ॥

उसने कहा (मुझे तुम्हारी नाव की ज़रूरत नहीं है) । मैं तो अभी किसी पहाड़ की शरण ले लूंगा—

يعصمني من الماء قال لا عاصم اليوم من امر الله
الا من رحم وحال بينهما الموج فكان من المغرقين
وقيل يارض ابلعي ماءك ويسماء اقلعي وغيض
الماء وقضي الامر واستوت على الجودي
وقيل بعدا للقوم الظلمين ونادى نوح ربه
فقال رب ان ابني من اهلي وان وعدك الحق
وانت احكم الحكمين قال ينوح انه ليس من
اهلك انه عمل غير صالح فلا تسئلن ما ليس
لك به علم اني اعظك ان تكون من الجهلين
قال رب اني اعوذ بك ان اسئلك ما ليس لي
به علم والا تغفر لي وترحمني اكن من الخسرين
قيل ينوح اهبط بسلم منا وبركت عليك و
على امم ممن معك وامم سنمتعهم ثم يمسهم

ممن

कि वह मुझको (तूफ़ान के) पानी से बचा लेगा। नूह ने कहा कि आज के दिन अल्लाह के ग़ज़ब से कोई बचाने वाला नहीं, मगर ख़ुदा ही जिस पर अपना रहम करे (वही बच सकता है)। और (बाप बेटे यह बातें कर ही रहे थे कि) दोनों के दर्मियान में एक मौज आ हायल हुई, तो दूसरों के साथ नूह का बेटा भी डुबो दिया गया ० और हुक्म दिया गया कि ऐ ज़मीन ! अपना पानी जज़्ब करले और ऐ आस्मान ! थम जा और पानी (का चढ़ाव) उतर गया और (क़ौम का) काम तमाम कर दिया गया और किश्ती जूदी (पहाड़) पर (जाकर) ठहरी। और (चार दांग आलम में) पुकार दिया गया कि ज़ालिम लोग (ख़ुदा के यहां से) धुतकारे गए ० और (अभी नूह का बेटा ग़र्क़ नहीं हुआ था कि) नूह ने अपने पर्वर्दिगार को पुकारा और (उसकी जनाब में) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मेरा बेटा (भी) मेरे अहल (व अयाल) में (दाख़िल) है। और तू ने जो (मेरे अहल व आयल को नजात देने का) वादा फ़र्माया था (वह) सच्चा है और तू सब हाकिमों से बड़ा हाकिम है (तू मेरे बेटे को भी नजात दे) ० ख़ुदा ने फ़र्माया कि नूह ! तुम्हारा बेटा तुम्हारे अहल (व अयाल) में दाख़िल नहीं, क्योंकि इसके अमल अच्छे नहीं। तो जिस चीज़ की हक़ीक़तुल हाल तुमको मालूम नहीं, हमसे उसकी दर्ख़्वास्त न करो। हम तुमको समझाए देते हैं, कि नादानों कीसी बातें न करो ० (नूह ने) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! मैं (ऐसी जुर्रत से) तेरी ही पनाह मांगता हूँ कि जिस चीज़ की हक़ीक़तुल हाल मुझे मालूम नहीं उसकी तुझसे दर्ख़्वास्त करूँ। और अगर तू मेरा क़सूर नहीं माफ़ फ़र्माएगा और मुझ पर रहम नहीं करेगा, तो मैं (बिलकुल) बरबाद हो जाऊँगा ० (जब तूफ़ान हट गया, तो नूह को) हुक्म दिया गया कि ऐ नूह ! हमारी तरफ़ से सलामती और बरकतों के साथ किश्ती से उतरो। (और वह बरकतें) तुम्हारे और उन लोगों के शामिल हाल रहेंगी, जो तुम्हारे साथ हैं। और (तुम लोगों से आगे चल कर कुछ और) लोग (भी पैदा) होंगे, जिनको हम (दुनिया के चन्द रोज़ा) फ़ायदे पहुँचाते रहेंगे। फिर (उनकी नाफ़र्मानियों की वजह से आख़िरत में)—

जो मुझे पानी (में डूबने) से बचा लेगा। नूह ने कहा (मूर्ख !) आज अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला (पृथ्वी व आकाश में) कोई नहीं। (अलबत्ता बच सकता है, तो) बस वही जिस पर अल्लाह मेहर्बानी करे (पहाड़ कुछ काम नहीं आने के। मगर उसे ईमान नहीं लाना था, नहीं लाया) और दोनों (बाप बेटों) के बीच में पानी की लहर आ गई (और दोनों एक दूसरे की दृष्टि से ओझल हो गये)। और नूह का बेटा भी (काफ़िरों के साथ) डूब गया ॥

और (जब अवज्ञाकारी सारे के सारे डूब गये, तो) हुक्म दिया गया कि ऐ ज़मीन ! अपना पानी पीले। और ऐ आकाश ! (बरसने से) रुक जा। और (पृथ्वी व अकाश का सारा) पानी सुखा दिया गया। और जो कुछ होना था, हो चुका। और नाव जूदी के पहाड़ पर जाकर ठहरी। और ज़ालिमों के ख़ुदा से दूर किये जाने की घोषणा हो गई ॥

और (जब) नूह (के कहने पर उनका बेटा ईमान न लाया और अपने कुफ़्र की सज़ा में डूबने लगा, तो उन्हों) ने अपने पालन कर्त्ता को पुकारा। और प्रार्थना की कि ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! मेरा (यह) बेटा भी तो मेरी सन्तान में से है। और (तूने मेरे बाल बच्चों को मुक्त करने का वादा किया है)। निस्सन्देह तेरा वादा सत्य है और तू शासकों पर शासक है ॥

आज्ञा हुई कि ऐ नूह ! वह (तुम्हारा आज्ञा पालक नहीं है। इस लिये वह) तुम्हारे बाल बच्चों में शामिल नहीं है। (वह काफ़िर है) उसके कर्म अनुचित हैं। सो तुम ऐसी बात की मुझसे प्रार्थना न करो, जिसे तुम नहीं जानते (और नहीं समझते। ऐ नूह !) मैं तुमको समझाये देता हूँ कि (यदि) तुम (ऐसी मूर्खता की प्रार्थना करोगे, तो डर है कि) तुम्हारी गणना मूर्खों में न होने लगे ॥

नूह ने अर्ज़ की कि ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! (मेरी तौबा है)। मैं तेरी शरण मांगता हूँ (और वादा करता हूं) कि (अब कभी) ऐसी बात की प्रार्थना (न) करूँ (गा) जिस (की वास्तविकता) से मैं अभिज्ञ न हूँ। (अब तो मेरी इस ख़ता को माफ़ करदे) और (मेरे हाल पर रहम कर)। अगर तू मुझे माफ़ न करेगा और मुझ पर रहम न फ़रमायेगा, तो मैं नष्ट हो जाऊँगा ॥

(जब तूफ़ान ख़त्म हो गया, तो नूह को) आज्ञा हुई कि ऐ नूह ! हमारी तरफ़ से सुरक्षता और बरकतों को लेकर (अब नाव से) उतर जाओ (वह बरकतें) जो तुम पर भी उतरेंगी और तुम्हारे साथ जो (ईमानदार) समूह हैं, उन पर भी। और (देखो ! कुछ अवज्ञाकारी) समूह (तुम्हारे बाद फिर पैदा) होंगे, उन्हें हम (दुनिया में तो कुछ) फ़ायदा पहुंचायेंगे—

مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا
إِلَيْكَ ۖ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ
قَبْلِ هَٰذَا ۖ فَاصْبِرْ ۖ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ۝ وَإِلَىٰ
عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ
مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ۝ يَا قَوْمِ
لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى الَّذِي
فَطَرَنِي ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَيَا قَوْمِ اسْتَغْفِرُوا
رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا
وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ۝
قَالُوا يَا هُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي
آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝ إِنْ نَقُولُ
إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ ۗ قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ
وَاشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ۝ مِنْ دُونِهِ

हमारी तरफ़ से उनको अज़ाब दर्दनाक पहुँचेगा ० (ऐ पैग़म्बर !) यह ग़ैब की चन्द ख़बरें हैं, जिनको वही के ज़रिये से हम तुमको पहुँचाते हैं। इस (क़ुरआन के नाज़िल होने) से पहिले न तो तुम ही इनको जानते थे, और न तुम्हारी कौम के लोग। तो तुम सब्र करो (और समझे रहो कि) परहेज़गारों का अंजाम बख़ैर है ० और आद की तरफ़ हमने उनही के (हम कौम) भाई हूद को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, उन्होंने (अपनी कौम के लोगों को) समझाया कि भाइयो ! ख़ुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं ! (और ख़ुदा के साथ जो शरीक करते हो, तो यह) तुम निरी बोहतान बन्दियाँ करते हो ० भाइयो ! इस (समझाने) के एवज़ में मैं तुमसे कुछ मज़दूरी तो माँगता नहीं, मेरी मज़दूरी तो उसी के ज़िम्मे है, जिसने मुझको पैदा किया। तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते ० और भाइयो ! अपने पर्वर्दिगार से (अपने पिछले क़ुसूरों की) माफ़ी माँगो। फिर (आगे को) उसकी जनाब में तौबा करो कि वह तुम पर (इसके सिले में) ख़ूब बरसते हुए बादल भेजेगा और तुम्हारे बल बूते (में बरकत देकर उस) को और बढ़ा देगा। और सर्कशी करके (उससे) इनहिराफ़ न करो ० वह लगे कहने-हूद ! तू हमारे पास कोई दलील लेकर तो आया नहीं और तेरे कहने से हम अपने माबूदों को छोड़ने वाले नहीं। और न हम तुझ पर ईमान लाने वाले हैं ० हम तो बस यही समझते हैं कि तुझ पर हमारे माबूदों में से किसी की मार पड़ गई है (कि तू ऐसी बहकी बहकी बातें करता है)। हूद ने जवाब दिया कि मैं ख़ुदा को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि ख़ुदा के सिवा जो तुम (दूसरे दूसरे) शरीक बनाते हो, मैं तो उनसे (बिल्कुल) बेज़ार हूँ ० —

(लेकिन) फिर (मरने के बाद) हमारी तरफ़ से उन्हें दुख देने वाला अज़ाब (दारुण दुख) दिया जावेगा ॥

(ऐ मुहम्मद !) यह अदृष्ट की ख़बरें हैं, जिन्हें हम वही द्वारा तुमको पहुँचाते हैं। इससे पहिले न तुम उनसे अभिज्ञ थे और न तुम्हारी (मुश्रिक) जाति। (अगर तुम्हारी जाति के लोग अब भी तुमको झूठा बतायें) तो तुम धैर्य से काम लो। शुभ परिणाम तो (अल्लाह से डरने वालों और) परहेज़गारों ही का है ॥

और (यह कि हमने) आद की (जाति की) ओर उनके भाई हूद को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा (था। और नूह की तरह) उन्होंने (भी अपनी जाति को) समझाया (था) कि ऐ लोगो ! अल्लाह (ही) की उपासना करो। उसके अतिरिक्त कोई और तुम्हारा पूज्य नहीं। (और तुम जो अल्लाह का शरीक बनाते हो, तो यह) निस्सन्देह बोहतान बाँधते हो (अल्लाह का शरीक कोई नहीं हो सकता) ॥

(और कहा कि ऐ) लोगो ! (मैं तुमको जो कुछ समझाता हूँ, केवल अल्लाह के वास्ते समझाता हूं)। उसके बदले में मैं तुमसे (किसी) मज़दूरी का इच्छुक नहीं हूं। मुझे तो बस वही फल देगा, जिसने मुझको पैदा किया है। तो क्या तुम (इतना) नहीं समझते (कि जो मनुष्य तुम्हारी निःस्वार्थ सेवा कर रहा और तुम्हें सच्चाई के मार्ग की ओर बुला रहा है, वह झूठा नहीं हो सकता) ॥

और (कहा कि) ऐ लोगो ! अपने (वास्तविक) पालन कर्त्ता (को पहिचानो और उस) से (अपने पापों की) क्षमा माँगो। (और) फिर (आगे हमेशा के लिये कुफ़्र व शिर्क वग़ैरा से तौबा करके) उसी की तरफ़ (तन मन से) ध्यान लगाओ (जिस से) कि वह (तुमसे प्रसन्न हो जावे और तुम्हें अकाल के संकट से निकालने के लिये) तुम पर ख़ूब वर्षा करे। और (ईमान व अमल की बरकत से) तुमको और (अधिक) बल (देकर) तुम्हारी वर्तमान शक्ति में (उन्नति कर) दे। (अतः यदि समझदार हो, तो उसी के हो रहो) और उद्दंड बन कर (उससे) मुँह न मोड़ो ॥

वह लोग बोले ऐ हूद ! तुम (अपने नबी होने का) कोई स्पष्ट प्रमाण लेकर हमारे पास नहीं आये। और हम (केवल) तुम्हारे कहने से अपने पूज्यों को छोड़ने वाले नहीं हैं। और न तुम पर ईमान लाने वाले (और न तुम्हारी बात का यक़ीन करने वाले) हैं ॥

हम तो बस यह समझते हैं कि हमारे पूज्यों में से किसी ने तुम्हारे भीतर कोई (ऐसी) ख़राबी पैदा करदी है (कि तुम पागलों और और उन्मादियों कीसी बातें करते हो) ॥

हूद बोले कि (लोगो ! यह तुम्हारी मूर्खता है, जो तुम मेरे विषय में ऐसा ख़याल करते हो। तुम या तुम्हारे पूज्य मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं)। मैं अल्लाह को साक्षी करता हूँ और तुम भी साक्षी हो जाओ कि मैं तो अल्लाह के सिवाय (तुम्हारे) उन (समस्त पूज्यों) से, जिन्हें तुम (अल्लाह का) शरीक ठहराते हो (बिल्कुल) बेज़ार हूँ (और हमेशा रहूँगा) —

فَكِيدُونِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ ۝ إِنِّي تَوَكَّلْتُ
عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُم ۚ مَّا مِن دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ
آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ فَإِن
تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ
رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا
هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنَاهُم
مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝ وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا بِآيَاتِ
رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ
عَنِيدٍ ۝ وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ
أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ۝ ع
وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم
مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ

ثمر

तो तुम सब मिल कर मेरे साथ अपनी बदी कर चलो और मुझको मोहलत न दो ० मैं तो अल्लाह ही पर भरोसा रखता हूं (कि वह) मेरा (भी) पर्वदिगार (है) और तुम्हारा (भी) पर्वदिगार (है)। जितने जान्दार हैं, सब ही की तो चोटी उसके हाथ में है। बेशक मेरा पर्वदिगार (अद्ल व इन्साफ़ के) सीधे रस्ते पर है ० इस पर भी अगर तुम लोग (उससे) फिरे रहो, तो जो हुक्म देकर मैं तुम्हारी तरफ़ भेजा गया हूं, वह तो मैं तुमको पहुँचा चुका, और मेरा पर्वदिगार तुम्हारे सिवा दूसरे लोगों को तुम्हारी जगह ला मौजूद करेगा और तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। बेशक मेरा पर्वदिगार हर चीज़ का निगरान (हाल) है ० और जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा, तो हमने अपनी मेहर्बानी से हूद को और उन लोगों को, जो उनके साथ ईमान लाए थे, नजात दी और उन (सब) को अज़ाब सख़्त से बचा लिया० और (ऐ पैग़म्बर!) यह (उजड़ी हुई बस्तियां, जो तुम देखते हो, वही क़ौम) आद (के लोग) हैं, जिन्होंने अपने पर्वदिगार के हुक्मों से इन्कार किया और उसके रसूलों की नाफ़र्मानी की और हर सख़्तगीर दुश्मन (ख़ुदा) के हुक्म पर चलते रहे ० और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगादी गई और क़यामत के दिन भी। देखो! (क़ौम) आद ने अपने पर्वदिगार की नाशुक्री की (जिसकी उनको सज़ा मिली)। देखो! आद, जो हूद की क़ौम के लोग थे, (ख़ुदा के यहां से) धुतकारे गये ० और समूद की तरफ़ हमने उनके (हम क़ौम) भाई सालेह को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा, तो उन्होंने (अपनी क़ौम के लोगों से) कहा कि भाइयो! ख़ुदा ही की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। उसी ने तुमको ज़मीन (की मिट्टी) से बना खड़ा किया और तुमको उसमें बसाया—

और (अगर तुममें या तुम्हारे शरीकों में कुछ दम है, तो) तुम सब (मिल कर) मेरे साथ बुराई (करने की कोशिश) करो और कोई रिआयत न करो। (मैं भी तो देखूं तुम अपनी कोशिश में किस हद तक सफल होते हो)॥

मैं ने तो अल्लाह पर भरोसा कर रक्खा है, जो मेरा भी पालन कर्त्ता है और तुम्हारा भी पालन कर्त्ता है। यह ज़मीन पर चलने वाले (जिन्हें तुम चलता फिरता देखते हो) इनमें से कोई भी ऐसा नहीं, जिसका मस्तक उसके अधिकार में न हो। (उसके मुक़ाबले में तुम मेरा क्या बना सकते हो)। याद रक्खो! मेरा पालन कर्त्ता (न्याय व इन्साफ़ के) सीधे रास्ते पर है। (वह उसका साथ देगा, जो सचाई पर होगा)॥

अतएव यदि तुम (उसके) विरोधी (और सचाई के मार्ग से विमुख) रहो, तो (तुम जानो)। मैं तो जो (सन्देश) देकर तुम्हारे पास भेजा गया था, उसे तुम तक पहुंचा चुका और (अब) मेरा पालन कर्त्ता (तुम्हें पृथ्वी से नष्ट करके) तुम्हारे अतिरिक्त किसी (दूसरी) जाति को (तुम्हारा) उत्तराधिकारी बना देगा। और तुम उसको (और उसके पैग़म्बर को) कुछ हानि न पहुंचा सकोगे। निस्सन्देह मेरा पालन कर्त्ता हर वस्तु की संरक्षता (कर सकता है और) करता है॥

(तात्पर्य यह है कि हूद ने उन्हें बहुत समझाया, परन्तु उन लोगों ने उनकी एक न सुनी) और (न हमारे अज़ाब की कुछ पर्वाह की, तो) जब हमारी आज्ञा (अज़ाब के लिये) जारी हो गई, तो हमने अपनी मेहर्बानी (व कृपा) से हूद और उनके साथ जो लोग ईमान लाये थे, उनको बचा लिया। और उन (सब) को (उस) सख़्त अज़ाब से मुक्त कर दिया (और अवज्ञाकारियों को पृथ्वी से मिटा दिया)॥

और यह (परिणाम हुआ) आद (जाति के लोगों का) जिन्होंने अपने पालन कर्त्ता की निशानियों को झूठा बतलाया और उसके रसूलों की अवज्ञा की। और जो पूर्ण रूप से ऐसे लोगों के कहने पर चलते रहे, जो विरोधी और द्वेष करने वाले थे॥

और (नतीजा यह हुआ कि) इस दुनिया में भी लानत (व फिटकार) उनके पीछे लगा दी गई और प्रलय के समय पर भी। देखो! आद (जाति) ने अपने पालन कर्त्ता की अवज्ञा की। (और) देखो! हूद (पैग़म्बर) की आद जाति अल्लाह की कृपा से दूर कर दी गई॥

और (यह भी कि हमने) समूद (जाति) की ओर उनके (सजातीय) भाई सालेह को भेजा। और उन्होंने भी (नूह व हूद की तरह अपनी जाति से जाकर) कहा, कि ऐ लोगो! अल्लाह की उपासना करो। उसके सिवाय कोई और तुम्हारा पूज्य (बनने के योग्य) नहीं। उसी ने तुमको ज़मीन (की मिट्टी) से पैदा किया है और (उसी ने) उसमें तुमको बसाया है—

فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ
مُجِيبٌ ۝ قَالُوا يَا صَالِحُ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ
هَٰذَا أَتَنْهَانَا أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِي
شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ
إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَآتَانِي مِنْهُ رَحْمَةً
فَمَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ فَمَا تَزِيدُونَنِي
غَيْرَ تَخْسِيرٍ ۝ وَيَا قَوْمِ هَٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً
فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا
بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۝ فَعَقَرُوهَا فَقَالَ
تَمَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذَٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ
مَكْذُوبٍ ۝ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِنْ خِزْيِ
يَوْمِئِذٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝ وَأَخَذَ الَّذِينَ

तो उसी से (पिछिले गुनाहों की) माफ़ी माँगो और (आइन्दा को) उसी की जनाब में तौबा करो । बेशक मेरा पर्वर्दिगार (हर एक के) पास है (सब की सुनता और दुआ) क़बूल करता है ० वह लगे कहने सालेह ! इस से पहिले तो हम लोगों में तुमसे (बड़ी बड़ी) उम्मीदें की जाती थीं (कि तुम हर तरह हमारा साथ दोगे) । से क्या तुम हमको उन (माबूदों) की इबादत से मना करते हो, जिनको हमारे बाप दादा पूजते चले आए हैं । और जिस (दीन) की तरफ़ तुम हमको बुलाते हो, हम तो उसकी निस्बत (बड़े) शक में (पड़े) हैं, जिस ने (हम को सख़्त) हैरत में डाल रक्खा है ० (सालेह ने) जवाब दिया कि भाइयो ! भला देखो तो सही, अगर मैं अपने पर्वर्दिगार के खुले रस्ते पर हूँ और उसने मुझ पर अपना करम किया है, फिर अगर मैं उसकी ना फ़र्मानी करने लगूँ, तो ऐसा कौन है, जो ख़ुदा के मुक़ाबिले में मेरी मदद को खड़ा हो ? तो (ऐसी सलाह बद से) तुम (उल्टा) मेरा और नुक़सान ही कर रहे हो ० और भाइयो ! यह ख़ुदा की (भेजी हुई) ऊँटनी तुम्हारे लिये (मेरी रिसालत की) एक निशानी है, तो इसको (इसी के हाल पर) छुटा रहने दो कि ख़ुदा की ज़मीन में से (जहां चाहे) खाती फिरे और इसको किसी तरह की ईज़ा न पहुँचाना। वर्ना फ़ौरन ही तो तुमको अज़ाब आलेगा ० (इतने समझाने पर भी) तो लोगों ने उस (ऊँटनी) को मार डाला, तो (सालेह ने) कहा (अच्छा) तीन दिन अपने घरों में (और) रस बस लो, (फिर तो तुम पर अज़ाब आपहीगा) । यह (ख़ुदा का) वादा है, जो (हरगिज़) ख़िलाफ़ न होगा ० तो जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा, तो हमने सालेह को और उन लोगों को, जो उनके साथ ईमान लाए थे, अपनी मेहर्बानी से नजात दी और उस (क़यामत के) दिन की रुस्वाई से (बचा लिया। ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार बेशक वही ज़बरदस्त (और) ग़ालिब है ० और जिन लोगों ने ज़ियादती की थी, उनको—

अतएव उससे (अपने पापों की) क्षमा माँगो। और (आगे के लिये पूर्ण चित्त से) उसी की तरफ़ ध्यान लगाओ। निस्सन्देह मेरा पालन कर्त्ता (हर एक के) पास है। (और सबकी दुआओं को सुनता और) स्वीकार करता है॥

वह (लोग) बोले, ऐ सालेह ! इससे पहिले तो तुम हम (लोगों) में (बड़े) होनहार मालूम होते थे। (हमें तुमसे आशा थी कि तुम अपनी जाति का नाम रोशन करोगे, लेकिन अफ़सोस ! तुम्हारी आज की बातें सुन कर हमारी समस्त आशाओं पर पानी फिर गया)। क्या तुम हमें उन (पूज्यों) की पूजा से मना करते हो, जिनको पूजा हमारे बाप (दादा) करते आये हैं। और हमें तो उस (धर्म की सच्चाई) में जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो (ऐसा अधिक) सन्देह है कि (किसी तरह उसको) जी नहीं मानता॥

सालेह ने कहा, ऐ लोगो ! (भला यह तो) बतलाओ कि यदि मेरे पालन कर्त्ता ने मुझे (सीधा और) साफ़ रस्ता समझा दिया हो, और उसने (अपनी मेहर्बानी व कृपा से) मुझे अपनी अनुकम्पा (अर्थात् नुबूवत भी) प्रदान की हो, तो (ऐसी हालत में मुझे क्या करना चाहिये। क्या मैं तुम्हारी तरह मूर्ति पूजा करूं ?)। अगर मैं (मूर्ति पूजा करूं और उसकी आधीनता छोड़ कर) उसकी अवज्ञा करूँ, तो कौन है, जो अल्लाह के अज़ाब से मुझे बचा लेगा। तो तुम (जिस मार्ग पर मुझे चलाना चाहते हो, उस पर चलने से सिवाय तबाही के और मुझे कुछ प्राप्त नहीं होगा। तुम ऐसे परामर्श देकर मुझे कोई लाभ नहीं पहुँचाते, बल्कि) मेरा सरासर नुक़सान कर रहे हो॥

और (सालेह ने कहा) ऐ लोगो ! (देखो !) यह अल्लाह की (भेजी हुई) ऊँटनी तुम्हारे वास्ते (उसकी शक्ति और मेरी नुबूवत की) एक निशानी * है। तो तुम इसे आज़ाद छोड़ दो (जिस से कि) अल्लाह की ज़मीन में (जहाँ चाहे) चरती फिरे। और उसे कोई कष्ट न पहुँचाना, अन्यथा तुरन्त तुम्हें अज़ाब आ दबावेगा॥

* टीका—सालेह की जाति ने जब हज़रत सालेह से अद्भुत चमत्कार दिखाने की इच्छा प्रकट की, तो अल्लाह तआला ने पहाड़ से एक ऊँटनी पैदा करदी। जिसने पैदा होते ही बच्चा दिया और वह बच्चा पैदा होते ही जवान हो गया। इसी ऊँटनी के सम्बन्ध में हज़रत सालेह ने ख़ुदा के हुक्म से अपनी जाति को हिदायत की थी कि उसको कोई तकलीफ़ न पहुँचाई जावे :—हसन निज़ामी॥

मगर सालेह की जाति ने (उनकी हिदायत की परवाह न की और) उस (ऊँटनी) को मार डाला। इस पर सालेह ने कहा कि (अब) तुम तीन दिन अपने घर में (और) रह सह लो, (फिर तो तुम हो और अल्लाह का अज़ाब। और) यह (अल्लाह का) आदेश है, जो झूठा नहीं होगा॥

अत: जब (तीन दिन के बाद) हमारा अज़ाब (उन पर) आया, तो हमने सालेह और उनके ईमानदार साथियों को अपनी मेहर्बानी (व कृपा) से (उस अज़ाब से) मुक्ति दी और उस दिन की (ज़िल्लत व) बदनामी से (बचा लिया। ऐ रसूल !) तुम्हारा पालन कर्त्ता (बड़ा) मज़बूत (और) शक्ति शाली है (वह जिसे चाहे, अज़ाब दे और जिसे चाहे मुक्ति दे)॥

और ज़ालिम (व अवज्ञाकारी) लोगों को (एक भयङ्कर) कड़क ने आ दबाया—

طَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۙ
كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَاۤ اِنَّ ثَمُوْدَا۠ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ
اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ۠ وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ
بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ
حَنِيْذٍ ۠ فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْ
جَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ
لُوْطٍ ۠ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ
وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ۠ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ
وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِيْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيْبٌ ۠
قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ
عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۠ فَلَمَّا
ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى
يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ۠ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ

٤

(बड़े ज़ोर की) कड़क ने आ लिया, तो अपने घरों में (बैठे के) बैठे रह गये ० (और ऐसे मिटे कि) गोया उनमें (कभी) बसे ही न थे। देखो! समूद ने अपने पर्वरदिगार की नाफ़र्मानी की (और अपनी सज़ा को पहुंचे)। देखो! समूद (.खुदा के यहां से) धुतकारे गये ० और (जब) हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास .खुश ख़बरी लेकर आए (तो) उन्होंने इब्राहीम को सलाम किया। इब्राहीम ने सलाम का जवाब दिया। फिर इब्राहीम ने बिला तवक़्क़ुफ़ बछड़ा (यानी उसका) भुना हुआ (गोश्त उनके सामने) ला मौजूद किया ० फिर जब देखा कि उनके हाथ तो खाने की तरफ़ उठते ही नहीं, तो उनसे बद गुमान हुए और जी ही जी में उनसे डरे। वह बोले (कि आप किसी तरह का) ख़ौफ़ न कीजिये। हम तो (फ़रिश्ते हैं और) क़ौम लूत की तरफ़ भेजे गये हैं (कि उनको उनकी बद किर्दारियों की सज़ा दें) ० और (इस गुफ़्तगू के वक़्त) इब्राहीम की बीबी (सारा) भी खड़ी हुई थीं। वह (फ़रिश्तों के इतमीनान कर देने से) .खुश हो गईं। तो हमने उनको (उन ही फ़रिश्तों के ज़रिये से पहिले) इस्हाक़ (बेटे) और इस्हाक़ के बाद याक़ूब (पोते के पैदा होने) की .खुश ख़बरी दी ० वह लगीं कहने हाय मेरी कमबख़्ती ! क्या (इस उम्र में) मेरे औलाद होगी और मैं तो बुढ़िया हूं। और यह (जो) मेरे शौहर हैं, (यह (भी) बूढ़े हैं। ऐसे में हमारे यहां औलाद का होना बेशक (बड़ी) अजीब बात है ० फ़रिश्ते बोले, क्या तुमको .खुदा की .कुद्रत से (यह अम्र कुछ) अजीब मालूम होता है ? ऐ अहले बैत! (नुबूवत) तुम पर .खुदा की रहमत और उस की बरकतें (नाज़िल हों)। बेशक .खुदा सज़ावार हम्द (व सना और अपने बन्दों पर) बड़ा (ही करम करने वाला) है ० फिर जब इब्राहीम (के दिल) से ख़ौफ़ दूर हुआ और उनको (औलाद की) .खुश ख़बरी भी मिली, लगे क़ौम लूत के बारे में हमसे झगड़ने ० बेशक इब्राहीम बड़े बुर्दबार, बड़े नर्म दिल (हर बात में .खुदा की तरफ़) रुजू करने वाले थे०—

مجز

तो वह (सब के सब) अपने घरों में (औंधे गिर पड़े और) औंधे (ही) पड़े रह गये। (और फिर ऐसे नष्ट हुए कि) मानो (कभी) वह उन घरों में बसे ही न थे॥

(अतएव ऐ दुनिया वालो !) सुनो ! समूद (जाति) ने अपने सृष्टि कर्त्ता की अवज्ञा की, और समूद जाति (के लोग सदैव के लिये अल्लाह की) शरण से दूर कर दिये गये॥ और (सुनो ! जब) हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास मंगल समाचार लेकर आये (और) उन्होंने (आकर इब्राहीम को) सलाम किया (तो) उन्होंने सलाम का जवाब दिया (और समझे कि यह लोग अतिथि-स्वरूप मेरे पास आये हैं)। अतएव वह तुरन्त (उनके लिये) एक बछड़ा (अर्थात उसका कुछ) भुना हुआ (मांस) लेकर आये (और उनके सामने लाकर रख दिया, मगर वह तो फ़रिश्ते थे—कैसे खाते)॥

अतएव जब इब्राहीम ने देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ बढ़ते (ही) नहीं, तो वह उनसे विचलित हुए और दिल ही दिल में उनसे डरे)। फ़रिश्तों ने कहा डरो मत, हम (फ़रिश्ते हैं और) लूत जाति की ओर (उनके दुराचरणों के कारण उन्हें तबाह व बरबाद करने के लिये) भेजे गये हैं। (और हम तुम्हें यह मंगल समाचार सुनाने के लिये आये हैं कि तुम्हारे यहां लड़का पैदा होगा)॥

और इब्राहीम की पत्नी भी खड़ी हुई (यह बातें सुन रही) थीं। इस पर (उन्हें आश्चर्य हुआ और) वह हँस पड़ीं। फिर हमने उनको (भी अपने भेजे हुए फ़रिश्तों के द्वारा) इस्हाक़ (के पैदा होने) की, और इस्हाक़ के बाद याकूब (के जन्म लेने) की .खुश ख़बरी सुनाई। (अर्थात बेटे पोते और सन्तान पर सन्तान होने का मंगल समाचार सुनाया)॥

वह बोलीं, है है !! मेरे यहाँ बच्चा पैदा होगा। मैं तो (बिल्कुल) बुढ़िया फूंस हूं और यह मेरे पति (भी) बूढ़े हैं। यह तो बड़े आश्चर्य की बात है॥

फ़रिश्ते बोले (ऐ सारा !) क्या तुमको .खुदा की .कुद्रत से (यह बात कुछ) अद्भुत मालूम होती है। ऐ इस कुटुम्ब के लोगो ! तुम पर तो अल्लाह की कृपा और उसकी बरकतें (उतरती ही रहती) हैं। निस्सन्देह अल्लाह तआला (स्तुति व) प्रशंसा के योग्य (और) बड़ी (.कुद्रत व) महानता वाला है। (उसके लिये बुढ़ापे में भी सन्तान प्रदान कर देना कुछ बड़ी बात नहीं हैं)॥

अभिप्राय यह कि (इब्राहीम ने) जब (उनकी वार्तालाप सुनी और) भय (व निराशा) उन (के दिल) से जाती रही और उनको (बेटे का) मंगल समाचार मिला (और उन्हें मालूम हुआ कि फ़रिश्ते लूत जाति पर अज़ाब उतारने आये हैं) तो वह लूत जाति के मामले में हमसे झगड़ने लगे। (अर्थात उनकी ज़ोरदार शिफ़ारिश करने लगे) ॥

वास्तविक बात यह है (कि) इब्राहीम (बड़े ही) कोमल स्वभाव, नर्म दिल (और हर बात में हमारी तरफ़) आकर्षित होने वाले थे॥

مُنِيبٌ ۝ يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا إِنَّهُ قَدْ جَاءَ
أَمْرُ رَبِّكَ وَإِنَّهُمْ آتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ۝
وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ
بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ۝ وَجَاءَهُ
قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ
السَّيِّئَاتِ قَالَ يَا قَوْمِ هَٰؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ
لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ فِي ضَيْفِي
أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ۝ قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ
مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ۝
قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً أَوْ آوِي إِلَىٰ رُكْنٍ
شَدِيدٍ ۝ قَالُوا يَا لُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوا
إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ
مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا امْرَأَتَكَ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ

(हमने फ़र्माया कि) इब्राहीम इस ख़याल को छोड़ दो। तुम्हारे पर्वर्दिगार का (जो) हुक्म (था, वह) आ पहुँचा। और इन लोगों पर ऐसा अज़ाब आने वाला है, जो (किसी तरह) टल नहीं सकता ० और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आए, तो इनका आना उनको बुरा लगा। और उन (के आने) की वजह से तङ्ग दिल हुए और लगे कहने कि यह (आज का दिन) तो बड़ी मुसीबत का दिन है ० और लूत की क़ौम के लोग (लड़कों का आना सुन कर इरादए बद से) दौड़े दौड़े लूत के पास आये। और यह लोग पहिले से बुरे काम तो किया ही करते थे। लूत (ने जो इन लोगों को आते देखा, तो) लगे कहने कि भाइयो ! यह मेरी बेटियाँ (मौजूद) हैं (इनसे निकाह करलो)। यह तुम्हारे लिये (हलाल और) पाकीज़ह तर हैं। तो (इन लड़कों की तरफ़ नज़र न करो और) ख़ुदा से डरो और मेरे मेहमानों के बारे में मेरी आबरू रेज़ी न करो। क्या तुम में कोई भी भला आदमी नहीं ० उन्होंने जवाब दिया कि तुमको तो मालूम है कि हमको तुम्हारी बेटियों से किसी तरह का सरोकार नहीं। और हमारे इरादे से भी तुम बख़ूबी वाक़िफ़ हो ० (लूत) बोले कि ऐ काश ! (आज) मुझको तुम्हारे मुक़ाबिले की ताक़त होती, या मैं किसी ज़बरदस्त सहारे का आसरा पकड़ पाता ० (फ़रिश्ते) बोले कि लूत ! हम तुम्हारे पर्वर्दिगार के भेजे हुए हैं। यह लोग हरगिज़ तुम तक नहीं पहुँच पाएँगे। तो तुम अपने अह्ल (व अयाल) को लेकर कुछ रात (रहे) से निकल भागो। और (फिर) तुम में से कोई मुड़ कर (भी इधर को) न देखे, मगर तुम्हारी बीबी कि (वह बे देखे रहने की नहीं। और) जो (अज़ाब) इन लोगों पर नाज़िल होने वाला है, वह उस पर भी ज़रूर नाज़िल होगा—

(हमने कहा) ऐ इब्राहीम ! (अब) तुम इस (विचार) को छोड़ो ।(लूत जाति के अज़ाब के लिये) तुम्हारे पालन कर्त्ता की आज्ञा निकल चुकी। और उन पर (शीघ्र) ऐसा अज़ाब आने वाला है, जो टलने वाला नहीं ॥

और (इब्राहीम को ख़ुश ख़बरी सुनाकर) जब हमारे फ़रिश्ते (ख़ूब सूरत लड़कों की शकल में) लूत के पास आये, तो लूत (अपनी जाति के असभ्य स्वभाव का विचार करके) उन (के आने) से विचलित हृदय और संकुचित हुए। और (घबराकर) कहने लगे कि यह (आज का) दिन (भी) बड़ा (ही) कठिन है ॥

(अतएव लूत को जिस बात का डर था, वह प्रकाश में आई) और (उनके विचारानुसार) उनकी जाति के लोग (इन नये आने वालों का हाल सुन कर) उनके पास दौड़े (दौड़े) आये । और (यह उनकी बेशर्मी व निर्लज्जता की हरकत कोई नई हरकत नहीं थी)। वह (इन) कुकर्मों के पहिले ही से आदी थे। लूत ने उनसे कहा कि ऐ मेरी जाति (के लोगो !) यह मेरी पुत्रियां (मौजूद) हैं। यह तुम्हारे लिये (प्रत्येक दृष्टि से) अधिक (अच्छी और अधिक) पवित्र हैं। (ऐसा ही है) तो (इनसे विवाह करलो और इन लड़कों का ख़याल छोड़ दो। और) अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के मामले में ज़लील न करो। क्या तुम में कोई भी (ऐसा योग्य और) नेक आदमी नहीं है (जो तुमको इतनी बात समझा दे ?) ॥

वह (दुराचारी) बोले (ऐ लूत !) तुम्हें मालूम है कि हमें तुम्हारी लड़कियों की कोई ज़रूरत नहीं। और जो कुछ हमारा इरादा है, उससे तुम (अच्छी तरह) अभिज्ञ हो। (इस समय) लूत (अपनी विवशता पर अफ़सोस करने लगे। और) कहने लगे ऐ काश ! मुझ में तुम्हारे मुक़ाबले की शक्ति होती या मैं किसी सुदृढ़ स्थान पर शरण पा सकता ॥

(लूत की यह परेशानी देख कर फ़रिश्ते) बोले कि ऐ लूत ! (किसी तरह की चिन्ता न करो। तुमने हमको पहिचाना नहीं)। हम तो तुम्हारे पालन कर्त्ता के भेजे हुए (फ़रिश्ते) हैं। यह लोग तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। (हम इनको ख़ुदा के हुक्म से अज़ाब देने के लिये आये हैं)। अतएव तुम रात को किसी समय अपनी पत्नी के अतिरिक्त अपने (सब) घर वालों को लेकर (इस बस्ती के बाहर) चले जाओ। और (फिर) तुम में से कोई (पीछे) मुड़ कर भी न देखे। (और तुम्हारी पत्नी अपनी दुराचारी जाति की शुभ चिन्तक है, इस लिये वह तुम्हारे साथ न जा सकेगी। और) उस पर भी (अज़ाब की) वही आपत्ति आने वाली है, जो औरों पर आवेगी ॥

इन (के अज़ाब) का वक़्त मुक़र्रर सुबह है। क्या सुबह क़रीब नहीं ? ० फिर जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा, तो (ऐ पैग़म्बर !) हमने (उलट कर) उस (बस्ती) के ऊपर के हिस्से को उसके नीचे का हिस्सा कर दिया और (ऊपर से) उस पर बरसाए जमे हुए खड़न्जे के पत्थर ० जिन पर तुम्हारे पर्वर्दिगार के यहाँ निशान किया हुआ था (कि यह उस क़ौम पर बरसेंगे)। और यह (जगह इन) ज़ालिमों (यानी कुफ़्फ़ार मक्का) से (कुछ ऐसी) दूर (भी) नहीं (तो चाहिये कि इसी के हाल से इब्रत पकड़ें) ० और मदयन की तरफ़ (हमने) उनके (हम क़ौम) भाई शुऐब को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा। उन्होंने (उनसे) कहा भाइयो! ख़ुदा ही की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। और माप और तोल में कमी न किया करो। मैं तुमको ख़ुशहाल देखता हूँ (तो तुमको माप तोल में कमी करने की क्या ज़रूरत है)। और (इस पर भी इस हरकत से बाज़ न आओगे, तो) मुझको तुम्हारी निस्बत अज़ाब (आम) के दिन का अन्देशा है, जो (तुम सब को) आ घेरेगा ० और भाइयो ! माप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरी (पूरी) किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो और मुल्क में फ़साद न फैलाते फिरो ० अगर तुम ईमान रखते हो, तो अल्लाह का (दिया) जो कुछ (तिजारत में) बच रहे, वही तुम्हारे लिये अच्छा है। और मैं तुम्हारा निगहबान तो हूँ नहीं (कि हर एक की माप तोल को देखता फिरा करूं) ० वह लगे कहने कि शुऐब ! क्या तुम्हारी नमाज़ तुमसे मुतक़ाज़ी है कि जिन (बुतों) को हमारे बाप दादा पूजते आए, हम उनको छोड़ बैठें-या अपने माल में जिस तरह (का तसर्रुफ़ करना) चाहें, न करें-

إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۚ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ●
فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا
عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ ● مُّسَوَّمَةً
عِندَ رَبِّكَ ۖ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ● وَ
٨ إِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ
مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ وَلَا تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَ
الْمِيزَانَ ۚ إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ● وَيَا قَوْمِ أَوْفُوا الْمِكْيَالَ
وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ
وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ● بَقِيَّتُ اللَّهِ
خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ● وَمَا أَنَا عَلَيْكُم
بِحَفِيظٍ ● قَالُوا يَا شُعَيْبُ أَصَلَاتُكَ تَأْمُرُكَ أَن
نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَن نَّفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا

[illegible]

(लूत ने उन फ़रिश्तों से पूछा कि इन कुकर्मियों पर अज़ाब कब आवेगा ? तो वह बोले कि) उन (के अज़ाब) का समय प्रातः काल का है। (फिर उन्होंने कहा कि अगर इन पर इस से भी जल्दी अज़ाब आवे, तो मैं बहुत ख़ुश हूँ। इस पर उन्होंने जवाब दिया, ऐ लूत !) क्या सुबह (होते कुछ देर लगती है। क्या सुबह) निकट नहीं है ॥

अभिप्राय यह है कि जब (सुबह हो गई और) हमारे (अज़ाब की) आज्ञा (उनके लिये) जारी हो गई, तो हमने उस (बस्ती) को उलट पलट कर दिया (और उसका तल उलट दिया)। और हमने उस (के रहने वालों) पर तुम्हारे पालन कर्त्ता के चिन्हों * से अंकित (और) लगातार आने वाले खंगरों के रोड़ों का (ख़ूब) मेंह बरसाया। (और अवज्ञाकारी कुकर्मियों को उनके आचरणों का ख़ूब मज़ा चखाया)। और (ऐसे) ज़ालिमों पर यह (पत्थरों की वर्षा करना न्याय व इन्साफ़ से) विरुद्ध नहीं है। (वह ऐसी ही सज़ाओं के योग्य हैं) ॥

* टीका – जो कंकर और पत्थर लूत जाति पर ख़ुदा का क्रोध बन कर बरसे थे, ख़ुदा की क़ुद्रत ने उन पर कुछ लाल २ रेखायें खींच कर पृथ्वी के साधारण कंकरों से उनको विशेषता-पूर्ण और अज़ाब के लिये निर्दिष्ट कर दिया था :—हसन निज़ामी ॥

और हमने मदायन (के लोगों) की तरफ़ उनके (सजातीय) भाई शुऐब को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा। उन्होंने (भी हूद व समूद वग़ैरा की तरह अपनी जाति से) कहा (कि) ऐ लोगो ! अल्लाह की उपासना करो। उसके अतिरिक्त कोई तुम्हारा पूज्य (बनने के योग्य) नहीं। और (अल्लाह की उपासना के साथ दुनिया के मामलों को भी ठीक रक्खो) नाप और तोल में कमी न करो। मैं तो तुमको सुसम्पन्न देखता हूँ। (सुसम्पन्न होकर बुरी नीयत वाले न बनो। ख़ुदा के अनुग्रहीत हो)। और (ईर्षा व तृष्णा के गढ़े में न गिरो। अगर कुछ दिन और तुम्हारी यही हालत रही, तो) मुझे तुम पर (एक) ऐसे दिन के अज़ाब (के उतरने) का सन्देह है, जो (ऐसा कठिन होगा कि उस का अज़ाब तुम सबको) घेर लेगा। (और तुम में से कोई भी अज़ाब से न बच सकेगा)।

और ऐ मेरी जाति (वालो !) नाप और तोल (ईमान और) इन्साफ़ से पूरी (पूरी) किया करो। और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो। और (हक़ तलफ़ी करके) ख़ुदा की पृथ्वी पर (झगड़े) फ़साद फैलाते न फिरो ॥

अगर तुम (सत्य बात का) विश्वास करने वाले हो, तो (याद रक्खो कि) अल्लाह का (हलाल और जायज़ किया हुआ और धर्मानुसार प्राप्त किया हुआ) लाभ (इस हराम की कमाई से लाख दर्जे) अच्छा है। और (यदि तुमको सच्ची बात का विश्वास न आये, तो तुम जानो)। मैं (तो केवल प्रचारक हूँ) तुम्हारे ऊपर चौकीदार (बनाकर) नहीं (भेजा गया) हूँ। (अगर तुम्हारे कुकर्मों के कारण तुम्हारे ऊपर अल्लाह का अज़ाब उतर आवे, तो उसके ज़िम्मेदार तुम ख़ुद होगे) ॥

(यह सुन कर) उन्होंने जवाब दिया कि ऐ शुऐब ! क्या तुम्हारी नमाज़ (और तुम्हारी उपासना) तुमको यही सिखाती है कि हम उन (पूज्यों की पूजा करना) छोड़ दें, जिन्हें हमारे बाप (दादा) पूजते आये हैं-या यह कि हम अपने धनों में से अपनी इच्छानुसार ख़र्च न करें—

مَا نَشٰٓؤُا اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ● قَالَ يٰقَوْمِ
اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ
مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ
اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ
وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ●
وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ
مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ
وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ● وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ
ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ● قَالُوْا يٰشُعَيْبُ
مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا
ضَعِيْفًا وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ وَمَآ اَنْتَ
عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ● قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ
اللّٰهِ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا اِنَّ رَبِّيْ بِمَا

हाँ जी हाँ ! तुम ही तो (मामिले के बड़े) नर्म (और) रास्तबाज़ (रह गए) हो ० (शुऐब ने) कहा भाइयो ! भला देखो तो सही, अगर मैं अपने पर्वर्दिगार के खुले रस्ते पर हूं और वह मुझको अपने (फ़ज़्ल) से उम्दा (यानी हक़ हलाल) रोज़ी देता है, (तो क्या उस तरीक़े को छोड़ कर तुम्हारी तरह हराम की कमाई खाने लगूं ?) । और मैं (हरगिज़) नहीं चाहता कि जिस (काम के करने) से तुमको मना करता हूँ, तुम्हारे बर अक्स आप उसको करने लगूं । मैं तो अपने हत्तल मक़्दूर (लोगों में मामिले की) इस्लाह चाहता हूँ और बस, और (इस इरादे में) मेरा कामयाब होना, तो बस ख़ुदा ही (की ताईद) से हो सकता है । मैं तो उसी पर भरोसा रखता और उसी की तरफ़ रुजू करता हूँ ० और भाइयो! मेरी ज़िद में आकर कहीं ऐसा जुर्म न कर बैठना कि जैसी मुसीबत क़ौम नूह या क़ौम हूद या क़ौम सालेह पर नाज़िल हो चुकी है, (उस जुर्म की पादाश में) वैसी ही मुसीबत तुम पर भी आ नाज़िल हो । और क़ौम लूत (के खँडर) भी तुमसे (कुछ ऐसे) दूर नहीं (उन ही को देख कर इब्रत पकड़ सकते हो) ० और अपने पर्वर्दिगार से (अपने पिछले गुनाहों की) माफ़ी चाहो, फिर (आयन्दा के लिये) उसी की जनाब में तौबा करो । बेशक मेरा पर्वर्दिगार मेहर्बान (और) बड़ा महब्बत करने वाला है ० वह लगे कहने कि शुऐब ! जो बातें तुम कहते हो, उनमें से अक्सर तो हमारी समझ में आती नहीं । अलावा बरीं हम तुमको अपने (लोगों) में (बहुत ही) बोदा पाते हैं । और अगर तुम्हारी बिरादरी के लोग न होते, तो हम तुमको (कभी का) संगसार कर चुके होते । और (बिरादरी के सिवा) हम पर (किसी तरह का) तुम्हारा दबाव तो है नहीं ० (शुऐब ने) जवाब दिया कि भाइयो ! क्या अल्लाह से बढ़ कर तुम पर मेरी बिरादरी का दबाव हुआ । और तुमने (अपने ज़ोम में) ख़ुदा को अपने पसे पुश्त डाल दिया । बेशक—

(क्यों न हो) तुम ही तो बड़े कोमल हृदय (और) नेक चलन (दुनिया में रह गये) हो ॥

(शुऐब ने) कहा भाइयो ! भला देखो तो सही, अगर मैं अपने पालन कर्त्ता के (बताये हुए) साफ़ (और सीधे) रास्ते पर हूँ और वह मुझे अच्छा (और पवित्र) भोजन प्रदान करता है (तो क्या मैं सत्य के मार्ग को छोड़ कर पथ भ्रष्ट हो जाऊँ ?) और (हलाल जीविका को छोड़ कर हराम की रोज़ी को अपनी ख़ुराक बनालूं ? यह मुझसे सम्भव नहीं) । मैं यह नहीं चाहता कि जिन बातों से तुमको रोकूं, बाद को स्वयं उन्हें करने लगूं । मैं तो जहां तक भी मुझसे हो सका है, सुधार चाहता हूँ । और मुझको (अमल व सुधार की) जो (कुछ भी) शक्ति होती है, अल्लाह ही की सहायता से होती है । मैं तो उसी पर भरोसा रखता हूँ । और (हर मामले में) उसी की तरफ़ ध्यान लगाता हूँ ॥

और ऐ मेरी जाति (के लोगो ! मुझे तुम्हारी तरफ़ से बड़ा खटका लगा हुआ है । कहीं) मेरा विरोध करने से तुम ऐसे अपराध के भागी न बन जाओ कि जिससे तुम पर (अल्लाह के अज़ाब की वैसी ही) विपत्ति उतरे, जैसी कि नूह, हूद और सालेह की जातियों पर उतर चुकी है । और (अगर तुमको नूह आदि जातियों की विपत्ति अधिक समय हो जाने के कारण याद नहीं रही, तो) लूत जाति (का समय और उसके टूटे फूटे खँडर) तो तुमसे कुछ दूर नहीं । (उन्हीं की तकलीफ़ और उन्हीं के परिणाम को देख कर उपदेश व शिक्षा ग्रहण करो) ॥

और अपने पालन कर्त्ता से (अपने पापों की) क्षमा चाहो । (और सच्चे दिल से ईमान क़बूल करो) । फिर उसी की तरफ़ (पूर्ण चित्त से) ध्यान लगाओ-(और उसी के हो रहो) । निस्सन्देह मेरा पालन कर्त्ता तो (अपने बन्दों के हाल पर बड़ा) मेहर्बान और (उनसे अत्यन्त) प्रेम करने वाला है ॥

वह बोले-ऐ शुऐब ! (ख़बर नहीं तुम क्या कहते हो) । जो कुछ तुम कहते हो, उनमें से बहुत सी बातें (ऐसी हैं, जो) हमारी समझ में (तो) आती नहीं । और (वास्तव में पूछो, तो हमने इस समय तक तुम्हारा बड़ा लिहाज़ किया, अन्यथा) हम तो तुमको अपने (लोगों) में (एक बिलकुल ही तुच्छ और) कमज़ोर (आदमी) पाते हैं । (जिसकी हमारे आगे कुछ भी हक़ीक़त नहीं । मगर क्या करें–तुम्हारे प्रेम पात्रों और सम्बन्धियों का ख़याल है कि वह हमारे सहयोगी हैं) । और अगर तुम्हारे भाई बन्द (हमारे सहयोगी) न होते, तो (अब तक क्या रक्खा था) । हमने तुमको (कभी का) पत्थरों से मार डाला होता । और तुम्हारा (तो) हमारी दृष्टि में कोई आदर (ही) नहीं है ॥

शुऐब ने कहा, लोगो ! (मुझको तुम्हारी बुद्धि पर बड़ा शोक होता है) । क्या तुम्हारे विचार में मेरे भाई बन्द अल्लाह से (भी) अधिक माननीय हैं ? (कि तुम उनका तो पास और मान करते हो) और अल्लाह को तुमने (हृदय से भुला कर) पीठ पीछे डाल रक्खा है । (ना समझो !) विश्वास करो, मेरा पालन कर्त्ता-

تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝ وَيَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي
عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ
وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ۝
وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا
فِي دِيَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝ كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا أَلَا بُعْدًا
لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا
مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
وَمَلَئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ
بِرَشِيدٍ ۝ يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَوْرَدَ
هُمُ النَّارَ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ۝ وَأُتْبِعُوا فِي
هَٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ۝
ذَٰلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْقُرَىٰ نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا قَائِمٌ

जो कुछ तुम करते हो (सब) मेरे पर्वदिगार के इहाते (इल्म) में है ० और भाइयो ! तुम अपनी जगह अमल करो, मैं (अपनी जगह) अमल करता हूँ। चन्द रोज़ बाद तुमको मालूम हो जायगा कि किस पर अज़ाब नाज़िल होता है, जो उसको (सब की नज़रों में) फ़ज़ीहत कर देगा और कौन झूठा है। और (उस वक़्त के तुम भी) मुन्तज़िर रहो, मैं भी तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हूँ ० और जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा, तो हम ने अपनी मेहर्बानी से शुऐब को और उन लोगों को, जो उनके साथ ईमान लाए थे, बचा लिया। और जो लोग ना फ़र्मानी किया करते थे, उनको आवाज़ सख़्त (के अज़ाब) ने आ पकड़ा। तो (जैसे) अपने घरों में (बैठे थे, वैसे ही बैठे के) बैठे रह गए ० (और ऐसे मिटे कि) गोया उनमें (कभी) बसे ही न थे। (लोगो !) सुन रक्खो कि जैसे समूद ख़ुदा के यहाँ से धुतकारे गए थे (अह्ल) मदयन भी धुतकारे गए ० और हमने मूसा को फ़िर्औन और उसके दर्बारियों की तरफ़ अपनी निशानियों और दलील वाज़ेह के साथ (पैग़म्बर बना कर) भेजा, तो लोग फ़िर्औन के कहने पर चले। और फ़िर्औन की बात कुछ राह की (बात) तो थी नहीं ० क़यामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे आगे होगा और उनको दोज़ख़ में लेजा दाख़िल करेगा। और (बहुत ही) बुरा घाट है, जिस पर (यह लोग जा) उतरेंगे ० इस (दुनिया) में भी लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी। (बहुत ही) बुरा इनआम है, जो (इनको) दिया जायगा० (ऐ पैग़म्बर !) यह (चन्द) बस्तियों की ख़बरें हैं, जो हम तुमसे बयान करते हैं। इनमें से (बाज़ तो इस वक़्त तक) क़ायम हैं—

तुम्हारी (समस्त) करतूतों को (अपने ज्ञान की) सीमा में लिये हुए है। (वह तुमको ऐसा दण्ड देगा कि तुम भी याद रक्खोगे)॥

और (कहा) भाइयो ! (अगर अब भी तुम अपने कौतुकों से बाज़ नहीं आते और अल्लाह के अज़ाब से नहीं डरते, तो तुम जानो)। तुम अपने तरीक़े पर अमल करते रहो (और) मैं (अपने ढङ्ग पर) अमल करता हूँ। कुछ दिन में तुमको पता चल जायगा कि किस पर ऐसा अज़ाब उतरता है, जो उसे (सारी दुनिया में ज़लील व) बदनाम करदे। और (तुमको मालूम हो जायगा कि) झूठा कौन है, और (सच्चा कौन। उस समय का) तुम (भी) इन्तिज़ार करो और तुम्हारे साथ मैं भी प्रतीक्षा करता हूँ ॥

(अभिप्राय यह है कि शुऐब ने उनको बहुत समझाया, लेकिन वह लोग किसी तरह सच्चाई के मार्ग पर न आये)। और (उन्होंने अपने कुकर्मों को न छोड़ा। आख़िर) जब (उनके लिये) हमारे (अज़ाब की) आज्ञा जारी हो गई, तो हमने शुऐब और उनके ईमानदार साथियों को (तो) अपनी मेहर्बानी (व कृपा) से (इस अज़ाब से) मुक्त कर दिया। और जिन्होंने अवज्ञा (व उद्दण्डता और हमारे नबी के प्रति धृष्टता व निरादर) किया था, (एक अदृष्ट) कड़क ने उनको आ दबाया। तो वह (उसके सुनते ही अपनी) अपनी बस्तियों में औंधे मुंह पड़े रह गये। (और ऐसे नष्ट हुए कि यह मालूम होने लगा) मानो कि वह उन (बस्तियों) में (कभी) बसे ही न थे। (ऐ दुनिया वालो !) सुनो !! मदयन (के लोग) भी (ख़ुदा की शरण से) दूर कर दिये गये, जैसे समूद (जाति के लोग) दूर कर दिये गये थे ॥

और (इसी तरह) हमने मूसा को अपनी आयतें और (पैग़म्बरी के) स्पष्ट प्रमाण देकर फ़िर्औन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा. तो (उन्होंने भी भूत-पूर्व नबियों की तरह अल्लाह के एक होने की शिक्षा दी। और असत्य बातों की पूजा की बुराई की, लेकिन फ़िर्औन वालों ने उनकी एक न सुनी। और) वह फ़िर्औन ही के कहने पर चलते रहे। और फ़िर्औन की बात ठीक नहीं थी (वह पथ भ्रष्ट था) ॥

प्रलय के दिन वह अपनी जाति के (लोगों के) आगे आगे होगा। फिर उनको (नर्क की) आग में पहुँचा देगा। और (नर्क) जिसमें यह लोग उतारे जायँगे (बहुत ही) बुरा स्थान है ॥

और (उस से बढ़ कर यह कि) लानत (और फिटकार) इस दुनिया में भी उनके पीछे लगा दी गई और प्रलय के दिन में भी। (और यह) अत्यन्त ही निकृष्ट पुरस्कार है, जो (उनके कुकर्मों के बदले में) उनको दिया जावेगा ॥

(ऐ रसूल !) यह (उपरोक्त कथायें) जिनको हम तुमसे वर्णन कर रहे हैं (उजड़ी हुई) बस्तियों के कुछ वृतान्त हैं। इन (बस्तियों) में से कोई कोई (तो अब भी) क़ायम (और आबाद) हैं—

وَحَصِيدٌ ۝ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ
اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِىْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مِنْ شَىْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ
غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۝ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ
اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۝
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ
ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ
مَّشْهُوْدٌ ۝ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ۝
يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ
شَقِىٌّ وَّسَعِيْدٌ ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ
فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ
السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ
فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ

और (बाज़) उजड़ पुजड़ (गईं) ० और हमने इन लोगों पर (किसी तरह का) ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि इन्होंने (हमारी ना फ़र्मानी करके) अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया । तो (ऐ पैग़म्बर !) जब तुम्हारे पर्वर्दिगार का हुक्म (अज़ाब) आया, तो ख़ुदा के सिवा जिन माबूदों को वह लोग (वक़ पड़े पर) पुकारा करते थे, (अब) वह उनके कुछ भी काम न आए। बल्कि (उलटे) और इनकी तबाही के बाइस हुए (कि इनही की परस्तिश की वजह से इन पर अज़ाब नाज़िल हुआ)० और (ऐ पैग़म्बर !) जब बस्तियों के लोग सर्कशी करने लगते हैं और तुम्हारा पर्वर्दिगार उनको (अज़ाब में) पकड़ता है, तो उसकी पकड़ ऐसी ही हुआ करती है। बेशक उसकी पकड़ (बड़ी) दर्दनाक और बड़ी सख़्त है ० इन (वाक़िआत) में उस शख़्स के लिये जो अज़ाब आख़िरत से डरे, एक इब्रत है । रोज़ आख़िरत वह दिन होगा, जब कि (सब) लोग जमा किये जाएँगे । और रोज़ आख़िरत वह दिन होगा, जब कि (सब हमारे हुज़ूर में) हाज़िर किये जायँगे ० और हम सिर्फ़ मीआद चन्द रोज़ा के लिये उसको (किसी मस्लहत से) मुल्तवी किये हुए हैं ० जब वह दिन आ पहुँचेगा, तो (मारे ख़ौफ़ के) बे हुक्म ख़ुदा कोई शख़्स बात (तक भी तो) नहीं कर सकेगा । फिर(उस वक़ लोग दो क़िस्म के होंगे) बाज़ बदबख़्त और बाज़ नेक बख़्त० तो जो बद बख़्त हैं, वह दोज़ख़ में होंगे (और) वहां उनको चिल्लाना और दहाड़ना (लगा) होगा०(और) जब तक आस्मान व ज़मीन (क़ायम) हैं, हमेशा (हमेशा) उसी में रहेंगे, मगर (ऐ पैग़म्बर !) जिसको तुम्हारा पर्वर्दिगार (नजात देना) चाहे । बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार जो चाहता है, कर गुज़र्ता है० और जो लोग नेक बख़्त हैं, तो (वह) बहिश्त में होंगे—

और कुछ का (बिल्कुल) अन्त हो गया है ॥

और इन (बरबाद हुई बस्तियों के रहने वालों) पर हमने कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने (ख़ुद) अपनी जानों पर ज़ुल्म तोड़ा । (और ऐसे आचरण किये, जिनसे इनका यह परिणाम हुआ)। सो (ऐ रसूल !) जब तुम्हारे पालन कर्त्ता (के अज़ाब) की आज्ञा (इनके लिये) जारी हो गई, तो अल्लाह को छोड़ कर जिन (जिन) पूज्यों को यह (अपनी सहायता के लिये) पुकारा करते थे, (वह उस समय) उनके कुछ भी काम न आये । और (काम तो क्या आते) इनकी (तबाही व) बरबादी ही में (उन्होंने और) अधिकता करदी ॥

और (ऐ रसूल !) तुम्हारे पालन कर्त्ता की पकड़ तो ऐसी ही होती है । वह जब (कभी) भी बस्तियों (के रहने वालों) को (अपने क्रोध व अज़ाब में) उन्हें ज़ुल्म (व ज़्यादती) करने की हालत में पकड़ता है, (तो इसी तरह तबाह व बरबाद करके छोड़ता है । लेकिन इन्साफ़ के साथ और उनके दुराचरणों की सीमा पार हो जाने के उपरान्त) । निस्सन्देह उसकी पकड़ सख़्त (और) कष्ट प्रद होती है । (न कोई ख़ुद उसकी पकड़ से बच सकता है और न किसी और को बचा सकता है) ॥

निस्सन्देह इन (नष्ट हुई बस्तियों की घटनाओं) में—जो मनुष्य परलोक के अज़ाब से भय खाता है, उसके लिये (बड़ी नसीहत और) शिक्षा (का साधन मौजूद) है ॥

(प्रलय) वह दिन है, जिसमें कि (सारी दुनिया के) लोग एकत्रित किये जावेंगे । और (यह) वह दिन होगा (जिसमें) कि (सब) लोग (हमारे सामने) हाज़िर किये जावेंगे ॥

और (इसके आने में कुछ अधिक दिन नहीं हैं) । हम उसे केवल (एक) गिनी चुनी मुद्दत के लिये मुल्तवी कर रहे हैं ॥

जब वह दिन आ पहुँचेगा, तो (दोनों लोकों के सृष्टि कर्त्ता के भय से) कोई मनुष्य उसकी आज्ञा के बिना (एक दूसरे से) बात (भी) न कर सकेगा । (और वहां सारी दुनिया के लोग जमा होंगे) । अतः उनमें से कुछ अभागे होंगे और (कुछ) भाग्यवान ॥

तो जो लोग अभागे हैं, वह तो (नर्क की) आग में (पड़े जलते) होंगे। उनको उसमें (ऐसी व्याकुलता और तड़पन होगी कि उनका काम केवल) चीख़ना और पुकारना (ही) होगा । (और) जब तक आकाश व पृथ्वी (स्थित) हैं (वह) उसमें बराबर (जलते) रहेंगे । सिवाय उन लोगों के, जिन्हें तुम्हारा पालन कर्त्ता (उससे मुक्त करना) चाहे । निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता (पूर्ण अधिकारी है)। जो चाहता है, करता है । (उसके आगे किसी को चूं चरा की शक्ति नहीं) ॥

और जो लोग सौभाग्यवान हैं, वह स्वर्ग में (आराम करते) होंगे-

(और) जब तक आस्मान व ज़मीन (क़ायम) हैं, बराबर उसी में रहेंगे। मगर जिसको ख़ुदा चाहे (सज़ा देकर बदेर जन्नत में दाख़िल करे । यह जन्नत ख़ुदा की) देन है, जिसका कभी ख़ातिमा ही नहीं ० तो (ऐ पैग़म्बर !) यह (मुश्रिकीन) जो (बुतों की) परस्तिश करते हैं, उसके बारे में तुम किसी तरह के शुबह में न पड़ना । जैसी परस्तिश (बेसमझे बूझे इनसे) पहिले इनके बाप दादा करते आए हैं, वैसी ही परस्तिश (बे समझे बूझे) यह लोग भी करते हैं । और हम (क़यामत के दिन अज़ाब में से) इनका हिस्सा, इनको बेकम व कास्त पूरा पूरा पहुँचा देंगे ० और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी थी, तो लगे लोग उसमें इख़्तिलाफ़ करने । और (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम्हारा पर्वर्दिगार एक बात पहिले से न फ़र्मा चुका होता (कि क़यामत ही में क़तई फ़ैसला होगा) तो लोगों में (उनके इख़्तिलाफ़ात का कभी का) फ़ैसला कर दिया गया होता । और यह लोग (यानी कुफ़्फ़ार मक्का भी) क़ुर्आन की तरफ़ से ऐसे शक में (पड़े) हैं, जिसने (इनको) हैरान कर रक्खा है ० और तुम्हारा पर्वर्दिगार इन (सब) को इनके आमाल का बदला ज़रूर पूरा पूरा देकर रहेगा । क्योंकि जैसे जैसे अमल यह लोग कर रहे हैं, उसको (सब) ख़बर है ० तो (ऐ पैग़म्बर !) जैसा तुमको हुक्म दिया गया है, तुम और जो लोग (शिर्क व कुफ़्र से) तौबा करके तुम्हारे साथ (हो लिये) हैं, (वह सब दीन इस्लाम पर) क़ायम रहो और हद्द (एतिदाल) से न बढ़ो । बेशक जो कुछ भी तुम लोग करते हो, ख़ुदा देख रहा है ० और (मुसल्मानो !) जिन लोगों ने (हमारी) ना फ़र्मानी की, उनकी तरफ़ को न झुकना, वर्ना (दोज़ख़ की) आग तुमको आ लगेगी । और ख़ुदा के सिवा तुम्हारा कोई मददगार तो है नहीं, तो (ना फ़र्मानों की तरफ़ झुकने की सूरत में उसकी तरफ़ से भी) तुमको मदद नहीं मिलेगी० और (ऐ पैग़म्बर !) दिन के दोनों सिरे (यानी सुबह और शाम) और अवायल शब नमाज़ पढ़ा करो । क्योंकि—

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا
مَا شَآءَ رَبُّكَ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝ فَلَا تَكُ
فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا
كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ
غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
فَاخْتُلِفَ فِيْهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ
رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝
وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ اِنَّهٗ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ
تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝
وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝
وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ اِنَّ

الحسنٰت

(और) जब तक आकाश व पृथ्वी (क़ायम) हैं, वह बराबर उसी में (आराम करते) रहेंगे । सिवाय उसके, जिसे तुम्हारा पालन कर्त्ता (स्वर्ग में से निकाल कर अपनी मुख्य सेवा में दाख़िल करना) चाहे । (यह स्वर्ग अल्लाह का ऐसा) प्रसाद है (जिसके सुख व आनन्द का सिलसिला कभी) टूटने वाला नहीं ॥

(ऐ रसूल ! जब तुम्हें मालूम हो गया कि असत् की पूजा करने वालों और अभागों का परिणाम ऐसा बुरा होता है) और जिन पूज्यों की यह (अभागे) पूजा करते हैं, तुम उन (के असत्य होने) में किसी प्रकार का सन्देह न करना । (और इन अभागे मूर्ति पूजकों की भली चलाई-यह तो) जिस तरह कि इससे पहिले इनके बाप (दादा बिना प्रमाण) इन (बुतों) की पूजा करते थे, उसी तरह (बिना तर्क और बिना प्रमाण केवल ना समझी व मूर्खता से) यह (उनकी) पूजा करते हैं और हम निश्चित रूप से इनको इनका भाग बिना किसी कमी के पूरा पूरा देंगे । (अर्थात् इनको इनके सारे कुकर्मों का पूरा २ दंड दिया जावेगा) ॥

और (यह कि) हमने मूसा को किताब (तौरेत) दी थी । सो उसमें (भी क़ुर्आन की तरह) मत भेद किया । (और उसके मानने न मानने में झगड़ा डाला) गया था । (अतएव इन काफ़िरों की अवज्ञा व उद्दंडता को देख कर, ऐ रसूल ! तुमको शोक करने की ज़रूरत नहीं । क्योंकि यह तो उनकी उनके पूर्वजों के समय से आदत है) । और अगर तुम्हारे पालन कर्त्ता की यह बात (कि अज़ाब इन पर प्रलय में आवेगा) पहिले से निश्चित न हो गई होती, तो इन (अवज्ञा कारियों) में (इनके मत भेद और झगड़े फ़साद का) फ़ैसला (कभी का) कर दिया गया होता । और यह लोग उस (अज़ाब) की तरफ़ से (बार बार समझाने बुझाने पर भी) ऐसे सन्देह में (फँसे) हैं, कि जिसने (इनको) चिन्ता (और परेशानी) में डाल रक्खा है ॥

और तुम्हारा पालन कर्त्ता इन सब को इनके (बुरे) कर्मों का पूरा (पूरा) फल अवश्य २ देगा । क्योंकि वह उनकी (समस्त) करतूतों से (अच्छी तरह) अभिज्ञ है ॥

तो तुम (इनकी, और इनके विरोध की बिलकुल पर्वाह न करो । और) जैसा तुमको हुक्म दिया गया है, उन (लोगों) सहित जो तौबा करके तुम्हारे साथ (शरीक हो गये) हैं (धैर्य व सन्तोष से काम लो और सत्य धर्म पर स्थिर और) दृढ़ रहो । और (अवज्ञा व) उद्दंडता (की तरफ़ बिल्कुल ध्यान) न करो । निस्सन्देह, जो कुछ तुम कर रहे हो, वह (अल्लाह सब) देख रहा है ॥

और (ऐ ईमानदारो !) इन ज़ुल्म (व ज़्यादती और अवज्ञा व उद्दंडता) करने वालों की तरफ़ आकर्षित न हो-(कि कहीं) तुमको भी (नर्क की) आग (न) छू जाय । और (नर्क के अज़ाब से छुड़ाने के लिये) अल्लाह के सिवाय कोई सहायक तुम्हारे लिये न हो। फिर (अल्लाह की तरफ़ से भी) तुम्हारी सहायता न की जाय (और तुम नर्क में पड़े जला करो) ॥

और (ऐ मुहम्मद ! तुम इन लोगों को सुधारने के लिये उपासना करने व आज्ञाकारी बनने की शिक्षा दो । और स्वयं भी) दिन के दोनों सिरों (अर्थात सुबह व शाम) और रात के कुछ हिस्सों में (नियम पूर्वक) नमाज़ पढ़ा करो—

الحسنت يذهبن السيات ذلك ذكرى
للذكرين ۝ واصبر فان الله لا يضيع اجر
المحسنين ۝ فلولا كان من القرون من قبلكم
اولوا بقية ينهون عن الفساد في الارض
الا قليلا ممن انجينا منهم واتبع الذين ظلموا
ما اترفوا فيه وكانوا مجرمين ۝ وما كان
ربك ليهلك القرى بظلم واهلها مصلحون ۝
ولو شاء ربك لجعل الناس امة واحدة ولا
يزالون مختلفين ۝ الا من رحم ربك ولذلك
خلقهم وتمت كلمت ربك لاملئن
جهنم من الجنة والناس اجمعين ۝ وكلا
نقص عليك من انباء الرسل ما نثبت به
فؤادك وجاءك في هذه الحق وموعظة

नेकियां गुनाहों को दूर कर देती हैं। जो लोग ज़िक्र (इलाही) करने वाले हैं, उनके हक़ में यह (हमारा फ़र्माना एक तरह की) याद दिहानी है ० और (ऐ पैग़म्बर ! इबादत की तकलीफ़ को .ख़ुशी के साथ) बर्दाश्त करो, क्योंकि अल्लाह नेकोकारों के अज्र को ज़ाए नहीं होने दिया करता ० तो जो उम्मतें तुम लोगों से पहिले हो गुज़री हैं, उनमें (ख़ल्क़त की इतनी) ख़ैर ख़्वाही करने वाले भी क्यों न हुए कि (लोगों को) मुल्क में फ़साद करने से मना करते। (सो ऐसे लोग थे तो सही) मगर थोड़े। (और यह वही लोग थे) जिनको हमने (अज़ाब से) बचा लिया। और जिन लोगों ने ना फ़र्मानी की थी, वह तो उनही (दुनियावी लज़्ज़तों) के पीछे पड़े रहे, जो उनको दी गई थीं। और यह लोग कुछ थे ही बद किर्दार ० और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार ऐसा (बे इन्साफ़) नहीं है कि बस्तियों को नाहक़ हलाक कर मारे और वहाँ के लोग नेकोकार हों। और अगर तुम्हारा पर्वर्दिगार चाहता, तो लोगों को एक ही मत का कर देता, लेकिन लोग हमेशा (आपस में) इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे ० मगर जिस पर तुम्हारा पर्वर्दिगार फ़ज़्ल करे। और इसी लिये तो उनको पैदा किया है। और (इसी इख़्तिलाफ़ से तो) तुम्हारे पर्वर्दिगार का (वह) फ़र्मूदा पूरा होकर रहेगा कि हम (क्या) जिन्नात, और (क्या) बनी आदम, सबसे दोज़ख़ भर देंगे ० और (ऐ पैग़म्बर ! दूसरे) पैग़म्बरों के जितने क़िस्से हम तुमसे बयान करते हैं, उनके ज़रिये से हम तुम्हारे दिल की ढारस बंधाते हैं। और इन (क़िस्सों के ज़िक्र) में (एक तो जो) हक़ बात (थी, वह) तुम्हारे पास पहुँची और (इसके अलावा इनमें) मुसलमानों के लिये नसीहत–

(और जहाँ तक बन पड़े नेकियां करो। और लोगों को भी नेकियों ही का रास्ता बताओ)। निस्सन्देह नेकियां-बुराइयों को दूर करती हैं। (निस्सन्देह) यह (नसीहत) नसीहत ग्रहण करने वालों के लिये (एक उत्तम) शिक्षा है ॥

और (इन इन्कार करने वालों से जो दुख तुमको पहुँचे, उस पर) सन्तोष करो कि (यह सन्तोष भी एक बहुत बड़ी नेकी है। और) अल्लाह तआला नेकी करने वालों के फल को (कभी) अकार्थ नहीं करता ॥

(और पिछली जातियों पर जो अज़ाब उतरा) तो (उसका कारण यह था कि) जो जातियां तुमसे पहिले हो चुकी हैं, उनमें समझदार (और परिणाम पर दृष्टि रखने वाले) लोग (इतने भी) क्यों न हुए कि जो (कुफ़्र व अवज्ञा के) झगड़े को (.ख़ुदा की) ज़मीन में फैलाने से रोकते। (हुए तो) लेकिन इनमें थोड़े से, जिन्हें हमने (अपने अज़ाब से) मुक्ति दे दी (थी)। और (बाक़ी और लोग) जो ज़ालिम (व अवज्ञाकारी) थे, उसी मार्ग (पर) चले, जिसमें (उन्हें) सुख (का साधन) मिला और (असार संसार का थोड़ा सा सुख दिखाई दिया। इस कारण) वह लोग (सदैव के लिये) पापी (और दुर्गुणी) हो गये (और अज़ाब के योग्य हो गये) ॥

(अतएव उन पर अज़ाब आया) और तुम्हारा पालन कर्त्ता ऐसा नहीं है कि (बसी हुई) बस्तियों को (केवल एक) अत्याचार पूर्ण रूप से मार डाले (और नष्ट करदे)। वास्तव में उनके निवासी (पापी न हों, बल्कि) नेक हों। (जिन २ पर अज़ाब उतरा है, वह अज़ाब के योग्य ही होते थे) ॥

और (ऐ रसूल !) अगर तुम्हारा पालन कर्त्ता चाहता (कि सब नेक ही नेक बन जायँ) तो वह अवश्य (सारी दुनिया के) लोगों को (ईमानदार और) एक (संगठित) दल बना देता। (परन्तु उसने ऐसा करना अपनी युक्ति व बुद्धिमानी के विरुद्ध समझा)। और (अब) यह सदैव मत भेद (ही) करते रहेंगे। सिवाय उस (भाग्यवान) के, जिस पर तुम्हारा पालन कर्त्ता (अपनी दया व) कृपा करे (और जिसे विभिन्नता की आपत्ति में न डाले)। और (वास्तव में पूछो, तो) उसने पैदा ही उन्हें इसी (विभिन्नता के) लिये किया है। और (यह कि इस विभिन्नता के कारण) तुम्हारे पालन कर्त्ता का (यह) वचन पूरा उतरा, कि मैं जिन्नों और मनुष्यों-दोनों से नर्क भर के रहूँगा ॥

और (ऐ रसूल ! पिछले) पैग़म्बरों के जितने क़िस्से हम तुमको सुना रहे हैं, उनके द्वारा हम तुम्हारे दिल को मज़बूत करते हैं। (और जाति के दुर्गुण और अनादर व धृष्टता से, जो कुछ रंज तुमको पहुँचा है, उसे दूर करते हैं)। और (इसके अलावा इन क़िस्सों से एक फ़ायदा यह भी हुआ कि) इन (क़िस्सों) में (जो) सत्य बात (थी, वह) तुमको पहुँच गई। और (शेष इनमें शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये) उपदेश है –

وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ● وَقُل لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا
عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَامِلُونَ ● وَانتَظِرُوا إِنَّا مُنتَظِرُونَ
وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ
الْأَمْرُ كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ

سورة يوسف مائة احدى عشر آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الر تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ● إِنَّا أَنزَلْنَاهُ قُرْآنًا
عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ● نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ
أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَٰذَا الْقُرْآنَ
وَإِن كُنتَ مِن قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ● إِذْ قَالَ
يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ
كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ
قَالَ يَا بُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ

فَيَكِيدُوا

और याद दिहानी (भी है) ० और (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग ईमान नहीं लाते, उनसे कहदो कि तुम अपनी जगह अमल करो, हम (मुसलमान अपनी जगह) अमल करते हैं ० और तुम भी (ख़ुदा के हुक्म के) मुन्तज़िर रहो, हम (मुसल्मान) भी मुन्तज़िर हैं ० और आस्मान व ज़मीन में जो ग़ैब की बातें हैं, उनका इल्म अल्लाह ही को है। और हर एक काम (का दार व मदार) आख़िरकार उसी पर जाकर ठहरता है, तो (ऐ पैग़म्बर !) उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रक्खो। और जो कुछ तुम लोग कर रहे हो, (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार उससे ग़ाफ़िल नहीं०

सूरत यूसुफ़

मक्की यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें १११ आयतें और १२ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहरबान (है) ० अलिफ़ लाम रा ० यह (सूरत) किताब वाज़ेह (यानी क़ुर्आन) की चन्द आयतें हैं ० हमने इस क़ुर्आन को ज़बान अरबी में (इस लिये) उतारा है ताकि तुम (अरब के लोग मादरी ज़बान होने की वजह से इसको बख़ूबी) समझ सको (और तुम्हारे ज़रिये से दूसरे लोग समझें) ० (ऐ पैग़म्बर!) हम तुम्हारी तरफ़ वही के ज़रिये से यह सूरत भेज कर तुमको एक बेहतर से बेहतर क़िस्सा सुनाते हैं और तुम इस (सूरत के नाज़िल होने) से पहिले (इन बातों से) यक़ीनन बे ख़बर थे • एक वक़्त था कि यूसुफ़ ने अपने बाप (याक़ूब) से कहा कि अब्बा जान ! मैंने ग्यारह सितारों और सूरज और चाँद को (ख़्वाब में) देखा है, क्या देखता हूँ कि यह सब मुझ को सज्दा कर रहे हैं ० (याक़ूब ने) कहा बेटा ! कहीं अपने ख़्वाब को अपने भाइयों से न कह बैठना—

और ईमानदारों के वास्ते (एक तरह का) याद दिलाना है ॥

और (ऐ रसूल ! यह क़िस्से सुन कर भी यह लोग तुमको सच्चा नबी न स्वीकार करें, तो) तुम (इनसे एक अन्तिम बात) कह दो कि (लोगो !) तुम अपनी जगह अमल करो, हम (ईमानदार अपनी जगह) अमल करते हैं। और (रहा फ़ैसला, तो तुम इसका अलग) इन्तिज़ार करो, हम (ईमानदार भी उसी के) इन्तिज़ार में हैं॥

और (इसका विश्वास रक्खो कि अल्लाह से तुम्हारे अमल या हमारे अमल गुप्त नहीं रह सके। क्योंकि) आकाश व पृथ्वी की जो (जो) गुप्त बातें हैं (सब) अल्लाह (के ज्ञान) के लिये हैं। (अर्थात् उसे सबकी ख़बर है)। और हर एक काम (का फ़ैसला) उसी की तरफ़ लौटाया जाता है। तो तुम (ऐ रसूल ! इन लोगों के दुराचार की बिल्कुल पर्वाह न करो। और) उसी की उपासना (व आज्ञा पालन) करते रहो और उसी पर भरोसा रक्खो। और तुम्हारा पालन कर्त्ता तुम्हारे (शुभ) कर्मों से अचेत नहीं है॥

सूरत-यूसुफ

मक्की अर्थात मक्के में उतरी, इसमें १११ आयतें और १२ रुकूअ हैं॥

अलिफ़, लाम, रा – (ऐ अरब के निवासियो !) यह आयतें स्पष्ट पुस्तक (अर्थात् पवित्र क़ुर्आन) की हैं (जिसका विषय बिल्कुल स्पष्ट और अर्थ बिल्कुल साफ़ और सर्व साधारण की समझ में आने योग्य है)॥

हमने उसको (अर्थात्) क़ुर्आन को अरबी (भाषा) में (इस अभिप्राय से) उतारा है, जिस से कि तुम (अरब के निवासी इसके अर्थ को अच्छी तरह) समझ सको। (और इसकी सच्चाई और चमत्कार को मान कर समस्त संसार में इसके उपकारों का प्रचार करो)॥

(ऐ रसूल !) हम वही द्वारा इस क़ुर्आन को तुम्हारी तरफ़ भेज कर एक अत्योत्तम कथा तुमको सुनाते हैं । और (यह हमारी कृपा है कि हम तुमको ऐसी उत्तम कथा सुना रहे हैं। अन्यथा) इस से पहिले तो तुम (ऐसी शिक्षा प्रद कथाओं से) बिल्कुल (अपरिचित और) अचेत थे॥

(वह कथा यह है कि) जब यूसुफ़ ने अपने पैग़म्बर बाप (याक़ूब) से कहा कि ऐ बाप ! मैंने (रात को) ग्यारह तारों और चांद सूरज को (स्वप्न में) देखा है। (और) मैंने (इस तरह) उनको देखा (कि वह सब) मुझको शिर नवा रहे हैं॥

(याक़ूब) बोले – प्यारे बेटे ! (तुम्हारा स्वप्न बहुत अच्छा है। लेकिन अभी) तुम अपने स्वप्न का ज़िक्र अपने भाइयों से न करना—

فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ
عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ
وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ
عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ
مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ۝ لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ
اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ
اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا
لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۝ اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ
اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْ
بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا
تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ
يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝ قَالُوْا

कि (वह सुन पाएँगे, तो) तुझको (किसी न किसी आफ़त में) फँसाने की तदबीरें करने लगेंगे। इसमें शक नहीं कि शैतान आदमी का खुला दुश्मन है (वह उनको बे बहकाए नहीं रहेगा) ० और (जैसा तूने ख़्वाब में देखा है) ऐसा ही (होगा कि) तेरा पर्वर्दिगार तुझको (मेरी नस्ल में) बर्गुज़ीदा करेगा और तुझको (ख़्वाब की) बातों की ताबीर सिखाएगा। और जिस तरह ख़ुदा ने अपनी नेअ़मत पहिले तेरे दादा पर दादा इस्हाक़ और इब्राहीम पर पूरी की थी, इसी तरह तुझ पर और याक़ूब की (यानी मेरी) नस्ल पर पूरी करेगा। अलबत्ता तेरा पर्वर्दिगार (सबके हाल से) वाक़िफ़ (और) हिकमत वाला है ० (ऐ पैग़म्बर ! यहूद) जो (तुमसे इम्तिहानन बनी इस्राईल के मिस्र में आबाद होने की वजह) दर्याफ़्त करते हैं, उनके लिये यूसुफ़ और उनके भाइयों (के हालात) में (ख़ुदा की क़ुद्रत की) अलबत्ता (बहुत सी) निशानियाँ हैं ० कि जब यूसुफ़ के (बेमात) भाइयों ने (आपस में) कहा कि बा वजूदे कि हम (हक़ीक़ी) भाइयों की बड़ी जमाअ़त है, ताहम यूसुफ़ और उसका (हक़ीक़ी) भाई (बिन यामीन) हमारे वालिद को हमसे अलबत्ता बहुत ही ज़ियादा अ़ज़ीज़ हैं। कुछ शक नहीं कि वालिद साहब सरीह ग़लती में हैं ० (तो या तो) यूसुफ़ को मार डालो या उसको किसी जगह (जाकर) फेंक आओ, तो वालिद साहब का रुख़ सिर्फ़ तुम्हारी ही तरफ़ रहेगा और उसके बाद से तुम लोगों के (सब) काम ठीक हो जाएँगे ० उनमें से एक कहने वाला बोल उठा कि यूसुफ़ को जान से तो न मारो। हाँ तुमको (ऐसा ही) करना है, तो उसको (लेजाकर किसी) अन्धे कुवें में डाल दो कि कोई राह चलता क़ाफ़िला उसको निकाल लेगा ० (तब सबने मिल कर याक़ूब से) कहा—

कि वह (सुन लेंगे, तो बिना प्रयोजन तुम्हारे साथ बैर बाँध लेंगे। और) तुम्हें (हानि पहुँचाने के) लिये कोई उपाय निकालेंगे। (और) शैतान तो मनुष्य (जाति) का खुला शत्रु है ही। (वह उन्हें ईर्षा व द्वेष की शिक्षा दिये बिना रहेगा नहीं) ॥

और (कहा कि जैसा तुमने स्वप्न में देखा है) उसी तरह तुम्हारा पालन कर्त्ता तुमको (आदर व सम्मान के लिये) चुनेगा। और (आदर के साथ २ विद्या व बुद्धि से भी निहाल करेगा। विशेषतया लोगों के स्वप्नों की) ताबीर देना (अर्थात् उसके अर्थ बताना) तुमको सिखायेगा। और (इसी तरह) तुम पर और याक़ूब की सन्तान पर (भी) अपनी नेअ़मत (और कृपा) पूरी करेगा। जैसी कि उसने (तुमसे) पहिले तुम्हारे बाप दादा इब्राहीम व इस्हाक़ पर (अपनी) नेअ़मत को पूरा किया था (कि इब्राहीम को अपना मित्र बनाकर उनके लिये नमरूदी आग को फुलवारी बना दिया था। और इस्हाक़ को नुबूवत की सम्पत्ति देकर याक़ूब जैसा माननीय बेटा प्रदान किया था)। निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता बड़ा विद्वान व बुद्धिमान है (कि प्रत्येक मनुष्य पर उसके पद और उसकी दशा के अनुसार अपनी कृपा किया करता और पुरस्कार किया करता है) ॥

(ऐ रसूल !) यूसुफ़ और उनके (सौतेले *) भाइयों (के क़िस्से) में (उनका वृतान्त) पूछने वालों के लिये (अल्लाह की क़ुद्रत और तुम्हारी सच्चाई की बहुत सी) निशानियाँ (पाई जाती) हैं। (अतएव यहूदी, जो इस क़िस्से को दरयाफ़्त कर रहे हैं—यदि ध्यान पूर्वक देखेंगे, तो उन्हें इसमें शिक्षा व उपदेश के अनगिनत ख़ज़ाने दिखाई देंगे) ॥

* टीका—यूसुफ़ के दस सौतेले भाई थे और एक सगा भाई था: —हसन निज़ामी ॥

(अब ज़िक्र के क़ाबिल वह वक़्त है) जब कि (उनके सौतेले भाइयों ने आपस में) कहा कि यूसुफ़ और उसका भाई (बिन यामीन) हमारे बाप को हमसे ज़्यादा प्यारा है। यद्यपि हम (उन दोनों के मुक़ाबले में पूरे एक समूह के) समूह हैं। (और अपने बाप के बड़े पुश्त पनाह और सेवक बन सके हैं)। निस्सन्देह हमारे बाप (एक) स्पष्ट भूल में (लिप्त) हैं (जो हमारी तरफ़ ध्यान देने में कमी करते हैं। तो) भाइयो ! (बिन यामीन को तो छोड़ो, अभी उसकी योग्यता ही क्या है। लेकिन) यूसुफ़ को (या तो) जान से मार डालो, या किसी जगह (जङ्गल आदि में जाकर) डाल आओ, जिससे कि तुम्हारे बाप का ध्यान अकेला तुम्हारे लिये ही रह जाय। और तुम इस (कांटे) के (निकल जाने के) बाद नेक (और अच्छे ख़ासे) लोग बन जाओ ॥

(यह सुन कर) उन (ही) में से कोई बोलने वाला बोल उठा कि (भाइयो !) अगर तुमको (कुछ) करना है, तो यूसुफ़ को क़त्ल तो न करो। (बल्कि यह करो कि बाप से कोई बहाना करके उसे यहाँ से निकाल ले चलो)। और (किसी ऐसे) अंधेरे कुवें में (ले जाकर) उसे डाल दो (जिसमें पानी की कमी के कारण यूसुफ़ के डूबने की शंका न हो)। जिससे कि कोई (भूला भटका) क़ाफ़िला (उधर आ निकले, तो) उसे (कहीं का कहीं) उठा ले जाय (और हम बे खटके हो जायँ) ॥

(यह तजवीज़ सर्व सम्मति से पास हो गई और प्रस्तावानुसार सब एकत्रित होकर याक़ूब के पास गये। और) कहा कि—

يَٰٓأَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُۥ لَنَٰصِحُونَ ۝
أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ۝
قَالَ إِنِّى لَيَحْزُنُنِىٓ أَن تَذْهَبُوا۟ بِهِۦ وَأَخَافُ أَن
يَأْكُلَهُ ٱلذِّئْبُ وَأَنتُمْ عَنْهُ غَٰفِلُونَ ۝ قَالُوا۟ لَئِنْ
أَكَلَهُ ٱلذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّآ إِذًا لَّخَٰسِرُونَ ۝
فَلَمَّا ذَهَبُوا۟ بِهِۦ وَأَجْمَعُوٓا۟ أَن يَجْعَلُوهُ فِى
غَيَٰبَتِ ٱلْجُبِّ وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُم بِأَمْرِهِمْ
هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَجَآءُوٓ أَبَاهُمْ عِشَآءً
يَبْكُونَ ۝ قَالُوا۟ يَٰٓأَبَانَآ إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ
وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِندَ مَتَٰعِنَا فَأَكَلَهُ ٱلذِّئْبُ
وَمَآ أَنتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَٰدِقِينَ ۝ وَجَآءُو
عَلَىٰ قَمِيصِهِۦ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنفُسُكُمْ
أَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَٱللَّهُ ٱلْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝

कि अब्बा जान ! इसकी क्या वजह है कि आप यूसुफ़ के बारे में हमारा एतिबार नहीं करते। हालाँकि हम तो उसके (दिली) ख़ैर ख़्वाह हैं० (तो) इसको कल हमारे साथ भेज दीजिये कि (जंगल की फल फलारी) खाए और (ज़रा) खेले (कूदे)। और हम इसकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार हैं० (याक़ूब ने) कहा कि तुम्हारा इसको ले जाना तो मुझ पर शाक़ गुज़र्ता है और मैं इस बात से भी डरता हूँ कि (ऐसा न हो) कहीं तुम इससे ग़ाफ़िल हो जाओ और उसको भेड़िया खा जाय ० वह कहने लगे कि अगर इसको भेड़िया खा जाय और हम इतने सारे हैं, तो इस सूरत में हम (निरे) निकम्मे ही ठहरे० आख़िरकार जब यह लोग (याक़ूब की इजाज़त से) यूसुफ़ को अपने साथ ले गये और सबने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि इसको किसी अन्धे कुवें में डाल दें (तो जैसा ठहराया था, वैसा ही किया)। और (उसी वक़्त) हमने यूसुफ़ की तरफ़ वही भेजी कि (तंग दिल न होना, एक दिन आएगा कि) तुम इनको इनकी इस बद सुलूकी से मुतनब्बेह करोगे और वह तुमको जानें (पहिचानें) गे भी नहीं ० ग़रज़ यह लोग (यूसुफ़ को कुवें में गिरा) कुछ रात गए रोते (पीटते) बाप पास आए ० (और) लगे कहने कि अब्बा जान ! हम तो जाकर (एक तरह की) कबड्डी खेलने लगे और यूसुफ़ को हमने अपने अस्बाव पास छोड़ दिया। इतने में भेड़िया (आकर) उसको खा गया। और गो हम सच ही (क्यों न) कहते हों, ताहम आपको तो हमारी बात का यक़ीन आने का नहीं ० और यूसुफ़ के कुरते पर झूठ मूठ का ख़ून (भी लगा) लाए। (याक़ूब ने इनका बयान सुन कर और ख़ून आलूद कुरता देख कर) कहा (कि यूसुफ़ को भेड़िये ने तो नहीं खाया) बल्कि तुमने अपने (सुर्ख़ रू बनने के) लिये अपने दिल से एक बात बना ली है। ख़ैर सब्र व शुक्र, और जो हाल तुम बयान करते हो, ख़ुदा ही मदद करे (कि उसका पर्दा फ़ाश हो) ०–

ऐ हमारे बाप ! तुझे क्या हो गया, जो तू यूसुफ़ के मामले में हमारा विश्वास नहीं करता। यद्यपि हम तो (जी जान से उसकी) भलाई चाहने वाले (और उसके भाई) हैं ॥

(ऐ बाप ! तुम हमारा विश्वास करो और) कल उसको हमारे साथ (जंगल में, जहाँ हम बकरियाँ चराने जाते हैं) भेज दो। जिससे कि (वहाँ के फल फूल ख़ूब) खाये (पिये) और (हरियाली जगह में ख़ूब) खेले (कूदे)। और (इसका विश्वास रक्खो कि उसे कोई दुःख नहीं पहुँचेगा, क्योंकि) हम उसकी रक्षा करने वाले (और संरक्षक मौजूद) हैं ॥

(याक़ूब) बोले कि (प्रथम तो) मुझे इस (बात) से रंज पहुँचता है कि तुम उसको (मेरे पास से) ले जाओ। और (दूसरे यह कि जंगल का मामला है) मुझे डर लगता है कि कोई भेड़िया उसको (न) खा जाय। और तुम (अपने खेल कूद में ऐसे लगो कि) उस (की तरफ़) से (बिल्कुल) ग़ाफ़िल हो जाओ ॥

वह बोले (ऐ बाप ! भला ऐसा कहीं हो सकता है। भला) अगर इसको भेड़िया खाले और हम (सब भाई, जो पूरे एक समूह के) समूह हैं (वहाँ मौजूद रहें और एक भेड़िये को न मार सकें) तो (फिर) हम (किस काम के हैं)। तो (फिर बिल्कुल ही) गये गुज़रे हो गये ॥

अभिप्राय यह कि जब (कह सुन कर उन्होंने याक़ूब से आज्ञा ले ली। और वह) यूसुफ़ को (जंगल की तरफ़) लेकर चले और इस बात पर सहमत हो गये कि उनको अँधेरे कुवें में डाल दें। और (पूर्व निश्चित के अनुसार अँधेरे कुवें में यूसुफ़ को डाल दिया गया, तो उसी समय) हमने (यूसुफ़ की तसल्ली और हार्दिक सन्तोष के लिये) उनको तरफ़ वही भेजी (कि उनकी शत्रुता तुम्हारे लिये कल्याण व भलाई, उन्नति व आनन्द का कारण होगी। और एक समय आवेगा कि) तुम उनको उनकी इस कार्रवाई को जताओगे। और (ऐसी दशा में कि तुम उस समय एक बड़े पद पर होगे। और) वह (तुमको) पहिचान (भी) न सकेंगे ॥ (संक्षिप्त यह कि) इन भाइयों ने यसुफ़ को कुवें में डाला और फिर रात को इशा के वक़्त (एक पहर रात्रि गये) रोते हुये अपने बाप के पास आये ॥ (और) कहने लगे ऐ बाप ! हम तो (यहाँ से जाकर आपस में) दौड़ में लग गये थे। और यूसुफ़ को हमने अपने असबाब के पास बिठा दिया था। (थोड़ी सी देर के बाद हमने यूसुफ़ को देखा) तो (मालूम हुआ कि) उसको तो भेड़िया खा गया। और (हम जानते हैं कि ऐ बाप !) तुम हमारा विश्वास (हरगिज़ हरगिज़) न करोगे। चाहे हम (कितने ही) सच्चे हों (क्योंकि तुम्हें हमारी ओर से पहिले ही सन्देह था) ॥

और यह (लोग जंगल से) यूसुफ़ के कुरते * पर झूठ मूठ का ख़ून लगा कर (अपने साथ) लाये थे (जो उन्होंने उस समय अपने बाप को दिखाया)। वह (उनकी मक्कारी की बातें सुन कर और ख़ून में लिथड़ा हुआ कुर्ता, जो बिल्कुल साबित था, देख कर) बोले कि (तुम बिल्कुल झूठ कहते हो। यूसुफ़ को हरगिज़ किसी भेड़िये ने नहीं खाया) बल्कि (तुमने उसके साथ कोई दुर्व्यवहार किया है। और अपने ऊपर से दोष दूर करने के लिये) तुमने अपने दिल से एक बात घड़ ली है। ख़ैर, (मुझसे जो भूल होनी थी, वह हो चुकी। अब) तो धैर्य ही ठीक है और तुम (अब) जो कुछ बातें बना रहे हो (मैं) इस पर (तुमको क्या कहूँ। अपने) अल्लाह (से मदद चाहता हूँ। वह मेरा) सहायक है। (वह मेरी दशा पर ज़रूर दया करेगा और वही तुम्हारे छल के जाल से मेरे यूसुफ़ को मुक्त करेगा) ॥

* टीका – यूसुफ़ को कुवें में डालते समय इन लोगों ने उनका कुर्ता उतार लिया था और हिरन या बकरी के ख़ून में उसे लथेड़ कर अपने साथ लाये थे :—हसन निज़ामी ॥

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَهُ
قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً وَاللّٰهُ
عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ
مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزّٰهِدِينَ ۝
وَقَالَ الَّذِي اشْتَرٰىهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي
مَثْوٰىهُ عَسٰى أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَكَذٰلِكَ
مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ
تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰى أَمْرِهِ وَلٰكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنٰهُ
حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝
وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَ
غَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ
مَعَاذَ اللّٰهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ

ع

और (इत्तिफ़ाक़ से) एक क़ाफ़िला (उस जगह) आ वारिद हुआ। और उन्होंने अपने सक़्क़े को (पानी लाने के लिये) भेजा। ज्यूं ही उसने अपना डोल लटकाया (यूसुफ़ उसमें हो बैठे। निकाला तो) पुकार उठा आहा! यह तो लड़का है। और क़ाफ़िले वालों ने यूसुफ़ को माल तिजारत क़रार देकर छुपा रक्खा। और (इन लोगों ने तो जाना कि किसी को ख़बर नहीं, मगर यूसुफ़ के इख़्फ़ाए हाल की) जो तदबीरें (यह लोग) कर रहे थे, अल्लाह को ख़ूब मालूम थीं ० (इतने में तो भाइयों को यूसुफ़ की ख़बर लगी और उन्होंने उसको अपना ग़ुलाम बनाकर बेचा)। और क़ाफ़िले वालों ने कम दामों (यानी) चन्द दिर्हम के एवज़ में उसको ख़रीद लिया और वह यूसुफ़ की ख़रीदारी पर (तहे दिल से) राग़िब भी न थे ० और (आख़िरकार) मिस्र (के लोगों में से (अज़ीज़ मिस्र) जिसने यूसुफ़ को (क़ाफ़िले वालों से) मोल लिया--उसने अपनी औरत (ज़ुलेख़ा) से कहा कि इसको अच्छी तरह रक्खो। अजब नहीं (अपनी ख़िदमत से) हम को फ़ायदा पहुँचाए या (शायद) इसको हम (अपना) बेटा ही बनालें। और यूं हमने यूसुफ़ को मुल्क (मिस्र) में जगह दी और (असली) मक़सूद यह था कि हम इनको (ख़्वाब की) बातों की ताबीर देनी सिखाएँ। और अल्लाह अपने इरादे (के नाफ़िज़ करने) पर क़ादिर है, मगर अक्सर लोग (इस राज़ को) नहीं जानते ० और जब यूसुफ़ अपनी जवानी को पहुँचे, हमने उनको दानाई अता फ़र्माई और (नीज़ फ़ज़ीलत) इल्म। और हम नेकोकारों को इसी तरह (उनकी नेकी का) बदला दिया करते हैं ० और (ज़ुलेख़ा) जिसके घर में यूसुफ़ थे, उसने उनसे अपना (ना जायज़) मतलब हासिल करना चाहा और दरवाज़े बन्द कर दिये और कहा कि लो आओ। (यूसुफ़ ने) कहा मआज़ल्लाह! वह (तुम्हारा शौहर) मेरा आक़ा है। उसने मुझको अच्छी तरह रक्खा है। (मैं उसकी अमानत में ख़ियानत नहीं कर सकता)। क्योंकि–

और (यह लोग जब यूसुफ़ को कुवें में डाल कर चले गये, तो उसके तीन दिन बाद व्योपारियों का) एक दल (संयोग वश उधर) आ निकला (और उसने उसी कुवें के समीप अपना पड़ाव किया। इन व्योपारियों को पानी की आवश्यकता हुई) तो उन्होंने अपने सक्क़े को (पानी लेने) भेजा। (वह कुवें पर पहुँचा) तो उसने डोल (कुवें में) डाल दिया। (डोल देख कर यूसुफ़ उसमें बैठ गये। उसने जब डोल खींचा और पानी के बजाय उसे यूसुफ़ जैसा चांद सा लड़का नज़र आया, तो सहसा) बोल उठा आहा! यह (तो बड़ा प्यारा) लड़का (कुवें में से निकला) है। (उसकी आवाज़ सुन कर समस्त दल वाले उधर आ गये)। और उन्होंने यूसुफ़ को (एक अमूल्य) पूंजी (और बेचने और लाभ प्राप्त करने की वस्तु) जान कर छिपा लिया। और अल्लाह तआला इन (सब) की कार्रवाइयों को जानता था॥

(यूसुफ़ के सोतेले भाइयों को जब मालूम हुआ कि व्योपारी दल ने यूसुफ़ को कुवें से निकाल लिया, तो व्योपारियों से कहा कि यह हमारा भागा हुआ ग़ुलाम है)। और (यह कह कर) उन्हें एक अनुचित मूल्य अर्थात् गिनती के (१८) दिरम में बेच डाला। और वह उसकी ना क़द्री करने वालों में से थे। (और हृदय से चाहते थे कि यूसुफ़ को इस कुवें में से कोई निकाल कर किसी दूर स्थान पर ले जाय, ताकि वह सदैव के लिये याक़ूब से बिछुड़ जायं)॥

(संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि व्योपारी यूसुफ़ को ख़रीद कर मिस्र में ले आये और मिस्र के रईस के हाथ उन्हें बेच डाला)। और मिस्र (के लोगों) में से, जिसने उन्हें ख़रीदा था, उसने (अपने घर लेजाकर) अपनी स्त्री से कहा कि (देखो! मैंने इस सुन्दर लड़के को ख़रीद लिया है)। तुम इसको इज़्ज़त (व आदर) से रखना। सम्भव है कि यह (बड़ा होकर) हमको (कुछ) लाभ पहुँचाये या (होनहार निकले, तो) हम इसको (अपना) बेटा बनालें। और इस तरह हमने (मिस्र की) ज़मीन में यूसुफ़ को (रहन सहन के लिये) स्थान प्रदान किया। और (उन्हें वहां इस लिये लाये) जिससे कि (रईसों और राज्य के कर्मचारियों की सङ्गत में रह कर हर प्रकार का ज्ञान प्राप्त करें। और) हम उन्हें (स्वप्न की) बातों का अर्थ (बताना) सिखायें। और अल्लाह तआला अपने काम पर (पूरी पूरी तरह) विजयी (और अधिकारी) है, लेकिन अक्सर लोग (इस बात को) जानते नहीं॥

और जब यूसुफ़ युवा हो गये, तो हमने उनको बुद्धिमानी व ज्ञान से गौरवान्वित किया। और (जिस तरह) हम (ने यूसुफ़ पर अपनी मेहरबानी की) उसी तरह (हम समस्त) नेक (मनुष्यों) को (उनकी नेकी का) बदला देते (और उन पर मेहरबानी करते) हैं॥

(मिस्र के रईस की स्त्री ज़ुलेख़ा) जिसके घर यूसुफ़ (रहते) थे, उसने (जब उनको भरपूर यौवन में देखा, तो मोहित हो गई। और उसने) उनसे अपनी (इन्द्रिय विषयक) वासना पूर्ण करनी चाही। और (घर के) दरवाज़े बन्द कर दिये (जिससे कि कोई आ जा न सके)। और कहने लगी (यूसुफ़! मेरी तरफ़) जल्दी (ध्यान) कर! वह (इसका बुरा इरादा देख कर घबरा गये। और) कहने लगे अल्लाह की शरण! (हे स्त्री! तू मुझसे ऐसी अनुचित कार्य की आशा करती है। यद्यपि तू जिसकी स्त्री है) वह मेरा स्वामी है। उसने मुझे (तकलीफ़ से छुड़ाया और) अच्छी (तरह सुख चैन से अपने घर में) रक्खा। (और पाल पोस कर जवान किया, तो क्या मैं उसके उपकारों का यह बदला दूं कि उसके साथ विश्वास घात करूं? यह मुझसे कदापि कदापि न हो सकेगा)। निस्सन्देह (यह बहुत बड़े ज़ुल्म की बात है। ऐसे) ज़ुल्म करने वाले (कभी) कल्याण प्राप्त नहीं करते॥

ظٰلِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ
اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ
السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ۝
وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ
وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ
اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝ قَالَ هِىَ رَاوَدَتْنِىْ عَنْ نَّفْسِىْ وَشَهِدَ
شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ
مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَاِنْ
كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ
اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ۝ يُوْسُفُ
اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِىْ لِذَنْۢبِكِ ۚ اِنَّكِ كُنْتِ

ع

(ऐसे) नमक हरामों को कभी फ़लाह नहीं हो सकती ० और वह (औरत) तो यूसुफ़ के साथ इरादा (बद) कर ही चुकी थी और यूसुफ़ को अपने पर्वर्दिगार की (तरफ़ की) दलील (कि वह मेरा आक़ा है, उस वक़) न सूझ गई होती, तो वह भी उस (औरत) के साथ इरादा (बद) कर बैठे होते। इसी तरह (हमने यूसुफ़ को साबित क़दम रक्खा) ताकि बदकारी और बेहयाई (के काम) उनसे दूर रक्खें। कुछ शक नहीं कि वह हमारे बरगुज़ीदा बन्दों में से थे ० और दोनों भागा भाग दर्वाज़े पर पहुँचे और औरत ने (भागते को पकड़ना चाहा, तो) पीछे से यूसुफ़ का कुरता फाड़ दिया। और दोनों ने औरत के ख़ाविन्द को दर्वाज़े के पास (खड़ा) पाया। .वह शौहर से पेश बन्दी के तौर पर) बोली, कि जो शख़्स तेरी बीबी के साथ बदकारी का इरादा करे, बस उसकी यही सज़ा है कि (या तो उसको) क़ैद कर दिया जाय, या (कोई और) दर्दनाक सज़ा दी जाय ० (यूसुफ़ ने) कहा कि यह (औरत .खुद) मुझसे मेरी तालिब हुई थी। और इस (औरत) के कुनबे वालों में से गवाह (के तौर पर एक शख़्स) ने यह बात बताई कि यूसुफ़ का कुरता (देखा जाय)। अगर आगे से फटा है, तो औरत सच्ची और यूसुफ़ झूठा ० और अगर उसका कुरता पीछे से फटा है, तो औरत झूठी और यूसुफ़ सच्चा ० तो जब (औरत के शौहर ने) यूसुफ़ के कुरते को पीछे से फटा हुआ देखा, तो उसने (अपनी बीबी से) कहा कि यह (भी) तुम औरतों के चरित्र हैं। कुछ शक नहीं कि तुम औरतों के चरित्र बड़े (ग़ज़ब के होते) हैं ० (और यूसुफ़ की तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा कि) यूसुफ़ ! इस (बात) को जाने दो। और (ऐ औरत !) तू अपने .कुसूर की माफ़ी माँग, क्योंकि—

और इस (औरत) ने यूसुफ़ के साथ (व्यभिचार का पक्का) इरादा किया (था)। और वह भी उसके साथ (वैसा ही) इरादा कर गुज़रते, अगर उन्हें अपने पालन कर्त्ता का प्रमाण (जिससे कि व्यभिचार का धर्म विरुद्ध तथा अनुचित होना सिद्ध होता था) न दिखाया गया होता। इसी तरह (हमने उनको नेक हिदायत दी)। जिससे कि इन (के पल्ले) से इस बुराई और निर्लज्जता (के धब्बे) को दूर रक्खें। क्योंकि वह हमारे मुख्य बन्दों में से थे (और हमारी उन पर ख़ास कृपा थी)॥

(तात्पर्य यह कि जब वह स्त्री किसी तरह अपने हठ से बाज़ न आई, तो यूसुफ़ उससे जान बचाकर भागे। वह भी उनके पीछे २ चली)। और दोनों आगे पीछे दौड़ते २ दरवाज़े पर जा पहुँचे और इस (स्त्री) ने पीछे से उनका कुर्ता (पकड़ कर इस तरह खींचा कि उसे) फाड़ डाला। और दोनों ने दरवाज़े पर स्त्री के पति को (खड़ा हुआ) पाया। (इस स्त्री ने जब अपने पति को देखा, तो अपने ऊपर से व्यभिचार के दोष को दूर करने और यूसुफ़ को इसमें फँसाने के लिये उस से) कहने लगी कि जो मनुष्य तुम्हारी स्त्री के साथ व्यभिचार (करने) का इरादा करे, उसकी यही सज़ा है कि (या तो) उसे जेल में डाल दिया जाय या (और) कोई दारुण दुख (उसे) दिया जाय॥

(उसी समय यूसुफ़) बोले कि (यह स्त्री बिल्कुल उल्टी बात कह रही है)। उसी ने मुझसे अपनी (अनुचित) इच्छा पूरी करनी चाही थी। और (अल्लाह की शक्ति ने यूसुफ़ के ऊपर से इस स्त्री के लगाये दोष को दूर करने के लिये) उसी के कुटुम्ब के एक(दूध पीते बच्चे को) गवाह (बनाया। और उसे वार्तालाप करने की शक्ति प्रदान की। उस) ने गवाही दी (और एक न्याय संगत बात बताई, कि यूसुफ़ का कुर्ता देखो)। अगर उनका कुर्ता आगे से फटा हुआ है, तो वह (औरत) सच्ची है और यूसुफ़ झूठे हैं। और अगर उनका कुर्ता पीछे से फटा हुआ है, तो वह झूठी है और यूसुफ़ सच्चे हैं॥

अतएव जब (मिस्र के रईस ने) उनके कुरते को देखा कि वह पीछे से फटा हुआ है, तो वह (बेधड़क) बोल उठा कि यह तुम स्त्रियों के छल हैं। निस्सन्देह तुम स्त्रियों के छल बड़े (ज़बरदस्त होते) हैं॥

यूसुफ़ ! तुम इस (बात) को जाने दो, और ऐ औरत ! तू अपनी ग़लती की(यूसुफ़ से) माफ़ी माँग। निस्सन्देह (सरासर) तू ही–

مِنَ الْخَاطِئِينَ ۝ وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ
امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ
قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝
فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ
وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ
مِنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا
رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ
حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ
كَرِيمٌ ۝ قَالَتْ فَذَٰلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ
وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِنْ
لَمْ يَفْعَلْ مَا آمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِنَ الصَّاغِرِينَ ۝
قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ
وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ

सरासर तेरी ही ख़ता थी ० और शहर में औरतों ने चर्चा किया कि अज़ीज़ (मिस्र) की औरत अपने ग़ुलाम से मतलब (ना जायज़) हासिल करने के दर पै है। ग़ुलाम का इश्क़ उसके दिल में जगह पकड़ गया है। हमारे नज़दीक तो वह सरीह ग़लती में है ० तो जब (अज़ीज़ मिस्र की) औरत ने उन (औरतों) के ताने मेने सुने, उनको (अपने यहां) बुलवा भेजा और उनके लिये एक महफ़िल की तय्यारी की। और (फल तराश तराश कर खाने के लिये) एक एक छुरी उनमें से हर एक के हवाले की। और (ऐन वक़् पर यूसुफ़ से) कहा कि इनके सामने बाहर आओ (और ज़रा अपनी शक्ल तो दिखाओ)। फिर जब औरतों ने यूसुफ़ को देखा, तो उन पर यूसुफ़ (के हुस्न व जमाल) की ऐसी धाक बैठी कि उन्होंने (बे ख़ुद होकर फलों को काटते काटते) अपने हाथ काट लिये। और लगीं कहने हाशा लिल्लाहि यह बशर तो नहीं, हो न हो यह एक मोअज़्ज़ज़ फ़रिश्ता है ० (अज़ीज़ मिस्र की औरत) बोली कि बस यही तो है, जिस के बारे में तुम मुझको मलामत किया करती थीं। और बेशक मैंने इससे मतलब (ना जायज़) हासिल करना चाहा, मगर यह बचा रहा। और जिस (काम के करने) को मैं इससे कह रही हूँ, अगर उसको नहीं करेगा, तो ज़रूर क़ैद किया जायगा और ज़रूर ज़लील (भी) होगा ० (यह सुन कर) यूसुफ़ ने (उसी वक़्) दुआ की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! जिस (हरकत ना शायस्ता) की तरफ़ (यह औरतें) मुझको बुला रही हैं, क़ैद (में) रहना मुझको उससे कहीं ज़ियादा पसन्द है। और अगर इनके चरित्रों को तू ने मुझसे दफ़े न किया, तो मैं इनकी तरफ़ माइल-

---

ख़तावार है ॥

और (यह घटना इतनी प्रसिद्ध हुई कि सारे) शहर में स्त्रियां (आपस में एक दूसरे से) कहने लगीं कि अज़ीज़ (अर्थात मिस्र के रईस) की पत्नी (ज़ुलेख़ा) ने अपनी (अनुचित) इच्छा अपने (एक) ग़ुलाम से पूरी करनी चाही। उसका प्रेम उसके दिल में (ऐसा) समा गया (कि उसने यह भी न सोचा कि जिससे मैं प्रेम करती हूँ, वह ग़ुलाम है)। सच्ची बात यह है कि हम तो उसको एक स्पष्ट भूल में (लिप्त) देखते हैं ॥

अतएव जब ज़ुलेख़ा ने उनके ताने (कटाक्ष) सुने, तो (दिल ही दिल में बहुत लज्जित हुई, लेकिन अपनी लज्जा दूर करने के अभिप्राय से शहर की) उन (समस्त स्त्रियों) को (अपने यहां) निमन्त्रित किया। और उनके (बुलाने के) लिये एक (भोज्य के) उत्सव का प्रबन्ध किया। और (जब सब स्त्रियाँ आ गई, तो उनके सामने तरह तरह के खाने चुन दिये। और फल आदि रख दिये। और) इनमें से हर एक को (फल चीरने के लिये एक २) छुरी देदी। और (ठीक उस समय जब कि वह छुरी से फल तराश तराश कर खा रही थीं, यूसुफ़ से) कहा(कि ज़रा) उनके सामने तो निकल आओ । अतएव (वह निकल आये)। जब स्त्रियों ने उनको देखा, तो (वह तो उन्हें देखकर) दंग रह गई और (इतनी तल्लीन हुई कि छुरीसे बजाय फल तराशने के) अपने हाथ उन्होंने काट लिये। और (तुरन्त) बोल उठीं-अल्लाह की महिमा, यह कोई मनुष्य तो है नहीं। यह तो (नूर के सांचे में ढला हुआ कोई) महान फ़रिश्ता है ॥

मिस्र के रईस की स्त्री (ने जब उन स्त्रियों की यह दशा देखी, तो अपनी सफलता के घमण्ड से) बोली कि यह तो वह (ग़ुलाम) है, जिसके बारे में तुम मुझको बुरा भला कहती थीं। और निस्सन्देह मैंने इससे (अपनी अनुचित) इच्छा पूरी करनी चाही थी, पर यह बचा रहा। और (मैं अब भी इससे यही कामना रखती हूँ)। अगर इसने मेरा कहना न किया, तो अवश्य जेल में डाल दिया जावेगा और यह नीच लोगों में हो जायगा ॥

(और इसके साथ २ मेहमान आने वाली स्त्रियों ने भी इसकी हां में हां मिलानी आरम्भ करदी। और यूसुफ़ को इतना अधिक परेशान किया कि) वह (लाचार हो गये। और) कहने लगे, ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! जिस (पाप) की तरफ़ यह स्त्रियां मुझे बुला रही हैं, उस से तो मुझे जेल (में रहना) बहुत अधिक पसन्द है। और अगर तूने इनके छल कपट (के जाल) को मुझसे दूर न किया (और इस अवसर पर मेरी सहायता न की) तो मैं (मनुष्य हूँ। एक न एक दिन) इनकी ओर आकर्षित हो जाऊँगा—

وَأَكُنْ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ
عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝
ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ
حَتّٰى حِيْنٍ ۝ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۗ قَالَ
أَحَدُهُمَآ إِنِّيْٓ أَرٰىنِيْٓ أَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ
إِنِّيْٓ أَرٰىنِيْٓ أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِيْ خُبْزًا تَأْكُلُ
الطَّيْرُ مِنْهُ ۗ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيْلِهٖ ۚ إِنَّا نَرٰىكَ مِنَ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قَالَ لَا يَأْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ
إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيْلِهٖ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ۗ
ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ۗ إِنِّيْ تَرَكْتُ
مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ
هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ
إِبْرٰهِيْمَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۗ مَا كَانَ لَنَآ أَنْ

और नादानों में (का एक नादान) हो जाऊंगा ० तो यूसुफ़ के पर्वर्दिगार ने उनकी सुनली और उनसे औरतों के चरित्रों को दफ़ा कर दिया। कुछ शक नहीं कि .खुदा ही (सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता है ० फिर जब (अज़ीज़ मिस्र और उसके) लोगों ने (यूसुफ़ की पाक दामनी की) निशानियां देख लीं, इसके बाद (भी .ज़ुलेखा की दिलजोई और यूसुफ़ को उसकी नज़र से दूर रखने के लिये) उनको यही (मुनासिब) मालूम हुआ कि एक वक़ (ख़ास) तक इसको क़ैद रक्खें ० और (ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि) यूसुफ़ के साथ दो जवान आदमी (और भी) जेल ख़ाने में दाख़िल हुए-(और उन्होंने देखे ख़्वाब। यूसुफ़ को बु.ज़ुर्ग सूरत समझ कर ताबीर पूछने की ग़रज़ से) एक ने कहा कि मैं अपने तईं (क्या) देखता हूँ कि (जैसे) शराब (बनाने के लिये अंगूरों का शीरा) निचोड़ रहा हूँ। और दूसरे ने कहा कि मैं अपने तईं (क्या) देखता हूँ कि अपने सर पर रोटियां उठाये हुए हूँ। (और) परिन्द (हैं कि) उनमें से खा खा जाते हैं। (यूसुफ़ !) हमको (हमारे) इस (ख़्वाब) की ताबीर बताओ, क्योंकि तुम हमको नेक आदमी दिखाई देते हो ० (यूसुफ़ ने) जवाब दिया कि जो खाना तुमको (अब जेल ख़ाने में) मिलने वाला है (और उसका वक़ क़रीब है) वह तुम तक आने भी नहीं पाएगा कि उस के आने से पहिले (पहिले तुम्हारे) ख़्वाब की ताबीर तुमको बता दूंगा। यह (ताबीर ख़्वाब भी) मिन जुम्ला उन बातों के है, जो मुझको मेरे पर्वर्दिगार ने तालीम फ़र्माई हैं। मैं (शुरू से) उन लोगों का मज़हब छोड़े बैठा हूँ, जो .खुदा पर ईमान नहीं रखते और आख़िरत के भी मुन्किर हैं ० और मैं अपने बाप दादों (यानी) इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब के दीन पर चलता रहा हूँ। हमको शायां नहीं कि—

और (फिर) बुद्धि हीन हो जाऊँगा ॥

अतः उनके पालन कर्त्ता ने (उनकी) दुआ क़बूल करली। और उन (स्त्रियों) के छल (के जाल) को उनसे दूर कर दिया। निस्सन्देह वह (सब की दुआ) सुनने वाला (और सबकी हालत) जानने वाला है ॥

(यह वृतान्त थे) फिर (भी) इन लोगों (अर्थात् मिस्र के रईस और उसके दरबारियों) को (यूसुफ़ की सचाई और निर्दोष होने के) चिन्ह देखने के बाद भी यही (मुनासिब) मालूम हुआ कि उनको एक (नियत) समय तक क़ैद कर दें ॥

(अतएव उनको क़ैद कर दिया गया)। और उनके साथ क़ैद ख़ाने में दो जवान (आदमी एक शाही मद्य पान कराने वाला और एक शाही रसोइया और) दाख़िल हुए। (दोनों ज़हर देने के अपराध में गिरिफ़्तार थे। मुक़द्दमे की जाँच हो रही थी। उन्हीं दिनों में दोनों ने एक २ स्वप्न देखा था। इसका प्रभाव मालूम करने के लिये बहुत परेशान थे। उन्होंने जो यूसुफ़ का ज्योति पूर्ण मुख देखा, तो उन से अपना अपना स्वप्न वर्णन करने लगे)। उनमें से एक ने कहा कि मैं (स्वप्न में क्या) देखता हूँ कि (जैसे) शराब (तैयार करने के लिये अंगूर) निचोड़ रहा हूँ। और दूसरे ने कहा कि मैं (क्या) देखता हूँ कि (जैसे) अपने सिर पर रोटी उठाये हुए हूँ। पक्षी (आते हैं और) उसमें से खाते जाते हैं। (दोनों ने अपना २ स्वप्न वर्णन करके कहा कि ऐ यूसुफ़ !) तुम हमको इसका प्रभाव बता दो। क्योंकि तुम हम को (चेहरे से) नेक दिखाई देते हो (और स्वप्न का प्रभाव बताना नेक मनुष्यों ही का काम है) ॥

यूसुफ़ ने जवाब दिया कि जो खाना तुमको (रोज़) दिया जाता है, उसके तुम तक आने से पहिले ही मैं तुमको उसका प्रभाव बता दूँगा। यह (स्वप्न विचार) भी उन (विद्याओं) में से (एक विद्या) है, जो मेरे पालन कर्त्ता ने मुझको सिखाई हैं। (और अल्लाह की यह मेहरबानी मेरे ऊपर केवल इस कारण है कि) मैंने उन लोगों का धर्म छोड़ दिया, जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और जो प्रलय (के दिन) से इन्कार करते हैं ॥

और अपने बाप (दादा) इब्राहीम व इस्हाक़ व याक़ूब के धर्म की मैंने आधीनता की।(जिसमें बताया गया है कि) हम (दुनिया के) लोगों को (किसी तरह) यह मुनासिब नहीं है कि—

نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ذَٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا
وَعَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝
يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَأَرْبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا
أَسْمَاءً سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ
بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا
إِلَّا إِيَّاهُ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا فَيَسْقِي
رَبَّهُ خَمْرًا وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ
مِنْ رَأْسِهِ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِيَانِ ۝
وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ
رَبِّكَ فَأَنْسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي
السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَىٰ سَبْعَ

५

ख़ुदा के साथ किसी चीज़ को शरीक बनाएं। यह (अक़ीदा) ख़ुदा का एक फ़ज़्ल है, (जो उसने) हम पर और लोगों पर (किया है)। मगर अकसर आदमी (उसकी इस नेअमत का) शुक्र नहीं करते ० ऐ यारान महबस ! (भला देखो तो सही कि) जुदा २ माबूद अच्छे या ख़ुदाये यगाना (व) ज़बर्दस्त ० तुम लोग ख़ुदा के सिवाय निरे नामों ही की परस्तिश करते हो, जो तुमने और तुम्हारे बाप दादों ने (अपने दिल से) घड़ रक्खे हैं। ख़ुदा ने तो इन (के माबूद होने) की कोई सनद उतारी नहीं। (तमाम जहान में) हुकूमत तो बस एक अल्लाह ही की है। (और) उसने हुक्म दिया है कि सिर्फ़ उसी की परस्तिश करो। यही दीन (का) सीधा (रस्ता) है, मगर (अफ़सोस) अकसर लोग नहीं जानते ० ऐ यारान महबस ! तुम में से एक (जिसने अंगूर के शीरे का निचोड़ना देखा है, वह) तो (बदस्तूर) अपने आक़ा (का साक़ी बना रहेगा और उस) को शराब पिलाएगा। और दूसरा (जिसने रोटियां सर पर रक्खी देखी हैं) सूली दिया जायगा और परिन्द उसका सर (नोच नोच कर) खाएँगे। जिस अम्र को तुम दर्याफ़्त करते थे, (वह यह है। और ख़ुदा के यहाँ से) फ़ैसल हो चुका है ० और जिस शख़्स की निस्बत यूसुफ़ ने समझा था कि इन दोनों में से इनकी मख़्लसी हो जाएगी, उससे कहा कि अपने आक़ा के पास मेरा भी तज़किरह करना (कि मैं नाहक़ क़ैद हूँ)। सो शैतान ने उसको अपने आक़ा से (इसका) तज़किरह करना भुला दिया, तो (यूसुफ़) कई बरस क़ैद ख़ाने में रहे ० और (इसी असना में) बादशाह ने (भी एक ख़्वाब देखा और अपने दर्बारियों से उसको) बयान (भी) किया, कि मैं देखता हूँ (जैसे) सात—

अल्लाह के साथ किसी चीज़ को भी शरीक ठहरायें। (और) यह (शिर्क से बचने की शिक्षा देना) हम पर भी अल्लाह की कृपा है (कि हम एक बहुत बड़े पाप से सुरक्षित रहते हैं) और (दूसरे) लोगों पर भी (कि वह हमसे यह नेक बात सीखते हैं)। लेकिन बहुत से लोग (इसको उसकी मेहर्बानी नहीं समझते और उसका) शुक्र नहीं करते ॥

ऐ जेल के साथियो ! (ज़रा तुम भी सोचो ! कि तुम्हारे समीप उपासना व आज्ञा पालन के लिये) विभिन्न पूज्य अच्छे हैं या तुम्हारा एक ख़ुदा शक्तिमान ॥

तुम (मुश्रिक) तो अल्लाह को छोड़ कर केवल कुछ नामों को पूजते हो, जिन्हें तुमने और तुम्हारे बाप (दादा) ने घड़ रक्खा है। (अर्थात् कुछ ऐसी वस्तुओं को पूजते हो, जो इतनी असमर्थ हैं कि उनका होना या न होना दोनों बराबर हैं। बस कोरे उनके नाम ही नाम हैं। और) अल्लाह ने उन (नामों या उन चीज़ों के पूज्य होने) का (तुम्हारे पास) कोई प्रमाण नहीं उतारा। (याद रक्खो !) शासन (सारे संसार में) बस (एक) अल्लाह का है। उसी ने तुमको यह हुक्म दिया है कि केवल उसी की पूजा करो। (और मुक्ति पाने के लिये तो) यही सीधा रास्ता है, लेकिन बहुत से लोग (इस बात से) अभिज्ञ नहीं हैं। (वह कुफ़्र व शिर्क ही को मुक्ति का साधन जानते हैं) ॥

(और) ऐ जेल के साथियो ! (अब अपने २ स्वप्न का विचार सुनो !) तुममें से एक (तो वह है, जिसने स्वप्न में अंगूर निचोड़े थे)। तो वह तो (अपनी नौकरी पर बहाल हो जावेगा। और उसी तरह) अपने मालिक को शराब पिलावेगा। और लेकिन दूसरा, सो वह सूली पर चढ़ाया जावेगा। फिर उसका सिर पक्षी (नोच नोच कर) खावेंगे। (लो) जिस बात को तुम लोग पूछते थे, उसका फ़ैसला कर दिया गया (अर्थात् तुम्हारे स्वप्नों का प्रभाव तुमको बता दिया गया) ॥

और इन दोनों में से जिसके बारे में यसुफ़ ने विचार किया था कि वह (क़ैद से) रिहा हो जावेगा, उन्होंने उससे कहा कि (जब तुम मेरे कथनानुसार आज़ाद और अपनी नौकरी पर बहाल हो जाओ, तो) अपने मालिक से (किसी दिन) मेरा हाल बयान करना (और कहना कि एक अत्यचार पीड़ित ग़ुलाम तुम्हारे यहां एक बड़े समय से क़ैद है—उसे आज़ाद करदो। लेकिन जब उसको यह अवसर मिला) तो शैतान ने उसको अपने मालिक के सामने (यसुफ़ का) ज़िक्र करना (बिल्कुल) भुला दिया। सो वह कई साल जेल में रहे ॥

और (इसी अवसर पर) बादशाह ने (भी एक स्वप्न देखा और वह भी उसका प्रभाव मालूम करने के लिये परेशान हुआ। उसने राज्य के कर्मचारियों को सम्बोधन करके) कहा (कि) मैं (स्वप्न में) देखता हूँ (कि जैसे) सात—

गायँ (हैं) मोटी (ताज़ी और) उनको सात गायँ (सूखी) दुबली खाए चली जा रही हैं और (नीज़) सात बालें (हैं) सब्ज़ और दूसरी (सात हैं) खुश्क । ऐ अह्ल दर्बार ! अगर तुमको ख़्वाब की ताबीर देनी आती हो, तो मेरे (इस) ख़्वाब के बारे में मुझसे अपनी राय ज़ाहिर करो, (यानी इसकी ताबीर दो) ० उन्होंने अर्ज़ किया कि यह तो कुछ परेशान से ख़यालात हैं और (ऐसे) ख़यालात की ताबीर तो हमको आती नहीं ० और वह शख़्स, जो (यूसुफ़ के उन) दो (साथियों) में से (तहक़ीक़ात होकर आख़िरकार) रिहाई पा गया था और (अब) उसको एक अरसे के बाद (यूसुफ़ का क़िस्सा) याद आया, (बादशाह और दर्बारियों की गुफ़्तगू सुन कर) बोल उठा कि मुझको (क़ैद ख़ाने तक) जाने की इजाज़त हो, तो (मैं यूसुफ़ से पूछ कर) इसकी ताबीर तुमको बताऊं ० (चुनांचे उसको इजाज़त दी गई और उसने यूसुफ़ से जाकर कहा कि) ऐ यूसुफ़ ! (तुम ख़्वाब की) बड़ी सच्ची ताबीर देने वाले (हो)-भला इस (ख़्वाब) के बारे में तो तुम हमसे अपनी राय ज़ाहिर करो कि सात मोटी गायों को सात दुबली (गाएँ) खाए चली जा रही हैं। और सात बालें हरी और दूसरी (सात बालें हैं) सूखी (इसका जवाब दो)। तो मैं (जिन लोगों के पास से आया हूँ, फिर उन्हीं) लोगों के पास लौट जाऊं (और तुम्हारी दी हुई ताबीर उनसे बयान करूं)-ताकि (इस तक़रीब से तुम्हारा हाल भी) उनको मालूम हो ० (यूसुफ़ ने) कहा (ख़्वाब की ताबीर यह है कि) तुम लोग बदस्तूर सात बरस काश्तकारी करते रहोगे। तो जो (फ़स्ल) काटो, उसको उसी की बालों ही में रहने देना (ताकि ग़ल्ला गले सड़े नहीं)। मगर (हाँ) किसी क़दर जो तुम्हारे खाने के काम में आए (उतना तो बालों से निकालना पड़ेहीगा) ० फिर इसके बाद बड़े सख़्त (क़हत के) सात (बरस) आएंगे कि जो कुछ तुमने (मेरे कहने के मुताबिक़) पहिले से इन (बरसों) के लिये जमा कर रक्खा होगा (यह उस सबको) खा जायंगे। मगर हाँ क़द्र क़लील, जो तुम (बीज के लिये) बचा रक्खोगे (उतना ही लोगों के खाने से बच जाएगा) ० फिर इसके बाद एक ऐसा बरस आएगा –

بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ
خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ
رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ۝ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ
اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ۝ وَقَالَ
الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ
بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ۝ يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ
اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ
عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْۤ
اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ قَالَ تَزْرَعُوْنَ
سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖۤ
اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ۝ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْ بَعْدِ
ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ
اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ۝ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ

मोटी (मोटी) गायें (और सात दुबली २ गायें हैं। और) उन (मोटी गायों) को सातों दुबली (गायें) खाये जा रही हैं। और (मैंने गेहूँ की) सात हरी बालें और दूसरी (सात) सूखी (बालें देखीं। और देखा कि सातों सूखी सातों हरी पर लिपट गईं और उन्हें सुखा दिया)। ऐ दरबार के लोगो ! अगर तुम स्वप्न विचार करना जानते हो, तो मुझे मेरे स्वप्न में राय दो (जिससे कि मेरी चिन्ता दूर हो)॥

दरबार के लोग बोले (यह तो यूंही) भ्रम पूर्ण विचार हैं (आप इनकी कुछ पर्वाह न करें)। और (अगर यह वास्तव में स्वप्न ही हैं, तो हम विवश हैं)। हम स्वप्नों का फल (बताना) नहीं जानते॥

और इन दोनों (मनुष्यों) में से (जो जेल में यूसुफ़ के साथ थे) उसमें, जो मुक्त हो गया था और अब अधिक दिन के बाद उस को (युसुफ़ का वृतान्त) याद आया था, (बादशाह से) कहा कि मुझको (यूसुफ़ के पास) भेज दो। (वह स्वप्नों का फल कहना जानते हैं)। मैं (उनसे पूछ कर अभी) तुमको इस (स्वप्न) का फल बता दूँगा॥ (उसको उसी समय यूसुफ़ के पास जाने की आज्ञा मिल गई और वह उनके पास गया। और जाकर कहने लगा) ऐ सच बोलने वाले यूसुफ़ ! इस स्वप्न के बारे में तुम हमको परामर्श दो कि सात मोटी गायों को सात दुबली (गायें) खाये जा रही हैं। और सात हरी बाल हैं और दूसरी (सात) सूखी, जिससे कि मैं (उन ही) लोगों की तरफ़ लौट जाऊँ (जिन्होंने स्वप्न का फल पूछा है। और तुम्हारा बताया हुआ फल सुनाऊँ) जिससे कि उन्हें पता चले (कि उन्होंने कैसे मनुष्य को कष्ट में फाँस रक्खा है) ॥

यूसुफ़ ने कहा कि (सात मोटी गायों और सात हरी बालों से अभिप्राय उन सात सालों से है कि उन) सात सालों में तुम बराबर खेती क्यारी करोगे (और उनमें ख़ूब पैदावार होगी)। तो तुम (इन सालों में) जो (फ़स्ल) काटो, तो उसे उसकी बालों में छोड़ देना। मगर (हाँ) थोड़ा सा (रहने देना) जिसे कि तुम (उस सात साल की अवधि में) खाओगे॥

फिर इसके बाद सात (साल बड़े) कठिन आवेंगे (और दुबली गायों और सूखी बालों से तात्पर्य पिछले सात सालों से आगे के सात साल हैं। यह ऐसे कठिन होंगे) कि इस (अन्न) के समस्त (भंडार) को, जो तुमने पहिले से इनके लिये (एकत्रित कर) रक्खा होगा, खा जावेंगे *। मगर (हाँ, वह) थोड़ा सा, जो तुम (बेचने के लिये) सुरक्षित करं लोगे (वह बच रहेगा)॥

* टीका–अर्थात् इन सात सालों में पैदावर इतनी कम और अकाल इतना अधिक पड़ेगा कि पिछले सात साल का जमा किया हुआ अन्न सारे का सारा समाप्त हो जावेगा :—हसन निज़ामी॥

फिर इसके बाद एक ऐसा साल आवेगा–

عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ۝ وَقَالَ
الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ
اِلٰى رَبِّكَ فَسْئَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ
اَيْدِيَهُنَّ ۗ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ۝ قَالَ مَا
خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ قُلْنَ
حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ۗ قَالَتِ امْرَاَتُ
الْعَزِيْزِ الْئٰنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۫ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ
نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ
اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ
كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ۝ وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِيْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ
لَاَمَّارَةٌ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيْ ۗ اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ ۚ
فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ۝

जिसमें (ख़ूब समां होगा)। लोगों के लिये बरसात भी होगी और (खेती के अलावा) उस बरस (अंगूर भी ख़ूब फलेंगे और लोग शराब के लिये उनके शीरे भी) निचोड़ेंगे ० (अल ग़रज़ साक़ी ने यह सब ताबीर जाकर बादशाह से बयान की) और बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ़ को हमारे हुज़ूर में ला हाज़िर करो। तो जब (शाही) चोबदार यूसुफ़ के पास (यह हुक्म लेकर) पहुँचा, तो उन्होंने कहा तुम अपनी सरकार के पास लौट जाओ और उनसे दर्याफ़्त करो कि (आपको कुछ) उन औरतों का हाल भी मालूम है, जिन्होंने (मुझको देख कर) अपने हाथ काट लिये थे, (आया वह मेरे दर पै थीं, या मैं उनके दरपै था)। बेशक उनके चरित्रों को मेरा पर्वर्दिगार ही ख़ूब जानता है ० (चुनांचे बादशाह ने उन औरतों को तलब करके उनसे) पूछा कि जिस वक़्त तुमने यूसुफ़ से अपना मतलब (नाजायज़) हासिल करना चाहा था, (उस वक़्त) तुमको क्या मामिला पेश आया ? उन्होंने अर्ज़ किया कि हाशा लिल्लाह ! हमने तो यूसुफ़ में किसी तरह की बुराई पाई नहीं। (इस पर) अज़ीज़ (मिस्र) की औरत बोल उठी कि अब तो (जो) हक़ बात (थी, सब पर) ज़ाहिर (हो ही) गई। (असल हक़ीक़त यह है कि) मैंने यूसुफ़ से अपना मतलब (नाजायज़) हासिल करना चाहा था। और यूसुफ़ (ने जो अपनी बराअत ज़ाहिर की, वह) बिलकुल सच कहता है ० यह (माजरा चोबदार ने यूसुफ़ से जा बयान किया। यूसुफ़ ने कहा मैंने कभी की दबी दबाई बात को) इस लिये (उखाड़ा) कि अज़ीज़ मिस्र को (ब ख़ूबी) मालूम हो जाय कि मैंने उसकी पसे पुश्त उसकी (अमानत में) ख़ियानत नहीं की। और (उसको) यह (भी मालूम रहे) कि ख़ियानत करने वालों की तदबीरों को अल्लाह चलने नहीं दिया करता ० और (यूं) मैं (भी बन्दा बशर हूँ)। अपनी निस्बत नहीं कहता कि मैं (फ़रिश्तों की तरह) पाक साफ़ हूँ। क्योंकि नफ़्स (इन्सानी) तो (आदमी को) बदी के लिये (हमेशा) उभारता ही रहता है, मगर यह कि मेरा पर्वर्दिगार ही अपना रहम करे। कुछ शक नहीं कि मेरा पर्वर्दिगार बख़्शने वाला मेहर्बान है० और बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ़ को हमारे हुज़ूर में ला हाज़िर करो कि हम उसको (अज़ीज़ की ख़िदमत से छुड़ा कर) ख़ालिस अपने (काम के) लिये रक्खेंगे। फिर जब यूसुफ़ से बात चीत की, तो (बादशाह को यूसुफ़ की लियाक़त साबित हुई और उनसे) कहा, आज (से) तुम हमारी सर्कार में बड़े बा वक़ार (और) साहब एतिबार हो ०—

कि उसमें लोगों के लिये (ख़ूब) बारिश बरसाई जावेगी और उसमें (ख़ूब खेती क्यारी होगी। अंगूर आदि के रस भी) लोग निचोड़ेंगे ॥

(तात्पर्य यह कि वह मनुष्य दरबार में पहुँचा) और (सबके सामने स्वप्न का फल वर्णन किया)। बादशाह ने (उसे बहुत पसन्द किया। उसी समय) हुक्म दिया कि उन (फल बताने वाले बुज़ुर्ग) को मेरे पास लाओ। (मैं उनको देखूं कि वह कौन हैं)। अतः जब (शाही) दूत उनके पास पहुँचा, तो (उन्होंने उसके साथ बादशाह के सामने जाने से साफ़ इन्कार कर दिया। और) कह दिया (कि जब तक बादशाह को मेरे सदाचरण व निर्दोषता का विश्वास न हो जावेगा, मैं नहीं जाऊंगा। ऐ मनुष्य !) तू अपने स्वामी के पास लौट जा। फिर उनसे पूछ कि उन स्त्रियों की क्या दशा है, जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे। (और मुझ पर बिना कारण ज़ुल्म ढाया था। क्या अब भी वह अपने छल व मक्र पर स्थिर हैं ?)। निस्सन्देह मेरा पालन कर्त्ता तो उनके छल (के जाल) को अच्छी तरह जानता ही है। (मगर मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों पर भी उनके छल कपट का हाल खुल जावे) ॥

(अतएव यूसुफ़ के कथनानुसार) मिस्र के बादशाह ने (उन समस्त स्त्रियों को बुला कर) पूछा कि तुम्हारा (उस समय का सच्चा)वृतान्त क्या है ? जिस समय कि तुमने अपने मतलब के लिये यूसुफ़ को फुसलाया था। (क्या इस मामले में यूसुफ़ का भी कुछ अपराध है ? तुमने उस में कोई बुराई वास्तव में देखी थी ? इस पर) उन्होंने जवाब दिया अल्लाह की शरण, उनमें हमको कोई बुराई नहीं मालूम हुई। (और) अज़ीज़ (मिस्र) की स्त्री बोली, अब सत्य (के) प्रकट हो (ने का समय आ) गया। (वास्तव में बात यह है कि) मैंने ही उनको अपने मतलब के लिये फुसलाया था। और (इस मामले में) वह सच्चे (और निर्दोष) हैं। (मैं ही सरासर झूठी और पूर्ण रूप से अपराधिनी हूं) ॥

(यूसुफ़ को भी इस सारे वृतान्त की सूचना दी गई, तो उस पर उन्होंने कहा कि) यह (पेशबन्दी मैंने) इस लिये (की थी) ताकि (अज़ीज़ मिस्र को) मालूम हो जाय कि मैंने (उसकी) पीठ पीछे उस (की अमानत) में विश्वास घात नहीं किया। और (यह कि) यह (भी मालूम हो जाय) कि दग़ाबाज़ों के धोखे को (सत्य के मुक़ाबले में) अल्लाह राह नहीं देता। (अन्त में सत्य ही की जय होती है) ॥

और मैं अपने नफ़्स (इन्द्रिय तथा मन) को (निर्दोष और पापों से बिल्कुल) बरी नहीं कहता। (क्योंकि) नफ़्स (उद्दंड) तो (वह शैतान है, जो हर एक को) बुराई पर उभारता है। मगर (हां) वह (नफ़्स) जिस पर मेरा पालन कर्त्ता (अपनी) कृपा (और दया व मेहर्बानी) करे, (वह अलबत्ता पापों से सुरक्षित रह सकता है)। निस्सन्देह मेरा पालन कर्त्ता अनन्त क्षमा (व कृपा) करने वाला (और) मेहर्बान है। (उसी ने मुझको ऐब से बचाया और फिर उससे साफ़ बरी कर दिखाया) ॥ और (जब) बादशाह (को यूसुफ़ की निर्दोषता और उन के अच्छे गुणों का हाल मालूम हुआ, तो उस) ने हुक्म दिया कि उनको मेरे पास लाओ। मैं उनको अपना मुख्य (आदमी) बनाकर रक्खूंगा। अतएव जब यह (बादशाह के सन्मुख लाये गये और बादशाह ने) उनसे वार्तालाप की, तो (उनकी शारीरिक सुन्दरता व गुणों को देख कर) कहने लगा कि आज से तुम बिल्कुल (हमारे दरबार में एक मुख्य स्थान रखते हो और) हमारे लिये (बहुत बड़े) विश्वास पात्र हो ॥

قَالَ اجْعَلْنِىْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِۚ اِنِّىْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ۝ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ۝ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ۝ وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ۝ وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِىْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّىْۤ اُوْفِى الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ۝ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِىْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِىْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ۝ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ۝ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِىْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَاۤ اِذَا انْقَلَبُوْۤا اِلٰۤى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ۝ فَلَمَّا رَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا

مُنِعَ

٨

(यूसुफ़ ने) अर्ज़ किया कि (अगर सरकार ने मेरी ऐसी क़द्रदानी फ़र्माई है, तो) मुझको मुल्की ख़ज़ानों पर मुन्तज़िम फ़र्मा दीजिये, क्योंकि (मैं ख़ज़ाने की) हिफ़ाज़त भी अच्छी तरह कर सकता हूँ (और हिसाब किताब से भी) ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। (ग़रज़ यूसुफ़ शाही ख़ज़ानों के अफ़सर मुक़र्रर हो गए) ० और यूँ हमने यूसुफ़ को मुल्क (मिस्र) में जगह दी कि उसमें जहां चाहें, रहें सहें। हम जिस पर चाहते हैं, अपना फ़ज़्ल करते हैं और नेकोकारों के अज्र को (दुनिया में भी) ज़ाए नहीं होने दिया करते ० और जो लोग ईमान लाये और परहेज़गारी करते रहे, अज्र आख़िरत उनके लिये (इससे कहीं) बेहतर है ० और (चूंकि कनआन के तमाम इलाक़े में क़हत पड़ा था) यूसुफ़ के (बेमात) भाई (ग़ल्ला ख़रीदने मिस्र में) आए और यूसुफ़ पास गए, तो यूसुफ़ ने उनको (देखते ही) पहिचान लिया और उन्होंने यूसुफ़ को न पहिचाना ० और जब यूसुफ़ ने भाइयों का सामान (ग़ल्ला) उनके लिये तय्यार कर दिया, तो (उनसे) कहा कि (अबके आना, तो) अपने बेमात भाई (बिन यामीन) को (जिसे घर छोड़ आए हो, अपने साथ) लेते आना। क्या तुम नहीं देखते कि हम माप भी पूरी देते हैं और (नीज़) हम सबसे बेहतर महमाँ नवाज़ भी हैं० लेकिन अगर तुम उसको हमारे पास न लाये, तो तुमको हमारे यहाँ (से) ग़ल्ला नहीं (मिलेगा) और (उस सूरत में) तुम हमारे पास (भी) न आना ० उन्होंने कहा कि हम जाते ही उसके वालिद से उसके बारे में अर्ज़ मारूज़ करेंगे और हम उसके लाने का ज़रूर इन्तिज़ाम करेंगे ० और यूसुफ़ ने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि इन लोगों को (जमा) पूंजी (जिसके बदले में इन्होंने ग़ल्ला मोल लिया है) इन ही की बोरियों में रखदो, ताकि जब यह लोग अपने अह्ल (व अयाल) की तरफ़ लौट कर जाएं, तो अपनी पूंजी को पहिचानें। अजब नहीं (लालच करके) यह लोग फिर भी (ग़ल्ला लेने) आएं ० तो जब (यह लोग) अपने वालिद के पास लौट कर गए, तो (उनसे) अर्ज़ किया कि अब्बा जान ! (आगे को)-

(और कहा कि मैं अपने स्वप्न का फल तुम्हारी वाणी से सुनना चाहता हूँ। यूसुफ़ ने पहिले उसका सारा स्वप्न बयान किया। फिर उसका प्रभाव बताया। बादशाह ने उनकी हर एक बात की तसदीक़ की और स्वप्न का फल सुन कर कहा कि इतने बड़े अकाल का प्रबन्ध करना कठिन है। किसके सिपुर्द किया जाय। इस पर) उन्होंने कहा कि (तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करो और अपने राज्य और अपनी) ज़मीन के (सारे) ख़ज़ानों पर मुझको (प्रबन्धक) नियत करदो। क्योंकि मैं (उन ख़ज़ानों की अच्छी तरह) रक्षा (भी) कर सकता हूँ (और आने वाले अकाल की दशा से भी) अच्छी तरह अभिज्ञ हूँ। (अल्लाह ने चाहा, तो मैं प्रजा को भूख की तकलीफ़ से बचा लूंगा) ॥

(अभिप्राय यह है कि यूसुफ़ शाही ख़ज़ानों के प्रबन्धक नियत हो गए)। और इस प्रकार हमने यूसुफ़ को (कारावास के परिश्रम से मुक्त करके मिस्र की) ज़मीन में (एक आदरणीय स्थान पर) नियुक्त कर दिया। (और अधिकार दे दिया) कि (मिस्र देश में) जहाँ चाहें, रहें। हम अपनी मेहरबानी जिस पर चाहते हैं, कर देते हैं। और नेक काम करने वालों के पुरस्कार को (कभी) नष्ट नहीं करते ॥

और प्रलय में मिलने वाला पुरस्कार (जो) सर्वोत्तम (पुरस्कार) है (वह हर एक के लिये नहीं है। केवल) उन (ही) लोगों के लिये है, जो ईमान लाये और (संयमता) परहेज़गारी करते रहे ॥ (अभिप्राय यह है कि जब यूसुफ़ मिस्र के प्रबन्ध कर्त्ता नियत हुये, तो सात साल खेती कराके ख़ूब अन्न इकट्ठा किया और बिक्री का एक उचित भाव नियत कर दिया। यह ख़बर दूर २ प्रसिद्ध हो गई) और यूसुफ़ के (सब) भाई (बिन यामीन के अलावा कनआन देश से मिस्र में अन्न लेने) आये और उनके पास पहुँच गये। (जब यूसुफ़ ने उनको देखा) तो (तुरन्त) उनको पहिचान लिया। और उन्होंने यूसुफ़ को नहीं पहिचाना ॥

(यूसुफ़ ने उनकी आव भगत की) और (उनसे नियत मूल्य लेकर नियमानुसार प्रति मनुष्य एक ऊँट अन्न उनको दे दिया)। जब उनके लिये उनका असबाब (अर्थात अन्न) तैयार कर दिया, तो (उन्होंने यूसुफ़ से कहा कि हमारा एक सौतेला भाई और भी है। उस के लिये भी एक ऊँट अन्न का दे दो। और जो कुछ दाम हों, ले लो)। उन्होंने कहा कि (यह नियम के विरुद्ध है कि मैं उसकी अनुपस्थिति में उसके हिस्से का नाज तुमको दे दूँ। यहाँ का यह नियम है कि जो आता है, उसी को अन्न दिया जाता है। अतएव अब के तुम अन्न लेने आओ, तो) अपने सौतेले भाई को (भी) मेरे पास (अपने साथ) लेते आना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं (हर एक को) पूरी तोल (तोल कर) देता हूँ। और (परदेसियों के लिये) अत्यन्त अतिथि सत्कार करने वाला हूँ। (तुम्हारा भाई आवेगा, तो उसको भी उसका पूरा २ हिस्सा दिया जावेगा और तुम्हारी तरह उसको भी ख़ातिर की जावेगी) ॥ लेकिन अगर तुम (अब के आये और) उसको मेरे पास नहीं लाये, तो तुम्हारे लिये मेरे यहाँ अन्न नहीं है। और न तुम मेरे पास (अन्न लेने के लिये ऐसी दशा में) आना। (क्योंकि मैं समझूंगा कि तुम मुझको धोखा देकर अधिक अन्न ले जाना चाहते थे) ॥ उन्होंने कहा कि हम उसको उसके बाप से (कह कर किसी न किसी बहाने से अवश्य) लाने की कोशिश करेंगे। और (यथा शक्ति जो हमसे हो सकेगा, वह) हम कर डालेंगे ॥

और (जब वह चलने लगे, तो) यूसुफ़ ने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि इनकी पूंजी (अर्थात अन्न का मूल्य, जिसका इन्होंने अन्न ख़रीदा है) इन्हीं के असबाब में (किसी प्रकार छिपा कर) रखदो। ताकि जिस समय वह अपने घर वापिस जायँ, तो उनको उसका पता चले। (और) कदाचित यह (इस रुपये को लेकर) दूसरी बार (अन्न मोल लेने के विचार से यहाँ) वापिस आवें ॥

अतएव जब वह बाप के पास लौट कर गये, तो कहने लगे--ऐ हमारे बाप !--

مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا أَخَانَا نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهُ
لَحَافِظُونَ ● قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أَمِنتُكُمْ
عَلَىٰ أَخِيهِ مِن قَبْلُ فَاللَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَهُوَ أَرْحَمُ
الرَّاحِمِينَ ● وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ
رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي هَٰذِهِ بِضَاعَتُنَا
رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَ
نَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ذَٰلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ● قَالَ
لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ
لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَن يُحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ
قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ● وَقَالَ يَا بَنِيَّ لَا
تَدْخُلُوا مِن بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ
مُّتَفَرِّقَةٍ وَمَا أُغْنِي عَنكُم مِّنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ
إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

हमें ग़ल्ले की मुमानिअ़त कर दी गई है। तो आप हमारे भाई (बिन यामीन) को भी हमारे साथ भेज दीजिये कि हम (फिर) ग़ल्ला लाएं। और हम उस की हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार हैं ० (बाप ने) कहा कि मैं तो इसके बारे में तुम्हारा एतिबार करता नहीं, मगर (हाँ) वैसा ही एतिबार, जैसा मैंने पहिले इसके भाई (यूसुफ़ के बारे) में किया था। सो .खुदा सबसे बेहतर (इसका) हाफ़िज़ (व निगहबान) है। और वह सब मेहर्बानों से ज़्यादा मेहर्बान है ० और जब इन लोगों ने अपना असबाब खोला, तो देखते (क्या) हैं कि इनकी (जमा) पूंजी भी इनको लौटा दी गई है। (पूंजी को देख कर बाप से) लगे कहने कि अब्बा जान! हमें (और) क्या चाहिये। यह हमारी (जमा) पूंजी (तक भी तो) हमको लौटा दी गई। (अब हमको इजाज़त दीजिये कि बिन यामीन को साथ लेकर जाँय) और अपने अह्ल (व अयाल) के लिये रसद लाएं। और हम अपने भाई (बिन यामीन) की हिफ़ाज़त करेंगे और (इसके हिस्से का) एक बार शुतर ग़ल्ला और लेंगे। यह ग़ल्ला (जो इस मर्तबा हम लाये हैं) थोड़ा है ० (बाप ने) कहा जब तक तुम .खुदा की क़सम खाकर मुझको पक्का क़ौल न दोगे कि तुम इस को ज़रूर मेरे पास फिर ला हाज़िर करोगे--मगर यह कि तुम आप ही घिर जाओ (तो मजबूरी है। ऐसे क़ौल के बिदून तो) मैं इसको तुम्हारे साथ हरगिज़ नहीं भेजूंगा। तो जब उन्होंने बाप को अपना पक्का क़ौल दे दिया, तो (बाप ने) कहा कि (यह) क़ौल (व क़रार) जो हम (आपस में) कर रहे हैं, अल्लाह इसका शाहिद (हाल) है ० और (बाप ने इनको चलते वक़् यह भी) नसीहत की कि लड़को (देखो!) एक दरवाज़े से दाख़िल न होना (कि कहीं नज़र बद न लग जाय) बल्कि अलहदा २ दर्वाज़ों से दाख़िल होना। और मैं (इस हीले से) .खुदा के हुक्म को तो तुम पर से ज़रा भी नहीं टाल सकता। हुक्म तो बस अल्लाह ही का (चलता) है। मैंने उसी पर भरोसा कर लिया है। और (सब) भरोसा करने वालों को चाहिये कि उसी पर भरोसा करें०--

---

(बिन यामीन के हमारे साथ न जाने के कारण आगे के लिये) हमारे वास्ते अन्न की मनाही करदी गई है। तो (अब के) तुम हमारे साथ हमारे भाई (बिन यामीन) को भेज देना, जिससे कि हम अन्न ला सकें। और (अगर इसको हमारे साथ भेजने में कुछ डर हो, तो) हम (सच्चे दिल से अर्ज़ करते हैं कि हम उसकी पूर्ण) रक्षा करेंगे (और उसे किसी प्रकार की हानि न पहुँचने देंगे)॥

(याक़ूब ने) कहा--मैं उसके मामले में तुम्हारा विश्वास नहीं करता। मगर (कहो, तो वैसा ही विश्वास करलूं) जैसा कि (इस से) पहिले इसके भाई (यूसुफ़) के मामले में तुम्हारा विश्वास कर चुका हूँ। (यदि जैसा कि तुम कहते हो, इसके बिना अन्न तुमको मिलना सम्भव ही नहीं है) तो (ख़ैर, ले जाना। मेरा) अल्लाह सर्वोत्तम संरक्षक है। और वही (अपने बन्दों की दशा पर) सब मेहर्बानी करने वालों से अधिक मेहरबान है॥

और (यह बातें करके) जब उन्होंने अपना असबाब खोला, तो उन्होंने देखा कि उनकी (जमा) पूंजी (अर्थात अन्न का मूल्य) उन्हें ही वापिस कर दिया गया (है। यह देख कर वह बहुत .खुश हुए और) कहने लगे ऐ बाप! (और) हमें क्या चाहिये--(देखो तो सही नाज का नाज भी हमको मिल गया और) यह हमारी (जमा) पूंजी (भी ज्यों की त्यों) हमें ही वापिस कर दी गई। (लो, अब तो हमको आज्ञा दो कि) हम अपने बाल बच्चों के लिये (और) अन्न लावें। और (अबके हम) अपने भाई (बिन यामीन को अपने साथ ले जावेंगे और इस) की (पूरी) रक्षा करेंगे। और (इसके हिस्से का) ऊँट भर (अन्न) और लेंगे। (रहा) यह (अन्न, जो हम अभी लाये हैं, तो यह तो बहुत) थोड़ी (सी) मात्रा (में) है (कुछ ही दिन में समाप्त हो जावेगा)॥

(अब) याक़ूब ने कहा कि मैं बिन यामीन को तुम्हारे साथ कदापि न भेजूंगा, जब तक कि तुम अल्लाह की शपथ खाकर मुझसे (इस बात का) पक्का वादा न करलो कि तुम (यूसुफ़ की तरह उसको कहीं छोड़ न आओगे। और जब) मेरे पास (वापिस आओगे, तो) उसको (साथ) लाओगे। मगर (हाँ, संयोग वश विपत्ति में) तुम स्वयं ही घिर जाओ (तो मजबूरी है)। अतः जब उन्होंने (अपने) बाप से पक्का वादा कर लिया, तो बाप ने कहा कि (अच्छा जाओ। अल्लाह रक्षा करने वाला है, लेकिन अपने वादे का ख़याल रखना। इस समय) हम (तुम) जो कुछ कह रहे (और वादा कर रहे) हैं, इसका अल्लाह गवाह है॥

और (अन्त में चलते समय) कहा कि ऐ मेरे (प्यारे) बच्चो! (जब) तुम (मिस्र पहुँचो, तो सब भाई) एक ही दरवाज़े से (शहर के भीतर) न दाख़िल होना। बल्कि अलग अलग दरवाज़ों से दाख़िल होना (जिससे कि कुदृष्टि से बचे रहो)। और (इस नसीहत से मेरा प्रयोजन अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध तुमको किसी तकलीफ़ से बचाना नहीं है)। मैं तो तुमको (यदि तुम्हारे भाग्य में) अल्लाह (की तरफ़ से कोई विपत्ति लिख दी गई हो, तो उस) से ज़रा भी नहीं बचा सकता। (मेरी क्या मजाल है, जो कोई हुक्म तुम्हारे बचाव के लिये करूं। क्योंकि) हुक्म तो बस अल्लाह ही का है। मैं (.खुद भी) उसी पर भरोसा रखता हूँ। और (सब) भरोसा रखने वालों को चाहिये कि उसी पर भरोसा रक्खें (और अपनी मुसीबत के समय उसी को पुकारें)॥

الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ
مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً
فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِمَا عَلَّمْنَاهُ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوا
عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ
فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ
جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ
أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسَارِقُونَ ۝ قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ
مَاذَا تَفْقِدُونَ ۝ قَالُوا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَ
لِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ۝ قَالُوا تَاللَّهِ
لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا
كُنَّا سَارِقِينَ ۝ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَاذِبِينَ
قَالُوا جَزَاؤُهُ مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ

كذلك

ع

और जब यह लोग (उसी तरह पर) जैसे इनके बाप ने इनसे कह दिया था (मिस्र में) दाख़िल हुए, तो यह एहतियात ख़ुदा के मुक़ाबिले में इनके कुछ भी काम नहीं आ सकती थी। वह तो याक़ूब का एक दिली अरमान था, जिसको उन्होंने (अपने नज़दीक इस तरह पर) पूरा किया। और इसमें शक नहीं कि याक़ूब अज़ बस्कि हमने उनको तालीम फ़र्माया था, एक इल्म रखते थे-(जो सबको नहीं हुआ करता)। मगर अक्सर लोग (इस राज़ से) वाक़िफ़ नहीं ० और जब (यह लोग दुबारा) यूसुफ़ के पास गए, तो यूसुफ़ ने अपने (मा जाए) भाई (बिन यामीन) को अपने पास बिठा लिया। (और चुपके से उससे) कहा कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ़) हूँ। सो जो (बद सुलूकी यह लोग तुम्हारे साथ) करते रहे हैं, उसका कुछ रंज न करो ० फिर जब (यूसुफ़ ने) भाइयों को उनका सामान (ग़ल्ला) बहम पहुँचा दिया, तो अपने भाई (बिन यामीन) की बोरी में (अपना) पानी पीने का कटोरा रखवा दिया। फिर (उनके ईमा से) एक पुकारने वाले ने पुकारा कि क़ाफ़िले वालो ! हो न हो तुम ही चोर हो ० यह लोग पुकारने वालों की तरफ़ फिर कर पूछने लगे कि (क्यों जी !) तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई है ० उन्होंने कहा, शाही पैमाना हमको नहीं मिलता और जो शख़्स उसे ला हाज़िर करे, उसको एक बार शुतर (ग़ल्ला इनआम)। और मैं उस (इनआम) का ज़ामिन ० (यह सुन कर यह लोग) लगे कहने कि ब ख़ुदा तुम तो जानते हो कि हम (तुम्हारे) मुल्क में फ़साद करने की ग़रज़ से नहीं आये और चोरी हमारा शेवा (भी) नहीं ० (कटोरे के ढूंडने वाले) बोले कि (भला) अगर तुम झूठे निकले, तो चोर की क्या सज़ा ? ० वह लगे कहने कि चोर की सज़ा यह कि जिसकी बोरी में कटोरा निकले, वह आप अपनी सज़ा—(यानी कटोरे के बदले बादशाह का ग़ुलाम)--

---

और जब वह अपने बाप के (समझाये हुए तरीक़े और) आज्ञानुसार (मिस्र शहर में अलग अलग दरवाज़ों से) दाख़िल हुए, तो (उनके बाप का समझाया हुआ) वह (तरीक़ा) अल्लाह (के फ़ैसले) से इन्हें न बचा सका। परन्तु याक़ूब के हृदय में (बेटों के प्रेम का एक) भाव था, जिसे (वे इख़्तियार) वह प्रकट कर बैठे। अन्यथा (इसमें) सन्देह नहीं कि याक़ूब विद्वान थे (और उपाय के प्रभाव और भाग्य के लिखे को अच्छी तरह समझते थे) क्योंकि हमने उनको शिक्षा दी थी। लेकिन और बहुत से लोग (ऐसे हैं कि इस विद्या के भेद को) जानते (ही) नहीं ॥

और जब यह (सब के सब) यूसुफ़ के पास पहुँचे (और सूचना दी कि वादे के अनुसार अब की बार हम बिन यामीन को अपने साथ ले आये हैं) तो यूसुफ़ ने (जवाब दिया कि तुमने बहुत अच्छा किया और सबको सत्कार पूर्वक ठहराया। और) अपने भाई (बिन यामीन) को (ठहरने के लिये ख़ास) अपने पास जगह दी (और उनको सान्त्वना व तसल्ली देने के लिये उनसे) कह दिया कि मैं तुम्हारा (खोया हुआ) भाई (यूसुफ़) हूँ। अतएव यह (हमारे सौतेले भाई) जो कुछ (हमारे साथ) कर चुके हैं, तुम (अब) उसका शोक न करो। (क्योंकि अब अल्लाह ने हमारी दशा पर अपनी दया करदी और अब हम इनके अत्याचार से बिलकुल सुरक्षित हो गये) ॥

संक्षिप्त वृतान्त यह है कि जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को उनका असबाब तैयार कर (के दे) दिया (अर्थात उनका अन्न बोरियों में भरवा दिया) तो अपने भाई (को अपने पास रोक लेने के लिये एक उपाय किया। और वह यह कि उस) के कजावे में (अपना) पानी पीने का कटोरा रखवा दिया। (और जब सब भाई अपने अन्न की बोरियाँ अपने ऊँटों पर लदवा कर चले, तो) फिर (यूसुफ़ की आज्ञानुसार कुछ लोग उनके पीछे दौड़े और उनमें से) किसी पुकारने वाले ने पुकार कर कहा कि ऐ क़ाफ़िले वालो ! (ठहरो)। निश्चित रूप से तुम चोर हो (बिना तलाशी दिये ख़बरदार ! जो आगे बढ़े) ॥

(क़ाफ़िले वाले चोरी का अपराध सुन कर रुके और सन्नाटे में आ गये)। और उनकी तरफ़ मुंह करके बोले (कि) क्या खो बैठे हो (जो इतना ग़ुल शोर मचाते हो) ॥

उन्होंने कहा कि बादशाह का कटोरा हमसे जाता रहा है (उसका कहीं पता नहीं लगता। और उनमें से एक मनुष्य ने घोषणा की-कि) जो इस (कटोरे) को (ढूंढ) लाये (गा) उसके लिये एक बोझ ऊँट (अन्न का इनआम) है। और मैं उस-(इनआम के दिलवाने) का ज़िम्मेदार हूं ॥

(यह वार्तालाप सुन कर) यूसुफ़ के भाइयों ने कहा (सज्जनो ! हम) अल्लाह की शपथ (खाते हैं। और) तुम (भी) अच्छी तरह जानते हो कि हम (इस) ज़मीन में (दंगा) फ़साद (या चोरी चकारी) करने नहीं आये और हम चोर नहीं हैं ॥

पीछा करने वालों ने कहा कि (अच्छा) अगर तुम झूठे निकले (और तुममें से किसी के पास से वह कटोरा निकल आया, तो) फिर इसका क्या दण्ड ॥

भाइयों ने कहा कि उसका दण्ड (यह है कि) जिसके कजावे में से वह (कटोरा) निकले, वह (ग़ुलाम बना लिया जावे। बस यही) इसका दण्ड है—

كَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ
وِعَاۤءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَاۤءِ اَخِيْهِ ؕ
كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ
اَخَاهُ فِىْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَاۤءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ
مَّنْ نَّشَاۤءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝ قَالُوْۤا
اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ
فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِىْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ
اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ۝
قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ
اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝
قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا
عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝ فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ
خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ

हम तो (अपने हाँ) ज़ालिमों (यानी चोरों) को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं ० आख़िरकार यूसुफ़ ने अपने भाई (बिन यामीन) के शलीते से पहिले दूसरे भाइयों के शलीतों की तलाशी लिवानी शुरू की। फिर (सबके बाद) अपने भाई (बिन यामीन) के शलीते से कटोरा निकलवाया। यूं हम ने यूसुफ़ को तदबीर बताई (वर्ना) बादशाह (मिस्र) के क़ानून के रूसे वह अपने भाई को नहीं रोक सकते थे। मगर यह कि ख़ुदा को मन्ज़ूर होता, (तो कोई दूसरी तदबीर निकलती)। हम जिसको चाहते हैं, (हुस्न तदबीर में) उसके दर्जे बुलन्द कर देते हैं। और (दुनिया में) हर एक दाना से बढ़ कर (दूसरा) दाना (मौजूद) है ० (जब बिन यामीन के शलीते से कटोरा बरामद हुआ, तो भाई) लगे कहने कि अगर इसने चोरी की हो, तो (तअज्जुब की बात नहीं, इससे) पहिले इसका (हक़ीक़ी) भाई (यूसुफ़) भी चोरी कर चुका है। तो यूसुफ़ ने (इसका जवाब देना चाहा, मगर) उसको अपने दिल में रक्खा और उन पर उसको ज़ाहिर न होने दिया। (और कहा तो यह) कहा कि तुम बड़े ख़ाना ख़राब (यानी बुरे लोग) हो। और वह जो (इसके भाई की चोरी का हाल) बयान करते हो, ख़ुदा ही इसको ख़ूब जानता होगा ० (इस पर यह लोग) लगे कहने कि ऐ अज़ीज़ ! इस (बिन यामीन) के वालिद बहुत बूढ़े (आदमी) हैं (और उनको इससे परले दर्जे की महब्बत है) तो आप (मेहरबानी फ़र्मा कर) इसकी जगह हममें से किसी को (अपनी ख़िदमत में) रख लीजिये। हमको तो आप बड़े नेक (दिल सर्दार) मालूम होते हैं ० (यूसुफ़ ने) कहा कि अल्लाह पनाह दे कि हम उस शख़्स को छोड़ कर, जिसके पास हमने अपनी चीज़ पाई है, किसी दूसरे शख़्स को पकड़ रक्खें। ऐसा करें, तो हम (बड़े ही) ज़ालिम ठैरे ० तो जब (यह लोग) यूसुफ़ से ना उम्मीद हो गये (कि यह मानने वाले नहीं) तो (सर गोशी और) मशवरा करने के लिये अलग हो बैठे। (आख़िर) जो सबमें बड़ा था, उसने कहा कि (भाइयो !) क्या तुमको मालूम नहीं कि वालिद साहब ने—

हम (ऐसे कृतघ्नों और) ज़ुल्म (व ज़्यादती) करने वालों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं ॥

(अभिप्राय यह है कि जब दण्ड के निश्चित हो जाने के पश्चात उन लोगों को यूसुफ़ के पास ले जाया गया) तो यूसुफ़ ने अपने भाई (बिन यामीन) के कजावे (की तलाशी लेने) से पहिले उनके (अर्थात् सौतेले भाइयों के) कजावों की तलाशी लेनी आरम्भ की। फिर (सबसे अन्त में अपने भाई के कजावे की तलाशी ली और) उस (कटोरे) को अपने भाई के कजावे से निकाल लिया। (और यूसुफ़ ने बिन यामीन को रोकने की जो तरकीब की थी, सो ठीक की थी। क्योंकि) हमने यूसुफ़ को इसी प्रकार हीला करने को कहा था। (अन्यथा मिस्र के) बादशाह के क़ानून में (यूसुफ़) अपने भाई को (चोरी की सज़ा में रोक लेने का) हक़ नहीं रखते थे। (इस लिये कि मिस्र में चोर को ग़ुलाम नहीं बनाया जाता था)। मगर (अस्ल बात) यह (है) कि (जब) अल्लाह (ही) की इच्छा हो (तो मनुष्य कठिन से कठिन काम करने के लिये कोई न कोई तरकीब सोच ही लेता है। निस्सन्देह) हम (बुद्धि व युक्ति में) जिसके चाहते हैं, पद उच्च कर देते हैं। और (यह हमारी शक्ति का एक छोटा सा चमत्कार है कि दुनिया में) एक से एक बढ़ा हुआ समझदार (मौजूद) है ॥

(जब उन्होंने देखा कि बिन यामीन के कजावे में से कटोरा निकल आया, तो बहुत लज्जित हुए। और अपनी लज्जा मिटाने और अपने ऊपर से इस दोष को दूर करने के लिये) कहने लगे कि अगर इसने चुराया है, तो (कुछ आश्चर्य नहीं। क्योंकि कुछ दिन) पहिले इसके (सगे) भाई (यूसुफ़) ने भी चोरी की थी। यूसुफ़ ने (उनकी यह बात सुनी और उन्हें कोई जवाब नहीं दिया। और) इस (सारे मामले) को अपने दिल (ही) में छिपाये रक्खा और उनके सामने उसे ज़ाहिर नहीं किया। (मगर दिल ही दिल में) कहने लगे कि (शरारत के) दर्जे में (तो) तुम (ही) सबसे निकृष्ट हो। और तुम जिन (बातों) के साथ (हम दोनों भाइयों को) सान रहे हो, उस (की वास्तविकता) को अल्लाह ही ख़ूब जानता है ॥

(कहने को सौतेल पन के कारण बिन यामीन के विषय में जो कुछ मुंह में आया, यूसुफ़ के सौतेले भाइयों ने कह दिया। लेकिन जब उन्हें अपने बाप के वादे का ख़याल आया, तो बड़े परेशान हुए। और ख़ुशामद के तौर पर यूसुफ़ से) कहने लगे ऐ सरदार ! इसके बाप बहुत बूढ़े (आदमी) हैं (और उनको इससे अत्यन्त प्रेम है। वह इसे हमारे साथ न देखेंगे, तो अपना बुरा हाल कर लेंगे)। इस लिये तुम इसकी जगह हम में से किसी को (अपना ग़ुलाम बनाकर) रख लो। (हमें आशा है तुम हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार करोगे। क्यों कि) तुम हमको (सूरत ही से) नेक नज़र आते हो ॥

यूसुफ़ ने कहा अल्लाह की शरण ! (हमसे यह नहीं हो सका कि) हम (निर्दोष को) पकड़ें। मगर जिसके पास हमने अपनी चीज़ देख ली (उसे हरगिज़ नहीं छोड़ेंगे। अगर हम ऐसा करने लगें कि निरपराधी को पकड़ें और अपराधी को छोड़दें) तो (फिर तो) हम (बहुत बड़े) ज़ालिम हुए ॥

संक्षिप्त यह है कि जब यह लोग यूसुफ़ से (बिल्कुल) निराश हो गये (और उन्होंने समझ लिया कि बिन यामीन की मुक्ति असम्भव है) तो (वहां से उठ खड़े हुए। और) अलग जाकर आपस में (कुछ) परामर्श करने लगे (कि अब क्या किया जाय। अथवा वापिस जाया जाय या कोई दूसरा उपाय बिन यामीन को छुड़ाने का किया जाय। अधिक लोग वापिस जाने का मशवरा देते थे। लेकिन) उनमें से (सबसे) बड़े ने कहा कि (भाइयो ! बाप के पास किस मुंह से जाओगे)। तुम्हें कुछ मालूम (भी) है कि तुम्हारे बाप ने—

قد اخذ عليكم موثقا من الله ومن قبل ما فرطتم
في يوسف فلن ابرح الارض حتى ياذن لي ابي
او يحكم الله لي وهو خير الحكمين ۝ ارجعوا الى
ابيكم فقولوا يابانا ان ابنك سرق وما
شهدنا الا بما علمنا وما كنا للغيب حفظين
وسئل القرية التي كنا فيها والعير التي
اقبلنا فيها وانا لصدقون ۝ قال بل سولت
لكم انفسكم امرا فصبر جميل عسى الله
ان ياتيني بهم جميعا انه هو العليم الحكيم ۝
وتولى عنهم وقال يا سفى على يوسف وابيضت
عينه من الحزن فهو كظيم ۝ قالوا تالله
تفتؤا تذكر يوسف حتى تكون حرضا او تكون
من الهلكين ۝ قال انما اشكوا بثي وحزني الى الله

(बिन यामीन के बारे में) ख़ुदा की क़सम लेकर तुमसे पक्का क़ौल लिया है और (इससे) पहिले यूसुफ़ के हक़ में तुमसे एक तक़्सीर सर्ज़द हो ही चुकी है। तो (भाइयो!) जब तक मुझको वालिद साहब इजाज़त (न) दें या (जब तक) ख़ुदा मेरे लिये कोई और सूरत (न) निकाले, मैं तो इस जगह से टलने वाला नहीं। और ख़ुदा ही सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है० तो (भाइयो!) तुम (सब) वालिद साहब की ख़िदमत में लौट जाओ और (उनसे जाकर) अर्ज़ करो कि अब्बा जान! आप के साहबज़ादे (बिन यामीन) ने चोरी की। हम (आप से) वही बात अर्ज़ करते हैं, जो हमको (मौक़े पर) मालूम हुई है। और (वह जो हमने बिन यामीन की हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया था, तो कुछ) हमको ग़ैब की ख़बर तो थी नहीं (कि यह चोरी करेगा)० और आप उस बस्ती (यानी मिस्र के लोगों) से दर्याफ़्त कर लीजिये जहां हम थे और (नीज़) क़ाफ़िले से, जिसमें हम आए हैं। और हम बिलकुल सच कहते हैं० (तो जब भाइयों ने जाकर याक़ूब से इसी तरह बयान किया, तो सुन कर) बोले (कि बिन यामीन ने तो चोरी नहीं की) बल्कि तुम अपने दिल से एक बात बना कर लाए हो। तो (ख़ैर) सब्र व शुक्र—(मुझको तो) उम्मीद है कि अल्लाह मेरे सब लड़कों को मेरे पास ला मौजूद करेगा, क्योंकि वह (सारी हक़ीक़त से) वाक़िफ़ (और) हिकमत वाला है० और याक़ूब बेटों (के पास) से (उठ कर) अलग जा बैठे और (यूसुफ़ को याद करके) लगे कहने हाय यूसुफ़! और (हर चन्द ज़ब्त करते थे,मगर) मारे ग़म के उन की दोनों आँखें सफ़ेद पड़ गई थीं और वह (जी ही जी में) घुटा करते थे० (बाप का यह हाल देख कर) बेटे लगे कहने कि ब ख़ुदा तुम तो सदा यूसुफ़ ही की यादगारी में लगे रहोगे। यहाँ तक कि (झुर झुर कर या तो) अज़ कार रफ़्ता हो जाओगे या हलाक ही जाओगे० (याक़ूब ने) कहा (मैं तुमसे तो कुछ नहीं कहता) जो परेशानी और रंज मुझको है, उसकी फ़र्याद ख़ुदा ही से करता हूँ—

अल्लाह की शपथ देकर तुमसे पक्का वादा ले लिया था (कि बिन यामीन को कहीं छोड़ कर न आना)। और इस (बिन यामीन की घटना) से पहिले तुम यूसुफ़ के मामले में (कितना बड़ा) अपराध कर चुके हो (कि आज तक बाप के दिल पर उसका दुख शेष है। ऐसी दशा में यदि तुम जाना चाहते हो, जाओ)। मैं तो जब तक कि मेरे बाप मुझको आज्ञा न दें, या (मेरा) अल्लाह कोई फ़ैसला मेरे लिये न करदे, कभी इस स्थान से पैर न हटाऊंगा। और (मुझे विश्वास है कि मेरा पालन कर्त्ता ज़रूर इस बात का यथा शीघ्र फ़ैसला कर देगा, क्योंकि) वह सर्वोत्तम न्यायकारी है॥

(मैं यहीं ठहरता हूँ और) तुम अपने बाप के पास वापिस जाओ। और (उनसे) अर्ज़ करो कि ऐ बाप! तुम्हारे बेटे (बिन यामीन) ने चोरी की (थी, इस कारण वह गिरिफ़्तार कर लिये गये और हमारे साथ वापिस न आ सके)। और (कहना कि) हमने जो कुछ (अपनी आँखों से देखा और स्वयं) मालूम किया—वही निवेदन कर रहे हैं। (अर्थात् हमने बादशाही कटोरा बिन यामीन के कजावे में से निकलते हुए अपनी आँखों से देखा है। किसी की सुनी सुनाई बात पर या झूठ मूठ उन पर चोरी का दोष नहीं लगा रहे)। और (कहना कि इसमें तनिक सन्देह नहीं कि हमसे प्रतिज्ञा का पालन न हो सका, परन्तु विवश हैं। क्योंकि) हमको (इस) अदृष्टि विपत्ति का (बिलकुल) ध्यान न था। (अन्यथा हम बिन यामीन को अपने साथ ले जाने की इच्छा ही न करते)॥

और (कहना कि ऐ बाप! अगर तुमको हमारा विश्वास न हो, तो) इस बस्ती (के रहने वालों अर्थात् मिस्र के निवासियों) से पूछ लो, जिसमें हम (अन्न लेने गये) थे। और (यह कि) उस क़ाफ़िले से (दरयाफ़्त करलो) जिसमें (शामिल होकर) हम (यहाँ) आये हैं। और (अगर किसी से भी न पूछ सको, तो हमारा विश्वास करो)। हम (अपनी बात में) बिलकुल सच्चे हैं॥

(अभिप्राय यह है कि बड़े भाई को मिस्र में छोड़ कर सब अपने बाप के पास आये। और समस्त वृतान्त उनसे वर्णन किया। याक़ूब को तो पहिले ही से उन पर विश्वास न था)। उन्होंने कहा (कि तुम झूठे हो। बिन यामीन चोरी के अपराध में गिरिफ़्तार नहीं हुआ)। बल्कि तुमने (उसके साथ कुछ दुर्व्यवहार किया है। और अपने आप को निरपराध सिद्ध करने के लिये) तुम्हारे दिल ने एक बात घड़ी है। ख़ैर (अब धैर्य व सन्तोष के अतिरिक्त कोई चारा नहीं)। सन्तोष (ही सबसे) उत्तम (उपाय) है। (इससे) आशा है कि (मेरा) अल्लाह (कभी न कभी मेरे ऊपर अवश्य दया करेगा। और) उन सबको मेरे पास ले आयेगा (जिनके लिये मैं उत्कंठित हूँ)। क्योंकि वह (मेरी चिन्ता और तड़पन से) अभिज्ञ (और बड़ा युक्तिवान व) बुद्धिमान है॥

और (यह कर याक़ूब ने) उन (की तरफ़) से मुंह फेर लिया। और (इस नये दुःख के कारण यूसुफ़ को भी याद करने लगे। और) कहने लगे हाय यूसुफ़ अफ़सोस! (तू कहां है)। और दुःख (की अधिकता) के कारण (रोते रोते) उनकी दोनों आँखें सफ़ेद (और ज्योति हीन) हो गई थीं (अर्थात वह अन्धे हो गये थे)। और वह (अन्दर ही अन्दर कुढ़ा और) घुटा करते थे॥

(याक़ूब की यह बेक़रारी देख कर उनके बेटे क्रोध में भर गये और) कहने लगे (ऐ बाप!) ख़ुदा की क़सम, (नहीं मालूम तुमको क्या हो गया। तुम यूसुफ़ को हमेशा याद करते रहोगे। और) यूसुफ़ की याद कभी नहीं छोड़ोगे, जब तक कि तुम (बिलकुल) कमज़ोर या मर न जाओ॥ याक़ूब ने कहा, कि मैं तो अपनी बेक़रारी और अपने शोक (व दुःख) को केवल अल्लाह के सामने प्रकट करता हूँ। (और उसीसे प्रार्थी हूँ कि वह मेरे हाल पर दया करे। तुम्हारी इसमें क्या हानि है)—

وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ● يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا
فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ
رَّوْحِ اللّٰهِ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ
الْكٰفِرُوْنَ ● فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ
مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ
فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا اِنَّ اللّٰهَ
يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ● قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ
بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ● قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ
يُوْسُفُ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَاۤ اَخِىْ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا
اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ●
قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ●
قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ
اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ● اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِىْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ

और .ख़ुदा ही की तरफ़ से मुझको वह बातें मालूम हैं, जो तुमको मालूम नहीं० लड़को ! (एक बार फिर मिस्र) जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की टोह लगाओ और .ख़ुदा की रहमत से ना उम्मीद न हो, क्योंकि .ख़ुदा की रहमत से वही लोग ना उम्मीद हुआ करते हैं, जो काफ़िर हैं ० (चुनांचे इन में से चन्द आदमी फिर मिस्र गये)। तो जब (यह लोग तीसरी बार) यूसफ़ तक पहुँचे, तो (जाकर) लगे गिड़गिड़ाने कि ऐ अज़ीज़ ! हमको और हमारे अह्ल (व अयाल) को (क़हत की वजह से बड़ी ही) तक्लीफ़ पहुँच रही है। और हम कुछ थोड़ी सी पूंजी लेकर आये हैं, तो हमको पूरा ग़ल्ला दिलवा दीजिये ! और (बक़द्र क़ीमत नहीं, बल्कि) हमको अपनी ख़ैरात दीजिये, क्योंकि अल्लाह ख़ैरात करने वालों को (अच्छा) बदला देता है ० (अब तो यूसुफ़ से भी न रहा गया और) लगे कहने कि तुमको कुछ याद भी है कि जिस वक़्त तुम जिहालत पर उतारू थे, तो तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या कुछ किया था ० (इस कहने से भाइयों को तनब्बोह हुआ और) लगे कहने क्या वाक़े में तुम ही यूसुफ़ हो ? यूसुफ़ ने कहा (हाँ) मैं ही यूसुफ़ हूँ। और यह (बिन यामीन) मेरा ही भाई है। हम पर अल्लाह ने (बड़ा ही) फ़ज़्ल किया। बेशक जो (अल्लाह से) डरता और (मुसीबत पड़े पर) सब्र करता (रहता) है, तो अल्लाह (ऐसे) नेकी करने वालों के अज्र को ज़ाए नहीं होने दिया करता ० (वह) बोले ब.ख़ुदा कुछ शक नहीं कि तुमको अल्लाह ने हम पर (बड़ी) बर्तरी दी और बेशक हम ही .क़ुसूरवार थे ० यूसुफ़ ने कहा अब तुम पर कुछ इलज़ाम नहीं, (मैं ने माफ़ किया और) .ख़ुदा (भी) तुम्हारे .क़ुसूर माफ़ करे। और वह सब मेहर्बानों से बड़ा मेहर्बान है ० (तुम्हारे कहने से मालूम हुआ कि वालिद साहब की आँखें जाती रही हैं, तो) मेरा यह कुरता ले जाओ और–

और मैं जितना अल्लाह की बातों को जानता हूँ, तुम नहीं जानते ॥

ऐ मेरे लड़को ! (मुझे अल्लाह की सेवा में प्रार्थना करने दो और) तुम (एक बार फिर मिस्र) जाओ । (और) फिर (वहां पहुँच के) यूसुफ़ और उसके भाई का पता चलाओ। और अल्लाह की ओर से निराश न हो। निस्सन्देह अल्लाह की ओर से वही लोग निराश होते हैं, जो काफ़िर हैं ॥

(अभिप्राय यह है कि बाप की आज्ञानुसार यह सब फिर मिस्र गये और अन्न भी चूंकि समाप्त हो चुका था, इस लिये उसी के मोल लेने को यूसुफ़ से भेंट करने का साधन बनाया)। अतएव जब यह उनके पास पहुँचे, तो कहने लगे-ऐ सर्दार ! (अबके) हमें और हमारे घर वालों को (अकाल के कारण बड़ा) कष्ट हुआ। और (हमारे पास रुपया पैसा और अन्न कुछ भी बाक़ी नहीं रहा)। हम कुछ थोड़ी सी पूंजी (अर्थात् ज़रा सा ऊन व पनीर) लेकर आये हैं। (इसे) तो तुम (ले लो, लेकिन) हमको (अन्न की) पूरी मात्रा देदो। और (यह न समझो कि हम तुमको उसका मूल्य दे रहे हैं, बल्कि) हमें ख़ैरात (व दान) दे दो। विश्वास रक्खो-दान देने वालों को अल्लाह तआला (बहुत अच्छा) फल प्रदान करता है ॥

(उनकी परेशानी और घर वालों की तकलीफ़ का हाल सुन कर यूसुफ़ बेचैन हो गये। और अपना परिचय देने के लिये उनसे) कहा. तुम्हें ख़बर है कि तुमने (उस समय) यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या (क्या कुछ) किया था ? जब कि तुमको समझ न थी (और द्वेषाग्नि ने तुम्हारी बुद्धि को बिलकुल ख़राब कर रक्खा था) ॥

(इस सवाल से वह समझ तो गये, जिसे हम मिस्र का सर्दार समझे हुए थे, वह हमारा भाई यूसुफ़ है। परन्तु विशेष जांच करने के लिये) उन्होंने कहा कि क्या वास्तव में तुम ही यूसुफ़ हो ? उन्होंने कहा हाँ, मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई (बिन यामीन) है। (हमारे) अल्लाह ने हम पर (अपनी) मेहर्बानी की। निस्सन्देह जो अल्लाह से डरता और (विपत्ति के समय) धैर्य्य रखता है, तो अल्लाह तआला (ऐसे) नेक लोगों का पुरस्कार (कभी) व्यर्थ नहीं जाने देता। (और उन पर लोक व परलोक में अपनी कृपा करता और फल दिया करता है)॥

(यूसुफ़ को पहिचान कर यह लोग अपने मन में बहुत लज्जित हुए। और) कहने लगे, अल्लाह की शपथ, अल्लाह तआला ने तुमको हम पर (बड़ी) श्रेष्ठता (और महानता) प्रदान की। और (तुम्हारा स्वप्न बिलकुल सच्चा निकला)। हम (तुम्हारे सरासर) अपराधी हैं ॥

यूसुफ़ ने कहा कि आज तुम पर कोई अपराध नहीं (तुमने मेरे साथ जो कुछ किया था, मैंने सब माफ़ कर दिया। और मेरी प्रार्थना है कि) अल्लाह तआला (भी) तुम्हें क्षमा करे। और (तुम पर अपनी कृपा व दया करे)। वह सर्वाधिक दयालु है ॥

(और मुझे यह मालूम करके बड़ा दुःख हुआ कि रोते रोते मेरे बाप की आँखें जाती रहीं। इस लिये मेरी इच्छा है कि अब तुम लोग उनके पास जाओ और सारा वृत्तान्त उनसे वर्णन करो। और अपने साथ) यह मेरा कुर्ता (भी) लेते जाओ। और उसे मेरे बाप के मुंह पर डाल दो–

इसको वालिद साहब के मुंह पर डाल दो कि वह देखने लगेंगे। और अपने तमाम ख़ानदान को मेरे पास ले आओ ० और क़ाफ़िला मिस्र से चला ही था कि उनके बाप (याक़ूब) ने कहना शुरू किया कि अगर मुझको सतरा बहतरा न बनाओ, तो (एक बात कहूँ कि) मुझको तो यूसुफ़ की महक आ रही है० (तो जो बेटे याक़ूब पास ठहरे रहे थे) वह लगे कहने कि ब ख़ुदा तुम तो (वही) अपने क़दीमी ख़ब्त में (मुब्तला) हो ० फिर जब (यूसुफ़ के ज़िन्दा सलामत होने की) ख़ुश ख़बरी देने वाला (याक़ूब पास) आ पहुँचा (आते के साथ यूसुफ़ का) कुरता याक़ूब के मुंह पर डाल दिया और उनको फ़ौरन दिखाई देने लगा। (अब याक़ूब ने बेटों से) कहा कि क्या मैं तुमसे नहीं कहा करता था कि मैं अल्लाह (की तरफ़) से वह (बातें) जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते ० (वह) बोले अब्बा जान ! (ख़ुदा से) हमारे क़ुसूर माफ़ कराइये। बेशक हम ही क़ुसूरवार थे ० (याक़ूब ने) कहा मैं अपने पर्वर्दिगार से एक वक़्त (ख़ास में) तुम्हारे क़ुसूरों की माफ़ी की दुआ करूँगा। बेशक वही बख़्शने वाला मेहर्बान है ० फ़िर जब (यह लोग आख़िरी बार) यूसुफ़ पास गये, तो यूसुफ़ ने अपने वालिदैन को (ताज़ीम देकर) अपने पास जगह दी। और (सबकी तरफ़ ख़िताब करके) कहा कि (शहर) मिस्र में आ दाख़िल हो। (और) ख़ुदा ने चाहा तो (तुम सब) अम्न (चैन) से रहोगे ० और (मिस्र के दस्तूर के मुताबिक़ यूसुफ़ ने) अपने वालिदैन को तख़्त पर ऊँचा बिठाया। और सब (उन वक़्तों के दस्तूर के मुताबिक़ यूसुफ़ की ताज़ीम के लिये) उनके आगे सजदे में गिर पड़े। और यूसुफ़ ने (अपना ख़्वाब याद करके अपने वालिद से) अर्ज़ किया कि अब्बा जान ! वह जो मैंने पहिले ख़्वाब देखा था, यह उसकी ताबीर है। मेरे पर्वर्दिगार ने (आज) उस (ख़्वाब) को सच कर दिखाया। और (इस के सिवा) उसने मुझ पर (और भी बड़े बड़े) एहसान किये हैं कि (बे किसी की सिफ़ारिश के) मुझको क़ैद से निकाला और—

عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ
وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ
يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ
ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ
عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْٓ
اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا
ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ
لَكُمْ رَبِّيْ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ فَلَمَّا دَخَلُوْا
عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ
اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ
وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ
رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا وَقَدْ
اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ

ع ٤

الْبَدْوِ

जिससे कि वह समाके हो जायं। और (फिर) तुम सब घर वालों को लेकर (यहीं) मेरे पास आ जाओ ॥

(अतएव उन लोगों ने इनका कुर्ता ले लिया) और (दल में सम्मिलित हो गये)। जब (इधर इनका) दल (शहर से) बाहर निकला, तो (उधर) याक़ूब ने (लोगों से) कहा, (भाइयो !) अगर तुम मेरी समझ को ख़राब न बताओ (और यह न कहो कि मुझे भ्रम हो गया है) तो (मैं तुमको बताऊं कि) मुझको यूसुफ़ की महक आ रही है ॥

लोगों ने कहा ख़ुदा की क़सम (यूसुफ़ तो यहां कहीं भी नहीं। वास्तव में) तुम (उसी) पुराने भ्रम में (लिप्त) हो ॥

फिर जब (यूसुफ़ के मिल जाने का) शुभ समाचार सुनाने वाला (यूसुफ़ का कुर्ता लेकर उनके पास) आया, तो उसने उस (कुरते) को (आते के साथ ही) उनके मुंह पर डाल दिया। (ख़ुदा की महिमा, कुरते के मुंह पर पड़ते ही) उनकी दृष्टिमें प्रकाश आ गया। (उस समय) उन्होंने (अपने लड़कों से) कहा क्यों ! मैं तुमसे न कहता था कि अल्लाह की ओर से मुझे वह बातें मालूम हो जाती हैं, जो तुम नहीं जानते ॥

उन्होंने कहा ऐ हमारे बाप ! (यह सब सच है। अब) तुम (भी हमारा अपराध क्षमा करदो। और अल्लाह से भी) हमारे लिये हमारे अपराध क्षमा करने की प्रार्थना करो। निस्सन्देह हम (अपने आचरणों की दृष्टि से बहुत बड़ी) भूल पर थे ॥

याक़ूब ने जवाब दिया (तुम हर तरह विश्वास रक्खो)। मैं अति शीघ्र (तुम्हारे पापों की) अपने पालन कर्त्ता से क्षमा चाहूँगा। निस्सन्देह वह (बड़ा) क्षमा करने वाला और दयालु है। (वह अवश्य तुम्हारे अपराध क्षमा कर देगा) ॥

(इसके बाद सब मिस्र की यात्रा के लिये तैयार हुये और उधर यूसुफ़ अपने प्रिय बन्धुओं और बुज़ुर्गों के स्वागत के लिये शहर के बाहर आये। और वहाँ एक बहुत बड़ा डेरा लगवाया)। फिर जब वह (सब) यूसुफ़ के पास जा पहुँचे, तो (वह बड़े प्रेम के साथ सब से मिले। और) उन्होंने अपने माता पिता को (बैठने के लिये ख़ास) अपने पास जगह दी। और (कुछ देर बात चीत करके सबसे) कहा, कि बिना किसी भय (व आतंक के) मिस्र (शहर) के अन्दर चलो। अगर अल्लाह ने चाहा (तो वहाँ अत्यन्त धैर्य्य व) शान्ति से रहोगे (किसी प्रकार का कष्ट न होगा) ॥

(अतः जब सब लोग मिस्र में दाख़िल हो गये) और (शहर के बाहर कोई भी बाक़ी न रहा, तो) यूसुफ़ ने (अपने ख़ास) तख़्त पर अपने माता पिता को (सबसे) ऊंचा बिठाया। (और अपने आप भी उनके पास बैठ गये। इस समय सबके दिल पर यूसुफ़ की प्रतिष्ठा ने इतना अधिक प्रभाव डाला कि) सब (के सब) उनके सामने सज्दे में गिर पड़े। (अर्थात् उनके सामने सबने शीस नवाया) और (यूसुफ़ को इस समय अपना स्वप्न याद आया, तो) उन्होंने कहा, ऐ बाप ! यह मेरे (उस) स्वप्न का फल है (जो मैंने कुछ दिन) पहिले (देखा था। अर्थात् यह कि चाँद सूरज और तारे मुझको शीस नवा रहे हैं। अब) मेरे पालन कर्त्ता ने उसको सच्चा कर दिखाया ॥

और (मेरा पालन कर्त्ता तो मेरी दशा पर बहुत ही दयालु है)। उसी ने उस समय भी मुझ पर कृपा की थी, जबकि उसने मुझ को (केवल अपनी शक्ति का चमत्कार दिखाकर) जेल से निकाला था और—

الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ
اِخْوَتِيْ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ ۝ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ
مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۣ
اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا
وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْغَيْبِ
نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا
اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۝ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ
بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا تَسْـَٔــلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ
هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ
عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ۝ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا
وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ۝ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ

४

(बावजूदे कि) मुझमें और मेरे भाइयों में शैतान ने (एक तरह का) फ़साद डलवा दिया था। उसके बाद बाहर से तुम सबको (मुझसे) ला मिलाया। बेशक मेरे पर्वर्दिगार को जो (कुछ करना) मन्ज़ूर होता है, वह उसकी तदबीर ख़ूब जानता है, क्योंकि वह (हर एक बात से) वाक़िफ़ (और) हिक्मत वाला है ० (इन सब मामिलात के बाद यूसुफ़ की तबीअत दुनिया से सेर हो गई और ख़ुदा से मिलने का शौक़ ग़ालिब आया, तो उन्होंने दुआ की कि) ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! तूने (अपनी मेहर्बानी से) मुझको हुकूमत में से भी हिस्सा दिया और बक़द्र मुनासिब मुझको (ख़्वाब की) बातों की ताबीर देनी भी सिखाई। ऐ आसमानों व ज़मीन के पैदा करने वाले ! दुनिया और आख़िरत (दोनों) में तूही मेरा कारसाज़ है। (तो अब) मुझको अपनी फ़रमांबर्दारी की हालत में (दुनिया से) उठाले और मुझको (अपने) नेक बन्दों में (लेजा) दाख़िल कर ० (ऐ पैग़म्बर !) यह चन्द ग़ैब की बातें हैं, जिनको हम वही के ज़रिये से तुम्हें मालूम कराते हैं। (और यह तुम्हारी सदाक़त की दलील है) वर्ना जिस वक़्त यूसुफ़ के भाइयों ने अपना मुसम्मम इरादा कर लिया था (कि यूसुफ़ को कुवें में डाल दें) और वह (उनके हलाक की) तदबीरें कर रहे थे, तुम तो उनके पास मौजूद न थे (कि यह हालात तुमको बतौर ख़ुद मालूम हो जाते) ० बाईं हमा अक्सर लोगों का हाल यह है कि तुम कितना ही चाहो, वह तो ईमान लाने वाले हैं नहीं ० हालाँकि तब्लीग़ रिसालत पर तुम इनसे कुछ मुआविज़ा भी नहीं माँगते। (और) क़ुर्आन (जो तुम सुनाते हो) दुनिया जहान के लिये (सर ता सर) नसीहत ही (नसीहत) है (और वह भी बे मुज़्द) ० और आसमान व ज़मीन में (ख़ुदा की क़ुद्रत की ऐसी) कितनी निशानियाँ हैं, जिन पर से लोग होकर गुज़र जाते हैं और वह उनकी कुछ पर्वाह नहीं करते० और अक्सर लोगों का हाल यह है कि ख़ुदा को मानते हैं और शिर्क भी करते जाते हैं ० तो क्या इससे मुत्मइन हो गए हैं कि इन पर अज़ाब ख़ुदा की कोई आफ़त आ पड़े कि (सब पर) छा जाय—

(यह भी उसी की दया है कि) मेरे और मेरे भाइयों के बीच शैतान ने (ऐसा) झगड़ा डाला था (कि जिसके कारण सदैव के लिये मैं अपने समस्त प्रिय जनों से बिछुड़ गया था। लेकिन) इसके बाद भी वह (एक अत्यन्त दूर) गाँव से तुम सबको (मेरे पास) ले आया (और मुझसे मिला दिया)। निस्सन्देह मेरा पालन कर्ता जो कुछ (करना) चाहता है, उसका (ख़ूब) उपाय करता है। निस्सन्देह वह (बड़ा) बुद्धिमान (और बड़ा) युक्ति वाला है ॥

(फिर कुछ समय के बाद यूसुफ़ ने ख़ुदा के दरबार में प्रार्थना की, कि) ऐ मेरे पालन कर्ता ! तूने मुझको कुछ शासन (भी) दिया और (स्वप्न की) बातों का फल कहना (भी) सिखाया। (और) ऐ समस्त सृष्टि के स्वामी ! तू ही लोक व परलोक में मेरा स्वामी (व सहायक) है। (अतएव मेरी तुझी से यह प्रार्थना है कि अब तू) मेरा अन्त (ईमान व) इस्लाम पर करदे। और (नबियों व) संयमी मनुष्यों में मुझे मिलादे (अब मेरा दुनिया से जीव उकता गया) ॥

(ऐ रसूल !) यह (यूसुफ़ की कहानी) अदृष्टि की सूचनाओं में से (एक सूचना) है कि (पहिले इसका तुमको बिलकुल ज्ञान न था। अब) वही द्वारा हम उसे तुमको सुना रहे हैं (जिससे कि तुम्हारे अल्लाह के सन्देशिया होने के विरोधियों को तुम्हारे सच्चे नवी होने) और (तुम पर वही के उतरने का विश्वास हो। क्योंकि यह बात प्रगट है कि) जब यूसुफ़ के भाई अपनी (इस) बात पर (कि यूसुफ़ को कुवें में डाल दिया जाय) सहमत हुये थे (और उन्हें हानि पहुँचाने के लिये तरह २ के) उपाय कर रहे थे, उस समय तुम (तो) उनके पास (मौजूद) थे ही नहीं (कि जो तुम्हें सब बातें अपने आप ही बिना वही उतरे मालूम हो जातीं) ॥

(अगर न्याय की दृष्टि से देखा जावे, तो तुम्हारा इस क़िस्से का सुनाना तुम्हारे नबी और रसूल होने) और (तुम्हारे साहबे वही होने का एक स्पष्ट प्रमाण है। परन्तु यह होते हुये भी दुनिया के) बहुधा लोग (तुम पर) ईमान न लायेंगे, चाहे तुम (उनके ईमानदार बनने की कितनी ही) कामना करो ॥

और तुम इनसे इस (क़ुर्आन सुनाने) पर कुछ मंजूरी नहीं मागते (कि उसके मिलने न मिलने की तुम्हें चिन्ता हो)। यह (क़ुर्आन) तो संसार के लिये (एक) शिक्षा है। (जो इसे मानेगा, स्वयं लाभ उठायेगा। और जो न मानेगा, स्वयं हानि उठायेगा) ॥

और आकाशों और पृथ्वी में बहुत से ऐसे चिन्ह (मौजूद) हैं कि जिनके पास से यह (काफ़िर दिन रात) गुज़रते (और प्रति दिन उनकी परीक्षा करते) रहते रहते हैं। (लेकिन मूर्खता के कारण) उन (की ओर) से बेपर्वाह रहते हैं (और उन पर ध्यान देकर ख़ुदा के एक होने की शिक्षा ग्रहण नहीं करते) ॥

और उनमें से बहुधा (ऐसे) हैं, जो अल्लाह को (तो) मानते हैं। मगर (इस तरह कि साथ २) शिर्क भी करते (रहते) हैं ॥

तो क्या (ऐ रसूल !) यह मनुष्य (अपने इसी कुफ़्र व शिर्क के भरोसे पर) इससे (बिल्कुल) निर्भय हो गये कि (या तो इसी संसार में) उन पर ख़ुदा के अज़ाब की (ऐसी) विपत्ति आ जाय, जो (उनको पूरी तरह) घेर ले—

या एक दम से इन पर क़यामत आ जाय और इनको ख़बर भी न हो ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो मेरा तरीक़ तो यह है कि (सबको) ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हूँ । मैं और जो लोग मेरे पैरो हैं (वह,हम सब दीन के एक) माक़ूल रस्ते पर हैं, (जिसको हर शख़्स समझ सकता है) । और अल्लाह (की ज़ात) पाक है और मैं शिर्क करने वालों में नहीं हूँ० और (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुमसे पहिले भी बस्तियों ही के रहने वाले (लोग यानी) आदमी ही (पैग़म्बर बनाकर) भेजे थे कि हम उन पर वही नाज़िल किया करते थे। तो क्या (यह लोग) मुल्क में (कहीं) चले फिरे नहीं कि (अपनी आँखों से) देख लेते कि जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं (और उन्होंने पैग़म्बरों को झुठलाया था) उनका अंजाम कैसा हुआ । और कुछ शक नहीं कि जो लोग परहेज़गार हैं, उनके लिये आक़िबत का घर (इस दुनिया के चन्द रोज़ा घर से कहीं) बेहतर है । तो (लोगो !) क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते ० (पहिले लोग भी पैग़म्बरों को झुठलाते रहे) यहाँ तक कि जब पैग़म्बर ना उम्मीद हो गए और (बतक़ाज़ाए बशरीयत) उनको ऐसा वाहिमा गुज़रा कि (कहीं किसी वजह से) हमारे साथ वादा ख़िलाफ़ी (तो नहीं) की गई, तो (ऐन वक़्त पर) हमारी मदद उनके पास आ पहुँची (और अज़ाब मौऊद आ नाज़िल हुआ) । तो जिसको हमने चाहा बचा दिया और गुनहगार लोगों (के सर पर) से तो हमारा अज़ाब (किसी तरह पर) टल ही नहीं सकता ० (इसमें) शक नहीं कि अक़्ल वालों के लिये इन लोगों के हालात में (बड़ी) इब्रत है। यह (क़ुर्आन) कोई बनाई हुई बात तो है नहीं, बल्कि जो (आस्मानी किताबें) इस (के नुज़ूल) से पहिले (मौजूद) हैं, उनकी तस्दीक़ (करता) है। और इसमें उन लोगों के लिये, जो ईमान वाले हैं, हर चीज़ का तफ़सीली बयान और हिदायत और रहमत है ०--

عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا
يَشْعُرُوْنَ ● قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى
بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ● وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا
رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا
فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
اتَّقَوْا اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ● حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْئَسَ الرُّسُلُ
وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ
وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ● لَقَدْ
كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ
مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ
الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى

ترجمہ:

या उनकी बे ख़बरी की दशा में उन पर क़यामत आ जाय (और उस समय उनसे उनके कर्मों का उत्तर माँगा जाय) ॥

(ऐ रसूल !) तुम (इन मनुष्यों को समझाओ कि इन बातों से सरासर तुम्हारी हानि है। यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो, तो यूसुफ़ के क़िस्से से शिक्षा ग्रहण करो । और उनसे) कहदो कि (यूसुफ़ की तरह) मेरा तरीक़ा भी वही है कि मैं (मूर्ति पूजा से घृणा करता हूँ। और तुम्हें) अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ । मैं और (जो) जो मेरे अनुयायी हैं (अल्लाह के एक होने के दावे में सच्चे और एक) स्पष्ट दलील पर (स्थिर) हैं । और (यह बिल्कुल सत्य है कि) अल्लाह तआला (शिर्क से) पाक है । और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ ॥

और (ऐ रसूल! काफ़िर जो यह चाहते हैं कि नबी फ़रिश्ता हो, तो) हमने तो तुमसे पहिले भी (जब कभी नबी भेजा है, तो) बस्तियों के रहने वाले मनुष्यों ही को (नबी बनाकर) भेजा (है । और) हम उन्हीं की ओर वही भेजते रहे हैं । तो (क्या यह मनुष्य हमारी इस आदत से बे ख़बर हैं ? और) क्या यह मनुष्य (कभी अल्लाह की) पृथ्वी पर चले (फिरे) नहीं कि (अपने नेत्रों से) उन मनुष्यों का परिणाम देख लेते, जो उनसे पहिले (नबियों व रसूलों को झूठा बताते) थे । और (लोगो ! अच्छी तरह मालूम करलो कि) परलोक श्रेष्ठ (वस्तु) है । (और वह) उन्हीं मनुष्यों के लिये है, जो (अल्लाह से) भय खाते रहे । (इन मनुष्यों को) क्या (हो गया है, जो) यह (इतनी स्पष्ट बात को भी) नहीं समझते ॥

(पिछले काफ़िरों के दुराचरणों की नौबत जब) यहाँ तक (पहुँच जाती थी) कि (उनके) रसूल (उनकी तरफ़ से बिल्कुल) निराश हो जाते और ख़याल करने लगते (थे) कि उनसे (काफ़िरों के मुक़ाबले में सहायता देने और काफ़िरों को दण्ड देने का) वादा झूठा किया गया, तो (उसी समय) हमारी सहायता उनके पास आ पहुँचती थी । (और हमारा अज़ाब उन पर आ मौजूद होता था) । फिर हम (उनमें से) जिसको (बचाना) चाहते थे, वह (उससे) बचा लिया जाता था । (और जिसको मुनासिब समझते थे, उसे अज़ाब में फँसा देते थे) । और पापी जाति (के सिर) से तो हमारा अज़ाब (किसी के टाले) नहीं टल सकता ॥

निस्सन्देह इन (पिछले लोगों) के वृतान्तों में बुद्धिमान मनुष्यों के लिये (बड़ी नसीहत और) इब्रत (व शिक्षा मौजूद) है । (और) यह (क़ुर्आन, जिसमें यह क़िस्से लिखे हुए हैं) कोई घड़ी हुई बात नहीं है। बल्कि (यह वह आस्मानी पुस्तक है कि) जो (किताबें) इस (के उतरने) से पहिले (उतर चुकी हैं-यह) उन (समस्त) की तस्दीक़ करने वाली (है) । और प्रत्येक (आवश्यक) बात की (इसमें) व्याख्या (मौजूद) है। और उन लोगों के लिये, जो ईमान्दार हैं-कृपा व शिक्षा का साधन है ॥

सूरत-रअद

मक्की यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ४३ आयतें और ६ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० अलिफ़ लाम मीम रा ० (ऐ पैग़म्बर !) यह किताब (यानी क़ुरआन) की (चन्द) आयतें हैं। और तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से जो कुछ तुम पर उतरा है, वह (सर ता सर) हक़ है, मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते ० अल्लाह वह (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने आस्मानों को बिदून किसी सहारे के ऊँचा बना खड़ा किया (जैसा कि) तुम देख रहे हो । फिर अर्श पर जा विराजा और चाँद और सूरज को ज़ेर किया कि हर एक वक़्त मुक़र्रर तक (अपने रस्ते लगा) चला जा रहा है। वही तमाम दुनिया का इन्तिज़ाम करता है। (और) ताकि तुम लोगों को अपने पर्वर्दिगार से मिलने का यक़ीन हो, (अपनी क़ुद्रत की) निशानियाँ तफ़सील के साथ बयान फ़र्माता है ० और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने ज़मीन को फैलाया और उसमें (बड़े बड़े) अटल पहाड़ और दरिया बना दिये। और (नीज़) उसमें हर तरह के फलों की दो दो क़िस्में पैदा कीं (मसलन मीठे और खट्टे। और वही) रात को दिन का पर्दा पोश करता है। बेशक इन बातों में उन लोगों के लिये, जो (ग़ौर व) फ़िक्र को काम में लाते हैं (क़ुद्रत ख़ुदा की बहुतेरी ही) निशानियाँ (मौजूद) हैं ० और ज़मीन में पास पास (कई) कई क़िते (होते) हैं और अंगूर के बाग़ और खेती और खजूर के दरख़्त, (जिनमें बाज़) दो-शाख़े (होते हैं)-

رَحْمَةً | سُورَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ ثَلٰثٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً | لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ۗ وَالَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ
رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ۝
اَللّٰهُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ
اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ
كُلٌّ یَّجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ یُدَبِّرُ الْاَمْرَ یُفَصِّلُ
الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝ وَهُوَ
الَّذِیْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِیْهَا رَوَاسِیَ وَاَنْهٰرًا ؕ
وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِیْهَا زَوْجَیْنِ
اثْنَیْنِ یُغْشِی الَّیْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ
لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَفِی الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ
وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِیْلٌ صِنْوَانٌ

सूरत-रअद

मक्की अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ४३ आयतें और ६ रुकूअ हैं ॥

अलिफ़ लाम् मीम रा—यह आयतें किताब (अर्थात क़ुरआन) की हैं। और जो (क़ुरआन) तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से तुम्हारी तरफ़ उतारा गया है, (वह बिल्कुल) सच्चा (और अपनी साहित्यिक सुन्दरता, उत्तमता और विषय की श्रेष्ठता के कारण इस योग्य) है (कि उसको आकाशीय पुस्तक स्वीकार किया जावे)। मगर अक्सर लोग (ऐसे हैं, जो इन स्पष्ट विशेषताओं के देखने के पश्चात भी उस पर) ईमान नहीं लाते। (और उसे अल्लाह की ओर से भेजा हुआ नहीं मानते) ॥

(और इनके अल्लाह की तरफ़ से भेजा हुआ न मानने का सब से बड़ा कारण यह है कि वह अल्लाह की व्यक्ति और गुणों से बेख़बर हैं। ऐ रसूल ! तुम इनको बता दो कि) अल्लाह वह है, जिसने आकाशों (को बनाकर) बिना किसी (अड़वाड़ और) थम के (इतना) ऊँचा (क़ायम) कर दिया (जितना कि) तुम उन्हें देखते हो। (और) फिर वह (अपने हुक्म जारी करने के लिये) अर्श पर विराजमान हुआ। और उसने चाँद और सूरज को (अपना ऐसा) ताबेदार बनाया (कि) हर एक नियत समय पर (अपनी अपनी चाल पर बराबर चला) जा रहा है। वही (सारे संसार के) कामों का प्रबन्धक है। वही (अपनी क़ुद्रत की) निशानियाँ (ख़ूब) खोल २ कर बयान करता है, जिस से कि तुम (लोग उसकी क़ुद्रत की निशानियों को देख कर उसे पहिचानो। और प्रलय के दिन) अपने (ऐसे) पालन कर्ता से मिलने (और उसको हिसाब किताब देने) का (पूरा पूरा) यक़ीन करो ॥

और अल्लाह वह है, जिसने ज़मीन को फैला दिया और उसमें (बड़े बड़े) पहाड़ और (नदियाँ और) नहरें पैदा कीं। और उसमें हर प्रकार के फलों में से दो दो जोड़े (अर्थात् खट्टे मीठे, छोटे बड़े आदि) उगाये। (और) वह (वह है, जो) रात (के अंधेरे) से दिन (के उजाले) को अस्त कर देता है। निस्सन्देह इन (समस्त चीज़ों) में विचार शील लोगों के लिये (अल्लाह की क़ुद्रत की बड़ी बड़ी) निशानियां (मौजूद) हैं ॥

और (इसी) पृथ्वी में (ध्यान करने से ख़ुदा की अनोखी अनोखी बातों का रहस्य प्रकट होता है; जैसे बहुत से स्थानों पर पृथ्वी के) भाग एक दूसरे से मिले हुए (होते) हैं। (और देखने में तो बिलकुल एक से मगर स्वभाव की दृष्टि से बिलकुल भिन्न होते हैं)। और (इसमें) अंगूरों के बाग़ और (तरह तरह के अनाजों के) खेत और खजूर के (ऐसे ऐसे) वृक्ष हैं, जिनकी जड़ें परस्पर मिली हुई (भी) होती हैं —

وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا
عَلٰى بَعْضٍ فِى الْاُكُلِ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِقَوْمٍ يَعْقِلُوْنَ ● وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا
تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ● اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِرَبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِىْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ● وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ
بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ
الْمَثُلٰتُ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى
ظُلْمِهِمْ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ● وَيَقُوْلُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ
اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ● اَللّٰهُ يَعْلَمُ
مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا
تَزْدَادُ وَكُلُّ شَىْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ● عٰلِمُ الْغَيْبِ

٤

और (बाज़) दो शाखे नहीं (होते) हालाँकि सबको एक ही पानी दिया जाता है। और (फिर भी) हम बाज़ को बाज़ पर फलों में बर्तरी दे देते हैं। बेशक जो लोग अक़्ल को काम में लाते हैं, उनके लिये इन बातों में (क़ुदरत ख़ुदा की बहुतेरी ही) निशानियाँ (मौजूद) हैं ० और (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम (दुनिया में किसी बात पर) तअ्‌ज्जुब करो, तो काफ़िरों का (यह) क़ौल भी अजीब ही है कि जब हम (गल सड़ कर) मिट्टी हो जायँगे, तो क्या हमको (फिर) नए जनम में आना है ० यही लोग हैं, जिन्होंने अपने पर्वर्दिगार (की क़ुद्रत) का इन्कार किया। और यही लोग हैं, जिनकी गर्दनों में (क़यामत के दिन) तौक़ (पड़े) होंगे। और यही लोग हैं, दोज़ख़ी कि यह दोज़ख़ में हमेशा (हमेशा) रहेंगे ० और (ऐ पैग़म्बर !) भलाई से पहिले यह लोग तुमसे बुराई की जल्दी मचा रहे हैं। हालाँकि इनसे पहिले (ऐसे वाक़िआत हो गुज़रे हैं, जिनकी) कहावतें चली आती हैं। और (ऐ पैग़म्बर ! इसमें) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार लोगों से बा वजूद उनकी शरारतों के दर गुज़र करने वाला है। और (इसमें भी) शक नहीं कि तुम्हारे पर्वर्दिगार की मार भी बड़ी सख़्त है ० और जो लोग (ख़ुदा व रसूल के) मुन्किर हैं, (एतिराज़ के तौर यह भी) कहते हैं कि इस (शख़्स यानी मुहम्मद) पर इसके पर्वर्दिगार की तरफ़ से निशानी (जो हम चाहते हैं) क्यों नहीं उतरी ? (सो ऐ पैग़म्बर !) तुम तो सिर्फ़ (अज़ाब ख़ुदा से लोगों को) डराने वाले हो (और बस)। और (तुम कुछ अनोखे पैग़म्बर नहीं) हर एक क़ौम का (एक न) एक हिदायत करने वाला (हो गुज़रा) है। (अपनी क़ौम के हिदायत करने वाले तुम हो) ० हर मादा जो (बच्चा पेट में) लिये हुए है, उसको अल्लाह ही जानता है। और (नीज़ हर एक मादा के) पेट का घटना बढ़ना (उसी को मालूम रहता है)। और उसके हाँ हर एक चीज़ का अन्दाज़ा मुक़र्रर है ० (वही) बातिन-

عٰلِمُ

और वे मिली (भी)। उन (सब) को पानी एक ही (प्रकार का) दिया जाता है। और (पृथ्वी भी एक ही तरह की होती है, परन्तु फिर भी) हम उनमें से कुछ को कुछ पर फलों की दृष्टि से (बड़प्पन और) बड़ाई प्रदान करते हैं। निस्सन्देह समझदार मनुष्यों के लिये इन (समस्त वस्तुओं) में भी (ख़ुदा की क़ुद्रत के बहुत से) चिन्ह (उपस्थित) हैं॥

और (ऐ रसूल !) अगर (इन काफ़िरों की अवज्ञा पर) तुमको (कुछ) अचम्भा हो, तो (वाक़ई क़ुद्रत के इतने बड़े २ चिन्ह देखने के पश्चात) उनका (अवज्ञा करना और यह) कहना कि जब हम (मर कर) मिट्टी हो जायँगे, तो (उसके पश्चात) क्या (कभी फिर भी) हम नया जन्म लेंगे ? (बिलकुल) अनोखा है। यही (वह) मनुष्य हैं, जिन्होंने अपने पालन कर्त्ता की (सरासर) अवज्ञा की। और यही (वह मनुष्य) हैं, जिनकी गर्दनों में (उदंडता व अवज्ञा के कारण क़यामत के दिन बड़े २) तौक़ (पड़े) होंगे। और यही नर्क के लोग हैं, जो नर्क में सदैव रहेंगे॥

और (ऐ रसूल ! जब तुम इन काफ़िरों को ख़ुदा के अज़ाब से भय दिलाते हो, तो) यह (तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाते हैं। और) भलाई (अर्थात पुण्य के काम करने) से पहिले बुराई (अर्थात अज़ाब उतारने) की जल्दी करते हैं। यद्यपि इनसे पहिले (इन जैसे अवज्ञा करने वालों पर तरह तरह के) अज़ाब आ चुके हैं। और (उनसे इन्हें पता चल चुका है कि इसमें ज़रा भी) सन्देह नहीं कि तुम्हारा पालन कर्त्ता मनुष्यों के लिये उनके ज़ुल्म (व अत्याचार) के बावजूद (उनके अत्याचारों की) क्षमा (करने) वाला (भी) है। और तुम्हारा पालन कर्त्ता (उन्हें उनके अत्याचारों पर सख़्त से सख़्त) अज़ाब देने वाला (भी) है॥

और यह काफ़िर (एतिराज़ के तौर पर यह भी) कहते हैं कि (यदि यह मनुष्य अर्थात मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, तो) इन पर (इनकी तस्दीक़ के लिये) इनके पालन कर्त्ता की ओर से (वह) चमत्कार क्यों नहीं उतारा गया (जो हम चाहते हैं। ऐ रसूल ! इन्हें साफ़ साफ़ बतादो कि) तुम (तो) बस (लोगों को अल्लाह के अज़ाब से) डराने वाले हो। (और उन्हें नेकी बदी समझाने के लिये रसूल बनाये गये हो। चमत्कारों की माँग पूरी करना तुम्हारे अधिकार व इख़्तियार में नहीं है)। और (आज तुम ही कुछ नये रसूल बन कर नहीं आये, बलिक हर ज़माने में) हर जाति के लिये (हमारी ओर से एक नबी व रसूल और) हिदायत करने वाला (तुम्हारी ही तरह बनाकर भेजा गया) है। (और उनमें से किसी को लोगों की इच्छानुसार चमत्कार दिखाने का अधिकार नहीं था)॥

(यह काफ़िर अल्लाह और उसके रसूल की जितनी चाहें, विरुद्धता करलें। अल्लाह को इनके समस्त कुकर्मों की ख़बर है। क्योंकि) हर मादा जो (अपने पेट में बच्चे का) बोझ उठाये हुए है (अर्थात् गर्भ से है) अल्लाह तआला उस (की वास्तविकता) से (भी अच्छी तरह) परिचित है। (और जानता है कि इस गर्भ से नर पैदा होगा और इससे मादा)। और रहम जो घटते और बढ़ते हैं (अर्थात बच्चे के पैदा होने में जो अबेर सबेर या बच्चे के शरीर में जो कमी या अधिकता होती है, अल्लाह तआला को उसकी भी ख़बर रहती है)। और (एक गर्भ की ख़बर क्या) उसके यहाँ (अर्थात उसके ज्ञान में) हर चीज़ का (एक ठीक) अन्दाज़ा (नियत) है। (और दुनिया जहान की कोई चीज़ और कोई बात भी उसके ज्ञान की सीमा से बाहर नहीं है)॥

(और वह प्रत्येक) प्रगट व गुप्त (बात) का जानने वाला है—

وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ۝ سَوَاءٌ مِّنكُم مَّنْ
أَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَن جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ
بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝ لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِّن بَيْنِ
يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ
اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ
وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ وَمَا لَهُم مِّن
دُونِهِ مِن وَالٍ ۝ هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا
وَطَمَعًا وَيُنشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ
بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ وَيُرْسِلُ
الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَن يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ
فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ۝ لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ
يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُم بِشَيْءٍ إِلَّا
كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ

और ज़ाहिर (दोनों) का (यकसां) जानने वाला (है, सबसे) बड़ा (और) आलीशान ० तुम लोगों में जो शख़्स कोई बात चुपके से कहे और जो शख़्स पुकार कर कहे (उसके नज़दीक दोनों) बराबर। और (इसी तरह) जो (तुममें से) रात के वक़् (अंधेरे में किसी जगह) छुपा (बैठा) हो, और जो दिन दिहाड़े (सड़क पर) चला जा रहा हो, (उसके नज़दीक सब बराबर) ० (इन्सान किसी हालत में भी हो) उसके आगे और उस के पीछे बारी बारी से (ख़ुदा के) मुवक्किल लगे रहते हैं, जो बहुक्म ख़ुदा उसकी हिफ़ाज़त करते हैं। जो (नेअ्मत) किसी क़ौम को (ख़ुदा की तरफ़ से) हासिल हो, जब तक वह (क़ौम) अपनी ज़ाती सलाहियत को न बदले, ख़ुदा उस (नेअ्मत) में किसी तरह का तग़य्युर (व तबद्दुल) नहीं किया करता। और जब ख़ुदा किसी क़ौम पर (उनके अमलों की पादाश में) कोई मुसीबत डालनी चाहे, तो वह (किसी के टाले) टल नहीं सकती। और ख़ुदा के सिवा उन लोगों का कोई (हामी व) मददगार भी नहीं (खड़ा होता) ० वही (क़ादिर मुतलक़) है, जो (गिरने से) डराने और (नीज़ बारिश की) उम्मीद दिलाने के लिये (बिजली की) चमक तुम लोगों को दिखाता और (पानी से भरे हुए) बोझल बादलों को उभारता है ० और (बादलों की) गरज उसकी तारीफ़ के साथ (उसकी) पाकीज़गी बयान करती और (नीज़) फ़रिश्ते उसके डर के मारे (उसकी हम्द व सना में लगे रहते हैं)। और (वही आस्मान से) बिजलियां भेजता है, फिर (अहल ज़मीन में से) जिस पर चाहता है, उनको गिरा देता है। और यह (मुन्किर ऐसे ही) ख़ुदाए (क़ादिर) के बारे में झगड़ते हैं। हालांकि उसके दाव (ऐसे) सख़्त हैं, (जिनका तोड़ नहीं) ० (मुसीबत पड़े पर) उसी को (पुकारना) सच्चा पुकारना है। और जो लोग उसके सिवा (दूसरे माबूदों को) पुकारते हैं, वह उनकी कुछ नहीं सुनते। मगर (वैसा ही बेकार सुनना) जैसे एक शख़्स अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलाए, ताकि पानी (आप से आप) उसके मुंह में(उड़ कर) आ जाय। हालाँकि वह (किसी तरह) उस (के मुंह) तक (उड़ कर) आने वाला नहीं—

(और सब से) बुज़ुर्ग (और सब से) श्रेष्ठ (है) ॥

तुम (संसार वालों) में से जो कोई चुपके से बात करे (तो) और जो पुकार कर करे (तो, उसके निकट सब) बराबर है। और (तुम में से) जो आदमी रात (की अँधेरी) में छिपा हुआ हो (वह) और (जो) दिन दिहाड़े (खुले मैदान में) चला जा रहा हो (वह, उस के लिये दोनों बराबर हैं) ॥

(उसकी ओर से) मनुष्य (की रक्षा) के लिये (किरामन् कातिबीन के अतिरिक्त दिन रात के) बारी बारी से आने वाले (फ़रिश्ते नियत) हैं, जो ख़ुदा की आज्ञा से मनुष्य के आगे और मनुष्य के पीछे से (हर समय) उसकी रक्षा करते (रहते) हैं। निस्सन्देह अल्लाह तआला (अपने बन्दों के हाल पर बड़ा मेहर्बान है। उसकी आदत है कि वह) किसी जाति (या किसी मनुष्य) की दशा (और उसके सुख चैन) में (कोई) परिवर्तन नहीं करता, जब तक कि वह (अर्थात् उस जाति के) लोग अपने मन (अर्थात् नेक और ठीक विचार) को (बुरे विचारों और बुरे कर्मों से) न बदल डालें। और जब अल्लाह तआला किसी जाति (के सुख चैन) को (उसकी कुकर्मी के कारण दुःख व तकलीफ़ से बदलने और उसको किसी तरह की) मुसीबत में फँसाने का इरादा करता है, तो वह (मुसीबत आकर ही रहती है। किसी के टाले) नहीं टल सकती। और उनका (अर्थात उस जाति के लोगों का समस्त संसार में) उसके अतिरिक्त कोई (रक्षक व) सहायक नहीं (निकल सका) ॥

(और) अल्लाह वह है, जो तुमको (बिजली गिरने से) डराता और (वर्षा का) लोभ दिलाने के लिये बिजली (चमकती हुई) दिखाता है। और (पानी पिये हुये) भारी (भारी) बादलों को (तुम पर मेंह बरसाने के लिये आकाश पर) उठाता है ॥

और (बादलों की घोर) गर्ज उसकी स्तुति (व प्रशंसा) के साथ (उसकी) पवित्रता बयान करती है। और फ़रिश्ते (भी) उसके दबदबे के कारण (हर समय उसकी स्तुति में लगे रहते हैं)। और वही (है, जो आकाश से) गिरने वाली बिजलियाँ (पृथ्वी पर) भेजता है। फिर जिस पर चाहता है, उन्हे गिरा देता है। और यह (काफ़िर हैं कि उससे ज़रा नहीं डरते और ऐसे) अल्लाह (के एक होने) में झगड़ा करते हैं। और (इतना नहीं जानते कि) वह (अपने अवज्ञा कारियों को कठिन) दंड देने वाला है ॥

(अर्थात दुःख (और किसी कठिन समय में) सच्ची पुकार (कि जिससे वह समय टल भी जाय) उसी के लिये (निर्दिष्ट) है। (अर्थात दुःख के समय सहायता उसी को पुकारने से मिल सकती है)। और जो लोग उसे छोड़ कर (दूसरे झूठे पूज्यों को) पुकारते (और उनसे मदद के इच्छुक होते) हैं, तो वह उनकी (पुकार को) कुछ (भी) नहीं सुनते। केवल (इस प्रकार सुनने के कि) जैसे कोई (प्यासा) पानी की ओर अपने दोनों हाथ बढ़ाये (और पानी को अपनी ओर बुलाने का संकेत करे) जिससे कि पानी (अपने आप ही) उसके मुंह में पहुँच जाय। यद्यपि वह—

बِبَالِغِهٖ وَمَا دُعَاءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا
وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۝ قُلْ مَنْ رَّبُّ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قُلِ اللّٰهُ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ
اَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا
ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۝ اَمْ
هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۝ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ
شُرَكَاءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۝
قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ
اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا
فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ
عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ
مِّثْلُهٗ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ فَاَمَّا

और काफ़िरों की दुआ तो यूं ही भटका (भटकी) फिरा करती है (कोई उसका सुनने वाला नहीं) ० और जिस क़दर मख़्लूक़ात आस्मानों और ज़मीन में हैं, चार व नाचार (सब) अल्लाह ही के आगे सर बसुजूद हैं। और (इसी तरह) सुबह व शाम उनके साए ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि आस्मानों और ज़मीन का पर्वर्दिगार कौन ? (यह तो इस का क्या जवाब देंगे, तुम ही इनसे) कहो कि (आस्मानों और ज़मीन का मालिक) अल्लाह । (फिर इनसे) कहो, क्या तुमने उसके सिवा (दूसरे दूसरे) कारसाज़ बना रक्खे हैं, जो अपने ज़ाती नफ़ा व नुक़सान के (भी) मालिक नहीं । (इनसे) कहो भला कहीं अन्धा और आँखों वाला (भी) बराबर (हो सकता) है, या कहीं अंधेरा और उजाला बराबर (हो सकता) है ! या इन लोगों ने अल्लाह के ऐसे शरीक ठहरा रक्खे हैं कि उसी की सी मख़्लूक़ात उन्होंने भी पैदा कर रक्खी है और अब इनको मख़्लूक़ात के बारे में शुबहा वाक़े हो गया है (कि किसकी पैदा की हुई है। ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह अकेला (है। कोई उसका शरीक नहीं और बावजूद इसके सब पर) ग़ालिब है ० (उसी ने) आस्मान से पानी बरसाया। फिर अपनी (अपनी समाई के) क़द्र नाले बह निकले। फिर (नालों में जो पानी का रेला आया, तो) झाग जो (पानी के) ऊपर आ गया था , उसको (पानी के) रेले ने उठा (कर अपने आगे धर) लिया। और यह जो (लोग) ज़ेवर या दूसरे साज़ व सामान के लिये (धातों को) आग में तपाते हैं, इसमें (भी) इसी तरह का झाग (य.नी खोट मिला) होता है (और वह तपाने से अलग निकल आता है)। यूं अल्लाह हक़ और बातिल की मिसाल बयान फ़र्माता है (कि पानी हक़ की जगह है और झाग बातिल की जगह)। सो—

الزَّبَدُ

(आप ही आप) उस (के मुंह) तक नहीं पहुँच सकता (और उसको प्यास नहीं बुझा सकता। तो जिस प्रकार प्यासे आदमी की पानी से यह प्रार्थना करनी निरर्थक है, इसी प्रकार इन लोगों का अपने असत्य पूज्यों से सहायता पाने की इच्छा करना व्यर्थ है)। और (इन) काफ़िरों की पुकार तो केवल पथ भ्रष्टता में (पड़ी रहती) है (उसका कोई प्रभाव प्रगट नहीं होता) ॥

और अल्लाह (की महिमा तो यह है कि उस) के आगे आकाशों और पृथ्वी में जो कोई (भी बसता) है, मस्तक झुकाये (ही रहता) है, (या तो अपनी) .ख़ुशी से (जैसे फ़रिश्ते और ईमानदार लोग, या) ना .ख़ुशी से (जैसे काफ़िर लोग)। और सुबह व शाम इनकी (अर्थात् पृथ्वी वालों की) छाया (ज़मीन पर पड़ती) है। (और यह भी एक प्रकार का मस्तक झुकाना है, जिससे न काफ़िर बच सकता है और न ईमानदार) ॥

(ऐ रसूल ! इन काफ़िरों से) पूछो कि आकाशों और पृथ्वी का (सृष्टि कर्त्ता व) मालिक कौन है ? (यह तो क्या उत्तर देंगे) तुम (स्वयं ही इनको) बताओ कि अल्लाह है। (और फिर इनसे) दर्याफ़्त करो कि क्या तुमने उस (जैसी शक्ति वाले अल्लाह) को छोड़ कर (निर्जीव मूर्त्तियों को अपने पूज्य और) सहायक ठहरा रक्खे हैं, जो (तुमको तो क्या सहायता देंगे, ख़ास) अपनी व्यक्ति के लाभ व हानि की (भी) शक्ति नहीं रखते। (और इनसे) पूछो कि (मूर्खो !) क्या अन्धे व समाखे (अर्थात् काफ़िर व ईमानदार) बराबर (हो सकते) हैं, या क्या अन्धकार व प्रकाश (अर्थात् कुफ़्र व ईमान इनके समीप) बराबर हैं, या इन्होंने जिनको अल्लाह का शरीक ठहराया है, उन्होंने (भी) अल्लाह की सृष्टि की तरह (किसी को) पैदा किया है कि (जिस कारण) इनके प्रति (दोनों की) सृष्टि भ्रमात्मक हो गई। (और दोनों सृष्टि के उत्पन्न करने वालों को इन्होंने परस्पर शरीक ठहरा लिया। ऐ रसूल !) तुम (इनसे) कहो कि (मूर्खो ! इस प्रकार के विचारों से बाज़ आओ। और याद रक्खो कि) प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला अल्लाह है। और वही एक सर्व शक्तिमान (पूजा के योग्य और सहायता के क़ाबिल) है ॥

(उसी ने) आकाश से (सत्य की) वर्षा की, कि (दिलों के नदी) नाले विस्तार के अनुसार .ख़ुद (उसे लेकर) बह चले (अर्थात् सत्य ग्रहण करने के बाद हृदय साफ़ हो गये। और असत्य का मैल कुचैल झाग बन कर पानी के ऊपर आ गया)। फिर (कुछ देर के बाद सत्य वर्षा की अधिकता हुई, तो सत्य के पानी का एक रेला आया। उस) रेले ने (इस सतह के और) ऊपरी झाग को उठा (अपने आगे कर) लिया (और आगे की ओर उसे ढकेलना आरम्भ कर दिया)। और (इसी तरह वह धातें) जिन्हें ज़ेवर या (दूसरे) सामान (तैयार करने) के लिये लोग आग में तपाते (और गलाते) हैं, (उनमें भी) ऐसा ही झाग (अर्थात् खोट मिला हुआ) होता है (और वह गलाने और तपाने से अलग हो जाता है)। अल्लाह तआला सत्य व असत्य का इस प्रकार उदाहरण देता है (कि प्रत्येक मनुष्य साफ़ २ समझ लेता है) । अतः –

झाग तो रायगां जाता है और (पानी) जो लोगों के काम आता है, वह ज़मीन में ठेरा रहता है। (अल ग़रज़) अल्लाह (लोगों के समझने के लिये) इस तरह मिसालें बयान फ़र्माता है० जिन लोगों ने अपने पर्वर्दिगार का कहा माना, उनके हक़ में बेहतरी (हो बेहतरी) है। और जिन्होंने उस का कहा न माना (क़यामत के दिन उनका यह हाल होगा कि) जो कुछ रूए ज़मीन पर है, अगर (वह सारे का) सारा उनके इख़्तियार में हो—और उसके साथ उतना और, तो यह लोग अपने बदले में उसको (.खुशी से) दे डालें। यही लोग हैं, जिनसे बुरी तरह (यानी काविश के साथ) हिसाब लिया जाएगा। और इनका आख़िरी ठिकाना दोज़ख़ है और वह (बहुत ही) बुरी जगह है ० (ऐ पैग़म्बर !) भला जो शख़्स इस बात को समझता है कि (.कुर्आन) जो तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से तुम पर उतरा है, वह हक़ है-(क्या यह शख़्स) उस शख़्स की तरह (बे नसीब रह सकता) है, जो अन्धा है (और उसको ऐसी सरीह बात भी नहीं सूझ पड़ती। .कुर्आन से तो) बस वही लोग नसीहत पकड़ते हैं, जो समझदार हैं ० (यह) वह लोग (हैं) कि अल्लाह के (साथ जो उन्होंने बन्दा होने का) अहद (कर लिया है, उस) को पूरा करते हैं और (अपने) इक़रार को नहीं तोड़ते ० और (नीज़ यह) वह लोग (हैं) कि .खुदा ने जिन (बाहमी तअ़ल्लुक़ात) के जोड़े रखने का हुक्म दिया है, उनको जोड़े रखते और अपने पर्वर्दिगार से डरते और (क़यामत के दिन) बुरी तरह (यानी काविश के साथ) हिसाब लिये जाने का अन्देशा रखते हैं ० और (नीज़ यह लोग हैं) जिन्होंने अपने पर्वर्दिगार का मुंह करके (दुनिया की तकलीफ़ पर) सब्र किया और नमाज़ें पढ़ीं और हमने जो उनको रिज़्क़ दिया था, उसमें से चुपके (चुपके) और ज़ाहिर (.ज़ुहूर .खुदा की राह में) ख़र्च किया और बुराई के मुक़ाबिले में (लोगों के साथ) नेकी करते हैं—

الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۚ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ
فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ● لِلَّذِينَ
اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ
لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا
بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ● وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ● أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ
رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ
أُولُو الْأَلْبَابِ ● الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَ
لَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ● وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ
بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ
الْحِسَابِ ● وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ
رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ
سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ

झाग तो मलिया मेट होकर (व्यर्थ) चला जाता है (अर्थात असत्य सत्य से पृथक हो जाता है)। और वह (सत्य) जो लोगों को (लोक व परलोक में) लाभ पहुँचाता है (हृदय की) पृथ्वी में लीन हो जाता है। (लोगो ! तुमको समझाने के लिये) अल्लाह (अपने) उदाहरण इस प्रकार वर्णन करता है ॥

(तात्पर्य यह है कि) जिन लोगों ने अपने (सृष्टि कर्त्ता व) स्वामी का कहना सुन लिया, तो उनके लिये (यहाँ भी) भलाई है (और वहाँ भी कल्याण है)। और जिन्होंने उसका कहना न सुना, तो (प्रलय के दिन उन्हें ऐसा सख़्त अज़ाब दिया जावेगा कि) जो कुछ (धन व सम्पत्ति) पृथ्वी पर (मौजूद) है (वह) सब (की सब) और उतनी ही उसके साथ और यदि उनके अधिकार में हो-तो वह उसको (उस अज़ाब से मुक्ति पाने के लिये बड़ी प्रसन्नता से अपने ऊपर से) निछावर करदें (तो भी मुक्त न हो सकेंगे)। यही (वह लोग) हैं, जिनके लिये कठिन हिसाब है (अर्थात जिनसे अत्यन्त कठोरता के साथ हिसाब लिया जावेगा)। और जिनका ठिकाना नर्क है और वह (अत्यन्त ही) बुरा ठिकाना है ॥

(ऐ रसूल !) भला वह आदमी, जो इस (बात) को (अच्छी तरह) जानता (और दिल से मानता) है कि तुम्हारे .खुदा की ओर से तुम्हारे ऊपर जो कुछ भी उतारा गया है (वह) सत्य है-उस आदमी की तरह (अल्लाह की कृपा व दया से वञ्चित रह सकता है) जो (आँखों का) अन्धा (सत्य बात के समझने से बिल्कुल विवश) है। (वास्तव में) उपदेश तो बस वही बुद्धिमान ग्रहण करते हैं, जो अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं। और (अपनी आधीनता की) प्रतिज्ञा को (जो उन्होंने अज़ल अर्थात सृष्टि के आरम्भ में की थी) नहीं तोड़ते। और जो उन (सम्बन्धों) को स्थिर रखते हैं, जिनके क़ायम रखने की अल्लाह ने आज्ञा दी है। और जो अपने पालन कर्त्ता से डरते हैं। और (कर्मों का) हिसाब देने (के समय) की कठोरता का भय करते हैं ॥

और जिन्होंने (केवल) अपने पालन कर्त्ता की प्रसन्नता (प्राप्त करने) के लिये (सांसारिक विपत्तियों पर) सन्तोष किया। (और किसी दशा में भी सत्य धर्म का अनुसरण करने से मुंह न मोड़ा) और नमाज़ (के कर्तव्य) को (अत्यन्त नियम पूर्वक) अदा किया। और जो अन्न हमने उनको प्रदान किया है, उसमें से (हमारे मार्ग में यथा अवसर) चुपके (चुपके) और प्रगट रूप से ख़र्च किया। और जो (इतने नेक हैं कि) बुराई के बदले (लोगों के साथ) नेकी करते हैं—

यही लोग हैं, जिनकी दुनिया का अंजाम (बख़ैर) है० (यानी) हमेशा रहने के बाग़, जिनमें वह (आप भी) जायेंगे और उनके बड़ों और उनकी बीबियों और उनकी औलाद में से, जो २ नेकोकार होंगे (सब उनके साथ जायेंगे)। और (जन्नत के हर) हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उन पास आ आकर ० उनसे सलामु अलैक करेंगे (और कहेंगे कि दुनिया में) जो तुम सब्र करते रहे हो, यह उसी का सिला है। सो (माशाअल्लाह) तुम्हारी दुनिया का भी (कैसा) अच्छा अंजाम हुआ ० और जो लोग ख़ुदा के साथ पक्का क़ौल व क़रार किये पीछे अहद शिकनी करते और जिन (बाहमी तअल्लुक़ात) के जोड़े रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है, उनको तोड़ते और मुल्क में फ़साद बर्पा करते हैं--यही लोग हैं, जिनके लिये फिटकार है। और उनके लिये (फिटकार के अलावा) बुरा अंजाम भी है ० अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है, फ़राख़ कर देता है और (जिसकी चाहता है) नपी तुली कर देता है। और (कुफ़्फ़ार) दुनिया ही की ज़िन्दगी से (बड़े) ख़ुश हैं। हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबिले में महज़ बे हक़ीक़त चीज़ है ० और (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग (तुम्हारी रिसालत के) मुन्किर हैं (वह यह भी) कहते हैं कि इस (शख़्स पर यानी तुम) पर इस के पर्वर्दिगार की तरफ़ से (हमारे ख़ातिर ख़्वाह) कोई मोजिज़ा क्यों नहीं उतरा ? (तुम इनसे) कहो (मोजिज़ों से क्या होता है) अल्लाह ही जिस को चाहता है, गुमराह करता है। और जो (उसकी तरफ़) रुजू होता है, उसको अपनी तरफ़ पहुँचने का रस्ता दिखाता है ० जो लोग ईमान लाये और उनके दिलों को ख़ुदा की याद से तसल्ली होती है और सुन रक्खो कि ख़ुदा की याद से दिलों को तसल्ली हुआ ही करती है ०—

أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا
وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ
وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۝
سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝ وَ
الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ
وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝
اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوا
بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا
مَتَاعٌ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ
عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ
وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ
قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝

ع

الذين

(वास्तव में) यही (वह भाग्यवान लोग) हैं, जिनके लिये परलोक का पुण्य हैं (अर्थात् उनके लिये परलोक में) सदा रहने वाले बाग़ हैं, जिनमें वह (स्वयं भी) दाख़िल होंगे। और उनके पूर्वजों और उनकी पत्नियों और उनकी सन्तान में से जो २ नेक होंगे (वह भी)। और (उन बाग़ों के) प्रत्येक दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास आवेंगे ॥

(और कहेंगे कि आज) तुम्हारा कल्याण है, इस कारण कि तुम (सच्चे धर्म पर दृढ़ रहे और सांसारिक विपत्तियों पर) सन्तोषी (व कृतज्ञ बने) रहे। फिर (कहेंगे कि तुम्हारे) साँसारिक कर्मों का बदला तो ख़ूब रहा ॥

और जो लोग अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा को उसके (पूरा करने का) पक्का (वादा) करने के बाद तोड़ देते हैं, और उन सम्बन्धों का विच्छेद कर देते हैं, जिनके जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है- और (ख़ुदा की) पृथ्वी में (विद्रोह व) झगड़ा करते (फिरते) हैं, तो यह (सब वह लोग) हैं कि जिनके लिये (दोनों लोकों में) लानत (और फिटकार) है, और जिनका परिणाम बुरा (होना) है ॥

(और इन काफ़िरों के पास दुनिया में धन व सम्पत्ति जो मौजूद है, तो इस से यह न समझना चाहिये कि इनके वर्तमान कर्म अच्छे हैं। क्योंकि यह कृपायें तो) अल्लाह (की अपने सर्व साधारण बन्दों पर हैं। वह) जिसको चाहता है, अन्न अधिक देता है। और (जिसके भोजन को चाहता है) तङ्ग कर देता है। (इसमें काफ़िर व इमानदारों का कुछ भेद भाव नहीं है)। और (यह काफ़िर जो) दुनिया के (क्षणिक) जीवन (और उसके अल्प कालिक धन व सम्पत्ति) से (इतने) प्रसन्न (व प्रफुल्लित) हैं (तो यह उनकी मूर्खता) और (अज्ञानता है। क्योंकि) साँसारिक जीवन (और उसका सुख व आनन्द) परलोक के मुक़ाबले में (बिल्कुल ही) असार वस्तु है ॥

और (ऐ रसूल !) यह काफ़िर लोग (जो बार बार) कहते हैं कि (मुहम्मद यदि अल्लाह के रसूल हैं, तो) इन पर (हमारी इच्छानुसार) इनके पालन कर्त्ता की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं उतारा जाता ? (तो) तुम (इनसे) कहो कि (चमत्कार और प्रमाणों से क्या होता है। तुम चमत्कार और प्रमाणों के बाद भी ईमान नहीं लाओगे। अधिकार तो हर दशा में अल्लाह को है)। अल्लाह ही जिसे चाहता है, पथ-भ्रष्ट करता है। और जो (सत्य का इच्छुक बन कर) उसकी ओर झुकता है, उसको अपना मार्ग दिखा देता है ॥

(फिर) जो (लोग उसकी तरफ़ झुके और) ईमान ले आये और जिनके दिलों को अल्लाह के स्मरण से (एक प्रकार की शान्ति और) इत्मीनान (प्राप्त) होता है (तो उनके लिये अल्लाह के यहां बड़े २ पद नियत हैं। और लोगो !) याद रक्खो कि अल्लाह का स्मरण (तो चीज़ ही ऐसी है कि जिस) से (बेचैन) दिल शान्ति हो जाते हैं —

तो जो लोग ईमान लाये और (उन्होंने) नेक अमल (भी) किये, उनके लिये (आख़िरत में) ख़ुशहाली है और (बहिश्त का) अच्छा ठिकाना ० (ऐ पैग़म्बर ! जिस तरह हमने और पैग़म्बर भेजे थे) इसी तरह हमने तुमको भी (इस ज़माने के) लोगों की तरफ़ (पैग़म्बर बनाकर) भेजा है, जिनसे पहिले और लोग भी हो गुज़रे हैं। (और तुम्हारे भेजने से ग़रज़ यह है) कि जो (क़ुर्आन) तुम पर वही के ज़रिए से हमने उतारा है, वह इनको पढ़ कर सुनादो। और यह लोग (न सिर्फ़ तुम्हारी पैग़म्बरी के मुन्किर हैं, बल्कि सिरे से ख़ुदाए) रह्मान (ही) के मुन्किर हैं। (तुम इन से) कहो कि वही मेरा पर्वर्दिगार है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। मैं उसी का भरोसा रखता हूँ और (हर बात में) उसी की तरफ़ रुजू करता हूँ ० और अगर कोई क़ुर्आन (ऐसा भी नाज़िल हुआ) होता, जिस (की बरकत) से पहाड़ चलने लगते या उस (की बरकत) से ज़मीन (को मसाफ़त बआसानी) तै की जा सकती, या उस (की बरकत) से मुर्दों के साथ गुफ़्तगू हो सकती (तो भी यह लोग राह रास्त इख़्तियार करने वाले नहीं थे) बल्कि (असल बात यह है कि) सारा इख़्तियार अल्लाह ही को है। तो क्या (अभी) मुसल्मानों को सब्र नहीं आया कि अगर ख़ुदा चाहता, तो सब लोगों को हिदायत कर देता। और जो लोग मुन्किर हैं (यानी कुफ़्फ़ार मक्का) इनको इनके करतूत की सज़ा में (कोई न कोई) मुसीबत पहुँचती ही रहेगी (जो इन सबको खड़ खड़ाती रहेगी) या इन (को न पहुँचेगी, तो इनके रहने) की बस्ती के आस पास आ नाज़िल होगी। यहां तक कि ख़ुदा का (आख़िरी) वादा (फ़तह मक्का) आ पूरा हो। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा वादा ख़िलाफ़ी नहीं किया करता ० और (ऐ पैग़म्बर!) तुमसे पहिले भी पैग़म्बरों की हंसी उड़ाई जा चुकी है, तो हमने (चन्द रोज़) मुन्किरों को मोहलत दी, फिर (आख़िरकार) उनको धर पकड़ा। तो (तुमने देखा कि) हमारी सज़ा कैसी (सख़्त) थी ० तो क्या जो (ख़ुदा) हर एक शख़्स के आमाल की ख़बर रखता है (इनको बे सज़ा दिये छोड़ देगा)--

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ●
كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِتَتْلُوَا
عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَٰنِ
قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ
إِلَيْهِ مَتَابِ ● وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ
أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتَىٰ بَلْ لِلَّهِ
الْأَمْرُ جَمِيعًا أَفَلَمْ يَيْأَسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ لَوْ
يَشَاءُ اللَّهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيعًا وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ
كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا
مِنْ دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ
الْمِيعَادَ ● وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ
فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ
عِقَابِ ● أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ

४

(अतएव) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम (भी) किये (और वह ख़ुदा की पूजा में तत्पर रहे) तो उन (सब) के लिये (प्रलय में स्वर्ग का) मंगल समाचार है। और (रहने सहने के लिये स्वर्ग का) उत्तम स्थान है ॥

(और ऐ रसूल ! जिस प्रकार हमने तुमसे पहिले बहुत से नबी और बहुत से रसूल लोगों को उपदेश व शिक्षा देने के लिये भेजे थे) इसी तरह (अब) हमने तुमको उस जाति में कि जिससे पहिले (उसी जैसी बहुत सी) जातियां गुज़र चुकी हैं (कि जिनका परिणाम उस जाति के लोगों के सामने मौजूद है, अपना रसूल बनाकर) भेजा है। जिससे कि वह (क़ुर्आन) जो हमने तुम पर उतारा है, उन्हें (पढ़) पढ़ कर सुनाओ। और यह (अर्थात् तुम्हारी जाति के काफ़िर, जो अल्लाह) रह्मान (व रहीम के मानने) से इन्कार करते हैं (उनसे) कहदो कि दयालु (ख़ुदा) मेरा रब है। उसके अतिरिक्त कोई पूज्य (पूजा के योग्य) नहीं। मैंने उसी पर विश्वास कर रक्खा है और (मैं हर तरफ़ से ध्यान हटाकर केवल) उसी की ओर ध्यान लगाये रखता हूँ ॥

और (इन काफ़िरों की भली चलाई) यदि वास्तव में (कोई सा) क़ुर्आन (ऐसा) हो (भी) जाता कि जिस (के पढ़ने) से पर्वत (अपनी जगह से हट कर) चलने लगते, या जिस (के पढ़ने) से पृथ्वी (की यात्रा जल्दी जल्दी) समाप्त हो जाती, या जिस (की बरकत) से मुर्दों से बात चीत करली जाती (तो यह उस पर भी ईमान न लाते) बल्कि (उसमें भी कोई न कोई दोष निकाल देते। वास्तव में बात यह है कि हर बात का) पूरा अधिकार (केवल) अल्लाह ही को है ॥

अतएव क्या यह ईमानदार लोग (जो काफ़िरों के ईमानदार बन जाने का ख़याल करके चाहते हैं कि उनके एतिराज़ों का उत्तर दिया जाय) इस (बात) को नहीं समझे कि (अल्लाह के इख़्तियार में सब कुछ है। और) यदि अल्लाह चाहे, तो सब लोग (बिना चमत्कार व उदाहरण के) सीधे मार्ग पर आ जायँ। और (यह) जो (मक्के के) काफ़िर हैं, इनको इनके कुकर्मों के बदले आये दिन कोई न कोई दुःख पहुँचता ही रहेगा। या (ख़ास इन्हें नहीं, तो) इनके वासस्थान (अर्थात् मक्के) के आस पास (कोई संकट ऐसा) पड़ता रहेगा (जो इनको परेशान करने के लिये काफ़ी होगा)। जिससे कि अल्लाह का वादा (जो मक्के को जीतने का है, उसके पूरा होने का समय) आ जाय। निस्सन्देह अल्लाह (अपने) वचनों के विरुद्ध नहीं करता ॥

और (ऐ रसूल ! यह काफ़िर जो तुम्हारी हँसी उड़ाते हैं, तो तुम इसका बिलकुल ख़याल न किया करो। यह तो काफ़िरों की बहुत पुरानी आदत है) । तुमसे पहिले (भी बहुत से) रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया है। तो हमने उन काफ़िरों (और हँसी उड़ाने वालों) को (कुछ दिन तो) ढील दी (कि शायद समझ जायँ। लेकिन जब वह अपनी हरकत से किसी प्रकार न माने, तो) फिर हमने उनको (अज़ाब में) पकड़ लिया। जैसा कि (तुम्हें मालूम है कि) हमारा अज़ाब कैसा (कठिन) था ॥

भला (ऐ रसूल !) क्या वह (अल्लाह) जो हर आदमी के कर्मों की (भली भाँति) ख़बर रखता है—

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا
يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ
لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ
وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝ لَهُمْ عَذَابٌ فِى
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ
مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ
تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ؕ
تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ۝
وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ؕ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ
اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ
مَاٰبِ ۝ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ
اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ

لكنير

और यह लोग अल्लाह के लिये (दूसरे दूसरे) शरीक ठहराते हैं। (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि तुम इन (शरीकों) के नाम तो लो, या तुम .ख़ुदा को ऐसे शरीकों (के होने) की ख़बर देते हो, जिनको वह जानता (तक) नहीं (कि) ज़मीन में (किधर बसते हैं)-या (निरी) ऊपरी (बे अस्ल) बातें बनाते हो। बात यह है कि मुन्किरों को अपनी चाला-कियां भली मालूम होती हैं और (यूं) राह (रास्त) से रुके हुए हैं। और जिसको .ख़ुदा गुमराह करे, तो कोई उसका राह दिखाने वाला नहीं ० इन लोगों के लिये दुनिया की ज़िन्दगी में (भी) अज़ाब है (और आख़िरत में भी)। और आख़िरत का अज़ाब (दुनिया के अज़ाब से) अलबत्ता बहुत (ज़ियादा) सख़्त है। और .ख़ुदा (के ग़ज़ब) से कोई उनका बचाने वाला नहीं ० परहेज़गारों के लिये जिस बाग़ (बहिश्त) का वादा किया जा रहा है, उसका हाल यह है कि उसके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी। उस के फल सदा बहार और (इसी तरह) उसकी छावँ। यह है उन लोगों का अंजाम, जो (दुनिया में) परहेज़गारी करते रहे। और काफ़िरों का अंजाम है दोज़ख़ ० और (ऐ पैग़म्बर !) जिन (मुसलमानों) को हमने (यह) किताब दी है, वह तो जो (जो अहकाम) तुम पर उतारे गये हैं, सब ही से .ख़ुश होते हैं। और दूसरे फ़िरक़े उसकी बाज़ बातों से इन्कार रखते हैं। (तुम इन मुन्किरीन से) कहो कि (तुमको मानने न मानने का इख़्तियार है) मुझको तो यही हुक्म मिला है कि मैं .ख़ुदा ही की इबादत करूं, और किसी को उसका शरीक न बनाऊं। मैं (तुम सबको) उसी की तरफ़ बुलाता हूँ और (हर बात में) उसी की तरफ़ रुजू करता हूँ ० और ऐसा ही (जैसा कि यह .क़ुरआन है) हमने इसको फ़र्मान (ज़बान) अरबी उतारा है (ताकि यह अह्ल अरब आसानी से समझें)। और (ऐ पैग़म्बर !) अगर इसके बाद भी कि तुमको इल्म हो चुका है, तुमने इनकी .ख़्वाहिशों की पैरवी की, तो (फिर) .ख़ुदा के मुक़ाबिले में न कोई तुम्हारा-

और (जो पूर्व समय के लोगों को उनके कुकर्मों के कारण काफ़ी दंड दे चुका है, तो इन काफ़िरों को बिना दण्ड दिये कैसे छोड़ देगा। ऐ रसूल !) इन लोगों ने अल्लाह के लिये (जो) शरीक बना रक्खे हैं (कि जिनके भरोसे पर यह अल्लाह रसूल को कुछ समझते ही नहीं, इनसे) कहो कि उन (अल्लाह के शरीकों) का (ज़रा) नाम तो लो (कि वह हैं कहाँ। दो ही बातें हैं) या तो तुम अल्लाह को (एक) ऐसी वस्तु की ख़बर देते हो, जो उसे पृथ्वी (व आकाश) में (कहीं) नहीं मालूम होती, या (यह है कि) तुम (यूं ही) दिखावे की (और निरर्थक) बातें करते हो। बल्कि (ठीक तो यूं है कि) इन (अभागे) काफ़िरों के लिये इनका छल सँवार दिया गया (है)। और यह (अपने छल व कपट के कारण सीधे) मार्ग से (.ख़ुदा की आज्ञा से) रोक दिये गये हैं। और जिसे अल्लाह (सीधे मार्ग पर चलने से रोक दे और) पथ-भ्रष्ट करके (पृथ्वी व आकाश में) उसे कोई मार्ग बताने वाला नहीं॥

इन (लोगों) के लिये संसार की ज़िन्दिगी में (भी) अज़ाब है (और प्रलय में भी)। और प्रलय का अज़ाब (संसार के अज़ाब से) बहुत (अधिक) कठिन है। और इन्हें अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने वाला (संसार में भी) कोई नहीं (और प्रलय में भी कोई नहीं)॥

(और ईमानदारों और संयमी मनुष्यों के लिये स्वर्ग है। और) उस स्वर्ग की (दशा और) शान, जिसका संयमी लोगों से वादा किया गया है-यह है कि उसके नीचे (जल से भरपूर) नहरें बहती होंगी। उसके फल सदा (हर ऋतु में) रहने वाले होंगे। और (इसी तरह) उसका साया भी (स्थायी होगा)। सच्चे (और संयमी) लोगों का परिणाम तो यह है (अर्थात उस स्वर्ग में आराम करना है) और काफ़िरों का परिणाम (तो यह है कि नर्क की) आग (में जलना और तड़पना तथा बिलकना) है॥

और (ऐ रसूल !) जिन लोगों को हमने किताब (तौरेत या इन्जील) प्रदान की है (अर्थात यहूदी व ईसाई, उनमें से बाज़ लोग तो ऐसे हैं कि) जो (.क़ुरआन हमारी ओर से) तुम पर उतारा गया है, उससे वह .ख़ुश होते हैं। (और उसकी श्रेष्ठता व उत्तमता और उस के अच्छे विषय को देख कर उस पर ईमान ले आते हैं)। और उन ही के समूहों में से बाज़ (लोग ऐसे) हैं, जो उस (.क़ुरआन) के बाज़ (भाग) का (स्पष्ट) इन्कार कर देते हैं। (अर्थात .क़ुरआन में जो आज्ञायें उनकी इच्छा के विरुद्ध हैं, उन्हें वह नहीं मानते। ऐ रसूल !) तुम (उन लोगों से) कहो कि (मैं अपनी ओर से तुम लोगों से कुछ नहीं कहता। मुझे तो अल्लाह जो आज्ञा देता है, उसे तुम तक पहुँचा देता हूँ। जैसे कि तौहीद के विषय में) मुझे आज्ञा हुई है कि मैं बस अल्लाह ही की पूजा करूं। और उसके साथ (उसकी व्यक्ति व गुण अथवा आज्ञा मानने व पूजा करने में किसी और को) शामिल न करूं। और (तुम लोगों को भी उसी एक .ख़ुदा की ओर बुलाऊँ। अत-एव) मैं (तुमको भी) उसी की ओर बुलाता हूँ (और स्वयं भी उसी की पूजा में लगा रहता हूँ)। और (मैं क्यों ऐसा न करूं--मुझे मरने के पश्चात) उसी की ओर लौट कर जाना (और हिसाब किताब देना) है॥

और (जिस प्रकार हमने भूत पूर्व नबियों पर अपनी किताबें उनकी और उनकी उम्मतों की भाषा में उतारी थीं) इसी प्रकार (ऐ रसूल !) हमने इस (किताब अर्थात .क़ुरआन) को (एक) अरबी भाषा में फ़ैसला करने वाला बनाकर तुम पर उतारा है। और (ऐ रसूल !) यदि तुम इसके पश्चात कि तुम्हारे पास (इस .क़ुरआन के सच्चा होने का) ज्ञान आ गया है, इन (काफ़िरों) की इच्छाओं (और इनकी किताबों के वर्जित हुक्मों) की आधीनता करोगे, तो (याद रक्खो कि) तुमको अल्लाह (की पकड़) से—

हिमायती होगा और न कोई बचाने वाला ० और तुमसे पहिले भी हमने (बहुतेरे) पैग़म्बर भेजे और हमने उनको बीवियां भी दीं और औलाद (भी दी)। और किसी रसूल की ताक़त न थी कि वे हुक्म ख़ुदा कोई मोजिज़ा ला दिखाए। हर एक वक़्त मौऊद के लिये (हमारे हां एक क़िस्म की) तहरीर (होती) है ० (फिर उसमें से) ख़ुदा जिसको चाहता है, मन्सूख़ कर देता है और (जिसको चाहता है) क़ायम रखता है। और उस के पास अस्ल किताब (यानी लौह मह़फ़ूज़ मौजूद) है (कि उसमें सब कुछ लिक्खा रहता है) ० और (ऐ पैग़म्बर ! अज़ाब वग़ैरा के) जैसे २ वादे इन (कुफ़्फ़ार मक्का) से हम करते हैं, चाहे बाज़ वादे हम (तुम्हारी ज़िन्दिगी में) तुमको (पूरे कर) दिखाएं और चाहे (इन वादों के वक़्त से पहिले) तुमको दुनिया से उठालें। बहर हाल (हमारे अहकाम का) पहुँचा देना तुम्हारा काम है और (इनसे) हिसाब लेना हमारा ० क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम (फ़ुतूहात इस्लाम से) मुल्क को सब तरफ़ से दबाते चले आते हैं। और अल्लाह (जो चाहता है) हुक्म देता है। कोई (शख़्स दरपै होकर) उसके हुक्म को टाल नहीं सकता। और वह बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है ० और जो लोग इन (कुफ़्फ़ार मक्का) से पहिले हो गुज़रे हैं, उन्होंने भी (पैग़म्बरों की मुख़ालिफ़त में अपनी अपनी) तदबीरें कीं, सो (कारगर) तदबीरें तो सब अल्लाह ही की हैं। जो शख़्स जो कुछ कर रहा है, ख़ुदा को (सब) मालूम है। और काफ़िरों को अनक़रीब मालूम हो जाएगा कि किसका अंजाम बख़ैर है ० और (ऐ पैग़म्बर !) मुन्किर कहते हैं कि तुम पैग़म्बर नहीं हो, तो (तुम उनसे) कहो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह और जिनके पास (आस्मानी) किताबों का इल्म है (और उनमें मेरी निस्बत पेशीन गोइयाँ मौजूद हैं, यह) गवाह बस हैं ०—

ع

مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ
قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ
لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ
كِتَابٌ ۝ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗۤ
اُمُّ الْكِتٰبِ ۝ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ
اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ
وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَهُوَ
سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ
وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ وَيَقُوْلُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ
شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۝

बचाने वाला और (तुम्हारा) सहायक (दीन व दुनिया में) कोई न मिलेगा॥

और (ऐ रसूल ! इन काफ़िरों को क्या हो गया, जो तुम्हारी पैग़म्बरी के बारे में तरह २ के आक्षेप करते हैं)। हमने तुमसे पहिले (जितने) रसूल भेजे हैं (वह सब मनुष्य थे, फ़रिश्ते न थे)। और हमने उनको पत्नियाँ भी दी थीं और सन्तान भी। और (उन रसूलों में से किसी की मजाल न थी, जो अल्लाह की आज्ञा बिना कोई चमत्कार प्रकट कर देता)। हर काम के लिये एक समय नियत है। (अतएव सुकर्म और कुकर्म, पुरस्कार और दण्ड का भी उसके यहाँ एक समय नियत है)॥

(और कभी यह काफ़िर कहते हैं कि इस नबी को क्या हो गया कि यह उन ख़ुदाई आदेशों को, जो तौरेत व इन्जील में हैं—मंसूख़ कर देता है। तो ऐ रसूल ! तुम इन लोगों से कह दो कि) अल्लाह (ही ने उन किताबों को उतारा है। और वही अपने) जिस (हुक्म) को चाहता है, मिटा देता है और (जिसे चाहता है) बाक़ी रखता है। और उसके पास (तो) उम्मुलकिताब (अर्थात् आकाशीय किताबों का गुप्त ज्ञान मौजूद) है॥

और (ऐ रसूल !) हमने इन (काफ़िरों) से (जिन) जिन (अज़ाबों के देने) का वादा कर रक्खा है, उनमें से कोई (अज़ाब उतार कर) हम तुमको (तुम्हारी ज़िन्दगी में) दिखादें, या (इससे पहिले ही) हम तुमको दुनिया से उठालें, (तुमको इससे कुछ बहस नहीं)। तुम्हारे ज़िम्मे तो केवल (हमारे आदेशों का) प्रचार करना है। (रहा इन काफ़िरों, अवज्ञा कारियों से भुगतना) और (इनसे इनके कर्मों का) हिसाब (लेना, यह सब) हमारे ज़िम्मे है। (जब समय आवेगा, तो हम अच्छी तरह इनसे समझ लेंगे)॥

क्या इन (काफ़िरों) को यह नहीं दिखाई देता कि हम हर तरफ़ से (उनके अधिकार की) ज़मीन को कम करते (और मुसलमानों को उस पर अधिकार दिलाते) चले आ रहे हैं। और अल्लाह तआला (जो चाहता है) हुक्म करता है। उसके हुक्म को कोई रोकने वाला नहीं। और वह बहुत जल्द (काफ़िरों से उनके कर्मों का) हिसाब लेने वाला है॥

और इन (मक्के के काफ़िरों) से पहिले जो लोग हो चुके हैं, उन्होंने भी (हमारे शिक्षा प्रचार को रोकने के लिये बड़े बड़े) उपाय किये, किन्तु (सफल) उपाय तो समस्त अल्लाह ही के (होते) हैं। जो कुछ जो मनुष्य कर रहा है, उसको (उसकी सब) ख़बर है। और (इन) काफ़िरों को अभी पता चल जायगा कि प्रलय काल में उत्तम परिणाम किस के लिये है॥

और (ऐ रसूल !) काफ़िर (जो तुमसे) कहते हैं कि तुम (अल्लाह के) भेजे हुए (रसूल) नहीं हो (तो) तुम (उनसे) कह दो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह और वह मनुष्य (जो न्यायकारी है और) जिसके पास किताब (तौरेत व इन्जील) का ज्ञान (मौजूद) है—काफ़ी गवाह हैं॥

سورة ابراهيم مكية وهي اثنان وخمسون آية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

الٓرٰ ● كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ
اِلَى النُّوْرِ ● بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ●
اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ● الَّذِيْنَ
يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ
بَعِيْدٍ ● وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ
قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ● وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا
مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ
اِلَى النُّوْرِ ● وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

सूरत-इब्राहीम

मक्की अर्थात् मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ५२ आयतें और ७ रुकूअ हैं॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० अलिफ़ लाम रा ० (ऐ पैग़म्बर ! यह .कुर्आन एक बड़ी आला दरजे की) किताब (है)। इसको हमने तुम पर इस ग़रज़ से उतारा है कि तुम लोगों को उनके पर्वर्दिगार के हुक्म से (कुफ़् के) अंधेरों से निकाल कर (ईमान की) रोशनी में लाओ। (यानी) उस (ज़ात पाक) के रस्ते पर (लाओ) जो (सब से) ज़बरदस्त (और हमा वक़्त और हर हाल में) तारीफ़ के लायक़ है ० (यानी) अल्लाह कि उसी का है, जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। और अज़ाब सख़्त (के पतिवार) से (जो आख़िरत में होने वाला है) काफ़िरों (के हाल) पर (बड़ा सख़्त) अफ़सोस है ० कि यह लोग आख़िरत के मुक़ाबिले में दुनिया की ज़िन्दिगी को पसन्द रखते और अल्लाह के रस्ते (पर चलने) से (लोगों को) रोकते और उसमें कजी (पैदा करनी) चाहते हैं। यही लोग (हैं, जो) परले दरजे की गुमराही में हैं ० और जब कभी हमने कोई पैग़म्बर भेजा, तो (उसको) उसी की क़ौमी ज़बान में (बात चीत करता हुआ भेजा) ताकि वह उनको (अच्छी तरह) समझा सके। इस पर भी .ख़ुदा जिस को चाहता है, गुमराह करता है और जिसको चाहता है, हिदायत देता है। और वह ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है ० और हम ही ने मूसा को (भी) अपनी निशानियां देकर भेजा (और उनको हुक्म दिया) कि अपनी क़ौम को (कुफ़् के) अंधेरों से निकाल कर (ईमान की) रोशनी में लाओ ० और उनको .ख़ुदा के मारके याद दिलाओ, क्योंकि उन (वाक़िआत) में-

सूरत-इब्राहीम

मक्की अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ५२ आयतें और ७ रुकूअ हैं॥

(ऐ रसूल !) यह (.कुर्आन) एक (उत्तम) पुस्तक है। हमने इसको तुम पर (इस अभिप्राय से) उतारा है, जिससे कि लोगों को उन के पालन कर्त्ता के आदेशानुसार (कुफ़्. के) अन्धकारों से निकाल कर (ईमान के) प्रकाश की ओर तुम ले आओ। (अर्थात् उस अल्लाह के) रास्ते पर (लगा दो) जो (बड़ा) ज़बर्दस्त (और हर समय और हर घड़ी) स्तुति (व प्रशंसा) के योग्य है। (और जो) ऐसा अल्लाह है कि पृथ्वी पर और आकाशों में जो कुछ (भी मौजूद) है (सब) उसी (की शक्ति) के अधिकार में है। और (अगर कोई ऐसे अल्लाह और उसकी किताब को न माने, तो) उन काफ़िरों के लिये ख़राबी (अर्थात अत्यन्त कठोर अज़ाब नियत) है। जो संसार के (क्षणिक) जीवन को परलोक (के अमर जीवन और सुख) के मुक़ाबले में श्रेष्ठ ठहराते और (अपने साथ .ख़ुदा के बन्दों को भी) अल्लाह के रास्ते से रोकते और (तरह २ की पथ भ्रष्टता और आक्षेप पूर्ण बातें करके) उसमें (अर्थात् अल्लाह के सीधे रास्ते में) टेढ़ापन (पैदा करना) चाहते हैं। (वास्तव में) यही (वह अभागे) हैं, (जो सीधे और निकट मार्ग से भटक कर) दूर की पथ भ्रष्टता में (जा पड़े) हैं॥

और (आक्षेप करते हैं कि .कुर्आन अरबी भाषा में क्यों उतारा गया। तो ऐ रसूल ! तुम इनसे कह दो कि) हमने (जब) किसी रसूल को भेजा, तो (उसको) उसी की जाति (और उसी के देश) की भाषा में (अपनी किताब प्रदान की। और वही भाषा उस को सिखलाई) जिस से कि वह उनको (अर्थात अपनी जाति के लोगों को) साफ़ (साफ़ अल्लाह के आदेशों को) बता सके। फिर (अर्थात अल्लाह के आदेशों को अच्छी तरह समझाने पर भी) अल्लाह (को हर बात का अधिकार होता है। वह) जिसे चाहता है, पथ भ्रष्ट कर देता है और जिसे चाहता है, हिदायत (का मार्ग बता) देता है। और वह (बड़ा) ज़बर्दस्त (शक्ति शाली और महान) बुद्धिमान है (जो कुछ उचित समझता है, करता है। किसी का इतना साहस नहीं कि उसे किसी बात के करने से रोक दे)॥

और (जिस तरह ऐ रसूल! हमने तुमको अपना रसूल बनाकर भेजा है, उसी तरह) हमने मूसा को (पैग़म्बरी का सम्मान प्रदान किया था और) अपने चमत्कार देकर (उनकी जाति की ओर) भेजा था। (और उनको हुक्म दिया था) कि अपनी जाति को (कुफ़् के) अन्धकारों से निकाल कर (ईमान के) प्रकाश की ओर लाओ। और उनको अल्लाह के बर्ताव याद दिलाओ। क्योंकि उनमें—

हर एक सब्र व शुक्र करने वाले के लिये (क़ुदरत ख़ुदा और इब्रत की) निशानियाँ हैं ० और उन ही वक़्तों का मज़्कूर यह भी है कि मूसा ने अपनी क़ौम (के लोगों) से कहा कि (भाइयो !) अल्लाह ने जो तुम पर एहसानात किये हैं, उनको याद करो। जब कि उसने तुमको फ़िर्औन के लोगों (के ज़ुल्म) से नजात दी कि वह तुमको बुरी तरह अज़ाब देते और तुम्हारे बेटों को ढूंढ २ कर हलाल करते (ताकि तुम्हारा ज़ोर टूटे)। और तुम्हारी औरत ज़ात (यानी बेटियों) को (कार व ख़िदमत के लिये) ज़िन्दा रखते थे। और इन (मुसीबतों) में तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से (तुम्हारे सब्र की) बड़ी आज़माइश थी ० और (वह वक़्त भी याद है) जब कि तुम्हारे पर्वर्दिगार ने जता दिया था कि अगर (हमारा) शुक्र करोगे, तो हम तुमको और ज़ियादा (नेअ्मतें) देंगे और अगर तुमने ना शुक्री की, तो (तुमको मालूम रहे कि) हमारी मार (भी बड़ी) सख़्त (मार) है ० और मूसा ने (अपनी क़ौम के लोगों से यह भी) कहा कि अगर तुम, और जितने लोग रूए ज़मीन पर हैं, वह सब (के सब मिल कर भी) ख़ुदा की ना शुक्री करो, तो ख़ुदा (को ज़रा भी पर्वा नहीं, क्योंकि वह) बे नियाज़ (और हर हाल में) सज़ावार हम्द (व सना) है ० क्या तुमको उनके हालात नहीं पहुँचे, जो तुमसे पहिले (हो गुज़रे) हैं, (यानी) नूह की क़ौम और आद की और समूद की ० और (दूसरे लोग) जो उन के बाद हुए, जिनकी ख़बर बस ख़ुदा ही को है, उनके पैग़म्बर मोजिज़े ले लेकर उनके पास आए (और जैसा दस्तूर है, उनको हाथ फैला २ कर समझाने लगे) तो उन्होंने उनके हाथों को उन ही के मुंहों पर उल्टा मार दिया। और बोले जो हुक्म देकर तुम (ख़ुदा की तरफ़ से) भेजे गये हो, हम तो उसको नहीं मानते। और जिस (दीन) की तरफ़ तुम हमको बुलाते हो, हम तो उसकी निस्बत बड़े शक दर शक में (पड़े) हैं ०—

ع

لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ● وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا
نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ
يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ
وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذٰلِكُمْ بَلَاءٌ مِنْ
رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ● وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ
لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي
لَشَدِيدٌ ● وَقَالَ مُوسَى إِنْ تَكْفُرُوا أَنْتُمْ وَمَنْ
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ● أَلَمْ
يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَ
عَادٍ وَثَمُودَ ● وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ
إِلَّا اللّٰهُ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا
أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا
أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ

प्रत्येक सन्तोषी व कृतज्ञ (और शिक्षा व उपदेश प्राप्त करने वाले) के वास्ते (हमारी शक्ति की बड़ी २) निशानियां (पाई जाती) हैं॥

और (ऐ रसूल ! मूसा का वह समय भी वर्णन करने योग्य है कि) जब वह (हमारी आज्ञानुसार अपनी जाति के पास गये और) अपनी जाति (के लोगों) से (जाकर) कहा कि (लोगो !) अल्लाह ने जो तुम पर अपनी दया की थी, उसे याद करो। जब कि उसने तुम को फ़िर्औन के लोगों (के ज़ुल्म व अत्याचार) से मुक्ति प्रदान की थी। जो तुमको अत्यन्त कष्ट देते और तुम्हारे लड़कों को (चुन २ कर) बध कर देते और तुम्हारी स्त्रियों (और लड़कियों) को (अपनी दासियाँ बनाकर) जीवित रखते थे। और इनमें तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (तुम्हारी) महान परीक्षा थी॥

और जब (मूसा ने अपनी जाति के लोगों से कहा था कि ऐ लोगो ! वह समय याद करो) जब कि तुम्हारे पालन कर्त्ता ने तुमको सूचित किया था कि (ऐ लोगो !) यदि तुम (हमारे) अनुग्रहीत होगे, तो हम तुमको अधिक (नेअ्मतें) देंगे। और यदि तुम (हमारी) कृतघ्नता करोगे, तो (अच्छी तरह याद रक्खो कि) हमारा अज़ाब (कृतघ्नों के लिये) अत्यन्त कठोर है॥

और (जब) मूसा ने कहा था कि (ऐ लोगो !) अगर तुम और जो (जो लोग) पृथ्वी में (बस्ते) हैं, सब (के सब मिल कर भी) अल्लाह की कृतघ्नता करें, तो अल्लाह (को उस समय भी बिलकुल परवाह न होगी। क्योंकि वह स्तुति व कृतज्ञता से) इच्छा रहित (और प्रत्येक दशा में) स्तुति (व प्रशंसा) के योग्य है (चाहे कोई उसकी स्तुति व प्रशंसा और उसकी कृतज्ञता प्रकाश करे या न करे)॥

(ऐ मक्के के काफ़िरो !) क्या तुमको उन लोगों (के वृतान्त और घटनाओं) की सूचना नहीं मिली, जो तुमसे पहिले (हो चुके) हैं। (जैसे) नूह व आद व समूद की जाति और उन लोगों की, जो उनके बाद (हुए) हैं। उन (के स्पष्ट वृतान्त) को तो अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता (तिस पर भी संक्षिप्त हाल यह है कि) उनके पास उनके रसूल (नियमानुसार प्रमाण व) चमत्कार लेकर आये, तो उन्होंने (अर्थात काफ़िरों ने उनकी वाणी से अल्लाह के आदेशों को सुन कर अत्यन्त आश्चर्य किया। और अचम्भे के मारे) अपने हाथों (की उङ्गलियों) को अपने मुंह (और अपने दाँतों) में दे लिया। और लगे कहने कि जो (हुक्म) देकर तुम (हमारी तरफ़) भेजे गये हो, हम उन (के मानने) से इन्कार करते हैं। और जिस (धर्म) की तरफ़ तुम हमको बुलाते हो, हम उस (की सच्चाई के बारे) में ऐसे सन्देह में (लिप्त) हैं—

مُّرِيبٍ ۝ قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَ
يُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوا إِنْ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُنَا تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ
آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۝ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ
إِن نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ
عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم
بِسُلْطٰنٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ
وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدٰىنَا
سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُم مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي
مِلَّتِنَا ۖ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِينَ

उनके पैग़म्बरों ने (उनसे) कहा, क्या (तुमको) ख़ुदा (के होने) में शक है, जो आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला है। (और) वह तुमको इसी लिये (अपनी तरफ़) बुलाता है कि तुम्हारे गुनाह माफ़ करे और एक वक़्त मुक़र्रर तक तुमको (दुनिया में अम्न चैन से) रहने दे। वह लगे कहने कि तुम भी तो बस हमारी (ही) तरह के आदमी हो। चाहते हो कि जिन (माबूदों) को हमारे बड़े पूजते आये हैं, उन (की परस्तिश) से हमको रोक दो (अच्छा तो अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो) तो हमको (हमारी ख़्वाहिश के मुताबिक़) कोई (साफ़ व) सरीह मोजिज़ा ला दिखाओ ० उनके पैग़म्बरों ने उनसे कहा कि बेशक हम तुम्हारी ही तरह के आदमी हैं, मगर ख़ुदा अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है, (अपना) फ़ज़्ल करता (और उसको ख़िदमत पैग़म्बरी से सर्फ़राज़ फ़र्माता) है। और बे हुक्म ख़ुदा हमारी मजाल नहीं कि हम कोई मोजिज़ा तुमको ला दिखाएं। और अल्लाह ही पर (सब) ईमान वालों को भरोसा रखना चाहिये ० और हमारे लिये क्या (उज़्र हो सकता) है कि अल्लाह पर भरोसा न रक्खें, हालाँकि हमारे (यह) तरीक़े (जिन पर हम चल रहे हैं) उसी ने हमको बताए और जैसी २ ईज़ाएं तुम हमको पहुँचाते रहे हो (अब तक भी हमने उन पर सब्र किया और आयन्दा भी) हम ज़रूर उन पर सब्र करते रहेंगे। और तवक्कुल करने वालों को चाहिये कि ख़ुदा ही पर तवक्कुल करें ० और मुन्किरों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि हम तुम को अपने मुल्क से ज़रूर निकाल बाहर करेंगे, या (हार कर) तुम फिर हमारे मज़हब में आ जाओगे। इस पर पैग़म्बरों के पर्वर्दिगार ने उनकी तरफ़ वही भेजी कि हम (इन) सर्कश लोगों को ज़रूर ग़ारत करेंगे०—

कि (हमारा उस धर्म पर) दिल नही टिकता ॥ (यह सुन कर) उनके रसूलों ने (उनसे) कहा (कि भाइयो !) क्या तुमको (ऐसे) अल्लाह (की स्थिति और उसके धर्म की सचाई) में सन्देह है, जो आकाशों और पृथ्वी का पैदा करने वाला है। (और) जो तुमको (अपने धर्म की ओर केवल) इस लिये बुलाता है, कि तुम्हारे पापों को क्षमा करे और तुमको एक ज्ञात समय तक (सुख व आनन्द के साथ संसार में रहने का) अवसर दे ॥

उन्होंने कहा कि (तुम कुछ भी कहो, हमें विश्वास नहीं होता कि तुम ख़ुदा के रसूल हो। क्योंकि) तुम तो हमारी तरह एक मनुष्य हो। (और हमारे नज़्दीक यह) तुम्हारी इच्छा है कि जिन (पूज्यों) को हमारे बाप (दादा सदैव से) पूजते (चले) आये हैं, उन (की आधीनता व उपासना) से तुम हमको रोक दो। (और यदि मान लिया जाय कि तुम वास्तव में रसूल ही हो, और हमारा यह ख़याल ग़लत है) तो तुम (अपने को ख़ुदाई सन्देशिया सिद्ध करने के लिये) कोई स्पष्ट चमत्कार (हमारी इच्छानुसार) हमारे सामने ले आओ (जिससे कि हमको इन्कार का कोई अवसर ही न मिले) ॥

(इस पर) उनके रसूलों ने उनसे कहा कि (इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि) हम तुम्हारी ही तरह एक मनुष्य हैं, परन्तु (मनुष्यता नबी होने के विरुद्ध नहीं है। नबी होना तो) अल्लाह तआला (की एक मेहर्बानी और कृपा है। और यह) कृपा (वह) अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है, कर देता है। (किसी का नबी या रसूल होना ख़ुदा की इच्छा पर निर्भर है। मनुष्यता या बपौती पर इसका आधार नहीं है) ॥

और (रहा तुम्हारी इच्छानुसार चमत्कारों का दिखाना, तो) हममें (इतनी) शक्ति नहीं है कि बिना अल्लाह के हुक्म के कोई चमत्कार तुम्हारे सामने उपस्थित करदें। (अब अगर इतने समाधान के बाद भी तुम हमारा विरोध करने पर अड़े रहो, तो तुम जानो)। और ईमानदारों को (सदैव) अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये। (अल्लाह अगर चाहेगा, तो दम भर में तुम्हारे विरोध के जाल को तोड़ डालेगा। और हमको तुम पर अधिकार प्राप्त करा देगा) ॥

और हमसे तो यह हो ही नहीं सकता कि हम (अपने) अल्लाह पर भरोसा न करें (और उसके बन्दे और उसके दूत होने के पश्चात उसे भूल जावें। और) ऐसी दशा में कि हमारे (यह) रास्ते (जिन पर हम स्वयं चलते और लोगों को चलने की शिक्षा देते हैं) हमको उसी ने बताये हैं (हम उन्हें छोड़ बैठें)। और (रहा तुम्हारा कष्ट पहुँचाना और विरोध, तो) तुमने (जैसा २ हमारा विरोध किया है और) हमको जो (जो) कष्ट दिये हैं, हम (अब तक बराबर) उन पर सन्तोष (करते आये हैं, और इसी प्रकार आगे भी सन्तोष) करते रहेंगे। (परन्तु अल्लाह के भरोसे को किसी दशा में न छोड़ेंगे) और (तुम्हारे विरोध और कष्ट पहुँचाने की कभी चिन्ता न करेंगे। और) भरोसा करने वालों को चाहिये (भी यही) कि (सदैव) अल्लाह ही पर भरोसा करें। (और सच्चाई के शत्रुओं की शत्रुता और विरोध की बिल्कुल परवाह न करें) ॥

(मगर इन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूलों की एक न मानी) और (यह कट्टर) काफ़िर अपने (अपने) रसूलों से कहने लगे कि (बस अब अपनी ज़बान को रोको। हमें तुम्हारी नसीहत की ज़रूरत नहीं है। अब सिर्फ़ दो मार्ग हैं-या तो, हम तुमको अपनी (इस) पृथ्वी से निकाल देंगे, या तुमको (मज्बूर होकर) हमारे धर्म में वापिस आना पड़ेगा। (जब काफ़िरों की सर्कशी इस दशा तक पहुँच गई) तो उनके (अर्थात रसूलों के) पालन कर्त्ता ने उन्हें कहला भेजा (कि मत घबराना। इनकी मजाल क्या है, जो किसी प्रकार का दुर्व्यवहार तुम्हारे साथ कर सकें)। हम ज़रूर इन ज़ालिमों को मार डालेंगे—

ولنسكننكم الارض من بعدهم ذلك
لمن خاف مقامي وخاف وعيد ○ واستفتحوا وخاب
كل جبار عنيد ○ من ورائه جهنم ويسقى من
ماء صديد ○ يتجرعه ولا يكاد يسيغه
ويأتيه الموت من كل مكان وما هو بميت
ومن ورائه عذاب غليظ ○ مثل الذين كفروا
بربهم اعمالهم كرماد اشتدت به الريح في
يوم عاصف لا يقدرون مما كسبوا على
شيء ذلك هو الضلل البعيد ○ الم تر ان الله
خلق السموت والارض بالحق ان يشا يذهبكم
ويات بخلق جديد ○ وما ذلك على الله بعزيز ○
وبرزوا لله جميعا فقال الضعفؤا للذين
استكبروا انا كنا لكم تبعا فهل انتم مغنون

और इनके (ग़ारत हुये) पीछे ज़रूर तुमको इसी सर ज़मीन में बसाएंगे। यह सिला उस शख़्स का है, जो हमारे हुज़ूर में (आमाल की जवाब दिही के लिये) खड़े होने से डरा और (नीज़) हमारे अज़ाब से डरा ० और पैग़म्बरों ने चाहा कि (उनका और काफ़िरों का झगड़ा कहीं) फ़ैसल हो चुके (चुनांचे उनकी ख़्वाहिश पूरी हुई) और हर एक हेकड़ ज़िद्दी हलाक हुआ ० (यह तो दुनिया की सज़ा थी और) इसके बाद (उसके लिये) दोज़ख़ है। और (वहां) उसको पीप का पानी पिलाया जायगा ० कि उस को ज़बरदस्ती चुस्कियाँ ले लेकर पीयेगा और (फिर भी) उसको गले से न उतार सकेगा। और मौत (है कि) उसको हर तरफ़ से आती (हुई दिखाई देती) है और वह (फिर भी) नहीं मरता। और उसको (और) अज़ाब सख़्त (भी) दरपेश है ० जो लोग अपने पर्वर्दिगार को नहीं मानते, उनकी मिसाल ऐसी है कि उनके अमल (नेक) गोया राख (का ढेर) हैं कि आंधी के दिन उसको हवा ले उड़ी। (इसी तरह) जो (आमाल नेक) यह लोग (दुनिया में) कर गये हैं, उनमें से कुछ भी इनके हाथ नहीं आएगा। परले दरजे की ना कामयाबी यही (कहलाती) है ० (ऐ आदम ज़ाद !) क्या तूने इस बात पर नज़र नहीं की कि ख़ुदा ने आस्मानों और ज़मीन को (ज़रूर किसी) मस्लहत ही से पैदा किया है। अगर चाहे, तो तुम (सब) को मिटा हटा कर नई ख़ल्क़त को ला बसाए ० और यह ख़ुदा पर कुछ दुश्वार नहीं ० और (क़यामत के दिन) सब लोग ख़ुदा के रूबरू निकल खड़े होंगे। तो (जो लोग दुनिया में) कमज़ोर (थे, उस वक़्त) उन लोगों से, जो बड़ी इज़्ज़त रखते थे, कहेंगे कि हम तो तुम्हारे क़दम ब क़दम चलने वाले थे। तो क्या (आज) तुम—

और इन (के मारे जाने) के पश्चात इस पृथ्वी में तुमको बसा देंगे। (और हमारी) यह (मेहर्बानी केवल तुम्हारे लिये निर्दिष्ट नहीं है, बल्कि हर) उस मनुष्य के लिये है, जो हमारी सेवा में (हिसाब देने के लिये) खड़ा होने से डरा। और जिसने (बुरे कर्म करते समय) हमारे (अज़ाब देने के) वादे का भय माना ॥

और रसूलों ने (इन काफ़िरों पर) विजय (प्राप्त करने) की (हमसे) इच्छा प्रकट की, (अतएव उनको विजय प्रदान की गई)। और प्रत्येक सर्कश व विरोधी (मनुष्य पर हमारा अज़ाब आया और वह बिलकुल नष्ट और) निष्फल हो गया। (और इस साँसारिक दंड के अतिरिक्त) उसके पीछे नर्क (का अज़ाब परलोक में लगा हुआ) है, और (वह इस सांसारिक दण्ड से कहीं अधिक कठोर है। नर्क में ख़ुदा व रसूल के) प्रत्येक विरोधी को पीप मिला हुआ पानी पिलाया जायगा कि वह उसको (प्यास की अधिकता के कारण) घूंट घूंट पियेगा। और (किसी तरह उसका एक घूंट भी) गले से (नीचे) न उतार सकेगा। और मौत उसको (हर तरफ़ से आती नज़र) आयेगी और वह मरेगा नहीं। और उसके पीछे (इन उपरोक्त कष्टों से भी अधिक) घोर अज़ाब (लगा हुआ) है (जिसे वह वहां पहुँच कर अवश्य भुगतेगा)॥

उन लोगों (के कर्मों) का उदाहरण, जिन्होंने अपने पालन कर्त्ता (के पूज्य होने) का इन्कार कर दिया (ऐसा है। अर्थात) उन के कर्म (बिलकुल उस) राख की (ढेरी के) समान हैं, जिस पर आंधी वाले दिन (ख़ूब) तेज़ हवा चली हो (और उसने इस राख को इधर उधर उड़ाकर बिल्कुल नष्ट व बरबाद कर दिया हो। अतएव) जो कुछ यह (असत्य पूजक दुनिया में) कर चुके हैं, उसमें से कुछ भी इनके अधिकार में नहीं आयेगा। (और अल्लाह के क्रोध की आंधी उनके समस्त कर्मों को उसी राख की तरह मलियामेट और अकार्थ कर देगी। और उनके कर्मों की सूची में कोई कर्म भी ऐसा शेष न छोड़ेगी, कि जिसके बदले वह कुछ पुण्य प्राप्त कर सकें। ऐसी दशा में इन झूठे व निष्फल कर्मों को इन ना समझों का मुक्ति का कारण समझना वास्तव में) यही (वह भ्रम है, जो इनको) परले दर्जे की पथ भ्रष्टता (की ओर खींच कर ले जाता है। और दीन व दुनिया में हानि का कारण होता) है ॥

(भला ऐ मनुष्य !) क्या तुझको नज़र नहीं आता कि अल्लाह ने आकाशों और पृथ्वी को अपनी (विशेष) युक्ति के साथ पैदा किया है (व्यर्थ नहीं बनाया। तो ऐसी महान शक्ति वाला) अल्लाह अगर चाहे, तो (ऐ काफ़िरो ! क्या वह इतना नहीं कर सकता कि) तुमको (दम भर में इस संसार से उठा) ले जाय। और (तुम्हारा जगह) कोई नये प्राणी (जो आज्ञाकारी और उपासक हों यहां) ला बसाये। (निस्सन्देह वह ऐसा अवश्य कर सकता है)। और यह अल्लाह को कुछ कठिन नहीं है ॥

और (ऐ मूर्खो ! अगर तुम इस ख़याल में हो कि आज तुम जिनकी ताबेदारी करते हो, वह प्रलय के दिन अल्लाह के अज़ाब से तुमको बचा लेंगे, तो उसका वृत्तान्त भी सुन लो। प्रलय के दिन) सब अल्लाह के सामने पेश होंगे। फिर (तुम में से जो) कमज़ोर (और दूसरों के ताबेदार हैं, अपने) बुज़ुर्गों (और पीरों और गुरुओं) से कहेंगे कि हम (संसार में) तुम्हारे ताबेदार (और तुम्हारी असत्य आज्ञाओं के पालन में लगे रहते) थे। (आज यह उसी का परिणाम है, कि हम विपत्ति में फंसे हैं)। तो क्या तुम—

अज़ाब ख़ुदा में से कुछ (थोड़ा सा) हम पर से हटा सकते हो ? वह कहेंगे कि (भाई ! हम तो आप ही अज़ाब में मुब्तला हैं) । अगर ख़ुदा हमको (नजात का) कोई तरीक़ा दिखाता, तो (वह तरीक़ा) हम भी तुम को दिखा देते । (अब तो) बे सब्री करें तो--और सब्र करें तो--हमारे (तुम्हारे) लिये (दोनों हालतें) बराबर हैं । हमको (अज़ाब से) किसी तरह छुटकारा नहीं ० और जब (आख़ीर) फ़ैसला हो चुकेगा (और लोग शैतान को इल्ज़ाम देंगे) तो शैतान कहेगा कि ख़ुदा ने तुमसे सच्चा वादा किया था, (सो उसने पूरा किया) । और वादा तुमसे मैंने भी किया था, मगर मैंने तुम्हारे साथ वादा ख़िलाफ़ी की और तुम पर मेरी कुछ ज़बरदस्ती तो थी नहीं । बात तो इतनी ही थी कि मैंने तुमको (अपनी तरफ़) बुलाया और तुमने मेरा कहना मान लिया । तो अब मुझे इल्ज़ाम न दो, बल्कि अपने तईं इल्ज़ाम दो । (आज) न तो मैं तुम्हारी फ़र्याद को पहुँच सकता हूँ और न तुम मेरी फ़र्याद को पहुँच सकते हो । मैं तो (सिरे से) मानता ही नहीं कि तुम मुझको (इससे) पहिले (दुनिया में) शरीक (ख़ुदा) बनाते थे । इसमें शक नहीं कि जो लोग ना फ़र्मान हैं, उनको (क़यामत के दिन) बड़ा दर्दनाक अज़ाब होगा ० और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल (भी) किये (बहिश्त के) बाग़ों में दाख़िल किये जायँगे, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी । (और वह) अपने पर्वर्दिगार के हुक्म से उनमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे । वहाँ उनकी (मुलाक़ात के वक़्त की) दुआ, सलामु (अलैक) होगी ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने (इस बात पर) नज़र नहीं की कि ख़ुदा ने नेक बात (यानी मसलन कलमए तौहीद) की कैसी (अच्छी) मिसाल दी है, कि (नेक बात) गोया एक पाकीज़ा दरख़्त है, उसको जड़ मज़बूत है और उसकी टहनियाँ आस्मान में हैं ०—

عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ
لَهَدَيْنٰكُمْ ۚ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ
مَّحِيْصٍ ۝ وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ
وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ۚ وَ
مَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ
فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۚ
مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۚ اِنِّيْ كَفَرْتُ
بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ۚ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۝ اَلَمْ
تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً
كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ

٤

ع٤

(आज) हमको (बिल्कुल नहीं, तो) कुछ (थोड़ा बहुत) अल्लाह के अज़ाब से बचा सकते हो । वह कहेंगे कि (जो कुछ तुम कहते हो, यह सब ठीक है । लेकिन हम क्या करें--मज्बूर हैं) । अगर अल्लाह तआला हमको (कोई) रास्ता (अज़ाब से मुक्ति पाने का) बताता, तो हम बिलकुल तुमको (भी) बता देते । (अब तो हम तुम) घबरायें तो, (और) धैर्य रक्खें तो, हमारे (तुम्हारे) लिये (दोनों दशायें) बराबर हैं । हमको (अज़ाब से किसी प्रकार) मुक्ति नहीं मिल सकती ॥

और जब (फल व दंड का सारा) काम समाप्त हो जावेगा (और ऐ काफ़िरो ! तुम हर तरफ़ से निराश होकर शैतान को बुरा भला कहोगे, तो उस समय) शैतान (उत्तर के रूप में तुमसे) कहेगा कि (लोगो ! तुम मुझको व्यर्थ बुरा भला कह रहे हो । क्योंकि) अल्लाह तआला ने तुमसे (जो) वादा (भी) किया था (वह बिलकुल) सच्चा वादा (था । और नबियों व रसूलों को प्रमाणों व चमत्कारों सहित भेज कर अपने प्रत्येक वादे की तसदीक़ करदी थी । अतएव उसका प्रत्येक वादा सच्चा निकला) । और मैंने (जो) तुमसे वादा किया था (कि न स्वर्ग है, न नर्क, न अन्त न हिसाब, न ख़ुदा न नबी--उसकी सचाई का कोई प्रमाण तुमसे वर्णन नहीं किया था) । अतः मैंने तुमसे वादा ख़िलाफ़ी की ॥

और (इसमें मेरा कुछ अपराध नहीं, क्योंकि) मुझे तुम पर (किसी प्रकार का अधिकार तो प्राप्त था ही नहीं (कि मैं तुम पर दबाव डाल सकता) । सिवाय इसके कि मैंने तुमको (तुम्हारे हृदयों में दुर्वासनायें डाल कर पथ भ्रष्टता की तरफ़) बुलाया (इसके सिवाय मैंने तुम्हारे साथ कुछ नहीं किया) । सो (इसमें तुम स्वतंत्र थे और हर प्रकार समझदार थे । तुमने नबियों, रसूलों और उनके ज़बरदस्त प्रमाणों व चमत्कारों को तो झूठा बताया । और) मेरे बुलावे को (जिसका सिर था न पैर) तुमने स्वीकार कर लिया । (यह कौनसी बुद्धिमानी की बात थी)॥

अतएव (अब) तुम मुझको बुरा भला न कहो और (मुझ पर बिना कारण धिक्कार न करो । मुझे धिक्कारना हो, तो) अपने (ही) ऊपर धिक्कार करो । (मुझको तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं) । न मैं तुम्हारी फ़रियाद को पहुँच सकता हूँ, और न तुम मेरी फ़रियाद को पहुँच सकते हो । (अर्थात न तुम मुझको अल्लाह के अज़ाब से बचा सकते हो, और न मैं तुमको । और) सच (तो) यह है कि मैं (ख़ुद तुम्हारे) इस (आचरण) से कि तुम (इस से) पहिले (अर्थात दुनिया में) मुझको (ख़ुदा का) साझी मानते थे, मुन्किर हूँ । (इस लिये इस कारण भी मेरा तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं । क्योंकि मेरे तुम्हारे सिद्धान्तों में भेद है । हाँ) अलबत्ता (दर्मियानी चाल से बढ़ने वालों और) ज़ुलम (व ज़्यादती) करने वालों के लिये (घोर) दुःख दायक अज़ाब (नियत) है । (अतएव तुम अपने ज़ुलम व ज़्यादती की सज़ा भुगतो और मैं अपने ज़ुलम व ज़्यादती की भुगतूं) ॥

और वह लोग जो (अल्लाह रसूल पर) ईमान ले आये और (ईमान लाने के बाद) उन्होंने अमल (भी) अच्छे किये, ऐसे (उम्दा २) बाग़ों में (रहने सहने और सुख व आनन्द प्राप्त करने के लिये) दाख़िल किये जावेंगे, जिनके नीचे (साफ़ सुथरा पानी और ख़ालिस दूध और शराब तहूर से लबालब भरी हुई) नहरें बहती होंगी । (और वहाँ उनका रहना कुछ दिन ही नहीं होगा, बल्कि वह) अपने पालन कर्त्ता के हुक्म से उन (बाग़ों) में सदैव (सदैव) रहेंगे । (और) उनकी दुआ (जो वह भेट के समय आपस में एक दूसरे को देंगे) सलामु (अलैकुम) होगी ॥

(ऐ रसूल ! यह सारे सुख व आनन्द अल्लाह के एक मानने व ईमान के पवित्र कलमों की बरकत से प्राप्त होंगे) । क्या तुमने नहीं देखा कि (इस) पवित्र कलमा की कैसी (उत्तम मिसाल (पूजनीय) अल्लाह ने वर्णन की है । (अल्लाह फ़रमाता है) कि (यह कलमा तय्यबा) एक पवित्र वृक्ष की तरह है । उसकी जड़ (अर्थात विश्वास रूपी पृथ्वी के हृदय की तह में) अंकित है । और उसकी शाखा (अर्थात नेकी) आकाश में (स्वीकृति के द्वार तक पहुँची हुई) है—

अपने पर्वर्दिगार के हुक्म से हमा वक़् अपने फल लाता रहता है। और अल्लाह लोगों के लिये (इस वास्ते) मिसालें बयान फ़र्माता है, ताकि वह सोचें (समझें) ० और गन्दी बात (यानी मसलन कलमए शिर्क) की मिसाल गन्दे दरख़्त की सी है कि (जब चाहा) ज़मीन के ऊपर (ऊपर) से उखाड़ फेंका, उसको कुछ ठहराव तो है नहीं ० जो लोग ईमान लाए हैं, उनको पक्की बात (यानी कलमए तौहीद) की बरकत से अल्लाह दुनिया में भी (ईमान पर) साबित (क़दम) रखता है और आख़िरत में (भी साबित क़दम रक्खेगा, यानी सवाल व जवाब के वक़् उनको किसी तरह की लग़िज़श न होगी)। और अल्लाह ना फ़र्मान लोगों को गुमराह करता है और अल्लाह जो चाहता है, कर गुज़रता है ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उन लोगों (के हाल पर) नज़र नहीं की, जिन्होंने अल्लाह की नेअ़मत के बदले में ना शुक्री की और (आख़िरकार) अपनी क़ौम को हलाकत के घर (यानी) जहन्नम में लेजा उतारा कि (वह सब) उसमें दाख़िल होंगे और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है ० और इन लोगों ने अल्लाह के मद्दे मुक़ाबिल (दूसरे माबूद) खड़े किये हैं, ताकि (लोगों को) उसके रस्ते से गुमराह करें। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि (ख़ैर, चन्द रोज़ दुनिया में) रस बस लो, फिर तो तुमको दोज़ख़ की तरफ़ जाना ही है ० (ऐ पैग़म्बर !) हमारे बन्दे. जो ईमान लाये हैं, उनसे कहो कि नमाज़ें पढ़ा करें और इससे पहिले कि (क़यामत का) दिन आ मौजूद हो, जब कि न (आमाल की) ख़रीद व फ़रोख़्त होगी—

تُؤْتِىٓ أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍۭ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ ٱللَّهُ
ٱلْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَ
مَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ
ٱجْتُثَّتْ مِن فَوْقِ ٱلْأَرْضِ مَا لَهَا مِن قَرَارٍ ۝
يُثَبِّتُ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱلْقَوْلِ ٱلثَّابِتِ فِى
ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ ۖ وَيُضِلُّ ٱللَّهُ ٱلظَّٰلِمِينَ ۚ
ع وَيَفْعَلُ ٱللَّهُ مَا يَشَآءُ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ بَدَّلُوا۟
نِعْمَتَ ٱللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا۟ قَوْمَهُمْ
دَارَ ٱلْبَوَارِ ۝ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ ٱلْقَرَارُ ۝
وَجَعَلُوا۟ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلُّوا۟ عَن سَبِيلِهِۦ ۗ قُلْ
تَمَتَّعُوا۟ فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى ٱلنَّارِ ۝ قُل لِّعِبَادِىَ ٱلَّذِينَ
ءَامَنُوا۟ يُقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُنفِقُوا۟ مِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ
سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِىَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ

(और) वह (पवित्र वृक्ष) हर समय अपना फल अपने पालन कर्ता के हुक्म से देता रहता है। (अर्थात हर समय ख़ुदा की कृपा की वर्षा) और (अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने का साधन होता रहता है। इस प्रकार के) उदाहरण लोगों के लिये अल्लाह तआला (केवल इस लिये) वर्णन करता है,ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें॥

और (कुफ़् व शिर्क के) अपवित्र कलमे का उदाहरण (ऐसा है) जैसे एक ख़राब पेड़ हो, कि (जिसकी जड़ें बिल्कुल निर्बल हों। और कोई उखाड़ना चाहे, तो) ज़मीन के ऊपर (ही) से वह (सुगमता से) उखाड़ लिया जावे। (और) उसको (ज़मीन पर) कुछ ठहराव न हो॥

(पूजनीय) अल्लाह ईमानदारों को (तौहीद व ईमान के) इस पक्के वचन (की बरकत) से (सच्चे धर्म पर) सांसारिक जीवन में और (हिसाब किताब के समय) प्रलय में (स्थायी और) दृढ़ रखता है। और (कुफ़् व शिर्क के निर्बल वचनों के अशुभ प्रभाव से) ज़ालिमों (और अवज्ञाकारियों) को (दोनों स्थानों पर सत्य मार्ग से) भटका देता है। और अल्लाह तआला जो चाहता है, करता है। (उसकी इच्छा में दख़ल देने का किसी को अधिकार नहीं)॥

(ऐ रसूल !) क्या तुमने उन (अभागे) मनुष्यों को नहीं देखा, जिन्होंने अल्लाह की मेहर्बानी (की कृतज्ञता प्रगट करने) के बदले (सरासर उसकी) कृतघ्नता की। और (अपने साथ) अपनी जाति को भी बरबादी के घाट (अर्थात) नर्क में जा उतारा। (अब) वह उसमें (मरने के पश्चात) दाख़िल होंगे, और वह बहुत ही बुरा स्थान है॥

और उन लोगों ने अल्लाह के लिये शरीक बनाये, जिससे कि यह उसके मार्ग (पर चलने) से (लोगों को) बहकायें (और उन बनावटी शरीकों की पूजा करायें। तो ऐ रसूल !) तुम (उनसे) कह दो कि (मनुष्यो ! अल्प दिन और) मज़े उड़ा लो। फिर (मरने के पश्चात, तो) तुमको (नर्क की) अग्नि ही की ओर लौट कर जाना है॥

(ऐ रसूल !) हमारे ईमानदार बन्दों से कह दो कि (वह इनके बहकाये में कभी न आवें। और) नमाज़ (के फ़र्ज़) को नियमानुसार (दृढ़ता के साथ) अदा करते रहें। और जो अन्न हमने उनको प्रदान किया है, उसमें से (मौक़े के अनुसार) प्रगट व गुप्त (अल्लाह के मार्ग में) व्यय करते रहें-ऐसे दिन के आने से पहिले, जिसमें न (कर्मों का) क्रिय विक्रय होगा—

لِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ۝ اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ
رِزْقًا لَّكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِىَ فِى الْبَحْرِ
بِاَمْرِهٖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝
وَاٰتٰكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ وَاِنْ تَعُدُّوْا
نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ
كَفَّارٌ ۝ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ
اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِىْ وَبَنِىَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ۝ رَبِّ
اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ فَمَنْ تَبِعَنِىْ
فَاِنَّهٗ مِنِّىْ وَمَنْ عَصَانِىْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
رَبَّنَآ اِنِّىْ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِىْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِىْ
زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

فاجعل

श्रौर न दोस्ती (महब्बत चलेगी) । हमारी दी हुई रोज़ी में से (राह ख़ुदा में) चुपके (चुपके) श्रौर ज़ाहिर (ज़ुहर) ख़र्च करते हैं ० श्रल्लाह ही (ऐसा क़ादिर मुतलक़) है, जिसने श्रास्मानों श्रौर ज़मीन को पैदा किया श्रौर श्रास्मान से पानी बरसाया, फिर पानी के ज़रिये से (दरख़्तों के) फल निकाले कि वह तुम लोगों की रोज़ी है । श्रौर किश्तियों को तुम्हारे इख़्तियार में कर दिया, ताकि उसके हुक्म से दरिया में चलें श्रौर (नीज़) नदियों को तुम्हारे इख़्तियार में कर दिया ० श्रौर (इसी एतिबार से) सूरज श्रौर चाँद को तुम्हारे इख़्तियार में कर दिया कि वह दोनों पड़े चक्कर खा रहे हैं । श्रौर (ऐसा ही एक तरह से) रात श्रौर दिन को तुम्हारे इख़्तियार में कर दिया ० श्रौर जो कुछ तुमको दरकार था, बक़द्र मुनासिब तुमको दिया श्रौर श्रगर ख़ुदा की नेश्रमतों को गिनना चाहो, तो उनको पूरा २ गिन न सको । कुछ शक नहीं कि इन्सान बड़ा ही बे इन्साफ़ (श्रौर) बड़ा ही ना शुक्र है ० श्रौर (ऐ कुफ़्फ़ार मक्का उस वक़्त को याद करो !) जब इब्राहीम ने (ख़ुदा से) दुश्रा की कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! इस शहर (मक्का) को श्रम्न की जगह कर श्रौर मुझको श्रौर मेरी नस्ल को इस (गुमराही) से बचा कि लगें बुतों को पूजने ० ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! कुछ शक नहीं कि इन बुतों ने श्रक्सर लोगों को गुमराह किया है, तो जिसने मेरी पैरवी की, वह मेरा है श्रौर जिसने मेरी नाफ़र्मानी की, तो तू बख़्शने वाला मेहर्बान है ० ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! मैंने तेरे मुश्रज़्ज़ज़ घर (ख़ानए काबा) के पास (इस) बियाबान (मक्का) में जहां खेती नहीं, श्रपनी कुछ श्रौलाद (लाकर) बसाई है, ताकि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! यह लोग यहां नमाज़ें पढ़ें --

---

श्रौर न (किसी की) मित्रता (श्रौर भाई चारे का ख़याल । सबको श्रपनी २ पड़ी होगी) ॥

श्रौर उस दिन का नियत (श्रौर स्थित करने वाला श्रल्लाह है । श्रोर श्रल्लाह) वह है, कि जिसने श्राकाशों श्रोर पृथ्वी को पैदा कर दिया । श्रौर श्राकाश से पानी उतारा (श्रर्थात मेंह बरसाया) । फिर उस (मेंह) से तुम्हारा श्रन्न (श्रर्थात श्रनेक प्रकार के श्रनाज श्रौर नाना प्रकार को तरकारियाँ श्रौर तरह तरह के) फल (पृथ्वी से) निकाले । श्रौर उसी ने नावों को तुम्हारे वश में कर किया, जिससे कि वह उसकी श्राज्ञानुसार (नदी श्रौर) समुद्र में चलें (श्रौर तुमको लाभ पहुँचायें) । श्रौर उसी ने (छोटी बड़ी हर प्रकार की नदियों श्रौर) नहरों को तुम्हारी श्राधीनता में दे दिया (कि जब जी चाहे, उनके पानी को कम करदो श्रौर उनके बहाव को जिधर चाहो, पलट दो) ॥

श्रौर (उसी ने) चाँद सूरज को तुम्हारे काम में लगाया, जो (श्रपनी नियत चाल पर) सदा चलते रहते हैं । श्रौर उसी ने रात दिन को तुम्हारी सेवा में लगाया (जो एक के बाद दूसरा क्रम से चले श्राते हैं) ॥

श्रौर उसने तुमको प्रत्येक वह वस्तु, जो तुमने उससे माँगी, प्रदान की । श्रौर (यह तो उसकी कुछ नेश्रमतें वर्णन की गई हैं । उसकी तो श्रसंख्य नेश्रमतें हैं । लोगो !) यदि तुम श्रल्लाह की नेश्रमतों को गिनने लगो, तो (कभी) नहीं गिन सकते । निस्सन्देह मनुष्य बड़ा ही श्रन्यायी श्रौर कृतघ्न है (जो इतनी नेश्रमतें प्राप्त करने के पश्चात भी उसको भूला रहता है) ॥

श्रौर (उसकी श्राज्ञा, पूजा से श्रचेत श्रौर बुतों की पूजा में लगा रहता है । ऐ रसूल ! तुम ऐसे नादानों को हमारे सच्चे पूजा करने वाले श्रौर श्राज्ञाकारी इब्राहीम का हाल सुनाश्रो । श्रौर उनके उस समय का हाल वर्णन करो) जब कि (उन्होंने श्रर्थात) इब्राहीम ने कहा था, कि ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! इस शहर (मक्के) को (एक) सुरक्षित (शहर) बना दे । श्रौर मुझे श्रौर मेरी श्रौलाद को इस (श्रज्ञानता) से कि हम बुतों को पूजें, बचाये रख ॥

(क्योंकि) ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! इन (मूर्तियों) ही ने बहुत से लोगों को पथ भ्रष्ट कर दिया । (श्रर्थात बहुत से लोग इनके कारण पथ भ्रष्ट हो गये । इसी लिये मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझको श्रौर मेरी सन्तान को इनसे बचाइयो) । फिर (मेरी इस प्रार्थना के बाद) जो मेरा ताबेदार होगा, तो वह मेरा ही है (उसका तो कहना क्या) । श्रौर जो मेरी श्रवज्ञा करेगा, तो तू बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है । (उसको शिक्षा ग्रहण करने की योग्यता प्रदान कर दीजो) ॥

(श्रौर) ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! मैंने श्रपनी कुछ सन्तान तेरे श्रादरणीय स्थान के पास (मक्के की) घाटी में, जो (बिलकुल) कृषि करने के श्रयोग्य है (लाकर) बसाया है । ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! (केवल इस लिये) ताकि वह (वहाँ) नियमानुसार नमाज़ पढ़ा करें—

فاجعل افئدة من الناس تهوي اليهم وارزقهم
من الثمرت لعلهم يشكرون ● ربنا انك تعلم
ما نخفي وما نعلن وما يخفى على الله من شيء
في الارض ولا في السماء ● الحمد لله الذي وهب
لي على الكبر اسمعيل واسحق ان ربي لسميع
الدعاء ● رب اجعلني مقيم الصلوة ومن
ذريتي ربنا وتقبل دعاء ● ربنا اغفر لي ولوالدي
وللمؤمنين يوم يقوم الحساب ● ولا تحسبن
الله غافلا عما يعمل الظلمون ● انما يؤخرهم
ليوم تشخص فيه الابصار ● مهطعين مقنعي
رءوسهم لا يرتد اليهم طرفهم وافئدتهم
هواء ● وانذر الناس يوم ياتيهم العذاب
فيقول الذين ظلموا ربنا اخرنا الى اجل قريب

तो ऐसा कर कि इन लोगों के दिल इनकी तरफ़ मायल हों। और (दूसरे मुल्कों की) पैदावार से इनको रोज़ी दे, ताकि यह (तेरा) शुक्र करें ० ऐ हमारे पर्वर्दिगार! जो (मतलब) हम छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं, तुझको (सब) मालूम हैं। और अल्लाह पर कोई चीज़ छुपी नहीं रहती (न) ज़मीन में और न आस्मान में ० ख़ुदा का शुक्र है, जिसने मुझको बावजूद बुढ़ापे के इस्माईल और इस्हाक़ (दो दो बेटे) इनायत किये। कुछ शक नहीं कि मेरा पर्वर्दिगार दुआ को सुनता है ० ऐ मेरे पर्वर्दिगार! मुझको तौफ़ीक़ दे कि मैं नमाज़ पढ़ता रहूँ और (न सिर्फ़ मुझको, बल्कि) मेरी औलाद को (भी)। और ऐ हमारे पर्वर्दिगार! मेरी दुआ क़बूल फ़र्मा ० ऐ हमारे पर्वर्दिगार! जिस दिन (आमाल का) हिसाब होने लगे, मुझको और मेरे माँ बाप को और (सब) ईमान वालों को बख़्श दीजो ० और (ऐ पैग़म्बर!) ऐसा न समझना कि ख़ुदा (इन) ज़ालिमों (यानी कुफ़्फ़ार मक्का) के आमाल से ग़ाफ़िल है। और (यह जो फ़ौरन इन पर अज़ाब नाज़िल नहीं होता, उसकी वजह) बस (यह है कि) ख़ुदा इनको उस दिन तक की मोहलत दे रहा है, जब कि (मारे ख़ौफ़ के लोगों की) आँखें फटी की फटी रह जाएंगी ० अपने सर उलाले भागे चले जा रहे हैं (टिकटिकी बंधी हुई हैं कि जिधर को देख रहे हैं, उधर से) निगाह फिर इनकी तरफ़ को लौट कर नहीं आती। और इनके दिल (हैं कि) हवा (हुये चले जा रहे) हैं ० और (ऐ पैग़म्बर!) लोगों को उस दिन (के आ पहुँचने) से डराओ, जब कि उन पर अज़ाब आ नाज़िल होगा। तो जो लोग ना फ़र्मानी करते रहे हैं (गिड़गिड़ा गिड़गिड़ा कर) कहने लगेंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार! हमको थोड़ी सी मुद्दत की मोहलत और दे-

---

अतएव तू लोगों के दिलों को ऐसा करदे, कि उनकी तरफ़ आकर्षित हो जावें। और (अपनी पूर्ण शक्ति से इस पथरीली भूमि में) उनको फल (आदि) खिला (और उनके खाने पीने का इन्तिज़ाम कर) ताकि वह (तेरा) शुक्र अदा करते रहें॥

ऐ हमारे पालन कर्त्ता! हम तुझसे क्या २ प्रार्थनायें करें। तू ख़ुद हमारी इच्छाओं को समझले, क्योंकि तू अदृष्ट का ज्ञान रखने वाला है। और) हम (अपनी) जिस (इच्छा) को छिपाते हैं और जिसको प्रकट करते हैं, तू सब से परिचित है। और (हमारी इच्छाओं ही पर क्या निर्भर है, वास्तविक बात तो यह है कि) न पृथ्वी में कोई चीज़ अल्लाह से छिपी हुई और न आस्मान में॥

सब प्रशंसायें उस अल्लाह के लिये हैं, जिसने मुझे (इस) बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ (जैसे दो बेटे) प्रदान किये। निस्सन्देह मेरा पालन कर्त्ता प्रार्थना सुनने वाला (और स्वीकार करने वाला) है॥

ऐ मेरे रब! मुझको पक्का नमाज़ी बनादे और मेरी सन्तान को भी। ऐ मेरे पालन कर्त्ता! (मुझपर कृपा कर) और मेरी (यह) प्रार्थना स्वीकार कर॥

ऐ मेरे रब! जिस दिन कि हिसाब (किताब) होगा, तो उस दिन मुझको और मेरे माता पिता और (सब) ईमानदारों को क्षमा कर दीजियो) और कृपा दृष्टि रखियो)॥

और (ऐ रसूल! तुमने क्या समझ रक्खा है। तुम किस ख़याल में हो)। इस ख़याल में न रहना कि अल्लाह (तआला) इन ज़ालिमों के कुकर्मों से बे ख़बर है। (कदापि नहीं, उसे सब ख़बर है)।

(हाँ) निस्सन्देह केवल (इतनी बात अवश्य है कि) वह इन्हें उस दिन तक (के लिये) ढील दे रहा है, जिसमें कि (भय के मारे उनकी) आँखें फटी की फटी रह जायंगी। (और यह अपने कर्मों का हिसाब देने के लिये) अपने सिर (ऊपर) उठाये (अत्यन्त शीघ्रता में) दौड़े जा रहे होंगे। (और) इनकी दृष्टि (एक बार जहाँ जा पड़ेगी, वहीं की वहीं जमी रह जायगी। फिर वहाँ से हट कर) इनकी तरफ़ वापिस न आयेगी। और इनके दिल (परेशानी व दुःख के मारे) उड़ रहे होंगे॥

(उस दिन इन्हें इनके किये का पूरा पूरा दण्ड दिया जायगा)। और (अब तो तुम्हे मालूम हो गया कि मैं अचेत नहीं हूँ। अब मैं फिर तुमसे कहता हूँ कि) तुम इन लोगों को उस दिन से भयभीत करदो, जिस दिन इन पर (इनके कुकर्मों के बदले) अज़ाब आयेगा (और) फिर यह ज़ालिम (व अवज्ञाकारी) कहेंगे, ऐ हमारे पालन कर्त्ता! हमें एक निकट वर्ती अवसर दे दे (और संसार में भेज दे)—

نُجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۗ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ
مِنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِنْ زَوَالٍ ۝ وَسَكَنْتُمْ فِي
مَسَاكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ
فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ ۝ وَقَدْ
مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِنْ
كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝ فَلَا تَحْسَبَنَّ
اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝
يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَاوَاتُ ۖ
وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ
يَوْمَئِذٍ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝ سَرَابِيلُهُمْ
مِنْ قَطِرَانٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهَهُمُ النَّارُ ۝ لِيَجْزِيَ
اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ۝ هَٰذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوا بِهِ

وليعلموا

तो (अब की बार) हम तेरे बुलाने पर उठ खड़े होंगे और पैग़म्बरों के पीछे हो लेंगे। (तो उनको जवाब दिया जायगा कि) क्या तुम (वही लोग) नहीं हो, जो (इससे) पहिले क़स्में खाया करते थे (और एक दूसरे से कहा करते थे) कि तुमको किसी तरह का ज़वाल नहीं ० और (क्या तुम वही लोग नहीं हो कि) जिन लोगों ने (हमारी ना फ़र्मानी करके) आप अपने ऊपर ज़ुल्म किये थे, उन ही के घरों में तुम भी रहे। और तुम पर (यह भी) ज़ाहिर हो चुका था कि हमने उनके साथ कैसा (कुछ बर्ताव) किया और हमने तुम्हारे (समझाने के) लिये (बहुत सी) मिसालें भी बयान करदी थीं ० और वह लोग भी अपनी चालें चलते रहे और उनकी (सब) चालें ख़ुदा की नज़र में थीं और अगर्चे उनकी चालें (इस बला की) थीं कि पहाड़ों को जगह से टाल दें (मगर कोई तदबीर पेश न गई) ० तो (ऐ पैग़म्बर !) ऐसा ख़याल न करना कि ख़ुदा जो अपने पैग़म्बरों से वादा कर चुका है, उसके ख़िलाफ़ करेगा । बेशक अल्लाह ज़बरदस्त (और) बदला लेने वाला है० (मगर यह बदला पूरा २ तो उस दिन लिया जायगा) जब कि (यह) ज़मीन बदल कर दूसरी तरह की ज़मीन करदी जायगी और (अला हाज़ल क़यास) आस्मान। और (सब) लोग ख़ुदाए वाहिद (और) ज़बरदस्त के सामने (जवाब दिही के लिये अपनी २ जगह से) निकल खड़े होंगे ० और (ऐ पैग़म्बर !) तुम उस दिन गुनहगारों को देखोगे कि ज़ंजीरों में जकड़े हुए होंगे ० तारकोल के उनके कुरते होंगे और उनके मुंहों को आग लगी होगी ० (और यह तमाम सख़्तियाँ) इस ग़रज़ से (की जाएँगी) कि ख़ुदा हर शख़्स को उसके किये का बदला दे । बेशक अल्लाह को हिसाब लेते कुछ भी देर नहीं लगती ० यह (क़ुर्आन) लोगों के लिये एक इत्तिला नामा है। और (इसके नाज़िल करने से) ग़रज़ यह है कि इसके ज़रिये से लोगों को (अज़ाब ख़ुदा से) डराया जाय—

जिससे कि (अब के) हम तेरा कहना सुनें और (तेरे) रसूलों की आधीनता स्वीकार करें। (उस दिन मैं इनकी एक न सुनूंगा। और मेरी ओर से उस रोज़ इनको उत्तर दिया जायगा कि क्यों जी !) तुमतो वही हो ना ! जो (इस दिन के आने से) पहिले (संसार में इस बात पर) शपथें खाते (और आपस में एक दूसरे से कहते) थे कि तुमको (कभी) मिटना नहीं है। तथापि तुम उन लोगों के मकानों में रहते थे, जिन्होंने (हमारी आज्ञाओं का उलंघन करके) अपनी जानों पर (आप ही) ज़ुल्म किया था। और तुम पर (अच्छी तरह) प्रकाश हो गया था कि हमने (उनके कुकर्मों के कारण) उनके साथ कैसा (सख़्त बर्ताव) किया (और उनको कैसी कैसी सज़ायें दी थीं)। और हमने (नाना प्रकार के) उदाहरण भी तुम्हारे (समझाने के) लिये तुम्हारे सामने बयान किये थे ॥

और (तुम्हें कुछ ज्ञात है-यह कौन लोग थे? यह वह लोग थे कि)उन्होंने(असत्य को सत्य पर विजय दिलाने के लिये)अपनी(बहुत सी) तरकीबें चली थीं। और अल्लाह के यहां उनकी (सारी) तरकीबें (लिखी हुई) थीं। और (उसे उनकी तरकीबों का पूरा पूरा ज्ञान था। लेकिन क्या हुआ, कुछ भी नहीं)। यद्यपि उनकी तरकीबें (इस ग़ज़ब की) थीं कि पर्वत (तक) उनसे (अपना केन्द्र छोड़ कर) हट जायँ (मगर अन्त में सत्य ही विजयी रहा) ॥

अतएव (ऐ इन्सान ! यदि तू समझदार है, तो इन बातों से नसीहत प्राप्त कर। और रात दिन अल्लाह की आधीनता और सत्य के प्रचार में लगा रह। और) इस ध्यान को छोड़, कि अल्लाह अपने रसूलों से अपने वादे के विरुद्ध करेगा। (और यदि अब भी तेरी समझ ठीक न हो, तो तू जान)। निस्सन्देह अल्लाह (बहुत) बलवान (क़ुद्रत वाला और ऐसे अवज्ञाकारियों से सख़्त) बदला लेने वाला है ॥

(और ऐ रसूल ! मैं जो तुमसे बार बार कहता हूँ कि उस दिन से डराओ, उस दिन से डराओ ! तो आख़िर क्यों कहता हूँ--वह कैसा भयानक दिन है। वह--वह दिन है कि) जिस दिन (यह वर्तमान) पृथ्वी किसी दूसरी पृथ्वी से बदल दी जायगी और आकाश (भी)। और यह (सब लोग अपने कर्मों का हिसाब देने के लिये) एक सर्व शक्तिमान ख़ुदा के सामने पेश होंगे ॥

(और उस दिन) उनके कुरते गंधक के होंगे, और उनके चेहरों को आग ढाँक लेगी। (और यह परिवर्तन इस लिये होगा) ताकि अल्लाह तआला प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मों का (पूरा पूरा) बदला दे। निस्सन्देह अल्लाह तआला बहुत जल्दी हिसाब लेने वाला है ॥

(अभिप्राय यह है कि) यह (क़ुर्आन) लोगों के लिये (नसीहत और इबरत का) पैग़ाम है। और (इसे इस लिये उतारा गया है) ताकि लोगों को इस (के ज़रिये) से (अल्लाह के अज़ाब से) डराया जावे—

وَلِيَعْلَمُوٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ

سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ رُبَمَا
يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝ ذَرْهُمْ
يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ
يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا
كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا
يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ
الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ۝ لَوْمَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ
اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا
بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ۝ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا
الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ

और ताकि (सब लोग) मालूम करलें कि .खुदा ही एक माबूद है और ताकि जो लोग अक़्ल रखते हैं, नसीहत पकड़ें ० ॥

सूरत- हिज्र

मक्की यानी मक्के में नाज़िल हुई । इसमें ६६ आयतें और ६ रुकूअ हैं ॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है)० अलिफ़ लाम रा० यह किताब (इलाही) यानी .कुर्आन की (चन्द) आयतें हैं, जिसके मतालिब ज़ाहिर हैं (और हर शख़्स की समझ में आ सकते हैं) ० (एक दिन होगा कि) काफ़िर बहुतेरे ही अर्मान करेंगे कि (ऐ) काश (हम भी) मुसलमान होते ० तो (ऐ पैग़म्बर !) इनको (इन ही के हाल पर) रहने दो कि खाएँ (पीएँ) और (दुनिया के चन्द रोज़ा) फ़ायदे उठाएँ और तवक़्क़ुआत (बेजा) इनको ग़ाफ़िल किये रहें, फिर आख़िर (क़यामत में) तो इनको मालूम हो ही जायगा ० और हमने (कभी) कोई बस्ती ग़ारत नहीं की, मगर उस (की तबाही) के लिये एक मीआद मुक़र्रर (पहिले से) लिखी हुई (मौजूद) थी ० कोई उम्मत न अपने वक़्त से आगे बढ़ सकती है और न पीछे रह सकती ० और (ऐ पैग़म्बर ! कुफ़्फ़ार मक्का तुमसे इस तरह पर ख़िताब करके) कहते हैं कि ऐ शख़्स ! जिस (के ज़ेहन में यह ख़ब्त समाया है कि उस) पर (.खुदा के हां से) .कुर्आन नाज़िल हुआ है, तू तो दीवाना है ० अगर तू (अपने दावे में) सच्चा है, तो फ़रिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं ला खड़ा करता० सो हम फ़रिश्तों को नहीं भेजा करते, मगर फ़ैसले के लिये और (फ़रिश्ते नाज़िल हों, तो) फिर इनको मोहलत भी न मिले ० बेशक हम ही ने .कुर्आन उतारा है और बेशक हम ही उसके निगहबान भी हैं ० और (ऐ पैग़म्बर !) हमने —

और लोग यह (अच्छी तरह) समझलें कि वही एक पूज्य (पूजने योग्य) है। और बुद्धिमान मनुष्य (इसको सुन कर) नसीहत हासिल करें ॥

सूरत-हिज्र

मक्की अर्थात मक्के में उतरी । इसमें ६६ आयतें और ६ रुकूअ हैं ॥

अलिफ़, लाम, रा—यह (निम्न लिखित) आयतें (अल्लाह की) किताब अर्थात (उस) स्पष्ट .कुर्आन की हैं (जो अपनी श्रेष्ठता व सुन्दरता और विषय की विशेषता के लिहाज़ से एक बे मिस्ल और अनोखी किताब है) ॥

(संसार में यह) काफ़िर (चाहे .कुर्आन की शिक्षा से कितनी ही घृणा करें, लेकिन प्रलय के दिन) बहुत से अवसरों पर (यह) इच्छा करेंगे--कि क्या अच्छा होता, यदि हम (इस शिक्षा के मानने वाले और सच्चे) मुसलमान होते ॥

(अतएव ऐ रसूल !) तुम इन्हें (इनके हाल पर) छोड़ दो, जिससे कि वह (दुनिया में कुछ दिन) खा (पी) लें । और (यहाँ की चीज़ों से) लाभ प्राप्त करलें । और उन्हें (मुक्ति की कल्पित) कामना भुलावे में रक्खे । (क्योंकि) फिर (मरने के उपरान्त तो) यह (अपनी मूर्खता की वास्तविकता) मालूम (ही) कर लेंगे ॥

और (हम अभी इन्हें दण्ड नहीं देंगे, क्योंकि अभी उसका समय नहीं आया । और यह जो तुम कहो, कि हमने पिछली बस्तियों को इसी संसार में नष्ट कर दिया, तो याद रक्खो !) हमने (काफ़िरों की) किसी बस्ती को नष्ट नहीं किया, परन्तु उस (समय, जब कि उसकी बरबादी) का एक नियत समय (जो पहिले से हमारे यहाँ) लिखा हुआ (मौजूद) था (वह न आ गया हो) ॥

कोई जाति अपने (दण्ड मिलने के) समय से (सज़ा पाने में) न आगे बढ़ सकती है और न देर लगा सकती है ॥

(यह लोग मूर्ख हैं और अपने दण्ड पाने के समय से अचेत हैं, जो तुम्हारे प्रति धृष्ठता करते हैं । और)
और (ऐ रसूल !) यह लोग (मूर्ख हैं और अपने दण्ड पाने के समय से अचेत हैं, जो तुम्हारे प्रति धृष्ठता करते हैं । और) कहते हैं कि ऐ वह मनुष्य ! (जो यह कहता है) कि उस पर (अल्लाह की तरफ़ से) .कुर्आन उतारा गया है-(कि) तू बिल्कुल पागल है । (और अपने बारे में तुझको यह बिल्कुल ग़लत गुमान हो गया है) ॥

(अन्यथा) यदि तू (अपने दावे में) सच्चा है, तो (अपने समर्थन के लिये) फ़रिश्तों को (आकाश से) क्यों नहीं (बुला) लाता ॥

(ऐ रसूल ! तुम इनसे कह दो कि) हम फ़रिश्तों को केवल (अन्तिम) फ़ैसला (करने अर्थात अज़ाब उतारने) के लिये अवतीर्ण (किया) करते हैं । और (यदि फ़रिश्ते आ जावेंगे, तो) उस समय उन्हें (इस दुराचरण की दशा में एक मिनिट सुख से बैठने का भी) अवसर न दिया जावेगा । (बल्कि तुरन्त पृथ्वी से नष्ट कर दिया जावेगा) ॥

(मूर्खो ! फ़रिश्तों के समर्थन करने से क्या होता है । हम स्वयं तस्दीक़ करते कि हाँ) हम ही ने (अपने बन्दे मुहम्मद पर) .कुर्आन को उतारा है । और (सदैव के लिये) हम ही उसकी रक्षा करने वाले हैं । (कोई यदि उसको अमल करने के योग्य न जाने, तो यह उसका दुर्भाग्य- इसका दण्ड वह भुगतेगा । लेकिन किसी की यह मजाल नहीं है कि इसके किसी एक अक्षर या एक शब्द को नष्ट कर सके) ॥

(ऐ रसूल ! अल्लाह की किताब को झूठा बताना) और (.खुदा के सन्देश का अनादर करना, इनकी बहुत पुरानी आदत है) । हमने तुमसे पहिले भी (इनके पूर्वजों के) भूत पूर्व समूहों में (बहुत से रसूल) भेजे हैं ॥

قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ
اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ
فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ
سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ
فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝ لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ
اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جَعَلْنَا ४
فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۝ وَحَفِظْنٰهَا
مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ
فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا
وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ
مَّوْزُوْنٍ ۝ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ
لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ۝ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ
وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ

तुमसे पहिले भी अगिले लोगों के (बहुत से) गिरोहों में (पैग़म्बर) भेजे थे ० और (उन लोगों का भी यही दस्तूर था कि) जब २ उनके पास पैग़म्बर आता, उसकी हंसी उड़ाते ० तो जिस तरह अगिले लोग अपने पैग़म्बरों के साथ शरारतें करते रहे (इसी तरह हम इन) काफ़िरों के दिलों में (भी वैसी ही) शरारत डाल देते हैं ० (तो) यह .क़ुरान पर ईमान लाने वाले नहीं और यह रस्म (कुछ अनोखी नहीं) अगिलों (ही) से होती चली आई है ० और अगर हम इन लोगों पर आस्मान का एक दरवाज़ा भी खोल दें और यह लोग दिन दिहाड़े उस दरवाज़े से (आस्मान पर) चढ़ भी जायँ, ताहम भी कहें कि हो न हो हमारी आंखें मतवाली हो गई हैं (या) यह नहीं, तो हम पर किसी ने जादू कर दिया है ० और हम ही ने आस्मान में बुर्ज बनाये और देखने वालों के लिये उसको (सितारों से) आरास्ता किया ० और हर शैतान मर्दूद से उसकी हिफ़ाज़त की (कि वहां शयातीन में से कोई जाने नहीं पाता) ० मगर चोरी छुपे कोई बात सुन भागे, तो शिहाब का दहकता हुआ अंगारा (उसके खदेड़ने को) उस के पीछे हो लेता है ० और हमने ज़मीन को फैलाया (कि आदमी और जानवर उसमें बसें) और हमने उसमें मेख़ को तरह (भारी बोझल) पहाड़ गाड़ दिये (कि ज़मीन एक वज़े ख़ास पर रहे) । और हमने उसमें हर एक चीज़ मुनासिब उगाई ० और (अलावा बरीं) हम (ही) ने ज़मीन में तुम लोगों की मआश के साज़ व सामान मुहय्या किये और (न सिर्फ़ तुम्हारे, बल्कि दूसरे जानदारों की रोज़ी के भी) जिनको तुम रोज़ी नहीं देते (बल्कि हम देते हैं) ० और जितनी चीज़ें हैं, हमारे हाँ सब के ख़ज़ाने (के ख़ज़ाने भरे पड़े) हैं, मगर हम एक अन्दाज़ए मालूम (व मुक़र्रर) के साथ उनको (मख़्लूक़ात के लिये) भेजते रहते हैं ० और हम ही हवाओं को चलाते हैं—

और (उन पर अपनी किताबें भी उतारी हैं, लेकिन) उन लोगों के पास कोई सा ऐसा रसूल नहीं आया कि जिसका वह मज़ाक़ न उड़ाने लगे हों। (और उसकी उपस्थित की हुई किताब को बनावटी और मन घड़त न बताने लगे हों) ॥

(अतएव जब इस प्रकार इनके पूर्वज हमारे रसूलों और हमारी किताबों को झूठा ठहराते और उनका मज़ाक़ भी उड़ाते रहे हैं) उसी तरह हम (उनका) इस (आदत) को इन (वर्तमान) पापियों के भी हृदय में अंकित किये देते है। (अतएव) यह इस (.क़ुर्आन) पर ईमान नहीं लायेंगे। और (आज यह कोई नई बात नहीं है, इनके) अगलों की भी यही आदत थी (कि अल्लाह की किताब को झूठा बताते थे)॥

और (अब इनके विरोध व उद्दण्डता की यह दशा है कि ऐ रसूल !) अगर हम (तुम्हारी तस्दीक़ के लिये फ़रिश्तों को आकाश से उतारने के बजाय, .ख़ुद इन्हीं को आकाश पर चढ़ालें और) आकाश में (किसी जगह एक) दरवाज़ा खोलदें कि यह दिन दिहाड़े उस (दरवाज़े) से (आकाश पर) चढ़ भी जायं (और वहां पहुँच कर अपनी इच्छानुसार तस्दीक़ भी करलें) तब भी (इन्हें तुम्हारी सचाई का यक़ीन न आये। और उस समय भी यही) कहें कि (यह जो कुछ हम को दिखाई दे रहा है, वास्तव में यह कुछ भी नहीं है। यह हमारी दृष्टि का भ्रम है। कदाचित) हमारी आंखों में नशा समा गया है। (नशा नहीं) बल्कि हम पर तो जादू किया गया है ॥

और आकाश में हम ही ने बुर्ज बनाये। और आंखों वालों के लिये इसको (चमकते हुए सितारों से) सजाया और प्रत्येक दुष्ट शैतान (की पहुँच) से इसको बचाया, मगर वह (शैतान) जो (हमारे नियत किये हुए फ़रिश्तों की) चोरी छिपे (कुछ) सुन सुना आवे। (वह कुछ थोड़ा बहुत आकाश की तरफ़ चढ़ आता है) तो (हमने उसका भी यह इलाज कर रक्खा है कि जब वह आकाश की तरफ़ आता है, तो) उसके पीछे (एक) दहकता हुआ अंगारा लग जाता है (जो उसको या तो बिल्कुल जला देता है,या अपनी मार से उसको पृथ्वी पर गिरा देता है)॥

और (यह भी कि) हमही ने पृथ्वी (तल) को बिछाया और (उसके कम्पन को रोकने के लिये) उसमें (बड़े २ मज़बूत और) अटल पहाड़ पैदा किये। और उसमें प्रत्येक वस्तु नपी तुली (और आवश्यकतानुसार) उगाई ॥

और हम ही ने उसमें तुम्हारे लिये जीवन सामग्री पैदा की। और (केवल तुम्हारे ही लिये नहीं, बल्कि समस्त उन प्राणियों के लिये भी) जिनको तुम अन्न नहीं देते (और हम उन्हें अन्न पहुँचाते हैं) ॥

और हमारे यहां कोई वस्तु भी ऐसी नहीं है कि जिसके ख़ज़ाने (के ख़ज़ाने भरे हुए) न हों। और हम उसको (अर्थात् प्रत्येक वस्तु को उसके अनगिनत ख़ज़ाने होने से बावजूद) एक नियत कल्पना से अधिक (आकाश से) नहीं उतारते। (और इसमें हमारी बहुत बड़ी युक्ति है) ॥

और हम ही (इन) हवाओं को चलाते हैं—

لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا
أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ۝ وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ
الْوَارِثُونَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنكُمْ
وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ
إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ
مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۝ وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ
مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السَّمُومِ ۝ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ
لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ
مَّسْنُونٍ ۝ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي
فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ
أَجْمَعُونَ ۝ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَن يَكُونَ مَعَ
السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ
السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ

ع

जो बादलों को पानी से बारदार करती हैं। फिर हम (ही) आस्मान से पानी बरसाते, फिर हम (ही) वह (पानी) तुम लोगों को पिलाते हैं। और तुम लोगों ने तो उसको जमा करके नहीं रक्खा था (कि हमने वही बरसा दिया हो) ० और हम ही (लोगों को) जिलाते और हम ही (उन को) मारते हैं और (सबके मरे पीछे) हम ही (उनके माल व मता के) वारिस होंगे ० और हम उन लोगों को भी जानते हैं, जो तुम में से पहिले हो गुज़रे हैं और हम उन लोगों को भी जानते हैं, जो (तुम्हारे) बाद आने वाले हैं ० और (ऐ पैग़म्बर !) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार ही (क़यामत के दिन) इन (सब) को (अपने हुज़ूर में) जमा करेगा। बिला शुबहा वह हिक्मत वाला (और सब बातों से) वाकिफ़ है ० और हम ही ने काले (और) सड़े हुए गारे से, जो (सूख कर) खन खन बोलने लगता है, आदम को पैदा किया० और हम जिन्नात को (आदम से भी) पहिले लू की गरमी से पैदा कर चुके थे ० और (ऐ पैग़म्बर ! उस वक्त को याद करो) जब कि तुम्हारे पर्वर्दिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं काले (और) सड़े हुए गारे से, जो (सूख कर) खन खन बोलने लगता है, एक बशर को पैदा करने वाला हूँ ० तो जब मैं उसको पूरा बना चुकूं और उसमें अपनी (तरफ़ से) रूह फूंक दूं, तो तुम उसके आगे सर बसुजूद गिर पड़ना ० चुनाँचे तमाम फ़रिश्ते सब के सब (आदम के सामने) सर बसुजूद हो गये ० मगर इब्लीस कि उसने सज्दा करने वालों के शुमूल से इन्कार किया ० (इस पर ख़ुदा ने) फ़र्माया कि ऐ इब्लीस ! तुझको क्या (वजह माने) है कि तू सज्दा करने वालों में शामिल नहीं होता ० वह बोला, मैं वह नहीं कि ऐसे शख़्स को सज्दा करूं, जिसको तू ने काले (और) सड़े हुए गारे से पैदा किया—

जो बादलों को पानी से भर देती हैं। (और उन हवाओं के चलने के बाद) फिर हम ही आकाश से पानी बरसाते हैं। (और) फिर वही (पानी) तुमको पिलाते हैं। और तुम उसको इकट्ठा (भी) नहीं कर सके (कि फिर तुमको हमारी बारिश की ज़रूरत न रहे। और हमेशा २ के लिये वही पानी तुम्हारे काम आये) ॥

और हम ही (जिसको चाहते हैं) जीवित रखते हैं और हम ही (जिसको चाहते हैं) मार डालते हैं। और (आख़िर में) हम ही (एक दिन सबको पृथ्वी से नष्ट करके अकेले) बाक़ी रह जायंगे। (और फिर हर एक को दुबारा ज़िन्दा करके उसके कर्मों की जांच करेंगे) ॥

और (ऐ हमारी अद्वैता से इन्कार करने वालो ! हम तुम्हारे समस्त आचरणों को देख रहे हैं) हम (तुमसे भी अच्छी तरह जानकार हैं और) जो (अवज्ञाकारी तुमसे) पहिले गुज़र चुके हैं, उनको भी (अच्छी तरह) जानते हैं। और जो (तुम्हारे) बाद में आयेंगे, उन्हें भी ॥

और (ऐ रसूल ! एक दिन ऐसा आयेगा कि) तुम्हारा पालन कर्त्ता इन (सब) को (अपने सामने ला) इकट्ठा करेगा। (और हर एक के कर्मों की बाबत हर एक से पूछेगा)। निस्सन्देह वह (बड़ी) हिकमत वाला (और लोगों के कर्मों का) जानकार है (उसकी पूछ गछ से कोई बच नहीं सकता) ॥

और (जो हमारी शक्ति व ज्ञान में शुबहा कर रहे हैं, तो क्या इनके सन्देह दूर करने के लिये यह काफ़ी नहीं कि) हम ही ने मनुष्य (अर्थात् आदम) को काली सड़ी हुई सूखी मिट्टी से पैदा कर दिया ॥

और (उस से) पहिले हम ही ने भड़कती हुई आग से जिनों को पैदा किया (था) ॥

और (ऐ रसूल ! वह समय भी वर्णन करने योग्य है) जब कि तुम्हारे पालन कर्त्ता ने फ़रिश्तों से कहा था कि मैं इन्सान को काली सड़ी हुई सूखी मिट्टी से पैदा करने वाला हूँ ॥

तो जब मैं इसको दुरुस्त कर चुकूं (अर्थात उसका पुतला बना लूं) और उसमें जीव भी अपनी (ओर से) फूंक दूं, तो तुम (सब तुरन्त) उसके आगे सज्दे में गिर पड़ना ॥

अतएव (हमारी आज्ञानुसार) सब (फ़रिश्तों) ने (आदम को) सज्दा किया, मगर इब्लीस ने नहीं किया। और उसने (इस बात से साफ़) इन्कार कर दिया कि वह सज्दा करने वालों के साथ रहे ॥

(उसके यह अनुचित आचरण देख कर) अल्लाह ने फ़र्माया कि ऐ इब्लीस ! (आख़िर) तुझे क्या हो गया, जो तू सज्दा करने वालों के साथ नहीं रहा ॥

उसने उत्तर दिया कि (क्या) मैं (आग से बना हुआ जिन) नहीं हूँ (भला मुझसे और यह आशा। मैं कदापि ऐसा न करूंगा) कि मनुष्य (जैसी तुच्छ व्यक्ति) को सज्दा करूं—

مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا
فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝ وَّاِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۝
قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ فَاِنَّكَ
مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۝ قَالَ
رَبِّ بِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ
وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ
الْمُخْلَصِيْنَ ۝ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ۝
اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ
اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ۝ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ
اَجْمَعِيْنَ ۝ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ
جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ۝ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ ٤
اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ۝ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ
مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝ لَا يَمَسُّهُمْ

जो (सूख कर) खन खन बोलने लगता है ० (.खुदा ने) फ़र्माया (कि सज्दा नहीं करता) तो बहिश्त से निकल, कि तू रांदए (दर्गाह) है ० रोज़ जज़ा तक तुझ पर फिटकार (पड़ा बर्सा करेगी) ० (शैतान ने) कहा कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! (खैर) तू मुझको उस दिन तक की मोहलत दे, जब कि (बनी आदम क़यामत में दोबारा) उठा खड़े किये जायंगे ० (.खुदा ने) फ़र्माया कि (अच्छा) रोज़ (क़यामत के) वक्त मालूम तक की तुझको मोहलत दी गई ० (शैतान ने) कहा ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! जैसी तू ने (बनी आदम की ख़ातिर) मेरी राह मारी, मैं भी दुनिया में (साज़ व सामान ज़िन्दगी को) इन्हें उम्दा कर दिखाऊं और इन सबको बहकाऊं तो सही ० मगर इनमें से तेरे ख़ास बन्दे (कि वह तो मेरे बहकाए में आने वाले नहीं) ० (.खुदा ने) फ़र्माया कि (बस) यही (ख़ालिस बन्दिगी की) एक सीधी सड़क है, (जो) हम तक (आ पहुँचती है) ० (जो) हमारे बन्दे (हैं) उन पर तो तेरा किसी तरह का ज़ोर नहीं। हाँ गुमराहों में से, जो कोई तेरे पीछे हो ले (तो हो ले) ० और (हाँ) ऐसे तमाम लोगों केलिये (हमारे हाँ से आख़िरी) वादा जहन्नम का भी है० कि उसके सात दरवाज़े होंगे। हर दरवाज़े (में से दाख़िल होने) के लिये दोज़ख़ियों की टोलियाँ होंगी, अलग अलग ० (रहे) परहेज़गार (वह उस दिन बहिश्त के) बाग़ों और चश्मों में होंगे ० (और बाग़ों में आते वक्त हमारे फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि) सलामती के साथ बइतमीनान (तमाम) इन बाग़ों में तशरीफ़ लाओ ० और (दुनिया में एक दूसरे की तरफ़ से) इनके दिलों में कुछ रंजिश रही होगी, तो उसको भी हम निकाल देंगे। (और यह) एक दूसरे के आमने सामने (ऐसी .खुश दिली के साथ) तख़्तों पर (बैठे) होंगे (जैसे) भाई भाई ० इनको बहिश्त में किसी तरह की तकलीफ़ छूएगी भी तो नहीं—

जिसे तूने काली (काली) सड़ी हुई सूखी २ मिट्टी से पैदा किया है ॥

(यह सुन कर पूज्य अल्लाह ने क्रोध में होकर) फ़र्माया कि (हमारे सामने और इतनी धृष्टता)। दूर हो यहाँ से, क्योंकि तू पाजी है और (दुष्ट)। तुझ पर प्रलय तक (के लिये मेरी) फिटकार (होगी) ॥

(यह क्रोध पूर्ण शब्द सुन कर) इब्लीस ने कहा (कि मुझे तू निकालता है, ले मैं यहाँ से अभी निकला जाता हूँ। लेकिन) ऐ पालन कर्त्ता! (ज़रा) मुझे उस रोज़ तक (जीवित रहने) का अवसर दे (कर देख !) जिस दिन कि (क़ब्रों से) मुर्दे उठाये जावेंगे ॥

अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि (जा) तुझको एक ज्ञात समय (अर्थात् प्रलय) तक के लिये अवसर दे दिया गया ॥

उसने उत्तर दिया कि ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! जैसा कि तूने (मनुष्य जैसी तुच्छ प्राणी के कारण) मुझ को पथ भ्रष्ट कर दिया है (उसी प्रकार) मैं भी इन (मनुष्यों) के लिये पृथ्वी में (पहुँच कर दुराचारों और कुकर्मों को ख़ूब बनाऊँ) सँवारूँगा (और बना सँवार कर पेश करूँगा)। और इनमें से तेरे (कुछ) शुद्ध हृदय वाले बन्दों के अतिरिक्त सभी को पथ भ्रष्ट कर दूँगा ॥

अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि यह (सचाई और ईमान ही का) मार्ग (एक ऐसा मार्ग) है, जो मुझ तक सीधा (पहुँचता) है। (अर्थात ऐ इब्लीस ! तू मेरे शुद्ध हृदय वाले बन्दों को पथ भ्रष्ट न कर सकेगा और वह सीधे मार्ग पर रहेंगे) ॥

निस्सन्देह हमारे (नेक और शुद्ध हृदय वाले) बन्दों पर तो तुझको (किसी प्रकार का) अधिकार (प्राप्त) होगा नहीं। हाँ पथ भ्रष्टों (और कच्चे ईमान वालों) में से वह (मनुष्य) जो तेरी ताबेदारी करे (उस पर अलबत्ता तेरा कुछ ज़ोर चल जायगा) ॥

और (उसे तू अपने जाल में फँसा सकेगा। लेकिन इस प्रकार के जितने मनुष्य होंगे) उन सबसे (हमने दहकते हुए) नर्क (में जलाने) का वादा (कर रक्खा) है। उसके सात फाटक हैं-हर (एक) दरवाज़े (से अलग अलग दाख़िल होने) के लिये इन (तेरे आधीनों की संख्या) का (एक) एक भाग (अलग अलग) बटा हुआ है। (जैसा जो अपराधी होगा, वैसे ही नर्क * के दरवाज़े में उसे दाख़िल किया जावेगा) ॥

* टीका—नर्क के ऊपर तले सात भाग हैं। पहिले भाग का नाम जहन्नम, दूसरे का नाम नता, तीसरे का नाम हतमा, चौथे का नाम सईर, पाँचवें का सक़र, छठे का जहीम, सातवें का हाविया ः - हसन निज़ामी ॥

(और हमारे अज़ाब से) डरने वाले (और शैतान के छल व कपट में न आने वाले ऐसे हरे भरे) बाग़ों में (सुख व आनन्द के साथ) रहेंगे, जिनमें (ठंढे और मीठे) सोते बहते होंगे ॥

(और उन बाग़ों में दाख़िल होते समय हमारे फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे। और कहेंगे कि) इन (बाग़ों) में (कुशल) क्षेम के साथ (और हर ग़म व रंज से) मुक्त होकर दाख़िल हो जाओ ॥

और (संसार में मनुष्य की हैसियत से सांसारिक झगड़ों के कारण) जो (विरोध व) नाराज़ी उनके दिलों में (आपस में पैदा हो गई) होगी (स्वर्ग में) हम उसको (बिल्कुल) निकाल डालेंगे। (और उसके बजाय प्रेम व महब्बत उनके दिलों में भर देंगे। और वह वहां) भाई २ बनकर एक दूसरे के आमने सामने (उम्दा २ सुसज्जित) सिंहासनों पर बैठा करेंगे ॥

वहां उनको न कोई दुःख पहुँचेगा—

فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ۝ نَبِّئْ عِبَادِي
أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ
الْأَلِيمُ ۝ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرٰهِيمَ ۝ إِذْ دَخَلُوا
عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلٰمًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ۝ قَالُوا
لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيمٍ ۝ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي
عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ۝ قَالُوا
بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقٰنِطِينَ ۝ قَالَ
وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ۝ قَالَ
فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا
إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ۝ إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ
أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا إِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِينَ
فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ
مُنْكَرُونَ ۝ قَالُوا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ

और न यह (कभी) बहिश्त से निकाले जायँगे ० (ऐ पैग़म्बर !) हमारे बन्दों को आगाह करदो कि (एक तरफ़) हम बख़शने वाले मेहर्बान हैं ० और (दूसरी तरफ़) हमारा अज़ाब (भी बड़ा) मूज़ी अज़ाब है ० और इनको इब्राहीम के मेहमानों का हाल सुनाओ कि जब इब्राहीम के पास आए, तो (पहिले) सलाम किया । इब्राहीम ने (जवाब सलाम के बाद) कहा कि हमको तो तुमसे डर लग रहा है ० वह बोले आप (मुतलक़) ख़ौफ़ न कीजिये । हम आपको एक लायक़ फ़र्ज़न्द (के पैदा होने) की .खुश ख़बरी सुनाते हैं ० (इब्राहीम ने) कहा, क्या तुम मुझे (बेटे के होने की) .खुश ख़बरी देते हो, हालाँकि मुझको तो बुढ़ापे ने आ दबाया है । तो अब काहे की .खुश ख़बरी सुनाते हो ० वह लगे कहने कि हम आप को सच्ची .खुश ख़बरी सुनाते हैं, तो आप ना उम्मीद न हों ० (इब्राहीम ने) कहा कि गुमराहों के सिवा ऐसा कौन है, जो अपने पर्वर्दिगार की रहमत से ना उम्मीद हो ० (फिर इब्राहीम ने) कहा कि (.खुदा के भेजे हुए) फ़रिश्तो! (अच्छा) फिर अब तुमको क्या मुहिम (दरपेश) है ० (उन्होंने) जवाब दिया कि हम (अज़ाब नाज़िल करने के लिये) एक गुनहगार क़ौम की तरफ़ भेजे गये हैं ० मगर लूत का ख़ानदान कि हम उन सब को ज़रूर बचा लेंगे ० इल्ला उनकी औरत (जिसे) हमने ताक रक्खा है कि वह ज़रूर (अपनी क़ौम में) रह जायगी ० फिर जब (.खुदा के) भेजे हुए (फ़रिश्ते) ख़ानदान लूत के पास आए ० (तो लूत ने) कहा, तुम तो कुछ अजनबी (से) लोग (मालूम होते) हो ० वह लगे कहने (नहीं) बल्कि जिस (अज़ाब के बारे) में (तुम्हारी क़ौम के लोग) शक करते थे (कि आए भी, या न भी आये) हम वही (अज़ाब) लेकर आए हैं ०—

और न वह (कभी) वहां से निकाले जावेंगे (बल्कि वह सदैव वहीं सुख पूर्वक रहेंगे) ॥

(अतएव ऐ हमारे रसूल !) हमारे (समस्त) बन्दों को सूचित करदो कि हम ही क्षमा करने वाले दयालु भी हैं और (हम ही अज़ाब देने वाले दण्ड दाता भी हैं । नेक मनुष्यों के प्रति हमारी कृपा व दया की भी कोई सीमा नहीं है । और दुराचारियों के वास्ते) हमारा अज़ाब भी (एक घोर) दुखदायी अज़ाब है (उसकी तकलीफ़ की भी कोई सीमा नहीं है) ॥

और (इस संसार में बहुत से क़िस्से ऐसे गुज़र चुके हैं, जिनसे समझदार मनुष्य हमारी कृपा और हमारे क्रोध-दोनों का अनुभव कर सकता है । ऐ रसूल!) तुम उनको इब्राहीम के मेहमानों (के क़िस्से) की ख़बर दो । (अर्थात् उन फ़रिश्तों का ज़िक्र सुनाओ, जो इब्राहीम को इस्हाक़ के पैदा होने की .खुश ख़बरी देने और लूत जाति पर .खुदा का क्रोध उतारने के लिये मनुष्य के रूप में आये थे) ॥

जब वह इब्राहीम के पास आये, तो (आते ही) उन्होंने (उनको) सलाम किया । (इब्राहीम उन्हें अतिथि समझे और उनके खाने के लिये भुना हुआ बछड़े का गोश्त लाये। मगर वह तो फ़रिश्ते थे, वह क्या खाते । उनके न खाने से इब्राहीम को ख़्याल हुआ कि कहीं यह हमारे शत्रु तो नहीं हैं, तो) उन्होंने (उन फ़रिश्तों से) कहा कि हमको तो तुमसे भय मालूम होता है ॥

उन्होंने उत्तर दिया (इब्राहीम ! हमसे किसी तरह का) भय न करो । हम (फ़रिश्ते हैं । और) तुम्हें (एक) बड़े (होनहार और) विद्वान लड़के की .खुश ख़बरी सुनाने आये हैं ॥

(इब्राहीम ने) कहा (हायँ ! यह बुढ़ापा और औलाद) । क्या तुम मुझको (इस) बुढ़ापे के आ जाने के बावजूद (औलाद का) मंगल समाचार सुनाते हो, भला (सोचो तो इस बुढ़ापे में) तुम किस चीज़ का मुझे मंगल समाचार सुना रहे हो ॥

उन्होंने जवाब दिया (कि ऐ इब्राहीम !) हमने तो तुमको (एक बिल्कुल) सच्ची बात का मंगल समाचार सुनाया है । तुम (को चाहिये कि इसका विश्वास करो, और .खुदा की कृपा से) निराश हो जाने वाले लोगों में से न बनो । (अल्लाह के आगे इस बुढ़ापे में भी तुमको औलाद प्रदान कर देना कुछ कठिन नहीं है) ॥

(इब्राहीम ने) कहा कि (मैं अल्लाह की कृपा से निराश नहीं हूँ) । और पथ भ्रष्टों के अतिरिक्त (ऐसा) कौन है, जो अपने पालन कर्त्ता की कृपा से निराश हो ॥

(और) फ़र्माया कि (ख़ैर, यह तो हो गया । अब तुम यह बताओ कि) ऐ (अल्लाह के) दूतो ! (अब) तुम्हारा कहां का इरादा है ॥

उन्होंने कहा कि हम (लूत जाति के) पापियों की ओर (अल्लाह का अज़ाब उतारने के लिये) भेजे गये हैं, लूत के घर वालों के अति-
रिक्त । (अर्थात्) हम उन सबको उनकी पत्नी के अतिरिक्त (अपने अज़ाब से) बचा लेंगे ।(उनकी पत्नी के विषय में) हमने फ़ैसला कर
दिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी । (अर्थात् पापियों और अज़ाब पाने वालों में से होगी) ॥

अतएव जब (यह .खुदा के) भेजे हुए (फ़रिश्ते) लूत के घर वालों के पास आये, तो उन्होंने (अर्थात् लूत ने उनसे) कहा कि तुम तो (बिल्कुल) नये मनुष्य (मालूम होते) हो (देखिये .खुदा ख़ैर करे । कहीं ऐसा न हो कि मेरी जाति के दुराचारी लोग तुमको सतायें, क्योंकि यह लोग किसी अनजान मनुष्य को बिना सताये नहीं छोड़ते) ॥

उन्होंने जवाब दिया (कि हम आदमी नहीं हैं, जो हमें यह सतायेंगे) । बल्कि हम (तो फ़रिश्ते हैं । और) तुम्हारे पास उस अज़ाब को लेकर आये हैं, जिस (के आने) में यह लोग सन्देह (किया) करते थे ॥

وَأَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ
بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبٰرَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ
أَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ۝ وَقَضَيْنَآ إِلَيْهِ
ذٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ۝
وَجَآءَ أَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ قَالَ إِنَّ هٰٓؤُ
لَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ۝ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ۝
قَالُوْٓا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ
بَنٰتِيْٓ إِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝ لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِيْ
سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ۝
فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً
مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ۝
وَإِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ۝ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝
وَإِنْ كَانَ أَصْحٰبُ الْأَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ۝ فَانْتَقَمْنَا

और हम (ख़ुदा का) हुक्म क़तई लेकर तुम्हारे पास आए हैं। और हम (तुमसे) सच कहते हैं ० तो कुछ रात रहे से तुम अपने (ख़ानदान के) लोगों को लेकर (इस बस्ती से) निकल जाओ और तुम इन (सब) के पीछे रहना और तुम में से कोई (पीछे) मुड़ कर न देखे और जहां (जाने का) तुमको हुक्म दिया गया है (यानी मुल्क शाम) उसी तरफ़ को (सीधे मुंह किये) चले जाना ० और हमने लूत की तरफ़ इस बात की क़तई वही भेज दी कि (यह जो तुम्हारी क़ौम के लोग हैं) सुबह होते २ इनकी जड़ बुनियाद काट (कर फेंक) दी जायगी ० (इधर तो यह बातें हो रही थीं) और (उधर) शहर के लोग (बइरादए बद) ख़ुशियां मनाते हुए (लूत के पास) आ मौजूद हुए ० (लूत ने उनसे) कहा कि यह मेरे मेहमान हैं, तो (इनके बारे में) मुझको फ़ज़ीहत न करो ० और ख़ुदा से डरो और मुझे रुस्वा न करो ० वह बोले (क्यों जी !) क्या हमने तुमको दुनिया जहान के लोगों की मुमानिअ़त नहीं करदी थी (कि उनको न आने दिया करो) ० (लूत ने) कहा अगर (ऐसा ही) तुमको करना है, तो यह मेरी बेटियाँ (मौजूद) हैं (इनसे निकाह करलो) ० (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारी जान की क़सम कि यह (लूत की क़ौम के लोग) अपनी (बद) मस्ती में (पड़े) झूम रहे थे (वह लूत की कब सुनते थे) ० ग़रज़ सूरज के निकलते निकलते उनको एक बड़े ज़ोर की आवाज़ ने आ लिया ० फिर हमने (उस बस्ती को उलट कर) उसके ऊपर के हिस्से को उसके नीचे का हिस्सा कर दिया और उन पर (ऊपर से) बर्साया खड़न्जे का पथराव ० कुछ शक नहीं कि इस (वाक़िये) में उन लोगों के लिये, जो (बात की अस्लियत को) ताड़ जाते हैं (क़ुद्रत ख़ुदा की बहुतेरी ही) निशानियाँ हैं ० और उनकी उलटी हुई बस्ती हमेशा (की आमद व रफ़्त) के रस्ते पर (अभी तक मौजूद) है ० कुछ शक नहीं कि इस (बस्ती की हालत) में ईमान लाने वालों के लिये (क़ुद्रत ख़ुदा की बहुत बड़ी) निशानी है ० और (क़ौम लूत की तरह) बन वाले (यानी शुऐब की उम्मत के लोग भी बड़े ही) सर्कश थे ० तो उनसे (भी हमने ना फ़र्मानी का) बदला लिया—

और हम तुम्हारे पास (एक) सच्ची (और होने वाली) बात (की ख़बर) लाये हैं। और हम (अपने इस वचन में बिल्कुल) सच्चे हैं॥

अतएव तुम कुछ रात रहे अपने घर वालों को लेकर (इस बस्ती को छोड़ कर) चले जाना। (और सबको तो अपने आगे कर लेना) और उन (सब) के पीछे तुम रहना। और (इस बात का ख़याल रखना कि) तुम में से कोई मुड़ कर न देखे। और जहाँ (पहुँचने) की तुम लोगों को आज्ञा दी जाती है, चले जाना (अर्थात मुल्क शाम)॥

और हमने (अपने इन्हीं फ़रिश्तों के द्वारा) लूत की तरफ़ (इस बात की) वही भेज दी थी, कि सुबह होते (होते) इन (लोगों) की जड़ काट (कर फेंक) दी जायगी। (और इनको बिल्कुल नष्ट व बरबाद कर दिया जायगा)॥

(संक्षिप्त वृतान्त यह है कि इधर तो यह वार्तालाप हो रही थी) और (उधर) शहर के मनुष्य (इन ख़ूब सूरत और नये अतिथियों के आने की ख़बर सुन कर) ख़ुश होते हुए (लूत के पास दौड़े २) आये। (और कहने लगे कि इनको हमारे अधिकार में दे दो)॥

(लूत ने) कहा (भाइयो !) यह सब मेरे मेहमान हैं। (इनकी अकीर्ति मेरी अकीर्ति है) । अतएव तुम (इन्हें सताकर) मुझे ज़लील न करो। और अल्लाह से डरो और मुझे बदनाम न करो॥

उन्होंने (लूत से डांट कर) कहा कि (तुमने इन लोगों को अपने घर में रक्खा ही क्यों ?) क्या हमने तुमको संसार व दुनिया के मनुष्यों (की हिमायत) से नहीं रोका था॥

(लूत ने) कहा, यदि तुम (कुछ) करना (ही) चाहते हो, तो (लो मैं तुमको बताता हूँ कि) यह मेरी (इतनी) बेटियां (मौजूद) हैं (इनसे निकाह करलो। और इन अनुचित कर्मों से रुक जाओ। इसमें तुम्हारा सरासर लाभ है)॥

(ऐ रसूल !) तुम्हारी जान की शपथ--यह लोग अपनी (सर्कशी के) मद में (मस्त और नशे में) चूर थे। (और लूत के उपदेशों पर ज़रा कान न धरते थे)॥

(जब उनकी दशा इस सीमा तक पहुँच गई) तो सूरज निकलने के समय एक (भयानक) कड़क ने उनको आ दबाया। फिर हमने इस (सारी की सारी बस्ती ही) को नष्ट भ्रष्ट कर दिया (और उसका पट ही उलट कर रख दिया)। और हमने उन पर कंकरीले पत्थरों का मेंह बरसाया॥

निस्सन्देह इस (कहानी) में दृष्टिवान लोगों के लिये (हमारी शक्ति की बड़ी बड़ी) निशानियाँ (वर्तमान) हैं॥

और यह (नष्ट की हुई बस्ती) सड़क के किनारे है, जिस पर (अभी तक मुसाफ़िरों का) आना जाना है। (और अरब से शाम जाने वालों को अब भी नज़र आती है)॥

निस्सन्देह इस (निर्जन बस्ती) में ईमानदारों के लिये (बड़ी नसीहत और) शिक्षा (मौजूद) है॥

और निस्सन्देह (इन ही की तरह) बन (के रहने) वाले (अर्थात शुऐब की जाति के लोग) भी बड़े ज़ालिम थे : सो हमने उन से भी (लूत जाति के पापियों की तरह पूरा पूरा) बदला लिया--

مِنْهُمْ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ
اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا
عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝ وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ
بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ۝
فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ وَمَا خَلَقْنَا
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاِنَّ
السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ۝ اِنَّ
رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا
مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ۝ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ
اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا
النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ۝ كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ۝
الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ۝ فَوَرَبِّكَ

और (क़ौम लूत की और उनकी) दोनों (की बस्तियाँ) खुले शारे आम पर (उजड़ी हुई अब तक मौजूद) हैं ० और (इसी तरह) हिज्र के रहने वालों (यानी क़ौम समूद) ने (भी) पैग़म्बरों को झुठलाया ० और (बावजूदे कि) हमने उनको अपनी निशानियाँ दीं (मगर) फिर (भी) वह उन से रूगर्दानी ही करते रहे ० और (पापदारी और) अम्न के ख़याल से पहाड़ों को तराश तराश कर घर बनाते थे ० तो उनको (भी) सुबह होते होते बड़े ज़ोर की आवाज़ ने आ लिया० और (अपनी हिफ़ाज़त की) जो तदबीरें करते थे, उनके कुछ भो काम न आईं ० और हमने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ आस्मान व ज़मीन में है (उसको किसी बड़ी) मस्लहत ही से बनाया है और क़यामत ज़रूर ज़रूर आने वाली है। तो (ऐ पैग़म्बर ! काफ़िरों की शरारतों से) वज़ेदारी के साथ दरगुज़र करो ० कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार ही (सब का) पैदा करने वाला (और सबके हाल से) वाक़िफ़ है ० और (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुमको (सूरए फ़ातिहा यानी अल्हम्द की) सात आयतें अता फ़र्माईं, जो (नमाज़ की हर रकअत में) मुकर्रर पढ़ी जाती हैं। और (यह क़ुर्आन की एक) बड़ी (उम्दा) सूरत (है, तो यह सब से बड़ी नेअमत है) ० (और) वह जो हमने इन काफ़िरों में से कई क़िस्म के लोगों को (दुनिया के चन्द रोज़ा) फ़ायदों से बहरा मन्द कर रक्खा है, तुम उन पर अपनी नज़र न दौड़ाओ और (दीन की तरफ़ से इनको बे पर्वाई देख कर) इन (के हाल) पर अफ़सोस भी न करना और मुसलमानों से (गो कैसे ही ग़रीब हों, हमेशा) झुक कर मिलना ० और (इन लोगों से) कहदो कि मैं तो खुले तौर पर (तुम सबको अज़ाब ख़ुदा से) डराने वाला हूँ ० (ऐ पैग़म्बर ! हमने उसी तरह यह क़ुर्आन तुम पर नाज़िल किया है) जैसे हमने उन लोगों पर (यानी यहूद पर किताब) नाज़िल की थी ० जिन्होंने बाँट कर (अपने) क़ुर्आन (यानी उस किताब) के टुकड़े टुकड़े कर डाले (बाज़ अहकाम को माना और बाज़ को नहीं) ० सो (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे ही पर्वर्दिगार की (यानी हमको अपनी) क़सम है—

(इन दोनों बस्तियों की घटनायें कुछ २ मिलती जुलती हैं)। और यह दोनों (बस्तियाँ एक) साफ़ सड़क (के किनारे) पर (स्थित) हैं।

और (इसी तरह) हिज्र (के रहने) वालों ने (अर्थात समूद की जाति के लोगों ने भी हमारे) पैग़म्बरों को झूठा बतलाया ॥

और (इसके होते हुये कि) हमने उनको अपनी (अद्वैता अर्थात एक होने और अपने पैग़म्बरों की सचाई की बहुत सी) निशानियां भी प्रदान कीं। लेकिन (उन लोगों ने न हमारी वहदानियत अर्थात अद्वैता को माना और न हमारे पैग़म्बरों के नबी होने को। बल्कि) वह उन (निशानियों) से विमुख (और हमारे विरोधी) रहे ॥

और यह (वही लोग थे, जो) पहाड़ों को काट २ कर सुख पूर्वक रहने के लिये घर बनाया करते थे ॥

(जब इन लोगों की अवज्ञा व सर्कशी हद से अधिक बढ़ गई) तो उनको भी एक (अदृष्टि) कड़क ने सुबह होते ही आ दबाया। अतएव (अपने बचाव और सुख पूर्वक रहने के लिये) जो तरकीबें यह किया करते थे, वह उनके कुछ भी काम न आईं ॥

और (ऐ रसूल !) हमने आकाशों और पृथ्वी को बिना (किसी आवश्यकता और) मस्लहत के नहीं पैदा किया। (हर समझ-दार को चाहिये कि उनके परिवर्तन को देख कर संसार की असारता का विश्वास करे)। और (इनकी पैदाइश को देख कर सृष्टि कर्ता का विश्वास करे)। निस्सन्देह (प्रलय की) घड़ी (बहुत जल्दी) आने वाली है। अतएव (ऐ रसूल !) तुम (इन अवज्ञाकारियों के कर्मों का कुछ भी शोक न करो। और) अत्यन्त भलाई के साथ दरगुज़र करो ॥

निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता (समस्त सृष्टि का) पैदा करने वाला (है। इस लिये वह सबकी दशा से अच्छी तरह) परिचित है। (वह प्रलय के दिन हर एक से उसके कर्मों के अनुसार अच्छी तरह पूछ गछ करेगा) ॥

और (ऐ रसूल !) हमने तुम्हें सात आयतें (अर्थात् सूरत फ़ातिहा) और आदरणीय क़ुर्आन प्रदान किया है ॥

और (ऐ रसूल !) हमने तुम्हें सात आयतें (अर्थात् सूरत फ़ातिहा) और आदरणीय क़ुर्आन प्रदान किया है ॥

जो (अस्थायी) लाभ (और क्षणिक सुख) हमने भिन्न प्रकार के काफ़िरों (अर्थात् यहूदी व ईसाई और अग्नि-पूजक और मुश्रिकों) को दे रक्खा है—(तो तुम) उसकी ओर दृष्टि उठाकर भी न देखना। और न इन (मनुष्यों के विरोध और शत्रुता) पर (कुछ अफ़सोस और) पश्चाताप करना। और (सर्वदा) ईमानदारों के लिये अपनी भुजा झुकाये रखना। (अर्थात् उनसे नम्रता का बरताव करते रहना) ॥

और (बराबर अपने प्रचार विषयक कर्त्तव्य को पूरा किये जाना। और लोगों से) कहना कि मैं एक खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूँ ॥

(और तुमको बताने वाला हूँ कि यदि तुम अपने कुकर्मों से बाज़ न आये, तो तुम पर कभी न कभी ख़ुदा का क्रोध अवश्य उतरेगा)। ऐसा कि हमने (अपना अज़ाब) उन लोगों (अर्थात् उन यहूदी व ईसाइयों) पर उतारा, जिन्होंने क़ुर्आन के हिस्से२ कर दिये। (अर्थात् क़ुर्आन के जिस भाग को अपनी किताबों के अनुसार पाया, उस पर ईमान ले आये। और जिस हिस्से को विरुद्ध देखा, उसका इन्कार कर बैठे) ॥

अतएव (ऐ रसूल !) तुम्हारे पालन कर्त्ता की (अर्थात हमें अपनी) शपथ (है)—

لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَاصْدَعْ
بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝ إِنَّا كَفَيْنَاكَ
الْمُسْتَهْزِئِينَ ۝ الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ
صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ
مِنَ السَّاجِدِينَ ۝ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝

سورة النحل مكية وهي مائة وثمان وعشرون آية

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ۝ يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ
عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ
إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ۝ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِالْحَقِّ ۚ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ

نطفة

कि हम इन सब से इनके आमाल की ज़रूर बाज़ पुर्स करेंगे ० पस तुमको जो हुक्म दिया गया है, उसको खोल कर सुनादो और मुश्रिकीन की मुतलक़ पर्वाह न करो ० यह लोग जो (तुम पर) हँसते ० (और) ख़ुदा के साथ दूसरे दूसरे माबूद क़रार देते हैं, तुम्हारी तरफ़ से हम इन (की सज़ा दिही) को बस करते हैं। तो आगे चल कर इनको मालूम हो जायगा ० और हमको मालूम है कि यह काफ़िर जैसी जैसी बातें कहते हैं, उनकी वज़ह से तुम तंग दिल होते हो ० तो तुम अपने पर्वर्दिगार की हम्द (व सना) के साथ (उसकी) तस्बीह (व तक़्दीस) करो और (उसकी जनाब में) सज्दे करो ० और अपने पर्वर्दिगार की इबादत में लगे रहो यहाँ तक कि तुमको अम्र यक़ीनी (यानी मौत) पेश आए ०

सूरत--नहल

मक्की यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें १२८ आयतें और १६ रुकूअ हैं॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ०

(ऐ कुफ़्फ़ार मक्का !) ख़ुदा का हुक्म (यानी रोज़ क़यामत) आया (का आया) तो (बे फ़ायदा) उसके लिये जल्दी न मचाओ। (ऐ पैग़म्बर !) इनके शिर्क से ख़ुदा की ज़ात पाक और बालातर है ० वही अपने हुक्म से फ़रिश्तों को वही देकर अपने बन्दों में से जिसकी तरफ़ चाहता है, भेजता है कि (लोगों को) इस बात से आगाह करदो कि हमारे सिवा कोई और माबूद नहीं, तो हमसे डरते रहो ० उसी ने (किसी बड़ी) मस्लहत से आस्मान और ज़मीन को पैदा किया। तो यह लोग जो (दूसरों को उसका) शरीक बनाते हैं, वह उससे (पाक और) बालातर है ० उसी ने इन्सान को नुत्फ़े से पैदा किया--

---

हम उन सब लोगों से उनके (बुरे) कर्मों के सम्बन्ध में (प्रलय के दिन) अवश्य २ पूछ गछ करेंगे॥

(तात्पर्य यह है कि) जो कुछ तुमको आज्ञा दी गई है, उसे (लोगों के सामने) साफ़ २ वर्णन कर दो। और मुश्रिकों (व काफ़िरों) की ओर ध्यान भी न करो॥

(और ऐ रसूल ! यह लोग) जो (तुम्हारा) मज़ाक़ उड़ाने वाले (और) अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य को (शरीक) बनाने वाले हैं (तुम इनकी इस मूर्खता की भी कुछ पर्वाह न करना। क्योंकि) तुम्हारी ओर से हम उनको (उनके कुकर्मों का मज़ा चखाने के लिये बहुत) काफ़ी हैं। अतएव शीघ्र ही इन्हें मालूम हो जायगा (कि यह क्या किया करते थे)॥

और (ऐ रसूल !) हम (अच्छी तरह) जानते हैं कि इनकी (असभ्य) वार्त्तालाप तुम्हारे दिल को दुख देती (और परेशान) करती है। तो तुम अपने ख़ुदा की स्तुति (व प्रशंसा) के साथ २ उसकी पवित्रता का वर्णन करते रहो। और सज्दा करने वालों में से रहो॥

और अपने पालन कर्त्ता की (आधीनता व) उपासना किये जाओ--यहाँ तक कि तुम्हारा (साँसारिक) जीवन समाप्त हो जाय *॥

* टीका—इस जगह क़ुर्आन में अरबी भाषा का यक़ीन शब्द आया है, जिसके अर्थ पूर्ण विश्वास के भी हैं और मृत्यु के भी हैं। परन्तु इस अवसर पर इसका अर्थ यही है, कि उस समय तक उपासना करते रहना चाहिये कि शरीर में जीव उपस्थित रहे॥--हसन निज़ामी॥

सूरत--नहल

मक्की अर्थात मक्के में उतरी। इसमें १२८ आयतें और १६ रुकूअ हैं॥

(ऐ मक्के के काफ़िरो !) अल्लाह का आदेश (अर्थात प्रलय का दिन तो समझ लो कि शीघ्र) आया। (अल्लाह को उसके लाने में देर ही कितनी लगती है)। अतएव तुम इसकी जल्दी न करो (और जो समय मिले, उसको ग़नीमत समझो। और अपने कुफ़् व शिर्क से बाज़ आ जाओ। और विश्वास करो कि) अल्लाह (की व्यक्ति) लोगों के शिर्क से पवित्र और (अधिक) श्रेष्ठ है॥

वह अपनी आज्ञा से फ़रिश्तों को वही देकर अपने (मुख्य) बन्दों (अर्थात नबी व रसूलों) में से जिसके पास चाहता है, उतार देता है। अर्थात (उनसे) यह (कहला भेजता है) कि (ऐ हमारे दूतो !) तुम (काफ़िरों को हमारे अज़ाब से) डराओ (और उन्हें बताओ कि) हमारे अतिरिक्त कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है। अतएव हम (ही) से डरो (और हमारी ही पूजा करो)॥

उसने (ख़ास अपनी युक्ति व) उपाय से आकाशों और पृथ्वी को पैदा किया। वह लोगों के शिर्क से (पवित्र व विरक्त और अत्यन्त श्रेष्ठ व) उच्च है॥

उसने मनुष्य को एक (अपवित्र) बिन्दु मात्र पदार्थ से पैदा किया--

بَاقِيْهِ مِنْ نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَالْأَنْعَامَ
خَلَقَهَا لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ ۝
وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝
وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ
إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝
وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً
وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ
وَمِنْهَا جَآئِرٌ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰكُمْ أَجْمَعِيْنَ ۝ هُوَ
الَّذِيْ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ
وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝ يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ
وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ
إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَسَخَّرَ
لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمُ

बाद हमा यह एक दम से लगा खुल्लम खुल्ला (ख़ुदा ही के बारे में) झगड़ने ० और उसी ने चारपायों को पैदा किया, जिन (की खाल और ऊन) में तुम लोगों की जड़ावल है और (और भी बहुत तरह के) फ़ायदे । हैं और उनमें से (बाज़ को) तुम ख़ाते (भी) हो ० और जब शाम के वक़् (उन को चरा कर) घर वापिस लाते हो और जब सुबह को (जंगल) चराने ले जाते हो, तो उनकी वजह से तुम्हारी रौनक़ भी है ० और जिन शहरों तक तुम बे जाँकाही नहीं पहुँच सकते, चारपाये वहाँ तक तुम्हारे बोझ (भी) उठाकर ले जाते हैं । कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार (तुम पर) बड़ी शफ़क़त रखता (और) मेहर्बान है ० (और उसी ने) घोड़ों और ख़च्चरों और गधों को (पैदा किया) ताकि तुम उनसे सवारी लो और (सवारी के अलावा यह चीज़ें मूजिब) ज़ीनत (भी हैं) । और वही (और बहुत चीज़ें) पैदा करता है, जिनको तुम नहीं जानते ० और (दीन के रस्ते दो क़िस्म के हैं, एक) सीधा रस्ता (जो धुर) ख़ुदा तक (पहुँचता) है, और बाज़ टेढ़े (मेढ़े) । और ख़ुदा चाहता, तो तुम सबको सीधा ही रस्ता दिखा देता ० वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने आस्मान से पानी बरसाया, जिसमें से कुछ तुम्हारे पीने का है और (कुछ ऐसा है कि) उससे दरख़्त (पर्वरिश पाते) हैं, जिन्हें तुम (अपने मवेशियों को) चराते हो ० उसी पानी से ख़ुदा तुम्हारे लिये खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर तरह के फल पैदा करता है । जो लोग सोच समझ को काम में लाते हैं, उनके लिये इसमें (क़ुद्रत ख़ुदा की) एक (बड़ी) निशानी है ० और उसी ने रात और दिन और सूरज और चाँद को (एक पतिबार से) तुम्हारा ताबे कर रक्खा है । और (इसी तरह) सितारे (भी)—

(और फिर उसको बुद्धि व युक्ति और बल व शक्ति प्रदान की) । मगर वह यकायक खुल्लम खुल्ला (क़ुद्रत की बातों चूं चरा करने लगा और प्रजा के पालन कर्त्ता और सृष्टि के सम्बन्ध में व्यर्थ) झगड़ा उठाने लगा ॥

यद्यपि उसने (ऐ झगड़ा करने वालो !) तुम्हारे लिये चौपायों को पैदा किया, जिन (की खाल और ऊन) में तुम लोगों का जाड़े का लिबास (तैयार होता) है । और (इसके अतिरिक्त बहुत से) लाभ और भी हैं । और उनमें से (बाज़ २ जानवरों को तुम्हारे लिये हलाल कर दिया है, कि उन्हें) तुम खाते भी हो ॥

और उनमें तुम्हारे लिये (एक प्रकार की) शोभा भी है । (विशेषतया उस समय) जिस समय कि तुम (उनको) शाम के समय जङ्गल से (घरों की ओर) वापिस लाते हो । और जिस समय कि तुम (सुबह ही सुबह उन्हें) जङ्गल में चराने ले जाते हो ॥

और वह तुम्हारे बोझों को (अपनी कमरों पर) लाद कर (ऐसे) ऐसे (दूर वर्ती) शहरों तक ले जाते हैं कि जहाँ तुम बिना (अपनी) जानों को कष्ट पहुँचाये नहीं पहुँच सकते । निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता (बड़ी) कृपा करने वाला (और तुम पर अत्यन्त) मेहर्बान है ॥

और उसने (तुम्हारे वास्ते) घोड़ों और ख़च्चरों और गधों को पैदा किया, ताकि तुम उन पर सवारी करो । और (ताकि वह तुम्हारे लिये) शोभा (का कारण) हों । और (इन वस्तुओं से अतिरिक्त) वह ऐसी (ऐसी) चीज़ें पैदा करता है (और करेगा) जिन्हें तुम (अभी) जानते (और पहिचानते) भी नहीं ॥

(तात्पर्य यह है कि उपर्युक्त) और (निम्न लिखित ख़ुदा की सृष्टि पर ध्यान करने से ख़ुदा की अद्वैता का पूरा पूरा पता चल जाता है और साफ़ मालूम हो जाता है कि) सीधा मार्ग (इस्लाम धर्म का है । क्योंकि वह ख़ुदा के एक होने की शिक्षा देता है । और इसको समझाना) अल्लाह के ज़िम्मे है । और कुछ मार्ग टेढ़े (अर्थात अपने लक्ष स्थान से कोसों दूर) हैं । (उनके दोष व अवगुणों का हाल वर्णन करना भी अल्लाह के ज़िम्मे है) । और यदि अल्लाह चाहता (और उसकी इच्छा ही यह होती कि तुम में से कोई मनुष्य पथ भ्रष्ट न हो) तो वह तुम सब को सीधे मार्ग ही पर चलाता । (लेकिन यह बात उसकी युक्ति के विरुद्ध है, इस कारण वह ऐसा नहीं करता) ॥

(और उसकी क़ुद्रतों का क्या ठिकाना है) । वही (ऐसी महान शक्ति वाला अल्लाह) है कि उसने तुम्हारे लिये आकाश से पानी उतारा, जिसमें से कुछ (तो तुम्हारे) पीने (के काम) का है । और (कुछ ऐसा है कि) उस से (मैदानों और बाग़ों में घास उगती और) वृक्ष (पैदा होते) हैं, जिनमें तुम (अपने जानवरों को) चराते हो ॥

(और) वह उसी (पानी) से तुम्हारे लिये (हरे भरे) खेत और ज़ैतून और खजूर (के वृक्ष) और अंगूर (की बेलें) और (इसके अतिरिक्त) हर प्रकार के फल (फूल) उगाता है । निस्सन्देह इन (चीज़ों) में विचार शील लोगों के लिये (अल्लाह के एक होने और उसकी शक्ति व महानता की बहुत बड़ी) निशानी (मौजूद) है ॥

और उसीने दिन व रात तथा सूर्य व चन्द्रमा को तुम्हारे (लाभ के) आधीन कर दिया है । और (इसी प्रकार) तारे भी—

مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ
وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ
سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا
مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ
فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝
وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا
وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَعَلٰمٰتٍ وَبِالنَّجْمِ
هُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ اَفَلَا
تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا
اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ
وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝ اَمْوَاتٌ غَيْرُ

احياء

इसी के हुक्म से (तुम्हारे) ताबे फ़र्मान हैं। जो लोग अक़्ल रखते हैं, उन के लिये इन चीज़ों में (क़ुद्रत ख़ुदा की बहुतेरी ही) निशानियाँ हैं ० और (बहुत सी) चीज़ें, जो तुम्हारे (फ़ायदे के) लिये रूए ज़मीन में पैदा कर रक्खी हैं (और) उनकी मुख़्तलिफ़ रंगतें हैं। इसमें (भी) उन लोगों के लिये, जो ग़ौर व फ़िक्र को काम में लाते हैं (क़ुद्रत ख़ुदा की बड़ी) निशानी (मौजूद) है ० और वही (क़ादिर मुतलक़) है, जिसने (एक एतिबार से) दरिया को (तुम्हारा) मुतीं कर दिया है, ताकि उसमें से तुम (मछलियाँ निकाल कर उनका ताज़ा) ताज़ा गोश्त खाओ और (नीज़) उसमें से ज़ेवर (की चीज़ें यानी जवाहिरात) निकालो, जिनको तुम लोग पहिनते हो। और (ऐ मुख़ातब !) तू किश्तियों को देखता है कि (पानी को) फाड़ती हुई दरिया में चली जा रही हैं। और (दरिया को इस लिये भी तुम्हारा मुतीं किया है) ताकि तुम लोग ख़ुदा का फ़ज़्ल (यानी तिजारत के फ़ायदे) तलाश करो और ताकि (आख़िरकार इन सब मनफ़अतों पर नज़र करके ख़ुदा का) शुक्र करो ० और (उसी ने भारी बोझल) पहाड़ ज़मीन में गाड़े, ताकि ज़मीन तुम्हें लेकर (किसी और तरफ़ को) न झुकने पाए। और (उसी ने) नदियां और रस्ते (बनाए) ताकि तुम (अपनी) मंज़िल मक़सूद को पहुँचो। और (मुसाफ़िरों के लिये और भी बहुत) निशानियां (क़रार दीं कि उनके ज़रिये से रस्ते की शिनाख़्त करें) ० और लोग सितारों से भी राह मालूम करते हैं ० तो क्या जो (ख़ुदा इतनी मख़्लूक़ात) पैदा करे, वह उन (बुतों) के बराबर हो गया, जो (कुछ भी) नहीं पैदा कर सकते। फिर क्या तुम लोग (इतनी बात भी) नहीं समझते ० और अगर ख़ुदा की नेअमतों को गिनना चाहो, तो(इतनी बहुत हैं कि तुम लोग)उनको पूरा पूरा न गिन सको। बेशक ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहर्बान है (कि तुम्हारी ना शुक्री पर भी सज़ा नहीं देता और अपनी नेअमतें मौक़ूफ़ नहीं करता) ० और जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो, अल्लाह (सब कुछ) जानता है ० और ख़ुदा के सिवा जिन (बुतों) को (यह लोग हाजत रवा समझ कर) पुकारते हैं, (उनका हाल यह है कि) वह कोई चीज़ पैदा नहीं कर सकते, बल्कि वह ख़ुद बनाए जाते हैं ० मुर्दे हैं, जिनमें जान नहीं—

उसके हुक्म से (तुम्हारे हित के) आधीन (बने हुए) हैं। निस्सन्देह बुद्धिमान लोगों के लिये इन (चीज़ों) में भी (अल्लाह की क़ुद्रत की बड़ी २) निशानियाँ (मौजूद) हैं॥

और (इनके अतिरिक्त) जो भिन्न भिन्न (शक्ल व सूरत और) रङ्ग (रूप) की चीज़ें उसने तुम्हारे लाभ के लिये पृथ्वी में पैदा की हैं, निस्सन्देह उनमें (भी) ध्यान करने वाले लोगों के लिये (अल्लाह की क़ुद्रत की एक बड़ी) निशानी (मौजूद) है॥

और उसी ने (नदी और) समुद्र पर (भी तुम्हारा) अधिकार कर दिया, ताकि तुम उसमें से ताज़ा (ताज़ा) गोश्त (अर्थात मछलियाँ निकाल निकाल कर) खाओ। और उसमें से ज़ेवर (अर्थात जवाहिरात) निकालो, जिन्हें तुम (स्त्री पुरुष हाथों और गले आदि में) पहिनते हो। और (ऐ मनुष्य !) तू किश्तियों को देखता है कि (किस प्रकार) उसमें (अर्थात नदी में पानी को) चीरती (फाड़ती) हुई चली जाती हैं। और (नदी को तुम्हारे आधीन इस लिये भी कर दिया) जिससे कि तुम (उसके द्वारा दूर और निकट वर्ती देशों में पहुँच कर व्योपार करो। और) उसकी कृपा (अर्थात रोज़ी) तलाश करो। और ताकि तुम (हमारी इन असंख्य कृपाओं पर हमारा) शुक्र अदा करते रहो॥

और उसी ने पृथ्वी में (बड़े २ अटल) पर्वत (मेख़ की तरह) ठोंक दिये, जिससे वह तुमको लेकर डिगमगाने न लगे। और नहरें और मार्ग (बनाये) ताकि तुम (लक्ष स्थान तक) पहुँच सको। और (मार्ग का पता चलाने के लिये बहुत से पर्वत और वृक्ष आदि के) चिन्ह (बनाये)। और तारों से भी लोग मार्ग का पता चलाते हैं। (यह भी उसी महान शक्ति वाले अल्लाह ने बनाये हैं)॥

तो क्या जो (शक्ति वाला अल्लाह ऐसी २ चीज़ों को) पैदा करदे (वह) उसके बराबर (ख़याल किया जा सकता) है, जो (इस प्रकार की वस्तुओं में से एक वस्तु भी) न पैदा कर सके। (मूर्खो ! तुम्हें) क्या (हो गया है, जो इतना समझाने पर भी) तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते॥

(देखो ! तुम्हारी उदण्डता की तो यह नौबत है) और (अल्लाह की कृपा की यह दशा है कि) यदि तुम अल्लाह की (दी हुई) नेअमतों को गिनना चाहो, तो (कभी) उनको पूरा न गिन सको। निस्सन्देह अल्लाह (बड़ी) क्षमा करने वाला (तथा) कृपालु है, (जो तुम्हारी इतनी सर्कशी और इतनी धूर्तता पर तुमको असंख्य वस्तुएं प्रदान की हैं और किसी प्रकार का दण्ड नहीं देता)॥

और अल्लाह तुम्हारी गुप्त बातों से भी परिचित है और ज़ाहिर (और खुली हुई बातों) से भी। (वह प्रलय के दिन तुम्हारी हर एक निठुरता का पूरा पूरा दण्ड देगा)॥

और ख़ुदा के अतिरिक्त जिन (पूज्यों) की यह (काफ़िर) पूजा करते हैं, वह (जितनी चीज़ें हमने गिनवाई हैं, उनमें से) कोई चीज़ (भी) नहीं पैदा कर सकते। और (किसी वस्तु का पैदा करना तो दूर) वह (स्वयं) पैदा किये जाते हैं। (अर्थात अपनी स्थिरता में भी दूसरों के मोहताज हैं)॥ (और तुम स्वयं भी तो देखो ! कि वह बिलकुल) बे जान के मुर्दे हैं—

और इतनी भी ख़बर नहीं कि कब (क़यामत होगी और मुर्दे) उठा खड़े किये जाएंगे ० (फिर यह क़यामत में क्या काम आ सकते हैं। लोगो !) तुम्हारा माबूद .खुदाए वाहिद है। तो जो लोग (रोज़) आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते, उनके दिल (ही कुछ इस क़िस्म के हैं कि कैसी ही वाजिबी बात हो) इन्कार (ही) किये चले जाते हैं और वह बड़े मग़रूर हैं ० यह लोग जो कुछ छुपा कर करते और जो ज़ाहिर करते हैं, बेशक अल्लाह (सब कुछ) जानता है। वह ग़रूर करने वालों को (बिल्कुल) पसन्द नहीं करता ० और जब इन (काफ़िरों) से (.कुरआन के बारे में) पूछा जाता है कि तुम्हारे पर्वर्दिगार ने क्या नाज़िल किया है, तो वह जवाब देते हैं कि (अजी) अगिलों के क़िस्से हैं ० (इनके इस कहने का ज़रूरी) नतीजा यह है कि क़यामत के दिन अपने (गुनाहों के) सारे बोझ और जिन लोगों को वे समझे बूझे गुमराह करते हैं, उनके (गुनाहों के) बोझ भी उन ही को उठाने पड़ेंगे। देखो तो (कैसा) बुरा बोझ यह लोग अपने ऊपर लादे चले जा रहे हैं ० इनसे पहिले लोगों ने भी (.खुदा के ख़िलाफ़) तदबीरें की थीं, तो .खुदा ने उन (के मन्सूबों) की इमारत की जड़ बुनियाद से ख़बर ली। तो उस (ख़याली इमारत) की छत (धड़ाम से) उन ही पर उनके ऊपर से गिर पड़ी (और सारे मन्सूबे ग़लत हो गए)। और जिधर से इनको ख़बर तक न थी, अज़ाब ने इनको आ लिया ० फिर (इसी पर बस नहीं) क़यामत के दिन .खुदा इनको (और भी) रुसवा करेगा और (इनसे) पूछेगा कि (तुमने जो) हमारे शरीक (बना रक्खे थे और) जिनके बारे में तुम (ईमान वालों से) लड़ा करते थे, (अब वह) कहाँ हैं ? (उस वक़्त इनसे तो कुछ जवाब देते बन न पड़ेगा, मगर) जिन लोगों को (दुनिया में हक़ बात की) समझ दी गई थी, वह बोल उठेंगे कि आज के दिन फ़ज़ीहत—

أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ
وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُم
مُّنكِرَةٌ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ۝ لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
الْمُسْتَكْبِرِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُم مَّاذَا أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُم بِغَيْرِ
عِلْمٍ ۗ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ۝ قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُم مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ
عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ
مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمْ
وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تُشَاقُّونَ
فِيهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ

और (पूज्य होकर इतना भी) नहीं जानते कि (प्रलय कब आयेगी और) कब लोग (क़ब्रों से) उठाये जायँगे ॥

(समझ से काम लो और याद रक्खो ! कि) तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है। पस (इतना समझने के बाद भी) जो लोग प्रलय पर ईमान नहीं लाते, उनके हृदय (वास्तव में एक आवश्यक होने वाली बात का) इन्कार कर रहे हैं। और वह मनुष्य (हक़ की ओर से धूर्तता और) उद्दण्डता करने वाले हैं ॥

(अच्छा) कुछ हानि (की बात) नहीं । अल्लाह (अच्छी तरह) उनकी गुप्त बातों को भी जानता है और प्रकट को भी। (वह प्रलय के दिन उनकी हर अनुचित बात की सज़ा देगा। क्योंकि) वह (हक़ की ओर से विरुद्धता और) उद्दण्डता करने वालों को बिल्कुल पसन्द नहीं करता ॥

और (इनको क्या कहा जाय, यह तो वह मूर्ख मनुष्य हैं कि) जब इनसे (.कुरआन के विषय में) कहा जाता है कि तुम्हारे पालन कर्त्ता ने तुम पर क्या उतारा है। (अर्थात् जिस किताब को मुहम्मद पर अल्लाह की ओर से उतारी हुई कहते हैं, वह कैसी है ?) तो वह (उत्तर में) कहते हैं कि (वह कोई .खुदाई किताब तो मालूम नहीं होती। उसमें तो केवल) पहिले मनुष्यों की कहानियाँ हैं ॥

(.कुरआन जैसी पवित्र व श्रेष्ठ किताब के विषय में यह इस तरह बकवास करके अपना परलोक बिगाड़ते हैं। यह बातें इस प्रयोजन से करते हैं) जिससे कि प्रलय के दिन यह (लोग) अपने (कुकर्मों के) पूरे (पूरे) बोझ (अपने कन्धों पर) लादें। और कुछ (बोझ) उन लोगों के भी, जिनको इन्होंने (केवल अपनी) मूर्खता से (.कुरआन को कहानियों की किताब बताकर .कुरआन की ओर से विमुख और सचाई के मार्ग से) भटका दिया है। (लोगो !) तुम्हें ख़बर (भी) है, (प्रलय के दिन) जो बोझ यह (लोग) उठायेंगे, (वह कैसा है ?) वह अत्यन्त ही बुरा है। (वह इन्हें भड़कते हुए नर्क में डलवायेगा) ॥

इनसे पहिले जो मनुष्य (हो चुके) हैं, उन्होंने (भी .खुदा के बन्दों को पथ भ्रष्ट करने के लिये बड़े २) उपाय किये थे। (बल्कि उन्होंने तो समस्त .खुदाई प्रबन्ध को अपने विचार में नष्ट भ्रष्ट करने का इरादा किया था। अतएव आकाश पर चढ़ने के लिये एक बड़ी ऊंची इमारत* बनवाई थी)। तो अल्लाह तआ़ला ने उनकी इमारत को जड़ बुनियाद से उखेड़ फेंका। (और) फिर (उसकी आज्ञा से) उन (लोगों) के ऊपर (उस इमारत की) छत गिर पड़ी। (और वह उसके नीचे दबे के दबे रह गये)। और (उन्हें नष्ट करने के लिये उसने ऐसी जगह से) उन पर (अपना) अज़ाब भेजा कि जहाँ से (आने की) उनको ख़बर (भी) न थी ॥

* टीका—कनआन के बेटे नमरूद और उसके साथियों ने आकाशीय दशा को मालूम करने और अपने विचार में आकाश वालों को नष्ट व बरबाद करने के लिये पांच हज़ार गज़ ऊंची और तीन हज़ार गज़ चकली एक इमारत बनवाई थी। उसे अल्लाह तआ़ला ने आंधी व भूकम्प के द्वारा बिल्कुल नष्ट कर दिया था :—हसन निज़ामी ॥

(और यह तो अल्लाह ने उनको संसार में दण्ड दिया है और इसके बाद) फिर प्रलय के दिन वह इनको (और ज़लील व) बदनाम करेगा और फ़र्माएगा कि कहाँ हैं हमारे साझी लोग, जिन(की तरफ़दारी)में(हमारे नबियों और रसूलों तथा ईमानदारों से)तुम झगड़ा करते थे॥ (यह सुन कर यह बिल्कुल हैरान और चकित रह जायँगे। और) वह लोग, जिन्हें (संसार में तौहीद का) ज्ञान दिया गया था-वह कहेंगे कि आज (पूरी २) फिटकार –

وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ
ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ
بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝
وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوْا خَيْرًا
لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ
الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ
يَدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا
مَا يَشَآءُوْنَ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۝
الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ يَقُوْلُوْنَ
سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ
اَمْرُ رَبِّكَ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا

ظلمهم

और खराबी (यह सारी मुसीबत) काफ़िरों पर है ० कि (दुनिया में भी) जिस वक्त फ़रिश्तों ने इनकी रूहें क़ब्ज़ की थीं, यह लोग (शरीक ख़ुदा बनाकर) आप अपने ऊपर सितम कर रहे थे। तो (जिनसे दुनिया में लड़ा करते थे, उनसे) पैग़ाम सुलह डाल चलेंगे (और माज़रत के तौर पर कहेंगे) कि हम तो (अपने नज़दीक) किसी क़िस्म की बुराई नहीं किया करते थे। (इस पर ख़ुदा फ़र्मायगा कि) हाँ हाँ (तुमने बुराई की और) जो कुछ तुम करते थे, अल्लाह उससे ख़ूब वाक़िफ़ है ० सो जहन्नम के दर्वाज़ों से (दोज़ख़ में) जा दाख़िल हो (और) उसी में सदा (सदा को) रहो। ग़रज़ ग़रूर करने वालों का भी (क्या ही) बुरा ठिकाना है ० और जो लोग परहेज़गार हैं, उनसे (क़ुर्आन के बारे में) पूछा जाता है कि तुम्हारे पर्वर्दिगार ने क्या नाज़िल किया, तो जवाब देते हैं कि (अच्छे से) अच्छा। जिन लोगों ने भलाई की, उनके लिये इस दुनिया में भी भलाई है और (उनका) आख़िरी ठिकाना (तो इससे भी) कहीं बेहतर है। और परहेज़गारों का (आख़िरत का) घर (कैसा) उम्दा है ० (यानी उनके) हमेशा रहने के (लिये बहिश्त के) बाग़ हैं, जिनमें जा दाख़िल होंगे। उन (बाग़ों) के तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी और जिस चीज़ को उनका जी चाहेगा, वहां उनके लिये मौजूद। परहेज़गारों को अल्लाह ऐसा ही एवज़ देता है ० जिनकी जानें फ़रिश्ते ऐसी हालत में क़ब्ज़ करते हैं कि वह (शिर्क की गन्दिगी से) पाक (व साफ़) होते हैं (और जब) फ़रिश्ते (क़ब्ज़ रूह के लिये आते हैं, तो बड़े तपाक के साथ उनसे) सलामु अलैक करते हैं और कहते हैं कि जैसे (नेक) अमल तुम (दुनिया में) करते रहे हो, उनके सिले में जन्नत में जा दाख़िल हो ० (ऐ पैग़म्बर !) क्या (यह मुन्किर) इसी बात के मुन्तज़िर हैं कि (फ़रिश्ते इनकी रूहें क़ब्ज़ करने के लिये) इनके पास आ मौजूद हों या तुम्हारे पर्वर्दिगार का हुक्म (अज़ाब) आ नाज़िल हो। जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं, उन्होंने भी ऐसा ही किया--

---

और (कठिन) अज़ाब उन काफ़िरों पर है, जिनकी जीवात्मा फ़रिश्तों ने ऐसी दशा में निकाली है, जबकि वह अपनी जानों पर अत्याचार कर रहे थे (अर्थात काफ़िर व मुश्रिक थे) ॥

इस पर वह (अत्यन्त नम्रता, दीनता और आज्ञा पालन व) आधीनता प्रकट करेंगे। (और कुफ़ व शिर्क का बिलकुल इन्कार करेंगे और कहेंगे कि) हम तो (दुनिया में) कुछ भी बुराई न करते थे। (उस समय अल्लाह उत्तर देगा) क्यों नहीं, अल्लाह को तुम्हारी (समस्त) करतूतों की ख़बर है। (वह आज किसी प्रकार तुमको बिना दण्ड दिये छोड़ने वाला नहीं है। आज तुम्हारे इन्कार करने से कुछ नहीं बनता) ॥

फिर (उनसे कहा जायगा कि यहाँ से) नर्क के दरवाज़ों (की तरफ़ चलो। और नर्क) में प्रवेश करो। (और) सदैव (सदैव के लिये) उसी में रहो। (उसी समय वह नर्क में अत्यन्त अकीर्ति के साथ झोंक दिये जावेंगे)। और (हम तुमसे क्या कहें कि सत्य व न्याय का विरोध और) विद्रोह करने वालों का (कैसा) निकृष्ट ठिकाना है ॥

और (उन बेईमानों और नार्कियों के विरुद्ध) जो लोग संयमी (परहेज़गार) हैं, उनसे (क़ुर्आन के सम्बन्ध में जब) सवाल किया जाता है--(अर्थात यह पूछा जाता है कि मुहम्मद जिस पुस्तक को लाये हैं, वह कैसी है ?) तो वह (जवाब में) कहते हैं--(क्या कहने--बहुत) ख़ूब है ॥

(और वास्तविक बात तो यह है कि) जिस लोगों ने भलाई की, उनके लिये इस संसार में भी भलाई है। और परलोक (का) तो (कुछ कहना ही नहीं। वह तो संसार से कई दर्जे) अच्छा है। और (प्रलय के दिन) संयमियों का घर तो बहुत ही अच्छा है। (अर्थात) सर्वदा रहने वाले बाग़ हैं, उनमें यह (संयमी) प्रवेश करेंगे। उन (बाग़ों) के नीचे (साफ़ सुथरी) नहरें बहती होंगी। (और यह क्या)--उनमें उनके लिये जो कुछ (भी) वह चाहेंगे (मौजूद) होगा ॥

(निस्सन्देह) अल्लाह तआला संयमियों को (उनकी संयमता का) ऐसा ही (अच्छा) बदला प्रदान करता है (और यह संयमी अल्लाह के वह नेक और प्यारे बन्दे होते हैं कि) उनकी आत्मा फ़रिश्ते ऐसी दशा में निकालते हैं, जब कि वह (कुफ़ व शिर्क के पापों से बिलकुल) पवित्र होते हैं। (और फिर वह) फ़रिश्ते कहेंगे (ऐ ख़ुदा के नेक बन्दो !) तुम पर सलामती हो। (आओ, चलो) अपने (अच्छे) कर्मों के बदले स्वर्ग में विराजो ॥

(ऐ रसूल ! इस स्पष्ट रूप से समझाने के बाद भी यह काफ़िर ईमान नहीं लाये, तो अब शायद) यह केवल इसकी बाट देख रहे हैं, कि या तो इनके पास (हमारे) फ़रिश्ते (इनकी जान लेने को) आ जायँ, या तुम्हारे ख़ुदा की आज्ञा (अर्थात प्रलय) आ जाय (और इनको इस हठ धर्मी का अच्छी तरह मज़ा चखा दिया जाय। बिलकुल) इसी प्रकार वह लोग भी किया करते थे, जो इनसे पहिले हो चुके हैं। (तो उनका परिणाम यह हुआ कि इसी संसार में उन पर हमारा अज़ाब आया)। और--

ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ●
فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا
بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ● وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ
اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ
اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ
فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا
الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ● وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ
رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ
فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ
الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ● اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ
فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ●
وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ

ओर .खुदा ने उन पर (ज़रा भो) .ज़ुल्म नहीं किया (बलिक वह कुफ़्र के इख़्तियार करने से) अपने ऊपर आप .ज़ुल्म करते रहे ० अंजाम यह हुआ कि (जैसे बुरे अमल करते थे, वैसे ही) उनके अमलों के बुरे नतीजे उन को मिले और जिस (अज़ाब) की हंसी उड़ाया करते थे, वह उन पर नाज़िल होकर रहा ० और मुश्रिकीन कहते हैं कि अगर .खुदा चाहता, तो न तो हम ही उसके सिवा किसी और चीज़ की परस्तिश करते और न हमारे बड़े (ही करते) और न हम उसके (हुक्म के) बिदून (अपनी तरफ़ से) किसी चीज़ को हराम ठहराते। जो लोग इनसे पहिले हो गुज़रे हैं, उन्होंने भी ऐसा ही (हीला हवाला) किया, तो पैग़म्बरों पर सिवा इसके कि (अहकाम .खुदा को) साफ़ तौर पर पहुँचा दें और कुछ ज़िम्मेदारी नहीं ० और हम हर एक उम्मत में (कोई न कोई) पैग़म्बर (इस बात के समझाने के लिये) भेजते रहे हैं कि (लोगो !) .खुदा की इबादत करो और (शैतान) सर्कश (के इग़वा) से बचते रहो। तो उनमें से बाज़ को तो .खुदा ने हिदायत दी और उनमें से बाज़ (के सर) पर गुमराही सवार हुई, तो (लोगो !) रूए ज़मीन पर चलो फिरो और देखो कि (पैग़म्बरों के) झुठलाने वालों का कैसा (ख़राब) अंजाम हुआ ० (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुमको इन लोगों के राह रास्त पर आ जाने का हौका हो, तो (इस ख़याल को छोड़ दो, क्योंकि) .खुदा जिसको गुमराह करना चाहता है, उसको हिदायत नहीं दिया करता और कोई ऐसे लोगों की मदद को भी नहीं खड़ा होता (कि उनको अज़ाब से बचा ले) ० और यह मुन्किर .खुदा की बड़ी सख़्त क़स्में खाते हैं कि जो मर जाता है, उस को .खुदा (दुबारा) नहीं उठा खड़ा करेगा—

(उनको अज़ाब देने में) अल्लाह ने उन पर (कुछ भी) .ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि (कुफ़्र व शिर्क ग्रहण करके) उन्होंने अपनी जानों पर (स्वयं ही) .ज़ुल्म किया ॥

(और) फिर उनके कुकर्मों की उन्हें (पूरी पूरी) सज़ा मिली। और जिस (अज़ाब) का वह मज़ाक़ उड़ाया करते थे, उसने (आकर चारों तरफ़ से) उनको घेर लिया ॥

और (यह) मुश्रिक लोग कहते हैं कि यदि अल्लाह चाहता, (और हमारे इन मुश्रिकों जैसे सिद्धान्तों को ना पसन्द करता) तो न हम उसको छोड़ कर किसी और चीज़ को पूज सकते, और न हमारे बाप (दादा)। और न हम उस (की आज्ञा) के बिना किसी (हलाल) वस्तु को (अपने ऊपर) हराम कर लेते (और न हमारे बाप दादा। ऐ रसूल ! इनकी यह आदत बहुत पुरानी है)। इसी प्रकार वह लोग भी (कठ हुज्जती) किया करते थे, जो इनसे पहिले हो चुके हैं। तो (तुम उनकी बकवास की कुछ पर्वाह न करो, क्योंकि नबियों व) रसूलों का मुख्य कर्त्तव्य तो केवल स्पष्ट रूप से (.खुदा की आज्ञा को लोगों के कानों तक) पहुँचा देना है (और बस) ॥

और (जिस प्रकार ऐ रसूल ! तुम अपनी उम्मत के लोगों को मूर्ति पूजा से मना करते और तौहीद की शिक्षा देते हो, इसी प्रकार) हमने (तुमसे पहिले) हर जाति में (अपना) रसूल भेजा है (ताकि वह अपनी जाति के लोगों को समझाये और कहे) कि (ऐ लोगो ! एक) अल्लाह की पूजा करो और मूर्तियों (के पूजने) से बचो। अतएव उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हुए कि जिनको अल्लाह ने हिदायत (प्रदान) की और कुछ ऐसे भी हुए कि जिन पर पथ भ्रष्टता (और दण्ड नियत) हो गया (और उनका बहुत बुरा परिणाम हुआ)। अतएव (तुम इन लोगों से कहो कि लोगो ! ज़रा .खुदा की) पृथ्वी में चलो (फिरो)। और देखो कि (नबियों व रसूलों को) झूठा बतलाने वालों का कैसा (बुरा) परिणाम हुआ ॥

(ऐ रसूल !) यदि तुमको इन (लोगों) की हिदायत की इच्छा है, तो (उसको तुम अपने दिल से निकाल डालो)। क्योंकि (अल्लाह तआला इनको सर्वदा के लिये पथ भ्रष्ट कर चुका। और) अल्लाह (फिर) उनको शिक्षा पूर्ण उपदेश नहीं करता, जिनको वह (सर्वदा के लिये) पथभ्रष्ट कर चुका हो। और न उन (पथ भ्रष्टों को अल्लाह के अज़ाब से बचाने) के लिये (संसार में) कोई सहायक (पैदा हो सकता) है ॥

और यह (काफ़िर, जो इस बात पर) बड़े ज़ोर के साथ अल्लाह की शपथें खाते हैं कि जो (एक बार) मर जायगा, अल्लाह (फिर कभी उसको जीवित करके) न उठायेगा—

يَمُوتُ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُونَ ● لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَ
لِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ● إِنَّمَا
قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ●
وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوا
لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ
أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ● الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ● وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا
نُوحِي إِلَيْهِمْ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا
تَعْلَمُونَ ● بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ
لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ●
أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ
بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ

नصف ४

(ऐ पैग़म्बर ! इनसे कहो कि) ज़रूर (उठा खड़ा करेगा । यह उसका) वादा बरहक़ है । (और उसका ईफ़ा) उस पर (लाज़िम है) मगर अकसर लोग (इसका) यक़ीन नहीं करते ० (मुर्दों का जिला उठाना) इस लिये (ज़रूर है) कि जिन चीज़ों में यह लोग (दुनिया में) इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं, (क़यामत के दिन) ख़ुदा (असल हक़ीक़त को) उन पर ज़ाहिर करदे और ताकि काफ़िर जान लें कि वही बर सरे ग़लत थे ० जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं, तो बस हमारा कहना उसके बारे में इतना ही होता है कि हम उसको फ़र्मा देते हैं कि हो और वह हो जाती है (तो हमको मुर्दों का जिलाना क्या मुश्किल है) ० और जिन (मुसलमानों) पर (काफ़िरों की तरफ़ से) ज़ुल्म हुए और ज़ुल्म हुए पीछे उनको ख़ुदा के लिये अपने वतन छोड़ने पड़े, हम उनको ज़रूर २ दुनिया में अच्छे ठिकाने से बिठाएँगे और अज्र आख़िरत (जो उनको मिलने वाला है, वह इससे) कहीं बढ़ कर है ० ऐ काश ! यह लोग जो (राह ख़ुदा में) सब्र करते और अपने पर्वर्दिगार पर भरोसा रखते हैं (अज्र आख़िरत के तफ़सीली हालात) जानते (तो तंग दिल न होते) ० और (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुमसे पहिले (भी) यही (तुम्हारी ही तरह के) आदमी (पैग़म्बर बना कर) भेजे थे । (और भेजे थे, तो) दलीलों और किताबों के साथ कि उन की तरफ़ वही भेज दिया करते थे । तो (इन मुन्किरों से कहो कि) अगर (यह बात) तुमको ख़ुद मालूम नहीं, तो (पिछली आस्मानी किताबों के) पढ़ने पढ़ाने वालों से पूछ देखो ० और (उसी तरह) हमने तुम पर (भी) यह क़ुर्आन उतारा है, ताकि जो अहकाम लोगों (की हिदायत) के लिये उनकी तरफ़ भेजे गए हैं, तुम उनको अच्छी तरह समझादो और ताकि वह (भी इन बातों को) सोचें ० तो क्या जो लोग बुरी बुरी तदबीरें किया करते हैं, उनको इस बात का मुतलक़ ख़ौफ़ नहीं कि ख़ुदा उनको ज़मीन में धँसा मारे या जिधर से उनको ख़बर भी न हो, अज़ाब (ख़ुदा) उन पर आ नाज़िल हो ० –

(तो ऐ रसूल ! तुम इनसे कहो कि) क्यों नहीं (उठायेगा–उठायेगा और अवश्य उठायेगा । उस पर आवश्यक है कि वह अपने) वचनों को सच्चा कर दिखाये । लेकिन बहुधा लोग (इस बात को) जानते नहीं (कि अल्लाह प्रलय के दिन सब मनुष्यों को इस लिये ज़िन्दा करेगा) ताकि जो (लोग) इस (प्रलय के विषय) में विरुद्धता कर रहे हैं, वह उन पर (उनकी ग़लती पूरी तरह) प्रकट कर दे । और ताकि काफ़िर लोग (अच्छी तरह) जान लें कि वह झूठे थे ॥

किसी चीज़ के लिये जब हम उस (के पैदा करने) का इरादा करें, तो हमारा कहना तो बस इतना ही (होता) है कि हम उसे कहते हैं कि हो जा ! अतएव वह हो जाती है । (तो ऐसी दशा में प्रलय के दिन हमारे निकट मुर्दों को जीवित करना कौनसी कठिन बात है) ॥

(अतएव हम जीवित करेंगे और काफ़िरों को अज़ाब और ईमानदारों को पुण्य प्रदान करेंगे) । और वह लोग, जिन्होंने (काफ़िरों के) ज़ुल्म सहने के बाद अल्लाह के मार्ग में अपना देश त्याग दिया (और अपने घर बार और अपनी जन्म भूमि को छोड़ कर किसी दूसरी जगह चले गये) तो उन्हें हम (संसार में भी बहुत) अच्छा स्थान (रहने के लिये) प्रदान करेंगे । और परलोक का फल तो (उन का) बहुत ही बड़ा है--(उसका तो कहना ही क्या) । क्या अच्छा होता यदि यह (काफ़िर ईमानदारों के परलौकिक पुण्य से) परिचित होते (और ईमानदार उसे प्राप्त करने का उद्योग करते) ॥

(यह देश परित्याग करने वाले ऐसे नेक लोग थे) जिन्होंने (काफ़िरों के कष्ट पहुँचाने पर सदैव) धैर्य्य रक्खा (और अपनी वाणी से आह तक न की) । और (सदैव) अपने पालन कर्त्ता पर भरोसा किये रहे (कि वही सबकी दशा जानता है) ॥

और (ऐ रसूल ! यह लोग जो तुमको रसूल होने के योग्य नहीं समझते हैं, उन्हें इतनी भी ख़बर नहीं कि) हमने तुमसे पहिले (हर जाति में) ऐसे आदमियों ही को चमत्कार और किताबें देकर भेजा है कि जिनकी ओर हम वही भेजते थे । (अर्थात हर जाति में मनुष्य ही नबी या रसूल बन कर आया है) । अगर तुम (को इसका विश्वास नहीं होता और) तुम (स्वयं इस बात को) नहीं जानते, तो विद्वानों से पूछ देखो (कि पिछले नबी और रसूल आदमी ही थे या नहीं) । और हमने (तो अपने नियम के अनुसार तुमको रसूल बना कर भेजा है । और) तुम पर क़ुर्आन को उतारा है, ताकि (हमारी ओर से) जो (जो आज्ञायें) उन पर उतारी गई हैं, उन्हें लोगों से वर्णन कर दो । और ताकि वह (इसमें) ध्यान दें (और मूर्खता व अज्ञानता और पथ भ्रष्टता को छोड़ कर सीधा मार्ग ग्रहण करें) ॥

तो क्या वह लोग, जो (इतना समझाने पर भी सत्य को दबाने और असत्य को उभारने और रसूलुल्लाह और उनके साथियों को कष्ट पहुँचाने के लिये दिन रात) बुरे से बुरे उपाय (ग्रहण) करते (रहते) हैं, इस (बात) से निडर हैं कि (यदि) अल्लाह (चाहे, तो) उनको (उनके कुकर्मों के बदले) पृथ्वी में धँसा दे, या (ऐसी जगह से अपना) अज़ाब उन पर लाये, जहाँ से –

या उनके चलते फिरते .खुदा उनको आ पकड़े (और ऐसा करने पर आप) तो (किसी तदबीर से) वह (उसको) हरा (भी) नहीं सकते० या उनको (.खुदा की पकड़ का खटका हो और) खटका होते होते धर पकड़े। सो (लोगो !) इसमें शक नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार बड़ी ही शफ़क़त वाला मेहर्बान है ० क्या इन लोगों ने .खुदा की मख़्लूक़ात में से किसी चीज़ की तरफ़ नज़र नहीं की कि उसके साए (कभी) दाहिनी तरफ़ को और (कभी) बाईं तरफ़ को झुके (होते हैं। गोया) अल्लाह के आगे सर बसुजूद हैं और वह आजिज़ी का इज़हार कर रहे हैं ० और जितनी चीज़ें आस्मानों में और जितने जानदार ज़मीन में हैं (सब) अल्लाह ही के आगे सर बसुजूद हैं और (नीज़) फ़रिश्ते। और वह (हुक्म .खुदा से) सरताबी नहीं करते ० (और) अपने पर्वर्दिगार से जो (बालए अर्श बरीं) उनके ऊपर है, (हमा वक़्त) डरते रहते हैं। और (उसकी जनाब से) जो हुक्म उनको दिया जाता है, उसकी तामील करते हैं ० और (लोगो !) .खुदा ने हुक्म दिया है कि दो दो माबूद न ठहराओ। बस वही (.खुदा) एक माबूद है, तो सिर्फ़ हमारा ही ख़ौफ़ रक्खो ० और उसी का है. जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और उसी की फ़र्मांबर्दारी लाज़िम है। तो क्या तुम लोग .खुदा के सिवा (दूसरी दूसरी चीज़ों) से डरते हो० और जितनी नेअ़मतें तुमको हासिल हैं (सब) .खुदा ही की तरफ़ से हैं। फिर जब तुमको कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो उसी के आगे बिल-बिलाते हो ० फिर जब वह (उस) तकलीफ़ को तुम पर से दूर कर देता है, तो उसी दम तुम में से कुछ लोग अपने पर्वर्दिगार के साथ शरीक बना चलते हैं ० ताकि जो (नेअ़मतें) हमने उनको दी थीं, उनकी ना शुक्री करें—

لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ۝ اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا
ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ
دٰخِرُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ
يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ
وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ
وَّاحِدٌ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ۝ وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ
وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ
فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ۝ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ
اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ

(अज़ाब आने का) उनको पता भी न चले। या उनको उनके आने जाने में (अर्थात यात्रा में जाते समय या यात्रा से वापिस आते समय अपने अज़ाब में) पकड़ ले। (और ऐसा लाचार करदे कि) फिर वह (भाग कर या किसी और उपाय से अल्लाह तआला को अज़ाब देने से) विवश (और लाचार) न कर सकें॥

या वह उनको ऐसी दशा में (अपने अज़ाब में) पकड़ ले कि वह (पिछली मृत्यु को प्राप्त की गई जातियों के मारे जाने का विचार करके इस बात से) डर रहे हों (कि कहीं वैसा ही अज़ाब हम पर भी न उतार दिया जाय। लेकिन इसमें ज़रा सा भी) शक नहीं कि (ऐ लोगो !) तुम्हारा पालन कर्त्ता (तुम्हारे हाल पर अत्यन्त) कृपालु (और) दयालु है। (जो हर प्रकार की शक्ति रखते हुये भी तुमको अज़ाब देने में जल्दी नहीं करता)॥

(लेकिन असत्य मानने वाले फिर भी इस पर ईमान नहीं लाते। और अपने कुकर्मों से बाज़ नहीं आते, तो) क्या यह अल्लाह की पैदा की हुई उन (बेजान) चीज़ों को (भी नित्य प्रति) नहीं देखते (और उनको देख कर भी शिक्षा ग्रहण नहीं करते) —जिनके साये (कभी) दाईं ओर और (कभी) बाईं ओर इस तरह पड़ते हैं कि (मानो) वह (वस्तुएँ) अल्लाह को मस्तक झुका रही हैं। और वह (उसी के) आधीन हैं॥

और (इसी प्रकार वह प्राणी भी) जो आकाशों में (बसते) हैं, और (वह भी) जो पृथ्वी में हैं, अर्थात चलने फिरने वाले (मनुष्य और पशु) और फ़रिश्ते (सबके सब) अल्लाह ही को सजदा करते हैं। और वह (उसकी आज्ञा का) उलङ्घन नहीं करते॥

(और मुख्यतया फ़रिश्ते) अपने पालन कर्त्ता से जो उनके ऊपर (शासन-कर्त्ता और हर प्रकार का अधिकार रखता) है (हर समय) डरते (रहते) हैं। और जो कुछ (उसकी ओर से) उनको आज्ञा दी जाती है (उसका) पालन करते हैं॥

और अल्लाह तआला (अपने समस्त बन्दों से नबियों व रसूलों के द्वारा) फ़रमाता है कि (ऐ लोगो !) दो (या दो से अधिक) पूज्य न बनाओ। (आधीनता व पूजा के योग्य तो) बस वही एक ही पूज्य है (अर्थात मैं)। अतएव तुम (मेरी .खुदाई में किसी को भी सम्मिलित न करो और) मुझ ही से डरो॥

और आकाशों और पृथ्वी में जो कुछ है (वह) उसी की सम्पत्ति (उसी के अधिकार और शक्ति में) है। और उसी की पूजा करना (सबका) आवश्यक कर्म है। तो क्या (ऐ लोगो !) फिर भी तुम अल्लाह के अतिरिक्त (किसी और से) डरोगे (और डर कर उसकी पूजा करोगे ?)॥

(अल्लाह के अतिरिक्त किसी और से डरना और उसकी पूजा करना अत्यन्त अनुचित बात है। ऐ लोगो ! उसी ने तुमको पैदा किया है)। और जो कुछ (भी सुख व चैन और) नेअ़मत (व दौलत) तुमको (संसार में) मिली है, तो (वह सब) अल्लाह (ही) की ओर से (तुमको दी गई है। और) फिर जब (कोई) दुःख (और मुसीबत) तुमको पहुँचती है, तो (उस समय भी) तुम (को अल्लाह ही याद आता है। और तुम) उसी से (उसके दूर करने के लिये) फ़रियाद करते हो॥

(लेकिन) फिर जब वह तुम पर से (उस दुःख व) विपत्ति को दूर कर देता है, तो उसी समय तुम में से एक समूह अपने पालन कर्त्ता के साथ शिर्क करने लगता है। ताकि जो (स्वास्थ्य व सुख) हमने उनको प्रदान किया है, उसकी कृतघ्नता करें—

اٰتَيْنٰهُمْ فَتَمَتَّعُوْا فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ● وَيَجْعَلُوْنَ
لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ تَاللّٰهِ لَتُسْئَلُنَّ
عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ● وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ
سُبْحٰنَهٗ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ● وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ
بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ●
يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ اَيُمْسِكُهٗ
عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ اَلَا سَآءَ مَا
يَحْكُمُوْنَ ● لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ
السَّوْءِ ● وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا
مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى
فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا
يَسْتَقْدِمُوْنَ ● وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ

نصف

तो (और दुनिया के चन्द रोज़ा) फ़ायदे उठालो, फिर आख़िरकार (क़यामत में) तो तुमको मालूम हो ही जायगा ० और हमने जो इनको रोज़ी दी है, उसमें यह लोग उन (बुतों) का हिस्सा भी ठहराते हैं, जिन (की असल हक़ीक़त) को (भी) नहीं जानते। सो .ख़ुदा की (यानी हम को अपनी) क़सम कि जैसी २ बोहतान बन्दियां तुम लोग करते रहे हो (क़यामत के दिन) तुमसे ज़रूर उनकी बाज़ पुर्स होनी है ० और यह मुन्किर (फ़रिश्तों को) .ख़ुदा की बेटियां ठहराते हैं, सुब्हानल्लाह ! (.ख़ुदा के लिये बेटियां) और इनके लिये मन माने (बेटे) ० और जब इनमें से किसी को बेटी (के पैदा होने) की .ख़ुश ख़बरी दी जाय, तो (मारे रंज के) उसका मुंह काला पड़ जाय और (ज़हर के से घूंट) पीकर रह जाय ० लोगों से बेटी के आर के मारे जिसके (पैदा होने की) उसको .ख़ुश ख़बरी दी गई है, छुपा छुपा फिरे (और दिल में मंसूबे सोचे कि) आया (इस) ज़िल्लत पर बेटी को लिये रहे या उसको मिट्टी में गाड़ दे। देखो तो (.ख़ुदा के बारे में) इन लोगों की (क्या) बुरी राय है ० बुरी (बुरी) बातें तो उन ही लोगों के मुनासिब हाल हैं, जो (काफ़िर हैं और रोज़) आख़िरत का यक़ीन नहीं करते। और अल्लाह की शान के मुनासिब तो वह बातें हैं, जो (उम्दा से उम्दा और आला से) आला हैं। और वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है ० और अगर .ख़ुदा बन्दों को उनकी ना फ़र्मानियों की सज़ा में पकड़ता, तो रूए ज़मीन पर किसी मुतनफ़्फ़िस को बाक़ी न छोड़ता, मगर (वह) एक वक़्त मुक़र्रर (यानी मौत) तक इनको मोहलत देता है। फिर जब इनका (वह) वक़्त आ पहुँचता है, तो (उससे) न एक घड़ी पीछे रह सकते और न आगे बढ़ सकते हैं ० और (यह लोग) जिन चीज़ों को आप नहीं पसन्द करते, उनको .ख़ुदा के लिये (तजवीज़) करते हैं—

ख़ैर (ऐ अवज्ञाकार लोगो ! संसार में थोड़े समय के लिये और) मज़े उड़ा लो । फिर (मरने के बाद तो) तुमको (अपने कुकर्मों का हाल) मालूम हो (ही) जायगा ॥

और (यह वह दुष्ट लोग हैं कि) जो अन्न हमने उनको प्रदान किया है, उसमें से इन (पूज्यों) का हिस्सा देते (और उनको अल्लाह का शरीक बताते) हैं, कि जिन (के पूज्य होने) के विषय में (कोई प्रमाण और सुबूत भी) इनको मालूम नहीं । (ऐ झूठो !) अल्लाह की शपथ ! तुमसे तुम्हारे झूठे दोषारोपण के विषय में (प्रलय के दिन) निश्चित रूप से प्रश्न किया जायगा (कि बताओ ! तुम इन पूज्यों को अल्लाह का शरीक क्यों बताते थे) ॥ और यह (वह मूर्ख हैं कि जो) अल्लाह के लिये बेटियाँ बनाते हैं, क्या कहने । (क्या समझ है कि .ख़ुदा के लिये बेटियाँ) और अपने लिये लाडले (बेटे) ॥

और (अपने आप बेटियों से इस क़दर जलते हैं कि) जब इनमें से किसी को बेटी (के उत्पन्न होने) को सूचना दी जाय, तो दिन भर उसका मुंह (शोक के कारण) काला (और कुरूप पड़ा) रहे । और वह (अपने दिल ही) दिल में घुटे ॥

(और) इस ख़बर के कारण (अपनी) जाति से छिपा (छिपा) फिरे। (और दिल में विचार करे कि) क्या उस (लड़की) को बावजूद अकीर्ति (व अधोगति) के (जीवित) रहने दे, या उसे (ज़िन्दा) मिट्टी में दबा दे। (लोगो !) सुनो ! जो उपाय यह (काफ़िर) करते हैं, (वह) अत्यन्त (ही) बुरे हैं ॥

(अप्रतिष्ठा की और जितनी) बुरी बातें (हैं) उन ही लोगों के लिये हैं, जो प्रलय पर ईमान नहीं लाते। और (आदर व सम्मान की, और जितनी उत्तम) उत्तम बातें (हैं, वह) केवल अल्लाह के लिये हैं। और वह (बहुत) शक्ति शाली (और) युक्तिवान है ॥

और यदि अल्लाह लोगों से उनके (.ज़ुल्म व) अत्याचार के कारण उत्तर मांगे, तो (समस्त) पृथ्वी पर एक चलने वाले को भी (इन ज़ालिमों में से शेष) न छोड़े। (सबको पृथ्वी पर से नष्ट करदे) ; लेकिन (इतनी जल्दी लोगों को अज़ाब में लिप्त करना उसकी मस्लहत के विरुद्ध है। इस लिये) वह उन्हें एक निर्दिष्ट समय तक ढील दे रहा है। अतएव जब इनका (नियत) समय आ पहुँचेगा, तो (फिर पापी) लोग (दण्ड पाने से) न घड़ी भर पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे ॥

और (फिर अच्छी तरह मालूम हो जायगा कि उन लोगों का क्या परिणाम हुआ, जो) अल्लाह के लिये उन चीज़ों (अर्थात बेटियों) को (सन्तान) ठहराते हैं, जिन्हें अपने आप पसन्द नहीं करते—

और अपनी ज़बान से झूठ झूठ दावे भी करते जाते हैं कि (आख़िरत में भी) उनके लिये भलाई है । (भलाई तो नहीं) अलबत्ता उनके लिये दोज़ख़ है । बलिक यह (दोज़ख़ियों के) पेशरौ हैं ० (ऐ पैग़म्बर !) ख़ुदा की (यानी हमको अपनी) क़सम है. तुमसे पहिले (भी) हमने उम्मतों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे, तो शैतान ने (उन लोगों की राह मारी और) उन के आमाल (बद) उनको उम्दा कर दिखाए । सो वही (शैतान) इस ज़माने में इन (कुफ़्फ़ार) का (भी) रफ़ीक़ (बना हुआ) है । और (आख़िरकार) इनको अज़ाब दर्दनाक (होना) है ० और (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुम पर (यह) किताब इसी ग़रज़ से उतारी है, कि जिन बातों में (यह लोग आपस में) इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, वह इनको अच्छी तरह समझादो । अलावा बरीं (यह क़ुर्आन) ईमान वालों के लिये (मूजिब) हिदायत व रहमत है ० और अल्लाह ही ने आस्मान से पानी बरसाया, फिर उस (पानी) के ज़रिये से ज़मीन को उसके मरे (यानी पड़ती पड़े) पीछे (अज़ सरे नौ) ज़िन्दा कर दिया । कुछ शक नहीं कि जो लोग (बात को) सुनते (समझते) हैं, उनके लिये इन वाक़िआत में (क़ुद्रत ख़ुदा की एक बड़ी) निशानी है ० और (लोगो !) तुम्हारे लिये चारपायों में भी सोचने की जगह है कि उनके पेट में जो (अला बला भरी) है, उससे (यानी) गोबर और ख़ून में से हम तुमको ख़ालिस दूध पिलाते हैं, जिसको पीने वाले आसानी से (ग़ट ग़ट) पी जाते हैं ० और (इसी तरह) खजूर और अंगूर के फलों से (हम तुमको उनका शोरा पिलाते हैं) कि तुम उनकी शराब बनाते हो । और (यूं भी उनको) उम्दा रोज़ी (समझ कर दूसरी तरह पर काम में लाते हो) । जो लोग अक़्ल रखते हैं, उनके लिये इन चीज़ों में (भी क़ुद्रत ख़ुदा की एक बड़ी) निशानी है० और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे पर्वर्दिगार ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाली—

وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۭ لَا
جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ۝ تَاللّٰهِ لَقَدْ
اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ
اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝
وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ
مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا
سَاۗىِٕغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝ وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ
تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ۭ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَاَوْحٰى رَبُّكَ

और (जो) अपनी वाणी को (इस प्रकार के) झूठ से अपवित्र करते हैं (और कहते हैं) कि हमरे लिये (अल्लाह के यहाँ) कल्याण (अर्थात् सदैव का सुख व स्वर्ग) है । कुछ डर (की बात) नहीं, (इनका जो दिल चाहे, बके जायँ) । इनके लिये नर्क (तैयार) है और (प्रलय के दिन) यह (उसमें) झोंके जायंगे ॥

(ऐ रसूल ! तुम इनका कुछ शोक न करना । इनसे तो हम स्वयं समझ लेंगे) । हमें अपनी शपथ है–हमने उन जातियों की ओर, जो तुमसे पहिले हो चुकी हैं (तुम्हारी तरह) रसूल भेजे थे, तो (उन्होंने भी उनके साथ यही अनुचित बर्ताव किया था । और) शैतान ने उनके कुकर्मों को (भी) उनके लिये सुसज्जित कर दिया था । सो वह (शैतान) आज के दिन (अर्थात संसार में तो) उनका (बड़ा) मित्र है और (उन्हें बड़े २ मशवरे देता है। लेकिन प्रलय में वह इनके कुछ काम न आ सकेगा । प्रलय में तो)उनके लिये (एक) दुखदाई अज़ाब है॥

और (ऐ रसूल !) हमने क़ुर्आन तुम पर केवल इस लिये उतारा है, ताकि तुम इन (लोगों) को (धर्म के) वह आदेश बतादो, जिनमें यह झगड़ रहे हैं । (अर्थात् उन्हें पूजा व उपासना और हलाल व हराम वस्तुओं की ठीक २ आज्ञा समझा दो) । और (इसे इस तात्पर्य से उतारा है कि) ईमानदारों के लिये शिक्षा (का कारण) और रहमत (उतरने का साधन) हो ॥

और अल्लाह (के निकट प्रलय करना और प्रलय के दिन पुरस्कार व दण्ड देना कुछ कठिन नहीं है, क्योंकि वह ऐसा शक्ति और युक्ति वाला है कि उस) ने आकाश से पानी उतारा (अर्थात मेंह बरसाया) । फिर उस (मेंह) से उसने पृथ्वी के मुर्दा (और बंजर) हो जाने के बाद ज़मीन को जीवित कर (के दिखा) दिया । निस्सन्देह उसमें (ध्यान और चित्त से) सुनने वाले लोगों के लिये (बड़ी शिक्षा व) उपदेश (मौजूद) है ॥

और (तुम लोगों को इब्रत प्राप्त करनी हो, तो ख़ुदा की सृष्टि के प्रत्येक कण से शिक्षा प्राप्त कर सकते हो । अतएव) तुम्हारे लिये (हमारे पैदा किये हुए) पशुओं (तक) में शिक्षा (मौजूद) है । (देखो !) उनके पेट में जो गोबर और ख़ून (भरा हुआ) है, उसमें से हम ऐसा स्वच्छ दूध (बनाकर) तुमको पिलाते हैं, जो पीने वालों के गले में से (अत्यन्त) सरलता पूर्वक उतर जाता है । (और जो स्वाद में अत्यन्त श्रेष्ठ होता है) ॥

और (इसी तरह हम) खजूर के फलों और अंगूरों से (भी उत्तम २ चीज़ें तुमको खाने पीने को देते हैं । अर्थात) तुम उन (के रस) से (अपने) नशे (की चीज़) और उत्तम भोजन तैयार करते हो । निस्सन्देह बुद्धिमान लोगों के लिये उसमें भी शिक्षा (मौजूद) है ॥

और (ऐ रसूल !) तुम्हारे पालन कर्ता ने शहद की मक्खी के दिल में डाल दिया कि–

إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ
وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ۝ ثُمَّ كُلِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ
فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا
شَرَابٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ إِنَّ
فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ
ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ
لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝
وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ فَمَا ع
الَّذِينَ فُضِّلُوا بِرَادِّي رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝
وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلَ
لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُمْ مِنَ
الطَّيِّبَاتِ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ

कि पहाड़ों में और दरख़्तों में और लोग जो ऊंची ऊंची टट्टियां बना लेते हैं, उनमें छत्ते बना ० फिर हर तरह के फलों में से (उनका अर्क़) चूस्ती फिर। फिर (मज़े से) अपने पर्वर्दिगार के (तालीम किये हुए) आसान तरीक़ों पर चली जा। मक्खियों के पेट से पीने की एक चीज़ निकलती है (यानी शहद) जिसकी रङ्गतें कई तरह की होती हैं (और) उसमें लोगों (की बहुत सी बीमारियों) की शिफ़ा है। बेशक ग़ौर करने वालों के लिये इसमें (भी क़ुद्रत ख़ुदा की एक बड़ी) निशानी है ० और (लोगो !) ख़ुदा ही ने तुमको पैदा किया, फिर वही तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है। और तुम में से बाज़ ऐसे भी हैं, जो उम्र (की) बद तरीन (हालत) की तरफ़ लौटाए जाते हैं, ताकि (बहुतेरा कुछ) जाने (बूझे) पीछे (ऐसे सत्तरे बहत्तरे हो जायँ) कुछ न जान सकें। बेशक अल्लाह (ही सब कुछ) जानने वाला क़ुद्रत वाला है ० और ख़ुदा ही ने तुम में से बाज़ को बाज़ पर रोज़ी में बर्तरी (यानी ज़्यादा रोज़ी) दी है। तो जिनको ज़्यादा (रोज़ी) दी गई है (वह) अपनी रोज़ी लौटा कर अपने ज़ेर दस्तों (यानी नौकरों, ग़ुलामों) को नहीं दे दिया करते कि रोज़ी में इन (सब) का हिस्सा बराबर हो, तो क्या यह लोग ख़ुदा की नेमअतों के मुन्किर हैं ० और तुम ही में से ख़ुदा ने तुम्हारे लिये (तुम्हारी) बीबियों को पैदा किया और (इसी तरह) तुम्हारी बीबियों से तुम्हारे लिये (तुम्हारे) बेटों और पोतों को पैदा किया और तुमको अच्छी (अच्छी) चीज़ें खाने को दीं। तो क्या (यह लोग बिल्कुल) झूठे (माबूदों के मुनइम होने) का यक़ीन करते हैं और अल्लाह की नेअ्मतों की—

तू पहाड़ों और वृक्षों और छतों में (अपने रहने सहने के लिये) घर बनाले। (और) फिर (उसको बताया कि) तू (हमारे पैदा किये हुए) समस्त मेवों में से (अच्छी तरह) खा (पी)। और अपने पालन कर्ता के मार्ग में (अत्यन्त) नम्रता के साथ चल। (अर्थात ख़ुदा के प्रति नम्रता से अपना मस्तक झुकाये रख)। उस (शहद की मक्खी) के पेट में से (भी) तरह तरह की रंगतों की एक पीने की वस्तु (अर्थात शहद) निकलती है, जिसमें लोगों के लिये आरोग्यता है। (यह भी एक ऐसी अमूल्य वस्तु है कि) उसमें (भी) सोचने (समझने) वालों के लिये (हमारी शक्ति की) निशानी (मौजूद) है॥

और (यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि) अल्लाह तआ़ला ने तुमको पैदा किया। फिर (एक विशेष समय तक जीवित रखने के उपरान्त वही) तुमको मार डालेगा। और (उसी ने) तुम में से कुछ लोग (ऐसे बनाये) हैं, जो अत्यन्त नीचता पूर्ण आयु तक पहुँचाये जाते हैं (अर्थात बिलकुल बुड्ढे फूंस हो जाते हैं)। जिस से कि (सब कुछ) जानने के बाद कुछ भी न जानें। (अर्थात विचार शक्ति नष्ट हो जाने के कारण सब जाना बूझा भूल जावें)। निस्सन्देह अल्लाह (हर बात का) जानने वाला (और हर बात पर पूरा २) अधिकार रखने वाला है॥

और (ऐ लोगो ! पिछली बातों की तरह यह बात भी बहुत अधिक ध्यान देने योग्य है कि) अल्लाह तआ़ला ने तुम में से कुछ (मनुष्यों) को कुछ (मनुष्यों) पर (धन व सम्पत्ति और रोटी) अन्न में बड़ाई (और श्रेष्ठता) प्रदान की है। (और कुछ मनुष्यों को दूसरों का स्वामी बनाया है)। तो वह लोग, जिन्हें (औरों पर श्रेष्ठता और) बढ़ाई प्रदान की गई है, अपना अन्न (व धन तथा सम्पत्ति) अपने दास दासियों को (इस प्रकार) नहीं देते कि वह (अर्थात मालिक व नौकर धन व सम्पत्ति में एक दूसरे के बिल्कुल) बराबर हो जावें। तो क्या (अल्लाह तआ़ला इन घर के बनाये हुए पूज्यों को, जो उसके मुक़ाबले में एक तुच्छ सेवक से भी निकृष्ट हैं, अपनी क़ुद्रत में बिल्कुल बराबर का शरीक कर लेगा? सच बात यह है कि) यह अल्लाह की (प्रत्येक) नेअ्मत का (जो उसने उनको दे रक्खी है) इन्कार करते हैं। (और उसके साथ औरों को शरीक करके उसके सच्चे दाता होने का इक़रार नहीं करते)॥

और (ऐ काफ़िरो ! तुम इतना नहीं समझते कि) अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी ही जाति से तुम्हारे लिये जोड़े बनाये (अर्थात पत्नियां)। और तुम्हारी पत्नियों (के पेट) से तुम्हारे लिये बेटे और पोते पैदा किये। और उसने तुमको पवित्र वस्तुओं से जीविका प्रदान की। तो (ऐ रसूल !) क्या यह (काफ़िर अब भी अपने) असत्य (पूज्यों) ही पर ईमान रक्खेंगे। और यह अल्लाह की (दी हुई हर) नेअ्मत की—

ـمْ يَكْفُرُونَ ● وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللّٰهِ مَا لَا
يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
شَيْئًا وَّلَا يَسْتَطِيعُونَ ● فَلَا تَضْرِبُوا لِلّٰهِ الْأَمْثَالَ
إِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ● ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا
عَبْدًا مَّمْلُوكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَن
رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنفِقُ مِنْهُ
سِرًّا وَّجَهْرًا هَلْ يَسْتَوُونَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ● وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ
أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ
كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ أَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ
هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَن يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ
عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ● وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ

ع

ना शुक्री करते हैं (हालाँकि वाक़े में मुनइम वही है) ० और ख़ुदा के सिवा उन (माबूदों) की परस्तिश करते हैं, जो आस्मान व ज़मीन में इनको रिज़्क़ देने का कुछ भी इख़्तियार नहीं रखते और न (ऐसे इख़्तियार पर) दस्तरस पा सकते हैं ० (तो दुनिया के बादशाहों के क़यास पर) ख़ुदा के लिये मिसालें तसनीफ़ न करो। (ठीक मिसाल का देना) अल्लाह को मालूम है. और तुमको मालूम नहीं ० एक मिसाल ख़ुदा बयान फ़र्माता है कि एक ग़ुलाम है, दूसरे की मिल्क—जो किसी बात का इख़्तियार नहीं रखता। और एक (दूसरा) शख़्स है (ख़ुद मुख़्तार)—जिसको हमने अपनी सर्कार से अच्छी (माक़ूल) रोज़ी दे रक्खी है, तो वह उसमें से छुप छुपाते और खुले (ख़ज़ाने जिस तरह चाहता है) ख़र्च करता है। क्या (ऐसे दो शख़्स) बराबर हो सकते हैं ? (यह मिसाल सुन कर मुश्रिकीन ज़रूर बोल उठेंगे कि नहीं बराबर हो सकते। तो ऐ पैग़म्बर ! तुम इनसे कहो कि) अल्हम्द लिल्लाह (कि तुमको इतनी तो समझ है)। मगर (इन लोगों का हाल यह है कि) इनमें बहुतेरे (इतना भी) नहीं समझते ० और ख़ुदा (एक दूसरी) मिसाल देता है (कि) दो आदमी (हैं) उन में का एक गूंगा (और गूंगा होने के अलावा पराया ग़ुलाम कि ख़ुद) कुछ नहीं कर सकता। और (गूंगे होने की वजह से) वह अपने आक़ा का बार ख़ातिर भी है कि जहां कहीं उसको भेजे, उससे कुछ भी ठीक नहीं बन आता। क्या ऐसा ग़ुलाम और वह शख़्स (दोनों) बराबर हो सकते हैं, जो (लोगों को) हद्द एतिदाल पर क़ायम रहने को कहता और ख़ुद भी (एतिदाल यानी इन्साफ़ के) सीधे रस्ते पर (क़ायम) है ० और आस्मानों और ज़मीन की मख़्फ़ी बातें अल्लाह ही को (मालूम) हैं। और क़यामत का वाक़े होना तो बस ऐसा है, जैसे आँख का झपकना –

कृतघ्नता ही किये जायंगे (और उसको सच्चा पूज्य न मानेंगे) ॥

(वास्तविक बात यह है कि यह लोग बड़े ही मूर्ख हैं। शक्तिमान अल्लाह को छोड़ते हैं) और अल्लाह को छोड़ कर उन (पूज्यों) की पूजा करते हैं, जिन्हें आकाश पृथ्वी के अन्न में से किसी पदार्थ के देने की क़ुद्रत हासिल नहीं। और न (अन्न देने के अतिरिक्त किसी और बात की) वह शक्ति रखते हैं। अतएव (ऐ मुश्रिको ! अपनी समझ को ठीक करो और) अल्लाह के लिये (झूठे सच्चे) उदाहरण न घड़ो। निस्सन्देह अल्लाह तआला (तुम्हारे कुकर्मों से भली भांति) परिचित है। और तुम (अपनी मूर्खता से) जानकर नहीं हो। (इस लिये जो कुछ मुंह में आता है, विना सोचे समझे कह देते हो)॥

(देखो !) अल्लाह तआला (तुमको समझाने के लिये) एक पराधीन ग़ुलाम का उदाहरण वर्णन करता है, जो किसी वस्तु पर (भी) अधिकार नहीं रखता। और उस आदमी का, जिसे हमने अपने पास से उत्तम अनाज प्रदान किया (और) इसके बाद वह इस (हमारी प्रदान की हुई जीविका) में से छिपा कर और खुल्लम खुल्ला (हमारे मार्ग में) ख़र्च करता है। (तो बताओ तो) क्या वह (दोनों मनुष्य सम्मान तथा बड़प्पन में) बराबर हैं ? (कदापि नहीं। तो अब ध्यान तो करो कि यह दोनों मनुष्य होते हुए एक दूसरे के बराबर नहीं हो सके, तो यह पत्थर की बेजान मूर्तियाँ युक्तिवान और शक्तिवान ख़ुदा की किस प्रकार शरीक बन सक्ती हैं ? निस्सन्देह) समस्त बड़ाइयां (और गुण तो पृथ्वी व आकाश के उत्पन्न करने वाले) अल्लाह के लिये (ही उचित) हैं। लेकिन इन (मुश्रिकों) में से बहुधा (लोग ऐसे हैं, जो इस बात को किसी तरह) नहीं समझते ॥

और (ऐ मुश्रिको !) अल्लाह तआला (तुम्हारे ही समझाने के लिये) दो ऐसे मनुष्यों का उदाहरण (और) वर्णन करता है, कि जिनमें से एक (मनुष्य किसी का दास है और) गूंगा। (और गूंगा भी इतना अधिक) कि (ज़बान से) कुछ (बात) कहने की शक्ति (ही) नहीं रखता। और अपने स्वामी पर (अपनी बेबसी और लाभ रहित होने के कारण) भार है। वह (अर्थात उसका स्वामी) जहां कहीं उसको भेजता है (वहाँ से) कुशल पूर्वक (वापिस) नहीं आता (और दूसरा विद्वान न्यायी है और नेक है, तो) क्या वह (गूंगा और वह आदमी जो न्याय पूर्वक (दूसरों के लिये) आज्ञा (नियत) करता है, और स्वयं (भी) सच्चे व सीधे मार्ग पर (चलता) है (सम्मान व बड़प्पन में) बराबर हैं ?(कदापि नहीं। तो फिर ख़ुदा सर्व शक्तिमान के यह बे ज़बान और विवश मूर्तियां किस प्रकार बराबर हो सकती हैं !)॥

और (ऐ मुश्रिको ! याद रक्खो कि अल्लाह बड़ी क़ुद्रत वाला और बड़े ज्ञान वाला है)। आकाशों और पृथ्वी की (समस्त) गुप्त बातें उसी के लिये हैं। (अर्थात उसके सामने सब प्रगट हैं)। और (उसकी शक्ति का क्या ठिकाना)-प्रलय का मामिला (उसके सामने ऐसा है) जैसा कि आंख का झपकना –

أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ●
وَاللَّهُ أَخْرَجَكُم مِّن بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ
شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ● أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ
فِي جَوِّ السَّمَاءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ● وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّن
بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُم مِّن جُلُودِ الْأَنْعَامِ
بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ
وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا
وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ● وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّمَّا خَلَقَ ظِلَالًا
وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ
سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُم بَأْسَكُمْ
كَذَٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ●

قف

बल्कि वह (उससे भी) जल्द तर है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० और (लोगो !) अल्लाह ही ने तुमको तुम्हारी माओं के पेट से निकाला (और उस वक़्त) तुम कुछ भी नहीं जानते थे। और तुमको कान दिये और आँखें (दीं) और दिल (दिये) ताकि तुम (उसका) शुक्र करो ० क्या लोगों ने परिन्दों (के हाल) पर नज़र नहीं की, जो आसमान के मैदान में घिरे होते हैं (कि उससे बाहर नहीं जा सकते)। उनको (उड़ते वक़्त) बस ख़ुदा ही संभालता है। जो लोग ईमान रखते हैं, उनके लिये इसमें (ख़ुदा की क़ुद्रत की बहुतेरी) निशानियां (मौजूद) हैं ० और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये तुम्हारे घरों को ठिकाना बनाया। और चौपायों की खालों से तुम्हारे लिये (एक ख़ास क़िस्म के) घर (यानी ख़ेमे वग़ैरा) बनाए कि तुम अपने कूच के वक़्त और अपने ठहरने के वक़्त उनको हलका (फुलका) पाते हो। और चारपायों की ऊन और उनके रुओं और उनके बालों से (तुम्हारे) बहुत से सामान और बकार आमद चीज़ें बनाईं (कि तुम) एक वक़्त ख़ास तक (इनसे फ़ायदा उठाओ) ० और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये अपनी पैदा की हुई चीज़ों के साये बनाये और पहाड़ों से (अज़ क़िस्म ग़ार वग़ैरा) तुम्हारे लिये छुप बैठने की जगहें बनाईं और तुम्हारे लिये (कपड़े के) कुरते बनाए, जो तुमको गरमी (सरदी) से बचाएं और (कुछ लोहे के) कुरते (बनाए, यानी ज़िरहें) जो तुमको तुम्हारी (एक दूसरे की) ज़द से बचाएँ। यूं (ख़ुदा) अपनी नेअ्मतें तुम लोगों पर पूरी करता है, ताकि तुम (उसके आगे) झुको ०—

बल्कि वह (अर्थात प्रलय पलक मारने से भी) अधिक जल्दी (आ सकती है। और उससे भी अधिक सुविधा के साथ स्थिर) हो सकती है। निस्सन्देह अल्लाह तआ़ला हर वस्तु पर (पूरा पूरा) अधिकारी है॥

और अल्लाह तआ़ला ने तुमको तुम्हारी माताओं के पेट से (बाहर) निकाला (उस समय) तुमको कुछ समझ न थी। (उसने तुमको समझ प्रदान की) और तुम्हारे (सुनने, देखने, सोचने, समझने के) वास्ते कान और आँखें और दिल बनाये, जिससे कि तुम (अपने मालिक व स्वामी को पहिचानो। और उसकी नेअ्मतों का) शुक्र अदा करो॥

क्या यह (मुश्रिक और कृतघ्न लोग) उन पक्षियों की ओर नहीं देखते, जो आकाश के मध्य में (ख़ुदा की क़ुद्रत के) आधीन बने हुए हैं। (अर्थात) उनको (उनके उड़ते समय उस प्रशंसनीय शक्ति वाले) अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं रोकता। (क्या इन मुश्रिकों को यह नहीं दीखता ?) निस्सन्देह ईमानदार लोगों के लिये इसमें (ख़ुदा की क़ुद्रत की बड़ी २) निशानियां (वर्तमान) हैं॥

और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये (भी) मकानों को (तुम्हारे रहने का) ठिकाना बनाया। और पशुओं की खालों से भी तुम्हारे (सुख के) लिये घर बनाये। (अर्थात ऐसे २ पशु पैदा करके तुम्हारी आधीनता में दे दिये कि जिनकी खालों के तुम डेरे बनाते हो) कि जिनको तुम अपनी यात्रा के दिन और अपने विश्राम के समय (बिल्कुल) हल्का समझते हो। (अर्थात तुम यात्रा में उनके लाने, ले जाने, उखाड़ने और गाड़ने में सरलता समझते हो)। और (हमने) उन (पशुओं) की ऊन और उनके रुओं तथा उनके बालों से (तुम्हारे लिये और बहुत से) सामान और काम की चीज़ें बनाईं, जिससे कि तुम उनसे एक (विशेष) समय तक (अर्थात उम्र भर आराम पाओ)॥

और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे (आराम के) लिये अपनी पैदा की हुई चीज़ों के (अर्थात वृक्षों के) साये बनाये। और तुम्हारे लिये पर्वतों में गुप्त रहने की जगहें बनाईं। और तुम्हारे लिये कुरते बनाये, जो (सर्दी) गर्मी (की अधिकता) से तुमको बचाते हैं। और (ऐसे २) कुरते भी बनाये, जो तुम्हारी लड़ाई में (हथियारों के लगने से) तुमको बचाते हैं (अर्थात ज़िरह बख़्तर वग़ैरा)। इसी तरह वह अपनी नेअ्मतों को पूरा करता है, जिससे कि तुम (उसका) हुक्म मानो (और उसकी नेअ्मतों के लिये अनुग्रहीत हो)॥

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِينُ ● يَعْرِفُونَ
نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُونَ ●
وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ● وَإِذَا
رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا
هُمْ يُنْظَرُونَ ● وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَآءَ
هُمْ قَالُوا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا
مِنْ دُونِكَ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكٰذِبُونَ ●
وَأَلْقَوْا إِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ● الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا
كَانُوا يُفْسِدُونَ ● وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ
شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا

फिर अगर (लोग इतने समझाने पर भी) मुंह मोड़ें, तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे ज़िम्मे खुले तौर पर (ख़ुदा के हुक्म का) पहुँचा देना है और बस० (यह लोग) ख़ुदा की नेअ़मतों को पहिचानते, फिर (दीदा व दानिस्ता) उनसे मुकरते हैं। और उनमें से अक्सर ना शुक्र हैं ० और (लोगो ! उस रोज़ क़यामत को याद करो) जब हम हर एक उम्मत में से (उस उम्मत के पैग़म्बर को) गवाह (बनाकर) उठा खड़ा करेंगे, फिर काफ़िरों को (बोलने बात करने की) इजाज़त नहीं दी जायगी और न उनसे उज़्र (व माज़िरत) के लिये कहा जायगा ० और जिन लोगों ने (ख़ुदा की जनाब में) गुस्ताख़ियां की हैं, जब (क़यामत के दिन) अज़ाब को देख लेंगे, तो (कुछ भी करें) न तो उनसे (अज़ाब ही) हलका किया जाएगा और न उनको मोहलत ही दी जाएगी ० और जो लोग (दुनिया में ख़ुदा के) शरीक बनाते रहे, जब वह (क़यामत के दिन) अपने (उन) शरीकों को देखेंगे, तो (उनको देखते ही) बोल उठेंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! यही हैं, वह हमारे शरीक, जिनको हम तेरे सिवा (दुनिया में अपनी हाजत रवाई के वास्ते) पुकारा करते थे। तो वह शरीक (उनकी) बात (उलटी) उन ही की तरफ़ फेंक मारेंगे कि तुम सरतासर झूठे हो ० और वह लोग उस दिन ख़ुदा के आगे सरे तस्लीम ख़म कर देंगे और (दुनिया में) जो बोहतान बन्दियां किया करते थे, (वह सब) उनसे गई गुज़री हो जाएँगी ० जो लोग कुफ़्र करते और (लोगों को) राह ख़ुदा से रोकते रहे, उनकी मुफ़्सिदा पर्दाज़ियों की पादाश में हम उनके हक़ में अज़ाब पर अज़ाब बढ़ाते जायँगे ० और (लोगो ! उस दिन को याद करो कि) जब हम हर एक उम्मत में उन ही में का एक गवाह (यानी पैग़म्बर) उनके मुक़ाबिले में खड़ा करेंगे। और (ऐ पैग़म्बर !) तुमको (तुम्हारे ज़माने के) इन (काफ़िरों) के मुक़ाबले में गवाह बनाकर लायंगे—

फिर (यदि इतना समझाने के बाद भी) यह (लोग अल्लाह की आज्ञा से) मुंह मोड़ें, तो (इसका दण्ड यह लोग स्वयं भुगतेंगे। ऐ रसूल ! तुम इसके ज़िम्मेदार नहीं हो)। तुम्हारे ज़िम्मे तो बस (ख़ुदा की आज्ञा को) स्पष्ट (रूप से इनके कानों तक) पहुँचा देना है (और बस) ॥

यह (तो वह लोग हैं, जो) अल्लाह की नेअ़मतों को (अच्छी तरह) पहिचानते हैं। (और) फिर (जानते पहिचानते हुये भी) उन (के अल्लाह द्वारा प्रदान होने) का इन्कार करते हैं। (और समझते हैं कि यह नेअ़मतें हमें इन मूर्तियों ने दी हैं)। और कृतघ्न इनमें बहुत हैं ॥

(ऐ कृतघ्नो ! ज़रा अपने होश हवास ठीक करो) और (उस प्रलय के दिन को याद करो) जिस दिन कि हम हर जाति में से (उस के रसूल को उसकी अवज्ञा व कुफ़्र व शिर्क का) साक्षी (बनाकर) खड़ा करेंगे। (और) फिर (उस समय) काफ़िरों को (ज़बान हिलाने तक की) आज्ञा न दी जायगी और न उनसे तौबा कराई जायगी ॥

और जब यह ज़ालिम (अर्थात उद्दंडता में सीमा से अधिक बढ़ जाने वाले काफ़िर) अज़ाब को देख लेंगे (अर्थात उसमें एक बार झोंक दिये जायंगे) तो फिर न तो उन पर से अज़ाब को कम किया जायगा और न उनको (अज़ाब से बचने के लिये कुछ दिन की) मोहलत दी जायगी (बल्कि सर्वदा इसी अज़ाब में पड़े हुए तड़पा करेंगे) ॥

और जब (यह) मुश्रिक लोग अपने (घर के बनाये हुए) पूज्यों को (वहाँ) देखेंगे, तो (एक दम) बोल उठेंगे कि ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! यही वह समस्त हमारे शरीक हैं, जिन्हें हम (तेरी ख़ुदाई में शरीक जानते थे और) तुझे छोड़ कर पूजते थे। (जब इनके शरीक इनकी यह वार्तालाप सुनेंगे) तो वह (शरीक) इनकी ओर सम्बोधन करेंगे (और कहेंगे) कि तुम बिलकुल झूठे हो (तुम हमारी पूजा नहीं करते थे) ॥

और यह (काफ़िर व मुश्रिक) उस रोज़ अल्लाह के सामने (अत्यन्त नम्रता व विनय और आज्ञा पालक होने तथा) आधीन होने का भाव प्रगट करेंगे। और जो (असत्य) दोष (यह संसार में अल्लाह पर) उठाते थे (उस दिन) वह (सब) इन (के दिलों) से दूर हो जायगा। (और अज़ाब के भय से इनकी अत्यन्त बुरी दशा होगी) ॥

(और इनमें से) जो लोग (अपने आप भी) काफ़िर हुए और उन्होंने (अपने साथ दूसरों को भी सच्चाई के) मार्ग (पर चलने) से बाज़ रक्खा, हम (प्रलय के दिन) उनके (इस) फ़साद (उठाने) के कारण उनके लिये (अपने एक) अज़ाब पर दूसरे अज़ाब को (और) अधिक बढ़ा देंगे। (और उन्हें उनके कुकर्मों की पूरी २ सज़ा देंगे) ॥

और (वह दिन हर समय याद रखने योग्य है) जिस दिन कि हम हर जाति (के लोगों) में उन्हीं में के एक गवाह को उनके विरुद्ध खड़ा करेंगे (तो वह उनके कुकर्मों का अच्छी तरह रहस्य प्रगट कर देगा)। और (ऐ रसूल !) इन (तुम्हारी उम्मत के) लोगों के मुक़ाबले में हम तुम्हें गवाह बनाकर लायेंगे—

عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ
شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝
اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي
الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ
اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا
وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ
مَا تَفْعَلُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ
بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۭ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ
اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ۭ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ
بِهٖ ۭ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ
تَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً
وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَلَتُسْـَٔلُنَّ

और (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुम पर (यह) किताब नाज़िल की है (जिसमें) हर चीज़ का बयान (शाफ़ी) है और मुसलमानों के लिये हिदायत और रहमत और ख़ुशख़बरी ० (मुसलमानो !) अल्लाह इन्साफ़ करने का हुक्म देता और (लोगों के साथ) एहसान करने का और क़राबत वालों को (माली इमदाद) देने का। और बे हयाई (के कामों) और ना शायस्ता हर्कतों और (एक दूसरे पर) ज़ियादती करने से मना फ़र्माता है। तुम लोगों को (ऐसी ऐसी) नसीहतें करता है, ताकि तुम (इन बातों का) ख़याल रक्खो ० और जब तुम लोग आपस में क़ौल व क़रार करलो, तो अल्लाह की क़सम को पूरा करो। और क़समों को उनके पक्का किये पीछे न तोड़ो, हालाँकि तुम अल्लाह को अपना ज़ामिन ठहरा चुके हो। कुछ शक नहीं कि जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह उससे ब ख़ूबी वाक़िफ़ है ० और (क़समों के तोड़ने में) उस औरत जैसे न बनो, जिसने अपना सूत काते पीछे टुकड़े टुकड़े करके तोड़ डाला कि लगो अपनी क़समों को (इस वजह से) आपस के फ़साद का सबब बनाने कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से ज़बरदस्त है। ख़ुदा (ने जो बाज़ को ज़बरदस्त और बाज़ को कमज़ोर बना रक्खा है) बस इस (इख़्तिलाफ़ हालत) से तुम लोगों की आज़माइश करता है (कि तुम ज़बरदस्त का पास करते हो, या क़ौल व क़सम का)। और जिन चीज़ों में तुम इख़्तिलाफ़ करते रहे हो, क़यामत के दिन ख़ुदा तुम पर (उनकी अस्ल हक़ीक़त को) ज़रूर ज़ाहिर कर देगा ० और ख़ुदा चाहता, तो तुम (सब) को एक ही उम्मत बना देता। मगर वह जिसको चाहता, गुमराह करता और जिसको चाहता, हिदायत देता है—

और (ऐ रसूल ! हम अपनी हुज्जत उन पर तमाम कर चुके। क्योंकि) हमने तुम पर क़ुर्आन उतार दिया, जो (तमाम दुनिया के लोगों के सामने) हर बात को (अत्यन्त व्याख्या के साथ) वर्णन करने वाला और मुसलमानों के लिये हिदायत और रहमत (का कारण) और (मुक्ति का) मङ्गल समाचार (सुनाने वाला) है ॥

निस्सन्देह (ऐ ईमान वालो !) अल्लाह तआला (तुमको न्याय व) इन्साफ़ करने की आज्ञा देता है। और (लोगों के साथ) भलाई करने की और (प्रिय) सम्बन्धियों को (यथा शक्ति हर प्रकार की सहायता) देने की। और बेहूदगी (की बातों) और अनुचित आचरणों तथा (लोगों पर) ज़ुल्म करने से मना करता है। (और इन बातों की) तुमको (इस लिये)नसीहत करता है, जिससे कि (इनकी भलाई बुराई पर) ध्यान दो। (और जिन बातों की आज्ञा दी गई है, उन पर अमल करके और जिनसे मना किया है, उनसे बच कर अपना लोक परलोक सुधारो। और सच्चे स्वामी को प्रसन्न करने का प्रयत्न करो) ॥

और (ऐ मुसलमानो !) जब कि तुम (अल्लाह से किसी बात के पूरा करने का क़ौल व क़रार और) प्रतिज्ञा करलो, तो अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा को (अर्थात उस बात को, जिसके पूरा करने का तुमने अल्लाह से वादा किया है, अवश्य) पूरा करो (और कभी प्रतिज्ञा भंग न करो)। और (अपनी) शपथों को उनके पक्का करने (अर्थात अल्लाह के नाम की शपथें खा लेने) के बाद तोड़ा न करो। (भला) ऐसी दशा में कि (जब) तुम (किसी बात के पूरा करने के वादे का) अल्लाह तआला को साक्षी ठहरा चुके हो (तो फिर उस बात को पूरा न करना और अल्लाह के नाम का पक्ष व आदर न करना कितनी मूर्खता है)। निस्सन्देह अल्लाह तआला तुम्हारे (समस्त) कर्मों को (अच्छी तरह) जानता है। (वह प्रलय के दिन तुम्हारे प्रत्येक शुभ कर्म का फल और प्रत्येक कुकर्म का दंड देगा) ॥

और (ऐ मुसलमानो !) उस स्त्री के समान न बनो, जिसने अपने कते कताये सूत को (दिन भर) परिश्रम करने के बाद टुकड़े २ करके तोड़ डाला। (क्या) तुम (लोग) अपनी शपथों (और अपनी प्रतिज्ञाओं) को (तोड़ कर) परस्पर (ख़राबी और) झगड़ा (फैलाने का) साधन बनाते हो ? (केवल) यह देख कर कि एक जाति दूसरी जाति से (बल में) अधिक है। (अर्थात तुम काफ़िरों को मुसलमानों से अधिक बलवान पाकर मुसलमानों के साथ की हुई प्रतिज्ञायें भङ्ग न करो) ॥

अल्लाह तआला तो तुमको (और तुम्हारे धैर्य को) इस (प्रकार काफ़िरों को बढ़ाने चढ़ाने) से केवल आज़माता है। (अर्थात यह देखता है कि तुम में से कौन ऐसा है, जो अपनी प्रतिज्ञाओं और अपनी शपथों को पूरा करता है और कौन नहीं करता)। और (मुसलमानो ! वचन व प्रतिज्ञाओं और शपथों को पूरा करने में जो) जो झगड़े तुम (इस संसार में) कर रहे हो, प्रलय के दिन वह (अर्थात अल्लाह उनका परिणाम अच्छी तरह) तुम पर प्रकट कर देगा। (अर्थात तुमको तुम्हारी बेईमानी और प्रतिज्ञा भङ्ग करने का पूरा २ मज़ा चखा देगा) ॥

और अगर अल्लाह तआला चाहता, तो तुम (सब) को एक (सङ्गठित) दल बना देता (और तुम लोगों में किसी प्रकार का मत भेद बाक़ी न रखता)। लेकिन वह जिसको चाहता है, पथ भ्रष्ट कर देता है और जिसको चाहता है, हिदायत (ग्रहण करने को योग्यता) प्रदान कर देता है। और—

كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ● وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا
بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ
بِمَا صَدَدتُّمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ●
وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا إِنَّمَا عِندَ اللَّهِ
هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ● مَا عِندَكُمْ
يَنفَدُ وَمَا عِندَ اللَّهِ بَاقٍ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا
أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ● مَنْ عَمِلَ
صَالِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم
بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ● فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ
فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ● إِنَّهُ لَيْسَ
لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ●
إِنَّمَا سُلْطَانُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ هُم

और (लोगो!) जो कुछ तुम (दुनिया में) करते रहे हो, उसकी तुमसे ज़रूर बाज़ पुर्स होनी है ० और अपनी क़समों को आपस के फ़साद का सबब न बनाओ कि (लोगों के) क़दम जमे पीछे (इस्लाम से) उखड़ जाएँ और (आख़िरकार) राह .ख़ुदा से (लोगों को) रोकने की पादाश में तुमको अज़ाब (इलाही का मज़ा) चखना पड़े और तुमको बड़ी (सख़्त) सज़ा हो ० और अल्लाह की क़सम के बदले (दुनिया के) थोड़े फ़ायदे मत हासिल करो। (क़ौल पूरा करने का अज्र) जो .ख़ुदा के हाँ है, वही तुम्हारे हक़ में बहुत बेहतर है, बशर्ते कि तुम (इस बात को) समझो ० जो (माल व मताए दुनिया) तुम्हारे पास है, (वह सब एक न एक दिन) निबड़ जायगा। और जो (अज्र) अल्लाह के पास है, वह (हमेशा हमेशा को) बाक़ी रहेगा। और जिन लोगों ने (दुनिया में) सब्र किया, उनको (क़यामत के दिन) उनके (इस) बेहतरीन अमल का सिला हम ज़रूर अता फ़र्माएँगे ० जो शख़्स नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत और वह ईमान भी रखता हो, तो हम (दुनिया में भी) उसकी ज़िन्दिगी अच्छी तरह बसर कराएँगे और उनको (आख़िरत में भी) उनके (इन) बेहतरीन आमाल का सिला ज़रूर अता फ़र्माएँगे ० तो (ऐ पैग़म्बर!) जब तुम .क़ुर्आन पढ़ने लगो, तो शैतान मर्दूद (के वस्वसों) से .ख़ुदा की पनाह माँग लिया करो ० जो लोग ईमान रखते और अपने पर्वर्दिगार पर भरोसा करते हैं, उन पर शैतान का कुछ क़ाबू नहीं (चलता) ० उसका क़ाबू तो उन ही लोगों पर (चलता) है, जो उसके साथ इर्तिबात रखते और जो—

(ऐ लोगो! अल्लाह के आदेशों के पालन करने से अचेत न हो। और याद रक्खो कि प्रलय के दिन) वह तुम्हारे कर्मों के सम्बन्ध में अवश्य उत्तर मांगेगा॥

और (ऐ मुलमानो! काफ़िरों के बहकाये सिखाये में आकर तुम मुसलमानों से की हुई प्रतिज्ञा भंग करते हो! हरगिज़ ऐसा न करो। और) अपनी सौगन्धों को आपस में (छल व) कपट (का साधन) न बनाओ। (यदि तुमने प्रतिज्ञा भंग की) तो (याद रक्खो! तुम्हारा) पग (इस्लाम धर्म पर) जम जाने के बाद (कुफ़्र व शिर्क की कीचड़ में) फिसल जावेगा। और तुम (इस नीचता और) .ख़ुदा के मार्ग से मुंह फेरने के कारण (हमारे) अज़ाब का (पूरा पूरा) मज़ा चक्खोगे। और (यदि तुमने ऐसा किया, तो) तुम्हारे लिये (भी काफ़िरों की तरह प्रलय में) बड़ा (घोर) अज़ाब (नियत) है॥

(तुमको चाहिये कि बुरे विचारों से हमेशा के लिये बाज़ आ जाओ)। और अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा को थोड़े से मूल्य पर न बेचो (अर्थात संसार के क्षणिक और असार लाभों के कारण मुसल्मानों के साथ प्रतिज्ञा भंग न करो। और काफ़िरों की प्रगट भड़क को देख कर उन पर न रीझो)। अगर समझदार हो, तो (इस बात का यक़ीन करो कि) अल्लाह तआ़ला के यहाँ जो (पुरस्कार व पुण्य) है, वह तुम्हारे लिये (इस संसार के लाभ से कहीं अधिक) उत्तम है॥

और (दुनिया का माल व दौलत) जो कुछ तुम्हारे पास है, वह (सब, कुछ दिन में) मिट जायगा। और (कृपा व नेअ़मत आदि) जो कुछ अल्लाह के यहाँ है, वह (सदा) शेष रहेगी। और हम उन लोगों को, जो (अपनी प्रतिज्ञाओं और अपनी शपथों पर) दृढ़ रहे, उन का पुरस्कार (व पुण्य) उनके कर्मों से अधिक उत्तम प्रदान करेंगे॥

(और) जो मनुष्य (भी) नेक काम करेगा-चाहे वह मर्द हो या स्त्री, और हो वह मुसल्मान, तो हम उसको (संसार में भी एक) पवित्र जीवन प्रदान करेंगे। और हम उन (समस्त नेक मनुष्यों) को (प्रलय में भी) उनका पुरस्कार (व पुण्य) उनके कर्मों से श्रेष्ठ प्रदान करेंगे॥

अतएव (ऐ रसूल! लोगों को समझा दो कि यदि तुम नेक बनना चाहते हो और बुराई से बचना चाहते हो, तो .क़ुर्आन पढ़ा करो। और .क़ुर्आन पढ़ते समय सच्चे पालन कर्त्ता से शरण मांगा करो, जिस से कि शैतान के बहकाव से सुरक्षित रहो। ऐ रसूल!) जब तुम (भी) .क़ुर्आन पढ़ा करो, तो दुष्ट शैतान (की दुर्वासना) से बचने के लिये अल्लाह की शरण मांगा करो॥

निस्सन्देह शैतान का उन लोगों पर (कुछ) बस नहीं (चलता) जो ईमानदार हैं। और अपने पालन कर्त्ता ही (की व्यक्ति) पर भरोसा रखते हैं॥

उसका क़ाबू तो बस उन्हीं लोगों पर (चलता) है, जो उस से मित्रता रखते हैं। औ जो—

ع

بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ۝ وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ وَّاللّٰهُ
اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ بَلْ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ
بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى
لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا
يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ
اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْكٰذِبُوْنَ ۝ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ
اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ
مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ

शरीक .खुदा ठहराते हैं ० और (ऐ पैग़म्बर !) जब हम एक आयत को बदल कर उसकी जगह दूसरी आयत नाज़िल करते हैं और अल्लाह जो (अहकाम) नाज़िल फ़र्माता है, उस (की मस्लहतों) को वही .खूब जानता है। तो (काफ़िर तुमसे) कहने लगते हैं कि बस तू तो अपने दिल से बनाया करता है (उनका यह शुबहा ग़लत है)। बल्कि (बात यह है कि) इनमें से अक्सर (वक़् की मस्लहतों को) नहीं समझते ० (ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से) कहो कि हक़ तो यह है कि इस (.कुर्आन) को तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से रूहुल.कुदुस (यानी जिब्रील) लेकर आए हैं, ताकि जो लोग ईमान ला चुके हैं, .खुदा (इसके ज़रिये से) उनको (ईमान पर) साबित क़दम रक्खे और (.खुदा के) फ़र्मांबर्दार बन्दों के हक़ में हिदायत और .खुशखबरी हो ० और (ऐ पैग़म्बर !) हमको तहक़ीक़ मालूम है कि काफ़िर (.कुर्आन की निस्बत) यह इश्तिबाह करते हैं कि हो न हो ! इस शख़्स को (यानी तुमको फ़लाँ) आदमी सिखाया करता है। सो जिस शख़्स की तरफ़ (सिखाने की) निस्बत करते हैं, उसकी बोली तो अजमी है और यह (.कुर्आन) साफ़ अरबी ज़बान (में) है ० जो लोग (हेकड़ी और हठ धर्मी से) .खुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते, .खुदा भी उन को राह रास्त नहीं दिखाया करता। और (आख़िरत में) उनको अज़ाब दर्दनाक (होना) है ० दिल से झूठ बनाना तो उन ही लोगों का काम है, जिनको .खुदा की आयतों का यक़ीन नहीं और (अस्ल में) यही लोग झूठे हैं ० जो शख़्स (कुफ़्र पर) मज्बूर किया जाय, मगर उसका दिल ईमान की तरफ़ से मुत्मइन हो (उससे कुछ मुवाख़िज़ा नहीं)। लेकिन जो शख़्स ईमान लाये पीछे .खुदा के साथ कुफ़्र करे और कुफ़्र भी करे तो जी खोल कर—तो ऐसे लोगों पर .खुदा का ग़ज़ब—

अल्लाह के साथ (अपने घर के बनाये हुये पूज्यों को) शरीक करते हैं ॥

और (ऐ रसूल !) जब हम किसी आयत को बदल कर उसकी जगह (समय की आवश्यकता के अनुसार) कोई और आयत उतारते हैं (तो) यद्यपि अल्लाह तआला (किसी आयत के बदलने और उसकी जगह) जो आयत उतारता है (उसके उतारने में जो सुसाधकता है) उससे अच्छी तरह जानकार है। (और वह यह परिवर्तन केवल निरर्थक और व्यर्थ नहीं करता, लेकिन फिर भी) यह (मुश्रिक लोग) कहते हैं कि (मुहम्मद !) तुम (बड़े) प्रपञ्ची (और झूठे) हो (आयतें स्वयं गढ़ गढ़ कर अल्लाह के नाम लगा देते हो । तो ऐ रसूल ! यह निरे धृष्ट ही नहीं हैं) बल्कि इनमें से बहुधा (लोग .कुर्आन की वास्तविकता ही को) नहीं जानते। (और उन्हें यही नहीं मालूम है कि .कुर्आन में परिवर्तन व काट छाँट .कुर्आन पर अमल करने वालों के लिये कितना लाभ दायक है) ॥

(ऐ रसूल !) तुम (इन लोगों से) कहदो कि इस (.कुर्आन) को रूहुल.कुदुस (अर्थात जिब्रील) मेरे पालन कर्त्ता की ओर से (समय की आवश्यकता और) सुसाधकता के अनुसार (मेरे पास) लाते हैं। अतएव जो लोग ईमान ले आये हैं, अल्लाह तआला उन्हें (इस .कुर्आन को सुनवाकर ईमान पर) दृढ़ रक्खे और (यह) आज्ञा पालन करने वालों के लिये शिक्षा और मङ्गल समाचार (का साधन) हो ॥

और (ऐ रसूल !) हम ख़ूब जानते हैं कि यह (काफ़िर व मुश्रिक तुम्हारे और .कुर्आन के विषय में) यह (भी) कहते हैं कि इस (मुहम्मद) को (यह .कुर्आन) एक आदमी (अर्थात ईरान का रहने वाला क़ैन नामक ईसाई) सिखाता है। (अल्लाह तआला की ओर से इस पर कुछ नहीं उतरता)। तो जिस (आदमी) की ओर यह (लोग .कुर्आन बनाने का दोष) लगाते हैं (वह तो अरब देश का नहीं है। और) उसकी ज़बान (भी) अरबी नहीं है और यह (.कुर्आन अत्यन्त सरल और) स्पष्ट अरबी भाषा (में) है। (तो जो आदमी अरबी भाषा का जानने वाला ही नहीं, वह कोई अरबी किताब और फिर .कुर्आन जैसी पुस्तक कैसे बना सकता है) ॥

निस्सन्देह (यह लोग बड़े विधर्मी हैं कि जानने और समझने के बाद भी ईमान नहीं लाते। और) जो लोग अल्लाह की आयतों (और उसके कलाम) पर (सब कुछ समझने के बाद भी) ईमान नहीं लाते, अल्लाह तआला उन्हें (कभी शिक्षा पूर्ण) उपदेश नहीं देता। और (उसने प्रलय में) उनके लिये एक घोर अज़ाब (तैयार कर रक्खा) है ॥

(अल्लाह और उसके रसूल पर) बस वही लोग झूठ तूफ़ान बाँधा करते हैं, जो अल्लाह की आयतों (और उसके कलाम) पर ईमान नहीं लाते। और (ऐ रसूल ! वास्तव में) झूठे (स्वयं) यही लोग हैं ॥

जो लोग (अल्लाह रसूल पर) ईमान लाने के बाद अल्लाह (रसूल) के साथ कुफ़्र करें (अर्थात इस्लाम धर्म से फिर जायँ)। सिवाय उस (ईमान्दार) आदमी के कि जो विवश किया जाय और (ज़बरदस्ती उसकी ज़बान से कुफ़्र की बाणी निकलवाई जाय । और वह कुफ़्र का शब्द अपनी ज़बान से निकाल ले, लेकिन) उसका दिल (ईमान की ज्योति से प्रकाशमय और) ईमान (की मधुरता) से (शान्ति पूर्ण और) धैर्यवान हो (अर्थात उसके धार्मिक विश्वासों में किसी प्रकार की ख़राबी न आई हो, तो वह सज़ा से बरी है)। लेकिन जो जी खोल कर कुफ़्र करे (और दिल से भी कुफ़्र को पसन्द करता हो) तो उन (सब लोगों) पर अल्लाह का क्रोध है—

وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْكٰفِرِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝
لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ ثُمَّ
اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا
ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا
لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ
عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ
اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ
كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ
لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝

और उनके लिये बड़ा (सख़्त) अज़ाब है ० यह इस वजह से कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दिगी को आख़िरत पर (तरजीह देकर) अज़ीज़ रक्खा और (नीज़) इस वजह से कि अल्लाह उन लोगों को जो कुफ़् करते हैं, हिदायत नहीं दिया करता ० यही वह लोग हैं, जिनके दिलों पर और जिन के कानों पर और जिनकी आंखों पर अल्लाह ने मुहर करदी है। और यही (परले दरजे के) ग़ाफ़िल हैं ० पस ज़रूर आख़िरत में (भी) यही लोग घाटे में रहेंगे ० फिर जिन लोगों ने मुब्तलाए मुसीबत रहे पीछे घर बार छोड़े, फिर (ख़ुदा की राह में) जिहाद किये और (तकलीफ़ों पर, जो उनको तर्के वतन और जिहाद में पहुँचीं) सब्र किया--(ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार इन (सब इम्तिहानों) के बाद (क़यामत के दिन) अलबत्ता बख़्शने वाला मेहर्बान है ० जब कि हर शख़्स अपनी ज़ात के लिये झगड़ने को आ मौजूद होगा और हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जायगा और लोगों पर (किसी तरह का) ज़ुल्म न होगा ० और ख़ुदा एक गांव की मिसाल बयान फ़र्माता है कि वहां के लोग (हर तरह पर) अम्न व इतमीनान से थे। हर तरफ़ से बा फ़राग़त उनका रिज़्क़ उनके पास चला आता था, फिर उन्होंने ख़ुदा की नेअ़मतों की ना शुक्री की, तो उनके कर्तूतों के बदले में अल्लाह ने उनको मज़ा भी चखा दिया कि भूक और ख़ौफ़ को (उनका) ओढ़ना (बिछौना) बना दिया० –

और उनके लिये बड़ा (घोर) अज़ाब (तज़वीज़ किया गया) है ॥

(और) यह (अज़ाब उन्हें) इस कारण (दिया जावेगा) कि उन्होंने परलोक (के सदैव के जीवन) के मुक़ाबले में संसार के (असार) जीवन को पसन्द किया और (साँसारिक सुखों में लिप्त होकर अन्तिम काल की कुछ परवाह न की। अर्थात जो संसार को परलोक पर श्रेष्ठ ठहराते और कुफ़् की तरफ़ पग बढ़ाते हैं, तो) अल्लाह तआला (ऐसे) काफ़िरों को शिक्षा (ग्रहण करने की योग्या) प्रदान नहीं करता। (और वह पथ भ्रष्टता के गढ़े में गिर कर अज़ाब के भागी ठहरते हैं) ॥

यही हैं, वह लोग कि अल्लाह तआला ने उनके दिलों और उनके कानों और उनकी आँखों पर मुहर लगादी (जिसके कारण न वह सत्य बात को सुन सकते हैं, न देख सकते हैं, न दिल में जगह दे सकते हैं)। और यही (हैं, वह लोग, जो अपने बुरे परिणाम से बिलकुल अचेत हैं। (असल) बात यह है कि परलोक में (भी अत्यन्त) हानि उठाने वाले यही (लोग) हैं ॥

फिर (ऐ रसूल !) तुम्हारा पालन कर्त्ता उन लोगों के लिये, जिन्होंने (तरह २ की विपत्तियों और आये दिन के) झगड़ों में लिप्त होने के पश्चात् देश त्यागन किया। (और) फिर (अल्लाह के मार्ग में) जिहाद किया और (बावजूद हर प्रकार की विपत्तियों के सत्य सिद्धान्त अर्थात इस्लाम धर्म पर) दृढ़ रहे (और कुफ़् की ओर नहीं झुके) निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता इन (परीक्षाओं) के पश्चात (उन लोगों के लिये, जो उनमें पूरे उतरे) बड़ा क्षमा करने वाला (और अत्यन्त) कृपालु है। (वह अपनी कृपा व दया से उनके समस्त पिछले पापों को, जो कुफ़् की दशा में उन्होंने किये थे, क्षमा कर देगा। और प्रलय के दिन उनके शुभ कर्मों के बदले उन्हें बड़े २ पद प्रदान करेगा) ॥

(और काफ़िरों को दण्ड और ईमानदारों को पुरस्कार उस दिन दिया जावेगा) जिस दिन कि (अपनी २ पड़ेगी और) हर मनुष्य अपनी (ही) व्यक्ति (को अज़ाब से बचाने) के लिये झगड़ा करेगा (और किसी मित्र या सम्बन्धी की परवाह न करेगा)। और हर मनुष्य को उसके कर्मों का फल पूरा २ दिया जावेगा। और लोगों पर (किसी प्रकार का) ज़ुलम नहीं किया जायगा ॥

और अल्लाह तआला (लोगों को समझाने के लिये) एक ऐसी बस्ती का उदाहरण देता है, जो (अत्यन्त) शान्ति पूर्ण (और सुरक्षित तथा) सन्तुष्ट (अवस्था में) थी, उसका अन्न (अत्यन्त) विस्तृत रूप से हर ओर से चला आता था। (अर्थात अल्लाह तआला ऐसे लोगों का उदाहरण देता है, जिन्हें हर प्रकार का सुख प्राप्त था)। तो (इसके अतिरिक्त कि वह लोग अल्लाह की नेअ़मतों के कृतज्ञ होते) उन्होंने अल्लाह की नेअ़मतों की (सरासर) कृतघ्नता की (और बजाय दया व कृपा करने वाले ख़ुदा की आज्ञा पालन व आधीनता करने के कुफ़् व शिर्क में फँस गये)। अतएव उनके (बुरे) आचरणों का बदला अल्लाह तआला ने (इसी संसार में) भूख और भय के रूप में उनको मज़ा चखा दिया। (अर्थात उनकी सम्पत्ति व वैभव को छीन कर अकाल में और शान्ति तथा धैर्य को छीन कर भय में लिप्त कर दिया) ॥

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ
الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُونَ ۝ فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ
حَلٰلًا طَيِّبًا وَّاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ
إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ
وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَآ أُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ فَمَنِ اضْطُرَّ
غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَلَا
تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا
حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝
مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا
حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ
وَلٰكِنْ كَانُوٓا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ
لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوٓءَ بِجَهٰلَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ

وَأَصْلَحُوا

और उन ही में का एक रसूल (भी) उनके पास आया, तो उन्होंने उसको झुठलाया। इस पर अज़ाब (इलाही) ने उनको आ पकड़ा और वह थे सरे नाहक़ थे ० तो (मुसलमानों !) ख़ुदा ने जो तुमको हलाल तय्यिब रोज़ी दी है, उसको (बे तअम्मुल) खाओ। और अगर तुम अल्लाह ही की फ़र्मांबर्दारी का दम भरते हो, तो उसकी नेअमत का शुक्र (भी) करो ० उसने तो तुम पर बस मुर्दार को हराम किया है और ख़ून को और सुवर के गोश्त को। और उस (जानवर) को, जिसे ख़ुदा के सिवा (किसी और की ताज़ीम और उसके तक़र्रुब) के लिये (हलाल और) नाम ज़द किया जाय। फिर जो शख़्स (भूक से) बे क़रार हो (और) न (तो हुक्म ख़ुदा से) सरताबी करने वाला (हो) और (न हद्द ज़रूरत से) तजावुज़ करने वाला (और मजबूर होकर कोई हराम चीज़ खाले) तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहर्बान है ० और (काफ़िरों की तरह) झूट मूट जो कुछ तुम्हारी ज़बान पर आए (बे सोचे समझे) न बक दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम कि (इस बकवास से) लगो ख़ुदा पर झूट बोहतान बांधने। जो लोग ख़ुदा पर झूट बोहतान बांधते हैं, उनको (कभी) फ़लाह होनी नहीं ० (यह भी दुनिया के चन्द रोज़ा) थोड़े से फ़ायदे हैं और (आख़िरकार) उनको अज़ाब दर्दनाक (होना) है ० और (ऐ पैग़म्बर !) हमने यहूदियों पर वह चीज़ें, जो पहिले तुमसे बयान फ़र्मा चुके हैं, हराम करदी थीं। और (उन चीज़ों के हराम करने से) हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वह ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया करते थे ० फिर जो लोग बराह जिहालत गुनाह करते रहे, फिर उसके बाद तौबा की –

और (यह अज़ाब उन लोगों ने अपने आप ही अपने सिर मोल लिया। क्योंकि जब) उनके पास उनही में का (एक) रसूल((हमारे आदेशानुसार उन्हें समझाने को) आया (और उसने आकर महान ख़ुदा की उपासना व कृतज्ञता करने के लिये प्रेरणा की) तो उन्होंने (उसकी एक न सुनी और उल्टा) उसको झूठा बताया। इस पर (हमारे) अज़ाब ने उनको आ पकड़ा और वह (कुफ़्र व शिर्क करके अपने प्राणों पर आप ही) अत्याचार किया करते थे ॥

अतएव (ऐ लोगो !) जो रोज़ी अल्लाह तआला ने हलाल पवित्र करदी है, उसमें से (इच्छानुसार) खाओ (उसे हराम न जानो)। और यदि तुम (अपने विचार में) उसी की पूजा करते हो, तो अल्लाह की (प्रत्येक) नेअमत के कृतज्ञ हो ॥

(और याद रक्खो कि) उसने तो बस तुम पर मुर्दार को हराम किया है, और ख़ून को, और सुअर के गोश्त को। और उस (जानवर) को, जिसे अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के नाम पर बध किया गया हो। फिर जो (भूख के मारे) बेचैन (और मरने के निकट) हो (और अवज्ञाकारी तथा) उद्दण्ड न हो और न (खाने में आवश्यकता से अधिक) बढ़ जाने वाला हो, (और उसको उन चीज़ों के अतिरिक्त कुछ खाने को न मिल सकता हो) तो (ऐसे मनुष्य के लिये यह चीज़ें भी उस समय जायज़ हैं)। निस्सन्देह अल्लाह पाक (बड़ा) क्षमा करने वाला और दयालु है। (ऐसे अवसर पर वह उसके इस अपराध को अवश्य क्षमा कर देगा) ॥

और जो (शुद्ध अशुद्ध) झूठ बातें तुम्हारी ज़बानों पर आ जायं, उन्हें (बिना समझे बूझे ज़बान पर न आने दिया करो। और प्रत्येक वस्तु के विषय में बिना प्रमाण दिये इस प्रकार) न कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम, जिससे कि तुम ख़ुदा पर झूठ दोष (न) उठाओ (और अपने परलोक को न बिगाड़ो)। निस्सन्देह जो लोग अल्लाह पर झूठे दोष लगाते हैं (वह कभी) कल्याण नहीं प्राप्त करते ॥

(जो लोग ऐसा करते हैं, उनके लिये संसार में) थोड़ा सा लाभ है। और (फिर प्रलय में) उनके लिये एक (कठिन और) दुख दाई अज़ाब है ॥

और (ऐ रसूल ! यह हमारी हलाल चीज़ों को हराम बताने वाले मुश्रिक तो अपने आप को इब्राहीम के धर्म का अनुयायी बतलाते हैं। तो इब्राहीम के धर्म में तो इन चीज़ों में से एक चीज़ भी हराम न थी। आख़िरकार कुछ दिन बाद) हमने यहूद पर (उनकी अवज्ञाकारी के कारण) उन चीज़ों को, जिनका ज़िक्र हम तुमसे पहिले कर चुके हैं (जैसे कि नाख़ून वाले जानवरों और गाय बकरे की चरबी आदि को) हराम कर दिया था (ताकि उन पर उनकी जीविका का साधन तंग हो)। और (उन्हें उस दण्ड के देने में) हमने उन पर (कुछ) ज़ुल्म नहीं किया था, बल्कि वह (हमारी अवज्ञाकारी करके) अपनी जानों पर आप ही ज़ुल्म (और अपनी दीन व दुनिया स्वयं ही ख़राब) करते थे ॥

(अतएव उन मुश्रिकों को चाहिये कि सोच समझ कर अपने कुकर्मों से तौबा करें। ऐ रसूल ! अब हम) फिर (तुमको बताये देते हैं कि) तुम्हारा पालन कर्त्ता उन लोगों के लिये, जो (केवल अपनी मूर्खता व) नादानी के कारण कुकर्म करते रहे-फिर इसके बाद (जब उनकी बुद्धि ठीक हो गई, तो) उन्होंने (अपनी अवज्ञा से) तौबा करली–

وأصلحوا إن ربك من بعدها لغفور رحيم ۝
إن إبراهيم كان أمة قانتا لله حنيفا ولم يك
من المشركين ۝ شاكرا لأنعمه اجتباه
وهداه إلى صراط مستقيم ۝ وآتيناه في
الدنيا حسنة وإنه في الآخرة لمن الصالحين ۝
ثم أوحينا إليك أن اتبع ملة إبراهيم حنيفا
وما كان من المشركين ۝ إنما جعل السبت
على الذين اختلفوا فيه وإن ربك ليحكم بينهم
يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون ۝ ادع
إلى سبيل ربك بالحكمة والموعظة
الحسنة وجادلهم بالتي هي أحسن إن ربك
هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين ۝
وإن عاقبتم فعاقبوا بمثل ما عوقبتم به ولئن

ع

और (तौबा के बाद अपनी) इस्लाह (हालत भी) की, तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार बेशक तुम्हारा पर्वर्दिगार तौबा और इस्लाह (हालत) के बाद अलबत्ता बख़्शने वाला मेहर्बान है ० बेशक इब्राहीम (लोगों के) पेशवा हो गुज़रे हैं। .ख़ुदा के फ़र्मांबर्दार (बन्दे) जो एक (.ख़ुदा) के हो रहे थे और मुश्रिकीन में से न थे ० .ख़ुदा की नेअ्मतों के शुक्र गुज़ार .ख़ुदा ने उनको इन्तिख़ाब कर लिया था और उनको (दीन का) सीधा रस्ता (भी) दिखाया था ० और हमने उनको दुनिया में भी (हर तरह की) बेहतरी दी थी और आख़िरत में भी, वह ज़रूर (हमारे) नेक बन्दों में होंगे ० फिर (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुम्हारी तरफ़ वही भेजी कि इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करो, जो एक (.ख़ुदा) के हो रहे थे और मुश्रिकीन में से न थे ० हफ़्ते (के दिन) की ताज़ीम तो बस उन ही लोगों पर लाज़िम की गई थी, जिन्होंने (आख़िकार) उस (के बारे) में (तरह तरह के) इख़्तिलाफ़ात भी किये। और (ऐ पैग़म्बर !) जिन जिन बातों में यह लोग आपस में इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं, क़यामत के दिन तुम्हारा पर्वर्दिगार उनमें उन बातों का (क़तअ्न) फ़ैसला कर देगा ० (ऐ पैग़म्बर ! लोगों को) अक़्ल की बातों और अच्छी अच्छी नसीहतों से अपने पर्वर्दिगार के रस्ते की तरफ़ बुलाओ और उनके साथ बहस (भी) करो (तो) ऐसे तौर पर कि वह (लोगों के नज़्दीक) बहुत ही पसन्दीदा हो। (ऐ पैग़म्बर !) जो कोई .ख़ुदा के रस्ते से भटका, तुम्हारा पर्वर्दिगार उस (के हाल) से बख़ूबी वाक़िफ़ है। और (नीज़) वह उन (लोगों के हाल) से (भी) बख़ूबी वाक़िफ़ है, जो राह रास्त पर हैं ० और (मुसल्मानो ! दीन की बहस में मुख़ालिफ़ीन के साथ) सख़्ती भी करो, तो वैसी ही सख़्ती करो, जैसी तुम्हारे साथ की गई हो। और अगर—

तो निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता (बड़ा) कृपालु व दयालु है (उनके समस्त पहिले पापों को क्षमा कर देगा) ॥

निस्सन्देह इब्राहीम (लोगों के) इमाम थे (और अपने) अल्लाह के (सच्चे) आज्ञाकारी थे। (और सब मूर्तियों से विरुद्धता करके सच्चे हृदय से .ख़ुदा ही की तरफ़) लग गये थे। और वह मुश्रिकों में से न थे (और वह) उसकी नेअ्मतों के कृतज्ञ थे। (अतएव अल्लाह तआला ने) उनको उच्च पद दिया और (धर्म का) सीधा मार्ग उनको बता दिया ॥

और हमने उनको संसार में भी ख़ैर (व बरकत) प्रदान की थी और निस्सन्देह वह परलोक में भी (हमारे) नेक (और बड़ी पदवी वाले) बन्दों में से होंगे ॥

फिर (इब्राहीम के बाद जब) हमने (तुमको नबी बनाकर भेजा, तो हमने) तुम्हारी ओर वही भेजी कि तुम इब्राहीम के धर्म के अनुयायी बनो, जो (सब बुतों से मुंह मोड़ कर एक .ख़ुदा की ओर) आर्पित (हो गये) थे, और मुश्रिक मनुष्यों में से न थे ॥

(तुम्हारे धर्म और मिल्लत इब्राहीम के सिद्धान्तों में कुछ भेद नहीं है। और यह) सब्त (अर्थात सनीचर के दिन को पूजा के लिये निर्दिष्ट करने की आज्ञा) तो (मूसा के समय में) उन लोगों पर आवश्यक की गई थी, जिन्होंने उसमें मत भेद प्रगट किया। और (बाज़ ने जुमे को उपासना का दिन नियत किया और बाज़ ने सनीचर को और बाज़ ने एतवार को। इसमें कुछ) शक नहीं कि (ऐ रसूल !) तुम्हारा पालन कर्त्ता उन (लोगों) के परस्पर (समस्त) उन (धार्मिक नीति की बातों) का निश्चित रूप से फ़ैसला कर देगा, जिनमें यह मत भेद करते रहे हैं ॥

(ऐ रसूल !) तुम (लोगों को) सर्वोत्तम उपदेश व युक्ति (की बातों) के द्वारा अपने पालन कर्त्ता के मार्ग की ओर बुलाओ। और (यदि तर्क वितर्क अर्थात शास्त्रार्थ का अवसर आन पड़े, तो) इस प्रकार तर्क करो, जो उत्तम हो (और परिणाम की दृष्टि से लाभ प्रद हो। बस तुम्हारा काम केवल इतना है)। निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता इन लोगों से (भी) अच्छी तरह जानकार है, जो उसके मार्ग से भटके हुए हैं। और उनसे भी भली भांति जानकार है, जो हिदायत प्राप्त कर चुके हैं। (प्रलय के दिन वह सबको पुरस्कार व दण्ड देगा) ॥

और (ऐ मुसल्मानो ! तुम भी सुनलो कि) यदि तुम (तर्क वितर्क के समय अपने विपक्षी पर) क्रोध करो तो उतना ही करो, जितना कि (तुम्हारे विपक्षी की ओर से) तुम पर किया गया है। और यदि—

(लोगों की ईज़ाओं पर) सब्र करो, तो बहर हाल सब्र करने वालों के हक़ में सब्र बेहतर है ० और (ऐ पैग़म्बर ! तुम मुख़ालिफ़ों की ईज़ाओं पर) सब्र करो और ख़ुदा (की तौफ़ीक़) के बिदून तो तुम सब्र कर ही नहीं सकते और इन (मुख़ालिफ़ों के हाल) पर अफ़सोस न करो। और यह लोग जो (तुम्हारी मुख़ालिफ़त में) तदबीरें किया करते हैं,इससे तंग दिल न हो ० (क्योंकि) जो लोग परहेज़गारी करते हैं और जो (लोगों के साथ) हुस्न सुलूक से पेश आते हैं, अल्लाह उनका साथी है ०

सूरत बनी इस्राईल

मक्की यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें १११ आयतें और १२ रुकूअ हैं॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहरबान (है)० वह (ख़ुदा इज्ज़ और दरमांदगी के ऐब से) पाक है, जो अपने बन्दे (मुहम्मद) को रातों रात मस्जिद हराम (यानी ख़ानए काबा) से मस्जिद अक़सा (यानी बैतुलमक़दस) तक ले गया। जिसके गिर्दा गिर्द हमने (दुनिया व दीन की) बरकतें दे रक्खी हैं । (और इस लेजाने से मक़सूद यह था) कि हम उनको अपनी (क़ुदरत के) चन्द नमूने मुआयना कराएँ (और उनको बाज़ असरार ग़ैब मालूम हों, वर्ना असल) सुनने वाला देखने वाला (यानी ग़ैब दाँ) वही ख़ुदा है ० और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और उसको बनी इस्राईल के लिये हिदायत (का दस्तूरुल अमल) ठहराया (और उनसे कह दिया)कि हमारे सिवा किसी को अपना कारसाज़ न बनाना ० (कि तुम) उन लोगों की नस्ल (हो) जिन को हमने नूह के साथ (किश्ती में) सवार कर लिया था। (और) वह हमारे बन्दए शुक्र गुज़ार थे ० और हमने बनी इस्राईल से (उसी) किताब (तौरात) में साफ़ कह दिया था कि तुम ज़रूर मुल्क में दो दफ़े फ़साद करोगे और (दोनों दफ़े लोगों पर) बड़ी ज़ियादतियां भी करोगे ० तो जब—

صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ ۝ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ
إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ
مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ
هُم مُّحْسِنُونَ ۝
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝
سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَىٰ بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِي بَارَكْنَا
حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝
وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي
إِسْرَائِيلَ أَلَّا تَتَّخِذُوا مِن دُونِي وَكِيلًا ۝ ذُرِّيَّةَ
مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ۝
وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ
فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝ فَإِذَا جَاءَ

وعد

तुम (उनके क्रोध पर) सन्तोष करलो, तो (बहुत अच्छा)। सन्तोष तो सन्तोष करने वालों के लिये (लाभ प्रद और) अच्छा है ही (उसका तो कहना की क्या है) ॥

और (ऐ हमारे रसूल !) तुम भी (जहाँ तक हो सके) सन्तोष किया करो। और (अल्लाह से सन्तोष शक्ति प्रदान करने के लिये प्रार्थना करो, क्योंकि) तुम अल्लाह ही की सहायता से सन्तोष कर सकते हो। और इन (शत्रुओं मुश्रिकों की दुर्दशा) पर तुम कुछ शोक न करो। और यह जो (तुम्हारे लिये तरह २ के) छल (व कपट) कर रहे हैं, उससे (कदापि) तङ्ग दिल (और परेशान) न हो॥

निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो संयमी (परहेज़गार और सन्तोषी व कृतज्ञ) हैं और जो (ख़ुदा की प्राणियों के साथ) भलाई करते हैं॥

सूरत बनी इस्राईल

मक्की अर्थात मक्के में उतरी। इसमें १११ आयतें और १२ रुकूअ हैं॥

पवित्र (और बड़ी शक्ति वाला) है, वह (अल्लाह) जो एक रात अपने बन्दे (मुहम्मद) को पूजनीय मसजिद से मसजिद अक़सा* तक, जिसको हमने अपनी बरकतों की छाया में ले रक्खा है—ले गया †। ताकि हम उन्हें अपनी (शक्ति की) कुछ निशानियाँ दिखावें। निस्सन्देह वह (बड़ा) सुनने वाला और देखने वाला है (कि अपने समीपवर्ती बन्दों की उन आवाज़ों को सुन लेता है, जिनको कोई नहीं सुन सकता। और उनके ऐसे कामों को देख लेता है, जिनको कोई नहीं देख सकता)॥

* टीका--मसजिद हराम से काबे का स्थान और मसजिद अक़सा से बैतुलमक़दस मुराद है :–हसन निज़ामी ॥

† टीका—यह संकेत मेराज के वृतान्त की ओर है :–हसन निज़ामी॥

और हम (ही) ने (मुहम्मद से पहिले अपने बन्दे) मूसा को किताब (तौरेत) प्रदान की थी। और उसको बनी इस्राईल के लिये उपदेश (का कारण) बनाया (और उसके द्वारा उनको समझाया) कि हमारे अतिरिक्त किसी को (अपना) कार्य कर्त्ता न ठहराना (और हमको छोड़ कर किसी और को अपना पूज्य न बनाना)॥

(कि) तुम उन लोगों की सन्तान (हो) जिन्हें हमने (तूफ़ान के अज़ाब से बचाने के लिये) नूह के साथ (नाव में) सवार कर लिया था। निस्सन्देह नूह (अपने पालन कर्त्ता के) बड़े कृतज्ञ भक्त थे॥

और हमने किताब (तौरेत) में बनी इस्राईल को (पहिले ही से यह) स्पष्ट बता दिया था, कि तुम (अपने कुकर्मों के कारण) दोबार (शाम की) भूमि में (उपद्रव व) झगड़े (पैदा) करोगे। और बड़े बड़े अत्याचार करोगे (जिसके कारण तुमको हर बार काफ़ी दण्ड भुगतना पड़ेगा। और देश में काफ़ी तबाही व बरबादी फैलेगी)॥ सो जब—

وَعْدُ أُولٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَا أُولِي بَأْسٍ
شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۚ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ●
ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنٰكُمْ
بِأَمْوَالٍ وَّبَنِينَ وَجَعَلْنٰكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ●
إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ
فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ
وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ
وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ● عَسٰى رَبُّكُمْ أَن
يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ
لِلْكٰفِرِينَ حَصِيرًا ● إِنَّ هٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي
لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ
الصّٰلِحٰتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ● وَأَنَّ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ●

उन (फ़सादों) में पहिले (फ़साद) का वक़्त आया, तो हमने तुम्हारे मुक़ाबिले में अपने ऐसे बन्दे उठा खड़े किये, जो बड़े सख़्तगीर थे ० और वह (तुम्हारे) शहरों के अन्दर फैल गये और (ख़ुदा का) वादा (पूरा) होना ही था ० फिर हमने (तुमको) दुश्मनों पर (ग़लबा देकर दुबारा) तुम्हारे दिन फेरे और माल से और बेटों से तुम्हारी मदद की और तुम को बड़े जथे वाले बना दिया ० अगर (उस वक़्त तुमने) अच्छे काम किये, तो अपने ही (ज़ाती फ़ायदे के) लिये अच्छे काम किये । और अगर बुरे काम किये, तो भी अपने ही लिये । फिर जब दूसरे (फ़साद) का वक़्त आया, तो फिर हमने अपने दूसरे बन्दों को उठा खड़ा किया कि (तुमको इस क़दर मारें कि) तुम्हारे मुंह बिगाड़ दें (और तुम्हारी शक्लें न पहिचान पड़ें) । और जिस तरह पहिली दफ़े मस्जिद (बैतुलमक़दस) में घुसे थे (और उसको लूटा खसोटा था) उसी तरह (इस दफ़े फिर) उसमें घुसें और जिस चीज़ पर क़ाबू पाएँ, तोड़ फोड़ उसका सत्यानास करदें ० (अब भी) अजब नहीं कि तुम्हारा पर्वर्दिगार तुम पर रह्म फ़र्माए और अगर तुम फिर (वही पहिली सी शरारतें) करोगे, तो हम भी फिर (वही) करेंगे, (जो पहिले किया था यानी सज़ा देंगे) । और हमने काफ़िरों के लिये जहन्नम का जेल ख़ाना तय्यार कर रक्खा है ० बेशक यह क़ुर्आन (दीन का) वह (रस्ता) दिखाता है, जो बहुत ही सीधा है । और ईमान वालों को जो नेक अमल करते हैं, इस बात की ख़ुश ख़बरी देता है कि उनको बड़ा अज्र मिलेगा ० और (नीज़ लोगों को) यह (भी समझाता है) कि जो लोग आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते, उन के लिये हमने अज़ाब दर्दनाक तय्यार कर रक्खा है ०--

(हमारे) उन दो (नियत अवधियों) में से पहिला समय आया (अर्थात जब पहिली बार तुम्हारे सदाचार व कर्म में वह ख़राबियाँ उत्पन्न हुईं, जिनकी ख़बर किताब तौरेत में दी गई थी--तो हमने तुम्हें दबाने के लिये) अपने ऐसे सेवकों को तुम्हारे ऊपर (नियुक्त करके) भेजा, जो (बड़े) कठोर (और) युद्ध-प्रिय थे । अतएव वह (तुम्हारी) बस्तियों में (घुस कर चारों ओर) फैल गये । (और उन्होंने चुन चुन कर तुमको और तुम्हारे विद्वानों को बध कर डाला) । और (ऐसा क्यों न होता, आख़िर अल्लाह की) प्रतिज्ञा पूरी होनी ही थी ॥

फिर जब तुम दण्ड पाकर अपनी दुष्टता पर लज्जित हुये और तुमने अपने बुरे कर्मों पर पश्चाताप कर लिया, तो) हमने उन (तुम्हारे शत्रुओं) पर तुमको दूसरी बार विजयी करा दिया । (और तुम्हारे दुःख को सुख से बदल डाला) और माल (व सम्पत्ति) और बेटों से तुमको सहारा दिया । और (इस प्रकार) तुम्हारे दल को (तुम्हारे शत्रुओं से) बहुत बढ़ा दिया ॥

(इन वृतान्तों के पश्चात तुमको समझ लेना चाहिये था कि) यदि तुम नेकी करोगे, तो अपनी ही व्यक्ति के लिये करोगे । और यदि बदी करोगे, तो भी अपनी (ही) व्यक्ति के लिये करोगे । (तुम्हारी नेकी या बदी से लाभ व हानि पहुँचेगी, तो तुम ही को पहुँचेगी, न कि किसी और को । किन्तु तुमने पिछली घटनाओं को हृदय से भुला दिया) । अतएव जब (तुम्हारे काम व सदाचार की ख़राबी का वह) दूसरा समय आ गया (जिसकी तौरेत में ख़बर दी गई थी, तो हमने फिर तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे ऊपर खड़ा कर दिया । और उन्हें आज्ञा दी) कि (अबके तुमको ऐसी मार मारें कि) तुम्हारे मुंह (ही) बिगाड़ दें । और मसजिद (बैतुलमक़दस) में (उसी प्रकार) घुस पड़ें, जिस प्रकार पहिली बार लोग (उसको विजय करने के उद्देश से) उसमें घुस गये थे । और जिस वस्तु पर भी अधिकार पायें, उसे नष्ट (व भ्रष्ट) करदें ॥

(इस लिये ऐ आधुनिक समय के यहूदियो !) आश्चर्य नहीं कि तुम्हारा पालन कर्त्ता तुम पर दया करे । (और तुमको नीचता व अधोगति और क़त्ल व नष्ट होने से बचा ले) । और यदि तुम फिर (वही पिछली सी शरारतें) करोगे, तो हम भी फिर (तुम्हारे साथ वही बर्ताव) करेंगे । (और उसी प्रकार तुमको अधोगति को प्राप्त और नष्ट भ्रष्ट कर देंगे) । और हमने (तुम जैसे) काफ़िरों (और अवज्ञा करने वालों) के लिये (अपने यहाँ) नर्क का जेलख़ाना (तो) बना (ही) रक्खा है ॥

(बस नर्क की जेल से छुटकारा प्राप्त करने के लिये केवल यही एक उपाय है कि इस क़ुर्आन पर, जिसको हमने अपने भक्त मुहम्मद पर अवतीर्ण किया है--पूर्णतया अमल किया जाय) । निस्सन्देह यह क़ुर्आन (धर्म का) ऐसा मार्ग दिखाता है, जो बहुत सीधा (और साफ़) है । और उन ईमान्दारों को, जो नेक काम करते हैं--इस (बात) का मङ्गल समाचार सुनाता है कि (प्रलय में) उनको बड़ा फल मिलेगा । और यह (समझाता है) कि जो लोग प्रलय (के दिन) पर ईमान नहीं रखते, हमने उनके लिये (एक) दुखदाई अज़ाब (अपने यहाँ) तैयार कर रक्खा है ॥

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهٗ بِالْخَيْرِ ۚ وَكَانَ
الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝ وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ
فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً
لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ
وَالْحِسَابَ ۭ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ۝
وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰۗىِٕرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۭ وَنُخْرِجُ
لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ۝ اِقْرَاْ
كِتٰبَكَ ۭ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝ۭ
مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ
فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ
وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ۝ وَاِذَآ
اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا
فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا

और आदमी जिस तरह (अपने हक़ में) बेहतरी की दुआ मांगता है, उसी तरह (दिलगीर होकर कभी) बुराई की भी दुआ मांगने लगता है। और इन्सान बड़ा जल्दबाज़ है ० और हमने रात और दिन को (अपनी क़ुद्रत की) दो निशानियां क़रार दिया। सो रात की निशानी को तो हमने मांद बनाया और दिन की निशानी को हमने रोशन बनाया (कि उसमें सब चीज़ें दिखाई दें) ताकि तुम (लोग) अपने पर्वर्दिगार के फ़ज़्ल (यानी मआश) की तलाश करो और ताकि बरसों की गिनती और हिसाब को जानो। और हमने सब बातें (क़ुर्आन में) ख़ूब तफ़सील के साथ बयान करदी हैं (अज़ाँजुम्ला रात और दिन के पैदा करने की मस्लहत भी है) ० और हमने हर आदमी की बुराई भलाई को उसके साथ लाज़िम करके उस के गले का हार बना दिया है (यानी हर एक की तक़दीर हर एक के साथ है)। और क़यामत के दिन हम (उसका) नामए (आमाल) निकाल कर उसके सामने पेश कर देंगे (और वह) उसको अपने रूबरू खुला हुआ देख लेगा ० (और हम उससे कहेंगे कि यह) अपना नामए (आमाल) पढ़ले (और) आज अपना हिसाब लेने के लिये तू आप ही बस करता है० जो शख़्स सीधे रस्ते चला, तो वह अपने ही (ज़ाती फ़ायदे के) लिये सीधे रस्ते चलता है। और जो भटका, तो उसके भटकने का ख़म्याज़ा भी उसी को भुगतना पड़ेगा। और कोई (मुतनफ़्फ़िस किसी) दूसरे (मुतनफ़्फ़िस) के बार (गुनाह) को अपने ऊपर नहीं लेगा। और जब तक हम रसूल भेज (कर इत्माम हुज्जत) न (कर) लें (किसी को उस के गुनाह की) सज़ा नहीं दिया करते ० और जब हमको किसी गांव का हलाक करना मन्ज़ूर होता है, हम उसके ख़ुश हाल लोगों को (कोई सा भी) हुक्म देते हैं। फिर वह उस (बस्ती) में ना फ़र्मानियां कर चलते हैं, फिर वह बस्ती हुक्म (अज़ाब) की मुस्तहिक़ हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को मार कर तबाह कर देते हैं ० और—

और (इसके होते हुये कि हमने क़ुर्आन में मनुष्य को उसकी बुराई भलाई से भली भांति सचेत कर दिया है, किन्तु) मनुष्य (अपनी मूर्खता के कारण प्रायः अच्छे बुरे में भेद नहीं करता। और) बुराई के लिये (भी) वैसी ही अभिलाषा करता है, जैसी कि भलाई के लिये। और (इसका कारण यह है कि) मनुष्य (बहुत ही) उतावला (और अधीर) उत्पन्न हुआ है॥

और (जो लोग तुम में से ऐसे जल्दबाज़ और अधैर्यवान हैं, उन्हें सोचना चाहिये कि) हमने रात और दिन को (अपनी क़ुद्रत की) दो निशानियाँ बनाया है। रात के चिन्ह को तो हमने धुंधला (और अन्धकार पूर्ण) बनाया, और दिन के चिन्ह को (चमकदार और) रोशन बनाया है, ताकि तुम अपने पालन कर्त्ता के (पुरस्कार व) दया (अर्थात जीविका) की तलाश करो। और ताकि (महीनों और) वर्षों की संख्या और (उनका) हिसाब मालूम करो। और (ख़ुदा एक को पहिचान कर उसकी किसी बात का इन्कार न करो। और उसकी अवतीर्ण की हुई पुस्तक अर्थात क़ुर्आन, जिसमें कि हमने हर प्रश्न और) हर वस्तु को निहायत ही तफ़सील के साथ वर्णन कर दिया है-(उसको अपनी प्रचलित प्रथा बनाओ)॥

और (लोगो ! स्मरण रक्खो कि) हमने प्रत्येक मनुष्य के कर्मों को उसके गले का हार बना दिया है। (अर्थात नेकी बदी के जो काम वह करता है, वह सब उसके कर्मों की सूची में लिखे जाते हैं और उसके जीवन का अंश बन जाते हैं)। और प्रलय के दिन हम (उसके) कर्मों का खाता निकाल कर उसके सामने रख देंगे। (और) वह उसको खुला देख लेगा। (और उसका सब किया धरा उसके प्रत्यक्ष आ जायगा)॥ (उस समय उससे कहा जायगा कि) अपने कर्मों की सूची को पढ़। आज अपने (कर्मों का) हिसाब (करने) के लिये तू स्वयं ही काफ़ी है॥

(फिर उस समय उसको पता चल जायगा कि संसार में) जो कोई सच्चा मार्ग ग्रहण करता है, अपने ही (भले के) लिये ग्रहण करता है। और जो पथ भ्रष्टता में पड़ जाता है, उसकी पथ भ्रष्टता का कष्ट भी उसी पर पड़ता है। (किसी दूसरे को न उसके उपदेश ग्रहण करने से लाभ पहुँचता है) और (न उसकी पथ भ्रष्टता से कुछ हानि। अपनी करनी अपनी भरनी)। कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता। और जब तक हम (अपने किसी) रसूल को (बुराई भलाई, लाभ हानि समझाने के लिये) नहीं भेज देते, उस समय तक (किसी को अज़ाब नहीं देते॥

और (हमारा यह नियम है कि) जब हम किसी बस्ती को (जिसके निवासी अपने कुकर्मों के कारण नष्ट करने योग्य हों) नष्ट करना चाहते हैं, तो (पहिले) हम (अपने रसूल द्वारा) उस (बस्ती) के ऐश पसन्दों (और उपद्रवियों) को (अपनी आज्ञा पालन करने का) आदेश भेजते हैं। फिर (भी जब) वह नहीं मानते, और बस्ती में अवज्ञायें कर (के कुकर्मों की महामारी फैला) ते (रहते) हैं, तब उन पर समस्त चिन्हों का अन्त हो जाता है। (और) फिर हम उस बस्ती को नष्ट (व भ्रष्ट) कर डालते हैं॥

नूह के बाद हमने कितनी उम्मतों को हलाक कर मारा और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार अपने बन्दों के गुनाह जानने और देखने को बस है ० जो शख़्स दुनिया का तालिब हो, तो हम जिसे चाहते हैं (और) जितना चाहते हैं, उसी (दुनिया) में सरे दस्त उसको दे देते हैं, (मगर) फिर (आख़िरकार) हमने उसके लिये दोज़ख़ ठहरा रक्खी है, जिसमें वह बुरे हालों राँदए (दर्गाहे ख़ुदा) होकर दाख़िल होगा ० और जो शख़्स तालिब आख़िरत हो और आख़िरत के लिये जैसी कोशिश करनी चाहिये, वैसी उसके लिये कोशिश भी करे और वह ईमान भी रखता हो, तो यही लोग हैं, जिनकी मेहनत (ख़ुदा के हां) मक़बूल होगी ० (ऐ पैग़म्बर !) वह (दुनिया के तालिब) और यह (आख़िरत के तालिब) सब ही को हम तुम्हारे पर्वर्दिगार की (यानी अपनी) बख़्शिश से इम्दाद देते हैं। और तुम्हारे पर्वर्दिगार की बख़्शिश (आम है, किसी पर) बन्द नहीं ० (ऐ पैग़म्बर !) देखो (तो सही कि) हमने (दुनिया में) बाज़ लोगों को बाज़ पर कैसी बर्तरी दी है और अलबत्ता आख़िरत के दर्जे कहीं बढ़ कर हैं। और (वैसे ही उस दिन की) बर्तरी (भी) कहीं बढ़ कर है ० (ऐ पैग़म्बर !) ख़ुदा के साथ कोई दूसरा माबूद न बनाना, वर्ना तुम ऐसे (बद हाल) बैठे रह जाओगे कि (ख़ुदा और फ़रिश्ते और ईमान वाले सब) तुमको नफ़रीं करेंगे और तुमको (तनहा बे पनाह) छोड़ बैठेंगे ० और तुम्हारे पर्वर्दिगार ने हुक्म क़तई दे दिया है कि (लोगो !) उसके सिवा किसी की इबादत न करना और वालिदैन के साथ हुस्न सुलूक से पेश आना। (ऐ मुख़ातब !) अगर वालिदैन में का एक या दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुँचें, तो उनके आगे हूँ भी न करना और न उनको झिड़कना —

४

مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ بَعْدِ نُوْحٍ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ
عِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ
عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ
جَهَنَّمَ يَصْلٰهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝ وَمَنْ اَرَادَ
الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ
كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ۝ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ
وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ
مَحْظُوْرًا ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ
عَلٰى بَعْضٍ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ۝
لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا
مَّخْذُوْلًا ۝ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَ
بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ
اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْ

और (क़ौम) नूह के पश्चात हमने बहुत सी (अवज्ञाकारी) उम्मतों को इसी प्रकार नष्ट कर दिया है। और (ऐ रसूल !) तुम्हारा पालन कर्त्ता अपने बन्दों के (प्रगट व गुप्त--हर प्रकार के) गुनाहों की ख़बर रखने (और उनके) देखते रहने को (बहुत) काफ़ी है ॥

(जिन अदूर दर्शियों की हिम्मतें दुनिया ही तक परिमित हैं और) जो (केवल) संसार (ही) का (अस्थायी) लाभ चाहते हैं (और प्रलय की परवाह नहीं करते--हम उन लोगों में से) जिसको (देना) चाहते हैं (और) जितना (भी देना) चाहते हैं, तुरन्त इस संसार (ही) में उसको दे देते हैं। (परन्तु इस संसार के बीत जाने के पश्चात) फिर हमने उसके लिये नर्क कुण्ड तैयार कर रक्खा है। उसमें वह दुर्दशा को प्राप्त होकर (और ख़ुदाई द्वार से) निर्वासित होकर प्रविष्ट होगा (और अपने कर्मों का फल पावेगा) ॥

और जो (असार संसार के रहस्य से सचेत होकर) प्रलय (के कल्याण) का अभिलाषी हो, और उसके लिये जितना प्रयत्न करना चाहिये, उतना प्रयत्न भी करता हो, और ईमानदार भी हो, तो यही वह (भाग्यवान मनुष्य) है, जिसका प्रयत्न (सफल और अल्लाह के नज़दीक) स्वीकृत होगा। (और वह अपनी अभिलाषाओं और इच्छाओं से अधिक अपने शुभ कर्मों का फल पायेगा) ॥

(ऐ रसूल !) तुम्हारे पालन कर्त्ता के पुरस्कार से हम इन (संसार के इच्छुकों) और इन (स्वर्ग के इच्छुकों) सब ही की सहायता करते हैं। और तुम्हारे पालन कर्त्ता के साँसारिक प्रसाद किसी पर बन्द नहीं हैं।(काफ़िरों को भी इनमें भाग मिलता है और ईमानदारों को भी)॥

(अतएव) देख लो कि हमने (इस संसार में धन, दौलत और साँसारिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से) एक को एक पर किस प्रकार श्रेष्ठता दे रक्खी है (कि इसमें काफ़िर व मोमिन का कोई भेद नहीं है)। हाँ अलबत्ता परलोक (जो अपनी) उन्नति की दृष्टि से और (अपने) बड़प्पन की दृष्टि से (इस असार संसार से) बहुत बढ़ा हुआ है—(उसके पुरस्कार विशेषतः मोमिनों ही के लिये हैं) ॥

(अतएव ऐ मनुष्य ! यदि तू प्रलय के फल का अभिलाषी है, तो) अल्लाह के साथ (आधीनता व उपासना में किसी) दूसरे को (सम्मिलित) न कर, अन्यथा (कष्ट के समय कोई तेरी सहायता न करेगा। और) तू (हर ओर से निराश और) लज्जित व अपमानित होकर बैठ रहेगा ॥

और (स्मरण रख कि) तेरा पालन कर्त्ता (लोगों को) यह हुक्म दे चुका है, कि तुम उसके अतिरिक्त किसी की उपासना न करना। और (अपने) माता पिता के साथ प्रेम पूर्ण व्यवहार करना। यदि इन दोनों में से (कोई) एक या दोनों (के दोनों) तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जावें, तो तुम (उस समय उनकी आधीनता व सेवा का विशेष रूप से ध्यान रखना। और उनके कारण चाहे तुम्हें कैसा ही कष्ट क्यों न उठाना पड़े, कभी) उनके आगे उफ़ तक न करना, और न (कभी) उनको झिड़कना--

هُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ○ وَاخْفِضْ لَهُمَا
جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا
رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ○ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ إِنْ
تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ○
وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهُ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ
وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ○ إِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْا إِخْوَانَ
الشَّيٰطِيْنِ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهِ كَفُوْرًا ○ وَإِمَّا
تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا
فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ○ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً
إِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ
مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ○ إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ
وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ وَلَا ع
تَقْتُلُوْا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ

وَإِيَّاهُمْ

और उनसे (कुछ) कहना (सुनना हो, तो) अदब के साथ कहना (सुनना) ० और महब्बत से ख़ाकसारी का पहिलू उनके आगे झुकाए रखना। और (उनके हक़ में) दुआ करते रहना कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! जिस तरह उन्होंने मुझे छोटे से को पाला है (और मेरे हाल पर रह्म करते रहे हैं) इसी तरह तू भी इन पर (अपना) रह्म कीजो ० (लोगो !) तुम्हारे दिल की बात को तुम्हारा पर्वर्दिगार ख़ूब जानता है। अगर तुम (हक़ीक़त में) सआदतमन्द हो (और तुमसे माँ बाप के हक़ में भूले से कोई फ़रोगुज़ाश्त भी हो गई होगी) तो (वह तुमको माफ़ कर देगा। क्योंकि) वह तौबा करने वालों (की ख़ताओं का) बख़्शने वाला है ० और रिश्तेदार और ग़रीब और मुसाफ़िर (हर एक) को उसका हक़ पहुँचाते रहो और (दौलत को) बेजा मत उड़ाओ ० (क्योंकि दौलत के) बेजा उड़ाने वाले शैतानों के भाई हैं, और शैतान अपने पर्वर्दिगार का बड़ा ही ना शुक्र है ० और अगर तुमको अपने पर्वर्दिगार के फ़ज़्ल के इन्तिज़ार में जिसकी तुमको तवक़्क़ो हो (ब मजबूरी) इन (ग़ुरबा) से मुंह फेरना पड़े, तो नर्मी से इनको समझादो ० और अपना हाथ न तो इतना सुकेड़ो कि (गोया) गर्दन में बंधा है और न बिलकुल उसको फैला ही दो। (ऐसा करोगे) तो तुम ऐसे बैठे रह जाओगे कि लोग तुमको मलामत भी करेंगे (और) तुम तिही दस्त भी होगे ० (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार जिसकी रोज़ी चाहता है, फ़राख़ कर देता है और (जिसकी रोज़ी चाहता है) नपी तुली कर देता है। (और) वह अपने बन्दों (के हाल) से बा ख़बर (और उनकी ज़रूरतों का) देखने वाला है ० और (लोगो !) इफ़्लास के डर से अपनी औलाद को क़त्ल न करो। उनको और तुमको हम ही रोज़ी देते हैं—

और (सदैव) उनके साथ आदर से बात करना ॥

और प्रेम से उनके सामने नम्रता (व आधीनता) के साथ झुके रहना। और (उनके लिये अल्लाह से) प्रार्थना करते रहना कि ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! (मेरे इन) दोनों (पूर्वजों) पर (अपनी) कृपा कर (और) जैसा कि उन्होंने (लाड़ प्यार से) मुझको छोटा सा पाला (और पाल पोष कर जवान कर दिया, ऐसे ही आज तू इनकी विवशता के समय इनकी दशा पर दया कर) ॥

(और जिस तरह तुम्हारे माता पिता तुम्हें दिल से प्यार किया करते हैं, उसी प्रकार तुम्हारा बर्ताव भी उनके साथ सच्चा और निष्कपट होना चाहिये। यदि तुम्हारा बर्ताव केवल दिखावटी रूप से हुआ और तुम्हारे हृदय में उनके प्रेम व आज्ञा पालन का भाव पैदा न हुआ, तो स्मरण रक्खो कि) तुम्हारा पालन कर्त्ता तुम्हारे हृदय की बातें भली भांति जानता है (वह तुम्हारी इस दुनिया दिखावे की सेवा का तुमको कुछ भी फल न देगा। हाँ) यदि (वास्तव में) तुम नेक हो (और कभी उनके प्रति कर्त्तव्य पालन में तुमसे कोई त्रुटि या उन के प्रति धृष्टता या उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई बात हो जावे और फिर बाद में तुम उस से तौबा करलो) तो वह (तुमको क्षमा कर देगा। क्योंकि वह) तौबा करने वालों (के अपराधों) को क्षमा करने वाला (और उनकी दशा पर दयालु) है ॥

और (लोगो ! माता पिता के अतिरिक्त दूसरे) रिश्तेदारों, अपाहिजों और यात्रियों के भी हुक़ूक़ अदा किया करो। और (माल व दौलत को) व्यर्थ (और बे मौक़े) मत ख़र्च किया करो ॥

क्योंकि (माल व दौलत को) व्यर्थ व्यय करने वाले शैतानों के भाई हैं। और शैतान अपने पालन कर्त्ता का (बड़ा) कृतघ्न है। (यह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाले भी शैतान की तरह अल्लाह की नेअमतों की कृतघ्नता और अनादर करते और संसार में विद्रोह फैलाते हैं) ॥

और (देखो !) यदि तुमको अपने पालन कर्त्ता की मेहरबानी (अर्थात जीविका और रुपये पैसे) के इन्तिज़ार में जिस (के आने) की तुमको आशा हो, उन (हक़दारों) से मुंह मोड़ना पड़े, तो (शाँति और) नम्रता से उनको समझा दिया करो। (किसी प्रार्थी या हक़दार के साथ कठोर व्यवहार करना उचित नहीं) ॥

और (यदि ख़ुदा तुमको किसी योग्य करे, तो दान पुण्य और फ़ुटकर ख़र्च में बीच की राह ग्रहण करना)। न तो अपने हाथ को अपनी गर्दन ही से बाँध लेना (और) बिल्कुल रोक ही लेना (कि किसी को कुछ दो ही नहीं और कुछ व्यय ही न करो)। और न उस को बिल्कुल खोल ही देना (कि लगो अन्धा धुन्ध उड़ाने। ऐसा करोगे) तो तुम (संसार से) बुरे (बन जाओगे और) ख़ाली हाथ होकर बैठ रहोगे ॥

निस्सन्देह तुम्हारा पालन कर्त्ता जिसको चाहता है, अधिक अन्न देता है। और (जिसको चाहता है, अन्न से) तंग कर देता है। निस्सन्देह वह अपने बन्दों (की दशा) को जानने वाला (और उनके कामों को) देखने वाला है। (उसके पुरस्कार का अधिकारी वही मनुष्य होता है, जो उसकी आज्ञाओं पर अमल करता है) ॥

और (लोगो !) अपनी सन्तान को निर्धनता (के भय) से न मार डाला करो। हम ही उनको भी अन्न देते हैं—

وَإِيَّاكُمْ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْأً كَبِيرًا ۝ وَلَا
تَقْرَبُوا الزِّنَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا
وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَن
قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهِ سُلْطَانًا فَلَا
يُسْرِف فِّي الْقَتْلِ إِنَّهُ كَانَ مَنصُورًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوا
مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ
أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا
وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ
الْمُسْتَقِيمِ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝ وَلَا تَقْفُ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ
كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۝ وَلَا تَمْشِ
فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن
تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۝ كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِندَ

औलाद का जान से मारना बड़ा भारी गुनाह है ० और ज़िना के पास (होकर भी) न फटकना, क्योंकि वह बे हयाई है। और (बहुत ही) बुरा चलन है ० और (किसी की) जान को जिसका मारना अल्लाह ने हराम कर दिया है, नाहक़ क़त्ल न करना और जो शख़्स ज़ुल्म से मारा जाए, तो हमने उसके वाली (वारिस) को (क़ातिल से क़िसास लेने का) इख़्तियार दिया है। तो उसको चाहिये कि ख़ून (का बदला लेने) में ज़ियादती न करे, क्योंकि (वाजिबी बदला लेने में भी) उसकी जीत है ० और जब तक यतीम अपनी जवानी को न पहुँच ले, उसके माल के पास भी न जाना, मगर ऐसी तरह पर कि (यतीम के हक़ में) बेहतर हो। और अहद को पूरा किया करो, क्योंकि (क़यामत में) अहद की बाज़ पुर्स होगी ० और जब माप कर दो, तो पैमाने को पूरा भर कर दिया करो। और (तोल कर देना हो,तो) डंडी सीधी रख कर तोला करो। (मामिले का) यह बेहतर (तरीक़) है और (इसका) अंजाम भी अच्छा है ० और (ऐ मुख़ातब !) जिस बात का तुझको इल्म (यक़ीनी) नहीं (अटकल पच्चू) उसके पीछे न हो लिया कर, क्योंकि कान और आंख और दिल इन सब से (क़यामत के दिन) पूछ गछ होनी है ० और ज़मीन में अकड़ कर न चला कर, क्योंकि (इस धमाके के साथ चलने से) तू ज़मीन को तो फाड़ नहीं सकेगा और न (तन कर चलने से) पहाड़ों की लम्बाई को पहुँच सकेगा ० (ऐ पैग़म्बर !) इन सब बातों में जो जो बुरी हैं, सब ही तो—

और तुमको भी। सन्तान को मार डालना बड़ा घोर पाप है॥

और (लोगो !) व्यभिचार के पास भी न जाया करो, क्योंकि वह (बड़ी) निर्लज्जता और बद चलनी की बात है॥

और जिस (के बध) को अल्लाह ने हराम कर दिया है, उसको व्यर्थ (व बिना कारण) बध न करो। (अर्थात ऐसे अवसरों के अतिरिक्त जब कि किसी का बध करना धार्मिक नीति के अनुकूल हो; जैसे क़िसास अर्थात बदला लेना इत्यादि)। और जो(मनुष्य) अत्याचार पीड़ित होने की दशा में (अर्थात व्यर्थ) बध किया जाय, तो हमने इस (बध किये हुये और अत्याचार पीड़ित मनुष्य) के संरक्षक (व उत्तराधिकारी) को (बदला लेने का) अधिकार दिया है, तो उसको चाहिये कि बध (का बदला लेने) में (नैतिक सीमा से) आगे न बढ़े। (अर्थात मुख्य बधिक को छोड़ कर किसी और की जान लेने की इच्छा न करे, न एक के अतिरिक्त दो से बध किये हुये का बदला चाहे, न बधिक के बध में या बध के पश्चात उसके साथ पाशविक अत्याचार करे। उसके लिये यही काफ़ी है कि) उसको (बधिक से प्रतिकार लेने का) अधिकार दे दिया गया है॥

और (देखो !) अनाथ बालक जब तक कि वह अपनी युवा अवस्था को न पहुँच जाय, उसके माल के पास भी न जाना (और उसे हाथ न लगाना) ऐसी दशा के अतिरिक्त कि (उसके माल में अधिकार प्राप्त करना उसके पक्ष में) उत्तम हो। और (जो) प्रण (तुम करलो, उस) को (सदैव) पूरा करना। निस्सन्देह प्रण (तोड़ने) के सम्बन्ध में (तुमसे) उत्तर माँगा जावेगा॥

और (लेन देन में अन्याय न किया करो। किसी को कोई वस्तु नाप तोल कर देनी हो, तो) जब नापा करो, तो पैमाना पूरा कर दिया करो। और (जब कोई वस्तु तोलनी हो, तो) ठीक तराज़ू से तोला करो। यह (ही तुम्हारे पक्ष में) उत्तम है और फल की दृष्टि से (तुम्हारी व्यक्ति के लिये भी) बहुत अच्छा है। (कम नापने तोलने में जो प्रकट रूप से तुमको लाभ प्रतीत होता है, वह फल की दृष्टि से लाभ नहीं, वरन् हानि है)॥

और जिस वस्तु का तुमको (ठीक) ज्ञान न हो (अटकल पच्चू) उसके पीछे न हो लिया करो। (वरन् अल्लाह तआला ने जो कर्म इन्द्रियाँ और ज्ञान इन्द्रियाँ तुमको दी हैं, उनसे काम लिया करो)॥

(क्योंकि प्रलय के दिन) कान और नेत्र और हृदय इन सब से प्रश्न किया जावेगा (कि उन्होंने अपने कर्तव्य को क्यों कर पूरा किया, और क्यों उनके पूरा करने में त्रुटि की)॥

और पृथ्वी में (इतराते हुये और) अकड़ते हुये न चला करो। क्योंकि न तो तुम (पृथ्वी में ज़ोर ज़ोर से पग रख कर) पृथ्वी को फाड़ सकते हो, और (न गर्दन को लम्बा करके) पर्वत की ऊँचाई को पहुँच सकते हो॥ यह सब बुरे काम—

رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۝ ذٰلِكَ مِمَّا أَوْحٰى إِلَيْكَ رَبُّكَ
مِنَ الْحِكْمَةِ ۗ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا آخَرَ
فَتُلْقٰى فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَدْحُورًا ۝ أَفَأَصْفٰكُمْ
رَبُّكُمْ بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰئِكَةِ إِنَاثًا ۚ
إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا ٤
فِي هٰذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا ۖ وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا
نُفُورًا ۝ قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ
إِذًا لَابْتَغَوْا إِلٰى ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۝ سُبْحٰنَهُ
وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ
السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا
يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلٰكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ۗ
إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ
جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ

तुम्हारे पर्वर्दिगार के नज़दीक ना पसंद है ० और (ऐ पैग़म्बर !) यह बातें (भी) उन अक़ल (व दानिश) की बातों में से हैं, जिनको तुम्हारे पर्वर्दिगार ने तुम्हारी तरफ़ वही किया है। और .ख़ुदा के साथ कोई माबूद न बनाना, वर्ना तुम मुल्ज़िम (और) रांदए (दर्गाह) बनाकर जहन्नम में झोंक दिये जाओगे ० (ऐ मुश्रिकीन !) क्या तुम्हारे पर्वर्दिगार ने तुमको बेटों के लिये ख़ास किया और आप बेटियाँ लीं (यानी) फ़रिश्ते। (यह तो) तुम बड़ी (ही सख़्त) बात कहते हो ० और हमने इस .क़ुर्आन में (लोगों को) तरह तरह से समझाया, ताकि यह लोग (किसी तरह) समझें-मगर इससे इनकी नफ़्रत ही बढ़ती गई ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अगर .ख़ुदा के साथ जैसा (कि यह लोग) कहते हैं (और) माबूद (भी) होते, तो इस सूरत में उन माबूदों ने (कभी का) मालिक अर्श (यानी .ख़ुदा) तक (पहुँचने का) रस्ता ढूंढ निकाला होता ० जैसी (जैसी नालायक़) बातें यह लोग (.ख़ुदा की निस्बत) कहते हैं, उनसे वह पाक और बालातर है ० सातों आस्मान और ज़मीन और जो (फ़रिश्ते और आदमी) आस्मान व ज़मीन में हैं, (सब) उसकी तस्बीह (व तक़दीस) में लगे हैं। और जितनी चीज़ें हैं, सब उसकी हम्द (व सना) के साथ उस की तस्बीह (व तक़दीस) कर रही हैं, मगर तुम लोग उनकी तस्बीह (व तक़दीस) को नहीं समझते। इसमें शक नहीं कि वह बड़ा ही तहम्मुल वाला और बड़ा ही दरगुज़र करने वाला है (कि फ़ौरन आदमियों को उन की ना फ़र्मानी की सज़ा नहीं देता) ० और (ऐ पैग़म्बर !) जब तुम .क़ुर्आन पढ़ते होते हो, तो हम तुम में और उन लोगों में जिनको आख़िरत का यक़ीन नहीं—

(जिनके करने से तुमको रोका गया है) तुम्हारे पालन कर्त्ता के समीप सारे (के सारे) ना पसन्द हैं। (इस लिये यदि तुम अपने .ख़ुदा की प्रसन्नता और अपने परलोक को दुरुस्ती चाहते हो, तो उनसे बचने की पूरी कोशिश करो) ॥

(ऐ रसूल !) यह समस्त (उपदेश भी) हिकमत की उन बातों में से हैं, जिनको तुम्हारे पालन कर्त्ता ने वही द्वारा तुम्हारे पास भेजा है। (इस लिये तुम्हें चाहिये कि उस पर चलो) और अल्लाह के साथ (जिसने तुमको ऐसे बुद्धिमता युक्त उपदेश दिये हैं) किसी और पूज्य को (आधीनता व उपासना में सम्मिलित) न ठहराओ। अन्यथा तुम (लोक व परलोक में) बुरे (और) अपमानित करके नर्क में डाल दिये जाओगे ॥

और (ऐ मुश्रिको ! तुम्हारी बुद्धियों पर कैसे पत्थर पड़े हैं कि तुम फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां बताते हो, तो) क्या तुम्हारे पालन कर्त्ता ने तुमको चुन चुन कर बेटे दिये हैं और स्वयं फ़रिश्तों को (अपनी) बेटियां बनाया है। निस्सन्देह (अल्लाह की शान में सन्तान का सिद्ध करना और उस सन्तान का, जो तुम्हारे निकट बुरी है, बहुत बड़े अनादर की बात है)। तुम (जो बे सोचे समझे इतनी) बड़ी बात कहते हो (बहुत बड़ी मूर्खता करते हो) ॥

और (इसके होते हुये भी कि) हमने (शिर्क की बुराई और तौहीद की प्रशंसा) इस .क़ुर्आन में (इन लोगों के सामने) अनेक प्रकार वर्णन किया है, ताकि यह भली भांति समझ लें। (परन्तु शोक है कि इन पर उसका कुछ भी प्रभाव न हुआ) और इस (समझाने) से (तौहीद की ओर से) उनको घृणा ही (और) अधिक होती गई ॥

(ऐ रसूल ! तुम उन लोगों को फिर समझाओ और उनसे) कहो कि यदि अल्लाह के साथ जैसा कि यह (लोग) कहते हैं (कुछ) और पूज्य होते (और उन्हें अल्लाह की तरह कोई बल व शक्ति प्राप्त होती) तो वह निश्चित रूप से अर्श के स्वामी तक (पहुँचने और उसके अधिकारों में झकड़ने का) मार्ग ढूंढते। (और उनके परस्पर के झगड़ों से संसार का समस्त प्रबन्ध व संगठन छिन्न भिन्न हो जाता) ॥

इन (समस्त बेहूदा बातों) से जो यह मुश्रिक लोग (अल्लाह के सम्बन्ध में) कहते हैं (अल्लाह का व्यक्ति) मुक्त और (उनसे) बहुत उच्च व श्रेष्ठ है ॥

सातों आस्मान और ज़मीन और जो (प्राणी) उन (दोनों) में (वर्तमान) हैं, वह सब (एक स्वर में अल्लाह के एक होने की साक्षी देती हैं। और) उसकी पवित्रता (व श्रेष्ठता) का वर्णन कर रही हैं। और कोई वस्तु भी ऐसी नहीं, जो उसकी प्रशंसा का गीत न गा रही हो। परन्तु (ऐ मूर्खो !) तुम उनकी पवित्रता (व बड़ाई) को (अपनी बे अक़्ली के कारण) समझ नहीं सकते। निस्सन्देह अल्लाह तआला बड़ा सहन शील (और) क्षमा करने वाला है (जो तुम जैसों को तुम्हारी मूर्खता की सज़ा तुरन्त नहीं देता) ॥

और जो लोग प्रलय पर ईमान नहीं रखते (उन पर .क़ुर्आन की नसीहतों का प्रभाव इस लिये नहीं होता कि द्वेष और अन्ध अनुकरण ने सत्य ग्रहण करने की पात्रता को उनके हृदयों से नष्ट कर दिया है। इस लिये) जब तुम .क़ुर्आन (मजीद) को (उनके सन्मुख) पढ़ते हो (और उसकी आज्ञाओं व उपदेशों को उन्हें पढ़ कर सुनाते हो, तो) हम तुम्हारे और उनके बीच—

حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۝ وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً
اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِذَا ذَكَرْتَ
رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓي اَدْبَارِهِمْ
نُفُوْرًا ۝ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ
اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ
تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا
لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا
وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ
خَلْقًا جَدِيْدًا ۝ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ۝
اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ
يُّعِيْدُنَا ۭ قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ
اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ۭ قُلْ عَسٰٓى اَنْ
يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ

एक गाढ़ा पर्दा (हायल) कर देते हैं (ताकि राह हक़ न देख सकें) ० और उनके दिलों पर ग़िलाफ़ डाल देते हैं, ताकि .कुरआन को समझ न सकें। और उनके कानों में (एक तरह की) गरानी (पैदा कर देते हैं, ताकि सुन न सकें)। और जब तुम .कुरआन में तनहा अपने पर्वर्दिगार वहदहू (ला शरीक लहू) का ज़िक्र करते हो, तो काफ़िर नफ़्रत करके पीठ फेर (फेर) कर भाग खड़े होते हैं ० जब यह लोग तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं, तो जिस नीयत से सुनते हैं, हमको .खूब मालूम है। और जब यह ज़ालिम सर्गोशियाँ करते वक़्त (एक दूसरे से) कहते होते हैं कि तुम तो बस एक (बावले) आदमी के पीछे पड़े हो. जिस पर किसी ने जादू कर दिया है (तो उनका यह कहना भी हमको .खूब मालूम है) ० (ऐ पैग़म्बर !) देखो (तो सही) तुम्हारी निस्बत कैसी कैसी बातें बनाते हैं, तो (इन ही बातों की वजह से) यह लोग गुमराह हुए और अब (हक़ का) रस्ता नहीं पा सकते ० और कहते हैं कि क्या जब हम (मरे पीछे गल सड़ कर) हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएँगे, तो क्या (ऐसी हालत में) हमको (क़यामत के दिन) अज़ सरे नव पैदा करके उठा खड़ा किया जायगा ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि तुम (मरे पीछे) पत्थर या लोहा ० या कोई और चीज़ भी बन जाओ, जो तुम्हारे ख़याल में बड़ी (सख़्त) हो (और उसका ज़िन्दा होना तुम्हारे नज़दीक दुश्वार हो, तो भी तुम ज़िन्दा होकर रहोगे)। इस पर (यह लोग तुमसे) पूछेंगे कि (भला इस सूरत में) हमको दुबारा कौन ज़िन्दा कर सकेगा ? (तुम इनसे) कहो कि वही (.खुदा) जिसने तुमको अव्वल बार पैदा किया। इस पर यह लोग तुम्हारे आगे सर मटकाने लगेंगे और पूछेंगे कि भला क़यामत कब आएगी? (तुम इनसे) कहो अजब नहीं कि क़रीब आ लगी हो ० जब कि .खुदा तुमको बुलाएगा, तो तुम उसके हुक्म की तामील करोगे। (यानी) उसकी तारीफ़ करते हुए (क़ब्रों से निकल निकल कर चले आओगे)–

(उस पक्षपात का) एक पर्दा उपस्थित कर देते हैं (जिसके कारण वह सत्य के ग्रहण करने की पात्रता से वञ्चित रहते हैं) ॥

और हम (.कुरआन समझने के मामले में) उनके हृदयों पर (उनकी मूर्खता व अज्ञानता का) आवरण चढ़ा देते हैं। (और उनको इस दशा में छोड़ देते हैं) कि वह इस (.कुरआन) को समझने योग्य (ही) न रहें। और उनके कानों में डाट लगा देते हैं (कि कोई सत्य बात सुन ही न सकें) ॥

और जब तुम .कुरआन में केवल अपने पालन कर्त्ता (अर्थात एक .खुदा) का ज़िक्र पढ़ते हो (और उनके असत्य पूज्यों की बुराई करते हो) तो वह घृणा करते हुये पीठ फेर कर (तुम्हारे पास से) चले जाते हैं ॥

(ऐ रसूल !) जिस समय यह लोग (.खुदा का कलाम सुनने के लिये) तुम्हारी ओर कान लगाते हैं (तो) जिस विचार से यह (उसकी ओर ध्यान देते और उसको) सुनते हैं, हमको भली भाँति विदित है। (हम जानते हैं कि केवल उन्हें तुम्हारा और .खुदा के कलाम का मज़ाक़ उड़ाना मक़्सूद होता है)। और जब यह अत्याचारी (परस्पर) काना फूसी करते समय (अपनी जाति के ईमान्दार लोगों से) कहते हैं कि तुम तो केवल एक ऐसे मनुष्य का अनुकरण कर रहे हो (जिसकी बुद्धि नष्ट हो गई है। और) जिस पर किसी ने जादू कर दिया है (तो हमें उसका हाल भी भली भाँति मालूम होता है) ॥

(ऐ रसूल !) देखो तुम्हारे प्रति यह कैसी कैसी (अनुचित) बातें बकते हैं। अतः (इसी प्रकार की बेहूदगियों से) यह लोग पथ भ्रष्ट हो गये हैं। और (अब कभी सच्चे) मार्ग (को) नहीं पा सकते ॥

और (धर्म से यह लोग इतने विमुख हो गये हैं कि) कहते हैं कि क्या जब हम (मर कर) हड्डियाँ और रेज़ा रेज़ा हो जायँगे, तो क्या फिर हम नये सिरे से उत्पन्न और जीवित किये जावेंगे ॥

(ऐ रसूल !) तुम (इन लोगों से) कहो कि (प्रलय के दिन हड्डियों या हड्डियों के चूरे से तुमको उत्पन्न कर देना कौन सा कठिन काम है)। तुम (यदि बिल्कुल काया पलट होकर) पत्थर या लोहा या कोई और वस्तु बन जाओ, जो तुम्हारे विचार में बड़ी (कठिन प्रतीत होती) हो (तब भी तुम पैदा होकर ही रहोगे) ॥

इस पर (ऐ रसूल !) यह (तुमसे) कहेंगे कि हमको कौन दुबारा उत्पन्न करेगा ? (तो) तुम (इनसे) कह देना कि जिसने तुमको पहिली बार उत्पन्न किया था। फिर यह (मनुष्य) तुम्हारे आगे अपने सिरों को मटकाने लगेंगे और कहेंगे वह (दिन जिसमें कि हम दूसरी बार उत्पन्न किये जायँगे) कब (तक) आयेगा ? (तो) तुम (उनसे) कहना कि (लोगो ! अचेतना की निद्रा से जाग जाओ। बहुत) सम्भव है कि वह (दिन बिल्कुल) समीप आ लगा हो ॥

(और याद रक्खो कि वह दिन होगा) जिस दिन कि अल्लाह तआला तुमको पुकारेगा, तो तुम्हें उसकी स्तुति (व प्रशंसा) करते हुये उसकी आज्ञा का पालन (ही) करना होगा। (और तुम सब अपनी २ क़ब्रों से उठ खड़े होगे)–

وتظنون ان لبثتم الا قليلا ۝ وقل لعبادي
يقولوا التي هي احسن ان الشيطن ينزغ بينهم
ان الشيطن كان للانسان عدوا مبينا ۝ ربكم
اعلم بكم ان يشا يرحمكم او ان يشا يعذبكم و
ما ارسلنك عليهم وكيلا ۝ وربك اعلم بمن
في السموت والارض ولقد فضلنا بعض
النبيين على بعض واتينا داود زبورا ۝ قل ادعوا
الذين زعمتم من دونه فلا يملكون كشف
الضر عنكم ولا تحويلا ۝ اولئك الذين يدعون
يبتغون الى ربهم الوسيلة ايهم اقرب ويرجون
رحمته ويخافون عذابه ان عذاب ربك
كان محذورا ۝ وان من قرية الا نحن مهلكوها
قبل يوم القيمة او معذبوها عذابا شديدا ۝

كان

और ख़याल करोगे कि (मरे पीछे) बस थोड़े ही दिनों (हालत मर्ग में) रहे ० और (ऐ पैग़म्बर !) हमारे बन्दों (यानी मुसलमानों) को समझादो कि (मुख़ालिफ़ीन से कोई बात कहें भी, तो) ऐसी कहें कि वह (अख़्लाक़ के एतिबार से) बेहतर हो, क्योंकि शैतान (सख़्त बात कहलवाकर) लोगों में फ़साद डलवाता है। (और) इसमें शक नहीं कि शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है • (लोगो !) तुम्हारा पर्वर्दिगार तुम्हारे हाल से ख़ूब वाक़िफ़ है। चाहे (रह्म का मुस्तहिक़ समझ कर) तुम पर रह्म करे और चाहे (अज़ाब का मुस्तहिक़ समझ कर) तुमको अज़ाब दे। और (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुमको लोगों का ठेकेदार बनाकर तो भेजा नहीं ० और (ऐ पैग़म्बर ! फ़रिश्ते और जिन व इन्सान) जो आस्मान व ज़मीन में हैं, तुम्हारा पर्वर्दिगार उन (के हाल) से ब ख़ूबी वाक़िफ़ है। और हमने बाज़ पैग़म्बरों को बाज़ पर बर्तरी दी और हम ही ने दाऊद को ज़बूर(किताब) अता फ़र्माई ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि ख़ुदा के सिवा जिन (माबूदों) को तुम (शरीक ख़ुदाई) समझते हो (हाजत पड़े पर) उन को बुला देखो, तो यह (तुम्हारे माबूद) न तो तुमसे तकलीफ़ को दूर कर सकेंगे और न (उसको) बदल सकेंगे ० यह लोग जिनको मुश्रिकीन (हाजत रवा समझ कर) बुलाते हैं, इनमें से जो दूसरों की निस्बत ज़ियादा मुक़र्रब हैं, वह (भी) अपने पर्वर्दिगार (की और ज़ियादा क़ुर्बत हासिल करने) के ज़रिये तलाश करते रहते और उसकी रह्मत की उम्मीद रखते और उसके अज़ाब से डरते रहते हैं। (और) वाक़े में तुम्हारे पर्वर्दिगार का अज़ाब डरने की चीज़ है (भी) ० और (ना फ़र्मान लोगों की) कोई बस्ती नहीं, मगर रोज़ क़यामत से पहिले (पहिले ना फ़र्मानी की सज़ा में या तो) हम उसको हलाक करके रहेंगे या उसको (कोई और) अज़ाब सख़्त देंगे ०—

और (उस दिन) तुम विचार करोगे कि तुम (दुनिया व क़ब्र में बहुत) थोड़े (दिन) ठहरे (और वास्तव में तुमको प्रलय का अधिक इन्तिज़ार करना नहीं पड़ा) ॥ और (ऐ रसूल !) हमारे (ईमान्दार) बन्दों से कहदो कि वह (इन काफ़िरों के कथन व कामों से प्रभावान्वित होकर कोई असभ्यता पूर्ण शब्द मुख से न निकाला करें। बल्कि जब वार्तालाप की नौबत आये, तो उनसे) वह बात कहें, जो (नीति की दृष्टि के अनुकूल व उचित और) अच्छी हो। (और शैतान के बहकाये में आकर कोई अनुचित बात ज़बान पर न लायें) क्योंकि शैतान (का काम यह है कि वह) लोगों में (झगड़ा और) फ़साद डलवा देता है। निस्सन्देह शैतान, मनुष्य का प्रकट शत्रु है ॥

(लोगो !) तुम्हारा पालन कर्त्ता तुम (सब मोमिनों और काफ़िरों की दशा) से भली भांति परिचित है (कि तुम में से कौन कृपा व दया के योग्य है, और कौन अज़ाब व क्रोध के योग्य है)। वह यदि चाहे, तो तुम पर दया (व कृपा) करे (अर्थात शिक्षा ग्रहण करने की शक्ति देदे)। या यदि वह चाहे, तो तुमको (उपदेश से विमुख रख कर) अज़ाब (पाने का अधिकारी ठहरा) दे। और (ऐ रसूल !) हमने तुमको लोगों (के ईमान) का ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा। (तुम्हारा काम तो केवल हमारे आदेशों का पहुँचा देना है। ईमान क़बूल करना न करना, उनका काम है) ॥

और तुम्हारा पालन कर्त्ता (केवल तुम्हारी ही दशा से नहीं, वरन्) उन (समस्त जिन्नात और मनुष्यों और फ़रिश्तों के वृतान्त) से भली भांति अभिज्ञ है, जो आकाशों और पृथ्वी में हैं। (जिसमें जैसी पात्रता पाता है, उसको वैसी ही वस्तुएँ प्रदान करता है)। और (हमारा यह नियम केवल साधारण मनुष्यों ही के साथ नहीं है, वरन् नबियों के साथ भी हमारा यही व्यवहार है। अतएव) हमने कुछ नबियों को (भी कुछ दृष्टियों से कुछ पर श्रेष्ठता प्रदान की है)। और (यह श्रेष्ठता देश व धन इत्यादि किसी सांसारिक विशेषता पर नहीं, वरन् उनकी आत्मिक और नैतिक पात्रता के आधार पर प्रदान की गई है। अतएव) दाऊद को (जो) हमने ज़बूर (किताब) दी (थी, वह भी इस कारण नहीं दी थी, कि वह देश के स्वामी व धनी थे। वरन् इस कारण दी थी, कि वह ज़बूर प्राप्त करने और नबी बनने की पात्रता रखते थे)॥

(ऐ रसूल !) तुम उन लोगों से, जो अल्लाह के अतिरिक्त (फ़रिश्तों और जिनों इत्यादि को अपना) पूज्य समझे हुये हैं, कहो कि (अपने इन पूज्यों को अपनी सहायता के लिये) पुकारो, तो (तुमको प्रतीत हो जायगा कि जिन्हें तुम अपना सच्चा पूज्य समझते हो) वह (इस क़दर विवश हैं, कि) न तो तुम (पर) से विपत्ति को दूर करने की शक्ति रखते हैं और न (उसमें) परिवर्तन करने की ॥

(और) यह सब लोग जिन्हें यह (अपनी सहायता के लिये) बुलाते (और अपना पूज्य समझते) हैं, उनमें से (वह भी) जो (अल्लाह के) अधिक निकट वर्ती हैं, अपने पालन कर्त्ता (की) अधिक कृपा प्राप्त करने के साधनों की तलाश में रहते हैं। और उसकी दया की आशा रखते हैं, और उसके अज़ाब से डरते रहते हैं। (और) तुम्हारे पालन कर्त्ता का अज़ाब वास्तव में डरने ही की चीज़ है ॥

और (अवज्ञाकारियों, दुराचारियों की) कोई बस्ती (भी) ऐसी नहीं कि जिसको हम प्रलय (के आने) से पहिले नष्ट न करदें या उसको किसी (और) कठिन अज़ाब में न फँसादें—

(और) यह बात किताब (लौह महफ़ूज़) में लिखी जा चुकी है ० और हमको (फ़र्माइशी) मोजिज़ों के भेजने से (कोई और वजह) माने नहीं (हुई) मगर यही कि अगिले लोगों ने उनको झुठलाया। चुनांचे हमने (क़ौम) समूद को ऊँटनी (का खुला हुआ) मोजिज़ा दिया था। फिर भी लोगों ने (न मान कर) उसको सताया (यहां तक कि उसको हलाक कर दिया)। और (यह जो) हम मोजिज़े (भेजा करते हैं, तो) सिर्फ़ डराने की ग़रज़ से भेजा करते हैं ० और (ऐ पैग़म्बर ! उस वक़्त को याद करो कि) जब हमने तुमसे फ़र्माया कि तुम्हारे पर्वर्दिगार ने (यानी हमने) लोगों को हर तरफ़ से रोक रक्खा है (कि तुम पर हाथ न डाल सकें) और ख़्वाब जो हमने तुमको दिखाया, तो बस उसको लोगों (के ईमान) की आज़माइश (का ज़रिआ) ठहराया। और (इसी तरह थूहर के) दरख़्त को, जिस पर क़ुर्आन में लानत की गई है। ग़रज़ बावजूदे कि इन लोगों को हम (तरह तरह पर) डराते हैं, लेकिन हमारा डराना इनकी सर्कशी को और कई दर्जे ज़ियादा करता है ० और (एक वक़्त वह भी था) जब कि हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो, तो सभी ने सज्दा किया। मगर इब्लीस कि लगा हुज्जत करने कि क्या मैं ऐसे शख़्स को सज्दा करूं, जिसे तूने मिट्टी से बनाया है ० (और आदम की तरफ़ हिक़ारत आमेज़ इशारा करके ख़ुदा से) कहने लगा कि भला देख तो ! यही वह शख़्स है, जिसको तूने मुझ पर फ़ौक़ियत दी है। अगर तू मुझको रोज़ क़यामत तक की मोहलत दे, तो मैं क़द्र क़लील की तो कहता नहीं, बाक़ी इसकी तमाम नस्ल की जड़ काट के रहूँ तो सही ० ख़ुदा ने फ़र्माया चल (दूर हो) जो शख़्स इनमें से तेरी पैरवी करेगा, तो तुम सब की सज़ा जहन्नम (और) सज़ा (भी) पूरी ० और इनमें से जिसे अपनी (चिकनी चुपड़ी) बातों से (बहकाते) बन पड़े बहका और–

كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝ وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ
نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ
وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ
بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ۝ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ
بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً
لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ وَنُخَوِّفُهُمْ
فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ۝ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ
اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ قَالَ ءَاَسْجُدُ
لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۝ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ
كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ
ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ
مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ۝
وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ

ع

यह किताब (अर्थात लौह महफ़ूज़) में लिखा जा चुका है (और यह हमारा प्राकृतिक विधान है) ॥

और (रहा इनकी इच्छानुसार अपने रसूल की तस्दीक़ के लिये किसी चमत्कार का भेजना, तो) हमको (उनकी इच्छानुसार) चमत्कार भेजने से (कोई और बात) बाधक नहीं (हुई) इसके अतिरिक्त कि पहिले लोगों ने उनको (अर्थात अपने इच्छित चमत्कारों को) झूठा ठहराया और (उनके देखने के बावजूद भी अपने रसूल पर ईमान नहीं लाये। अतएव समूद जाति के लोगों ने जब अपने नबी सालेह से एक चमत्कार दिखाने की माँग उपस्थित की, तो) हमने समूद (जाति के लोगों) को ऊँटनी (एक) स्पष्ट (चमत्कार के) रूप में प्रदान की। परन्तु उन्होंने उसके साथ (इतना अत्याचार और) ज़ुल्म किया (कि उसको बिल्कुल जान से मार दिया, जिसकी वजह से हमने अपना अज़ाब उन पर भेज कर उन्हें पृथ्वी पर से नष्ट व बरबाद कर दिया)। और (इस प्रकार के) चमत्कार हम केवल (जल्दी के अज़ाब से) डराने के लिये भेजते हैं। (अतएव अगर हम उनकी इच्छानुसार चमत्कार भेजें, तो यह भी अपने पूर्व पुरुषों की तरह उनसे इन्कार ही करेंगे। और उनकी तरह तुरन्त नष्ट व बरबाद कर दिये जावेंगे) ॥

और (ऐ हमारे रसूल ! तुम उस समय को याद करो) जब कि हमने तुमसे कहा था कि तुम्हारे पालन कर्त्ता ने (समस्त) लोगों को (अपने ज्ञान व शक्ति की) सीमा में ले रक्खा है। (सबकी प्रगट व गुप्त दशाओं का उसको ज्ञान है। उसको अच्छी तरह मालूम है कि अगर इन काफ़िरों की माँग के अनुसार इनको चमत्कार दिखाये गये, तो इन चमत्कारों से भी सिवाय हानि के कोई लाभ इन लोगों को नहीं पहुँचेगा। और वे सच्चे मार्ग की ओर आने के बजाय और अधिक पथ भ्रष्ट होंगे। क्योंकि अदृष्टि की बातों पर ईमान लाने की पात्रता ही इनमें बाक़ी नहीं रही है)। और (वह किसी ऐसी घटना पर विश्वास या किसी ऐसी सूचना को सच्चा ठहरा ही नहीं सकते, जो प्रगट रूप में इनको प्राकृतिक नियम या अपनी बुद्धि के विरुद्ध मालूम होती हो। अतएव मेराज की रात को) जो (प्राकृतिक विरुद्ध अद्भुत) दृश्य हमने तुम्हें दिखाया था, उसको (भी इन लोगों ने झूठ समझा और उसका मज़ाक़ उड़ाया। और उनके इस धर्म विरुद्ध आचरण और विद्रोह के कारण) हमने (मेराज की घटना को भी) उनके लिये विद्रोह (व पथ भ्रष्टता) का कारण बना दिया। और (इसी प्रकार थूहर के) उस पेड़ (के वर्णन) को (भी) जिस पर क़ुर्आन में लानत की गई है (और जो प्रत्येक पापी मनुष्य के खाने की वस्तु बताई गई है)। और हम इनको (बराबर) डराते रहते हैं, लेकिन इनका घोर विद्रोह (कम होने के बजाय) बढ़ता (ही) जाता है ॥

और (ऐ रसूल ! वह समय स्मरण करो) जब कि हमने फ़रिश्तों को आज्ञा दी थी कि आदम को शीश नवाओ, तो सबने (हमारी आज्ञा को स्वीकार किया और आदम को) सज्दा किया (शीश नवाया) मगर इब्लीस ने नहीं किया। (और) वह कहने लगा कि क्या मैं उसको शीश नवाऊँ, जिसको तूने मिट्टी (जैसी तुच्छ वस्तु) से उत्पन्न किया है ॥

(इस पर उसने आदम की ओर घृणा से संकेत करके ख़ुदा से) कहा कि तनिक देख तो सही, यही वह है, जिसको तूने मुझ पर बड़ाई दी है ? (और जिसको शीश नवाने की तू मुझे आज्ञा दे रहा है, ख़ैर कुछ बात नहीं। अब) यदि तू मुझको प्रलय काल तक (जीने का) अवसर दे, तो मैं (तेरे सम्मान व गौरव की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि) सिवाय गिनती के कुछ (सच्चे सेवकों) के उसकी (सारी) सन्तान की जड़ खोद डालूंगा ॥

(ख़ुदा तआला ने) हुक्म दिया–जा (दूर हो)। इन (बनी आदम) में से, जो मनुष्य तेरा अनुकरण करेगा, तो (वह भी तेरा ही साथी समझा जावेगा। और) तुम सबका दण्ड नर्क है (और नर्क की भी) पूरा सज़ा ॥

और उनमें से जिसको तू बहका सके, अपनी (मक्कारी की) बातों से बहका। और—

عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ
وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ إِلَّا
غُرُورًا ۝ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ
وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۝ رَبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي
لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ
كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ
ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ فَلَمَّا نَجّٰكُمْ إِلَى الْبَرِّ
أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ۝ أَفَأَمِنْتُمْ
أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ۝ أَمْ أَمِنْتُمْ
أَنْ يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا
لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ۝ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَ

حملنٰهم

इन पर अपने (शैतानों का लश्कर) सवार और प्यादे (सब चढ़ा) ला और इनके साथ माल और औलाद में (अपना) साझा लगा और इनसे (झूठे झूठे) वादे कर । और शैतान ! तू इन लोगों से जितने वादे करता है, सब धोके ही (की टट्टी) होते हैं ० (जो) हमारे (सच्चे) बन्दे (हैं) उन पर (तो) तेरा किसी तरह का क़ाबू (चलने का) नहीं । और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार (अपने बन्दों का) कारसाज़ बस है ० (लोगो!) तुम्हारा पर्वर्दिगार वह (क़ादिर मुतलक़) है, जो तुम्हारे लिये समन्दर में जहाज़ों को चलाता है, ताकि तुम (आसानी से) उसका फ़ज़्ल (यानी अपनी मआश) तलाश करो । इसमें शक नहीं कि ख़ुदा तुम पर (बड़ा) मेहर्बान है ० और जब समन्दर में तुमको (किसी तरह की) तक्लीफ़ पहुँचती है, तो जिन (माबूदों) को तुम पुकारा करते थे (सब) भूले बिसरे हो जाते हैं, मगर वही (एक ख़ुदा याद रहता है) । फिर जब (ख़ुदा) तुमको (समन्दर से) ख़ुश्की की तरफ़ निकाल लाता है, तो (उसी से) तुम फिर बैठते हो । और इन्सान बड़ा ही ना शुक्र है ० तो क्या तुम इस बात से ख़ातिर जमा हो गए हो कि वह तुमको ख़ुश्की की तरफ़ (लेजाकर ज़मीन में) धसादे या तुम पर आंधी का पथराव चलाए और उस वक़्त तुम (किसी को) अपना मददगार न पाओ ० या तुम इस बात से ख़ातिर जमा हो गए हो कि ख़ुदा फिर तुमको लौटा कर दुबारा उसी समन्दर में ले जाय और (उसमें ले गए पीछे) तुम पर हवा का एक झक्कड़ भेजे और तुम्हारी ना शुक्रियों की सज़ा में तुमको ग़र्क़ करदे । फिर तुमको कोई (ऐसा हिमायती) न मिले, जो इस बात पर हमारा पीछा करे ० और अलबत्ता हमने बनी आदम को इज़्ज़त दी और–

उन पर अपने (शैतानों की सेना) सवार और प्यादे (सब) चढ़ा ला, और (उनकी) सम्पत्ति व सन्तान में उनका शरीक बन जा । (अर्थात् उनको सीधे मार्ग से भटकाने के लिये उनके माल व सन्तान को भी एक साधन बना) और उनसे (झूठे झूठे) वादे कर (के उन्हें ख़ूब सब्ज़ बाग़ दिखा, और अपने आधीन बनाकर उनका परलोक बिगाड़ । निस्सन्देह) शैतान बनी आदम से दग़ाबाज़ी के अतिरिक्त (और झूठे वादे के कभी सच्चा और ठीक) वादा नहीं करता ॥

(परन्तु ऐ शैतान ! याद रख ! ! तू जितना चाहे सर पटक ले) । हमारे सच्चे सेवकों पर तेरा कुछ ज़ोर नहीं (चल सकता) । और (ऐ रसूल ! भला हमारे सच्चे सेवकों पर उसका ज़ोर कैसे चल सकता है, ऐसी दशा में कि) तुम्हारा पालन कर्त्ता (उनका) यथेष्ट कार्य कर्त्ता (और सहायक) है ॥

(ऐ आदम की सन्तान !) तुम्हारा पालन कर्त्ता वह है, जो (तुम्हारे लिये) नदी में किश्तियां (और जहाज़) चलाता है । ताकि तुम (दूर दूर के देशों की यात्रा कर सको और) उसकी कृपा (व दया अर्थात जीविका और धनो पार्जन) के लिये परिश्रम करो । वास्तव में बात (यह) है कि वह तुम्हारी दशा पर बहुत कृपालु है ॥

और (तुम्हारा पालन कर्त्ता वह है कि) जब नदी में तुमको (कोई) कष्ट पहुँचता है, तो उसके अतिरिक्त जिन (जिन पूज्यों) को तुम पुकारा करते हो, वह (सब तुम्हारे मस्तिष्क और बुद्धि से) लुप्त हो जाते हैं (बस वही स्मरण रहता है) । इसके बाद जब वह (तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर लेता और) तुमको (नदी से निकाल कर) स्थल की ओर बचा ले जाता है, तो (पहिले की भांति फिर) तुम (उससे) विमुख हो जाते हो । और (अपने झूठे पूज्यों का कलमा पढ़ने लगते हो । वास्तव में बात यह है कि) मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है ॥

तो क्या (ऐ मूर्ख मनुष्यो !) तुम इस बात से (बिल्कुल) निर्भय हो गये कि वह तुमको स्थल की ओर (लेजाकर पृथ्वी में) धँसा दे, या तुम पर पत्थरों की मार (का अज़ाब) भेजदे (और) उस समय तुम किसी को अपना सहायक न पाओ ॥

या तुम्हें (इसकी ओर से) विश्वास हो गया है कि वह तुमको (फिर) दूसरी बार उसी (नदी) में वापिस ले जाय, (और वहां लेजाकर) फिर तुम पर वायु का कठिन तूफ़ान भेज दे, (और) फिर वह तुमको तुम्हारी अवज्ञा (व कृतघ्नता) के बदले (उसी नदी में) डुबो दे, (और वहां) फिर तुम कोई अपना (सहायक भी) न पाओ, जो इस (दण्ड देने) पर हमारे पीछे पड़े (और हमसे उत्तर मांगे)॥

और हमने आदम की सन्तान को (इज़्ज़त व) बुज़ुर्गी प्रदान की । और –

حَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ
وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۝
يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍ بِاِمَامِهِمْ فَمَنْ اُوْتِيَ
كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ
وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ
ع اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝
وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ
لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ۝
وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا
قَلِيْلًا ۝ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ
الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ۝ وَاِنْ
ع كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا
وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ سُنَّةَ

ख़ुश्की और तरी में उनको (जानवरों और किश्तियों पर) सवार किया और उम्दा (उम्दा) चीज़ें उन्हें (खाने को) दीं और जितनी मख़्लूक़ात हमने पैदा की है, उनमें बहुतेरों पर उनको बर्तरी दी ० (और बड़ी बर्तरी तो उस दिन की है) जब हम सब लोगों को उनके पेशवाओं समेत (अपने सामने) बुला खड़ा करेंगे, तो जिनका नामए (आमाल) उनके नज़दीक दाहिने हाथ में दिया जायगा—वह (मारे ख़ुशी के) [अपने नामए (आमाल) को (जल्दी से) पढ़ने लगेंगे और उन पर एक तुस बराबर भी ज़ुल्म न होगा ० और जो इस (दुनिया) में (दीदा व दानिस्ता) अन्धा (बना) रहा, वह आख़िरत में भी अन्धा होगा और (नजात के) रस्ते से बहुत दूर भटका हुआ ० और (ऐ पैग़म्बर ! क़ुर्आन) जो हमने वही के ज़रिये से तुम्हारी तरफ़ भेजा है, लोग तो तुमको इससे बिचलाने ही लगे थे, ताकि इस (क़ुर्आन) के सिवा तुम झूठ (झूठ दूसरी दूसरी बातें) हमारी तरफ़ मन्सूब करो और तुम ऐसी जुर्अत करते, तो यह लोग तुमको (अपना सच्चा) दोस्त बना लेते ० और अगर यह बात न होती कि हमने तुमको साबित (क़दम बनाए) रक्खा, तो तुम भी किसी क़दर तो इनकी तरफ़ को ज़रूर झुकने ही लगे थे ० (लेकिन) ऐसा होता, तो हम तुमको जीते और मरे दोहरी दोहरी (सज़ा का मज़ा भी) चखा देते (और) फिर तुमको हमारे मुक़ाबिले में कोई मददगार भी न मिलता ० और यह लोग तो तुमको (सर) ज़मीन (मक्का) से दिल बर्दाश्ता कर ही चले थे, ताकि तुमको यहां से निकाल बाहर करें और ऐसा होता, तो तुम्हारे (गये) पीछे यह लोग भी चन्द रोज़ से ज़्यादा (इतमीनान से अपने वतन में) न रहने पाते ०—

जल व स्थल में उनको (सवारियों पर) सवार किया, और श्रेष्ठ श्रेष्ठ (और उम्दा उम्दा) वस्तुएँ उनको प्रदान कीं, और अपनी बहुत सी प्रजा पर उनको श्रेष्ठता (और उच्च पद) प्रदान किया ॥

जिस दिन कि हम सब लोगों को उनके धार्मिक नेताओं सहित (अपने सन्मुख) बुलायेंगे (उस समय हर मनुष्य की कर्म सूची उसके हाथ में दी जावेगी)। तो जिन लोगों की कर्म सूची उनके दायें हाथ में दी जावेगी, वह (सब के) सब अपनी (अपनी) कर्म सूचियों को पढ़ेंगे और (ख़ुश होंगे और) इनकी तनिक भी हानि नहीं की जावेगी ॥

और जो (मनुष्य) इस (संसार) में अन्धा बन गया, वह परलोक में भी अन्धा और (मुक्ति के) रास्ते से दूर (भटकता) रहेगा। (अर्थात् जिसने संसार में हृदय के नेत्रों से काम नहीं लिया और सच्चाई के मार्ग को नहीं पहिचाना, वह परलोक में भी अन्धों की तरह इधर उधर भटकता हुआ और परेशान रहेगा) ॥

और (ऐ रसूल !) यह बात निकट ही थी कि यह (काफ़िर) तुमको (ही) उस वही से विमुख* करदें, जो हमने तुम्हारे पास भेजा है, ताकि तुम उसके अतिरिक्त दूसरी झूठी बातें हमारे नाम लगाओ। और (अगर तुम ऐसा कर गुज़रते, तो) उस समय यह तुमको (अपना बड़ा पक्का) मित्र बना लेते ॥

* टीका—मक्के के काफ़िरों ने रसूलुल्लाह से प्रार्थना की थी कि अगर वह ग़रीबों और साधारण लोगों को अपने पास बैठाने से अलग करदें, तो हम आप के आधीन हो जायँगे और ईमान ले आयेंगे। यहां उस वृतान्त की ओर संकेत हैः—हसन निज़ामी ॥

और (ऐ रसूल !) यदि (इस अवसर पर) हम तुमको (अपने मार्ग पर) दृढ़ न रखते (और निर्दोष न बनाते) तो (अवश्य सम्भव था कि तुम) उनकी (बातों में आकर) थोड़े से (तो) उनकी ओर झुक (ही) जाते ॥

(परन्तु) ऐसा होता, तो हम तुमको (दुगना) अज़ाब देते। जीवन में (भी) दुगना और मरने के पश्चात (भी) दुगना। (और) फिर तुम हमारे मुक़ाबले में कोई सहायक भी न पाते (जो तुमको हमारे अज़ाब से बचा सकता) ॥

और (ऐ रसूल !) अति शीघ्र यह (उपद्रवी लोग मक्के की) ज़मीन से तुम्हारे दिल को उखाड़ दें, ताकि तुमको वहां से निकाल बाहर करें। और (यदि उन्होंने ऐसा किया, तो) उस समय तुम्हारे बाद (इस पृथ्वी में) यह भी केवल कुछ† दिन (ही चैन से) ठहर सकेंगे ॥

† टीका-अतएव रसूलुल्लाह के मक्के से हिजरत करने के कुछ दिन पश्चात ही बद्र का युद्ध हुआ और मक्के के मुश्रिक उस युद्ध में मारे गये।—हसन निज़ामी ॥

مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ
لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ۝ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ
اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ
كَانَ مَشْهُوْدًا ۝ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً
لَّكَ ۖ عَسٰۤى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا
وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ
مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ
سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ
اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ
الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ
الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝ وَاِذَاۤ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ
اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوْسًا ۝
قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ

हु.

तुमसे पहिले जितने रसूल हमने भेजे हैं, उनका यही दस्तूर रहा है। और (जो) दस्तूर हमारे (ठहराए हुए हैं, उन) में (तुम कभी भी) रद्द व बदल होता हुआ न पाओगे ० (ऐ पैग़म्बर !) आफ़ताब के ढलने से रात के अंधेरे तक (ज़ुहर-अस्र-मग़रिब-इशा की) नमाज़ें पढ़ा करो और नमाज़ सुबह (भी) क्योंकि नमाज़ सुबह का वक्त नूर ज़हूर का वक्त है ० और रात के एक हिस्से में (नमाज़) तहज्जुद भी पढ़ा करो। (और नमाज़ें तो फ़र्ज़ हैं और यह) तुम्हारी (नमाज़) नफ़्ल (है)। अजब नहीं कि (इसकी बरकत से) तुम्हारा पर्वर्दिगार (क़यामत के दिन) तुमको मक़ाम महमूद में पहुँचाए ० और (यह) दुआ मांगा करो कि ऐ मेरे पर्वर्दिगार ! (आख़िर तो मुझको मक्का छोड़ कर किसी जगह जाकर रहना है, तो जहाँ) मुझको (पहुँचाए, ख़ैर से) अच्छी जगह पहुँचाइयो और (जब) मुझको (काफ़िरों के नरग़े से निकाले, तो ख़ैर से) अच्छी तरह निकालियो और अपने हां से मुझको (दुश्मनों पर) फ़तहयाबी के साथ ग़लबा दीजियो ० और (ऐ पैग़म्बर ! लोगों से) कहदो कि (बस दीन) हक़ आया और (दीन) बातिल नेस्त व नाबूद हुआ और (दीन) बातिल तो नेस्त व नाबूद होने वाला ही था ० और हम क़ुर्आन में ऐसी ऐसी बातें उतारते हैं, जो ईमान वालों के लिये (अमराज़ रूहानी का) इलाज और (मूजिब) रहमत हैं और ना फ़र्मानों को तो इससे और (उल्टा) नुक़सान ही होता है ० और जब हम इन्सान को कोई नेअमत अता फ़र्माते हैं, तो (उल्टा हमसे) मुंह फेरता और पहिलू तिही करता है और जब उसको (कोई) तकलीफ़ पहुँचती है, तो आस तोड़ बैठता है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि हर एक अपने तौर पर अमल करता है। फिर (तुम में से) जो-

---

तुमसे पहिले हमने अपने जिन रसूलों को संसार में भेजा है, उनके साथ भी (हमारा) यही व्यवहार रहा है (कि जब उनकी जाति ने उनको तङ्ग करके उनके घरों से निकाला, तो हमने उनकी जातियों को नष्ट कर दिया)। और तुम (अब भी) हमारे इस व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे ॥

(ऐ हमारे रसूल ! तुम इन काफ़िरों के विरोध से दुखित व निराश न हो और हमारी ओर ध्यान दो)। सूरज ढलने के बाद से रात के अँधेरे तक (ज़ुहर और अस्र और मग़रिब और ईशा की) नमाज़ें अदा करो और प्रातःकाल की नमाज़ भी। क्योंकि प्रातःकाल की नमाज़ * (का समय तो) ज्योति पूर्ण समय है ॥

* टीका—यहाँ क़ुर्आन फ़ज्र का शब्द आया है। अर्थात प्रातःकाल क़ुर्आन पढ़ना। परन्तु इसका अर्थ प्रातःकाल की नमाज़ है: —हसन निज़ामी ॥

और (इन पाँचों वक्त की फ़र्ज़ नमाज़ों के अतिरिक्त) कुछ रात रहे तहज्जुद (की नमाज़) भी (पढ़ा करो) जो तुम्हारे लिये (एक) नफ़्ली (नमाज़) है। क्या आश्चर्य है कि (इसकी बरकत से) तुम्हारा पालन कर्त्ता तुमको मक़ाम महमूद † में भेजदे ॥

† टीक-प्रलय के दिन गुनहगारों की शिफ़ाअत जिस स्थान पर रसूलुल्लाह करेंगे, उसको मक़ाम महमूद कहते हैं :-हसन निज़ामी ॥

और (ऐ रसूल !) तुम (अपने पालन कर्त्ता से) प्रार्थना करो कि ऐ मेरे पालन कर्त्ता ! मुझको (पैग़म्बरी के प्रचार के काम में) शुद्धता के साथ दाख़िल कर (कि जो कुछ मैं करूं, तेरी इच्छानुसार सच्चाई के साथ करूं। और जब तू) मझे (दुनिया से विदा करे, तो ऐसी दशा में) विदा कर (कि मैं अपनी पैग़म्बरी के कामों को) सचाई के साथ (पूरा कर चुका हूँ)। और मुझको अपने मुख्य द्वार से ऐसी शक्ति प्रदान कर, जो (मेरे शत्रुओं के मुक़ाबले में मेरो) सहायक हो ॥

और (ऐ रसूल ! अब तुम इन धर्म के बैरियों से निस्संकोच) कहदो कि सत्य आ गया, और असत्य गया। (और) असत्य को तो (एक न एक दिन) जाना था ही ॥

और (ऐ रसूल !) हम क़ुर्आन में ऐसे विषय अवतीर्ण कर रहे हैं कि जो ईमान्दारों के पक्ष में कल्याणी कृपाएँ हैं। और (रहे पापी और काफ़िर, तो इन) दुष्टों को (तो क़ुर्आन के विषयों से) और हानि ही पहुँचती है ॥

और (यह वस्तु कुछ क़ुर्आन ही के साथ निर्दिष्ट नहीं है, वरन् कृतघ्नता करने वाले) मनुष्य को जब (भी) हम (कोई) नेअमत प्रदान करते हैं, तो वह (बजाय हमारा एहसान मानने और शुक्र अदा करने के उलटा हमसे विरुद्ध और) विरक्त हो जाता है। और जब उसको कोई कष्ट पहुँचता है। और उसकी प्रार्थना स्वीकार होने में देर लगती है) तो (उस समय) वह (हमारी दया से बिल्कुल) निराश हो जाता है। (और हमारी कृतघ्नता करने लगता है) ॥

(तात्पर्य यह है कि उनसे) कहदो कि प्रत्येक मनुष्य अपने २ ढङ्ग पर अमल करता है। और तुम्हारा पालन कर्त्ता ख़ूब जानता है कि कौन सीधे मार्ग पर है ॥

ठीक सीधे रस्ते पर है, तुम्हारा पर्वर्दिगार उसको ख़ूब जानता है ० और (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुमसे रूह की हक़ीक़त दर्याफ़्त करते हैं, तो (इनसे) कहदो कि रूह (भी) मेरे पर्वर्दिगार का एक हुक्म है और तुम लोगों को (असरार इलाही में से) बस थोड़ा ही सा इल्म दिया गया है ० और (ऐ पैग़म्बर !) अगर हम चाहें, तो जो (.कुर्आन) हमने तुम्हारी तरफ़ वही के ज़रिये से भेजा है, उसको (दुनिया के परदे से) उठा ले जाएं, फिर तुमको उसके लिये हमारे मुक़ाबिले में कोई हिमायती भी न मिले ० मगर (यह सिर्फ़) तुम्हारे पर्वर्दिगार ही की रह्मत (है कि वह ऐसा नहीं करता)। बेशक तुम पर उसका बड़ा ही फ़ज़्ल है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अगर आदमी और जिन्नात जमा (होकर इस बात पर आमादा) हों कि इस .कुर्आन की तरह का (और कलाम) बना लाएं, ताहम इस जैसा नहीं (बना) ला सकते। अगर्चे उनमें से एक की पुश्ती पर एक (क्यों न) हो ० और बा वजूदे कि हमने इस .कुर्आन में लोगों के (समझने के) लिये सभी (क़िस्म की) मिसालें (तरह तरह से बदल बदल कर) बयान फ़र्माई हैं, मगर अक्सर लोग इन्कार किये बिदून न रहे ० और (ऐ पैग़म्बर ! कुफ़्फ़ार मक्का तुमसे) कहते हैं कि हम तो उस वक़्त तक तुम पर ईमान लाने वाले हैं नहीं कि (या तो) हमारे लिये ज़मीन से कोई चश्मा बहा निकालो ० या खजूरों और अंगूरों का तुम्हारा कोई बाग़ हो और उसके बीच बीच में तुम (बहुत सी) नहरें जारी कर दिखाओ ० या जैसा तुम कहा करते थे, आस्मान के टुकड़े हम पर ला गिराओ—

هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ۝ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ
(ع) قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ
اِلَّا قَلِيْلًا ۝ وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا
اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ
كَبِيْرًا ۝ قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى
اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ
وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ۝ وَلَقَدْ
صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝ وَقَالُوْا لَنْ
نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا
اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ
الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ۝ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ

और (ऐ रसूल !) लोग तुमसे आत्मा के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं, तो तुम (उत्तर में उनसे) कहदो कि आत्मा एक ख़ुदा की आज्ञा है। (और उसकी वास्तविकता के गुप्त रहस्यों में से एक रहस्य है)। और (तुम्हारा ज्ञान इस योग्य नहीं है कि तुम प्रकृति के सारे भेदों को समझ सको। क्योंकि) तुमको बहुत थोड़ा सा ज्ञान दिया गया है॥

और (यह केवल हमारी कृपा व दया है कि हमने आवश्यकीय कामों का ज्ञान तुमको वही द्वारा दे दिया है। और अब भी) यदि हम चाहें, तो इस (.कुर्आन) को, जो हम तुम पर वही द्वारा भेज चुके हैं (संसार से) उठा लें (और लोगों को कुफ़्र व नीचता की पथ भ्रष्टता में भटकता छोड़ दें) और फिर तुम इसके (वापिस लाने के) लिये हमारे मुक़ाबले में कोई सहायक भी न पाओ। किन्तु (यह केवल) तुम्हारे पालन कर्त्ता की दया है (जो शक्ति के होते हुए भी वह ऐसा नहीं करता)। निस्सन्देह तुम पर उसकी बड़ी कृपा है॥

(ऐ रसूल !) कहदो कि यदि (समस्त संसार के) मनुष्य और जिन्नात इस .कुर्आन की मिसाल पेश करने पर (सहमत और) एकत्रित हो जायँ, तब भी इस जैसी (किताब) नहीं ला सकते; चाहे इनमें से (सब आपस में) एक दूसरे के सहायक (भी क्यों न) हो जायँ॥

और (यह होते हुये भी कि) हमने इस .कुर्आन में (मनुष्यों की शिक्षा के सम्बन्ध में) हर प्रकार के विषयों को अनेक प्रकार से (खोल खोल कर) वर्णन किया है। फिर भी प्रायः लोग उसका इन्कार किये बिना न रहे॥

और (यही) कहते रहे कि हम (तो ऐ मुहम्मद !) तुम पर उस समय तक कदापि ईमान न लायेंगे, जब तक कि तुम हमारे लिये पृथ्वी से कोई सोता न जारी करदो। या तुम्हारे लिये खजूरों और अंगूरों का कोई ऐसा बाग़ न (प्राप्त) हो जाय, कि जिसके अन्दर तुम बहुत सी नहरें जारी कर दिखाओ। या जैसा कि तुम कहा करते हो, हम पर आकाश के टुकड़े न गिरा दो—

كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ
قَبِيْلًا ۝ اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ
تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ
عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ
كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ
يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ
اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝ قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ
مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ
مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ۝ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ
شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا
بَصِيْرًا ۝ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُّضْلِلْ
فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا

ع

مأوٰهم

या .खुदा और फ़रिश्तों को (हमारे) सामने ला खड़ा करो ० या (रहने के लिये) कोई तुम्हारा तिलाई घर हो या आस्मान में चढ़ जाओ । और जब तक तुम हम पर (.खुदा के हां से एक) किताब उतार कर न लाओ कि हम आप उसको पढ़ (भी) लें, तब तक हम तुम्हारे (आस्मान पर) चढ़ने को (भी) बावर करने वाले नहीं । (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि सुब्हानल्लाह ! मैं क्या चीज़ हूँ-यही एक बन्दा बशर (.खुदा का) भेजा हुआ और बस ० और जब लोगों के पास (.खुदा की तरफ़ से) हिदायत आ चुकी, तो उनको ईमान लाने से इसके सिवा और कोई बात माने नहीं हुई कि लगे कहने, क्या .खुदा ने आदमी (को) पैग़म्बर (बना कर) भेजा है ० (ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों को) जवाब दो कि ज़मीन में अगर फ़रिश्ते (रहते) होते कि (रूए ज़मीन पर) इतमीनान से चलते फिरते, तो हम फ़रिश्ते ही को आस्मान से पैग़म्बर (बनाकर) उनके पास भेजते ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान में .खुदा ही गवाह बस है । (और) वह अपने बन्दों (के हाल) से वाक़िफ़ (और उनके किर्दार को) देख रहा है ० और जिसको .खुदा हिदायत दे, वही राह रास्त पर है । और जिसको (वह) गुमराह करे, तो फिर (ऐ पैग़म्बर !) ऐसे गुमराहों के लिये तुम .खुदा के सिवा (दूसरे) मददगार (भी) नहीं पाओगे । और क़यामतके दिन हम उन लोगों को उनके मुंह के बल उठाएंगे, अन्धे और गूंगे और बहिरे—

या अल्लाह और फ़रिश्तों को (अपनी सचाई के लिये हमारे) सामने न ले आओ । या तुम्हारे (रहने के) लिये कोई सोने का घर न बन जाय । या तुम (हमारे सामने) आकाश पर न चढ़ जाओ ॥

और हम (तो) तुम्हारे (आकाश पर) चढ़ने का भी कदापि विश्वास न करेंगे, जब तक कि तुम हमारे (विश्वास के) लिये (वहां से) कोई ऐसा लेख भी लेकर न उतरो, (जिसमें तुम्हारे ऊंचे आस्मान पर चढ़ने की तसदीक़ की गई हो, और) जिसे हम पढ़लें । (ऐ रसूल !) तुम इनसे कहदो (कि तुम्हारी यह सब मांगें नास्तिकता पूर्ण हैं । इन मांगों को तो बस) मेरा पालन कर्त्ता (ही पूरा कर सकता है, जिस की व्यक्ति समस्त दोषों से) मुक्त है । मैं (तो) एक मनुष्य (और अल्लाह का) पैग़म्बर होने के अतिरिक्त कुछ नहीं हूँ ॥

और (ऐ रसूल !) जब (इन) लोगों के पास (अल्लाह की ओर से) हिदायत आ चुकी, तो इनको (इस हिदायत के स्वीकार करने और उस पर) ईमान लाने से कोई कारण बाधक नहीं हुआ । इसके अतिरिक्त (कि वह बे सोचे समझे केवल अपनी मूर्खता पूर्ण अनुकरण और मूर्खों के से विश्वासों के आधार पर) कहने लगे-क्या अल्लाह तआला ने (हम ही जैसे एक) मनुष्य (को अपना) रसूल (बनाकर) भेजा है ? (पैग़म्बरी के लिये कोई फ़रिश्ता उसके यहाँ न था ?) ॥

(ऐ रसूल !) तुम (इनसे) कहदो कि यदि पृथ्वी में फ़रिश्ते होते (और वह मनुष्यों की तरह वहां चैन व) शान्ति से (रहते सहते और) चलते फिरते, तो हम बिल्कुल इन लोगों के पास आकाश से फ़रिश्ते ही (को) रसूल (बनाकर) भेजते ॥

(ऐ रसूल ! यह मूर्ख किसी प्रकार समझने वाले नहीं हैं । अतः) तुम (इनसे एक अन्तिम बात) कहदो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह (ही न्याय करेगा । जो कुछ मैंने तुमसे कहा और जो तुम मुझसे कह रहे हो, अल्लाह उसका) गवाह है । (और) वह अपने बन्दों (के वृतान्त) का (अच्छी तरह) जानने वाला (और) देखने वाला है ॥

और (हिदायत व पथ भ्रष्टता) अल्लाह (के अधिकार में है । वह) जिन (लोगों) को हिदायत देता है, वही शिक्षा ग्रहण करते हैं । और जिनको वह (उनके कुकर्मों के कारण) पथ भ्रष्ट कर देता है, उनके लिये .खुदा के अतिरिक्त तुम्हें और कोई सहायक नहीं मिल सकता (जो उनको पथ भ्रष्टता से निकाल कर हिदायत पर लाये) । और (इन पथ भ्रष्टों और पापियों का परिणाम यह होगा कि) हम प्रलय के दिन उनको अन्धा, गूंगा और बहिरा करके उनके मुंह के बल चलायेंगे-

مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ۝
ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ
خَلْقًا جَدِيْدًا ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ
مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ فَاَبَى
الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ۝ قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ
خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّىْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ
الْاِنْفَاقِ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ۝ وَلَقَدْ
اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ فَسْئَلْ بَنِىْٓ
اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّىْ
لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ۝ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ
مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

ع

उनका (आख़िरी) ठिकाना दोज़ख़। जब बुझने को होगी, हम उनके लिये (उसको) और ज़्यादा भड़का देंगे ० यह (जहन्नम इस लिये) उनकी सज़ा है कि वह हमारी आयतों से इन्कार किया करते (और क़यामत का होना सुन कर) कहा करते थे कि जब हम (मरे पीछे गल सड़ कर) हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे, तो क्या हम अज़ सरे नव पैदा करके उठा खड़े किये जायंगे ० क्या इन लोगों ने इस बात पर नज़र नहीं की कि अल्लाह जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है, इस बात पर भी क़ादिर है कि इन जैसे (आदमी दुबारा) पैदा करे। और उसने इनके (दुबारा पैदा होने के) लिये एक मीआद मुक़र्रर कर रक्खी है, जिसमें किसी तरह का शक ही नहीं। इस पर (भी यह) ज़ालिम इन्कार किये बिदून न रहे ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अगर मेरे पर्वर्दिगार की रह्मत के ख़ज़ाने तुम्हारे इख़्तियार में होते, तो ख़र्च हो जाने के डर से तुम (उनको) बन्द कर रखते। और इन्सान बड़ा ही तंग दिल है ० और कुछ शक नहीं कि हमने मूसा को खुले हुए नौ मोजिज़े दिये, तो (ऐ पैग़म्बर !) बनी इस्राईल से (भी) पूछ देखो कि जब मूसा बनी इस्राईल पास आए, तो फ़िरऔन ने उनसे कहा कि मूसा ! मैं तेरी निस्बत (ऐसा) ख़याल करता हूँ कि किसी ने तुझ पर जादू कर (के तुझको दीवाना बना) दिया है ० (मूसा ने) जवाब दिया कि आप (इतनी बात दिल में) ज़रूर जान चुके हैं कि आस्मानों और ज़मीन के पर्वर्दिगार ही ने (यह मोजिज़े) उतारे हैं-

---

उनका (अन्तिम) ठिकाना नर्क होगा (और हम उस नर्क की अग्नि को हर वक्त भड़कती हुई और प्रज्वलित रक्खेंगे)। जब वह बुझने लगेगी, तो हम उनके वास्ते (उसको) और प्रचण्ड कर देंगे ॥

(और) उनका दण्ड यही है, इस लिये कि उन्होंने (हमारी शक्ति और) हमारी आयतों को न माना, और कहने लगे कि क्या जब हम (मृत्यु के पश्चात् निरी) हड्डियां और (बिलकुल) रेज़ा २ हो जायँगे, तो (फिर) नये सिरे से ज़िन्दा करके (क़ब्रों से) उठाये जावेंगे ॥

(ऐ रसूल !) क्या इन लोगों को इतना भी नहीं सूझता कि जिस अल्लाह ने आकाशों और पृथ्वी (जैसी महान चीज़ों) को उत्पन्न कर दिया, उसके यह भी अधिकार में है कि इन जैसे (मनुष्य दूसरी बार) उत्पन्न करदे। और उसने उनके (दूसरी बार उत्पन्न करने के) लिये एक समय नियत कर रक्खा है, जिस (के आने) में (किसी प्रकार का) सन्देह नहीं है। (यह बातें कितनी स्पष्ट और विश्वासनीय हैं)। इस पर भी (यह) अत्याचारी (उनका) इन्कार किये बिना न रहे ॥

(और ऐ रसूल ! यह काफ़िर जो तुम्हारे पैग़म्बर होने पर जले मरते हैं, तो) तुम (उनसे) कहदो कि (लोगो !) यदि मेरे पालन कर्त्ता की दया (अर्थात् पैग़म्बरी और अन्न इत्यादि) के ख़ज़ानों के स्वामी तुम हो जाते, तो तुम तो (समस्त संसार को उससे वञ्चित कर देते। और) व्यय हो जाने के भय से तुम (उन ख़ज़ानों को यूँही का यूँही) बन्द रखते और (अपने अतिरिक्त किसी दूसरे को नबी न होने देते। वास्तविक बात यह है कि) मनुष्य बड़ा ही तंग दिल (कंजूस और ईर्ष्या करने वाला) है (किसी को अपने से बढ़ा हुआ नहीं देख सका) ॥

और (ऐ रसूल ! काफ़िरों की यह शत्रुता कुछ तुम्हारे ही साथ निर्दिष्ट नहीं है। सब नबियों को ऐसे इन्कार करने वालों और सरकशों से वास्ता पड़ता रहा है)। मूसा को हमने नौ स्पष्ट विश्वासनीय चमत्कार दिये थे (और अपना रसूल बनाकर भेजा था)। अब तुम बनी इस्राईल (ही) से (जो आज तुम्हारा विरोध कर रहे हैं और तुमको जादूगर व पागल बता रहे हैं) पूछ लो कि जब मूसा उनके पास आये, तो (उनकी भी हंसी उड़ाई गई। और) फ़िरऔन ने (भी) उनसे (वही) कहा (जो आज तुम कह रहे हो) कि मूसा ! मुझे तो विश्वास पूर्वक ऐसा मालूम होता है, कि तुम पर किसी ने जादू कर दिया है ॥

(इस पर) मूसा ने कहा कि (ऐ फ़िरऔन ! अपने दिल में) तू भली भांति जानता है कि (मेरे नबी होने के) यह समस्त चिन्ह आकाशों और पृथ्वी के पालन कर्त्ता ही ने (लोगों के) हृदय नेत्र के लिये अवतीर्ण किये हैं। (परन्तु तू अपनी हठ धर्मी से उनको अल्लाह की ओर से प्रकट किये जाने का अपने मुख से इक़रार नहीं करता) —

بَصَآئِرَ وَاِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ● فَاَرَادَ
اَنْ یَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ
جَمِیْعًا ● وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اسْكُنُوا
الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِیْفًا ●
وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ
اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِیْرًا ● وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ
عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِیْلًا ●
قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ
مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا یُتْلٰى عَلَیْهِمْ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ
سُجَّدًا ● وَّیَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ
وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ● وَیَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ
یَبْكُوْنَ وَیَزِیْدُهُمْ خُشُوْعًا ● قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ
اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَیًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ
الْحُسْنٰی ؕ

(और लोगों के लिये यह) सूझ की बातें (हैं कि इनको देख कर .खुदा को पहिचानें) । और ऐ फ़िर्औन ! (आप ने मेरी निस्बत जादू का ख़याल किया है, तो) मेरा ख़याल आप की निस्बत यह है कि आप की शामत आई है ० फिर (फ़िर्औन ने) चाहा कि बनी इस्राईल को (किसी तरह) मुल्क में से उखेड़ दे (कि रहने न पावें) तो हमने उसको और जो उसके साथ थे, सबको डुबो दिया ० और फ़िर्औन के (डुबोए) पीछे हमने बनी इस्राईल से कहा कि (अब तुम ही इस) मुल्क में बसना । फिर जब आख़िरत का वादा आ मौजूद होगा, तो हम तुम (सब) को समेट कर (अपने हुज़ूर में) ला खड़ा करेंगे ० और (ऐ पैग़म्बर !) सच्चाई ही के साथ हमने .कुर्आन को उतारा और सच्चाई ही के साथ वह उतरा । और हमने तुमको तो बस (नेकों को .खुशनूदी .खुदा की) .खुश ख़बरी देने वाला और (बदों को अज़ाब .खुदा से) डराने वाला (बनाकर) भेजा है ० और .कुर्आन को हमने थोड़ा थोड़ा करके (इस मस्लहत से) उतारा कि तुम (वक़्त फ़वक़्त) मोहलत के साथ उसे लोगों को पढ़ कर सुनाओ और (इसी मस्लहत से) हमने उसे रफ़्ता २ उतारा है ० (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि तुम .कुर्आन को मानो या न मानो, जिन लोगों को .कुर्आन से पहिले (आस्मानी किताबों का) इल्म दिया गया है (उनका तो यह हाल है कि) जब उनके रूबरू पढ़ा जाता है, तो ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते ० और कहने लगते हैं कि हमारा पर्वर्दिगार पाक (ज़ात) है । बेशक हमारे पर्वर्दिगार का वादा पूरा होना ही था ० और ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं, (सज्दे में) रोते (जाते हैं) और .कुर्आन की वजह से उनकी आजिज़ी (और) ज़ियादा होती जाती है ० (ऐ पैग़म्बर ! तुम इन लोगों से) कहो कि तुम (.खुदा को) अल्लाह (कह कर) पुकारो या रह्मान (कह कर) पुकारो । जिस (नाम) से भी पुकारो, तो उसके (सब) नाम अच्छे (ही अच्छे) हैं-

---

और (अपनी ईर्ष्या व द्वेष के कारण उल्टा मुझ ही को झूठा बताये जाता है और जादूगर बताता है । इस लिये) मैं समझता हूँ कि ऐ फ़िर्औन ! तेरी बरबादी के दिन आ गये हैं ॥

फ़िर्औन (को यह बात सुन कर बहुत क्रोध आया और उस) ने इरादा कर लिया कि बनी इस्राईल को अपने देश में चैन से न बैठने दे, तो हमने (स्वयं) उसको और जो (लोग) उसके साथ थे, उन (सब) को (नदी में) डुबो दिया । और उस (का क़िस्सा निबटने) के पश्चात हमने बनी इस्राईल से कहा कि (अब) तुम इस ज़मीन में रहो बसो (और हमारी आज्ञा पालन व उपासना करते रहो)। फिर जब प्रलय के वादे (के पूरा होने का समय) आ जायगा, तो हम तुम सबको एकत्रित करके (अपने दरबार में) ले आयेंगे (और तुम्हारे कामों के विषय में तुमसे पूछ गछ करेंगे) ॥

(अतः ऐ मुहम्मद ! जिस प्रकार हमने मूसा और दूसरे पैग़म्बरों पर अपनी किताबें अवतीर्ण की थीं, इसी प्रकार हमने तुमको यह .कुर्आन दिया है) । और हमने इस (.कुर्आन) को सत्य के साथ अवतीर्ण किया है । (अर्थात इसमें सच्ची सच्ची बातें वर्णन की हैं) और वह भी सत्य के साथ ही अवतीर्ण हुआ है । और (जिस प्रकार हमने मूसा को किसी की हिदायत व पथ भ्रष्टता का ज़िम्मेदार नहीं बनाया था, इसी प्रकार) हमने तुमको (भी) केवल (रसूल और पुण्य का) मङ्गल समाचार सुनाने वाला और (अज़ाब से) डराने वाला बना कर भेजा है । (किसी के शिक्षा ग्रहण करने व पथ भ्रष्टता के तुम भी ज़िम्मेदार नहीं हो, जो जैसा करेगा, वैसा स्वयं भोगेगा) ॥

और (ऐ रसूल !) हमने .कुर्आन (के विषय) के (अलग अलग) भाग कर दिये, ताकि तुम उसको लोगों के सामने (इस तरह) ठहर २ कर पढ़ो (कि लोग उसके अर्थों को सुविधा पूर्वक समझ सकें) । और हमने उसको (सामयिक आवश्यकताओं और वास्तविक सुसाधकताओं के अनुसार) थोड़ा थोड़ा (करके तुम पर) उतारा (सबका सब एक दम नहीं उतारा) ॥

(ऐ रसूल !) तुम (इन काफ़िरों से) कहदो कि चाहे तुम .कुर्आन पर ईमान लाओ या न लाओ (.कुर्आन की सच्चाई तुम्हारे ईमान की मोहताज नहीं है) । निस्सन्देह (किताब वालों में से) वह लोग, जिन्हें इस (.कुर्आन के अवतीर्ण होने) से पहिले (किताब तौरेत का) ज्ञान दिया गया था (वह तो इस पर ईमान ले ही आये । और अब उनकी यह दशा है कि) जब उनके सन्मुख .कुर्आन पढ़ा जाता है, तो ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं । और कहते हैं कि हमारा पालन कर्त्ता (हर प्रकार के दोष से) मुक्त है । निस्सन्देह हमारे पालन कर्त्ता का (संसार के अन्तिम नबी भेजने का) वादा (जो तौरेत इत्यादि में लिखा हुआ है, वह) पूरा होकर ही रहा ॥

और वह ठोड़ियों के बल (सज्दे में) रोते हुये गिरते हैं । और (यह .कुर्आन) उनके हृदय भाव और भक्ति को और बढ़ाता (ही जाता) है ॥

(और ऐ रसूल ! यह काफ़िर और मुश्रिक लोग जो तुम्हारे या अल्लाह और या रह्मान कहने पर तुम पर शिर्क का दोष लगाते हैं, तो) तुम (इनसे) कहो कि (ऐ मूर्खो !) तुम (अल्लाह को) चाहे अल्लाह कह कर पुकारो, चाहे रह्मान कह कर पुकारो जिस नाम से भी (चाहे) पुकारो, सब अच्छे नाम उसी के हैं ॥

الحسنى ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت
بها وابتغ بين ذلك سبيلا ○ وقل الحمد
لله الذى لم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك
فى الملك ولم يكن له ولى من الذل
وكبره تكبيرا

سورة الكهف مكية وهى مائة وعشر آيات

بسم الله الرحمن الرحيم
الحمد لله الذى انزل على عبده الكتب
ولم يجعل له عوجا ○ قيما لينذر باسا
شديدا من لدنه ويبشر المؤمنين الذين
يعملون الصلحت ان لهم اجرا حسنا ○ ماكثين
فيه ابدا ○ وينذر الذين قالوا اتخذ الله ولدا ○
ما لهم به من علم ولا لابائهم كبرت كلمة
تخرج من افواههم ان يقولون الا

ع

और (ऐ पैग़म्बर !) न तो अपनी नमाज़ चिल्ला कर पढ़ो और न उसको बिलकुल चुपके पढ़ो, बल्कि इन (दोनों) के बीच (बीच एक मुतवस्सित) तरीक़ इख़्तियार करलो ० और कहो कि हर तरह की तारीफ़ .ख़ुदा ही को (सज़ावार) है, जो न तो औलाद रखता है और न (दोनों जहान की) सल्तनत में उसका कोई शरीक है और न इस सबब से कि कमज़ोर है, कोई उसका मददगार है। और (वक़्त फ़वक़्त) उसकी बड़ाइयां करते रहा करो ०

सूरत-कहफ़

मक्की यानी मक्के में नाज़िल हुई। इसमें ११० आयतें और १२ रुकूअ हैं॥

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहम वाला मेहर्बान (है) ० हर तरह की तारीफ़ .ख़ुदा ही को (सज़ावार) है, जिसने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर .क़ुर्आन उतारा और उसमें (किसी तरह की) कजी (यानी कोर कसर) न लगी रक्खी ० बिल्कुल सीधी सी बात है, ताकि .ख़ुदा की तरफ़ से (जो) अज़ाब शदीद (काफ़िरों पर नाज़िल होने वाला है, लोगों को उस) से डराए और जो ईमान वाले हैं (और) नेक अमल (भी) करते हैं, उनको इस बात की .ख़ुश ख़बरी दे कि उनको (.ख़ुदा के हां बड़ा) उम्दा अज्र (मिलने वाला) है (यानी बहिश्त) ० जिसमें वह हमेशा (हमेशा) रहेंगे ० और (नीज़) उन लोगों को (अज़ाब .ख़ुदा से) डराए, जो कहते हैं कि .ख़ुदा औलाद रखता है ० न तो इन ही को इस (बात) की कुछ तहक़ीक़ है और न इनके बड़ों ही को (थी)। बड़ी ही (सख़्त) बात है, जो इनके मुंहों से निकलती है, निरा झूठ बकते हैं०—

और (ऐ रसूल !) तुम अपनी (पुकार कर पढ़ने की) नमाज़ में (.क़ुर्आन) न (तो बहुत) चिल्ला कर पढ़ा करो और न (इतना) आहिस्ता (पढ़ो कि तुम्हारे पीछे नमाज़ पढ़ने वाले भी तुम्हारी आवाज़ न सुन सकें)। बल्कि उनके (अर्थात चिल्लाने और आहिस्ता बोलने के) बीच का कोई ढंग ग्रहण करलो ॥

और कहो कि सब प्रशंसा उस .ख़ुदा के लिये है कि जिसने न (तो किसी को अपनी) सन्तान बनाया है और न (दोनों लोकों के) शासन में कोई उसका शरीक है। और न वह (किसी के) आधीन (व निर्बल) है, कि कोई उसका सहायक हो । और तुम (बराबर) उसकी बड़ाई (वर्णन) करते रहो (और उसकी प्रशंसा व स्तुति में लगे रहा करो) ॥

सूरत-कहफ़

मक्की अर्थात मक्के में उतरी। इसमें ११० आयतें और १२ रुकूअ हैं ॥

(निस्सन्देह) हर प्रकार की स्तुति अल्लाह ही को (योग्य) है कि जिसने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर इस किताब (अर्थात .क़ुर्आन) को उतारा। और उसमें (किसी प्रकार का) टेढ़ापन (और ख़ामी) नहीं रक्खी। (बल्कि प्रत्येक दृष्टि से उसको पूर्ण और बिलकुल) ठीक २ बनाया, जिससे कि अल्लाह की तरफ़ से (जो) घोर अज़ाब (काफ़िरों को दिया जायगा, उस) से(उनको) डरावे। और उन ईमान्दारों को, जिन्होंने अच्छे कर्म किये हैं, इस (बात) का मङ्गल समाचार सुनावे कि उनके वास्ते (अल्लाह के यहां बहुत) अच्छा फल (मुक़र्रर) है। (अर्थात उन्हें स्वर्ग मिलने वाला है, और) उसमें वह सदैव (सदैव) रहेंगे। और उन लोगों को (भी .ख़ुदा के अज़ाब से) डरावे, जो कहते हैं कि अल्लाह सन्तान वाला है ॥

(वास्तविक बात यह है कि उनका यह कहना किसी तर्क या प्रमाण के आधार पर नहीं है, क्योंकि) न उनके पास इसकी कोई दलील है और न उनके बाप दादाओं के पास थी। (यूं ही बे सोचे समझे केवल मूर्खता और अन्ध अनुकरण के कारण ऐसी बातें किया करते हैं)। बड़ी (बेहूदा) बात है, जो इन (लोगों) के मुंहों से निकलती है। यह लोग झूठ के सिवाय कभी कुछ कहते ही नहीं ॥

كَذِبًا فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ
يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا۝ اِنَّا جَعَلْنَا مَا
عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ
عَمَلًا۝ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا۝
اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ
كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا۝ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى
الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً
وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا۝ فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ
فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا۝ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ
اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا۝ نَحْنُ نَقُصُّ
عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ
وَزِدْنٰهُمْ هُدًى۝ وَّرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا
فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا

مِنْ دُوْنِهٖ

तो (ऐ पैग़म्बर !) अगर (यह लोग) इस बात को न मानें, तो शायद तुम मारे अफ़सोस के इनके पीछे अपनी जान हलाक कर डालोगे ● जो (कुछ रूप) ज़मीन पर है, हमने उसको (रूप) ज़मीन की रौनक़ (का मूजिब) बनाया है, ताकि लोगों को आज़मायें कि इनमें कौन अच्छे अमल करता है ० और (फिर एक दिन) हम तमाम चीज़ों को, जो (रूप) ज़मीन पर हैं (नेस्त व नाबूद करके ज़मीन को) चटियल मैदान बना देंगे० (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुम ऐसा ख़याल करते हो कि ग़ार और कतबे वाले (यानी अस्हाब कहफ़) हमारी (.क़ुदरत की) निशानियों में से (एक) अजीब (निशानी) थे ० कि एक वक्त चन्द जवान ग़ार में जा बैठे और दुआ की कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार ! हम पर अपनी जनाब से रहमत नाज़िल फ़र्मा और हमारे (इस) इरादे की कामयाबी (के सामान) मुहय्या कर ० इसके बाद कई बरस के लिये ग़ार में हमने उनके कान थपक दिये (यानी उनको सुला दिया) ० फिर हमने उनको (जगा) उठाया, ताकि हम देख लें कि दो गिरोहों में कौन से (गिरोह) को (ग़ार में) ठहरने की मुद्दत .खूब याद है ० (ऐ पैग़म्बर ! अब) हम उनका हाल ठीक ठीक तुमसे बयान फ़र्माते हैं कि वह चन्द जवान थे, जो अपने पर्वर्दिगार पर ईमान लाए और (रोज़ बरोज़) हम उनको ज़ियादा ही हिदायत देते गये० और हमने उनके दिलों पर (इस्तिक़लाल की) गिरह लगादी कि जब (उनको बादशाह वक्त ने बुत परस्ती पर मजबूर किया, तो वह) उठ खड़े हुए और बोल उठे कि हमारा पर्वर्दिगार (तो वही है, जो) आस्मानों और ज़मीन का पर्वर्दिगार है। हम तो–

अगर इन्होंने इस बात (अर्थात् .क़ुर्आन की सचाई) का यक़ीन नहीं किया (तो न करें-जैसा करेंगे, वैसा भरेंगे। तुम ऐ रसूल ! इनका इतना अधिक शोक न करो । तुम्हारी हालत से) तो (मालूम होता है कि) शायद इनके पीछे रंज (व शोक) के मारे तुम अपनी जान खो दोगे ॥

पृथ्वी पर जो कुछ (भी) है, हमने उसको ज़मीन के लिये (शोभा व) रौनक़ का साधन बनाया है, जिससे कि हम लोगों को आज़मायें कि उनमें से कौन (संसार के असार सुखों और ऊपरी भड़क को छोड़ कर) अच्छे अमल करता है (और इसके बदले में सदैव के सुख का अधिकारी बनता है। और कौन दुनिया के निराधार सुखों और दिखावे की भड़क में फँस कर विषय वासनाओं में लिप्त हो जाता है। और इसके बदले नर्क में अपना घर बनाता है) ॥

और निश्चित रूप से हम (एक दिन प्रत्येक) उस वस्तु को, जो पृथ्वी पर (मौजूद) है (नष्ट कर डालेंगे। और पृथ्वी को बिलकुल एक) चटियल मैदान बना देंगे ॥

(ऐ रसूल !) क्या तुम समझते हो कि कहफ़ व रक़ीम वाले लोगों (की दशा) हमारी (शक्ति के) चिन्हों में से (कोई बड़े और) अनोखे (चिन्ह) हैं ॥

(इनका क़िस्सा कुछ ऐसा ज़्यादा आश्चर्य जनक नहीं है। हमारी असीम शक्ति के मुक़ाबले में बिलकुल एक साधारण सी बात है और यह वह क़िस्सा है) जब कि कुछ युवक (लोगों ने असत्य पूजा से उकता कर सत्य प्राप्ति के लिये) एक खोह में जाकर आश्रय लिया था। (और) फिर (वहाँ पहुँच कर) उन्होंने (अल्लाह तआला से) प्रार्थना की थी कि ऐ हमारे पालन कर्त्ता ! हमें अपने द्वार से अपनी कृपा प्रदान कर। और हमारे लिये हमारे (इस) इरादे की सफलता के सामान प्रस्तुत कर ॥

तो (हमने उनकी प्रार्थना स्वीकार करली। और उन्हें आराम पहुँचाने के लिये) हमने उनके कानों को थपक दिया (अर्थात) उस खोह में कई वर्ष तक के लिये (उनको सुला दिया)। फिर (कई वर्ष का समय बीत जाने के बाद) हमने उनको उठाया (अर्थात नींद से जगाया) जिससे कि हम मालूम करें कि उन (के) दो दलों में से कौनसा दल उनके (उस खोह में) ठहरने की अवधि अधिक जानता है ॥

(लो ऐ रसूल ! अब) हम उनका (सत्य) सत्य क़िस्सा तुम्हारे सामने (अत्यन्त संक्षिप्त और स्पष्ट रूप से) वर्णन किये देते हैं। वह चन्द युवक (आदमी) थे, जो अपने पालन कर्त्ता पर ईमान ले आये थे। और हमने उन्हें (संयमता और परहेज़गारी सिखा कर) शिक्षा (के विषय) में और बढ़ा (चढ़ा) दिया था। और (धैर्य व सन्तोष की एक महान शक्ति प्रदान करके) हमने उन के हृदयों को (ऐसा) दृढ़ कर दिया था, कि जब (उस समय के बादशाह ने शिर्क व असत्य पूजा पर उनको विवश किया, तो) वह खड़े हो गये। और (स्पष्ट रूप से) कहने लगे कि हमारा पालन कर्त्ता (और हमारा पूज्य) तो (वह है, जो) आकाशों और पृथ्वी का (सृष्टि कर्त्ता व) स्वामी है। हम तो उसके अतिरिक्त कदापि—

उसके सिवा (अपनी हाजत रवाई के लिये) किसी (दूसरे) माबूद का पुकारने वाले हैं नहीं। अगर हम ऐसा करें, तो हमने बड़ी ही बेजा बात कही ० (एक) यह हमारी क़ौम (के लोग) हैं, जिन्होंने ख़ुदा के सिवा (दूसरे दूसरे) माबूद इख़्तियार कर रक्खे हैं । इन (के माबूद होने) की कोई खुली सनद क्यों नहीं पेश करते । तो जो शख़्स ख़ुदा पर भूठ बोहतान बांधे, उससे बढ़ कर ज़ालिम और कौन ० और (फिर एक दूसरे से लगे कहने कि) जब तुमने अपनी क़ौम के लोगों से और ख़ुदा के सिवा जिन (माबूदों) को यह लोग परस्तिश करते हैं, उनसे कनारा कशी करली, तो (चलो फ़लां) ग़ार में चल बैठो । तुम्हारा पर्वर्दिगार अपनी रहमत (का साया) तुम पर फैला देगा और तुम्हारे इस इरादे में सहूलत के सामान मुहय्या करेगा ० (ग़रज़ यह जो में ठान, ग़ार में ऐसी जगह जा छुपे कि ऐ मुख़ातब !) जब आफ़ताब निकले, तो तू देखेगा कि वह उनके ग़ार से दाहिनी तरफ़ को बचा हुआ रहता है और जब डूबता है, तो उनसे बाईं तरफ़ को कतरा जाता है। और (यह ग़ार की तंगी की वजह से नहीं, बल्कि) वह ग़ार के अन्दर बड़ी कुशादा जगह में (मज़े से छावँ में लेटे) हैं। यह (भी) ख़ुदा की (क़ुद्रत की) निशानियों में से (एक निशानी) है। जिसको ख़ुदा हिदायत दे, वही राह रास्त पर है और जिसको वह गुमराह करे, तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम कोई उसका कारसाज़ राह दिखाने वाला न पाओगे ० और (ऐ मुख़ातब !) तू उनको समझे कि जागते हैं, हालांकि वह सोते हैं। और हम दाहिनी तरफ़ को और बाईं तरफ़ को उनकी कर्वटें बदलवाते जाते हैं। और उनका (एक) कुत्ता (भी है, जो) चौखट पर अपने दोनों हाथ फैलाए (बैठा) है-

مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ۝ هٰٓؤُلَآءِ
قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ لَوْلَا يَاْتُوْنَ
عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ ۝ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ
اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ
مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ
مِّرْفَقًا ۝ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ
عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ
تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ
ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ
وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ۝ وَتَحْسَبُهُمْ
اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ ۝ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ
وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ

किसी (और बनावटी) पूज्यों की पूजा नहीं करेंगे। (और अगर हम किसी कारण ख़ुदा के अतिरिक्त किसी और को पूज्य कहें) तो उस वक़्त बिल्कुल (यह समझना चाहिये कि) हमने (सत्य व न्याय का ख़ून किया और) अत्यन्त असत्य बात कही ॥

(अफ़सोस !) यह हमारी जाति (किस क़दर मूर्ख) है कि उसने ख़ुदा को छोड़ कर (और बहुत से) पूज्य बना लिये। (जिस तरह एक ख़ुदा के पूजने वाले अपने इस दावे के प्रमाण में कि ख़ुदा एक है, स्पष्ट प्रमाण और तर्क पेश करते हैं, उसी तरह) यह (हमारी जाति के) लोग (अपने) इन (पूज्यों के सत्य होने) पर कोई स्पष्ट प्रमाण क्यों नहीं देते ? तो (भला) उस मनुष्य से अधिक कौन अत्या-चारी हो सकता है, जो ख़ुदा पर भूठा दोष लगाये। (अर्थात कहे कि अल्लाह तआला ने इन मूर्तियों को अपनी ख़ुदाई में साभी बना रक्खा है)॥

और (फिर यह कहफ़ वाले लोग अपने सहमत लोगों की ओर ध्यान देकर बोले कि) जब तुमने इन (असत्य पूज्यों) से और अल्लाह के अतिरिक्त, जिन (असत्य पूज्यों) की यह पूजा करते हैं, उनसे पृथक (ही) हो गये, तो (अब तुमको यहां रहने की क्या आव-श्यकता है। चलो) किसी पहाड़ की खोह में शरण लो (और इस बात से धीरज रक्खो कि तुमको वहां किसी बात का कष्ट नहीं पहुँचेगा)। तुम्हारा पालन कर्त्ता (वहां भी) तुम्हारे लिये अपनी कृपा (अर्थात जीविका) को विस्तृत कर देगा। और तुम्हारे लिये तुम्हारे (हर) काम में सुविधा पैदा कर देगा ॥

(तात्पर्य यह है कि उन लोगों ने आपस में सलाह की) और (एक खोह में जा छिपे। ऐ सुनने वाले ! यदि तू उस खोह के पास जाय और) सूरज को देखे (तो बड़ा अचम्भा करे) कि जब वह निकलता है, तो उनके पहाड़ की खोह से दाईं तरफ़ बचा हुआ, और जब वह अस्त होता है, तो उन (के पहाड़ की खोह) से बाईं तरफ़ ढलका हुआ (अर्थात धूप तक उन मनुष्यों पर नहीं पड़ती)। और वह खोह के (एक) बहुत विस्तार पूर्वक भाग में (धूप की तेज़ी से सुरक्षित पड़े सो रहे) हैं। (निस्सन्देह) यह अल्लाह की (शक्ति के) चिन्हों में से (एक चिन्ह) है। (अस्तु यह है कि) जिसको अल्लाह हिदायत दे, तो वही हिदायत ग्रहण करता है (और लोक परलोक में सुख पाता है)। और जिसका वह पथ भ्रष्ट करदे, तो (ऐ रसूल !) तुम उसके लिये कोई ऐसा सहायक (भी कहीं) न पाओगे, जो (उसको सीधा) मार्ग बताने वाला हो ॥

और (ऐ सम्बोधित मनुष्य ! तुझसे उनकी दशा क्या वर्णन की जाय। यदि तू उन्हें उस खोह में जाकर देखे, तो) तू (यह) ख़्याल करे कि वह जाग रहे हैं-यद्यपि वह सो रहे हैं। और हम उनको (सुलाते हैं और) दायें बायें करवटें बदलवाते हैं। और उनका कुत्ता अपने दोनों हाथ फैलाये चौखट (अर्थात् खोह के मुंह) पर (पड़ा पहरा दे रहा) है-

(ऐ मुख़ातब !) अगर तू उन लोगों को (इस हाल में ऊपर से) झांक कर देखे, तो ज़रूर उल्टे पांव भाग खड़ा हो। और उन (की सूरत हाल) से तुझमें एक दहशत समा जाय ० और (जिस तरह हमने उनको अपनी .कुद्रत से सुला दिया था) इसी तरह हमने उनको (अपनी .कुद्रत से जगा भी) उठाया, ताकि अपने आपस में पूछ गछ करें। (चुनांचे) उनमें से एक बोलने वाला बोल उठा (क्यों भई !) भला (उस ग़ार में) तुम कितनी मुद्दत ठहरे होगे? वह बोले हम (बहुत) रहे (होंगे, तो) एक दिन या एक दिन से भी कम। (आख़िर हार कर सब) बोल उठे कि जितनी मुद्दत तुम लोग (ग़ार में) रहे, तुम्हारा पर्वर्दिगार ही उसको बेहतर जानता है। तो (अब) अपने में से एक को अपना यह रुपया देकर शहर की तरफ़ भेजो कि वह (जाकर) देखे कि किसके हां अच्छा खाना (मिल सकता) है। तो उसमें से (बक़द्र ज़रूरत) खाना तुम्हारे पास ले आए और चुपके से लेकर चला आए और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे ० (क्योंकि) अगर (तुम्हारी क़ौम के) लोग तुम्हारी ख़बर पा जायँगे, तो तुमको (आकर) संगसार कर देंगे, या तुमको उलटा फिर अपने दीन में कर लेंगे। और ऐसा हुआ, तो फिर तुमको कभी फ़लाह होनी नहीं ० और (जिस तरह हमने उनको अपनी .कुद्रत से सुलाया और अपनी .कुद्रत से उठाया) इसी तरह हमने (उनकी क़ौम के लोगों को) उन पर मुत्तला कर दिया, ताकि (लोग) जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि क़यामत (के आने) में कुछ भी शुबहा नहीं। अब इत्तिला हुए पीछे लोग उनके बारे में लगे आपस में झगड़ने, तो बाज़ ने कहा अस्हाब कहफ़ (के सोने की जगह) पर (बतौर यादगार) एक इमारत बना खड़ी करो। (और इनके हाल की ज़्यादा तफ़तीश न करो) इनके हाल को इनका पर्वर्दिगार (ही) बेहतर जानता है। (और) इनके बारे में जिन की राय (दूसरों पर) ग़ालिब रही, उन्होंने कहा कि हम तो इन (के सोने की जगह) पर एक मस्जिद बनाएंगे० —

بالوصيد لو اطلعت عليهم لوليت منهم
فرارا ولملئت منهم رعبا ۝ وكذلك بعثنهم
ليتساءلوا بينهم قال قائل منهم كم لبثتم
قالوا لبثنا يوما او بعض يوم قالوا ربكم اعلم
بما لبثتم فابعثوا احدكم بورقكم هذه
الى المدينة فلينظر ايها ازكى طعاما
فليأتكم برزق منه وليتلطف ولا يشعرن
بكم احدا ۝ انهم ان يظهروا عليكم يرجموكم
او يعيدوكم في ملتهم ولن تفلحوا اذا ابدا ۝
وكذلك اعثرنا عليهم ليعلموا ان وعد الله
حق وان الساعة لا ريب فيها اذ يتنازعون
بينهم امرهم فقالوا ابنوا عليهم بنيانا ربهم اعلم
بهم قال الذين غلبوا على امرهم لنتخذن عليهم

مسجدا

यदि तू उनकी यह दशा देख ले, तो तू उनके पास से भाग कर उलटा वापिस आ जाय। और तेरे (हृदय के) भीतर उनका भय बैठ जावे॥

और उसी तरह हमने (एक बड़े समय के पश्चात्) उन्हें (ज़िन्दा) उठाया था, जिससे कि वह आपस में कुछ बात (चीत) करें। (अतएव जब वह जागे, तो) उनमें से किसी ने पूछा (कहो भाई !) तुम कितने (समय तक यहाँ) ठहरे। उन्होंने कहा हम (यहाँ) एक दिन ठहरे (होंगे) या (एक) दिन से कुछ कम। (लेकिन जब उन्होंने अपनी दशा पर ध्यान किया और उन्हें मालूम हुआ कि हमको यहाँ बहुत समय लग गया, तो) कहने लगे कि अल्लाह ही ख़ूब जानता है कि (भाइयो !) तुम यहाँ कितनी देर ठहरे॥

फिर (उनको भूख लगने लगी, तो आपस में कहने लगे कि) अपने में से किसी को अपनी यह चाँदी (अर्थात दाम) देकर शहर की तरफ़ भेजो (और उससे कहो कि जब वह शहर में जावे) तो देखे कि उम्दा (पवित्र) भोजन किस (दूकान्दार) के यहाँ (मिलता) है। (अगर किसी के यहाँ उत्तम भोजन मिल जावे) तो उसमें से (आवश्यकतानुसार) तुम्हारे लिये खाना ले आवे। और (उसको यह भी हिदायत करदो कि मार्ग में किसी से लड़े झगड़े नहीं, बल्कि) उसे चाहिये कि नर्मी से पेश आवे। और किसी को भी तुम्हारी ख़बर न होनेदे॥

क्योंकि अगर लोगों को तुम्हारी (इस बात की अर्थात खोह में छिपने की) ख़बर हो गई, तो (बुरी तरह पेश आवेंगे)। या तो तुमको पत्थरों से मार डालेंगे, या तुमको अपने (असत्य) धर्म में लौटा लेंगे। और (अगर तुम लोग उनके दबाव में आकर अपने धर्म से फिर गये, तो याद रक्खो ! कि फिर) तुम कभी भी कल्याण प्राप्त नहीं कर सकते॥

और (जिस प्रकार हमने उपरोक्त व्यवहार उनके साथ किये) इसी प्रकार हमने लोगों को उन (की दशा) की सूचना दे दी, ताकि वह जान जायँ कि (जो) अल्लाह (ज़िन्दों को सैकड़ों वर्ष सुला सकता है और फिर जगा करके वैसा ही कर देता है-जैसे वह सोने से पूर्व थे, तो उस) का (क़ब्रों से मुर्दों को ज़िन्दा उठाने का) वादा (भी बिल्कुल) सच्चा है। और क़यामत (निश्चित रूप से एक यथार्थ बात है। उसके आने) में कोई सन्देह नहीं॥

(और .खुदा की महिमा देखो ! कि लोगों को उनकी सूचना उस समय हुई) जबकि वह अपने आपस में उन्हीं के विषय में झगड़ रहे थे। और (कुछ) लोग कह रहे थे कि इन (अस्हाब कहफ़ के पहाड़) पर (बतौर यादगार) कोई भवन बनवा दो (और उन के वृतान्तों को अधिक न कुरेदो)। उन (की दशा) को तो उनका पालन कर्त्ता ही ख़ूब जानता है। (और वह लोग जो उनके विषय में (औरों पर) अधिकार पा गये थे, उनका वचन यह था कि हम उन (के पहाड़) पर निश्चय रूप से एक पूजा स्थान बनायेंगे॥

مسجدا ۝ سيقولون ثلثة رابعهم كلبهم ويقولون
خمسة سادسهم كلبهم رجما بالغيب ويقولون
سبعة وثامنهم كلبهم قل ربي اعلم بعدتهم
ما يعلمهم الا قليل ۝ فلا تمار فيهم الا مراء
ظاهرا ولا تستفت فيهم منهم احدا ۝ ولا
تقولن لشاىء اني فاعل ذلك غدا ۝ الا ان يشاء
الله واذكر ربك اذا نسيت وقل عسى
ان يهدين ربي لاقرب من هذا رشدا ۝
ولبثوا في كهفهم ثلث مائة سنين وازدادوا
تسعا قل الله اعلم بما لبثوا له غيب السموت والارض
ابصر به واسمع ما لهم من دونه من ولي
ولا يشرك في حكمه احدا ۝ واتل ما اوحي
اليك من كتاب ربك لا مبدل لكلمته ولن

ع

(बाज़ तो) कहते हैं कि (अस्हाब कहफ़) तीन थे, चौथा उनका कुत्ता और (बाज़) कहते हैं, पांच थे, छठा उनका कुत्ता। (यह सब) ग़ैब की बातों में अटकल (के तुक्के) चलाते हैं। और (हां बाज़) कहते हैं, सात थे और आठवां उनका कुत्ता। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि इनकी गिनती को मेरा पर्वर्दिगार ही ख़ूब जानता है। इन (की अस्ली गिनती) को बहुत थोड़े (लोग) जानते हैं। तो (ऐ पैग़म्बर !) अस्हाब कहफ़ के बारे में (लोगों से कुछ) झगड़ा न करो। मगर सरसरी तौर का झगड़ा (हो, तो ख़ैर कुछ मुज़ायक़ा नहीं) और अस्हाब कहफ़ के बारे में इनमें से किसी से पूछ गछ (भी) न करो ० और किसी चीज़ की निस्बत (यह) न कहा करो कि मैं इस (काम) को कल कर दूंगा ० मगर (हां यूं कहा करो कि) ख़ुदा चाहे, तो (इस काम को कल कर दूंगा) और अगर (इन्शाअल्लाह कहना) कभी भूल जाया करो, तो (जब याद आ जाय -इन्शाअल्लाह कहने से) अपने पर्वर्दिगार को याद कर लिया करो। और कहदो कि उम्मीद है कि मेरा पर्वर्दिगार इससे ज़्यादा रूबराह बात मुझको बताए ० और (अस्हाब कहफ़) अपने ग़ार में तीन सौ बरस रहे और नौ (बरस उसके ऊपर) और रहे ० (ऐ पैग़म्बर ! इस पर भी लोग इस मुद्दत को तस्लीम न करें, तो इनसे) कहो कि जितनी मुद्दत (तक अस्हाब कहफ़ ग़ार में) रहे, अल्लाह (तुमसे) बेहतर जानता है। आस्मानों और ज़मीन का (इल्म) ग़ैब उसी को है। (अल्लाहु अक्बर) क्या ही देखने वाला और क्या ही सुनने वाला है। उसके सिवा लोगों का कोई कारसाज़ नहीं और न वह अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है ० और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे पर्वर्दिगार की किताब जो वही के ज़रिये से तुम पर नाज़िल हुई है, उसको पढ़ते (पढ़ाते) रहा करो। कोई उसकी बातों को बदल नहीं सकता और —

(ऐ रसूल ! जिस समय तुम लोगों के सामने इस क़िस्से को वर्णन करोगे, तो कुछ) लोग तो कहेंगे कि (अस्हाब कहफ़) तीन थे-उनमें चौथा उनका कुत्ता था। और (कुछ) कहेंगे कि (वह) पांच थे (और) उनमें छठा उनका कुत्ता था। (यह सब लोग) यूं ही अटकल पच्चू बातें बना रहे हैं। और (हां कुछ लोग) कहेंगे कि (वह) सात थे (और) उनमें आठवां उनका कुत्ता था। (तो ऐ रसूल !) तुम (इन सब लोगों से) कहदो कि उनकी (ठीक) संख्या मेरा पालन कर्त्ता जानता है। और (कुछ आदमी और जानते हैं)। सिवाय कुछ (आदमियों और उनके पालन कर्त्ता) के उन (की ठीक संख्या) को कोई नहीं जानता। अतः (ऐ रसूल !) तुम उन (के विषय) में थोड़ी सी बहस के अतिरिक्त अधिक बहस न करना। (अर्थात जो कुछ तुमको वही द्वारा बता दिया गया है, वह तो बता देना। अधिक वार्तालाप न करना)। और न उन (के विषय) में उन (मूर्खों) से तुम कुछ पूछना (क्योंकि उनके सम्बन्ध के समस्त आवश्यकीय वृतान्त अल्लाह तआला तुमको बता चुका) ॥

और (ऐ रसूल ! जब) तुम (से कोई बात पूछी जाय, तो उसके बताने का समय कभी नियत न किया करो। और) किसी वस्तु के सम्बन्ध में (भी) बिना इन्शाअल्लाह कहे (यह) न कहा करो कि मैं (उसे) कल (या फ़लां दिन) कर दूंगा। और जब (यह कहना) भूल जाओ, तो (जब याद आवे, उस समय) अपने पालन कर्त्ता को याद कर लिया करो। (अर्थात इन्शाअल्लाह कह दिया करो)। और (यह भी कि) तुम (इन लोगों से) कहदो कि (मुझे तुम्हारे सवाल के जवाब देने और उसे अपनी नुबूवत का प्रमाण ठहराने की कुछ आवश्यकता नहीं है)। सम्भव है कि मेरा पालन कर्त्ता मुझे इस (अस्हाब कहफ़ की घटना) से भी अधिक समीप कोई (ऐसी) हिदायत करदे (जो मेरे नबी होने पर इस घटना के बतलाने से भी अधिक प्रमाणिक हो)॥

और वह अपनी (इस) खोह में तीन सौ वर्ष (तक पड़े सोते) रहे। और नव (वर्ष) उन्होंने (इन तीन सौ पर) और अधिक किये। (अर्थात अस्हाब कहफ़ रक़ीम पर्वत की खोह में तीन सौ नव वर्ष तक रहे) ॥

(यदि यह इन्कार करने वाले इस अवधि को ठीक न मानें, तो) तुम (उनसे) कहदो कि अल्लाह तआला उस (अवधि) को (तुमसे बहुत अधिक) जानता है कि जितने (समय तक) वह (अर्थात अस्हाब कहफ़ उस खोह में) ठहरे। (क्योंकि) आकाशों और पृथ्वी की (समस्त) गुप्त बातें उसी के लिये हैं (अर्थात लोक तथा लोक की वस्तुओं का उसको ज्ञान है। विचार करो) वह कितना देखने वाला और कितना सुनने वाला है (कि संसार की कोई खुली ढकी वस्तु ऐसी नहीं है कि जो उसकी दृष्टि से ओझल हो। और) ख़ुदा के अतिरिक्त (उनके जितने पूज्य हैं, दण्ड के समय उनमें से) कोई भी उनका सहायक नहीं (बनेगा)। और अल्लाह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता (कि किसी को उसका मुक़ाबला करने का साहस हो) ॥

(ऐ रसूल ! तुम इन लोगों को समझाओ) और (वह) क़ुरआन, जो वही द्वारा तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से तुम्हारे पास भेजा गया है, वह (इन लोगों को) पढ़ (पढ़) कर सुनाओ। (उसमें दण्ड व पुरस्कार के जो वादे अल्लाह ने तुमसे किये हैं, वह सच्चे हैं)। उसके वादों को (पृथ्वी व आकाश में) कोई नहीं बदल सकता (वह अपने समय पर अवश्य पूर्ण होंगे। अतः ऐ रसूल ! तुम अपने प्रचार सम्बन्धी कर्तव्य को पूरा किये जाओ)—

उसके सिवा तुम कहीं पनाह भी न पाओगे ० और (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग सुबह व शाम अपने पर्वर्दिगार को याद करते (और) उसी की रज़ामन्दी चाहते हैं, उनके साथ (उठने बैठने पर) अपने नफ़्स को मजबूर करो और तुम्हारी नज़र (इल्तिफ़ात) उन पर से हटने न पाए कि लगो दुनिया की ज़िन्दगी के साज़ व सामान का पास करने। और ऐसे शख़्स का कहा हरगिज़ न मानना, जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है और वह अपनी ख़्वाहिश के पीछे पड़ा है और उसकी दुनिया दारी हद से बढ़ गई है ० और (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो (कि यह क़ुर्आन) बर्हक़ तुम्हारे पर्वर्दिगार की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है। पस जो चाहे माने और जो चाहे न माने, (मगर) मुन्किरों के लिये तो हमने ऐसी आग तय्यार कर रक्खी है, जिसकी क़नातें उनको चारों तरफ़ से घेर लेंगी। और फ़र्याद करेंगे, तो (जिस) पानी से उनकी फ़र्याद रसी की जायगी (वह इस क़द्र गर्म होगा) जैसे पिघला हुआ ताँबा। (और) वह मुंहों को भून डालेगा, (क्या ही) बुरा पानी है और (दोज़ख़ भी) आराम व आसाइश के एतिबार से क्या ही बुरी जगह है ० बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल भी किये (आख़िरत में उनके लिये बड़े मज़े हैं, क्योंकि) जो शख़्स नेक अमल करे, हम उसके अज्र को ज़ाए नहीं होने दिया करते ० यही लोग हैं, जिनके रहने के लिये (बहिश्त के) हमेशगी के बाग़ हैं। इन लोगों के (मकानों के) तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी। इनको वहां सोने के कङ्गन पहिनाए जायँगे–

تجد من دونه ملتحدا واصبر نفسك مع الذين
يدعون ربهم بالغدوة والعشي يريدون
وجهه ولا تعد عيناك عنهم تريد زينة
الحيوة الدنيا ولا تطع من اغفلنا قلبه عن
ذكرنا واتبع هوىه وكان امره فرطا ●
وقل الحق من ربكم فمن شاء فليؤمن ومن
شاء فليكفر انا اعتدنا للظلمين نارا
احاط بهم سرادقها وان يستغيثوا يغاثوا
بماء كالمهل يشوي الوجوه بئس الشراب
وساءت مرتفقا ● ان الذين امنوا وعملوا
الصلحت انا لا نضيع اجر من احسن عملا ●
اولئك لهم جنت عدن تجري من تحتهم
الانهر يحلون فيها من اساور من ذهب

ويلبسون

और (इसके लिये किसी प्रकार की चिन्ता न करो। यदि तुमने अपने इस आवश्यक कर्तव्य के पालन करने में कुछ भी कमी की, तो याद रक्खो कि) अल्लाह के (दरवाज़े के) अतिरिक्त कोई आश्रय की जगह तुमको न मिलेगी। (अर्थात जब तुमसे उसके सम्बन्ध में उत्तर माँगा जावेगा, तो कोई तुम्हारा सहायक न होगा) ॥

और (देखो ऐ रसूल !) जो लोग सुबह शाम अपने पालन कर्त्ता की उपासना करते (और) उसकी प्रसन्नता प्राप्त करना चाहते हैं, तुम उनके साथ (रहने) पर अपने आपको (विवश व) दृढ़ करो। और (देखो !) तुम्हारी दृष्टियाँ उनकी ओर से फिरने न पायें (और कहीं यह न हो) कि तुम संसार की (थोड़े समय की) ज़िन्दगी की सजावट की अभिलाषा करने लगो। (अर्थात कङ्गाल मुसल्मानों को छोड़ कर धनवान काफ़िरों पर दया दृष्टि करने लगो, वरन् हर शुद्ध हृदय) और (हर आधीन के साथ मेहर्बानी से पेश आओ-चाहे वह निर्धन हो, या धनवान। और) उस मनुष्य का कभी कहना न मानो, जिसके दिल को हमने अपनी याद से अचेत कर दिया है। और वह अपनी (तृष्णा व) इच्छा का ग़ुलाम बन गया है। और उसका (यह) काम (अर्थात उनकी कामना) हद से ज़्यादा गुज़र गई* है ॥

* टीका—एक बार एक काफ़िर रसूलुल्लाह की सेवा में उपस्थित हुआ। और कहने लगा कि ऐ मुहम्मद ! तुम कमीनों अर्थात ग़रीब मुसल्मानों को अपने पास न बैठने दो, तो भले लोग अर्थात धनवान काफ़िर तुम्हारे पास आया करें। अल्लाह तआला ने यह आयत उसी आदमी के खंडन में अवतीर्ण की:—हसन निज़ामी ॥

और (उसने अपनी नादानी व मूर्खता से अपने जीवन का मुख्य अभिप्राय धनवानता और रुपये की पूजा को ठहरा लिया है। ऐ रसूल !) तुम (इन अचेतों को समझाओ। और इनसे) कहो कि सच्चा (धर्म इस्लाम धर्म है, जो) तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से (आया) है। अतः जो चाहे (उसको सच्चा धर्म) माने और जो चाहे न माने। निस्सन्देह (न मानने वाले) अत्याचारियों के लिये हमने ऐसी आग तैयार कर रक्खी है, जिसकी क़नातें उन्हें चारों ओर से घेर लेंगी। और (मारे प्यास के उनकी बुरी दशा होगी)। यदि वह (इस दशा में कुछ) फ़र्याद करेंगे (और पानी माँगेंगे) तो ऐसे पानी से उनकी फ़र्याद सुनी जायगी (अर्थात उन्हें पीने के लिये ऐसा पानी दिया जायगा) जो पिघले हुये ताँबे की तरह (खौलता हुआ) होगा। (और) जो (उनके होंठों तक पहुँचते ही उनके) मुंहों को भून देगा। (नर्क में उन के लिये) निकृष्ट पीने की चीज़ है और (नर्क उनके वास्ते) सबसे बुरा ठिकाना है ॥

निस्सन्देह जो लोग (इस्लाम धर्म पर) ईमान ले आये और (ईमान लाने के पश्चात्) उन्होंने कर्म (भी) अच्छे किये, तो (उन के लिये स्वर्ग है, जो बिल्कुल सुख का स्थान है)। निस्सन्देह जो आदमी नेक कर्म करे, हम उसके फल को (कभी) नष्ट नहीं करते ॥

यही (वह भाग्यवान) लोग हैं, जिनके लिये (हमारे यहाँ उनके) रहने के (वास्ते हरे भरे) बाग़ (तैयार) हैं। उनके नीचे (साफ़ व पवित्र) नहरें जारी हैं। उन (बाग़ों) में उन्हें सोने के कङ्गन पहिनाये जायँगे–

يلبسون ثيابا خضرا من سندس واستبرق
متكئين فيها على الارائك نعم الثواب و
حسنت مرتفقا ۝ واضرب لهم مثلا رجلين
جعلنا لاحدهما جنتين من اعناب و
حففنهما بنخل وجعلنا بينهما زرعا ۝ كلتا
الجنتين اتت اكلها ولم تظلم منه
شيا وفجرنا خللهما نهرا ۝ وكان له
ثمر فقال لصاحبه وهو يحاوره انا اكثر
منك مالا واعز نفرا ۝ ودخل جنته و
هو ظالم لنفسه قال ما اظن ان تبيد هذه
ابدا ۝ وما اظن الساعة قائمة ولئن رددت
الى ربى لاجدن خيرا منها منقلبا ۝ قال له
صاحبه وهو يحاوره اكفرت بالذى خلقك

और वह महीन और दबीज़ रेशमी सब्ज़ कपड़े ज़ेब तन करेंगे (और) वहां तख़्तों पर तकिये लगाये (बैठे) होंगे। (क्या ही) अच्छा बदला है, और (बहिश्त भी आराम व) आसाइश की (कैसी) उम्दा जगह है ० और (ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों से उन दो शख़्सों की मिसाल बयान करो, जिन में से एक को हमने अंगूर के दो बाग़ दे रक्खे थे और हमने उनके गिर्दा-गिर्द खजूर के दरख़्त लगा रक्खे थे और हमने दोनों (बाग़ों के) बीच बीच में खेती (भी) लगा रक्खी थी ० दोनों बाग़ अपने फल (ख़ूब) लाए और फल (लाने) में किसी तरह की कमी न की और दोनों (बाग़ों) के दर्मियान हमने नहर भी जारी कर रक्खी थी ० तो बाग़ों के मालिक के पास (हमा वक़्त तरह तरह की) पैदावार मौजूद रहती थी। एक दिन यह शख़्स अपने (किसी) दोस्त से बातें करते करते बोल उठा कि मैं तुझ से ज़्यादा मालदार हूँ और (मेरा) जथा (भी) बड़ा ज़बरदस्त (जथा) है ० और (वह यह बातें करता हुआ) अपने बाग़ में गया और वह (नाहक़ के ग़ुरूर और ख़ुदा की ना शुक्री से) अपने नफ़्स पर आप ही ज़ुल्म कर रहा था। लगा कहने कि मैं नहीं समझता कि यह (बाग़) कभी (भी) बर्बाद हो ० और मैं (यह भी) नहीं समझता कि क़यामत बर्पा हो और बिल्फ़र्ज़ (हुई भी, तो जब) मैं अपने पर्वर्दिगार की तरफ़ लौटाया जाऊंगा, तो जहां लौट कर जाऊँगा (बहर हाल) इस (दुनिया) से (तो उस जगह को) बेहतर ही पाऊंगा ० उसका दोस्त जो उससे बातें करता जाता था (असनाए गुफ़्तुगू में) बोल उठा कि क्या तू उस (पर्वर्दिगार) का मुन्किर है, जिसने तुझको—

और वह (उन बाग़ों में पहुँच कर) महीन और मोटे रेशम के हरे कपड़े पहिनेंगे। और (वह) वहाँ (जड़ाऊ) छपरखटों पर तकिए (लगा) लगा कर बैठेंगे। (उन लोगों के अच्छे अच्छे कर्मों का) क्या ही श्रेष्ठ (बदला व) पुण्य है। और (उनके रहने के लिये कैसा) अच्छा शान्ति-स्थान (अर्थात स्वर्ग) है॥

और (ऐ रसूल !) तुम इन (लोगों को सांसारिक भोग बिलास की अस्थिरता और परलोक के सुखों और नेअ्मतों की स्थिरता को समझाने) के लिये (उनके सामने) उन दो आदमियो का वृतान्त वर्णन करो, जिनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग़ प्रदान किये थे। और उनके चारों ओर (बाड़ के तौर पर) खजूर के पेड़ लगाये और उनके बीच में खेत उगाये॥

(फिर) वह दोनों (बाग़) अपने २ फल लाये और फल (देने) में उन्होंने कोई कसर (बाक़ी) न छोड़ी (अर्थात ख़ूब फल दायक हुये)। और हमने उनके बीच में नहर जारी करदी (ताकि उनकी भली प्रकार सिंचाई की जावे)॥

और इस (बाग़ वाले) के पास (अधिकता से अन्न और) फल (मौजूद रहते) थे। अतः वह (एक बार) वार्तालाप में अपने साथी (अर्थात यहूज़ा) से कहने लगा कि (ऐ भाई ! देख !!) मैं माल (व सम्पत्ति) में भी तुझसे अधिक हूँ और (पद व) सम्पत्ति की दृष्टि से भी (तुझसे) बढ़ चढ़ कर। (अब तू अपनी अउन्नति और मेरी उन्नति को देख ! और परिणाम निकाल कि सच बात पर कौन है और असत्य पर कौन)॥

और वह (ख़ुदा की आज्ञाओं को घृणा की दृष्टि से देखता हुआ और) अपनी जान पर स्वयं ही अत्याचार करता हुआ अपने बाग़ में (जा) पहुंचा। (और यहूज़ा को भी अपने साथ ले गया, और उससे) कहने लगा-मैं नहीं समझता कि (इन वर्तमान प्रबन्धों के होते हुये भी) यह (बाग़) कभी नष्ट हो जायगा। और मुझे विश्वास नहीं आता कि (यह संसार का प्रबन्ध किसी ज़माने में नष्ट भ्रष्ट हो जायगा और) प्रलय हो जावेगी। और (मेरी अक़्ल में नहीं आता कि मैं मरने के बाद अपने पालन कर्त्ता के पास लौटाया जाऊँगा। मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि) यदि मैं लौटाया गया, तो ख़ुदा की क़सम इस (बाग़) से (कहीं) श्रेष्ठ स्थान मैं (ख़ुदा के यहाँ) पाऊंगा॥

(यह बातें सुन कर) उसके साथी (यहूज़ा) ने अपनी वार्तालाप में उससे कहा (मूर्ख भाई !) क्या तू उस (शक्ति शाली व महान ख़ुदा की शक्ति) का इन्कार करता है, जिसने तुझको (सबसे पहिले)—

مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝ لٰكِنَّا
هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝ وَلَوْلَآ اِذْ
دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا
بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝ فَعَسٰى
رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا
حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۝ اَوْ
يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ۝
وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى
مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ
يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ
يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝
هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۭ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ
عُقْبًا ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ

(पहिले) मिट्टी से, फिर नुत्फ़े से पैदा किया। फिर तुझको पूरा आदमी बनाया ० लेकिन मैं तो (यह अक़ीदा रखता हूँ कि) वही अल्लाह मेरा पर्वर्दिगार है और मैं अपने पर्वर्दिगार के साथ किसी को भी शरीक नहीं करता ० और जब तू अपने बाग़ में आया, तो तूने (यूं) क्यों न कहा कि यह (सब) ख़ुदा के चाहे से हुआ है (वर्ना मुझमें तो) बे मदद ख़ुदा कुछ भी ताक़त नहीं। अगर माल और औलाद के एतिबार से तू मुझको अपने से कम समझता है ० तो अजब नहीं, मेरा पर्वर्दिगार तेरे बाग़ से (भी) बेहतर (बाग़) मुझको अता फ़र्माए और तेरे बाग़ पर (तेरी ना शुक्री की सज़ा में) आस्मान से कोई (ऐसी) बला नाज़िल करे कि वह चटियल मैदान होकर रह जाय ० या उसका पानी बहुत नीचे उतर जाय और तू उसको किसी तरह तलब न कर सके ० (चुनाँचे अज़ाब नाज़िल हुआ) और उस (के बाग़) की पैदावार (अज़ाब के) फेर में आ गई। तो वह उस लागत पर जो बाग़ (की दुरुस्ती) में लगाई थी, अपने दोनों हाथ मलता रह गया और (बाग़ का यह हाल हो गया कि) वह अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ पड़ा था और (मालिक बाग़) कहता जाता था कि ऐ काश ! मैं अपने पर्वर्दिगार के साथ किसी को शरीक न करता ० और उसका कोई जथा ऐसा न हुआ कि ख़ुदा के सिवा उसकी मदद करता और न वह (ख़ुद ही) इन्तिक़ाम ले सका ० इसी (हिकायत) से (साबित हुआ कि) सब इख़्तियार ख़ुदाए बरहक़ ही को है। वही बेहतर सवाब (देने) वाला और (वही आख़िरकार) बेहतर एवज़ (देने) वाला है ० और (ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों से (एक मिसाल यह भी) बयान करो कि दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल पानी की सी है—

मिट्टी से, फिर वीर्य से उत्पन्न किया। फिर तुझको (सुडौल शरीर देकर तुझे एक) स्वस्थ (व बलिष्ठ) आदमी बना दिया॥

(ख़ैर तू जान, तेरा काम जाने) । परन्तु (स्मरण रख ! मैं तेरे बहकाये में आने वाला नहीं। मेरा विश्वास है कि) वही अल्लाह मेरा पालन कर्त्ता है। (वही समस्त संसार का स्वामी है) । मैं अपने (ऐसे) पालन कर्त्ता के साथ (अर्थात उसके ख़ुदा होने में कभी) किसी को शरीक न करूंगा॥

और (तेरी तरह अपने लोक परलोक को ख़राब न करूंगा। ऐ क़तरूस ! क्या तू मुझे इसका कारण बता सकता है कि) जिस समय तू अपने बाग़ में प्रवेश हुआ था, तो उस समय तूने अपने मुंह से कुफ़्र के कलमे क्यों निकाले और) माशाअल्लाह (ला हौल व) ला क़ूवत इल्ला बिल्लाह क्यों नहीं कहा ? (मूर्ख भाई ! अपने होश व हवास ठीक कर और मेरी बात सुन !!) । यदि (इस समय) तू मुझको (अपने मुक़ाबले में) धन व सन्तान (और पद व सम्मान) को दृष्टि से कमतर देखता है, तो (इसके यह अर्थ कदापि नहीं हैं कि तू सत्य पर है, और मैं असत्य पर) । सम्भव है कि मेरा पालन कर्त्ता मुझको तेरे बाग़ से (भी) अच्छा बाग़ प्रदान करे (और पद व सम्मान में भी मुझको तुझसे बढ़ा दे) । और (तेरे) इस (शोभायमान बाग़) पर (तेरी सर्कशी के बदले) आकाश से कोई (ऐसी) विपत्ति भेज दे, कि वह (बिलकुल सूख जाय और एक) चटियल मैदान होकर रह जाय या (आकाशीय विपत्ति के अतिरिक्त) उस (की नहर) का पानी (इतना) सूख जाय कि तू (पृथ्वी में उसका कहीं) पता (भी) न चला सके॥

(अतएव उसके बाग़ पर विपत्ति आई) और उसकी उपज को उस (दुःख) ने चारों ओर से घेर लिया। और वह (अर्थात् क़तरूस अपने) उस (रुपये के नष्ट होने) पर, जो उसने उस (बाग़ के लगाने) में व्यय किया था (बहुत ही शोकातुर होकर) हाथ मलने लगा। और वह बाग़ अपनी टट्टियों पर आ गिरा (अर्थात् उसकी समस्त टट्टियाँ जो अंगूरों की बेलें चढ़ाने के लिये लगाई थीं, गिर पड़ीं और उन पर वृक्ष आन पड़े) । और वह कने लगा-क्या अच्छा होता कि (मैं उद्रव व उदण्डता से बाज़ रहता। और) अपने पालन कर्त्ता के साथ किसी को सम्मिलित न करता (और सच्चा पूज्य उसी को समझता) ॥

और अल्लाह को छोड़ कर उसके लिये (पृथ्वी व आकाश में कोई शख़्स या) कोई समूह ऐसा न निकला, जो उसकी (इस विपत्ति के समय) सहायता करता, और न वह (स्वयं) ही (अपना) बदला ले सका॥

(और) इस अवसर पर (स्पष्ट सिद्ध हो गया कि पूर्ण) अधिकार सच्चे ख़ुदा ही को (प्राप्त) है । वही (मोमिनों को) श्रेष्ठ पुण्य प्रदान करने वाला, और (अच्छे कर्मों का) बदला देने वाला (और काफ़िरों पर कठिन अज़ाब अवतीर्ण करने वाला) है॥

और (ऐ रसूल !) तुम इन (लोगों को समझाने) के लिये संसार के (क्षणिक) जीवन का उदाहरण वर्णन करो। (और उनसे कहो) कि (साँसारिक जीवन तो बिलकुल) उस पानी की तरह है—

الْعُشْ
وَمِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ
هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيَاحُ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ مُقْتَدِرًا ۝ الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَوٰةِ
الدُّنْيَا وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا
وَخَيْرٌ أَمَلًا ۝ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ
بَارِزَةً وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝
وَعُرِضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا
خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُمْ
مَوْعِدًا ۝ وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ
مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ
هَٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً
إِلَّا أَحْصَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا وَلَا
يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۝ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا

. . . हमने आस्मान से बरसाया। तो ज़मीन की रोईदगी पानी के साथ . . . ई। (इस तरह पर कि पानी को जज़्ब कर लिया और ख़ूब फली . . .) फिर (आख़िरकार) चूरा (यानी भूसा) होकर रह गई—जिसे . . . उड़ाए उड़ाए फिरती हैं और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है ० . . . म्बर!) माल और औलाद दुनिया की ज़िन्दगी के (चन्द रोज़ा) . . . ार हैं और आमाल नेक (जिनका असर देर तक) बाक़ी रहे) . . . दिगार के नज़दीक सवाब के एतिबार से बेहतर हैं और तवक्को . . . इन्दा) के एतिबार से भी बेहतर हैं ० और (लोगो! उस दिन की फ़िक्र से ग़ाफ़िल न रहो) जिस दिन हम पहाड़ों को (जगह से) हिला देंगे और (ऐ पैग़म्बर!) तुम ज़मीन को देख लोगे (कि पहाड़ और मकानात और बाग़ात वग़ैरा मिट मिटा कर) खुला मैदान (पड़ा है) और हम लोगों को ला जमा करेंगे और उनमें से किसी को (भी) नहीं रहने देंगे ० और (सबके सब) सफ़ बसफ़ तुम्हारे पर्वर्दिगार के रूबरू पेश किये जाएंगे (और हम कहेंगे कि) जैसा हमने तुमको अव्वल बार पैदा किया (आख़िर) वैसे ही तुम हमारे हुज़ूर में आए पर आए, मगर तुम यह ख़याल करते रहे कि हम तुम्हारे (दुबारा ज़िन्दा करने के) लिये कोई वक़्त ही नहीं ठहराएंगे ० और (लोगों के आमाल का) रजिस्टर (सामने लाकर) रक्खा जायगा, तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम गुनहगारों को देखोगे कि जो कुछ रजिस्टर में (लिक्खा) है (उसको देख देख कर) उस (की जवाब दिही) से डर रहे हैं और कहते जाते हैं कि हाय हमारी कमबख़्ती! यह कैसा रजिस्टर है कि बे क़लम बन्द किये न किसी छोटे ही (गुनाह) को छोड़ता है और न बड़े ही को, और जो कुछ इन लोगों ने (दुनिया में) किया था, (वह सब रजिस्टर आमाल में लिक्खा हुआ) मौजूद पाएंगे और तुम्हारा पर्वर्दिगार किसी पर (मुतलक़) ज़ुल्म नहीं करता ० और (एक वक़्त वह भी था) जब कि हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो—

जिसे हमने आकाश से बरसाया (पृथ्वी ने उसे पिया)। फिर उस (पानी) से ज़मीन की पैदावार (ख़ूब) घनदार हुई। फिर (कुछ
समय बीत जाने के पश्चात उस समस्त) पैदावार (के तिनके २ हो गये। और वह ऐसी) रेज़ा रेज़ा हो गई कि हवायें उसको उड़ाये २
फिरने लगीं। (अर्थात् आकाशीय आत्मा पानी की भांति पृथ्वी पर आई और शरीर ने उसे स्वीकार किया। फिर शरीर पला बढ़ा) और
(कुछ समय के उपरान्त मृत्यु आई और उसने शरीर की आत्मा को निकाल कर शरीर को बिल्कुल व्यर्थ और टुकड़े २ कर दिया कि वायु
में उसके कण उड़ने लगे। निस्सन्देह) अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर अधिकार रखने वाला है ॥

(ऐ रसूल! यही हाल संसार की समस्त वस्तुओं का है। अतएव) धन व सन्तान (जिस पर मनुष्य को बड़ा अहङ्कार होता
है, सब) संसार की ज़िन्दगी की (दो दिन में उड़ जाने वाली) शोभा हैं। और शेष रहने वाली नेकियां (वह निस्सन्देह) तुम्हारे पालन
कर्त्ता के समीप फल प्राप्त करने की दृष्टि से भी अच्छी हैं। और (भविष्य की) आशा की दृष्टि से भी ॥

(अतः प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि क़यामत का ख़्याल करे)। और (उस दिन को स्मरण करे कि) जिस दिन हम पर्वतों
(तक) को (उनकी जगह से) टला देंगे। और (समस्त मकानों को नष्ट कर देंगे। ऐ रसूल!) तुम (उस दिन) पृथ्वी को एक चटियल
मैदान पाओगे। और हम (हिसाब किताब लेने के लिये) इन (सब दुनिया के लोगों) को (अपने सन्मुख) एकत्रित करेंगे। (और जब
हिसाब किताब लेना आरम्भ करेंगे) तो हम उन (लोगों) में से किसी को भी (बाक़ी) न छोड़ेंगे ॥

और (ऐ रसूल!) यह (सब) पंक्ति बांध कर तुम्हारे पालन कर्त्ता के सामने पेश किये जायँगे। (और फिर हम उनको सम्बोधन
करके कहेंगे, कहो!) जैसा हमने तुमको पहिली बार उत्पन्न किया था, उसी प्रकार (फिर) तुम (उत्पन्न होकर) हमारे दरबार में आये
(या नहीं। तुम हमारी शक्ति को एक बार देखने के पश्चात भी हमारी शक्ति के क़ायल न हुये)। वरन यही गुमान करते रहे कि हम तुम्हें
(मारने और तुमको फिर ज़िन्दा करने के) लिये कोई समय नियत ही न करेंगे ॥

और (उस रोज़ प्रत्येक की) कर्म सूची (उसके सामने खोल कर) रखदी जावेगी। फिर (ऐ रसूल!) तुम (उस समय)
पापियों को देखोगे कि जो कुछ उसमें (लिखा हुआ) है, उस (की सज़ा और पूछ गछ के विचार) से भयभीत हो रहे हैं। और क[हते]
हैं हाय! हाय! क्या हो गया इस किताब को-इसने तो छोटे बड़े किसी गुनाह को घेरे बिना छोड़ा ही नहीं। और जो (कुछ भी) उन्होंने
[संस]ार में) किया है, वह (सब अपनी कर्म सूची में लिखा हुआ) पायेंगे। और (ऐ रसूल!) तुम्हारा पालन कर्त्ता (उस दिन)
(. . . बेइन्साफ़ी) नहीं करेगा (वरन प्रत्येक मनुष्य का . . .
. . . जायगा) या मैं मुद्दतों चलता ही रहूंगा ॥
. . . तक पहुँच गये—

بنایا ० लेकिन मैं

परवर्दिगार है और सिवा सभी ने तो सज्दा किया। (यह इब्लीस चूँकि) करता ० और जिन्न में से था, अपने पर्वर्दिगार के हुक्म से निकल भागा, यह (सब) ...!) क्या हमको छोड़ कर इब्लीस को और उसकी नस्ल को कुछ भी ता...) दोस्त बनाते हो ? हालाँकि वह तुम्हारे (क़दीमी) दुश्मन हैं। अपने से ...! (ने जो ख़ुदा के बदले शैतान को इख़्तियार किया है, इन) के (भी) में यह बदला (बहुत ही) बुरा हुआ ० हमने आस्मानों और ज़मीन शुरू पैदा करते वक़्त बल्कि ख़ुद शयातीन के पैदा करते वक़्त भी शयातीन को (अपनी मदद के लिये) नहीं बुलाया और हम (कुछ गए गुज़रे) न थे कि गुमराह करने वालों को (अपना क़ूवत) बाज़ू बनाते ० और (लोगो ! उस दिन की फ़िक्र से गफ़लत न करो) जिस दिन ख़ुदा (मुश्रिकीन को) हुक्म देगा कि जिनको तुम (अपने ज़ोम में) हमारा शरीक समझा करते थे, (अब) उनको बुलाओ। सो यह उनको बुलाएंगे भी, मगर वह इनको जवाब ही न देंगे और हम इन (दोनों) के बीच में (एक) आड़ हायल कर देंगे (दुशवार गुज़ार) मुहलिक ० और गुनहगार लोग आतिश (दोज़ख़) को देखेंगे और समझ जायँगे कि वह उसमें गिरने वाले हैं और उनको उससे कोई राह गुरेज़ नहीं मिलेगी ० और हमने इस क़ुर्आन में लोगों (के समझाने के) लिये हर तरह की मिसालें फेर फेर कर बयान फ़र्माई हैं, मगर इन्सान तमाम मख़्लूक़ात से ज़्यादा झगड़ालू है ० और जब लोगों के पास हिदायत आ चुकी, तो (अब) ईमान लाने और अपने पर्वर्दिगार से मग़फ़िरत मांगने से इनको इसके सिवा और कौन अम्र माने हो सकता था कि अगिले लोगों का (सा) माजरा इनको भी पेश आए या (हमारा)—

لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ
عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ
دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا
مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا
خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا
وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ
مَّوْبِقًا وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا
وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ
هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ
الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا وَمَا مَنَعَ النَّاسَ
اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا
رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ

ع

العذاب

तो सबने सज्दा किया, किन्तु इबलीस ने (न किया)। वह (चूंकि) जिनों (के वंश) में से था, इस लिये उसने अपने पालन कर्त्ता की अवज्ञा की। तो (ऐ लोगो !) क्या तुम (उसका यह अहङ्कार पूर्ण वृतान्त सुनने के पश्चात भी) मुझे छोड़ कर उसको और उस की सन्तान (और उसके शिष्य) को (अपना) मित्र (और शुभ चिन्तक) बनाते हो। यद्यपि (पागलो ! तुमको बता दिया गया है कि) वह (सब) तुम्हारे (सदैव के) शत्रु हैं। (ऐ रसूल ! इन) अत्याचारियों (और दुराचारियों) के लिये यह निकृष्ट फल है (कि उन्होंने अपने पालन कर्त्ता की आज्ञा पालन व उपासना छोड़ कर इब्लीस के वंशजों की अधीनता ग्रहण करली) ॥

(ऐ मूर्खो ! विश्वास करो कि) हमने उन्हें (अर्थात शैतानों को) न पृथ्वी व आकाश के उत्पन्न करते समय (उनसे किसी प्रकार की सहायता या कुछ सम्मति लेने के लिये) बुलाया था, और न स्वयं उन्हीं की पैदाइश के समय। और हम (ऐसे दुर्बल) न थे कि (हमें किसी सहायक की आवश्यकता होती। और ऐसे मूर्ख न थे कि यदि आवश्यकता होती, तो) हम (इन पथ भ्रष्टों और) पथ भ्रष्ट करने वालों को (अपनी शक्ति का) सहायक बनाते ॥

और (स्मरण रक्खो कि) एक दिन (ऐसा आयेगा, जब कि) अल्लाह तआला (उन लोगों को सम्बोधित करके) कहेगा कि तुम (आज अपनी सहायता के लिये) हमारे उन शरीकों को बुलाओ, जिन्हें तुम समझते थे (कि यह हमारे ख़ुदा होने में शरीक हैं)। तो यह उन्हें बुलायेंगे, किन्तु वह इन्हें उत्तर (तक) न देंगे। और हम (उनकी ओर से उन्हें बिलकुल निराश कर देने के लिये) उन (के और उन के मन घड़न्त शरीकों) के बीच में एक (अग्नि की खाई) आड़ (के तौर पर बाधा रूप से) उपस्थित कर देंगे ॥

और (यह) पापी (उस दिन नर्क कुण्ड की) अग्नि को (भड़कता हुआ) देखेंगे, तो (देखने के साथ ही) इस (बात) का ...स कर लेंगे कि वह उसमें झोंके जायँगे। और यह (विश्वास करके बड़े क्लेशित होंगे। परन्तु) उससे (छुटकारा पाने का) कोई ...न पा सकेंगे ॥

और हमने तो (लोगों को उनका भला बुरा समझाने के लिये) इस क़ुर्आन में हर प्रकार के विषय तरह से वर्णन कर दिये। (परन्तु उ... समझ पर ऐसे पत्थर पड़े हुये हैं, कि किसी प्रकार वह शिक्षा ग्रहण नहीं करते)। और (पथ भ्रष्ट व नीचता का झगडा उठाकर हम...गड़ते हैं। कुछ) है (ही) मनुष्य समस्त सृष्टि से अधिक झगड़ा करने वाला ॥

(जब हमने उन्हें हर प्रकार समझा दिया) और जब (उन) लोगों के पास हिदायत (अर्थात क़ुर्आन की शिक्षा) आ पहुँची, तो कहो) कि (... अपने पालन कर्त्ता से (अपने अगले पिछले पापों की) क्षमा चाहने से उनको इसके अतिरिक्त और कौन... ...) ... (अर्थात उनकी भांति इन्हें भी ...

सामने आ मौजूद हो ० और हम तो पैग़म्बरों को सिर्फ़ इस करते हैं कि (नेकों को नजात की) .ख़ुशख़बरी सुनाएँ और अज़ाब से) डराएं । और जो लोग मुन्किर हैं, (झूठा) झूठी बातों पकड़ के झगड़े किया करते हैं, ताकि (नाहक़ के) झगड़े से जगह से) लड़खड़ा दें और इन लोगों ने हमारी आयतों को मारे अज़ाब को) जिससे इनको डराया जाता है, हंसी (खेल) बना ० और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन, जिसको .ख़ुदा की आयतें दिलाई जायँ और वह उनसे रूगर्दानी करे और अपने पहिले कर्तूत जाय । (बात यह है कि) हम ही ने इनके दिलों पर परदे डाल हैं, ताकि (हक़ बात) को समझ न सकें और इनके कानों में (एक की) गरानी (पैदा करदी है कि हक़ बात को सुन न सकें) । और ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम इन (लोगों) को राह रास्त की तरफ़ बुलाओ, हम यह कभी रूबराह होने वाले नहीं ० और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पर्वर्दिगार बड़ा बख़्शने वाला रहम वाला है । अगर इनके किर्दार की पादाश में इनको पकड़ना चाहता, तो फ़ौरन ही इन पर अज़ाब नाज़िल कर देता । लेकिन इनके लिये एक मीआद (मुक़र्रर) है, जिससे इधर कहीं पनाह नहीं पा सकते ० और (आद और समूद की) यह बस्तियां (जिनको तुम अह्ल अरब ! मुल्क शाम के रस्ते में उजड़ा हुआ देखते हो) उन्होंने भी जब सर्कशी की, हमने उनको हलाक कर मारा और उनकी हलाकत की भी हमने एक मीआद मुक़र्रर कर रक्खी थी ० और (ऐ पैग़म्बर ! उस वाक़िए को याद करो कि) जब मूसा (ख़िज़्र. की मुलाक़ात के इरादे से चले, तो उन्होंने) अपने ख़ादिम (यूशअ) से कहा कि जब तक मैं दोनों दरियाओं के मिलने के मुक़ाम पर न पहुँच लूं (अपने इरादे से) बाज़ नहीं आऊँगा या (इसी तरह) सालहा साल चलता रहूँगा ० फिर जब यह दोनों–

الْعَذَابُ قُبُلًا ۝ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ
وَمُنْذِرِينَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ
لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ ۖ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنْذِرُوا
هُزُوًا ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ
فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ
وَقْرًا ۖ وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا
إِذًا أَبَدًا ۝ وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ
بِمَا كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۚ بَلْ لَهُمْ
مَوْعِدٌ لَنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْئِلًا ۝ وَتِلْكَ
الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ
مَوْعِدًا ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ
أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۝ فَلَمَّا بَلَغَا

ع

(प्रलय का) अज़ाब उनके सन्मुख आ जावे (और प्रलय छा जावे) ॥

(यदि वास्तव में ईमान लाने से उनको केवल यही बात रोक रही है, तो उन्हें हम इससे पूर्व भी बता चुके हैं) । और (अब फिर बताये देते हैं कि इन वस्तुओं का सम्बन्ध रसूल से नहीं है, हमसे है) । रसूलों को तो हम केवल (मोमिनों को स्वर्ग का) मंगल समाचार सुनाने वाला और (काफ़िरों को नर्क के अज़ाब से) डराने वाला बनाकर भेजते हैं । और (रहा अज़ाब, तो उसमें कुछ देर नहीं है । यह) काफ़िर लोग (जो एक) असत्य (बात को) लेकर हमसे झगड़ते हैं, ताकि (अपने) झगड़े से सत्य को (पराजित करदें । और अधोगति के गढ़े में गिरादें । और उन्होंने (जो) हमारी आयतों को और (हमारे) इस (अज़ाब) को, जिससे उन्हें डराया जाता है, मज़ाक़ बना लिया है (तो उन्हें अपनी इन करतूतों का मज़ा इस दुनिया में भी चखाया जायगा, और मरने के पश्चात क़ब्र में भी, और प्रलय के दिन भी) ॥

और उससे बढ़ कर अत्याचारी (और अज़ाब का भागी) कौन (हो सकता) है, जिसको उसके पालन कर्त्ता की आयतों (औ पवित्र कलाम के) द्वारा (जब शिक्षा व) नसीहत की जाय, तो वह उन (की ओर) से मुंह फेर ले और अपने (अगले) पिछले गुनाह भू जाय । (वास्तव में बात यह है कि) हमने उनके हृदयों पर (ग़फ़लत के) परदे डाल दिये हैं, ताकि वह सच (बात) को समझ ही न स और उनके कानों में (हमने) डाट (लगादी) है (ताकि वह सच्ची बात को सुन भी न सकें) । और (उनमें सत्य के मानने की पात्रता औ साहस ही बाक़ी न रहे । अब ऐ रसूल !) तुम यदि उनको हिदायत (के मार्ग) की ओर बुलाओगे, तो वह कभी शिक्षा ग्रहण न करने

और (ऐ रसूल !) तुम्हारा पालन कर्त्ता बड़ा क्षमा करने वाला और दयालु है । वह यदि उनको उनके कुकर्मों के दण्ड स्व पकड़ना चाहे, तो (बहुत) जल्द (अर्थात संसार ही में अपना) अज़ाब उन पर अवतीर्ण करदे । परन्तु (उसने केवल अपनी दया से समय तक ऐसा नहीं किया । हाँ) उन (को अज़ाब देने) के लिये उसने एक (ऐसी) अवधि (नियत करदी) है कि जिस (के आने पूर्व यह कहीं पनाह नहीं पा सकते । (अर्थात ऐसा नहीं कर सकते कि उस अवधि के पूरा होने से पहिले अज़ाब से बचने के लिये गुप्त स्थान में छिप कर बैठ जायँ) ॥

और (आद व समूद जाति की) यह बस्तियां (जिन्हें ऐ मक्का के रहने वालो ! तुम मुल्क शाम को जाते हुये मार्ग में देखते जब उन्होंने (अर्थात क़ौम आद व समूद के लोगों ने .ज़ुल्म व) ज़्यादती की (और .ख़ुदा रसूल को झूठा बताया, और उनकी व अवज्ञा की कोई सीमा न रही) तो हमने उनको नष्ट (व भ्रष्ट) कर दिया । और हमने उन्हें नष्ट करने के लिये भी (पहिले से अवधि नियत करदी थी ॥

और (ऐ रसूल ! वह समय भी याद रखने योग्य है) जब मूसा ने अपने युवक (साथी यूशअ) से कहा था कि जब तक (दो ही बातें हैं-या तो मैं अपने ...याओं के सङ्गम तक न पहुँचूंगा, उस समय तक बराबर (यात्रा किये चला) जाऊँगा । ... ही जाऊँगा) या मैं मुद्दतों चलता ही रहूँगा ॥

अतः जब ... नों सङ्गम तक पहुँच गये—

بِحْرِ يَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي
الْبَحْرِ جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا
لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۝ قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ وَمَآ
اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ وَاتَّخَذَ
سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۝ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا
نَبْغِ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۝ فَوَجَدَا عَبْدًا
مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ
مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۝ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ
عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ۝ قَالَ اِنَّكَ
لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ
تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ۝ قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ
صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ۝ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ

उन दो दरियाओं के मिलने की जगह पर पहुँचे—अपनी (नाश्ते की तली हुई) मछली (वहीं) भूल उठे, तो मछली ने दरिया में सुरंग की तरह का अपना रस्ता बना लिया ० फिर जब आगे बढ़ गये, तो मूसा ने अपने ख़ादिम से कहा कि (लाओ जी !) हमारा नाशता तो हमको दो, हमारे (आज के) इस सफ़र से तो हमको बड़ी तकान हुई ० (ख़ादिम ने) कहा आपने यह भी देखा, जब हम (दरिया किनारे) उस पत्थर के पास ठहरे, तो मैं (उसी जगह) मछली भूल उठा और शैतान ही ने मुझको भुला दिया कि मैं (आप से) उसका तज़किरह करना और मछली ने अजीब तौर पर दरिया में (जाने का) अपना रस्ता कर लिया ० (मूसा ने) कहा कि वही (तो वह जगह) है, जिसकी हम जुस्तजू में थे, फिर दोनों अपने (पैरों के) निशानों के खोज लगाते लगाते उल्टे पाँव फिरे ० तो (दोनों दरियाओं के मिलने की जगह पहुँच कर) उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दे (यानी ख़िज़्र) को पाया। जिसको हमने अपनी (ख़ास) मेहर्बानी में से (एक हिस्सा) दिया और अपनी तरफ़ से उसको एक (ख़ास) इल्म सिखाया था ० मूसा ने ख़िज़्र से कहा कि आप इजाज़त दें, तो मैं आपके साथ रहूँ, बशर्ते कि जो इल्म (लदुन्नी मिन जानिबिल्लाह) आपको सिखाया गया है, उसमें से कुछ आप मुझको भी सिखा दें ० (ख़िज़्र ने) कहा तुमसे मेरे साथ हरगिज़ सब्र नहीं हो सकेगा ० और जो चीज़ तुम्हारी आगही के इहाते से बाहर है, उस पर तुम कैसे सब्र कर सकते हो ० (मूसा ने) कहा कि इन्शाअल्लाह ! आप मुझको ज़ाबित (आदमी) पाएँगे। और मैं आप के किसी हुक्म के ख़िलाफ़ न करूँगा ० (ख़िज़्र ने) कहा अगर तुमको मेरे साथ रहना ही (मन्ज़ूर) है—

क़ाल

तो अपनी मछली को (वहीं) भूल गये। तो मछली ने (वहीं से) सुरंग की तरह नदी में अपना (एक) मार्ग बना लिया (और उस मार्ग से नदी में जा पड़ी) ॥

अतः जब दोनों (इस स्थान को छोड़ कर यहां से) आगे चले गये, तो मूसा ने अपने जवान (साथी) से कहा-लाओ (भाई ! वह) हमारा भोजन (अर्थात् मछली तो) दो। ख़ुदा की क़सम हम अपनी (इस) यात्रा से तो बहुत ही थक गये ॥

(यूशअ ने) कहा (ऐ मूसा !) तुम्हें कुछ ख़बर भी है, जिस समय हम इस पत्थर के पास ठहरे थे, तो मैं मछली को (वहां रख कर) भूल गया था। और मुझे शैतान के अतिरिक्त किसी ने इस (बात) को नहीं भुलाया, कि मैं तुमसे उसका ज़िक्र करता और बताता कि) उस (मछली) ने (बिलकुल) अनोखे ढंग से नदी में (जाने का) अपना मार्ग बना लिया। (और वह उस मार्ग से नदी में [illegible] होकर जा पड़ी) ॥

(मूसा को अल्लाह का बताया हुआ पता याद आया और उन्होंने मछली के गुम हो जाने की घटना सुन कर) कहा कि वही [illegible]मारा अभीष्ट स्थान है। अतः (उसी समय दोनों के) दोनों अपने (पगों के) चिन्ह ढूंढ़ते हुये उल्टे वापिस फिरे। अतः (जब वहां आ [illegible] तो) उन्होंने हमारे भक्तों में से एक ऐसे भक्त (अर्थात् ख़िज़्र) को (वहां ठहरा हुआ) पाया, जिसे हमने (ख़ास) अपने पास से [illegible]नी) दया प्रदान की थी और (ख़ास) अपने पास से उसको ज्ञान सिखाया था ॥

मूसा ने (उनसे मुलाक़ात की और) उनसे कहा कि क्या मैं तुम्हारे साथ इस (शर्त) पर रह सकता हूँ, कि जो वास्तविक ज्ञान [illegible]नीय अल्लाह की ओर से) तुमको सिखाया गया है, उसमें से मुझे भी तुम कुछ सिखा दो ॥

उन्होंने (अर्थात ख़िज़्र ने) उत्तर दिया कि (रहने को तो तुम मेरे साथ रह लो, मुझे कुछ इन्कार नहीं। परन्तु) तुम मेरे साथ [illegible] कर) कदापि सन्तोष न कर सकोगे। (अर्थात् मेरी अनोखी बातें देख कर तुम कुछ कहे सुने बिना न रह सकोगे ॥

[illegible] और जो वस्तु तुम्हारी ज्ञान सीमा से बाहर है, उस पर (अर्थात उसको देख कर) तुम कैसे धैर्य रख सकते हो ॥

[illegible]ा ने कहा (नहीं, यह बात नहीं है) । ख़ुदा ने चाहा, तो तुम मुझे धैर्यवान पाओगे और मैं तुम्हारी किसी प्रकार की [illegible] कहो) कि[illegible] जिस प्रकार कहोगे, उसी प्रकार करूंगा) ॥ (ख़िज़्र ने) कहा कि (अच्छा) यदि तुमको मेरे साथ [illegible]

فہرست معاونین

ترجمہ و تفسیر ہندی قرآن مجید کیلئے جنہوں نے پانچ روپے سے پانچہزار روپے تک چندہ دیا۔ ان ناموں میں کئی نام بار بار آتے ہیں اس کی وجہ یہ ہے کہ ان حضرات نے کئی کئی بار چندہ دیا تھا۔ ان کی رقمیں دفتر کے رجسٹروں میں تاریخ وار درج ہیں یہاں انکو نہیں لکھا گیا صرف نام اور مقام لکھدیئے گئے (حسن نظامی)

ہز ہائی نس مہاراجہ صاحب الور۔ میمن جماعت رنگون۔ حافظ محمد عبد الرحیم صاحب وکیل مرحوم علیگڈھ۔ محترمہ بیگم محمد اسمٰعیل خان صاحب میرٹھ۔ حافظ عبد الکریم صاحب سوداگر لکھنؤ۔ مفتی محمد انوار الحق صاحب ایم اے بھوپال۔ بیگی شاہ صاحب نظامی بھاگلپور۔ بابو غلام محمد صاحب نظامی رائسینہ دہلی۔ بابو نادر خاں صاحب اوورسیر رائسینہ دہلی۔ بابو محمد الدین صاحب رنبیر سنگھ پور کشمیر۔ اہلیہ بابو محمد الدین صاحب رنبیر سنگھ پور کشمیر۔ چودہری محمد علی خاں صاحب رانی پور کھیری۔ سیٹھ محمد یعقوب صاحب جورنگی محترمہ کبری خاتون صاحبہ بہنڈارہ۔ جناب عبد الاحد صاحب بریٹھہ۔ جناب ڈاکٹر مقبول عالم صاحب گڈونی برہما۔ الف الف منشی صاحب احمد آباد۔ نواب دوست محمد خانصاحب حیدر آباد دکن۔ محمد اکبر شہاب الدین صاحب نظامی جالندھر۔ جناب نواب صاحب مانگرول۔ احمد جہاں اکبر جہاں احمد آباد۔ محمد ذکریا صاحب دیلوی کھڑگپور۔ محمد عبد اللطیف صاحب حیدر آباد دکن۔ جناب شیخ فرزند علی صاحب وارثی پارٹہم۔ جناب محمد حسین صاحب پارٹہم۔ بابو الٰہی بخش صاحب ہیڈ کلرک رائسینہ دہلی۔ بابو محمد جان صاحب رائسینہ دہلی۔ محمد امام الدین خانصاحب حیدر آباد دکن۔ محمد عالمگیر خانصاحب آگرہ۔ فقیر محمد صاحب ضلع فیروزپور۔ محمد دین صاحب جنڈولہ۔ سید محمود علی صاحب رائسینہ دہلی۔ اسٹر فیض احمد صاحب رائسینہ دہلی۔ قادر شاہ خاں صاحب سگرام گڈھ۔ جمعیت تبلیغ مسلم معرفت حبیب قاسم صاحب کانپور۔ محمد علی حسین صاحب حیدر آباد دکن۔ ایک مسلمان صاحب رائی۔ عبد الحق صاحب رنگون۔ عبد الغفار صاحب نظامی رائسینہ دہلی۔ معرفت سید شمشاد علی صاحب نظامی کلکتہ۔ محمد مسلم صاحب کلکتہ۔ اسمٰعیل شریف صاحب حسن۔ رسول بخش صاحب کہائی ضلع فیروزپور۔ ایک مسلمان تاجر صاحب بمبئی۔ محترمہ ہمشیرہ صفی اللہ صاحب کھڑگپور۔ ایک مسلمان صاحب کھڑگپور۔ میر حسین علی صاحب حیدر آباد دکن۔ ایم جی مصطفےٰ صاحب چاٹگام۔ میاں محمد حفیظ اللہ صاحب لاہور۔ مستورات معرفت سید قمر علی صاحب گوہ... مسلمانان پارہ چنار معرفت ارشاد احمد صاحب پارہ چنار۔ بیگم صاحبہ میاں سر محمد شفیع صاحبہ لاہور۔ نواب دوست محمد خاں صاحب حیدر آباد دکن۔ سیٹھ صدیق جمال صاحب کلکتہ۔ محمد صادق پٹیل صاحب الیود افریقہ۔ ایک مسلمان صاحب حیدر آباد دکن۔ محمد نظام الدین صاحب حیدر آباد دکن۔ سید مظفر علی صاحب مالنسہ۔ مسلمانان کلکتہ معرفت عبد الغفور صاحب ...اری کلکتہ۔ عبد العزیز صاحب نظامی کلکتہ۔ ڈاکٹر تصدق حسین صاحب مجگاجن۔ عبد العزیز صاحب ...ی کلکتہ۔ عبد اللہ صاحب برادر امام الدین صاحب نظامی کلکتہ۔ احمد خانصاحب بہاولپور۔ علاء الدین عبد الغنی صاحب امراوتی۔ ڈاکٹر مقبول عالم صاحب ٹونگڈ وگی برہما۔ حاجی عبد القادر عبد الستار صاحب معرفت اخبار دین احمد آباد۔ سلیمان خاں محمد خانصاحب معرفت اخبار دین احمد آباد۔ سلیمان ہاشم صاحب معرفت اخبار دین احمد آباد۔ ایک مسلمان از کپورتھلہ معرفت فیروز الدین صاحب کپورتھلہ۔ محمد یٰسین صاحب نظامی نگانہ۔ لال میاں خانصاحب احمد آباد۔ برادر خورد مخلصی شاہ نظامی مرحوم احمد آباد۔ شیخ عثمان صاحب بسروچ۔ ایچ محمود احمد صاحب بانڈیے۔ ایک مسلمان خاتون دہلی۔ کرنیل سردار حکیم خانصاحب جیون۔ محمد سلیمان خانصاحب سگنیلر نوشہرہ۔ محترمہ بیگم صاحبہ ریاست کوروائی۔ علی محمد صاحب جالندھر۔ مہر علی شاہ صاحب پیر کوٹ سدھانہ۔ مہنت رام کشن داس صاحب پٹنہ۔ فتح محمد صاحب نظامی کلکتہ۔ عبد العزیز صاحب نظامی کلکتہ۔ امام الدین صاحب نظامی کلکتہ۔ باقر علی صاحب مدن پلی۔ احمد جمال صاحب دہلی۔ محمد الدین صاحب شادماں نظامی لاہور۔ محمد صادق صاحب نظامی سہارنپور۔ سید ریاض الحق صاحب سہارنپور۔ رحیم بخش برادرز پٹنہ۔ شیخ محی الدین صاحب بلاسپور۔ سید محمد سعید صاحب سورام ضلع الہ آباد۔ بدر الدین حسین الدین صاحب برجتی نظامی احمد آباد۔ محمد دین صاحب رگھبر سنگھ پور۔ عبد الرحمٰن حاجی اسمٰعیل نظامی سورت۔ ایم۔ اے جلیل صاحب کوڈرما۔ حبیب علی صاحب نظامی تھرا ڈاری۔ شیخ علی صاحب کہر گپور۔ خواجہ رشید الدین صاحب کریم نگر۔ محترمہ مرکم بی بی صاحبہ برہما۔ صوفی محمد شفیق صاحب امروہہ۔ سید عبد اللہ شاہ صاحب مظفر آباد۔ رحمت اللہ خانصاحب نظامی دیران۔ اہلیہ حافظ محمد اسحٰق صاحب میرٹھ۔ حافظ محمد احمد صاحب مانڈلے۔ اے علیم خان صاحب باوڑہ۔ صوفی محمد شفیق احمد صاحب امروہہ۔ سید ذاکر علی صاحب کالول۔ ڈاکٹر فخر الدین صاحب نظامی ... ادرلقہ۔ ایک میان صاحب دتیا۔ سکرٹری صاحب تبلیغ الاسلام کمیٹی لانگو مارکس افریقہ۔ خلیل الرحمٰن صاحب بنارس۔ سید محمد شاہ اشرف علی صاحب بہاولپور۔ عبد الستار صاحب بھوکرون۔ ڈاکٹر مقبول عالم صاحب رنگون۔ محمد عبد الکریم صاحب پوربندر۔ ملک محمد اسلم صاحب نظامی مرحوم کوئٹہ۔ اہلیہ دیوان محمد غوث صاحب جلالپور پیروالہ۔ بابو سردار بہادر صاحب دہلی۔ بیگم نواب محمد اسمٰعیل خان صاحب میرٹھ۔ سید محمد صاحب حیدر آباد دکن۔ نواب صاحب ریاست مانگرول۔ لیڈی صاحبہ سر علی امام صاحب پٹنہ۔ مسلمانان بارکپور۔ نواب صاحب ریاست مانگرول۔ محترمہ اہلیہ آغا حیدر صاحب دہلوی حیدر آباد دکن۔ نواب دوست محمد صاحب سکندر آباد دکن۔ ایک شطاری درویش صاحب حیدر آباد دکن۔ ایک نظامی خاتون صاحبہ سکندر آباد دکن۔ محمد سلیمان صاحب سگنیلر نوشہرہ۔ محترمہ کنیز الاسلام نظامی رنگون۔ محترمہ بنت نواب سر مزمل اللہ خان صاحب علی گڈہ۔ ایک مسلمان صاحب امراوتی۔ ایک شیعہ مسلمان صاحب سکندر آباد دکن۔ محترمہ اہلیہ نواب نذیر نواز جنگ بہادر حیدر آباد دکن۔ محترمہ بیگم مولوی شاہ منیر عالم صاحب مظفر نگر۔ محترمہ اہلیہ سید محمود صاحب قادری حیدر آباد دکن۔ محترمہ آصف النساء بیگم صاحبہ سکندر آباد دکن۔ محترمہ والدہ محمد کریم صاحب وارثی نظامی پٹنہ۔ محترمہ والدہ محمد کریم صاحب ہھند۔ محترمہ سردار محمدی بیگم صاحبہ ٹونسی۔ محمد سرور خان صاحب ...۔ احمد انصاری صاحب حیدر آباد دکن۔ محمد رمضان صاحب پشاور۔ سید ذاکر علی صاحب کالول۔ محمد عبد الغنی صاحب حیدر آباد دکن۔ سید عبد المنان صاحب نظامی حیدر آباد دکن۔ ایک مسلمان صاحب چونیہ۔ عبد الرحیم صاحب سکروٹی۔ محمد خلیل اللہ صاحب کہل گاؤں۔ ابو الحسن میاں صاحب ویرم گام۔ عبد الغنی عثمان صاحب ونتھلی۔ ایم عبد العزیز صاحب نظامی پشاور۔ مسلمانان بانٹوہ۔ نواب شیخ جہانگیر میاں صاحب مانگرول۔ پرنس عبد الخالق صاحب مانگرول۔ محترمہ وزیر النساء بیگم صاحبہ نظامی مانگرول۔ پرنس عبد العزیز صاحب مانگرول۔ پرنس محمد صادق صاحب مانگرول۔ محترمہ خیر النساء بیگم صاحبہ مانگرول۔ محترمہ زبیدہ بیگم صاحبہ مانگرول۔ محترمہ صادق دلہن صاحبہ مانگرول۔ محترمہ حمیدہ بیگم صاحبہ مانگرول۔ پرنس محمد ناصر الدین صاحب مانگرول۔ حاجی محمد حاجی یوسف صاحب راناواو۔ سیٹھ عبد اللطیف داؤد صاحب بانٹوہ۔ سکرٹری صاحب میمن جماعت مانا ودر۔ جمیل الدین صاحب غوثی نظامی ایم۔ اے مانا ودر۔ ایک مسلمان صاحب بانٹوہ۔ دربار حسین یار خان جی میمن جماعت سردار گڈھ۔ سیٹھ حاجی عبد اللہ اسمٰعیل صاحب مانا ودر۔ مسلمانان ریاست مانا ودر۔ ڈاکٹر غلام محمد صاحب مانگرول۔ مسلمانان بانٹوہ معرفت سکرٹری صاحب انجمن حمایت اسلام بانٹوہ۔ میمن انجمن پوربندر۔ سالکہ خاتون صاحبہ نظامی حیدر آباد دکن۔ غلام محمد صاحب مونہ کلاں۔ سید باقر علی صاحب ماہرپور۔ حسو میاں لال میاں احمد آباد۔ محترمہ والدہ میجر شہامت اللہ صاحب مراد۔ محمد دین صاحب مستری رزمک۔ پیر محمد ابراہیم صاحب کنانور۔ احمدی بیگم صاحبہ ترور۔ فیروز الدین صاحب مجسٹریٹ بھرووال۔ نواب دوست محمد صاحب اورنگ آباد دکن۔ نذر محمد خان صاحب ٹھیکہ دار ڈیرہ غازیخان۔ محمد عبد الکریم صاحب سکندر آباد دکن۔ کپتان خان صاحب دہیل واڑہ۔ محمد یٰسین خان صاحب کہتیا سرائے۔ احسان کے برٹی صاحب بمبئی۔ محمد عطا خان صاحب منجانب ایک خاتون صاحبہ ہوڑہ۔ محمدن اینڈ کمپنی تریاگنج۔ ابراہیم حسین صاحب نانال افریقہ۔ مولانا طاہر سیف الدین صاحب پیشوا بوہرہ جماعت سورت۔ چراغ الدین صاحب کوروائی۔ ایک مسلمان صاحب دتیا۔ مسلمانان معرفت اخبار دین احمد آباد۔ محترمہ احمدی بیگم صاحبہ ناگپور۔ اسمٰعیل قاسم ضیا صاحب پوٹ لوئس۔ مولوی حمید احمد صاحب انصاری حیدر آباد دکن۔ نواب دوست محمد خان صاحب حیدر آباد دکن۔ آصف علی خان صاحب بیہی۔ خان صاحب محمد شبیر میر خان صاحب سہسرام۔ محمد عبد العزیز صاحب نظامی کودمری۔ ہیڈ مسٹرس مسلم مڈل گرلز اسکول بنوں۔ نور محمد خان صاحب جکراتہ۔ لفٹنٹ حبیب احمد صاحب حیدر آباد دکن۔ ایم۔ اے صدیق صاحب سیالدہ۔ عبد العزیز صاحب منجانب مسلمانان سرگودہا۔ مسز سردار احمد صاحب گڑہ شنکر۔ آصفیہ بیگم صاحبہ نظامی ہرسنڈہ۔ علی محمد عبد الکریم صاحب کوکوناڈا۔ کسفی شاہ صاحب نظامی رنگون۔ رضیہ سلطانہ صاحبہ کلکتہ۔ محمد یعقوب صاحب رنگون۔ سید محمد احمد صاحب گڑہ چرونی۔ سیٹھ عبد الرحیم عثمان کمپنی کلکتہ۔ محترمہ نواب میرزا یار جنگ صاحب حیدر آباد دکن۔ محترمہ سعید بانو نظامی حیدر آباد دکن۔ محترمہ محبوب بانو نظامی حیدر آباد دکن۔ محترمہ رشید النساء نظامی حیدر آباد دکن۔ محترمہ خواجہ بانو دہلی۔ محترمہ حور بانو دہلی۔ محترمہ اہلیہ ڈاکٹر محمد عمر صاحب ٹک۔ نواب محمد ابو الفتح خان صاحب سکندر آباد دکن ؎

یانی (امرتسری) و دیوبندی لٹریچر بھی مل سکے ان کو بھی ملنسہ صاحب کے لئے مہیا کر دیا گیا تھا۔ اور مولوی محمد علی صاحب قادیانی کا انگریزی ترجمہ قرآن مجید اور سرسید کی تفسیر اور قدیم و جدید یہ تمام تفاسیر کا ذخیرہ بھی ان کو دیدیا تھا۔

چنانچہ انہوں نے دو سال میں سورۂ بقر کی تفسیر تیار کی اور مولانا غلام محمد صاحب نے اپنے مترجم رفقا کی امداد سے اس تفسیر کا ہندی ترجمہ بھی تیار کر دیا۔

یہ تفسیر بہت طویل ہو گئی تھی } لیکن میں نے دیکھا کہ یہ تفسیر اس قدر طویل ہو گئی کہ صرف سورۂ بقر کی تفسیر پورے قرآن مجید کی برابر ہے تو مجھے چھپائی کے خرچ کا اندیشہ ہوا اور مجبوراً دو وہ تفسیر کو سورۂ بقر تک ملتوی کرا دیا اور کہہ دیا کہ مختصر تفسیر شائع ہو جائے اور مسلمان اس سے مطمئن ہو جائیں اور طویل تفسیر کے مصارف اپنے کا ارادہ ہوا تو اس وقت یہ تفسیر بھی شائع کر دی جائے گی۔ بالفعل اس کو ملتوی کر دینا چاہیے۔

مختصر تفسیر } دو سال کی مذکورہ محنت کو ملتوی کرنے کے بعد میں نے مختصر تفسیر کا کام شروع کیا۔ اور خدا کے فضل سے وہ پوری ہو گئی۔ یہ مختصر تفسیر قرآن مجید کے معانی و مطالب کو مشرح کر دینے کے اصول پر ہے۔ اور ایسا انداز رکھا گیا ہے کہ جن آیات پر عیسائی اور آریہ اصحاب اعتراض کرتے ہیں ان کے ترجمہ کی تشریح ایسے پیرایہ میں کی جائے کہ ترجمہ ان خود بخود اسی تشریح سے جاتا رہے۔

مجھے اپنی کم علمی کا اقرار ہے } قرآن مجید کا معاملہ اتنا نازک ہے کہ یہ ترجمہ و تفسیر اس محنت و مشقت سے تیار کر دینے کے بعد بھی میرا دل کانپ رہا ہے کہ بشریت اور کم علمی کے سبب مجھ سے کوئی غلطی نہ ہو گئی ہو کیونکہ میں صاف صاف لکھہ دیتا ہوں کہ میں مستند مولوی نہیں ہوں۔ البتہ عربی زبان اور قرآن مجید کا ترجمہ کر سکتا ہوں۔ لہذا اگر کوئی خامی اس ترجمہ و تفسیر میں ہو تو یہ میری کم علمی کی وجہ سے ہو گی۔

اردو ترجمہ } چونکہ ابتدا سے یہ ضرورت محسوس ہو رہی تھی کہ اس ترجمہ میں اردو زبان بھی رکھی جائے تاکہ ہندی جاننے والے مسلمان اپنی مادری زبان اردو سے مانوس رہیں اس لیے شمس العلماء حافظ نذیر احمد صاحب مرحوم کے صاحبزادہ مولوی بشیر الدین احمد صاحب مرحوم سے عرض کیا گیا کہ وہ اپنے والد ماجد کے اردو ترجمہ کو ہندی ترجمہ کے ساتھ شائع کرنے کی اجازت دیں اور انھوں نے بغیر کسی معاوضے [illegible] عربی متن کے سامنے بحروف ہندی درج کیا گیا۔ اور اس کے نیچے ہندی ترجمہ و تفسیر لکھی گئی۔

شہنشاہ اورنگزیب کے ہاتھ کا لکھا ہوا قرآن مجید } نواب صاحب مانگرول کے کتب خانہ میں مجکو شہنشاہ اورنگزیب کے ہاتھ کا لکھا ہوا قرآن مجید مل گیا اور میں نے اس کے عکسی بلاک سات ہزار روپے کی لاگت سے تیار کرا لیے۔ جو اس ترجمہ و تفسیر کے ہر صفحہ پر موجود ہیں۔

چونکہ اسلامی حکم کی بموجب قرآن شریف کا ترجمہ عربی متن کے بغیر شائع کرنا جائز نہیں ہے اس لئے ٹائپ کی چھپائی میں اس کے سوا چارہ نہ تھا کہ عربی حروف کے بلاک لگائے جاتے۔ اور اورنگزیب کے ہاتھ کے لکھے ہوئے قرآن مجید کا فوٹو جب بلاک کی صورت میں آگیا تو اس میں ایک تاریخی شان بھی پیدا ہو گئی۔

دیر بہت ہو گئی اور لوگ بدگمان ہو گئے } چونکہ مذکورہ مشکلات کے سبب اس کام میں چھ سال ہو گئے اس واسطے چندہ دینے والے حضرات مجھ سے بدگمان ہونے لگے تھے۔ لیکن آج جب وہ اس کام کی ساری داستان سن لیں گے اور مشکلوں کا حال ان کو معلوم ہو گا تو امید ہے کہ ان کی بدگمانی دور ہو جائے گی۔

پہلی جلد کے پندرہ پارے } آج خدا کے فضل سے پہلی جلد کے پندرہ پارے چھپ کر شائع ہوتے ہیں۔ بقیہ ۱۵ پارے چھپ رہے ہیں۔ انشاء اللہ چھ ماہ کے اندر وہ بھی شائع کر دیئے جائیں گے۔ پندرہ پارہ کی ایک جلد شائع کرنے کی وجہ یہ ہے کہ کاغذ دبیز اور وزنی زیادہ ہے پورے قرآن مجید کی ضخامت بڑھ جاتی اور باہر کے ملکوں میں اتنا وزنی پیکٹ ڈاک خانہ میں نہ جا سکتا۔ اور عام ناظرین کو بھی بھاری جلد کے اٹھانے میں دشواری ہوتی۔

ہدیہ } قرآن مجید کے ساتھ قیمت کا لفظ لکھنا مسلمانوں میں بے ادبی سمجھا جاتا ہے۔ اس لئے اس موقع پر ہدیہ کے لفظ کا استعمال ہوتا ہے۔ اس جلد میں دو قسم کے کاغذ ہیں اور دو قسم کی جلد بندی ہے۔ اول درجہ کے کاغذ اور اعلیٰ درجہ کی جلد بندی کا ہدیہ دس روپے مقرر ہوا ہے۔ اور ہلکے کاغذ اور معمولی جلد کا ہدیہ پانچ روپے قرار پایا ہے۔

مفت کی تقسیم } جن حضرات نے پانچ روپے یا پانچ سے زیادہ چندہ دیا ہے ان کو اعلیٰ کاغذ اور اعلیٰ جلد بندی کا ایک نسخہ مفت دیا جائے گا۔ البتہ محصول ڈاک ان کے ذمہ ہو گا اور ان کی اجازت آنے کے بعد ایک ایک جلد محصول ڈاک کی بموجب وی پی کر دی جائے گی۔

چندہ دینے والوں کے نام اور پتے } پانچ روپے یا پانچ سے زیادہ چندہ دینے والے اصحاب کے نام دفتر تبلیغ کے رجسٹروں میں درج ہیں اور انہی کی نقل یہاں درج ہوئی ہے لیکن اگر کسی شخص کا نام غلطی سے رہ گیا ہو تو وہ مطلع کریں تاکہ ان کو بھی ایک جلد مفت بھیج دی جائے۔

کم ہدیہ کا نیا اعلان } چونکہ یہ ہندی ترجمہ و تفسیر مسلمانوں کے چندہ سے تیار ہوئی ہے۔ اور قرآن مجید کی ہر جگہ تبلیغ کرنی مقصود ہے اس لئے یہ اعلان بھی ضروری معلوم ہوتا ہے کہ ہر قوم اور ہر مذہب کے غریب لوگوں کو یہ جلد صرف دو روپے آٹھ آنہ میں دی جائے گی۔

مگر شرط یہ ہے کہ وہ لوگ معتبر آدمیوں سے لکھوا کر بھیجدیں کہ ان کی حیثیت ڈہائی روپے سے زیادہ ہدیہ دینے کی نہیں ہے۔ اگرچہ بڑے سائز کے چار سو بیس صفحہ کی ایسی عمدہ کتاب اور جلد بندہی ہوئی کتاب پانچ روپے سے ایک پیسہ کم میں بھی نہیں دی جا سکتی کیونکہ لاگت بہت زیادہ آتی ہے مگر تبلیغ و پرچار کے لئے اسکی بہت ضرورت ہے کہ کم سے کم ہدیہ پر اسکو تقسیم کیا جائے۔ اس لئے غریب لوگوں کو یہ جلد ڈہائی روپے میں دیدی جائے گی مگر محصول ڈاک خود ان کے ذمہ ہو گا۔

سستے ایڈیشن میں دو مہینہ کی دیر ہے } بڑھیا کاغذ اور عمدہ جلد کا ایڈیشن تو تیار ہے اور شائع ہو رہا ہے مگر سستا ایڈیشن ابھی تیار ہو رہا ہے اور وہ دو مہینہ کے بعد جنوری سنہ ۱۹۲۹ء میں شائع ہو گا۔

غلطیوں سے آگاہ کر دیجیے } سب ہندو مسلمان ہندی داں حضرات سے التماس ہے کہ ترجمہ و تفسیر میں ان کو کوئی غلطی معلوم ہو تو مطلع کریں تاکہ آئندہ ایڈیشن میں اصلاح کر دی جائے۔ والسلام

ضروری اطلاع

{ دس روپیہ ہدیہ پندرہ پارہ کی ایک جلد کا ہے۔

راقم
حسن نظامی دہلوی

۱۷ / جمادی الثانی ۱۳۴۷ھ
یکم دسمبر ۱۹۲۸ء

...ار وغیرہ میں ان مسلمانوں کی تعداد ایک کروڑ تھی جو صرف ہندی حروف پڑھ سکتے تھے ۔

اسلام کے حریف اس سے آگاہ تھے } میں نے اس بات کو بعد میں محسوس کیا تھا مگر اسلام کے حریف مجھ سے پہلے اس کمزوری کو سمجھ چکے تھے اور وہ ہندی میں ایک پنڈت صاحب نے قرآن مجید کا ہندی ترجمہ شروع کر دیا تھا اور جب میں نے اس کام کا ارادہ کیا تو ان کے دو پارے ترجمہ ہو کر شائع بھی ہو گئے تھے ۔

اس کے علاوہ چند عیسائیوں اور آریہ سماجیوں نے بھی مختلف مقامات پر قرآن مجید کے ہندی ترجمے کر دیئے تھے اور وہ شائع بھی ہو گئے تھے ۔ مگران حضرات نے جس نیت سے یہ ترجمے شائع کئے تھے وہ ناظرین سے مخفی نہیں ہے ۔ اور ناظرین اس نیت کو مد نظر رکھ کر ان ترجموں کی اچھائی برائی پر بھی غور کر سکتے ہیں۔ میں نے ہندی ترجمہ کا کام شروع کرنے سے پہلے وہ سب ترجمے منگانے جن کا ذکر اوپر آیا اور ہر ترجمہ کو مختلف مقامات سے پڑھوا کر سنا اور قرآن مجید کے مفہوم سے اس کا مقابلہ کیا تو معلوم ہوا کہ ان تراجم میں طرح طرح کی خامیاں ہیں ۔ اور ان کی اشاعت نہ مسلمانوں کے لئے مفید ہے نہ ہندوؤں کے لئے ۔ بلکہ بعض ترجمے مقاصد قرآن کے بالکل برعکس ہو گئے ہیں۔ اس لئے میں نے ارادہ کر لیا کہ میں خود اپنے اہتمام سے ہندی ترجمہ کراؤں ۔ چنانچہ اس کا اعلان کیا گیا تو مسلمان قوم نے اس ارادہ کی تائید میں خطوط بھی لکھے اور روپے کی امداد بھی شروع کر دی جس سے میری ہمت بڑھی اور میں نے اس کام کو پورا کر ہی دیا ۔

نواب صاحب مانگرول سب سے اول معاون ہیں } جناب نواب شیخ جہانگیر میاں صاحب والی ریاست مانگرول کاٹھیاواڑ سب سے پہلے مسلمان ہیں جنھوں نے مالی امداد کے وعدہ سے میری ہمت بندھائی ۔ اور خود بھی روپیہ دیا اور اپنے اہل و عیال سے بھی روپے کی مدد دلوائی ۔

میمن جماعت } نواب صاحب کے بعد اس دینی کام کی مدد میمن قوم نے کی برما اور جنوبی افریقہ اور ہندوستان کے مختلف شہروں سے میمن قوم کی مختلف جماعتوں نے امداد بھیجی ۔

پنجاب کی مدد } میمن جماعت کے بعد پنجاب کے مسلمانوں نے مدد کی جو ایسٹ افریقہ اور برما و بنگال وغیرہ مقامات میں مقیم ہیں ۔

دو ہندوؤں کی مدد } اس کام میں ہز ہائی نس مہاراجہ صاحب الور اور میرے ذاتی دوست مہنت رام کشن داس صاحب نے بھی اعانت کی ۔ ہز ہائی نس کی رقم اگرچہ اس بڑے کام کے بڑے اخراجات کے مقابلہ میں بہت کم تھی مگر جس خلوص و محبت سے انھوں نے یہ امداد کی تھی اسکو مسلمان قوم ہمیشہ یاد رکھے گی ۔

کشفی شاہ نظامی پنجابی ہیں } اور برما میں رہتے ہیں ان کے ذریعہ سے نظامیہ سلسلہ کے بھائیوں سے اور برما میں رہنے والے عام مسلمانوں نے بڑا حصہ لیا ۔

ایسٹ افریقہ کے نظامی بھائی } ڈاکٹر فخر الدین رازی نظامی اور علی احمد نظامی اور جمال الدین ایل نظامی اور برکت علی نظامی وغیرہ بھائیوں نے جو سب پنجابی ہیں ایسٹ افریقہ سے اس کام کی امداد کرائی ۔

بنگال کے پنجابی } عبد الغنی نظامی عبد العزیز نظامی وغیرہ پنجاب کے بھائی کلکتہ میں رہتے ہیں انھوں نے بھی اس کام کے لئے چندہ جمع کیا ۔

اخبار دین کی مدد } احمد آباد کے گجراتی اخبار دین نے بھی گجراتی بولنے والے مسلمانوں سے اس کام کے لئے چندہ جمع کرایا۔ اسی طرح اور بھی مسلمانوں نے مدد کی جن کے نام آخر کی فہرست میں درج ہیں ۔ جو اس دیباچہ کے ساتھ شامل ہے ۔

پانچ روپے دینے والے } ناموں کی یہ فہرست جو آخر میں لگائی گئی ہے ان حضرات کی ہے جنھوں نے اس کام میں پانچ روپے دیئے یا پانچ سے زیادہ دیئے ۔ پانچ سے کم دینے والوں کے نام اس فہرست میں نہیں ہیں ۔

عورتوں کی مدد } زنانہ رسالہ تبلیغ نسواں دہلی پڑھنے والی بعض عورتوں نے بھی ایک ایک روپیہ اس کار خیر میں دیا تھا ۔ اور بیگم صاحبہ نے مانا ودر کاٹھیاواڑ نے بھی امداد کی تھی ۔ اور حیدر آباد دکن و احمد آباد گجرات وغیرہ شہروں کی نظامی عورتوں نے بھی اس میں حصہ لیا تھا ۔

یہ ترجمہ کتنے عرصہ میں ہوا } پورے پانچ سال کی محنت سے یہ ترجمہ تیار ہوا ۔ چار آدمی مترجم مقرر کئے گئے تھے ۔ جن کو ایک سو ساٹھ روپے ماہوار علاوہ کھانے اور مکان کے دیئے جاتے تھے ۔ ان چار میں بنارس کے ایک ہندو بھی تھے جو سنسکرت کے فاضل اور عربی فارسی کے ماہر تھے اور ان کو محض ہندی زبان کی صحت کے لئے مقرر کیا گیا تھا۔

مگر جب مولانا غلام محمد صاحب سابق پنڈت کیشو رام شرما آگئے ۔ جو دیوبند کے مدرسہ کے فارغ شدہ مولوی تھے تو پنڈت صاحب ممدوح بنارس واپس چلے گئے ۔

اتنی دیر کی وجہ } یہ ہوئی کہ دو سال میں جب ترجمہ تیار ہو گیا تو میں نے اس کو خود پڑھوا کر سنا اور مجھ کو اس میں بھی خرابیاں اور خامیاں معلوم ہوئیں تو میں نے دو سال کی محنت ضائع کرنی مناسب سمجھی اور پورے ترجمہ کو رد کر کے دوبارہ تیار کرایا ۔

دوبارہ ترجمہ کرایا } یہ دوسرا ترجمہ بہت احتیاط سے ہوا ۔ اور تین سال میں اس کی تکمیل ہوئی ۔ اس دوسرے ترجمہ کو بھی میں نے خود اول سے آخر تک پڑھوا کر سنا اور اس کی غلطیاں خود درست کیں ۔ میں ہر روز دو رکوع یا پاؤ سپارہ مولانا غلام محمد صاحب سے پڑھوا کر سنتا تھا اور ایک ایک لفظ کے ترجمہ کو مستند تفسیروں اور ترجموں سے ملا کر دیکھتا تھا کہ قرآن مجید کا مفہوم ادا ہوا یا نہیں ۔ اور جب تک مجھے اطمینان نہ ہو جاتا تھا آگے نہ بڑھتا تھا ۔ بعض اوقات ایک ایک آیت پر کئی کئی دن بحث ہوتی تھی ۔ اور پورے اطمینان کے بغیر میں آگے نہ بڑھتا تھا ۔ ہندی الفاظ کی صحت کے لئے بعض اوقات میں اپنے ہندی داں ہندو احباب کو اپنے ساتھ بٹھا لیتا تھا ۔ میں خود ہندی حرف نہیں پڑھ سکتا ۔ لیکن مترجم ہندی زبان کو اچھی طرح سمجھتا ہوں اور میرے پاس ترجمہ کی صحت کرنے کے وقت ایک مستند لغت کی کتاب بھی رہتی تھی ۔ جس میں عربی فارسی انگریزی ہندی کے مشترکہ الفاظ تھے اور جو مجکو محض اسی خدمت قرآن مجید کے لئے حسنی شاہ نظامی تاجر کتب تین دروازہ احمد آباد نے بلا قیمت دی تھی ۔ مختصر اس ترجمہ و تفسیر کی صحت جس محنت اور احتیاط کے ساتھ میں نے کی ہے وہ ایک مستقل تصنیف سے بھی زیادہ مشکل کام تھا ۔ اور میں اپنے خدا اور اپنے ضمیر کے سامنے مطمئن ہوں کہ یہ ہندی ترجمہ و تفسیر مطالب قرآن مجید ادا کرنے میں ناکام نہیں ہے ۔

بڑی تفسیر کا بڑا خرچ } ابتدا میں ایک بڑے لائق مسلمان عالم کو دو سو روپے ماہوار پر مقرر کیا گیا تھا جو علاوہ عربی علوم کے انگریزی علوم کے بھی مستند فاضل تھے ۔ اور جن کو فن تفسیر میں سالہا سال کا تجربہ تھا ۔ اور تفسیر نویسی کے وہ خاص ماہر تھے ۔

ان کے لئے ہم نے تمام آریہ اور عیسائی اعتراضات کی کتابیں اور رسالے اور مضامین جمع کر دیئے تھے تاکہ وہ تفسیر نویسی کے وقت ان کو سامنے رکھیں ۔ اور پھر ان اعتراضات کے جس قدر

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

دیباچہ

بعد حمد و صلوٰۃ کے ناظرین کی خدمت میں عرض ہے کہ آج سے چھ سال پہلے جب ہندوستان میں ارتداد (شدھی) کی تحریک آریہ سماج نے عملاً شروع کی اور بہت سی اسلامی انجمنوں نے مسلمانوں کی حفاظت کا کام شروع کیا تو میں عرصہ تک خاموش دیکھتا رہا اور میں نے کسی قسم کا حصہ اس کام میں نہ لیا اُس وقت میں بعض مسلمانوں میں ہندو پسند خیال کیا جاتا تھا اس لیئے کہ میں نے کرشن بیتی کتاب لکھی تھی اور گیتا کی شرح کے مضامین بھی رسالہ درویش میں لکھ کر شائع کئے تھے۔ اور اسی وجہ سے بعض محدود خیال علماء نے میرے خلاف مضامین شائع کئے تھے کہ میں بظاہر مسلمان ہوں مگر دل سے ہندو ہوں ۰۰

میرا پہلا قدم آخر جب میں نے یہ دیکھا کہ جن راجپوتوں کو میرے باپ دادا یعنی مشائخ چشتیہ نے مسلمان کیا تھا ان کو بھی مرتد کیا جانے لگا تو میں خاموش نہ رہ سکا اور مجھ کو میرے خاندانی فرض نے مجبور کیا کہ آگے بڑھوں اور مسلمانوں کو ارتداد (شدھی) سے بچاؤں۔

مگر میں نے آنکھیں بند کر کے کام شروع نہیں کیا بلکہ پہلے مسلمانوں کے مبلغوں اور تبلیغی انجمنوں اور شدھی کا کام کرنے والوں کے ہر کام پر اچھی طرح غور کیا۔ اور ان اسباب کو معلوم کرنے کی کوشش کی جن سے مسلمان ارتداد کی طرف جاتے تھے۔ اور ان کمزوریوں کو بھی معلوم کیا جو مسلمان مبلغوں میں تھیں اور ان قوتوں سے بھی آگاہ ہوا جو شدھی بھائیوں نے مہیا کی تھیں۔ اس کے بعد کام کا پہلا قدم اٹھایا اور چند مہینے کے اندر مجھ کو تمام انجمنوں اور مبلغوں سے زیادہ اپنے کام میں کامیابی ہونے لگی۔

مگر اس کے ساتھ ہی تمام شدھی سبھائیں اور آریہ لیڈر اور آریہ اخبارات میرے خلاف متحد ہو کر میرے کام پر حملہ آور ہوئے۔ اور انھوں نے مجھ ہی کو اپنے مشن کا سب سے بڑا خطرناک دشمن مشہور کر دیا اور شاید خود وہ بھی یہ سمجھنے لگے کہ میں ان کا اس میدان میں ایک کامیاب حریف ہوں۔

میرے کام کی ابتدا سے لے کر آج تک حالت یہ رہی کہ میں نے اور میرے رفیقوں نے ایک لفظ بھی کسی ہندو یا آریہ پیشوا یا ہندو کتاب یا آریہ کتاب و عقائد کے خلاف سخت یا توہین آمیز استعمال نہیں کیا نہ تحریر میں نہ تقریر میں۔ لیکن اس پر بھی ہر صوبہ اور ہر شہر کے ہندو اور آریہ سماجی پریس نے مجھ ہی کو سب جھگڑوں کی بنیاد قرار دیا۔ اور آج تک وہی غلط فہمیاں پھیلی ہوئی ہیں

میں نے اِن بہتانوں کی کچھ پروا نہیں کی میری کامیابی کے اسباب خدا کے فضل سے بہت تھے مگر یہ بہتان اور جھوٹے قصے بھی جو میرے خلاف مشہور کئے جاتے تھے میرے کام کی شہرت اور کامیابی کا ایک باعث ہو گئے تھے اور اس مخالفت سے میرے اندر کام کرنے کی کئی حصہ زیادہ امنگ پیدا ہو گئی تھی اور میں اس مخالفت کی کچھ پروا نہیں کرتا تھا ۰۰

اصل مقصد اب میں اس تمہید کا اصل مقصد بیان کرنا چاہتا ہوں کہ جب میں نے ہندو قوم کی دماغی اور ذہنی حالت پر غور کیا کہ وہ جھوٹی باتوں کا محض اشاعت (پرچار) کے سبب یقین کر لیتی ہے تو اگر اس کے سامنے سچی باتوں کا پرچار کیا جائے تو اس کو بھی اسی طرح قبول کرے گی۔ کیونکہ ہندو قوم مذہبی اور دہرم آتما قوم ہے اور وہ مجھ کو محض اپنے مذہب و دہرم کی محبت کے سبب اپنا دشمن سمجھتی ہے لہذا جب اُس کو میرے عقائد کی اصلی بنیاد کا حال معلوم ہوگا تو وہ جھوٹی باتوں کی شہرت کو دل و دماغ سے دور کر دے گی اور اس کو معلوم ہو جائے گا کہ حسن نظامی کو غلط بدنام کیا گیا ہے کیونکہ جب حسن نظامی مسلمان ہے اور قرآن مجید کی تعلیم پر عمل کرتا ہے اور قرآن مجید کی تعلیم میں وہ باتیں نہیں ہیں جو حسن نظامی کے ساتھ منسوب کی جاتی ہیں تو صاف ظاہر ہے کہ اس کی نسبت یہ سب الزام غلط ہیں ۰۰

سات سو برس پہلے اسکی ضرورت تھی قرآن مجید کے ہندی ترجمہ و تفسیر کی سات سو برس پہلے ضرورت تھی جبکہ مسلمان باقاعدہ ہندوستان کے حکمران ہوئے تھے اگر مسلمان بادشاہ ہندوستان کی مادری زبانوں میں قرآن مجید کے ترجمے کرا دیتے تو ان کو سیاسی استحکام بھی حاصل ہو جاتا اور اسلام کو بھی اس ملک میں عام مقبولیت حاصل ہو جاتی۔

اکبر اعظم کے دماغ میں یہ خیال پیدا ہوا تھا مگر اس نے پہلے ہندوؤں کی کتابوں کے ترجمے کرائے تاکہ حکمران قوم محکوم قوم سے واقف ہو۔ اگر اکبر حکمران قوم کے مذہب و عقائد سے بھی محکوم قوم کو آگاہ کرنے کا کام کرتا تو ہندوستان کو بہت فائدہ ہوتا ۰۰

ایک کروڑ مسلمانوں کی حفاظت مجھ کو اپنے تبلیغی کام کے شروع میں اندازہ ہو گیا تھا کہ مسلمان اسلام سے محض بے علمی اور مفلسی کے سبب مرتد ہوتے ہیں یعنی اُن کو اسلامی تعلیم کی اصلیت سے واقفیت نہیں ہے اور یا قرض داری اور مفلسی کے سبب ایمان فروخت کرنے پر آمادہ ہو جاتے ہیں۔ اس لیئے انہی اسباب کو سامنے رکھ کر میں نے اپنا کام شروع کیا تھا۔

اسی تحقیقات کے سلسلہ میں مجکو یہ بھی معلوم ہوا تھا کہ ہندوستان میں ایک کروڑ مسلمان ایسے ہیں جو عربی اور فارسی حروف نہیں پڑھ سکتے۔ اگرچہ ان کی بول چال اردو ہے مگر لکھنا پڑھنا ان کا ہندی حروف میں ہے اور چونکہ اسلامی انجمنیں اور مسلمان مبلغ صرف اردو حروف کے ذریعہ تبلیغ کرتے ہیں اس لیئے ان کو کامیابی نہیں ہوتی۔ یا پوری طرح کامیاب نتیجہ نہیں نکلتا۔

دلیسی ریاستیں جس قدر ہندوؤں کے قبضہ میں ہیں ان سب میں سوائے کشمیر وغیرہ دو تین ریاستوں کے باقی سب نے ہندی زبان کو سرکاری زبان بنا دیا ہے اور ان ریاستوں کے مسلمان باشندے مجبوراً محض ہندی حروف سیکھتے ہیں۔

یو پی یعنی ممالک متحدہ اودھ و آگرہ میں انگریزی گورنمنٹ نے بھی ہندی کو سرکاری دفتروں میں شریک کر کے مسلمان عوام کو ہندی حاصل کرنے کے لئے مجبور کر دیا ہے اور وہاں کے دیہات میں آدھے مسلمان سوائے ہندی حروف کے اور کوئی حروف نہیں پڑھ سکتے۔

سی پی میں تو پہلے ہی سے سب مسلمانوں میں ہندی حروف کا رواج تھا۔

بہار و اڑیسہ میں بھی ہندی ہی مروج تھی اور اس طرح ایک کروڑ مسلمانوں کی تعداد ہندی حروف کے سوا عربی فارسی حروف سے بے خبر تھی یعنی دیسی ریاستوں اور یو پی سی پی

ہندی ترجمہ قرآن مجید
از خواجہ حسن نظامی